3

ॐ गणेशाय नमः

स्थापित वि. संवत् १९३२ (१८७५ ई.)

शिमला व दिल्ली की दैनिक लग्न सारणी सहित

गणितकर्त्ता पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र पं. पन्ना लाल ज्योतिषी की असली व प्रामाणिक पंचाँग 2021-22 ई.

तिमिर हरण मंगल करण सूर्य भयो प्रकाश। सकल अंधेरा मिट गयो धरती धवल आकाश॥

पंचांगदिवाकर

वि.२०७८

राजा मंगल

मंत्री मंगल

कुंभ महापर्व (हरिद्वार) विशेषांक

इस पंचांग का कापी राइट नं. A 27587/80 तथा Trade Mark No. 472584 भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है।

पं० शिव राम दत्त ज्यो०

पं० देवी दयालु मशहूरे आलम ज्योतिषी
पंचाँग दिवाकर कर्ता लाहौर वाले

पं० मोहन लाल ज्यो०

मशहूरे आलम पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी की असली, प्रामाणिक व शुद्ध पंचाँगदिवाकर, जालन्धर।

गौरवशाली 146 वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित संवत् १९३२

मशहूरे आलम
पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़
माई हीरां गेट (अड्डा होशियारपुर), जालन्धर शहर — 144008 (पं.)

एकमात्र वितरक :
जनरल बुक डिपो
चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर
फोन : 0181-2457959

मूल्य: ₹110/-

卐 श्रीगणेशाय नमः 卐

'पंचाँगदिवाकर' सम्बन्धी आवश्यक निर्देशन

यस्मिन् काले यतः खेटा यान्ति दृग्गणितैक्यताम्।
तत् एव स्फुटाः कार्याः दिक्कालौ स्फुटौ विना।। (वृहत् पाराशर)

अर्थात्–जिस पद्धति या सिद्धान्त से दृक्-गणितैक्य युक्त वेध-सिद्ध ग्रह स्पष्ट प्राप्त हों, उसी पद्धति का अनुसरण करना चाहिए। उसी के द्वारा स्पष्ट दिशा एवं ग्रह-स्पष्ट, कालादि साधन करने चाहिएं।

(1) इस पंचाँग का निर्माण ग्रीनविच से पूर्व रेखांश (Longitude) 75°/34'E तथा अक्षांश (Latitude) 31°/19'N. उत्तर के आधार पर किया गया है। पंचाँग में दिए गए तिथि, नक्षत्र, योगादि के मान एवं सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों का राशि-परिवर्तन (घड़ी-पलादि) में जालन्धर नगर के सूर्योदय अस्तादि का प्रयोग किया गया है।

(2) इस पंचाँग की गणित प्रक्रिया में सूक्ष्म दृक्-गणित एवं चित्रा-पक्षीय निरयण पद्धति का आश्रय लिया गया है। जोकि महर्षि पाराशर, केतकर, वसिष्ट, भास्कराचार्य, पं. बापूदेव शास्त्री आदि प्राचीन एवं अर्वाचीन मनीषियों/ज्योतिष आचार्यों द्वारा अनुमोदित है। पंचाँग में दिए गए व्रत, पर्व एवं मुहूर्त्तों में प्रयुक्त तिथि, नक्षत्रादि की गणित शास्त्र सम्मत है तथा यह भारत सरकार द्वारा भी प्रमाणित एवं अनुमोदित है।

(3) पक्ष वाले पृष्ठों पर दैनिक सूर्योदय, सूर्यास्त भारतीय समयानुसार जालन्धर के हैं। सूर्योदयास्त में किरण वक्री भवन-संस्कार सहित होने से सूर्योदयादिष्टादि बनाने में यही ग्राह्य होते हैं। प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में 3 मिनट घटावें और सूर्यास्त में जमा कर लेवें।

(4) तिथि, नक्षत्र, योग एवं करणों के सामने दिए गए घड़ी पल उनका सूर्योदय से समाप्तिकाल बतलाते हैं। उनके घड़ी पलों के घण्टे-मिनट बनाकर उसमें स्थानीय (अपने नगर) का सूर्योदय जमा कर देने तिथि-नक्षत्रों आदि का समाप्तिकाल भा. स्टैं. टाईम में निकल आएगा। पाठकों की सुविधा हेतु तिथि-नक्षत्रों एवं ग्रहों आदि के समाप्तिकाल भा. स्टै. टा. घंटा मिंटों में अलग से दिए गए हैं। जहाँ पर 24, 25, 26 आदि अंक लिखे हैं। वहाँ 24 की रात्रि 12 बजे, 25 को रात्रि के 1 बजे, 26 को रात्रि के 2 बजे जानें। इसी प्रकार आगे के अंकों में भी 24 घटा करके अर्ध रात्रि के बाद का समय जानें। जब तक आगामी दिवसीय सूर्योदय न हो, तब तक **भारतीय ज्योतिष शास्त्रानुसार पिछली तारीख** का दिन ही माना जाता है।

(5) दिनमान घड़ी पलों में है तथा दाएँ अंग्रेज़ी तारीख एवं देशीय प्रविष्टों के पश्चात् लस्टर में चन्द्र राशि-संचार भद्रा, पंचक आदि व सूर्यादि ग्रहों के नक्षत्र राशि प्रवेश, उदयास्तादि घड़ी पलों में दिए गए हैं। निर्दिष्ट घड़ी पलों को घण्टे मिनट बनाकर उन में स्थानीय सूर्योदय जमा करके उनको घं. मिं. भा. स्टै. टा. में परिवर्तित किया जा सकता है। **ध्यान रखें,** चंद्र संचार व सूर्यादि ग्रहों के राशि, नक्षत्र प्रवेश सूर्योदयात् प्रवेश काल है, न कि समाप्ति काल हैं। पक्ष वाले पृष्ठों में तिथि, नक्षत्रादि के घंटा मिनट एवं **दैनिक ग्रह स्पष्ट भू-केन्द्रीय होने से भा. स्टैं. टा. में सर्वत्र भारतोपयोगी होंगे।** अन्तिम पृष्ठों पर भारत के मुख्य शहरों के भी सूर्योदयास्त दिए गए हैं। प्रतिवर्ष नए-नए विषयों का समावेश किया जाता है।

(6) पक्ष वाले पृष्ठों में तिथि के नीचे 15 तिथि को पूर्णिमा तथा अमा. तिथि को 30 के अंकों से संकेत किया गया है। तिथि क्षय के आगे शून्य (०) के चिन्ह लगाए गए हैं तथा जहाँ कहीं, **नक्षत्र** या **योग का क्षय** हुआ है, उसे क्षय सहित दोनों नक्षत्रों (या योगों) को बारीक करके लिख दिया है। जहाँ तिथि, नक्षत्र या योग के आगे ६०।०० घड़ी लिखा है, उससे तिथि, नक्षत्रादि की वृद्धि समझें। वह तिथि, नक्षत्रादि अगले दिन तक व्याप्त रहेगा।

सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि। विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सर्वदा।।

पंचांगदिवाकर के तिथि, नक्षत्र, योग, ग्रह-नक्षत्र प्रवेश आदि की गणित **पं. पंकज शर्मा द्वारा विकसित Computer Programme** से की जाती है।

श्री गणेशाय नमः

संस्थापक : पं. देवीदयालु ज्योतिषी

श्री सरस्वत्यै नमः

स्वर्गीय : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी

स्वर्गीय : पं. चूनी लाल ज्योतिषी

अखिल भारतोपयोगी चित्रापक्षीय दृक् गणिताधारित

पंचाँग दिवाकर

कुम्भ महापर्व (हरिद्वार) विशेषांक

नया "राक्षस" नामक संवतसर पंचाँगदिवाकर के पाठकों के लिए शुभ एवं मंगलमय हो

वि. संवत् २०७८ (सन् 2021-22 ई.)

असली, शुद्ध एवं प्रामाणिक पंचाँग

राजा मंगल

मन्त्री मंगल

मशहूरे आलम

पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़ (लाहौर वाले)

लेखक एवं गणितकर्त्ता : पं. विवेक शर्मा (एम. ए. एल एल. बी.), सह-संपादक : पं. पंकज शर्मा (एम. कॉम)

सुपुत्रः स्वर्गीय पं. पन्ना लाल ज्योतिषी प्रपौत्र पं. देवी दयालु ज्योतिषी

(ज्योतिष, कर्मकाण्ड सम्बन्धी अनेक ग्रन्थों के यशस्वी लेखक)

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर-144008 (पं.) (भारत) फोन नं. 0181-2457959

गौरवशाली प्रकाशन वर्ष १४६ वाँ

स्थापित वि. संवत् १९३२

प्रकाशक : जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पं.)। मोबाईल 94172-91325, 97799-13583

Printed at : Choice Books & Printers (P) Ltd., Focal Point, Extension, Jalandhar.

विषय-सूची-पंचांगदिवाकर-संवत् २०७८ (सन् 2021-22 ई.)

इस वर्ष के कुछ नवीन, उपयोगी एवं आकर्षक विषय

आगामी वर्ष के आकर्षक विषय

- षड्वर्ग में नवमांश कुण्डली विचार व फल (इस वर्ष 'कुम्भ महापर्व' विशेषांक के कारण गतवर्ष में उद्घोषित यह विषय नहीं दिया जा सका)
- डोडा, किश्तवाड़, साम्बा (जम्मू-काश.) के दैनिक सूर्योदयास्त
- 'पितृ-पक्ष' में श्राद्ध के नियम आदि

पंचाँग दिवाकर के १४६वें गौरवमयी वर्ष प्रवेश पर

अनन्त श्री विभूषित

श्री श्री १००८ काशी धर्म पीठाधीश्वर जगद् गुरु शंकराचार्य स्वामी नारायणानन्द तीर्थ महाराज जी का शुभाशीर्वाद

भारतीय पञ्चाङ्ग पद्धतिरस्माकं हिन्दु-सभ्यताया: गौरवान्विताया: समृद्धयाश्च संस्कृतेर-भिव्यंजनां करोति।

शताधिकवर्षेभ्य: प्राक् गणिताचार्येण सु-प्रसिद्धेन ज्योतिर्विद पण्डित देवीदयाल महाभागेन लवपुरे संस्थापितं प्रकाशितं च प्रसिद्धं लोकप्रियं च पञ्चाङ्गदिवाकरम् आगामिवर्षे निज १२५तमे वर्षे प्रवेशं लभमानमस्ति। सम्प्रति तस्यैव पण्डितप्रवरस्य प्रपौत्र: गणिताचार्य: पण्डित पन्नालाल शर्मा ज्योतिर्विद् निज सुयोग्य पुत्र द्वयमाध्ययेन पञ्चाङ्ग कार्ये शुद्धस्फुटसूक्ष्म-गणितागत चित्रापक्षीय निरयणपद्धतिमनुसरन् पञ्चाङ्ग दिवाकरस्य लेखनं सम्पादनं च कुर्वन्नस्ति। नवीने पञ्चाङ्गदिवाकरे ज्योतिष व्रतपर्वादि धर्मशास्त्र विषयकानामु-पयोगिविषयानां च समावेशनात् पञ्चाङ्ग दिवाकर सम्प्रति सर्वविधर्मपरायण जनसामान्यस्य कृते सुतरामुपयोगी प्रतीयते।

आशस्यते यद् लोकहितं सम्मुखीनं कृत्वा निज कुल परम्परा परिपालने पण्डित पन्ना लाल ज्योतिर्विद् निज सुपुत्रयो: सहयोगेन पञ्चाङ्गमिदमतोऽप्यधिकं उपयोगिनं कर्तुं प्रयासरतो भविष्यति। अस्य प्रचुर: प्रचार: प्रसारश्च भवेत् अस्योन्नतिं सुतरां कामय-मान: शुभाशीरपि कामये। तिथौ वैशाख पूर्णिमा, भृगुवासर: प्रविष्टे १७ वैशाख, सं. २०५६ विक्रमी

श्री हस्त-मुद्रा-

१००८ स्वामी नारायणान्द तीर्थ रामेश्वर मठ: श्री काशी धर्म पीठाधीश्वर काशीक्षेत्रम्(वाराणसी)

कुम्भ महापर्व–हरिद्वार (14 अप्रैल, बुधवार, 2021 ई.)

[कुम्भ महापर्व की परम्परा, माहात्म्य, स्नान तिथियां एवं स्नान विधि आदि] [लेखक : पं. विवेक शर्मा]

'कुम्भ' पर्व की परम्परा

'कुम्भ-पर्व' की परम्परा भारत में अत्यन्त प्राचीन है। यह पर्व भारत की प्राचीन गौरवमयी वैदिक संस्कृति एवं सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता है। भगवान् आदि शङ्कराचार्य ने भी वैदिक काल से प्रचलित **'कुम्भ'**-पर्व की परम्परा का उद्धार एवं प्रचार किया, न कि स्वयं प्रारम्भ किया। यद्यपि भगवान् शंकराचार्य जी के कुम्भ-प्रवर्तक माने जाने के कारण ही आज भी कुम्भ पर्व मुख्यतः साधुओं का ही माना जाता है। वस्तुतः साधु-मण्डली ही कुम्भ का जीवन है। आज प्रत्येक गृहस्थ एवं साधु-महात्माओं को चाहिए कि पुनः भगवान् शंकराचार्य जी के सदुद्देश्य की पूर्त्ति में मनसा, वाचा, कर्मणा से प्रवृत्त होकर अपना और देश का कल्याण कर कुम्भ पर्व के महत्त्व को सुरक्षित रखें।

मूल रूप में **'कुम्भ'** पर्व की यह अत्यन्त प्राचीन परम्परा मनुष्य के द्वारा रत्न-ऐश्वर्य, सुख-आरोग्य, आत्म-ज्ञान, अमरत्व की इच्छा से जुड़ी हुई है। वेद, पुराण आदि प्राचीन धर्मशास्त्र मनुष्य की इन इच्छाओं से सम्बन्धित ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण हैं।

महाकुम्भ पर्व–मुख्य उद्देश्य

प्राचीनकाल से ही हमारी महान् भारतीय संस्कृति में तीर्थों के प्रति और उनमें होने वाले पर्व-विशेष के प्रति बहुत आदर तथा श्रद्धा-भक्ति का अस्तित्व विराजमान है। भारतीय संस्कृति में किसी पुण्य-पर्व, धार्मिक कृत्य, संस्कार, अनुष्ठान तथा उत्सव आदि के आयोजन मात्र प्रदर्शन, आत्मतुष्टि या मनोरंजन आदि की दृष्टि से नहीं किये जाते, अपितु प्रायः ऐसे धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों का मुख्य उद्देश्य होता है–**आत्मशुद्धि और आत्मकल्याण।**

सर्वश्रेष्ठ **'आत्म-ज्ञान'**-अमरत्व को समझने या समझाने के लिए ऋषियों-मुनियों ने कुम्भ-रूपी सुन्दर प्रतीक को हमारे सम्मुख रखा है। उदाहरण रूपी यह श्लोक देखिए–

अन्तः शून्यो बहिः शून्यः, शून्यः 'कुम्भ' इवाम्बरे।
अन्तः पूर्णो बहिः पूर्णः, 'पूर्ण'–कुम्भ इवार्णवे।।

अर्थात् जिस प्रकार एक खाली **'कुम्भ'** आकाश में हो, तो उसके भीतर तथा बाहर सर्वत्र आकाश ही रहता है तथा जल से पूर्ण **'कुम्भ'** समुद्र में डूबा हो तो उसके भीतर और बाहर सर्वत्र जल ही रहता है, उसी प्रकार इस जगत् में सर्वत्र तथा इसके बाहर भी सर्वश्रेष्ठ **'आत्मा'** ही है। **स्पष्ट है** कि कुम्भ-पर्व आत्मा, आत्म-ज्ञान जैसी सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति से जुड़ा हुआ है। आवश्यकता है कि इसके विविध पक्षों पर चिन्तन-मनन किया जाए।

अमृत–कुम्भ का स्वरूप

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्थिताः।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।

'कलश के मुख में विष्णु, कण्ठ में रुद्र, मूल भाग में ब्रह्मा, मध्यभाग में मातृगण, कुक्षि में समस्त समुद्र, पहाड़ और पृथ्वी रहते हैं और अङ्गों के सहित ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद भी रहते हैं।'

अमृत-कुम्भ की अवधारणा

धर्म के आधार पर ही समस्त मानव समाज प्रतिष्ठित है–**'धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा'**। धर्म ही सम्पूर्ण जगत् का आधार है। धर्म ने ही मानव-समाज को एकसूत्र में बाँध रखा है, जिसका एकमात्र मूलतत्त्व परमात्मतत्त्व ही है। वर्तमान समय में भी वसुधा के ओर-छोर तक किसी-न-किसी रूप में अखिलकोटि-ब्रह्माण्डनायक उस परम प्रभु की व्यापक शासन-शक्ति धर्मरूप से निर्बाध दृष्टिगोचर हो रही है।

इसी प्रकार हिन्दू धर्म का प्रतीक कुम्भपर्व है। कुम्भपर्व को एक महत्त्वपूर्ण और सार्वभौम महापर्व माना जाता है। इस दिव्य महापर्व के अवसर पर भारत से ही नहीं, अपितु विश्व के अनेक देशों से असंख्य धर्मपरायण श्रद्धालुगण एकत्र होकर श्रीगङ्गा जी में स्नान, दान, तपादि करके तथा वहाँ के समीपवर्ती तीर्थस्थल पर रहने वाले महात्माओं के अमृत वचनों का श्रवण करके धन्य होते हैं।

वस्तुतः **'कुम्भ'** शब्द का अर्थ साधारणतः घड़ा ही है, किन्तु इसके पीछे जनसमुदाय में पात्रता के निर्माण की रचनात्मक शुभभावना, मङ्गलकामना एवं जनमानस के उद्धार की प्रेरणा निहित है। यथार्थतः **'कुम्भ'** शब्द समग्र सृष्टि के कल्याणकारी अर्थ को अपने आप में समेटे हुए है।

कुम्भ-पर्व के सम्बन्ध में वेदों में अनेक महत्त्वपूर्ण मन्त्र मिलते हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि कुम्भ-पर्व अत्यन्त प्राचीन और वैदिक धर्म से ओत-प्रोत है–

जघान वृत्रं स्वधितिर्वनेव रुरोज पुरो अरदन्न सिन्धून्।
बिभेद गिरिं नवभिन्न कुम्भभा गा इन्द्रो अकृणुत स्वयुग्भिः॥ (ऋग्वेद)

'कुम्भ-पर्व में जाने वाला मनुष्य स्वयं दान-होमादि सत्कर्मों के फलस्वरूप अपने पापों को वैसे ही नष्ट करता है जैसे कुठार वन को काट देता है। जिस प्रकार गङ्गा-नदी अपने तटों को काटती हुई प्रवाहित होती है, उसी प्रकार कुम्भ-पर्व मनुष्य के पूर्व सञ्चित कर्मों से प्राप्त हुए शारीरिक पापों को नष्ट करता है और नूतन (कच्चे) घड़े की तरह बादल को नष्ट-भ्रष्ट कर संसार में सुवृष्टि प्रदान करता है।'

कालिक दृष्टि से ऐसे ग्रहयोग जो खगोल में लुप्त-सुप्त अमृत्व को प्रत्यक्ष और प्रबुद्ध कर देते हैं, चार स्थानों में बारह-बारह वर्ष पर अर्थात् द्वादश वर्षात्मक कालयोग से प्रकट होते हैं। तब **गङ्गा** (हरिद्वार), **त्रिवेणी जी** (प्रयाग), **शिप्रा** (उज्जैन) और **गोदावरी** (नासिक)–ये पतितपावनी नदियाँ अपनी जलधारा में **अमृतत्व** को प्रवाहित करती हैं। अर्थात् देश, काल एवं वस्तु तीनों अमृत के प्रादुर्भाव के योग्य हो जाते हैं। फलस्वरूप अमृतघट या कुम्भ का अवतरण होता है।

कालचक्र न केवल जीवन के क्रिया-कलाप का मूलाधार है, अपितु समस्त यज्ञकर्म, अनुष्ठान एवं संस्कार आदि भी कालचक्र पर आधारित हैं। कालचक्र में तथा समुद्र मंथन की कथा में **सूर्य, चन्द्रमा** एवं **देवगुरु बृहस्पति** का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन तीनों का योग ही कुम्भ-पर्व का प्रमुख आधार है। **स्कन्दपुराण के अनुसार, जिस समय बृहस्पति कुम्भ राशि पर स्थित हो और सूर्य मेष राशि पर रहे, उस समय गङ्गाद्वार (हरिद्वार) में कुम्भ-योग होता है–**

पद्मिनी-नायके मेषे कुम्भराशिगते गुरौ।
गङ्गाद्वारे भवेद्योगः कुम्भनामा तदोत्तमः॥ (स्कन्दपुराण)

अन्यत्र भी हरिद्वार में कुम्भ स्नान की महिमा के बारे में लिखा गया है कि–

'कुम्भ राशि में बृहस्पति हो तथा मेष राशि पर सूर्य हो तो हरिद्वार के कुम्भ में स्नान करने से मनुष्य पुनर्जन्म से रहित हो जाता है।'

कुम्भराशिं गते जीवे तथा मेषे गते रवौ।
हरिद्वारे कृतं स्नानं पुनरावृत्तिवर्जनम्॥

कुम्भ महापर्व का माहात्म्य एवं स्नान-दिनादि कुछ आगे जाकर लिखते हैं, पहले जिज्ञासुओं को कुम्भ-पर्व एवं समुद्र-मन्थन की कथा पढ़नी चाहिए–

कुम्भ पर्व क्यों मनाया जाता है ?

कुम्भ पर्व का प्रारम्भ कब से हुआ है, इसका ठीक-ठीक निर्णय करना कठिन है। वेदों में कुम्भपर्व का आधार सूत्रों-मन्त्रों में वर्णित है, जबकि पुराणों में चार कथाओं का उल्लेख मिलता है–जिनमें (1) भगवान् शिव एवं गङ्गा जी की कथा (2) महर्षि दुर्वासा की कथा (3) कद्रू-विनता की कथा और (4) समुद्र-मन्थन की कथा–ये प्रसिद्ध हैं। इनमें सर्वाधिक प्रचलित आख्यान समुद्र-मन्थन की कथा है।

कुम्भोत्पत्ति की अमरकथा–स्कन्दपुराण में वर्णित कथानुसार–दानवों से परास्त होने के बाद इन्द्रादि सम्पूर्ण देवता अग्नि को आगे करके ब्रह्मा जी की शरण में गए। वहाँ उन्होंने अपना सारा हाल ठीक-ठीक कह सुनाया। ब्रह्मा जी ने कहा–'तुम लोग मेरे साथ भगवान् की शरण में चलो।' तदनन्तर भगवान् विष्णु के निर्देशानुसार देवों तथा असुरों ने मिलकर संयुक्तरूप से **अमृत-कुम्भ** प्राप्ति के लिए क्षीरोद्सागर में **'मन्दराचल पर्वत'** एवं **'वासुकि'** नाग के द्वारा समुद्र-मन्थन किया जिससे पहले हलाहल में (1) **'विष'** उत्पन्न हुआ, जिसे देवताओं की प्रार्थना से शिव जी ने चुल्लू में भरकर पी लिया, जिसके प्रभाव से उनका कंठ नीला हो गया और वे नीलकण्ठ नाम से विख्यात हुए। हलाहल विष की ज्वालाओं के शान्त होने पर पुनः समुद्र मन्थन में से (2) पुष्पक विमान, (3) ऐरावत हाथी, (4) पारिजात वृक्ष, (5) नृत्यकला मे प्रवीण रम्भा, (6) कौस्तुभ-मणि, (7) द्वितीया का बाल चन्द्रमा, (8) कुण्डल, (9) धनुष, (10) धेनु (कामधेनु), (11) अश्व (उच्चैःश्रवा), (12) लक्ष्मी, (13) धनवन्तरि, (14) देव-शिल्पी विश्वकर्मा उत्पन्न हुए।

समुद्र-मन्थन से धन्वन्तरी जी शोभायमान कुम्भ-कलश लेकर प्रकट हुए जो मुख तक **'अमृत'** से पूर्णतया भरा हुआ था। भगवान् विष्णु की कृपा से वह अमृत-कुम्भ इन्द्र को प्राप्त हुआ। देवताओं के संकेत पर इन्द्रपुत्र 'जयन्त' अमृत कुम्भ को लेकर बड़े वेग से भागने लगे। दैत्यगण जयन्त का पीछा करने लगे। अमृत प्राप्ति के लिए देवताओं और राक्षसों के मध्य बारह दिव्य दिनों (मनुष्यों के बारह वर्ष) तक भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में **'अमृत-कुम्भ'** की रक्षा करते समय पृथ्वी के जिस-जिस स्थानों पर अमृत की बूँदे गिरी थीं, उस-उस स्थान **(प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक)** पर कुम्भ महापर्व मनाया जाता है। तत्पश्चात् मोहिनीरूपधारी भगवान् विष्णु ने दैत्यों को अमृत का भाग न देकर देवताओं को पिला दिया। इसलिए देवगण अमर हो गए।

पुराणानुसार 'अमृत-कुम्भ' की रक्षा में **बृहस्पति, सूर्य** व **चन्द्रमा** ने विशेष सहायता की थी। **'चन्द्रमा'** ने अमृत को कुम्भ से गिरने से, 'सूर्य' ने कुम्भ को फूटने से और 'बृहस्पति' ने असुरों द्वारा अमृत के अपहरण होने से तथा 'शनि' ने देवराज इन्द्र के भय से 'अमृत-कुम्भ' की रक्षा की थी। इसी कारण **सूर्य, चन्द्र** और **बृहस्पति**–तीनों ग्रहों के विशेष योग में ही **कुम्भ महापर्व** मनाया जाता है।

कुम्भ–महापर्व 11वें वर्ष क्यों ?

जिस समय में चन्द्रादि ग्रहों ने कलश की रक्षा की थी, उस समय की वर्तमान राशियों पर रक्षा करने वाले सूर्य-चन्द्रादि ग्रह जब वहीं आते हैं, उस समय कुम्भ का

वेदों में कुम्भपर्व का आधार सूत्रों-मन्त्रों में वर्णित है, जबकि पुराणों में चार कथाओं | राशियों पर रक्षा करने वाले सूर्य-चन्द्रादि ग्रह जब वहाँ आते हैं, उस समय कुम्भ का

योग होता है। अर्थात् जिस वर्ष, जिस राशि पर सूर्य, चन्द्रमा और बृहस्पति का संयोग होता है, उसी वर्ष, उसी राशि के योग में जहाँ-जहाँ अमृत-कुम्भ सुधा-बिन्दु गिरा था, वहाँ-वहां कुम्भ-पर्व होता है।

क्योंकि सन् 2021 ई. में वैशाख संक्रान्ति के समय सूर्य, चन्द्रमा मेष राशि में तथा बृहस्पति कुम्भ राशि में होंगे, **तदनुसार कुम्भ-महापर्व का मुख्य स्नान 14 अप्रैल, 2021 ई. को ही होगा।**

निष्कर्ष—वस्तुतः कुम्भ-पर्व केवल देव-दानवों के कुम्भ-कलश के लिए उत्पन्न झगड़े की कहानी नहीं है, अपितु इस पर्व के माध्यम से भारतीय संस्कृति और धर्म से अनुप्राणित सभी सम्प्रदायों के धर्मानुयायी एकत्रित होकर अपने समाज, धर्म एवं राष्ट्र की एकता, अखण्डता, अक्षुण्णता के लिए विचार-विमर्श करते हैं। स्नान, दान, तर्पण तथा यज्ञ का पवित्र वातावरण देवताओं को भी आकृष्ट किये बिना नहीं रहता। ऐसी मान्यता है कि इस महापर्व पर सभी देवगण तथा अन्य पितर-यक्ष-गन्धर्व आदि पृथ्वी पर उपस्थित होकर न केवल मनुष्यमात्र, अपितु जीवमात्र को अपनी पावन उपस्थिति से पवित्र करते रहते हैं।

शारीरिक निरोगता, लक्ष्य-प्रदात्री लक्ष्मी, कभी न नष्ट होने वाला '**अमृत**' यदि हमें प्राप्त करना है, तो सभी कामनाओं को मंथना होगा। मंथने के लिए चैतन्य रूपा **बुद्धि** व चैतन्यता को ढँकनेवाले '**मन**'—दोनों को लगाना होगा। इस मन्थन से मन को हरने वाले मनोहर रत्नों की प्राप्ति तो होगी ही, साथ ही '**आत्मा**' अर्थात् कुम्भ को दीप्ती करने वाली शक्ति '**अमृत**' की भी प्राप्ति होगी।

कुम्भ-महापर्व-हरिद्वार-मुख्य दिवस माहात्म्य
(14 अप्रैल, 2021 ई., बुधवार)

जैसा कि पूर्व-पृष्ठ पर बतलाया है कि-कुम्भ राशिस्थ बृहस्पति के समय जिस दिन सूर्यदेव मेष राशि में प्रवेश करते हैं, उस दिन हरिद्वार में कुम्भपर्व मनाया जाता है।

इस वर्ष (वि. संवत् 2078 में) 13 अप्रैल, 2021 ई. को भा.स्टैं.टा. अनुसार अर्द्धरात्रि के बाद 2 बजकर 33 मिनट पर (26:33) सूर्यदेव मेष राशि में प्रविष्ट होंगे। इस समय बृहस्पति कुम्भराशि में होगा, जो 5 अप्रैल, 2021 ई. को कुम्भ राशि में प्रवेश कर चुका है। इसलिए आगामी दिन (14 अप्रैल को) शास्त्रानुसार हरिद्वार में कुम्भ-महापर्व पर गंगा-स्नान, दान, जप का मुख्य पुण्यकाल होगा। मेष संक्रान्ति का पुण्यकाल 14 अप्रैल, 2021 ई. को हरिद्वार में मध्याह्न अर्थात् 12 बजकर 18 मिनट तक रहेगा।

यद्यपि संक्रान्ति का पुण्यकाल 16 घड़ी (6 घण्टे 24 मिनट) पहिले और 16 घड़ी बाद में माना जाता है-'**संक्रान्ति कालादुभयत्र नाडिकाः पुण्यामताः षोडशशोष्णगोः।**' अतएव एक मतानुसार 14 अप्रैल, 2021 ई. को संक्रान्ति प्रवेश 26घं.-33मिं. से 6 घण्टे 24 मिनट बाद प्रातः 8घं.-57मिं. तक गंगा स्नान-जप-दान का विशेष महत्त्व रहेगा।

परन्तु अन्य मतानुसार यदि आधी रात से पूर्व संक्रान्ति हो, तो पहिले दिन उत्तरार्द्ध (तीसरे प्रहर से) में पुण्यकाल होता है। तथा यदि अर्द्धरात्रि के उपरान्त संक्रान्ति प्रवेश हो, तो दूसरे दिन का पूर्वार्द्ध (दिनमान का प्रथम अर्द्धभाग) पुण्यकाल होगा।

'निशीथतोऽर्वाग परत्र संक्रमे पूर्वा पराहान्तिम पूर्व भागयोः।'

धर्मसिन्धु अनुसार भी-'**मध्यरात्रात् परतः संक्रान्तौ परदिनस्य पूर्वार्द्ध पुण्यम्।**' (अर्थात् यदि संक्रान्ति अर्द्धरात्रि के बाद हो तो उसका पुण्यकाल दूसरे दिन के पूर्वार्द्ध में रहता है।

➾ तदनुसार मेष संक्रान्ति का पुण्यकाल 14 अप्रैल, 2021 ई. को पूर्वार्द्ध काल 12 बजकर 18 मिनट तक माना जाएगा। अतः हरिद्वार के कुम्भ-महापर्व पर एकत्रित श्रद्धालु लोगों को 14 अप्रैल, सन् 2021 ई. को मेष संक्रान्ति के पुण्यकाल में (सूर्योदय से पहिले अरुणोदय-काल से लेकर दोपहर 12 बजकर 18 मिनट तक) हरिद्वार में स्नान, जप, पाठ, तर्पण करने का प्रयास करना चाहिए।

अतः शास्त्र-निर्देश एवं प्रचलित मान्यतानुसार हरिद्वार के इस कुम्भ-पर्व का वास्तविक योग 14 अप्रैल, 2021 ई. को मेष संक्रान्ति के पुण्यकाल में ही बन रहा है। **प्रमुख शाही स्नान भी 14 अप्रैल को ही होगा।** (जिसमें पूज्य जगद्गुरु शंकराचार्य तथा विभिन्न अखाड़ा परिषद् के साधु-सन्त अपने-अपने निर्धारित समय के अनुसार गंगा-माँ की धारा में स्नान करते हैं।)

सन् 2021 ई. में हरिद्वार कुम्भ-महापर्व की पुण्य स्नान-तिथियाँ

कुम्भ-महापर्व के स्नान-दान, जपानुष्ठान का पुण्यार्जन करने एवं सिद्ध महात्माओं के समागम एवं दर्शन का विशेष पुण्यलाभ प्राप्त करने हेतु धर्मपरायण अनेक श्रद्धालु लोग कुम्भ पर्व के प्रमुख स्नान दिन से लगभग तीन मास पूर्व ही श्रीगङ्गा जी (हरिद्वार, कनखल, ऋषिकेश, काशी आदि) के निकटतम स्थानों पर अस्थाई तौर पर निवास करना शुरु कर देते हैं। स्नान-दान, जपानुष्ठानादि की दृष्टि से प्रविष्टे 2 वैशाख, अर्थात् 14 अप्रैल, बुधवार, 2021 ई. से पूर्व एवं पश्चात् की कुछ महत्त्वपूर्ण तिथियों का वर्णन किया जा रहा है, जो प्रमुख स्नान की भान्ति ही पुण्यदायक होंगी। इन स्नान-तिथियों को कुम्भ-पर्व का ही अङ्ग माना गया है, जो इस प्रकार हैं-

(1) मकर संक्रान्ति (14 जनवरी, गुरुवार)—इस दिन सूर्य मकर राशि में प्रातः 8घं.-41मिं. पर प्रवेश करेंगे। यह निरयण उत्तरायण दिन है। अतएव यह दिन संक्रमण काल होने से स्नान-दान के लिए पुण्यदायक होता है। सरकार एवं कुम्भ-उत्सव (पर्व) कमेटी द्वारा इस दिन से ही कुम्भ-महापर्व (हरिद्वार) का विधिवत् श्रीगणेश किया जाएगा। यह कुम्भ-महापर्व का **प्रथम प्रमुख स्नान पर्व होगा।**

(2) पौष पूर्णिमा (28 जनवरी, गुरुवार)—इस दिन गुरुपुष्य योग भी होने से यह दिन भी स्नान-दान हेतु महत्त्वपूर्ण है।

(3) मौनी अमावस्या (महोदय योग) (11 फरवरी, गुरुवार)–यह दिन भी कुम्भ-महापर्व (हरिद्वार) का **द्वितीय प्रमुख स्नान पर्व** होगा। इस दिन **'महोदय'** नामक योग भी होने से (14घं.-05मिं. तक) स्नान का माहात्म्य और भी बढ़ जाएगा। इस दिन कुम्भ स्नान, दान आदि के साथ पितृ-तर्पण, श्राद्ध का विशेष माहात्म्य होगा। इस दिन स्नान-दान का माहात्म्य सूर्यग्रहण के समान माना गया है।

(4) फाल्गुन संक्रान्ति (12 फरवरी, शुक्रवार)

(5) वसन्त पंचमी (16 फरवरी, मंगलवार)–माँ सरस्वती व लक्ष्मी पूजन दिवस का यह शुभ दिवस भी कुम्भ-महापर्व (हरिद्वार) का **तृतीय प्रमुख स्नान पर्व** तिथि दिन होगा।

(6) आरोग्य (रथ) सप्तमी (19 फरवरी, शुक्रवार)–पूर्वारुणोदय वाली–प्राणिमात्र की जीवनशक्ति को जीवित रखने वाले प्रत्यक्ष ईश्वर सूर्य-नारायण ने मन्वन्तर के आदि में इसी दिन अपना प्रकाश प्रकाशित किया था। अतः स्वस्थ शरीर की कामना हेतु इस दिन गंगा में स्नान कर भगवान् सूर्य का पूजन-अर्घ्य देकर एवं दीपक बहाना चाहिए। विशेष समय सूर्योदय पूर्व अरुणोदयकाल (लगभग 1घं.-36मिं. पहिले से) है।

(7) भीष्माष्टमी (20 फरवरी, शनिवार)–इस दिन कुम्भ-महापर्व के शुभ अवसर पर गंगास्नान के पश्चात् बाल ब्रह्मचारी भीष्म पितामह का श्राद्ध अथवा तर्पण करने से अभीष्ट सिद्धि तथा गुणवान सन्तति की प्राप्ति होती है। **'वसूनामवताराय शंतनोरात्मजाय च। अर्घ्यं ददामि भीष्माय आबाल्य-ब्रह्मचारिणे।।'** इस मन्त्र से अर्घ्य दें।

(8) माघी-पूर्णिमा (27 फरवरी, शनिवार)–तीर्थनगरी हरिद्वार के कुम्भ-पर्व का **चतुर्थ महान् 'प्रमुख स्नान पर्व'** 27 फरवरी, 2021 ई., शनिवार वाले दिन माघी पूर्णिमा की पवित्र तिथि पर मनाया जाएगा। **'मघा'** नक्षत्र से सम्बन्धित होने के कारण इस मास का नाम **'माघ'** पड़ा है। इस नक्षत्र के अधिष्ठातृ देवता 'पितर-गण' है। माघ स्नान का अनुष्ठान करने वाले के लिए यह आवश्यक है कि वह 'पौष' पूर्णिमा को स्नान कर **'माघ'** व्रत का प्राम्भ करें और माघ पूर्णिमा को स्नान कर व्रत का समापन करें। कुछ लोग मकर-संक्रान्ति से भी माघ-स्नान का सङ्कल्प लेते हैं और फाल्गुन संक्रान्ति या महाशिवरात्रि के स्नान से इस महद् अनुष्ठान को पूर्ण करते हैं।

जब सामान्य वर्ष के माघ-स्नान की इतनी गरिमा है, तो बारह वर्ष बाद जिस माघ मास में **'कुम्भ'** का अङ्गभूत दुर्लभ पर्व मनाया जा रहा हो, उसके माहात्म्य का वर्णन कौन कर सकता है। स्नान का मुख्य समय **'अरुणोदय-काल'** (सूर्योदय से लगभग 1घं.-36मिं. पूर्व) रहता है।

(9) श्रीमहाशिवरात्रि-व्रत-दिवस (11 मार्च, गुरुवार–(प्रथम शाही-स्नान)–यह कुम्भ महापर्व का विशेष स्नान-दिन है। **इस दिन प्रथम शाही-स्नान** होगा, जिसमें दशनाम सम्प्रदाय (अखाड़े) के संन्यासी इसी दिन स्नान करते हैं। इस पुण्यतिथि के दिन प्रातः अरुणोदय काल में गंगा-स्नान, तदुपरान्त शिवपूजन करना अत्यन्त शुभ एवं पुण्यदायी रहता है। सायं-सन्ध्याकाल (प्रदोषकाल) में पुनः स्नान करके चार प्रहर रात्रि पर्यन्त भगवान् शिव का पूजन करें तो महापुण्य होता है।

(10) फाल्गुन (शनैश्चरी) अमावस (13 मार्च, शनिवार)–अमावस्या पितरों की तिथि है। अतः कुम्भ पर्व की इस पुण्य-स्नान तिथि के अवसर पर गङ्गा-स्नान के पश्चात् पितरों के निमित्त तर्पण, श्राद्ध करने से अक्षय पुण्य प्राप्त होता है। पुनः फाल्गुन अमावस्या शनिवारी होने से कुम्भ पर्व स्नान हेतु विशेष पुण्यदायी रहेगी।

(11) चैत्र संक्रान्ति (14 मार्च, रविवार)–चैत्र सं. का पुण्यकाल दोपहर 11घं.-39मिं. बाद से सारा दिन रहेगा। यद्यपि प्रातः अरुणोदय एवं सूर्योदय समय गङ्गा-स्नान का महत्त्व तो रहेगा ही।

(12) महाविषुव दिन (20 मार्च, शनिवार)

(13) वारुणी पर्व (8/9 अप्रैल, गुरु/शुक्र)–वारुणी पर्व दिन स्नान-दान और जपादि के लिए इस योग का माहात्म्य अनेक ग्रहणों के तुल्य माना जाता है। ता. 8 अप्रैल, 2021 ई. की मध्यरात्रि के बाद 27घं.-16मिं. से 28घं.-57मिं. तक वारुणी योग रहेगा। इस योग के समय गंगास्नान आदि का फल सौ सूर्यग्रहणों के समान माना गया है। इस वारुणी योग में श्रद्धालु जनों को गंगास्नान द्वारा यह उत्तम पुण्यफल अर्जित करना चाहिए।

(14) चैत्र अमावस/सोमवती अमावस (12 अप्रैल, सोमवार)–यह भी कुम्भ-महापर्व का विशेष स्नानदिन है। इस दिन कुम्भ पर्व का **द्वितीय शाही स्नान होगा**, जिसमें षड्दर्शन के संन्यासी स्नान करते हैं। स्नान, दान के पश्चात् पितृतर्पण, श्राद्ध करने का महानतम पुण्य होगा।

(15) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, नवरात्र एवं नवसंवत् प्रारम्भ (13 अप्रैल, मंगलवार)–नवसंवत्सर के आरम्भ में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा अत्यन्त पवित्र तिथि है। इसी तिथि से पितामह ब्रह्मा ने सृष्टि निर्माण प्रारम्भ किया था।

(16) मेष संक्रान्ति पुण्यकाल (14 अप्रैल, बुधवार)–**कुम्भ-महापर्व (हरिद्वार) का प्रमुख स्नानतिथि है, तृतीय (प्रमुख) शाही स्नान होगा।** यद्यपि वैशाख संक्रान्ति का प्रथम दिन 13 अप्रैल को है, परन्तु संक्रान्ति प्रवेश 13 अप्रैल की मध्यरात्रि के बाद होने से संक्रान्ति पुण्यकाल (जैसाकि गतपृष्ठ पर स्पष्ट कर चुके हैं।) अगले दिन रहेगा। तदनुसार **प्रमुख कुम्भ स्नान 14 अप्रैल को ही होगा।** इसी दिन षड्दर्शन के शंकराचार्यादि सन्त महात्मा (संन्यासी, उदासीन, निर्मल, वैष्णव, अग्नि व खालसे अखाड़े) अपने शिष्यों सहित प्रमुख शाही यात्रा निकालकर गङ्गा-स्नान करेंगे। इसदिन हरिद्वार में सूर्योदय 5घं.-55मिं. से लगभग 1घं.-36मिं. पहिले प्रातः 4 बजकर 19 मिनट से अरुणोदय काल प्रारम्भ हो जाएगा। अरुणोदय समय

(4घं.-19मिं.) से कुम्भ-पर्व का स्नान माहात्म्य प्रारम्भ हो जाएगा। जोकि दोपहर 12

स्नान)–यह कुम्भ महापर्व का विशेष स्नान दिन है। इस दिन प्रथम शाही-स्नान प्रातः 4 बजकर 19 मिनट से अरुणोदय काल प्रारम्भ हो जाएगा। अरुणोदय समय

(4घं.-19मिं.) से कुम्भ-पर्व का स्नान माहात्म्य प्रारम्भ हो जाएगा। जोकि दोपहर 12 बजकर 18 मिनट तक रहेगा।

(17) श्रीरामनवमी (21 अप्रैल, बुधवार)–मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की जन्मतिथि नवमी के दिन स्नान-जप आदि के लिए अत्यन्त शुभ है। यह तिथि कुम्भ-पर्व की पंचम (प्रमुख) स्नान पर्व तिथि होगी।

(18) चैत्र पूर्णिमा (27 अप्रैल, मंगलवार)–यह तिथि महत्त्वपूर्ण है। कुम्भ-महापर्व (हरिद्वार) का **चतुर्थ (अन्तिम) शाही स्नान इस दिन होगा**। इसी दिन से वैशाख स्नान भी प्रारम्भ होंगे।

(19) वैशाख (भौमवती) अमावस (11 मई, मंगलवार)

(20) अक्षय तृतीया एवं भगवान् परशुराम जयन्ती (14 मई, शुक्रवार)

(21) ज्येष्ठ संक्रान्ति (14 मई, शुक्रवार)–सूर्य संक्रमण काल स्नान-दान-जप आदि हेतु अत्यन्त पुण्यप्रद है। संक्रान्ति का पुण्यकाल 14 मई के मध्याह्न बाद से अगले दिन 15 मई की प्रात: 6घं.-00मिं. तक विशेष रुपेण रहेगा।

(22) आद्यगुरु श्री शंकराचार्य जयन्ती (17 मई, सोमवार)

(23) श्रीगंगा-जन्म (18 मई, मंगलवार)–मध्याह्न व्यापिनी गंगा-जयन्ती होने के कारण इस दिन गंगा-स्नान, दानादि हेतु शुभ समय दोपहर 12घं.-33मिं. से संध्याकाल तक रहेगा।

(24) वैशाख-पूर्णिमा (26 मई, बुधवार)–यह कुम्भपर्व (हरिद्वार) की अन्तिम स्नान तिथि होगी। इसके साथ ही माघ मास से चले आ रहे कुम्भ-महापर्व की समाप्ति होगी।

जो श्रद्धालु जन इन उपरोक्त स्नान तिथियों पर गंगास्नान से वंचित रह जाएँ, वे माघ मास से वैशाख मास पर्यन्त प्रत्येक पक्ष की एकादशी तिथियों पर भी स्नान, दान कर पुण्यलाभ अर्जित कर सकते हैं।

❁ कुम्भ-महापर्व पर स्नान-दान, जपादि की महिमा ❁

14 अप्रैल, बुधवार को ब्रह्म-मुहूर्त्त एवं अरुणोदयकाल से ही कुम्भ के पावन पर्व पर सहस्त्रों की संख्या में सन्त, महात्मा, नागा संन्यासी एवं विभिन्न अखाड़ों के अनुयायी सन्त, शिष्य तथा करोड़ों श्रद्धालु जन हरिद्वार की हरकी-पौड़ी पर स्नान, दान, जप, होमादि करके पुण्यार्जन करेंगे।

हिन्दू-धर्मशास्त्र कुम्भ-पर्व की महिमा से भरे पड़े हैं।

स्कन्दपुराणानुसार–**तान्येव यः पुमान् योगे सोऽमृतत्वाय कल्पते।**
देवा नमन्ति तत्रस्थान् यथा रङ्का धनाधिपान्।।

'जो मनुष्य कुम्भ योग में स्नान करता है, वह अमृतत्व (मुक्ति) की प्राप्ति करता है। जिस प्रकार दरिद्र मनुष्य सम्पत्तिशाली को नम्रता से अभिवादन करता है, उसी प्रकार कुम्भ-पर्व में स्नान करने वाले मनुष्य को देवगण नमस्कार करते हैं।

श्रीविष्णु पुराणानुसार–**अश्वमेघ सहस्त्राणि वाजपेयशतानि च।**
लक्षं प्रदक्षिणा भूमेः कुम्भस्नानेन तत्फलम्।।

अर्थात्–'सहस्त्रों अश्वमेघ-यज्ञ करने से, सैंकड़ों वाजपेय-यज्ञ करने से और लाख बार पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने से जो फल प्राप्त होता है, वह पुण्य-फल केवल कुम्भ-स्नान से प्राप्त होता है।

वैशाख (मेष) संक्रान्ति पर तो गंगा स्नान-दानादि की विशेष महिमा कही गई है–

धन्यानां पुरुषाणां हि गङ्गाद्वारस्य दर्शनम्।
विशेषतस्तु मेषार्के संक्रमेऽतीव पुण्यदे।।

कुम्भ-पर्व पर गंगा स्नान की विधि एवं दान का महत्त्व

प्रातःकाल उठकर सर्वप्रथम अपने इष्टदेव का स्मरण करना चाहिए, उसके पश्चात् शौचादि क्रियाओं से निवृत्त होकर कुम्भ-पर्व-पुण्यसूचक श्लोकों का उच्चारण करें। कुम्भ-पर्व के प्रमुख स्नान के दिन (14 अप्रैल, 2021 ई. को) अरुणोदयकाल में ही किसी भी गङ्गा-तट पर जाकर अथवा गृह (जहाँ अस्थायी निवास कर रहे हों) में ही सर्वप्रथम गङ्गा जी का ध्यान प्राणायाम करके निम्नलिखित सङ्कल्प करें–

'ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे उत्तराखण्ड राज्यान्तर्गते हरिद्वार तीर्थनगरे गङ्गातीरे (अमुक) क्षेत्रे राक्षस-नामसंवत्सरे मेषसंक्रान्तिपर्वणि, कुम्भस्थे गुरौ, चैत्र शुक्ल द्वितीयायां तिथौ, बुधवासरे अमुकगोत्रः अमुक-नामाऽहम् श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलप्राप्त्यर्थं अद्यावधि ज्ञाताज्ञात सकल पापानां मार्जनाया (गङ्गायाः–श्रीशिवस्य च षोऽशोपचारपूजनं विधाय–अगर गंगा और भगवान् शिव का षोडशोपचार पूजन करना हो तो) पावन गङ्गा-धारायां कुम्भस्नानं करिष्ये।'

तदनन्तर यथासमय कुम्भ-स्नानार्थ गङ्गा आदि पवित्र नदी में जाकर अपने दोनों हाथों द्वारा कुम्भ-मुद्रा (कलश-मुद्रा) बनाकर उसमें अमृत की भावना कर निम्नलिखित श्लोकों को पढ़ता हुआ स्नान करें–

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भविधृतो विष्णुना स्वयम्।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।

आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं स्नानं कर्त्तुमीहे जलोद्भव॥
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।

स्नान एवं मन्त्रोच्चारण के बाद सन्ध्या-तर्पणादि से निवृत्त होकर श्रीगणेश पूजन सहित कुम्भ (कलश) स्थापित करें। तदोपरान्त श्रद्धा-भक्ति से कुम्भ को षोडशोपचारपूर्वक पूजन करें। तत्पश्चात् एक, चार, ग्यारह आदि यथाशक्ति सुवर्ण, चाँदी, पीतल या ताम्र कलशों में घृत भरकर वस्त्र, फल, गुड़ादि मिष्ठान्न एवं दक्षिणा संकल्पपूर्वक किसी सुपात्र विद्वान् ब्राह्मण को दान दें। इस कुम्भ-पर्व के पर्वदेव (आराध्यदेव) भगवान् शिव एवं गंगा हैं। अतः भगवान् शिव की षोडशोपचार पूजा करके भगवती गंगा की पुष्प अर्पण करते हुए स्नान करें। यदि किसी कारणवश पूजन न भी हो सके, तो मानसिक पूजा ही उस समय कर लेनी चाहिए।

कुम्भ-पर्व के समय यथाविधि घृतपूर्ण कुम्भ का पूजन कर, उसे वस्त्रालंकार, आभूषण, सुवर्ण-चाँदी या केवल मुद्रा सहित सदाचारी ब्राह्मण या विद्वान को संकल्पपूर्वक देने से सैंकड़ों गोदान करने का फल मिलता है। कुम्भ पर्व पर साधु-महात्माओं को भोजन खिलाना व दक्षिणा देने से आत्म-कल्याण के साथ-साथ पितरों की भी तृप्ति होती है।

गंगा जी में वर्ज्य कार्य (कर्म)

परम कल्याणमयी एवं पतितपावनी गंगा को स्वच्छ रखने का प्रयास प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिए। गंगाजल औषधिस्वरूप तथा साक्षात् नारायण ही वैद्य का रूप है। पुण्यतोया भगवती गंगा के निकट जाकर विशेषरुप से निम्नलिखित चौदह कार्य कभी नहीं करने चाहिए—(1) समीप में शौच (2) गंगाजी में आचमन (कुल्ला) (3) बाल झाड़ना (4) निर्माल्य (भगवान् को चढ़ी हुई पूजा-सामग्री) डालना (5) मैल छुड़ाना (6) शरीर मलना (7) क्रीडा करना (8) दान लेना (9) रतिक्रिया (10) दूसरे तीर्थ के प्रति अनुराग (11) दूसरे तीर्थ की महिमा गाना (12) कपड़ा धोना या छोड़ना (13) जल पीटना (14) तैरना [ब्रह्माण्डपुराण]

कुम्भ महापर्व (हरिद्वार) का माहात्म्य
देश की सांस्कृतिक संजीवनी

सप्त पुरियों में से मायापुरी हरिद्वार के विस्तार के भीतर आ जाती है। [**मोक्षदायनी संप्तपुरियां ये हैं—1. काशी, 2 काँची, 3. मायापुरी (हरिद्वार), 4. अयोध्या, 5. द्वारका 6. मथुरा 7. उज्जैन**)।] हरिद्वार में प्रति बारहवें वर्ष कुम्भ तथा छठे वर्ष अर्धकुम्भ पर्व आता है। इस तीर्थ को हरद्वार, हरिद्वार, गङ्गाद्वार, कुशावर्त आदि नामों से भी जाना जाता है। मायापुरी, हरिद्वार, कनखल, ज्वालापुर और भीमगोड़ा-इन पाँच पुरियों को मिलाकर हरिद्वार कहा जाता है।

गंगा, गीता, गायत्री, गोविन्द और गौ—ये पाँच सनातन आर्यधर्म के मूल आधार कहे जाते हैं। इस भारत देश को इसके नाम से ही पहचाना जाता है—'**जिस देश में गंगा बहती है, वह देश है यह।**' इस प्रकार की पहचान देने वाले ऐसे बहुत कम नाम हैं। इस नदी ने करोड़ों भारतीयों को देवी के रूप में, गंगामैया के रूप में, तीर्थों की जननी के रूप में, जन्म से लेकर मृत्यु तक अपनी उपस्थिति के एहसास से उपकृत किया है और देश को एक भावना के सूत्र में पिरो दिया है।

राजा भगीरथ के पीछे चलने वाली अलकनन्दा गङ्गा सहस्रों पर्वतों को विदीर्ण करती हुई जहाँ भूमि पर उतरी हैं, जहाँ पूर्वकाल में दक्षप्रजापति ने यज्ञेश्वर भगवान् विष्णु का यजन किया है, वह पुण्यदायक क्षेत्र (**हरिद्वार**) ही गङ्गाद्वार है, जो मनुष्यों के समस्त पातकों का नाश करने वाला है। पिनाकपाणि भगवान् शङ्कर को छोड़कर अन्य सभी देवताओं को निमन्त्रित किया गया था। देवताओं की यज्ञोत्सव में जाते हुए कैलासवासिनी देवी सती ने उनकी बातें सुनीं। सती ने महादेव जी से उस उत्सव में चलने की प्रार्थना की। उनकी बात सुनकर **भगवान् शिव ने कहा**—'देवि ! वहाँ जाना कल्याणकर नहीं होगा।' किन्तु सती जी अपने पिता का यज्ञोत्सव देखने के लिए चल दीं। सतीदेवी वहाँ पहुँच तो गयीं, परन्तु किसी ने उनका स्वागत-सत्कार नहीं किया। तब सती ने वहाँ अपने प्राण त्याग दिये। अतः वह स्थान एक उत्तम क्षेत्र बन गया। जो उस तीर्थ में स्नान करके देवताओं और पितरों का तर्पण करते हैं, वे देवी के अत्यन्त प्रिय होते हैं। वे भोग और मोक्ष के प्रधान अधिकारी हो जाते हैं।

तदनन्तर देवर्षि नारद से अपनी प्रिया सती जी के प्राण-त्याग का समाचार सुनकर भगवान् शङ्कर ने वीरभद्र को उत्पन्न किया। वीरभद्र ने सम्पूर्ण प्रथमगणों के साथ उस यज्ञ का नाश कर दिया। फिर ब्रह्मा जी की प्रार्थना से तुरन्त प्रसन्न होकर भगवान् शङ्कर ने उस विकृत यज्ञ को पुनः सम्पन्न किया। तब से वह अनुपम तीर्थ सम्पूर्ण पातकों का नाश करने वाला हुआ। उस तीर्थ में विधिपूर्वक स्नान करके मनुष्य मनोवांछित कामनाएँ पूर्ण कर लेता है। जहाँ दक्ष तथा देवताओं ने भगवान् विष्णु का स्तवन किया था, वह स्थान हरितीर्थ के नाम से प्रसिद्ध है। जो मनुष्य इस हरिपदतीर्थ (हरिकी-पौड़ी) में विधिपूर्वक स्नान करता है, वह भगवान् विष्णु का प्रिय और भोग तथा मोक्ष का प्रधान अधिकारी होता है। इसके पूर्व में त्रिगङ्ग नाम से विख्यात क्षेत्र है, जहाँ सब लोग त्रिपथगा गङ्गा का साक्षात् दर्शन करते हैं। वहाँ स्नान करके देवताओं, ऋषियों, पितरों और मनुष्यों का श्रद्धापूर्वक तर्पण करने वाले पुरुष स्वर्गलोक में देवता की भान्ति आनन्दित रहते हैं।

इसी प्रकार पश्चिम में भगवान् कोटीश्वर, उत्तर में सप्तगङ्ग (सप्तसरोवर), भीमस्थल (भीमगोडा)—में जाकर जो पुण्यात्मा पुरुष स्नान करता है, वह इस लोक में उत्तम भोग भोगकर शरीर का अन्त होने पर स्वर्गलोक में जाता है।

गंगास्नान की धार्मिक एवं आध्यात्मिक महिमा

किं बहुना इस तीर्थ का माहात्म्य वर्णनातीत है। **पद्मपुराण और नारदादि पुराण** हरिद्वार की महिमा से भरे पड़े हैं। पुराणों के कुछ वाक्य हैं–

शृणु नारद वक्ष्यामि लोकानां मुक्तिकारणम्।
सकृत्स्नानं तु यैर्मर्त्यैर्गङ्गाद्वारे शुभावहे।।
न तेषां पुनरावृत्तिः कल्पकोटिशतैरपि।।

स्कन्द नारद से कहते हैं कि–'हे नारद ! मैं तुम्हें मनुष्यों की मुक्ति का एक उपाय बताता हूँ, जो लोग एक बार भी श्रीहरिद्वार में गङ्गास्नान करते हैं वे फिर संसार में जन्म नहीं लेते, चाहे करोड़ों कल्प बीत जायें।'

तिस्रः कोट्योऽर्द्धकोटी च तीर्थानां मुनिसत्तम।
भजन्ते सन्निधिं तत्र स्नातः सर्वत्र जायते।।

'हे मुने ! साढ़े तीन करोड़ तीर्थ हरिद्वार तीर्थ में निवास करते हैं। जिसने हरिद्वार तीर्थ में स्नान किया, उसने समस्त तीर्थों में स्नान किया।'

कुशावर्तं महातीर्थं दक्षिणे ब्रह्मतीर्थतः।
स्नानं दानं जपो होमः स्वाध्यायः पितृतर्पणम्।।
यदत्र क्रियते कर्म तत्तत्स्यात्कोटिसंख्यकम्।।

'ब्रह्मकुण्ड से दक्षिण की ओर (एक फर्लाङ्ग की दूरी पर) कुशावर्त नामक महातीर्थ है। यहाँ स्नान, दान, जप, होम, वेदादि पाठ, श्राद्ध तथा तर्पण आदि जो कुछ किया जाता है, वह करोड़ों गुना अधिक होता है।'

स्वर्गद्वारेण तत् तुल्यं गङ्गाद्वारं न संशयः।
तत्राभिषेकं कुर्वीत कोटितीर्थे समाहितः।।
लभते पुण्डरीकं च कुलं चैव समुद्धरेत्।
तत्रैकरात्रिवासेन गोसहस्रफलं लभेत्।।
सप्तगङ्गे त्रिगङ्गे च शक्रावर्ते च तर्पयन्।
देवान् पितृंश्च विधिवत् पुण्ये लोके महीयते।।
ततः कनखले स्नात्वा त्रिरात्रोपोषितो नरः।
अश्वमेधमवाप्नोति स्वर्गलोकं च गच्छति।

'**हरिद्वार स्वर्ग के द्वार के समान है।** इसमें संशय नहीं है। वहाँ जो एकाग्र होकर कोटितीर्थ में स्नान करता है, उसे पुण्डरीक-यज्ञ का फल मिलता है तथा वह अपने कुल का उद्धार कर देता है। वहाँ एक रात निवास करने से सहस्र गोदान का फल मिलता है। सप्तगङ्गा, त्रिगङ्गा और शक्रावर्त में विधिपूर्वक देवर्षि-पितृतर्पण करने वाला पुण्यलोक में प्रतिष्ठित होता है। तदनन्तर कनखल में स्नान करके तीन रात उपवास करे। ऐसा करनेवाला अश्वमेघ-यज्ञ का फल पाता है और स्वर्गगामी होता है।'

इस प्रकार पुण्यतोया गंगा का अनिर्वचनीय माहात्म्य है। भव के जीवों को भवसागर से पार करने की अद्भुत शक्ति गंगा में भरी पड़ी है। तापत्रय-विनाशिनी गंगा मोक्षदायिनी भी है। इनके दर्शन, स्पर्श, पान, नामोच्चारण तथा स्मरणमात्र से ही प्राणी सर्वपापों से तत्काल मुक्त हो जाते हैं। दैहिक, दैविक और भौतिक ताप तत्क्षण उपशम को प्राप्त होते हैं।

दर्शनात् स्पर्शनात् पानात् तथा गङ्गेति कीर्तनात्।
स्मरणादेव गङ्गायाः सद्यः पापात् प्रमुच्यते।।

गंगास्नान की महिमा सचमुच विलक्षण ही प्रतीत होती है। भव-बन्धनादि संकटों से तो निवृत्ति का यह अत्यन्त सुगम साधन है। जो व्यक्ति कुम्भ महापर्व पर कुशावर्त (कुशा-घाट) में स्नान-दानादि कर पितरों का श्राद्ध-तर्पण करता है, वह **पितृऋण** से मुक्त होकर अक्षयसुख की प्राप्ति करता है। अतएव इस महापर्व पर हरिद्वार जाने वाले धर्मनिष्ठ लोगों को चाहिए कि वे सर्वप्रथम स्नानादि से निवृत्त होकर कुतुपकाल (**अपराह्णकाल**) में अपने पूज्य पूर्वजों को तीर्थ-पिण्ड दान अवश्य करें।

कुम्भ–महापर्व का अमृत सन्देश

अमृत कुम्भ-पर्व मनुष्य जीवन में कई प्रकार से अमृतत्व का संचार करता है। ज्ञान के द्वारा बुद्धि में, श्रद्धा के द्वारा मन में, पवित्रता (स्नानादि) के द्वारा शरीर में, दान के द्वारा धन में और वासना-शोधन के द्वारा समस्त लोक-व्यवहार में एक उच्च कोटि का प्रकाश भर देता है, जिससे मनुष्य जीवन उज्ज्वल बनकर कर्त्तव्य पथ की ओर अग्रसर हो सके। अमृतत्व-प्राप्ति का वास्तविक तात्पर्य है–जीवन की पूर्णता अर्थात् मानव-जीवन का सर्वाङ्गीण विकास। यह प्रत्येक देश में, प्रत्येक काल में, प्रत्येक मनुष्य के लिए अपेक्षित है।

मानव-जीवन में आलोक और अन्तः चेतना का सञ्चार करने वाला यह एक ऐसा महान् सांस्कृतिक समागम है, जो न केवल आध्यात्मिक चेतना, अपितु राष्ट्रीय चेतना, एकता और अखण्डता का आधार-स्तम्भ भी है। विराट् महाकुम्भ-पर्व का यह आध्यात्मिक, दार्शनिक तथा सांस्कृतिक महत्त्व एवं उद्देश्य मानवमात्र में विश्व-बन्धुत्व, विश्वप्रेम की शुभ भावना के साथ जीवन के नैतिक मूल्यों तथा आदर्शों के रक्षण हेतु निरन्तर विश्व-मङ्गल की ओर बढ़ते रहने का सार्थक एवं मङ्गल प्रयास है। जो इस महापुण्य बेला पर (14 अप्रैल, बुधवार) को गङ्गाजल में खड़े होकर '**ॐ नमः शिवायै गङ्गायै शिवदायै नमो नमः। नमस्ते विष्णुरूपिण्यै ब्रह्ममूर्त्यै नमोऽस्तुते।।**' तदनन्तर गंगास्तोत्र, गंगाष्टक, शिवाष्टक, गंगा-अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र तथा शिवस्तोत्रादि का पाठ करता है, वह सब पापों से मुक्त हो जाता है। (आगामी पृष्ठ पर गंगा जी का **अष्टोत्तरशत्नाम-स्तोत्र** दिया जा रहा है–आशा है श्रद्धालु जन पुण्यलाभ उठाएंगे।

–विवेक शर्मा

गंगा जी का अष्टोत्तर-शतनामस्तोत्र तथा उसका माहात्म्य

श्रीनारद जी बोले—परमेश्वर ! आपने बताया कि 'गंगा' नाम परम पुण्यदायी है। गंगा के और भी कितने श्रेष्ठ नाम हैं, उन्हें मुझे बताइये।।१।।
श्रीमहादेव जी बोले—मुनिश्रेष्ठ ! गंगा के एक हज़ार नामों में एक सौ आठ नाम अत्युत्तम हैं। आप मुझ से उन नामों को तत्त्वत: सुन लीजिए–।।२।।

1. [ओंकारस्वरूपिणी] गंगा
2. ॐ त्रिपथगा देवी नमः
3. ॐ शंभुमौलिविहारिणी नमः
4. ॐ जाह्नवी नमः
5. ॐ पापहन्त्री नमः
6. ॐ महापातकनाशिनी नमः
7. ॐ पतितोद्धारिणी नमः
8. ॐ स्त्रोतस्वती नमः
9. ॐ परमवेगिनी नमः
10. ॐ विष्णुपादाब्जसम्भूता नमः
11. ॐ विष्णुदेहकृतालया नमः
12. ॐ स्वर्गाब्धिनिलया नमः
13. ॐ साध्वी नमः
14. ॐ स्वर्णदी नमः
15. ॐ सुरनिम्नगा नमः
16. ॐ मन्दाकिनी नमः
17. ॐ महावेगा नमः
18. ॐ स्वर्णश्रृंगप्रभेदिनी नमः
19. ॐ देवपूज्यतमा नमः
20. ॐ दिव्या नमः
21. ॐ दिव्यस्थाननिवासिनी नमः
22. ॐ सुचारुनीररुचिरा नमः
23. ॐ महापर्वतभेदिनी नमः
24. ॐ भागीरथी नमः
25. ॐ भगवती नमः
26. ॐ महामोक्षप्रदायिनी नमः
27. ॐ सिंधुसंगगता नमः
28. ॐ शुद्धा नमः
29. ॐ रसातलनिवासिनी नमः
30. ॐ महाभोगा नमः
31. ॐ भोगवती नमः
32. ॐ सुभगानन्ददायिनी नमः
33. ॐ महापापहरा नमः
34. ॐ पुण्या नमः
35. ॐ परमाह्लाददायिनी नमः
36. ॐ पार्वती नमः
37. ॐ शिवपत्नी नमः
38. ॐ शिवशीर्षगतालया नमः
39. ॐ शम्भोर्जटामध्यगता नमः
40. ॐ निर्मला नमः
41. ॐ निर्मलानना नमः
42. ॐ महाकलुषहन्त्री नमः
43. ॐ जह्नुपुत्री नमः
44. ॐ जगत्प्रिया नमः
45. ॐ त्रैलोक्यपावनी नमः
46. ॐ पूर्णा नमः
47. ॐ पूर्णब्रह्मस्वरूपिणी नमः
48. ॐ जगत्पूज्यतमा नमः
49. ॐ चारु-रूपिणी नमः
50. ॐ जगदम्बिका नमः
51. ॐ लोकानुग्रहकर्त्री
52. ॐ सर्वलोकदयापरा नमः
53. ॐ याम्यभीतिहरा नमः
54. ॐ तारा नमः
55. ॐ पारा नमः
56. ॐ संसारतारिणी नमः
57. ॐ ब्रह्माण्डभेदिनी नमः
58. ॐ ब्रह्मकमण्डलुकृतालया नमः
59. ॐ सौभाग्यदायिनी नमः
60. ॐ पुंसां निर्वाणपददायिनी नमः
61. ॐ अचिन्त्यचरिता नमः
62. ॐ चारुरुचिरातिमनोहरा नमः
63. ॐ मर्त्यस्था नमः
64. ॐ मृत्युभयहा नमः
65. ॐ स्वर्गमोक्षप्रदायिनी नमः
66. ॐ पापापहारिणी नमः
67. ॐ दूरचारिणी नमः
68. ॐ वीचिधारिणी नमः
69. ॐ कारुण्यपूर्णा नमः
70. ॐ करुणामयी नमः
71. ॐ दुरितनाशिनी नमः
72. ॐ गिरिराजसुता नमः
73. ॐ गौरीभगिनी नमः
74. ॐ गिरिशप्रिया नमः
75. ॐ मेनकागर्भसम्भूता नमः
76. ॐ मैनाकभगिनीप्रिया नमः
77. ॐ आद्या नमः
78. ॐ त्रिलोकजननी नमः
79. ॐ त्रैलोक्यपरिपालिनी नमः
80. ॐ तीर्थश्रेष्ठतमा नमः
81. ॐ श्रेष्ठा नमः
82. ॐ सर्वतीर्थमयी नमः
83. ॐ शुभा नमः
84. ॐ चतुर्वेदमयी नमः
85. ॐ सर्वा नमः
86. ॐ पितृसंतृप्तिदायिनी नमः
87. ॐ शिवदा नमः
88. ॐ शिवसायुज्यदायिनी नमः
89. ॐ शिववल्लभा नमः
90. ॐ तेजस्विनी नमः
91. ॐ त्रिनयना नमः
92. ॐ त्रिलोचनमनोरमा नमः
93. ॐ सप्तधारा नमः
94. ॐ शतमुखी नमः
95. ॐ सगरान्वयतारिणी नमः
96. ॐ मुनिसेव्या नमः
97. ॐ मुनिसुता नमः
98. ॐ जह्नुजानुप्रभेदिनी नमः
99. ॐ मकरस्था नमः
100. ॐ सर्वगता नमः
101. ॐ सर्वाशुभनिवारिणी नमः
102. ॐ सुदृश्या नमः
103. ॐ चाक्षुषीतृप्तिदायिनी नमः
104. ॐ मकरालया नमः
105. ॐ सदानन्दमयी नमः
106. ॐ नित्यानन्ददा नमः
107. ॐ नगपूजिता नमः
108. ॐ सर्वदेवाधिदेवैः परिपूज्यपदाम्बुजा नमः

हे मुनिश्रेष्ठ ! मैंने आपसे भगवती गंगा के ये श्रेष्ठ नाम बता दिये। ये नाम समस्त पापों का विनाश करने वाले हैं।।२२।। नारद ! जो व्यक्ति प्रातःकाल उठकर गंगा के इन परम पुण्य देने वाले एक सौ आठ नामों को भक्तिपूर्वक पढ़ता है, उसके ब्रह्महत्या आदि पाप भी नष्ट हो जाते हैं तथा वह अतुलनीय आरोग्य एवं सुख प्राप्त करता है, इसमें कोई संदेह नहीं।।२३-२४।। जहाँ-कहीं भी स्नान करके मनुष्य यदि इस उत्तम स्तोत्र का पाठ करे, तो उसे वहीं पर गंगास्नान का फल निश्चित रूप से प्राप्त हो जाता है।।२५।। जो मनुष्य गंगा के एक सौ आठ नामों वाले इस स्तोत्र का प्रतिदिन पाठ करता है, वह अंत में गंगा को प्राप्त होकर परमपद प्राप्त कर लेता है।।२६।। जो मनुष्य गंगा में स्नान के समय भक्तिपरायण होकर इसका पाठ करता है, वह हजारों अश्वमेघ यज्ञों का फल प्राप्त करता है।।२७।। पंचमी तिथि को इसका पाठ करने वाला मनुष्य वह फल प्राप्त करता है, जो फल दस हजार गायों के दान का कहा गया है।।२८।। कार्तिक पूर्णिमा को गंगासागर संगम में स्नान करके जो मनुष्य इसका पाठ करता है, वह शिवत्व को प्राप्त हो जाता है, यह सत्य है, इसमें कोई संशय नहीं है।।२९।।

प्रमुख व्रत, पर्व, त्यौहार एवं छुट्टियाँ (सन् 2021-22 ई.)

जनवरी-(सन् 2021 ई.)

- इंग्लिश नववर्ष 2021 ई. प्रा. 1 जन. शुक्र
- लोहड़ी पर्व 13 जन. बुध
- मकर (माघ) संक्रान्ति 14 जन. गुरु
- कुम्भ महापर्व (हरिद्वार) -स्नान माहात्म्य शुरु 14 जन. गुरु
- पुत्रदा एकादशी व्रत 24 जन. रवि
- गणतन्त्र दिवस (72वाँ) 26 जन. मंग
- पौष पूर्णिमा 28 जन. गुरु
- माघस्नान प्रारंभ 28 जन. गुरु
- श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी 31 जन. रवि

फरवरी

- माघ (मौनी) अमावस 11 फर. गुरु
- महोदय योग 11 फर. गुरु
- गुप्त नवरात्र प्रारम्भ 12 फर. शुक्र
- बाबा श्रीलाल दयाल--जयन्ती (ध्यानपुर) 13 फर. शनि
- गौरी तृतीया (गोंतरी) 14 फर. रवि
- श्रीगणेश तिल चतुर्थी 15 फर. सोम
- वसन्त (श्री) पंचमी 16 फर. मंग.
- सरस्वती पूजन 16 फर. मंग.
- रथ-आरोग्य सप्तमी 19 फर. शुक्र
- भीष्माष्टमी 20 फर. शनि
- गुप्त-नवरात्र समाप्त 21 फर. रवि
- भीष्म द्वादशी, तिल १२ 24 फर. बुध
- माघ पूर्णिमा 27 फर. शनि
- माघस्नान समाप्त 27 फर. शनि
- श्रीगुरु रविदास जयंती 27 फर. शनि

मार्च

- श्रीमहाशिवरात्रि व्रत 11 मार्च गुरु
- प्रथम शाहीस्नान कुम्भमहापर्व, हरिद्वार 11 मार्च गुरु
- होलाष्टक प्रारम्भ 21 मार्च रवि
- गोविन्द द्वादशी 25 मार्च गुरु
- होलिका दहन-प्रदोषे 28 मार्च रवि
- होलाष्टक समाप्त 28 मार्च रवि
- होली-पर्व 29 मार्च सोम
- वसन्तोत्सव 29 मार्च सोम
- होला-मेला (श्रीआनन्दपुर--व पांओटा साहिब) 29 मार्च सोम

अप्रैल

- श्रीरंग-पंचमी 2 अप्रै. शुक्र
- गुड-फ्राइडे (क्रिश्चि.) 2 अप्रै. शुक्र
- शीतलाष्टमी व्रत 4 अप्रै. रवि
- वारुणी पर्व 8 अप्रै. गुरु
- मेला पिहोवातीर्थ-हरि. 10 अप्रै. शनि
- सोमवती अमावस 12 अप्रै. सोम
- द्वितीय-शाही स्नान--कुम्भ महापर्व, हरिद्वार 12 अप्रै. सोम
- वि. संवत् 2077 पूर्ण 12 अप्रै. सोम
- वि. संवत् 2078 शुरु 13 अप्रै. मंग
- चैत्र (वासन्त) नवरात्रे शुरु 13 अप्रै. मंग.
- तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण 13 अप्रै. मंग.
- वैशाखी पर्व (पंजाब) 13 अप्रै. मंग
- प्रमुख (तृतीय) शाहीस्नान-कुम्भ महापर्व, हरिद्वार 14 अप्रै. बुध
- गौरी तृतीया (गणगौर) 15 अप्रै. गुरु
- श्री (लक्ष्मी) पंचमी 17 अप्रै. शनि
- स्कन्द षष्ठी व्रत 18 अप्रै. रवि
- श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति 20 अप्रै. मंग
- अशोकाष्टमी 20 अप्रै. मंग
- वासन्त नवरात्र समाप्त 21 अप्रै. बुध
- श्रीरामनवमी 21 अप्रै. बुध
- नवरात्र व्रत पारणा 22 अप्रै. गुरु
- लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव 23 अप्रै. शुक्र
- श्रीविष्णु-दमनोत्सव 24 अप्रै. शनि
- अनङ्ग त्रयोदशी व्रत 25 अप्रै. रवि
- श्रीमहावीर जयन्ती (जैन) 25 अप्रै. रवि
- शिव-दमनोत्सव 26 अप्रै. सोम
- श्रीहनुमान जयं. (दक्षिण भा.) 27 अप्रै. मंग
- चतुर्थ (अन्तिम) शाहीस्नान कुम्भमहापर्व (हरिद्वार) 27 अप्रै. मंग
- वैशाखस्नान प्रारम्भ 27 अप्रै. मंग

मई

- अक्षय-तृतीया 14 मई शुक्र
- पुण्य स्नानतिथि--कुम्भ-महापर्व, हरिद्वार 14 मई शुक्र
- भगवान् परशुराम जयंती 14 मई शुक्र
- आद्यगुरु शंकराचार्य जयं. 17 मई सोम
- श्रीगङ्गा-जयन्ती 18 मई मंग
- जानकी-जयन्ती 20 मई गुरु
- श्रीबगुलामुखी जयन्ती 20 मई गुरु
- त्रिस्पर्शा महाद्वादशी 23 मई रवि
- श्रीनृसिंह-जयन्ती 25 मई मंग
- श्रीकूर्म-जयन्ती 25 मई मंग
- वैशाख-बुद्ध पूर्णिमा 26 मई बुध
- ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण 26 मई बुध
- वैशाख स्नान समाप्त 26 मई बुध

जून

- अपरा-भद्रकाली एकादशी 6 जून रवि
- वटसावित्री व्रत (अमा. पक्ष) 9 जून बुध
- ज्येष्ठ, भावुका अमावस 10 जून गुरु
- शनैश्चर जयन्ती 10 जून गुरु
- रम्भा तृतीया व्रत 13 जून रवि
- अरण्य षष्ठी 16 जून बुध
- विन्ध्यवासिनी पूजा 16 जून बुध
- श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयं. 18 जून शुक्र
- मेला क्षीर-भवानी (काश्मीर) 18 जून शुक्र
- श्रीगङ्गा-दशहरा (हरिद्वार) 20 जून रवि
- निर्जला एकादशी व्रत 21 जून सोम
- सायन दक्षिणायन प्रा. 21 जून सोम
- वटसावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष) 24 जून गुरु
- सन्त कबीर जयन्ती 24 जून गुरु

जुलाई

- गुप्त नवरात्र प्रारम्भ 11 जुला. रवि
- श्रीजगन्नाथ रथयात्रा (पुरी) 11 जुला. रवि
- कुमार-षष्ठी 15 जुला. गुरु
- विवस्वत सप्तमी 16 जुला. शुक्र
- गुप्त नवरात्र समाप्त 18 जुला. रवि
- हरिशयनी एकादशी व्रत 20 जुला. मंग
- चातुर्मास्य व्रत, नियम शुरु 20 जुला. मंग
- श्रीविष्णुशयनोत्सव 20 जुला. मंग
- श्रीशिव-शयनोत्सव 23 जुला. शुक्र
- कोकिला-व्रत 23 जुला. शुक्र
- गुरु पूर्णिमा 23 जुला. शुक्र
- व्यास-पूजा (10:44 बाद) 23 जुला. शुक्र
- गुरु-पूर्णिमा (पूर्वी-भारत) 24 जुला. शनि
- श्रावण सोमवार व्रत शुरु 26 जुला सोम
- मङ्गलागौरी व्रत शुरु 27 जुला. मंग

अगस्त

- श्रावण-शिवरात्रि 6 अग. शुक्र
- हरियाली अमावस 8 अग. रवि
- मेला चिन्तपूर्णी (हि.प्र.) प्रा. 9 अग. सोम
- मधुस्रवा हरियाली तीज 11 अग. बुध
- नाग-पञ्चमी 13 अग. शुक्र
- श्रीदुर्गाष्टमी (मेला--चिंतपूर्णी हि.प्र. समा.) 15 अग. रवि
- स्वतन्त्रता दिवस (75वाँ) 15 अग. रवि
- ऋक्-उपाकर्म 21 अग. शनि
- श्रावणी-पूर्णिमा 22 अग. रवि
- रक्षाबन्धन (राखी) 22 अग. रवि
- यजु-अथर्ववेद उपाकर्म 22 अग. रवि
- कज्जली-तृतीया 24 अग. मंग
- श्रीगणेश (बहुला) चतुर्थी 25 अग. बुध
- चन्दन षष्ठी व्रत 27 अग. शुक्र
- दूर्वाष्टमी व्रत 30 अग. सोम
- श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत 30 अग. सोम
- श्रीगुग्गा-नवमी 31 अग. मंग
- गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव 31 अग. मंग

सितम्बर

- वत्स द्वादशी (पूजा) 3 सितं. शुक्र
- कुशाग्रहणी अमावस 6 सितं. सोम
- पिठोरी अमावस 6 सितं. सोम
- हरितालिका तृतीया 9 सितं. गुरु
- सामवेदि-उपाकर्म 9 सितं. गुरु
- सिद्धि विनायक व्रत 10 सितं. शुक्र
- ऋषि-पंचमी व्रत 11 सितं. शनि
- सूर्य-षष्ठी व्रत 12 सितं. रवि
- मुक्ताभरण-सन्तान सप्तमी 13 सितं. सोम
- श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रा. 13 सितं. सोम
- श्री राधाष्टमी 14 सितं. मंग
- श्रीचन्द नवमी (उदासीन) 15 सितं. बुध
- श्रीवामन-जयन्ती 17 सितं. शुक्र
- श्रवण द्वादशी 17 सितं. शुक्र
- अनन्त चतुर्दशी व्रत 19 सितं. रवि
- मेला सोढल, जालन्धर, पं. 19 सितं. रवि
- प्रोष्ठपदी-पूर्णिमा श्राद्ध 20 सितं. सोम
- पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारंभ 21 सितं. मंग
- श्रीमहालक्ष्मी व्रत समा. 28 सितं. मंग
- जीवित्पुत्रिका व्रत 29 सितं. बुध

अक्तूबर

- महात्मा गाँधी जयन्ती 2 अक्तू शनि
- मघा श्राद्ध 3 अक्तू रवि
- महालय/श्राद्ध समाप्त 6 अक्तू बुध
- सर्वपितृ श्राद्ध 6 अक्तू बुध
- शरद् नवरात्र प्रारम्भ 7 अक्तू गुरु
- उपाङ्ग ललिता व्रत 10 अक्तू रवि
- सरस्वती आवाहन 11 अक्तू सोम
- सरस्वती पूजन 12 अक्तू मंग
- श्रीदुर्गाष्टमी 13 अक्तू बुध
- सरस्वती बलिदान 13 अक्तू बुध
- महानवमी (पूजा, व्रत एवं बलिदान हेतु) 14 अक्तू गुरु
- सरस्वती विसर्जन 14 अक्तू गुरु
- नवरात्र-समाप्त 14 अक्तू गुरु

नवरात्र-पारणा	15 अक्तू. शुक्र
विजयादशमी (दशहरा)	15 अक्तू. शुक्र
भरत-मिलाप	16 अक्तू. शनि
कोजागर व्रत	19 अक्तू. मंग
शरद् पूर्णिमा व्रत	19 अक्तू. मंग
महर्षि वाल्मीकि जयं.	20 अक्तू. बुध
कार्तिकस्नान प्रारम्भ	20 अक्तू. बुध
व्रत करवा-चौथ	24 अक्तू. रवि
अहोई अष्टमी व्रत	28 अक्तू. गुरु

◆ नवम्बर ◆

गोवत्स द्वादशी	1 नवं. सोम
धन-त्रयोदशी	2 नवं. मंग
यम प्रीत्यर्थं दीपदान	2 नवं. मंग
श्रीहनुमान जयं.(उ.भा.)	3 नवं. बुध
नरक-चतुर्दशी	3 नवं. बुध
दीपावली	4 नवं. गुरु
श्रीमहालक्ष्मी-पूजन	4 नवं. गुरु
अन्नकूट-गोवर्धन पूजा	5 नवं. शुक्र
बलिपूजा, गोक्रीड़ा	5 नवं. शुक्र
विश्वकर्मा दिवस (पं.)	5 नवं. शुक्र
भाई-दूज, यमद्वितीया	6 नवं. शनि
श्रीविश्वकर्मा पूजन	6 नवं. शनि
सूर्य षष्ठी पर्व (बिहार)	10 नवं. बुध
गोपाष्टमी	11 नवं. गुरु
अक्षय-कूष्माण्ड नवमी	12 नवं. शुक्र
भीष्मपंचक प्रारम्भ	14 नवं. रवि
चातुर्मास्य व्रतादि समा.	14 नवं. रवि
हरिप्रबोधोत्सव	15 नवं. सोम
तुलसी विवाह	15 नवं. सोम
वैकुण्ठ चतुर्दशी	17 नवं. बुध
भीष्मपंचक समाप्त	18 नवं. गुरु
त्रिपुरोत्सव	18 नवं. गुरु
श्रीगुरु नानक जयन्ती	19 नवं. शुक्र
कार्तिक पूर्णिमा	19 नवं. शुक्र
कार्तिकस्नान समाप्त	19 नवं. शुक्र
खण्डग्रास चन्द्रग्रहण	19 नवं. शुक्र
श्रीकालभैरवाष्टमी	27 नवं. शनि

◆ दिसम्बर ◆

स्कन्द (गुह) षष्ठी	9 दिसं. गुरु
चम्पा-षष्ठी	9 दिसं. गुरु
मित्र (विष्णु) सप्तमी	10 दिसं. शुक्र
मोक्षदा एकादशी व्रत	14 दिसं. मंग
श्रीगीता-जयन्ती	14 दिसं. मंग
श्रीदत्तात्रेय-जयन्ती	18 दिसं. शनि
क्रिसमिस डे (क्रिश्चि.)	25 दिसं. शनि
रुक्मिणी अष्टमी	27 दिसं. सोम

» जनवरी—2022 ई. »

इंग्लिश नववर्ष 2022 ई. प्रा.	1 जन. शनि
श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयं.	9 जन. रवि
मार्तण्ड-सप्तमी	9 जन. रवि
पुत्रदा एकादशी व्रत	13 जन. गुरु
लोहड़ी पर्व	13 जन. गुरु
मकर (माघ) संक्रान्ति	14 जन. शुक्र
पौष पूर्णिमा	17 जन. सोम
माघस्नान प्रारम्भ	17 जन. सोम
श्रीगणेश संकष्ट-चतुर्थी	21 जन. शुक्र
गणतन्त्र दिवस (73वाँ)	26 जन. बुध

» फरवरी—2022 ई० »

माघ (मौनी) अमावस	1 फर. मंग
महोदय योग	1 फर. मंग
गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	2 फर. बुध
बाबा श्रीलाल दयाल-जयंती (ध्यानपुर, पं.)	2 फर. बुध
गौरी तृतीया (गोंतरी)	3 फर. गुरु
श्रीगणेश तिल चतुर्थी	4 फर. शुक्र
वसन्त (श्री) पंचमी	5 फर. शनि
लक्ष्मी-सरस्वती पूजन	5 फर. शनि
रथ-आरोग्य सप्तमी	7 फर. सोम
भीष्माष्टमी	8 फर. मंग
गुप्त नवरात्र समाप्त	10 फर. गुरु
भीष्म-द्वादशी, तिल १२	13 फर. रवि
माघ-पूर्णिमा	16 फर. बुध
माघस्नान समाप्त	16 फर. बुध
श्रीगुरु रविदास जयं.	16 फर. बुध
स्वा. दयानन्द सरस्वती जयं.	26 फर. शनि

» मार्च—2022 ई० »

श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	1 मार्च मंग
फूलेरा-दूज (मथुरा, उ.प्र.)	4 मार्च शुक्र
होलाष्टक प्रारम्भ	10 मार्च गुरु
अन्नपूर्णा-अष्टमी	10 मार्च गुरु
गोविन्द द्वादशी	14 मार्च सोम
होलिका-दहन (प्रदोष में)	17 मार्च गुरु
होलाष्टक समाप्त	18 मार्च शुक्र
होली पर्व	18 मार्च शुक्र
वसन्तोत्सव	19 मार्च शनि
होला मेला (श्रीआनन्दपुर-व पांओटा साहिब)	19 मार्च शनि
महाविषुव दिन	20 मार्च रवि
श्रीरंग-पंचमी	22 मार्च मंग
शीतलाष्टमी व्रत	25 मार्च शुक्र
वारुणी पर्व	29-30 मार्च
मेला पिहोवातीर्थ-हरि.	31 मार्च गुरु

» अप्रैल—2022 ई. »

वि. संवत् 2078 पूर्ण	1 अप्रै. शुक्र

श्रीसत्यनारायण व्रत

(सन् 2021-22 ई.)

श्रीसत्यनारायण व्रत का उदयकालिक पूर्णमाशी की तिथि से कभी-कभी एक दिन का अन्तर आ जाता है, क्योंकि चन्द्रोदयकालिक एवं प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा ही व्रत हेतु ग्रहण करनी चाहिए।

पौष	28 जन. गुरु
माघ	26 फर. शुक्र
फाल्गुन	28 मार्च रवि
चैत्र	26 अप्रै. सोम
वैशाख	25 मई मंग
ज्येष्ठ	24 जून गुरु
आषाढ़	23 जुला. शुक्र
श्रावण	21 अग. शनि
भाद्रपद	20 सितं. सोम
आश्विन	20 अक्तू. बुध
कार्तिक	18 नवं. गुरु
मार्गशीर्ष	18 दिसं. शनि
पौष (2022 ई.)	17 जन. सोम
माघ	16 फर. बुध

पूर्णिमा व्रत (2021-22 ई.)

(उदय-व्यापिनी, स्नानदानार्थ)

पौष	28 जन. गुरु
माघ	27 फर. शनि
फाल्गुन	28 मार्च रवि
चैत्र	27 अप्रै. मंग
वैशाख	26 मई बुध
ज्येष्ठ	24 जून गुरु
आषाढ़	24 जुला. शनि
श्रावण	22 अग. रवि
भाद्रपद	20 सितं. सोम
आश्विन	20 अक्तू. बुध
कार्तिक	19 नवं. शुक्र
मार्गशीर्ष	19 दिसं. रवि

(सन् 2022 ई.)

पौष	17 जन. सोम
माघ	16 फर. बुध
फाल्गुन	18 मार्च शुक्र

अमावस्याएँ (स्नान-दानार्थ)

पौष	13 जन. बुध
माघ	11 फर. गुरु
फाल्गुन (शनैश्चरी)	13 मार्च शनि
चैत्र (सोमवती)	11-12 अप्रै. सोम
वैशाख (भौमवती)	11 मई मंग
ज्येष्ठ	10 जून गुरु
आषाढ़	9-10 जुला. शु./श.
श्रावण	8 अग. रवि
भाद्रपद (भौमवती)	7 सितं. मंग
आश्विन	6 अक्तू. बुध
कार्तिक	4 नवं. गुरु
मार्गशीर्ष (शनैश्चरी)	4 दिसं. शनि

(सन् 2022 ई.)

पौष	2 जन. रवि
माघ (मौनी) (भौमवती)	1 फर. मंग
फाल्गुन	2 मार्च बुध
चैत्र	1 अप्रै. शुक्र

श्रीगणेश चतुर्थी व्रत

पौष	2 जन. शनि
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	31 जन. रवि
फाल्गुन (अङ्गारकी)	2 मार्च मंग
चैत्र	31 मार्च बुध
वैशाख	30 अप्रै. शुक्र
ज्येष्ठ	29 मई शनि
आषाढ़	27 जून रवि
श्रावण (अङ्गारकी)	27 जुला. मंग
भाद्रपद (बहुला चतुर्थी)	25 अग. बुध
आश्विन	24 सितं. शुक्र
कार्तिक	24 अक्तू. रवि
मार्गशीर्ष (अङ्गारकी)	23 नवं. मंग
पौष	22 दिसं. बुध

(सन् 2022 ई.)

माघ (संकष्ट चतुर्थी)	21 जन. शुक्र
फाल्गुन	20 फर. रवि
चैत्र	21 मार्च सोम

श्रीसिद्धिविनायक चतुर्थी व्रत

पौष	16 जन. शनि
माघ	15 फर. सोम
फाल्गुन	17 मार्च बुध
चैत्र	16 अप्रै. शुक्र
वैशाख	15 मई शनि
ज्येष्ठ	14 जून सोम
आषाढ़	13 जुला. मंग
श्रावण	12 अग. गुरु
भाद्रपद	10 सितं. शुक्र
आश्विन	9 अक्तू. शनि
कार्तिक	8 नवं. सोम
मार्गशीर्ष	7 दिसं. मंग

(सन् 2022 ई.)

पौष	6 जन. गुरु
माघ	4 फर. शुक्र
फाल्गुन	6 मार्च रवि

पितृपक्ष में श्राद्ध–2021 ई.

(आश्विन कृष्ण पक्ष में श्राद्ध तिथियाँ)

अपने पूर्वज पितरों के प्रति श्रद्धा भावना रखते हुए आश्विन कृष्ण पक्ष में पितृ-तर्पण एवं श्राद्ध कर्म करना नितान्त आवश्यक है। इससे स्वास्थ्य, समृद्धि, आयु, सुख-शान्ति तथा वंशवृद्धि एवं उत्तम सन्तान की प्राप्ति होती है। श्रद्धापूर्वक किए जाने के कारण ही इसका नाम 'श्राद्ध' है।

प्रोष्ठपदी/पूर्णिमा श्राद्ध	20 सितं. सोम
प्रतिपदा का श्राद्ध	21 सितं. मंग
द्वितीया का श्राद्ध	22 सितं. बुध
तृतीया का श्राद्ध	23 सितं. गुरु
चतुर्थी का श्राद्ध	24 सितं. शुक्र
पंचमी का श्राद्ध	25 सितं. शनि
❑षष्ठी का श्राद्ध	27 सितं. सोम
सप्तमी का श्राद्ध	28 सितं. मंग
अष्टमी का श्राद्ध	29 सितं. बुध
नवमी/सौभाग्यवतीनां श्राद्ध	30 सितं. गुरु
दशमी का श्राद्ध	1 अक्तू. शुक्र
एकादशी का श्राद्ध	2 अक्तू. शनि
द्वादशी/संन्यासियों का श्राद्ध	3 अक्तू. रवि
मघा श्राद्ध	3 अक्तू. रवि
त्रयोदशी का श्राद्ध	4 अक्तू. सोम
♣चतुर्दशी श्राद्ध अपमृत्यु वालों का श्राद्ध	5 अक्तू. मंग
अमावस, सर्वपितृ, अज्ञात मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध	6 अक्तू. बुध

❑26 सितं. को किसी तिथि का श्राद्ध नहीं होगा। ♣ चतुर्दशी तिथि को केवल शस्त्र, विष, दुर्घटनादि (अपमृत्यु) से मृतों का श्राद्ध होता है। उनकी मृत्यु चाहे किसी अन्य तिथि में हुई हो। चतुर्दशी तिथि में सामान्य मृत्यु वालों का श्राद्ध अमावस्या तिथि में करने का शास्त्र विधान है।

निरयण संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल (सन् 2021–22 ई.)

नाम संक्रान्ति	ता. मास वार	प्रवेशकाल (घं.मिं.)	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टै. टा.)
माघ संक्रान्ति	14 जन., गुरु	8–14	सूर्योदय से दोपहर 14:38 तक
फाल्गुन संक्रान्ति	12 फर., शुक्र	21–11	दोपहर 2:47 से अगले दिन 13:11 तक
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च, रवि	18–03	मध्याह्न 11:39 बाद
वैशाख संक्रान्ति	13 अप्रै., मंग	26–33	अगले दिन प्रातः 8:57 तक
ज्येष्ठ संक्रान्ति	14 मई, शुक्र	23–24	मध्याह्न बाद से आगामी दिन प्रातः 6:00 तक
आषाढ़ संक्रान्ति	15 जून, मंग.	6–00	दोपहर 12:24 तक
श्रावण संक्रान्ति	16 जुला., शुक्र	16–53	प्रातः 10:29 बाद
भाद्र. संक्रान्ति	16 अग., सोम	25–16	अगले दिन प्रातः 7:40 तक
आश्विन संक्रान्ति	16 सितं., गुरु	25–13	अगले दिन प्रातः 7:37 तक
कार्तिक संक्रान्ति	17 अक्तू., रवि	13–12	प्रातः 6:48 बाद
मार्ग. संक्रान्ति	16 नवं., मंग.	13–01	सूर्योदय बाद
पौष संक्रान्ति	15 दिसं., बुध	27–42	अगले दिन प्रातः 10:06 तक
माघ संक्रान्ति(22)	14 जन., शुक्र	14–29	प्रातः 8:05 बाद
फाल्गुन संक्रान्ति	12 फर., शनि	27–26	अगले दिन प्रातः 9:50 तक
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च, सोम	24–15	अगले दिन मध्याह्न तक

प्रदोष व्रत (सन् 2021–22 ई.)

यह व्रत शिवजी की प्रसन्नता और प्रभुत्व की प्राप्ति के लिए किया जाता है। वैसे तो सभी प्रदोष व्रत अत्यन्त कल्याणप्रद होते हैं, परन्तु **शनिप्रदोष** सन्तान प्राप्ति के लिए, **भौम-प्रदोष** ऋणमोचन हेतु, मनः शान्ति एवं सुरक्षा के लिए **सोम प्रदोष व्रत** तथा आरोग्य प्राप्ति एवं आयु वृद्धि के लिए **अर्क (रवि) प्रदोष व्रत** विशेष अधिक फलदायी होता है। व्रती को चाहिए कि व्रत वाले दिन सूर्यास्त के समय पुनः स्नान करके शिवपूजन एवं कथा करें और तत्पश्चात् "भवाय भवनाशाय, महादेवाय धीमते। रूद्राय नीलकण्ठाय शर्वाय शशि मौलिने। उग्रायोग्राघनाशाय भीमाय भय हारिणे। ईशानाय नमस्तुभ्यं पशूनां पतये नमः।।" से प्रार्थना करके भोजन करें।

पौष कृष्ण	10 जन. रवि
पौष शुक्ल (भौम)	26 जन. मंग
माघ कृष्ण (भौम)	9 फर. मंग
माघ शुक्ल	24 फर. बुध
फाल्गुन कृष्ण	10 मार्च बुध
फाल्गुन शुक्ल	26 मार्च शुक्र
चैत्र कृष्ण	9 अप्रै. शुक्र
चैत्र शुक्ल (शनि)	24 अप्रै. शनि
वैशाख कृष्ण (शनि)	8 मई शनि
वैशाख शुक्ल (सोम)	24 मई सोम
ज्येष्ठ कृष्ण (सोम)	7 जून सोम
ज्येष्ठ शुक्ल (भौम)	22 जून मंग
आषाढ़ कृष्ण	7 जुला. बुध
आषाढ़ शुक्ल	21 जुला. बुध
श्रावण कृष्ण	5 अग. गुरु
श्रावण शुक्ल	20 अग. शुक्र
भाद्रपद कृष्ण (शनि)	4 सितं. शनि
भाद्रपद शुक्ल (शनि)	18 सितं. शनि
आश्विन कृष्ण (सोम)	4 अक्तू. सोम
आश्विन शुक्ल (सोम)	18 अक्तू. सोम
कार्तिक कृष्ण (भौम)	2 नवं. मंग
कार्तिक शुक्ल (भौम)	16 नवं. मंग
मार्गशीर्ष कृष्ण	2 दिसं. गुरु
मार्गशीर्ष शुक्ल	16 दिसं. गुरु
पौष कृष्ण	31 दिसं. शुक्र
(सन् 2022 ई.)	
पौष शुक्ल (शनि)	15 जन. शनि
माघ कृष्ण	30 जन. रवि
माघ शुक्ल (सोम)	14 फर. सोम
फाल्गुन कृष्ण (सोम)	28 फर. सोम
फाल्गुन शुक्ल (भौम)	15 मार्च मंग
चैत्र कृष्ण (भौम)	29 मार्च मंग.

मासिक कालाष्टमी व्रत

(सन् 2021 ई.)

पौष	6 जन. बुध
माघ	4 फर. गुरु
फाल्गुन*	5 मार्च शुक्र
चैत्र	4 अप्रै. रवि
वैशाख	3 मई सोम
ज्येष्ठ	2 जून बुध
आषाढ़	1 जुला. गुरु
श्रावण	31 जुला. शनि
भाद्रपद	30 अग. सोम
आश्विन	29 सितं. बुध
कार्तिक	28 अक्तू. गुरु
मार्गशीर्ष	27 नवं. शनि
पौष	27 दिसं. सोम
(सन् 2022 ई.)	
माघ	25 जन. मंग
फाल्गुन	23 फर. बुध
चैत्र	25 मार्च शुक्र

*स्थानीय सूर्योदय/सूर्यास्त कालानुसार यह पर्व एक दिन बाद हो सकता है।

मासिक शिवरात्रि व्रत

(सन् 2021 ई.)

पौष	11 जन. सोम
माघ	10 फर. बुध
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि)	11 मार्च गुरु
चैत्र	10 अप्रै. शनि
वैशाख	9 मई रवि
ज्येष्ठ	8 जून मंग
आषाढ़	8 जुला. गुरु
श्रावण	6 अग. शुक्र
भाद्रपद	5 सितं. रवि
आश्विन	4 अक्तू. सोम
कार्तिक	3 नवं. बुध
मार्गशीर्ष	2 दिसं. गुरु
(सन् 2022 ई.)	
पौष	1 जन. शनि
माघ	30 जन. रवि
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि)	1 मार्च मंग
चैत्र	30 मार्च बुध

मासिक दुर्गाष्टमी व्रत

(सन् 2021 ई.)

पौष	21 जन. गुरु
माघ	20 फर. शनि
फाल्गुन	22 मार्च सोम
चैत्र	20 अप्रै. मंग
वैशाख	20 मई गुरु
ज्येष्ठ	18 जून शुक्र
आषाढ़	17 जुला. शनि
श्रावण	15 अग. रवि
भाद्रपद	14 सितं. मंग
आश्विन	13 अक्तू. बुध
कार्तिक	11 नवं. गुरु
मार्गशीर्ष	11 दिसं. शनि
(सन् 2022 ई.)	
पौष	10 जन. सोम
माघ	8 फर. मंग
फाल्गुन	10 मार्च गुरु

एकादशी व्रत (सन् 2021-22 ई.)

'धर्मसिंधु' अनुसार एकादशी दो प्रकार की होती है। विद्धा और शुद्धा॥

1. दशमी तिथि से युक्त एकादशी तिथि विद्धा एकादशी कहलाती है।

2. सूर्योदयकालिक एकादशी तिथि द्वादशी तिथि युक्त हो तो वह शुद्धा एकादशी कहलाती है।

सर्वसाधारण गृहस्थों एवं साधकों को शुद्धा एकादशी का व्रत रखना प्रशस्त एवं पुण्यप्रदायक माना गया है। इसीलिए 'स्मार्त' (अर्थात् जिसमें साधारण गृहस्थी लोग भी सम्मिलित हैं) लोग भी वैष्णव सम्प्रदाय (संन्यासी, यति, दीक्षित) द्वारा पालनीय वैष्णव एकादशी वाला व्रत ही रखते हैं।

एकादशी	तिथि
सफला (पौष कृष्णा)	9 जन. शनि
पुत्रदा (पौष शुक्ल)	24 जन. रवि
षट्तिला (माघ कृष्णा)	8 फर. सोम
जया (माघ शुक्ल)	23 फर. मंग
विजया (फाल्गुन कृष्णा)	9 मार्च मंग
आमलकी (फाल्गुन शुक्ल)	25 मार्च गुरु
पापमोचनी (चैत्र कृष्णा)	7 अप्रै. बुध
कामदा (चैत्र शुक्ल)	23 अप्रै. शुक्र
वरूथिनी (वैशाख कृष्णा)	7 मई शुक्र
मोहिनी (वैशाख शुक्ल) वैष्णव	23 मई रवि
अपरा (ज्येष्ठ कृष्णा)*	6 जून रवि
निर्जला (ज्येष्ठ शुक्ल)	21 जून सोम
योगिनी (आषाढ़ कृष्णा)	5 जुला. सोम
हरिशयनी (आषाढ़ शुक्ल)	20 जुला. मंग
कामिका (श्रावण कृष्णा)	4 अग. बुध
पवित्रा (श्रावण शुक्ल)	18 अग. बुध
अजा (भाद्रपद कृष्णा)	3 सितं. शुक्र
पद्मा (भाद्रपद शुक्ल)	17 सितं. शुक्र
इन्दिरा (आश्विन कृष्णा)	2 अक्तू. शनि
पापांकुशा (आश्विन शुक्ल)	16 अक्तू. शनि
रमा (कार्तिक कृष्णा)	1 नवं. सोम
हरिप्रबोधिनी (कार्तिक शुक्ल) वैष्णव*	15 नवं. सोम
उत्पन्ना (मार्गशीर्ष कृष्णा)	30 नवं. मंग
मोक्षदा (मार्गशीर्ष शुक्ल)	14 दिसं. मंग
सफला (पौष कृष्णा)	30 दिसं. गुरु
(सन् 2022 ई.)	
पुत्रदा (पौष शुक्ल)	13 जन. गुरु
षट्तिला (माघ कृष्णा)	28 जन. शुक्र
जया (माघ शुक्ल)	12 फर. शनि
विजया (फाल्गुन कृष्णा) वैष्णव*	27 फर. रवि
आमलकी (फाल्गुन शुक्ल)	14 मार्च सोम
पापमोचनी (चैत्र कृष्णा)	28 मार्च सोम

*नोट—स्मार्तों का व्रत वैष्णवों के व्रत-दिन से एक दिन पहले होता है। जिस तिथि के आगे कुछ नहीं लिखा, उसका अभिप्राय: है कि यह व्रत स्मार्तों और वैष्णवों-दोनों के लिए ग्राह्य है।

दशमहाविद्या जयन्तियां-(सं. २०७८)

जयन्ती	तिथि
श्रीमहातारा जयन्ती	21 अप्रै. बुध
श्रीमातङ्गी जयन्ती	15 मई शनि
श्रीबगुलामुखी जयन्ती	20 मई गुरु
श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती	26 मई बुध
श्रीधूमावती जयन्ती	18 जून शुक्र
श्रीमहाकाली जयन्ती	30 अग. सोम
श्रीभुवनेश्वरी जयन्ती	17 सितं. शुक्र
श्रीकमला जयन्ती	23 अक्तू. शनि
श्रीत्रिपुरभैरवी जयन्ती	18 सितं. शनि
श्रीललिता जयन्ती (22 ई.)	16 फर. बुध

दशावतार जयन्तियां-(सन् 2021 ई.)

जयन्ती	तिथि
श्रीमत्स्य जयन्ती	15 अप्रै. गुरु
श्रीराम जयन्ती (नवमी)	21 अप्रै. बुध
श्रीपरशुराम जयन्ती	14 मई शुक्र
श्रीनृसिंह जयन्ती	25 मई मंग
श्रीकूर्म जयन्ती	25 मई मंग
श्रीबुद्ध जयन्ती	26 मई बुध
श्रीकल्कि जयन्ती	13 अग. शुक्र
श्रीकृष्ण जयन्ती	30 अग. सोम
श्रीवराह जयन्ती	9 सितं. गुरु
श्रीवामन जयन्ती	17 सितं. शुक्र

पर्व श्रीपिण्डोरीधाम (गुरदासपुर)-2021 ई.

पर्व	तिथि
श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती	19 फर. शुक्र
श्रीहोलिका दहन	28 मार्च रवि
श्रीभगवत्नारायण जयंती	1 अप्रै. गुरु
वैशाखी पर्व	13 अप्रै. मंग
रामनवमी पर्व	21 अप्रै. बुध
जानकी जयन्ती	20 मई गुरु
गंगा दशहरा पर्व	20 जून रवि
गुरु पूर्णिमा	23 जुला. शुक्र
तुलसी जयन्ती पर्व	15 अग. रवि
कृष्ण जयन्ती पर्व	30 अग.-1 सितं.
महंत गु. गोविन्ददास जयंती	27 अक्तू. बुध

सिद्ध महापुरुषों के जन्मदिन/स्मरणोत्सव

नाम	तिथि
स्वामी विवेकानन्द जी	12 जन. मंग
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. शनि
लाला लाजपतराय जी	28 जन. गुरु
स्वामी रामानन्दाचार्य जी	4 फर. गुरु
स्वा. विवेकानन्द (प्राचीनमतेन)	4 फर. गुरु
सिद्ध बाबा लालदयाल जी	13 फर. शनि
छत्रपति शिवाजी	19 फर. शुक्र
श्रीगुरु रविदास जी	27 फर. शनि
डॉ० राजेन्द्रप्रसाद स्मरण	28 फर. रवि
महर्षि दयानन्द सरस्वती	8 मार्च सोम
श्रीरामकृष्ण परमहंस	15 मार्च सोम
श्रीचैतन्य महाप्रभु	28 मार्च रवि
सन्त तुकाराम जी	30 मार्च मंग
श्रीझूलेलाल जयन्ती	14 अप्रै. बुध
डॉ० बी.आर. अम्बेदकर	14 अप्रै. बुध
श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)	25 अप्रै. रवि
श्रीहनुमान जयन्ती (दक्षिण-भारत)	27 अप्रै. मंग
सती अनुसूइया जयन्ती	30 अप्रै. शुक्र
श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती	7 मई शुक्र
श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर	7 मई शुक्र
श्रीशुकदेव जयन्ती	11 मई मंग
छत्रपति शिवाजी	13 मई गुरु
भगवान् परशुराम जयन्ती	14 मई शुक्र
आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य	17 मई सोम
श्रीसूरदास जयन्ती	17 मई सोम
स्वामी रामानुजाचार्य (उ.भा.)	18 मई मंग
महात्मा बुद्ध	26 मई बुध
श्रीनारद-जयन्ती	28 मई शुक्र
श्रीमहाराणा प्रताप	13 जून रवि
सन्त कबीर जयन्ती	24 जून गुरु
श्रीध्यानू भगत	24 जून गुरु
लोकमान्य गंगाधर तिलक	23 जुला. शुक्र
लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव	1 अग. रवि
गोस्वामी तुलसीदास जी	15 अग. रवि
सन्त ज्ञानेश्वर	30 अग. सोम
भक्त नवल (जोधपुर)	30 अग. सोम
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं. बुध
श्रीदधीची जयन्ती	14 सितं. मंग
श्रीचन्द महाराज (उदासीन)	15 सितं. बुध
महात्मा गाँधी शास्त्री जी	2 अक्तू. शनि
श्रीकात्यायनी जयन्ती	5 अक्तू. मंग
महाराजा अग्रसेन	7 अक्तू. गुरु
श्रीमाधवाचार्य जी	15 अक्तू. शुक्र
सरदार पटेल जयन्ती	31 अक्तू. रवि
श्रीधनवन्तरी जयन्ती	3 नवं. बुध
श्रीहनुमान जयं. (उ. भारत)	3 नवं. बुध
श्रीविश्वकर्मा जयन्ती	6 नवं. शनि
महाराजा रणजीत सिंह	13 नवं. शनि
श्रीजवाहर लाल नेहरू	14 नवं. रवि
श्रीवीर वैरागी जयन्ती	17 नवं. बुध
श्री गुरु नानकदेव जी	19 नवं. शुक्र
श्रीसत्यसाईं बाबा जयन्ती	23 नवं. मंग
डॉ० राजेन्द्र प्रसाद	3 दिसं. शुक्र
श्रीदत्तात्रेय जयन्ती	18 दिसं. शनि
शहीद स: ऊधम सिंह जयं.	26 दिसं. रवि
(सन् 2022 ई.)	
स्वामी विवेकानन्द जी	12 जन. बुध
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. रवि
स्वामी रामानन्दाचार्य जी	25 जन. मंग
लाला लाजपतराय जी	28 जन. शुक्र
सिद्ध बाबा लालदयाल जी	2 फर. बुध
श्रीगुरु रविदास जी	16 फर. बुध
समर्थ गुरुरामदास जयन्ती	25 फर. शुक्र
महर्षि दयानन्द सरस्वती	26 फर. शनि
डॉ० राजेन्द्रप्रसाद स्मरण	28 फर. सोम
श्रीवैद्यनाथ जयन्ती	1 मार्च मंग
श्रीरामकृष्ण परमहंस	4 मार्च शुक्र
श्रीचैतन्य महाप्रभु	18 मार्च शुक्र
सन्त तुकाराम जी	20 मार्च रवि
शहीदी स: भगत सिंह	23 मार्च बुध

दरबार श्रीध्यानपुर (गुरदासपुर) मुख्य पर्व-2021 ई.

पर्व	तिथि
बाबा श्रीलालदयाल जयन्ती	13 फर. शनि
वसंतपंचमी (पं. द्वारकादास जयं.)	16 फर. मंग
होलिका-दहन	28 मार्च रवि
श्रीरामनवमी पर्व	21 अप्रै. बुध
महंत श्रीनारायणदास जयं.	29 मई शनि
व्यास पूजा (10:44 बाद)	23 जुला. शुक्र
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	30 अग. सोम
गद्दी स्वा. रामसुन्दरदास जी	1 नवं. सोम
दीपावली पर्व	4 नवं. गुरु

पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तराखण्ड व उत्तरप्रदेश के मुख्य मेले-सन् 2021 ई.

मेला	तिथि
मरोज पर्व (जौनसार, उत्तराखण्ड)	11 जन.
मेला लोहड़ी (पं., हरि., जम्मू आदि)	13 जन.
मेला दाऊँ (मोहाली, पं.)	13-14 जन.
बिन्दरख (रोपड़, पंजाब)	14 जन.
कुम्भ-महापर्व (हरिद्वार) शुरु	14 जन.
मेला माघी (मुक्तसर, पंजाब)	14 जन.
मेला मस्तुआणा (पंजाब) (बरसी संत अतरसिंह जी)	1 फर.
मेला वसन्त पंचमी	16 फर.
मेला पशु-नागौर (राजस्थान)	17-20 फर.
मेला जैसलमेर (राजस्थान)	25-27 फर.
जयन्ती-देवी (चण्डीगढ़)	26-27 फर.
माघी पूर्णिमा (प्रयागराज, उ.प्र.)	27 फर.
मेला श्रीमहाशिवरात्रि	11 मार्च
नीलकण्ठ महादेव (गढ़वाल, उ.खण्ड)	11 मार्च
मेला फूलेरा-दूज (मथुरा, उ.प्र.)	15 मार्च
मे. बाबा-मस्तनाथ (अस्थल बोहर, रोहतक, हरि.)	20-22 मार्च
होलियां-होलाष्टक (उ.प्र.)	21-28 मार्च
मेला श्रीखाटू श्याम जी	25-26 मार्च
मेला सावातिल्ला	26 मार्च
होला मेला (श्रीआनन्दपुर सा., पं.)	29 मार्च
मे. शीतलामाता शुरु (कुराली, पं.)	1 अप्रै.
मे. श्रीगुरु रामराय (देहरादून, उ.खण्ड)	2 अप्रै.
नवचण्डी (मेरठ, उ.प्र.) प्रा.	2 अप्रै.
मेला शीतलामाता (सर्वत्र)	3-4 अप्रै.
वैशाखी मेला श्रीलक्ष्मण चौंतरा-हाँसी (हरियाणा)	4-13 अप्रै.
मे. पृथूदक (पिहोवातीर्थ, हरियाणा)	10 अप्रै.
मेला हथीरा (थानेसर, कुरुक्षेत्र, हरि.)	10-21 अप्रै.
मे. सोमवती अमावस (हरिद्वार)	12 अप्रै.
मेला चीमा (नानकसर, पंजाब)	13 अप्रै.
मेला नवरात्रे-मनसादेवी (हरिद्वार व पंचकूला) हरि.	13-21 अप्रै.
मेला झंडेवाला (करोलबाग, दिल्ली)	13-21 अप्रै.
मेला कालका जी (दिल्ली)	13-21 अप्रै.
मेला वैशाखी (पंजाब)	13 अप्रै.
मे. रामथनदास (फाजिल्का, पं.)	13 अप्रै.
मे. वैशाखी-गंगभेवा (बावड़ी) ढकरानी, देहरादून, उत्तराखण्ड	13-18 अप्रै.
मुख्य शाही स्नान-कुम्भ महापर्व (हरिद्वार)	14 अप्रै.
गणगौरी तृतीया (जयपुर, राजस्थान)	15 अप्रै.
मेला ठाणा डांडा, नागी--बागीधार (उत्तराखण्ड)	16 अप्रै.
मे. नरीसैंभरी (मथुरा, उ. प्र.)	20 अप्रै.
देवी-मेला (हथीहरा, कुरुक्षेत्र हरि.)	26 अप्रै.
मेला कांसादेवी (चण्डीगढ़)	26-27 अप्रै.
मेला चकराता (देहरादून, उ. खण्ड)	3 मई
मेला पिंजौर (कालका, हरियाणा)	11 मई
मे. गंगा-सप्तमी (हरिद्वार)	18 मई
जोड़ मेला-संत खुशीराम जी गाँव-भरोमजारा, नवांशहर, पंजाब	23-24 मई
मेला जखौली (उत्तराखण्ड)	2 जून
यज्ञ ओमदरबार (नन्दाचौर, होशियारपुर)	5-7 जून
मे. भद्रकाली (कपूरथला, पंजाब)	6 जून
साईं टेकूंराम पुण्यतिथि, (हरिद्वार)	15 जून
मेला माता शीलावन्ती जी गाँव-भवानी, पठानकोट, पं.	16 जून
गंगा-दशहरा (हरिद्वार, उ.खण्ड)	20 जून
रथयात्रा उत्सव (पुरी, उड़ीसा)	12 जुला.
साईं टेकूंराम जयन्ती, सप्तसरोवर, भूपतवाला रोड, हरिद्वार, उ. खण्ड	15 जुला.
गुरु पूर्णिमा उत्सव	23 जुला.
मेला काहनूवाल (गुरदासपुर, पंजाब)	23-24 जुला.
मेला नाग-पंचमी (राजस्थान)	28 जुला.
मे. नुणाई (जौनसार बावर, उ.खण्ड)	4 अग.
मेला पं. जोगराज (जंडियाला, पंजाब)	7-8 अग.
मेला सिंघारा तीज (पंजाब)	11 अग.
मेला गौरी-तीज (जयपुर, राज.)	11 अग.
मे. भद्रराज (जौनसार, उत्तराखण्ड)	16 अग.
मेला जयन्ती-देवी (मुल्लापुर--गरीबदास, चण्डीगढ़)	21-22 अग.
मेला बग्गी-देहरी (कण्डेलालोवाल, गुरदासपुर, पं.)	22 अग.
जोड़ मेला सन्त मेलाराम जी (गाँव-भरोमजारा राणुआं, नवांशहर पं.)	27-28 अग.
कृष्ण जन्माष्टमी पर्व (मथुरा, उ.प्र.)	30 अग.
गुग्गा जाहिरपीर (नकोदर, पंजाब)	31 अग.
मे. गोगामेड़ी (श्रीगंगानगर, राज.)	31 अग.
मेला बाबा सुथरेशाह (दिल्ली)	7 सितं.
रानी सती मेला (झुंझुनूं, राजस्थान)	7 सितं.
मेला श्रीगोसाईंआणा (कुराली, पं.)	8 सितं.
मेला महासू देवता (हुंगरा, जागड़ा, जौनसार, उ.खण्ड)	10 सितं.
मेला रामदेव रोणेचा (जोधपुर, राज.)	16 सितं.
मेला वामन-द्वादशी (अम्बाला)	17 सितं.
मे. छपार (मलेरकोटला, पं.)	18-21 सितं.
मेला बाबा सोढल (जालन्धर, पंजाब)	19 सितं.
मे. गोईंदवाल सा. (तरनतारन, पं.)	20 सितं.
मेला गुग्गापीर (लुधियाना, पं.)	20 सितं.
तपा. बाबा गोपीचन्द जी-(राहों, नवांशहर, पं.)	29 सितं.-1 अक्तू.
देवीमेला (हथीरा, थानेसर, हरि.)	5-14 अक्तू.
मे. अगरोहाधाम (हरियाणा)	7 अक्तू.
मेला आशापूर्णी (पठानकोट, पं.)	7-14 अक्तू.
मे. पुष्करतीर्थ (राजस्थान)	11-19 नवं.
मे. अचलेश्वर (बटाला, पं.)	13-14 नवं.
मे. वीर-वैरागी (नकोदर, पंजाब)	17 नवं.
मे. बग्गी-देहरी (कण्डे--लालोवाल, गुरदासपुर, पं.)	18-19 नवं.
मेला रामतीर्थ (अमृतसर, पंजाब)	19 नवं.
मे. कपालमोचन (जगाधरी, हरि.)	19 नवं.
भण्डारा सन्त प्रीतमदास (जालन्धर, पं.)	30 नवं.
वार्षिक महायज्ञ श्रीओमदरबार (नन्दाचौरधाम, होशियारपुर, पं.)	2-4 दिसं.
पुरानी दीपावली (जौनसार, जौनपुर, उ. खण्ड)	4 दिसं.
कुरुक्षेत्र गीता महोत्सव (हरियाणा)	12-14 दिसं.
सिद्ध बाबा कैलाशनाथ जयंती (बस्तीशेखरोड, जालन्धर, पंजाब)	14 दिसं.
मेला जोड़ (फतेहगढ़ साहिब, पं.) शुरु	26 दिसं.

श्री बदरीनाथ धाम के मुख्य उत्सव (2021-22 ई.)

उत्सव	तिथि
श्रीबदरीनाथ-कपाट खुलने की तिथि-निर्धारण	16 फर. मंग
श्रीबदरी यात्रा प्रारंभ	14 मई शुक्र
घण्टाकर्ण उत्सव	15 जून मंग
श्रीगङ्गा-दशहरा	20 जून रवि
गुरु पूर्णिमा	23 जुला. शुक्र
नर-नारायण जयंती	13 अग. शुक्र
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	30 अग. सोम
नन्दा-अष्टमी	14 सितं. मंग
माता-मूर्त्ति उत्सव	17 सितं. शुक्र
नारद-उत्सव	18 सितं. शनि
पितृ-श्राद्ध	20 सितं.-6 अक्तू.
श्रीबदरीनाथ के कपाट बन्द करने की तिथि	15 अक्तू. शुक्र
श्रीबदरीनाथ के कपाट खुलने की तिथि निर्धारण	5 फर. (22 ई.)

हिमाचल प्रदेश के मेले व उत्सव (सन् 2021-22 ई.)

मेला / उत्सव	तिथि
श्रीदेवता खुड्डी-जल, (देहूरी, आनी, कुल्लू)	14 जन.
श्रीब्रह्मा (न्यूल, कुल्लू)	20 जन.
मे. वसन्त पंचमी (बिलासपुर)	16 फर.
मे. श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी)	11-20 मार्च
मेला काठगढ़	11 मार्च
मे. रिवालसर (मण्डी)	11 मार्च
मे. स्वर्गाश्रम (नूरपुर)	12 मार्च
मे. बैजनाथ (कांगड़ा)	13 मार्च
मेला बाबा बालकनाथ शुरु	14 मार्च
मेला कनिहारा (धर्मशाला) शुरु	14 मार्च
मेला नलवाड़ (बिलासपुर)	17-22 मार्च
मे. बड़भाग सिंह (ऊना)	22-28 मार्च
मे. नलवाड़ (सुन्दरनगर)	22-29 मार्च
सुजानपुर टिहरा (हमीरपुर)	28 मा.-1 अ.
मे. नलवाड़ (बरच्छवाड़, सरकाघाट)	28 मा.-3 अ.
होला मेला (पांओटा साहिब)	29 मार्च
मे. नलवाड़ी (घुमारवीं)	5-9 अप्रै.
मे. मारकण्डा (बिलासपुर)	12-15 अप्रै.
मेला नैनादेवी (धर्मपुर, बनवार)	12 अप्रै.
मे. नयनादेवी (बिलासपुर)	13-21 अप्रै.
मे. बालासुन्दरी (सिरमौर)	13-27 अप्रै.
कालेश्वर महादेव (देहरा, काँगड़ा)	13 अप्रै.
मे. रिवालसर (मण्डी)	13 अप्रै.
मेला बिशू (सिरमौर) प्रारम्भ	13 अप्रै.
मे. राजगढ़ (सिरमौर)	13-15 अप्रै.
ललवाड़ (सुन्दरनगर)	15-20 अप्रै.
मे. त्राम्बली (वारी, कुल्लू)	16-17 अप्रै.
मे. हुरला (कुल्लू)	16-17 अप्रै.
मेला लाहौल (मण्डी)	19 अप्रै.
मे. खनाणी (गां-शिम., कुल्लू)	19-20 अप्रै.
मे. श्रीदुर्गाष्टमी (कांगड़ादेवी)	20 अप्रै.
मेला रोहरू (महासू)	23-24 अप्रै.
मे. पीपल-जातर (कुल्लू)	28-30 अप्रै.
मेला स्वीटी	30 अप्रै.
मे. चचौहली (जगतसुख, कुल्लू)	2-4 मई
मेला आनी (कुल्लू)	7-9 मई
मे. ढुंगरी जातर (मनाली)	14-15 मई
मेला बंजार (कुल्लू)	14-18 मई
मे. घाघरस (बिलासपुर)	14 मई
मे. कमलाहिया (धर्मपुर)	16 मई
मे. माहूनाग (करसोग)	16-17 मई
पशु-मेला (हमीरपुर) शुरु	17 मई
मे. शाढ़ी जातर (नगर)	18-23 मई
मे. हरिदेवी (घुमारवीं)	21 मई
मे. हरिहरघाट (मनीकरण, कुल्लू)	22-26 मई
मे. लगदेवी (हमीरपुर)	22 मई
मे. शीतलादेवी (सुन्दरनगर)	22-24 मई
मे. मिरपरी (मण्डी)	24-25 मई
मे. मुरारीदेवी (सरकाघाट)	25-27 मई
मे. ग्राम पंजगाई (बिलासपुर)	29-30 मई
मे. नारकण्डा (बिलासपुर)	31 मई-2 जून
मे. स्थूल-मढोल	1-4 जून
मे. श्यामकाली (सरकाघाट)	2 जून
मेला बाड़ी-सरयांझ (सोलन)	15 जून
मेला उहल (हमीरपुर)	15 जून
मे. नौवाही देवी (सरकाघाट)	15 जून
भुन्तर मेला (कुल्लू)	15-17 जून
मे. माँ शूलिनी (सोलन)	18-20 जून
मे. पीपलू (हमीरपुर)	21 जून
मे. टौणी देवी (हमीरपुर)	24 जून
वन-महोत्सव प्रारम्भ	10 जुला.
मेला त्रिमौणी (सिरमौर)	11 जुला.
मेला नागनी (नूरपुर)	16 जुला.
मे. सिद्ध बाबा शिब्बो (ज्वाली)	18 जुला.
मेला मिंजर (चम्बा)	25 जुला.
मेला छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी)	9-15 अग.
मेला चामुण्डादेवी	9-15 अग.
मे. सन्तोषी माता (लदरौर)	16 अग.
श्रीदेवता खुड्डी जल, गाँव-देहूरी, आनी, जिला-कुल्लू	22-1 सितं.
मे. जन्माष्टमी (कलोह, सिरमौर)	30 अग.
मेला गुग्गा-नवमी (बिलासपुर)	31 अग.
मेला बद्राल (कुल्लू)	31 अग.
मे. अम्बिकादेवी (सदर, मण्डी)	5 सितं.
मेला रूद्र धड़ीकूपड़ (रोहड़ू, शिमला)	9 सितं.
गणपति उत्सव (मण्डी)	10-19 सितं.
मे. महासू (शिलाई, सिरमौर)	10-11 सितं.
हिमाचल गणेश-उत्सव अम्बिकानगर, अम्ब (ऊना)	10-19 सितं.
मे. गुग्गामाड़ी (सुबाथू, सोलन)	14-16 सितं.
यात्रा मनीमहेश (चम्बा) शुरु	14 सितं.
मेला नलवाड़ (चिच्चोट)	16-23 सितं.
मेला लदरौर (हमीरपुर)	16 सितं.
मेला सायर (अर्की)	16-17 सितं.
मे. वामन द्वादशी (नाहन)	17 सितं.
मेला चामुण्डादेवी (कांगड़ा)	7-14 अक्तू.
मेला बगुलामुखी (वनखण्डी)	7-14 अक्तू.
मेला रामलीला	7-15 अक्तू.
मेला तारादेवी (शिमला)	13-15 अक्तू.
मेला ज्वालामुखी	13-14 अक्तू.
मे. शीतलामाता (मच्छिभवन, कांगड़ा)	13 अक्तू.
मेला दशहरा (अर्की)	15 अक्तू.
मेला दशहरा (कुल्लू)	15-20 अक्तू.
मेला काली-बाड़ी (शिमला)	3-4 नवं.
मेला लावी (रामपुर बुशैहर)	11-14 नवं.
मेला रेणुका (नाहन, सिरमौर)	14-15 नवं.
मे. बाबा रुद्रीनन्दनारी (ऊना)	14-19 नवं.
मेला जोगी-पांगा (ऊना)	19 नवं.
बुढ़ी दीपावली (शिलाई, सिरमौर)	4-7 दिसं.

(सन् 2022 ई०)

मेला / उत्सव	तिथि
मे. ब्रह्मा (न्यूल, कुल्लू)	20 जन.
मे. वसन्त पंचमी (बिलासपुर)	5 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी)	1-9 मार्च
मेला काठगढ़	1 मार्च
मे. रिवालसर (मण्डी)	1 मार्च
मे. स्वर्गाश्रम (नूरपुर)	1 मार्च
मे. बैजनाथ (कांगड़ा)	2 मार्च
मे. बड़भाग सिंह (ऊना)	10-18 मार्च
मेला बाबा बालकनाथ शुरु	14 मार्च
मे. कनिहारा (धर्मशाला) शुरु	14 मार्च
मेला नलवाड़ (बिलासपुर)	17-22 मार्च
मेला सुजानपुर टिहरा (हमीरपुर)	17-21 मार्च
होला मेला (पांओटा साहिब)	19 मार्च
मेला नलवाड़ (सुन्दरनगर)	22-29 मार्च
मे. नलवाड़ (बरच्छवाड़, सरकाघाट)	28 मा.-3 अ.

जम्मू-कश्मीर के मेले

मेला / उत्सव	तिथि
लोहड़ी पर्व	13 जन.
मार्तण्ड तीर्थयात्रा	19 फर.
मे. शिवरात्रि (पंचवटी, दवलैहड़, जम्मू)	11 मार्च
देविका स्नान (ऊधमपुर)	11 मार्च
मेला पुरमण्डल (जम्मू)	9-10 अप्रै.
मेला गुप्तगंगा (कफी, अखनूर)	10 अप्रै.
नवरात्र-पर्व (वैष्णोदेवी)	13-21 अप्रै.
मे. वैशाखी-हरिमन्दिर -चक रामचन्द, साम्बा	13 अप्रै.
सतगुरु बाबा कांशीगिरी जी महाराज (सुन्दरबनी)	13-14 अप्रै.
देविका-स्नान (ऊधमपुर)	13 अप्रै.
नृसिंह चौदश	25 मई
मेला मानसर (जम्मू)	16-17 जून
मे. क्षीर (खीर) भवानी (तलमुल)	18 जून
सपोरयात्रा (धारलदा, ऊधमपुर)	20 जून
वानसुल देवता (चब्बा, रामबन)	21 जून
शुद्ध महादेव (ऊधमपुर)	24 जून
मेला चमलियाल	24 जून
सरथलदेवी यात्रा (किश्तवाड़)	17 जुला.
मेला शरीक-भवानी	18 जुला.
मेला हरिप्रयाग (बनी)	20 जुला.
मेला ज्वालामुखी	23 जुला.
मेला रुद्रगंगा (चंद्रेणीदेसा, डोडा)	23-24 जुला.
श्रावण शिवरात्रि (गाँव चलाई, शिवपुरी, राजगढ़, रामबन)	6 अग.
मेला नागपंचमी (कास्तीगढ़, डोडा)	13 अग.
शोपियान यात्रा शुरु	19 अग.
यात्रा श्रीअमरनाथ गुफा समाप्त	22 अग.
मे. स्वामी शंकराचार्य (श्रीनगर)	22 अग.
कृष्ण-जन्माष्टमी (रामवन)	30 अग.
कैलाश यात्रा प्रारम्भ	5-6 सितं.
मेला पात (भद्रवाह)	11-13 सितं.
मेला आशापति (मार्तण्ड)	5-6 अक्तू.
मेला झिड़ी बाबा	19 नवं.
मेला पुरमण्डल (जम्मू)	3 दिसं.
मे. वानसुल देवता (चब्बा, रामबन)	21-28 दिसं.

जैन व्रत-पर्व व उत्सव | मुस्लिम त्योहार | भारत सरकार एवं प्रादेशिक सरकारों के अवकाश (सन् 2021-22 ई.)

जैन व्रत-पर्व व उत्सव

आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा	3 जन. रवि
श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती	8 जन. शुक्र
मेरू त्रयोदशी	9 फर. मंग
मर्यादा महोत्सव	19 फर. शुक्र
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	26-28 मार्च
ऋषभदेव जयन्ती	3 अप्रै. शनि
वरसी तप प्रारम्भ	4 अप्रै. रवि
ओली तप प्रारम्भ	19 अप्रै. सोम
आचार्यभिक्षु अभिनिष्क्रमण	21 अप्रै. बुध
श्रीमहावीर जयन्ती	25 अप्रै. रवि
ओली तप समाप्त	27 अप्रै. मंग
वरसी तप समाप्त	15 मई शनि
केवलज्ञान दिवस	22 मई शनि
मे. चक्रेश्वरी देवी (सरहिन्द)	5-7 जून
चातुर्मास्य नियम शुरु	23 जुला. शुक्र
तेरापन्थ स्थापना दिवस	23 जुला. शुक्र
जैन महोत्सव	6-8 अग.
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	4 सितं. शनि
सम्वत्सरी महापर्व (पंचमीपक्ष)	11 सितं. शनि
श्रीकालू निर्वाण दिवस	12 सितं. रवि
आचार्य श्रीतुलसी पट्टारोहण	15 सितं. बुध
आचार्य भिक्षुनिर्वाण दिवस	18 सितं. शनि
श्रीमहावीर निर्वाण	4 नवं. गुरु
श्रीवीर संवत् 2548 शुरु	5 नवं. शुक्र
आचार्य श्रीतुलसी जन्म	6 नवं. शनि
ज्ञान पंचमी	9 नवं. मंग
चातुर्मास्य व्रत समाप्त	19 नवं. शुक्र
श्रीमहावीर दीक्षा दिवस	29 नवं. सोम
मौनी एकादशी	14 दिसं. मंग
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा	24 दिसं. शुक्र
श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती	29 दिसं. बुध
—(सन् 2022 ई.)—	
मेरू त्रयोदशी	30 जन. रवि
मर्यादा महोत्सव	7 फर. सोम
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	16-18 मार्च
ऋषभदेव जयन्ती	24 मार्च गुरु
वरसी तप प्रारम्भ	25 मार्च शुक्र

मुस्लिम त्योहार

उर्स मोईनुद्दीन चिश्ती (अजमेर)	14-19 फर.
जन्म श्रीहजरत अली	26 फर. शुक्र
शबे-मिराज	12 मार्च शुक्र
शब-ए-बरात	29 मार्च सोम
रमज़ान (रोज़े शुरु)	14 अप्रै. बुध
शहादत-ए-हजरत अली	4 मई मंग
जमातुल-विदा	7 मई शुक्र
शबे-कदर	10 मई सोम
ईद-उल-फितर (मीठी ईद)	14 मई शुक्र
ईदुलजुहा (बकरीद)	21 जुला. बुध
मुहर्रम (हिजरी 1443 शुरु)	11 अग. बुध
मुहर्रम (ताजिया)	20 अग. शुक्र
चेहलुम	28 सितं. मंग
आखिरी-चहार शम्बा	6 अक्तू. बुध
शहादत-ए-इमामहसन	6 अक्तू. बुध
ईद-ए-मिलाद	19 अक्तू. मंग
ईद-ए-मौलाद	24 अक्तू. रवि
ग्यारवीं शरीफ़ (फतिहायज़दहुम)	17 नवं. बुध
—(सन् 2022 ई.)—	
उर्स मोईनुद्दीन चिश्ती (अजमेर)	3-8 फर.
जन्म श्रीहजरत अली	15 फर. मंग
शबे-मिराज	1 मार्च मंग
शब-ए-बरात	19 मार्च शनि

*नोट—स्थानभेद एवं अक्षांशभेद के कारण चन्द्रदर्शन (नया, चाँद दिखाई देने की तारीख में अन्तर आ जाने से मुस्लिम त्यौहारों की तारीखों में एक दिन का अन्तर सम्भव है।

क्रिश्चियन त्यौहार

नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. शुक्र
पाम सण्डे	28 मार्च रवि
गुड फ्राइडे	2 अप्रै. शुक्र
ईस्टर सण्डे	4 अप्रै. रवि
रोगेशन सण्डे	9 मई रवि
क्रिसमिस डे	25 दिसं. शनि
—(सन् 2022 ई.)—	
नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. शनि
गुड फ्राइडे	15 अप्रै. शुक्र

भारत सरकार एवं प्रादेशिक सरकारों के अवकाश (सन् 2021-22 ई.)

(इस अवकाश सूची को भारत सरकार की गज़ट-सूची से अवश्य मिला लें।)

मकर संक्रान्ति	14 जन. गु.
श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयं.	20 जन. बु.
स्टेटहुड डे (हिमाचल प्रदेश)	25 जन. चं.
गणतन्त्र दिवस (72वाँ)	26 जन. मं.
वसन्त-पंचमी	16 फर. मं.
जन्मदिन श्रीहजरत अली	26 फर. शु.
श्रीगुरु रविदास जयन्ती	27 फर. श.
महर्षि दयानन्द सरस्वती जयं.	8 मार्च चं.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	11 मार्च गु.
होला (पं.), होली पर्व	29 मार्च चं.
गुड फ्राईडे	2 अप्रै. शु.
वैशाखी (पंजाब)	13 अप्रै. मं.
डॉ. अम्बेदकर जयन्ती	14 अप्रै. बु.
हिमाचल प्रदेश डे	15 अप्रै. गु.
श्रीरामनवमी	21 अप्रै. बु.
श्रीमहावीर जयं. (जैन)	25 अप्रै. र.
श्रम-दिवस, महाराष्ट्र डे	1 मई श.
जमातुलविदा, टैगोर जयं.	7 मई शु.
ईद-उल-फितर	14 मई शु.
भगवान् परशुराम जयं	14 मई शु.
श्रीबुद्ध-जयन्ती	26 मई बु.
महाराणा प्रताप जयन्ती	13 जून र.
सन्त कबीर जयन्ती	24 जून गु.
महाराजा रणजीत सिंह पुण्यतिथि	29 जून मं.
रथयात्रा (पुरी, उड़ीसा)	11 जुला. र.
ईदुलजुहा (बकरीद)	21 जुला. बु.
शही. स. ऊधमसिंह (पं.)	31 जुला. श.
स्वतन्त्रता दिवस (75वाँ)	15 अग. र.
मुहर्रम (ताजिया)	20 अग. शु.
रक्षा बन्धन	22 अग. र.
श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी	30 अग. चं.
शिक्षक-दिवस	5 सितं. र.
सिद्धि विनायक व्रत (महाराष्ट्र)	10 सितं. शु.
बाबा श्रीचन्द जयन्ती (पं.)	15 सितं. बु.
शहीद भगत सिंह जयं. (पं.)	28 सितं. मं.
महात्मा गाँधी जयन्ती	2 अक्तू. श.
महाराजा अग्रसेन जयन्ती	7 अक्तू. गु.
विजयादशमी	15 अक्तू. शु.
ईद-ए-मिलाद	19 अक्तू. मं.
महर्षि वाल्मीकि जयं.	20 अक्तू. बु.
व्रत करवा-चौथ	24 अक्तू. र.
हरियाणा-दिवस	1 नवं. चं.
दीपावली	4 नवं. गु.
श्रीविश्वकर्मा दिवस (पं.)	5 नवं. शु.
भाई-दूज	6 नवं. श.
श्रीगुरु नानकदेव जयन्ती	19 नवं. शु.
श्रीगुरु तेग़बहादुर बलिदान (पं.)	8 दिसं. बु.
क्रिसमिस डे	25 दिसं. श.
(सन् 2022 ई.)	
श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयं.	9 जन. र.
मकर संक्रान्ति	14 जन. शु.
स्टेटहुड डे (हिमाचल प्रदेश)	25 जन. मं.
गणतन्त्र दिवस (73वाँ)	26 जन. बु.
वसन्त-पंचमी	5 फर. श.
जन्म श्रीहजरत अली	15 फर. मं.
श्रीगुरु रविदास जयन्ती	16 फर. बु.
महर्षि दयानन्द सरस्वती जयं.	26 फर. श.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	1 मार्च मं.
होली पर्व	18 मार्च शु.
होला (पंजाब)	19 मार्च श.

सिक्ख गुरुपर्व (सन् 2021-22 ई.)

नाम गुरु साहिबान	(प्राचीन परम्परा अनुसार)		
	जन्मदिन	गुरयाई	ज्योतिजोत
1. श्रीगुरु नानक देव जी	19 नवं.	जन्म से	1 अक्तू.
2. श्रीगुरु अंगददेव जी	12 मई	26 सितं.	16 अप्रै.
3. श्रीगुरु अमरदास जी	25 मई	13 अप्रै.	20 सितं.
4. श्रीगुरु रामदास जी	22 अक्तू.	18 सितं.	9 सितं.
5. श्रीगुरु अर्जुनदेव जी	3 मई	8 सितं.	14 जून
6. श्रीगुरु हरगोबिन्द जी	25 जून	2 जून	17 अप्रै.
7. श्रीगुरु हरिराय जी	25 फर., 21 ई. 14 फर. 22 ई.	9 अप्रै, 21 ई. 30 मार्च, 22 ई.	30 अक्तू.
8. श्रीगुरु हरकिशन जी	2 अग.	30 अक्तू.	26 अप्रै.
9. श्रीगुरु तेग़ बहादुर जी	1 मई	25 अप्रै.	8 दिसं.
10. श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी	20 जन., 21 ई. 9 जन., 22 ई.	6 दिसं.	9 नवं.

I. श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रथम प्रकाश = 7 सितं., 2021 ई.
II. गुरयाई—श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी = 6 नवंबर, 2021 ई.
III. खालसा पंथ साजना दिवस = 13 अप्रैल, 2021 ई.

श्रीनिजात्म प्रेमधाम आश्रम भूपतवाला (हरिद्वार)-2021 ई.

स्वा. स्वरूपानन्द जयन्ती	16 फर.
निर्वाण स्वा. निजात्मानन्द जी	31 मार्च
निर्वाण स्वा. स्वरूपानन्द जी	28 अप्रै.
स्वा. निजात्मानन्द जयन्ती	12 मई
गुरु प्रेमानन्द जी जयन्ती	23 जुला.
निर्वाण गुरु प्रेमानन्द जी	12 अग.

'विवाह'

पुत्र विवाह के पश्चात् छः मास तक अपनी कन्या का विवाह न करें। परन्तु कन्या के विवाह के पश्चात् छः मास के भीतर पुत्र का विवाह ग्राह्य होता है।

वि. संवत् २०७८ में विभिन्न सम्वतों का प्रारम्भ

वर्ष का राजा–'मंगल' **वर्ष का मन्त्री-'मंगल'**

- वि. संवत् (राक्षस) २०७८ का शुभारम्भ = 13 अप्रैल, मंगलवार, 2021 ई.
- कल्पादि से गत वर्ष = 1,97,29,49,122 वर्ष
- सृष्टि से आरम्भ संवत् = 1,95,58,85,122 वर्ष
- इनमें सतयुग की कुल समयावधि = 17,28,000 वर्ष
- त्रेतायुग की कुल समय अवधि = 12,96,000 वर्ष
- द्वापर युग की कुल समय अवधि = 8,64,000 वर्ष
- कलियुग की कुल समय अवधि = 4,32,000 वर्ष
- भोग्य कलि वर्ष (Balance) = 4,26,878 वर्ष
- २०७८ में कलि वर्ष = 5122वां वर्ष (13 अगस्त, शुक्रवार, 2021 ई.)
- श्रीकृष्ण जन्म संवत् = 5257 प्रा. (30 अगस्त, सोमवार, 2021 ई.)
- सप्तर्षि संवत् 5097 प्रारम्भ = 13 अप्रैल, मंगलवार, 2021 ई.
- महात्मा बुद्ध सम्वत् 2645 प्रा. = 26 मई, बुधवार, 2021 ई.
- महावीर निर्वाण संवत् 2548 प्रा. = 5 नवम्बर, शुक्रवार, 2021 ई.
- सन् ईस्वी (क्रिश्चियन) 2022 प्रारम्भ = 1 जनवरी, शनिवार 2022 ई.
- शाका संवत् 1944 प्रारम्भ = 22 मार्च, मंगलवार, 2022 ई.
- हिजरी सन् 1443 (मुस्लिम) प्रा. = 11 अगस्त, बुधवार, 2021 ई.
- बंगाली सन् 1428 प्रारम्भ = 13 अप्रैल, मंगलवार, 2021 ई.
- नानकशाही संवत् 554 प्रारम्भ = 14 मार्च, सोमवार, 2022 ई.
- खालसा संवत् 323 प्रारम्भ = 13 अप्रैल, मंगलवार, 2021 ई.
- जय हिन्द संवत् 75वाँ प्रारम्भ = 15 अगस्त, रविवार, 2021 ई.
- 'पंचांगदिवाकर' का प्रवेश वर्ष 146वाँ = 13 अप्रै., मंगलवार, 2021 ई.

सन् 2021-22 ई. में संक्रान्ति, पूर्णिमा, अमावसादि—एक दृष्टि में

(मास) 2021-22↓	संक्रान्ति	एकादशी व्रत	प्रदोष व्रत	सत्य-नारायण व्रत	पूर्णिमा (उदय व्या.)	श्रीगणेश चतुर्थी	अमावस (स्नानदानार्थ)
जनवरी	14 (माघ)	9, 24	10, 26	28	28	2, 31	13
फरवरी	12 (फाल्गु.)	8(वै.),23	9, 24	26	27	–	11
मार्च	14 (चैत्र)	9, 25	10, 26	28	28	2, 31	13
अप्रैल	13 (वैशा.)	7, 23	9, 24	26	27	30	11-12
मई	14 (ज्ये.)	7,23(वै.)	8, 24	25	26	29	11
जून	15 (आषा.)	6, 21	7, 22	24	24	27	10
जुलाई	16 (श्राव.)	5, 20	7, 21	23	24	27	9-10
अगस्त	16 (भाद्र.)	4, 18	5, 20	21	22	25	8
सितम्बर	16 (आश्वि.)	3, 17	4, 18	20	20	24	7
अक्तूबर	17 (कार्ति.)	2, 16	4, 18	20	20	24	6
नवम्बर	16 (मार्ग.)	1,15(वै),30	2, 16	18	19	23	4
दिसम्बर	15 (पौष)	14, 30	2,16,31	18	19	22	4
जनवरी(22)	14 (माघ)	13, 28	15, 30	17	17	21	2
फरवरी(22)	12 (फाल्गु.)	12,27(वै.)	14, 28	16	16	20	1
मार्च (22)	14 (चैत्र)	14, 28	15, 29	17	18	21	2
अप्रैल (22)	14 (वैशा.)	–	–	–	–	–	1

आगामी वि. संवत् २०७९ के सम्भावित व्रत-पर्व

(सन् 2022-23 ई.)

चैत्र नवरात्र शुरु	2 अप्रै. श.
श्रीदुर्गाष्टमी	9 अप्रै. श.
श्रीरामनवमी	10 अप्रै., र.
वैशाख संक्रान्ति	14 अप्रै. गु.
श्रीमहावीर जयं. (जैन)	14 अप्रै. गु.
अक्षय-तृतीया	3 मई मं.
श्रीबुद्ध-जयन्ती	16 मई चं.
श्रीगङ्गा-दशहरा पर्व	9 जून गु.
गुरु-पूर्णिमा	13 जुला. बु.
दुर्गाष्टमी (मेला चिंतपूर्णी)	5 अग. शु.
रक्षा-बन्धन	11 अग. गु.
श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी (स्मा.)	18 अग. गु.
सिद्धि विनायक व्रत	31 अग. बु.
श्राद्ध प्रारम्भ	10 सितं. श.
श्राद्ध समाप्त	25 सितं. र.
शरद् नवरात्र प्रारम्भ	26 सितं. चं.
श्रीदुर्गाष्टमी	3 अक्तू. चं.
विजयादशमी	5 अक्तू. बु.
शरद् पूर्णिमा व्रत	9 अक्तू. र.
करवा-चौथ व्रत	13 अक्तू. गु.
दीपावली	24 अक्तू. चं.
भाई-दूज	26 अक्तू. बु.
श्रीगुरु नानक जयं.	8 नवं. मं.
श्रीगीता-जयन्ती	3 दिसं. श.

(सन् 2023 ई.)

मकर संक्रान्ति	14 जन. श.
श्रीवसन्त पंचमी	26 जन. गु.
श्रीगुरु रविदास जयं.	5 फर. र.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	18 फर. श.
होलिका-दहन	6 मार्च चं.

गण्डमूलक नक्षत्रों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) संवत् २०७८ वि.

(1 जनवरी, सन् 2021 ई. से 5 अप्रैल, 2022 ई. तक)

रेवती, अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा एवं मूल—ये गण्डमूल नक्षत्र कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न जातक स्वयं अपने या माता-पिता के स्वास्थ्य, व्यवसाय एवं उन्नति आदि के सम्बन्ध में अशुभ होते हैं। गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक के नक्षत्र की लगभग 27 दिन पश्चात् उसी नक्षत्रकाल में विद्वान् एवं योग्य ब्राह्मण द्वारा शान्ति करवानी चाहिए। यदि जन्मकाल के समय शान्ति न करवाई गई हो तो, जातक के जन्मदिन के निकट उसी नक्षत्र में दान-पूजन करवा लेना शुभकारक रहता है।

नोट—हमारे कार्यालय से छपी **'सम्पूर्ण गण्डमूल नक्षत्र शान्ति प्रयोग'** पुस्तक पूजनादि कार्यों के लिए मंगवा सकते हैं। **मूल्य 75/- रु.**

पता—जनरल बुक डिपो, चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पं.)

प्रारम्भ काल					समाप्ति काल				
ता.	मास	नक्षत्र	घं.	मिं.	ता.	मास	नक्षत्र	घं.	मिं.
1	जन.	आश्लेषा	20	15	3	जन.	मघा	19	57
10	जन.	ज्येष्ठा	10	50	12	जन.	मूल	7	38
19	जन.	रेवती	9	55	21	जन.	अश्विनी	15	36
29	जन.	आश्लेषा	3	51	31	जन.	मघा	2	28
6	फर.	ज्येष्ठा	17	18	8	फर.	मूल	15	21
15	फर.	रेवती	18	29	17	फर.	अश्विनी	23	49
25	फर.	आश्लेषा	13	17	27	फर.	मघा	11	18
5	मार्च	ज्येष्ठा	22	38	7	मार्च	मूल	20	59
15	मार्च	रेवती	2	20	17	मार्च	अश्विनी	7	31
24	मार्च	आश्लेषा	23	12	26	मार्च	मघा	21	39
2	अप्रैल	ज्येष्ठा	5	19	4	अप्रैल	मूल	2	39
11	अप्रैल	रेवती	8	58	13	अप्रैल	अश्विनी	14	19
21	अप्रैल	आश्लेषा	7	59	23	अप्रैल	मघा	7	42
29	अप्रैल	ज्येष्ठा	14	29	1	मई	मूल	10	16
8	मई	रेवती	14	47	10	मई	अश्विनी	20	25
18	मई	आश्लेषा	14	55	20	मई	मघा	15	57
27	मई	ज्येष्ठा	1	15	28	मई	मूल	20	02
4	जून	रेवती	20	47	7	जून	अश्विनी	2	27
14	जून	आश्लेषा	20	37	16	जून	मघा	22	15
23	जून	ज्येष्ठा	11	48	25	जून	मूल	6	40
2	जुला.	रेवती	3	49	4	जुला.	अश्विनी	9	05
12	जुला	आश्लेषा	2	22	14	जुला	मघा	3	41
20	जुला.	ज्येष्ठा	20	33	22	जुला	मूल	16	25
29	जुला	रेवती	12	02	31	जुला	अश्विनी	16	38
8	अग.	आश्लेषा	9	19	10	अग.	मघा	9	53
17	अग.	ज्येष्ठा	3	02	19	अग.	मूल	00	07
25	अग.	रेवती	20	48	28	अग.	अश्विनी	00	47
4	सितं.	आश्लेषा	17	45	6	सितं.	मघा	17	51
13	सितं.	ज्येष्ठा	8	24	15	सितं.	मूल	5	55
22	सितं.	रेवती	5	06	24	सितं.	अश्विनी	8	54
2	अक्तू.	आश्लेषा	2	58	4	अक्तू.	मघा	3	26
10	अक्तू.	ज्येष्ठा	14	44	12	अक्तू.	मूल	11	26
19	अक्तू.	रेवती	12	12	21	अक्तू.	अश्विनी	16	17
29	अक्तू.	आश्लेषा	11	38	31	अक्तू.	मघा	13	16
6	नवं.	ज्येष्ठा	23	39	8	नवं.	मूल	18	49
15	नवं.	रेवती	18	09	17	नवं.	अश्विनी	22	43
25	नवं.	आश्लेषा	18	49	27	नवं.	मघा	21	43
4	दिसं.	ज्ये.	10	47	6	दिसं.	मूल	4	54
12	दिसं.	रेवती	24	00	15	दिसं.	अश्विनी	4	40
23	दिसं.	आश्लेषा	00	45	25	दिसं.	मघा	4	10
31	दिसं.	ज्येष्ठा	22	04	2	जन. (22)	मूल	16	23
(सन् 2022 ई.)									
9	जन.	रेवती	7	10	11	जन.	अश्विनी	11	10
19	जन.	आश्लेषा	6	42	21	जन.	मघा	9	43
28	जन.	ज्येष्ठा	7	10	30	जन.	मूल	2	49
5	फर.	रेवती	16	09	7	फर.	अश्विनी	18	59
15	फर.	आश्लेषा	13	49	17	फर.	मघा	16	11
24	फर.	ज्येष्ठा	13	31	26	फर.	मूल	10	32
5	मार्च	रेवती	1	52	7	मार्च	अश्विनी	3	51
14	मार्च	आश्लेषा	22	08	17	मार्च	मघा	00	21
23	मार्च	ज्येष्ठा	18	53	25	मार्च	मूल	16	07
1	अप्रैल	रेवती	10	40	3	अप्रैल	अश्विनी	12	37

पंचक—आरम्भ एवं समाप्तिकाल

(सन् 2021-22 ई.)

पंचक नक्षत्र (धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण से रेवती नक्षत्र तक) कालीन दक्षिण दिशा की ओर यात्रा करना, मकान, दुकानादि की छत डालना, चारपाई-पलंगादि बुनना, शव का दाह (मुर्दा जलाना), बाँस की चटाई, दीवार प्रारम्भ करना आदि स्तम्भारोपण, ताँबा, पीतल, तृण-काष्ठादि का संचय करना आदि कृत्यों का निषेध माना जाता है। समुचित उपाय एवं पंचक-शान्ति करवाकर ही उक्त कार्यों का सम्पादन करना कल्याणकारी होगा। ध्यान रहे, पंचक नक्षत्रों का विचार मात्र उपरोक्त विशेष कृत्यों के लिए ही किया जाता है। विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृह प्रवेश, वधू-प्रवेश, उपनयन, विपणि आदि मुहूर्त्तों में तो पंचक नक्षत्रों का प्रयोग शुभ माना गया है।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
ता. मास	घं.	मिं.	ता. मास	घं.	मिं.
15 जन.	17	06	20 जन.	12	36
12 फर.	2	11	16 फर.	20	57
11 मार्च	9	21	16 मार्च	4	44
7 अप्रैल	15	00	12 अप्रै.	11	29
4 मई	20	44	9 मई	17	29
1 जून	3	59	5 जून	23	28
28 जून	13	00	3 जुला.	6	14
25 जुला	22	48	30 जुला	14	02
22 अग.	7	57	26 अग.	22	29
18 सितं.	15	26	23 सितं.	6	44
15 अक्तू	21	16	20 अक्तू	14	02
12 नवं.	2	51	16 नवं.	20	14
9 दिसं.	10	10	14 दिसं.	2	05
(सन् 2022 ई.)					
5 जन.	19	54	10 जन.	8	49
2 फर.	6	45	6 फर.	17	10
1 मार्च	16	31	6 मार्च	2	29
28 मार्च	23	55	2 अप्रै.	11	21

श्रीगणेश–चतुर्थी एवं श्रीकृष्ण–जन्माष्टमी व्रत

भारत के प्रसिद्ध नगरों में चन्द्रोदय का समय (वि. संवत् 2078) (भा.स्टैं.टा.)

श्री गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय काल

नगर	30 अप्रैल 2021 घं. मिं.	29 मई 2021 घं. मिं.	27 जून 2021 घं. मिं.	27 जुला. 2021 घं. मिं.	25 अग. 2021 घं. मिं.	24 सितं. 2021 घं. मिं.	24अक्टू. 2021 करवाचौथ	23 नवं. 2021 घं. मिं.	22 दिसं. 2021 घं. मिं.	21 जन. 2022 संकटचौथ	20 फर. 2022 घं. मिं.	21 मार्च 2022 घं. मिं.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी 30 अग. 2021 घं. मिं.
अमृतसर	23 06	22 53	22 19	22 02	21 00	20 26	20 09	20 27	20 14	21 06	22 02	22 02	23 38
अजमेर	22 54	22 40	22 09	21 59	21 01	20 34	20 23	20 42	20 28	21 13	22 00	21 56	23 51
अम्बाला	22 55	22 41	22 08	21 53	20 52	20 20	20 08	20 23	20 09	21 00	21 53	21 52	23 33
अहमदाबाद(गु.)	22 53	22 40	22 11	22 05	21 09	20 46	20 39	20 59	20 43	21 24	22 07	21 59	24 06
अलवर (राज.)	22 48	22 34	22 03	21 52	20 53	20 24	20 12	20 31	20 17	21 04	21 52	21 49	23 40
आगरा	22 41	22 28	21 57	21 46	20 47	20 19	20 07	20 26	20 12	20 58	21 46	21 42	23 35
इन्दौर	22 39	22 26	21 57	21 52	20 56	20 34	20 26	20 47	20 31	21 12	21 53	21 45	23 54
ऊना	23 00	22 46	22 13	21 57	20 54	20 20	20 04	20 22	20 09	21 01	21 56	21 56	23 32
उदयपुर (राज.)	22 53	22 39	22 10	22 02	21 05	20 40	20 31	20 51	20 36	21 19	22 03	21 57	23 59
ऊधमपुर (का.)	23 09	22 55	22 21	22 02	20 58	20 23	20 05	20 22	20 10	21 04	22 01	22 03	23 33
उज्जैन	22 41	22 27	21 58	21 52	20 56	20 33	20 26	20 46	20 30	21 11	21 54	21 46	23 53
कठुआ (ज.का.)	23 06	22 52	22 18	22 00	20 57	20 22	20 05	20 22	20 10	21 03	22 00	22 01	23 33
कपूरथला	23 04	22 50	22 17	22 00	20 57	20 24	20 08	20 26	20 13	21 05	21 59	22 00	23 36
करनाल	22 52	22 39	22 06	21 52	20 51	20 20	20 06	20 24	20 10	21 00	21 52	21 51	23 34
काँगड़ा(हि.प्र.)	23 02	22 48	22 15	21 57	20 54	20 19	20 02	20 20	20 07	21 00	21 56	21 57	23 31
कानपुर	22 30	22 16	21 46	21 36	20 37	20 10	19 59	20 19	20 04	20 49	21 36	21 32	23 27
कैथल	22 55	22 41	22 09	21 55	20 53	20 22	20 08	20 26	20 12	21 02	21 54	21 53	23 36
कुल्लू (हि.प्र.)	22 58	22 44	22 11	21 54	20 50	20 16	19 59	20 17	20 04	20 57	21 53	21 54	23 28
कुराली (पं.)	22 57	22 43	22 11	21 55	20 53	20 20	20 04	20 22	20 09	21 00	21 54	21 54	23 33
कुरुक्षेत्र	22 54	22 40	22 08	21 53	20 52	20 20	20 05	20 24	20 10	21 00	21 53	21 52	23 33
कालका (हरि.)	22 56	22 42	22 09	21 53	20 51	20 18	20 03	20 21	20 08	20 59	21 53	21 53	23 31
करसोग (हि.प्र.)	22 56	22 42	22 09	21 53	20 50	20 17	20 00	20 18	20 05	20 57	21 52	21 52	23 29
कोलकाता	21 47	21 33	21 05	21 00	20 05	19 42	19 35	19 55	19 39	20 20	21 01	20 53	23 02
खरड़ (पं.)	22 57	22 43	22 10	21 55	20 52	20 20	20 04	20 22	20 09	21 00	21 54	21 54	23 33
खन्ना (पं.)	22 58	22 45	22 12	21 56	20 54	20 22	20 06	20 24	20 11	21 02	21 56	21 55	23 34
गाज़ियाबाद	22 48	22 34	22 02	21 50	20 49	20 19	20 06	20 25	20 11	20 59	21 50	21 47	23 34
ग्वालियर	22 38	22 25	21 54	21 45	20 46	20 20	20 09	20 28	20 13	20 58	21 45	21 40	23 37
गुरदासपुर	23 05	22 51	22 18	22 01	20 57	20 23	20 06	20 24	20 11	21 04	22 00	22 01	23 34
गुरुग्राम	22 49	22 35	22 03	21 51	20 51	20 21	20 08	20 27	20 13	21 01	21 51	21 48	23 36
चण्डीगढ़	22 56	22 42	22 09	21 54	20 52	20 19	20 03	20 22	20 08	20 59	21 53	21 53	23 32

श्रीगणेश–चतुर्थी एवं श्रीकृष्ण–जन्माष्टमी व्रत

श्रीगणेश–चतुर्थी एवं श्रीकृष्ण–जन्माष्टमी व्रत

भारत के प्रसिद्ध नगरों में चन्द्रोदय का समय (वि. संवत् 2078) (भा.स्टैं.टा.)

श्री गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय काल | श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

नगर	30 अप्रैल 2021	29 मई 2021	27 जून 2021	27 जुला. 2021	25 अग. 2021	24 सितं. 2021	24अक्तू. 2021 करवाचौथ	23 नवं. 2021	22 दिसं. 2021	21 जन. 2022 संकटचौथ	20 फर. 2022	21 मार्च 2022	30 अग. 2021 (श्रीकृष्ण जन्माष्टमी)
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.		घं. मिं.	घं. मिं.		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
चम्बा	23 04	22 50	22 16	21 58	20 54	20 19	20 02	20 19	20 07	21 00	21 57	21 59	23 30
चेन्नई	22 00	21 47	21 22	21 27	20 38	20 27	20 28	20 50	20 31	21 02	21 31	21 15	23 54
जयपुर (राज.)	22 50	22 36	22 05	21 55	20 56	20 28	20 17	20 36	20 22	21 07	21 55	21 51	23 45
जम्मू	23 10	22 56	22 22	22 03	20 59	20 24	20 06	20 24	20 12	21 05	22 02	22 04	23 35
जलालाबाद(पं.)	23 06	22 52	22 20	22 04	21 02	20 30	20 14	20 33	20 20	21 10	22 04	22 03	23 43
जलगांव(महा.)	22 37	22 23	21 55	21 52	20 57	20 37	20 31	20 52	20 35	21 14	21 54	21 44	23 58
ज्वाली (हि.प्र.)	23 03	22 49	22 16	21 58	20 55	20 20	20 03	20 21	20 08	21 01	21 57	21 59	23 32
जालन्धर	23 03	22 49	22 16	21 59	20 57	20 24	20 07	20 25	20 12	21 04	21 59	21 59	23 36
जाखल	22 57	22 44	22 11	21 57	20 56	20 24	20 10	20 28	20 15	21 05	21 57	21 56	23 38
जीन्द (हरि.)	22 54	22 40	22 08	21 55	20 54	20 23	20 09	20 28	20 14	21 03	21 55	21 53	23 37
जोधपुर	23 00	22 46	22 16	22 06	21 07	20 40	20 30	20 49	20 34	21 20	22 07	22 02	23 58
तलवाड़ा (पं.)	23 03	22 49	22 16	21 59	20 55	20 21	20 04	20 22	20 09	21 02	21 58	21 59	23 33
टोहाना (हरि.)	22 57	22 43	22 11	21 57	20 55	20 24	20 10	20 28	20 15	21 04	21 56	21 55	23 38
दिल्ली	22 48	22 35	22 03	21 50	20 50	20 20	20 07	20 26	20 12	21 00	21 50	21 48	23 35
दीनानगर (पं.)	23 05	22 52	22 18	22 00	20 57	20 23	20 05	20 23	20 11	21 03	22 00	22 01	23 34
देहरादून	22 50	22 36	22 03	21 49	20 47	20 15	20 00	20 18	20 04	20 55	21 48	21 47	23 28
धर्मशाला	23 02	22 48	22 14	21 57	20 53	20 19	20 01	20 19	20 06	20 59	21 56	21 57	23 30
धारीवाल (पं.)	23 06	22 52	22 18	22 01	20 58	20 23	20 07	20 24	20 12	21 04	22 00	22 01	23 35
नंगल (पं.)	22 59	22 46	22 13	21 56	20 53	20 20	20 04	20 22	20 09	21 00	21 55	21 56	23 32
नादौन (हि.प्र.)	23 01	22 47	22 14	21 57	20 54	20 20	20 03	20 21	20 08	21 00	21 56	21 57	23 31
नाहन	22 53	22 40	22 07	21 52	20 50	20 17	20 02	20 20	20 07	20 58	21 51	21 51	23 30
नवांशहर (पं.)	23 00	22 46	22 13	21 57	20 55	20 21	20 05	20 23	20 10	21 02	21 56	21 56	23 34
नालागढ़	22 57	22 43	22 10	21 55	20 52	20 19	20 03	20 21	20 08	20 59	21 54	21 54	23 32
नूरपुर (हि.प्र.)	23 04	22 50	22 17	21 59	20 55	20 21	20 03	20 21	20 09	21 01	21 58	21 59	23 32
पठानकोट	23 05	22 51	22 17	22 00	20 56	20 21	20 04	20 22	20 09	21 02	21 59	22 00	23 33
पटियाला	22 56	22 43	22 10	21 55	20 53	20 21	20 06	20 24	20 11	21 01	21 55	21 54	23 34
पंचकूला	22 56	22 42	22 09	21 54	20 52	20 19	20 04	20 22	20 08	20 59	21 53	21 53	23 32
पटना	22 07	21 54	21 24	21 16	20 18	19 52	19 42	20 01	19 46	20 30	21 16	21 10	23 09
प्रयागराज	22 21	22 07	21 38	21 29	20 31	20 05	19 55	20 15	20 00	20 44	21 30	21 24	23 23
पालमपुर(हि.प्र.)	23 01	22 47	22 13	21 56	20 53	20 18	20 01	20 19	20 06	20 59	21 55	21 56	23 30
पानीपत	22 52	22 38	22 06	21 52	20 51	20 20	20 06	20 25	20 11	21 00	21 52	21 50	23 34

श्रीगणेश-चतुर्थी एवं श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत

भारत के प्रसिद्ध नगरों में चन्द्रोदय का समय (वि. संवत् 2078) (भा.स्टैं.टा.)

श्री गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय काल

नगर	30 अप्रैल 2021		29 मई 2021		27 जून 2021		27 जुला. 2021		25 अग. 2021		24 सितं. 2021		24अक्तू. 2021 करवाचौथ		23 नवं. 2021		22 दिसं. 2021		21 जन. 2022 संकटचौथ		20 फर. 2022		21 मार्च 2022		श्रीकृष्ण जन्माष्टमी 30 अग. 2021	
	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.			घं.	मिं.	घं.	मिं.			घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
पूना (महा.)	22	38	22	25	21	58	21	57	21	04	20	47	20	43	21	05	20	47	21	24	22	00	21	48	24	10
पिहोवा (हरि.)	22	55	22	41	22	09	21	54	20	53	20	21	20	06	20	26	20	11	21	01	21	54	21	53	23	35
पांओटा साहिब	22	52	22	38	22	05	21	50	20	48	20	16	20	01	20	19	20	06	20	56	21	50	21	49	23	29
परवाणू(हि.प्र.)	22	56	22	42	22	09	21	53	20	51	20	18	20	03	20	21	20	08	20	59	21	53	21	53	23	31
फगवाड़ा	23	02	22	48	22	15	21	58	20	56	20	23	20	07	20	25	20	12	21	03	21	58	21	58	23	35
फरीदकोट	23	04	22	50	22	18	22	02	21	00	20	28	20	12	20	30	20	17	21	08	22	02	22	01	23	40
फरीदाबाद	22	47	22	34	22	02	21	50	20	50	20	20	20	07	20	26	20	12	21	00	21	50	21	47	23	35
फाज़िल्का	23	07	22	53	22	20	22	05	21	03	20	31	20	16	20	34	20	21	21	11	22	05	22	04	23	44
फिरोज़पुर	23	05	22	52	22	19	22	03	21	00	20	28	20	12	20	30	20	17	21	08	22	02	22	02	23	40
फतेहाबाद(हरि.)	22	58	22	44	22	12	21	58	20	57	20	26	20	12	20	31	20	17	21	06	21	58	21	57	23	40
बरनाला(पं.)	23	00	22	46	22	14	21	59	20	57	20	25	20	10	20	28	20	15	21	05	21	58	21	58	23	38
बीकानेर	23	03	22	49	22	18	22	06	21	06	20	37	20	25	20	44	20	29	21	17	22	06	22	03	23	53
बनीखेत(हि.प्र.)	23	05	22	51	22	17	21	59	20	55	20	20	20	02	20	20	20	08	21	01	21	58	21	59	23	31
बरेली (उ.प्र.)	22	38	22	25	21	54	21	41	20	41	20	12	19	59	20	17	20	03	21	41	21	41	21	38	23	27
बैजनाथ(हि.प्र.)	23	00	22	46	22	13	21	56	20	52	20	18	20	01	20	19	20	06	20	59	21	55	21	56	23	29
बिलासपुर(हि.प्र.)	22	58	22	44	22	11	21	55	20	52	20	18	20	02	20	20	20	07	20	59	21	54	21	54	23	31
बैंगलूरु	22	11	21	58	21	33	21	38	20	49	20	38	20	39	21	02	20	42	21	13	21	42	21	26	24	05
भटिण्डा	23	02	22	48	22	16	22	01	20	59	20	27	20	13	20	31	20	18	21	08	22	01	22	00	23	41
मथुरा	22	44	22	30	21	59	21	48	20	48	20	20	20	08	20	27	20	13	20	59	21	48	21	44	23	36
मण्डी (हि.प्र.)	22	58	22	44	22	11	21	54	20	51	20	17	20	01	20	18	20	06	20	58	21	53	21	54	23	29
मुकेरियां (पं.)	23	04	22	50	22	17	22	00	20	57	20	22	20	05	20	23	20	10	21	03	21	59	22	00	23	34
मोहाली (पं.)	22	56	22	42	22	10	21	54	20	52	20	20	20	04	20	22	20	09	21	00	21	54	21	53	23	31
मेरठ	22	47	22	34	22	02	21	49	20	48	20	18	20	04	20	23	20	09	20	58	21	49	21	46	23	32
मुम्बई	22	43	22	30	22	03	22	01	21	09	20	50	20	47	21	08	20	51	21	27	22	04	21	53	24	14
मनाली(हि.प्र.)	22	59	22	45	22	11	21	54	20	50	20	15	19	58	20	16	20	03	20	56	21	53	21	54	23	27
मुक्तसर (पं.)	23	05	22	51	22	18	22	03	21	01	20	29	20	14	20	32	20	19	21	09	22	03	22	02	23	42
मोगा(पं.)	23	03	22	49	22	16	22	01	20	58	20	26	20	10	20	28	20	15	21	06	22	00	22	00	23	38
मलेरकोटला	22	59	22	45	22	13	21	57	20	56	20	23	20	08	20	26	20	13	21	03	21	57	21	56	23	36
महेन्द्रगढ़(हरि.)	22	52	22	38	22	07	21	55	20	55	20	25	20	12	20	31	20	17	21	05	21	55	21	52	23	40
यमुनानगर	22	52	22	39	22	06	21	51	20	50	20	18	20	03	20	21	20	08	20	58	21	51	21	50	23	31

श्रीगणेश-चतुर्थी एवं श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत

श्रीगणेश-चतुर्थी एवं श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत

भारत के प्रसिद्ध नगरों में चन्द्रोदय का समय (वि. संवत् 2078) (भा.स्टैं.टा.)

श्री गणेश चतुर्थी चन्द्रोदय काल

नगर	30 अप्रैल 2021 घं. मिं.	29 मई 2021 घं. मिं.	27 जून 2021 घं. मिं.	27 जुला. 2021 घं. मिं.	25 अग. 2021 घं. मिं.	24 सितं. 2021 घं. मिं.	24अक्तू. 2021 करवाचौथ	23 नवं. 2021 घं. मिं.	22 दिसं. 2021 घं. मिं.	21 जन. 2022 संकटचौथ	20 फर. 2022 घं. मिं.	21 मार्च 2022 घं. मिं.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी 30 अग. 2021 घं. मिं.
रिवाड़ी (हरि.)	22 50	22 36	22 05	21 53	20 53	20 23	20 11	20 29	20 15	21 03	21 53	21 50	23 39
रोहतक(हरि.)	22 52	22 38	22 06	21 53	20 53	20 22	20 09	20 28	20 14	21 02	21 53	21 51	23 37
रोहड़ू (हि.प्र.)	22 53	22 39	22 06	21 50	20 48	20 15	19 59	20 16	20 04	20 55	21 50	21 50	23 27
रोपड़ (पं.)	22 58	22 44	22 11	21 55	20 53	20 20	20 04	20 22	20 09	21 00	21 55	21 54	23 32
राजपुरा (पं.)	22 56	22 42	22 10	21 54	20 53	20 20	20 05	20 23	20 10	21 01	21 54	21 53	23 33
रायपुर(३६गढ़)	22 12	21 59	21 31	21 27	20 32	20 12	20 06	20 26	20 10	20 49	21 29	21 19	23 33
रामपुर बुशैहर	22 54	22 41	22 08	21 51	20 48	20 15	19 58	20 16	20 03	20 55	21 50	21 51	23 27
रूड़की (उ.खण्ड)	22 49	22 35	22 03	21 49	20 47	20 16	20 01	20 20	20 06	20 56	21 48	21 47	23 30
राजौरी (ज.का.)	23 14	23 00	22 26	22 06	21 02	20 25	20 07	20 24	20 12	21 07	22 05	22 08	23 35
लुधियाना	23 00	22 46	22 13	21 58	20 55	20 23	20 07	20 25	20 12	21 03	21 57	21 57	23 35
लखनऊ	22 28	22 15	21 44	21 34	20 35	20 08	19 56	20 15	20 01	20 46	21 34	21 30	23 24
वाराणसी	22 16	22 02	21 33	21 24	20 27	20 01	19 51	20 11	19 55	20 39	21 25	21 19	23 19
शिमला	22 55	22 42	22 09	21 53	20 50	20 17	20 01	20 19	20 06	20 57	21 52	21 52	23 29
श्रीनगर (का.)	23 14	23 00	22 25	22 05	21 00	20 22	20 03	20 20	20 08	21 04	22 03	22 07	23 31
श्रीगंगानगर	23 06	22 52	22 20	22 05	21 04	20 33	20 18	20 37	20 23	21 13	22 05	22 04	23 46
संगरूर	22 58	22 45	22 12	21 57	20 56	20 24	20 09	20 27	20 14	21 04	21 57	21 56	23 37
सरकाघाट(हि.प्र.)	22 59	22 45	22 12	21 55	20 52	20 18	20 01	20 19	20 06	20 59	21 54	21 55	23 30
सहारनपुर	22 51	22 37	22 05	21 50	20 49	20 17	20 02	20 21	20 07	20 57	21 50	21 49	23 31
सागर (म.प्र.)	22 30	22 17	21 47	21 41	20 44	20 20	20 12	20 32	20 16	20 59	21 42	21 35	23 40
सोनीपत	22 50	22 37	22 05	21 52	20 51	20 21	20 07	20 26	20 12	21 00	21 51	21 49	23 35
सिरसा	23 00	22 46	22 14	22 00	20 59	20 28	20 14	20 32	20 19	21 08	22 00	21 59	23 42
सोलन (हि.प्र.)	22 55	22 41	22 09	21 53	20 51	20 18	20 02	20 20	20 07	20 58	21 52	21 52	23 30
सुन्दरनगर	22 58	22 44	22 11	21 54	20 51	20 18	20 01	20 19	20 06	20 58	21 53	21 54	23 30
सुजानपुर टिहरा	23 00	22 46	22 13	21 56	20 53	20 19	20 02	20 20	20 07	20 59	21 55	21 56	23 30
सुन्दरबनी (का.)	23 12	22 58	22 24	22 05	21 01	20 25	20 07	20 24	20 12	21 06	22 04	22 06	23 36
सुनाम (पं.)	22 58	22 45	22 12	21 57	20 56	20 24	20 09	20 28	20 14	21 04	21 57	21 56	23 37
हमीरपुर(हि.प्र.)	23 00	22 46	22 13	21 56	20 53	20 19	20 02	20 20	20 07	21 00	21 55	21 56	23 31
हरिद्वार	22 48	22 34	22 02	21 48	20 46	20 15	20 00	20 18	20 05	20 55	21 47	21 46	23 28
हिसार (हरि.)	22 56	22 42	22 10	21 57	20 56	20 26	20 12	20 30	20 17	21 05	21 57	21 55	23 40
होशियारपुर	23 02	22 48	22 15	21 58	20 55	20 22	20 05	20 23	20 10	21 02	21 57	21 58	23 33
हाँसी (हरि.)	22 55	22 41	22 09	21 56	20 55	20 25	20 11	20 30	20 16	21 05	21 56	21 54	23 39

संदिग्ध व्रत-पर्वों का शास्त्रीय निर्णय-वि.सं.२०७८

लेखक :-पं. विवेक शर्मा

(1) वि. संवत् 2078 मध्ये 'राक्षस' नाम सम्वत्सर

[अर्थात् क्या वि. संवत् 2077 मध्ये 'आनन्द' नाम सम्वत्सर लुप्त था ?]

गत कुछ वर्षों से संवत्सर के नाम सम्बन्धी वैमत्य से पाठक भली-भान्ति अवगत हैं। वि. संवत् 2072 के पृष्ठ 65-66 पर **'लुप्त-सम्वत्सर'** सम्बन्धी स्पष्टीकरण में बताया था कि सम्वत्सर का आधार **गुरुमान** है। अतएव गुरु की गति-अनुसार ही सम्वत्सर का निर्धारण होता है। गुरु सामान्यतः एक-राशि में 13 मास तक संचरण करता है। गत्यनुसार यह अवधि एक मास तक आगे-पीछे हो सकती है। किन्तु अतिचारी होने पर 10-11 मास के भीतर ही उस राशि को भुक्त करके दूसरी राशि में पहुँचकर पुनः वक्री होकर उस राशि में लौटकर जब न आए, तो वह वर्ष **'लुप्त सम्वत्सर'** के नाम से पुकारा जाता है। शास्त्रीय विवेचना से (वि. संवत् 2072 के पष्ठ 66 पर) स्पष्ट किया था कि गुरु का एक राशि में भोग्यकाल स्थूलमान से कम-से-कम 10 मास तथा कुछ दिन तो होना ही चाहिए।

ऋषि वशिष्ठ एवं मुहूर्त्त चिन्तामणि आदि ग्रन्थों अनुसार यदि गुरु अतिचारवश (मेष, वृष, कुम्भ तथा मीन के अतिरिक्त) दूसरी राशि में जाता है तथा वहाँ पहुँचकर वक्री होकर पहिली राशि में (के) अतिचार अंशों को नहीं भोगता, तो उस वर्ष को लुप्त वर्ष के नाम से जाना जाता है।

गत वि. संवत् 2077 में गुरु ने अतिचारवश 3 राशियों को स्पर्श किया था। तदनुसार वि. संवत् 2077 में ही **'आनन्द'** नामक संवत्सर लुप्त माना जाएगा। [**देखें प्रमाण**—वि. संवत् 2072 पृष्ठ 66-मुहूर्त्ततत्त्व, यशोधरतन्त्र] **परन्तु इसका अन्तिम निर्णय आगामी संवत् (2078) में गुरु के स्पष्ट राशि भोगांश द्वारा ही सम्भव होगा।** वि. संवत् 2078 में गुरु कुम्भ राशि में वक्री होकर पुनः मकर राशि में केवल 67 दिन [14 सितंबर, 2020 ई. से 19 नवंबर, 2020 ई. तक] संचार करेंगे। इस प्रकार गुरु का मकर राशि में संचारकाल (सन् 2020 तथा 21 ई. में) 296 दिन ही हुआ, जोकि 10 मास से कम हैं। इस प्रकार गुरु ने वि. संवत् 2078 में अपना निर्धारित संचारकाल पूर्ण नहीं किया। जबकि 2021-22 ई. में (वि. संवत् 2077-78 में कुम्भ संचारदिन 306 हैं। तदनुसार गत् संवत् 2077 में ही आनन्द संवत्सर लुप्त हो गया है क्योंकि आनन्द सम्वत्सर विक्रमी संवत् के आरम्भ (25 मार्च, 2020 ई.) से 12 दिन बाद 5 अप्रैल, 2020 ई. से प्रारम्भ हुआ था। इसलिए हमने हजारों वर्षों से प्रचलित परम्परानुसार संवतारम्भ में विद्यमान् **'प्रमादी'** सम्वत्सर को ही वि. संवत् का सम्वत्सर लिखा था।

सूक्ष्म गणना अनुसार भी गत वि. संवत् 2077 में मेषादि संक्रान्ति दिन-13 अप्रैल, 2020 ई. को आनन्द नाम संवत्सर के भुक्त मासादि ०/८/३८/४४ तथा भोग्य मासादि ११/२१/३१/१२ थे अर्थात् **5 अप्रैल, 2020 ई. से आनन्द सम्वत्सर प्रारम्भ हुआ था। अतः स्पष्ट है, सम्वतारम्भ (25 मार्च, 2020 ई.) में प्रमादी संवत्सर था।** तद्नुसार वि. संवत् 2077 में 6 अप्रैल, 2020 ई. से 31 मार्च, 2021 ई. तक प्रवृत्त **आनन्द** सम्वत्सर लुप्त माना जाएगा। संवतारम्भ में (25 मार्च, 2020 ई.) **'प्रमादी'** संवत्सर ही विद्यमान् था, न कि **'आनन्द'**।। तद्नुसार सम्वत्सर का फलादेश भी उसी प्रकार घटित हुआ, न कि 'आनन्द' सम्वत्सर के अनुसार। **अतएव जिन पंचांगों में 'आनन्द' निर्देश किया था, त्रुटिपूर्ण था।**

इसी प्रकार, सूक्ष्म गणित-अनुसार वि. संवत् 2078 मध्ये मेष संक्रान्ति के समय **'राक्षस'** सम्वत्सर के भुक्त मासादि ०/१२/४२/००, तथा भोग्य मासादि ११/१७/२८/०० हैं। अर्थात् 13 अप्रैल, 2021 ई. से 12 दिन पूर्व ही 'राक्षस' संवत्सर प्रारम्भ हो चुका है।

अतः स्पष्ट है, वि. संवत् 2077 में गुरु ने तीन राशियों का सम्पर्क किया था तथा विक्रमी संवत् में तीन सम्वत्सरों का सम्पर्क था। **'प्रमादी'**, **'आनन्द'** तथा **'राक्षस'**।।

इस प्रकार, स्थूलमान से गुरु संचारवश एवं सूक्ष्म गणना अनुसार भी वि. संवत् 2078 में (संवतारम्भ में) **'राक्षस'** नामक संवत्सर होगा जोकि 1 अप्रैल, 2021 ई. से (वि. संवत् 2077 मध्ये) प्रारम्भ हो चुका होगा। **क्योंकि संवत्-आरम्भ में विद्यमान संवत्सर को ही संवत् के अन्त तक** (चैत्र अमावस तक) संकल्पादि शुभ कार्यों में प्रयुक्त करने की शास्त्र-परम्परा है।

(2) श्रीगङ्गा-जयन्ती (18 मई, मंगलवार)

वैशाख शुक्ल सप्तमी को श्रीगङ्गा जी की उत्पत्ति हुई थी। श्रीगङ्गा-पूजन, भागीरथ आदि देव-ऋषि पूजन मध्याह्न-व्यापिनी वैशाख शुक्ल सप्तमी तिथि में करना चाहिए। यथा—

'वैशाख शुक्लसप्तम्यां गंगोत्पत्तिः। तस्यां मध्याह्न-व्यापिन्यां गंगापूजनं कार्यम्। दिनद्वये तद्-व्याप्तौ पूर्वा।।' (धर्मसिन्धु)

सप्तमी तिथि यदि दोनों दिन मध्याह्न को व्याप्त या अव्याप्त हो तो यह पर्व पहिले दिन मनाना चाहिए।

इस वर्ष वैशाख शुक्ल सप्तमी तिथि दो दिन-18 तथा 19 मई, 2021 ई. को मध्याह्न-व्यापिनी है। **तद्नुसार उपरोक्त शास्त्रवाक्यानुसार 'श्रीगङ्गा-जयन्ती' 18 मई को मनायी जाएगी।**

[18/19 मई को हरिद्वार में मध्याह्न-काल लगभग 10घं.-52मिं. से 13घं.-34मिं. तक रहेगा।]

(3) श्रीजानकी (सीता) जयन्ती (20 मई, बृहस्पतिवार)

वैशाख शुक्ल नवमी, मंगलवार, पुष्यनक्षत्र कालीन तथा मध्याह्न के समय श्री सीता

पुष्यान्वितायां तु कुजे नवम्यां श्रीमाधवे मासि सिते हलाग्रतः।
भुवोऽर्चयित्वा जनकेन कर्षणे सीता–विरासीद् व्रतमत्र कुर्यात्।।

–(वैष्णवमताब्ज–भास्कर–७९)

अतएव इस दिन व्रत रखकर श्रीजानकी–राम का संकल्पपूर्वक जन्मोत्सव तथा पूजन करना चाहिए।

शास्त्रानुसार भी नवमी तिथि दो दिन मध्याह्न में व्याप्त अथवा अव्याप्त हो तो श्रीजानकी–जयन्ती पहिले मनायी जाएगी। (**नवमी सर्वत्राष्टमीविद्धैव ग्राह्या।**)

इस वर्ष वैशाख शुक्ल नवमी, दो दिन (20 एवं 21 मई) मध्याह्न–काल को व्याप्त कर रही है। पंजाब, दिल्ली, हि.प्र., हरियाणा आदि में मध्याह्न–काल लगभग 11घं.–02मिं. से 13घं.–47मिं. तक रहेगा। **स्पष्ट है**, 20 मई, गुरुवार को नवमी तिथि अष्टमी–विद्धा तथा मध्याह्न–काल को अधिक समय तक व्याप्त कर रही है। **अतएव शास्त्र–नियमानुसार श्रीजानकी–जयन्ती** (सीता ९) **पर्व 20 मई, गुरुवार** को ही मनाना तथा व्रत हेतु ग्रहण करना चाहिए।

(4) वैशाख शुक्ल (मोहिनी) एकादशी व्रत (22-23 मई) एवं च, फाल्गुन कृष्ण (विजया) एकादशी व्रत (26-27 फर., 2022 ई.)

इस वर्ष वैशाख शुक्ल द्वादशी का क्षय होने से स्मार्तों का एकादशी व्रत दशमीविद्धा एकादशी के दिन आने से कुछ लोग संशय में आ सकते हैं। एतदर्थ उनके संशय के निवारणार्थ यहाँ स्पष्टीकरण दे रहा हूँ–

'धर्मसिन्धुकार' अनुसार **एकादशी तिथि** मुख्यत: दो प्रकार की होती है–(1) विद्धा और (2) शुद्धा।। (1) सूर्योदय के समय दशमी का वेध हो अथवा अरुणोदयकाल [सूर्योदय से लगभग 4 घड़ी पूर्व (1घं.–36मिं.)] में एकादशी तिथि दशमी द्वारा विद्ध हो तो वह (एकादशी) विद्धा कहलाती है। (2) अरुणोदय–काल में दशमी तिथि के वेध से रहित एकादशी हो तो उसे शुद्धा तिथि माना जाता है।

प्राय: अधिकांश शास्त्र–मतानुसार दशमी–युता एकादशी व्रत का निषेध माना गया है। परन्तु द्वादशी क्षय हो जाने पर स्मार्तों (गृहस्थियों) को दशमीयुता एवं वैष्णव–सम्प्रदाय वालों को द्वादशी–त्रयोदशीयुता एकादशी के दिन व्रत करना चाहिए। पद्म–पुराण अनुसार भी– **'एकादशी द्वादशी च रात्रिशेषे त्रयोदशी।**
उपवासं न कुर्वीत् पुत्रपौत्रसमन्वितः।।'

उपरोक्त प्रमाणानुसार 11, 12, 13 तिथियों से मिश्रित दिन में स्मार्तों (गृहस्थियों) के व्रत का निषेध और वैष्णवों के व्रत का विधान है। एवं च–

'दशम्यैकादशीविद्धा द्वादशी च क्षयं गता। क्षीणा सा द्वादशी·······। गृहिण: पूर्वत्रोपवास:।।'

अत: शास्त्रों में प्रकारान्तरेण स्मार्तों को सूर्योदयवेधवती दशमी के दिन एकादशी व्रत करने की आज्ञा है, जोकि कण्वस्मृति के सामान्य मूल नियम **'अरुणोदयवेलायां दशमीसंयुता यदि। तत्रोपोष्या द्वादशी स्यात् त्रयोदश्यां तु पारणम्।।'** के विरुद्ध है। परन्तु शास्त्रों में स्मार्तों के लिए त्रयोदशी में पारणा भी सर्वथा वर्जित मानी गई है। यदि द्वादशी तिथि के क्षय की स्थिति में स्मार्त्त (गृहस्थियों)–तथा वैष्णवों का व्रत एक ही दिन कर दिया जाए, तो स्मार्त्तों को भी व्रत की पारणा त्रयोदशी में करनी पड़ेगी।

निर्णयसिन्धु में भी 'ऋष्यश्रृंग' ने अन्य विकल्प के अभाव में स्मार्त्तों को दशमीयुता एकादशी में व्रत करने की अनुमति दी है–

पारणाहे न लभ्येत द्वादशी कलयापि चेत्।
तदानीं दशमीविद्धापि–उपोष्य–एकादशी तिथि:।।

इस प्रकार उपरोक्त शास्त्रविवेचन से स्पष्ट है कि द्वादशी तिथि का क्षय होने के कारण ही स्मार्त्तों (गृहस्थियों) का **मोहिनी एकादशी व्रत 22 मई, 2021 ई.** को तथा वैष्णवों का **एकादशी व्रत 23 मई, 2021 ई. को लिखा गया है।**

अपि च, फाल्गुन कृष्ण पक्ष में भी द्वादशी तिथि का क्षय होने के कारण **विजया एकादशी व्रत स्मार्त्तों–वैष्णवों** के लिए क्रमश: **26 एवं 27 फरवरी, 2022 ई.** को लिखा गया है।

(5) श्रीसत्यनारायण व्रत (वैशाख–पूर्णिमा) (25 मई, मंगलवार)

श्रीसत्यनारायण व्रत प्रदोषव्यापिनी एवं चन्द्रोदय–व्यापिनी पूर्णिमा के दिन किया जाता है। इस वर्ष वैशाख पूर्णिमा 26 मई, 2021 ई. को सायं 18घं.–44मिं. पर समाप्त हो रही है, जिस कारण यह इस दिन (सूर्यास्त से पहिले) प्रदोष–व्यापिनी नहीं होगी। इस दिन या एक दिन पहिले (**25 मई**) को पंजाब, हिमाचल, जम्मू आदि पश्चिमोत्तर प्रान्तों में **प्रदोषकाल लगभग 19घं.–19मिं. से 21घं.–21मिं. तक रहेगा।**

ता. 25 मई को पूर्णिमा 20घं.–30मिं. से प्रारम्भ हो रही है, जिससे इसी दिन प्रदोषव्यापिनी एवं रात्रि–व्यापिनी (चन्द्रोदय) पूर्णिमा होगी। अतएव इस मास का **श्रीसत्यनारायण व्रत 25 मई, 2021 ई., मंगलवार को ही रखना प्रशस्त होगा।**

अपि च, श्रावण मास का सत्यनारायण व्रत 21 अगस्त, 2021 ई., शनिवार को करना प्रशस्त होगा, क्योंकि यहाँ पूर्णिमा इसी दिन प्रदोष को व्याप्त कर रही है। दूसरे दिन (22 अगस्त को) वह प्रदोषकाल से पहिले ही समाप्त हो जाएगी। (**21-22 अगस्त को प्रदोषकाल लगभग 19घं.–00मिं. से 21घं.–12मिं. तक रहेगा।**

(6) वटसावित्री व्रत (ज्येष्ठ–अमावस) (9 जून, 2021 ई.)

वटसावित्री व्रत के पालन में दो परम्पराएं (मत) प्रचलित हैं। स्कन्द और भविष्योत्तर पुराण के अनुसार यह व्रत ज्येष्ठ पूर्णिमा और निर्णयामृतादि अनुसार अमावस्या को किया जाता है। दोनों परम्पराओं में यह पूर्व (चतुर्दशी) विद्धा अमावस या पूर्णिमा के दिन ही किया जाता है। **'धर्मसिन्धु' अनुसार–**

पूर्णिमास्यमावस्ये तु सावित्रीव्रतं विना परे ग्राह्ये।
कुलधर्मादौ पूर्वा गृह्यते, तत्र मूलं मृग्यम्।।

'ब्रह्मवैवर्त पुराण' में भी सावित्री व्रत परविद्धा का निषेध लिखा है–

भूतविद्धा न कर्त्तव्या दर्शपूर्णे कदाचन्।
वर्जयित्वा मुनिश्रेष्ठ सावित्रीव्रतमुत्तमम्।।

अपि च, स्कन्दपुराणकार ने भी सावित्री व्रत परविद्धा का निषेध कहा है–

कृष्णाष्टमी चतुर्थी च सावित्री वटपैत्तिकी।
शुक्ला त्रयोदशी रम्भा नोपोष्याः परसंयुता।।

कुछ शास्त्रकारों का यह मत कि चतुर्दशी 18 घड़ी से अधिक हो तो परवर्ती अमावस/पूर्णिमा तिथि को दूषित करती है। यथा–**'भूतोष्टादशनाड़ीभिः दूषयत्युत्तरां तिथिम्''''।'** परन्तु यह नियम तभी स्वीकार्य होगा, जब किसी तिथि का पूर्वविद्धा वेध वर्जित हो। यहाँ तो सभी शास्त्रकारों ने ज्येष्ठ अमावस चतुर्दशी विद्धा ही ग्रहण करने के लिए कहा है। यद्यपि चतुर्दशी तिथि का त्रिमुहूर्त्त–व्यापिनी होना आवश्यक माना गया है–

शास्त्रवचनानुसार इस वर्ष ज्येष्ठ अमावस वाला वटसावित्री व्रत चतुर्दशी-विद्धा अमावस वाले दिन 9 जून, 2021 ई., बुधवार को होगा। क्योंकि अमावस इस दिन सूर्यास्त से पहिले त्रिमुहूर्त्त व्यापिनी है।

(7) गुरु–पूर्णिमा (व्यास–पूजा) (23 एवं 24 जुलाई– दो दिन?)

गुरु-पूजा (गुरु-पूर्णिमा) और श्रीव्यास-पूजा के लिए सूर्योदय के बाद त्रिमुहूर्त्त-व्यापिनी आषाढ़ पूर्णिमा होना आवश्यक है। पूर्णिमा तिथि यदि तीन मुहूर्त्त से कम हो तो ये दोनों पर्व पहिले दिन मनाए जाते हैं–

''अस्यां पौर्णमास्यां संन्यासिनां चातुर्मास्यावास संकल्पांगत्वेन क्षौर–व्यासपूजादिकं विहितम्। अत्र कर्मणि औदयिकी त्रिमुहूर्त्ता पौर्णमासी ग्राह्या।।''

–(धर्मसिन्धु)

निर्णयसिन्धु अनुसार भी–**व्यासपूजा निर्णय–'अत्रैव व्यासपूजोक्ता। तत्र त्रिमुहूर्त्ता चेत्परैवेति संन्यासपद्धतौ। त्रिमुहूर्त्ताधिकं ग्राह्या पर्वक्षौर-प्रणामयोः।।'**

अर्थात् व्यास-पूजा निर्णय के सम्बन्ध में सन्यास पद्धति में कहा गया है कि पूर्णिमा तीन मुहूर्त्त होय, तो अगली लेनी चाहिए। कारण यह है कि पर्व, क्षौर और प्रणाम (अर्थात् पूजार्चना) में तीन मूहूर्त्त से अधिक तिथि ग्रहण करनी चाहिए।

उपरोक्त शास्त्रविवेचन से स्पष्ट है कि यदि आषाढ़ पूर्णिमा तीन मुहूर्त्त से कम हो तो गुरु-पूर्णिमा, व्यास-पूजादि पर्व पहिले दिन मनाए जाने चाहिएं। अतः 24 जुलाई, 2021 ई. को आषाढ़ पूर्णिमा त्रि-मुहूर्त्त-न्यून होने से गुरु पूर्णिमा, व्यास-पूजा आदि उत्सव-पर्व लगभग सम्पूर्ण उत्तर-मध्य-दक्षिण भारत में 23 जुलाई, 2021 ई. को चतुर्दशी तिथि के बाद (प्रातः 10:44 बाद) मनाए जाएंगे। उत्तर-पूर्वी भारत में [देखें चित्र (नक्शा)] जहाँ आषाढ़ पूर्णिमा सूर्योदय बाद त्रि-मुहूर्त्त-व्यापिनी है, वहाँ यह पर्व 24 जुलाई, 2021 ई. को मनाया जाएगा। ध्यान दें, व्यास-पूजा वाले दिन ही गुरु-पूजा, गुरु पूर्णिमा महोत्सव मनाया जाता है। **[देखें आगामी पृष्ठ नं. 27-चित्र]**

स्पष्टीकरण–ध्यान दें, दिनमान (सूर्योदय से सूर्यास्त की अवधि) को 15 से भाग देने पर एक मुहूर्त्त का मान ज्ञात होता है। अथवा दिनमान को 5 से भाग देने पर तीन मुहूर्त्तों का मान प्राप्त होता है। क्योंकि स्थानभेद से सूर्योदय-सूर्यास्त में अन्तर होने के कारण दिनमान प्रतिदिन घटता-बढ़ता रहता है। अतएव यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि प्रत्येक नगर में मुहूर्त्त का मान प्रतिदिन भिन्न-भिन्न होगा। यदि दिनमान 13 घण्टा है, तो वहाँ **1 मुहूर्त्त का मान 52 मिनट (2 घड़ी 10 पल) होगा।–यह स्पष्टमान से होगा। दो घड़ियों का एक मुहूर्त्त मध्यमान से होता है।**

उदाहरण–(1) 24 जुलाई, 2021 ई. को ***दिल्ली*** में यह देखने के लिए कि आषाढ़ पूर्णिमा त्रि-मुहूर्त्त-व्यापिनी है या नहीं, दिनमान 13घं.–31मिं. प्राप्त किया। (सूर्यास्त 19घं.–13मिं. से सूर्योदय 5घं.–42मिं. ऋण करने पर) इसे 15 द्वारा भाग देने पर हमें एक मुहूर्त्त का मान 54 मिंट प्राप्त हुआ। इस प्रकार सूर्योदय बाद आषाढ़ पूर्णिमा को सूर्योदय त्रिमुहूर्त्त व्यापिनी होने के लिए 162 मिनट अर्थात् 2घं.–42मिं. तक होना चाहिए, जबकि दिल्ली में सूर्योदय 5घं.–42मिं. बाद पूर्णिमा तिथि केवल 8घं.–07मिं. अर्थात् 2घं.–25मिं. पर्यन्त ही है। **स्पष्ट है,** दिल्ली में आषाढ़ पूर्णिमा त्रि-मुहूर्त्त व्यापिनी नहीं होने से गुरु पूर्णिमा व्यास पूजादि उत्सव चतुर्दशी विद्धा पूर्णिमा को **(23 जुलाई, 2021 ई.)** प्रातः 10:44 बाद ही होंगे।

इस प्रकार लगभग सम्पूर्ण उत्तर-मध्य-दक्षिण भारत में (पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, जम्मू, हि.प्र., मध्य-पश्चिमी उ.प्र., म.प्र., राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र तथा दक्षिणी राज्यों में भी) गुरु पूर्णिमा उत्सव, गुरु-व्यास पूजा-आदि कार्य 23 जुलाई, 2021 ई. को प्रातः 10:44 बाद करने ही शास्त्रोक्त होंगे।

(2) एक अन्य उदाहरण–*वाराणसी (उ.प्र.)*–यहां 24 जुलाई, 2021 ई. को दिनमान 13घं.–19मिं. हैं (सूर्योदय 5:25, सूर्यास्त 18:44)। इस दिनमान को 5 द्वारा विभक्त करने पर तीन मुहूर्त्त के स्पष्टमान 160 मिनट प्राप्त हुए। वाराणसी में सूर्योदय बाद आषाढ़ पूर्णिमा 162 मिंट (2घं.–42मिं.) (8घं.–07मिं.–5घं.–25मिं.) अर्थात् 6 घड़ी 45 पल तक विद्यमान है, जोकि 3 मुहूर्त्त से अधिक है। **अतः यहाँ गुरु पूर्णिमा/पूजादि 24 जुलाई, 2021 ई.** को मान्य होंगे।

आगामी पृष्ठ– पर दिए गए भारत के मानचित्र (नक्शा) देखने से स्पष्ट है, कि **'क-ख'** रेखा से बाईं ओर अर्थात् **पंजाब, राजस्थान, हि.प्र., गुजरात, महाराष्ट्र, जम्मू, हरियाणा, उत्तर-पश्चिमी, उ.प्र., म.प्र. आदि राज्यों में गुरु-पूर्णिमा, गुरु-व्यास पूजा 23 जुलाई, 2021 ई. को होगी,** जबकि **'क-ख'** रेखा से दाईं ओर अर्थात् पूर्वी उ.प्र., बिहार, झारखण्ड, पूर्वी छत्तीसगढ़, उड़ीसा आदि में यह महोत्सव 24 जुलाई, 2021 ई. को होगा।

मुख्य नगरों का 24 जुलाई, 2021 ई. को तीन-मुहूर्त्त स्पष्ट-मान

मुख्य नगरों का 24 जुलाई, 2021 ई. को तीन-मुहूर्त्तों स्पष्ट-मान अर्थात् कहाँ गुरु पूर्णिमा 23 जुलाई को तथा कहाँ 24 जुलाई को होगी?

नगर	सू.उ. घं. मिं.	सू.अ. घं.मिं.	दिनमान घं.मिं.	तीन मुहूर्त्तों का स्पष्टमान मिनट(Required)	आषाढ़ पूर्णिमा का मान घं.मिं.	गुरुपूर्णिमा कब ?
कानपुर	5:34	18:56	13:22	160	153	23 जुलाई
जालन्धर	5:43	19:25	13:32	162	144	23 जुलाई
बद्रीनाथ	5:29	19:08	13:39	164	159	23 जुलाई
बरेली (उ.प्र.)	5:34	19:04	13:30	162	153	23 जुलाई
बैंगलुरु	6:07	18:45	12:38	152	120	23 जुलाई
कटक	5:22	18:24	13:02	156	165	24 जुलाई
दिल्ली	5:42	19:13	13:31	163	145	23 जुलाई
चेन्नई	5:57	18:34	12:37	151	130	23 जुलाई
पटना	5:12	18:36	13:24	161	175	24 जुलाई
प्रयागराज	5:30	18:48	13:18	160	157	23 जुलाई
बिलासपुर(३६)	5:34	18:41	13:07	157	153	23 जुलाई
विशाखापट्नम	5:38	18:30	12:52	154	149	23 जुलाई
वाराणसी	5:25	18:44	13:19	160	162	24 जुलाई
मुम्बई	6:17	19:13	12:56	155	110	23 जुलाई
रायगढ़(३६)	5:30	18:36	13:06	157	157	24 जुलाई
SriKakulam(Ker.)	5:34	18:28	12:54	155	153	23 जुलाई
हैदराबाद	5:57	18:42	12:45	153	130	23 जुलाई

(8) श्रीकल्कि जयन्ती (13 अगस्त, शुक्रवार)

सायाह्न-व्यापिनी श्रावण शुक्ल षष्ठी को 'श्रीकल्कि-जयन्ती' मनाई जाती है। इस वर्ष श्रावण शुक्ल षष्ठी 13 जुलाई, 2021 ई. को ही सायाह्न-व्यापिनी है। **इसलिए यह जयन्ती इसी दिन (13 जुलाई, 2021 ई.) मनाई जाएगी।**

(9) श्रीदुर्गाष्टमी (श्रावण शुक्ल अष्टमी) (15 अगस्त, रविवार)

सूर्योदय बाद कम-से-कम त्रिमुहूर्त्त-व्यापिनी अर्थात् नवमीविद्धा श्रावण शुक्ल अष्टमी में यह पर्व मनाया जाता है। यदि अष्टमी तिथि त्रिमुहूर्त्त से कम हो तो यह पर्व पहले दिन होगा। अर्थात् दूसरे दिन अष्टमी नवमीविद्धा न मिले (यानि वह वहाँ तीन मुहूर्त्त से कम हो) तो दुर्गाष्टमी पहिले दिन ही मनायी जाएगी।

इस वर्ष श्रावण शुक्ल अष्टमी 16 अगस्त, 2021 ई. को त्रिमुहूर्त्त-न्यून है, अतः दुर्गाष्टमी पर्व/व्रत सप्तमीविद्धा अष्टमी को 15 अगस्त, 2021 ई. को प्रात 9घं.-52मिं. बाद होगा।

गुरु पूर्णिमा/व्यास पूजा
23/24 जुलाई, 2021 ई०

23 जुलाई

24 जुलाई

क-ख रेखा से बायीं ओर गुरुपूर्णिमा (व्यास पूजा) 23 जुलाई 2021, को और इस रेखा से दायीं ओर 24 जुलाई, 2021 ई० को होगी।

विवेक शर्मा
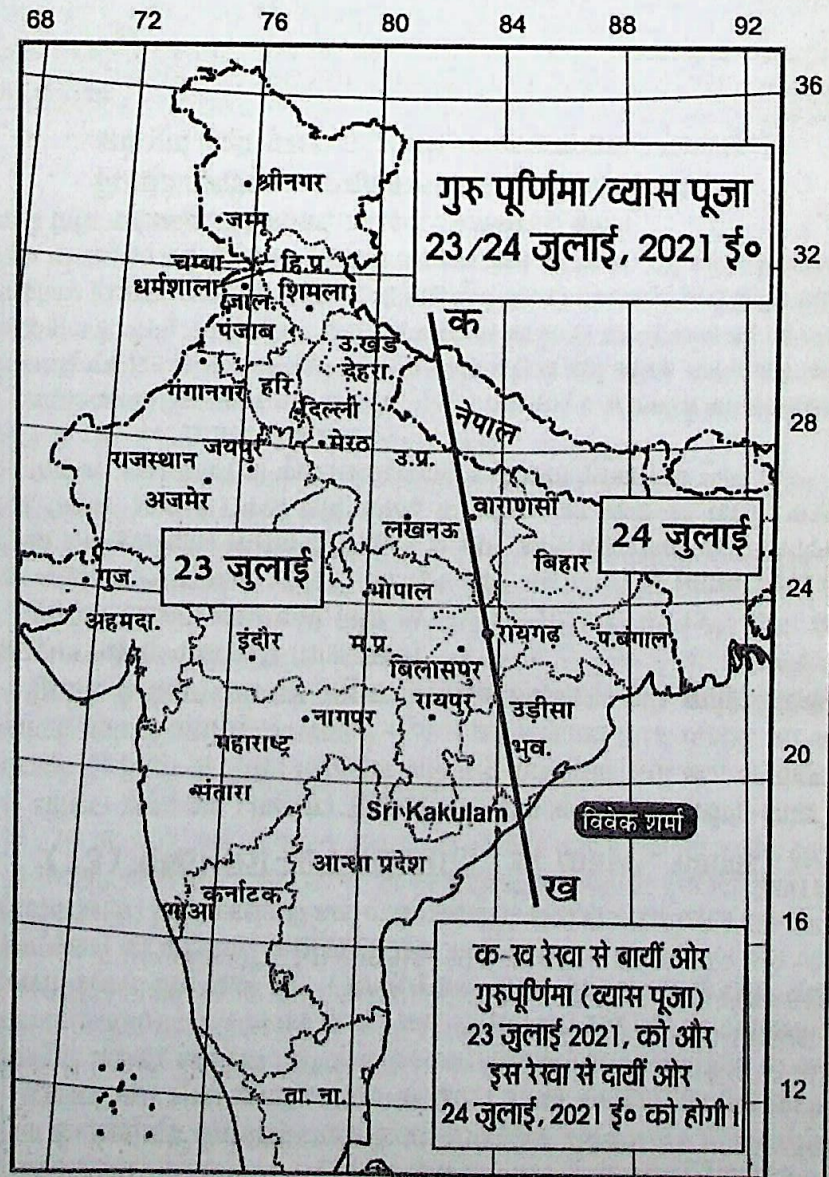
(10) दूर्वाष्टमी व्रत (30 अगस्त, सोमवार)

सिंहस्थ सूर्य की कालावधि में रौहिण मुहूर्त्त (दिन के नवम-मुहूर्त) व्यापिनी भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को सन्तान सुख एवं वंशवृद्धि की कामना से यह व्रत किया जाता है। शास्त्रानुसार जिस किसी वर्ष में भाद्र. शुक्लाष्टमी के समय कन्या का सूर्य (आश्विन मास) आ जाए अथवा अगस्त्य तारा का उदय हो जाए, तो उस स्थिति में पूर्ववर्त्ती किसी अन्य मास की अष्टमी (भाद्र. कृष्ण या श्रावण-शुक्लाष्टमी) में इस व्रत का पालन करना चाहिए, जब अगस्त्य तारा अदृश्य (अस्तगत) हो।

'भाद्र शुक्लाष्टम्यां अगस्त्योदये भाविनी सति पूर्व कृष्णाष्टम्यामेव कुर्यात्।।'
(हेमाद्रि)

इस वर्ष भाद्र. शुक्लाष्टमी 14 सितम्बर, 2021 ई. को है, परन्तु पंजाब, हि.प्र., हरियाणा, दिल्ली आदि पश्चिमोत्तर प्रदेशों में इस भाद्र. शुक्लाष्टमी से पहले ही अगस्त्य तारा 2 या 3 सितम्बर को उदय हो जाने से 14 सितम्बर को दूर्वाष्टमी का व्रतादि करना शुभ नहीं होगा। अतएव शास्त्र निर्देशानुसार दूर्वाष्टमी का व्रत पूर्ववर्त्ती भाद्र. कृष्ण को रौहिण व्याप्त अष्टमी **30 अगस्त, सोमवार, 2021 ई. को करना शुभ एवं शास्त्र-सम्मत होगा।**

(11) वामन द्वादशी (17 सितम्बर, शुक्रवार)

श्रीवामन पुराणानुसार भगवान् श्रीवामन का अवतार मध्याह्न-व्यापिनी भाद्र. शुक्ल द्वादशी में श्रवण-नक्षत्र कालीन हुआ था। धर्मसिन्धुकार अनुसार मध्याह्न-व्यापिनी द्वादशी के दिन मध्याह्न में या अन्यत्र श्रवण का योग हो तो व्रत उसी दिन करें–

भाद्रशुक्लद्वादश्यां श्रवणयुतायां मध्याह्ने वामनोत्पत्तिः।
अतो मध्याह्न–व्यापिनी द्वादशी मध्याह्ने ततोन्यत्र काले वा श्रवणयुता ग्राह्या।

इस वर्ष भाद्र. शुक्ल द्वादशी 17 सितम्बर, 2021 ई. को मध्याह्न-काल में श्रवण नक्षत्र से युक्त है, अतः 17 सितम्बर, 2021 ई. को ही **'वामन-द्वादशी'** व्रत होगा।

(12) श्रवण द्वादशी (विष्णुशृंखल योग) (17 सितम्बर, शुक्रवार)

भाद्र. शुक्ल पक्ष में जिस दिन मुहूर्त्तमात्र भी द्वादशी एवं श्रवण-नक्षत्र का योग हो तो **'श्रवण-द्वादशी'** का व्रत किया जाता है। यदि द्वादशी दो दिन श्रवणयुता हो तो पहले दिन व्रत करना चाहिए। यदि इस पक्ष में किसी दिन एकादशी, द्वादशी और श्रवण-तीनों परस्पर एक दूसरे को स्पर्श करें तो उस दिन **'विष्णुशृंखल योग'** बनता है। निर्णयामृत अनुसार एकादशी और द्वादशी-दोनों में श्रवण का योग होने पर ही विष्णुशृंखल योग होता है, अन्यथा नहीं।

–'श्रवणस्य एकादशी–द्वादशीभ्यां योग एव विष्णुशृंखलम् नान्यथेति।।'

विष्णुशृंखल योग बनने पर श्रवण-द्वादशी का व्रत उसी (विष्णुशृंखल योग वाले) दिन ही किया जाता है। शास्त्रानुसार यदि पहिले दिन एकादशीयुता द्वादशी दूसरे दिन भी विद्यमान् हो और श्रवण नक्षत्र का इन दोनों से संयोग हो तो भी **'विष्णुशृंखल योग'** बनता है। परन्तु यह योग केवल रात्रि के प्रथम प्रहर तक स्वीकार्य है।

इस वर्ष भाद्र. शुक्ल द्वादशी 17 सितम्बर, 2021 ई. को एकादशी युता तथा श्रवण नक्षत्रयुता अर्द्धरात्रि बाद 27घं.–36मिं. तक है। श्रवण नक्षत्र स्पष्टतः एकादशी तिथि को 16 सितम्बर, 28घं.–09मिं. से स्पर्श कर रहा है। **अतः 17 सितम्बर, 2021 ई. को एकादशी-द्वादशी-श्रवण योग वाले दिन (विष्णुशृंखल योग) ही 'श्रवण-द्वादशी' एवं विष्णुशृंखल का व्रत होगा।** श्रवण द्वादशी एवम् विष्णुशृंखल योग का व्रत करने वाले को एकादशी व्रत की आवश्यकता नहीं होती। उसे फलाहार उपवास ही रखना चाहिए।

(13) षष्ठी का महालय श्राद्ध (27 सितम्बर, सोमवार)

आश्विन कृष्ण पक्ष (पितृपक्ष) में किए जाने वाले सभी श्राद्ध **'पार्वण-श्राद्ध'** कहलाते हैं। पित्तरों के निमित्त किए जाने वाले मृत्यु-तिथ्यनुसार सभी श्राद्ध अपराह्ण व्यापिनी तिथि में करने की शास्त्राज्ञा है–

पूर्वाह्णो वै दैवानां मध्याह्ने मनुष्यणामपराह्न पितृणाम्–श्रुति पूर्वाह्ने दैविकं श्राद्धमपराह्ने तु पार्वणम्।। (याज्ञवल्क्य)

इस वर्ष आश्विन कृष्ण षष्ठी तिथि 26 सितम्बर, 2021 ई. को 13घं.–05मिं. से प्रारम्भ होकर 27 सितम्बर, 2021 ई. को 15घं.–44मिं. तक रहेगी। **26 सितम्बर, 2021 ई. को अपराह्ण-काल लगभग 13घं.–28मिं. से 15घं.–51मिं. तक रहेगा।** यद्यपि इस दिन (26 सितंबर, 2021 ई.) षष्ठी तिथि अपराह्न के पूर्णकाल को व्याप्त कर रही है, परन्तु 27 सितम्बर, 2021 ई. को भी षष्ठी तिथि अपराह्ण के लगभग पूर्णकाल को व्याप्त (13घं.–29मिं. से 15घं.–44मिं.) कर रही है।

यद्यपि शास्त्र-नियमानुसार यदि दोनों दिन मृत्युतिथि अपराह्ण के एकदेश को असमानता से अर्थात् एक दिन अधिक और दूसरे दिन कम व्याप्त करे, तो वहाँ अधिक व्याप्ति वाले दिन श्राद्ध होता है। परन्तु यदि मृत्युतिथि दोनों दिन अपराह्ण को समान रूप से व्याप्त करे तब यदि श्राद्धतिथि का मान 60 घटी से अधिक हो तो श्राद्ध दूसरे दिन होगा। अतएव स्पष्ट है कि षष्ठी तिथि का मान 60 घटी से अधिक होने तथा अपराह्ण काल की लगभग पूर्ण व्याप्ति के कारण **षष्ठी तिथि का श्राद्ध 27 सितम्बर, 2021 ई., सोमवार को होगा।**

दिनद्वये पूर्णापराह्नव्याप्तावंशतः समव्याप्तौ चोत्तरतिथेः,
क्षये पूर्वा वृद्धौ परा।। उत्तरतिथेः क्षयवृद्धयाभावेपि परेत्याहुः।

ध्यान दें,–षष्ठी तिथि का श्राद्ध 27 सितम्बर, 2021 ई. को निर्णीत होने तथा पंचमी तिथि का श्राद्ध 25 सितम्बर, 2021 ई. को अपराह्ण-व्यापिनी पंचमी तिथि में होने के कारण **26 सितम्बर, 2021 ई. को कोई भी तिथिश्राद्ध नहीं होगा।**

(14) गजच्छाया योग (6 अक्तूबर, 2021 ई.)

परन्तु यदि दो दिन त्रयोदशी प्रदोष-व्यापिनी हो तो यह व्रत दूसरे दिन ग्रहण करना

(14) गजच्छाया योग (6 अक्तूबर, 2021 ई.)

आश्विन अमावस के दिन '**सूर्य**' और '**चन्द्रमा**'-दोनों हस्त-नक्षत्र में विद्यमान् हो तो '**गजच्छाया**' नामक पुण्यदायक योग बनता है। इस वर्ष यह योग **5 अक्तूबर, 2021 ई.** की रात्रि 25घं.-10मिं. से **6 अक्तूबर, 2021 ई.** की सायं 16घं.-35मिं. (IST) तक रहेगा। क्योंकि इसका माहात्म्य दिन के समय ही माना गया है। इसलिए दिन के समय गङ्गा-स्नान, दान, पितृतर्पण, पिण्डदान का विशेष पुण्य एवं माहात्म्य होगा।

(15) शारदीय नवरात्रारम्भ (7 अक्तू., गुरुवार, 2021 ई.)

शास्त्रानुसार सूर्योदय बाद 10 घड़ी तक या मध्याह्न-काल में अभिजित् मुहूर्त्त (दिन के अष्टम मुहूर्त्त) के समय आश्विन शुक्ल प्रतिपदा में नवरात्रारम्भ व कलशस्थापन किया जाता है। प्रतिपदा की पूर्ववर्त्ती 16 घड़ियां तथा चित्रा नक्षत्र एवं वैधृति योग का पूर्वार्द्ध भाग नवरात्रारम्भ के लिए निषिद्ध हैं। यदि नवरात्रारम्भ हेतु यह ग्राह्य-काल अर्थात् सूर्योदय बाद की 10 घड़ियां तथा अभिजित् मुहूर्त्त प्रतिपदा की प्रथम 16 घड़ियों अथवा चित्रा-वैधृति के पूर्वार्द्ध भाग से पूरी तरह दूषित हो, तो इसकी परवाह न करते हुए इस दिन दूषित-काल में नवरात्रारम्भ, कलश-स्थापन कर लेना चाहिए, क्योंकि शास्त्रानुसार जहाँ तक सम्भव हो, इन दोषों से बचना चाहिए। यदि इनका त्याग करना सम्भव न हो, तो इनके दूषित काल में ही निर्द्धारित-काल (अर्थात् प्रथम 10 घटियों या अभिजित् मुहूर्त्त) में घटस्थापन, पूजादि कार्य कर लेने चाहिए-

'एवं च प्रतिपद्-आद्यषोडशनाड़ी-निषेधश्चित्रा-वैधृतियोग-निषेधश्च-उक्तकालानुरोधेन सति संभवे पालनीयो न तु निषेधानुरोधेन पूर्वाह्णः प्रारम्भकालः प्रतिपत्तिथिर्वातिक्रमणीयः।।'

इस वर्ष यही स्थिति घटित हो रही है। आश्विन शुक्ल प्रतिपदा 7 अक्तूबर, 2021 ई. के दिन चित्रा नक्षत्र का पूर्वार्द्ध प्रातः 10घं.-17मिं. तक तथा वैधृति-योग का पूर्वार्द्ध 15घं.-25मिं. तक है। यहाँ अभिजित् मुहूर्त्त 11घं.-52मिं. से 12घं.-38मिं. तक है। स्पष्ट रूप से यहाँ चित्रा एवं वैधृति योग के पूर्वार्द्ध ने प्रतिपदा की सूर्योदयानन्तर की 10 घड़ियां (4 घण्टे) तथा अभिजित् मुहूर्त्त का पूरा काल दूषित कर रखा है। **इस स्थिति में उपरोक्त शास्त्र-निर्देश अनुसार अशुभ नक्षत्र-योग होने पर भी उनकी उपेक्षा कर इसी दिन (7 अक्तूबर, 2021 ई. को ही) प्रातःकाल 10 घड़ी (सूर्योदय बाद 4 घण्टे) तक अथवा अभिजित् मुहूर्त्त (11घं.-52मिं. से 12घं.-38मिं. तक) में ही नवरात्रारम्भ, घटस्थापन, दीपपूजन आदि करने चाहिए।**

(16) प्रदोष व्रत (आश्विन शुक्ल)-(18 अक्तू.,2021 ई.)

प्रदोष-व्यापिनी त्रयोदशी वाले दिन प्रदोष व्रत किया जाता है। सूर्यास्त के बाद त्रि-मुहूर्त्त व्यापिनी त्रयोदशी ग्रहण करनी चाहिए-

सूर्यास्तमानोत्तर त्रिमुहूर्त्तात्मक प्रदोषव्यापिनी त्रयोदशी ग्राह्या।। (धर्मसिन्धु)

परन्तु यदि दो दिन त्रयोदशी प्रदोष-व्यापिनी हो तो यह व्रत दूसरे दिन ग्रहण करना चाहिए। यथा-

दिनद्वये प्रदोषव्याप्तौ साम्येन तदेकदेशस्पर्शे वा उत्तरा।।

नक्त व्रत के सम्बन्ध में 'कालमाधवकार' का भी यह वाक्य इस बात की पुष्टि करता है-

प्रदोषव्यापिनी नक्ते तिथि व्याप्तिर्दिनद्वये।
अव्याप्तिर्वाथवांशेन व्याप्तिः स्यात्सर्वथोत्तरा।।

इस वर्ष (वि. संवत् 2078 में) आश्विन शुक्ल त्रयोदशी 17 और 18 अक्तू., 2021 ई.-दो दिन प्रदोषव्यापिनी है। (इन दोनों दिन प्रदोषकाल लगभग 17घं.-50मिं. से 20घं.-23मिं. तक रहेगा)। यद्यपि दूसरे दिन 18 अक्तूबर, 2021 ई. को त्रयोदशी तिथि प्रदोषकाल को (**17घं.-49मिं. से 18घं.-08मिं. तक**) अपेक्षाकृत काफी कम व्याप्त कर रही है, परन्तु **उपरोक्त शास्त्र प्रमाणानुसार 18 अक्तू., 2021 ई. को ही प्रदोष व्रत ग्राह्य एवं मान्य होगा।**

(17) शरद्-पूर्णिमा (19 अक्तू., मंगलवार, 2021 ई.)

प्रदोष एवं निशीथ-व्यापिनी (उभयव्यापिनी) आश्विन पूर्णिमा में शरद्-पूर्णिमा व कोजागर व्रत किया जाता है। यथा-

आश्विनपौर्णमास्यां कोजागर व्रतम्। सा पूर्वत्रेव निशीथव्याप्तौ पूर्वा।।

इस वर्ष यह तिथि 19 अक्तूबर, 2021 ई. को प्रदोष एवं निशीथ-उभयव्यापिनी है। 20 अक्तूबर, 2021 ई. को तो यह केवल प्रदोषकाल को स्पर्श कर रही है।

ता. 19 अक्तूबर, 2021 ई. को सायं 17घं.-48मिं. से 20घं.-22मिं. तक आश्विन पूर्णिमा प्रदोष काल, तदुपरान्त निशीथकाल को व्याप्त होगी। इसलिए प्रदोष एवं निशीथ (अर्द्धरात्रि)-**उभयव्यापिनी आश्विन पूर्णिमा की रात्रि को शरद् पूर्णिमा का व्रत (19 अक्तूबर, 2021 ई.) होगा।**

(18) गोवत्स द्वादशी (1 नवम्बर, 2021 ई.)

यह व्रत प्रदोष-व्यापिनी कार्तिक कृष्ण द्वादशी को किया जाता है। इस वर्ष कार्तिक द्वादशी 1 नवम्बर, सोमवार, सन् 2021 ई. को प्रदोषव्यापिनी है, अतः यह व्रत इसी दिन होगा। इस दिन गाय का दूध एवं उससे बने पदार्थ दही, घी आदि का सेवन वर्जित माना गया है।

(19) तुलसी विवाह (15 नवम्बर, सोमवार)

तुलसी विवाह कार्तिक शुक्ल एकादशी व्रत के पारणा वाले दिन (प्रबोधोत्सव) रात्रि के प्रथम भाग (प्रदोषकाल) में करने का शास्त्रनिर्देश है-(**रात्रि प्रथमभागे प्रशस्तः**)

यह पर्व कार्तिक शुक्ल एकादशी, द्वादशी के अतिरिक्त पूर्णिमा तक किसी भी तिथि में विवाह नक्षत्र काल में करने का विधान है-

एकादश्यादि पूर्णिमान्ते यत्र क्वापि दिने कार्तिक शुक्लान्तर्गत विवाहनक्षत्रेषु वा विधानादनेक कालत्वं तथापि पारणाहे प्रबोधोत्सव कर्मणा सह···· (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष कार्तिक शुक्ल एकादशी के दिन रविवार तथा (भूलोके) भद्रा-व्याप्ति के कारण **'तुलसी विवाह'** निषेध रहेगा। **'तुलसी विवाह'** प्रबोधोत्सव के साथ एकादशी-व्रत पारणा वाले दिन प्रदोषकाल में अर्धरात्रि से पहिले ही करने की परम्परा है। अत: इस वर्ष एकादशी पारणा (प्रबोधोत्सव) वाले दिन **15 नवम्बर, सोमवार, 2021 ई.** को प्रदोषकाल में अश्विनी तथा रेवती नक्षत्र प्राप्त हैं। अत: तुलसी विवाह इसी दिन करना होगा।

(20) भीष्मपंचक समाप्ति (18 नवम्बर, गुरुवार)

शास्त्रों में भीष्मपंचक व्रत का अनुष्ठान केवल पाँच दिन (कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक) निर्दिष्ट है। यदि शुद्धा एकादशी से उदयकालिक पूर्णिमा तक की अवधि में कोई तिथि क्षय हो जाए और भीष्मपंचकों के दिनों की संख्या चार ही रह जाए, तब दशमीविद्धा एकादशी से ही यह व्रत प्रारम्भ करके शुद्ध (जिसमें चतुर्दशी का वेध न हो) उदयकालिक पूर्णिमा के दिन ही इसे समाप्त किया जाए। इसी प्रकार यदि इन पाँच तिथियों (एकादशी से पूर्णिमा तक) में से किसी एक तिथि की वृद्धि हो जाने पर भीष्मपंचकों के 6 दिन बनते हों, तो शुद्धा एकादशी वाले दिन से प्रारम्भ करके चतुर्दशी-विद्धा पूर्णिमा के दिन ही भीष्म-पंचकों को समाप्त करना चाहिए। (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष कार्तिक शुक्ल द्वादशी तिथि की वृद्धि हो जाने से भीष्मपञ्चकों के छ: दिन बन रहे हैं। अतएव उपरोक्त शास्त्र-नियमानुसार **'भीष्मपंचक व्रत'** 14 नवम्बर, 2021 ई. से चतुर्दशी विद्धा पूर्णिमा वाले दिन **18 नवम्बर, 2021 ई. तक होंगे।**

(21) पद्मक योग (19 नवम्बर, 2021 ई.)

कार्तिक पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा कृतिका नक्षत्र और सूर्य विशाखा नक्षत्र पर हो तो **'पद्मक योग'** होता है। इस योग में तीर्थस्नान विशेषकर पुष्कर-तीर्थ (राजस्थान) में स्नान, दान, जपादि करना विशेष पुण्यदायक होता है।

विशाखासु यदा भानु: कृतिकासु च चन्द्रमा।
स योग: पद्मको नाम पुष्करे स्वाति दुर्लभ:। (पद्मपुराण)

इसदिन सूर्यस्तोत्र, गुरुस्तोत्र का, सूर्य एवं गुरु-गायत्री मन्त्रों का पाठ तथा दोनों ग्रहों से सम्बन्धित वस्तुओं का यथाशक्ति दान, जप तथा कृतिका-स्वामी (विश्वस्वामी सूर्य) के दर्शन किए जाएँ, तो ब्राह्मण सात जन्म तक वेद परायण और धनाढ्य होता है-

कार्तिक्यां कृतिका योगे च कूर्यात् स्वामिदर्शनम्।
सप्तजन्म भवेद् विप्रो धनाढयो वेदपारग:।। (काशीखण्ड)

वि. संवत् 2078 अर्थात् सन् 2021 ई. में सूर्य के विशाखा नक्षत्र के रहते कार्तिक पूर्णिमा तिथि कालीन 18 नवम्बर, गुरुवार की रात्रि 25घं.-29मिं. से अगले दिन **19 नवम्बर, 2021 ई., शुक्रवार** की अर्द्धरात्रि के बाद 28घं.-29मिं. तक कृतिका नक्षत्र [illegible]

(22) श्रीदत्तात्रेय जयन्ती (18 दिसम्बर, 2021 ई.)

मार्गशीर्ष पूर्णिमा को श्रीदत्तात्रेय जी का जन्म हुआ था। इसमें प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा ली जाती है। इस वर्ष 18 दिसम्बर, 2021 ई. को सायं प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा को **'श्रीदत्तात्रेय-जयन्ती'** होगी।

(23) होलिका-दहन (17 मार्च, 2022 ई.)

प्रदोष-व्यापिनी फाल्गुन पूर्णिमा के दिन भद्रा-रहितकाल में होलिका-दहन किया जाता है। यथा-**'सा प्रदोषव्यापिनी भद्रारहित ग्राह्या।।'** (धर्मसिन्धु:)

यदि प्रदोषकाल के समय भद्रा हो और भद्रा निशीथकाल (लगभग अर्द्धरात्रि) से पहिले ही समाप्त हो रही हो तो भद्रा के बाद और निशीथकाल से पहले होलिका-दहन करने की शास्त्राज्ञा है। परन्तु यदि भद्रा निशीथकाल से पहिले समाप्त न हो तथा निशीथ (अर्द्धरात्रि) के बाद तक व्याप्त हो तथा अगले दिन पूर्णिमा प्रदोषव्यापिनी भी न हो, तब पहले ही दिन भद्रा का मुखकाल छोड़कर प्रदोषकाल में ही होलिका-दहन कर लेना चाहिए। यथा-

परदिने प्रदोषस्पर्शाभावे पूर्वदिने यदि निशीथात्प्राक् भद्रासमाप्ति: तदा भद्रावसानोत्तरमेव होलिकादीपनम्। निशीथोत्तरं भद्रासमाप्तौ भद्रामुखं त्यक्त्वा भद्रायामेव।

वि. संवत् २०७८ में भी यही स्थिति घटित हो रही है। फाल्गुन पूर्णिमा केवल पहले दिन (17 मार्च, 2022 ई.) ही प्रदोष-व्यापिनी है। इस दिन प्रदोषकाल जोकि लगभग 18घं.-33मिं. से 20घं.-58मिं. तक रहेगा, भद्रा से व्याप्त है और भद्रा निशीथ (अर्द्धरात्रि) के बाद जाकर समाप्त हो रही है। ऐसी स्थिति में उपरोक्त शास्त्रनियम अनुसार 17 मार्च, 2021 ई. को ही **'भद्रा-मुख'** के काल को त्यागकर **'होलिका-दहन'** किया जाना चाहिए।

इसदिन 'भद्रा-मुखकाल' निशीथ-काल मध्ये भा.स्टैं.टा. अनुसार 22घं.-14मिं. से 24घं.-11मिं. तक रहेगा, जबकि भद्रा पुच्छकाल 21घं.-04मिं. से 22घं.-14मिं. तक रहेगा।

	समय
भद्रा-मुखकाल	22घं.-14मिं. से 24घं.-11मिं.
भद्रा-पुच्छकाल	21घं.-04मिं. से 22घं.-14मिं.

स्पष्ट रूप से इसदिन (17 मार्च, 2022 ई.) प्रदोषकाल भद्रा-मुख से तो सर्वथा मुक्त (अस्पृष्ट) है। **अतएव 17 मार्च, गुरुवार को पूर्णिमा के प्रदोष-व्यापिनी काल में भा.स्टैं.टा. अनुसार 18घं.-33मिं. से 20घं.-58मिं. तक की समयावधि में होलिका-दहन नि:संदेह रूप से किया जा सकता है।**

नोट-इन दिए गए संदिग्ध पर्व-त्यौहारों के निर्णयों के अतिरिक्त यदि पाठकों को किसी पर्व सम्बन्धी शंका/संशय हो तो पत्र भेजकर अथवा टेलीफोन द्वारा भी मुझसे स्पष्टीकरण ले सकते हैं।

-पं. विवेक शर्मा (जालन्धर, पंजाब)

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत-महोत्सव

(30 अगस्त, सोमवार, 2021 ई.—महापुण्यप्रदायक जयन्ती योग:)

श्रीमद्भागवत, भविष्यादि सभी पुराणों के अनुसार भगवान् श्रीकृष्ण का जन्म भाद्र. कृष्ण अष्टमीतिथि, बुधवार, रोहिणी नक्षत्र एवं वृष के चन्द्रमा-कालीन अर्द्धरात्रि के समय हुआ था–

मासि भाद्रपदे, अष्टम्यां कृष्णपक्षेऽर्द्ध रात्रके।
वृष राशि स्थितो चन्द्रे, नक्षत्रे रोहिणी युते।। (भविष्यपुराण)

श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी पर्व के समय छहों तत्त्वों भाद्र. कृष्ण पक्ष, अर्द्धरात्रिकाल, अष्टमी तिथि, रोहिणी नक्षत्र एवं वृष का चन्द्र और बुधवार या सोमवार की विद्यमानता (सम्मिलन) बड़ी कठिनता से प्राप्त होती है। अनेकों वर्षों में कई बार भा.कृ. अष्टमी की अर्द्धरात्रि को वृष का चन्द्र तो होता है, परन्तु रोहिणी नक्षत्र नहीं होता। इसी पंचांग में प्राय: सप्तमीविद्धा अष्टमी को स्मार्तानां तथा नवमीविद्धा अष्टमी को वैष्णवानां लिखा होता है। इस वर्ष 30 अगस्त, 2021 ई. को प्राय: सभी तत्त्वों का दुर्लभ योग मिल रहा है जोकि गत 8 वर्षों के पश्चात् बन रहा है अर्थात् 30 अगस्त को श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी के दिन अर्द्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी तिथि, सोमवार, रोहिणी नक्षत्र एवं वृषस्थ चन्द्रमा का दुर्लभ एवं पुण्यप्रदायक योग बन रहा है। प्राय: सभी शास्त्रकारों ने ऐसे दुर्लभ योग की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा एवं स्तुतिगान किया है। **यथा**—निर्णयसिन्धु अनुसार आधी रात के समय रोहिणी में यदि अष्टमी तिथि मिल जाए तो उसमें श्रीकृष्ण का पूजार्चन करने से तीन जन्मों के पाप दूर हो जाते हैं–

'रोहिण्यां-अर्द्धरात्रे च यदा कृष्णाष्टमी भवेत्।
तस्यांम्यर्चनं शौरे: हन्ति पापं त्रिजन्मजम्।।

श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी रोहिणी नक्षत्र के योग से रहित हो तो 'केवला और 'रोहिणी' नक्षत्र युक्त हो तो 'जयन्ती' कहलाती है। 'जयन्ती' में बुध या सोमवार का योग आ जाए तो वह अत्युत्कृष्ट फलदायक हो जाती है। 'केवलाष्टमी' और 'जयन्ती' में अधिक भिन्नता नहीं है, क्योंकि अष्टमी के बिना जयन्ती का स्वतन्त्र स्वरूप नहीं हो सकता। प्राचीनकाल से ही अर्द्धरात्रि-व्यापिनी अष्टमी में रोहिणी नक्षत्र के बिना भी व्रत-उपवास किया जाता है, परन्तु तिथि-योग के बिना रोहिणी में किसी प्रकार का स्वतन्त्र विधान नहीं है। अत: श्रीकृष्ण जन्माष्टमी ही रोहिणी नक्षत्र के योग से जयन्ती बनती है। एतदर्थ कहा गया है कि **'रोहिणी-गुणविशिष्टा जयन्ती'**।। विष्णुरहस्य का भी यह श्लोक **'जयन्ती-योग'** की पुष्टि करता है–

अष्टमी कृष्णपक्षस्य रोहिणीऋक्षसंयुता।
भवेत्प्रौष्ठपदे मासि जयन्तीनाम सा स्मृता।।

अर्थात् भाद्रपद कृष्णाष्टमी यदि रोहिणी से संयुक्त होती है तो वह जयन्ती नाम से जानी जाती है। **'गौतमी तन्त्र'** में भी इस सम्बन्ध में स्पष्टत: लिखा गया है कि भाद्र. कृष्णाष्टमी यदि रोहिणी नक्षत्र और सोम या बुधवार से संयुक्त हो जाए तो वह जयन्ती नाम से विख्यात होती है। जन्म-जन्मान्तरों के पुण्यसंचय से ऐसा योग मिलता है। जिस मनुषअय को जयन्ती-उपवास का सौभाग्य मिलता है, उसके कोटि जन्मकृत पाप नष्ट हो जाते हैं तथा जन्म-बन्धन से मुक्त होकर वह परम दिव्य वैकुण्ठादि भगवद् धाम में निवास करता है–

अष्टमी रोहिणी युक्ता चार्धरात्रे यदा भवेत्।
उपोष्य तां तिथिं विद्वान् कोटियज्ञफलं लभेत्।।

सोमाहणि बुधवासरे वा अष्टमी रोहिणी युता।
जयन्ती सा समाख्याता सा लभ्या पुण्य संचयै:।। (गौतमी तन्त्र)

'पद्मपुराण' अनुसार भी जिन्होंने श्रावण (भाद्रपद) में रोहिणी, बुधवार या सोमवार युक्त अथवा कोटि-कुलों की मुक्ति देने वाली नवमीयुक्त जन्माष्टमी का व्रत किया है वे प्रेतयोनि को प्राप्त हुए अपने पितरों को भी प्रेतयोनि से मुक्त कर देते हैं।

'प्रेतयोनिगतानां तु प्रेतत्वं नाशितं तु तै:।
यै कृता श्रावणे (भाद्रे) मासि अष्टमी रोहिणीयुता।
किं पुन: बुधवारेण सोमेनापि विशेषत:।
किं पुन: नवमीयुक्ता कुलकोटयास्तु मुक्तिदा।।'

अस्तु, सभी धर्म एवं निबन्ध ग्रन्थों में ऐसे दुर्लभ योग की विशेष महिमा कही है।

उपरोक्त शास्त्रवचनों के अनुसार 30 अगस्त, सोमवार को प्रात: ध्वजारोहण एवं संकल्पपूर्वक व्रतानुष्ठान करके **'ॐ नम: भगवते वासुदेवाय।' 'ॐ कृष्णाय वासुदेवाय गोविन्दाय नमो नम:'** आदि मन्त्र-जप, श्रीकृष्ण नाम स्तोत्रपाठ, कीर्तनादि तथा रात्रि को श्रीकृष्ण बालरूप की पूजार्चन, ध्वजारोहण, झूला-झुलान, चन्द्रार्घ्यदान, जागरण-कीर्तनादि शुभ कृत्य करने चाहिए। रात्रि को बारह बजे गर्भ से जन्म लेने के प्रतीकस्वरूप खीरा फोड़कर एवं शंख ध्वनि सहित भगवान् का जन्मोत्सव मनाएँ। जन्मोत्सव के पश्चात् कर्पूरादि प्रज्वलित कर सामूहिक स्वर से श्रीभगवान् की आरती-स्तुति करें। फिर शङ्ख में गंगाजल सहित दूध-जल, फल, कुश, कुसुम, गन्धादि डालकर निम्न मन्त्र द्वारा चन्द्रमा को अर्घ्य देकर नमस्कार कर अर्घ्य देवें–

'क्षीरोदार्णवसंभूत अत्रिनेत्र-सम-उद्भव। गृहाणार्घ्यं शंशाङ्क इमं रोहिण्या सहितो मम।। ज्योत्स्नापते नमस्तुभ्यं नमस्ते ज्योतिषां पते। नमस्ते रोहिणीकान्त अर्घ्यं मे प्रतिगृह्यताम्।।

तत्पश्चात् देवकी को अर्घ्य, श्रीकृष्ण को पुष्पाञ्जलि अर्पण करे तथा **'सोमाय सोमेश्वराय सोमपतये सोमसम्भवाय सोमाय नमो नम:'** से चन्द्रमा का पूजन करें।

फिर नमस्कार करके प्रार्थना करें–

त्राहि मां सर्वपापघ्नं दुखशोकार्णवात् प्रभो ! अर्थात् हे प्रभो ! दु:ख व शोकरूपी समुद्र से मेरी रक्षा करो। तत्पश्चात् मक्खन, मिश्री-धनिया, केले आदि फलों का प्रसाद ग्रहण करें। फिर भगवान् श्रीकृष्ण के ध्यान/नाम मन्त्रों का यथाशक्ति जाप करते रहें–

'ॐ नारायणाय नम:, अच्युताय नम:, अनन्ताय नम:, वासुदेवाय नम:।।'

'तिथ्यन्ते चोत्सवान्ते च व्रती कुर्वीत पारणम्' के अनुसार दूसरे दिन मिष्ठान्न सहित प्रसाद बाँटना, ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दान करके श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी के दुर्लभ पर्व का अवश्य पुण्य-लाभ उठाना चाहिए।

इस दिन अभीष्ट सन्तान प्राप्ति के लिए विधिपूर्वक सन्तान गोपाल स्तोत्र या हरिवंश पुराण का पाठ करने का विशेष माहात्म्य होगा। इस पर्व के सम्बन्ध में संशय या संदिग्ध कुछ भी नहीं है। फिर भी **'जयन्ती-योग'** के उपलक्ष्य में माहात्म्य लिखा गया है। अपने स्थानीय नगर में **'श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी' (30 अगस्त)** के दिन चन्द्रोदय जानने के लिए पृष्ठ 20 देखें।

वि. संवत् 2078 में भारत में क्षेत्रभेद से दो 'मेघेश'

(लेखक :–विवेक शर्मा)

प्रत्येक सर्वसाधारण जन एवं ज्योतिष के विद्यार्थी को यह विदित होना चाहिए कि भारतीय ज्योतिष के अनुसार प्रत्येक नवीन '**वार**' का प्रारम्भ सूर्योदय से होता है। अतः सूर्योदय से प्रारम्भ होकर दूसरे (आगामी) दिन के सूर्योदय तक के समय को '**वार**' कहा जाता है। अतः इस सिद्धान्त से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक वर्षाधिकारी (राजा-मन्त्री आदि) विश्व में अनिवार्य रूप से दो-दो होंगे क्योंकि एक ही समय पर भूगोल के एक अर्धभाग में एक वार और दूसरे अर्ध में दूसरा वार विद्यमान रहता है।

स्वाभाविक रूप से स्थानभेद के कारण वारों की समयावधि में भी अन्तर आना स्वाभाविक है। वारों के आरम्भ का स्थानीय सूर्योदय से सम्बन्ध रहता है। राजा-मन्त्री आदि वर्ष (संवत्) के दशाधिकारियों का संक्रान्ति दिन, सूर्य के आर्द्रा प्रवेश वाले दिन के वारेशों (वार-स्वामी) से सम्बन्ध होने के कारण प्रत्येक 2-3 वर्षों के बाद स्थानभेद से सूर्योदय में भिन्नता के कारण अन्तर आना स्वाभाविक है। इस प्रकार की परिस्थिति तब पैदा होती है, जब वर्षाधिकारी से सम्बन्ध संक्रान्ति/आर्द्रा प्रवेश आदि प्रदेशीय या नगरीय सूर्योदयकाल के समीप (1-2 मिनट) घटित हो रही हो। इस प्रकार की स्थिति भारत में दो-तीन वर्षों बाद घटित हो ही जाती है, जिस कारण उस वर्ष के एक या अधिक अधिकारी पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण क्षेत्रभेद से दो-दो बन जाते हैं।

इस वर्ष वि. संवत् 2078 में भारत में दो '**मेघेश**' (सूर्य द्वारा आर्द्रा-नक्षत्र प्रवेश वाले दिन के वार का स्वामी) होंगे अर्थात् मेघेश (वर्षा का स्वामी) का भारत के दो भिन्न-भिन्न क्षेत्रों पर अलग-2 प्रभाव रहेगा।

संलग्न दिए गए मानचित्र से स्पष्ट है कि '**क-ख**' रेखे से दाईं ओर स्थित सभी नगरों/ग्रामों पर मेघेश '**मंगल**' का प्रभाव रहेगा तथा '**क-ख**' रेखा से बाईं ओर स्थित नगरों/क्षेत्रों पर मेघेश '**चन्द्रमा**' होगा क्योंकि सूर्यदेव द्वारा आर्द्रानक्षत्र प्रवेश वाले दिन का वारेश ही '**मेघेश**' माना जाएगा।

दूसरे शब्दों में, सूर्य आर्द्रानक्षत्र प्रवेश 22 जून, 2021 ई. को प्रातः 5^घं.^-38^मिं.^ पर करेंगे। अतः जहाँ ('**क-ख**' रेखा से दाईं ओर) सूर्योदय 5^घं.^-38^मिं.^ से पहले होगा, वहाँ मेघेश '**मंगल**' माना जाएगा क्योंकि उस दिन मंगलवार है। इसी प्रकार जहाँ ('**क-ख**' रेखा से बाईं-दक्षिण ओर) सूर्योदय 5^घं.^-38^मिं.^ के बाद होगा, वहाँ '**मेघेश**'-'**चन्द्रमा**' होगा क्योंकि उस दिन सोमवार (चन्द्रवार) ही चल रहा होगा।

इस प्रकार स्पष्ट है, कि दश वर्षाधिकारियों का '**वारेश**' से साक्षात रूप से सम्बन्ध है।
(गतवर्ष वि. संवत 2077 में '**मार्गशीर्ष-संक्रान्ति**' का लेख भी पढ़ें।)

वि. संवत् 2078 में
भारत के भूभाग पर
दो 'मेघेशों' का प्रभुत्व

क
5 घं. 38 मि. पर सूर्योदय
ख

क-ख रेखा से दायीं ओर
वाले भूभाग का मेघेश 'मंगल'
तथा बाईं ओर वाले
भूभाग का 'चंद्र' होगा।
परिलेख-विवेक शर्मा
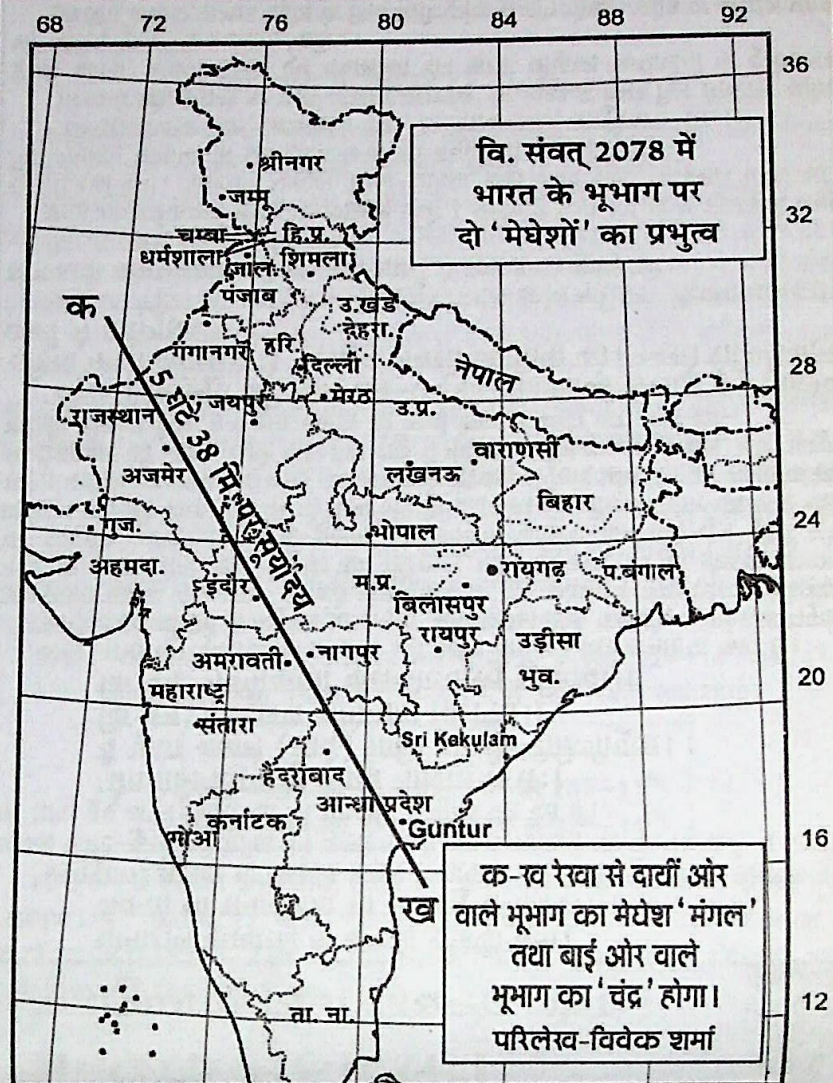
विस्तृत 'ग्रहण-विवरण' (वि. संवत् २०७८)

परिलेख-
-पं. विवेक शर्मा

वि. संवत् २०७८ (सन् 2021-22 ई.) में पृथ्वी (भूलोक) पर चार ग्रहण दिखाई पड़ेंगे-

(1) खग्रास चन्द्रग्रहण (26 मई, 2021 ई., बुधवार)
(2) कंकण सूर्यग्रहण (10 जून, 2021 ई., बृहस्पतिवार)
(3) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (19 नवम्बर, 2021 ई., शुक्रवार)
(4) खग्रास सूर्यग्रहण (4 दिसम्बर, 2021 ई. शनिवार)

इनमें से 4 दिसम्बर, 2021 ई. वाला खग्रास सूर्यग्रहण (4 नं. वाला)-यह एकमात्र ग्रहण भारत में कहीं भी दिखाई नहीं देगा। शेष तीनों ग्रहण भारत के कुछ पूर्वोत्तर प्रान्तों में ही देखे जा सकेंगे।

भारत में अदृश्य (दिखाई न देने वाले) एकमात्र ग्रहण का संक्षिप्त विवरण

(1) खग्रास सूर्यग्रहण (4 दिसम्बर, 2021 ई., शनिवार)-

यह खग्रास सूर्यग्रहण मार्गशीर्ष अमावस, शनिवार को 4 दिसम्बर, 2021 ई. के दिन घटित होगा। यह सूर्यग्रहण केवल ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका के दक्षिणी क्षेत्रों में केवल साऊथ-अफ्रीका के दक्षिण में, नाम्बिया, प्रशान्त, ऐटलांटिक तथा हिन्द महासागर तथा अन्टार्टिका क्षेत्र में ही देखा जा सकेगा। ऑस्ट्रेलिया के भी दक्षिणी भागों (कैनबरा, मेलबोर्न, विक्टोरिया आदि) में ही इसे खण्डग्रास रूप में ही देखा जा सकेगा। सिडनी, ब्रिसबेन आदि क्षेत्रों में दिखाई नहीं देगा। इसकी खग्रास आकृति केवल अण्टार्किटका में दिखाई देगी। भा.स्टैं.टा. अनुसार इसके स्पर्शादि-काल इस प्रकार हैं-

ग्रहण प्रारम्भ	10घं.-59मिं.	(भा.स्टैं.टा.)
खग्रास प्रारम्भ	12घं.-33मिं.	
ग्रहण मध्य	13घं.-04मिं.	
खग्रास समाप्त	13घं.-35मिं.	
ग्रहण समाप्त	15घं.-07मिं.	

ग्रहण का परमग्रास = 1.036, खग्रास की अवधि = 1मिं.-54सैं.

☐ भारत में दृश्य ग्रहणों का विस्तृत विवरण ☐

(1) खग्रास चन्द्रग्रहण (26 मई, 2021 ई., वैशाख पूर्णिमा, बुधवार)-

यह ग्रहण 26 मई, 2021 ई. को सायंकाल चन्द्रोदय के समय पश्चिमी-बंगाल, अरुणांचल, नागालैण्ड, पूर्वी उड़ीसा, मिज़ोरम, मणिपुर, आसाम, त्रिपुरा तथा मेघालय में **ग्रस्तोदय रूप** में बहुत कम समय के लिए दिखाई देगा। इन स्थानों पर चन्द्रमा ग्रस्त ही उदित होगा और उदय के कुछ मिन्टों बाद ही ग्रहण समाप्त हो जाएगा। इन नगरों/स्थलों पर उपरोक्त **चन्द्रग्रहण खण्डग्रास ग्रस्तोदय रूप में दिखाई देगा।** भारत के शेष भागों (उत्तरी, उत्तर-पश्चिम व दक्षिण भारत) में यह ग्रहण दिखलाई नहीं देगा। **भारत के केवल उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में यह ग्रहण समाप्ति काल (मोक्ष) के समय दिखाई देगा।** इस ग्रहण के प्रारम्भादि के काल भा.स्टैं.टा. में इस प्रकार हैं-

	घं.	मिं.	
ग्रहण प्रारम्भ	15	15	26 मई, 2021 ई. (भा. स्टैं. टा.)
खग्रास प्रारम्भ	16	40	
ग्रहण मध्य	16	49	
खग्रास समाप्त	16	58	
ग्रहण समाप्त	18	23	

पर्वकाल = 3घं.-08मिं. ; चंद्र मालिन्य शुरु-14घं.-16मिं. ; चंद्रमालिन्य समाप्त 19घं.-21मिं.

आगे पृष्ठ 35 पर ग्रहण चित्र (1) में स्पष्टतापूर्वक बतलाया गया है कि यह ग्रहण भारत के किस क्षेत्र में दिखाई देगा तथा किस क्षेत्र में नहीं। इस चित्र में दी गई **'क-ख'** रेखा से दाईं ओर (पूर्वी भारत में) स्थित बंगाल, आसाम आदि प्रदेशों में ही यह ग्रहण सायंकाल के समय ग्रस्तोदय के रूप में बहुत कम समय के लिए दिखाई देगा। इस रेखा से पश्चिम में स्थित किसी भी भारतीय नगर/राज्य में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा, क्योंकि वहाँ सर्वत्र चन्द्रमा ग्रहण-समाप्ति (18घं.-23मिं.) के बाद ही उदय होगा। इस ग्रहण चित्र में **'क-ख'** रेखा के आसपास स्थलों (नगरों) पर चन्द्रमा का उदय ठीक उस समय होगा, जब ग्रहण समाप्त होगा (18घं.-23मिं. पर)। अतएव स्पष्ट है कि इस **'क-ख'** रेखा से पश्चिम में स्थित सभी नगरों/राज्यों में चन्द्रोदय ग्रहण समाप्ति के बाद होगा। इस रेखा से पूर्व की ओर बंगाल आदि प्रदेशों में चन्द्रोदय के समय चन्द्रमा कितना पूर्वी क्षितिज में ग्रस्त दिखेगा-यह 10-10 मिन्ट के अन्तर से तीन और रेखाएं दर्शायी गई हैं।

पृष्ठ 34 पर कोष्ठक में पूर्वी भारत के लगभग 100 नगरों के चन्द्रोदय का समय दे दिया गया है। ताकि पाठकों को स्पष्ट रूप से पता चल सके कि अमुक नगर में चन्द्रग्रहण दिखाई देगा अथवा नहीं। जिन नगरों में चन्द्रोदय ग्रहण समाप्ति (18घं.-23मिं.) से पहिले होगा, केवल उन्हीं नगरों में यह अल्पग्रास खण्ड चन्द्रग्रहण दिखाई देगा।

भारत के अतिरिक्त दिखाई देने वाले क्षेत्र-भारत के पूर्वी प्रदेशों के अतिरिक्त यह ग्रहण दक्षिण-पूर्वी एशिया (जापान, इण्डोनेशिया, बांग्लादेश, सिंगापुर, फिलीपीन्स, दक्षिणी-कोरिया, बर्मा आदि), ऑस्ट्रेलिया में इसका खग्रास रूप दिखेगा। इसके अतिरिक्त खण्ड रूप में अधिकतर उत्तरी तथा दक्षिणी अमरीका, प्रशान्त तथा हिन्द महासागर में दृश्य होगा।

ग्रहण का पर्वकाल—जहाँ-ग्रहण ग्रस्तोदय हो, वहाँ ग्रहण का पर्वकाल ग्रस्त सूर्य/चन्द्र के उदयकाल से ही प्रारम्भ माना जाता है। अतएव यहाँ चन्द्रोदय से ग्रहण समाप्ति तक का काल '**पर्वकाल**' माना जाएगा।

ध्यान रहे—यह ग्रहण भारत के केवल पूर्वी क्षेत्रों (देखें ग्रहण चित्र-1) में चन्द्रोदय के समय पूर्वी क्षितिज में ही दिखाई देगा। अतएव ग्रहण के स्नान, दान, जपादि अनुष्ठान का माहात्म्य भी उन्हीं स्थलों पर होगा।

क्योंकि यह ग्रहण भारत के उत्तर, पश्चिम एवं दक्षिण भागों, जैसे—महाराष्ट्र, पंजाब, जम्मू-काश्मीर, राजस्थान, उत्तराखण्ड, उ.प्र., बिहार आदि प्रदेशों में दिखाई नहीं देगा, अतएव इन प्रदेशों में ग्रहणकालिक स्नान-दान, जप-तपादि अनुष्ठान, पुण्यादि एवं विवाहादि शुभ कार्यों के निषेध का विचार नहीं होगा।

चन्द्रग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक 26 मई, 2021 की प्रात: 6घं.-15मिं. (भा.स्टैं.टा.) से प्रारम्भ हो जाएगा। **पुनः ध्यान रखें**, भारत के पूर्वीय प्रदेशों में जहाँ-जहाँ उपरोक्त चन्द्रग्रहण दृश्य होगा, वहाँ पर ही ग्रहण के सूतकादि का विचार होगा, अन्यत्र नहीं।

सूतक एवं ग्रहणकाल में ईश्वर एवं अपने इष्टदेव का पूजन, जप-पाठ, तर्पण, हवन आदि कृत्यों का सम्पादन तथा ग्रहणोपरान्त स्नान, दानादि करना शुभ एवं कल्याणकारी होता है।

ग्रहण का राशिफल—यह ग्रहण अनुराधा/ज्येष्ठा नक्षत्र तथा वृश्चिक राशिकालीन घटित हो रहा है। अतएव वृश्चिक राशि वालों को इस ग्रस्तोदित चन्द्रग्रहण का फल प्राय: अशुभ रहेगा। सभी राशियों के लिए इस ग्रहण का फल इस प्रकार से होगा:

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	सौख्य प्राप्ति	स्त्री कष्ट	रोग भय	मान हानि	कार्य सिद्धि	धन लाभ	धन हानि	शरीर कष्ट चिन्ता	धन हानि	धन लाभ	चोट भय	चिन्ता, सन्तान कष्ट

ग्रहण का अन्य फल—इस ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण का विशेष प्रभाव भारत के पूर्वी प्रदेशों (बंगाल, आसाम, अरु. प्रदेश, नागालैण्ड, त्रिपुरा, पूर्वी उड़ीसा), बांग्लादेश, बर्मा, सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों पर विशेष रूप से अधिक होगा। वृश्चिक राशि वाले देशों (ब्राज़ील, अल्जीरिया, बर्मा) के राष्ट्र नेताओं के लिए कठिन हालात पैदा करेगा। वैशाख पूर्णिमा के दिन यह ग्रहण होने से बिहार, उड़ीसा, बंगाल या पूर्वी प्रदेशों के किसी विशिष्ट राजनेता के लिए घातक होगा।

वैशाखमासे ग्रहणे विनाशमायांति कार्पासतिला: समुद्गा:।
इक्ष्वाकुयौधेयशका: कलिंगा: सोपद्रवा: किंतु सुभिक्षमस्मिन्॥

वैशाख में ग्रस्तोदय होने से विभिन्न देशों के मध्य युद्ध, प्रजा में रोग-भय तथा ब्राह्मणों में भी भय व्याप्त हो। शराब पीने वालों को कष्ट, वर्षा की कमी, कृषि-नाश के कारण तिल, तेल, रूई, मूंगादि के मूल्यों में विशेष तेजी हो, परन्तु विश्व में सुभिक्ष अर्थात् अन्न का यथेष्ठ उत्पादन हो। पूर्वी एशियाई देशों में विशेष उपद्रव होगा।

○○○ ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण (26 मई, 2021 ई.) ○○○

पूर्वी भारत के प्रसिद्ध नगरों में 26 मई, 2021 ई. को चन्द्रोदय तथा पर्वकाल

[जहाँ चन्द्रोदय 18घं.-23मिं. से पहिले होगा, वहीं यह ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण दिखेगा।]

[पर्वकाल = चन्द्रोदय से ग्रहण समाप्ति (18घं.-23मिं.) तक का काल]

नगर	चन्द्रोदय		पर्वकाल		नगर	चन्द्रोदय		पर्वकाल	
	घं.	मिं.	घं.	मिं.		घं.	मिं.	घं.	मिं.
अगरतला (त्रि.)	18	05	0	18	केओंझार (उड़ी.)	18	25	×	×
अरारिया (बि.)	18	26	×	×	खड़गपुर (बं.)	18	19	0	4
अलीपुर (बंगा.)	18	15	0	8	खुर्दा (उड़ी.)	18	22	0	01
आसनसोल (बं.)	18	23	×	×	डायमण्ड हार्बर	18	15	0	08
इच्छापुरम् (उ.)	18	24	×	×	गंगटोक (सि.)	18	23	×	×
इम्फाल (मणि.)	17	56	0	27	गंजम् (उड़ी.)	18	23	×	×
ईटानगर (अरुणा.)	18	02	0	21	गुवाहाटी (आ.)	18	08	0	15
उ. लखीमपुर (आ.)	18	00	0	23	गोलाघाट(आसा.)	17	59	0	24
उखरूल (मणि.)	17	55	0	28	चन्दननगर (बं.)	18	16	0	7
उदयपुर (त्रिपुरा)	18	04	0	19	चिरापूंजी (मेघा.)	18	06	×	×
उदयगिरि (उड़ी.)	18	26	×	×	चित्तरंजन (बं.)	18	24	×	×
एलौंग (अरुणा.)	18	00	0	23	चिनसुरा (बं.)	18	16	0	6
ऐजावल (मिज़ो.)	17	59	0	24	चिरापूंजी	18	06	0	17
करीमगंज(आसा.)	18	03	0	20	छत्तरपुर (उड़ी.)	18	23	×	×
कटक (उ.)	18	21	0	02	जमशेदपुर (झा.)	18	25	×	×
कटिहार (बि.)	18	24	×	×	जलपाईगुड़ी (बं.)	18	21	0	2
कालिम्पोंग (बं.)	18	24	×	×	जोरहाट (आसा.)	17	59	0	24
किशनगंज (बि.)	18	24	×	×	ठाकुरगंज (बिहा.)	18	24	×	×
कूचबिहार (बं.)	18	18	0	5	डिगवोई (आसा.)	17	54	0	29
कृष्णानगर (बं.)	18	16	0	7	डिब्रूगढ़ (आसा.)	17	57	0	26
केन्द्रपाड़ा (उ.)	18	19	0	4	तवांग (अरुण.)	18	10	0	13
कैलाशहर (त्रिपु.)	18	03	0	20	तेजपुर (आसा.)	18	05	0	18
कोंटई (बंगा.)	18	16	0	7	तिनसुकिया (आसा.)	17	56	0	27
कोणार्क (उड़ी.)	18	20	0	3	दार्जिलिंग (बं.)	18	24	×	×
कोरापुट (उड़ी.)	18	32	×	×	दीमापुर (नागा.)	17	59	0	24
कोलकाता (बं.)	18	15	0	08	दुमका (झार.)	18	23	×	×
कोकराझार (आसा.)	18	15	0	08	दुर्गावार (बंगा.)	18	21	0	2
कोहिमा (नागा.)	17	57	0	26	दिसपुर (आसा.)	18	08	0	15
					दीघा	18	16	0	7
					दीफू (आसा.)	18	00	0	23
					धनवाद (झा.खं.)	18	26	×	×

नगर	चन्द्रोदय		पर्वकाल	
	घं.	मिं.	घं.	मिं.
नयागढ़ (उड़ी.)	18	24	×	×
नागाओं (आसा.)	18	04	0	19
नालबाड़ी (आसा.)	18	10	0	13
पुरनिया (बि.)	18	25	×	×
पुरी (उड़ी.)	18	20	0	3
पुरुलिया (बं.)	18	25	×	×
पोर्ट ब्लेयर	17	38	0	45
वर्धमान (बंगा.)	18	18	0	5
बारीपाड़ा (उड़ी.)	18	21	0	2
ब्रह्मगिरि (उड़ी.)	18	21	0	2
ब्रह्मापुर (उड़ी.)	18	24	×	×
बालूरघाट (बं.)	18	19	0	4
बालासोर (उ.)	18	19	0	4
बांका (बि.)	18	26	×	×
बांकुरा (बं.)	18	22	0	1
बिष्णुपुर (बंगा.)	18	20	0	3
बोलपुर (बंगा.)	18	20	0	3
भद्रक (उड़ी.)	18	20	0	3
भाटपाड़ा (बं.)	18	15	0	8
भागलपुर (बि.)	18	26	×	×
भुवनेश्वर (उ.)	18	21	0	2
मालदा (बं.)	18	21	0	2
मुर्शीदाबाद (बं.)	18	19	0	4
लुमडिंग (आसा.)	18	01	0	22
रायगंज (बंगा.)	18	22	0	01
रानाघाट (बं.)	18	15	0	8
रानीगंज (बं.)	18	22	0	01
शान्तिनिकेतन	18	20	0	3
शान्तिपुर (बं.)	18	16	0	7
शिवसागर (आसा.)	17	58	0	25
सिलीगुड़ी (बं.)	18	23	×	×
सिकती (बि.)	18	26	×	×
सिन्दरी (बं.)	18	24	×	×
सिलचर	18	01	0	22
हैलाकण्डी (आसा.)	18	02	0	21

88° 90° 92° 94° 96° 97°

30° 29° 27° 25° 23° 21°

ग्रहण चित्र 1

क

ख

नेपाल

भूटान

अरूणाचल प्रदेश

असम

बिहार

बांग्लादेश

झारखंड

प. बंगाल

उड़ीसा

त्रिपुरा

मणिपुर

नागालैंड

बंगाल की खाड़ी

चंद्रोदय के समय ग्रहणमोक्ष

चंद्रोदय 18 घं 23 मिं.

चंद्रोदय 18 घं 13 मिं.

चंद्रोदय 18 घं 3 मिं.

चंद्रोदय 17 घं 53 मिं.

ग्रस्तोदय चंद्रग्रहण (26 मई, 2021 ई.)

यह ग्रहण भारत के पूर्वी राज्यों में क-ख रेखा से दायीं ओर ग्रस्तोदय रूप में दिखाई देगा।

परिलेख-विवेक शर्मा
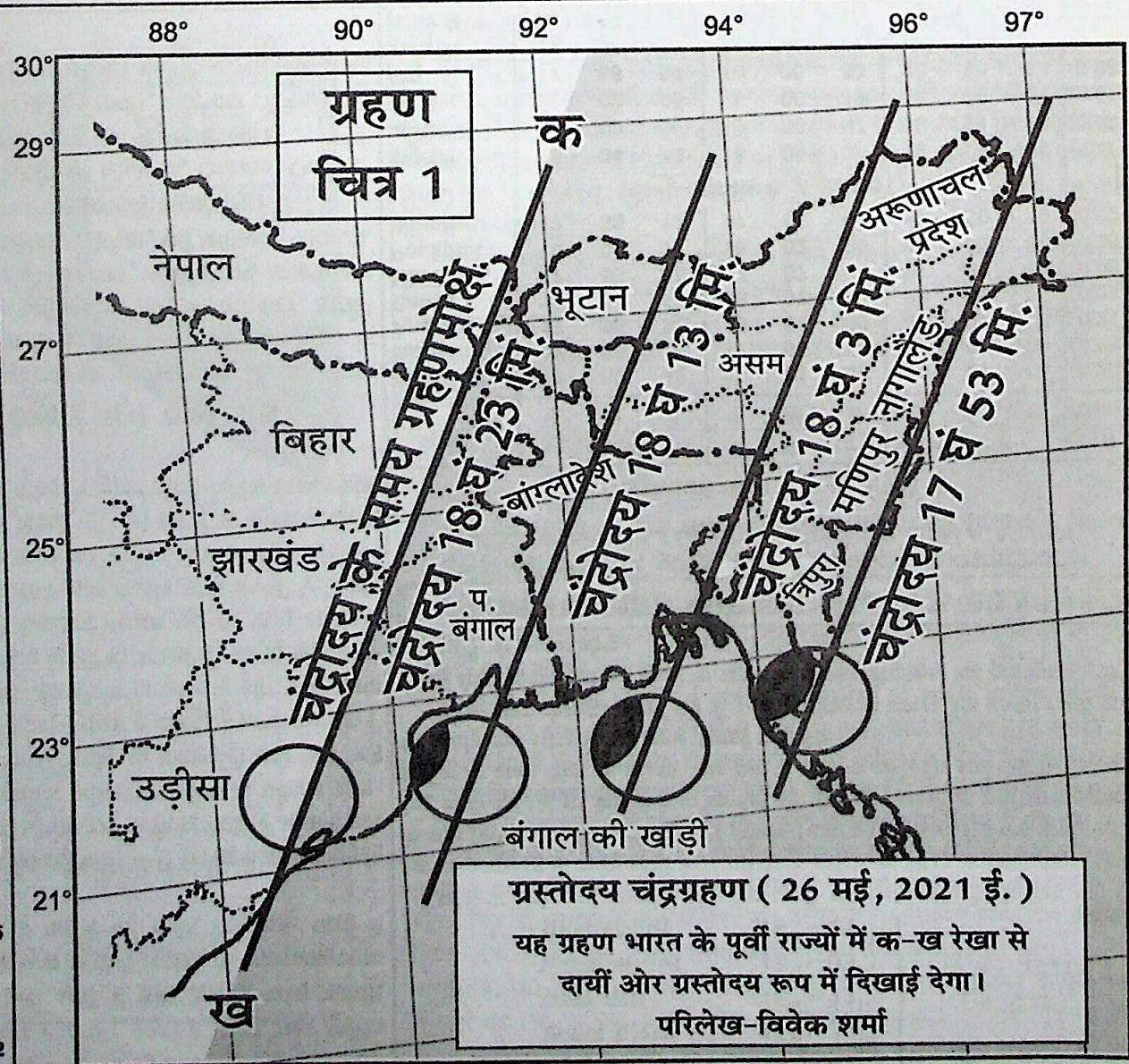
(2) कंकण (स्वल्पग्रास) सूर्यग्रहण (10 जून, 2021 ई., ज्येष्ठ अमावस, बृहस्पतिवार)–

यह ग्रहण ज्येष्ठ अमावस, बृहस्पतिवार (10 जून, 2021 ई.) को सुदूर पूर्वोत्तर भारत के केवल अरुणांचल प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में तथा अखण्ड जम्मू-कश्मीर (पाक अधिकृत एवं अक्साई चीन में) के कुछ क्षेत्रों में सूर्यास्त के समय स्वल्पग्रास के रूप में दिखाई देगा। अत्यल्प ग्रास के कारण यह ग्रहण सामान्यतः भारत में दृष्टिग्राह्य नहीं होगा।

ग्रहण चित्र (2) में 'A-B' रेखा के पार्श्ववर्ती नगरों में ही इस ग्रहण की खण्डाकृति सूर्यास्त से कुछ मिनट पहिले ही अधिक-से-अधिक 17-18 मिनट के लिए अत्यल्प ग्रास वाली दिखाई देगी। इन क्षेत्रों में इसका ग्रासमान अधिक से अधिक 3 प्रतिशत होगा। सिद्धान्त शास्त्रों में कहा गया है कि एक अंगुल अर्थात् 10 प्रतिशत से कम ग्रास वाले ग्रहण की चर्चा पंचांग आदि में नहीं करनी चाहिए–**'ग्रासो नादेश्योऽगुंलाल्यो रवीन्द्वोः।'** क्योंकि ऐसे ग्रहण का स्पर्श-मोक्षकाल अर्थात् ग्रहण कब प्रारम्भ हुआ और कब समाप्त हुआ–यह साधारण जनता के लिए जान सकना कठिन हो सकता है। अपितु इतने अल्प ग्रास को नंगी आँखों/साधारण शीशे से भी देख पाना सम्भव नहीं है, परन्तु आजकल नवीन वैज्ञानिक दूरबीन आदि यन्त्रों से इसे जान पाना अत्यन्त सरल है। T.V. आदि न्यूज़-चैनलों में कम-से-कम ग्रास को भी जनता को स्पष्टता से दिखा दिया जाता है। (टी.वी. चैनलों पर तो आजकल भारत में न दिखाई देने वाले ग्रहणों का प्रभाव/राशिफल तथा वृथा भय एवं चर्चा दिखाकर लोगों को भ्रमित किया जा रहा है–जोकि शास्त्र मर्यादा के विरुद्ध है।)

भारत के अतिरिक्त दिखाई देने वाले क्षेत्र

यह कंकण सूर्यग्रहण 10 जून, 2021 ई. बृहस्पतिवार को दोपहर भा. स्टैं. टा. अनुसार 13घं.-42मिं. से सायं 18घं.-41मिं. तक भूगोल पर दिखेगा। यह कंकण ग्रहण यूरोप के अधिकतर देशों (दक्षिणी-इटली, दक्षिणी रोमानिया, सर्बिया, ग्रीस को छोड़कर), उत्तरी-**एशिया** (अधिकतर चीन, दक्षिणी चीन, नेपाल को छोड़कर), उज़्बेकिस्तान, कज़ाकिस्तान आदि देशों, मंगोलिया, रूस, उत्तरी-अमेरिका [**अधिकतर कैनेडा**, पूर्वी अमेरिका (वांशिगटन, Ontario आदि क्षेत्रों सहित)] **तथा** अण्टलांटिक महासागर में दिखाई देगा।

इस ग्रहण की कंकण-आकृति केवल **कैनेडा** के Nipigon, Ontaria, Quebec, Nunavut तथा रुस के Yakutia एवं ग्रीनलैण्ड आदि क्षेत्रों में दिखाई देगी।

न्यूयार्क, वाशिंगटन (U.S.A.), **लण्डन** (U.K.), **टोरण्टो, मांट्रियाल** (कैनेडा) तथा शेष देशों में तो इसकी खण्ड-आकृति ही देखी जा सकेगी। भा. स्टैं. टा. अनुसार इसका समय इस प्रकार होगा–

ग्रहण प्रारम्भ	13घं.-42मिं.	(भा.स्टैं.टा.) (10 जून, 2021 ई.)
कंकण प्रारम्भ	15घं.-20मिं.	
ग्रहण मध्य	16घं.-12मिं.	
कंकण समाप्त	17घं.-03मिं.	
ग्रहण समाप्त	18घं.-41मिं.	

भारत के पूर्वी राज्य अरुणांचल प्रदेश तथा उत्तरी राज्य जम्मू-काश्मीर के जिन भागों में यह ग्रहण सूर्यास्त के समय थोड़ी देर (अधिक से अधिक 18 मिंट) के लिए अत्यल्प ग्रास के साथ दिखाई देगा, उनका निर्देश यहाँ [ग्रहण-चित्र (2) में] चित्र में किया गया है। इस चित्र में दी गई 'A-B' रेखा से ऊपर या दाईं ओर स्थित इन प्रदेशों के नगरों में यह ग्रहण सूर्यास्त के समय देखा जा सकेगा। इस रेखा से नीचे या बाईं ओर वाले किसी भी स्थान पर अर्थात् शेष भारत में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा।

ग्रहण का सूतक–जिस क्षेत्र में ('A-B' रेखा से ऊपर) यह ग्रस्तास्त सूर्यग्रहण दिखाई देगा, केवल वहाँ इस ग्रहण के सूतक का विचार होगा तथा यह 10 जून की प्रातः 5घं.-54मिं. से प्रारम्भ होगा।

ग्रस्तास्त स्वल्पग्रास सूर्यग्रहण (10 जून, 2021 ई.)

उत्तर-पूर्वी भारत के प्रमुख नगरों में ग्रहण प्रारम्भ/समाप्तिकाल

[इन राज्यों के शेष नगरों में भी यह ग्रहण नहीं दिखेगा]

नगर	प्रारम्भ			मध्य			समाप्ति			ग्रास
	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	घं.	मिं.	सैं.	प्रतिशत
(अरुणांचल प्रदेश के प्रमुख नगर)										
Anini	17	53	48	18	01	00	18	01	00	0.29
Baligam	17	56	16	17	57	00	17	57	00	0.05
Angolin	17	55	33	18	01	00	18	01	00	0.21
Emiya	17	54	55	18	01	00	18	01	00	0.24
Minutang	17	55	45	17	57	00	17	57	00	0.08
Pasighat	18	00	17	18	02	00	18	02	00	0.06
Walong	17	55	12	17	55	48	17	55	49	0.02
(जम्मू-काश्मीर के प्रमुख नगर)										
इष्कुमान	18	04	13	18	05	36	18	07	14	0.0
बाल्टिट	18	00	50	18	06	07	18	11	34	0.03
नागिर	18	02	40	18	06	19	18	10	09	0.01
पासु	17	56	54	18	05	59	18	15	07	0.08
शक्सगम	17	54	24	18	06	48	18	19	09	0.15
शिंगशल	17	55	03	18	06	06	18	17	08	0.12
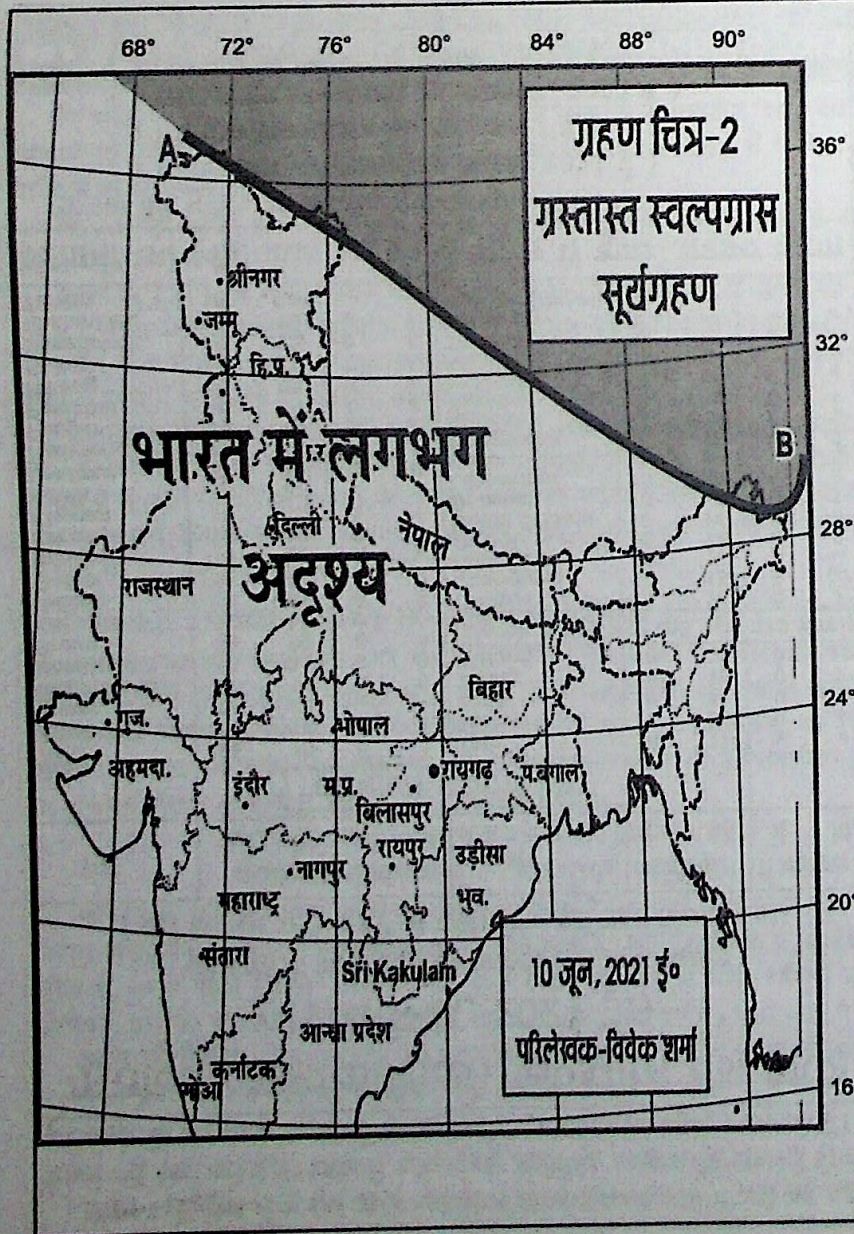
(3) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (19 नवम्बर, 2021 ई., कार्तिक पूर्णिमा, शुक्रवार)–

यह ग्रहण 19 नवम्बर, 2021 ई., शुक्रवार (कार्तिक पूर्णिमा) को सायंकाल चन्द्रोदय के समय भारत के सुदूर पूर्वी राज्यों–अरुणांचल प्रदेश तथा आसाम राज्य के सुदूर केवल पूर्वी क्षेत्रों में ही स्वल्पग्रास ग्रस्तोदय के रूप में बहुत ही कम समय के लिए दिखाई देगा। शेष भारत में यह ग्रहण बिल्कुल दिखाई नहीं देगा। जिन सुदूर पूर्वी नगरों में यह ग्रहण दिखाई देगा, वहाँ चन्द्रमा ग्रस्त ही उदय होगा तथा उदय के कुछ ही मिनटों के बाद ग्रहण समाप्त हो जाएगा।

भारत के अतिरिक्त यह ग्रहण अधिकतर यूरोप, एशिया (पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान तथा उत्तर-पश्चिमी भारत को छोड़कर), ऑस्ट्रेलिया, उत्तर-पश्चिमी अफ्रीका, उत्तरी तथा दक्षिणी अमरीका (कैनेडा सहित) में खण्डग्रास रूप में दृश्य होगा।

भा.स्टैं.टा. अनुसार इस ग्रस्तोदय खण्डग्रास चन्द्रग्रहण का स्पर्श तथा मोक्ष इस प्रकार से होगा–

	घं.	मिं.
ग्रहण प्रारम्भ	12	48
ग्रहण मध्य	14	33
ग्रहण समाप्त	16	17

(चन्द्र मालिम्य शुरू = 11घं.-30मिं., चन्द्र क्रान्ति निर्मल = 17घं.-36मिं.)

(परमग्रासमान = 97%, ग्रहण की अवधि = 3घं.-29मिं.)

ग्रहण चित्र (3) में दी गई 'क-ख' रेखा के दाईं ओर स्थित प्रदेशों में ही यह ग्रहण अत्यल्प खण्डग्रास रूप में दिखाई पड़ेगा, इस रेखा से बाईं ओर स्थित किसी भी स्थान पर यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा।

भारत के इन प्रदेशों में भी इस ग्रहण का ग्रास बहुत ही कम रहेगा। यह 2 प्रतिशत से अधिक नहीं होगा। अपिच इतने अल्प ग्रास को नंगी आँखों से देख पाना सम्भव नहीं होता। इन नगरों में भी चन्द्रोदय के बाद अधिक-से-अधिक 8 मिनट तक के लिए यह ग्रस्तोदय खण्ड ग्रहण दूरबीन द्वारा दृश्य होगा। जैसा कि पिछले ग्रहण में भी लिखा गया है कि इतने अल्प ग्रास वाले ग्रहण को शास्त्रकारों ने अलक्ष्यपूर्ण लिखा है तथा इस प्रकार के ग्रहण की चर्चा करना व्यर्थ है। क्योंकि भारत के इन क्षेत्रों में भी (पूर्वी राज्यों में) ग्रासमान अत्यन्त अल्प होगा, अतः इन नगरों में भी इस ग्रहण का कोई माहात्म्य नहीं होगा। फिर भी पाठकों के लाभार्थ जहाँ यह अल्पकालिक ग्रस्तोदय खण्डग्रास चन्द्रग्रहण दिखाई देगा, वहाँ के नगरों का अलग कोष्टक आगे दे दिया है।

ग्रहण का सूतक–भारत के दो पूर्वी राज्यों (अरुणांचल, आसाम) के पूर्वी भागों में जहाँ यह (क-ख रेखा से दाईं ओर) अल्पकालिक ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण दिखाई देगा, केवल वहीं इस ग्रहण के सूतक का विचार होगा तथा यह 19 नवम्बर, 2021 ई. की प्रातः 3घं.-49मिं. से प्रारम्भ होगा।

ध्यान रखें, शेष भारत (क-ख से बाईं ओर) के सभी राज्यों/नगरों में जहाँ यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा, वहाँ ग्रहण सम्बन्धी दान, सूतक आदि का माहात्म्य/विचार नहीं होगा। इस प्रकार के अल्पग्रास ग्रहण को शास्त्र अनादेश्य (न बतलाने योग्य) बतलाते हैं।

ग्रस्तोदय (अल्पकालिक) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण
(19 नवंम्बर, 2021 ई.)

पूर्वी भारत के प्रमुख नगरों का चन्द्रोदय तथा ग्रहण पर्वकाल

[जहाँ चन्द्रोदय 16घं.–17मिं. से पहिले होगा–वहाँ ग्रहण दिखाई देगा।)

नगर	चन्द्रोदय घं.	चन्द्रोदय मिं.	पर्वकाल घं.	पर्वकाल मिं.	नगर	चन्द्रोदय घं.	चन्द्रोदय मिं.	पर्वकाल घं.	पर्वकाल मिं.
'अरुणांचल प्रदेश के नगर'									
Aalo	16	16	0	1	Tato	16	17	×	×
Anini	16	11	0	6	Tawal	16	09	0	8
Basar	16	17	—	—	Tezu	16	11	0	6
Brahmkund	16	11	0	6	Tuting	16	15	0	2
Bomdo	16	15	0	2	Walong	16	07	0	10
Bruint	16	09	0	8	(आसाम के कुछ नगर जहाँ ग्रहण दृश्य होगा।)				
Changlong	16	15	0	2	Chabua	16	16	0	1
Dibang	16	09	0	8	Changlang	16	15	0	02
Gobuk	16	15	0	2	Dibrugarh	16	17	—	—
Itanagar	16	23	×	×	Digboi	16	14	0	3
Jairampur	16	13	0	4	Doom Dooma	16	14	0	3
Khonsa	16	16	0	1	Duliajan	16	16	0	1
Kimin	16	21	×	×	Lakhimpur	16	20	×	×
Lohitpur	16	09	0	8	Ledo	16	14	0	3
Nampong	16	13	0	4	Margherita	16	15	0	2
Pangin	16	15	0	2	Khonsa	16	16	0	1
Pasighat	16	14	0	3	Namrup	16	16	0	1
Rikong	16	09	0	8	Pasighat	16	14	0	3
Roing	16	12	0	5	Silapathar	16	18	×	×
Shantipur	16	13	0	4	Tinsukia	16	15	0	2
Shaluni Mt.	16	10	0	7	Tingkhog	16	17	×	×
Tamen	16	20	×	×	Nokyan (Nagal)	16	17	×	×

आगामी वर्ष (वि. संवत् 2079) में भारत में दृश्य-अदृश्य ग्रहण

आगामी वर्ष भूगोल पर चार ग्रहण घटित होंगे–

(1) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (30 अप्रैल, 2022 ई.)
(2) खग्रास चन्द्रग्रहण (16 मई, 2022 ई.)
(3) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (25 अक्तूबर, 2022 ई.)
(4) खग्रास-चन्द्रग्रहण (8 नवम्बर, 2022 ई.)

इनमें से (3) एवं (4) नं. वाले ग्रहण ही भारत में दृश्य होंगे।

ग्रस्तोदय खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (19 नवं., 2021 ई. (ग्रहण चित्र-3)

क
अदृश्य
बिहार
चन्द्रोदय 16 घं. 17 मि.
प.बंगाल
ग्रासमान
उड़ीसा
परिलेख-पं० विवेक शर्मा
ख
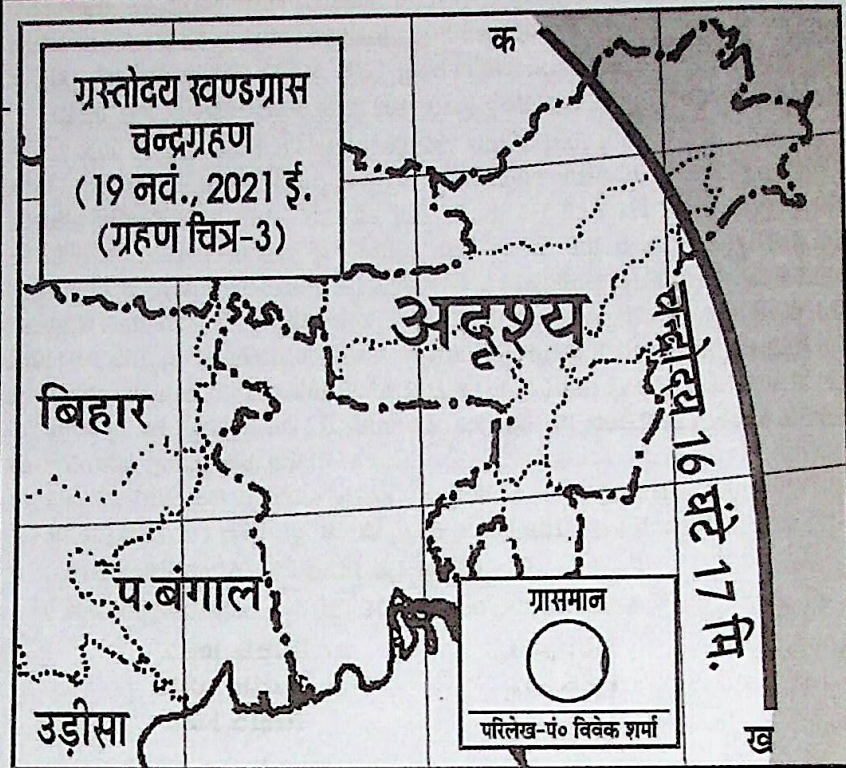
क्या ग्रहण वाले दिन व्रत-पर्वों का अनुष्ठान करना चाहिए ?

श्रावणी उपाकर्म को छोड़कर शेष व्रत-पर्वों (श्रीसत्यनारायण व्रत, अमावस्या-पूर्णिमा का स्नान-दान, वटसावित्री व्रत, गुरु पूर्णिमा, रक्षाबन्धन, नवरात्रारम्भ (घटस्थापन), होलिका दहन आदि) से सम्बन्धित अनुष्ठान, पारणा आदि पर सूर्य या चन्द्रग्रहण का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इन पूर्णिमा-अमावस्या को घटित होने वाले व्रत-पर्वों से सम्बन्ध पूजा आदि का अनुष्ठान इनके ठीक अपने-अपने विहित निर्धारित काल में ग्रहण के सूतक और ग्रहण के समय में भी करने चाहिए–इस प्रकार के शास्त्रवाक्य मिलते हैं। यहाँ पर शास्त्रनिर्देश है कि व्रत-पर्व से सम्बन्धित पूजादि के अनुष्ठान/पारणा/संकल्पकाल में ग्रहण लगा हुआ हो तो तीर्थजल सहित स्नान करके ही पूजादि करनी चाहिए–

सर्वेषामेव वर्णानां सूतकं राहु दर्शने। स्नात्वा कर्माणि कुर्वीत शृतमन्नं विवर्जयेत्।।

ग्रहण वाले दिन पड़ने वाले व्रत की पारणा (व्रत के अन्त के किए जाने वाले भोजन) के सम्बन्ध में शास्त्रकारों के अनुसार-ग्रहण के सूतक में और ग्रहणकाल में पारणा नहीं करनी चाहिए। ग्रहण समाप्त होने पर ही पारणा करनी चाहिए।

••• शनि की साढ़ेसाती, ढैय्या एवं सुवर्णादि पाया फल विचार-सं. २०७८ (सन् 2021-22 ई.) •••

वि. संवत् २०७६ मध्ये 24 जनवरी, 2020 ई. से '**मकर राशि**' में संचरणशील '**शनि देव**' आगामी वि. संवत् २०७८ (13 अप्रैल, 2021 ई. से 1 अप्रैल, 2022 ई. तक) में भी **मकर राशि** में ही संचरणशील रहेंगे।

ता. 23 मई, 2021 ई. को मकर राशि में ही **वक्री** होकर **11 अक्तूबर, 2021 ई.** से **मार्गी** अवस्था में संचार करेंगे।

ध्यान रहे ! शनि जब किसी जातक की जन्मकुण्डली में अशुभ स्थान में हो अथवा शनि पर सूर्य, मंगल आदि विरुद्ध ग्रहों की दृष्टि आदि हो, तथा गोचरवश वक्री होकर संचार करे तो शनि और भी अधिक क्रूर एवं अशुभ फलदायक बन जाते हैं, जबकि गुरु, शुक्र आदि सौम्य ग्रह स्व/मित्र राशि में वक्री होने पर और भी अधिक शुभ फल प्रदान करते हैं।

फलस्वरूप गोचरवश शनिदेव की वक्री अवस्था में संचार की समयावधि में जातक/जातिका को मानसिक व शारीरिक कष्ट, आर्थिक परेशानियां, रोगादि प्रकट होने लगते हैं। समाज में भी कहीं राजनीतिक टकराव, अव्यवस्था, अत्यधिक महँगाई, क्लिष्ट रोगों का फैलाव व भय, उपद्रव, हिंसक घटनाएँ, अस्थिरता, असन्तोष, बाढ़, दुर्भिक्ष, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोपों का भय एवं असुरक्षा का वातावरण बनता है।

क्या है शनि-साढ़ेसाती एवं ढैय्या ?

गोचरवश जब शनि किसी जातक की जन्म राशि (अथवा नाम-राशि) से **द्वादश, प्रथम या द्वितीय** स्थान में हो, तो शनि की प्रस्तुत गोचर स्थिति '**शनि-साढ़ेसाती**' कहलाती है। इसके प्रभावस्वरुप जातक/जातिका को मानसिक संताप, शारीरिक कष्ट, कलह-क्लेश, आर्थिक परेशानियां, आय कम व खर्च की अधिकता, रोग व शत्रु-भय, बनते कार्यों में विघ्न-बाधाएँ, सन्तान एवं परिवार सम्बन्धी परेशानियां उत्पन्न होती हैं। यथा-

राशौ द्वादशमूर्ध्नि जन्म हृदये पादौ, द्वितीये शनिः।
नाना-क्लेश करोति दुर्जन भयं पुत्रान् पशून् पीडयेत्॥

शनि प्रत्येक राशि में लगभग अढ़ाई वर्ष तक संचार करता है। शनि की वक्री-मार्गी गति के कारण अढ़ाई वर्षों के काल में न्यून-अधिकता भी होती रहती है। शनि जिस राशि पर संचरित होता है, उससे पहले (प्रथम), बारहवें और दूसरे (द्वितीय) भावों में स्थित राशियों को विशेषतः प्रभावित करता है। इसी को शनि की साढ़ेसाती (साढ़ेसात वर्षीय) कहा जाता है।

शनि की ढैय्या—गोचरवश शनि जब चन्द्रराशि (या नामराशि) से चौथे या आठवें स्थान पर संचार करता है, तब शनि की ढैय्या कहलाती है। यह भी शनि के किसी राशि संचार के अनुसार अढ़ाई वर्ष के लिए होती है। इसका प्रभाव भी अशुभ माना गया है-

"लघु कल्याणी (ढैय्या) प्रददाति वै रविसुतोः राशे चतुर्थाष्टमे,
व्याधिं बन्धु विरोधं विदेशगमनं, क्लेशं च चिन्ताधिकम्॥"

अर्थात् शनि की ढैय्या के प्रभावस्वरूप जातक/जातिका को वृथा-दौड़धूप, अनावश्यक खर्च, गुप्त चिन्ताएँ, रोग, शोक, कलह-क्लेश, धन-हानि, बन्धु-विरोध, कार्यों में विघ्न-बाधाओं एवं आर्थिक-उलझनों का सामना करना पड़ता है।

मकर राशिस्थ शनि-साढ़ेसाती एवं ढैय्या विचार

(13 अप्रैल, 2021 ई. से 1 अप्रैल, 2022 ई. तक)

✤ **साढ़ेसाती—धनु, मकर** व **कुम्भ** राशि वाले जातक/जातिकाओं को शनि-साढ़ेसाती का प्रभाव अभी बना रहेगा।

➥ *(i)* **धनु राशि** वाले जातक/जातिकाओं को साढ़ेसाती पाँव पर उतरती हुई अर्थात् अन्तिम चरण में होगी।

➥ *(ii)* मकर राशि वालों को शनि-साढ़ेसाती हृदय पर चढ़ती हुई अर्थात् मध्य अवस्था में होगी।

➥ *(iii)* कुम्भ राशि वालों को शनि-साढ़ेसाती सिर पर चढ़ती अर्थात् प्रारम्भिक अवस्था में होगी।

धनु एवं मकर राशि वालों को प्रारम्भ के अढ़ाई वर्ष तथा कुम्भ राशि वालों को अन्त के अढ़ाई वर्ष विशेषतः अशुभकारक रहते हैं।

✤ **शनि की ढैय्या**—मिथुन व तुला राशि वाले जातकों को शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव रहेगा।

शनि-साढ़ेसाती या ढैय्या का फल सभी कुण्डलियों में एक जैसा नहीं होता। यदि किसी कुण्डली में शनि त्रिकोणेश (1, 5 या 9वें) भावों का स्वामी होकर उच्चस्थ या मित्रक्षेत्री होकर शुभग्रह की दृष्टि में हो, तो शनि साढ़ेसाती या ढैय्या का अशुभ प्रभाव अपेक्षाकृत कम होगा। इसके अतिरिक्त ग्रहों की दशा-अन्तर्दशा शुभ एवं योगकारक ग्रहों से सम्बन्धित हो, तो भी शनि-साढ़ेसाती या ढैय्या का अशुभ प्रभाव कम होगा।

➥ किसी विशेष राशि पर शनि की साढ़ेसाती/ढैय्या का शुभाशुभ विचार करते समय, उस राशि पर से अन्य ग्रहों की स्थिति एवं दृष्टियों आदि का प्रभाव तथा सुवर्णादि पाया का विचार कर लेना चाहिए।

✤ **शनि पाया (पाद) विचार**—शनि देव के राशि प्रवेश के समय यदि चन्द्र 1, 6, 11वें भाव (स्थान) में हो तो **स्वर्ण-पाद** ; यदि 2, 5, 9वें भाव में हो तो **रजत-पाद** ; यदि 3, 7, 10वें भाव में हो तो ताम्रपाद तथा यदि चन्द्र 4, 8, 12वें भाव में हो तो **लौहपाद** होता है।

✤ **मकर राशिस्थ शनि में सुवर्णादि पाया फल विचार**—शनिदेव गतवर्ष 24 जनवरी, 2020 ई., शुक्रवार को मकर राशिस्थ चन्द्रमा कालीन ही मकर राशि में प्रवेश कर चुके हैं। तदनुसार मेषादि राशियों पर ताम्रादि पाया इस प्रकार से होगा-

(1) मेष, कर्क तथा वृश्चिक राशियों पर ताम्र-पाद (पाया) होने से शुभ फल प्राप्त होंगे। कार्य-व्यवसाय में लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क व पदोन्नति प्राप्त हो। उच्च-विद्या में सफलता, विवाह, सन्तान आदि पारिवारिक तथा आरोग्यादि सुखों की प्राप्ति, वाहन आदि सुख-सुविधाओं एवं च धन-सम्पदा की प्राप्ति होगी। देश-विदेश की यात्रा भी सम्भव होगी।

(2) वृष, कन्या तथा धनु राशियों पर रजतपाद शुभफल प्रदायक होगा। नौकरी में पदोन्नति, विदेशगमन तथा आकस्मिक धन लाभ होगा। गत किए गए प्रयासों में सफलता मिलेगी। आकस्मिक धन लाभ, उच्च-प्रतिष्ठा, भूमि-वाहनादि सम्बन्धी सुख, स्त्री-सन्तान आदि पारिवारिक सुखों की प्राप्ति होती है।

(3) मिथुन, तुला तथा कुम्भ राशियों पर लौहपाद होने से जातक को आर्थिक, घरेलु एवं व्यवसायिक परेशानियां/उलझनें अधिक होती हैं। व्यवसाय में विघ्न-बाधाएँ रहें, प्रयत्न करने पर भी लाभ कम व खर्च अधिक रहे। स्वास्थ्य में गड़बड़, तनाव एवं उलझनें बढ़ेंगी। दुर्घटना से चोटादि का भय रहता है।

(4) सिंह, मकर तथा **मीन** राशियों पर सुवर्ण-पाद रहने से इन राशि के जातकों को संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहे। पारिवारिक एवं व्यवसायिक उलझनें, आय सम्बन्धी चिन्ता बनी रहती है। शत्रु भय, शरीर कष्ट, क्लिष्ट रोग तथा मानसिक तनाव अधिक रहे। वृथा खर्च तथा भाई-बन्धुओं के साथ मन-मुटाव भी रहे।

कुण्डली में शनि संचार का फल—शनि के राशि-परिवर्तन होने पर मेषादि विभिन्न राशियों पर उसका प्रभाव भी अलग होताहै—

भ्रंशं क्लेशं च शत्रु प्रवृद्धिं पुत्रसौख्यं सौख्यवृद्धिं च दोषम्।
पीड़ा सौख्यं निर्धनत्वं धनाप्तिं नानानर्थं भानुसूनु–स्तनोति।।

अर्थात् गोचर में शनि जन्म-राशि से पहले स्थान में हो तो मानसिक व्यथा एवं स्थान-परिवर्तन, दूसरे में कलह-क्लेश, तीसरे में पराक्रम एवं सुख में वृद्धि, चौथे में शत्रु वृद्धि, पंचम में सन्तान सम्बन्धी दुःख, षष्ठ में सुख-साधनों में वृद्धि, सप्तम में रोग व शत्रु-भय, अष्टम में दुःख-पीड़ा, नवम में सुख, दशम में धन-हानि, एकादश में धन-लाभ तथा 12वें में शनि आए तो अनेक प्रकार के अनर्थ होते हैं।

✤ शनि का सामान्य गोचरफल—

पृथ्वीशाः क्रोधपूर्णाभवतिपथिभयं सर्वरोगाद्विनाश,
श्चिन्तास्थानं नृपाणां भवतिसति बलेसूर्यपुत्रेमृगस्थे।

अर्थात् मकर राशिस्थ शनि हो, तो सोना, चाँदी, ताम्बा, हाथी, घोड़े, बैल, सूत, कपास आदि के मूल्यों में बहुत अधिक तेजी बन जाती है। धान्य, अनाजादि का नाश अर्थात् फसलें नष्ट होंगी। राष्ट्राध्यक्ष (राजादि) क्रोधित रहें, विश्व के समृद्ध एवं सम्पन्न देशों के राजाओं को भी विश्वव्यापी एवं घरेलु परिस्थितियों के कारण चिन्ता लगी रहती है।

ता. 14 सितम्बर से 19 नवम्बर, 2021 ई. तक 'गुरु-शनि' योग रहने से भी विश्व में जन-समाज का विनाश और राजाओं के अन्नों का ह्रास होगा अर्थात् राजकीय भण्डारगार में अन्न संग्रह का अभाव होगा। यथा—

'एकनक्षत्रगा ह्येते तथा भयविवर्द्धनः, यदा जीवयुतो मन्दो.....।
तदा प्रजा विनश्यन्ति भूपाश्चान्नपरिक्षयाः।।'

तदनन्तर, 26 फरवरी, 2022 ई. से 15 अप्रैल, 2022 ई. तक मकर राशि में ही 'मंगल-शनि' योग भी विश्व में उग्र परिस्थितियों का द्योतक है। शास्त्रानुसार इस अवधि में पृथ्वी युद्ध से दुःखी तथा धन-धान्य से रहित होती है।

'कर्कमीनमृगस्त्रीषु शनिभौमो यदा स्थितौ।
तदा युद्धाकुला पृथ्वी धनधान्यविवर्जिता।।'

मकर राशिस्थ शनि का द्वादश राशियों पर गोचरफल-सं. २०७८

(13 अप्रैल, 2021 ई. से सम्वतान्त तक)

शनि का मकर राशि में गोचर फलादेश यद्यपि गतवर्षीय पंचांगदिवाकर में लिख चुके हैं, परन्तु वर्ष सन् 2021-22 ई. में मंगल, गुरु, राहु आदि ग्रहों का भी राशि-परिवर्तन होने से शनि के गोचरफल का भी न्यूनाधिक रूपेण अन्तर पड़ जाएगा।

✤ **मेष**—राशि से शनि दशमस्थ होने से व्यवसाय एवं गृह सम्बन्धी कठिन आर्थिक परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। परन्तु पाया ताम्र होने तथा 6 सितं. से 4 दिसं. तक इस राशि पर मंगल की स्वगृही दृष्टि रहने से विविध अड़चनों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 2 जून से 19 जुला. के मध्य शनि-मंगल मध्य **समसप्तक योग** रहने से गुप्त-चिन्ताएं एवं क्रोध रहे।

✤ **वृष**—राशि से शनि नवमस्थ रहने तथा वर्षभर राहु का संचार रहने से भाग्योन्नति में विघ्न-बाधाएं एवं विलम्ब उत्पन्न होंगे। खर्च अधिक, व्यापार में लाभ कम, निकटस्थ भाई-बन्धुओं/पति-पत्नी से मतान्तर हों। परन्तु पाया रजत होने तथा 4 से 28 मई के मध्य शुक्र स्वराशिगत होने से आत्म एवं संकल्पशक्ति प्रबल रहे तथा निज पुरुषार्थ के बल पर कार्यों में आंशिक सफलता प्राप्त होगी।

✤ **मिथुन**—राशि को अष्टमस्थ शनि (ढैय्या के कारण) अशुभफली होगा। लौहपाद भी अशुभकारक रहेगा। फलस्वरूप शरीर कष्ट, पारिवारिक उलझनें एवं खर्चों की अधिकता रहे। आर्थिक परेशानियां, घरेलू कलह-क्लेश तथा दौड़धूप अधिक रहे। कार्यसिद्धि में बाधाएं तथा अवांछित स्थान-परिवर्तन के योग हैं।

✤ **कर्क**—राशि से शनि सप्तमस्थ होने से शनि की अशुभ शत्रु दृष्टि वर्षभर रहेगी। जिससे आर्थिक परेशानियां, शरीर-कष्ट, गुप्त चिन्ताएं एवं व्यवसायिक उलझनें रहेंगी। मन क्रोधित एवं उचाट रहेगा। परन्तु इस राशि को शनि का ताम्रपाद रहने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

✤ **सिंह**—राशि से शनि षष्ठस्थ संचार करने से विषम परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। परन्तु शनि का पाया सुवर्ण रहने से घरेलु एवं आर्थिक

उलझनों के कारण गुप्त चिन्ताएं रहेंगी।

✤ **कन्या**—शनि पंचमस्थ होने से पूज्य होगा। उच्च-विद्या प्राप्ति में बाधाएं उत्पन्न हों। स्त्रीको कष्ट एवं सन्तान सम्बन्धी गुप्त चिन्ता हो। कार्यों में संघर्ष के बाद सफलता मिले। परन्तु शनि का पाया रजत होने तथा 14 सितं. से 19 नवं. तक गुरु की दृष्टि रहने से बीच-बीच में धन-लाभ, विदेश-गमन, भूमि-वाहनादि सुखों की भी प्राप्ति होगी।

✤ **तुला**—शनि की ढैय्या एवं पाया भी लोहा होने से अशुभ फल घटित होंगे। रोग एवं शत्रु-भय, पारिवारिक कलह, तनाव एवं वृथा खर्च भी रहेंगे। संवतारम्भ से 13 सितं. तक गुरु की दृष्टि के कारण भी मानसिक तनाव रहे। परन्तु धन लाभ के अवसर मिलते रहेंगे।

✤ **वृश्चिक**—राशि को शनि तृतीय होने तथा पाया ताम्र होने से धन-लाभ, मकान, वाहनादि सुख-सुविधाओं की प्राप्ति एवं पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। लाभ एवं उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परिवार में मंगल कार्य सम्पादित होने एवं शुभ कार्यों पर खर्च होने के योग बनेंगे। परन्तु केतु का संचार वर्षभर इस राशि पर रहने से कठिन चुनौतियों से भरा समय रहेगा। मानसिक चिन्ताएं एवं रोगादि से कष्ट रहे।

✤ **धनु**—शनि-साढ़ेसति के प्रभाव से आय कम व खर्च अधिक, व्यवसायिक एवं आर्थिक उलझनों के कारण मन अशान्त रहे। शनि का पाया रजत होने से उलझनों/परेशानियों के बावजूद धन लाभ एवं भूमि, वाहनादि सुखों की प्राप्ति होती रहेगी।

✤ **मकर**—राशि को लग्न भाव पर ही **शनि-साढ़ेसाती** होने से अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहे, बनते कार्यों में विघ्न, मानसिक तनाव, भाई-बन्धुओं से विरोध रहेगा। शनि का पाया भी सुवर्ण होने से निकट बन्धुओं से मतभेद पैदा हों। उत्तरार्द्ध में कुछ रुके हुए कार्यों में सफलता मिलेगी।

✤ **कुम्भ**—राशि से शनि द्वादशस्थ (**शनि-साढ़ेसाती**) होने से परिवार एवं व्यवसाय सम्बन्धी दौड़-धूप, वृथा परिश्रम एवं खर्च भी बहुत अधिक रहे। शनि का पाया भी लौह होने से मानसिक परेशानी, दुर्घटना से चोटादि का भय, निकट बन्धुओं से तनावपूर्ण सम्बन्ध रहें।

✤ **मीन**—राशि से शनि 11वें (लाभ) स्थान में होने से परिश्रम के बाद धन लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। तृतीय दृष्टि के कारण स्त्री, सन्तान एवं सवारी आदि की भी चिन्ता रहेगी। स्वास्थ्य कष्ट तथा शनि पाया भी सुवर्ण होने से धन लाभ मध्यम तथा खर्च अधिक होंगे।

शनि-साढ़ेसाती एवं ढैय्या सम्बन्धी विशेष उपाय

शनि साढ़ेसाती अथवा शनि ढैय्या का फल सदा अनिष्टकारी ही होगा-ऐसा आवश्यक नहीं। **ध्यान रहे**, शनि सभी राशियों पर एक जैसा प्रभाव नहीं करता है, बल्कि स्वराशि, उच्च-मित्रादि स्थिति से एवं शुभाशुभ दृष्टियों के प्रभावस्वरूप इसके फल में न्यूनाधिक अन्तर पड़ना भी सम्भव है। जन्मकुण्डली एवं नवांश में शनि की स्थिति अच्छी हो एवं जातक की ग्रह-दशा भी शुभ हो, तो शनि की साढ़ेसति या ढैय्या का अशुभ प्रभाव भी अपेक्षाकृत कुछ कम होगा। इसके अतिरिक्त वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर या कुम्भ राशि पर शनि की स्थिति या दृष्टि शुभ, लाभदायक एवं योगकारक भी हो सकती है। किसी विशेष राशि पर शनि साढ़ेसाती का विचार करते समय उस राशि पर अन्य ग्रहों की स्थिति, दृष्टि आदि का प्रभाव, सुवर्णादि पाया का अवश्य विचार करना चाहिए।

कुण्डली में शनि की स्थिति एवं दशाऽन्तर्दशा शुभ होने पर कार्य-व्यवहार व योजनाओं में सफलता, लाभ, व्यवसायिक विद्याओं में उन्नति, क्रय-विक्रय विशेपकर लोहे, तेल के कार्य-व्यवसाय में विशेष लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

शनि की दशाऽन्तर्दशा अथवा साढ़ेसाती अशुभ स्थिति में होने से व्यक्ति को विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। बच्चों का पढ़ाई में मन नहीं लगता अथवा परिश्रम करने पर भी सफलता प्राप्त नहीं होती। वह कुछ चिड़चिड़े स्वभाव का हो जाता है, उसके प्रत्येक कार्य में विघ्न पैदा होते हैं। निकट सहयोगी भी परायों जैसे व्यवहार करने लगते हैं। अतएव ऐसी स्थिति में जातक को शनि का पूजन, दान, मन्त्र-जाप तथा औषधि स्नान आदि करने से शनि के अरिष्ट की शान्ति होती है।

जन्म कुं. में शनि यदि अशुभ हो अथवा जन्म-नक्षत्र पर शनि का संचार हो, तो जातक/जातिका को वायु-विकार, त्वचा रोग, घुटनों में दर्द, उच्च या निम्न रक्तचाप आदि रोग होते हैं।

शनि प्रायः क्लिष्ट रोग एवं दुःख देकर दुष्ट-कर्मों का भुगतान करवाता है। शनि के अरिष्टकाल में कोई-न-कोई झंझट चलता रहता है। आर्थिक संकट एवं घरेलू कलह का भय होता है। वायु प्रकोप आदि शरीर कष्ट, मानसिक अशान्ति रहती है। अपने भी पराये होने लगते हैं। आय कम तथा खर्चों में अधिकता होने लगती है।

उपाय—शास्त्रों में प्रतिपादित उपायों को विधिपूर्वक करने से अवश्य लाभ पहुँचेगा।

(1) प्रत्येक शनिवार को शनि मन्त्र का संकल्पपूर्वक पाठ करें—

'ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः'

कम-से-कम 3 माला अवश्य करें। पाठ उपरान्त निम्न शनि स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा—

नमः कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठनिभाय च।
नमः कालाग्निरूपाय कृतान्ताय च वै नमः॥

(2) शनिवासरी अमावस्या हो, तो उस दिन सायं, सूर्यास्त के बाद शनि पूजन, मन्त्र-जाप एवं स्तोत्र पाठ करना विशेष लाभकारी होगा।

विधि—सायं सूर्यास्त के बाद, स्नानादि उपरान्त पश्चिम दिशा की ओर मुख करके काले रेशमी आसन (कम्बलादि) पर बैठ जाएँ। सामने स्टील की थाली में लगभग 100 ग्राम जौं, 100 ग्राम काले तिल, काले वर्ण के कुछ फूल, 1 मुट्ठी चावल, 5 साबुत सुपारी, मौली, धूपबत्ती, रोली, लाल चंदन, काली मिठाई जैसे-गुलाब जामुन भी रख लें।

स्टील की कटोरी में तेल सरसों का दीपक जलाकर रखें। सामने एक नारियल तिलक लगाकर, स्टील का लोटा शुद्ध जल भरकर रखें।

मन्त्र-जाप—ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः

मन्त्र की 1 या 3 माला करके उसे पूजन सामग्री के साथ बहते पानी में विसर्जित कर देवें।

(3) शनिवार को सुन्दरकाण्ड का पाठ या श्रवण करना शुभ होगा।

(4) श्रवण नक्षत्र में शनिवार के दिन काले रंग के धागे में शमी की अभिमंत्रित जड़ धारण करने से, शनि से सम्बन्धित वस्तुएं तथा तेल, लोहा, काले-तिल, कुलथी या काली मसूर की दाल, काला जूता, कस्तूरी आदि दान करने से भी शनि के अशुभ फल में कमी आती है।

(5) पक्षियों को दाना चुगाना, अपनी छाया (परछाई) देखकर शनिवार के दिन तेल का दान, महामृत्युञ्जय मंत्र का शुद्ध उच्चारण के साथ निष्ठापूर्वक जाप, निम्न शनि लघु स्तोत्र का पाठ तथा **'शनि वज्र-पञ्जर कवच'** का पाठ सर्वाधिक उपयुक्त माना गया है।

शनि साढ़ेसाती, ढैय्या एवं शनि पाया के अशुभफल के उपाय

शनि साढ़ेसाती, ढैय्या एवं शनि पाया के अशुभ फल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र की 23 हजार की संख्या में विधिपूर्वक जप करना, तदुपरान्त दशमांश संख्या में हवन करना या करवाना कल्याणकारी रहता है। शनिवार का व्रत रखना, उड़द, सप्तधान्यादि दान, कृष्ण वस्त्र, शिव उपासना, शनि स्तोत्र तथा शनि से सम्बन्धित अन्य वस्तुओं का दान करने से लाभ होता है। इसके अतिरिक्त शुभ मुहूर्त में नीलम एवं विधिपूर्वक निर्मित शनि यन्त्र धारण करना भी लाभप्रद रहता है।

शनि का बीज मन्त्र—*"ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।।"*

शनि का वैदिक मन्त्र—

"ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शं योरभिस्रवन्तु नः॥ शं नमः॥"

शनि लघु स्तोत्र—

"ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तुते॥
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते शौरये विभो॥
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥"

(धर्मसिन्धु)

प्रतिदिन प्रातःकाल भगवान शिव की पूजनोपरान्त पीपल वृक्ष के समीप इस स्तोत्र का पाठ करके कच्ची लस्सी में काले तिल डालकर वृक्ष के मूल में लस्सी चढ़ाना तथा सायंकाल को तैल का दीपक जलाकर प्रार्थना करने से शनि-जनित अरिष्टों की शान्ति होती है।

शनि सम्बन्धित अधिक उपायों एवं जानकारी के लिए पं. पन्ना लाल ज्योतिषी कृत **'अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय'** पुस्तक मंगवाकर पढ़ें। **मूल्य-200 रु.**

♣ गुरु का कुम्भ राशिस्थ गोचरफल-संवत् २०७८ ♣

गुरुदेव (बृहस्पति) गत वि. संवत् २०७७ मध्ये 5/6 अप्रैल, 2021 ई. की मध्यरात्रि 12 बजकर 23 मिनट पर (24:23) कुम्भ राशि में प्रवेश कर चुके हैं।

20 जून को वक्री होकर 14 सितम्बर, 2021 ई. को पुनः मकर राशि में प्रवेश कर, 18 अक्तूबर, 2021 ई. को मार्गी होकर 20 नवम्बर, 2021 ई. की रात्रि 23घं.-19मि. पर पुनः कुम्भ राशि में प्रवेश करेंगे, तथा संवतान्त 1 अप्रैल, 2022 ई. तक कुम्भ राशि में संचार करेंगे।

वक्री-मार्गी—गुरुदेव 20 जून, 2021 ई. से 17 अक्तूबर, 2021 ई. तक वक्री अवस्था में संचार करेंगे।

ध्यान रहे ! वक्री, अस्त एवं शीघ्रातिचार अवस्था में गुरु कुछ जातक/जातिकाओं को अशुभ फलप्रदायक होता है। ता. 20 जून से 17 अक्तूबर, 2021 ई. तक गुरु वक्री रहने तथा लगभग 9 जनवरी, 2022 ई. से संवतान्त 1 अप्रैल, 2022 ई. तक अतिचार गति से संचार करने से दुर्भिक्ष एवं अराजकता का माहौल बनेगा। प्रशासकों, केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों को उपद्रव, हिंसा, आन्दोलनादि का सामना करना पड़े। प्रजा में अशान्ति व भय व्याप्त हो।

यदा सौम्यग्रहकोपि अतिचारोपजायते।
दुर्भिक्षं नृपपीडा च शुभं न दृश्यते क्वचित्॥

कहीं सत्ता-परिवर्तन तथा प्रजा में असन्तोष व्याप्त रहे। सत्तारूढ़ सरकार को भी कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़े। अतः इस समयावधि में गुरु प्रभावित जातकों को मानसिक तनाव तथा सोची हुई योजनाएं पूर्ण होने में विलम्ब उत्पन्न हों।

मकर राशि—ता. 14 सितम्बर से 19 नवंबर, 2021 ई. तक गुरु मकर राशि में रहने से कुछ देशों में विध्वंसक युद्ध सम्भव हो तथा चावल, जौं, घी आदि सभी अनाज महँगे होंगे। कहीं सत्ता-परिवर्तन, चाँदी विशेष रुप से महंगी होगी। विभिन्न राष्ट्राध्यक्षों के मध्य युद्धजन्य वातावरण रहेगा। **देशग्रामपुरादीनांविध्वंसो युद्धसंभवः।**
शालयोयवगोधूमा महर्घाः स्युस्तथारसाः॥

कुम्भ राशि—6 अप्रैल, 2021 ई. से 13 सितम्बर, 2021 ई. तक, पुनः 20 नवंबर, 2021 ई. से संवतान्त 1 अप्रैल, 2022 ई. तक कुम्भ राशि में संचार करने से वर्षा की कमी अनुभव होगी, प्रतिकूल तथा बेमौसमी वर्षा, आँधी-तूफान आने से खड़ी फसलों को हानि होगी तथा कुछ क्षेत्रों में अकालजन्य परिस्थितियां बनेगी। पूर्वी क्षेत्रों तथा देशों में अनाजादि के भावों में अत्यधिक वृद्धि होगी– **कुम्भराशिगतेजीवे मेघः स्वल्पांबुवर्षति।**
कृषिनाशं च दुर्भिक्षं पूर्वदेशे महर्घता॥

नोट—ता. 14 सितम्बर से 19 नवम्बर, 2021 ई. को मध्य गुरु मकर राशि में संचार करेगा। मकर राशिस्थ गुरु का संचार फल (गोचरफल) हम गतवर्षीय वि. संवत् २०७७ के पंचांगदिवाकर में लिख चुके हैं। पाठक गतवर्षीय पंचांग का अवलोकन करें।

विशेष ध्यातव्य—कुम्भ राशि पर संचार के समय गुरु की मिथुन तथा तुला राशि पर शत्रु दृष्टि रहेगी, जबकि सिंह राशि पर मित्र दृष्टि रहेगी। फलस्वरूप सिंह राशि वाले जातकों को उच्च-विद्या, कम्पीटीशन आदि में सफलता, विवाह व सन्तान सम्बन्धी सुख, विदेश यात्रा योग, धन-सम्पदा की प्राप्ति, भाग्योन्नति, उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क, धार्मिक कार्यों में रूचि आदि अन्य शुभ फल भी घटित होने की सम्भावनाएँ होंगी। परन्तु मिथुन व तुला राशि वाले जातकों को इस अवधि में (6 अप्रैल से 13 सितम्बर, 2021 ई., पुनः 20 नवम्बर, 2021 ई. से सम्वतान्त तक) व्यर्थ की भागदौड़, विद्या/कम्पीटीशन में यथेष्ठ या मनोऽनुकूल सफलता न प्राप्त होना, शत्रुओं द्वारा प्रताड़ना तथा अनेक मानसिक कष्ट आदि अशुभफल भी घटित हो सकते हैं। तदनुसार गुरु शान्ति हेतु मन्त्र जप, दान आदि करना शुभ एवं कल्याणकारी रहेगा।

♣ कुम्भ राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल-सं. २०७८ ♣

[6 अप्रैल से 13 सितम्बर, 2021 ई. तक, पुनः 20 नवम्बर, 2021 ई. से संवतान्त 1 अप्रैल, 2022 ई. तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
धन-सम्पदा व सवारी आदि का सुख हो, भाग्य में उन्नति, प्रिय-मिलन, व्यय अधिक, भूमि-वाहनादि सुखों की प्राप्ति विघ्नों के बाद होगी।	दशमस्थ गुरु होने से कार्य-व्यवसाय में रुकावटों के बाद धन प्राप्ति, आय कम, खर्च अधिक, तनाव के कारण स्वास्थ्य खराब रहे, परिवार में कलह-क्लेश हो।	गुरु भाग्यस्थ होने से बिगड़े कार्यों में कुछ सुधार, भूमि-वाहनादि का सुख मिले, किसी प्रिय-बन्धु से मिलाप, सन्तान सम्बन्धी सुख।	अष्टमस्थ गुरु होने से आय कम व खर्च अधिक हों, ऋण व रोग का भय, घरेलु उलझनें बढ़ेंगी। व्यर्थ यात्रा व तनाव बढ़े।	सप्तम गुरु होने से विघ्नों के बाद कार्य-सिद्धि, धन-लाभ, भाग्य में उन्नति के योग हैं। तीर्थ-यात्रा का विचार बने। वाहन-सुख भी प्राप्त हो।	छटे गुरु होने से आय कम व खर्च अधिक रहें। ऋण, रोग एवं गुप्त शत्रुओं का भय रहे, निकट बन्धु से वृथा तकरार हो व तनाव बढ़े।	पंचमस्थ गुरु होने से भूमि, वाहनादि की प्राप्ति, उच्च विद्या में सफलता, विवाहादि सुखों की प्राप्ति, श्रेष्ठजनों के सम्पर्क से लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे।	चतुर्थस्थ गुरु होने से साधनों में वृद्धि परन्तु सुख में कमी हो, तनाव व अशान्ति बढ़े, वाहन से चोटादि का भय, गृह में कलह-क्लेश हो।	तृतीयस्थ गुरु होने से धन लाभ अच्छा परन्तु आकस्मिक खर्च हो, निकटस्थ भाई-बन्धु को शरीर कष्ट, घरेलु उलझनें परन्तु स्त्री सुख यथेष्ठ रहे।	धन लाभ, शुभ कार्यों पर खर्च, उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से मेल, दीर्घ यात्रा के योग, धार्मिक कार्यों की ओर प्रवृत्ति बढ़े।	लग्नस्थ गुरु पूज्य होने से संघर्ष एवं उलझनों के बावजूद निर्वाह योग्य धन लाभ एवं कार्य प्रशस्त होंगे, परन्तु खर्चों में अधिकता, परिवार में कलह-क्लेश रहे।	द्वादश गुरु होने से आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। बनते कार्यों में विघ्न, घरेलु व व्यवसायिक उलझनों से तनाव हो, परन्तु धर्म कार्यों में प्रवृत्ति, शुभ कार्यों पर खर्च होंगे।

गुरु का कारकत्व—गुरु पति-सुख, धर्म-आध्यात्म, सन्तान, पुत्र, विद्या, विवेक-बुद्धि, बड़ा भाई, सुवर्ण, ज्योतिष आदि विद्याओं का कारक माना जाता है। शरीर में लिवर, हृदयकोश, पाचन प्रक्रिया, कान आदि का भी कारक माना जाता है। कुण्डली में गुरु अशुभ हो अथवा अशुभ ग्रह द्वारा दृष्ट या युक्त हो, तो गुरु सम्बन्धित सुख में कमी करता है। अधिक जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से छपी 'ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) भाग-1' में गोचर विचार पढ़ना चाहिए।

गुरु के अशुभ फल की शान्ति के लिए दान—गुरु की शुभता बढ़ाने के लिए वृद्ध ब्राह्मण को भोजन कराना, गुरुवासरी अमावस्या तथा गुरुवार का व्रत रखना, पुखराज धारण करना, पीले वस्त्र, चने की दाल, कांस्य पात्र, सुवर्ण, शक्कर, केले, लड्डुओं, धार्मिक ग्रन्थ आदि का दान यथाशक्ति करने तथा गुरु के बीज मन्त्र अथवा गुरु गायत्री मंत्र का जाप 19,000 की संख्या में विधिपूर्वक करना शुभ एवं फलदायक रहेगा। गुरु धनु और मीन राशि का स्वामी है। पति सौख्य की प्राप्ति के लिए स्त्रियों को गुरु के बीज मंत्र, बृहस्पति अष्टोत्तर शतनाम, बृहस्पतिवार का व्रत, पुखराज धारण तथा यथाशक्ति दान करना लाभदायक रहता है। प्रत्येक गुरुवार केसर का तिलक भी लगाना चाहिए।

बृहस्पति शान्ति हेतु स्नान योग्य वस्तुएँ—गुरु की अनिष्ट शान्ति (वैवाहिक विलम्ब, विद्या प्राप्ति, पदोन्नति में बाधाएं, पितृदोष आदि दूर करने हेतु) के लिए चमेली पुष्प, पीली सरसों, शहद, गुलर, दमयन्ती, मुलट्ठी, हरिद्रा, मालती पुष्प, सुगन्धबाला, श्वेत आक के नवीन पत्ते एवं गंगाजल आदि स्नान-औषधियों में से यदि कोई वस्तु प्राप्त न हो सके, तो जितनी प्राप्त हो, उन्हीं से स्नान करना चाहिए।

विशेष—औषध-स्नान के दिन साबुन, शैम्पू आदि को लगाने से पूरी तरह परहेज़ करना चाहिए। सभी गुरु-औषधि को गंगाजल में मिश्रित शुद्ध जल डालकर पूर्वाभिमुख होकर गुरु के बीजमंत्र से मंत्रपूर्वक स्नान करने से गुरु कृत अनिष्ट प्रभाव से निवृत्ति होती है। औषध स्नान के उपरान्त गुरु के बीज मंत्र का कम-से-कम 3 माला का जप (जप में हरिद्रा की माला या रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करना) करके ब्राह्मण-दम्पत्ति को मीठा भोजन, पीले वस्त्र एवं अन्य गुरु से सम्बन्धित वस्तुओं का दान दक्षिणा सहित करना चाहिए।

गुरु गायत्री मन्त्र—

''ॐ अंगिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।।''

गुरु बीज मन्त्र—''ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।।''

गुरु का वैदिक मन्त्र—ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।। (जप संख्या १९०००)

पुराणोक्त गुरु मन्त्र— ॐ देवानां च मुनीनां च गुरु कांचनसंनिभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

♣ मन्त्र प्रयोग विधि तथा गुरु सम्बन्धी अन्य उपयोगी उपाय व टोटके जानने के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित पुस्तक ''**अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय व टोटके**'' मंगवाकर पढ़ें। मूल्य-200/- रु.

राहु-केतु का शुभाशुभ गोचरफल-वि. संवत् २०७८

गत वि. संवत् २०७७ मध्ये ता. 23 सितम्बर, 2020 ई. को दोपहर 12घं.-52मिं. से राहु वृष राशि में तथा केतु वृश्चिक राशि में प्रवेश कर चुके हैं। यद्यपि वृष राशिस्थ राहु तथा वृश्चिक राशिस्थ केतु का गोचरफल (संचारफल) गतवर्षीय पंचांगदिवाकर में (पृष्ठ 46) लिख चुके हैं, पुनः पाठकों की सुविधार्थ लिख रहे हैं–

✤ वृष राशिस्थ राहु का गोचरफल-सं. २०७८ ✤

[संवतारम्भ से संवतान्त 1 अप्रैल, 2022 ई. तक के लिए]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घरेलु व व्यवसाय में तनावपूर्ण परिस्थितियां रहें, वृथा खर्च बढ़ें, शरीर कष्ट, रोग व मानसिक परेशानियां रहें, ऋण न लें तथा न ही दें।	निकट बन्धुओं से विरोध, बनते कार्यों में अड़चनें, रोग व शत्रु-भय, खर्चों में वृद्धि, परन्तु अचानक धन प्राप्ति भी हो।	बनते कार्यों में विघ्न, वृथा दौड़-धूप व खर्च अधिक एवं अकस्मात खर्चे होंगे। मन अशांत रहे।	कुछ बिगड़े कामों में सुधार, भूमि-वाहनादि सुख प्राप्ति, धन-लाभ, विदेश यात्रा के योग हैं।	वृथा दौड़-धूप अधिक रहे, बनते कार्यों में अड़चनें, घरेलु उलझनों से मन अशान्त रहे।	घरेलु उलझनों के बावजूद गुज़ारे योग्य आय के साधन बनेंगे, निज बन्धु से विरोध, वाहनादि सुखों की प्राप्ति	लाभ कम, खर्च अधिक हो, शरीर कष्ट व मित्रों से विरोध हो, अपने भी परयों जैसा व्यवहार करें।	बनते कार्यों में बाधाएं, धन-लाभ कम, खर्च अधिक रहे, तनाव भी रहे, विशेष-कर पति/पत्नी में।	अचानक धन लाभ, प्रिय-बन्धु से मेल, कार्य-व्यवसाय में सफलता मिले, शुभ यात्रा एवं परिवार से मेल-मिलाप हो।	निकटस्थ संबंधी से कलह-क्लेश, रोग व शत्रु भय, खर्च व चिंता बढ़े, संतान/विद्या संबंधी कार्यों में विघ्न।	किसी बन्धु से क्लेश, लाभ-कम व खर्चों में वृद्धि हो, वृथा दौड़-धूप बढ़े। व्यवसाय में संघर्ष रहे।	पराक्रम व उत्साह में वृद्धि, शुभ यात्रा, धन लाभ व पदोन्नति के अवसर बनेंगे। विदेश यात्रा की योजना भी बने।

✤ वृश्चिक राशिस्थ केतु का गोचरफल-वि. सं. २०७८ ✤

[संवतारम्भ से संवतान्त 1 अप्रैल, 2022 ई. तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
धन-हानि, रोग व शत्रु भय, विद्या में विघ्न, परिवार व सेहत संबंधी चिन्ता, खर्च अधिक रहें।	स्त्री व पारिवारिक चिंता, किसी से वैमनस्य, निकटस्थ से धोखा मिलने का भय है।	निज पराक्रम से धन लाभ हो, बिगड़े कार्यों में सुधार, शुभ समाचार मिले।	घरेलु कलह-क्लेश से मन अशांत व परेशान, लाभ कम व खर्च अधिक, संतान संबंधी चिंता रहे।	आर्थिक परेशानियों के कारण घरेलु झंझट व अशांति रहे। गुज़ारे योग्य आय ही होगी।	आशा-अनुकूल सफलता, बिगड़े हुए कार्यों में नुकसान होने का भय रहे। शरीर कष्ट व तनाव बढ़ें।	वृथा दौड़-धूप अधिक हो, लाभ कम, खर्च अधिक व नुकसान होने का भय रहे। शरीर कष्ट व तनाव बढ़ें।	आर्थिक परेशानी, बनते कार्यों में विघ्न व शरीर कष्ट, तनाव रहे। खर्च अधिक हों।	रोग-शोक व शत्रु भय, अपने भी परायों जैसा व्यवहार रखें, खर्च अधिक व गुप्त परेशानी रहे।	भूमि-वाहनादि भौतिक सुख-साधनों में वृद्धि, यश-लाभ, धन लाभ साधारण, परन्तु संघर्ष भी रहे।	पुरुषार्थ में वृद्धि, कोई मंगल कार्य हो, लाभ की अपेक्षा खर्च अधिक रहे, विदेश यात्रा का योग बने।	धन लाभ अल्प, आराम कम, संघर्ष अधिक, दुर्घटना से चोटादि का भय, वाहनादि पर खर्च हो।

अनिष्ट राहु की शान्ति हेतु तिल, तेल, भूरे रंग का वस्त्र, कम्बल, नारियल, सप्तधान्य, सतनाजा, कृष्ण पुष्प आदि का दक्षिणा सहित दान करना कल्याणकारी रहता है। जन्मपत्री अनुशीलन के बाद गोमेध भी धारण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त राहु के बीज मन्त्र '**ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः**' का 18 हज़ार की संख्या में जाप करें। गजेन्द्र मोक्ष स्तोत्र का पाठ भी शुभ है। राहु का गायत्री मन्त्र-**ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥**

केतु के अरिष्ट की शान्ति हेतु लोहा, सप्तधान्य, लाल-काला वस्त्र, नारियल, कम्बल, कस्तूरी, बेल, कुष्ठाश्रम आदि में भोजन, क्षीर का दान तथा जन्मपत्री विश्लेषण के पश्चात् लहसनिया नग धारण करना कल्याणकारी रहता है। केतु के बीज मन्त्र '**ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः**' की 17 हज़ार की संख्या में जाप करना तथा संकटनाशक श्रीगणेश स्तोत्र एवं अपराजिता स्तोत्र का पाठ करना शुभ है। केतु की शान्ति के लिए गायत्री मन्त्र-

ॐ पद्म पुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतुः प्रचोदयात्॥

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के सम्बन्ध में और अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी प्रकाशित पुस्तक **अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय/टोटके** मँगवाकर पढ़ें। **मूल्य-200/-**

नक्षत्रानुसार पाया फल जानना

✱ आर्द्रा, पुर्न., पुष्य, अश्ले., मघा, पू.फा., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वाती-इन दश नक्षत्रों के मध्य किसी जातक का जन्म हो, तो चान्दी का पाया।

✱ विशा., अनु., ज्ये., मूल, पू.षा., उ.षा., श्रवण, धनि., शतभिषा के मध्य जन्म हो, तो ताम्बे का पाया।

✱ रेवती, अश्वि, भर., कृति, रोह, मृग = सोना (सुवर्ण)

✱ पू.भा., उ.भा. = लौह पाया

आर्द्रा दश रूपाणां, विशाखा नवताम्रका। रेवती षट् हेमश्च, शेषा द्वौ लौह-प्रकीर्तिता॥

चान्दी एवं ताम्र के पाया शुभ एवं लाभदायक तथा सुवर्ण एवं लौह के पाया धन हानि एवं कष्टकारी फल देते हैं।

कुछ विद्वानों एवं मुहूर्त ग्रन्थों अनुसार जन्म-राशि से चन्द्रस्थिति तक गणना करने पर विभिन्न स्थानों के अनुसार चन्द्रमा के सुवर्णादि पाद का विचार किया जाता है। यथा-

स्थान	१,६,११	२,५,९	३,७,१०	४,८,१२
चन्द्रपाद	स्वर्ण	रजत	ताम्र	लौह
फल	सौभाग्य	शुभत्व	दारिद्रय	मृत्यु

जन्मराशि से इन्हीं स्थानों पर अन्य ग्रहों के भी चरणों का विचार किया जाता है परन्तु फल भिन्न-भिन्न रहता है-"**सौरी लोहे शुभः प्रोक्तो हेमपादे च वै गुरुः। रजते चंद्रशुक्रौ च, ग्रहाश्चान्ये च ताम्रके॥**"

अर्थात् शनि का लौह पाद, बृहस्पति का सुवर्णपाद, चंद्र-शुक्र का रजत पाद तथा अन्य ग्रहों (सू.मं.बु.रा.के.) के ताम्र पाद श्रेष्ठ होते हैं।

होमादि में अग्निवास एवं फल जानना

जिस दिन को हवन करना हो, उस दिन तात्कालिक तिथि और वार सँख्या में 1 जोड़कर 4 द्वारा भाग देवें। भाग देने पर यदि **शेष 3 या शून्य (0) बचे**, तो उस दिन अग्नि का वास **पृथिवी पर** जानें, शेष 1 बचे तो अग्नि का वास **आकाश** में तथा तिथि, यदि शेष **2** बचें तो अग्नि का वास **पाताल** में जानना चाहिए। **पृथिवी** पर **अग्नि** का वास शुभ एवं कल्याणकारक होता है। आकाश में वास हो तो आयु का क्षय तथा पाताल में वास हो तो धन की हानि होती है। वार की गणना रविवार से तथा तिथि की गणना शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से करनी चाहिए। अग्निवास चक्र के पश्चात् गत पृष्ठों में दिए गए ग्रह मुख में आहुति चक्र का विचार करना चाहिए। **–पं. पन्ना लाल ज्यो.**

अग्निवास एवं फल जानने का चक्र (शुक्ल-पक्ष)

शुक्ल पक्ष तिथि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
१	3 पृथ्वी (लाभ)	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
२	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
३	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी क्षय	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
४	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
५	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
६	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
७	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
८	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
९	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
१०	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
११	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
१२	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
१३	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
१४	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
१५	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ

अग्निवास एवं फल जानने का चक्र (कृष्ण-पक्ष)

कृष्ण पक्ष तिथि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
१	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
२	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
३	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
४	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
५	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
६	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
७	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
८	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
९	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
१०	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
११	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
१२	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
१३	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
१४	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
१५	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि

सूर्यादि ग्रहों के अनिष्टफल की शान्ति हेतु दान एवं जपादि मन्त्र

													जप संख्या	जपकाल	जपनीय बीजमन्त्राः	हवन समिधा
सूर्य	कनक	माणिक्य	तांबा	सोना	लाल गाय	गुड़	घी	कमलादि	रक्तवस्त्र	लालचंदन	मूंगा	केशर	७०००	सूर्योदय	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	आक् काष्ठ
चन्द्र	चावल	मोती	चांदी	सोना	श्वेत बैल	मिश्री	दही	श्वेत पुष्प	श्वेतवस्त्र	श्वेतचंदन	शंख	कपूर	११०००	संध्याकाले	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	पलाश
मंगल	मसूर	मूंगा	तांबा	सोना	लाल बैल	गुड़	घी	लाल कनेर	लालवस्त्र	लाल चंदन	केशर	कस्तूरी	१००००	सू.उ. २।१५	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	खैर
बुध	मूंग	पन्ना	कांस्य	सोना	शस्त्र	शक्कर	घी	सर्व रंग पु.	हरावस्त्र	अनेक फल	हाथीदांत	कपूर	९०००	सू.उ. ५ घड़ी	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	अपामार्ग
गुरू	पीतधान्य	पुखराज	कांस्यपात्र	सोना	अश्व	लवण श	घी	पीले पुष्प	पीतवस्त्र	पीला फल	धर्मग्रंथ	लवणशहद	१९०००	संध्याकाले	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	पीपल
शुक्र	चावल	हीरा	चांदी	सोना	श्वेत घोड़ा	मिसरी	दूध	श्वेत पुष्प	सफेदवस्त्र	सफेद चंदन	दही	सुगन्धित द्रव्य	१६०००	सू. उ. काल	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	गूलर
शनि	उड़द	नीलम	लोहा	सोना	काली गाय	कुलथी	तैल	काले पुष्प	कालावस्त्र	काले जूते	भैंस	कस्तूरी	२३०००	संध्याकाल	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	शमी
राहु	सप्तधान्य	गोमेद	सीसा	सोना	काला घोड़ा	ताम्र पात्र	तैल	कृष्ण पुष्प	नीलवस्त्र	नारियल	कंबल	खड्ग	१८०००	रात्रि	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	दूर्वा
केतु	सप्तधान्य	लसनिया	लोहा	सोना	बकरा	नारियल	तेल	धूम्र पुष्प	कालावस्त्र	शस्त्र ध्वज	कंबल	कस्तूरी	१७०००	रात्रि	ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः	कुशा
मुंथा	चावल	मोती	कांस्यपात्र	सोना	श्वेतचंदन	ऋतुपुष्प	घृत	श्वेतपुष्प	श्वेतवस्त्र	हाथीदांत	मुंथेश ग्रह.	ग्रह अनुसार	मुंथेश ग्रहानुसार	प्रातः	मुन्था स्वामी मन्त्र	

विशेष–ध्यान रहे, प्रत्येक ग्रह के दान के साथ यथाशक्ति दक्षिणा भी अवश्य देनी चाहिए। **सप्तधान्य**–गेहूँ, उड़द, मूंगी, चने, जौं, कंगनी और धान्य, चावल।

सूर्यादि ग्रहों के अरिष्ट निवारण हेतु औषधि स्नान

सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनःशिला	पंचगव्य	बिल्व छाल	गोबर	चमेलीपुष्प	पिपरामूल	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गोदूध	लाल पुष्प	अक्षत	पुष्प	जायफल	सूरमा	तारपीन	तारपीन
देवदारू	गोबर	हींग	मोती	श्वेत सरसों	केशर	लोबान	मोथा	तिलपत्र
केशर	गजमद	गोदनी	शहद	शहद	मूली बीज	सौंफ	गजदंत	गजदंत
खस	शंख सीप	जटामांसी	सुवर्ण	गुलर	मनःशिल	खस	कस्तूरी	छागमूत्र
रक्तपुष्प	गंगाजल	मौलसिरी	जायफल	दमयंती	इलायची	खिल्ला	बिल्वपत्र	लाल चंदन
रक्तचंदन	श्वेत चंदन	सिगरफ	पिपरामूल	मुलट्ठी	श्वेतचंदन	शतकुसुम	गंगाजल	गंगाजल
कनेर पुष्प	स्फटिक	मालकंगनी	नागकेशर	नवीनपत्ते	गंगाजल	गाँदमिश्रित	लालचंदन	कस्तूरी
मि. गंगाजल	गोमूत्र	गंगाजल	गंगाजल	गंगाजल	श्वेतकमल			

होमादि में अग्नि वास जानना

जिस दिन को होम/हवन करना हो, उस दिन की तिथि और वार की संख्या को जोड़कर १ जमा करें फिर कुल जोड़ को ४ द्वारा भाग देवें। यदि शेष शून्य (०) अथवा ३ बचें, तो अग्नि का वास पृथ्वी पर होगा। इस दिन होम करना कल्याणकारक होता है। यदि शेष २ बचें तो अग्नि का वास पाताल में होता है। इसी दिन होम करने से धन का नुकसान होता है। यदि ४ का भाग देने से १ शेष बचे तो आकाश में अग्नि का वास होगा, इसमें होम करने से आयु का क्षय होता है। वार की गणना रविवार से तथा तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से करनी चाहिए। तदुपरान्त ग्रह के मुख आहुति चक्र का विचार करना चाहिए।

ग्रहों के मुख में आहुति चक्र

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने से यदि ३ या ३ से कम की संख्या आए तो होमाहुति सूर्य के मुख में जाने, तीन से आगे की संख्या से ६ तक की संख्या में मिले, तो बुध के मुख में आहुति जानें। इसी प्रकार, निम्न क्रमानुसार सब ग्रहों में होमाहुति जानें।

ग्रह	सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चंद्र	मंग.	गुरु	राहु	केतु
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फल	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

नवग्रहों के जपनीय होमार्थ (हवन) मन्त्र

सूर्य मन्त्र–अर्क (आक) समिधा द्वारा "ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम॥१॥

चन्द्रमा मन्त्र–(पलाश या ढाक समिधा के साथ)–"ॐ इमं देवाऽसपत्न Ω सुवध्वम् महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां Ω राजा। ॐ सोमाय स्वाहा॥ इदं चन्द्रमसे न मम॥२॥

भौम मन्त्र–(खैर की लकड़ी से) "ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा Ω रेता Ω सि जिन्वति स्वाहा। ॐ भौमाय स्वाहा॥ इदं भौमाय इदं न मम॥"

बुध मंत्र–(अपामार्ग की समिधा से) ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्वमिष्टापूर्ते स Ω सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥ ॐ बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय इदं न मम॥

गुरू मन्त्र–(पीपल) ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ बृहस्पतये स्वाहा॥ इदं बृहस्पतये, इदं न मम।

शुक्र मन्त्र–(गूलर) ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः। सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं पिवानं Ω शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥ ॐ शुक्राय स्वाहा॥ इदं शुक्राय, न मम।

शनि मन्त्र–(शमी की समिधा) ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः। ॐ शनैश्चराय स्वाहा। इदं शनैश्चराय, इदं न मम्॥

राहु मन्त्र–(दूर्वा) ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ ॐ राहवे स्वाहा॥ इदं राहवे इदं न मम॥

केतु मन्त्र–(कुशा से) ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजा यथाः। [illegible] स्वाहा॥ इदं केतवे, इदं न मम॥

ग्रहों के गुण, वर्ण, स्वभाव, उच्च–नीच, स्व–गृही राशि आदि चक्र

नाम ग्रह	स्व-ग्रही राशि	मूल त्रिकोण	गुण	चरादि	वर्ण जाति	रंग	उच्च राशि	नीच राशि	पुरुष स्त्री	तत्त्व	कारक	संबंध	स्व-भाव	प्रकृति	धातु	रस	शरीरांग	दिशा	दृष्टि विशेष	भाग्योदय काल
सूर्य Sun	सिंह	सिंह	सत्त्व	स्थिर	क्षत्रिय	रक्त वर्ण	मेष	तुला	पुरुष	अग्नि	आत्मा	पिता	क्रूर	पित्त	सोना	तिक्त	शिर, नेत्र	पूर्व	७	२२ से २४
चन्द्र Moon	कर्क	वृष	सत्त्व	चंचल	वैश्य	श्वेत	वृष	वृश्चि.	स्त्री	जल	मन	माता	सौम्य	वातश्ले	चांदी	क्षार	बुद्धि, रक्त	पशि. उत्तर	७	२४ से २५
मंगल Mars	मेष, वृश्चिक	मेष	तम	चर	क्षत्रिय	लाल	मकर	कर्क	पुरूष	अग्नि	बल	भाई	क्रूर	पित्त	ताम्र	कटु	मज्जा	दक्षिण	७,४,८	२८ से ३२
बुध Merc	मिथुन, कन्या	कन्या	रज	द्विस्वभा	वैश्य	हरा	कन्या	मीन	नपुंसक	पृथ्वी	वाणी	बंधु/मित्र	मिश्र	त्रिधातु	कांस्य	मिश्र	त्वचा, मुख	उत्तर	७	३२ से ३६
गुरू Jup.	धनु, मीन	धनु	सत्त्व	स्थिर	ब्राह्मण	पीला	कर्क	मकर	पुरूष	आकाश	विद्या	संतान	शुभ	कफ	सोना	मधुर	चर्बी	ईशान	५७९	१६ से २४
शुक्र Ven.	वृष, तुला	तुला	रज	चर	वैश्य	सफेद	मीन	कन्या	स्त्री	जल	काम	स्त्री	शुभ	वात, कफ	चांदी	अम्ल	वीर्य	दक्षि., पूर्व	७	२६ से २८
शनि Sat.	मकर, कुम्भ	कुम्भ	तम	स्थिर	शुद्र	नीला काला	तुला	मेष	नपुंसक	वायु	संघर्ष	भृत्य	क्रूर	वात, श्ले	लोहा	कषाय	स्नायु	पश्चि.	३,७,१०	३६ से ४२
राहु Rahu	कन्या	कर्क	तम	चर	अत्यज	धूम्र	वृष	वृश्चि.	पुरुष	छाया	दु:ख	शत्रु	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	हड्डी	दक्षिण	७	४४ से ५०
केतु Ketu	मीन	मकर	तम	चर	शूद्र	धूम्र	वृश्चि.	वृष	पुरुष	छाया	कष्ट	बाधा	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	चर्म	उत्तर	७	४८ से ५०

राशियों के गुण–स्वभाव तत्त्व, शुभ रत्नादि चक्र

राशि	स्वा. ग्रह	अंग्रेज़ी नाम	वर्ण	जाति	क्रूरादि	चरादि	तत्त्व	गुण	जीवादि	समादि	दिशा	शुभ रत्न	बल समय	शरीरांग	दीर्घादि	नरादि	प्रकृति	गुण	पृष्ठोदय आदि
मेष	मंगल	Aries	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	चर	अग्नि	रज	धातु	विषम	पूर्व	मूंगा	रात्रि	शिर	ह्रस्व	पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
वृष	शुक्र	Taurus	श्वेत	वैश्य	सौम्य	स्थिर	पृथ्वी	तम	मूल	सम	दक्षिण	हीरा	रात्रि	नेत्र	ह्रस्व	पशु	वात	शांत	पृष्ठोदय
मिथुन	बुध	Gemini	हरा	शूद्र	क्रूर	द्वि. स्व.	वायु	सत	जीव	विषम	पश्चि.	पन्ना	रात्रि	भुजाएँ, गला	सम	नर	वात	चंचल	शीर्षोदय
कर्क	चंद्र	Cancer	श्वेत	विप्र	सौम्य	चर	जल	रज	धातु	सम	उत्तर	मोती	रात्रि	वक्ष, फेफड़े	सम	जल चर	कफ	शांत	पृष्ठोदय
सिंह	सूर्य	Leo	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	स्थिर	अग्नि	तम	मूल	विषम	पूर्व	माणक	दिन	मेरू, रक्त, हृदय	दीर्घ	पशु	पित्त	उष्ण	शीर्षोदय
कन्या	बुध	Virgo	मिश्रित	वैश्य	सौम्य	द्वि. स्व.	पृथ्वी	सत	जीव	सम	दक्षिण	पन्ना	दिन	पेट, नाभि	दीर्घ	नर	त्रिदोष	शीत	शीर्षोदय
तुला	शुक्र	Libra	नीला	शूद्र	क्रूर	चर	वायु	रज	धातु	विषम	पश्चि.	हीरा	दिन	गुर्दे, कमर	दीर्घ	नर	वात	उष्ण	शीर्षोदय
बृश्चिक	मंगल	Scorpio	ताम्र	विप्र	सौम्य	स्थिर	जल	तम	मूल	सम	उत्तर	मूंगा	दिन	गुप्तांग	दीर्घ	कीट	कफ	शीत	शीर्षोदय
धनु	गुरु	Sagittarius	पीला	क्षत्रिय	क्रूर	द्वि. स्व.	अग्नि	सत	जीव	विषम	पूर्व	पुखराज	रात्रि	जंघा	सम	नर पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
मकर	शनि	Capricor	भूरा	वैश्य	सौम्य	चर	पृथ्वी	रज	धातु	सम	दक्षिण	नीलम	रात्रि	घुटने	सम	जल पशु	वात	शीत	पृष्ठोदय
कुम्भ	शनि	Aquarius	काला	शूद्र	क्रूर	स्थिर	वायु	तम	मूल	विषम	पश्चि.	नीलम	दिन	पिंडली	लघु	जल चर	त्रिदोष	उष्ण	शीर्षोदय
मीन	गुरु	Pisces	पीला	विप्र	सौम्य	द्वि. स्वा.	जल	सतो	जीव	सम	उत्तर	पुखराज	दिन	पाँव दोनों	लघु	जल चर	कफ	शीत	उभयोदय

चर, शीर्षोदयादि राशियों का महत्त्व--उपरोक्त राशियों के गुण, स्वभाव, तत्वादि का फलित ज्योतिष में विशेष महत्त्व होता है। संक्षेप में, चर का अर्थ है चलित अर्थात् जिसमें कार्य जल्दी हो। यात्रा करें, तो शीघ्र वापिस आ जावे। स्थिर लग्न राशि में कार्य करने से स्थायी प्रभाव होता है। मकान, दुकान, व्यवसायादि में प्रवेश करे, तो बहुत वर्षों तक रहे। द्वि-स्वभाव राशि में मिला-जुला प्रभाव होता है। अर्थात् पहिला आधा भाग स्थिर प्रभाव दिखाता है, अन्तिम आधा भाग 'चर' का प्रभाव दिखाता है। इसी भान्ति धातु का अर्थ है, सोना, चाँदी, लोहा, भूमि, सवारी धनादि पदार्थ। **'मूल'** का अर्थ है, फल, वृक्ष, अन्नाजादि भोग्य पदार्थ। **'जीव'** का अर्थ प्राणी–स्त्री, पुत्र, पौत्र, भाई आदि। **उदाहरणार्थ**–मान लीजिए, सौम्य राशि **मीन** में यदि कोई सौम्य ग्रह (शुक्र) बैठा है, तो प्रश्नकर्त्ता को स्त्री, संतानादि का सुख लाभ होगा (क्योंकि मीन राशि जीव सम्बन्धी राशि है) और यदि कोई अशुभ या क्रूर ग्रह स्थित हो, तो स्त्री, संतानादि सुख सम्बन्धी हानि होगी। ऐसा कहना चाहिए। इसी भान्ति, राशियों की दिशा बताने का तात्पर्य यह है कि जिस राशि में कारक ग्रह बैठे हो, उस राशि की दिशा में भाग्योदय होता है। **उदाहरण** के लिए किसी की जन्म कुण्डली में लग्नेश एवं नवमेश ग्रह वृष राशि में हो, तो जातक का भाग्योदय जन्म से दक्षिण दिशा में होगा–ऐसा कहना चाहिए। जैसे–यदि **कन्या लग्न** हो, तो बुध लग्नेश, दशमेश होगा। द्वितीयेश व नवमेश शुक्र, बुध (लग्नेश) सहित नवम् (भाग्य) स्थान पर इकट्ठे हों, तो वृष राशि (दक्षिण) में भाग्योदय होगा।

अनिष्ट ग्रहों के उपायों सम्बन्धी विशेष विवरण

ज्योतिष शास्त्र में अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए अनेक प्रकार के उपाय बतलाए गए हैं। यथा सुनिश्चित संख्या में मन्त्र जाप, यथासामर्थ्य दान, हवन, जड़ी-बूटी धारण, ग्रह औषधि स्नान, व्रत-जप-तप करना, उचित नग एवं विधिपूर्वक ग्रह यन्त्र को धारण करना इत्यादि शास्त्रोक्त उपायों को अपना करके मनुष्य ग्रह जनित कष्टों का समाधान करके प्रतिकूल परिस्थितियों को भी स्वयं के अनुकूल एवं समृद्ध बना सकते हैं।

◆सूर्य शान्ति के लिए उपाय◆

सूर्य क्रूर ग्रह से दृष्ट, युक्त अथवा नीच राशिस्थ (तुला) हो या १, २, ४, ५, ७, ८, ९ या १२वें भावस्थ सूर्य अशुभ माना जाता है। जन्म कुण्डली अथवा वर्ष कुण्डली में सूर्य अशुभकारी हो, तो निम्नलिखित किसी एक मन्त्र का ७ हज़ार से लेकर सवा लाख की संख्या में जाप करना चाहिए। जप का आरम्भ **शुक्ल पक्षीय रविवार** या सूर्य षष्ठी अथवा रवि योग या रविपुष्य योग में करना चाहिए। पाठारम्भ करने से पूर्व लाल पुष्प, अक्षत, नैवेद्य व गंगाजल लेकर पाठ का संकल्प, ध्यान व आवाहनादि करें। जप-पाठ के लिए रूद्राक्ष की माला सर्वोत्तम है। उसके अभाव में चन्दन या तुलसी की माला का प्रयोग भी कर सकते हैं। विधिपूर्वक सूर्य उपासना से पदोन्नति, आत्मशक्ति, तेज़ बल, राजप्रतिष्ठा एवं आरोग्य की प्राप्ति होती है। **प्रतिदिन पाठोपरान्त सूर्य देव को ताम्र बर्तन में शुद्ध जल, लाल चन्दन (या पुष्प) डालकर अर्घ्य देना चाहिए** तदुपरान्त गायत्री मन्त्र करने का विधान है। सुनिश्चित संख्या में पाठ (जप) की पूर्ति हो जाने पर दशमांश संख्या में हवन कर लेना चाहिए।

पुराणोक्त सूर्य नमस्कार मन्त्र–

जपाकुसुम संकाश काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

वेदोक्त सूर्यमन्त्र–

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ (जप संख्या ७०००)

तन्त्रोक्त बीजमन्त्र–ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः

सूर्यार्घ्य मन्त्र–

एहि सूर्य ! सहस्त्रांशो तेजो राशे जगत्पते। अनुकम्पय ! मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥

सूर्यार्घ्य का लघु मन्त्र–"ॐ घृणिः सूर्याय नमः"॥

सूर्यगायत्री मन्त्र–ॐ आदित्याय विद्महे भास्कराय धीमहि तन्नो भानुः प्रदोयात्॥

सूर्य गायत्री मन्त्र जाप, विधिपूर्वक रविवार का व्रत, **सूर्यमणि (मणिक्य)** धारण करना, **औषधि स्नान** (मनः शिला, इलायची छोटी, देवदारू, केशर, खस, कनेरादि लाल पुष्प एवं गंगाजल तथा विधिवत् निर्मित सूर्ययन्त्र धारण करना तथा सूर्य देव से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ होता है।

[illegible] माणक, ताम्र बर्तन, मिष्ठान्न, नारियल सहित लाल फल, ब्राह्मण भोजन एवं च सुनिश्चित पाठोपरान्त दशमांश हवन करना शुभ रहता है।

उपाय–(1) तांबे की अँगूठी में माणिक्य अथवा विधिवत् तैयार किया हुआ सूर्य-यन्त्र (ताम्र पत्र पर) धारण करें।

(2) खाना खाते समय सोने अथवा तांबे के चम्मच का प्रयोग करना तथा 11 रविवार तक सूर्य स्नान करना। जब जन्म या वर्ष कुण्डली में सूर्य अशुभ हो तो–

(3) 108 रविवार तक अथवा प्रतिदिन नियमित रूप से ताम्र बर्तन में शुद्ध जल, लाल चन्दन मिलाकर सूर्य को अर्घ्य देकर सूर्य स्तोत्र का पाठ करना शुभ है।

(4) रविवार को नमक से परहेज़ रखें। लवणरहित सादा भोजन करें। ग्यारह रविवार पर्यन्त केवल दही और चावल का सेवन करना चाहिए।

(5) जिन जातकों का सूर्य नीच का हो, उन्हें **'कार्तिक माहात्म्य'** का कार्तिकमास में नित्यप्रति पाठ करके तुलसी के पौधे पर दीपक प्रज्वलित करना चाहिए।

◆चन्द्रमा शान्ति के लिए उपाय◆

चन्द्रमा शत्रु एवं क्रूर ग्रह से दृष्ट, युत एवं नीच राशि (वृश्चिक), अथवा ४, ६, ८, १२वें भावों में स्थित चन्द्रमा अशुभ माना जाता है।

अशुभ चन्द्र की शान्ति के लिए निम्नलिखित किसी एक मन्त्र की **११ हज़ार की संख्या** में जप करना, तदुपरान्त दशमांश संख्या में हवन करना शुभ रहता है। जप का आरम्भ पूर्णमाशी या शुक्ल पक्ष के सोमवार को किसी शुभ मुहूर्त्त में करना चाहिए।

तन्त्रोक्त चन्द्र मन्त्र–ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।

पुराणोक्त चन्द्र मन्त्र–ह्रीं दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुट भूषणम्॥

चन्द्रमा गायत्री मन्त्र–ॐ अमृतांगाय विद्महे कलारूपाय धीमहि तन्नो सोमः प्रचोदयात्॥

चन्द्र अर्घ्य मन्त्र–ॐ सोम् सोमाय नमः॥

चन्द्रमा अशुभ हो, तो मानसिक विकार, नेत्र कष्ट, धन हानि, रक्त दोष, स्त्री कष्ट आदि अशुभ फल घटित होते हैं। चन्द्रमा की शुभता के लिए उपरोक्त मन्त्र-जाप के अतिरिक्त चांदी की अँगूठी में चन्द्रकान्त मणि या श्वेत सुच्चा मोती धारण करना, विधिवत, सोमवार एवं पूर्णमाशी का व्रत करना, चन्द्र मन्त्र मुद्रित करवा कर चाँदी का गोल सिक्का (Coin) गले में धारण करना, घर में श्वेत शंख रखना, औषधि एवं जड़ी-बूटी (पंचगण्य, श्वेत चन्दन आदि), विधिपूर्वक चन्द्र यन्त्र धारण करना, शिवोपासना करना कल्याणकारी रहता है।

चन्द्र की शुभता बढ़ाने के लिए दान योग्य पदार्थ :–चावल, सफेद चन्दन, शंख कर्पूर, [illegible] श्वेत वस्त्र, सफेद चन्दन, चाँदी या कांसे का पात्र, चाँदी के

वर्क लगी बर्फी। बलान्वित चन्द्रमा मन, बुद्धि, रक्त, स्त्री एवं माता, धन-सम्पदादि सुखों में वृद्धिकारक होता है।

उपाय–(1) चांदी के बर्तनों का प्रयोग करना एवं चारपाई के पायों में चांदी के कील ठुकवाना।

(2) सफेद मोतियों की माला अथवा चांदी की अँगूठी में मोती एवं चांदी का कड़ा धारण करना।

यदि कुण्डली में चन्द्र अशुभ हो, तो चन्द्रमा के अशुभत्व के निवारण हेतु उपाय–

(3) शीशे के गिलास में दूध, पानी आदि पीने से परहेज रखना शुभ होगा।

(4) पानी में कच्चा दूध मिलाकर चन्द्रमा का बीज मन्त्र पढ़ते हुए पीपल को डालना।

(5) लगातार 16 सोमवार व्रत रखकर सायंकाल सफेद वस्तुओं का दान करना चाहिए तथा पाँच छोटी कन्याओं को क्षीर सहित भोजन कराना चाहिए।

◆मंगल शान्ति के लिए उपाय◆

मंगल ग्रह = १, २, ४, ५, ७, ८, ९, एवं १२वें भावों में स्थित मंगल, बुध अथवा शनि आदि शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त, या अपनी नीचराशि (कर्क) में अशुभ कारक होता है। **जन्म कुण्डली** या वर्ष कुण्डली में मंगल अशुभ एवं बाधाकारक हो, तो निम्न मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का कम से कम **१० हजार की संख्या** में, शुभ मुहूर्त्त, मंगलवार को लाल पुष्प, लाल चन्दन, अक्षत (चावल), गंगाजल लेकर संकल्प पूर्वक पाठारम्भ करें। सुनिश्चित संख्या में पाठोपरान्त पाठ का दशमांश संख्या में हवन करना चाहिए।

तन्त्रोक्त भौम मन्त्र–ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।

पुराणोक्त भौम मन्त्र–ह्रीं धरणी गर्भसम्भूतं विद्युत् कान्ति समप्रभम्।
कुमारं-शक्तिं हस्तं तं मंगल प्रणमाम्यहम्॥

भौम गायत्री मन्त्र–ॐ अंगारकाय विद्महे शक्ति हस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्॥

उपरोक्त मन्त्र जाप के अतिरिक्त अनिष्टकर मंगल की शान्ति के लिए **मंगलवार का व्रत** रखना, श्री हनुमान उपासना, मंगल स्तोत्र पढ़ना, लाल वर्ण की गाय को चारा डालना, मूँगा पहनना, औषधि स्नान करना परन्तु मांस, मछली, शराब आदि से परहेज रखना, विधिपूर्वक बना भौम यन्त्र धारण करना, उद्यापन के दिन ब्राह्मण भोजन कराना शुभ होता है।

भौमशान्ति हेतु दान योग्य वस्तुएँ–गेहूँ, मसर की दाल, घी, गुड़, सुवर्ण, कनेर के पुष्प, लाल वस्त्र, लाल चन्दन, केशर, नारियल, सेब आदि लाल फल, मूंगा, सोना, ताम्र बर्तन, गुड़ से बने मीठे चावल या मीठी चापातियां, ब्राह्मण भोजन आदि करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है। मंगल ग्रह पराक्रम, साहस, भूमि, भाई, पुत्र, रक्त-बलादि का भी कारक है। यदि अशुभ हो तो रक्त दोष, भ्रातृ कष्ट, आकस्मिक दुर्घटना, वृथा विवाद करवाता है।

उपाय–जब कुण्डली में मंगल शुभ एवं योगकारक होता हुआ भी फल न करता हो तो निम्नलिखित उपाय शुभ होंगे–

(1) तांबे की अँगूठी में मूँगा धारण करना अथवा तांबे का कड़ा पहनना।

(2) मंगलवार को घर में गुलाब का पौधा लगाना तथा 108 दिन तक रात को तांबे के बर्तन में पानी सिरहाने रखकर घर में लगाए हुए गुलाब के पौधे को वहीं पानी डालना।

(3) मंगलवार का व्रत रखकर 27 मंगल किसी अपाहज को मीठा विशेषकर गुड़ से निर्मित भोजन खिलाना।

(4) नारियल को तिलक करके तथा लाल कपड़े में लपेटकर लगातार 3 मंगलवार चलते पानी में बहाएँ।

(5) लाल रंग की गाय या लाल वर्ण के कुत्ते को भोजन खिलाना शुभ होगा।

(6) मंगलवार का व्रत रखना चाहिए। विशेषकर उन कन्याओं को जिनकी कुण्डली में मंगल मंगलीक योग बनकर विवाह में बाधा, विलम्ब उत्पन्न कर रहा हो–उन्हें मंगलागौरी का व्रत लगातार 7 मंगलवार रखना चाहिए।

◆बुध शान्ति के लिए उपाय◆

बुध ग्रह कुण्डली में ४, ६, ८, १२वें भावों में स्थित अथवा शुभ ग्रह द्वारा दृष्ट या युक्त बुध अशुभ फलदायक होता है। बुध शुभ हो, तो वाणी, बुद्धि, विद्या, संतान, व्यापार आदि में लाभकारक होता है। अशुभ बुध बुद्धि में विभ्रम, त्वचा रोग, वाणी विकार, सन्तान को कष्ट रहता है। बुध की शुभता बढ़ाने के लिए निम्नलिखित उपाय करने चाहिएँ।

तन्त्रोक्त बुध मन्त्र–ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः। (जप संख्या ९०००)

पुराणोक्त बुध मन्त्र–ह्रीं प्रियंगु कलिका श्याम रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुध प्रणमाम्यहम्॥

बुध गायत्री मन्त्र–ॐ सौम्यरूपाय विद्महे रोहिणी प्रियाय धीमहि तन्नो बुधः प्रचोदयात्॥

उपरोक्त मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का कम से कम ९००० की संख्या में जाप करना, बुधवार का विधिपूर्वक व्रत रखना, औषधि स्नान, हरे रंग का नग-पन्ना (Emareld) सोने की अंगूठी में धारण करना, विधिवत् तैयार किया गया बुध यन्त्र रखना, हरी वस्तुओं का प्रयोग करना, श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ तथा श्री विष्णु उपासना करना, चौपायों को हरा चारा डालना, बुध को कन्या पूजन के उपरान्त हरी वस्तुओं (वस्त्रादि) का दान करना इत्यादि बुध ग्रह जनित अशुभ फल को शान्त करता है।

बुध के दान की वस्तुएँ–मूंगी साबुत, चीनी, छोटी इलायचियाँ, षडरसों से युक्त भोजन, हरी सब्जियां, पन्ना नग, कांस्य पात्र, हरे पुष्प, हरे फल, हाथी दाँत, हरा गर्म अथवा रेशमी वस्त्र, ब्राह्मण भोजन दक्षिणा सहित दान करना कल्याणप्रद रहता है।

उपाय–कुंडली में बुध शुभ होता हुआ भी फलकारक न हो तो निम्न उपाय शुभ होंगे–

(1) हरे रंग का पन्ना बुधवार को सोने की अँगूठी में धारण करना। हरे रंग के वस्त्रों को पहनना तथा हरे रंग के पर्दे लगाना शुभ होगा।

(2) बुधवार को चाँदी या कांस्य के गोल टुकड़े को हरे रंग के कपड़े में लपेट कर जेब में रखें या भुजाओं के साथ बांधें।

यदि बुध अशुभ हो तो–(3) हरे रंग के वस्त्र एवं हरे रंग की गाड़ी आदि का प्रयोग न करें।

(4) हरे रंग के वस्त्र (परिधान) किसी हिजड़े को बुधवार के दिन शुभ होगा।

(5) बुधवार के दिन 6 इलायची हरे रूमाल में लपेटकर अपने पास रखें तथा इसके पश्चात् एक इलायची व तुलसीपत्र का सेवन करना शुभ रहेगा।

गुरु शान्ति के लिए उपाय

गुरू (बृहस्पति) कुण्डली में ४, ६, ८, १२वें भावों में ही स्थित हो, अथवा नीच राशिगत (मकर) हो, या शत्रु या अशुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त ग्रह जातक को अशुभ प्रभाव प्रदान करता है। अशुभ गुरू जातक को विद्या में असफलता अथवा विवाह सुख में अड़चनें, पुत्र-सन्तान एवं स्त्री कष्ट, भ्रातृ विरोध, शरीर कष्ट, बुद्धि में विकार आदि अशुभ फल प्रकट करता है।

गुरु में शुभता लाने के लिए निम्नलिखित किसी एक मन्त्र का १९,००० की संख्या में पाठ करना अथवा किसी योग्य ब्राह्मण से करवाना तथा पाठोपरान्त दशांश संख्या में हवन करना कल्याणकारी रहेगा।

तन्त्रोक्त गुरू मन्त्र—ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौ सः गुरवे नमः(जप संख्या १९०००)

पुराणोक्त गुरू मन्त्र—ॐ देवानां च ऋषीणां च गुरुं का-चन संन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

गुरु गायत्री मन्त्र—ॐ अंगिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरूः प्रचोदयात्॥

संकल्पपूर्वक मन्त्र जाप के अतिरिक्त गुरू सम्बन्धी वस्तुओं का दान, सुवर्ण या चांदी की अँगूठी में पुखराज पहनना, विधिवत् निर्मित **गुरू यन्त्र** धारण, औषधि स्नान करना, **गुरूवार** का व्रत रखना, पीली वस्तुओं का प्रयोग, पीले वर्ण की गौओं की सेवा करना व गाय दान, पीपल वृक्ष की प्रतिष्ठा, ब्राह्मणों को क्षीर सहित भोजन खिलाना, दक्षिणा एवं धार्मिक ग्रन्थों का दान, गायत्री जप इत्यादि करना शुभ है।

गुरू की दान योग्य वस्तुएँ—पीले चावल, चने की दाल, हल्दी, शहद, पीला वस्त्र, पपीता, आम, केले आदि पीले फल, सवत्सा गाय, पीला कम्बल, बेसन के लड्डू, ताम्र एवं कांस्य पात्र, शक्कर, रामायण आदि धार्मिक ग्रंथ केशर इत्यादि वस्तुओं का दान शुभ रहता है।

उपाय—जन्म कुंडली में बृहस्पति शुभ व योगकारक होता हुआ भी शुभ फल प्रकट न कर रहा हो तो निम्नलिखित उपाय करें–

(1) सोने या चांदी की अँगूठी में तर्जनी अंगुली में तथा शुभ मुहूर्त्त में पुखराज धारण करें।

(2) 27 गुरुवार केसर का तिलक लगाना तथा केसर की पुड़िया पीले रंग के कपड़े या कागज़ में अपने पास रखना शुभ होगा।

गुरु के अशुभ प्रभाव के निवारण हेतु निम्नलिखित उपाय करें–

(3) चलते पानी में बादाम एवं नारियल पीले कपड़े में लपेटकर बहाना शुभ होगा।

(4) पीपल के वृक्ष को गुरुवार एवं शनिवार को गुरु का बीज मन्त्र एवं गुरु गायत्री मन्त्र पढ़ते हुए जल दें।

(5) वृद्ध ब्राह्मण को यथाशक्ति पीली वस्तुएँ, जैसे-चने की दाल, लड्डू, पीले वस्त्रों, शहदादि का दान करना चाहिए।

शुक्र शान्ति के लिए उपाय

शुक्र ग्रह जन्म कुण्डली में शुक्र ६, ८ या १२वें भाव में अथवा नीच राशि (कन्या) या शत्रु ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो अशुभ फल प्रदायक होता है।

शुक्र ग्रह स्त्री, धन-सम्पदा, ऐश्वर्य, वीर्य-भोग एवं वाहनादि सुख-साधनों का कारक माना जाता है। इस ग्रह की शुभता बढ़ाने के लिए निम्नलिखित मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का कम से कम १६००० की संख्या में जप करना तथा फिर दशांश हवन करना शुभ कारक माना जाता है।

तन्त्रोक्त शुक्र मन्त्र—ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः

शुक्र गायत्री मन्त्र—ॐ भृगुजाताय विद्महे दिव्य देहाय धीमहि तन्नो शुक्रः प्रचोदयात्॥

सुनिश्चित संख्या में मन्त्र जाप के अतिरिक्त शुक्र सम्बन्धी वस्तुओं का दान तथा स्वयं प्रयोग, हीरा (Diamond) पहनना, शुक्र यन्त्र धारण करना, शुक्र-औषधि स्नान, गोदान, श्वेत एवं क्रीमवर्ण की वस्तुओं का प्रयोग, श्वेत चन्दन का तिलक, श्री दुर्गा पूजा, श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ करना तथा पाँच **शुक्रवार व्रत करके पाँच कन्याओं का पूजन करना एवं उन्हें श्वेत वस्तुओं की भेंट देने से ग्रह शान्ति होती है।**

शुक्र दान की वस्तुएँ—चाँदी, चावल, मिश्री, दूध एवं दूध से निर्मित क्षीर, बर्फी आदि, श्वेत चन्दन, श्वेत गाय, श्वेत पुष्प, श्वेत वस्त्र, श्वेत फल एवं सुगन्धित पदार्थों आदि का दान करने से शुक्र की शुभता में वृद्धि होती है।

उपाय—कुंडली में यदि शुक्र शुभ एवं योगकारक होता हुआ भी फलीभूत न हो रहा हो तो निम्न उपाय कल्याणकारी रहेंगे–

(1) चाँदी की कटोरी में सफेद चन्दन, मुश्कपूर, सफेद पत्थर का टुकड़ा रखकर सोने वाले कमरे में रखे चन्दन की अगरबत्ती जलाना शुभ होगा।

(2) घर में तुलसी का पौधा लगाना, सफेद गाय रखना, सफेद पुष्प लगवाना शुभ होगा तथा क्रीम रंग के रेशमी कपड़े में चाँदी के चौरस टुकड़े पर शुक्र यन्त्र खुदवाकर विधिपूर्वक अपने पास रखें।

शुक्र अशुभ प्रभावी होने की स्थिति में नीचे लिखे उपाय कल्याणकारी होंगे–

(3) शुक्रवार को श्री दुर्गा पूजन, 5 कन्या पूजन उन्हें खीरादि श्वेत वस्तुएँ देना तथा गौशाला में शुक्रवार से शुरु करके सात दिन तक गाय को हरा चारा, शक्कर एवं चरी डालना।

(4) सफेद रंग के पत्थर पर चन्दन का तिलक लगाकर चलते पानी में बहा देना या चांदी के टुकड़े पर शुक्र यन्त्र खुदवा कर रेशमी क्रीम रंग के वस्त्र में लपेट कर शुक्रवार को नीम के वृक्ष के नीचे दबाना।

शनि शान्ति के लिए उपाय

शनि ग्रह किसी जातक की जन्म कुण्डली में जब शनि १, २, ४, ५, ७, ८, ९, १० अथवा १२वें स्थानों में हो, अथवा शत्रु या नीच (मेष) राशिगत हो अथवा सूर्य, मंगल आदि क्रूर ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो शनि अशुभ फलदायक होता है। अशुभ एवं अरिष्टकर शनि धन एवं आय के साधनों में कमी, शरीर कष्ट, मानसिक तनाव, बनते कामों में बार-बार अड़चनें पैदा होती रहती है। शनि कृत अरिष्ट निवारण हेतु निम्नलिखित मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का २३ हज़ार जप तथा जप उपरान्त दशांश संख्या में हवन करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है।

तन्त्रोक्त शनि मन्त्र–ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः (जप संख्या २३०००)
तन्त्रोक्त शनि का लघु मन्त्र–ॐ शं शनैश्चराय नमः
वेदोक्त शनि मन्त्र–ॐ शंन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्यो रभिरस्त्रवन्तु नः॥
शनि गायत्री मन्त्र–ॐ सूर्यसुताय विद्महे, यमरूपाय धीमहि तन्नः सौरिः प्रचोदयात्॥
पुराणोक्त शनि मन्त्र–ह्रीं नीलांजन समा भासं रवि पुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥

विधिपूर्वक मन्त्र जाप के अतिरिक्त शनि सम्बन्धी वस्तुओं का दान, सिक्के अथवा पंचधातु की अंगूठी में नीलम धारण करना, शनिवार का व्रत रखना, विधिवत् निर्मित शनि यन्त्र रखना, लोहे की कटोरी में तेल डालकर छाया पात्र करना, औषधि स्नान, अन्ध विद्यालय या कुष्ठाश्रम में अनाज (उड़द सहित) भोजन खिलाना, मछलियों को गेहूँ एवं उड़द के आटे की गोलियां डालना, शिव स्तोत्र एवं शनि स्तोत्र का पाठ एवं शनि से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है।

शनि के दान योग्य वस्तुएँ–उड़द, काले तिल, काले चने, सरसों का तेल, काली गाय, काला वस्त्र, लोहे का बर्तन, काले जूते, भैंस, कुलथी, कस्तूरी, नीलम, नारियल, काले एवं नीले पुष्प, ग़रीब वृद्ध व्यक्ति को भोजन कराना शुभ होता है। शनि का दान सायंकाल को करना प्रशस्त माना जाता है।

उपाय–शनि शुभ होता हुआ भी शुभफल प्रकट न कर रहा हो तो निम्न उपाय शुभ होंगे–

(1) घर में नीले रंग के पर्दे तथा नीले रंग की चादरों का प्रयोग करना और स्वयं भी बहुधा नीले रंग के वस्त्रों का प्रयोग करना शुभ होगा। जब कुण्डली में शनि नीच या अरिष्टकर फल प्रकट कर रहा हो तो निम्न उपाय करें–

(2) स्टील या लोहे की कटोरी में तेल का छाया-पात्र करके तेल पाँच शनिवार तक आक के पौधे पर अथवा '**शनि मन्दिर**' में डालना शुभ होगा। 5वें शनिवार को तेल चढ़ाने के बाद तेल वाली कटोरी को वही दबा देना या वही चढ़ा देना शुभ होगा। तेल चढ़ाते समय शनि का बीज मन्त्र पढ़ें।

(3) अष्टम भाव में शनि अशुभ एवं रोगकारक हो, तो संकटनाशन श्री गणेशस्तोत्र का पाठ एवं श्री गणेश चतुर्थी का व्रत रखना चाहिये।

◆राहु शान्ति के लिए उपाय◆

राहु जिस कुण्डली में १, २, ४, ५, ७, ८, ९, १० या १२वें भाव में स्थित हो अथवा शत्रु या नीच राशि में या शत्रु ग्रह युक्त, दृष्ट हो तो ऐसे जातक को शरीर कष्ट, तनाव, धन सम्बन्धी उलझनें, बुद्धि विभ्रम, कलह-क्लेश, वृथा भ्रमण आदि परेशानियों का सामना करना पड़ता है। राहु जनित अरिष्ट फल निवारण हेतु निम्नलिखित किसी एक मन्त्र का **१८ हज़ार की संख्या** में जाप करना चाहिए।

तन्त्रोक्त राहु मन्त्र–ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।
राहुगायत्री मन्त्र–ॐ शिरो रूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहु प्रचोदयात्॥

सुनिश्चित मन्त्र जाप के अतिरिक्त राहु से सम्बन्धित वस्तुओं का दान, शनिवार का व्रत, विधिपूर्वक निर्मित राहु यन्त्र धारण करना, राहु औषधि स्नान, गोमेद नग पहनना, शिव स्तोत्र एवं राहु स्तोत्र का पाठ करना, चलते पानी में नारियल बहाना, श्री दुर्गा पूजा करना, अपाहज एवं कुष्टाश्रम में अनाज, फल, आदि।

राहु दान योग्य वस्तुएँ–सप्तधान्य (सतनाजा), गोमेद, सीसा, काला घोड़ा, तिल, तैल, काले पुष्प, नीला वस्त्र, उड़द, खडग (चाकू इत्यादि), कम्बल, बिल पत्र, मौसमी फल, कस्तूरी आदि। राहु का दान रात्रि कालीन करना प्रशास्त माना जाता है।

उपाय–अशुभ राहु या राहु की महादशा या अन्तर्दशा में निम्नलिखित उपाय करें–

(1) काले व नीले वस्त्र पहनने से परहेज करें तथा चाँदी की चेनी व लॉकेट पहनना शुभ होगा।

(2) चापाती को खीर लगाकर कौओं को एवं काले रंग की गाय को खिलाएँ।

(3) काले तिल, कच्चा कोयला, नीले रंग के ऊनी कपड़े में बाँधकर शनिवार अथवा राहु के नक्षत्रों में घर के आंगन में दबाना शुभ होगा। अथवा नीले वस्त्र के बांधे रूमाल को राहु मन्त्र पढ़ते हुए जल में प्रवाह कर देवें।

◆केतु शान्ति के लिए उपाय◆

केतु कुण्डली में १, २, ४, ५, ७, ८, एवं १२वें भाव में हो, अथवा अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो या नीच राशिगत हो तो जातक / जातिका को शरीर कष्ट, आपसी कलह, व्यवसाय में हानि, घरेलू उलझनों आदि का सामना रहता है। केतु कृत अरिष्ट फल निवारण हेतु निम्नलिखित किसी एक मन्त्र का **१७ हज़ार की संख्या** में जाप करना लाभदायक रहता है–

तन्त्रोक्त केतु मन्त्र–ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः।
केतु गायत्री मन्त्र–ॐ पद्म पुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतु प्रचोदयात्॥

सुनिश्चित मन्त्र जाप के अतिरिक्त केतु से सम्बन्धित वस्तुओं का दान, दुर्गा व गणेश जी की उपासना, कुत्तों को दूध-चपाती डालना, गर्म वस्त्र (कम्बलादि) का दान, केतु औषधि स्नान, अन्ध विद्यालय या कुष्ट आश्रम में अनाज, दवाईयों, वस्त्रादि का दान, पक्षियों को सतनाजा डालना तथा केतु यन्त्र धारण करना कल्याणकारी रहता है।

केतु-दान योग्य, वस्तुएं–लहसुनिया, लोहा, बकरा, नारियल, तिल, सप्तधान्य, धूम्र (धुएँ जैसे) वर्ण का वस्त्र, कस्तूरी, लौह, चाकू, कपिला गाय, दक्षिणा सहित। केतु का दान रात्रिकालीन प्रशस्त माना जाता है।

उपाय–(1) केतु की शान्ति के लिए श्री गणेश चतुर्थी का व्रत रखें तथा श्रीगणेश पूजन तथा लड्डूओं का भोग लगाना शुभ होगा।

(2) काले वस्त्र में बाँधकर काले व सफेद तिल चलते पानी में बहाना।

(3) रंग-बिरंगी (चितकबरी) गाय की सेवा करना एवं रंग-बिरंगे कुत्ते को दूध व चापाती (Bread) डालना। **शास्त्रोक्त एवं लाल किताब सम्बन्धी** अधिक जानकारी एवं उपायों के लिए हमारी पुस्तक '**अरिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय एवं टोटके**' मंगवाकर पढ़ें।

सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, गुरुपुष्य आदि योग-वि. संवत् २०७८ (सन् 2021-2022 ई.)

दैनिक जीवन में आने वाले महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए शीघ्र ही सर्वांगशुद्ध मुहूर्त्त का अभाव हो, तथा इन शुभ मुहूर्त्तों की प्रतीक्षा में अधिक दिनों तक रुका न जा सकता हो, तो इन सुयोग वाले मुहूर्त्तों को सरलता से ग्रहण किया जा सकता है। इनसे प्राप्त होने वाले अभीष्ट शुभ फल के विषय में संशय नहीं करना चाहिए। ये सुयोग हैं—सर्वार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि, रवियोग, सिद्धि, रत्नांकुर एवं प्रशस्तादि योग। **'यथा नाम तथा गुणा'** उक्ति के अनुसार सर्वाङ्गीण सिद्धिकारक हैं।

(1) सर्वार्थ सिद्धि योग—महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक कार्य जैसे—कोई व्यापारिक या राजकीय अनुबन्ध (कान्ट्रेक्ट) करना, परीक्षा, नौकरी अथवा चुनाव आदि के लिए आवेदन करना, क्रय-विक्रय करना, यात्रा या मुकद्दमा करना, भूमि, सवारी, वस्त्र-आभूषणादि का क्रय करने के लिए शीघ्रतावश गुरु-शुक्रास्त, अधिमास एवं वेधादि का विचार सम्भव न हो, तो ये सर्वार्थसिद्धि योग ग्रहण किए जा सकते हैं।

(2) अमृतसिद्धि योग—में स. सि. योगों वाले कृत्यों के अतिरिक्त प्रेम-विवाह करना, विदेश-यात्रा, किसी कार्य सिद्धि हेतु सुकाम अनुष्ठान करना आदि कृत्य किए जा सकते हैं। **अमृसिद्धि योग संज्ञा वाले सर्वार्थसिद्धि योग विशेष शुभ फलदायक माने गए हैं।** परन्तु अमृतसिद्धि योग के दिन कुछ तिथियां त्याज्य मानी गयी हैं। रविवार से शनिवार क्रमशः 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11 तिथियां वर्जित हैं। **उदाहरण**—जैसे रविवार को हस्त नक्षत्र हो, तो अमृतसिद्धि योग बना है, परन्तु यदि उस दिन पंचमी तिथि आ पड़े तो उस तिथि काल में स.सि. एवं अमृतसिद्धि योग दूषित होगा। अतः इस काल को त्याग देना चाहिए।

(3) रविपुष्य योग—में जड़ी-बूटी तोड़ना तथा तोड़कर औषधि तैयार करना, किसी विशेष रोग में रोगी को औषधि देना शुभ होता है। यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रादि प्रयोगों में भी यह योग विशेष शुभ होता है।

(4) गुरुपुष्य योग— गुरु अथवा पिता, दादा या श्रेष्ठ व्यक्ति से मन्त्र, तन्त्र या किसी विशिष्ट विषय के सम्बन्ध में उच्च-विद्या ग्रहण करना, धन, भूमि-विद्या एवं आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना, कोई धार्मिक अनुष्ठान प्रारम्भ करना, गुरु धारण करना, विदेश-यात्रा आरम्भ करना शुभ होता है। परन्तु **'विवाह'** सर्वथा त्याज्य है।

उपरोक्त सभी योगों में से कोई योग विशेष ग्रहण करने से पूर्व तिथि एवं चन्द्रमा का बल भी ध्यान में रख लेवें, तो अत्यन्त लाभदायक होगा। (अर्थात् कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा पर्यन्त चन्द्रमा निर्बल माना जाता है।) इनके अतिरिक्त गुरु-शुक्र ग्रहों के अस्त काल, अधिक मास, ग्रहण काल, श्राद्ध पक्ष आदि का भी ध्यान कर लेना शुभ होगा। **विवाह, मुण्डन, गृहनिर्माण, गृहप्रवेश आदि कार्य निर्धारित मुहूर्त्तों में ही करने शुभ होंगे।** ध्यान रहे, इस वर्ष 8 फरवरी, 2021 ई. से 18 अप्रैल, 2021 ई. तक, पुनः 5 जनवरी, 2022 ई. से 11 जनवरी, 2022 ई. तक शुक्र अस्त रहेगा। गुरु 24 फरवरी, 2022 ई. से 25 मार्च, 2022 ई. तक अस्त रहेगा। **—पण्डित विवेक शर्मा, गणितकर्त्ता**

सर्वार्थ सिद्धि योग			
प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2021 ई.	घं. मिं.	2021 ई.	घं. मिं.
13 अप्रै.	सू. उ.	13 अप्रै.	14 19
14 अप्रै.	17 23	15 अप्रै.	सू. उ.
23 अप्रै.	7 42	24 अप्रै.	सू. उ.
25 अप्रै.	सू. उ.	26 अप्रै.	1 55
28 अप्रै.	17 13	29 अप्रै.	14 29
2 मई	8 59	3 मई	सू. उ.
3 मई	8 22	4 मई	सू. उ.
9 मई	17 29	10 मई	सू. उ.
12 मई	सू. उ.	13 मई	सू. उ.
17 मई	13 22	18 मई	सू. उ.
18 मई	14 55	19 मई	सू. उ.
21 मई	सू. उ.	21 मई	15 22
23 मई	सू. उ.	23 मई	12 12
26 मई	सू. उ.	27 मई	1 15

सर्वार्थ सिद्धि योग			
प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2021 ई.	घं. मिं.	2021 ई.	घं. मिं.
31 मई	सू. उ.	31 मई	16 02
4 जून	20 47	5 जून	सू. उ.
6 जून	सू. उ.	7 जून	2 27
8 जून	5 36	10 जून	सू. उ.
13 जून	19 01	14 जून	20 37
15 जून	सू. उ.	15 जून	21 42
23 जून	सू. उ.	23 जून	11 48
27 जून	2 36	27 जून	सू. उ.
2 जुला	3 49	3 जुला	सू. उ.
4 जुला	सू. उ.	4 जुला	9 05
6 जुला	सू. उ.	6 जुला	15 20
7 जुला	सू. उ.	8 जुला	सू. उ.
9 जुला	23 14	10 जुला	सू. उ.
11 जुला	सू. उ.	12 जुला	2 22
18 जुला	1 32	18 जुला	सू. उ.

सर्वार्थ सिद्धि योग			
प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2021 ई.	घं. मिं.	2021 ई.	घं. मिं.
24 जुला	12 40	25 जुला	सू उ.
29 जुला	12 02	31 जुला	सू. उ.
2 अग.	22 43	3 अग.	सू. उ.
4 अग.	सू. उ.	5 अग.	4 25
6 अग.	6 37	7 अग.	सू. उ.
8 अग.	सू. उ.	8 अग.	9 19
14 अग.	6 56	15 अग.	5 44
16 अग.	सू. उ.	17 अग.	3 02
20 अग.	21 25	21 अग.	20 21
24 अग.	19 47	25 अग.	सू. उ.
26 अग.	सू. उ.	28 अग.	00 47
30 अग.	6 39	31 अग.	सू. उ.
1 सितं.	सू. उ.	1 सितं.	12 34
2 सितं.	14 57	3 सितं.	16 42

सर्वार्थ सिद्धि योग			
प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2021 ई.	घं. मिं.	2021 ई.	घं. मिं.
11 सितं.	सू. उ.	11 सितं.	11 23
13 सितं.	सू. उ.	13 सितं.	8 24
17 सितं.	सू. उ.	18 सितं.	3 36
21 सितं.	सू. उ.	22 सितं.	5 06
23 सितं.	सू. उ.	24 सितं.	8 54
27 सितं.	सू. उ.	28 सितं.	सू. उ.
30 सितं.	सू. उ.	1 अक्तू.	सू. उ.
6 अक्तू.	सू. उ.	6 अक्तू.	23 20
15 अक्तू	सू. उ.	15 अक्तू	9 16
19 अक्तू	सू. उ.	19 अक्तू	12 12
21 अक्तू	सू. उ.	21 अक्तू	16 17
23 अक्तू	21 53	24 अक्तू	सू. उ.
25 अक्तू	सू. उ.	26 अक्तू	4 11
28 अक्तू	सू. उ.	29 अक्तू	सू. उ.
[illegible]	[illegible]	3 नवं.	9 58

सर्वार्थ सिद्धि योग			
प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2021 ई.	घं. मिं.	2021 ई.	घं. मिं.
7 नवं.	21 05	8 नवं.	सू. उ.
14 नवं.	16 31	15 नवं.	सू. उ.
16 नवं.	20 14	17 नवं.	सू. उ.
20 नवं.	सू. उ.	21 नवं.	सू. उ.
22 नवं.	सू. उ.	22 नवं.	10 44
25 नवं.	सू. उ.	25 नवं.	18 49
28 नवं.	22 05	29 नवं.	सू. उ.
3 दिसं.	13 44	4 दिसं.	सू. उ.
5 दिसं.	7 47	6 दिसं.	4 54
12 दिसं.	सू. उ.	12 दिसं.	24 00
14 दिसं.	सू. उ.	15 दिसं.	4 40
18 दिसं.	सू. उ.	18 दिसं.	13 49
25 दिसं.	4 10	25 दिसं.	सू. उ.
26 दिसं.	सू. उ.	27 दिसं.	सू. उ.
31 दिसं.	00 34	31 दिसं.	22 04

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2022 ई.	घं.	मिं.	2022 ई.	घं.	मिं.
(सन् 2022 ईसवी में)					
2 जन.	सू.	उ.	2 जन.	16	23
11 जन.	सू.	उ.	11 जन.	11	10
18 जन.	4	37	18 जन.	सू.	उ.
21 जन.	9	43	22 जन.	सू.	उ.
23 जन.	सू.	उ.	24 जन.	सू.	उ.
27 जन.	8	51	28 जन.	7	10
31 जन.	00	23	31 जन.	सू.	उ.
31 जन.	21	58	1 फर.	सू.	उ.
6 फर.	17	10	7 फर.	सू.	उ.
8 फर.	21	27	10 फर.	सू.	उ.
14 फर.	11	53	15 फर.	सू.	उ.
15 फर.	13	49	16 फर.	सू.	उ.
18 फर.	सू.	उ.	18 फर.	16	42
20 फर.	सू.	उ.	20 फर.	16	42
23 फर.	14	41	24 फर.	13	31
27 फर.	8	49	28 फर.	सू.	उ.
28 फर.	7	02	1 मार्च	5	19
5 मार्च	1	52	5 मार्च	सू.	उ.
6 मार्च	सू.	उ.	7 मार्च	3	51
8 मार्च	सू.	उ.	10 मार्च	सू.	उ.
13 मार्च	20	06	14 मार्च	22	08
15 मार्च	सू.	उ.	15 मार्च	23	33
23 मार्च	सू.	उ.	23 मार्च	18	53
27 मार्च	सू.	उ.	27 मार्च	13	32
28 मार्च	सू.	उ.	28 मार्च	12	24
1 अप्रै.	10	40	2 अप्रै.	सू.	उ.

स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, श्रीरामनवमी, अक्षय-तृतीया, विजयादशमी, दीपावली–ये पाँच तिथियां स्वयं-सिद्ध (अणपुच्छ) मुहूर्त्त कहलाती हैं। आवश्यक परिस्थितिवश पर्याप्त समय तक कोई मुहूर्त्त न प्राप्त हो तो इन स्वयं सिद्ध मुहूर्त्तों में शुभ कार्य का सम्पादन कर सकते हैं।

अमृत सिद्धि योग

विशेष—कुछ विद्वान स.सि.यो. में अमृत-सिद्ध योग का संयोग अशुभ मानते हैं, जबकि नवीन मतानुसार कुछ विशेष तिथियां एवं घटिकाएं ही त्याज्य मानी गई हैं। यथा–रविवार से शनिवार तक क्रमश: 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11 तिथियां एवं प्रारम्भ की 6 घड़ियां ही विषाक्त एवं त्याज्य मानी गई हैं।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2021 ई.	घं.	मिं.	2021 ई.	घं.	मिं.
13 अप्रै., मं.	सू.	उ.	13 अप्रै.	14	19
25 अप्रै., र.	सू.	उ.	26 अप्रै.	1	55
28 अप्रै., बु.	17	13	29 अप्रै.	सू.	उ.
23 मई, र.	सू.	उ.	23 मई	12	12
26 मई, बु.	सू.	उ.	27 मई	1	15
4 जून, शु.	20	47	5 जून	सू.	उ.
23 जून, बु.	सू.	उ.	23 जून	11	48
2 जुला., शु.	सू.	उ.	3 जुला.	सू.	उ.
30 जुला, शु.	सू.	उ.	30 जुला	14	02
27 सितं., चं.	17	42	28 सितं.	सू.	उ.
30 सितं., गु.	25	33	1 अक्तू	सू.	उ.
23 अक्तू, श.	21	53	24 अक्तू	सू.	उ.
25 अक्तू, चं.	सू.	उ.	26 अक्तू	4	11
28 अक्तू, गु.	9	41	29 अक्तू	सू.	उ.
16 नवं., मं.	20	14	17 नवं.	सू.	उ.
20 नवं., श.	सू.	उ.	21 नवं.	सू.	उ.
22 नवं., चं.	सू.	उ.	22 नवं.	10	44
25 नवं., गु.	सू.	उ.	25 नवं.	18	49
14 दिसं., मं.	सू.	उ.	15 दिसं.	4	40
18 दिसं., श.	सू.	उ.	18 दिसं.	13	49
26 दिसं., र.	29	26	27 दिसं.	सू.	उ.
(सन् 2022 ईसवी में)					
11 जन., मं.	सू.	उ.	11 जन.	11	10
23 जन., र.	11	09	24 जन.	सू.	उ.
20 फर., र.	सू.	उ.	20 फर.	16	42
23 फर., बु.	14	41	24 फर.	सू.	उ.
4 मार्च, शु.	25	52	5 मार्च	सू.	उ.
23 मार्च, बु.	सू.	उ.	23 मार्च	18	53
1 अप्रै., शु.	10	40	2 अप्रै.	सू.	उ.

❑ रवि योग–संवत् २०७८ वि. ❑

रवि योग तिथि, वार, नक्षत्रादि से सम्बन्धित कुयोगों के दोषों को दूर कर देता है। सामान्यत: अन्नदान, गोदान, भूदान एवं सरकारी क्षेत्रों में सेवाओं (जैसे– प्रतिष्ठित पद ग्रहण आदि) के लिए इनका उपयोग किया जाता है।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2021 ई.	घं.	मिं.	2021 ई.	घं.	मिं.
15 अप्रै.	20	33	16 अप्रै.	23	40
18 अप्रै.	2	34	19 अप्रै.	5	02
21 अप्रै.	7	59	23 अप्रै.	7	42
25 अप्रै.	4	23	26 अप्रै.	1	55
2 मई	8	59	3 मई	8	22
15 मई	8	39	16 मई	11	14
17 मई	13	22	18 मई	14	55
20 मई	15	57	22 मई	14	06
24 मई	9	49	25 मई	7	06
25 मई	8	45	26 मई	4	11
31 मई	16	02	1 जून	16	08
13 जून	19	01	14 जून	20	37
15 जून	21	42	16 जून	22	15
18 जून	21	37	20 जून	18	49
23 जून	11	48	24 जून	9	11
30 जून	1	02	1 जुला	2	03
13 जुला	3	14	14 जुला	3	41
15 जुला	3	43	16 जुला	3	21
18 जुला	1	32	19 जुला	22	27
20 जुला	4	44	20 जुला	20	33
22 जुला	16	25	23 जुला	14	26
29 जुला	12	02	30 जुला	14	02
11 अग.	9	32	12 अग.	8	53
13 अग.	8	00	14 अग.	6	56
16 अग.	4	26	17 अग.	1	16
17 अग.	3	02	19 अग.	00	07
20 अग.	21	25	21 अग.	20	21
28 अग.	00	47	29 अग.	3	35
9 सितं.	14	31	10 सितं.	12	58
11 सितं.	11	23	12 सितं.	9	50
15 सितं.	5	55	17 सितं.	4	09
19 सितं.	3	21	20 सितं.	3	28
26 सितं.	14	33	27 सितं.	6	41
27 सितं.	17	42	28 सितं.	20	44
8 अक्तू	18	59	9 अक्तू	16	47
10 अक्तू	14	44	10 अक्तू	19	37

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2021 ई.	घं.	मिं.	2021 ई.	घं.	मिं.
11 अक्तू	12	56	12 अक्तू	11	26
14 अक्तू	9	35	16 अक्तू	9	22
18 अक्तू	10	49	19 अक्तू	12	12
27 अक्तू	7	08	28 अक्तू	9	41
7 नवं.	21	05	8 नवं.	18	49
9 नवं.	17	00	10 नवं.	15	42
12 नवं.	14	53	14 नवं.	16	31
16 नवं.	20	14	17 नवं.	22	43
25 नवं.	18	49	26 नवं.	20	36
7 दिसं.	2	19	8 दिसं.	00	12
8 दिसं.	22	40	9 दिसं.	21	51
11 दिसं.	22	32	14 दिसं.	2	05
17 दिसं.	10	40	18 दिसं.	13	49
25 दिसं.	4	10	26 दिसं.	5	05
(सन् 2022 ईसवी में)					
5 जन.	8	46	6 जन.	7	11
7 जन.	6	21	8 जन.	6	20
10 जन.	8	49	11 जन.	7	55
11 जन.	11	10	13 जन.	17	07
15 जन.	23	21	17 जन.	2	09
23 जन.	11	09	24 जन.	10	19
24 जन.	11	15	25 जन.	10	55
3 फर.	16	35	4 फर.	15	58
5 फर.	16	09	6 फर.	13	23
6 फर.	17	10	7 फर.	18	59
10 फर.	00	23	12 फर.	6	37
14 फर.	11	53	15 फर.	13	49
22 फर.	15	36	23 फर.	14	41
6 मार्च	2	29	7 मार्च	3	51
8 मार्च	5	54	9 मार्च	8	31
11 मार्च	14	35	13 मार्च	20	06
15 मार्च	23	33	17 मार्च	00	21
23 मार्च	18	53	24 मार्च	17	30

यमघण्टक योग
(सन् 2021-22 ई.)

यमघण्टकादि योग मंगल कार्यों का सम्पादन करने के लिए त्याज्य माने गए हैं।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
15 अप्रै.	सू.	उ.	15 अप्रै.	20	33
16 अप्रै.	सू.	उ.	16 अप्रै.	23	40
25 अप्रै.	4	23	25 अप्रै.	सू.	उ.
14 मई	सू.	उ.	14 मई	5	45
22 मई	14	06	23 मई	सू.	उ.
19 जून	सू.	उ.	19 जून	20	28
21 जून	16	45	22 जून	सू.	उ.
19 जुला	सू.	उ.	19 जुला	22	27
21 जुला	18	30	22 जुला	सू.	उ.
18 अग.	सू.	उ.	18 अग.	24	07
5 सितं.	18	07	6 सितं.	सू.	उ.
28 सितं.	20	44	29 सितं.	सू.	उ.
3 अक्तू	सू.	उ.	4 अक्तू	3	26
26 अक्तू	सू.	उ.	27 अक्तू	सू.	उ.
31 अक्तू	सू.	उ.	31 अक्तू	13	16
18 नवं.	25	29	19 नवं.	सू.	उ.
20 नवं.	4	29	20 नवं.	सू.	उ.
23 नवं.	सू.	उ.	23 नवं.	13	44
16 दिसं.	7	35	17 दिसं.	सू.	उ.
17 दिसं.	10	40	18 दिसं.	सू.	उ.
(सन् 2022 ई०)					
13 जन.	सू.	उ.	13 जन.	17	07
14 जन.	सू.	उ.	14 जन.	20	18
19 फर.	16	51	20 फर.	सू.	उ.
19 मार्च	सू.	उ.	19 मार्च	23	38
21 मार्च	21	31	22 मार्च	सू.	उ.

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योग (2021–22 ई.)

(गाड़ी, आभूषणादि बहुमूल्य वस्तुएँ खरीदने हेतु विशेष मुहूर्त्त)

'द्विपुष्कर योग' द्विगुणित और **'त्रिपुष्कर योग'** त्रिगुणित लाभ-हानिकारक होता है। यदि इन योगों में कोई अनिष्ट हो जाए या हानि हो जाए तो भी दुगुनी अथवा त्रिगुणित हानि होने की सम्भावना बन जाती है। इसी प्रकार इन योगों में यदि कोई शुभ कार्य आरम्भ या सम्पन्न किया जाए अथवा किसी प्रकार की वस्तु का क्रय किया जाए तो भविष्य में उसका द्विगुणित या त्रिगुणित होने की सम्भावना बन जाती है। इसलिए इन योगों में **बहुमूल्य एवं उपयोगी पदार्थ, वस्तुएँ जैसे**—ज़मीन-जायदाद, हीरे-जवाहरात, स्वर्ण-चाँदी के आभूषण, कार, ट्रक, स्कूटर, गाय-भैंस क्रय करना, नवीन उद्योग की स्थापना आदि करना लाभदायक रहता है।

परिहार—द्विपुष्कर/त्रिपुष्कर योगों में यदि किसी की मृत्यु हो जाए या किसी अन्य वस्तु के नष्ट होने पर शान्ति करवानी चाहिए। त्रिपुष्कर दोष की शान्ति के लिए तीन गौओं के मूल्य का धन तथा द्विपुष्कर के लिए दो गौओं के मूल्य का धन तथा तिलों द्वारा निर्मित पीठों का दान करना शुभ होगा। (वसिष्ठ)

द्विपुष्कर योग

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2021-22	घं.	मिं.	2021-22	घं.	मिं.
23 मई	12	12	24 मई	3	39
1 जून	सू.	उ.	1 जून	16	08
25 जुला	11	18	26 जुला	4	04
18 सितं.	सू.	उ.	18 सितं.	6	55
28 सितं.	सू.	उ.	28 सितं.	18	17
21 नवं.	7	36	21 नवं.	19	48
1 दिसं.	2	14	1 दिसं.	सू.	उ.
(सन् 2022 ई. में)					
25 जन.	सू.	उ.	25 जन.	7	49
19 मार्च	23	38	20 मार्च	10	07
29 मार्च	सू.	उ.	29 मार्च	11	28

गुरुपुष्य योग

प्रारम्भ काल	घं.	मिं.	समाप्ति काल	घं.	मिं.
1 अक्तू.	1	33	1 अक्तू.	सू.	उ.
28 अक्तू.	9	41	29 अक्तू.	सू.	उ.
25 नवं.	सू.	उ.	25 नवं.	18	49

रविपुष्य योग

प्रारम्भ काल	घं.	मिं.	समाप्ति काल	घं.	मिं.
13 जून	19	01	14 जून	सू.	उ.
11 जुला	सू.	उ.	12 जुला	2	22
8 अग.	सू.	उ.	8 अग.	9	19
(सन् 2022 ई. में)					
13 मार्च	20	06	14 मार्च	सू.	उ.

त्रिपुष्कर योग

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
2021-22	घं.	मिं.	2021-22	घं.	मिं.
19 अप्रै.	5	02	19 अप्रै.	सू.	उ.
24 अप्रै.	6	22	24 अप्रै.	19	18
28 अप्रै.	5	15	28 अप्रै.	सू.	उ.
2 मई	14	51	3 मई	सू.	उ.
12 जून	16	57	12 जून	20	18
22 जून	सू.	उ.	22 जून	10	22
26 जून	सू.	उ.	26 जून	18	12
6 जुला	सू.	उ.	6 जुला	15	20
15 अग	5	44	16 अग	4	26
24 अग.	सू.	उ.	24 अग.	16	05
29 अग.	3	35	30 अग.	सू.	उ.
8 सितं.	4	38	8 सितं.	सू.	उ.
17 अक्तू.	9	53	17 अक्तू.	17	40
2 नवं.	सू.	उ.	2 नवं.	11	31
21 दिसं.	सू.	उ.	21 दिसं.	14	54
26 दिसं.	5	05	26 दिसं.	20	09
(सन् 2022 ईसवी में)					
4 जन.	सू.	उ.	4 जन.	10	57
13 फर.	9	27	13 फर.	18	42
22 फर.	18	35	23 फर.	सू.	उ.
27 फर.	8	49	28 फर.	5	43
9 मार्च	00	37	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ज्वालामुखी-अशुभ योग

(वि. संवत् २०७८)

ज्वालामुखी योग का फल अशुभ माना गया है। इस योग में आरम्भ किया हुआ कार्य पूर्णतया सिद्ध नहीं हो पाता अथवा बार-बार विघ्न-बाधाएं होती हैं। इस योग में शुभ कार्य आरम्भ नहीं करने चाहिए। दुष्ट शत्रुओं पर प्रयोग करने के लिए यह मुहूर्त अच्छा समझा जाता है।

जब प्रतिपदा को मूल नक्षत्र, पंचमी को भरणी, अष्टमी को कृतिका, नवमी को रोहिणी अथवा दशमी को आश्लेषा नक्षत्र आता है, तो ज्वालामुखी योग बनता है।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
22 अप्रै.	00	36	22 अप्रै.	8	15
25 जून	00	10	25 जून	6	40
29 अग.	23	26	30 अग.	6	39
31 अग.	2	00	31 अग.	9	44
25 सितं.	10	37	25 सितं.	11	33
5 दिसं.	7	47	5 दिसं.	9	28
(सन् 2022 ई.)					
8 फर.	21	27	9 फर.	8	31
10 फर.	00	23	10 फर.	11	09
7 मार्च	3	51	7 मार्च	22	33

वि. संवत् 2078 में लाभ-हानि चक्र

(विंशोत्तरी मतानुसारेण)

आगामी वर्ष में आपको जिस राशि का लाभ-हानि का विवरण ज्ञात करना हो, तो आप निम्नलिखित चक्र में अपनी राशि के नीचे लिखे लाभ-हानि के अंकों को जमा कर दें, फिर कुल जमा जोड़ में से 1 कम करके जोड़ को 8 से भाग दे देवें। भाग करने के पश्चात् यदि 1 बचे तो आगामी वर्ष में धन लाभ अच्छा रहेगा। मनोवांछित योजनाएं सफल होंगी। मनोरंजक कार्यों की ओर रूचि बढ़ेगी। यदि शेष 2 बचे तो, धन लाभ मध्यम परन्तु विभिन्न कार्यों पर खर्च अधिक होगा। यदि शेष 3 बचें तो लाभ कम, खर्च (अपव्यय) अधिक रहेगा। व्यर्थ भाग-दौड़ अधिक रहेगी और घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। यदि शेष 4 बचें तो, मानसिक तनाव, शरीर कष्ट और रोगादि पर खर्च हो, घरेलू एवं आर्थिक समस्याएं उत्पन्न होंगी। यदि शेष 5 बचें तो लाभ कम तथा फिजूलखर्ची अधिक रहेगी। बनते कार्यों में विघ्न पड़ेगा। यदि शेष 6 बचें तो, भाग्योन्नति और धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। रुके हुए कार्यों में सफलता मिलेगी। यदि शेष 7 बचें तो, व्यापार, लॉटरी, सट्टे आदि द्वारा अकस्मात् धन लाभ होगा। ज़मीन-जायदाद आदि कार्यों पर खर्च भी रहेंगे। आय के साधनों में भी वृद्धि होगी। यदि 8 अर्थात् 0 बचे, तो उस वर्ष लाभ कम व खर्च अधिक रहेगा, मानसिक परेशानियाँ भी बढ़ने के संकेत हैं।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	२	११	२	११	१४	२	११	२	१४	८	८	१४
हानि	१४	५	५	१४	११	५	५	१४	२	५	५	२

तिथि, वार, नक्षत्रादि जनित अशुभ योगों का परिहार

(1) दुष्ट योगों के समय कोई शुभ योग भी हो, तो दुष्ट योग का परिहार हो जाता है—**अयोगो सुयोगोऽपि चेत् स्यात्तदानीमयोगं निहत्यैष सिद्धिं तनोति। परे लग्नशुद्धया कुयोगादिनाशं दिनार्द्धोत्तरं विष्टिपूर्वं च शस्तम्।।** अन्यत्रऽपि—**अयोगः सिद्धियोगश्च द्वावेतौ भवतो यदि। अयोगो हन्यते तत्र, सिद्धियोगः प्रवर्त्तते।।** (राजमार्तण्ड)

अर्थात् कुयोग के समय कोई अन्य सिद्ध्यादि सुयोग भी वर्तमान हो, तो सुयोग की विजय होकर कुयोग अकर्मण्य हो जाता है।

(2) वसिष्ठ जी अनुसार सामान्य दुष्टयोगों का अनिष्ट प्रभाव केवल दिन को ही होता है, रात्रि को नहीं। **'दिवामृत्युप्रदाः पापा दोषाः तु ऐते न रात्रिषु।।** (वसिष्ठ)

(3) मंगलवार और अश्विनी नक्षत्र के संयोग से 'सिद्धि योग' गृहप्रवेश में, शनिवार व रोहिणी नक्षत्र के संयोग से **'सिद्धियोग'** यात्रा में तथा गुरुपुष्य जनित **'सिद्धियोग' पाणिग्रहण** (विवाह) में सर्वथा त्याज्य है—[illegible] गुरुपुष्यं विवाहे च, सर्वथा परिवर्जयेत्।। (राजमार्तण्ड)

○○ व्यापारिक वस्तुओं तथा शेयर-बाज़ार में मन्दा-तेजी विचार-सन् 2021 ई. ○○

वायदा व्यापारियों के लिए आवश्यक सुझाव—व्यापारिक वस्तुओं अथवा जिन्सों के दैनिक उतार-चढ़ाव के अध्ययन के बाद ही वस्तुओं का क्रय-विक्रय करना सफल व्यापार की कुंजी है। संसार के सभी पदार्थों पर प्रभाव रखने वाले ग्रह होते हैं तथा अपने में सभी पदार्थों का समावेश करने वाली राशियां होती हैं। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशि-भोग करता है, तो उसकी हर गति का प्रभाव प्रत्येक वस्तु पर पड़ता है, क्योंकि उस समय वे पदार्थ उस ग्रह के प्रभाव में रहते हैं और वस्तु के मूल्यों में जो परिवर्तन (घटाबढ़ी) होता है, उसे हम तेजी-मन्दी कहते हैं।

ज्योतिष शास्त्र का वायदा-व्यापार से गहरा सम्बन्ध है। ध्यान रहे, हाज़िर एवं वायदा बाज़ार पर राजनीतिक, सामाजिक, प्राकृतिक एवं आजकल अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव भी अवश्य रहता है। इसके अतिरिक्त कुशल व्यापारी को अपनी वर्तमान विशोंत्तरी ग्रहदशा तथा आर्थिक सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए ही व्यापार करना चाहिए। जन्म/वर्ष कुण्डली में हानिप्रद या अनिष्ट ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें। अनुकूल ग्रह-दशा जातक को व्यवसाय में विपुल धन लाभ तथा प्रतिकूल ग्रहदशा अकस्मात् धन-हानि करवा सकती है। सदैव उतने ही लाभ की आशा करके व्यापार करें, जितनी की हानि साधारणतया उठा सकने का सामर्थ्य हो।

गतवर्षों सन् 2010 से 2020 ई. तक हमारे द्वारा निर्दिष्ट ग्रहस्थिति एवं तेजी-मन्दी के चान्सों से सोना, चाँदी, गुड़, सोयाबीन, कॉपर, तेल, लोहे, स्टील, चने तथा शेयरों से सम्बन्धित अनेक व्यापारी लाभान्वित हुए। (विशेषकर जून-जुलाई में सोने-चांदी में हुई तेजी-मन्दी से विशेष लाभ उठाया।)

आगे गोचर ग्रहों, नक्षत्रों के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं (जिन्सों) के दैनिक मन्दा-तेजी की विशेष लाइनों एवं तूफानी तेजी आदि का विवरण लिख रहे हैं। **यदि आप प्रतिमास किसी विशेष एक जिन्स (वस्तु) की दैनिक तेजी-मन्दी रिपोर्ट या वायदा हाज़िर का चांस चाहते हैं तो प्रति जिन्स की एक मास की फीस 751 रु., 2 मास की फीस 1500 रु. होगी। पूरी फीस अग्रिम ड्राफ्ट द्वारा भेजें।** रिपोर्ट लिखित रूप में रजिस्ट्री या कोरियर के माध्यम से भेज दी जाएगी। D.D. (ड्राफ्ट) या चैक या मनीआर्डर इस पते पर भेजें। **—पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी S/o स्व. पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर–144008 (पंजाब), फोन 0181-2457959**

जनवरी—वर्षारम्भ से ही उ.षा. नक्षत्र में गुरु एवं शनि का योग चल रहा है, जोकि धान्य, गेहूँ, तिल, तेल, सोयाबीन तेल आदि में तेजीकारक रहेगा। ता. 2 जन. से बुध भी उ.षा. नक्षत्र में आकर गुरु एवं शनि के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाकर उपरोक्त जिन्सों में मन्दी की जगह तेजीकारक रहेगा।

3 जन. को शुक्र धनु राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। गेहूँ, जौं, चना, बेसन आदि अन्न, सोना, चाँदी, ताँबा आदि धातुओं, वस्त्रों तथा शेयरों में भी तेजी बनेगी। रूई, सूत, कपास में पहले कुछ मन्दी बनकर शीघ्र ही तेजी का रुख बन जाएगा।

4 जन. को बुध मकर राशि में आकर गुरु एवं शनि के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाएगा। सोना, चाँदी आदि धातुओं, रुई, कपास, तेल, सोयाबीन, सरसों में एक ओर तेजी का झटका लगेगा।

6 जन. को गुरु श्रवण नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी आदि धातुओं, सरसों, घी, रुई आदि में चल रही तेजी पर ब्रेक लग सकती है। मामूली मन्दी के रियेक्शन आएंगे।

7 जन. को मकर राशिगत शनि के अस्त होने पर सभी प्रकार के अनाज, चावल, अलसी, सरसों आदि तिलहन, लोहे, जिस्त आदि धातुओं, क्रूड-ऑयल तथा शेयर्ज़ में तेजी बनेगी।

10 जन. को सूर्य उ.षा. नक्षत्र में आकर शनि के साथ तथा ता. 11 को बुध श्रवण में गुरु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। उड़द, मूँग, चावल, चना, गेहूँ, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, पिपलामूल, सरसों, सोयाबीन में तेजी का रुख बनेगा। इसी दिन बुध पश्चिम में उदित होने से घटाबढ़ी के मध्य कुछ मन्दी का झटका भी लग सकता है। तुरन्त सौदे निपटाते रहें।

14 जन. को सूर्य मकर राशि में आकर गुरु, शनि एवं बुध के साथ मेल करेगा। इसी दिन शुक्र पू.षा. नक्षत्र में भी आएगा। इस 'चतुर्ग्रही योग' के कारण बाज़ारों में अच्छी घटाबढ़ी के मध्य तेजी का रुख रहेगा। घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, रुई, दूध, गर्म वस्त्र, हल्दी, चने तथा **सभी करियाना वस्तुओं में तेज़ी की ज़बरदस्त लाईन चलेगी। इन दिनों अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक कारण भी इस तेजी को बढ़ावा देंगे। शेयर-बाज़ार में भी ज़बरदस्त उथल-पुथल रहेगी।**

17 जन. को गुरु पश्चिम में अस्त होने से सोने, चाँदी में कुछ मन्दी, रुई तथा शेयरों में तेजी बनेगी।

19 जन. को बुध धनिष्ठा नक्षत्र में आकर भी सोना, चाँदी में मन्दी, परन्तु चावल, रूई, बैंकिंग शेयर्ज़ में कुछ तेजी करेगा।

21 जन. को गुरु श्रवण (2) में आने से गुड़, खाण्ड, सोना, चाँदी तथा अनाजों में थोड़ी मन्दी बनेगी।

22 जन. को मंगल भरणी नक्षत्र में आएगा। इसी दिन शनि श्रवण नक्षत्र में आकर गुरु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। **यह योग ज़बरदस्त तेजी की ओर संकेत कर रहा है। पहले से ही आपके पास स्टॉक (माल) होना चाहिए।** क्योंकि तेजी की यह लाईन

एक सप्ताह तक भी चल सकती है। सावधानीपूर्वक सौदे करें। गेहूँ आदि अनाजों, अलसी, गुड़, खाण्ड, सोना, चाँदी आदि धातुओं, रुई, कपास, मिर्च, काली मिर्च, लौंग, हल्दी, क्रूड-आयल में अच्छी तेजी बनेगी।

23 जन. को सूर्य श्रवण नक्षत्र में आकर गुरु एवं शनि के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। **ध्यान रहे,** तीनों ग्रह 11 फर. तक मकर राशि में एक साथ रहेंगे। इन तीनों ग्रहों से सम्बन्धित वस्तुओं, जिन्सों में विशेष तेजी का रुख रहेगा। गेहूँ, जौं, चावल, रुई, सूत, सन, सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सुपारी, लौंग, पीपल, घी, चना में तेजी बनेगी।

25 जन. को बुध कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा। इसी दिन शुक्र उ.षा. नक्षत्र में आएगा। घी, तैल, सोयाबीन, गुड़, खाण्ड में तेजी, परन्तु सोना-चाँदी आदि धातुओं में घटाबढ़ी के मध्य पहले मन्दी, फिर तेजी बनेगी।

27 जन. को शुक्र मकर राशि में आकर सूर्य, गुरु-शनि के साथ मेल करके **'चतुर्ग्रही योग'** बनाएगा। **इस आने वाली भयंकर तेजी का तुरन्त लाभ लेकर निकल जाएं।** सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, घी, चना, गेहूँ आदि सभी अनाजों में ज़बरदस्त तेजी बने। रुई, चाँदी में अच्छी घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

30 जन. को **कुम्भ राशिगत बुध वक्री** होने से तेल, तिलहन, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, चाँदी, **बैंकिंग शेयर्ज़ में शीघ्र ही तेजी का झटका लगेगा।**

[**विशेष**—ता. 23 जन. से वायदा एवं हाजिर बाज़ार में मुख्यत: तेजी का विचार ही रखें।]

☞ फरवरी—मासारम्भ ता. 2 को ही वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से चाँदी, रूई तथा शेयरों में तेजी का झटका लगे, परन्तु रुई, कपास, क्रूड, मूंग आदि दालों में मन्दी बने।

4 फर. को वक्री बुध मकर राशि में आकर सूर्य-गुरु-शुक्र-शनि ग्रहों के साथ **'पंचग्रही योग'** बनाएगा। इसी दिन शुक्र श्रवण नक्षत्र में आकर सूर्य-गुरु-शनि ग्रहों के साथ एकनक्षत्र बनाएगा तथा गुरु श्रवण (3) में प्रवेश करेगा। **ग्रहयोग ज़बरदस्त तेजी का है। विश्व में अप्रत्याशित राजनैतिक एवं सामाजिक घटनाएं घटित होंगी।** सोना, रुई, चाँदी, धान्यादि सभी प्रकार के अनाजों, बैंकिंग शेयर्ज़, मूंग, हल्दी, काली मिर्च, नमक, नारियल, उड़द आदि दालों में अच्छी तेजी का चाँस है।

6 फर. को सूर्य धनिष्ठा नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी आदि धातुओं, मणि, मोती आदि जवाहरात, मूँग, मसूर, गेहूँ आदि अनाजों, अलसी, रुई, लोहे, बिनौले, सोयाबीन में तेजी बनेगी।

8 फर. को शुक्र पूर्व में अस्त होने से रुई, चाँदी, घी, चीनी में पहले थोड़ी मन्दी बनकर बाद में मामूली तेजी बनेगी। सोना, ताँबा, पीतल, जिस्त, हींग, केसर में तेजी बनेगी।

9 फर. को शनि पूर्व में उदय होने तथा 10 फर. को वक्री बुध श्रवण नक्षत्र में आकर गुरु-शुक्र एवं शनि ग्रहों के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। गुड़, खाण्ड, अलसी, चना, चावल, शेयर्ज़, लोहे, जिस्त, क्रूड-ऑयल, तेल, सरसों में तेजी बनेगी।

12 फर. को सूर्य कुम्भ राशि में आएगा। यद्यपि पंचग्रही योग समाप्त होगा, परन्तु मकर राशि में अभी भी ता. 20 तक चतुर्ग्रही योग रहेगा। बाज़ार में कई जिन्सों की लाईन में परिवर्तन होगा। क्रूड-ऑयल, सरसों, गुड़, लोहा, गेहूँ आदि में तेजी बनेगी। घी, नमक, सोयाबीन तेल आदि में भी तेजी बने। जबकि शक्कर, चीनी आदि कुछ जिन्सों में मन्दी की लाईन चल सकती है।

13 फर. को शनिवारी चन्द्रदर्शन रुई, सूत, वस्त्र, चाँदी, सोना, सरसों, मूँगफली, अन्न आदि में तेजी रहे।

14 फर. को बुध एवं गुरु-दोनों पूर्व में उदय होंगे। दोनों इस समय मकर राशि में हैं। सोना, चाँदी, मूंग, घी, चना, हल्दी, तिल, ज्वार, जौं, रुई, कपास में तेजी बनेगी।

15 फर. को शुक्र धनिष्ठा नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। चावल, मूँग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, सोना, चाँदी, रुई, कपास में तेजी बनेगी।

16 फर. को मंगल कृतिका नक्षत्र में आने से गेहूँ, मूँग, मोठ, चावल, राई, मसूर, तिल, तेल, सरसों, घी, चाँदी, सूत, वस्त्र में तेजी, रूई में पहले तेजी, फिर मन्दी बने।

19 फर. को सूर्य शतभिषा नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी, मोती, मणि आदि जवाहरात, मूँग, मसूर, गेहूँ आदि अनाजों, अलसी, रुई में तेजी बनेगी।

20 फर. को शुक्र कुम्भ राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। रूई, चाँदी, गुड़, खाण्ड, गेहूँ, चना, जौं, मूंग, ज्वार, बाजरा आदि में मन्दी की जगह तेजी का ही रुख रहेगा।

21 फर. को बुध मार्गी होने से रूई, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी। गेहूँ, जौं, चना, अनाज में तेजी बने। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित वस्तुओं में मन्दी बनेगी।

22 फर. को मंगल वृष राशि में आकर राहु के साथ योग करेगा। यह योग भी ज़ोरदार तेजी का है। शीघ्र ही लाल चन्दन, लाल रंग की वस्तुएँ, सभी प्रकार के अनाज, रूई, कपास, सूत, कुसुंभ, चन्दन, कपूर, केसर, तेल, सोना, चाँदी, ताँबा, जिस्त आदि धातुओं तथा शेयरों में अच्छी ज़ोरदार तेजी का झटका लगेगा। परन्तु मंगल राहु पर गुरु की दृष्टि होने से शेयरों में अचानक मन्दी का झटका भी लग सकता है। घटाबढ़ी के मध्य तेजी का यह रुख ता. 25 तक चलेगा।

26 फर. को शुक्र शतभिषा नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। फलत: गेहूँ, गुड़, खाण्ड, चावल, घी, सरसों, रुई, सोना, चाँदी में तेजी बनेगी।

घटाबढ़ी के मध्य तेजी का यह रुख मासान्त तक चलेगा।

☞ मार्च—मासारम्भ में ग्रहस्थिति अनुसार किरयाना, धातु तथा शेयर बाज़ार में तेजी का रुख रहेगा।

4 मार्च को सूर्य पू.भा. नक्षत्र में आने से रेशम, सोना, चाँदी, गेहूँ, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तैल, गुड़, खाण्ड, गुग्गुल, रूई में पुन: मामूली तेजी का झटका लगेगा। परन्तु इसी दिन गुरु धनिष्ठा नक्षत्र में आने से गेहूँ, चावल, जौं, चना आदि में कुछ मन्दी बन सकती है, इसलिए सावधानीपूर्वक कार्य करें।

5 मार्च को बुध धनिष्ठा नक्षत्र में आकर गुरु के साथ योग करेगा। चावल, जिस्त में तेजी, सोना-चाँदी में मन्दी तथा रुई, घी, हल्दी, मूंग में घटाबढ़ी रहेगी।

8 मार्च को शुक्र पू.भा. में आकर सूर्य के साथ योग करेगा। रुई, चाँदी, खाण्ड, चन्दन शक्कर में तेजी बनेगी।

11 मार्च को बुध कुम्भ राशि में आकर सूर्य एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। इसी दिन मंगल रोहिणी नक्षत्र में आकर राहु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। दोनों योग तेजीकारक हैं। रुई, चाँदी, घी, बैंकिंग शेयर्ज़ में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। गुड़, खाण्ड, तिल, तैल, रेशम, सरसों, लाल-मिर्च, हींग में अच्छी तेजी बनेगी।

14 मार्च को सूर्य मीन राशि में आकर शनि द्वारा दृष्ट रहेगा। तिल, तेल, अलसी, सरसों, खाण्ड, गुड़, शक्कर, रुई, सोना, चाँदी, गेहूँ आदि अनाजों, ताँबा, जिस्त में तेजी बनेगी। इसी दिन रविवारी चन्द्रदर्शन तेजीकारक रहेगा।

16 मार्च को शुक्र भी मीन राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की विशेष दृष्टि रहने से अनाज, सरसों, तेल, तिलहन, अलसी, एरण्डी, गुड़, खाण्ड, चाँदी में ज़बरदस्त तेजी का झटका लग सकता है। **यद्यपि अकेला शुक्र यहाँ मन्दी करता है, परन्तु क्रूर ग्रहयोग से यहाँ तेजी की ही सम्भावना है।** इसी दिन बुध शतभिषा में आकर यद्यपि सोना, चाँदी में घटाबढ़ी भी करेगा।

17 मार्च को सूर्य उ.भा. नक्षत्र में आने से चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूँ, तेल में तेजी करेगा।

19 मार्च को शुक्र उ.भा. नक्षत्र में सूर्य के साथ आएगा। फलतः यहाँ भी मन्दी की जगह चावल, मोती, चाँदी, कपूर, नमक, खाण्ड, रुई, कपास, दूध, घी में तेजी बनेगी।

20 मार्च को गुरु धनिष्ठा (2) में आने से गेहूँ, जौं, चावल, में मन्दी तथा रुई, कपासादि में घटाबढ़ी के बाद मामूली तेजी बने। घटाबढ़ी के मध्य मामूली मन्दी का यह रुख ता. 24 मार्च तक रहेगा।

25 मार्च को बुध पू.भा. नक्षत्र में तथा शनि श्रवण (3) में आने से गुड़, खाण्ड, नमक, गेहूँ आदि अनाजों, अलसी में विशेष तेजी बनेगी। सोना, चाँदी, मूँग, बाजरा, खल, मसूर आदि में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

30 मार्च को शुक्र रेवती नक्षत्र, राहु रोहि. (3)-केतु ज्येष्ठा (1) में आएंगे। सूर्य-शुक्र पर शनि की दृष्टि तथा मंगल-राहु का योग बना हुआ है। अतएव सोना, चाँदी, रूई, कपास, चन्दन, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर, जवाहरात आदि में मन्दी की जगह तेजी का रुझान बनेगा।

31 मार्च को सूर्य भी रेवती में आकर शुक्र के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। मीनस्थ सूर्य-शुक्र पर शनि की दृष्टि है। इसी दिन रात्रि को बुध भी मीन राशि में आकर सूर्य-शुक्र के साथ होगा। शीघ्र ही अलसी, सरसों, एरण्ड, मूँगफली, लहसुन, मोती, लाख, रुई, गेहूँ, जौं, चना, चावल, बिनौला में घटाबढ़ी के मध्य तेजी के झटके लगेंगे। शीघ्र लाभ लेकर निकल जाएं।

☞ अप्रैल-2 अप्रैल को मंगल मृगशिर तथा बुध उ.भा. नक्षत्र में आने से तिल, चाँदी, शहद, गुड़ में तेजी, शेयर बाज़ार तथा अन्य व्यापारिक वस्तुओं में कुछ मन्दी का झटका लगेगा।

5 अप्रैल को गुरु कुम्भ राशि में आने से रुई, चाँदी में तेजी दिखकर शीघ्र ही मन्दी का रुख बन जाएगा। सोना, ताँबा, पीतल, काँसा, लोहा, शीशा, वस्त्रों, क्रूड-ऑयल में 1-2 मास तक मुख्यतः मन्दी का रुझान रहकर फिर तेजी का रुख बनता है। **अतः सावधानी अनुसार बाज़ार के रुख के मुताबिक ही चलें।**

6 अप्रैल को बुध पूर्व में अस्त होने से अनाज, घी, मूँग आदि में मन्दी, रुई-सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

10 अप्रैल को बुध रेवती नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा तथा शुक्र इसी समय मेष राशि में आएगा। गेहूँ, चना, गेहूँ आदि अन्न, घी, सोना, चाँदी में विशेष तेजी का झटका लगेगा। गुड़, शक्कर, बारदाना, केसर, मजीठ, लाल-चन्दन, लाल-मिर्च आदि में भी घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

13 अप्रैल को सूर्य अश्विनी नक्षत्र तथा मेष राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। **इसी दिन मंगल मिथुन राशि में आकर शनि के साथ षडाष्टक सम्बन्ध बनाएगा। दोनों योग तेजीकारक हैं।** रुई, कपास, सूत, घी, तेल, तिल, सरसों, नारियल, सुपारी, बादाम, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, चाँदी, उड़द, क्रूड-ऑयल, लोहा, सोयाबीन ऑयल में तेजी बनेगी। चावल, अरहर, चना, मूँग आदि कुछ वस्तुओं में मन्दी भी बनेगी। सावधानीपूर्वक सौदे करें।

16 अप्रैल को बुध भी मेष राशि में आकर सूर्य एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। अकेला बुध यद्यपि यहाँ मन्दीकारक होता है। परन्तु ग्रहयोग से यहाँ मन्दी की जगह तेजी बनेगी। सोना, चाँदी आदि धातुओं, गेहूँ, चना, जौं आदि अन्न, तिल, तेल, सरसों, रूई, कपास, घी, गुड़, खाण्ड में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

18 अप्रैल को शुक्र पश्चिम में उदय होने से घी, खाण्ड में मामूली मन्दी, रुई, वस्त्र, सूत, सन्, सोना, चाँदी, तिल, चावल में तेजी बनेगी।

20 अप्रैल को शुक्र भरणी में आने से सोना, चाँदी, अफीम, लाल रंग की जिन्सें, सरसों, तिल, तेल, अलसी, घी, उड़द, नारियल में मन्दी, जबकि चना, मूँग, मोठ, ज्वार, तूअर, रुई, कपास में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

22 अप्रैल को बुध भरणी नक्षत्र में आकर शुक्र के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। चावल, गेहूँ आदि अनाजों, चने, में 8 दिनों के भीतर अच्छी तेजी बनेगी।

24 अप्रैल को मंगल आर्द्रा में आने से रुई, सूत, कपास, अलसी, एरण्ड, गुड़, खाण्ड तिल, तेल, नमक में तेजी बनेगी। चाँदी, घी कुछ मन्दे रहें।

25 अप्रैल को गुरु धनिष्ठा (4) में आने से गेहूँ, चावल, जौं, चना, घी हल्दी, सोने में कुछ मन्दी बने।

29 अप्रैल को बुध कृतिका में आने से चाँदी, अफीम, शेयर्ज़ में विशेष घटाबढ़ी होकर मन्दी बने, अनाज-रुई में तेजी बनेगी।

30 अप्रैल को बुध वृष राशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा। यह योग विशेष घटाबढ़ी करके मामूली या अधिक तेजी लेकर आएगा। रुई, गेहूँ, जौं, चना, चावल, मटर, रूई, कपास, सूत, अफीम, तिल, तेल आदि में अच्छी घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। इसी दिन बुध पश्चिमोदय होने से सोने, चाँदी, बैंकिंग शेयर्ज़ में अच्छी घटाबढ़ी रहेगी।

☞ मई—1 मई को शुक्र कृतिका नक्षत्र में आकर बुध के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। जौं, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, रुई, सूत, वस्त्र, चाँदी, सोना, हीरा, मणि, मोती आदि जवाहरात में मन्दी की जगह तेजी बनेगी।

4 मई को शुक्र भी वृष राशि में आकर बुध एवं राहु के साथ मेल करेगा। सोना, चाँदी, खाण्ड, चावल, घी में झटके की तेजी बनेगी।

6 मई को बुध रोहिणी में आकर राहु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। रुई, कपास, सूत, सोना, चाँदी, तिल, तेल, सरसों, चावल, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी। रूई, ऊनी वस्त्रों, धागों में पहले तेजी बनकर बाद में मन्दी बन जाएगी।

11 मई को सूर्य कृतिका नक्षत्र में आएगा। घी, रुई, सोना, चाँदी, अलसी, एरण्ड, गेहूँ, जौं, चना, मूँग, मोठ, चावल, राई, सरसों, खाण्ड में तेजी बनेगी।

12 मई को शुक्र भी रोहिणी नक्षत्र में आकर बुध एवं राहु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। अकेला शुक्र यद्यपि यहाँ मन्दी करता है, परन्तु बुध-राहु के योग से यहाँ तेजी मालूम होती है। सोना, चाँदी आदि धातुओं, अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, दाख, छुआरा, सुपारी, नारियल, ऊन आदि में पहले मन्दी बन फिर तेजी का रुख बन जाएगा।

13 मई को गुरुवार के दिन चन्द्रदर्शन होने से रुई, सूत तथा सूती, रेशमी, ऊनी-वस्त्र, सरसों, तेल, घी में तेजी बने। सोना, चाँदी, खाण्ड, गुड़ में कुछ मन्दी बने।

14 मई को सूर्य वृष राशि में आकर बुध, शुक्र व राहु के साथ मेल करेगा। सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रूई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, **तिल, तेल, सरसों आदि में विशेष तेजी बनेगी।** जौं, चना, गेहूँ, मटर, अरहर, मूँग, चावलादि कुछ वस्तुओं में मन्दी बनेगी।

16 मई को मंगल पुनर्वसु तथा बुध मृगशिर नक्षत्र में आने से रुई, चाँदी, नमक, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों में तेजी बनेगी। परन्तु शीघ्र ही मन्दी का झटका लग सकता है। तेजी-मन्दी के रिएक्शन आते रहेंगे। समझ से कार्य करें।

23 मई को शुक्र मृगशिर नक्षत्र में आकर बुध के साथ एकनक्षत्र बनाएगा। इसी दिन मकरस्थ शनि वक्री भी होगा। गुड़, खाण्ड, शक्कर, क्रूड-ऑयल, सोने में विशेष भयंकर तेजी बनेगी। शनि पर मंगल की दृष्टि भी चल रही है। क्रूड, सरसों, गुड़ में तूफानी तेजी का झटका लगेगा परन्तु गेहूँ, चना, ज्वार, घी आदि कुछ वस्तुओं में मन्दी का रुख भी बन सकता है।

25 मई को सूर्य रोहिणी नक्षत्र में आकर राहु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूँ, जौं, चना, ज्वार, बाजरा, ऊन, सूत, वस्त्र, सन, सुपारी, मिर्च, राई में तेज़ी, चाँदी तथा शेयर्ज में मन्दी बने।

26 मई को बुध मिथुन राशि में आकर मंगल के साथ योग करेगा। सोना, चाँदी, रुई में मन्दी बनकर शीघ्र ही तेजी बन जाएगी। सरसों, गुड़, सोयाबीन में भी घटाबढ़ी के बाद मामूली तेजी बनेगी।

28 मई को शुक्र मिथुन राशि में आकर मंगल एवं बुध के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की दृष्टि रहेगी। यद्यपि अकेला शुक्र यहाँ मन्दीकारक होता है, परन्तु यहाँ शत्रु ग्रहों का दृष्टि सम्बन्ध बाजार को तेजी प्रदान करते रहेगा। गेहूँ, चना, जौं, चावल, गुड़, घी, चाँदी में तेजी बनेगी। रूई, कपास, सूत, अरण्डी, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार में पहले मन्दी के बाद तेजी बनेगी।

30 मई को बुध वक्री होने से घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, बैंकिंग शेयर्ज, Nifty, मूँग, चाँदी में तेजी का रुख बनेगा।

☞ जून—ता. 1 को राहु रोहिणी (2) तथा केतु अनुराधा (4) में आने से सरसों, सोयाबीन, तेल, राई, मिर्च, रूई में तेजी बनेगी।

2 जून को मंगल अपनी नीच राशि (कर्क) में आकर शनि के साथ समसप्तक योग बनाएगा। इसी दिन वक्री बुध वृष राशि में आकर सूर्य-राहु के साथ मेल करेगा तथा पश्चिम में अस्त भी हो जाएगा। गेहूँ, जौं, चना, चावल, मटर, रूई, कपास, सूत, अफीम, तिल, तेल आदि गुड़, **अलसी, क्रूयड, ताँबा में विशेष तथा अन्य करियाना वस्तुओं में भी तेजी का बोलबाला रहेगा।**

3 जून को शुक्र आर्द्रा में आने से गेहूँ आदि अनाजों, चने आदि के भावों में विशेष परिवर्तन नहीं होंगे।

7 जून को मंगल पुष्य नक्षत्र में आने से चाँदी व रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी तथा सोने, ताँबे में ज़ोरदार तेजी बनेगी।

8 जून को सूर्य मृगशिर नक्षत्र में आने से रुई, सूत, रेशम, सन, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चाँदी, उड़द, मूँग, मोठ, चने, बाजरा, अलसी, सभी फलों में तेजी बनेगी।

11 जून, शुक्रवार वाले दिन चन्द्रदर्शन होने से सरसों, तिल, तेल, गेहूँ, चावल, उड़द, चना, ऊनी वस्त्र तथा ऊन में मन्दी बने। रुई, चाँदी, सोना में घटावढ़ी होकर बाद में तेजी बने।

14 जून को शुक्र पुनर्वसु नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी, रुई, कपास, सूत में मन्दी, धान्य, बिनौला तेज होंगे।

15 जून को सूर्य मिथुन राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की दृष्टि रहेगी। रेशम, सूत, कपास, रूई, सरसों, लोहा, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, मूँग, उड़द, गेहूँ, चावल आदि सभी प्रकार के अनाजों, सोना-चाँदी में तेजी का झटका लगकर शीघ्र ही 1-2 दिन बाद मन्दी का रुख भी बन सकता है।

16 जून को वक्री बुध रोहिणी नक्षत्र में आकर राहु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। रुई, कपास, सूत, सोना, चाँदी, तिल, तेल, सरसों, चावल, गुड़, खाण्ड में अच्छी घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

20 जून को वक्री बुध पूर्व में उदय होगा। इसी दिन कुम्भ राशिगत गुरु वक्री होने से घी, हल्दी, चना, पीली दालें, चाँदी में झटके की तेजी बनेगी।

22 जून को सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में आएगा। इसी दिन शुक्र कर्क राशि में आकर मंगल के

साथ मेल करेगा। **मंगल-शुक्र का शनि के साथ समसप्तक योग रहेगा। अतएव ग्रहयोग अनुसार यहाँ तेजी ही बनेगी।** अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चना, रूई, सूत, कपास, खल, चाँदी में तेजी बनेगी। क्रूड-ऑयल भी तेज रहे।

25 जून को शुक्र पुष्य नक्षत्र में आने से रुई, सूत, सन, रेशम, ऊन व धान्य में तेजी बने, लाख, चमड़ा, कपूर, पारा, हींग, गुड़, खाण्ड, शक्कर में थोड़ी मन्दी बने।

28 जून को बुध मृगशिर नक्षत्र में आने से रूई में तेजी, चाँदी, घी में घटाबढ़ी होकर मन्दी तथा गेहूँ, तिल, सरसों, उड़द में मन्दी बनेगी।

29 जून को मंगल आश्लेषा नक्षत्र में आने से तेजी के वातावरण में चाँदी, रूई में मामूली मन्दी, गेहूँ, चावल आदि अनाजों में तेजी बनेगी।

☞ जुलाई—मासारम्भ से 5 जुला. तक ग्रहस्थिति अनुसार तेजी का ही वातावरण रहेगा। वायदा एवं हाजिर बाज़ार में तेजी का रुख रहेगा।

6 जुला. को सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र में आने से रूई, सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, लाख, देवदारू, लाख, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, सब्जी, हरड़, सुपारी, नारियल, केसर, मजीठ, नील, गुग्गुल आदि सुगन्धित पदार्थों में तेजी होगी। इसी दिन शुक्र आश्लेषा में आकर रुई, चावल में कुछ मन्दी कर सकता है, सावधान रहें।

7 जुला. को बुध मिथुन राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। गुरु की इन पर दृष्टि रहेगी। रुई, सोना, चाँदी, मूँग, शेयर्ज़ (विशेषकर बैंकिंग शेयर्ज़) में घटाबढ़ी के मध्य पहले तेजी बनकर शीघ्र ही मन्दी बनेगी। घटाबढ़ी के मध्य मन्दी का यह रुख 10 जुला. तक रहेगा।

11 जुला., रविवार को चन्द्रदर्शन होने से गुड़, तेल, सोना, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। वर्षा में रुकावट रहे।

12 जुला. को बुध आर्द्रा नक्षत्र में आने से गेहूँ, तिल, उड़द, जौं, चना, मूँग, मोठ में मन्दी रहेगी।

16 जुला. को सूर्य कर्क राशि में आकर मंगल एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। इनका (सू.+मं.+शु.) शनि के साथ समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध रहने से कुछ वस्तुओं में तेजी का रुख बनने पर तूफानी तेजी भी बन सकती है। तुरन्त लाभ उठाएं। सोना, चाँदी, रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तैल, एरण्ड, सरसों आदि, लाल रंग की वस्तुओं, क्रूड-आयल में तूफ़ानी तेजी बनेगी।

17 जुला. को शुक्र सिंह राशि में आकर गुरु के साथ समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध बनाएगा। सोना, ताँबा, जौं, चना, गेहूँ, लाल-चन्दन, मजीठ, लाल-मिर्च, लाल रंग की वस्तुओं, घी, रसादि पदार्थों में ज़बरदस्त घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

19 जुला. को सूर्य पुष्य नक्षत्र में आने से शीघ्र ही तिल, तेल, सरसों, खाण्ड, चावल, गेहूँ, जौं, ज्वार, बाजरा, सुपारी, सोंठ, गुग्गुल, मोम, हींग, हल्दी, लाख, सन, ऊनी वस्त्र, सिक्का, सोना, चाँदी में तेजी बनेगी।

20 जुला. को मंगल सिंह राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा तथा इनका गुरु के साथ समसप्तक सम्बन्ध रहेगा। इसी दिन बुध पुनर्वसु तथा वक्री गुरु धनिष्ठा नक्षत्र में आएगा। सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा आदि धातुओं, गुड़, शक्कर, खाण्ड, गेहूँ, अलसी, रुई, लाल-वस्त्र, लाल-मिर्च, **लाल रंग की वस्तुओं में तेजी**, चने, रूई, कपास में कुछ मन्दी बनेगी।

21 जुला. को बुध पूर्व में अस्त होने से गेहूँ, चावल, चना आदि अनाजों, घी में मन्दी, रुई, में घटाबढ़ी के मध्य मन्दी बनकर तेजी बने, सोने, ताम्बे में तेजी बनेगी।

24 जुला. को वक्री शनि श्रवण (2) में आने से गेहूँ आदि अनाजों, अलसी, गुड़, खाण्ड, तेल, सोयाबीन में तेजी, परन्तु क्रूड में मन्दी बनेगी।

25 जुला. को बुध कर्क राशि में आकर सूर्य के साथ एकराशिस्थ होगा। इनका शनि के साथ समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध रहेगा। चाँदी, गुड़, दूध, तेल, मूँगफली, सरसों, सोने, ताम्बा, मूँग, अरहर आदि दालों तथा सभी किरयाना वस्तुओं में तेजी का झटका लगेगा।

26 जुला. को बुध पुष्य नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। इन पर शनि की दृष्टि चल रही है। सोना, चाँदी, जवाहरात, मूँग, बैंकिंग शेयर्ज़, सुपारी, बाजरा, इलायची में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

28 जुला. को शुक्र पू.फा. में आने से गेहूं, जौं, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूँग, चना में कुछ मन्दी बनेगी।

☞ अगस्त—2 अग. को सूर्य एवं बुध-दोनों आश्लेषा नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी, रुई, बिनौला,गेहूँ, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च, मजीठ में घटाबढी के बाद तेजी बनेगी।

3 अग. को राहु रोहिणी (1) तथा केतु अनुराधा (3) में आने से घी, चावल, सरसों, चाँदी में तेजी बनेगी। घटाबढ़ी के मध्य 7 अग. तक मध्यम तेजी का रुख रहेगा।

8 अग. को बुध मघा नक्षत्र तथा सिंह राशि में आकर मंगल एवं शुक्र के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाएगा। इनका गुरु के साथ समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध रहेगा। सोना, चाँदी, सूत, रूई व ऊनी वस्त्र, ईमली आदि खट्टे पदार्थों में तेजी बनेगी। गुड़, खाण्ड, शक्कर में कुछ मन्दी बने।

10 अग. को मंगल पू.फा. नक्षत्र में आने से तिल, तेल, सरसों, मूँगफली, घी, गुड़, खाण्ड, नमक में तेजी बनेगी।

11 अग. को शुक्र कन्या (नीच) राशि में आएगा। चाँदी में घटाबढ़ी होकर तेजी बने, गेहूँ, चावल आदि सभी प्रकार के अनाज, गुड़, खाण्ड व ऊनी, रेशमी वस्त्रों में तेजी बनेगी। **चावलों में विशेष तेजी का झटका लगेगा।**

15 अग. को बुध पश्चिम में उदय होने से बाज़ारों में मन्दी का रुख बनेगा। रुई, शेयर-बाज़ार एवं अनाजों में अचानक मन्दा बनेगा। व्यापारी सावधान रहें।

16 अग. को सूर्य मघा नक्षत्र तथा सिंह राशि में आकर मंगल एवं बुध के साथ मेल करेगा। इनका गुरु के साथ समसप्तक योग रहेगा। **सोना, चाँदी, रुई, गुड़, खाण्ड,**

शक्कर, तिल, तैल, एरण्ड, सरसों आदि तथा लाल वर्ण की वस्तुएँ तेज भाव होंगी। इसी दिन बुध पू.फा. में आने से गुड़, खाण्ड, गेहूँ आदि अनाजों में कुछ मन्दी कर सकता है, सावधानीपूर्वक सौदे करें।

17 अग. को मंगल पश्चिम में अस्त होने से गेहूँ, अलसी, जौं, चना, गुड़, सोने में तेजी बनेगी। रुई में मन्दी बने।

18 अग. को वक्री गुरु धनिष्ठा (3) में आने से गेहूँ, जौं, चना, चावल, चने की दाल में मन्दी बनेगी।

19 अग. को शुक्र हस्त नक्षत्र में आने से रुई, चाँदी, चावल, खाण्ड, गुड़, शक्कर में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बने, सोना-चाँदी तेज रहेंगे।

24 अग. को बुध उ.फा. नक्षत्र में आने से उड़द, मूँग, मोठ, मसूर, अरहर में कुछ तेजी बनेगी। चाँदी, घी में मन्दी रहे।

26 अग. को बुध कन्या राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। गेहूँ, जौं, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी, मूँग, बैंकिंग शेयर्ज में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। रुई, चाँदी में कुछ मन्दी बन सकती है।

30 अग. को सूर्य पू.फा. नक्षत्र में आकर मंगल के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूँ,. ज्वार, चावल, ऊनी-कपड़ा, रुई में तेजी बनेगी। चाँदी में घटाबढ़ी रहे।

31 अग. को मंगल उ.फा. नक्षत्र में आकर बुध के साथ मेल करेगा। इसी दिन शुक्र चित्रा में आएगा। गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, चाँदी में अच्छी तेजी बनेगी।

☞ सितम्बर—2 सितंबर को बुध हस्त में आने से गेहूँ, चावल, चना आदि अनाजों, दालों, खाण्ड में मन्दी बनेगी।

5 सितं. को मंगल कन्या राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। इसी दिन शुक्र तुला राशि में आकर शनि की दृष्टि में आएगा। अकेला शुक्र यद्यपि यहाँ मन्दी करता है, परन्तु शनि की दृष्टि के कारण यहाँ तेजी बनेगी। रुई, चाँदी, सोना, ऊनी वस्त्रों, गेहूँ, चावल आदि अनाजों, गुड़, सरसों, खाण्ड तथा लाल रंग की वस्तुओं में तेजी का वातावरण बनेगा।

8 सितं., बुधवार को चन्द्रदर्शन होने से सोना, चाँदी, रुई, सूत, वस्त्र, बारदाना, जूट आदि गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दी, घी तथा अनाज में तेजी बनेगी।

11 सितं. को शुक्र स्वाती नक्षत्र में आने से गुड़, खाण्ड, चीनी, चावल, शक्कर में तेजी बनेगी।

13 सितं. को सूर्य उ.फा. नक्षत्र में आकर मंगल के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। इसीदिन बुध चित्रा तथा वक्री शनि श्रवण नक्षत्र में आएगा। गेहूँ, चावल आदि अनाजों, अलसी, रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चाँदी, लोहा, घी, तेल, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, नील में तेजी का वातावरण बनेगा।

14 सितं. को वक्री गुरु मकर राशि में आकर शनि के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाएगा। शीघ्र ही जौं, चना, गेहूँ, कपूर, चन्दन, मूँगफली, सोना, चाँदी, ताँबा, सरसों, हींग, क्रूड-ऑयल में तेजी बनेगी। शीघ्र लाभ लेकर निकल जाएं। क्योंकि जल्दी ही मन्दी का झटका लग सकता है।

16 सितं. को सूर्य कन्या राशि में आकर मंगल एवं बुध के साथ मेल करेगा। रुई, नारियल, सुपारी, तिल, तैल, मजीठ, लाल मिर्च आदि लाल वस्तुओं में तेजी बनेगी। चाँदी, शेयरों में मन्दी बनेगी।

21 सितं. को मंगल हस्त नक्षत्र में आने से घी, चना, गुड़, खाण्ड, नमक, चावल आदि धान्य में तेजी बनेगी। परन्तु श्राद्ध-पक्ष प्रारम्भ होने से कुछ करियाना वस्तुओं में मन्दी का रुख भी रहेगा।

22 सितं. को बुध तुला राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की दृष्टि रहेगी। रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, अफीम, बैंकिंग शेयर्ज़ में अच्छी तेजी बनेगी। चाँदी, सरसों, मूंगफली, बिनौला में कुछ कम तेजी बनेगी।

23 सितं. को शुक्र विशाखा नक्षत्र में आने से गुड़, खाण्ड, चावल, नमक आदि में मन्दी बनेगी।

27 सितं. को सूर्य हस्त नक्षत्र में आकर मंगल के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। इसीदिन तुलाराशिगत बुध वक्री भी होगा। गेहूँ, जौं, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, रूई, सूत, नमक, हरड़, हींग, धनिया, हल्दी में तेजी बनेगी। गेहूँ, जौं, चना आदि अनाज कुछ मन्दे होंगे।

मासान्त तक बाज़ार घटाबढ़ी के मध्य साधारण रूप से तेज होंगे।

☞ अक्तूबर—मासारम्भ ता. 1 को ही वक्री बुध कन्या राशि में आकर सूर्य एवं मंगल के साथ मेल करेगा। यहाँ तेजी एवं घटाबढ़ी को बल मिलेगा। गेहूँ, जौं, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी, रूई, चाँदी में तेजी बनेगी।

2 अक्तू. को शुक्र वृश्चिक राशि में आकर केतु के साथ मेल करेगा। गेहूँ, जौं, उड़द, मूँग, गुड़, मोंठ, बाजरा आदि में ज़बरदस्त तेजी का झटका लगेगा। **रुई, शेयर्ज़, चाँदी में कुछ मन्दी रहे।**

3 अक्तू. को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से चाँदी, रुई, बैंकिंग शेयर्ज़, हल्दी, घी में तेजी का झटका लगेगा।

5 अक्तू. को राहु कृतिका (4)-केतु अनुराधा (2) में आने से गेहूँ, चना आदि अनाज, गुड़, सरसों में तेजी बनेगी।

7 अक्तू., बृहस्पतिवार वाले दिन चन्द्रदर्शन होने से रुई, सूत तथा सूती वस्त्र, रेशमी-ऊनी वस्त्र, सरसों, तेल, घी में तेजी बनेगी। सोना, चाँदी, खाण्ड, गुड़ में मामूली मन्दी बने।

8 अक्तू. को वक्री बुध हस्त नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। अनाज, चावल, चने आदि, सरसों, खाण्ड में मन्दी बनकर शीघ्र ही तेजी बनेगी।

10 अक्तू. को सूर्य चित्रा नक्षत्र में आएगा। शीघ्र ही रुई, सूत, सोना, चाँदी तथा मोती आदि रत्नों, गुड़, खाण्ड, अरहर, गेहूँ, चना, तिल, नारियल, सन, केसर, कपूर, लाल वस्त्रों में विशेष तेजी बनेगी।

11 अक्तू. को ही मंगल चित्रा नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। गेहूँ, चावल, चना, सोना, चाँदी, ताँबा, पीतल तेज होंगे। इसी दिन शनि मार्गी होने से तिल, तेल, सरसों, हींग, मिर्च में भी अच्छी तेजी बनेगी।

16 अक्तू. को वक्री बुध पूर्व में उदय होने से अनाज, सोने में मन्दी, गेहूं, जौं, चना, लाल मिर्च, अलसी, बिनौला, शेयर्ज़ में तेजी बनेगी।

17 अक्तू. को सूर्यदेव तुला राशि में आएंगे। इन पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। कुछ जिन्सों/वस्तुओं में ज़बरदस्त तेजी की लाईन बन सकती है। गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सोना, ताम्बा, रक्त-चन्दन, मजीठ, श्रीफल, सुपारी में अच्छी तेजी बनेगी। रुई, कपास, चाँदी में पहले मन्दी का झटका लगेगा। इसी दिन शुक्र ज्येष्ठा नक्षत्र में सरसों, हींग, तेल में मन्दी करेगा।

18 अक्तू. को बुध एवं गुरु-दोनों ग्रह मार्गी होंगे। ध्यान दें, बुध मंगल के साथ एवं गुरु शनि के साथ हैं। बाज़ार में एकदम परिवर्तन हो सकता है। **सावधानीपूर्वक चलें।** रूई में पहले मन्दी, बाद में तेजी हो। शीघ्र ही गेहूँ, जौं, चना, सोना, चावल, सरसों, गुड़ तथा अनाजों में तेजी बने। परन्तु तेल, अलसी, एरण्ड, मूँगफली, अगर-तगर, चंदन-कपूर आदि सुगन्धित वस्तुओं में मन्दी बनेगी।

21 अक्तू. को मंगल तुला राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। सूर्य-मंगल पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। **यह योग तेजीकारक रहेगा।** रुई, कपास, सूत, सन, पाट, बारदाना, मूँगफली, गुड़, खाण्ड, गेहूँ तथा उड़द, मूँग आदि अनाजों में अच्छी तेजी का रुख बनेगा।

24 अक्तू. को सूर्य स्वाती नक्षत्र में आकर रुई, सूत, सन्, रेशम, कपड़ा, सोना, चाँदी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग, गुग्गुल में तेजी बनेगी।

28 अक्तू. को बुध चित्रा में आकर मंगल के साथ नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। रुई, चाँदी, मूँग, गुड़, चनादि अनाजों में घटाबढ़ी के बाद कुछ तेजी बनेगी।

30 अक्तू. को शुक्र धनु राशि में आने से गेहूँ, जौं, चना आदि अनाज, सोना, चाँदी, ताँबा आदि धातुओं, वस्त्रों, शेयरों (IT., Software) में विशेष तेजी बने। रूई, सूत, कपास में पहले मन्दी बनकर बाद में तेजी बने।

31 अक्तू. को मंगल स्वाती नक्षत्र में आने से रुई, ऊनी वस्त्र, गेहूँ, तिल, तेल में तेजी बने। सोना, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद कुछ मन्दी बने।

☞ नवम्बर—2 नवं. को बुध तुला राशि में आकर सूर्य एवं मंगल के साथ योग करेगा। इन पर शनि की दृष्टि रहेगी। मंगल-शनि का परस्पर (4-10) दृष्टि पहले से ही चल रही है। यहाँ ज़ोरदार घटाबढ़ी रहेगी। रुई, गुड़, खाण्ड, खोया, सोना, क्रूड-ऑयल, सरसों, बिनौला, मूँगफली, बैंकिंग शेयर्ज़, मूंग, इलायची आदि सभी करियाना वस्तुओं में ज़ोरदार तेजी चलेगी।

6 नवं. शनिवार को चन्द्रदर्शन, सूर्य विशाखा तथा बुध स्वाती नक्षत्र में आएंगे। जौं, चावल, गेहूँ, मसूर, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड, अफीम में तेजी बनेगी। चाँदी, घी, रुई, अलसी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने।

घटाबढ़ी के मध्य साधारण तेजी का यह रुख ता. 12 नवं. तक रहेगा।

13 नवं. को शुक्र पू.षा. नक्षत्र में आने से मूँग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों, नमक आदि में मन्दी बने।

14 नवं. को बुध विशाखा में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। इन पर शनि की दृष्टि पहले से ही है। अतः घटाबढ़ी के बाद रुई, गेहूँ, चावल, चना आदि अनाजों, मूंग, इलायची, बैंकिंग शेयर्ज़ में तेजी बनेगी।

16 नवं. को सूर्य वृश्चिक राशि में आकर केतु के साथ मेल करेगा। बाज़ार के रुख में अचानक परिवर्तन होगा। कुछ जिन्सों में तेजी तथा कुछ जिन्सों में भयंकर मन्दी का रुख बनेगा। रुई, ताम्बा, सोना, चान्दी व ऊनी वस्त्रों में तेजी, परन्तु लाल-मिर्च, गुड़, लाल-चन्दन आदि लाल रंग की वस्तुओं में मन्दी का रुख बनेगा।

19 नवं. को सूर्य अनुराधा नक्षत्र में आकर केतु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। जौं, चना, चावल आदि धान्यों, सोना, चान्दी आदि धातुओं में मामूली तेजी, गेहूँ, अलसी, मिर्च में तेजी होकर मन्दी बनेगी।

20 नवं. को बुध वृश्चिक राशि में आकर सूर्य एवं केतु के साथ मेल करेगा। इसी दिन गुरु कुम्भ राशि में तथा मंगल विशाखा नक्षत्र में भी आएंगे। रूई, कपास, वस्त्रों, गेहूँ में तेजी बनकर शीघ्र ही मन्दी का रुख बन सकता है, सावधान रहे। सोना, चाँदी, कॉपर में अच्छी तेजी बनेगी।

23 नवं. को बुध अनुराधा में आकर सूर्य-केतु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। सूत, सन, रूई, सोना, चान्दी, ग्वार में घटाबढ़ी के मध्य पहले तेजी बनकर फिर मन्दी बन जाएगी।

मासान्त में घटाबढ़ी के मध्य मन्दी प्रधान रह सकती है। परन्तु मंगल-शनि के दृष्टि सम्बन्ध के कारण अचानक रुख परिवर्तन होगा।

29 नवं. को मंगल पूर्व में उदय होने से गुड़, खाण्ड, गेहूँ, चावल, उड़द, तिल, तेल, अलसी, सरसों आदि तिलहन में तेजी आकर मन्दा बने। रुई, शेयर बाज़ार तेज रहे। सोना, चाँदी एवं अन्य व्यापारिक वस्तुओं में मन्दी हों।

☞ दिसम्बर—1 दिसं. को बुध ज्येष्ठा तथा शुक्र उ.षा. नक्षत्र में आएगा। घी, गुड़, खाण्ड, चावल, रूई में तेजी, सोना-चाँदी, अलसी, एरण्ड में मन्दी बने।

2 दिसं. को सूर्य भी ज्येष्ठा नक्षत्र में आकर बुध के साथ मेल करेगा। सभी प्रकार के वस्त्रों, सोना, चाँदी, चावल, गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, पारा, गुड़, खाण्ड में तेजी होगी।

4 दिसं. को मंगल वृश्चिक राशि में आकर सूर्य, बुध, केतु के साथ मेल करेगा। सोना, चाँदी आदि धातुओं, गुड़, रुई, सरसों, सोयाबीन, तिलहन, मिर्च, बेसन तथा अन्य सभी करियाना वस्तुएं तेज भाव होंगी।

5 दिसं., रविवार को चन्द्रदर्शन होने से गुड़, तेल, सोना-चाँदी में तेजी, रुई में घटाबढ़ी से मन्दी बनेगी।

7 दिसं. को राहु कृतिका (3), केतु अनुराधा (1) में आने से सोना, चाँदी आदि धातुओं, घी, दूध, मूँग, गुड़ में कुछ मन्दी बनेगी।

8 दिसं. को शुक्र मकर राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा। शेयर्ज़, अफ़ीम, क्रूड-ऑयल, गुड़, खाण्ड, घी तथा गेहूँ, चना आदि सभी अनाजों में तेजी होगी। **रुई, चाँदी में पहले घटाबढ़ी होकर बाद में तेजी ही बनेगी।**

9 दिसं. को मंगल अनुराधा नक्षत्र में केतु के साथ मेल करेगा तथा बुध धनु राशि में आएगा। रुई, कपास, गेहूँ, गुड़, लाल-मिर्च, लाल-चन्दन आदि लाल रंग की वस्तुओं में तेजी, जबकि चाँदी, घी आदि कुछ वस्तुओं में घटाबढ़ी के मध्य कुछ मन्दी बने। घटाबढ़ी के मध्य कुछ मन्दी का रुख ता. 14 तक रहेगा।

15 दिसं. को सूर्य धनु राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। रुई, कपास, सूत, तिल, तैल, सोना, चाँदी आदि में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

18 दिसं. को बुध पू.षा. नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी, गेहूँ, चावल आदि अनाजों में कुछ मन्दी बने। बिनौला, खल तेज होंगे।

19 दिसं. को शुक्र वक्री होगा। शुक्र-शनि के साथ है। बाज़ार में लाईन एकदम परिवर्तन करेगी। कुछ वस्तुओं में एकदम मन्दी बनेगी। शेयर बाज़ार, चाँदी, घी, हल्दी, क्रूड-ऑयल, गर्म-वस्त्रों, ऊन में तेजी बनेगी। अनाज, चनादि मन्दे रहे।

21 दिसं. को शनि श्रवण (3) में आने से गुड़, खाण्ड, नमक, गेहूँ, चावल, चना आदि अनाजों, अलसी में अच्छी तेजी का झटका लगे।

22 दिसं. को बुध पश्चिम में उदय होने से रुई, चाँदी, घी, मूँग में घटाबढ़ी के मध्य पहले मन्दी, फिर मामूली तेजी बनेगी।

27 दिसं. को बुध उ.षा. नक्षत्र में आकर शुक्र के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। चना आदि अनाजों में मन्दे का माहौल रहेगा। सोना-चाँदी कुछ तेज होंगे।

28 दिसं. को सूर्य पू.षा. नक्षत्र में तथा मंगल ज्येष्ठा नक्षत्र में आने से तिल, तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, खाण्ड, हल्दी, गुग्गुल, चमड़ा, कपूर, ऊनी वस्त्र, सन्, चाँदी में तेजी बनेगी।

29 दिसं. को बुध मकर राशि में आकर शुक्र एवं शनि के साथ मेल करेगा। सोना, चाँदी, रुई, क्रूड-ऑयल, तिल, सरसों, सोयाबीन, लोहे में तेजी बनेगी।

30 दिसं. को वक्री शुक्र धनु राशि में सूर्य के साथ मेल करेगा। बाज़ार के रुख को एकदम बदल सकता है, सावधानीपूर्वक कार्य करें। गेहूँ, जौं, चना आदि अन्न, सोना-चाँदी आदि धातुओं, सभी प्रकार के वस्त्रों तथा शेयरों में तेजी बनेगी।

नोट–गोचर ग्रहस्थिति अनुसार ऊपर दिए गए व्यापारिक रुख, लाईन तथा चांसों के विपरीत बाज़ार का रुख चले या वायदा व्यापार की लाईन न चले, तो तुरन्त सौदा काटकर हानि से बचें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि होने पर हम जिम्मेवार न होंगे।–सम्पादक

आज का दिन कैसा गुजरेगा ?

जिस दिन को मालूम करना हो कि **आज का दिन आपका कैसा गुजरेगा ?** तो उस दिन आप पंचांग में देखें कि चन्द्रमा किस नक्षत्र पर है। आप उस नक्षत्र को नं. १ पर से गिन कर ऊपर लिखे चक्र के क्रमानुसार 28 नक्षत्र लगा लें। फिर देखें कि आपके नाम का नक्षत्र किस स्थान पर आता है। वैसा फल जानें। यदि आपके नाम का नक्षत्र वृत्त (गोलाकार) के अन्दर पड़ेगा तो उस दिन शुभ समाचार, प्रिय बन्धु से मिलाप व धन लाभ होगा। यदि गोल वृत्त के बाहर पड़े तो दिन का आधा भाग खुशी में, आधा भाग फिकर और चिन्ता में व्यतीत होगा। यदि त्रिशूल के ऊपर पड़े तो पूरा दिन परेशानी, झगड़े, धन हानि व चिन्ता में व्यतीत होगा। **उदाहरणार्थ आज यदि मघा नक्षत्र हो तो, उसे नं. १ लें।** इसी क्रम में पू.फा. आदि 28 नक्षत्र क्रम से लिख लें। नक्षत्रों की तालिका इसी पंचाँग के अन्तिम पृष्ठों में देखें।
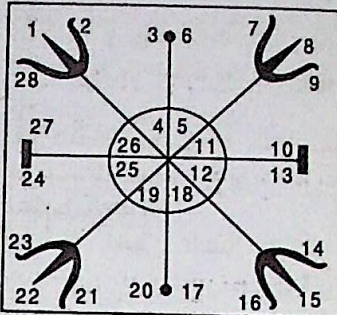
खोई हुई वस्तु मिलेगी या नहीं ?

विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः। स्यात् दूरेश्रवणं मध्ये श्रुत्याप्ती न सुलोचने॥

१. **अन्धाक्ष नक्षत्रों** में गुम हुई अथवा चोरी हुई वस्तु पूर्व दिशा की ओर जाती है और उसकी पुनः प्राप्ति की शीघ्र सम्भावना रहती है।

२. **सुलोचन नक्षत्रों** में गुम हुई वस्तु उत्तर दिशा में जाती है परन्तु उसका न तो पता चलता है और न ही प्राप्त होती है।

३. **मध्याक्ष नक्षत्र** में खोई वस्तु पश्चिम दिशा की ओर अति दूर चली जाती है। पता चलने पर भी प्राप्त (हस्तंगत) नहीं होती।

४. **मन्दाक्ष नक्षत्र** में गुम अथवा चोरी हुई वस्तु दक्षिण की ओर चली जाती है तथा अत्यधिक प्रयत्न करने पर अन्ततोगत्वा वह प्राप्त हो जाती है। अन्धाक्षादि नक्षत्र निम्नलिखित हैं–

नक्षत्र संज्ञा	नाम नक्षत्र							मिलेगी या नहीं
(१) अन्धाक्ष	रोहणी	पुष्य.	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	धनि.	रेव.	शीघ्र मिलेगी।
(२) सुलोचन	कृतिका	पुन.	पू.फा.	स्वा.	मूल.	श्रव.	उभा.	नहीं मिलेगी।
(३) मध्याक्ष	भर.	आर्द्रा.	मघा.	चित्रा.	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	पता लगाने पर भी नहीं मिलेगी।
(४) मन्दाक्ष	अश्विनी	मृग.	आश्ले.	हस्त.	अनु.	उ.षा.	शत.	बहुत प्रयत्न करने पर मिलेगी।

चमत्कारिक मन्त्र-तन्त्र एवं यन्त्र

आदि काल से ही प्रत्येक मनुष्य सुख प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील होता आया है। वह ऐसा सुख चाहता है जिसका अस्तित्व स्थायी एवं शाश्वत हो। इसके लिए वह जीवन पर्यन्त प्रयासरत रहता है। अनेक बार जब वह बाह्य साधनों एवं कठिन परिस्थितियों के कारण अपने उद्देश्यों में सफल नहीं हो पाता तो मनुष्य दैवी शक्तियों का आश्रय लेने के प्रयास करता है। प्राचीन वैदिक काल में भी भौतिक एवं आध्यात्मिक मनोरथों में सफलता एवं सिद्धि प्राप्ति के लिए मन्त्र, तन्त्र, यन्त्रादि विद्याओं का आश्रय लेते थे। वेद, शास्त्र, पुराणादि धर्मग्रन्थों में मन्त्र-उपासना के द्वारा इस लोक के सुख और पारलौकिक पुण्य एवं आनन्द प्राप्ति के विवरण अनेक स्थलों पर मिलते हैं। मन्त्र द्रष्टा ऋषियों द्वारा रचित मन्त्रों के भीतर ऐसी रहस्यमयी गहन शक्ति छिपी होती है, जो साधारण शब्दों से नहीं कही जा सकती। मन्त्र आप्त ऋषियों द्वारा रचित वह दिव्य शब्द रचना है, जिसका विधि एवं श्रद्धापूर्वक जप करने से साधक को अभीष्ट सिद्धि की प्राप्ति होती है। वास्तव में मन्त्र एवं स्तोत्र वह दिव्य फूल है, जो मानव कल्याणार्थ ऋषियों के हृदय से उपजे है और हमें वैदिक ऋचाओं में मिलते हैं। विभिन्न प्रकार के मन्त्र/स्तोत्र ब्रह्माण्ड में व्याप्त शक्ति स्वरूप देवी-देवताओं को समर्पित होते हैं–'**देवाधीनं जगत्सर्वं मन्त्राधीनाश्च देवताः।**'

विशेष प्रकार के दिव्य वर्णों के समूह तथा छान्दोमय लय एवं ध्वन्यात्मक गुणों से युक्त शब्द रचना को मन्त्र कहते हैं। किसी में आर्ष मन्त्र में आकाश तत्त्व और वायु तत्त्व के दोनों गुण होते हैं अर्थात् उसमें शब्द और स्पर्श की तन्मात्राएं होती हैं। मन्त्र में चूंकि आकाश तत्त्व (शब्द) की प्रधानता होती है। शब्द में स्फोट होता है और स्फोट का आदि और अन्त दोनों ही शक्ति सापेक्ष है, अर्थात् स्फोट शक्ति से होता है और स्फोट से शक्ति होती है। अतएव मन्त्र की मूल चेतना शक्ति तो स्फोट एवं ध्वनि में निहित है।

वैदिक मन्त्रों के सार में निहित अक्षर ब्रह्म, सनातन, अजन्मा, व्यापक, चैतन्य और ज्योति रूप ईश्वर है। इस प्रकार ऋषियों द्वारा रचित मन्त्र ऐसे दिव्य शब्दों का समूह है जिसको निरन्तर जपने से एक वैद्युतिक, अलौकिक एवं दिव्य वातावरण का निर्माण होता है। उससे हमारे शरीर और मस्तिष्क से विकीर्ण होने वाली भावनात्मक तरङ्गे विद्युत् धारा की तरह अभीष्ट दिशा में गमन करने लगती हैं और उनसे हमारे मनोरथ सिद्ध होने लगते हैं। मन्त्र के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों ने अनेक प्रकार की परिभाषाएं परिभाषित की हैं। जैसे–

(1) बार-बार मनन करने से जो रक्षा करता है, उसे मन्त्र कहते हैं तथा जिससे बार-बार जप करने से मनोरथ की सिद्धि प्राप्त होती है, वह मन्त्र कहलाता है–

मननात् त्रायते यस्मात् तस्मात् मन्त्रः प्रकीर्तितः।
जपात् सिद्धिर्जप्रात् सिद्धिर्जपात् सिद्धि न संशयः।।

(2) धर्म-कर्म और मोक्ष की प्राप्ति हेतु प्रेरणा देने वाली शक्ति को मन्त्र कहते हैं, इत्यादि।

मन्त्र-तन्त्र साधना में अभीष्ट सिद्धि एवं सफलता हेतु कुछ विशेष व्रत-नियमों आदि के पालन करने का निर्देश किया है। इसमें श्रद्धा, धैर्य, भक्ति, आसन, धन, शरीर एवं आचरण शुद्धि आदि के आवश्यक नियम बतलाए गए हैं।

मन्त्रों एवं यन्त्रों के अनुष्ठान के लिए सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, श्रीमहाशिवरात्रि काल, दीपावली, अक्षय-तृतीया, सायन-निरयण संक्रान्तिकाल, होलाष्टक, रविपुष्य, गुरुपुष्य, नवरात्रों में, अमृतसिद्धि, भौमवासरी अमावस, पूर्णिमा आदि पर्वों पर मन्त्र-यन्त्रों के अनुष्ठान का विशेष प्रभाव होता है। विविध मन्त्रों के अनुष्ठान एवं उनमें संसिद्धि सम्बन्धी विस्तृत व्याख्या हेतु आप हमारी पुस्तक '**शिव-मन्त्रावली**' पढ़ें।

संकल्प की आवश्यकता–प्राचीनकाल से ही धर्मशास्त्रानुसार प्रत्येक '**धर्मानुष्ठान**' के कार्य में जैसे-व्रत, मन्त्र-जप, पाठ, दान, ब्राह्मण-भोजन, श्रीगणेश-पूजन, नवग्रह-महालक्ष्मी-जन्मदिन पूजन, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, चूड़ाकर्म, विवाह-संस्कार, अन्त्येष्टि एवं श्राद्धादि कर्मों में भी संकल्पादि की आवश्यकता पड़ती है। बिना संकल्प किए जप, पाठ, व्रत, हवन-दान आदि अनुष्ठान करने का पूरा फल नहीं मिलता। मनुस्मृति अनुसार–

संकल्प मूलः कामो वै यज्ञाः संकल्पसम्भवाः।
व्रता नियम धर्माश्च सर्वे संकल्पजाः स्मृताः।।

संकल्प–'**ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे........ (अमुक) क्षेत्रे/नगरे/ ग्रामे संवतारम्भे......... (अमुक) नाम संवतसरे......... (अमुक) मासे......... शुक्ल/ कृष्णपक्षे......... तिथौ......... वासरे......... गोत्र......... शर्मा/गुप्तोऽहम् प्रातः/रात्रौ आदि श्रुति-स्मृति-पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं ज्ञाताज्ञात सर्वपाप/दोष परिहारार्थं, आयुरारोग्यैश्वर्याद्यभिवृद्ध्यर्थम् सर्वारिष्ट शान्ति पूर्वकम्, श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं (अमुक) देवस्य पूजनं करिष्ये।।**'

–ऐसे संकल्प पढ़कर अर्घ्य से पुष्पाक्षत एवं जलाञ्जली छोड़ दें।

यदि जन्मदिन का पूजन हो तो '**देवस्य**' की बजाये '**जन्मदिन कृत्यं**' पढ़ें। यदि दानादि का संकल्प हो, तो ऐसा पढ़ें–

दक्षिणा सहितं अमुक नाम ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे–ऐसा कहें।

यदि किसी मन्त्र का अनुष्ठान प्रारम्भ कर रहे हों, तो '**देवस्य**' की जगह '**(अमुक) मन्त्रस्य सिद्धिं हेतवे जपं/पूजनं**' पढ़ें।

संकल्प के पश्चात् पण्डित जो (आचार्य) द्वारा श्रीगणेश प्रतिमा के पास पहले से रखी गई कलेवा (मौली) उठाकर पण्डित (या आचार्य या किसी पूज्य व्यक्ति) से मन्त्रपूर्वक बन्धवानी चाहिए।

मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

(1) सायन संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल (सन् 2021-22 ई.)

भारतीय मुहूर्त्त शास्त्रों ने निरयण संक्रान्ति के पुण्यकाल की भान्ति सायन संक्रान्ति के पुण्यकाल को भी यन्त्र-मन्त्र साधना हेतु विशेष सिद्धिदायक बताया है।

2021-22 ई.	राशि	प्रवेशकाल	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टैं. टा.)
19 जनवरी	कुम्भ	26:10	रात्रि 19:46 से अगले दिन प्रातः 8:34 तक
18 फरवरी	मीन	16:14	प्रातः 9:50 से रात्रि 22:38 तक
20 मार्च	मेष	15:08	प्रातः 8:44 से रात्रि 21:32 तक
19 अप्रैल	वृष	26:05	रात्रि 19:41 से अगले दिन प्रातः 8:29 तक
20 मई	मिथुन	25:07	सायं 18:43 से अगले दिन प्रातः 7:31 तक
21 जून	कर्क	9:02	20 की रात्रि 2:38 से 21 की दोपहर 15:26 तक
22 जुलाई	सिंह	19:56	दोपहर 13:32 से रात्रि 26:20 तक
22 अगस्त	कन्या	27:05	21 की रात्रि 20:31 से 22 की प्रातः 9:29 तक
22 सितम्बर	तुला	24:51	सायं 18:27 से अगले दिन
23 अक्तूबर	वृश्चिक	10:21	प्रातः 3:57 से सायं 16:45 तक
22 नवम्बर	धनु	8:04	21 की रात्रि 25:40 से दोप. 14:28 तक
21 दिसम्बर	मकर	21:29	दोपहर 15:05 से 27:53 तक
20जन.(2022)	कुम्भ	8:09	19 की रात्रि 25:45 से 20 की दोपहर 14:33 तक
18 फरवरी	मीन	22:13	दोपहर 15:49 से 28:37 तक
20 मार्च	मेष	21:03	दोपहर 14:39 से 27:27 तक

△ क्रान्तिसाम्य काल (सन् 2021-22 ई.) △

यहाँ सूर्य-चन्द्रमा का महापात-गणित द्वारा प्रणीत सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य काल दिया जा रहा है। विवाहादि मुहूर्त्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य काल को वर्जित किया गया है। यह समयावधि शुभ मुहूर्त्तों के लिए अशुभ एवं त्याज्य है, परन्तु मन्त्र-यन्त्रादि तांत्रिक अनुष्ठान के लिए श्रेष्ठ व शुभ होती है।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल			प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
23 अप्रै.	9	46	23 अप्रै.	14	10	2 अगस्त	0	48	2 अगस्त	6	52
5 मई	4	55	5 मई	10	16	15 अगस्त	3	00	15 अगस्त	7	28
19 मई	3	06	19 मई	9	28	27 अगस्त	13	31	27 अगस्त	18	12
31 मई	0	40	31 मई	8	02	9 सितंबर	18	58	9 सितंबर	22	47
14 जून	3	11	14 जून	13	22	22 सितंबर	2	01	22 सितंबर	6	12
23 जून	17	50	24 जून	2	41	5 अक्तू.	13	30	5 अक्तू.	17	18
7 जुला.	4	36	7 जुला.	13	52	17 अक्तू.	14	25	17 अक्तू.	18	46

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल			प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
31 अक्तू.	8	15	31 अक्तू.	12	53	19 मार्च	8	22	19 मार्च	11	54
12 नवंबर	4	01	12 नवंबर	9	13	31 मार्च	11	24	31 मार्च	15	19
26 नवंबर	1	17	26 नवंबर	8	03	15 मार्च	8	49	15 मार्च	13	17
8 दिसंबर	4	26	8 दिसंबर	11	35	9 अप्रैल	17	44	9 अप्रैल	22	17
31 दिसंबर	19	25	1 जन.(22)	2	34						
(सन् 2022 ई.)											
13 जनवरी	14	30	13 जनवरी	21	53						
27 जनवरी	1	31	27 जनवरी	6	34						
8 फरवरी	6	04	8 फरवरी	11	10						
21 फरवरी	17	10	21 फरवरी	21	16						
5 मार्च	19	49	5 मार्च	23	55						

वारुणी पर्व (2021-22 ई.)

प्रारम्भ तारीख	घं.	मिं.	समाप्ति तारीख	घं.	मिं.
9 अप्रै.,21	3	16	9 अप्रै.21	4	57
29मार्च,22	14	39	30 मार्च,22	10	49

महोदय योग (2021-22 ई.)

प्रारम्भ तारीख	घं.	मिं.	समाप्ति तारीख	घं.	मिं.
10 फर.,21	25	09	11 फर.,21	14	05
1 फर.,22	6	41	1 फर., 22	11	16

(1) आत्मकल्याण, मोक्षप्रदायक एवं सुख-समृद्धिदायक 'गंगा-उपासना'

मन्त्र महोदधि के सोलहवें तरंग में भगवती गंगा की महिमा एवं उपासना पर उत्कृष्टतम विवरण प्राप्त होता है, तदनुसार साधक/मुमुक्षु को सभी अभीष्टों की सिद्धि हेतु भगवती गंगा की उपासना तथा उनके मन्त्र का जपानुष्ठान करना चाहिए। भगवती गंगा का बीस अक्षरों वाला मन्त्र इस प्रकार निरूपित है-

''ॐ शिवायै नारायण्यै दशपापहरायै गङ्गायै स्वाहा।''

इस मन्त्र के श्रीवेदव्यास ऋषि हैं, कृति छन्द है तथा भगवती गंगा देवता हैं। समस्त अभीष्टों की सिद्धि के लिए इस मन्त्र का जप करना चाहिए। मन्त्रमहोदधिकार ने भगवती गंगा का निम्नोक्त ध्यान बतलाया है-

उत्फुल्लामल-पुण्डरीक-रुचिरा कृष्णेशविद्यात्मिका,
कुम्भेष्टाभयतोयजानि दधती श्वेताम्बरालङ् कृता।
हृष्टास्या शशिशेखराऽखिलदीशोणादिभि संस्तुता,
ध्येया पापविनाशिनी मकरगा भागीरथी साधकै:।।

अर्थात् जिनकी देहकान्ति खिले हुए स्वच्छ कमल के समान मनोहारिणी है, जो ब्रह्म-विष्णु-रुद्रस्वरूपिणी हैं, जिन्होंने दाहिने भुजयुगल में वरमुद्रा तथा कमल और वामभुजयुगल में सुधाकलश तथा अभयमुद्रा को धारण किया है, जो श्वेत वस्त्रों से अलंकृत है, जिनके मस्तक पर चन्द्रमा शोभायमान है तथा समस्त नदियाँ और शोण आदि महानद जिनकी सेवा

कर रहे हैं, ऐसी प्रसन्न मुखवाली मकर पर आरूढ़ पापविनाशिनी भगवती भागीरथी का साधकों को ध्यान करना चाहिए।

साधक को इस प्रकार भगवती गंगा का ध्यानकर श्रद्धापूर्वक गंगामन्त्र का एक लाख जप पूर्णकर घृताक्त तिलों के द्वारा दशांश होम करना चाहिए। जप से पूर्व अष्टदल कमलयुक्त यन्त्रात्मक पीठ पर भगवती गंगा का जया आदि अंगशक्तियों के साथ पूजन करना चाहिए।

गंगापूजन-यन्त्र
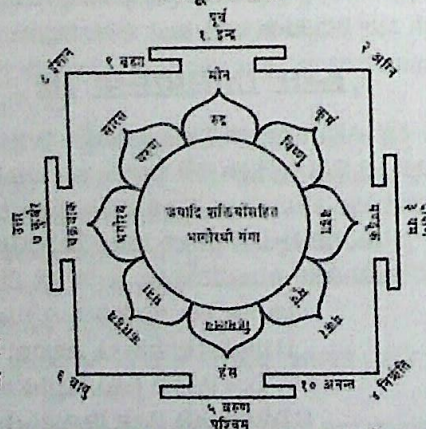
साधक को पीठस्थ कमल के केसरों में पूर्वादि क्रम ये रुद्र, विष्णु, ब्रह्मा, सूर्य, हिमालय, मेना, भगीरथ तथा वरुणदेव का पूजन करना चाहिए। यन्त्रस्थ कमल के दलाग्रभाग में पूर्वादि क्रम से मीन, कूर्म, मण्डूक, मकर, हंस, कारण्डव, चक्रवाक, सारस आदि जलीय देवों का पूजन करें। यन्त्रात्मक पीठ के चतुरस्र में आयुधों एवं शक्तियों के सहित इन्द्रादि दश दिक्पालों का पूजन करना चाहिए। पूजनोपरान्त जप-होम आदि का सविधि अनुपालन करने पर मन्त्र साधक को अभीष्ट लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

ज्येष्ठ शुक्ल दशमी अर्थात् गंगा-दशहरा के दिन उपवासपूर्वक भगवती गंगा का विशेष यजन करने के पश्चात् उपर्युक्त मन्त्र का एक सहस्र जप तथा दशांश होम करके प्रत्येक ब्राह्मण को दशप्रस्थ परिमित (एक सौ साठ मुट्ठी) अथवा सामार्थ्यानुसार तिल का दान करें। इस प्रकार अनुष्ठान करने पर मन्त्र-साधक भगवती गंगा का अनुग्रह-भाजन हो जाता है।

मन्त्र-महोदधि में उपरोक्त मन्त्र के अतिरिक्त अन्य तीन गंगामन्त्र और प्राप्त होते हैं, वे निम्नलिखित हैं–

(1) 'ॐ नमो भगवति ऐं हिलि हिलि मिलि मिलि गङ्गे मां पावय पावय स्वाहा।'

(2) 'ॐ हिलि हिलि मिलि मिलि गङ्गे देवि नमः।।' (पञ्चदशाक्षरात्मक)

(3) 'ॐ ह्रीं श्री नमो भगवति गं गं दयिते नमो हुँ फट्।' (अष्टादशाक्षरात्मक)

उपर्युक्त सभी मन्त्रों की उपासना का विधान पूर्व के समान ही बतलाया गया है। भगवती गंगा का अनुग्रह प्राप्त करने की इच्छा से साधक को उपर्युक्त रीति से भगवती गंगा का ध्यान तथा उनके मन्त्र का जप करना चाहिए।

(2) घर से भागे व्यक्ति का पता चले

यदि कोई व्यक्ति घर से रूठकर अथवा मानसिक स्थिति खराब, Depression होने से कहीं अज्ञात स्थान पर चला गया हो तो निम्न मन्त्र का लगातार जप करें–(जब तक गया व्यक्ति वापिस न आ जाए)

मन्त्र–"ॐ क्लीं कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहुसहस्रवान्। यस्य स्मरणमात्रेण गतं नष्टं च लम्यते। क्लीं ॐ कार्तवीर्यार्जुनाय नमः।'

इस मन्त्र को यदि उपर्युक्त सिद्ध मुहूर्त्त में (दीपावली, सायन संक्रां. आदि) तुलसी की माला द्वारा जाप करके सिद्ध कर लें तो यह शीघ्र फल देगा।

गायब या भागे हुए व्यक्ति का पहना हुआ कोई पुराना कपड़ा लेकर उस पर ऊपर वाले मन्त्र को लिख दें। मन्त्र के नीचे गायब व्यक्ति का नाम तथा उसके नीचे **'शीघ्र आगमनाय स्वाहा'**–यह भी लिख दें। इस वस्त्र को चरखे से लपेटकर भागे हुए (गायब) व्यक्ति के माता-पिता या कोई अन्य रक्त सम्बन्धी प्रिय व्यक्ति चरखे को उल्टा चलाएं एवं गायब व्यक्ति का नाम लेकर बोलता जाए–**'जल्दी वापिस आ जाओ।'** प्रतिदिन प्रातः-सायं 21 बार चरखा उल्टा चलाएं। शीघ्र ही गायब व्यक्ति की कोई सूचना अथवा वापिस आने की सम्भावना बन जाती है। (इसी विधि से चोरी हुई वस्तु भी पुनः प्राप्त करने का प्रयास किया जा सकता है।)

भागे हुए व्यक्ति को वापिस लाने का एक अन्य प्रयोग

एक कोरा घड़ा व कसोरा ले आएं। उस पर कोई काला दाग न हो। घड़े के ऊपर और कसोरे के बीच में नीचे लिखा मंत्र लिखें। एक कागज़ पर लिखकर उसे घड़े में डाल दें और साथ ही चार पैसे तांबे के रख दीजिए। थोड़े या अधिक न हों कसोरे से ढक कर बाईं ओर घुमाइए और यह मन्त्र पढ़ें **"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे"** सात बार घड़े को घुमा कर पृथक् स्थान पर रख दो। सात दिन करने से ही वह मनुष्य चल पड़ेगा या वह अपना पता पत्र के द्वारा भेज देगा। अज्ञात का नाम नीचे लिखें। इस यन्त्र को सफेद कागज़ पर लिखकर चरखे से बाँध कर उल्टा भी घुमा सकते हैं।

ऐं	ह्रीं	क्लीं
डा	मुं	चा
यै	वि	च्चे
भागे हुए का नाम		

(3) दरिद्रता–नाशक, ऋणहर्त्ता तथा सर्वविध सुख हेतु 'स्वर्णाकर्षण भैरव–साधना'

श्रीभैरव के अनन्त रूपों में स्वर्णाकर्षण-भैरव का स्वरूप भी परम उपास्य बतलाया गया है। इनकी साधना, शान्ति, पौष्टिक आदि सभी कर्मों में अत्यन्त सफल मानी गई है। अपने भक्तों की दरिद्रता को नष्ट करने तथा उन्हें धन-धान्य से समृद्ध बनाने के कारण ही इनका नाम **'स्वर्णाकर्षण-भैरव'** के रूप में प्रसिद्ध है। तन्त्रशास्त्रों में इनकी साधना के लिए मन्त्रमय स्तोत्र, नामावली, रूप-स्तोत्र, कवच, सहस्रनाम एवं मन्त्र-जप का विधान विस्तार से वर्णित है।

'चिदम्बर-रहस्य' के अनुसार श्रीस्वर्णाकर्षण भैरव की उपासना के लिए हम यहाँ संक्षेप में मन्त्र विधान दे रहे हैं–

विनियोग—ॐ अस्य श्रीस्वर्णाकर्षण-भैरवमहामन्त्रस्य महाभैरव-ब्रह्मा ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः त्रिमूर्तिरूपी भगवान् स्वर्णाकर्षण देवता ह्रीं बीजं सः शक्तिः वं कीलकं मम दारिद्रयनाशार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास—ॐ महाभैरवब्रह्मर्षये नमः (शिरसि), त्रिष्टुप्छन्दसे नमः (मुखे), त्रिमूर्तिरुपी-भगवत्स्वर्णाकर्षण देवतायै नमः (हृदये), ह्रीं बीजाय नमः (गुह्ये), सः शक्तये नमः (पादयोः), वं कीलकाय नमः (नाभौ), विनियोगाय नमः (सर्वांगे)।

करन्यास—ॐ (अंगुष्ठाभ्यां नमः)। ऐं (तर्जनीभ्यां नमः)। क्लां ह्रां (मध्यमाभ्यां नमः)। क्लीं ह्रीं (अनामिकाभ्यां नमः)। क्लूं हूं (कनिष्ठिकाभ्यां नमः)। सं वं (करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः)।

हृदयादिन्यास—आपदुद्धारणाय (हृदयाय नमः), अजामल बद्धाय (शिरसे स्वाहा), लोकेश्वराय (शिखायै वषट्), स्वर्णाकर्षणभैरवाय (कवचाय हुम्), मम दारिद्रयविद्वेषणाय (नेत्रत्राय वौषट्), श्रीमहाभैरवाय नमः (अस्त्राय फट्) रं रं रं ज्वलत्प्रकाशाय नमः।

ध्यानम्— ॐ पीतवर्णं चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं पीतवाससम्।
अक्षयं स्वर्ण माणिक्यतिडत् पूरितपात्रकम्॥
अभिलसन् महाशूलं चामरं तोमरोद्वहम्।
सततं चिन्तये देवं भैरवं सर्वसिद्धिदम्॥
मन्दारद्रुम—कल्पमूलमहिते माणिक्य—सिंहासने,
संविष्टोदरभिन्न—चम्पकरुचा देव्या समालिङ्गितः।
भक्तेभ्यः कररत्नपात्रभरितं स्वर्णं ददानो भृशं,
स्वर्णाकर्षण—भैरवो विजयते स्वर्णाकृतिः सर्वदा॥

इन पद्यों से ध्यान तथा मानसिक उपचारों से पूजा करके मन्त्र जप करें।

मूलमन्त्र—'ॐ ऐं क्लीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षणभैरवाय मम दारिद्रयविद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः।'

इस मन्त्र का जप करें। दस हज़ार जप करके दशांश हवन, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन कराने से दरिद्रता का नाश, ऋण का निवारण तथा सर्वविध सुख की प्राप्ति होती है। पायस तथा बिल्व से हवन करें। कृष्णपक्ष की अष्टमी से चतुर्दशी तक जप का विशेष महत्त्व है।

(4) लक्ष्मी प्रदायक—'श्री कनकधारा मन्त्र'

प्राण प्रतिष्ठा युक्त कनकधारा यन्त्र को स्थापित करके नित्य निम्न कनकधारा मन्त्र की स्फटिक माला से एक या तीन माला का पाठ करने से लक्ष्मी देवी प्रसन्न होती है तथा आर्थिक प्रगति होती है। "ॐ वं श्री वं एं ह्रीं क्लीं कनकधारायै स्वाहा॥"

कनकधारा मन्त्र का एक लाख जप पूरा करें तथा यदि सम्भव हो तो देवीदयालु की पं. पन्ना लाल कृत '**श्री दुर्गा सप्तशती**' में से कनकधारा स्तोत्र का पाठ भी अवश्य करें। जिन साधकों के पास श्री यन्त्र है, उन्हें भी कनकधारा यन्त्र अवश्य रखना चाहिए। दोनों यन्त्रों में परस्पर सामञ्जस्य होने से फल शत गुणा अधिक बढ़ जाता है।

(5) धन प्राप्ति एवं व्यापार वृद्धि हेतु श्रीमहालक्ष्मी मन्त्र एवं बीसा यन्त्र

ईशान कोण —पूर्व— अग्नि कोण

उत्तर

५	१२	३
१३	१ ६ ॐ ह्रीं क्लीं ऐं ॐ स्वाहा ९ ४	७
२	८	१०

दक्षिण

वायव्य कोण पश्चिम नैऋत्य कोण

बीसा यन्त्र को यदि एक लाख मन्त्र जपकर हवन द्वारा यन्त्र सिद्ध कर लिया जाए तो इसका दर्शनमात्र ही समस्त संकटों का निवारण कर देता है। धन-सम्पदा, अर्थ-लाभ, वैभव-सम्मान प्राप्ति, शत्रु-दमन के लिए बीसा यन्त्र एक अद्भुत एवं परम प्रभावी यन्त्र है।

प्रतिदिन स्नान, पूजा के पश्चात् श्रीलक्ष्मी जी की मूर्त्ति, चित्र (या यन्त्र जो भी हो) के सामने धूप-दीप जलाकर लक्ष्मी जी का ध्यान करते हुए नीचे लिखे किसी भी मन्त्र का जाप (१, ३, ७ माला) नियमित रूप से संयमपूर्वक निर्धारित संख्या (५१ हज़ार अथवा सवा लाख) में करें अथवा किसी सुयोग्य ब्राह्मण द्वारा करवाएँ। कमलगट्टे की माला हो तो अच्छा है। पाठ से पूर्व एवं पाठ के बाद निम्न श्री लक्ष्मी स्तुति पढ़ लेवें तो अत्यन्त शुभकारी होगा—

भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकाम प्रदायिनी। सुपूजिता प्रसन्नां स्यान्महालक्ष्म्यै नमोऽस्तुते॥
सर्वज्ञ सर्व वरदे सर्व दुष्ट भयंकरी। सर्व दुख-हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते॥

श्रीमहालक्ष्मी मन्त्राः—

- **"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः"**
- **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः॥ ॐ श्री ह्रीं श्री कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद।**
- **श्री ह्रीं श्री महालक्ष्म्यै नमः॥ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्री सिद्ध लक्ष्म्यै नमः।**
- **ॐ ह्रीं महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्नीम् व। धीमहि तन्नोलक्ष्मी प्रचोदयात् ह्रीं ॐ॥**

उपरोक्त मन्त्रों में से कोई एक मन्त्र संकल्प एवं श्रद्धापूर्वक किसी शुभ मुहूर्त्त जैसे नवरात्रे, अक्षय तृतीया, गुरुपुष्य, रविपुष्य योग, दीपावली, ग्रहण काल में यथेष्ट संख्या में करने से शीघ्र लाभ होता है। पाठ के उपरान्त श्रीसूक्त अथवा लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करना प्रशस्त रहता है। ध्यान रहे, पाठोपरान्त निष्ठापूर्वक अभीष्ट कार्य हेतु पुरुषार्थ एवं उद्यम करना भी अनिवार्य है।

"संक्षिप्त लक्ष्मी स्तोत्र"

त्रैलोक्यपूजिते देवि कमले विष्णु वल्लभे। यथा त्वमचला कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा॥
ईश्वरी कमला लक्ष्मीश्चला भूतिर्हरि प्रिया। पद्मा पद्मालया सम्पदुच्चैः श्री पद्मा धारिणी॥
द्वादशैतानि नमानि लक्ष्मीं सम्पूज्य यः पठेत्। स्थिरा लक्ष्मीर्भवेत्तस्य पुत्रदाराविभिः सह॥

(6) पुत्र संतति प्रदायक 'सन्तान गोपाल मन्त्र'

भगवान् श्रीकृष्ण के बालरूप की प्रतिमा (अथवा) चित्र के सामने नियमित रूप से धूप-दीप जलाकर संकल्पपूर्वक प्रतिदिन (एक या तीन माला) का पाठ करने से निश्चय ही मनोवांछित पुत्र सन्तान प्राप्ति होती है। सवा लाख संख्या में पाठ करना शुभ एवं लाभदायक रहता है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी अथवा किसी शुभ मुहूर्त्त में पाठारम्भ करना चाहिए। पाठ स्वयं विधिपूर्वक अथवा किसी सुयोग्य ब्राह्मण द्वारा श्रद्धापूर्वक करवाना लाभदायक होता है।

विनियोग–अस्य श्री सन्तानगोपालमन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीकृष्णो देवता, ग्लौं बीजम्, नमः शक्तिः, पुत्रार्थे जपे विनियोगः।

अङ्गन्यास–'देवकीसुत गोविन्द' हृदयाय नमः, 'वासुदेव जगत्पते' शिरसे स्वाहा, 'देहि मे तनयं कृष्ण' शिखायै वषट्, 'त्वामहं शरणं गतः' कवचाय हुम्, 'ॐ नमः' अस्त्राय फट्॥

ध्यान– **वैकुण्ठादागतं कृष्णं रथस्थं करुणानिधिम्।**
किरीटसारथिं पुत्रमानयन्तं परात्परम्॥१॥
आदाय तं जलस्थं च गुरवे वैदिकाय च।
अपर्यन्तं महाभागं ध्यायेत् पुत्रार्थमच्युतम्॥२॥

मूल मन्त्र–"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥"

इसका तीन लाख संख्या में जाप करना चाहिए। साथ में हमारे कार्यालय द्वारा प्रकाशित **'सन्तान गोपाल स्तोत्र'** (हिन्दी अनुवाद सहित) पुस्तक में से सन्तान गोपाल स्तोत्र का भी यथासम्भव पाठ करना चाहिए तथा मंत्र/स्तोत्र जप के बाद दशांश, हवन, तर्पण, मार्जन कर ब्राह्मणों को खीर, पूड़ी आदि दक्षिणा सहित भोजन करवाकर उनका आशीर्वाद ग्रहण करें।

(7) कालसर्प दोष निवारक रक्षक यन्त्र

कालसर्प यंत्र को शनि प्रदोष के दिन, शिवरात्रि, नागपंचमी या अनन्तचतुर्दशी के दिन ताम्र पत्र पर खुदवाकर या भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही तथा अनार की कलम से लिखकर निम्न मंत्र द्वारा 21 बार अभिमन्त्रित करके अपने सिर से तीन बार Anticlock घुमाकर चलते पानी में बहा देवें।

मन्त्र–
ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्योये के च पृथिवीमनुः।
ये अन्तरिक्षे यो दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।
ॐ सर्पेभ्यो नमः।।
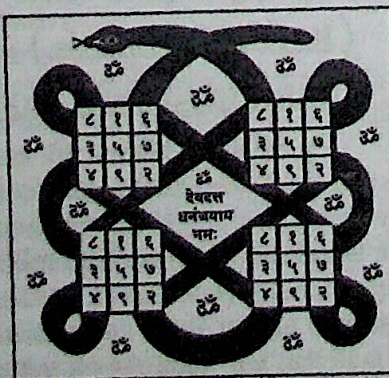
(8) व्यापार वृद्धि हेतु शाबर मन्त्र

दीपावली की रात्रि को एकान्त में पवित्रतापूर्वक बैठकर दस हज़ार मन्त्र का जाप करें। जिससे यह मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। जिस व्यक्ति की आजीविका कमज़ोर हो गई हो अर्थात् धन प्राप्ति में विघ्न हो तथा दूसरे लोग ईर्ष्या कर रहे हों, वह व्यक्ति दुकान (ऑफिस) खोलते तथा बन्द करते समय इस मन्त्र का 108 बार जाप करें, तो निश्चित रूप से व्यापार बढ़ेगा तथा धन प्राप्ति के साधन सुगम होंगे–

'श्रीशुक्ले महाशुक्ले, कमलदल निवासे श्रीमहालक्ष्म्यै नमो नमः। लक्ष्मी माई, सत्य की सवाई, आवो माई करो भलाई, न करो तो सात समुद्र की दुहाई, ऋद्धि-सिद्धि खावोगी तो नौ नाथ चौरासी की दुहाई।।'

जप के पश्चात् कुछ मीठा प्रशाद बाँट दें।

(9) मुकद्दमे में विजय हेतु मन्त्र

'ॐ नीली-नीली, महानीली (शत्रु-पक्ष/जज का नाम) जीभि तालू सर्वखिली सही खिलो तत्क्षणाय स्वाहा।'

इस मन्त्र को दीपावली आदि किसी शुभ मुहूर्त्त में सिद्ध करके 21 बार विवाद के समय मन में बोले तो व्यक्ति विवाद/मुकद्दमा/शास्त्रार्थ जीत कर ही आएगा।

विशेष–यदि साथ दिए गए यन्त्र को चाँदी के पत्रे अथवा भोजपत्र पर रविपुष्य, गुरुपुष्य, सायन संक्रान्ति, हस्त-मूल नक्षत्रकालीन अथवा दीपावली/ग्रहण के दिन खुदवाकर प्रतिष्ठित कर प्रतिदिन पूजन करें तो कोर्ट-कचहरी आदि विषयों में विजय प्राप्त होने की प्रबल संभावना बन जाती है।

५९२	५९९	२	७
६	३	५९६	५९५
५९८	५९३	८	१
४	५	५९४	५९७

(10) विदेश यात्रा के लिए कुछ सफल प्रयोग

(1) शुक्ल पक्ष के मंगलवार के दिन एक छोटी शीशी में शहद भरकर यह मन्त्र तीन बार पढ़कर किसी एकान्त स्थान में भूमि में गड्ढा खोदकर गाड़ देवें। मन्त्र–**"ॐ भूमिपुत्राय नमः, ॐ भूमि नन्दनाय नमः, ॐ सर्वकामफल प्रदाय नमः॥"** मंत्र पढ़ने के बाद शुद्ध पानी के 3 बार छींटें दे देवें।

(2) प्रस्तुत यंत्र को नवरात्रों में अथवा अक्षय तीज या गुरुपुष्य योग में भोजपत्र पर अष्टगन्ध की स्याही एवं अनार की कलम से लिखकर पंचोपचार विधि से 'सर्वमंगल मांगल्ये....' आदि मन्त्रों से पूजा करके। माला **'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे'** 31 दिन तक निरन्तर करके 9 कन्याओं का पूजन करके प्रसाद बांटे तो विदेश यात्रा में पड़ने वाले विघ्न दूर होंगे।
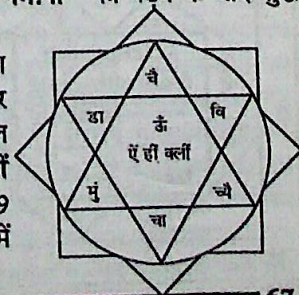
(3) सुन्दरकाण्ड का पाठ–किसी शुक्ल पक्ष के मंगलवार अथवा अन्य सिद्ध मुहूर्त्तों से प्रातः स्नानादि के बाद संकल्पपूर्वक श्री सुन्दरकाण्ड का पाठ निरन्तर 108 दिन (बिना क्रम तोड़े) तक करना शुभ होगा। पाठारम्भ वाले मंगलवार से हर मंगलवार को श्रीहनुमान चालीसा का भी पाठ करके श्रीहनुमान मंदिर में मिष्ठान्न युक्त प्रसाद बच्चों में बांट देवें। प्रतिदिन पाठ के बाद निम्न चौपाई भी पढ़ लेवें तो शीघ्र लाभ होगा–

पवनतनय बल पवन समाना। बुद्धि विवेक विग्यान निधाना।
कवन सो काज कठिन जग माही। जो नहि होइ तात तुम्ह पाही॥ कि. का.

(11) सर्वव्याधि/शारीरिक कष्ट निवारणार्थ 'श्रीमहामृत्युञ्जय मन्त्र' (मृतसंजीवनी मन्त्र)

'ॐ हौं जूँ सः, ॐ भूर्भुवः स्वः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ। सः जूँ हौं ॐ।'

अर्थ–हम परमपिता त्र्यम्बक (भगवान् शिव) की आराधना करते हैं। वह परमसुखदायक एवं पुष्टिवर्धक हैं। जैसे तरबूज आदि फल (पक जाने पर स्वयं ही) बेल से छूट जाता है, वैसे ही (पूर्ण आयु भोगकर) मैं मृत्युमय जीवन से (बिना कष्ट भोगे) छूट जाऊँ, परन्तु अमृतमय जीवन से मत छूटूँ।

संक्षिप्त विधि–यह सम्पुटयुक्त मन्त्र है। ॐकार का प्रतीक शिवलिङ्ग है; उसी के ऊपर अविच्छिन–अनवरत जलधारा के प्रवाहवत अपनी दृष्टि स्थिर करते हुए विश्वासपूर्वक मृत्युंजय महामन्त्र का जाप करता रहे तो ध्यानावस्था प्रत्यक्ष खड़ी हो जाती है और एक विलक्षण आनन्द की अनुभूति होती है।

किसी शुभ मुहुर्त्त में शुद्ध शान्तचित्त, संयमपूर्वक देवालय (विशेषकर शिव मन्दिर), गंगादि तीर्थ स्थान, जलाशय, पीपल वृक्ष के पास अथवा अपने निवास स्थान में स्वच्छ एकान्त स्थान पर संकल्पपूर्वक निश्चित विषम संख्या (एक, तीनादि) में नियमित रूप में श्रद्धापूर्वक पाठ करने से अवश्य लाभ मिलता है। जप संख्या में उलट-फेर या कमी बेशी करने से विक्षिप्तता का भय रहता है। जपसंख्या पूर्ण हो जाने पर जपसंख्या का दशमांश हवन, हवन का दशांश तर्पण तथा एवं तर्पण का दशांश मार्जन एवं यथेष्ठ दानादि सहित ब्राह्मण भोजन करवाना चाहिए तथा पाठोपरान्त शिव कवच पढ़ना चाहिए। जप के बाद इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए।

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादन्महेश्वर॥
मृत्युंजय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्। जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः॥

श्रीमहामृत्युञ्जय मंत्र के जप से अकालमृत्यु का निवारण, दीर्घायु व आरोग्य की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त जन्मकुण्डली में ग्रह-नक्षत्र दोष, नाड़ी दोष, मंगलीक दोष, शत्रुपडाष्टक, विधुर एवं वैधव्यादि दोषों के निवारण हेतु तथा अतिशय क्लिष्ट एवं असाध्य रोगों और मृत्युतुल्य शारीरिक एवं मानसिक रोगों में उपायस्वरूप अचूक एवं सिद्ध मन्त्र माना गया है।

"श्रीमहामृत्युंजय कवच यन्त्रम्"

भोजपत्र पर अष्टगन्ध से यन्त्र लिखकर गुगुल का धूप देकर पुरुष के दाहिने और स्त्री के बायें हाथ में बाँध देना चाहिए। गोत्र, पिता का नाम, पुत्र या पुत्री (रोगी) का नाम यथास्थान लिख देना चाहिए। साथ में रुद्राक्ष माला से महामृत्युञ्जय जप करते रहें।

सं. सं.
सः जूँ
जूँ ———गोत्रस्य सः
ठं श्री———स्य ठं
पुत्रस्य श्री———
सः सर्वापच्छान्तिपूर्वक जूँ
दीर्घजीवनमस्तु
जूँ सः
सं. सं.
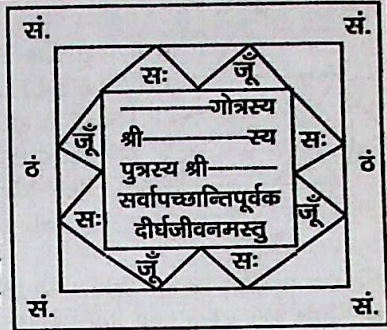
(12) अभीष्ट वर प्राप्ति के लिए

जिस कन्या के विवाह-कार्य में बार-बार विघ्न-बाधाएँ पड़ती हों। उसको गुरु-पुष्य, रवि पुष्य, अक्षया तीज, श्रावण मास में, दीपावली, बसन्त अथवा नवरात्रों में निम्नलिखित मन्त्र का जप आरम्भ करके यथेष्ठ संख्या में 51 हज़ार अथवा सवा लाख की संख्या में नियमित रूप में, शिव-पार्वती अथवा माता के मन्दिर में धूप, दीप जलाकर पीले एवं लाल पुष्प चढ़ाकर सुनिश्चित समय में नियमित रूप से संकल्पपूर्वक एवं विधिवत् जप करना चाहिए। इससे देवी की कृपा से अवश्य कामना सिद्धि होती है–

ॐ कात्यायनि महामाये महायोगिनी अधीश्वरी।
नन्दगोपसुते देवि ! पतिं मे कुरू ते नमः॥

(हे कात्यायनि, महामाया, महायोगिनियों की अधीश्वरि ! मुझे भगवान् कृष्ण सदृश पति प्रदान करो ! तुम्हें नमस्कार है।)

(13) श्रीगणेश जी के विभिन्न मन्त्र

- **श्री महागणपतिस्वरुप प्रणव-मन्त्र–'ॐ'।**
- **श्रीमहागणपतिका प्रणव-सम्पुटित बीज-मन्त्र–'ॐ' गं 'ॐ'।**
- **सबीज गणपति–मन्त्र–'गं गणपतये नमः'।**
- **प्रणवादि सबीज गणपति-मन्त्र–'ॐ गं गणपतये नमः'।**
- **नाम मन्त्र– (क) ॐ नमो भगवते गजाननाय (द्वादशाक्षर)**
  (ख) श्री गणेशाय नमः (सप्ताक्षर)
  (ग) ॐ श्री गणेशाय नमः (अष्टाक्षर)
- **उच्छिष्टगणपति-नवार्णमन्त्र–'ॐ हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा'।**
- **एकोनविंशत्यक्षरोच्छिष्टगणपतिमन्त्र–'ॐ नम उच्छिष्टगणेशाय हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा'।**

(14) कुछ साधारण अकाट्य मन्त्र प्रयोग

(1) सुलभ यात्रा के लिए–इस मन्त्र का जप करने के सभी जगह से साधन सुलभ होकर यात्रा सुखद होती है।

"गच्छ गौतम शीघ्र त्वं ग्रामेषु नगरेषु च।
आसनं भोजनं यानं सर्वं मे परिकल्पय।।"

(2) सर्प भगाने के लिए–जब कभी सर्प दिखलाई दे उसी समय इस मन्त्र को जोर से सर्प के सामने कहना चाहिए। इसको सुनते ही सर्प तत्क्षण लौट जाएगा तथा किसी को नहीं काटेगा। रात्रि में सोते समय भी मन्त्र को कहा जाता है। इसे कण्ठस्थ कर लेना चाहिए।

" सर्पापसर्प भद्रं ते गच्छ सर्प महाविष।
जन्मेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीक वचनं स्मर।।
आस्तीकवचनं स्मृत्वा यः सर्पो न निवर्तते।
शतधा भिद्यते मूर्ध्नि शिंशपावृक्षको यथा।।"

(3) चौर-भय हटाने के लिए–रात्रि में सोते समय इस मन्त्र को कहकर तीन ताली बजाकर सोयें। इससे चोरी नहीं होगी। सोने से पूर्व द्वारकी सांकल बन्द करते समय भी यथाशक्ति इस मन्त्र का जप करने से चोर आदि रात्रि में आवेगा भी तो उसे खाली हाथ लौटना पड़ेगा।

"तिस्रो भार्या कफल्लस्य दाहिनी मोहिनी सती। तासां स्मरणमात्रेण चौरो गच्छति निष्फलः।। कफल्ल कफल्ल कफल्ल।।"

(4) चोर भगाने हेतु–सोते समय घर के ताले लगते हुए यह मन्त्र कहने से चोर घर में आएगा ही नहीं।

"आदिचौरकफल्लस्य ब्रह्मदत्तवरस्य च।
तस्य स्मरणमात्रेण चौरो विशति न गृहे।।"

(5) सुखद निद्रा हेतु–यदि किसी को नींद न आए, तो सोते समय हाथ-पैर धोकर इस मन्त्र का उच्चारण करते रहें। 2-3 दिन प्रयोग के बाद ही शीघ्र सुखद निद्रा आने लगेगी।

"अगस्तिर्माधवश्चैव मुचुकुन्दो महाबलः।
कपिलो मुनिरास्तीकः पञ्चैते सुखशायिनः।।"

(6) दुःस्वप्न दूर करने के लिए–यदि किसी को बुरे स्वप्न आते हों, तो रात्रि में हाथ-पैर धोकर शांत-चित्त से मुख आसन पर बैठकर 108 बार इस मन्त्र का जप प्रतिदिन करें और बुरे स्वप्न का काल भी अच्छा होगा।

"वाराणस्यां दक्षिणे तु कुक्कुटो नाम वै द्विजः तस्य स्मरणमात्रेण दुःस्वप्नः सुखदो भवेत्।।"

(7) रोग शान्ति हेतु–सभी प्रकार की रोग-निवृत्तिके लिए निम्न श्लोक का जप करें। जो लोग श्लोक का पाठ करने में असमर्थ हैं, वे ये 3 मन्त्रों का ही जप करें–**अच्युताय नमः, अनन्ताय नमः, गोविन्दाय नमः।**

"अच्युतानन्त गोविन्द नामोच्चारणभेषजात्।
नश्यन्ति सकलाः रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।"

(8) पारिवारिक कलह निवृत्ति हेतु–

"या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।"

–इस मन्त्र का प्रतिदिन 108 बार जप करने से परिवार में कलह-क्लेश आदि की निवृत्ति होती है।

(15) शिव मन्त्रों से रोग एवं कष्टों से मुक्ति

स्वामी शिवोऽहं ने शैव शास्त्रों के अध्ययन एवं ध्यान मार्ग में विस्तृत अनुसन्धान करके भगवान् सदाशिव के नित्य पार्षद नन्दी महाराज की कृपा के अमृत का आस्वादन करते हुए अब तक विभिन्न प्रकार के रोगों से शीघ्र मुक्ति के लिए जो दिव्य मन्त्रावली प्राप्त की है उसे विश्व कल्याण के लिए सार्वजनिक किया जा रहा है। अतः आप अपनी आवश्यकतानुसार मन्त्र का चयन करके नियमित विधिपूर्वक जप करें तो आप असाध्य रोगों से भी सरलता और सहजता से मुक्त हो सकते हैं। आप साधक श्री से विनीय प्रार्थना है कि स्नानादि करके नित्य पूजन के पश्चात् प्रतिदिन प्रातः समय पवित्र मन से श्रद्धा विश्वासपूर्वक **'ॐ नमः शिवाय शम्भवे सर्वेशाय नमः।'** मन्त्र का एक माला जाप करके रोग के अनुसार मन्त्र का चयन करके संकल्पपूर्वक 5 माला जप करें। (देखें हमारी पुस्तक **'शिव-मन्त्रावली'**)

मन्त्र जप विधान

सामान–आसन, गोमुखी सहित, रुद्राक्ष माला, पंचपात्र, आचमनी और जल।

क्रिया–

(1) प्रथम आचमन–ॐ केशवाय नमः।
(2) द्वितीय आचमन–ॐ नारायणाय नमः।
(3) तृतीय आचमन–ॐ माधवाय नमः।
(4) हस्त प्रक्षालन (हथेली धोना)–ॐ गोविन्दाय नमः कह कर हथेली धो लें।

रोगानुसार मन्त्र

1. कैंसर (Cancer) : ॐ नमः शिवाय शम्भवे कर्केशाय नमो नमः।
2. बुखार (Thrilling Rheumatism) : ॐ नमः शिवाय शम्भवे ज्वरेशाय नमो नमः।
3. कंप (Malaria) : ॐ नमः शिवाय शम्भवे स्पन्देशाय नमो नमः।
4. श्वास (Asthma) : ॐ नमः शिवाय शम्भवे श्वासेशाय नमो नमः।
5. कफ (Cough) : ॐ नमः शिवाय शम्भवे शीतेशाय नमो नमः।
6. हृदय (Cardiac) : ॐ नमः शिवाय शम्भवे व्योमेशाय नमो नमः।
7. पक्षाघात (Paralysis) : ॐ नमः शिवाय शम्भवे खगेशाय नमो नमः।
8. अनिद्रा (Insomnia) : ॐ नमः शिवाय शम्भवे चन्द्रेशाय नमो नमः।
9. मधुमेह (Diabetes) : ॐ नमः शिवाय शम्भवे भवेशाय नमो नमः।
10. रक्त-हीनता (Anaemia) : ॐ नमः शिवाय शम्भवे कव्येशाय नमो नमः।
11. श्वेत कुष्ठ (Leucoderma) : ॐ नमः शिवाय शम्भवे अर्केशाय नमो नमः।
12. कुष्ठ (Leprosy) : ॐ नमः शिवाय शम्भवे भूमीशाय नमो नमः।
13. कामला या पीलिया (Jaundice) : ॐ नमः शिवाय शम्भवे वर्णेशाय नमो नमः।

०००द्वादश राशियों का ग्रहगोचरानुसार फलादेश एवं उपाय–2021 ई.०००

वर्षफल–मेष राशि

वर्षप्रवेश कुण्डली

1 मं., 2 रा., 3, 4 चं., 5, 6, 7, 8 शु.के., 9 सू.बु., 10 गु.श., 11, 12
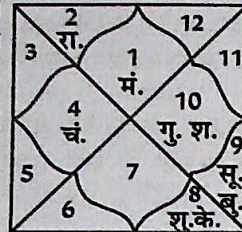
वर्षभर अष्टम भाव में केतु का संचार रहने से बनते कार्यों में अड़चनें, आर्थिक परेशानियां तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी कष्टों का विशेष रूप से सामना करना पड़ेगा। यद्यपि वर्षारम्भ से 21 फर. तक मंगल स्वराशिगत संचार करने से उद्यम एवं उत्साह में वृद्धि होगी। ता. 22 फर. से 13 अप्रैल तक द्वितीय भाव (धन) में **'मंगल-राहु'** योग रहने से विकट आर्थिक संकट उत्पन्न हो सकता है, खर्च अधिक तथा स्वास्थ्य कष्ट रहे। ता. 13 अप्रैल से 14 मई तक सूर्य इस राशि पर उच्चस्थिति में संचार करेगा।

ता. 2 जून से 19 जुला. के मध्य मंगल नीच राशिगत रहेगा। ता. 20 जुला. से 5 सितं. के मध्य मंगल सिंह राशिगत होने से बिगड़े कार्यों में कुछ सुधार, परन्तु खर्च अत्यधिक रहें। ता. 6 सितं. से 21 अक्तू. के मध्य मंगल कन्या राशिस्थ होने से निर्वाह योग्य धन लाभ हो, परन्तु स्वास्थ्य के बारे में विशेष सावधानी बरतें। ता. 22 अक्तू. से 4 दिसं. तक मंगल की पुनः स्वगृही दृष्टि होने से शुभ फल घटित होंगे। ता. 5 दिसं. से वर्षान्त तक मंगल अष्टम भावस्थ होने से भाई-बन्धुओं से कुछ विरोध, मानसिक एवं शारीरिक कष्ट रहें।

उपाय–(1) वर्षभर संकल्पपूर्वक श्रीगणेश चतुर्थी का व्रत रखना तथा **'श्रीगणेश संकटनाशक स्तोत्र'** का पाठ करना शुभ रहेगा।

(2) गौओं को जौं, गेहूँ एवं उड़द के आटे से बनी चपातियां, शक्कर सहित हर मंगलवार एवं शनिवार को खिलाएँ।

(3) शुक्ल पक्ष के मंगलवार से शुरु करके 11 मंगलवार तक व्रत रखना शुभ होगा। प्रातः श्रीहनुमान चालीसा का पाठ करके श्रीहनुमान मन्दिर में सिन्दूर, तेल, नारियल तथा मिष्ठान्न प्रसाद चढ़ाना शुभ होगा। (देखें–**'अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय'**) (लेखक–पं. पन्ना लाल ज्यो.)

वर्षफल–वृष राशि

वर्ष प्रवेश कुण्डली

1 मं., 2 रा., 3, 4 चं., 5, 6, 7, 8 शु.के., 9 सू.बु., 10 गु.श., 11, 12
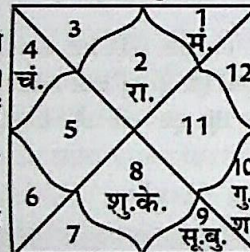
वृष राशि पर राहु का संचार वर्षभर रहने से संघर्ष अधिक, बनते कार्यों में विघ्न, मानसिक तनाव और कठिन हालात का सामना रहेगा। ता. 4 से 27 जन. तक राशिस्वामी शुक्र अष्टमस्थ रहने से बनते कामों में अड़चनें, स्वास्थ्य में कमी तथा खर्चों की अधिकता रहेगी। ता. 28 जन. से 20 फर. तक शुक्र मित्रराशिगत भाग्यस्थान में संचार करेगा।

ता. 17 मार्च से 9 अप्रैल तक शुक्र उच्च राशिस्थ (मीन) होने से अकस्मात् धन लाभ के चाँस बनेंगे, परन्तु खर्च भी अधिक रहेंगे। ता. 10 अप्रै. से 3 मई तक शुक्र द्वादशस्थ (मेष) में होने से स्वास्थ्य कष्ट और खर्च अधिक रहेंगे। ता. 14 मई से 14 जून के मध्य सूर्य का संचार भी होने से क्रोध, उत्तेजना से बचना चाहिए। ता. 4 से 28 मई तक शुक्र स्वराशिगत (वृष) होने से स्वास्थ्य लाभ तथा कुछ बिगड़े कामों में सुधार होंगे। परन्तु ता. 11 अग. से 5 सितं. तक शुक्र कन्या (नीच) राशिस्थ होने से संघर्षपूर्ण परिस्थितियां बनेंगी। 30 अक्तू. से 7 दिसं. तक शुक्र अष्टम (धनु) भावस्थ होने से पारिवारिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी उलझनें बढ़ेंगी।

उपाय–(1) संकल्पपूर्वक 1 वर्ष तक शुक्रवार (सन्तोषी माता) का व्रत रखना शुभ रहेगा।

(2) शुक्रवार वाले दिन श्रीदुर्गा-पूजन, 5 कन्या पूजन, उन्हें खीर सहित श्वेत वस्तुएं देना एवं गौशाला में शुक्रवार से शुरु करके सात दिन तक गाय को हरा चारा, गुड़, डालना शुभ होगा।

(3) वर्षभर पक्षियों को बाजरा डालना तथा प्रत्येक संक्रान्ति को एक नारियल सिर से 3 बार (Anti Clockwise) घुमाकर तथा राहु के बीज मन्त्र पढ़कर चलते पानी में बहाएं।

वर्षफल–मिथुन राशि

वर्ष प्रवेश कुण्डली

1 मं., 2 रा., 3, 4 चं., 5, 6, 7, 8 शु.के., 9 सू. बु., 10 गु.श., 11, 12
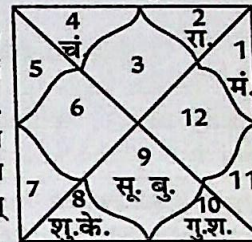
वर्षभर मिथुन राशि से शनि अष्टमस्थ संचार करने से शनि की ढैय्या का प्रभाव रहेगा। जिससे वृथा दौड़धूप एवं खर्च अधिक होंगे। घरेलु एवं व्यवसायिक उलझनें बढ़ेंगी। ता. 5 जन. से 25 जन. तक राशिस्वामी बुध अष्टमस्थ (मकर) होने से स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। ता. 30 जन. से 20 फर. तक बुध वक्री होने से आकस्मिक घटना घटेगी। धन का खर्च अकस्मात् बढ़ेगा। 21 फर. से बुध मार्गी होने से हालात में सुधार होगा। ता. 11 मार्च से 31 मार्च तक बुध भाग्य स्थान में (कुम्भस्थ) आने से भाग्योन्नति तथा उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे।

1 अप्रैल से 15 अप्रैल के मध्य बुध मीन राशिस्थ (नीच) आने से स्वास्थ्य हानि तथा अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। ता. 30 मई से मिथुनस्थ बुध पुनः वक्री होने से खर्च बढ़ेंगे। ता. 3 से 22 जून के मध्य वक्री बुध व्यय (12वें) भाव में होने से व्यर्थ यात्राएं, खर्च अधिक तथा आय सीमित रहे। ता. 7 से 24 जुला. के मध्य बुध मिथुन (स्व.) राशि में संचार करने से मनोरंजन एवं विलासादि कार्यों पर खर्च होगा।

उपाय–(1) लगातार 7 शनिवार सूखे नारियल को तेल का टीका लगातार काली डोरी लपेटकर अपने सिर से 3 बार छुआकर शनि का बीज मन्त्र पढ़ते हुए शाम के समय चलते पानी में बहा देवें।

(2) लगातार 6 बुधवार श्रीविष्णु सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करके फलादि से कन्या पूजन करना विशेष शुभ रहेगा।

(3) लगातार 6 बुधवार साबुत मूँगी (सामर्थ्यानुसार) धर्म स्थान अथवा पिंगलवाड़ा में दालें देना शुभ रहेगा। (देखें पुस्तक–**'अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय'**)

वर्षफल–कर्क राशि

वर्ष प्रवेश कुण्डली

वर्षभर इस राशि पर शनि की शत्रु सप्तम दृष्टि रहने से कुछ अशुभ प्रभाव रहेंगे। जिससे निकट बन्धुओं से विरोध, घरेलु कलह-क्लेश, रोग एवं शत्रुभय तथा आर्थिक उलझनों का सामना रहेगा। वर्षारम्भ से 5 अप्रैल तक तथा फिर 14 सितं. से 19 नवं. तक गुरु की उच्च दृष्टि रहने से बीच-बीच में शुभ फल घटित होंगे। धार्मिक कार्यों में व्यस्तता, उच्च प्रतिष्ठित लोगों के सम्पर्क से आय के स्रोतों में वृद्धि होगी।

ता. 14 जन. से 12 फर. के मध्य इस राशि पर सूर्य की दृष्टि तथा वर्षारम्भ से 21 फर. तक मंगल की नीच दृष्टि रहेगी, जिससे क्रोध एवं उत्तेजना बढ़ेगी। ता. 16 जुलाई से 15 अगस्त के मध्य सूर्य का संचार इस राशि पर रहने से धन का व्यय अधिक बढ़ेगा। 23 मई से 10 अक्तू. तक शनि वक्री होकर इस राशि के भाग्य-भाव को देखेगा। भाग्य में अनेक प्रकार के उतार-चढ़ाव एवं परिवर्तन देखने को मिलेंगे।

उपाय–(1) 'सर्प-सूक्त' का पाठ करें।

(2) कृष्ण पक्ष के शनिवार से प्रारम्भ करके लगातार 7 शनिवार सूखे नारियल को तेल का टीका लगाकर काली डोरी लपेटकर अपने सिर से 3 बार छुआकर शनि बीज मन्त्र पढ़ते हुए सायंकाल चलते पानी में बहा देवें।

वर्षफल–सिंह राशि

वर्ष प्रवेश कुण्डली

वर्षारम्भ से 28 मार्च तक गोचरस्थ 'कालसर्प योग' रहने तथा वर्षभर शनि षष्ठस्थ संचार करने से अत्यन्त कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों के पश्चात् निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। यद्यपि 22 फर. से 13 अप्रैल तक मंगल की इस राशि पर चतुर्थ दृष्टि होने से उत्साह एवं पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। ता. 14 मार्च से 13 अप्रै. तक सूर्य अष्टमस्थ होने से पिता एवं स्वयं के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। ता. 14 अप्रैल से 14 मई तक सूर्य उच्च राशि में संचार करने से भाग्योन्नति, उच्च प्रतिष्ठित तथा देश-विदेश के लोगों के साथ सम्पर्क/सम्बन्ध बनेंगे। विदेश जाने की भी योजना बन सकती है।

ता. 6 अप्रैल से 13 सितं. तक, पुनः 20 नवं. से वर्षान्त तक गुरु की सप्तम दृष्टि रहने से शुभ कार्यों की ओर प्रवृत्ति बढ़ेगी। ता. 20 जुला. से 5 सितं. तक मंगल का तथा 17 अग. से 16 सितं. तक सूर्य का इसी राशि में संचार रहने से व्यवसाय में धन-लाभ और उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। ता. 17 अक्तू. से 16 नवं. के मध्य सूर्य नीच (तुला) राशि में आने से धन हानि तथा आकस्मिक खर्च बढ़ेंगे।

उपाय–(1) रविवार का व्रत विधिपूर्वक रखें। ब्राह्मण को भोजन करवाकर लाल वस्त्र, लाल फल, गुड़, नारियल आदि धर्मग्रन्थ सहित दान करें।

(2) हर संक्रान्ति को सूर्य गायत्री मन्त्र की एक माला तथा सूर्यार्घ्य देवें तथा धर्मस्थान पर आटा, गुड़, लाल फल एवं लाल वस्त्र का दान शुभ होगा।

(3) आदित्यहृदय स्तोत्र का वर्षभर प्रतिदिन पाठ करना कल्याणकारी रहेगा। कम-से-कम रविवार वाले दिन अवश्य करें।

वर्षफल–कन्या राशि

वर्ष प्रवेश कुण्डली

पंचमस्थ शनि रहने से घरेलु एवं कारोबारी उलझनों के कारण संघर्ष एवं मानसिक तनाव अधिक रहेगा। ता. 5 जन. से 25 जन. तक, पुनः 4 फर. से 10 मार्च तक राशिस्वामी बुध पंचम भाव में संचार करने से संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 30 जन. से 20 फर. तक बुध वक्री रहने से भी सन्तान एवं घरेलु चिन्ताएं रहेंगी।

ता. 11 मार्च से 31 मार्च तक बुध षष्ठस्थ, तदुपरान्त 15 अप्रै. तक नीचस्थ फिर 31 अप्रैल तक अष्टमस्थ रहने से स्वास्थ्य हानि, मानसिक तनाव तथा आय में कमी व खर्चों में वृद्धि होगी। मई-जून में भी परिस्थितियां संघर्षपूर्ण रहेंगी, व्यर्थ की यात्राएं रहें। ता. 7 जुला. से बुध स्वराशि (मिथुन) में संचार करने से शुभ फल प्रकट होंगे। ता. 26 अग. से 21 सितं. के मध्य भी बुध स्वराशि कन्या में संचार करने से तथा ता. 2 अक्तू. से 1 नवं. तक बुध पुनः कन्या में होने से परिस्थितियां कुछ अनुकूल रहेंगी। नवं.-दिसं में व्यवसायिक उलझनें बढ़ेंगी।

उपाय–(1) लगातार 6 बुधवार साबुत मूँगी (सामर्थ्यानुसार) धर्मस्थान अथवा पिंगलवाड़ा में दान देना शुभ होगा।

(2) बुधवार और शनिवार को शिवमन्दिर में शिवलिङ्ग पर कच्ची लस्सी और बेलपत्र पर चंदन व हल्दी का तिलक करके श्रीशिवअष्टोत्तर नाम (भगवान् शंकर के 108 नाम) का जप करते हुए चढ़ावें। दो फल तथा सरसों के तेल का दीपक जलाना शुभ होगा।

(3) बुधवार को श्रीविष्णु सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करके फलादि से कन्या पूजन करना विशेष शुभ रहेगा।

वर्षफल–तुला राशि

वर्ष प्रवेश कुण्डली

शनि की ढैय्या का प्रभाव इस राशि पर वर्षभर रहेगा। वर्षारम्भ से 21 फर. तक इस राशि पर मंगल की दृष्टि रहने से स्वभाव में क्रोध, उत्तेजना एवं चिड़चिड़ापन रहे। ढैय्या के कारण वृथा दौड़धूप, अनावश्यक खर्च, गुप्त चिन्ताएं रहेंगी। ता. 4 जन. से 27 जन. तक राशिस्वामी शुक्र चतुर्थ भाव में गुरु-शनि के साथ संचार करने से पारिवारिक उलझनें रहेंगी। ता. 17 मार्च से 9 अप्रै. तक शुक्र मीन (उच्च) राशि में होने से वाहन आदि सुख/साधनों खर्च अधिक होंगे। ता. 10 अप्रै. से 3 मई तक शुक्र की तुला राशि पर स्वगृही दृष्टि होने से धन लाभ व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। ता. 4 मई से 28 मई तक शुक्र अष्टमस्थ होने से अपव्यय अधिक एवं घरेलु उलझनें बढ़ेंगी। जून मास में शुक्र भाग्य स्थान में होने से लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त
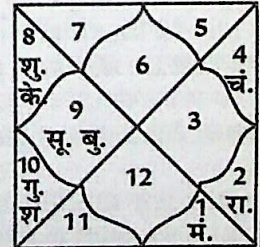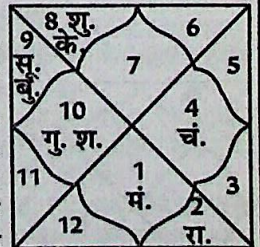
होंगे। परन्तु ता. 22 जून से 10 अग. तक शुक्र कर्क व सिंह राशि में संचार करने से व्यवसाय में अस्थिरता व हानि का वातावरण बनेगा।

ता. 11 अग. से 4 सितं. तक शुक्र कन्या (नीच) में होने से वृथा दौड़धूप एवं धन हानि होगी। ता. 6 सितं. से 1 अक्तू. तक शुक्र तुला (स्वराशि) में होने से बिगड़े कार्यों में सुधार होने के संकेत हैं। ता. 2 से 30 अक्तू. तक शुक्र-केतु योग धन भाव में होने से तथा ता. 17 अक्तू. से 15 नवं. तक सूर्य इस राशि पर संचार करने से क्रोध एवं तनाव बढ़ेगा।

उपाय–(1) शनि की ढैय्या के अशुभ प्रभाव के निवारण हेतु हर शनिवार शनि-मन्दिर में तेल चढ़ाना और दशरथकृत शनि स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा।

(2) स्वास्थ्य एवं घरेलु सुख के लिए वर्षभर विधिपूर्वक शनिवार का व्रत करना शुभ रहेगा।

(3) शुक्रवार वाले दिन श्रीदुर्गा-पूजन, 5 कन्या-पूजन, उन्हें खीर सहित श्वेत वस्तुएं देना एवं गौशाला में शुक्रवार से शुरु करके सात दिन तक गाय को हरा चारा, गुड़ डालना शुभ होगा।

वर्षफल–वृश्चिक राशि

वर्ष प्रवेश कुण्डली

वर्षभर वृश्चिक राशि पर केतु का संचार रहने से विशेष संघर्षपूर्ण एवं कठिन चुनौतियों से भरा समय रहेगा। वर्षारम्भ से 21 फर. तक राशिस्वामी मंगल की अष्टम तथा 22 फर. से 12 अप्रै. तक सप्तम दृष्टि रहने से गुजारे योग्य आय होती रहेगी, परन्तु मंगल की केतु पर दृष्टि के कारण स्वास्थ्य विकार, मस्तिष्क पीड़ा, नेत्र-कष्ट एवं दुर्घटना से चोटादि का भय है।

ता. 2 जून से 19 जुला. तक मंगल नीच राशि में आने से संघर्ष अधिक और सेहत भी ठीक न रहे। ता. 20 जुला. से 5 सितं. तक मंगल की स्वगृही दृष्टि रहने से मान-सम्मान में वृद्धि तथा निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 22 अक्तू. से 4 दिसं. तक मंगल द्वादश (व्यय) भाव में रहने से स्वास्थ्य विकार, दुर्घटना से चोटादि लगने का भय रहे। ता. 5 दिसं. से वर्षान्त तक मंगल वृश्चिक राशि में ही संचार करेगा।

उपाय–(1) शुक्लपक्ष के मंगलवार से शुरु करके संकल्पपूर्वक हर मंगलवार का विधिपूर्वक व्रत रखें तथा छोटी कन्याओं, लड़कों को मीठा प्रसाद बाँटें।

(2) संकल्पपूर्वक वर्षभर श्रीगणेश चतुर्थी का व्रत रखना शुभ रहेगा।

(3) अन्धविद्यालय या कुष्ट आश्रम में प्रत्येक मंगल या शनिवार सूखा अनाज या पकाया हुआ भोजन दान करें।

वर्षफल–धनु राशि

धनु राशि से शनि द्वितीयस्थ होने से साढ़ेसाती का अशुभ प्रभाव अभी वर्षभर रहेगा। आय कम व खर्च बढ़ेंगे। आर्थिक उलझनों के कारण अशान्ति रहे। राशिस्वामी गुरु भी वर्षारम्भ से 5 अप्रैल तक नीचराशिगत (मकर) द्वितीय भाव में शनि युक्त संचार करने से कुछ आर्थिक उलझनों के बावजूद धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे।

वर्ष प्रवेश कुण्डली

ता. 22 से 1 जून तक मंगल की तथा 15 जून से 15 जुला. तक सूर्य की दृष्टि इस राशि पर रहने से अत्याधिक क्रोध एवं आवेश के कारण नज़दीकी लोगों के साथ कलह-क्लेश होने का भय होगा। ध्यान रहे, ता. 6 अप्रैल से 13 सितं. तक गुरु तृतीय भाव में होने से बीच-2 धन लाभ के चाँस बनते रहेंगे, ता. 6 सितं. से 21 अक्तू. तक पुनः मंगल की दृष्टि रहने से क्रोध एवं आवेश से बचें। ता. 14 सितं. से 19 नवं. तक गुरु पुनः नीच राशिगत शनि युक्त संचार करने से आर्थिक उलझनें बढ़ सकती हैं। ता. 20 नवं. से वर्षान्त तक की समयावधि शुभ रहेगी।

उपाय–(1) मार्च मास तक विशेष रूप से संकल्पपूर्वक बृहस्पतिवार का विधि अनुसार व्रत रखना शुभ होगा। (देखें पं. देवी दयालु '**बृहस्पतिवार व्रत कथा**')

(2) लगातार 16 बृहस्पतिवार छोटी कन्याओं/बालकों को केले तथा बेसन की बर्फी बाँटना शुभ रहेगा।

(3) शनि-साढ़ेसाती के अशुभ प्रभाव के निवारण हेतु हर शनिवार को शनि मन्दिर में तेल चढ़ाना तथा दशरथकृत '**शनि-स्तोत्र**' का पाठ करना शुभ होगा। **–पं. विवेक शर्मा**

वर्षफल–मकर राशि

वर्ष प्रवेश कुण्डली

वर्षभर शनि का संचार इस राशि पर होने से यद्यपि शनि-साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा। परन्तु शनि स्वराशिगत होने से विपरीत परिस्थितियों के बावजूद नई-नई योजनाएं बनेंगी, मानसिक तथा पारिवारिक उलझनों के बावजूद बीच-बीच में धन लाभ, विदेश-गमन, भूमि-वाहनादि सुखों की भी प्राप्ति होगी। वर्षारम्भ से 5 अप्रैल तक गुरु नीच राशिगत होकर शनि के साथ संचार करने से संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य धन लाभ, खर्चों की अधिकता, परिवार में वैमनस्य रहे। (14) जन. से 12 फर. के मध्य सूर्य इसी राशि में संचार करने से बनते कार्यों में अड़चनें रहें। घरेलु उलझनें व क्रोध भी अधिक आएगा। ता. 2 जून से 19 जुला. तक मंगल की स्वोच्च दृष्टि इस राशि पर रहेगी, परन्तु मंगल-शनि के मध्य समसप्तक योग भी रहेगा।

उपाय–(1) लगातार 7 शनिवार अपने इष्टदेव के आगे सरसों के तेल का दीया जलाएं तथा शनिवार का व्रत वर्षभर रखें।

(2) नीले रंग की बोतल में पानी डालकर सात दिन धूप में रखना, फिर उस पानी को नहाने वाले पानी में डालकर शनिवार या शनि के नक्षत्र से आरम्भ करके 27 दिन स्नान करें।

(3) लोहे की कटोरी में तेल का छायापात्र करें तथा वह तेल पाँच शनिवार आक के पौधे पर डालें। पांचवें शनिवार तेल चढ़ाने के पश्चात् तेल वाली कटोरी को वहीं दबा दें।

(4) '**अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय व टोटके**' (**लेखक–पं. पन्ना लाल ज्यो.**) पुस्तक में दिए गए शनि वज्रपञ्जर कवच या शनि स्तोत्र का पाठ करने से विशेष लाभ होगा।
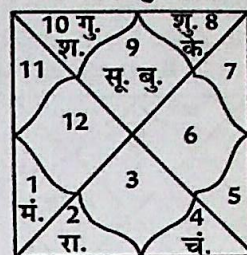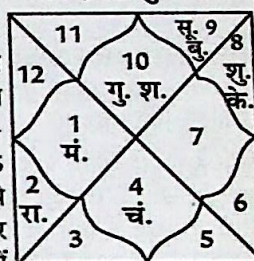
बारह राशियों का ग्रहगोचर-अनुसार मासगत फलादेश-सन् 2021 ई.

आगे बारह राशियों का मासिक एवं वार्षिक फल ग्रहों की गोचर स्थित्यनुसार लिखा गया है। अपने जीवन सम्बन्धी और अधिक जानकारी एवं महत्त्वपूर्ण पक्ष जैसे-विद्या, व्यवसाय, नौकरी, विवाह, सन्तान, विदेश गमनादि प्रश्नों सम्बन्धी विशेष फलादेश तथा तत्सम्बन्धी समस्याओं के विशेष उपाय जानने के लिए शुद्ध एवं बड़ी जन्मपत्री का होना आवश्यक है। हमारे कार्यालय से शुद्ध एवं विस्तृत हस्तलिखित जन्मपत्री बनवाने के लिए जातक/जातिका का नाम, जन्म-समय, जन्म स्थान (Place & Time of Birth), माता-पिता का नाम एवं व्यवसाय आदि का विवरण तथा अग्रिम रूप में पूरी फीस भेजें। मध्यम विस्तृत जन्मपत्री हस्तलिखित फलादेश सहित की फीस 1600, अधिक वृहद् विस्तृत की 2500 रुपए। सामान्य मध्यम जन्मपत्री की 801 रु., वार्षिक वर्षफल, उपायों आदि सहित की फीस 801 रु.। विदेश में उत्पन्न जातक की फीस 31 पौंड अथवा 51 डालर होगी। डाक व्यय 50 रु. जोड़कर भेजें, फीस M.O. या ड्राफ्ट द्वारा अग्रिम इस पते पर भेजें- -पं. विवेक शर्मा सुपुत्र पं. पन्ना लाल शर्मा, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर-8 (पंजाब), फोन-0181-2457959

मेष राशि (Aries)—(चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

जनवरी—राशिस्वामी मंगल इसी राशि पर होने से धन लाभ एवं उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। परन्तु अष्टमस्थ केतु पर मंगल की दृष्टि के कारण स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। चोटादि का भय है।

फरवरी—ता. 21 तक मंगल स्वराशिगत होने से उद्यम एवं उत्साह में वृद्धि होगी। सांसारिक कार्यों में प्रगति होगी। गृह में खुशी का वातावरण बनेगा। मासान्त में द्वितीय भाव में मंगल-राहु योग होने से कुछ आर्थिक परेशानियां उभरेंगी।

मार्च—द्वितीय भाव में मंगल-राहु योग होने से कार्यों में विघ्न-बाधाएं रहेंगी। आय कम व खर्च अधिक होगें। अत्यन्त कठिनाईयों के बाद आय के साधन बनेंगे। वृथा भागदौड़ एवं आकस्मिक खर्च अधिक होंगे।

अप्रैल—पूर्वार्द्ध में अत्यधिक दौड़धूप के बावजूद आय में कमी एवं खर्च अधिक होंगे। कार्य-व्यवसाय में उलझनें एवं रुकावटें पैदा होंगी। ता. 13 के बाद मंगल तृतीयस्थ तथा सूर्य इस राशि पर उच्चस्थ होने से संघर्ष के बावजूद धन लाभ के साधन बनते रहेंगे। **उपाय**—ता. 13 से पापप्रशमन स्तोत्र एवं वैशाख माहात्म्य का पाठ करें।

मई—मंगल तृतीयस्थ होने से भूमि, जायदाद एवं वाहनादि पर खर्च अधिक होगा। मंगल-शनि के मध्य (6-8) दृष्टि सम्बन्ध होने से क्रोध अधिक एवं तनाव से पारिवारिक जनों के साथ मनमुटाव हो। मंगलवार के व्रत रखना शुभ होगा।

जून—मासारम्भ ता. 2 से ही मंगल नीचराशिगत संचार करने से कार्य-व्यवसाय में उलझनें व परेशानियां अधिक रहेंगी। अत्यधिक दौड़-धूप करने पर भी धन लाभ अल्प रहेंगे। मासान्त में विलास, वाहनादि कार्यों पर व्यय अधिक होगा।

जुलाई—ता. 19 तक मंगल-शनि के मध्य समसप्तक योग होने से अत्यन्त संघर्षपूर्ण हालात का सामना रहेगा। आय कम व खर्च अधिक होंगे। स्वास्थ्य भी कुछ नर्म रहे। अपने नजदीकी लोग भी परायों जैसा बर्ताव करेंगे। मासान्त तक कुछ परिस्थितियां सुधरेंगी।

अगस्त—स्वास्थ्य में धीरे-धीरे सुधार होगा। परन्तु व्यवसाय में लाभ कम तथा खर्च अनियन्त्रित होंगे। मानसिक उचाटता तथा निकट बन्धुओं से मनमुटाव रहेगा। **उपाय**—प्रतिदिन गौओं को मीठी चपातियां और हरा चारा खिलाना शुभ रहेगा।

सितम्बर—आशाओं में किंचित सफलता, धन लाभ व उन्नति के अवसर बनेंगे। ता. 6 के पश्चात् वृथा यात्रा, स्थान-परिवर्तन, मानसिक तनाव और अज्ञात भय बना रहेगा। सावधानी बरतें। **उपाय**—ता. 21 से पितृपक्ष में दिवंगत पितरों के निमित्त श्राद्ध के साथ पितृ-स्तोत्र का पाठ भी करें।

अक्तूबर—मंगल की दृष्टि रहने से उत्साह एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी। धनागमन के साधनों में भी वृद्धि होगी। ता. 17 से सूर्य की भी उच्च दृष्टि होने से रुके हुए कार्यों-आशाओं में सफलता तथा किसी नवीन कार्य की योजना भी बनेगी। **उपाय**—आदित्यहृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

नवम्बर—राशिस्वामी मंगल एवं सूर्य-बुध की दृष्टियां रहने से मान-सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि, उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। दाम्पत्य जीवन में उत्साह, सहयोग तथा सुख-साधनों की अधिकता रहे। **उपाय**—ता. 14 तक नित्य **'कार्तिक-माहात्म्य'** का पाठ करें।

दिसम्बर—ता. 5 से मंगल केतु युक्त अष्टमस्थ होने से स्वास्थ्य कष्ट, घरेलु उलझनें तथा बनते कामों में अड़चनें रहेंगी। धन का अपव्यय तथा लाभ में कमी रहेगी। मंगल स्वराशिगत होने से कठिन परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

वृष राशि (Taurus)—(ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो)

जनवरी—राशिस्वामी शुक्र ता. 4 से 27 तक अष्टमस्थ रहने से बनते कार्यों में विघ्न-बाधाओं का सामना रहेगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी विशेष स्वधानी बरतें। खर्च भी बढ़चढ़ कर रहेगा। **उपाय**—ता. 14 (मकर-संक्रान्ति) के दिन संकल्पपूर्वक पंचांग आदि का दान करना शुभ रहेगा।

फरवरी—शुक्र भाग्यस्थान में सूर्य-गुरु-शनि आदि ग्रहों से युक्त तथा गोचर में कालसर्प योग के प्रभाव से किसी नए कार्य की योजना बनेगी। पारिवारिक आय में वृद्धि होगी परन्तु आशानुकूल लाभ में कुछ-न-कुछ कमी रहेगी। ता. 22 से 'मंगल-राहु' का संचार इसी राशि पर होने से मन में उचाटता एवं सिर-दर्द आदि के कारण परेशानी हो।

मार्च—पूर्वार्द्ध में (ता. 16 तक) व्यवसायिक क्षेत्रों में अनेक उतार-चढ़ाव एवं संघर्ष का सामना रहेगा। ता. 17 से शुक्र उच्चस्थ होने से सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता प्राप्त होगी। धन लाभ व उन्नति के योग हैं। व्यवसायिक व्यस्तताएं बढ़ेंगी।

अप्रैल—मासारम्भ में धन लाभ के चाँस बनेंगे। ता. 10 से शुक्र द्वादशस्थ होने से खर्च अधिक, घरेलु उलझनें व तनाव भी बढ़ेगा। घरेलु समस्याओं के कारण मन परेशान रहे। **उपाय**—ता. 14 को किसी ब्राह्मण को कुम्भ (घट) दान दक्षिणा सहित करें।

मई—ता. 4 से शुक्र स्वराशिगत होने से किसी नवीन कार्य की योजना बने, पारिवारिक वातावरण पहले से सुखद होगा। गत किए गए प्रयासों से भाग्योन्नति और श्रेष्ठ व्यक्तियों से सम्पर्क लाभकारी सिद्ध होंगे।

जून—शुक्र ता. 21 तक द्वितीयस्थ है। लग्न में राहु है। आय कम और खर्च अधिक रहेगा। पुरुषार्थ और परिश्रम करने पर गुजारेलायक धन प्राप्त होता रहेगा। व्यवसायिक क्षेत्रों में अनेक उतार-चढ़ाव और कार्यशैली में परिवर्तन से लाभ के अवसर बढ़ेंगे। प्रिय-बन्धु से मुलाकात और धार्मिक कार्य पर खर्च होगा।

जुलाई—ता. 16 तक शुक्र तृतीयस्थ संचार करने से परिस्थितियों में विशेष परिवर्तन होंगे। आय कम और खर्च अधिक रहेगा। भाई-बन्धुओं से मतभेद, स्वभाव में तेज़ी एवं उत्तेजना से बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे। ता. 17 से शुक्र चतुर्थस्थ होने से गत किए गए प्रयासों का प्रतिफल कुछ दिनों के बाद प्राप्त होगा।

अगस्त—ता. 10 तक शुक्र चतुर्थस्थ होने से विशेष परिश्रम एवं भागदौड़ के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। ता. 11 से शुक्र नीचस्थ संचार करने से मानसिक तनाव एवं विद्या में विघ्न-बाधाओं का सामना रहेगा। कुछ आर्थिक परेशानियां भी रहेंगी। निकट-बन्धुओं से तकरार होगी।

सितम्बर—शुक्र षष्ठस्थ स्वराशि होने से परिस्थितियों में कुछ सुधार होने के योग हैं। धीरे-धीरे आर्थिक क्षेत्र में कुछ परिवर्तन एवं लाभ के योग बनेंगे। किसी नवीन कार्य की योजना बनेगी। परन्तु राहु लग्नस्थ रहने से कार्यरूप देने में विघ्न उत्पन्न होंगे।

अक्तूबर—शुक्र सप्तमस्थ केतु युक्त रहने से किसी विशिष्ट व्यक्ति के सहयोग से कोई बिगड़ा काम बनेगा। परिवार में शुभ मंगल कार्य भी सम्पन्न होंगे। आकस्मिक धन लाभ हो, परन्तु दाम्पत्य सुख में कमी व अनबन रहे।

नवम्बर—शुक्र अष्टमस्थ रहने से स्वास्थ्य कष्ट, पेट-विकारादि के कारण परेशानी हो। बनते कार्यों में विघ्न एवं विलम्ब पैदा होंगे। आय साधारण रहेगी। **उपाय**—श्री दुर्गा-सप्तशती का पाठ करना शुभ रहेगा।

दिसम्बर—ता. 18 तक शुक्र भाग्य स्थान में शनि युक्त संचार करने से भाग्यवश आय के साधन बनते रहेंगे। कुछ बिगड़े काम भी बनेंगे। ता. 19 से शुक्र वक्री होने से कारोबारी एवं घरेलु परिस्थितियों में अचानक परिवर्तन होगा तथा पेचीदा हालात बनेंगे।

परिस्थितियों के बावजूद निवाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। मन अशान्त, असन्तुष्ट एवं परेशान रहेगा। ता. 30 से बुध वक्री होने से आवश्यक कार्यों पर धन का खर्च अधिक होगा।

जून—ता. 3 से बुध पुनः द्वादशस्थ होने से कार्य-व्यवसाय सम्बन्धी दौड़-धूप अधिक होगी, धन के खर्च भी अधिक रहेंगे। वाहन एवं मनोरंजन आदि कार्यों पर खर्च विशेष होंगे। किसी प्रियबन्धु से मुलाकात हो।

जुलाई—मासारम्भ में व्यर्थ की भागदौड़ और फिजूल खर्ची अधिक होगी। ता. 7 से बुध पुनः स्वराशिगत आने से कुछ सोची योजनाओं में प्रगति, रुके हुए कार्यों में सिद्धि मिले। शनि की ढैय्या रहने से क्रोध के कारण बनते कार्यों में अड़चनें रहेंगी।

अगस्त—मासारम्भ में पारिवारिक एवं आर्थिक स्थिति अनिश्चित रहेगी। गुप्त परेशानी, शत्रुभय एवं शरीर कष्ट के योग हैं। ता. 9 से बुध तृतीयस्थ होने से मान-सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परन्तु ढैय्या के कारण कार्यक्षेत्र व व्यवसाय में संघर्ष अधिक होगा।

सितम्बर—मासारम्भ में बुध उच्चस्थ (कन्यास्थ) रहने से परिस्थितियों में धीरे-धीरे सुधार होगा। मानसिक तनाव से मुक्ति, उन्नति के अवसर मिलेंगे, परन्तु पारिवारिक व्यस्तता के कारण विशेष लाभ नहीं होगा। **उपाय**—श्रीविष्णु सहस्रनाम का पाठ तथा गौओं को हरा चारा खिलाना चाहिए।

अक्तूबर—वक्री एवं मार्गी अवस्था में बुध चतुर्थस्थ ही संचार करने से पराक्रम में वृद्धि, धर्मस्थान की यात्रा एवं परिवार में खुशी के अवसर मिलेंगे। शनि की ढैय्या के कारण परिवार में मतभेद एवं कलह के योग हैं। संयम रखें।

नवम्बर—अधिकांश समय व्यापार या क्रय-विक्रय के कार्यों में व्यतीत होगा। किन्तु शनि की ढैय्या होने से कार्यक्षेत्र व व्यवसाय में संघर्ष अधिक होगा। ता. 21 से बुध 6वें केतु युक्त होने से सन्तान सम्बन्धी विशेष चिन्ता रहे।

दिसम्बर—इस मास बुध की स्वगृही दृष्टि होने से कारोबार में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। अत्यन्त कठिनाई से निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होगी। गृहस्थ जीवन में तनाव की स्थिति रहे। ता. 29 के बाद शरीर अस्वस्थ रहे। दौड़-धूप एवं घरेलु उलझनें अधिक बढ़ेंगी।

मिथुन राशि (Gemini)—(क, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह)

जनवरी—ता. 4 से 25 जन. तक राशिस्वामी बुध अष्टमस्थ गुरु-शनि युक्त संचार करने से व्यवसाय में भागदौड़ एवं खर्च अधिक रहेंगे। स्वास्थ्य में विकार का भय है। किसी निकट-बन्धु से मतान्तर हो। मकर संक्रान्ति को गर्म वस्त्र एवं तिलों का दान करना शुभ होगा।

फरवरी—ता. 4 से वक्री एवं अस्तगत बुध पुनः अष्टमस्थ आ जाने से आकस्मिक खर्च बढ़ेंगे। स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी बनी रहेगी। कार्य-व्यवसाय में विघ्न-बाधाएं एवं आर्थिक परिस्थितियां अनिश्चित रहेंगी। **उपाय**—विष्णु सहस्रनाम तथा गौओं को बुधवार को हरा चारा डालना शुभ रहेगा।

मार्च—ता. 11 तक बुध अष्टमस्थ होने से आर्थिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियां बनी रहेंगी। ता. 11 से बुध भाग्यस्थ होने से परिस्थितियों में कुछ सुधार होगा। धन लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे। सेहत में भी कुछ बेहतरी होगी।

अप्रैल—मासारम्भ से बुध नीचराशिगत होने से वृथा भागदौड़ एवं खर्च की अधिकता रहेगी। विदेश सम्बन्धी कार्यों में कुछ प्रगति परन्तु विघ्नों के पश्चात् ही सफलता मिलेगी। ता. 16 से कुछ बिगड़े काम बनेंगे एवं धन लाभ होगा। सन्तान के कैरियर सम्बन्धी चिन्ता रहेगी।

मई—ता. 26 तक बुध द्वादशस्थ होने से दूरस्थ यात्राएं, स्थान परिवर्तन हो। संघर्षपूर्ण

कर्क (Cancer)—(हि, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

जनवरी—मासारम्भ से गुरु-शनि की शुभाशुभ दृष्टियां पड़ने से मिश्रित प्रभाव रहेंगे। पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि होगी। परिवार में किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। आय के साधनों में वृद्धि होगी। मानसिक तनाव एवं क्रोध की भावना अधिक रहे।

फरवरी—कार्यक्षेत्र में अकस्मात् उलझनों का सामना रहेगा। बनते कार्यों में विलम्ब और खर्च की अधिकता होगी। परन्तु निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। विद्यार्थियों में विद्या एवं कैरियर सम्बन्धी चिन्ता रहेगी। स्वभाव में चिड़चिड़ापन रहे। दशरथकृत शनि स्तोत्र का पाठ करते रहें।

मार्च—गुरु की उच्च दृष्टि रहने से कार्य-व्यवसाय में उन्नति व प्रगति के कुछ मार्ग प्रशस्त होंगे। गृह में कोई मंगल कार्य होगा। कुछ बिगड़े कार्यों में विशिष्ट व्यक्तियों से सम्पर्क करने से सुधार होगा। परिवार में भाई-बन्धु का सहयोग कम प्राप्त होगा। परन्तु कोई हानि पहुँचाने की चेष्टा करेगा। किसी पर भी भरोसा करना हानिकारक होगा।

अप्रैल—विघ्न-बाधाओं के बावजूद निर्वाह योग्य धन प्राप्त होता रहेगा। व्यर्थ ही समय नष्ट होगा। शरीर कष्ट व मानसिक तनाव रहेगा। व्यवसाय में आर्थिक परेशानी हो। संघर्ष के बावजूद गुजारेयोग्य धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। मंगलवार का व्रत रखना शुभ होगा।

मई—मासारम्भ में सूर्य उच्चस्थ होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। परन्तु इस राशि पर शनि की दृष्टि होने के कारण वृथा दौड़-धूप अधिक रहेगी। फिजूलखर्ची बढ़ेगी तथा अधिकांश समय सोच-विचार में व्यतीत होगा। ता. 27 से कुछ बिगड़े काम बनेंगे। **उपाय**—श्री हनुमान उपासना करना शुभ होगा।

जून—संघर्ष के बावजूद धन लाभ सामान्य रहे। अधिकांश समय व्यर्थ के कामों में व्यतीत होगा। उदर में विकार एवं आँखों में कष्ट का भय है। धन का अपव्यय बढ़े, किसी नए मित्र के साथ सम्पर्क पैदा होंगे। विद्या अथवा पहिले किए गए प्रयासों में सफलता तथा परिवार में खुशी के अवसर प्राप्त होंगे।

जुलाई—आय की स्थिति में कुछ सुधार होगा। विलासादि कार्यों पर धन खर्च होगा। घर-परिवार की तरफ से चिन्ता उत्पन्न होगी। मंगल के कारण स्वास्थ्य परेशानी और खर्चों में वृद्धि होगी। अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे।

अगस्त—मासारम्भ में सूर्य का संचार होने से मानसिक तनाव एवं क्रोध की भावना अधिक रहे। आलस्य में वृद्धि, भाई-बन्धु से मनमुटाव, स्वास्थ्य में गड़बड़ी उत्पन्न हो, मासान्त में विदेश से कोई शुभ समाचार प्राप्त होगा। धन लाभ कम परन्तु खर्च अधिक रहेंगे।

सितम्बर—मासारम्भ में कन्या राशि में सूर्य का संचार होने के कारण मिश्रित प्रभाव रहेंगे। नौकरी व व्यापार में यद्यपि उन्नति व लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु पारिवारिक एवं निजी उलझनों के कारण लाभ में कमी रहेगी। ता. 22 के पश्चात् कुछ बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे।

अक्तूबर—मासारम्भ में हालात में कुछ सुधार व कुछ बिगड़े काम बनेंगे। उच्च प्रतिष्ठित लोगों से मेल-जोल होगा। ता. 17 के बाद चतुर्थस्थ (नीच) सूर्य पर शनि की विशेष दृष्टि रहने से कारोबार में कई के उतार-चढ़ाव व अन्य परेशानियां रहेंगी। पारिवारिक मनमुटाव रहेगा।

नवम्बर—ता. 20 तक गुरु की उच्च दृष्टि रहने से गृह में मांगलिक एवं धार्मिक कार्य सम्पन्न होंगे। नए-नए मित्रों से मेल-मिलाप होगा। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, परिवार में सुखद माहौल होते हुए भी सन्तान सम्बन्धी गुप्त चिन्ता रहेगी।

दिसम्बर—कारोबार में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। अत्यन्त कठिनाई से निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होगी। खर्चों की अधिकता से मन परेशान रहेगा। गृहस्थ जीवन में तनाव की स्थिति रहे। शरीर अस्वस्थ रहे। ता. 16 के बाद दौड़-धूप एवं घरेलु उलझनें बढ़ेंगी। आय के साधनों में विघ्न-बाधाएं रहेंगी।

सिंह राशि (Leo)—(म, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

जनवरी—सूर्य पंचमस्थ होने से धन-लाभ एवं भाग्योन्नति के विशेष अवसर मिलेंगे। ता. 14 से सूर्य षष्ठस्थ शनि-गुरु-बुध युक्त होने से आकस्मिक धन व्यय परन्तु अत्यन्त कठिनाई से ही निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

फरवरी—मासारम्भ में व्यवसाय में अत्यन्त कठिन परिश्रम एवं संघर्ष के पश्चात् ही निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। खर्च बहुत अधिक होंगे। ता. 12 से सूर्य की स्वगृही दृष्टि रहने से लाभ व उन्नति के चाँस बनेंगे। ता. 22 से मंगल की दृष्टि रहने से भी पुरुषार्थ एवं उद्यम से सफलता मिलेगी। क्रोध से बचें।

मार्च—सूर्य-मंगल की दृष्टियां रहने से किसी मित्र के सहयोग से बिगड़ा कार्य बनेगा। विघ्न-बाधाओं के बावजूद निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। परन्तु खर्च की भी अधिकता रहेगी। मंगल-राहु तथा कालसर्प योग के कारण मानसिक तनाव बढ़ेगा। वाहनादि चलाते समय सावधानी बरतें।

अप्रैल—मासारम्भ में सूर्य अष्टमस्थ होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी कष्ट विशेषकर नेत्र एवं रक्त सम्बन्धी विकारों का भय है। ता. 14 से सूर्य उच्चस्थ होने से सोची हुई योजनाओं में कामयाबी, व्यवसाय में लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। पदोन्नति एवं धन लाभ के योग हैं। धार्मिक कार्य व उत्सवादि पर धन का व्यय होगा।

मई—सूर्य उच्चस्थ होने से अचानक कोई रुका हुआ कार्य भाग्यवश बनेगा। नौकरी में उन्नति के विशेष अवसर मिलेंगे, परन्तु 14 से दशमस्थ सूर्य-राहु योग होने के कारण व्यक्तिगत कारणों से उचित लाभ में कुछ कमी रहेगी। सिर-दर्द, नेत्र-कष्ट एवं चोटादि का भय रहे।

जून—'सूर्य-राहु' योग के कारण स्वास्थ्य परेशानी और उत्तरदायित्वों में वृद्धि होगी। मानसिक तनाव, शत्रु भय और अनावश्यक खर्च बढ़ेंगे। ता. 15 से सूर्य लाभस्थ होने से गत किए प्रयासों में सफलता मिलेगी। धन लाभ के अवसर बढ़ेंगे।

जुलाई—लाभस्थ सूर्य तथा गुरु की दृष्टि होने से धर्म-कर्म की ओर रुचि होगी एवं किसी शुभ कार्य पर खर्च होंगे। ता. 16 से सूर्य 12वें होने से खर्च अधिक होंगे, कार्य-व्यस्तताएँ भी रहेंगी। कहीं व्यर्थ की यात्रा भी होगी।

अगस्त—पूर्वार्द्ध में आशा के विपरीत खर्च अधिक होंगे। स्वास्थ्य में गड़बड़, तनाव एवं घरेलु उलझनें बढ़ेंगी। ता. 17 से सूर्य सिंहस्थ ही संचार करने से विघ्नों के बावजूद कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, परन्तु क्रोध अधिक रहे।

सितम्बर—ता. 16 तक सूर्य स्वराशिगत संचार करने से दैनिक कार्यों एवं सरकारी क्षेत्रों में कुछ रुके कार्यों में प्रगति होगी। यद्यपि आय के साधन सीमित रहेंगे। ता. 16 से वृथा भ्रमण, व्यर्थ का खर्च एवं मुश्किल हालात में धन लाभ मध्यम रहेगा।

अक्तूबर—कुछ सोची योजनाओं में आंशिक सफलता मिले, धन लाभ सामान्य रहे। ता. 17 से सूर्य नीचराशिगत होने से व्यवसाय में अत्यधिक संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आमदन के साधन बनेंगे। परिवार में व्यर्थ का तनाव और खर्च की अधिकता रहेगी।

नवम्बर—मासारम्भ में वृथा खर्चों की परेशानी होगी। भागदौड़ के उपरान्त भी आय अल्प रहेगी। व्यर्थ के झंझटों और वाद-विवाद से दूर रहें, अन्यथा हानि होगी। गुजारे योग्य धन लाभ व उन्नति के योग हैं। '**कार्तिक माहात्म्य**' का पाठ तथा इस मास उत्पन्न जातकों की कार्तिक शान्ति अवश्य करवाएं।

दिसम्बर—मासारम्भ में अत्यधिक संघर्ष के बावजूद कुछ कार्यों में सफलता और कुछ में विलम्ब होगा। धन और सुख-साधनों में आंशिक वृद्धि होगी। परिवार में शुभ मंगल कार्यों पर खर्च होगा। ता. 15 के पश्चात् विदेशी सम्बन्धों से कुछ लाभ के अवसर मिलेंगे। पारिवारिक कार्यों पर खर्च अधिक होंगे।

कन्या राशि (Virgo)—(टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

जनवरी—इस राशि पर गुरु की दृष्टि तथा ता. 5 से बुध पंचमस्थ गुरु-शनि के साथ होने से किसी नवीन कार्य की योजना बनेगी। परन्तु अड़चनों के कारण कार्यरूप देने में विलम्ब होगा। धार्मिक कार्य में रुचि बढ़ेगी और विदेश से शुभ समाचार भी मिलेगा। मासान्त में बनते कार्यों में विघ्न और आर्थिक परेशानियां होंगी।

फरवरी—ता. 4 से बुध पुनः वक्री एवं मार्गी अवस्था में पंचमस्थ संचार करने से कुछ विवादास्पद मामलें मानसिक तनाव का कारण बनेंगे। किसी निकट सम्बन्धी से तकरार होंगी। धन का खर्च अधिक होगा। श्रीसूक्तम् का पाठ करना शुभ रहेगा।

मार्च—ता. 11 से मासान्त तक बुध षष्ठस्थ रहने से बनते कामों में विघ्न-बाधाएं, स्वास्थ्य में विकार, पारिवारिक उलझनें एवं व्यवसायिक परेशानियों में वृद्धि होने के संकेत

हैं। शत्रुभय एवं अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। कोई-न-कोई समस्या अवश्य ही बनी रहेगी।

अप्रैल—मासारम्भ से बुध नीचस्थ परन्तु उसकी स्वगृही दृष्टि होने से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का सामना रहे। शरीर कष्ट व खर्च भी बढ़ेंगे। आर्थिक परेशानियां एवं धनागमन के साधनों में विघ्न उत्पन्न होंगे। ता. 16 से अष्टमस्थ बुध पेचीदा परिस्थितियां बनाएगा।

मई—मासारम्भ से बुध भाग्यस्थ राहु युक्त होने से कार्यक्षेत्र में महत्त्वपूर्ण लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे। नवीन कार्य की योजना बनेगी, परन्तु क्रियान्वयन में अभी विलम्ब रहेगा। मासान्त में आर्थिक उलझनें, खर्च अधिक, घरेलु परेशानियों के कारण मन में अशान्ति एवं असन्तुष्टता बनी रहेगी।

जून—ता. 3 से बुध पुनः भाग्यस्थ राहुयुक्त रहने से आय कम और खर्च अधिक होंगे। परिवार सम्बन्धी चिन्ता रहेगी। अत्यधिक कठिनाई से निर्वाह योग्य धन के साधन प्राप्त होंगे। परन्तु पुरुषार्थ द्वारा उन्नति व लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। अपने परिश्रम और उद्यम से लाभ प्राप्त करें।

जुलाई—ता. 7 से 25 तक बुध दशमस्थ स्वराशिगत होने से किसी नए कार्य की योजना बनेगी। आय के साधनों का विस्तार होगा। विदेश यात्रा की योजना बनेगी परन्तु राहु भाग्यस्थ होने के कारण संघर्ष बना रहेगा। व्यर्थ की भागदौड़ और परिवारिक सम्पत्ति के लिए मतभेद उभरेंगे।

अगस्त—ता. 8 से 25 अग. तक बुध द्वादशस्थ होने से आशाओं के अनुरूप सफलता प्राप्त नहीं होगी। मन उदासीन रहेगा। ता. 21-22 को कुछ विवादास्पद मामलें मानसिक तनाव का कारण बनेंगे। किसी निकट सम्बन्धी से तकरार होगा। खर्च अधिक रहें।

सितम्बर—बुध लग्नस्थ (कन्या) होने से बिगड़े कार्यों में सुधार, धन लाभ व प्रगति के मार्ग प्रशस्त होंगे। उत्तरार्द्ध में भी मिश्रित फल मिलेंगे। अत्यधिक परिश्रम करने पर भी मनोऽनुकूल लाभ में कुछ कमी रहेगी। निकट-बन्धुओं से कुछ तनाव की स्थिति रहेगी।

अक्तूबर—वक्री बुध पुनः कन्या (स्व.) राशि में ही सूर्य युक्त होने से आरम्भ में आराम कम व संघर्ष अधिक रहेगा। ता. 18 से बुध मार्गी होने से धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। नौकरी एवं व्यवसाय में उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। किसी प्रिय व्यक्ति से सम्बन्ध बनेंगे।

नवम्बर—बुध ता. 20 तक द्वितीयस्थ होने से बिगड़े कार्यों में सुधार, धन लाभ व प्रगति के मार्ग प्रशस्त होंगे। ता. 20 के बाद भी मिश्रित फल मिलेंगे। अत्यधिक परिश्रम करने पर भी मनोऽनुकूल लाभ में कुछ कमी रहेगी। निकट बन्धुओं से कुछ तनाव की स्थिति रहेगी।

दिसम्बर—मासारम्भ में किसी शुभ कार्यों पर धन का खर्च होगा। बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे। उत्तरार्द्ध में किसी प्रिय-बन्धु से मनमुटाव व गलतफहमी उत्पन्न हो। अकस्मात् धन का अपव्यय होने के योग हैं। सोच समझकर खर्च करें। किसी निकट बन्धु से धोखा मिलने के भी संकेत हैं।

तुला राशि (Libra)—रा, री, रू, रे, रो, ता, ति, तु, ते

जनवरी—शनि-ढैय्या के कारण घरेलु उलझनों से तनाव रहेगा। मासान्त में रुके हुए कार्यों में कुछ सफलता प्राप्त होगी। निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। व्यवसाय में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहे।

फरवरी—मासारम्भ में शुक्र चतुर्थस्थ गुरु व शनि आदि ग्रहों से युक्त होने से मिश्रित प्रभाव रहेंगे। किसी मित्र की सहायता से बिगड़े कार्य बनेंगे। किसी नए कार्य की योजना बनेगी। गत किए गए प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी।

मार्च—पूर्वार्द्ध में विद्या एवं कैरियर के सम्बन्ध में उत्साहवर्धक गतिविधियां बनेंगी। शुभ मंगल कार्य भी सम्पन्न होगा। ता. 18 से शुक्र उच्चस्थ (मीन) होने से पुरुषार्थ और परिश्रम करने से धन लाभ व व्यवसाय में उन्नति के अवसर मिलेंगे।

अप्रैल—पूर्वार्द्ध में कार्यक्षेत्र में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। नवीन कार्य की योजना बनेगी। गत दिनों में किए गए प्रयासों में सफलता मिलेगी। विशेष परिश्रम से किसी रुके हुए कार्य में सफलता के योग हैं। वैशाख सं. (13 अप्रै.) से वैशाख माहात्म्य का पाठ करना शुभ होगा।

मई—ता. 28 तक अष्टमस्थ शुक्र-बुध-राहु आदि योग होने से संघर्षमयी परिस्थितियां रहेंगी। फिर भी निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। व्यवसाय में उतार-चढ़ाव व अल्प परेशानियां रहेंगी। स्थान-परिवर्तन भी होने के योग हैं। सिर-दर्द, आँखों में कष्ट व चर्मरोग होने का भय रहे।

जून—भाग्यवश ही व्यवसायिक क्षेत्र की परिस्थितियों में धीरे-धीरे सुधार होगा। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि एवं उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क भी बढ़ेंगे। मासान्त में शुक्र दशमस्थ होने से व्यर्थ भागदौड़ के कारण शरीर अस्वस्थ रहेगा।

जुलाई—पूर्वार्द्ध में विघ्न-बाधाओं के बावजूद गुज़ारे योग्य आय के साधन बनेंगे, परन्तु अत्यधिक खर्च से परेशानी होगी। ता. 17 से गुरु-शुक्र के मध्य समसप्तक सम्बन्ध रहने से निकट सहयोगी से कपटपूर्ण धोखा मिले। मानसिक तनाव व आर्थिक परेशानी रहेगी।

अगस्त—शनि-ढैय्या तथा ता. 11 से शुक्र नीचस्थ (12वें) संचार करने से अकारण क्रोध, उत्तेजना, व्यर्थ की भागदौड़ लगी रहेगी। शत्रुभय, मानसिक तनाव, अवांछित स्थान परिवर्तन एवं परिवार में कलह-क्लेश और तनाव रहेगा।

सितम्बर—लग्नस्थ शुक्र पर गुरु व शनि की दृष्टियां रहने से मिश्रित प्रभाव रहेंगे। व्यवसायिक एवं घरेलु हालात में विशेष परिवर्तन होंगे। परिश्रम व पुरुषार्थ करने पर ही धन लाभ व व्यवसाय में कुछ प्रगति होगी। मासान्त में वृथा भागदौड़, मानसिक अशान्ति व तनाव बना रहे।

अक्तूबर—गत किए गए प्रयास फलीभूत होंगे। परिवार में शुभ एवं धार्मिक कार्यों पर खर्च अधिक होगा। सन्तान सम्बन्धी चिन्ता, परिवार में मतभेद तथा गुप्त चिन्ता रहे। अत्यधिक संघर्ष के बाद धन लाभ अल्प रहे।

नवम्बर—शुक्र तृतीय भाव में रहने से पराक्रम एवं पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। गत किए गए प्रयासों में कुछ सफलता मिलेगी। मासान्त में धन लाभ हो, परन्तु खर्चों में भी अधिकता रहे।

दिसम्बर—शुक्र शनि युक्त चतुर्थस्थ संचार करने से सर्विस अथवा व्यवसाय में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़े। अत्यधिक भागदौड़ करने पर भी आय से व्यय अधिक रहे। ता. 19 से शुक्र वक्री होने से कुछ आन्तरिक घरेलु समस्याएं रहेंगी। 'श्रीसूक्तम्' का पाठ करना शुभ रहेगा।

वृश्चिक राशि (Scorpio)-(तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

जनवरी—इस राशि पर केतु का संचार तथा मंगल की दृष्टि होने से पारिवारिक एवं आर्थिक उलझनों के कारण मन परेशान रहे। कठिन हालात के बावजूद धन प्राप्ति के कुछ साधन बनेंगे। परिवार में कुछ मनमुटाव होगा। व्यवसायिक कार्यों में अड़चनों का सामना होगा। किसी मंगल कार्य पर खर्च होने के योग हैं।

फरवरी—पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि होगी। कुछ बिगड़े काम बनेंगे। धन लाभ के अवसर तथा वाहनादि सुखों की प्राप्ति होगी। ता. 22 के बाद मंगल-राहु योग रहने से बनते कार्यों में अड़चनें पैदा होंगी। मानसिक तनाव एवं घरेलु उलझनें बनेंगी। आय कम तथा खर्च अधिक रहेंगें। 'मंगल-स्तोत्र' का पाठ करें।

मार्च—मासारम्भ में आशाओं के अनुरूप कुछ सफलता मिले, परन्तु किसी से अचानक धोखा मिलने के योग हैं। स्वास्थ्य में खराबी रहे। ता. 14 के बाद अत्यधिक व्यग्रता होने से परेशानी होगी। धर्म-कर्म में रूचि होगी। श्रीमहाशिवरात्रि का व्रत, कथा एवं स्तोत्रादि का पाठ सहित करें।

अप्रैल—किसी नए कार्य की योजना बनेगी। विदेश गमन के बारे में भी विचार बनेंगे। परन्तु पंचमस्थ सूर्य पर शनि की दृष्टि होने के कारण सफलता प्राप्ति में अड़चनें रहेंगी। ता. 14 के बाद नई योजनाएं बनेंगी। स्त्री सुख एवं परिवार में खुशी का अवसर बनेगा। परिवार में किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा।

मई—मंगल अष्टमस्थ रहने से स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं उत्पन्न होती रहेंगी, आशा-अनुरूप बन (पूर्ण) रहे कार्यों में अचानक विलम्ब उत्पन्न होंगे। शनि की व्यय भाव पर दृष्टि होने से आवश्यक खर्च अधिक बढ़ेंगे। दाम्पत्य जीवन में भी तनाव रहे।

जून—ता. 2 से मंगल की नीच स्थिति एवं मंगल-शनि समसप्तक योग किसी निकटस्थ से मतभेद उत्पन्न करेगा। मानसिक तनाव एवं घरेलु उलझनें बढ़ेंगी। अत्यधिक संघर्ष के बाद धन लाभ अल्प रहे। ता. मासान्त में रुके हुए कार्यों में कुछ सुधार परन्तु आय कम रहेगी।

जुलाई—ता. 19 तक खर्च अधिक तथा परिवार में तनाव रहे। मंगल-शनि के कारण धोखा मिलने व धन-हानि के योग हैं। उत्तरार्द्ध में नए लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। आकस्मिक लाभ होने से खुशी प्राप्त होगी। ता. 16 से श्रावण-माहात्म्य पढ़ें।

अगस्त—गत किए गए प्रयासों से कुछ बिगड़े कार्य बनेंगे। धन लाभ, पदोन्नति व भाग्य में कुछ परिवर्तन के योग हैं। धार्मिक कार्यों में रूचि रहे। ता. 16 के बाद परिवार में शुभ एवं धार्मिक कार्य पर खर्च होगा।

सितम्बर—मासारम्भ में परिवार की ओर से शुभ समाचार मिले। शुभ कार्य पर खर्च हो। यद्यपि निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। कुछ उलझे कार्य विशेष सम्पर्क साधनों द्वारा सुलझने के योग हैं। राहु सप्तमस्थ के कारण किसी से धोखा मिलने व अकस्मात् खर्चों में वृद्धि होगी।

अक्तूबर—नवीन कार्य की योजना को कार्यरूप देने के अवसर प्राप्त होंगे। धन-लाभ की आशा बनेगी। जमीन के क्रय-विक्रय की सम्भावना होगी। उत्तरार्द्ध में 12वें सूर्य पर शनि की दृष्टि रहने से परिवार में आवश्यक खर्चों की वृद्धि होगी। क्रोध व उत्तेजना रहेगी।

नवम्बर—मासारम्भ में आर्थिक परेशानियां उभरेंगी। क्रोध की अधिकता व खर्च भी ज्यादा होगा। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। लग्नस्थ केतु के साथ ता. 16 के बाद सूर्य होने से मानसिक तनाव और कुछ विपरीत परिस्थितियों का भी सामना रहे। **'आदित्यहृदय स्तोत्र'** का पाठ करें।

दिसम्बर—ता. 5 से मंगल इसी राशि में होने से स्वास्थ्य में सुधार तथा कुछ बिगड़े काम बनेंगे। धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। स्त्री व सन्तान की ओर से शुभ समाचार मिले। विगत किए कार्यों में सफलता प्राप्त हो। प्रियबन्धु से मुलाकात हो। मासान्त में आर्थिक एवं घरेलु उलझनें उत्पन्न होंगी।

धनु राशि (Sagittarius)-(ये, यो, भा, भी, भू, धा, फ, ढ, भे)

जनवरी—राशिस्वामी गुरु नीचस्थ (2रे) तथा शनि-साढ़ेसाती का प्रभाव होने से कार्य-व्यवसाय में आर्थिक उलझनें बढ़ेंगी। शरीर कष्ट और चोटादि का भय रहेगा। ता. 14 से सूर्य भी द्वितीयस्थ बुध-गुरु-शनि आदि ग्रहों के साथ होने से व्यवसाय में अत्यन्त कठिन परिश्रम एवं संघर्ष के पश्चात् ही निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे।

फरवरी—संघर्ष के बावजूद धन लाभ के साधन बनते रहेंगे। भूमि, जायदाद एवं वाहनादि पर खर्च अधिक होगा। स्त्री-सुख एवं परिवार में खुशी का वातावरण बनेगा। परन्तु शनि-साढ़ेसति के कारण बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। धन-हानि, कार्य विलम्ब एवं अत्यधिक खर्च होने से मन परेशान रहेगा।

मार्च—अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के मध्य व्यर्थ की भागदौड़ और फिजूलखर्ची होगी। विलासादि कार्यों पर व्यय होगा। कार्यों में बाधाएं उत्पन्न होंगी। गृह-कलह एवं तनाव रहे।

अप्रैल—ता. 6 के बाद उलझनों के बावजूद पराक्रम में वृद्धि होगी। आय के साधन बढ़ेंगे। निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। परिवार की तरफ से शुभ समाचार प्राप्त होगा। विदेशी मित्रों से समागम होगा। गुरु तृतीयस्थ से बिगड़े कामों में सफलता प्राप्त होगी।

मई—मासारम्भ से ही मंगल की सप्तम दृष्टि रहने से खर्चों की अधिकता के कारण घरेलु उलझनें बढ़ेंगी। व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगी। व्यस्तताएं बढ़ेंगी। किसी विदेशी सम्बन्धी से मुलाकात होगी। व्यर्थ की भागदौड़ अधिक और धन लाभ में विघ्न होंगे। स्वास्थ्य में खराबी तथा पारिवारिक चिन्ता रहेगी।

जून—अत्यधिक संघर्ष के बावजूद धन लाभ अल्प रहे। शनि-साढ़ेसति के कारण अधिकांश समय व्यर्थ के कामों में व्यतीत होगा। उदर में विकार एवं आँखों में कष्ट का भय है। उत्तरार्द्ध भाग में किसी नए मित्र के साथ सम्पर्क पैदा होंगे।

जुलाई—मासारम्भ में कोई शुभ समाचार मिलेगा। कोई रुका हुआ कार्य बनेगा। मित्रों का सहयोग तथा स्त्री/संतान सम्बन्धी कोई शुभ संदेश प्राप्त होगा। अकस्मात् धन प्राप्ति के योग बनेंगे। विलासिता पर व्यय होगा।

अगस्त—व्यवसायिक क्षेत्रों के कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। नवीन योजनाएं बनेंगी। परिश्रम करने से कार्य सिद्धि हो जाएगी। ता. 15 के बाद किसी असमंजस की स्थिति से छुटकारा मिलेगा। घर-परिवार में सुखद वातावरण होगा।

सितम्बर—ता. 6 से पुनः मंगल की दृष्टि रहने से क्रोध, उत्तेजना, व्यर्थ की भागदौड़ लगी रहेगी। वृथा यात्रा, शत्रु भय, मानसिक तनाव, अवांछित स्थान-परिवर्तन से परिवार में कलह-क्लेश रहेगा। ता. 14 से गुरु पुनः नीचस्थ होने से महत्त्वपूर्ण कार्यों में बाधाओं का क्रम (सिलसिला) जारी रहेगा। **उपाय**—पितृ-स्तोत्र का पाठ करें। (देखें-मुफीद आलम जन्त्री)।

अक्तूबर—यद्यपि तनाव एवं क्रोध अधिक रहेगा। कार्य-व्यवसाय में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। परिवार में व्यर्थ की परेशानी रहेगी। ता. 17 के बाद आलस्य व उत्तेजना अधिक रहेगी। अकस्मात् होने वाली यात्रा में सावधानी बरतें। **उपाय**—पं. देवीदयालु संस्थान द्वारा प्रकाशित **'श्रीदुर्गा-सप्तशती'** में से चण्डी स्तोत्र, कवच का पाठ करना शुभ रहेगा।

नवम्बर—मान-सम्मान में वृद्धि, धार्मिक कार्यों में अभिरुचि बढ़ेगी। निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क स्थापित होंगे। परिवार में शुभ मंगलकारी कार्य होंगे। **उपाय**—पं. पन्ना लाल ज्यो. कृत **'कार्तिक माहात्म्य'** का ता. 21 तक पाठ करें।

दिसम्बर—विशेष परिश्रम और भागदौड़ से अभीष्ट कार्य की सिद्धि होगी। अधिक व्यय से मानसिक तनाव होगा। सरकारी कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। विशेष व्यक्तियों से सम्पर्क होगा। स्त्री व सन्तान सुख मिलेगा। अकस्मात् यात्रा होगी। ता. 17 से कार्य-व्यवसाय में अकस्मात् धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे।

मकर राशि (Capricorn)—(भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

जनवरी—गुरु-शनि का संचार इस राशि पर रहने से धर्म-कर्म में रुचि बढ़ेगी, अत्यधिक खर्च बढ़ने से घरेलु उलझनें बढ़ेंगी। आरम्भ में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा। परिवार में व्यर्थ का तनाव और खर्च की अधिकता रहेगी।

फरवरी—शनि-साढ़ेसति होने से संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़े। आय कम व खर्च अधिक हो। व्यवसाय में विघ्न तथा घरेलु उलझनों के कारण मन परेशान रहे। शरीर कष्ट हो। व्यर्थ की भागदौड़ अधिक रहे। अत्यन्त संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य ही धन की प्राप्ति के साधन बन पाएंगे।

मार्च—गुरु-शनि का संचार रहने से विपरीत परिस्थितियां रहें। बड़ी कठिनता से निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। कार्य-व्यवसाय में अनिश्चितता का माहौल बनेगा। अत्यधिक खर्चों के कारण परेशानियां बढ़ेंगी।

अप्रैल—ता. 6 से गुरु का संचार हट जाएगा, परन्तु तृतीयस्थ सूर्य पर ता. 13 तक शनि की दृष्टि रहने से परिवार सम्बन्धी विभिन्न परेशानियों का सामना रहेगा। अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। ता. 13 के बाद शुभ कार्यों की ओर प्रवृत्ति तथा नई योजनाएं बनेंगी।

मई—समाज में मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। धन लाभ के अवसर मिलेंगे। परन्तु व्यवसाय एवं घरेलु कार्यों में आकस्मिक खर्चों में वृद्धि के कारण मानसिक तनाव व उलझनें बढ़ेंगी। मंगल-शनि मध्य दृष्टि सम्बन्ध रहने से क्रोध व उत्तेजना अधिक रहे।

जून—मंगल-शनि मध्य समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध रहने से आकस्मिक खर्च बढ़ेंगे, किसी उच्चाधिकारी के साथ विरोध होगा, मानसिक तनाव भी रहे। बनते कार्यों में अड़चनें पैदा होंगी। किसी विशिष्ट व्यक्ति से तकरार व मनमुटाव होगा।

जुलाई—शनि वक्री तथा मंगल-शनि का दृष्टि सम्बन्ध रहने से आर्थिक उलझनें बढ़ेंगी। निकटस्थ भाई-बन्धुओं के साथ मनमुटाव पैदा होंगे। अनावश्यक दौड़-धूप एवं खर्चों में वृद्धि होने से परेशानी हो।

अगस्त—गृह में मंगल कार्य पर खर्च होगा। समाज में मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। किसी नए कार्य की योजना बनेगी। निकटस्थ व्यक्ति द्वारा सम्मान प्राप्त होगा। रुका हुआ धन मिलने के आसार बढ़ेंगे। आर्थिक परेशानियों के कारण उलझनें बढ़ेंगी।

सितम्बर—संघर्ष व परिश्रम के उपरान्त निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होगी और उलझा हुआ कार्य बनेगा। शुभ समाचार मिलने के संकेत मिलते हैं। ता. 14 से गुरु पुनः इस राशि पर शनि के साथ होगा। सन्तान सम्बन्धी चिन्ता रहे, यद्यपि दाम्पत्य जीवन में उत्साह व प्रेम रहे।

अक्तूबर—मासारम्भ से पुरुषार्थ और परिश्रम करने पर गुज़ारेलायक धन की प्राप्ति होगी। अकस्मात् विशिष्टजनों से सम्पर्क बढ़ेगा। घरेलु कार्यों एवं वाहनादि पर खर्चों की बहुलता रहे। ता. 22 के बाद किसी निकटस्थ मित्र से मतभेद उत्पन्न होंगे।

नवम्बर—पूर्वार्द्ध में धन एवं सुख की प्राप्ति होगी। वृथा खर्च भी बढ़ेंगे। आमोद-प्रमोद आदि साधनों में विस्तार एवं वृद्धि होगी। धर्म-कर्म में भी रुझान रहेगा। ता. 20 के बाद पारिवारिक उलझनों के कारण मन संतप्त रहे। आकस्मिक खर्चों में वृद्धि के कारण तनाव रहे।

दिसम्बर—कोई शुभ कार्य सम्पन्न होगा। व्यवसाय या नौकरी में उन्नति के चाँस हैं। कठिन कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। कार्यक्षेत्र में व्यस्तताएं बढ़ें तथा अकस्मात् धन प्राप्ति के योग हैं। शुभ कार्यों पर धन व्यय होंगे। महिलाओं को पारिवारिक सुखों में वृद्धि होगी।

कुम्भ राशि (Aquarius)—(गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

जनवरी—शनि-साढ़ेसति रहने से अड़चनों के बावजूद धन प्राप्ति के साधन बनते रहेंगे। किसी श्रेष्ठजन से सम्पर्क बढ़ेंगे। सवारी आदि सुख-साधनों पर विशेष खर्च होने के संकेत मिलते हैं। विदेश यात्रा का भी विचार बनेगा।

फरवरी—मासारम्भ में कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार और प्रगति होगी। ता. 12 से सूर्य का संचार तथा शनि-साढ़ेसति होने से विशेष परिश्रम और भागदौड़ से अभीष्ट कार्य की सिद्धि होगी। अकस्मात् यात्रा में परेशानी रहे।

मार्च—कार्यक्षेत्र में व्यस्तताएं बनी रहेंगी। सांझेदारी के कार्यों में हानि हो। ता. 14 के बाद द्वितीयस्थ सूर्य पर शनि की दृष्टि रहने से पारिवारिक परेशानी और सन्तान सम्बन्धी चिन्ता रहेगी। परिश्रम एवं पुरुषार्थ से कुछ व्यवसायिक कार्यों में सफलता के आसार बढ़ेंगे।

अप्रैल—मासारम्भ में किसी नवीन कार्य की योजना बनेगी। अकस्मात् धन लाभ के भी अवसर मिलेंगे। ता. 6 से गुरु इस राशि पर आने तथा ता. 13 से मंगल-शनि के मध्य दृष्टि सम्बन्ध रहने से आशाओं के अनुरूप सफलता प्राप्त नहीं होगी। मन उदासीन रहेगा।
उपाय—तीर्थस्नान एवं दानादि करना शुभ रहे।

मई—परिवार में विभिन्न परेशानियों का सामना रहे। कुछ बिगड़े कामों में सुधार और शुभ कार्य पर खर्च होगा। ता. 14 के पश्चात् स्वास्थ्य कुछ ढीला तथा मानसिक तनाव रहेगा। व्यवसायिक क्षेत्रों में अनेक उतार-चढ़ाव का सामना रहे परन्तु निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

जून—चतुर्थस्थ सूर्य-राहु योग, साढ़ेसति के कारण घरेलु तथा पारिवारिक उलझनों के कारण मन परेशान रहे। आर्थिक परेशानियों के कारण उलझनें बढ़ेंगी। यात्रा में अवांछित खर्च होंगे।

जुलाई—पूर्वार्द्ध में मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा। साढ़ेसति के कारण भी बनते कामों में विलम्ब, मानसिक तनाव, सांझेदारी के कार्यों में हानि और धन का अपव्यय होगा। ता. 20 के बाद पारिवारिक मतभेद भी उत्पन्न हो।

अगस्त—विघ्न-बाधाओं और परिश्रम के उपरान्त ही धन लाभ होगा। अकस्मात् खर्च भी बढ़ेगा। व्यर्थ चिन्ता और अपव्यय होगा। सरकारी क्षेत्रों में कुछ परेशानी रहेगी। मासान्त में अपनी ही गलती से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ने के योग हैं। शरीर कष्ट और उदर विकार का भय रहेगा।

सितम्बर—मासारम्भ में विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन प्राप्ति के साधनों में बढ़ौत्तरी होगी। ता. 14 से वक्री गुरु का संचार हट जाने से अत्यधिक खर्च से परेशानी होगी। पराक्रम में वृद्धि, व्यर्थ की भागदौड़ रहे। मित्रों का सहयोग रहे। मासान्त में योजनाओं में विलम्ब उत्पन्न हो।

अक्तूबर—किसी नए कार्य की योजना बनेगी। आय के साधनों में विस्तार होगा। ता. 17 से भाग्यस्थ सूर्य पर शनि की दृष्टि रहने से पारिवारिक मतभेद उत्पन्न हों। व्यर्थ का खर्च और भागदौड़ अधिक रहेगी।

नवम्बर—मासारम्भ में भाग्यस्थ सूर्य पर शनि की दृष्टि रहने से व्यवसाय सम्बन्धी तनाव रहेगा। धनगमन के साधनों में विघ्न उत्पन्न होंगे। ता. 20 से पुनः गुरु का संचार इस राशि पर होने से मिश्रित फल प्राप्त होंगे। मन के अनुकूल कार्य न होने से परेशानियां बढ़ेंगी।

दिसम्बर—सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता प्राप्त होगी। दाम्पत्य जीवन में सुख, भाई-बन्धुओं का सहयोग प्राप्त होगा। धर्म एवं आध्यात्मिक क्षेत्रों में रुझान बढ़ेगा। भूमि-वाहनादि का क्रय-विक्रय करने में बाधाएँ एवं सौन्दर्य वस्तुओं पर धन खर्च हो।

के योग हैं। शुभ कार्यों पर धन व्यय होंगे। महिलाओं को पारिवारिक सुखों में वृद्धि होगी। भूमि-वाहनादि के क्रय-विक्रय करने में बाधाएँ एवं सौन्दर्य वस्तुओं पर धन खर्च हों।

(पृष्ठ 72 का शेष भाग)

मीन राशि (Pisces)—(दि, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, चि)

जनवरी—राशिस्वामी गुरु लाभ स्थान पर (नीचस्थ) शनि युक्त होने से अत्यन्त कठिन परिश्रम से निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। खर्चों की अधिकता से मानसिक तनाव रहे। उत्तरार्द्ध भाग में धन लाभ एवं किसी मित्र की सहायता से कोई रुका हुआ कार्य बनेगा।

फरवरी—राशिस्वामी गुरु-शनि-सूर्य-शुक्र आदि ग्रहों का योग लाभ स्थान में होने से पराक्रम एवं पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। धन लाभ के मार्ग धीरे-धीरे बढ़ेंगे। उत्तरार्द्ध में वाहनादि पर खर्च तथा सरकारी/विदेशी कार्यों में सफलता मिले। परिवार में शुभ मंगल कार्य भी होंगे।

मार्च—मासारम्भ में आकस्मिक खर्चों में वृद्धि के कारण मानसिक तनाव व उलझनें बढ़ेंगी। ता. 14 से सूर्य तथा ता. 17 से शुक्र उच्चस्थ होकर इस राशि पर संचार करने से धन लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। वाहनादि संसाधनों पर खर्च भी बढ़ेंगे। क्रोध व उत्तेजना अधिक रहे। परिवार में कुछ मतान्तर एवं आँखों में कष्ट की सम्भावना रहे।

अप्रैल—मासारम्भ में सूर्य-बुध-शुक्र आदि ग्रहों का सम्बन्ध बना हुआ है, जिससे कठिन एवं संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। ता. 14 के पश्चात् परिवार में शुभ मंगल कार्य सम्पन्न होंगे। धन लाभ के अवसर भी मिलेंगे।

मई—व्यवसाय की दृष्टि से पूर्वार्द्ध भाग शुभ रहेगा। भाग्य से धन प्राप्ति और मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। उत्तरार्द्ध में सूर्य-बुध-शुक्र-राहु योग बनने से सोची योजनाओं में आंशिक सफलता प्राप्त होगी। स्वास्थ्य कुछ ढीला, वृथा कार्यों में अधिक समय नष्ट होगा। आकस्मिक खर्च भी बहुत बढ़ेंगे।

जून—गुरु द्वादशस्थ तथा मंगल शनि के मध्य समसप्तक योग के कारण आय कम और खर्च अधिक रहेंगे। कार्यक्षेत्र में स्थिति असन्तोषजनक रहेगी। मानसिक तनाव एवं आवेश से बचें।

जुलाई—पूर्वार्द्ध में कुछ रुके हुए कार्यों में प्रगति होगी। मित्रों और सम्बन्धियों के सहयोग से धन प्राप्ति हो। ता. 17 से गुरु-शुक्र के मध्य समसप्तक योग तथा ता. 20 से मंगल की दृष्टि रहने से विद्यार्थी वर्ग को विद्या में विघ्न, संघर्ष तथा प्रतिकूल वातावरण का सामना रहेगा।

अगस्त—विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन प्राप्ति के अवसर मिलेंगे। व्यवसाय में व्यर्थ की परेशानियां होंगी। परिवार सम्बन्धी विशेष चिन्ता रहेगी। किसी विशेष व्यक्ति के सम्पर्क साधनों से बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। मासान्त में धर्म-कर्म में रुझान और पराक्रम में वृद्धि होगी।

सितम्बर—मासारम्भ में विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन प्राप्ति के साधनों में कुछ बढ़ोत्तरी होगी। मानसिक तनाव एवं आवेश से बचें। ता. 14 से गुरु पुनः नीचस्थ शनियुक्त संचार करने से मानसिक उचाटता रहे तथा व्यापार में ठहराव सा रहे। यद्यपि सन्तान/पत्नी की तरफ से शुभ समाचार प्राप्त हो।

अक्तूबर—गुरु नीचस्थ है। अत्यधिक संघर्ष के बावजूद धन लाभ सामान्य रहे। अधिकांश समय व्यर्थ के कार्यों में व्यतीत होगा। धन का अपव्यय बढ़े, वृथा वाद-विवाद और परिवार में वैचारिक मतभेद रहेंगे।

नवम्बर—मासारम्भ में गुरु नीचस्थ होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी कष्ट, घरेलु एवं व्यवसायिक चिन्ता रहेगी। मानसिक तनाव तथा निकट बन्धुओं से मनमुटाव रहे। ता. 20 से गुरु 12वें रहने से भी बनते कार्यों में विशेष परिश्रम के बाद विलम्ब से सफलता मिलेगी।

दिसम्बर—आकस्मिक धन लाभ के साथ खर्च में वृद्धि होगी। व्यवसायिक क्षेत्रों में स्थिति कुछ अनुकूल होगी। भाई-बन्धु का सहयोग मिलेगा परन्तु शनि की दृष्टि होने से दाम्पत्य जीवन में कुछ वैचारिक मतभेद, क्रोध अधिक, गुप्त चिन्ता और मानसिक तनाव रहे।

सम्पूर्ण राशिफल—अपनी राशि सम्बन्धी वर्ष 2021 ई. के लिए अधिक सटीक, विस्तार तथा दैनिक राशिफल के लिए हमारा वृहद् पं. देवीदयालु 'राशिफल' ही पढ़ें। मूल्य : 60 रु.

वर्षफल—कुम्भ राशि

वर्ष प्रवेश कुण्डली

12 | गु. 10 श. | 9 | 1 मं. | 11 | सू. बु. | 2 रा. | 8 शु. के. | 3 | 5 | 7 | 4 चं. | 6

वर्षभर शनि द्वादशस्थ होने से कुम्भ राशि पर शनि-साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा। फलस्वरूप आय कम व खर्च अधिक, घरेलू व कारोबारी सम्बन्धी उलझनें रहेंगी। स्त्री/पति से भी तनावपूर्ण सम्बन्ध रहेंगे। परन्तु शनि राशिस्वामी होने तथा ता. 6 अप्रैल से 13 सितं. तक गुरु इस राशि पर संचार करने से मान-सम्मान, धार्मिक व आध्यात्मिक कार्यों में प्रवृत्ति रहेगी।

ता. 12 फर. से 13 मार्च तक सूर्य का इस राशि पर संचार तथा 14 मार्च से 13 अप्रै. तक मीनस्थ सूर्य पर शनि की दृष्टि के कारण कार्यों में विघ्न-बाधाएं, क्रोध अधिक, नेत्र कष्ट, स्वास्थ्य हानि तथा तनाव की स्थिति रहे। वर्षारम्भ से 28 मार्च तक गोचरस्थ 'कालसर्प-योग' भी घरेलु तनाव रखेगा। ता. 2 जून से 19 जुला. तक मंगल की अष्टम दृष्टि तथा मंगल-शनि के समसप्तक योग रहने, 20 जुला. से 4 सितं. तक मंगल की तथा 16 अग. से 15 सितं. तक सूर्य की दृष्टि रहने से क्रोध/तनाव, गुप्त चिन्ताएं भी रहेंगी। ता. 23 मई से 10 अक्तू. तक राशिस्वामी शनि वक्री रहने से भी कार्य में संघर्ष तथा खर्च भी अधिक रहेंगे।

उपाय—(1) हर शनिवार को भगवान् शिव मन्दिर से कच्ची लस्सी, बिल्वपत्र 1 चुटकी शक्कर डालकर मन्त्र (**ॐ नमः शिवायः**) पढ़कर करें। तदुपरान्त पीपल को भी जल अर्पण करें।

(2) जन्मदिन तथा लगातार 7 शनिवार को गरीब अन्धचक्षु तथा कुष्ट रोगियों को दवाई, अनाज, वस्त्रों आदि से सेवा करना शुभ होगा।

वर्षफल—मीन राशि

वर्ष प्रवेश कुण्डली

1 मं. | 11 | 10 गु. श. | 2 रा. | 12 | 3 | 9 सू. बु. | 8 शु. के. | 4 चं. | 6 | 5 | 7

वर्षभर इस राशि पर शनि की दृष्टि रहेगी। वर्षारम्भ से 5 अप्रैल तक राशिस्वामी गुरु लाभ स्थान में नीचराशिगत संचार करने से अत्यन्त कठिन परिश्रम से निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। वर्षभर शनि की दृष्टि के कारण कुछ मानसिक तनाव, फिजूल खर्ची अधिक रहे।

ता. 14 मार्च से 13 अप्रैल के मध्य सूर्य मीन राशि में संचार करेगा। ता. 14 अप्रैल से 13 मई तक सूर्य द्वितीय भाव में उच्चस्थिति में होने से आय के साधन बढ़ेंगे। ता. 6 अप्रैल से 13 सितं. तक गुरु द्वादश (व्यय) भाव में रहने से शुभ कार्यों पर खर्च अधिक होंगे। तीर्थ यात्राएं भी होंगी। ता. 14 सितं. से 19 नवं. तक गुरु पुनः मकर (नीच) राशिगत रहने से विशेष परिश्रम के पश्चात् अल्प आय रहेगी।

उपाय—(1) वर्षारम्भ से 27 गुरुवार धर्मस्थान में पीले लड्डू अथवा बूँदी का प्रसाद चढ़ाएं।

(2) सारा वर्ष हल्दी की गाँठ पीले रंग के कपड़े या कागज में अपने पास रखें।

(3) सात बृहस्पतिवार गुरु की खाद्य वस्तुएँ-पीली बर्फी, लड्डू, पीले वस्त्र आदि धर्म स्थान या पिंगवाड़े या अन्धविद्यालय में दान दें तथा बृहस्पतिवार का विधिपूर्वक व्रत रखें।

वि. संवत् २०७८ में संवत्सर एवं राजा-मन्त्रादि फल

ॐ स्वस्ति नः श्रीगणेशाय नमः। अचिन्तयाव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः। आदौ गणपतिं नमस्कृत्य प्रणम्य च पूर्वजानहम्–चन्द्रमिश्रं तत्पुत्रं रामजी दत्तस्य सूनं विश्वविख्यातं पण्डित देवीदयालु ज्यो. स्व वृद्धप्रपितामहम् स्मरन् भक्त्या लोकहितार्थाय सुखसम्पत्ति हेतवे '**राक्षस**' नामक नवविक्रमी सम्वत्सरे ततो अग्रे '**नल**' सम्वत्सरे शुभे षष्ठ-चत्वारिंशत्योत्तर शत वर्षाणि (१४६) वर्ष प्रवेशे पं. **विवेक शर्मा ज्योतिषी** अहं प्रप्रपौत्र एवं अधिपतिः पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़, पुत्र दैवज्ञरत्न पं. **श्रीपन्ना लाल ज्योतिषी**, कनिष्ठ भ्रातृ पं. **पंकज शर्मा** सहितोऽहं कुर्वे '**पंचाँग दिवाकरम्**'।।

सृष्टि सम्वत् १९५,५८,८५,१२२ के अन्तर्गते, **श्रीविक्रमी संवत् २०७८**, शक संवत् १९४३-४४, कलि (कल्कि) संवत् ५१२२, श्रीकृष्ण सम्वत् ५२५७, सप्तर्षि संवत् ५०९७, श्रीबुद्ध संवत् २६४४-४५, श्रीमहावीर निर्वाण (जैन) संवत् २५४६-४७, हिजरी सन् १४४२-४३, इंग्लिश सन् २०२१-२२ ईस्वी, फसली सन् १४२८-२९, खालसा संवत् ३२२-२३, नानकशाही सम्वत् ५५२-५३, सृष्टि संवत् के अन्तर्गत सतयुग प्रमाण १७२८०००, त्रेतायुग १२९६०००, द्वापर युग प्रमाण ८६४००० एवं कलियुग का प्रमाण ४३,२००० वर्षों का होता है।

'राक्षस' नामक नव–सम्वत्सर का फल–(वि. सं. २०७८)

('आनन्द' सम्वत्सर लुप्त है) (पृष्ठ संख्या 24 भी देखें)

नव विक्रमी संवत् २०७८ के आरम्भ में बार्हस्पत्यमान (गुरुमान) से शिव (रुद्र) विंशति के अन्तर्गत '**दशम युग**' का तृतीय '**आनन्द**' नामक (सम्वत्सरों में 48वाँ) संवत्सर व्यतीत हो चुका है तथा '**दशम-युग**' का चतुर्थ '**राक्षस**' नामक (सम्वत्सरों में 49वाँ) नया संवत्सर विद्यमान होगा। अर्थात् 13 अप्रैल, 2021 ई. (नव विक्रमी संवत् का आरम्भ) से पहिले ही आनन्द नामक सम्वत्सर समाप्त होकर **राक्षस नामक सम्वत्सर प्रारम्भ हो चुका होगा।** ध्यान रहे, नया विक्रमी संवत् २०७८, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से अर्थात् 13 अप्रैल, 2021 ई., तदनुसार 1 वैशाख, मंगलवार से प्रारम्भ होगा।

नववर्ष प्रवेश लग्न

१ शु. | १२ | २ मं. रा. | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ के. | ९ | १० श. | ११ गु. | सू.बु. चं.

शास्त्र एवं प्रचलित परम्परानुसार नवसंवत् का प्रारम्भ तथा राजा का निर्णय चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के वारादि अनुसार ही किया जाता है तथा सम्वत्सर का निर्णय भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (संवत् के आरम्भ) में विद्यमान् सम्वत्सर को ही लिया जाता है जोकि लगभग 1 अप्रैल, 2021 ई. से 27 मार्च, 2022 ई. तक विद्यमान रहेगा। '**मंगलवार**' से नवसंवत् का प्रारम्भ होने के कारण आगामी वर्ष (संवत्) का राजा '**मंगल**' होगा।
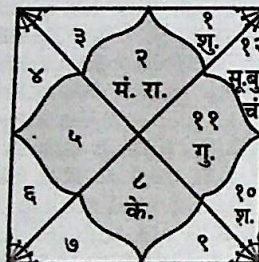
'**आनन्द**' नामक संवत्सर जो गतवर्ष विक्रमी संवत् 2077 के प्रारम्भ होने के बाद लगभग 6 अप्रैल, 2020 को प्रारम्भ हुआ था, आगामी (नव) विक्रमी संवत् 2078 के प्रारम्भ होने से पहिले ही समाप्त हो गया है, **अतएव क्षय (लुप्त) संवत्सर होगा।** (पृष्ठ संख्या 24 भी देखें।)

तथा आगामी 49वाँ '**राक्षस**' नामक संवत्सर जो नव-विक्रमी संवत् 2078 (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा–13 अप्रैल, 2021 ई.) के आरम्भ से पहिले ही **(1 अप्रैल, 2021 ई. से)** प्रवृत्त (शुरु) हो चुका है, **माना जाएगा। प्रचलित शास्त्र-परम्परा-अनुसार** संवत् के आरम्भ में विद्यमान् संवत्सर को ही विक्रमी संवतारम्भ से संवतान्त तक धार्मिक अनुष्ठान, जप-पाठ, दान, संकल्प कार्यों के आरम्भ में इसी नाम का प्रयोग किया जाएगा अर्थात् '**राक्षस**' नामक संवत्सर का प्रयोग वर्षपर्यन्त रहेगा।

'**राक्षस**' नामक सम्वत्सर का फल शास्त्रों में इस प्रकार वर्णित है–

नश्यन्ति सर्वसस्यानि रोगार्तिश्च महर्घता।
प्रजानाशो भयं घोरं राक्षसे गौरि ! पीडनम्।।

भगवान् शिव पार्वती से कहते हैं कि हे वामाँगि ! राक्षस नाम सम्वत्सर में प्राकृतिक प्रकोपों एवं अव्यवस्था के कारण फसलों की हानि, विभिन्न रोगों एवं महामारी से लोगों में कष्ट रहे, आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में आशातीत वृद्धि से महँगाई बढ़ेगी तथा हर तरफ भय–पीड़ा का वातावरण रहे तथा युद्ध, प्राकृतिक प्रकोपों आदि से व्यापक जनहानि होगी।

'**वर्षप्रबोध**' में भी '**राक्षस**' सम्वत्सर का फल इस प्रकार है–

स्वस्वकार्येरताः सर्वेमध्यसस्यार्घवृष्टयः।
राक्षसाब्देऽखिला लोका–राक्षसा–इव निष्क्रियाः।।

राक्षस नामक सम्वत्सर में सभी लोग स्वार्थवश अपने-अपने निज कार्यों में व्यस्त रहेंगे। फसलों के लिए उपयोगी वर्षा मध्यम ही होंगी। धनधान्य में साधारण से मध्यम वृद्धि होने के बावजूद भी भय व आशंकाओं से भरा माहौल रहेगा। सभी लोग राक्षसों के समान क्रियारहित तथा उनकी भान्ति आचरण करने लगेंगे। अर्थात् साधारणजन भी राक्षस प्रवृत्ति के हो जाएंगे।

✤ ***रोहिणी का वास***–वि. संवत् २०७८ में मेष संक्रान्ति का प्रवेश भरणी नक्षत्रकालीन है। अतएव रोहिणी का वास '**तट**' पर होगा। यथा–

यदि विधिधिष्ण्यपतति तटस्थम्। शुभजल वृष्टिः धन–कण वृद्धिः।।

अर्थात् '**तट**' पर रोहिणी का वास होने से आगामी वर्ष उपयोगी एवं उत्तम (अच्छी) वर्षा होने के योग बनेंगे। फलस्वरूप धान्य, चावल, चने, गन्ने, वृक्ष, घास व अन्य जड़ी-बूटियों, पौधों की पैदावार भी अच्छी होगी। प्रजा में अन्न, धन एवं अन्य सुख-साधनों,

प्रसाधनों आदि की वृद्धि होगी। "तटे वृष्टिः सुशोभना" अनुसार भी सन्तोषजनक एवं पर्याप्त वर्षा होगी।

❖ संवत् (समय) का वास–रोहिणी का वास **'तट'** पर होने से सम्वत् का वास **'धोबी'** (रजक) के घर रहेगा। फलस्वरूप वर्षा विपुल एवं उत्तम मात्रा में होगी– **'रजके गृहे वृष्टिरुत्तमा'**।।

धान्य, चावल, गेहूँ, चने, गन्ना, ईख, मक्की, हरी सब्जियों, वृक्षों व फलों का उत्पादन अच्छा होगा। लोगों में सुख एवं ऐश्वर्य के साधन बढ़ेंगे। कुएँ, तालाब, नदी-नाले, बावड़ियां, दरिया आदि जलापूरित रहेंगे। यथा–

वापी–कूपतडागानि नदी नद वनानि च, जलपूर्णानि दृश्यन्ते वासो रजके।।

❖ संवत् (सम्वत्सर) का वाहन–वि. संवत् २०७८ का राजा मंगल होने से सम्वत् का वाहन **'वृषभ'** (बैल) होगा। फलस्वरूप वर्षा पर्याप्त एवं अच्छी (अधिक) होगी, विशेषकर पहाड़ी क्षेत्रों में वर्षा अधिक होगी। नदियों में पानी का वेग (बहाव) अधिक होगा, कहीं बाढ़ादि के कारण क्षति हो। वृक्षों पर फल-फूल की पैदावार अच्छी हो तथा पशुओं का चारा-घास, तृणादि का उत्पादन भी बहुलता में हो। राजनेताओं में परस्पर आरोप-प्रत्यारोप लगने से कुछ राज्यों में अस्थिरता एवं छत्रभंग (राज्य-परिवर्तन) होगा।

कुछ विद्वान राजा मंगल होने पर संवत् का वाहन **'नाव'** (नौका) को भी मानते है। संवत् का वाहन नौका होने से सर्वत्र सभी प्रकार की फसलों के उत्पादन में कमी तथा कहीं अकालजन्य परिस्थितियां बनें। लोगों (जनता) को प्राकृतिक अथवा राजनीतिक कारणों से इधर-उधर अर्थात् एक राज्य से दूसरे राज्यों में पलायन करना पड़े। पशुओं, चौपायों आदि को भी रोगादि से कष्ट रहे।

वि. संवत् २०७८ के दश-पदाधिकारियों का फल

(1) वर्ष (वि. संवत् २०७८) के राजा 'मंगल' का फल–

'अग्नि–तस्कर–रोगाढ्यो नृपविग्रहः दायकः।
गतसस्यो बहुव्यालो भौमाब्दो बालहा भृशम्।।

अर्थात् संवत्सर का राजा मंगल होने से इस वर्ष वायु-वेग (आँधी-तूफान) तीव्र रहेगा, वायुयान-दुर्घटनाएँ, अग्निकाण्ड, भूकम्प आदि प्राकृतिक उत्पातों में विशेष वृद्धि होगी। आतंकवादी घटनाओं, तस्करी, ठगी, लूटपाट तथा विभिन्न रोगों में वृद्धि से साधारण जनता परेशान रहेगी। तीव्र वायुवेग एवं बादल होने पर भी वर्षा की कमी अनुभव होगी तथा तूफान, चक्रवात, आँधी, ओलावृष्टि आदि प्राकृतिक आपदाओं से कृषि उत्पादन में कमी तथा पशुधन की भी हानि होगी। आरोप-प्रत्यारोप के कारण कुछ क्षेत्रों में शासकवर्ग की कर्त्तव्यपालन के प्रति उदासीनता रहे। प्रजा में पित्त एवं रक्त सम्बन्धी रोगों की बहुलता रहेगी। बालक-बालिकाओं के अपहरण, अपमृत्यु तथा प्रियजन-विछोह से लोग दुःखी रहें।

अन्य संहिताकार के मतानुसार–

भौमे नृपे वह्निभयं जनक्षयं चौराकुलं पार्थिव–विग्रहश्च।
दुःखं प्रजा–व्याधि–वियोग पीड़ा, स्वल्पं पयो मुञ्चति वारिवाहः।।

अर्थात् वर्ष का राजा **'मंगल'** होने से देश में चोरी, ठगी, बेईमानी, भ्रष्टाचार, हिंसा-उपद्रव की घटनाएं तथा प्राकृतिक उत्पात-विशेष रूप से भूकम्प व अग्निकाण्ड से विशेष जन-धन हानि की घटनाएं घटित होंगी। राजनेताओं में परस्पर विरोध एवं टकराव रहे। प्रजा अनेक विविध रोगों-व्याधियों, अपहरण तथा प्रियजन-विछोह से दुःखी एवं पीड़ित रहे। देश में आगज़नी, साम्प्रदायिक हिंसा, उग्रवाद जन्य घटनाओं से जन-धन हानि हो। कहीं अनावृष्टि या अतिवृष्टि से दुर्भिक्ष (सूखा) एवं बाढ़ की स्थिति बने। लोगों से धर्म-कर्म की ओर रूचि कम रहे।

(2) सम्वत् के मन्त्री 'मंगल' का फल–

अवनिजो ननु मन्त्रिकतां गतो भवति दस्युगदादिज वेदना।
जनपदेषु जयः सुख संचयो न बहुगोषु पयो द्विज कर्म च।।

संवत् का मन्त्री **'मंगल'** हो, तो उस वर्ष देश में जनता चोरों, लुटेरों, तस्करों आदि के आतंक एवं विविध रोगों के कारण परेशान एवं पीड़ित रहे। अग्निकाण्ड एवं हिंसक घटनाएँ अधिक हों। अधिकांश लोग सुख-साधनों एवं सम्पन्नता की आकांक्षा से महानगरों की ओर जाने में अग्रसर होंगे। देश के कुछ विशेष भागों (क्षेत्रों) में ही जनता सुखी रहे। गाय, भैंस आदि के दूध में कमी होगी। ब्राह्मण लोग यज्ञादि कर्मकाण्ड आदि धार्मिक कामों में कम प्रवृत्त हों। सोना, ताम्बा, पीतल, जूट-पटसन, लाख, लाल मिर्च आदि लाल वर्ण की वस्तुएँ तेज भाव होंगी।

राजा और मन्त्री पद–एक ही ग्रह मंगल

ध्यान दें, इस वर्ष राजा और मन्त्री के दोनों पद मंगल के पास हैं। जिस वर्ष राजा और मन्त्री के पद एक ही ग्रह के पास हो, तो उस वर्ष विभिन्न देशों के राजनेता निरकुंश, स्वार्थपूर्ण एवं मनमाना आचरण करेंगे। अग्निकाण्ड, भूकम्प, बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोप तथा साम्प्रदायिक हिंसा एवं जातीय उपद्रव अधिक होंगे। कहीं वर्षा में कमी और ऊष्णता (गर्मी) अधिक रहे। लोगों में क्रोध और आवेश के कारण हिंसक घटनाएं अधिक होंगी। सत्तारूढ़ राजनेताओं एवं विपक्षी नेताओं के मध्य टकराव एवं आरोप-प्रत्यारोप अधिक होंगे।

अनाज, फलों, सब्जियों व धान्यादि की पैदावार कम हो। चोरी, डकैती, लूटमार, अग्निकाण्ड एवं लोगों में क्लिष्ट रोग, तनाव एवं रक्त-पित्तजन्य रोग अधिक होंगे। अनाज आदि में तेजी के कारण व्यापारी लोग अच्छा मुनाफा उठाएंगे।

''स्वयं राजा स्वयं मन्त्री जनेषु रोगपीड़ चौराग्नि, शंका–विग्रह–भयं च नृपाणाम्।।''

(3) सस्येश 'शुक्र' का फल–

शुक्रो यदा धान्यपतिर्धरायां मेघो जलं वर्षति शोभनं प्रियम्।
गोधूम–शालीक्षु धनं प्रियंगु–वृक्षेषु पुष्पाणि सुखप्रदानि।।

अर्थात् कृषि (फसलों) का स्वामी शुक्र हो, तो उस वर्ष कुछ स्थानों पर वर्षा पर्याप्त, उपयोगी एवं समयानुसार होगी। गेहूँ, जौं, चावल, ईख (गन्ना) एवं फलदार वृक्षों पर फल-फूल पर्याप्त मात्रा में लगेंगे। मौसमी मेवों की पैदावार अच्छी हो। अनाज, सोना, चाँदी एवं घी, तैल, मजीठ, चावल, हल्दी, जौं, हरड़, मेहंदी का व्यापार करने वाले विशेष लाभान्वित होंगे।

(4) धान्येश 'बुध' का फल–

बहुसस्य–युता पृथ्वी रसानां च महर्घता।
नीतियुक्ताः सदा भूपाः बुधे धान्याधिपे सति।।

अर्थात् जिस वर्ष धान्यपति बुध हो, उस वर्ष अच्छी वर्षा होने से धान्यादि का उत्पादन पर्याप्त मात्रा में हो, परन्तु सभी प्रकार के रसादि पदार्थों (दूध, गुड़, तेल, आयल आदि) के मूल्यों में विशेष तेजी होगी। शासन-तन्त्र जनानुकूल नीतियां बनाएगी तथा उनका समुचित क्रियान्वयन का प्रयास भी करेगी। वर्ष प्रबोध अनुसार–**'सैन्धवे लाटदेशे च माधवोऽल्पं च वर्षति।'**– इस वर्ष सिन्ध तथा लाट-प्रदेश (पंजाब, हरियाणा आदि) में अपेक्षाकृत वर्षा की कमी एवं कृषि का उत्पादन कम होगा।

(5) मेघेश 'वर्षा का स्वामी' का फल–

नोट–इस वर्ष मेघेश (वर्षा का स्वामी) दो ग्रहों **मंगल** तथा **चन्द्र** को प्राप्त है। [**ध्यान रहे,** मेघेश का निर्णय सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश के वार-दिन के स्वामी (वारेश) अनुसार किया जाता है।]

इस वर्ष सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र प्रवेश 22 जून, 2021 ई. को प्रात: 5घं.-38मिं. पर हो रहा है, अतः जालन्धर तथा समीपस्थ व पूर्वी राज्यों में मेघेश मुख्यतः मंगल ही रहेगा। परन्तु मुम्बई, राजस्थान, गुजरात, दक्षिणी कुछ राज्यों में सूर्योदय-भेद से मेघेश चन्द्रमा भी रहेगा। हम दोनों का फल लिख रहे हैं। मेघेश कहाँ **'मंगल'** होगा तथा कहाँ **'चन्द्र'**–इसका स्पष्टीकरण पृष्ठ 32 पर सचित्र लेख देखें।

(क) मेघेश 'मंगल' का फल–

अवनिजे जलदस्य–पतौ भुविश्रुति विचार–विहीन–धरामराः।
क्वचिदपि प्रचुरं जलमल्पकं क्वचिदपि प्रशमं बहुतापदम्।।

अर्थात् मेघेश (वर्षा का स्वामी) मंगल हो, तो ब्राह्मणादि उच्च वर्ण के लोग वेद-विचार से हीन, सामान्य जनता भी अपने-अपने धर्म-कर्म से च्युत अर्थात् शास्त्र-मर्यादित एवं नीति सम्मत व्यवहार की कमी के कारण समाज में अव्यवस्था फैलेगी। कहीं प्रतिकूल एवं असामयिक वर्षा अर्थात् कहीं वर्षा बहुत कम और कहीं बहुत अधिक होगी। कहीं भूस्खलन एवं बाढ़ादि तथा कहीं पेयजल की कमी, दुर्भिक्ष आदि का भय तथा तापमान में वृद्धि होगी।

(ख) मेघेश 'चन्द्र' का फल–

शशिनी तोयदपे यदि गोमहिष्यज–खरादिषु दुग्धरसं तदा।
फलवती धन–धान्यवती विविध भोगवती ननु भामिनी।।

अर्थात् मेघेश (वर्षा का स्वामी) यदि चन्द्रमा हो, तो गाय, भैंस, बकरी आदि चौपाय पर्याप्त मात्रा में दूध देंगे। उस वर्ष पृथ्वी पर गेहूँ, धान्य आदि की फसलें अच्छी होंगी। वृक्षों पर फल, फूल आदि अधिक होंगे। पृथ्वी पर विविध प्रकार के उपभोग्य, सुख-साधन एवं ऐश्वर्य के स्रोतों में वृद्धि होगी। महिला समाज को भी सुख-ऐश्वर्य के साधनों, सम्मान में वृद्धि होगी।

(6) रसेश 'सूर्य' का फल–

रसपतौ तरणी धरणो तदाविरस भागरातात्प पयोधरा।
वसन–तैल–घृतप्रिय–मानवाः सुखरसं न भुनक्ति महीपतिः।।

अर्थात् रसाधिपति सूर्य होने से भौतिक सुखों तथा कुछ क्षेत्रों में उपयोगी वर्षा की कमी रहे। दूध, रसादि वाले फलों का उत्पादन कम हो। घी, मक्खन, तेल, खाद्य-तेल, वस्त्रादि की भी न्यूनता हो अर्थात् महंगे होंगे। प्रजा एवं प्रशासक वर्ग में सुख की कमी रहे। लोगों में दिखावे-प्रदर्शन के लिए फैशन पर खर्च करने की प्रवृत्ति रहेगी। सामान्य लोगों को विविध प्रकार की उलझनों, परेशानियों एवं गम्भीर आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

(7) नीरसेश 'शुक्र का फल–

कर्पूरागरु–गन्धानां हेममौक्तिक–वाससाम्।
अर्घवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशो भृगुर्यदा।।

संवत् में नीरसेश (धातुओं का स्वामी) शुक्र हो, तो कपूर अगर-तगर आदि तथा अन्य सुगन्धित इत्र (वस्तुएं), सोना, चाँदी, मोती और सभी प्रकार के वस्त्रों के भावों में विशेष तेजी होगी।

(8) फलेश 'चन्द्र' का फल–

यदि विधुः फलपो द्रुमराशयः फलयुता व्रततीकुसुमैर्युताः।
द्विजमुखा वरभोगसमन्विता नृपतयो नयपालन तत्पराः।।

फलों का स्वामी चन्द्रमा हो, तो उस वर्ष राजनेता प्रजा को न्याय एवं सुशासन प्रदान कराने में प्रवृत्त होंगे। विद्वान्-ब्राह्मण भी विविध प्रकार के धन-धान्य एवं भोग्य पदार्थों से समन्वित होंगे। वृक्षों एवं लताओं पर विभिन्न प्रकार के मौसमी फल, फूलों एवं अन्य

वनस्पतियों की पैदावार अच्छी होगी। राजनेता देश-विदेश में भ्रमण के लिए उत्सुक रहेंगे अर्थात् भ्रमणशील रहेंगे। फिर भी शासन-व्यवस्था सम्यक् एवं सुचारु रूप से चलेगी।

(9) धनेश 'गुरु' का फल–

सुमनसां च गुरुः द्रविणाधिपो वणिज–वृत्तिपराः सुखभाजिनः।
फलित पुष्पित–भूमिरुहाः सदा विविध द्रव्ययुताभुवि मानवाः।।

अर्थात् धनेश (कोश-स्वामी) बृहस्पति (गुरु) हो, तो शासन-व्यवस्था व्यापारियों के लिए बहुत अनुकूल वातावरण एवं नीतियां बनाने में प्रयासरत रहेगी। व्यापारी अर्थात् वणिज वृत्ति वाले व्यापारी लोग व्यापार में लाभान्वित होकर सुखी एवं प्रसन्नचित्त हों (वृक्षों पर फूलों, फलों आदि की पैदावार अच्छी हो। जनता की जीवनशैली एवं आर्थिक स्तर में सुधार होगा। परन्तु कुछ विशिष्ट वर्ग के लोग ही धन-सम्पदा एवं भौतिक सुखों से सम्पन्न हो पाएंगे।

(10) दुर्गेश (सेनापति) 'चन्द्र' का फल–

अथ च दुर्गपतिर्मृगलांछनो नरवराः सुखिनः शुभशासनात्।
बहुधनेक्षुजगोरसभोगिनो नृपतयो नरगीतपराक्रमाः।।

अर्थात् चन्द्रमा दुर्गेश (सेना का स्वामी) हो, तो उस वर्ष गणमान्य लोगों को समाज के प्रति उनके द्वारा प्रदान की गई सेवाओं के कारण मान-सम्मान व प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। राजनेता (प्रशासक) प्रजा में सुचारू ढंग से शासन करने तथा जनता को सुख-सुविधाएँ प्रदान करने की चेष्टा करेंगे। साधारण लोगों (जनता) की भी जीवनशैली एवं जीवनस्तर उन्नत एवं सुव्यवस्थित होगा। गुड़, चीनी, ईख (गन्ना), दूध, घी, गोरस आदि के क्रय-विक्रय (व्यापार) करने वाले व्यापारियों को अच्छा (समुचित) लाभ प्राप्त हो। जनता शासन-तंत्र की सुव्यवस्था एवं नीतियों की प्रशंसा भी करेंगे।

नोट–वर्ष के उपरोक्त दशाधिकारियों का फल यद्यपि सर्वत्र होता है। परन्तु राजा का फल विशेष रूप से काश्मीर, बांग्लादेश, अफगानिस्तान, चीन, तिब्बत एवं हिमाचल के निकटवर्ती क्षेत्र ; मन्त्री का फल आन्ध्र-प्रदेश, मालवा, उज्जैन आदि मध्य-प्रदेशों में विशेष रूप से होता है। वैसे सामान्यतः राजा एवं मन्त्री का फल देश के प्रायः सभी क्षेत्रों में होता है।

चतुर्मेघ फल विचार–आवर्तकादि चतुर्मेघों में **'संवर्त'** नामक मेघ है।

फल–'संवर्ते जलपूरणम्'–वाक्यानुसार वर्षभर पर्याप्त एवं समयानुसार अनुकूल वर्षा होगी। साधारण जनता व्यक्तिगत या पारिवारिक कार्यों में अधिक व्यस्त रहें तथा धार्मिक/सामाजिक कार्यों में रूचि कम रखेंगे। कहीं कुछ प्रदेशों में बाढ़, वायु-वेग, तूफान आदि से खड़ी फसलों को हानि भी सम्भव है। लोग काम-वासनाओं में अधिक आसक्त रहे।

नवमेघों में 'आवर्त' नामक मेघ का फल–

विनाशनं–शालियवादिकानां तथैवकार्पास–घृतादिकानाम्।
घनोपदावर्तक–नाम धेयः स्वल्पंजलं स्याद्–धनिनामपायः।।

अर्थात् जिस सम्वत् में **'आवर्त'** नाम का मेघ समाविष्ट हो, उसमें जौं, चावल, गेहूँ, चने, कपास, घी, तेल, सरसों आदि की कृषि का नाश होता है अर्थात् इन वस्तुओं की फसलों को भारी हानि पहुँचती है। फलस्वरूप इन वस्तुओं के मूल्यों में विशेष तेजी होती है। उपयोगी वर्षा की भी कमी रहती है।

सुबुध्नादि द्वादश नागों में 'सुबुध्न' नामक नाग का फल–इस संवत् में बारह नागों में 'सुबुध्न' नामक नाग है।

'सुबुध्न-नाम सहितो भुजंगोजायते तदा।
नृणां सुबुद्धिकर्त्तास्यात् मध्य वृष्टिप्रदायकः।।

'सुबुध्न' नामक नाग राजा होने से जनता सुबुद्धि युक्त अर्थात् कानून-नियम आदि के साथ नियमबद्ध होकर आचरण करेगी। मध्यम वर्षा के ही योग हैं।

सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेशफल–वि. संवत् २०७८
(वर्षा, कृषि एवं वायुमण्डल विचार)

सूर्य आर्द्रा प्रवेश कुंडली
22 जून, 2021 ई., 5घं. 38मिं.

४ मं. | २ रा. बु. | ३ सू. शु. | १ | ५ | ६ | १२ | ९ | ७ चं. | ८ के. | ११ | १० गु. श.

वि. संवत् २०७८ में सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी को तदनुसार 22 जून, 2021 ई., मंगलवार को विशाखा नक्षत्र, सिद्ध योग एवं तुला राशिस्थ चंद्रमा कालीन मिथुन लग्न में प्रवेश करेंगे। लग्न राशि मिथुन तथा चन्द्र राशि तुला–दोनों पश्चिम दिशा की सांकेतिक राशियां हैं। चन्द्र तथा शुक्र–दोनों जलकारक ग्रह वायुतत्त्व राशियों में स्थित हैं। फलस्वरूप 22 जून के बाद भारत के पश्चिमी राज्यों (गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, राजस्थान) में वायु वेग के साथ खण्ड वर्षा प्रारम्भ हो जाएगी।

संवत्सर का राजा मंगल यद्यपि जलतत्त्व राशि कर्क में है, परन्तु लग्नेश बुध द्वादशस्थ पृथ्वीतत्त्व राशि वृष में राहु के साथ है। मंगल-शनि के मध्य समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध भी बना हुआ है। अधिकतर ग्रह वायु व पृथ्वीतत्त्व प्रधान राशियों में हैं। जलस्तम्भ भी बिल्कुल नगण्य है। फलस्वरुप आगामी वर्ष धान्य-उत्पादन एवं कृषि के लिए अनुकूल एवं उचित समय पर वर्षा की कमी रहेगी। सामयिक (उपयुक्त) वर्षा की कमी के कारण खड़ी फसलों को हानि हो। जलतत्त्व ग्रह चन्द्र-शुक्र वायुतत्त्व राशियों में तथा राजा मंगल (अग्नितत्त्व प्रधानग्रह) जलतत्त्व राशि में होने से कहीं तेज वायुवेग/तूफान के साथ अतिवर्षा से बाढ़ादि का भय तो कहीं अल्प वर्षा, आसमानी बिजली, ओलावृष्टि से फसलों को क्षति पहुँचने के संकेत हैं। मेघेश मंगल यद्यपि जलराशि में स्थित होने तथा मंगल-शनि के मध्य दृष्टि सम्बन्ध होने से भी 22 जून के बाद अग्निकाण्ड, भूस्खलन, तेज़ आँधियां (वायु-प्रकोप) अधिक रहे। ग्रहस्थिति अनेकत्र बाढ़–
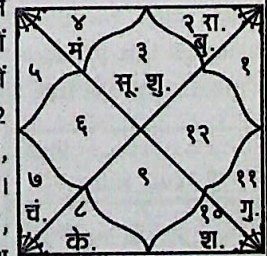
वर्षा से हानि करे, मौसम प्रायः अनिश्चित एवं अनियमित रहेगा। कहीं दुर्भिक्ष, खाद्यान्न संकट तथा तापमान में वृद्धि होगी। जनता में शारीरिक व मानसिक द्रौर्बल्य तथा पित्तजन्य व रक्त सम्बन्धी रोगों की बहुलता रहे। द्वादशी तिथि में सूर्य का आर्द्रा प्रवेश होने से जनता को शासन तन्त्र की ओर से अनेक प्रकार की योजनाओं द्वारा प्रसन्न किया जाएगा, मंगलवार को प्रवेश होने से प्रशासकों से परस्पर विरोध उत्पन्न हो व विश्व या भारत में किसी राजनेता की दुर्घटना या शस्त्रघात से मृत्यु हो।

भानोर्वेशः पृथ्वीसूनोर्वारे रौद्रेधिष्ण्येचेत्स्यात्।
शस्त्राघातात्पृथ्वीशानां निःसंदेहं मृत्युस्तर्हि॥

परन्तु विशाखा नक्षत्र में आर्द्रा प्रवेश होने से विश्व भर में गतवर्ष से फैले भयंकर विषाणुजनित वायरल सभी प्रकार के रोगों का नाश अवश्य हो जाएगा।

'**....तदानिखिलरोगाणां विनाशोजायते ध्रुवम्॥**' परन्तु सूर्यदेव द्वारा आर्द्रा प्रवेश सूर्योदय के समय (2 घड़ी के मध्ये) होने से कुछ क्षेत्रों में नए विचित्र प्रकार के रोगों की उत्पत्ति होगी-'**सूर्योदयेरोगकरीस्मृता।**' इन सभी विपरीत परिस्थितियों के बाद सूर्य लग्नस्थ तथा चन्द्रमा पंचमस्थ (त्रिकोणस्थ) होने से धान्यादि फसलों का यथेष्ठ उत्पादन होगा।

रौद्रप्रवेशे तरणिर्विधुश्चेत्त्रिकोणसंस्थोथ चतुष्टयस्थः।
जलर्क्षगोवाशुभवीक्षितो वा धान्यं प्रभूतं निखिलं तदानीम्॥

वि. संवत् २०७८ में शनि की दृष्टि का फल

वि. संवत् २०७८ में भी शनि देव मकर राशि में ही संचरणशील रहेंगे। फलतः संवतारम्भ से सम्वान्त तक शनि की दृष्टि उत्तर दिशा अर्थात् उत्तर गोलार्द्ध की तरफ रहेगी। मकर राशिस्थ संचारकालीन शनि की **मीन, कर्क** तथा **तुला** राशियों पर दृष्टि तथा **धनु, मकर** व **कुम्भ** राशि वाले राष्ट्रों पर शनि-साढ़ेसति का प्रभाव रहेगा। फलस्वरुप भारत के उत्तरी प्रान्तों तथा उत्तरी-यूरोपीय देशों (ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, बैल्जियम, इटली, स्पेन आदि) तथा उत्तर-दक्षिणी मुस्लिम देशों (ईरान, ईराक, कुवैत, सीरिया, तुर्की) में राजनैतिक अस्थिरता, उथल-पुथल, सत्ता-परिवर्तन, दुर्भिक्ष, आन्दोलन एवं हिंसक घटनाएँ घटित होंगी। क्योंकि मकर राशि दक्षिण दिशा की द्योतक है, इसलिए भारत के उत्तर-पूर्वी एवं कुछ उत्तर-दक्षिणी राज्यों में कहीं बाढ़, समुद्री तूफान, भूस्खलन, महामारी, भूकम्प, भूखमरी, अग्निकाण्ड तथा अन्य प्राकृतिक प्रकोपों से भारी कृषि, धन एवं जन-हानि होने की सम्भावनाएं होंगी। कर्क, तुला एवं मीन राशि वाले एवं उत्तरी राज्यों (पंजाव, पानीपत, मुम्बई, महाराष्ट्र, चीन, हालैण्ड, न्यूयार्क, काश्मीर, हि.प्र., दिल्ली, ब्रिटेन) में अकालजन्य परिस्थितियां (दुर्भिक्ष) बनेंगी, राजनैतिक क्षेत्रों में उथल-पुथल होने की व्यापक सम्भावनाएँ होंगी। शास्त्रों में मकर राशिस्थ शनि का फल भी अशुभ लिखा हैं-

मकरे च यदा सौरिर्दुर्भिक्षं तत्र दारुणम्। कमार्ताश्च विनश्यन्ति ह्यन्यदेशे शुभं भवेत्॥

गुर्राफल विचार (सन् 2021-22 ई.)

इस्लामी नववर्ष कुण्डली (1)
हिजरी सन् 1442 (2020-21) ई.

12	10 श.	9 गु. के.
1 मं.	11	8
2	5 सू. चं. बु.	7
3 शु. रा.	4	6
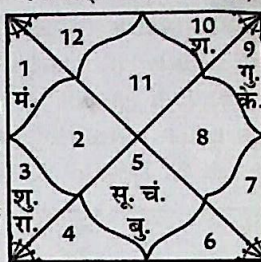
20 अगस्त, 2020 ई.
सूर्यास्त 19घं.-01मिं. (भा.स्टैं.)

ईस्लामी मतानुसार एक (यकम्) मुहर्रम से ही नये हिजरी सन् की शुरुआत होती है। गत वि. संवत् 2077 में 21 अगस्त, 2020 ई. को 1 मुहर्रम (यकम) के दिन हिजरी सन् 1442 शुरु हो जाएगा। शुक्रवार को हिजरी सन् का प्रारम्भ होने से ईस्लामी वर्ष 1442 (2020-21 ई.) का बादशाह साल '**शुक्र**' (ज़ोहरा) होगा।

1 मुहर्रम से एक दिन पूर्व (चन्द्रदर्शन वाले दिन) 20 अगस्त, 2020 ई. दिन गुरुवार को सूर्यास्त के समय 19घं.-01मिं. पर कुम्भ लग्न में इस वर्ष मुस्लिम (इस्लामी) नववर्ष का उदय हुआ है। लग्नेश शनि द्वादश भाव (व्यय, खर्च, गुप्त, शत्रुओं, अपराध, युद्ध सम्बन्धी कार्यों, षड्यन्त्रों का भाव) में स्वराशिगत है तथा भाग्यस्थान को उच्च एवं द्वितीय भाव को मित्र दृष्टि से देख रहा है। '**गुरु-शुक्र**' के मध्य **समसप्तक** आदि **योग** मुस्लिम (इस्लामी) देशों में असमंजसपूर्ण परिस्थितियों की ओर संकेत कर रहे हैं। मंगल एवं शनि की विशेष दृष्टि षष्ठ भाव (प्रत्यक्ष शत्रुभाव) पर होने से पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईराक, ईरान, सीरिया आदि मुस्लिम बाहुल्य देशों में अत्यन्त गम्भीर आर्थिक एवं सामाजिक चुनौतियों के साथ-साथ राजनैतिक दृष्टि से उलट-फेर आदि अवांछनीय घटनाक्रम उत्पन्न होंगे। बादशाह '**शुक्र**' होने से कुछ मुस्लिम देशों में स्त्रियों की स्वतन्त्रता तथा अधिकार-क्षेत्र बढ़ेंगे। ता. 4 अक्तू. से 24 दिसम्बर, 2020 ई. तक मीन राशिस्थ मंगल पर शनि की विशेष शत्रु दृष्टि रहने से सऊदी अरब तथा अन्य पेट्रोल उत्पादक मुस्लिम राष्ट्रों तथा अमरीका के मध्य तनावपूर्ण सम्बन्ध बनेंगे तथा पेट्रोल, क्रूड-ऑयल के मूल्यों में विशेष वृद्धि होगी। पाकिस्तान की प्रभाव राशि कन्या के स्वामी बुध पर गुरु की विशेष दृष्टि रहने से अमरीकी दवाव एवं आक्रामक रुख के चलते पाकिस्तान की गठबन्धन सरकार को विशेष सुधारात्मक पग उठाने पड़ेंगे। किसी मुस्लिम राष्ट्र के प्रधान नेता के लिए विशेष संकट भरी स्थिति बन सकती है।

वि. संवत् 2078 में 11 अगस्त, 2021 ई., बुधवार को 1 मुहर्रम (यकम) के दिन हिजरी सन् 1443 शुरु होगा। बुधवार को हिजरी सन् का आगाज़ होने से मुस्लिम वर्ष 1443 (2021-22 ई.) का राजा (बादशाह) '**बुध**' होगा।

नववर्ष कुण्डली में मकर लग्न उदित हुआ है तथा लग्नेश शनि लग्न भाव में ही स्वराशिगत है। मकर राशिस्थ शनि तथा कर्क राशिस्थ सूर्य का समसप्तक शत्रु दृष्टि सम्बन्ध बना हुआ है। सूर्य-शनि परस्पर परम शत्रु ग्रह हैं। ग्रहस्थिति अनुसार अफगानिस्तान,

बांग्लादेश, साऊदी अरब, पाकिस्तान, ईरान आदि मुस्लिम देशों के लिए यह वर्ष कठिन प्रतीत हो रहा है। आगामी वर्ष इन देशों के लिए गम्भीर आर्थिक तथा राजनैतिक चुनौतियां लेकर आएगा। पाक, ईराक, टर्की आदि देशों में गृहयुद्ध एवं आतंकी घटनाओं, आगज़नी जन्य परिस्थितियां बनी रहेंगी। कहीं तूफान, रोग, महामारी, भूकम्पादि प्राकृतिक आपदाओं के कारण भी जन-धन की क्षति होने के संकेत मिलते हैं। अष्टम भावस्थ मंग.-बुध-शुक्र आदि ग्रहों का गुरु के साथ दृष्टि सम्बन्ध रहने से रूढ़िवादी एवं कट्टरवादी अधिकांश मुस्लिम देश (अफगानिस्तान, ईराक, पाकिस्तान, तुर्की आदि) विश्व के शान्तिप्रिय देशों की आलोचना एवं निन्दा के पात्र बनेंगे। मध्य-एशिया में ज़हरीला एवं युद्धमय राजनैतिक वातावरण बनेगा। पाक, ईराक, मिस्र आदि कुछ देशों के प्रधाननेता को पदत्याग करने को विवश होना पड़ेगा। हत्याकाण्ड तथा सेना शासन में सक्रिय होगी। अफ़गानिस्तान के कुछ भाग पुनः अशान्त वातावरण की युद्धाग्नि में ज्वलन्त होंगे।

ईसलामी नववर्ष कुण्डली (2)
हिजरी सन् 1443 (2021-22)

11 गु. | 9 | 12 | 10 शनि | 8 के. | 1 | 7 | 2 रा. | 4 सूर्य | 6 | 3 | 5 चं. मं.बु.शु.

10 अगस्त, 2021 ई.
सूर्यास्त 19घं.-12मि. (भा.स्टै.टा.)

—वर्षादि के विश्वामान—

वर्षादि विश्वा का कुल मान 20 विश्वे होते हैं। जिस पदार्थ (विषय) के विश्वा 1 से 20 अंकों के मध्य जितने अधिक (20 अथवा उसके समीपस्थ) होंगे, उस वस्तु के उत्पादन की मात्रा उतनी अधिक होगी। **जैसे**—आगे वि. संवत् 2078 में धान्य के विश्वा 13 लिखे हैं, इसका तात्पर्य यह हुआ कि आगामी वर्ष धान्य का उत्पादन औसत से कुछ अधिक ही होगा।

वर्षा 15, धान्य 13, तृण 13, शीत 7, तेज 17, वायु 13, वृद्धि 15, क्षय 15, विग्रह 11, क्षुधा 7, तृषा 7, निद्रा 7, आलस्य 15, उद्यम 13, शान्ति 15, क्रोध 3, दम्भ 5, लोभ 3, मैथुन 15, रस 9, फल 13, फलनिष्पत्ति 11, उत्साह 3, उग्रता 3, पाप 3, पुण्य 9, व्याधि 9, व्याधिनाश 7, आचार 7, अनाचार 13, मृत्यु 11, जन्म 3, देशोपद्रव 9, देशस्वास्थ्य 15, चौरभय 5, चोरनाश 15, अग्नि 13, अग्निशान्त 17, उद्भिज 7, जरायुज 7, अंडज 5, स्वेदज 7, टिड्डी 9, तोता 7, मूषक 19, सोना 5, ताम्र 7, स्वचक्र 9, परचक्र 15, वृष्टि 3, वृष्टिनाश 11 तथा संवत् विश्वा 18 हैं।

जल आदि चार स्तम्भ-वि. संवत् २०७८

(1) जल स्तम्भ—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र का सम्पर्क मात्र 13 प्रतिशत है। फलस्वरूप आगामी वर्ष देश में कम वर्षा के योग हैं। कहीं खण्ड वर्षा एवं कहीं समयानुसार उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी। मध्य-पूर्वी क्षेत्रों जैसे-बिहार, उड़ीसा, असम, पं. बंगाल, उ.प्र. आदि में प्रतिकूल एवं बेमौसमी वर्षा होगी। अनियमित वर्षा के कारण जन-धन हानि अर्थात् कहीं बाढ़ तो कहीं वर्षा की कमी से अकालजन्य एवं दुर्भिक्ष की परिस्थितियां बनेंगी। बहुजलसिञ्चित धान्य (चावल) की फसल को हानि पहुँचेगी। कहीं पेयजल की समस्याएँ उत्पन्न हों, भूमिगत जलस्तर में भी गिरावट बनेगी। परन्तु रोहिणी का वास '**तट**' पर होने से कहीं अनुकूल एवं उपयोगी वर्षा भी होगी।

(2) तृण स्तम्भ—वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र का अभाव है। फलस्वरूप तिनके, बाँस, घास, पुष्पों, फलों, वनस्पतियों, जड़ी-बूटियों तथा अन्य वन औषधियों के उत्पादन एवं उपलब्धता में विचारणीय कमी रहेगी। पशुचारे का भी अभाव रहे। फलतः गौ, भैंस आदि चौपाय पशुओं द्वारा दुग्ध उत्पादन में भी कमी रहे। आयुर्वेदिक औषधियां, दुग्ध, पनीर, डेयरी उत्पाद महँगे होंगे।

(3) वायु स्तम्भ—ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर नक्षत्र का सम्पर्क 85 प्रतिशत है। वायुस्तम्भ सबल होने से कुछ प्रदेशों में अनुकूल वायु-वेग एवं मेघ संचार रहने से वर्षा का क्रम अच्छा रहेगा। ग्रीष्म ऋतु में (वैशाख-ज्येष्ठ मासों) स्वाभाविक रूप से होने वाली लू और गर्म तेज़ हवाएँ चलेंगी। परन्तु वायु-स्तम्भ की दृढ़ता से दक्षिणी-पूर्वी तटीय प्रदेशों में विशेष रूप से तथा उत्तरी-भारत में भी भीषण वायु-वेग, चक्रावात एवं तेज़ आँधियों से खड़ी फसलों, धान्यादि सम्पदा को हानि पहुँचेगी।

(4) अन्न स्तम्भ—आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का सम्पर्क 73 प्रतिशत है। फलस्वरूप जल व तृण स्तम्भ का अभाव अन्न स्तम्भ को भी अवश्य प्रभावित करेगा। परन्तु अन्न-स्तम्भ कुछ बली होने से विपरीत जलवायु के बावजूद कुछ प्रदेशों में गेहूँ, चने, चावल, मक्का, ईख, धान्यादि का उत्पादन गुज़ारेलायक हो जाएगा। सर्वप्रकार के अनाज, दालें आदि तेज भाव होंगे। अन्नक्षेत्र की आपूर्ति सरकार को गोदामों में सञ्चित अन्न से करनी पड़ेगी। कृषक वर्ग को विशेष सुविधा सम्पन्न बनाने के लिए किए गए प्रयास सरकार के हित में रहेंगे। कृषि सम्बन्धी विशेष नीतियों एवं योजनाओं की घोषणाएं की जाएंगी।

ऊपर वर्णित चारों स्तम्भ वर्ष (संवत्) में किसी भी देश की आर्थिक सम्पन्नता को समझने एवं जानने (आकलन) के लिए विशेष महत्त्व रखते हैं, क्योंकि देश की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से वर्षा, मानसून तथा अन्न उत्पादन पर निर्भर करती है। वि. संवत् २०७८ में दो स्तम्भ कुछ बली तथा दो स्तम्भ नगण्य होने के कारण आगामी वर्ष केन्द्रीय शासन के लिए कई प्रकार की नई-नई समस्याओं को उपस्थित कर सकता है। शासन-तंत्र द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था में उठाए गए सुधारात्मक पगों के कारण आरम्भ में कुछ सुधार परन्तु शीघ्र ही विकासगति मन्द पड़ जाएगी।

आर्षमान द्वारा रक्षा फल-विचार (वि. सं. २०७८)

निम्नलिखित ये चार आर्षमान वर्ष में जनता व देश की सुरक्षा, कानून-व्यवस्था, सामाजिक शान्ति एवं सौहार्द, नैतिक-मूल्यों, समृद्धि एवं सौभाग्य का निर्धारण करते हैं। आर्षमान भी स्तम्भों की भान्ति विशेष तिथियों एवं नक्षत्रों के संयोग से निर्धारित किए जाते हैं। इनकी निर्बलता देश में उपद्रव, दुर्घटनाओं, आपदाओं, महामारी, विस्फोट, अशान्ति व लोगों के चारित्रिक पतन को निमन्त्रित करती है। आर्ष शब्द का अर्थ है ऋषियों से सम्बन्धित ऋषियों का। आर्षमान का मूलतः अर्थ हुआ-नापतोल का ऋषि प्रोक्त पैमाना। तिथि व नक्षत्र का संयोग जितना अधिक होगा, आर्षमान उतना ही अधिक बलवान समझा जाएगा।

(1) प्रथम आर्ष–गतवर्ष की पौष अमावस्या को मूल नक्षत्र के सम्पर्क से माना जाता है। पौष अमावस को मूल नक्षत्र का अभाव है।

(2) द्वितीय आर्ष–वैशाख शुक्ल तृतीया को रोहिणी नक्षत्र का सम्पर्क मात्र 0.39% है।

(3) तृतीय आर्ष–श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र का सम्पर्क भी मात्र 0.6% है।

(4) चतुर्थ आर्ष–कार्तिक पूर्णिमा को कृतिका नक्षत्र का सम्पर्क 49% है।

फल–इस वर्ष देश की रक्षा के सांकेतिक प्रथम तीनों दुर्गों का लगभग अभाव होना आगामी वर्ष देश के लिए चिन्तनीय परिस्थितियों का द्योतक (संकेत) दे रहा है। प्रथम तीनों आर्ष का अभाव होना सामान्य जनता के जनजीवन एवं देश की प्रगति, राजनीतिज्ञ प्रमुखों के लिए काफी कठिनतापूर्ण परिस्थितियों का संकेतक है। देश में प्राकृतिक आपदा, साम्प्रदायिक एवं आतंकवाद जन्य उपद्रवों से जन-धन हानि की घटनाएं अशान्ति का कारण बनेंगी। जलवायु की प्रतिकूलता, समुद्री तटों वाले क्षेत्रों में तूफान, चक्रावात भी हानि कर सकते हैं। परन्तु चतुर्थ आर्ष की कुछ सुदृढ़ता होने से शासन-तंत्र देश की सम्प्रभुता को दृढ़ रखेगा एवं देश को प्रगतिपथ पर अग्रसर करने के लिए सरकार के प्रयास प्रशंसनीय होंगे।

इस सम्बन्ध में भड्डरी की कहावत भी प्रचलित है–

अखै तीज रोहिणी न होई। पौष अमावस मूल न जोई।।
राखी श्रवणो हीन बिचारो। कार्तिक पूनो कृतिका टारो।।
महि माहीं खल बलहिं प्रकासै। कहत भड्डरी सालि विनासै।।

अर्थात् वैशाख की अक्षय तृतीया को यदि रोहिणी न हो, पौष की अमावस्या को मूल न हो, रक्षाबन्धन के दिन श्रवण और कार्तिक की पूर्णिमा को कृतिका नक्षत्र न हो, तो पृथ्वी पर दुष्टों का बल बढ़ेगा और उस वर्ष धान का उपज न होगी।

❋ मकर एवं कुम्भ राशिस्थ गुरु का प्रवेशफल-सं. २०७८ ❋

संवतारम्भ से कुम्भ राशि में संचरणशील गुरु 20 जून, 2021 ई. से वक्री होकर पुनः वक्री अवस्था में 14 सितम्बर से 19 नवम्बर तक मकर राशि में संचार करेंगे। ता. 20 नवम्बर, 2021 ई. से संवतान्त तक कुम्भ राशि में संचार करेंगे।

मकर राशि में गुरु संचार-फल (14 सितम्बर से 19 नवम्बर तक)

'पापबुद्धिरता लोकाः हाहाभूता च मेदिनी। जलतैलाज्य-दुग्ध-अन्न-रक्तवस्त्रेमहर्घता।।'

अर्थात् गुरु जब मकर राशि में आए तो पौष नामक संवत्सर होता है तथा उसमें **'जलेन्द्र'** नामक मेघ वर्षा करते हैं। जिसमें चौपाय-पशुओं की मृत्यु अधिक तथा पृथ्वी पर दुर्भिक्ष व अकालजन्य परिस्थितियां बनेंगी। पेयजल का गम्भीर संकट उत्पन्न हो सकता है। उत्तर तथा पश्चिमी देशों (यूरोप) एवं क्षेत्रों में खण्ड वृष्टि अर्थात् कहीं अत्यधिक वर्षा एवं कहीं वर्षा की कमी अनुभव होगी। पूर्वी (बंगाल आदि) तथा दक्षिणी राज्यों में सत्ता-परिवर्तन, राजनैतिक उलट-फेर तथा दुर्भिक्ष (अकालजन्य) बने। लोग पाप तथा कुटिल बुद्धि युक्त आचरण करेंगे तथा पृथ्वी पर हाहाकार जन्य परिस्थितियां बनेंगी। पेयजल, तेल, घी, दूध, अन्न तथा लाल रंग की वस्तुओं में विशेष वृद्धि होगी। चाँदी भी विशेष महँगी होगी।

कुम्भ राशि में गुरु संचार फल

(संवतारम्भ से 13 सितम्बर, 20 नवम्बर से संवतान्त 1 अप्रै., 2022 ई. तक)

कुंभेगुरौ वज्रदंशो मेघोमाघादिवत्सरः। सुभिक्षं जायते तत्र ऋषिदेवद्विज-अर्चनम्।।

अर्थात् गुरु जब कुम्भ राशि में आए तो **'माघ'** संवत्सर होता है और उसमें **'वज्रदंश'** नामक मेघ वर्षा करते हैं। इस वर्ष सुभिक्ष अर्थात् धान्यादि फसलों का यथेष्ठ उत्पादन तथा उपलब्धता रहती है। ऋषियों, देवताओं, सन्तों तथा ब्राह्मणों की पूजा तथा मान-सम्मान प्रदान किया जाता है। सोना, पीतल तथा लोहा आदि में तीन मास तक सस्तापन अर्थात् इनके मूल्य गिरेंगे। माघ-फाल्गुन-चैत्र (जनवरी से मार्च तक) रोग उत्पन्न होंगे। नमक, कपास, चावल, हींग, हल्दी, घी, महंगे होंगे। आश्विन-कार्तिक (सितं.-अक्तू.) में भी कोई रोग उत्पन्न होंगे।

श्री प्रियव्रत शर्मा ज्योतिषाचार्य-एक श्रद्धांजलि

'मार्तण्ड-पंचांग' (कुराली) के सम्पादक तथा भारतीय ज्योतिष, गणित एवं मुहूर्त्त शास्त्र आदि अनेक ग्रन्थों के लेखक पं. प्रियव्रत शर्मा जी के नवम्बर, 2019 को आकस्मिक निधन से ज्योतिष जगत् की विशेष हानि हुई है।

'पंचांगदिवाकर' (जालन्धर) का सम्पादक मण्डल उनकी सुपुत्री एवं अन्य पारिवारिक सदस्यों के प्रति हार्दिक संवेदना/शोक व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करता है। पं. प्रियव्रत शर्मा जी ने भारतीय सिद्धान्त, संहिता, मुहूर्त्त व गणित शास्त्र का अध्ययन/अनुशीलन के बाद अनेक नवीन पुस्तकों का लेखन व प्रकाशन किया।

'पंचांगदिवाकर' के सम्पादक-मण्डल की ओर से उनकी आत्मा की शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना है एवं पं. प्रियव्रत शर्मा जी के पारिवारिक सदस्यों को उनका विछोह एवं दुःख सहन करने की शक्ति दे।

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति

ग्रहों के आधार पर आगामी वर्ष की प्रमुख भविष्यावाणियां—वि. सं. २०७८

- नया *'राक्षस'* नामक संवत्सर होने से आगामी वर्ष युद्ध, प्राकृतिक प्रकोपों एवं अव्यवस्था आदि से व्यापक जन-धन तथा कृषि (फसलों) की हानि होगी। विभिन्न रोगों एवं महामारी से लोगों में कष्ट रहे। साधारण जन भी राक्षस प्रवृत्ति के होकर उनकी भान्ति आचरण करेंगे।
- राजा और मन्त्री के दोनों अधिकार *'मंगल'* ग्रह को ही प्राप्त होने से समाज एवं देश में भ्रष्टाचार, चोरी, ठगी, लूटमार, हिंसक एवं अग्निकाण्ड की घटनाएँ अधिक होंगी। आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में ज़बरदस्त तेज़ी होने से सामान्य लोगों में आक्रोश एवं परेशानियाँ बढ़ेंगी।
- देश में राजनैतिक उग्रता, साम्प्रदायिक उपद्रव व तोड़-फोड़ की वारदातें अधिक होंगी, अधिकांश नेता मनमाना आचरण करेंगे। सीमाओं पर युद्ध के बादल मण्डराते रहेंगे।
- वर्ष 2021 ई. के आरम्भिक तीन मास में मकरराशिस्थ 'चतुर्ग्रही' एवं 'पंचग्रही' योग बनने से विश्व एवं भारत का राजनैतिक एवं कूटनीतिक वातावरण विक्षुब्ध एवं संघर्षपूर्ण रहेगा। भारत-पाक, चीन तथा अमरीका-चीन, ईरान आदि विरोधी देशों के मध्य सैनिक टकराव एवं युद्धजन्य परिस्थितियां बनेंगी।
- अग्नितत्त्व प्रधानता एवं राक्षस सम्वत्सर के कारण लोगों में क्रोध, उत्तेजना, धन-लोलुपता, लोभ आदि राजसिक एवं तामसिक प्रवृत्तियां बढ़ेंगी।
- आगामी वर्ष भारत और इसके नीति-निर्धारकों अर्थात् केन्द्रीय सरकार के लिए निर्णायक सिद्ध होगा। विश्व की कई उदीयमान अर्थव्यवस्थाओं की करंसी का अवमूल्यन होने के फलस्वरूप फैली वैश्विक आर्थिक मन्दी से भारत भी अछूता नहीं रहेगा।
- 2 जून से 20 जुलाई 'मंगल-शनि', तदुपरान्त 'सूर्य-शनि', 'गुरु-शुक्र' विरोधी ग्रहों के मध्य समसप्तक योग रहने से समाज में क्रोध एवं आवेश के कारण हिंसक घटनाएँ अधिक होंगी। देश में कहीं उपद्रव, अग्निकाण्ड की घटनाएँ, साम्प्रदायिक हिंसा तथा झगड़े-फिसाद अधिक होंगे।
- कोरोना महामारी के कुछ शान्त होने के पश्चात् बेरोज़गारी तथा महँगाई के मुद्दे ज्वलन्त मुद्दे बनकर साधारण जन के मन को उद्वेलित एवं आन्दोलित करते रहेंगे। परन्तु अनेक अवरोधों के बावजूद केन्द्रीय सरकार नए भारतवर्ष में चीन विरोधी एक नए आर्थिक नवजागरण का निर्माण करने में काफी हद तक सफल रहेगी तथा एक नए तेवर वाली विदेश एवं कूटनीति देखने को मिलेगी।
- 8 सितं. से 20 सितं. के मध्य भाद्रपद शुक्लपक्ष तेरह (13) दिन का होने से भारत एवं विश्व में कहीं रेल या हवाई दुर्घटना से अथवा भूकम्प, भूस्खलन, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोपों से भारी जानी-माली हानि होने का भय है।
- आगामी कुछ राज्यों (बंगाल, बिहार, मणिपुर आदि) में होने वाले विधानसभा चुनावों में भाजपा का प्रभावक्षेत्र निश्चित रूप से सुदृढ़ होगा तथा गठबन्धन द्वारा सत्तारूढ़ होगी।

ज्योतिष-शास्त्र का एक नाम ज्योतिःशास्त्र भी है, जिसका अर्थ प्रकाश देने वाला अर्थात् जिस शास्त्र द्वारा संसार का मर्म, जीवन-मृत्यु का रहस्य और जीवन के सुख-दुःख के सम्बन्ध में पूर्ण प्रकाश मिले, वही ज्योतिषशास्त्र कहलाता है।

ज्योतिषशास्त्र सृष्टि और प्रकृति का रहस्यों को प्रकट (व्यक्त) करने वाला शास्त्र है। ज्योतिषशास्त्र की प्राचीनता, व्यापकता एवं इसके प्रभाव का उल्लेख वैदिक साहित्य में अनेक स्थलों पर मिलता है। वेदाङ्ग साहित्य में ज्योतिषशास्त्र को नेत्रों के रूप में मान्यता प्राप्त है। इसकी सहायता के बिना श्रौत-स्मार्त्त अर्थात् धर्मपरायण सभी गृहस्थी एवं श्रुति-स्मृति परायण धर्माचार्यों के अधिकांश कार्य वेदाङ्ग चक्षु ज्योतिष के बिना सफल नहीं माने जाते थे—

'वेदस्य निर्मलं चक्षु ज्योतिःशास्त्रमकल्पषम्।
विनैतदखिलं कर्म श्रौतं स्मार्तं कर्माणि न सिद्धयन्ति।।''

ज्योतिष को ज्ञानरूपी शरीर का नेत्र कहा गया है अर्थात् नेत्रों के बिना जैसे शरीर अपूर्ण और व्यर्थ है, उसी प्रकार ज्योतिषज्ञान के बिना अन्य विषयों का ज्ञान अपूर्ण और अनुपयोगी है।

ईसवी पूर्व पाँचवी शती के साहित्य का सूक्ष्म निरीक्षण करने पर ज्ञात होता है कि प्राचीन युग में ज्योतिष शास्त्र ने वेदांगों में श्रेष्ठ एवं अभिन्न स्थान प्राप्त कर लिया था। वैदिक एवं पौराणिक साहित्य के अतिरिक्त ज्योतिष शास्त्र का सम्बन्ध दर्शनशास्त्र, नाट्यशास्त्र, आयुर्वेद, कर्मकाण्ड, भूगर्भशास्त्र आदि से भी है। कालगणना पद्धति तो ज्योतिषशास्त्र की

मानव को अमूल्य देन है। इसमें निमेष से लेकर युगों तक की परिकल्पना की गई है। भारतीय परम्परानुसार किसी भी विशेष उद्योग को या किसी धार्मिक अनुष्ठान को प्रारम्भ करने से पूर्व शुभ संकल्प किया जाता है, जिसके अन्तर्गत श्रीभगवान् के स्मरण के साथ-साथ कल्प, मन्वन्तर, वर्तमान युग, सम्वत्, अयन, ऋतु, पक्ष, मास, तिथि-वार-नक्षत्रादि का उच्चारण किया जाता है। अपने नाम, गोत्र, वंशादि तथा जपादि कर्म के निमित्त एवं उद्देश्य का उल्लेख भी किया जाता है।

वस्तुतः ज्योतिषशास्त्र कर्मफलसूचक शास्त्र है। कर्मफल अटल एवं भोग्य है। इसे बिना भोगे छुटकारा नहीं है। भले ही किसी एक जातक का कर्मफल दूसरा भोगे, पर बलात् नहीं स्वेच्छा से। सन्तजन ऐसा करते हैं। इसलिए कर्म को भोग के कारण के रूप में जानना चाहिए। यद्यपि इसकी गति बड़ी गहन है-**'कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं······गहना कर्मणो गतिः।'** (गीता ४/१७)

किसी जन्म का कर्मफल भोगा है ? किस कारण यह कर्म हुआ ? यह सब जानना कठिन है। कर्मविपाक प्रारब्ध है। ज्योतिष सत्-शास्त्र है, धर्म से संवलित एवं मर्यादित है। ज्योतिषी धर्मज्ञ होता है। धर्मनिरपेक्ष धर्म की अवहेलना करता है। धर्मनिरपेक्षता पाप की जननी है। **ज्योतिष धर्मसापेक्ष शास्त्र है। इस शास्त्र को हमारा सहस्त्र नमस्कार।**

सबको अपना भविष्य जानने की इच्छा होती है। ज्योतिष जिज्ञासु के लिए है। जातक को स्वयं के बारे में जानने का उद्योग करना स्वाभाविक है। कुण्डली में भूत से भविष्यपर्यन्त सम्पूर्ण वृत्त समाहित है। **स्वयं को जानना ही ज्योतिषशास्त्र का लक्ष्य है। आत्मज्ञान ज्योतिष है।** आत्मज्ञानी के सम्मुख मैं सतत् विनत एवं प्रणत हूँ-**'यस्मै कस्मै तस्मै ज्योतिषे नमः'**-विवेक शर्मा। इसीलिए ज्योतिष विद्या को सत्कर्म की उत्प्रेरिका कहा गया है।

परमपिता श्री परमात्मा की अपार कृपा से उत्तरी भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित एवं सर्वप्राचीन प्रकाशन **'पंचांगदिवाकर'**, **'मुफीद आलम जन्त्री'** (उर्दू-हिन्दी-पंजाबी) एवं तिथ-पत्रिका (पंजाबी-भाषा) को प्रकाशित होते हुए प्रस्तुत संवत् २०७८ (2021-22 ई.) में गौरवशाली 146 वर्ष हो जाएंगे। इस पंचांग-समूह के प्रवर्त्तक एवं संस्थापक हमारे परम-पूज्य वृद्ध प्रपितामह (पितृ-पुरुष) विश्वविख्यात मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु जी (लाहौर वाले) से लेकर आज तक की दीर्घावधि में हमारे प्रकाशनों को जो राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की ख्याति एवं प्रशंसा प्राप्त हो चुकी है, वह सुविज्ञ पाठकगणों से छिपी हुई नहीं है। उत्तरी भारत में शताब्दि से भी अधिक वर्षों प्रयन्त ज्योतिष जगत् के क्षेत्र में हमारी पंचांग, जन्त्री एवं अन्य ज्योतिष, कर्मकाण्ड, धार्मिक प्रकाशनों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। सुविज्ञ पाठकों से अनुरोध है कि वह असली व प्रामाणिक **'पंचांगदिवाकर'**, **'मुफीद आलम जन्त्री'** तथा अन्य प्रकाशनों पर हमारे पूज्य पिता स्वर्गीय पं. पन्ना लाल जी का नाम व फोटो, गणितकर्त्ता पं. विवेक शर्मा, सहसम्पादक पं. पंकज शर्मा तथा एकमात्र वितरक **'जनरल बुक डिपो'** जालन्धर का नाम अवश्य पढ़ लिया करें, जिससे कि आप असली, शुद्ध एवं प्रामाणिक जन्त्री/पंचांग ही प्राप्त कर सकें।

गतवर्षीय दिवाकर पंचांगों की भविष्यवाणियाँ जो अक्षरशः सत्य सिद्ध हुईं

आगे हम संक्षिप्त रूप से हमारे पूर्वजों पं. देवीदयालु जी, पं. मोहन लाल जी, पं. चूनी लाल जी, पिता जी पं. पन्ना लाल जी तथा वर्तमान गणितकर्त्ता पं. विवेक शर्मा की उन भविष्यवाणियों का उल्लेख कर रहे हैं, जो ईश्वर कृपावश अक्षरशः सत्य सिद्ध हुईं। इन सटीक एवं सफल भविष्यवाणियों के कारण ही **'पंचांगदिवाकर'** को विद्वत समाज में अग्रणी एवं शीर्षस्थ स्थान प्राप्त है।

[भारत-पाक का ब्रिटिश शासन से स्वतन्त्र होना सं. २००४ (1947-48 ई.), भारत-चीन युद्ध (सं. २०१९), भारत-पाक युद्ध (सं. २०२२), बांग्लादेश का उदय होना-सं. २०२७, कांग्रेस (ई.) की पराजय (संवत् २०३३) तथा पुनः सत्ता में आना-सं. २०३६, ईरान-ईराक युद्ध-वि. सं. २०३९, पूर्व प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाँधी की आकस्मिक मृत्यु-सं. २०४१, पूर्व प्रधानमन्त्री राजीव गाँधी की आकस्मिक मृत्यु (संवत् २०४७), मोर्चा सरकार का पतन तथा भाजपा का सशक्त पार्टी के रूप में सत्तारूढ़ होना-वि. सं. २०५५, ***भाजपा सरकार का आकस्मिक गिरना तथा कारगिल (ज. काश्मीर) में घुसपैठ एवं युद्ध की स्पष्ट भविष्यवाणी-वि. संवत् २०५६, सं. २०५७ के पंचांग में एवं च, भाजपा का केन्द्र में गिरकर पुनः सत्ता ग्रहण की भविष्यवाणी स्पष्टतः की गई थी।]***

पुनः वि. संवत् २०५८ के पंचांग में अमरीका 9/11 सम्बन्धित त्रासदी के बारे में, वि. संवत् २०५९ में पंजाब में कांग्रेस पार्टी की विजय सम्बन्धी भविष्यवाणी, वि. सं. २०६० में ***'अमरीका-ईराक'*** *युद्ध तथा ईराक में सत्ता-परिवर्तन, वि. सं. २०६१ में लोकसभा चुनावों में कांग्रेस की विजय तथा भाजपा (वाजपेयी) सरकार का पतन, वि. संवत् २०६३ में पंजाब, बिहार में नेतृत्व-परिवर्तन के योग (बादल तथा नितीश कुमार का सत्तासीन होना) तथा मुम्बई में 11 जुलाई, 2006 ई. को बम-विस्फोट सम्बन्धित भविष्यवाणी, वि. संवत् २०६४ (2007-08 ई.) में उ.प्र., उत्तराखण्ड में नेतृत्व परिवर्तन के योग, वि. संवत् २०६५ में गुजरात में भाजपा एवं मोदी सरकार के विजयी सम्बन्धी भविष्यवाणी, वि. संवत् २०६६ में अमरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को सफलता प्राप्ति एवं जम्मू-काश्मीर में नैशनल-कांफ्रेंस गठबन्धन का विजयी होना वि. संवत् २०६७ में कांग्रेस का पुनः जीत प्राप्त करना, वि. संवत् २०६८ में विश्व में आर्थिक मन्दी, लीबिया, सूडान, मिस्त्र, सीरिया आदि देशों में आन्तरिक क्रान्ति तथा सत्ता परिवर्तन, वि. संवत् २०६९ में इस्लामी देशों में आन्तरिक गृह-युद्ध, पंजाब में अकाली-भाजपा गठबन्धन का पुनर्विजयी होना,* ***वि. संवत् २०७० (2013-14 ई.) में ही 'श्रीनरेन्द्र मोदी' के प्रधानमन्त्री बनने सम्बन्धी भविष्यवाणी तथा पाँच राज्यों के विधानसभा चुनावों में भाजपा की सफलता प्राप्ति की भविष्यवाणी एवं उत्तराखण्ड में महावृष्टि सम्बन्धी हानि की भविष्यवाणी,*** *वि. संवत् २०७१ (2014-15 ई.) तथा वि. संवत् २०७२ (2015-16 ई.) में अप्रैल, 2015 ई. में* ***नेपाल में भूकम्प, जम्मू-काश्मीर में किसी पार्टी को स्पष्ट बहुमत प्राप्त न होना तथा चुनाव पश्चात् गठबन्धन सरकार अस्तित्व में आएगी' भविष्यवाणी,*** *सं. २०७३ (2016-17 ई.) में* ***'पाक-चीन'*** *आदि पड़ोसी देशों के साथ विदेश-नीति में निरन्तरता का अभाव, 'एक सक्षम और*

सामर्थ्यवान राष्ट्र के रूप में भारत का उदय होगा', 'धरती ही नहीं अंतरिक्ष में भी भारत की प्रतिष्ठा बढ़ेगी, अर्थात् नए-नए प्रक्षेपास्त्र एवं अन्तरिक्ष-अनुसन्धान किए जाएंगे' आदि अनेक भविष्यवाणियों का उल्लेख हम गतवर्षीय पंचांगों में कर आएं हैं। परन्तु **सन् 2016-17 ई. की सबसे बड़ी भविष्यवाणी थी 'नोटबन्दी'।** *वि. संवत् २०७४ (2017-18 ई.) में पृष्ठ 91, कॉलम-I में पढ़ें-'......व्यापारी सरकार के कठोर व पेचीदा नियमों से परेशान व पीड़ित रहेंगे।' जैसा कि लोग/व्यापारी जी.एस.टी. व नोटबन्दी के दौरान परेशान रहे। वि. संवत् २०७५ में गुजरात, हि.प्र., त्रिपुरा, कर्नाटका में भाजपा की विजयी/मज़बूती की भविष्यवाणी, पूर्व-प्रधानमन्त्री श्री अटल-बिहारी वाजपेयी जी के निधन सम्बन्धी भविष्यवाणियां अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई हैं।*

वि. संवत् २०७६ (2019-20 ई.) की प्रमुख सत्यसिद्ध भविष्यवाणियां जोकि जून, 2019 ई. तक दृष्टिगोचर हुई थीं के मुख्य 17 बिन्दु हम गतवर्ष २०७७ के पंचांग पृष्ठ सं. 87-88 पर लिख चुके हैं। उसके बाद के घटनाक्रम पर प्रकाश डालते हैं-

कोरोना महामारी सम्बन्धी स्पष्ट संकेत

(18) वि. संवत् २०७६ (2019-20 ई.) पंचांग के पृष्ठ 74 पर राजा '**शनि**' शीर्षक के अन्तर्गत स्पष्ट पढ़ें-'**लोग विभिन्न प्रकार के पेचीदा रोगों के कारण परेशान व पीड़ित रहें।' 'देश में लोग दुर्भिक्ष, प्राकृतिक प्रकोपों के कारण परेशान (पीड़ित) होकर अन्य प्रदेशों में पलायन करने को विवश होंगे।'-'प्रत्यक्षं किं प्रमाणम्'**-लाकडाउन से पहले एवं बाद के हालात सम्बन्धी लिखी गई यह भविष्यवाणी हू-बु-हू-सत्य सिद्ध हुई।

(19) वि. संवत् २०७६ (2019-20 ई.) के पृष्ठ 74 पर '**मन्त्री सूर्य**' शीर्षक के अन्तर्गत पढ़ें-'**क्लिष्ट एवं पेचीदा रोगों का आधिक्य रहे।**'-इसीलिए ज्योतिषशास्त्र को संकेतशास्त्र भी कहा जाता है।

(20) पृष्ठ 75 पर शीर्षक '**धातुओं के स्वामी**' मंगल के अन्तर्गत पढ़ें-**सोना, ताँबा आदि लाल वर्ण के पदार्थ व धातुएँ दिनप्रतिदिन महँगे होंगे। सोने (Gold) के भाव आपके सामने थे।**

(21) पृष्ठ 74 पर शीर्षक मेघेश शनि के अन्तर्गत पढ़ें-'**जनता कई प्रकार के रोगों से पीड़ित एवं परेशान भी रहे।**'

गतवर्ष वि. संवत् २०७७ पंचांग की भविष्यवाणियां जो सत्य सिद्ध हुईं

गतवर्ष वि. संवत् २०७७ के पंचांगदिवाकर में अभी तक (जून, 2020 ई. तक) अनेक भविष्यवाणियां ईश्वर कृपावश सत्य सिद्ध हुई है, जिनका उल्लेख कर रहे हैं-

(1) पृष्ठ 85-मुख्य कॉलम की प्रथम पंक्ति ही स्पष्ट पढ़ें-''**नया 'प्रमादी' नामक सम्वत्सर होने से सरकार की ओर से कठोर एवं अप्रिय निर्णय लिए जाएंगे। यद्यपि देशहित में लिए गए कठोर एवं क्लिष्ट सरकारी नियमों एवं कानूनों से सामान्य प्रजा में दुविधा, भय, विक्षोभ एवं आक्रोश की भावनाएं रहेंगी।**'' *[ध्यान रहे, वि. संवत् २०७७ के आरम्भ में 'प्रमादी' सम्वत्सर ही था, न कि 'आनन्द'-जैसा कि कुछ पंचांगों में दिया गया था। पढ़ें पृष्ठ 24 एवं 80]* -स्पष्ट है, कोरोना महामारी के कारण केन्द्र/राज्य सरकारों द्वारा क्रियान्वयन किया गया लॉकडाऊन नियमों से साधारण प्रजा में काफी भय, दुविधा का माहौल रहा।

(2) पृष्ठ 85-मुख्य कॉलम की तृतीय पंक्ति पढ़ें-'**....... लोगों में स्वास्थ्य सम्बन्धी चेतना एवं जागरुकता बढ़ेगी।**' -वस्तुतः पृष्ठ 85 मुख्य कॉलम की सभी भविष्यवाणियाँ ध्यान देने योग्य हैं।

(3) पृष्ठ 88, कॉलम-II में पढ़ें-'**.... वात, पित्त एवं कफ सम्बन्धी गुप्त एवं पेचीदा रोग अधिक होंगे।**' साथ ही पढ़ें-'**लोगों में मानसिक एवं क्लिष्ट श्वास रोग अधिक होंगे।**'

(4) पृष्ठ 89, कॉलम-I में पढ़ें-'**विश्वव्यापी आर्थिक क्षेत्रों में आर्थिक मन्दी के कारण पाकिस्तान, चीन, भारत सहित अनेक देश आर्थिक मन्दी की लपेट में आ जाएंगे।**'-जैसा कि सर्वविदित हो रहा है।

(5) पृष्ठ 89, कॉलम-II की अन्तिम पंक्तियां पढ़ें-'11 जन. से 9 फरवरी, 2022 ई. के मध्य .... '**लोगों में क्लिष्ट रोग, कष्ट एवं दुःखों में वृद्धि होगी।-ध्यान दें। कोरोना रोग को W.H.O. द्वारा महामारी 11 जनवरी, 2020 ई. को ही घोषित किया गया था।**'

(6) पाकिस्तान के सम्बन्ध में की गई भविष्यवाणी हेतु पृष्ठ 90 कॉलम में पढ़ें-'**...... दुनियाभर में भारत की कूटनीति के कारण पाकिस्तान अलग-थलग पड़ जाएगा।**'

(7) भारतवर्ष के सम्बन्ध में की गई भविष्यवाणी हेतु पृष्ठ 91 कॉलम में पढ़ें-'**.......मुंथा भी संघर्षमयी एवं विपरीत परिस्थितियों की ओर संकेत कर रही है।**' मोदी सरकार द्वारा अर्थव्यवस्था में विशेष मौलिक एवं बुनियादी परिवर्तन किए जाएंगे। -जैसा कि भारत में कोरोना महामारी के कारण आर्थिक एवं विभिन्न समस्याएँ उत्पन्न हुई एवं च सरकार द्वारा 20 लाख करोड़ के पैकेज द्वारा अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ रखने का प्रयास किया जाना।

(8) पृष्ठ 92 कॉलम-II की प्रथम पंक्ति पढ़ें-'राजनीति में नेताओं के साम्प्रदायिक, बचकाने और अमर्यादित बयानों पर वाद-विवाद बढ़ेंगे।

(9) **दिल्ली दंगों के बारे में स्पष्ट संकेत पहले ही लिख दिए गए थे**-(पृष्ठ 92, कॉलम-II एवं पृष्ठ 96 कॉलम-II) (**11 जनवरी से 9 फरवरी, 2020 ई. के मध्य भारत के अनेक प्रदेशों में उपद्रव, साम्प्रदायिक दंगे, हिंसक घटनाएं, सीज़फॉयर तोड़ने की घटनाएँ अधिक होंगी।**

पृष्ठ 96 पर दिल्ली शीर्षक के अन्तर्गत स्पष्टतः पढ़ें-'**द्वादश भाव शत्रु, षड्यन्त्र भाव में मुंथा दिल्ली को राजनीतिक तथा अराजक गतिविधियों का केन्द्र बनाए रखेगा।** (यद्यपि इससे पूर्व दिल्ली चुनावों से सम्बन्धित राजनीतिक भविष्यवाणी त्रुटिपूर्ण सिद्ध हुई) पुनः पृष्ठ 92 पर ही 10 फर. से 9 मार्च, 2020 ई. तक 'देश में कहीं उपद्रव, हिंसा तथा प्राकृतिक प्रकोप होंगे।'

(10) **म.प्र. सरकार के परिवर्तन सम्बन्धी भविष्यवाणी**-देखें पृष्ठ 92 कॉलम-II, '**10 मार्च से 8 अप्रैल मध्ये देश में कहीं छत्रभंग एवं किसी प्रमुख नेता के अपदस्थ**

होने के योग हैं।–और म.प्र. में कमलनाथ सरकार गिर गयी। इसे संयोग कहे या संकेत। यह ज्योतिषशास्त्र का अन्यतम महत्त्व सिद्ध करता है।

(11) भारत-चीन तनाव सम्बन्धी भविष्यवाणी–पृष्ठ 93, कॉलम-I पर स्पष्टत: पढ़ें-'6 जून से 5 जुला. के मध्य **'आवश्यक वस्तुओं जैसे-दूध, ईंधन, सब्ज़ियां, तेल आदि के भावों में अत्यधिक तेजी, सामान्य लोगों में क्लिष्ट रोगों की उत्पत्ति तथा पूर्वोत्तर दिशा में कहीं राज्यभंग, अग्निकाण्ड व युद्धादि का भय हो।'**–आप (पाठक) स्वयं विद्वान हैं।

वास्तव में, आत्मज्योति से ज्योतित दिव्य नेत्ररूप है-**ज्योतिष**। वह स्वयं ही इतना स्मर्थ है कि तीनों कालों में घटित होने वाली घटनाओं को हस्तामलकवत् प्रत्यक्ष देखकर मानव को अतीत से शिक्षा लेने, वर्तमान को सँवारने तथा भविष्य में सावधानी बरतने का **सन्देश देता है।**

उपरोक्त ये सभी घटनाएँ/दुर्घटनाएं **'पंचांगदिवाकर'** में दी गई भविष्यवाणियों की सार्थकता एवं सत्यता प्रमाणित कर रही हैं। –धन्यवाद **(पं. विवेक शर्मा)**

वि. संवत् 2078 में ग्रहों की आकाशी कौंसिल और भविष्यफल

वि. संवत् 2078 में ग्रहों की आकाशी कौंसिल (ग्रह-परिषद्) के दस पदाधिकारों में से चार मुख्य अधिकार (पद) क्रूर ग्रहों को एवं छ: पद (अधिकार) सौम्य (शुभ) ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। राजा, मन्त्री तथा वर्षा जैसे महत्त्वपूर्ण अधिकार (पद) युद्धप्रिय, क्रूर एवं अग्नितत्त्व ग्रह **'मंगल'** को प्राप्त हुआ है। फलस्वरूप विश्व के अनेक देशों के मध्य प्रभुसत्ता, टकराव, प्रतिद्वन्दिता एवं होड़ की प्रवृत्तियाँ बढ़ेंगी। विश्व एवं भारत का राजनीतिक, सामाजिक एवं सरहदी वातावरण विक्षुब्ध, अनिश्चित एवं अशान्त रहेगा। भारत का पाक, चीन आदि देशों के साथ परस्पर विरोध एवं तनाव बढ़ेगा। **पड़ोसी देशों के साथ यह उग्र तनाव एक नए विवादास्पद युग की शुरुआत भी करेगा।** स्वयं भारत में साम्प्रदायिक तनाव, कुछ प्रदेशों में **राजनैतिक अस्थिरता एवं आर्थिक मन्दी व अनिश्चितताएं बढ़ेंगी।**

राजा और मन्त्री के दोनों मुख्य अधिकार 'मंगल' ग्रह के पास आ जाने से भारत, पाकिस्तान, नेपाल, चीन, ईरान आदि देशों में राजनैतिक टकराव, उपद्रव, तोड़फोड़ एवं हिंसक घटनाएँ अधिक होंगी। भ्रष्टाचार, चोरी, ठगी, लूटमार, **अग्निकाण्ड की वारदातें अधिक रहें।** आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में तेजी होने से सामान्य लोगों में बेचैनी एवं विभिन्न-2 रोगों से कष्ट रहे। अधिकांश राजनेता निरंकुश एवं मनमाना व्यवहार करेंगे। **ध्यान दें,** मंगलग्रह कम्युनिस्ट एवं माओवादी संगठन का प्रतिनिधि ग्रह भी है। फलत: चीनी सीमाओं पर युद्ध के बादल मण्डराएंगे–

'स्वयं राजा स्वयं मन्त्री जनेषु रोगपीडा। चौराग्नि विग्रह भयं च नृपाणाम्॥'

परन्तु सेनापति **'चन्द्र'** जोकि मंगल का मित्र ग्रह है, अपनी कुशल नीति से चीनी आक्रमण को कुचलने हेतु विशेष रणनीति बनाकर सीमाक्षेत्रों पर पाक-तथा चीनी फौजों के दमनार्थ विशेष घटनाक्रम का क्रियान्वयन करेगा।

'राक्षस' नामक सम्वत्सर का फल भी शुभ नहीं कहा जा सकता। भारत के राजनैतिक क्षेत्र में विशेष उतार-चढ़ाव व उथल-पुथल देखने को मिलेगी। विभिन्न राजनैतिक पार्टियों में परस्पर विरोध व टकराव होंगे। देश में कहीं छत्रभंग, उपद्रव, हिंसा एवं अग्निकाण्ड की घटनाएं बढ़ेंगी। लोगों में क्रोध, उत्तेजना, लोभ एवं धन-लोलुपता अधिक बढ़े। झगड़े-फिसाद अधिक होंगे। **विश्व के कुछ राष्ट्र कुटिल नीतियों का प्रयोग करते हुए बाह्य तौर पर शान्ति वार्ताओं का ढिंढोरा करते हुए भी आन्तरिक (गुप्त) तौर पर संहारक ऐटमिक हथियारों में वृद्धि करने में संलग्न रहेंगे।** फसलों तथा धातुओं का स्वामी **'शुक्र'** रहने से (जोकि मंगल का शत्रु ही माना गया है) पित्त, त्वचा एवं यौन रोग बढ़ेंगे, कई प्रकार के अन्य रोगों से भी जनता में परेशानी बढ़ेगी। फसलों में कई प्रकार के रोग पैदा होने से फसलों को हानि पहुँचेगी। धान्येश बुध रहने से (बुध ग्रह भी मंगल का शत्रु है) पंजाब, राजस्थान, हरियाणा आदि प्रदेशों में उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी। परन्तु फलों एवं सेनापति चन्द्र होने से कुछ प्रदेशों में फल, फूल, अनाजादि की पैदावार अच्छी होने के संकेत हैं। विश्व के अनेक राष्ट्र स्वायत्तता एवं सुरक्षा की दृष्टि से परमाणु हथियारों में वृद्धि करने में प्रयासशील होंगे। **लोगों में पापकर्मों की वृद्धि होगी तथा विचित्र एवं क्लिष्ट प्रकार के रोगों की भी वृद्धि होगी।**

रसों के स्वामी का पद उग्रग्रह सूर्यदेव को मिला है, जिससे वैश्विक उष्णता के कारण देश में कहीं बहुत न्यून तथा कहीं बहुत अधिक वर्षा के कारण बाढ़ादि का प्रकोप हो। कहीं दुर्भिक्ष या सूखे आदि के कारण खड़ी फसलों को हानि पहुँचे। उच्चवर्ग के अधिकांश लोग वेद-शास्त्रादि मर्यादाओं एवं कर्त्तव्यों से च्युत होंगे। गरीब और अमीर के बीच अन्तर और अधिक बढ़ेगा। लोगों में परस्पर नीरसता अर्थात् **प्रेम-भावना की कमी तथा उग्रता, आवेश की भावनाएं अधिक रहेंगी।**

नववर्ष-प्रवेश एवं जगत्-लग्न कुण्डली अनुसार भविष्यफल

'राक्षस' नामक संवत्सर में विक्रमी संवत् 2078 का प्रवेश चैत्र अमावस्या की समाप्ति 12 अप्रैल, 2021 ई. की प्रात: 8 घं.-01 मिं. पर रेवती नक्षत्रकालीन स्थिर लग्न **'वृष'** में हुआ है। वर्ष-लग्नेश शुक्र व्यय-भाव (गुप्तशत्रु, षड्यन्त्र, अस्पताल, युद्ध सम्बन्धी

नववर्ष प्रवेश कुण्डली
12 अप्रैल, सन् 2021 ई.
8 घं. 01 मिं. (भा.स्टैं.टा.)

1 शु.
2 मं. रा.
3
4
5
6
7
8 के.
9
10 श.
11 गु.
12 सू.चं. बु.

जगत् लग्न कुण्डली,
13 अप्रैल, सन् 2021 ई.
26 घं. 33 मिं. (भा.स्टैं.टा.)

1 सू. शु.
2 रा.
3 मं.
4
5
6
7
8 के.
9
10 श.
11 गु.
12 चं. बु.
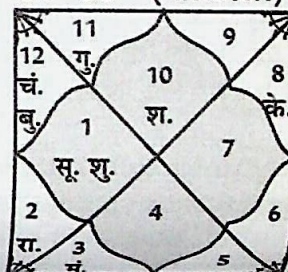
कार्यों का भाव) में शनि द्वारा दृष्ट है। लग्न-भाव (केन्द्रीय नेतृत्व, प्रधानमन्त्री का भाव) में ही '**मंगल-राहु**' (अंगारक-योग) योग बनने से विश्व अथवा एशिया के किसी प्रमुख नेता की पदच्युति, संहार सम्भव है। **किसी प्रमुख नेता द्वारा विस्तारवादी नीति के अन्तर्गत लिए गए गैरजिम्मेदाराना निर्णय से विश्व-शान्ति के लिए गम्भीर संकट उत्पन्न होने की सम्भावनाएं बन रही हैं।** भारत की प्रभावराशि भाग्य स्थान में आने तथा 14 सितं. से 20 नवं. तक '**गुरु-शनि**' योग होने से **पेचीदा रोगों, युद्ध, दुर्भिक्ष (अकाल) आदि से जन समाज का विनाश तथा अनाज आदि भोग्य पदार्थों की कमी अनुभव होगी।**

एकनक्षत्रगा ह्येते तदा भयविवर्द्धनः, यदा जीवयुतो मन्दो जीवाद्वा सप्तमे स्थितः। तदा प्रजा विनश्यन्ति भूपाश्चान्नपरिक्षयाः।।

परन्तु विश्व-राजनीति एवं तनावपूर्ण परिस्थितियों में भारत के धैर्य एवं संयम की प्रशंसा की जाएगी। सप्तम भाव (जोकि कश्मीर, तिब्बत, अमरीका, जापान, ऑस्ट्रेलिया, गुजरात जैसे क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करता है) में केतु की स्थिति इस ओर संकेत कर रही है कि ये क्षेत्र वैश्विक उथल-पुथल एवं युद्ध के कारणभूत अथवा ध्रुवीकरण करते रहेंगे। अतः भारत को विशेष रूप से सजग एवं सावधान हो जाना चाहिए। चीन, पाकिस्तान आदि कुटिल देशों की स्वार्थपूर्ण विस्तारवादी कूटनीतियों एवं युद्धोन्माद कार्यवाहियों के कारण विश्व के बहुत से देश चीन के प्रभावक्षेत्र (हांगकांग, ताईवान, तिब्बत, पूर्वी, तुर्किस्तान आदि) से मुक्त होने के प्रयास में रहेंगे।

❑ जगत् लग्न एवं विश्व घटनाक्रम ❑

13 अप्रैल, मंगलवार, 2021 ई. की अर्ध रात्रि बाद 26घं.-33मिं. पर मकर लग्न में जगत् लग्न का प्रवेश होगा। ध्यान रहे ! मकर लग्न राशि भारत की प्रभाव राशि भी है। फलतः वैश्विक परिदृश्य में भारत की प्रतिष्ठा एवं प्रभाव में वृद्धि होगी। एकादश-भाव (अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों, व्यापार, आयात-निर्यात से लाभ आदि का भाव) में केतु की स्थिति रहने से कोविड-19 के उत्थान-देश चीन एवं चीनी उत्पादों व चीनी कम्पनियों के विरुद्ध एक गम्भीर '**आर्थिक-युद्ध**' शुरु हो जाएगा। चीन के विरुद्ध कड़े आर्थिक प्रतिबन्ध लगाकर उसे भारी आर्थिक चोट पहुँचाई जाएगी। **फलतः वैश्विक-अर्थव्यवस्था में भारी उथल-पुथल होगी तथा सम्पूर्ण विश्व वाणिज्य (आदान-प्रदान) की कमी से घोर आर्थिक मन्दी के शिकंजे में आ जाएगा।**

लग्न पर मंगल की उच्च दृष्टि विश्व में भयानक उग्र उथल-पुथल का संकेत कर रही है। (मंगल जोकि लाल चीन, माओवादी संगठनों, युद्ध, अग्निकाण्ड, विस्फोट का प्रतीकात्मक एवं प्रतिनिधित्व करता है।) जिस कारण विश्व के अनेक देशों का विशेषकर दक्षिण एशियाई कुछ राष्ट्रों जैसे-पाकिस्तान, नेपाल, हांगकांग, ताईवान, बर्मा, भारत आदि में राजनीतिक एवं सामाजिक वातावरण विक्षुब्ध, अशान्त एवं तनावपूर्ण रहेगा। परन्तु मंगल पर यद्यपि गुरु की शुभ दृष्टि पड़ने से अमरीका सहित विश्व के प्रमुख देश विश्व-शान्ति हेतु प्रयत्नशील भी रहेंगे, परन्तु उन सबके प्रयत्न मात्र छलावा सिद्ध होंगे। आन्तरिक तौर पर लगभग सभी प्रमुख देश जैसे-चीन, अमरीका, रूस, उत्तरी-कोरिया, भारत, ईरान, पाकिस्तान आदि देश अपनी परमाणु एवं ऊर्जा शक्ति की आढ़ में अत्यधुनिक संहारक हथियारों के संग्रह में संलिप्त रहेंगे। विश्व राजनीति में कुछ नए देशों के मध्य समीकरण बनेंगे।

पुनः ध्यान दें ! जगत् लग्न में भारत की प्रभावराशि मकर पर मंगल की उच्च दृष्टि पड़ रही है, जिससे **विश्व-राजनीति एवं मंच पर भारत की प्रतिष्ठा एवं वर्चस्व में वृद्धि होगी।** इसके विपरीत चीन की प्रभावराशि मेष पर शनि की गुप्त शत्रु नीचदृष्टि है तथा मंगल षष्ठस्थ पर गुरु की दृष्टि है। फलस्वरूप चीन की वर्तमान जिन-पिंग सरकार के लिए आगामी वर्ष अत्यन्त संकटमय एवं चुनौतियों से भरा होगा। विश्व के सभी प्रमुख देशों द्वारा चीन के विरुद्ध एक नई रणनीति अपनाई जाएगी। चीन के विरुद्ध आर्थिक प्रतिबन्ध लगाकर उसे अलग-थलग कर उसे रक्षात्मक बनने पर मजबूर कर दिया जाएगा। एकादश भावस्थ केतु पर शनि की विशेष दृष्टि वर्षभर रहने से भी **वैश्विक राजनीतिक एवं आर्थिक वास्तविकताएं तेजी से बदलेंगी।**

सन् 2021 ई. में गोचर ग्रहस्थिति और विश्व के हालात

यूरोपीय देशों की कुण्डली
1 जन., 2021 ई.
मध्यरात्रि 00घं. 00मिं.

वर्षारम्भ से ही यूरोपीय देशों की कुण्डली में '**कालसर्प योग**' तथा मंगलग्रह जोकि चीन की कम्युनिस्ट एवं माओवादी संगठन का प्रतिनिधि ग्रह है-अष्टम भाव में स्वराशिगत होकर बली अवस्था में है। फलतः यूरोपीय देशों (विशेषकर ब्रिटेन, इटली, जर्मनी) द्वारा अमरीका के साथ संगठन कर चीन की आक्रमक एवं निरंकुशतापूर्ण नीतियों को नियंत्रित करने हेतु वैश्विन दायित्व का निर्वहन किया जाएगा। **विश्व एक नए शीतयुद्ध के मुहाने पर खड़ा रहेगा। वास्तव में यह युद्ध फौजी स्तर पर केवल भयाक्रान्त कर आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक स्तर पर लड़ा जाएगा।** मंगल ग्रह का अष्टम भाव में आना तथा उसकी शुक्र-केतु पर अष्टम दृष्टि इस बात का संकेत कर रहा है कि चीन कोविड-19 पर विश्व के साथ तनाव के स्तर को लम्बे समय तक कायम/बनाए रखकर वह राजनीतिक व आर्थिक सौदेबाजी करना चाहेगा।

31 दिसम्बर, 2020 ई. से 28 जनवरी, 2021 ई. के मध्य चान्द्र पौष मास में पाँच गुरुवार आने तथा 17 जन. से गुरु अस्त हो जाने से पश्चिमी व मुस्लिम देशों जैसे-इज़रायल-फिलीस्तीन, ईरान, सूडान, तर्की, फ्रांस आदि देशों में राजनीतिक व आतंकवादी टकराव तथा युद्धजन्य परिस्थितियां बनेंगी। **आर्थिक मन्दी तथा बेरोज़गारी के कारण एक गम्भीर आर्थिक संकट समक्ष खड़ा दिखाई देगा।**

'यत्रमासे पञ्चवाराः जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमदेशे खड्गयुद्धं च जायते।।'

चान्द्र माघ मास (29 जनवरी से 27 फरवरी, 2021 ई. तक) में **पाँच शुक्रवार** तथा **पाँच शनिवार** रहने तथा 4 फर. से 12 फर. तक **पंचग्रही योग** (सू., बु., गु., शु. श.) तथा

'कालसर्प योग' का प्रभाव भी रहने से विश्व में किन्हीं देशों के मध्य युद्धजन्य परिस्थितियां बनेंगी। किसी देश द्वारा आकस्मिक लघु फौजी कार्यवाही करने से विश्व भयानक युद्ध के मुहाने पर खड़ा होगा। कहीं भयंकर प्राकृतिक प्रकोपों से व्यापक जन-धन हानि का भय रहे। किसी मुस्लिम अथवा एशिया के ही देश में क्रान्ति, विरोध प्रदर्शन या छत्रभंग होगा।

चान्द्र फाल्गुन (28 फरवरी से 28 मार्च, 2021 ई. के मध्य) मास में पाँच रविवार होने, शुक्र अस्त रहने से जनोपयोगी आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में वैश्विक स्तर (सम्पूर्ण विश्व में) पर तेजी होगी। पूर्वोत्तर दिशा में कहीं राज्यभंग व अग्निकाण्ड, युद्धादि का भय हो।

दुर्भिक्षं छत्रभङ्गं स्यात् दास्ते च महद्भयम्।।'

31 मार्च तक **'कालसर्प योग'**, 21 फर. से 13 अप्रै. तक **'मंगल-राहु'** योग, 5 अप्रैल तक **'गुरु-शनि'** योग रहने से **वैश्विक राजनीतिक वातावरण आन्दोलित एवं उद्वेलित होता रहेगा।** कहीं यान दुर्घटना, प्राकृतिक प्रकोप में भारी विनाश के साथ ही कहीं वरिष्ठ व्यक्तियों की मृत्यु से शोक व्याप्त हो।

नवम भाव में राहु की उच्चस्थिति एवं उस पर गुरु की शत्रुदृष्टि मुस्लिम एवं अमेरिका समर्थित यूरोपीय देशों को ध्रुवीकरण के लिए प्रेरित करेगी। अष्टमस्थ मेष राशि में स्थित-मंगल से प्रभावित **'चीन'** क्रुद्ध राष्ट्र के रूप में नज़र आएगा।

पुन: 23 मई से 10 अक्तू. तक मकर राशिगत शनि वक्री रहने, तदुपरान्त 20 जून से 17 अक्तू., 2021 ई. तक गुरु वक्री रहने से अमेरिका, ब्रिटेन, चीन, ईरान, उत्तरी-कोरिया आदि कुछ अन्य देशों में स्थिति बिगड़ेगी। यहाँ के प्रधाननेता को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। जिसके परिणाम विश्वस्तर पर प्रभावी एवं चिन्ताजनक होंगे, जिससे एशिया की शान्ति-प्रक्रिया पर विपरीत (बुरा) प्रभाव पड़ेगा।

जगत् लग्न कुं. में उच्चस्थ सूर्य पर शनि की विशेष गोचरस्थ गुप्त चतुर्थ नीच दृष्टि रहने से इस वर्ष कुछ देश संयुक्तराष्ट्र की कार्यशैली एवं संयुक्तराष्ट्र की असन्तुलित शक्तिमता पर प्रश्नचिन्ह लगाएंगे। जिससे कुछ अनिवार्य संशोधन, संवर्धन, परिवर्धन की आवश्यकता पर बल दिया जाएगा। कुछ देश फिर भी असहमत ही रहेंगे। विश्व में नए संगठन (देशों के ग्रुप) अस्तित्व में आएंगे तथा कई पुराने प्रतिष्ठित संगठनों का स्वत: विघटन हो जाएगा।

13 अप्रैल से 1 जून तक **'मंगल-शनि'** के मध्य **षडाष्टक योग,** 28 मई से 21 जून मध्य **'गुरु-शुक्र'** के मध्ये नवपंचम योग, 16 जुला. से 15 अगस्त के मध्य **'सूर्य-शनि'** मध्य 17 जुला. से 10 अग. तक **'गुरु-शुक्र'** मध्य **समसप्तक योगों** के प्रभावस्वरूप अनेक बार विश्व-शान्ति का सन्तुलन आन्दोलित होता लक्षित होगा, इस ग्रहस्थिति से कुछ राष्ट्रों में कहीं भारी अशान्ति बनेगी। **प्रधान-नेता के खिलाफ जनान्दोलन से सत्ता-हस्तान्तरण भी संभव है।** किसी मुस्लिम राष्ट्र अथवा पूर्वी एशिया के देश में जनता एवं शासकवर्ग में टकराव की स्थिति से आन्तरिक हालात खराब तथा राजनीतिक हत्याकाण्ड होंगे। **अचानक सत्तापरिवर्तन होने के भी योग हैं।**

विभिन्न देशों के मध्य शान्ति स्थापनार्थ विशेष वार्ताएं होंगी, परन्तु चीन की विस्तारवादी नेष्ट गतिविधियों से वातावरण फिर क्षुब्ध हो सकता है। वर्ष के अन्त तक भारत, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन आदि कुछ शान्तिप्रिय राष्ट्र सामूहिक संगठन द्वारा उग्रवाद तथा चीन की कुटिल गतिविधियाँ के दलन के लिए विशेष योजनाएं बनाएंगे। शान्ति वार्ताएं होंगी।

परन्तु 14 दिसम्बर, 2021 ई. से संवतान्त (1 अप्रैल, 2022 ई. तक) पुन: **'कालसर्प योग'** रहने तथा 5 दिसं. से 9 दिसं., 2021 ई. तक **चतुर्ग्रही योग** रहने से चीन, उ. कोरिया, पाक, सीरिया आदि कुछ मुस्लिम राष्ट्र गुप्त रूप से आतंकवाद को प्रोत्साहन देकर सीमा प्रान्तों पर शान्ति भंग करेंगे। फलस्वरूप सीमाओं पर खूनी-संघर्ष, संघर्षविराम का उल्लंघण आदि घटनाओं से साधारण व्यक्ति व्यथित एवं उद्वेलित होता रहेगा।

विश्व के कुछ प्रसिद्ध देश

अमेरिका (America)–इसकी प्रभावराशि मिथुन है। जगत् लग्न कुण्डली में मिथुन राशि षष्ठ स्थान (जनस्वास्थ्य, शत्रु-सेना, रोग का भाव) में स्थित तथा मंगल द्वारा अधीष्ठित है। मिथुन राशि पर लगभग सारा वर्ष गुरु की शत्रु दृष्टि रहेगी। फलत: ईरान, चीन, पाकिस्तान, सीरिया, यमन आदि देशों के सम्बन्ध में अपनी विदेश नीति का पुनरावलोकन करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा तथा विशेष बदलाव दृष्टिगत होंगे। कोविड-19 को निपटने में असफल रहने तथा अश्वेत आन्दोलन के कारण ट्रम्प सरकार की प्रतिष्ठा को भारी ठेस पहुँचेगी एवं असमंजस की स्थिति बनेगी। चीन के अक्खड़ रवैये को देखते हुए उसकी दुखती रगों को पहचानने (अर्थात् तिब्बत, दक्षिणी मंगोलिया, हाँकांग तथा ताईवान के पक्ष में बोलने का साहस) और दबाकर उसे रक्षात्मक बनने पर मज़बूर करेगा। चीन के विरुद्ध कड़े आर्थिक प्रतिबन्ध लगाकर उसे भारी आर्थिक चोट पहुँचाई जाएगी। विश्व में अपना प्रभुत्व-प्रसार स्थायी रखने एवं बढ़ाने के लिए चीन पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रतिबन्ध लगाकर एक प्रकार से **आर्थिक-युद्ध शुरु कर चीन की अन्तर्राष्ट्रीय छवि को धूलधूसरित करने का प्रयास करेगा।** अमेरिका में आगामी होने वाले चुनावों में ट्रम्प सरकार का अग्निपरीक्षा का समय होगा तथा यथेष्ठ सफलता संदिग्ध ही रहेगी।

पाकिस्तान (Pakistan)–जगत् लग्न कुण्डली में इस देश की प्रभावराशि कन्या की स्थिति नवम भाव (योजना-भाव) में है। राशिस्वामी बुध तृतीय भाव में नीचराशिगत होकर शत्रुग्रह चन्द्र के साथ स्थित है। फलत: पाक अपने चिरपरिचित स्वभाव अनुसार भारत के विरुद्ध कुटिल चालों तथा सीमा पार से उकसाने वाली हरकतों द्वारा आतंकवाद को पोषण देता रहेगा। पाकिस्तान एक ऐसा देश बन जाएगा जो पूरी तरह से खुद के विरुद्ध ही युद्धरत रहेगा। चीन की एक बस्ती के रूप में कार्य करेगा। चीन के उकसाने पर आज्ञाकारी बालक की तरह पाकिस्तान के शासक भारत विरोधी गतिविधियों में संलिप्त रहेंगे। चीन की **'ऋण कूटनीति'** में फंसकर अपनी अनेक भौतिक व भू-सम्पदा को भुगतान के रूप में चीन के हाथों में सौंप देगा जिसका भारतीय रक्षा तथा वाणिज्य हितों पर विपरीत असर पड़ेगा। अल्पसंख्यक वर्ग पर दमनकारी नीतियों के कारण विश्व में निन्दा का पात्र बनना पड़ेगा। चीन के साथ मिलकर गहन साजिश के अन्तर्गत पाकिस्तान की फौजें भारतीय सीमाओं पर विस्फोट एवं अतिक्रमण करने की ताक में रहेंगी। भारतीय चौकियों पर घातक हमलों के

नष्ट गतिविधियों से वातावरण फिर क्षुब्ध हो सकता है। वर्ष के अन्त तक भारत, अमेरिका, कारण भारत के साथ राजनैतिक एवं सभी प्रकार के सम्बन्ध तनावपूर्ण एवं अविश्वासपूर्ण ही रहेंगे। भारत विशेषकर काश्मीर की शान्ति अस्थिर करने की अपनी रीति-नीति का परित्याग नहीं करेगा। यद्यपि स्वयं पाक के भीतर ही सामाजिक ताना-बाना तथा राजनैतिक माहौल छिन्न-भिन्न हो जाएगा। स्वयं पाकिस्तान के अनेक मुख्य शहरों में विस्फोटों के कारण जानो-माल की भारी हानि होगी। संक्षेप में, पाक के अन्दरुनी एवं राजनीतिक हालात अस्थिर, विषम, अनिश्चित एवं अशान्त बनें रहेंगे।

वि. सम्वत् 2078 में गोचर ग्रहस्थिति और भारत का भविष्यफल

जन्मकुंडली स्वतंत्र भारत
14/15 अगस्त, 1947 ई.
(23घं.-59मिं.) भा. स्टैं. टा.
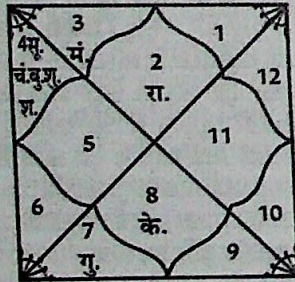
कुंडली गणतंत्र दिवस
26 जनवरी, 1950 ई.
10घं.-19मिं. (भा. स्टैं. टा.)
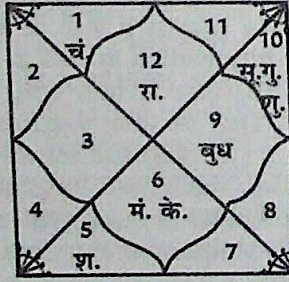
कुं. स्वतंत्र भारत (74वाँ वर्ष)
14 अगस्त, 2020 ई., शुक्रवार
(17घं.-08मिं.) (दिल्ली)

लग्न-8-26°-33′-55″
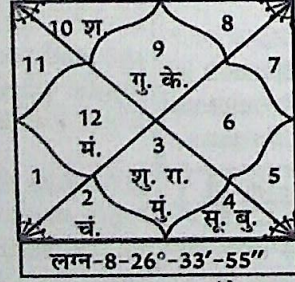
कुं. स्वतंत्र भारत, 75वाँ वर्ष
14 अगस्त, 2021 ई. शनिवार
(23घं.-17मिं.) (दिल्ली)

लग्न-0-25°-41′-30″
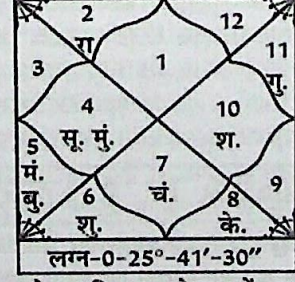
कुं. गणतन्त्र दिवस, 72वाँ वर्ष
26 जनवरी, 2021 ई., मंगलवार
(15घं.-10मिं.), (दिल्ली)

लग्न-2-07°-25′-55″
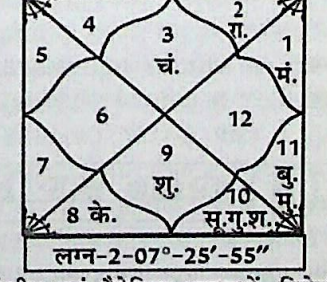
स्वतन्त्र भारत के 74वें वर्ष की कुण्डली (15 अगस्त, 2021 ई.) में धनु लग्न उदित हुआ है। वर्ष लग्नेश गुरु लग्न भाव में ही स्वराशिगत परन्तु केतु आक्रान्त है। **'गुरु-शुक्र'** तथा **'सूर्य-शनि'** मध्य समसप्तक योग आगामी वर्ष भारतवर्ष के लिए बड़ी **पेचीदा चुनौतीपूर्ण एवं परीक्षापूर्ण परिस्थितियां लेकर आएगा।** यद्यपि कोरोना महामारी के मध्य सरकार द्वारा प्रदत्त आर्थिक प्रोत्साहन पैकेज महामारी की गिरफ्त में फंसी देश की अर्थव्यवस्था को बाहर निकालने में मददगार साबित होगा। आर्थिक पैकेज के मुख्य उद्देश्यों जैसे-(i) आर्थिक ग्रोथ इन्जन को पटरी पर लाना, (ii) छोटे कारोबारों को पुनः शुरुआत करने के अवसर देना तथा (iii) बेरोज़गार लोगों को सीधे नकद एवं खाद्य सहायता आदि द्वारा प्रयास किए जाएंगे।

परन्तु द्वितीय एवं अष्टम भाव में सूर्य-शनि मध्य समसप्तक योग (आर्थिक स्थिति मुद्रास्फीति तथा आकस्मिक युद्धभाव) एवं च लग्न व सप्तभाव (केन्द्रीय नेतृत्व एवं वैदेशिक सम्बन्धों का भाव) में गुरु-शुक्र मध्य समसप्तक योग बनने से देश में एक गम्भीर आर्थिक-संकट दृष्टिगोचर भी होगा। सरकार द्वारा उठाए गए प्रयास नाकाफी सिद्ध होंगे। कोरोना महामारी के कारण पहले से ही झकझोर कर रखी हुई अर्थव्यवस्था को सीमा का तनाव और अधिक धूलधूसरित कर देगा। भारत-चीन तनाव एक नए विवादास्पद युग की शुरुआत कर देगा। लग्नस्थ बृहस्पति के कारण **एशिया में चीन की दादागिरी से त्रस्त देश भारत की छत्रछाया में आ जाएंगे। वस्तुतः चीन के साथ युद्ध सीमाओं पर न लड़कर आर्थिक क्षेत्र पर लड़ा जाएगा।**

मुंथेश तथा सप्तमेश (विकास योजनाओं, अन्तर्राष्ट्रीय एवं वैदेशिक सम्बन्धों, विदेशी व्यापार का भाव) बुध अष्टम भाव में शत्रुराशिगत एवं अस्तगत है। फलतः भारत के अपने पड़ोसियों देशों-पाकिस्तान, चीन, नेपाल, बंग्लादेश से तनावपूर्ण एवं उद्वेगपूर्ण सम्बन्ध रहेंगे। जैसा कि विदित है नेपाल द्वारा कुछ भारतीय क्षेत्रों को अपनी सीमाओं में दिखाकर भूगोल नए सिरे से लिखने का प्रयास किया गया है। अतः अगस्त, 2020 ई. के बाद नेपाल के साथ सदियों पुराने घनिष्ठ सम्बन्धों के चलते परस्पर मिलने वाली विशेष सुविधाएं तक बन्द हो जाएंगी। लगभग सभी पड़ोसी देश घातक एवं विस्तारवादी इच्छित चीन की गोद में बैठकर अपने स्वामी के निर्देश-अनुसार आचरण करेंगे।

द्वितीय भाव में स्वराशिगत शनि बली है, परन्तु सूर्य के साथ समसप्तक योग के अतिरिक्त इसकी माओवादी एवं कम्युनिस्ट पार्टी का प्रतिनिधि ग्रह **'मंगल'** पर शत्रु तृतीय दृष्टि भी है। जिस कारण भारत की सशक्त होती राजनीतिक इच्छाशक्ति, सैन्यशक्ति और सीमा पर मज़बूत होते इन्फ्रास्ट्रक्चर के चलते चीन के लिए सैन्य दबाव उत्पन्न होने लगेगा। भारत भी व्यापक और बहुकोणीय रणनीति अपनाएगा। भारत के नए रुख के लिए विवेक, परिपक्वता और संयम की आवश्यकता होगी ताकि भारत-चीन सम्बन्ध भारत के नियन्त्रण में रहे। मंगल अर्थात् चीन के विरुद्ध एक नई रणनीति अपनाई जाएगी। भारत द्वारा गलवान आदि एक-चार कि.मी. की अर्थहीन बहस में उलझने के बजाय पूरे विवाद को एक नया आयाम दे दिया जाएगा। अर्थात् तिब्बत में चीन की अवैध उपस्थिति को ही चुनौती देते हुए उसे मुक्त करने की माँग करेगा। **तिब्बती लोगों को विशेषाधिकार देते हुए चीनी सरकार**

को एक अहिंसक ब्रह्मास्त्र द्वारा बौरा (हतप्रभ) देगा।

20 नवम्बर, 2021 ई. गुरु द्वारा पुनः मकर राशि में आकर शनि के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाना तथा आगे दिसम्बर में चतुर्ग्रही योग के कारण भारत में ही नहीं विश्वभर में **चीनी उत्पादों तथा चीनी कम्पनियों के विरुद्ध एक गम्भीर आर्थिक युद्ध शुरु हो जाएगा।** आत्मनिर्भर एवं गरीब कल्याण योजना को वास्तव में ज़मीन पर उतारने का काम और तेज़ किया जाएगा। द्वितीयेश शनि द्वितीयभाव में ही स्वराशिगत होने से कोरोना महामारी के बावजूद मजबूत अर्थव्यवस्था रहेगी, परन्तु समसप्तक योगों के कारण आगामी वर्ष देश के प्रधाननेता के लिए असमंजसपूर्ण एवं विवशतापूर्ण परिस्थितियों वाला रहेगा। भ्रष्टाचार एवं महँगाई जैसे ज्वलन्त मुद्दे अभी भी साधारण जन को उद्वेलित एवं आन्दोलित करते रहेंगे। राजनीति में नेताओं के साम्प्रदायिक, बचकाने और अमर्यादित ब्यानों पर वाद-विवाद एवं टकराव के हालात बढ़ेंगे।

72वें गणतन्त्र दिवस (26 जनवरी, 2021 ई.) की कुण्डली में मिथुन लग्न उदित हुआ है। वर्ष-लग्नेश बुध भाग्य भाव (विकास, योजनाओं, दूरसंचार विभाग का भाव) में मुंथा युक्त है। फलस्वरूप चरमराते हुए स्वास्थ्य ढाँचे को पुनर्गठित करने हेतु कोरोना की जाँच और उपचार की एक सुनिश्चित, सर्वमान्य और सुगम व्यवस्था बनाकर उसके प्रति उपजे भय को कम करने का प्रयास किया जाएगा। समर्पण और अनुशासन से भारत को आत्मनिर्भर अभियान को गति देने तथा चीन का मुकाबला करने में सहायक होगा। परन्तु मुंथेश शनि अष्टम भाव में सूर्य के साथ अस्तगत है तथा गणतन्त्र दिवस कुं. में कालसर्प योग का भी प्रभाव रहेगा।

फलतः भारत की पूर्वी व पश्चिमी सीमाओं पर पाकिस्तानी एवं चीनी सेनाओं की **'टू-फ्रंट युद्ध-प्लान'** के अन्तर्गत आक्रामक गतिविधियाँ भारतीय प्रभुसत्ता एवं अस्मिता के लिए गम्भीर चुनौतियाँ बनकर उभरेंगी। भारत की सीमाओं पर संघर्ष-विराम का उल्लंघन एवं चीन-पाक की शत्रुसेना द्वारा गोलाबारी का क्रम जारी रहेगा।

गणतन्त्र कुं. में द्वितीयेश (राष्ट्र की आर्थिक स्थिति का भाव) चन्द्रमा लग्न भाव में शत्रुराशिगत होने से देश की आर्थिक स्थिति चिन्तनीय रहेगी। **कुछ दोषपूर्ण आर्थिक नीतियों के कारण अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार में डालर के मुकाबले रुपये का अवमूल्यन और अधिक बढ़ेगा।** दैनिक उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में ज़बरदस्त तेजी हो जाने से सामान्य लोगों का जीवन दूभर हो जाएगा। शुक्र केन्द्रस्थ शत्रुराशिगत होने से बढ़ती आबादी का राक्षस अच्छी योजनाओं का अच्छा परिणाम निगल जाएगा। जनसंख्या नियन्त्रण हेतु नया कानून अस्तित्व में आएगा। सर्वप्रकार के खाद्यान्न, दालें, चावल, पैट्रोल, डीज़ल, रसोई-गैस, बिजलीदर, दवाईयाँ, दूध, दही, खाद्य-तैल आदि उपभोग्य वस्तुओं के दाम सामान्य लोगों की पहुँच से दूर होते जाएंगे।

'मंगल' ग्रह जिसे नवसंवत्सर (वि. संवत् 2078) का राजा तथा मन्त्री का अधिकार भी प्राप्त है, यद्यपि एकादश भाव में स्वराशिगत है, परन्तु सूर्य-शनि आदि ग्रहों की गुप्त शत्रुदृष्टि द्वारा आक्रान्त है। फलतः भारतवर्ष को गणतन्त्र दिवस के बाद (26-01-2021 ई.) तथा नवसंवत्सर के प्रारम्भ में (13 अप्रैल, 2021 ई.) गम्भीर पेचीदा आर्थिक, राजनीतिक, सरहदी एवं कूटनीतिक परिस्थितियों का सामना रहेगा। सीमाओं पर चीन, पाकिस्तान एवं आतंकी शत्रुओं का भय, प्राकृतिक आपदाओं जैसे-अतिवर्षा, बाढ़, भूस्खलन, जन-धन, कृषि आदि सम्पदा की क्षति, आर्थिक मन्दी (संकट), रुपये का अवमूल्यन, गगनचुम्बी महँगाई होने से लोगों में सरकार के प्रति विश्वसनीयता घटेगी।

सम्वत्सर मध्ये राजा और मन्त्री के दोनों पदाधिकार एक ही ग्रह **'मंगल'** को प्राप्त होने के कारण समाज एवं लोगों में क्लिष्ट रोग, पीड़ा, उपद्रव व हिंसा की घटनाएं अधिक होती है। **राजनेताओं के मध्य ब्यानबाजी के कारण परस्पर अविश्वास एवं टकराव पैदा होंगे। सामान्य जनता तथा प्रशासक वर्ग के मध्य भी तनाव व टकराव के हालात रहेंगे।**

स्वतन्त्र भारत के 75वें वर्ष की कुण्डली में 14 अगस्त, 2021 ई. को मेष लग्न उदित होगा। इस वर्षकुण्डली में वर्ष-लग्नेश मंगल पंचमभाव (विकास योजनाओं का, सट्टा-व्यापार का भाव) में बुध युक्त तथा गुरु द्वारा दृष्ट है। फलतः कई वृद्ध हो चुकी विकास योजनाओं को नवजीवन प्रदान किया जाएगा। गरीब कल्याण व ग्रामीण विकास आदि योजनाओं को नया आधार दिया जाएगा। मुंथेश चंद्रमा शत्रुराशिगत सप्तमभाव में तथा पंचमेश सूर्य चतुर्थ भावस्थ (सर्वसाधारण की प्रसन्नता) का भाव, होकर शनि के साथ समसप्तक योग बना रहा है। **फलतः आगामी वर्ष प्रधानमन्त्री (प्रधाननेता) के लिए असमंजसपूर्ण एवं विवशतापूर्ण परिस्थितियों वाला रहेगा।** बेरोज़गारी तथा महँगाई के मुद्दे ज्वलन्त मुद्दे बनकर साधारण जन के मन को उद्वेलित एवं आन्दोलित करते रहेंगे। परन्तु अनेक अवरोधों के बावजूद केन्द्रीय वर्तमान सत्तारूढ़ सरकार नए भारतवर्ष में चीन विरोधी एक नए आर्थिक नवजागरण का निर्माण करने में काफी हद तक सफल रहेगी तथा **एक नए तेवर वाली विदेश एवं कूटनीति देखने को मिलेगी।**

सन् 2021 ई. में ग्रहगोचर और भारतवर्ष

वर्षारम्भ पौष मास (31 दिसम्बर, 2020 ई. से 28 जनवरी, 2021 ई. तक) में पाँच बृहस्पतिवार आने तथा बृहस्पतिवार की ही माघ संक्रान्ति होने, 14 जनवरी से 25 जनवरी तक मकर राशि में चतुर्ग्रही योग तथा गोचर में अभी **'कालसर्प योग'** का प्रभाव भी रहेगा-

'चत्वारः पञ्चषा खेटा बलिनस्त्वेकराशिगाः।
राज्ञां बहुभयं दद्युः अरिभिः दुखदा मताः।।'

सत्तारूढ़ राजाओं (नेताओं) को शत्रुओं द्वारा नाना प्रकार के क्लेशों (संकटों) का सामना करना पड़ेगा। विश्व एवं भारत की राजनीति में विशेष उथल-पुथल होगी। केन्द्रीय अथवा किसी राज्य के मन्त्रीमण्डल में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन होने के संकेत हैं। चूंकि भारत की प्रभाव लग्नराशि पर ही **चतुर्ग्रही योग** बना रहेगा, इसलिए कुछ राज्यों में छत्रभंग (शासन-परिवर्तन), चीन-पाक आदि विरोधी देशों के साथ युद्धजन्य हालात तथा ओलावृष्टि/प्राकृतिक प्रकोपों से खड़ी अथवा तैयार फसलों विशेषकर ईख, धान्य की फसलों को नुकसान पहुँचे।

माघ मास (29 जनवरी से 27 फरवरी, 2021 ई. के मध्य) में पाँच शुक्रवार एवं पाँच

शनिवार पड़ने, 4 फरवरी से 12 फरवरी, 2021 ई. तक मकर राशि (भारत की प्रभावराशि) में ही **'पंचग्रही योग'** तथा 20 फर. तक **'चतुर्ग्रही-योग'** रहेगा–

'एकराशौ यदा यान्ति चत्वारः पञ्चखेचराः।
प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा।।

'पंचग्रही योग' के प्रभावस्वरूप राजनेताओं अर्थात् राष्ट्राध्यक्षों को आन्तरिक एवं बाह्य शत्रुओं से भय हो। विभिन्न प्रकार के शत्रुओं का भय हो। गेहूँ, धान्य, घी, तेल व अन्य उपभोग्य वस्तुओं की कीमतों में आशातीत वृद्धि से सामान्य लोग परेशान व असन्तुष्ट होंगे। सीमाओं पर सैनिक जमाव, सैन्य-टकराव एवं युद्ध का वातावरण बनेगा। पड़ोसी देशों के साथ पारस्परिक राजनीतिक सम्बन्ध और अधिक बिगड़ेंगे। विस्फोट एवं सैन्य हस्तक्षेप के कारण जन-धन एवं सम्पत्ति की हानि होगी।

22 फरवरी से 'मंगल-राहु' योग के प्रभावस्वरूप किसी राज्य के प्रधाननेता की पदच्युति या आकस्मिक निधन होगा। उपयोगी वर्षा की कमी अर्थात् बेमौसमी वर्षा, बर्फबारी, तेज आँधी या तूफान से खड़ी फसलों को हानि होगी–

'राहुरंगारकश्च राशिः ऋक्षगतौ तदा। भयाभयं सस्यानां न च वृष्टि–प्रजायते।।'

फाल्गुन मास (28 फरवरी से 28 मार्च, 2021 ई. तक) में पाँच रविवार होने से भारत के कुछ राज्यों में राजनैतिक अस्थिरता एवं गतिरोध होने के संकेत हैं। लोगों में भय एवं विक्षोभ रहे। घी, खाद्य-तेल, दालें, चौपाय, पशुचारा तेज भाव होंगे। कहीं उपद्रव, अग्निकाण्ड व हिंसा से जन-धन हानि के संकेत भी हैं। इस अवधि में **मंगल-राहु** व **गुरु-शनि** योग तथा **कालसर्प योग** का प्रभाव भी रहने से भारत का राजनीतिक, सामाजिक तथा पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्ध तनावपूर्ण एवं हिंसक रहेंगे।

चैत्र (29 मार्च से 27 अप्रैल) में **पाँच मंगलवारों** का तथा **'मंगल-शनि'** के मध्य षडाष्टक दृष्टि सम्बन्ध होना भी अशुभ माना गया है। जिससे उपद्रव, युद्ध भय एवं साम्प्रदायिक हिंसा बढ़ेगी। महाराष्ट्र, राजस्थान, बंगाल, बिहार में सत्ता-परिवर्तन के प्रबल योग होते हैं–

यत्रमासे महीसूनो जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन–पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्।।

वैशाख मास (28 अप्रै. से 26 मई) में **भौमवती अमावस** का आना तथा **'मंगल-शनि'** मध्य **षडाष्टक दृष्टि** सम्बन्ध उपरोक्त फलों की पुष्टि करता है। ये भी अनिष्ट फलों के सूचक हैं। समाज में महँगाई, बेरोज़गारी, अराजकता, आतक व हिंसक घटनाओं में वृद्धि होगी।

ज्येष्ठ मास (27 मई से 24 जून, 2021 ई. तक) में पाँच बृहस्पतिवार, मंगल-शनि के मध्य समसप्तक तथा **'गुरु-शुक्र'** मध्ये नवपंचम दृष्टि सम्बन्ध रहने से कुछ राज्यों में भीषण अकालजन्य परिस्थितियां बनेंगी। उ.प्र., म.प्र., कश्मीर, बिहार, असम, चीन एवं अन्य कुछ राज्यों में हिंसा, राजनीतिक व चीन टकराव, उपद्रव, साम्प्रदायिक दंगे एवं हिंसक घटनाएं घटित होने के योग हैं–

यदा सौरि भौमे सुरराज मन्त्री, भार्गवश्च यदैक राशौ–समसप्तकेवा।
अयोध्या मध्यदेशे लंकापुरे, पूर्वस्यां च क्षुधाभयं शस्त्रं करोति।।

आषाढ़ मास (25 जून से 24 जुलाई तक) में पाँच शुक्रवार होना देश में सुख समृद्धि एवं उन्नति के द्योतक हैं। पाँच शनिवार भी होने, मंगल-शुक्र का शनि के साथ **समसप्तक योग** भी रहेगा। जनोपयोगी आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में तेजी तथा पूर्वोत्तर दिशा में कहीं राज्यभंग, भीषण अग्निकाण्ड व युद्धादि का भय हो। धातुओं के मूल्यों में ज़बरदस्त तेजी बनेगी।

'शनिवारा यदा पंचपाताले कम्पते फणीः। ईशान देशभंगश्च वह्णिदाहो महर्घता।।'

पुनः 10 जुला. को **शनिवारी अमावस्या,** 16 जुला. से सूर्य-शनि तथा 17 जुला. से 10 अग. तक **'गुरु-शुक्र'** मध्ये **समसप्तक योग** होने से गेहूँ, अनाजादि वस्तुओं में कमी के कारण जनता को दुभिक्षजन्य स्थिति के कारण महान् दुःख तथा भयंकर कष्टप्रद परिस्थितियों का सामना रहे। पिता-पुत्र में पराङ्गमुखता हो अर्थात् बहुत निकट के रिश्तेदारों में प्रेम-भावना की कमी रहेगी। राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में अति स्वार्थपरता के कारण साम्प्रदायिकता, कट्टरवाद का फैलाव तथा चारित्रिक मूल्यों का ह्रास होगा।

श्रावण मास (25 जुला. से 22 अग. के मध्य) में **पाँच रविवार** होने के प्रभावस्वरूप अत्यधिक महँगाई एवं भ्रष्टाचार के कारण सामान्य लोगों में आर्थिक परेशानियां तथा सामाजिक असुरक्षा की भावना रहेगी। कहीं छत्रभंग, राजनैतिक अस्थिरता एवं राजनैतिक गतिरोध पैदा होगा।

5 सितं. से 14 सितं. गुरु-शुक्र के मध्य **नवपंचम योग** रहने से किन्हीं देशों के मध्य युद्धजन्य विस्फोट, देश में कहीं-कहीं विरोध, उपद्रव एवं टकराव रहे।

त्रयोदश दिनात्मक पक्ष–आगे 8 सितं. से 20 सितं., 2021 ई. के मध्य भाद्रपद शुक्ल पक्ष तेरह दिन का होने से कुछ राज्यों जैसे-कश्मीर, असम, उ.प्र., दिल्ली, महाराष्ट्र आदि में हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होंगी। **सीमाप्रान्तों पर शत्रुकृत-गतिविधि से शान्तिभंग हो सकती है।** राजनैतिक पार्टियों के प्रमुख नेताओं में किसी धार्मिक-राजनैतिक विषय को लेकर विवाद तूल पकड़ेंगे। भारत एवं विश्व में कहीं रेल या हवाई दुर्घटना से जन-धन की हानि होगी। चीन-पाक के साथ शान्तिवार्ताओं के बावजूद सम्बन्धों में कड़वड़ाहट रहेगी। देश का राजनैतिक व सामाजिक वातावरण भी अशान्त व उद्वेलित रहेगा–

अनेक युग साहस्रयां दैव योगात्प्रजायते।
त्रयोदश–दिने पक्षः तदा संहरते जगत्।।

आगे **आश्विन मास** (21 सितं. से 20 अक्तू.) में **पाँच मंगलवार** होने, 16 सितं. से गुरु-शनि योग तथा 17 अक्तू. से **सूर्य-शनि** मध्ये दृष्टि सम्बन्ध होने से किसी प्रधाननेता के अपदस्थ या आकस्मिक मृत्यु होने के संकेत हैं। देश के किसी क्षेत्र विशेष में छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), अग्निकाण्ड, उपद्रव, साम्प्रदायिक दंगे, तनाव एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होने के योग हैं।

कार्तिक मास (21 अक्तूबर से 19 नवंबर) में पाँच गुरुवार तथा पाँच शुक्रवार आने, सूर्य-मंगल पर शनि की विशेष शत्रु दृष्टि रहने से राजनीतिक वातावरण बड़ा असमंजसपूर्ण तथा आरोप-प्रत्यारोप भरा रहेगा। ग्रहस्थिति अनुसार नेपाल आदि किसी लघु देश में सत्ता-परिवर्तन की प्रबल सम्भावनाएँ हैं।

उपरोक्त कालावधियों में चीन व पाकिस्तान प्रशिक्षित आतंकवादियों एवं शरारतपूर्ण कुटिल चालों से भारत में घुसपैठ तथा कोई बड़ी वारदात कराने के प्रयास करेंगे। सैन्य टकराव व युद्धभय रहेगा।

मार्गशीर्ष मास (20 नवं. से 19 दिसं.) में पाँच शनि एवं पाँच रविवार होने, 4 दिसं. को शनिवारी अमावस होने से देश में कहीं अति वर्षा तो कहीं वर्षा की कमी के कारण दुर्भिक्ष, अग्निकाण्ड, भूस्खलन एवं अराजकता के कारण अनाज, धान्यादि की कमी तथा सामान्य जीवनोपयोगी वस्तुओं में बेलगाम महँगाई बन जाएगी। सीमावर्त्ती प्रदेशों में घुसपैठ, आतंकी वारदातें तथा युद्ध-भय का वातावरण बने। कहीं विचित्र प्रकार के रोगों की उत्पत्ति व निरीह लोगों की अकालमृत्यु के भी योग हैं। सामान्य मध्यवर्गी प्रजा अत्यन्त दुःखी, परेशान व असहाय अनुभव करेगी।

पौष मास (20 दिसं., 2021 ई. से 17 जन., 2022 ई.) में पाँच सोमवार, **'मंगल-केतु'** योग, कुम्भस्थ गुरु पर मंगल की दृष्टि तथा धनुराशिगत शुक्र वक्री होने से देश की आन्तरिक-धार्मिक-राजनैतिक स्थिति कुछ चिन्ता का कारण बनेगी। देश में समृद्धिप्रद नई योजनाएं बनेंगी। महँगाई यथावत उत्तरोत्तर बढ़ने के बावजूद केन्द्रीय शासनतन्त्र सुविधाएं प्रदान करता रहेगा। वर्षारम्भ में ही 2 जन. को **रविवारी संक्रान्ति** होने से राजनेताओं की गलत एवं त्रुटिपूर्ण नीतियों के कारण लोगों में दुःख, पीड़ा, विक्षोभ एवं व्याकुलता बढ़ें।

माघ मास (18 जन. से 16 फर., 2022 ई. तक) में **पाँच मंगलवार** होने तथा 1 फरवरी को **भौमवती अमावस** आने से देश के सामाजिक एवं राजनैतिक पक्ष के लिए शुभ नहीं रहेगा। देश में कहीं राज्य परिवर्तन व साम्प्रदायिक घटनाओं का भय रहेगा।

'राज्यभ्रंशो राजयुद्धं क्लेशानां च प्रवर्द्धनम्।
उपघातोऽल्पवृष्टिश्च-क्षयश्चार्थस्य भूमिजे।।'

अर्थात् देश में ज़बरदस्त राजनीतिक टकराव या राजनेताओं में परस्पर विग्रह एवं आरोप-प्रत्यारोप हों, कहीं छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन, उपद्रव व हिंसक घटनाएं हों। अल्पवृष्टि एवं प्राकृतिक आपदाओं के कारण आवश्यक वस्तुओं में कमी के कारण मूल्यों में तेजी हो।

आगे 27 फरवरी से 5 मार्च, 2022 ई. तक **चतुर्ग्रही योग** एवं संवतान्त तक **'कालसर्प योग'** का प्रभाव रहने से भारतवर्ष में उपरोक्त अरिष्ट एवं अशान्तिपूर्ण वातावरण अनुभव होगा। सभी दिशाओं में सीमाप्रान्तों की सुरक्षा को सुव्यवस्थित करना होगा।

प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र-मोदी एवं भाजपा गठित एन.डी.ए. सरकार का द्वितीय कार्यकाल

जन्मकुण्डली श्री नरेन्द्र मोदी
17 सितम्बर, 1950 ई., रविवार
11घं.-00मि. A:M, महेसाना (गुज.)

9, 7, 6 सू.बु.के., 10, 8 चं. मं., 11 गु., 5 शु. श., 12 रा., 2, 4, 1, 3

नवगठित एन.डी.ए. सरकार
शपथकालीन कुंडली (II)
30 मई, 2019 ई., 19:03

9 के. श., 7, 8 गु., 10, 6, 11, 5, 2 सू. बु., 12 चं., 4, 1 श., 3 मं. रा.

स्थापना कुण्डली
भाजपा पार्टी
6-04-1980, 11:40 A:M

4, 2 शु., 5 श मं.गु. रा., 1, 3, 6, 12 सू., 11 बु. के., 9, 7, 8 चं., 10
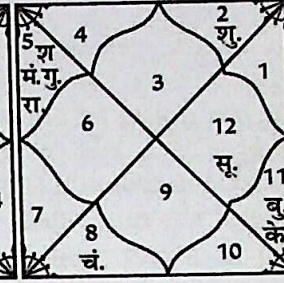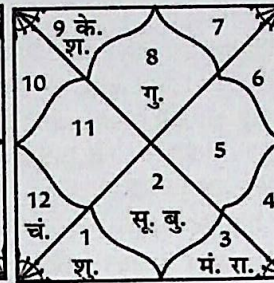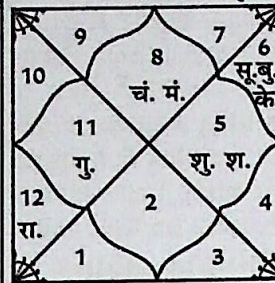
[**प्रधानमन्त्री** एवं **लौहपुरुष श्रीनरेन्द्र मोदी जी की** जन्मकुण्डली की विस्तृत विवेचना एवं विश्लेषण हम गतवर्षीय पंचांगों (वि. संवत् 2071, 2072, 2073) में विस्तारपूर्वक एवं विशेष रूप से कर चुके हैं, वहाँ अवश्य देखना चाहिए।]

इस वर्ष हम ग्रहगोचर अनुसार ही प्रधानमन्त्री जी की जन्म कुं. पर कुछ प्रकाश डालेंगे।

प्रधानमन्त्री मोदी जी की जन्म कुं. में वर्षारम्भ से ही गुरु पंचमेश होकर तृतीयभाव में शनि के साथ युक्त है। तृतीय भाव पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्धों का भी भाव है। ता. 6 अप्रैल, 2021 ई. से 13 सितम्बर, 2021 ई. तक गुरु चतुर्थभाव (सर्वसाधारण जनता की प्रसनन्ता का भाव) में रहेगा। वर्तमान में श्रीमोदी जी पर 6 अक्तू., 2019 ई. से 6 जून, 2021 ई. तक चन्द्र मध्ये शुक्र की अन्तर्दशा रहेगी। तदुपरान्त 6 दिसंबर, 2021 ई. तक सूर्य की अन्तर्दशा रहेगी। शपथकालीन कुं. में मंगल-शनि मध्य समसप्तक योग तथा सन् 2021 ई. के आरम्भिक 2-3 मासों में भारत की प्रभावराशि मकर पर **'चतुर्ग्रही'** एवं **'पंचग्रही'** योग भारत की राजनीतिक, आर्थिक एवं रणनीतिक स्तर पर परीक्षाप्रद समय रहने वाला है।

ग्रहस्थिति एवं विश्लेषण लद्दाख के मोर्चे पर उनके नेतृत्व की परीक्षा होगी। भाग्येश चन्द्रमा की महादशा के कारण श्रीनरेन्द्र मोदी जी को एक मसीहा-नेता के रूप में देखा जाएगा। अन्तर्दशा शुक्र की है जोकि सप्तमेश एवं व्ययेश (वैदेशिक सम्बन्धों का भाव, गुप्त शत्रु-व्यय-युद्ध सम्बन्धी कार्यों का भाव) भी है। **अतः युगपुरुष-लौहपुरुष श्रीनरेन्द्र मोदी अपने शक्तिशाली एवं प्रभावशाली नेतृत्व द्वारा कोरोना संकट के साथ-साथ उत्पन्न चीनी संकट से प्रबलतापूर्वक भारतवर्ष को विजयी बनाएंगे।** जन्म एवं शपथकालीन कुं. में

करना होगा।

गुरु के प्रभाव से ही मोदी जी अपने कुशल नेतृत्व में देश का राजनीतिक एवं कूटनीतिक विमर्श ही बदल देंगे। वे उसे अमीरों, जातिवाद, अल्पसंख्यक तुष्टिकरण और घोटाले-भ्रष्टाचार आदि के चंगुल से निकालकर गरीबों, दलित-वंचित-शोषितों, अल्पसंख्यकों, राजनीतिक शुचिता, विकास और समावेशी राजनीति के केन्द्र में ले आएंगे। मोदी जी पापुलिस्ट नीतियां न अपनाकर वरन् जनहित और देशहित में कठोर रणनीतिक एवं आर्थिक निर्णय लेंगे।

जनता के प्रतिबिंब के रूप में सभी पर एकछत्र नियन्त्रण रखते हुए विपक्ष की आलोचनाओं का गरीबोन्मुखी नीतियां बनाकर प्रत्युत्तर देंगे। प्रधानमन्त्री जी पुनः वैश्विक कोरोना जैसी महामारी, चीन, पाक तुल्य दैत्य जैसे अनेक अवरोधों, बाधाओं के बावजूद भारत को विकास पथ यात्रा पर अग्रसर करेंगे तथा विकास, सुशासन, इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास के नए प्रतिमान स्थापित करेंगे। **विपक्षी दलों के पास वैकल्पिक विमर्श तथा वैकल्पिक नेतृत्व का अभाव रहेगा। सभी समस्याओं का यथायोग्य समाधान व निराकरण करते हुए अपनी तथा भारतवर्ष के गौरव व प्रतिष्ठा को बढ़ाएंगे। चीन के विरुद्ध मोदी जी की विचारधारा तथा लिए गए निर्णयों को वैश्विक समर्थन प्राप्त होगा।**

भाजपा की स्थापना कुण्डली में स्थिति ग्रहों तथा वर्तमान गोचर ग्रहस्थिति अनुसार सन् 2020-21 ई. में होने वाले अनेक राज्यों (बिहार, बंगाल, मणिपुर) के विधानसभा चुनावों में पार्टी की वोट-प्रतिशत के अनुसार स्थिति विपक्षी दलों की तुलना में सुदृढ़ होगी। परन्तु पूर्ण-बहुमत संदिग्ध रहेगा। चुनाव-पूर्व एवं पश्चात् कुछ लघु दलों के साथ गठबन्धन करना पड़ेगा। परन्तु यदि गुरु के कुम्भ राशि में प्रवेश (अर्थात् 20 नवंबर, 2020 ई. के बाद) के पश्चात् चुनाव हुए तो भाजपा निश्चय ही पूर्ण विजयी प्राप्त कर सकती है।

वि. संवत् 2078 में कांग्रेस पार्टी—एक विवेचना

कुण्डली कांग्रेस पार्टी
22-11-1969
9:57 A:M, बैंगलूरू

(कुण्डली: 9 – मं.; 10; 8 – सू., बु.; 7 – गु., शु.; 11; 12 – रा.; 6; 1; 3 – चं., श.; 2; 4; 5 – के.)

कांग्रेस पार्टी की जन्म-कुण्डली में लग्नेश गुरु वर्षारम्भ से 5 अप्रैल, 2021 ई. तक, पुनः 14 सितम्बर से 19 नवम्बर, 2021 ई. तक नीच राशिगत (द्वितीयस्थ) शनि युक्त होकर संचार करेगा। राहु षष्ठस्थ यद्यपि उच्चस्थ होगा, परन्तु गुरु की शत्रु दृष्टि (5 अप्रैल तक) रहेगी। अतः इस अवधि तक तो पार्टी अनिश्चितता के दौर से गुजरेगी। दलगत राजनीति से ग्रस्त रहेगी। पार्टी के भीतर गहन आंतरिक लड़ाई चलेगी। 6 अप्रैल, 2021 ई. से गुरु तृतीयस्थ आने से पार्टी राहुल गाँधी की फिर से ब्रांडिंग करेगी और उन्हें शीर्ष पद पर वापस लाने की दिशा में काम करेगी। आत्मघात पर आमदा कांग्रेस के प्रमुख नेताओं द्वारा अनाप-शनाप बयानों से पार्टी के प्रतिष्ठा एवं लोकप्रियता में कमी ही आएगी। **कांग्रेस और भाजपा का सार्वजनिक दंगल देशहित के विरुद्ध हो जाएगा।** संवेदनशील विषयों (विदेश नीति अथवा सामरिक महत्त्व के विषय) पर संकुचित राजनीति व चुनावी बयानबाजी जैसे व्यक्तव्यों से भारत की अन्तर्राष्ट्रीय छवि धूमिल करने का प्रयास करेगी। कांग्रेस पार्टी में नेतृत्व के मसले पर घोर उलझनपूर्ण स्थिति के चलते दिशाहीन होकर बहुत प्रभावशाली विपक्ष की भूमिका अदा करने में असक्षम रहेगी। केवल दुर्भावना के तहत निन्दा-आलोचना से वैकल्पिक विमर्श तैयार नहीं कर पाएगी।

कुण्डली श्रीराहुल गाँधी
19-06-1970 ई., 5:05AM

(कुण्डली: 2 – बुध; 3 – सू., मं.; 1 – श.; 4 – शु.; 12; 5 – के.; 11 – रा.; 8 – चं.; 6; 10; 7 – गु.; 9)

श्री राहुल-गाँधी जी की जन्म कुण्डली में वृष लग्न उदित है तथा जन्मराशि वृश्चिक है। वर्तमान में इन पर मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है (15-03-2020 से 24-04-2021 ई. तक)। जन्मकुण्डली में मंगल अस्तगत है तथा द्वादशभावगत नीचराशिस्थ शनि द्वारा दृष्ट है। दो परस्पर विरोधी एवं शत्रु ग्रहों की दशा-अन्तर्दशा के कारण श्री राहुल स्वयं अन्तर्द्वन्द्वों के कारण पार्टी को यथेष्ठ सफलता तक ले जाने में सफल नहीं हो पाएंगे। कुछ अदूरदर्शी निर्णयों एवं अन्धर्विरोध की ही राजनीति के कारण कांग्रेस की लोकप्रियता को गहरा धक्का पहुँचेगा। म.प्र. की भान्ति महाराष्ट्र आदि किसी अन्य प्रदेश में सत्ता सुख से वंचित होना पड़ सकता है। राजनीतिक व्यवहार में अपरिपक्वता एवं अतार्किकता दृष्टिगोचर होगी।

✷ भारत के कुछ मुख्य प्रान्त ✷

हिमाचल प्रदेश—इसकी प्रभावराशि मीन तथा नाम राशि कर्क है। 74वें स्वतन्त्र भारत की कुण्डली में इसकी नाम राशि कर्क अष्टम भाव में सूर्य-बुध युक्त तथा प्रभावराशि मीन चतुर्थ भाव में मंगल द्वारा अधीष्ठित हैं। नाम राशि कर्क के सप्तम भाव में वर्षारम्भ से मार्च, 2021 ई. तक चतुर्ग्रही, पंचग्रही योग बनने से प्रदेश में प्रथम तीन मास प्राकृतिक आपदाओं, सड़क दुर्घटनाओं, अतिवृष्टि से व्यापक कृषि एवं जन-धन हानि के संकेत हैं। वर्तमान में प्रदेश भाजपा सरकार राज्य में अनेक अधूरी एवं रूकी हुई विकासोन्मुखी योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए प्रयत्नशील रहेगी। महँगाई, पेयजल की कमी आदि समस्याएं यथापूर्व गम्भीर बनी रहेगी। प्रभावराशि मीन पर शनि की नीच दृष्टि पड़ने से आर्थिक एवं प्राकृतिक कारणों से बहुत सी महत्त्वपूर्ण योजनाओं (जैसे-रेल, विकास, लद्दाख के साथ इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास, विद्युत उद्योग, बाँध-निर्माण, ग्रामीण-विकास आदि) के वाँछित विकास में विघ्न-बाधाओं का सामना रहेगा। ता. 20 जून से राशि स्वामी गुरु वक्री होने से सरकार द्वारा आरम्भ की गई प्रदेशव्यापी योजनाओं का समुचित लाभ साधारण वर्ग के लोगों तक नहीं पहुँच पाएगा। फलतः सत्तारूढ़ दल (भाजपा) को विशेष प्रयास करने होंगे। राज्य-सरकार को हिमाचल की आंतरिक सुरक्षा तथा चीन से सम्पर्क वाली सीमाओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी। इस प्रान्त में खाद्य-पदार्थों व अन्य उपभोग्य वस्तुओं की गगनचुम्बी महँगाई, बेरोजगारी, समाप्त हो रहे

प्राकृतिक संसाधन एवं आधे-अधूरे विकास आदि के कारण जन-साधारण में असन्तोष, बेचैनी तथा प्रदेश व केन्द्र-दोनों सरकारों के खिलाफ विक्षोभ रहेगा।

पंजाब—इसकी नामराशि कन्या तथा प्रभावराशि मीन है। 74वें स्वतन्त्रता दिवस कुं. में मीन राशि पर अधीष्ठित मंगल शनि द्वारा दृष्ट है तथा कन्या का स्वामी बुध अष्टमभाव में शत्रु राशिगत है। इस ग्रहस्थिति के अनुसार सन् 2020 ई. के उत्तरार्द्ध में ही यहाँ की राजनीति में विशेष उथल-पुथल रहेगी। मुख्यमन्त्री तथा अन्य मन्त्रियों में आपसी विश्वास की कमी से कांग्रेस सरकार को गहरा आघात लग सकता है। किसी मन्त्री को इस्तीफा भी देना पड़ सकता है।

सन् 2021 ई. के आरम्भिक तीन-चार महीनों में ग्रहस्थिति प्रान्त की राजनैतिक गतिविधि के सम्बन्ध में विशेष घटनाओं एवं उलझनों को जन्म देगी, जिससे शासनतंत्र को परेशानी का सामना करना पड़ेगा। प्रदेश की आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियां विषम ही प्रतीत हो रही हैं। कैप्टन सरकार को आगामी वर्ष वित्तीय प्रबन्धन की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी। व्यवस्थागत प्रबन्धन में त्रुटियों के कारण किसान, लघु-उद्यमी, श्रमिकों की कमी तथा बढ़ती हुई महँगाई के कारण साधारण जनता अपने आप को असहाय महसूस करेगी। पंजाब के अधिकांश क्षेत्रों में स्वच्छ पेयजल की कमी, महँगी बिजली, उपभोग्य वस्तुओं की कीमतों में ज़बरदस्त वृद्धि, भ्रष्टाचार, बेरोज़गारी, कानून-व्यवस्था सम्बन्धी समस्या टैक्स यथावत रहने, परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों की तुष्टिकरण आदि समस्याओं के कारण कैप्टन सरकार के विरुद्ध शहरी जनता तथा व्यापारी-वर्ग में गहन असन्तोष एवं आक्रोश रहेगा।

जम्मू-काश्मीर—प्रभावराशि तुला तथा नामराशि मकर है। 72वें गणतन्त्र दिवस कुं. में मकरराशि अष्टम भाव (आकस्मिक दुर्घटनाओं, प्राकृतिक आपदाओं का भाव) में है तथा फरवरी-मार्च, 2021 ई. में मकर राशि पर चतुर्ग्रही एवं पंचग्रही योगों के प्रभावस्वरूप जम्मू व कश्मीर राज्य प्राकृतिक एवं आतंकी आपदाओं से त्रस्त रहेगा। राज्य का सत्ता सुख भोग चुकी लगभग सभी पार्टियां भारी अन्तर्द्वन्द्व की स्थिति से गुज़रेंगी। विभिन्न पार्टियां मध्ये आपसी खींचतान तथा केन्द्रीय प्रशासन का अन्धविरोध राज्य को राजनीतिक अस्थिरता एवं असमंजसपूर्ण वातावरण की ओर ले जाएगा। पूर्वी तथा पश्चिमी सीमाओं पर सड़क निर्माण द्वारा इन्फ्रास्ट्रक्चर को मज़बूत किया जाएगा, जिससे चीन-पाक पर दबाव उत्पन्न होगा। परन्तु बीच-बीच में पाकिस्तान द्वारा संरक्षण प्राप्त आतंकी कश्मीर घाटी में अनेक विध्वंसक एवं उपद्रवी कार्यवाहियां करने की कुचेष्टाएं करेंगे। अनेक अवरोधों के बावजूद राज्य में पर्यटन उद्योग को बढ़ावा मिलेगा।

हरियाणा—प्रभावराशि मीन तथा नामराशि मिथुन है। 72वें गणतन्त्र दिवस कुण्डली (26 जन., 2021 ई.) में मिथुन लग्न ही उदित हुआ है, तथा वर्ष लग्नेश बुध भाग्यस्थान में मुंथा युक्त है। फलतः प्रान्तीय भाजपा गठबन्धन सरकार आर्थिक एवं राजनैतिक अवरोधों-उलझनों के बावजूद विभिन्न क्षेत्रों में विकासोन्मुखी एवं उपयोगी योजनाओं का क्रियान्वयन करेगी। खट्टर सरकार द्वारा कुछ जन हितैषी निर्णयों से प्रदेश के विकास को कुछ गति अवश्य मिलेगी, परन्तु 20 जून से गुरु वक्री रहने तथा 14 सितं. से 19 नवं. तक गुरु अष्टमस्थ नीच राशिगत रहने से साधारण जनता तक इन सब योजनाओं का लाभ पहुँचना सन्देहास्पद रहेगा। सरकार को जन-समस्याओं की ओर विशेष ध्यान देना होगा, अन्यथा परिस्थितियाँ विकट होंगी।

दिल्ली—72वें गणतन्त्र दिवस कुं. (26 जनवरी, 2021 ई.) में इस राज्य की प्रभावराशि मकर अष्टम-भाव (युद्ध, आकस्मिक दुर्घटनाओं का भाव) में सूर्य-गुरु-शनि ग्रहों द्वारा अधीष्ठित है तथा शीघ्र फरवरी-मार्च, 2021 ई. के महीनों में चतुर्ग्रही-पंचग्रही योग बनने से यह राज्य भारत तथा विश्व के ध्यान का केन्द्र बना रहेगा। यद्यपि केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा सतर्कता एवं सजगता के साथ दशा एवं दिशा बदलने का प्रयास किया जाएगा। परन्तु गैस-चैम्बर एवं जनसंख्या विस्फोट हो चुकी दिल्ली में परिवर्तन हेतु एक युद्ध रणनीति की आवश्यकता रहेगी। मकर राशि अष्टमस्थ आने के कारण दिल्ली में प्रतिकूल जलवायु, भूकम्प, साम्प्रदायिक विद्वेष के साथ-साथ राजनीतिक वातावरण अत्यन्त विक्षुब्ध एवं असमंजसपूर्ण रहेगा।

राजस्थान—प्रभावराशि कर्क तथा नामराशि तुला है। 74वें स्वतन्त्रता दिवस (15 अग., 2020 ई.) कुं. में कर्क राशि अष्टमस्थ तथा सूर्य-बुध युक्त है। 'सूर्य-शनि' तथा 'गुरु-शुक्र' मध्य समसप्तक योग राज्य में राजनैतिक उथल-पुथल का संकेत दे रहे हैं। कुछ मन्त्रियों एवं विधायकों में असन्तोष की भावना प्रबल रहेगी। सरकार को इस सम्बन्ध में सचेत रहना चाहिए। 72वें गणतंत्र दिवस कुं. (26 जन., 2021 ई.) में प्रभावराशि द्वितीयस्थ तथा नामराशि पंचमस्थ (योजना-भाव) आने से कांग्रेस सरकार की ओर से अनेक जनोपयोगी योजनाओं को क्रियान्वित करने का प्रयास किया जाएगा, फिर भी अष्टमस्थ सू., बु. के कारण लोगों में महँगाई, पेयजल सम्बन्धी समस्याओं के कारण सरकारी नीतियों के विरुद्ध असन्तोष एवं विक्षोभ की भावना रहेगी।

उत्तर-प्रदेश—प्रभावराशि धनु तथा नामराशि वृष है। 74वें स्वतन्त्रता दिवस कुं. (15 अगस्त, 2020 ई.) में धनु लग्न ही उदित होने तथा लग्न में गुरु-केतु का प्रभाव रहने से राज्य में योगी अर्थात् भाजपा सरकार द्वारा लघु एवं बड़े औद्योगिक क्षेत्रों के विकास हेतु नई योजनाएं कार्यान्वित होंगी। परन्तु ता. 23 सितं., 2021 ई. से वृष राशि पर राहु का संचार होने से आगे समय राज्य-सरकार को कठिन परिस्थिति में डालेगा। कहीं राजनीतिक हत्याकाण्ड, साम्प्रदायिक झगड़े तथा राजनैतिक प्रदर्शन होंगे। विरोधी पार्टी के घटकतत्त्व सिद्धान्त-वैमत्य या स्वार्थपूर्ण कारणों से सत्तारुढ़ योगी सरकार को परेशानी में डाल सकते हैं। ग्रहस्थिति अनुसार बिगड़ती कानून व्यवस्था, बेरोज़गारी, साम्प्रदायिक उपद्रव एवं राजनीतिक पार्टियों के मध्य टकराव, दल-बदल आदि के कारण आन्तरिक अशान्ति रहे, परन्तु गुरु के प्रभाव से योगी सरकार समस्याओं का यथासम्भव निराकरण करते हुए उत्तरप्रदेश को प्रगतिपथ पर ले जाएंगे।

उपरोक्त भविष्यवाणियां देश, स्थान, व्यक्ति आदि की जन्म-कुण्डलियों में ग्रह स्थिति, दशा एवं गोचर ग्रहों के प्रभाव व संकेतों के आधार पर अपनी अल्प बुद्धि के अनुसार लिपिबद्ध की गई है। वास्तव में सर्वश्रेष्ठ भविष्यवेत्ता एवं सर्वज्ञ तो स्वयं ईश्वर ही हैं—

''फलानि ग्रह संचारेण सूचयन्ति मनीषिणः। को वक्तः तारतम्यस्य वेधसं विना।''

लेख लिपिबद्धम्—
आषाढ़ पूर्णिमा
5 जुलाई, 2020 ई., रविवार

शुभ चिन्तकः
पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र श्रद्धेय स्व. पं. पन्ना लाल ज्यो.,
अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पंजाब)

(सन 2021-22 ई.)

सूर्यादि ग्रहों का राशि प्रवेश, वक्री-मार्गी एवं उदयास्त (घं. मिं.) (सन् 2021-22 ई.)

सूर्य राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मिं.	ता. मास	राशि	घं. मिं.
14 जन.	मकर	8:14	16 सितं.	कन्या	25:13
12 फर.	कुम्भ	21:11	17 अक्तू.	तुला	13:12
14 मार्च	मीन	18:03	16 नवं.	वृश्चिक	13:01
13 अप्रै.	मेष	26:33	15 दिसं.	धनु	27:42
14 मई	वृष	23:24	14 जन.(22)	मकर	14:29
15 जून	मिथुन	6:00	12 फर.	कुम्भ	27:26
16 जुला.	कर्क	16:53	14 मार्च	मीन	24:15
16 अग.	सिंह	25:16			

मंगल राशि प्रवेश (संवतारम्भ में वृष में)

13 अप्रै.	मिथुन	25:13	22 अक्तू.	तुला	2:01
2 जून	कर्क	6:51	5 दिसं.	वृश्चिक	5:57
20 जुला.	सिंह	17:54	16 जन.(22)	धनु	16:30
6 सितं.	कन्या	3:58	26 फर.	मकर	15:49

बुध राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मीन में)

16 अप्रै.	मेष	20:56	27 सितं.	वक्री	10:36
1 मई	वृष	5:41	2 अक्तू.	व. कन्या	2:45
26 मई	मिथुन	8:52	18 अक्तू.	मार्गी	20:43
30 मई	वक्री	4:01	2 नवं.	तुला	9:52
3 जून	व. वृष	2:12	21 नवं.	वृश्चिक	4:50
23 जून	मार्गी	3:29	10 दिसं.	धनु	6:05
7 जुला.	मिथुन	11:04	29 दिसं.	मकर	11:32
25 जुला.	कर्क	11:40	14 जन.(22)	वक्री	17:07
8 अग.	सिंह	25:34	4 फर.	मार्गी	9:40
26 अग.	कन्या	11:20	6 मार्च	कुम्भ	11:19
22 सितं.	तुला	8:20	24 मार्च	मीन	10:55

गुरु राशि प्रवेश (संवतारम्भ में कुम्भ में)

20 जून	वक्री	20:30	20 नवं.	कुम्भ	23:19
14 सितं.	व. मकर	14:30	संवतान्त तक कुम्भ राशि में रहेगा।		
18 अक्तू.	मार्गी	10:55			

शुक्र राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मेष में)

4 मई	वृष	13:25	17 जुला.	सिंह	9:25
28 मई	मिथुन	23:59	11 अग.	कन्या	11:32
22 जून	कर्क	14:20	5 सितं.	तुला	24:50

शुक्र राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मिं.
2 अक्तू.	वृश्चिक	9:46
30 अक्तू.	धनु	16:10
8 दिसं.	मकर	14:03
19 दिसं.	वक्री	16:04
30 दिसं.	व. धनु	7:54
(सन् 2022 ई.)		
29 जन.	मार्गी	14:17
27 फर.	मकर	10:15
31 मार्च	कुम्भ	8:39

—शनि राशि प्रवेश—
(संवतारम्भ में मकर में)

सम्पूर्ण संवत् मकर राशि में ही संचार करेगा।

मध्यम राहु राशि प्रवेश
(संवतारम्भ में वृष में)

सम्पूर्ण संवत् वृष राशि में ही संचार करेगा।

मध्यम केतु राशि प्रवेश
(संवतारम्भ में वृश्चिक में)

सम्पूर्ण संवत् वृश्चिक राशि में ही संचार करेगा।

यूरेनस

सम्पूर्ण संवत् मेष राशि में संचार करेगा।

नैपच्यून

सम्पूर्ण संवत् कुम्भ राशि में संचार करेगा।

प्लूटो

सम्पूर्ण संवत् मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रहों का वक्री-मार्गी

मंगल

सम्पूर्ण संवत् मार्गी अवस्था में संचार करेगा।

बुध

30 मई	वक्री	4:01
23 जून	मार्गी	3:29
27 सितं.	वक्री	10:36
18 अक्तू.	मार्गी	20:43
14 जन.(22)	वक्री	17:07
4 फर.	मार्गी	9:40

गुरु

20 जून	वक्री	20:30
18 अक्तू.	मार्गी	10:55

शुक्र

19 दिसं.	वक्री	16:04
29 जन.(22)	मार्गी	14:17

शनि

23 मई	वक्री	14:42
11 अक्तू.	मार्गी	7:45

यूरेनस

20 अग.	वक्री	7:04
18 जन.(22)	मार्गी	20:50

नैपच्यून

25 जून	वक्री	24:58
1 दिसं.	मार्गी	18:48

प्लूटो

27 अप्रै.	वक्री	25:32
6 अक्तू.	मार्गी	23:58

ग्रहों का उदय-अस्त

मंगल

17 अग.	पश्चि. अस्त	19:02
29 नवं.	पूर्वोदय	6:05

बुध

30 अप्रै.	पश्चिम में उदय	19:02
2 जून	व.पश्चिम. अस्त	19:23
20 जून	व. पूर्वोदय	19:30
21 जुला.	पूर्व में अस्त	5:03
15 अग.	पश्चिम-उदय	4:17
3 अक्तू.	व. पश्चिम-अस्त	18:07
16 अक्तू.	व. पूर्व में उदय	5:14
7 नवं.	पूर्व में अस्त	5:53
22 दिसं.	पश्चिम-उदय	17:26

बुध (सन् 2022 ई.)

17 जन.	व. पश्चिम-अस्त	17:49
29 जन.	पूर्व में उदय	5:42
19 मार्च	पूर्व में अस्त	23:49

गुरु

24फर.(22)	पश्चिम अस्त	8:50
26 मार्च(22)	पूर्व में उदित	18:38

शुक्र

18 अप्रै.	पश्चिम-उदय	23:10
5 जन.(22)	व. पश्चि. अस्त	25:15
12 जन.(22)	व. पूर्वोदय	17:40

शनि

19 जन.(22)	पश्चिम-अस्त	7:18
21 फर.(22)	पूर्व में उदय	18:11

ग्रहों की मध्यम, शीघ्र, अतिचारी गति

ग्रह	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मध्यम	31′-26″	59′-08″	5′-00″	59′-08″	2′-00″
शीघ्र	39′-01″	104′-46″	12′-22″	73′-43″	5′-27″
परमशीघ्र	46′-11″	113′-32″	14′-04″	75′-42″	7′-45″

ध्यान दें !—मध्यम गति से कम गति हो तो मन्द गति, शीघ्र गति से कम हो तो मध्यम गति, परमशीघ्र गति से कम हो तो शीघ्र गति एवं परमशीघ्र गति से अधिक गति हो तो ग्रह '**अतिचारी**' कहलाता है। यहाँ '**गति**' से अभिप्राय ग्रह की दैनिक गति से है। 24 घण्टे में ग्रह जितना आगे या पीछे चलता है, उसे ग्रह की '**दैनिक गति**' कहते हैं।

ग्रहों का नक्षत्र-चरण प्रवेश—संवत् २०७८ वि. (सन् 2021-22 ई.)

सूर्य नक्षत्र प्रवेश (संवतारम्भ में रेवती (4) में)

2021 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
13 अप्रै.	अश्वि 1 मेष	26:33
17 अप्रै.	अश्वि.(2)	12:15
20 अप्रै.	अश्वि.(3)	22:07
24 अप्रै.	अश्वि.(4)	8:10
27 अप्रै.	भर.(1)	18:22
30 अप्रै.	भर.(2)	28:45
4 मई	भर.(3)	15:15
7 मई	भर.(4)	25:50
11 मई	कृति.(1)	12:33
14 मई	कृति 2 वृष	23:24
18 मई	कृति.(3)	10:23
21 मई	कृति.(4)	21:31
25 मई	रोहि.(1)	8:45
28 मई	रोहि.(2)	20:07
1 जून	रोहि.(3)	7:35
4 जून	रोहि.(4)	19:06
8 जून	मृग.(1)	6:40
11 जून	मृग.(2)	18:18
15 जून	मृग.3 मिथुन	6:00
18 जून	मृग.(4)	17:46
22 जून	आर्द्रा(1)	5:38
25 जून	आर्द्रा(2)	17:32
29 जून	आर्द्रा(3)	5:27
2 जुला.	आर्द्रा(4)	17:22
6 जुला.	पुन.(1)	5:16
9 जुला.	पुन.(2)	17:10
13 जुला.	पुन.(3)	5:01
16 जुला.	पुन. 4 कर्क	16:53
20 जुला.	पुष्य(1)	4:44
23 जुला.	पुष्य(2)	16:34
27 जुला.	पुष्य(3)	4:21
30 जुला.	पुष्य(4)	16:04
3 अग.	आश्ले.(1)	3:41
6 अग.	आश्ले.(2)	15:13
10 अग.	आश्ले.(3)	2:39

2021 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
13 अग.	आश्ले.(4)	14:00
16 अग.	मघा(1)सिंह	25:16
20 अग.	मघा(2)	12:28
23 अग.	मघा(3)	23:33
27 अग.	मघा(4)	10:29
30 अग.	पू.फा.(1)	21:19
3 सितं.	पू.फा.(2)	7:59
6 सितं.	पू.फा.(3)	18:29
10 सितं.	पू.फा.(4)	4:52
13 सितं.	उ.फा.(1)	15:06
17 सितं.	उ.फा.2 कन्या	1:13
20 सितं.	उ.फा.(3)	11:11
23 सितं.	उ.फा.(4)	21:01
27 सितं.	हस्त(1)	6:41
30 सितं.	हस्त(2)	16:10
4 अक्तू.	हस्त(3)	1:29
7 अक्तू.	हस्त(4)	10:38
10 अक्तू.	चित्रा(1)	19:37
14 अक्तू.	चित्रा(2)	4:28
17 अक्तू.	चित्रा 3 तुला	13:12
20 अक्तू.	चित्रा(4)	21:46
24 अक्तू.	स्वा.(1)	6:12
27 अक्तू.	स्वा.(2)	14:28
30 अक्तू.	स्वा.(3)	22:34
3 नवं.	स्वा.(4)	6:31
6 नवं.	विशा.(1)	14:19
9 नवं.	विशा.(2)	22:00
13 नवं.	विशा.(3)	5:33
16 नवं.	विशा.4 वृश्चि.	13:01
19 नवं.	अनु.(1)	20:23
23 नवं.	अनु.(2)	3:38
26 नवं.	अनु.(3)	10:47
29 नवं.	अनु.(4)	17:49
2 दिसं.	ज्ये.(1)	24:43
6 दिसं.	ज्ये.(2)	7:33
9 दिसं.	ज्ये.(3)	14:19

2021 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
12 दिसं.	ज्ये.(4)	21:03
16 दिसं.	मूल 1 धनु	3:42
19 दिसं.	मूल(2)	10:22
22 दिसं.	मूल(3)	20:54
25 दिसं.	मूल(4)	23:31
29 दिसं.	पू.षा.(1)	6:01
(सन् 2022 ई.)		
1 जन.	पू.षा.(2)	12:30
4 जन.	पू.षा.(3)	18:58
8 जन.	पू.षा.(4)	1:26
11 जन.	उ.षा.(1)	7:55
14 जन.	उ.षा.2 मकर	14:29
17 जन.	उ.षा.(3)	20:55
21 जन.	उ.षा.(4)	3:40
24 जन.	श्रव.(1)	10:19
27 जन.	श्रव.(2)	17:00
30 जन.	श्रव.(3)	23:44
3 फर.	श्रव.(4)	6:31
6 फर.	धनि.(1)	13:23
9 फर.	धनि.(2)	20:21
13 फर.	धनि.3 कुम्भ	3:26
16 फर.	धनि.(4)	10:38
19 फर.	शत.(1)	17:57
23 फर.	शत.(2)	1:20
26 फर.	शत.(3)	8:51
1 मार्च	शत.(4)	16:26
4 मार्च	पू.भा.(1)	24:10
8 मार्च	पू.भा.(2)	8:02
11 मार्च	पू.भा.(3)	16:03
14 मार्च	पू.भा.4 मीन	24:15
18 मार्च	उ.भा.(1)	8:36
21 मार्च	उ.भा.(2)	17:07
25 मार्च	उ.भा.(3)	1:45
28 मार्च	उ.भा.(4)	10:31
31 मार्च	रेव.(1)	19:24

मंगल नक्षत्र प्रवेश

[संवतारम्भ में मृग.(2) में]

2021 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मिं.
14 अप्रै.	मृग.3 मिथुन	1:13
19 अप्रै.	मृग.(4)	13:35
25 अप्रै.	आर्द्रा(1)	1:37
30 अप्रै.	आर्द्रा(2)	13:24
5 मई	आर्द्रा(3)	24:55
11 मई	आर्द्रा(4)	12:08
16 मई	पुन.(1)	23:06
22 मई	पुन.(2)	9:51
27 मई	पुन.(3)	20:28
2 जून	पुन. 4 कर्क	6:51
7 जून	पुष्य(1)	17:00
13 जून	पुष्य(2)	2:56
18 जून	पुष्य(3)	12:39
23 जून	पुष्य(4)	22:09
29 जून	आश्ले.(1)	7:28
4 जुला.	आश्ले.(2)	16:32
10 जुला.	आश्ले.(3)	1:16
15 जुला.	आश्ले.(4)	9:42
20 जुला.	मघा 1 सिंह	17:54
26 जुला.	मघा(2)	1:49
31 जुला.	मघा(3)	9:26
5 अग.	मघा(4)	16:40
10 अग.	पू.फा.(1)	23:30
16 अग.	पू.फा.(2)	5:59
21 अग.	पू.फा.(3)	5:49
26 अग.	पू.फा.(4)	17:50
31 अग.	उ.फा.(1)	23:08
6 सितं.	उ.फा.2 कन्या	3:58
11 सितं.	उ.फा.(3)	8:20
16 सितं.	उ.फा.(4)	12:16
21 सितं.	हस्त(1)	15:44
26 सितं.	हस्त(2)	18:45
1 अक्तू.	हस्त(3)	21:14
6 अक्तू.	हस्त(4)	23:11
11 अक्तू.	चित्रा(1)	24:37

2021 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
17 अक्तू.	चित्रा(2)	1:35
22 अक्तू.	चित्रा 3 तुला	2:01
27 अक्तू.	चित्रा(4)	1:56
1 नवं.	स्वा.(1)	1:18
5 नवं.	स्वा.(2)	24:06
10 नवं.	स्वा.(3)	22:24
15 नवं.	स्वा.(4)	19:56
20 नवं.	विशा.(1)	17:26
25 नवं.	विशा.(2)	14:10
30 नवं.	विशा.(3)	10:20
5 दिसं.	विशा.4 वृश्चि.	5:57
10 दिसं.	अनु.(1)	1:05
14 दिसं.	अनु.(2)	19:44
19 दिसं.	अनु.(3)	13:53
24 दिसं.	अनु.(4)	7:32
28 दिसं.	ज्ये.(1)	24:39
(सन् 2022 ई.)		
2 जन.	ज्ये.(2)	17:18
7 जन.	ज्ये.(3)	12:28
12 जन.	ज्ये.(4)	1:12
16 जन.	मूल 1 धनु	16:30
21 जन.	मूल(2)	7:22
25 जन.	मूल(3)	21:45
30 जन.	मूल(4)	11:43
4 फर.	पू.षा.(1)	1:18
8 फर.	पू.षा.(2)	15:30
13 फर.	पू.षा.(3)	3:21
17 फर.	पू.षा.(4)	15:52
22 फर.	उ.षा.(1)	4:01
26 फर.	उ.षा.2 मकर	15:49
3 मार्च	उ.षा.(3)	3:18
7 मार्च	उ.षा.(4)	14:32
12 मार्च	श्रव.(1)	1:32
16 मार्च	श्रव.(2)	12:18
20 मार्च	श्रव.(3)	22:50
25 मार्च	श्रव.(4)	9:10
29 मार्च	धनि.(1)	19:19
3 अप्रै.	धनि.(2)	5:20

बुध नक्षत्र प्रवेश

[संवतारम्भ में रेव.(2) में]

2021 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मिं.
13 अप्रै.	रेव.(3)	14:30
15 अप्रै.	रेव.(4)	6:05
16 अप्रै.	अश्वि.1 मेष	20:56
18 अप्रै.	अश्वि.(2)	13:12
20 अप्रै.	अश्वि.(3)	1:14
21 अप्रै.	अश्वि.(4)	14:52
23 अप्रै.	भर.(1)	4:24
24 अप्रै.	भर.(2)	18:00
26 अप्रै.	भर.(3)	7:51
27 अप्रै.	भर.(4)	22:15
29 अप्रै.	कृति.(1)	13:26
1 मई	कृति. 2 वृष	5:41
2 मई	कृति.(3)	23:32
4 मई	कृति.(4)	19:20
6 मई	रोहि.(1)	17:40
8 मई	रोहि.(2)	19:22
11 मई	रोहि.(3)	1:30
13 मई	रोहि.(4)	14:02
16 मई	मृग.(1)	12:12
20 मई	मृग.(2)	4:11
26 मई	मृग. 3 मिथु.	8:52
30 मई	वक्री	4:01
3 जून	व. मृग.2 वृष	2:12
10 जून	व. मृग.(1)	10:52
16 जून	व. रोहि.(4)	22:32
23 जून	मार्गी	3:29
28 जून	मृग.(1)	24:12
4 जुला.	मृग.(2)	1:23
7 जुला.	मृग.3 मिथुन	11:04
10 जुला.	मृग.(4)	5:46
12 जुला.	आर्द्रा(1)	15:35
14 जुला.	आर्द्रा(2)	19:49
16 जुला.	आर्द्रा(3)	18:57
18 जुला.	आर्द्रा(4)	17:03
20 जुला.	पुन.(1)	11:52

गुरु नक्षत्र प्रवेश

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

बुध नक्षत्र प्रवेश

22 जुला.	पुन.(2)	4:59
23 जुला.	पुन.(3)	20:45
25 जुला.	पुन.4 कर्क	11:40
27 जुला.	पुष्य(1)	2:01
28 जुला.	पुष्य(2)	16:01
30 जुला.	पुष्य(3)	5:58
31 जुला.	पुष्य(4)	20:03
2 अग.	आश्ले.(1)	10:24
4 अग.	आश्ले.(2)	1:13
5 अग.	आश्ले.(3)	16:37
7 अग.	आश्ले.(4)	8:41
9 अग.	मघा 1 सिंह	1:34
10 अग.	मघा(2)	19:27
12 अग.	मघा(3)	14:06
14 अग.	मघा(4)	9:54
16 अग.	पू.फा.(1)	6:49
18 अग.	पू.फा.(2)	4:57
20 अग.	पू.फा.(3)	4:22
22 अग.	पू.फा.(4)	5:10
24 अग.	उ.फा.(1)	7:27
26 अग.	उ.फा.2 कन्या	11:20
28 अग.	उ.फा.(3)	16:59
30 अग.	उ.फा.(4)	24:36
2 सितं.	हस्त(1)	10:32
4 सितं.	हस्त(2)	23:14
7 सितं.	हस्त(3)	15:23
10 सितं.	हस्त(4)	12:11
13 सितं.	चित्रा(1)	15:55
17 सितं.	चित्रा(2)	7:43
22 सितं.	चित्रा 3 तुला	8:20
27 सितं.	वक्री	10:36
2 अक्तू.	व.चित्रा 2 कन्या	2:45
6 अक्तू.	व. चित्रा(1)	4:39
9 अक्तू.	व. हस्त(4)	3:32
12 अक्तू.	व. हस्त(3)	1:16
16 अक्तू.	व. हस्त(2)	3:15
18 अक्तू.	मार्गी	20:43
21 अक्तू.	हस्त(3)	14:48
25 अक्तू.	हस्त(4)	20:51
28 अक्तू.	चित्रा(1)	16:52
31 अक्तू.	चित्रा(2)	3:36
2 नवं.	चित्रा 3 तुला	9:52
4 नवं.	चित्रा(4)	13:49
6 नवं.	स्वा.(1)	16:30
8 नवं.	स्वा.(2)	18:28
10 नवं.	स्वा.(3)	20:06
12 नवं.	स्वा.(4)	21:37
14 नवं.	विशा.(1)	23:11
16 नवं.	विशा.(2)	24:48
19 नवं.	विशा.(3)	2:46
21 नवं.	विशा. 4 वृश्चि.	4:50
23 नवं.	अनु.(1)	7:07
25 नवं.	अनु.(2)	9:37
27 नवं.	अनु.(3)	12:17
29 नवं.	अनु.(4)	15:06
1 दिसं.	ज्ये.(1)	18:01
3 दिसं.	ज्ये.(2)	21:00
5 दिसं.	ज्ये.(3)	24:02
8 दिसं.	ज्ये.(4)	3:04
10 दिसं.	मूल 1 धनु	6:05
12 दिसं.	मूल(2)	9:03
14 दिसं.	मूल(3)	11:58
16 दिसं.	मूल(4)	14:50
18 दिसं.	पू.षा.(1)	17:41
20 दिसं.	पू.षा.(2)	20:35
22 दिसं.	पू.षा.(3)	23:33
25 दिसं.	पू.षा.(4)	2:51
27 दिसं.	उ.षा.(1)	6:43
29 दिसं.	उ.षा. 2 मकर	11:32
31 दिसं.	उ.षा.(3)	18:00
(सन् 2022 ई०)		
3 जन.	उ.षा.(4)	3:16
5 जन.	श्रव.(1)	18:12
8 जन.	श्रव.(2)	22:03
14 जन.	वक्री	17:07
19 जन.	व. श्रव.(1)	4:03
23 जन.	व. उ.षा.(4)	1:14
25 जन.	व. उ.षा.(3)	16:19
28 जन.	व. उ.षा.(2)	16:59
4 फर.	मार्गी	9:40
11 फर.	उ.षा.(3)	8:27
15 फर.	उ.षा.(4)	24:33
19 फर.	श्रव.(1)	6:21
22 फर.	श्रव.(2)	4:03
24 फर.	श्रव.(3)	20:44
27 फर.	श्रव.(4)	9:58
1 मार्च	धनि.(1)	20:28
4 मार्च	धनि.(2)	4:51
6 मार्च	धनि.3 कुम्भ	11:19
8 मार्च	धनि.(4)	16:13
10 मार्च	शत.(1)	19:40
12 मार्च	शत.(2)	21:48
14 मार्च	शत.(3)	22:47
16 मार्च	शत.(4)	22:27
18 मार्च	पू.भा.(1)	21:05
20 मार्च	पू.भा.(2)	18:41
22 मार्च	पू.भा.(3)	15:16
24 मार्च	पू.भा. 4 मीन	10:55
26 मार्च	उ.भा.(1)	5:42
27 मार्च	उ.भा.(2)	23:34
29 मार्च	उ.भा.(3)	16:41
31 मार्च	उ.भा.(4)	9:06
1 अप्रै.	रेव.(1)	24:53

गुरु नक्षत्र प्रवेश
(संवतारम्भ में धनि. 3 कुम्भ में)

25 अप्रै.	धनि.(4)	8:35
22 मई	शत.(1)	6:48
20 जून	वक्री	20:30
20 जुला.	व. धनि.(4)	10:25
18 अग.	व. धनि.(3)	6:17
14 सितं.	व.धनि.2मकर	14:30
18 अक्तू.	मार्गी	10:55
20 नवं.	धनि.3 कुम्भ	23:19
15 दिसं.	धनि.(4)	8:14
(सन् 2022 ई०)		
2 जन.	शत.(1)	15:45
18 जन.	शत.(2)	15:37

गुरु नक्षत्र प्रवेश

2022 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
2 फर.	शत.(3)	10:57
16 फर.	शत.(4)	14:46
2 मार्च	पू.भा.(1)	11:09
16 मार्च	पू.भा.(2)	6:14
30 मार्च	पू.भा.(3)	5:41

शुक्र नक्षत्र प्रवेश
(संवतारम्भ में अश्वि. 2 में)

15 अप्रै.	अश्वि.(3)	15:41
18 अप्रै.	अश्वि.(4)	8:22
21 अप्रै.	भर.(1)	1:04
23 अप्रै.	भर.(2)	17:51
26 अप्रै.	भर.(3)	10:41
29 अप्रै.	भर.(4)	3:33
1 मई	कृति.(1)	20:28
4 मई	कृति.2 वृष	13:25
7 मई	कृति.(3)	6:25
9 मई	कृति.(4)	23:27
12 मई	रोहि.(1)	16:31
15 मई	रोहि.(2)	9:39
18 मई	रोहि.(3)	2:49
20 मई	रोहि.(4)	20:02
23 मई	मृग.(1)	13:19
26 मई	मृग.(2)	6:38
28 मई	मृग. 3 मिथुन	23:59
31 मई	मृग.(4)	17:25
3 जून	आर्द्रा(1)	10:52
6 जून	आर्द्रा(2)	4:21
8 जून	आर्द्रा(3)	21:53
11 जून	आर्द्रा(4)	15:29
14 जून	पुन.(1)	9:07
17 जून	पुन.(2)	2:48
19 जून	पुन.(3)	20:32
22 जून	पुन. 4 कर्क	14:20
25 जून	पुष्य(1)	8:13
28 जून	पुष्य(2)	2:09
30 जून	पुष्य(3)	20:09

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

3 जुला.	पुष्य(4)	14:11
6 जुला.	आश्ले.(1)	8:17
9 जुला.	आश्ले.(2)	2:28
11 जुला.	आश्ले.(3)	20:42
14 जुला.	आश्ले.(4)	15:02
17 जुला.	मघा 1 सिंह	9:25
20 जुला.	मघा(2)	3:55
22 जुला.	मघा(3)	22:00
25 जुला.	मघा(4)	17:11
28 जुला.	पू.फा.(1)	11:59
31 जुला.	पू.फा.(2)	6:53
3 अग.	पू.फा.(3)	1:52
5 अग.	पू.फा.(4)	20:59
8 अग.	उ.फा.(1)	16:11
11 अग.	उ.फा.2 कन्या	11:32
14 अग.	उ.फा.(3)	7:00
17 अग.	उ.फा.(4)	2:37
19 अग.	हस्त(1)	22:23
22 अग.	हस्त(2)	18:20
25 अग.	हस्त(3)	14:28
28 अग.	हस्त(4)	10:46
31 अग.	चित्रा(1)	7:15
3 सितं.	चित्रा(2)	3:56
5 सितं.	चित्रा 3 तुला	24:50
8 सितं.	चित्रा (4)	21:56
11 सितं.	स्वा.(1)	19:16
14 सितं.	स्वा.(2)	16:53
17 सितं.	स्वा.(3)	14:48
20 सितं.	स्वा.(4)	13:03
23 सितं.	विशा.(1)	11:37
26 सितं.	विशा.(2)	10:36
29 सितं.	विशा.(3)	9:58
2 अक्तू.	विशा.4 वृश्चि.	9:46
5 अक्तू.	अनु.(1)	10:03
8 अक्तू.	अनु.(2)	10:53
11 अक्तू.	अनु.(3)	12:19
14 अक्तू.	अनु.(4)	14:28
17 अक्तू.	ज्ये.(1)	17:24
20 अक्तू.	ज्ये.(2)	21:18
24 अक्तू.	ज्ये.(3)	2:17
27 अक्तू.	ज्ये.(4)	8:30
30 अक्तू.	मूल 1 धनु	16:10
3 नवं.	मूल(2)	1:35
6 नवं.	मूल(3)	13:07
10 नवं.	मूल(4)	3:15
13 नवं.	पू.षा.(1)	20:50
17 नवं.	पू.षा.(2)	18:59
21 नवं.	पू.षा.(3)	23:30
26 नवं.	पू.षा.(4)	13:33
1 दिसं.	उ.षा.(1)	19:40
8 दिसं.	उ.षा.2 मकर	14:03
19 दिसं.	वक्री	16:04
30 दिसं.	व. उषा.1धनु	7:54
(सन् 2022 ई०)		
5 जन.	व. पू.षा.(4)	18:31
11 जन.	व. पू.षा. (3)	6:28
17 जन.	व. पू.षा.(2)	6:57
29 जन.	मार्गी	14:17
11 फर.	पू.षा.(3)	13:22
17 फर.	पू.षा.(4)	20:39
22 फर.	उ.षा.(1)	22:34
27 फर.	उ.षा.2 मकर	10:15
3 मार्च	उ.षा.(3)	13:24
7 मार्च	उ.षा.(4)	10:45
11 मार्च	श्रव.(1)	3:53
14 मार्च	श्रव.(2)	17:46
18 मार्च	श्रव.(3)	5:07
21 मार्च	श्रव.(4)	14:19
24 मार्च	धनि.(1)	21:47
28 मार्च	धनि.(2)	3:51
31 मार्च	धनि. 3 कुम्भ	8:39
3 अप्रै.	धनि.(4)	12:28

शनि नक्षत्र प्रवेश
(संवतारम्भ में श्रवण (3) में)

2021 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
23 मई	वक्री	14:42
24 जुला	व. श्रव. (2)	20:58
13 सितं.	व. श्रव.(1)	20:38
11 अक्तू.	मार्गी	7:45
7 नवं.	श्रव.(2)	10:36
21 दिसं.	श्रव.(3)	21:50
(सन् 2022 ई.)		
21 जन.	श्रव.(4)	2:37
18 फर.	धनि.(1)	1:21
19 मार्च	धनि.(2)	20:08

मध्यम राहु नक्षत्र प्रवेश
(संवतारम्भ में रोहि. (3) में)

2 जून	रोहि.(2)	3:38
4 अग.	रोहि.(1)	1:29
5 अक्तू.	कृति.(4)	22:56
7 दिसं.	कृति.(3)	20:27
8 फर.(22)	कृति.(2)	18:11

मध्यम केतु नक्षत्र प्रवेश
(संवतारम्भ में ज्ये. (1) में)

2 जून	अनु.(4)	3:38
4 अग.	अनु.(3)	1:29
5 अक्तू.	अनु.(2)	22:56
7 दिसं.	अनु.(1)	20:27
8 फर.(22)	विशा.(4)	18:11

यूरेनस नक्षत्र प्रवेश
(संवतारम्भ में भर. (1) में)

3 मई	भर.(2)	9:59
11 जुला.	भर.(3)	12:18
20 अग.	वक्री	7:04
29 सितं.	व. भर.(2)	12:46

यूरेनस नक्षत्र प्रवेश

2022 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
14 जन.(22)	व.भर.(1)	5:04
18 जन.	मार्गी	20:50
23 जन.	भर.(2)	17:32

नैपच्यून नक्षत्र प्रवेश
(संवतारम्भ में पू.भा. (3) में)

25 जून	वक्री	24:58
23 अक्तू.	व. पू.भा.(2)	2:48
1 दिसं.	मार्गी	18:48
9 जन.(22)	पू.भा.(3)	9:41

प्लूटो नक्षत्र प्रवेश
(संवतारम्भ से उ.षा. 2 में)

28 अप्रै.	वक्री	1:32
6 अक्तू.	मार्गी	23:58
(सन् 2022 ई०)		
18 फर.	उ.षा.(3)	27:34

ग्रहों की अंशात्मक युतियां
(सन् 2021-22 ई.)

- 19 अप्रै. ➾ सूर्य-बुध (मेष)
- 26 अप्रै. ➾ बुध-शुक्र (मेष)
- 11 मई ➾ बुध-राहु (वृष)
- 18 मई ➾ शुक्र-राहु (वृष)
- 29 मई ➾ बुध-शुक्र (मिथुन)
- 1 जून ➾ सूर्य-राहु (वृष)
- 11 जून ➾ सूर्य-बुध (वृष)
- 13 जुला ➾ मंग.-शुक्र (कर्क)
- 1 अग. ➾ सूर्य-बुध (कर्क)
- 19 अग. ➾ मंग.-बुध (सिंह)
- 8 अक्तू ➾ सूर्य-मंग (कन्या)
- 9 अक्तू ➾ सूर्य-बुध (कन्या)
- 10 अक्तू ➾ मंग.-बुध (कन्या)
- 11 अक्तू ➾ शुक्र-केतु (वृश्चिक)
- 10 नवं. ➾ मंग.-बुध (तुला)
- 23 नवं. ➾ सूर्य-केतु (वृश्चिक)
- 25 नवं. ➾ सूर्य-केतु (वृश्चिक)
- 29 नवं. ➾ सूर्य-बुध (वृश्चिक)
- 14 दिसं. ➾ मंग.-केतु (वृश्चिक)

(सन 2022 ई.)

- 9 जन. ➾ सूर्य-शुक्र (धनु)
- 23 जन. ➾ सूर्य-बुध (मकर)
- 4 फर. ➾ सूर्य-शनि (मकर)
- 17 फर. ➾ मंग.-शुक्र (धनु)
- 2 मार्च ➾ बुध-शनि (मकर)
- 5 मार्च ➾ सूर्य-गुरु (कुम्भ)
- 6 मार्च ➾ मंग.-शुक्र (मकर)
- 21 मार्च ➾ बुध-गुरु (कुम्भ)
- 28 मार्च ➾ शुक्र-शनि (मकर)
- 5 अप्रै. ➾ मंग.-शनि (मकर)

द्विग्रही-योग-सन् 2021-22

- सूर्य-बुध ➾ 11 अप्रै. से 13 अप्रै. (मीन)
- सूर्य-शुक्र ➾ 13 अप्रै. से 4 मई (मेष)
- बुध-शुक्र ➾ 16 अप्रै. से 1 मई (मेष)
- सूर्य-बुध ➾ 17 अप्रै. से 1 मई (मेष)
- बुध-राहु ➾ 1 मई से 26 मई (वृष)
- बुध-शुक्र ➾ 4 मई से 26 मई (वृष)
- शुक्र-राहु ➾ 4 मई से 28 मई (वृष)
- सूर्य-शुक्र ➾ 14 मई से 28 मई (वृष)
- सूर्य-बुध ➾ 14 मई से 26 मई (वृष)
- सूर्य-राहु ➾ 14 मई से 15 जून (वृष)
- बुध-शुक्र ➾ 28 मई से 2 जून (मिथुन)
- मंग.-बुध ➾ 26 मई से 2 जून (मिथुन)
- मंग.-शुक्र ➾ 28 मई से 2 जून (मिथुन)
- सूर्य-बुध ➾ 2 जून से 15 जून (वृष)
- बुध-राहु ➾ 2 जून से 7 जुलाई (वृष)
- सूर्य-शुक्र ➾ 15 जून से 22 जून (मिथुन)
- मंग.-शुक्र ➾ 22 जून से 17 जुला. (कर्क)
- सूर्य-बुध ➾ 7 जुला. से 16 जुला. (मिथुन)
- मंग.-शुक्र ➾ 20 जुला. से 11 अग. (सिंह)
- सूर्य-बुध ➾ 25 जुला. से 8 अग. (कर्क)
- मंग.-बुध ➾ 9 अग. से 26 अग. (सिंह)
- सूर्य-मंग ➾ 16 अग. से 5 सितं. (सिंह)
- सूर्य-बुध ➾ 16 अग. से 26 अग. (सिंह)
- बुध-शुक्र ➾ 26 अग. से 5 सितं. (सिंह)
- मंग.-बुध ➾ 5 सितं. से 22 सितं. (कन्या)
- गुरु-शनि ➾ 14 सितं. से 19 नवं. (मकर)
- सूर्य-मंग ➾ 16 सितं. से 16 अक्तू. (कन्या)
- सूर्य-बुध ➾ 16 सितं. से 22 सितं. (कन्या)
- मंग.-बुध ➾ 1 अक्तू. से 21 अक्तू. (कन्या)
- शुक्र-केतु ➾ 2 अक्तू. से 30 अक्तू. (वृश्चिक)
- मंग.-बुध ➾ 2 नवं. से 20 नवं. (तुला)
- सूर्य-केतु ➾ 16 नवं. से 15 दिसं. (वृश्चिक)
- बुध-केतु ➾ 20 नवं. से 10 दिसं. (वृश्चिक)
- सूर्य-बुध ➾ 21 नवं. से 10 दिसं. (वृश्चिक)
- सूर्य-मंग. ➾ 5 दिसं. से 15 दिसं. (वृश्चिक)
- मंग.-केतु ➾ 5 दिसं. से 16 जन. (वृश्चिक)
- सूर्य-बुध ➾ 5 दिसं. से 10 दिसं. (वृश्चिक)
- शुक्र-शनि ➾ 8 दिसं. से 30 दिसं. (मकर)
- सूर्य-बुध ➾ 15 दिसं. से 29 दिसं. (धनु)
- बुध-शनि ➾ 29 दिसं. से 6 मार्च (मकर)
- सूर्य-शुक्र ➾ 30 दिसं. से 14 जन. (धनु)

(सन 2022 ई.)

- सूर्य-शनि ➾ 14 जन. से 12 फर. (मकर)
- मंग.-शुक्र ➾ 16 जन. से 26 फर. (धनु)
- सूर्य-गुरु ➾ 12 फर. से 14 मार्च (कुम्भ)
- मंग.-शनि ➾ 26 फर. से 6 अप्रै. (मकर)
- शुक्र-शनि ➾ 27 फर. से 31 मार्च (मकर)
- सूर्य-बुध ➾ 6 मार्च से 14 मार्च (कुम्भ)
- सूर्य-बुध ➾ 24 मार्च से 5 अप्रै. (मीन)

तीनग्रही-योग-(संवत् २०७८)

- सू.+बु.+शु. ➾ 17 अप्रै. से 30 अप्रै. (मेष)
- बु.+शु.+रा. ➾ 4 मई से 25 मई (वृष)
- सू.+बु.+रा. ➾ 14 मई से 25 मई (वृष)
- सू.+शु.+रा. ➾ 14 मई से 28 मई (वृष)
- सू.+बु.+शु. ➾ 14 मई से 26 मई (वृष)
- मं.+बु.+शु.. ➾ 29 मई से 1 जून (मिथुन)
- सू.+बु.+रा. ➾ 3 जून से 14 जून (वृष)
- सू.+मं.+शु. ➾ 16 जुला. (कर्क)
- सू.+मं.+बु. ➾ 16 अग. से 25 अग. (सिंह)
- सू.+मं.+बु. ➾ 17 सितं. से 21 सितं. (कन्या)
- सू.+मं.+बु. ➾ 2 अक्तू. से 16 अक्तू. (कन्या)
- सू.+मं.+बु. ➾ 2 नवं. से 15 नवं. (तुला)
- सू.+बु.+के. ➾ 21 नवं. से 9 दिसं. (वृश्चिक)
- सू.+मं.+के. ➾ 5 दिसं. से 14 दिसं. (वृश्चिक)

(सन 2022 ई.)

- सू.+बु.+श. ➾ 14 जन. से 12 फर. (मकर)
- मं.+बु.+श. ➾ 26 फर. से 5 मार्च (मकर)
- मं.+बु.+शु. ➾ 27 फर. से 5 मार्च (मकर)
- मं.+शु.+श. ➾ 27 फर. से 30 मार्च (मकर)

चान्द्र परम्परा अनुसार प्रत्येक मास के मुख्य व्रत-त्यौहार

(व्रत-पर्वों के तिथि-निर्णय एवं संक्षिप्त विधि-विधान सहित)

[इस श्रृंखला के अन्तर्गत भारतीय सनातन वैदिक संस्कृति के अनुसार 'पंचांगदिवाकर' में प्रत्येक कृष्ण/शुक्ल पक्ष में दिए जाने वाले मुख्य पर्व/व्रत/त्यौहारों का संक्षिप्त विवरण (शास्त्रोक्त तिथि निर्णय एवं करणीय कर्म) क्रमानुसार दिया जा रहा है। आशा है धर्मपरायण पाठकों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। [सुझाव आमंत्रित हैं।] गत पाँच वर्षों में हमने 'चैत्र से श्रावण' मास तक के मुख्य व्रत/पर्वों का विवरण लिख चुके हैं। इस वर्ष हम 'भाद्रपद मास' के मुख्य व्रत/पर्वों सम्बन्धी ही विधि-विधान का विवरण लिख रहे हैं। —पं. विवेक शर्मा, सुपुत्र स्व. पं. पन्ना लाल ज्यो., अड्डा होशियारपुर, जालन्धर।]

।। भाद्रपद मास ।। 'भाद्रपद कृष्ण पक्ष'

(1) कज्जली-तृतीया

इसमें चन्द्रोदय-व्यापिनी तिथि ली जाती है।

विधान—यद्यपि यह व्रत कुछ क्षेत्रों में श्रावण मास में किया जाता है, परन्तु भाद्रपद कृष्ण तृतीया को व्यापक रूप में होता है। माहेश्वरी वैश्य सम्प्रदाय के लोग इस दिन जौं, गेहूँ, चने और चावल के सत्तू में घी, मीठा और मेवा डालकर उसके कई पदार्थ बनाकर चन्द्रोदय के बाद एकभुक्त भोजन करना चाहिए। इसे **'सातूड़ी तीज'** अथवा **'सतवा तीज'** भी कहते हैं।

(2) श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत

तिथि-निर्णय—'संकष्ट-चतुर्थी व्रत' हेतु चन्द्रोदयव्यापिनी भाद्र. कृष्ण चतुर्थी ग्रहण की जाती है। यदि चतुर्थी दो दिन चन्द्रोदयव्यापिनी हो तो **'मातृ-विद्धा-प्रशस्यते'** के अनुसार तृतीया से युक्त चतुर्थी में यह व्रत करना चाहिए।

परन्तु यदि दोनों चतुर्थी तिथि चन्द्रोदयव्यापिनी न हो तो यह व्रत दूसरे दिन करना चाहिए। धर्मसिन्धु अनुसार—

'उभयदिने चंद्रोदयव्यापित्वे तृतीयायुतैव ग्राह्या।
दिनद्वये चन्द्रोदय-व्याप्त्यभावे परैव।।

व्रत-विधि—'ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः .... मम वर्तमानागामि-सकल संकट-निरसनपूर्वक सकल-अभीष्ट-सिद्धये श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व्रतमहं करिष्ये। दिनभर मौन रहकर संयमित व्यवहार करें और सायंकाल के समय पुनः स्नान करके गणेश जी के नाम-मन्त्रों से दूर्वा अर्पण करके मन्त्र-पुष्पाञ्जलि अर्पण करें। पुनः नमस्कार करके **'श्रीविप्राय नमस्तुभ्यं साक्षात् देवस्वरूपिणे। गणेशप्रीतये तुभ्यं मोदकान् वै ददाम्यहम्।'** से मोदक, सुपारी, मूँग और दक्षिणा सहित वायन (बायना) दें। फिर चन्द्रोदय होने पर अर्घ्य दें।

चन्द्र अर्घ्य मन्त्र—'ज्योत्स्नापते नमस्तुभ्यं नमस्ते ज्योतिषां पते।
नमस्ते रोहिणीकान्त गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते।।

भगवान् गणेश को 21 मोदक लेकर 1 गणञ्जय, 2. गणपति, 3. हेरम्ब, 4. धरणीधर, 5. महागणाधिपति, 6. यज्ञेश्वर, 7. शीघ्रप्रसाद, 8. अभङ्गसिद्धि, 9. अमृत, 10. मन्त्रज्ञ, 11. किन्नाम, 12. द्विपद, 13. सुमङ्गल, 14 बीज, 15 आशापूरक, 16 वरद, 17 शिव, 18 कश्यप, 19. नन्दन, 20. सिद्धिनाथ, 21. दुण्ढिराज—इन नाम-मन्त्रों से एक-एक मोदक अर्पण करें। इसके अतिरिक्त गोदान, शय्यादान, ब्राह्मण-भोजन करवाकर स्वयं भोजन करें। उक्त 21 मोदकों में से 1 गणेश जी के लिए छोड़ दे, 10 ब्राह्मणों को दे और दस अपने लिए रखें।

यह व्रत 4 या 13 वर्ष तक करने का विधान है। अतः अवधि समाप्त होने पर इसका उद्यापन करें।

(3) बहुला चतुर्थी व्रत

यह व्रत मध्य-प्रदेश में सायाह्न-व्यापिनी भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी को किया जाता है।

यदि चतुर्थी दो दिन सायाह्न-व्यापिनी हो तो पहले दिन व्रत होगा—**'दिनद्वये सायाह्न व्याप्तौ पूर्वा।'** (निर्णयसिन्धु)

यदि चतुर्थी दोनों दिन सायाह्न-काल को स्पर्श न करे तो यह व्रत दूसरे दिन होगा।

(4) चन्दन षष्ठी व्रत

यह व्रत चन्द्रोदयव्यापिनी भाद्रपद कृष्ण षष्ठी तिथि को किया जाता है। इसे विशेषकर विवाहिता या अविवाहिता लड़कियाँ ही करती हैं और चन्द्रोदय होने पर अर्घ्य देती है।

(5) श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत

श्रीमद्भागवत्, श्रीभविष्य, अग्नि, विष्णु आदि पुराणों, संहिताओं एवं व्रतोत्सव

निर्णायक सभी धर्मग्रन्थों के अनुसार भगवान् श्रीकृष्ण का अवतार (जन्म) भाद्रपद कृष्ण अष्टमी तिथि, बुधवार, रोहिणी नक्षत्र एवं वृष राशिस्थ चन्द्रमाकालीन अर्धरात्रि के समय हुआ था–

'सिंहराशिगते सूर्ये गगने जलदाकुले। मासि भाद्रपदे अष्टम्यां कृष्णपक्षे–
–अर्धरात्रिके वृषराशि स्थिते चन्द्रे, नक्षत्रे रोहिणी युते।। (भविष्यपुराण–उत्तरपर्व)

–इसलिए यह व्रत भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को किया जाता है। **परन्तु ध्यान रहे,** इन सभी निर्णायक तत्वों की विद्यमानता प्रतिवर्ष भाद्र. कृष्णाष्टमी को नहीं हो पाती अर्थात् यदि अष्टमी अर्धरात्रि में आ जाए तो कभी रोहिणी नक्षत्र का अभाव होता है। यदि अर्धरात्रि कालीन रोहिणी नक्षत्र आ जाए, तो कई बार अष्टमी तिथि अर्धरात्रि–व्यापिनी नहीं होती इत्यादि। सम्भवतः इसी कारण हमारे पुराणों, व्रत–निर्णायक धर्मग्रन्थों ने श्रीकृष्ण–जन्माष्टमी व्रत की तिथि का निर्णय स्मार्त एवं वैष्णव सम्प्रदायों के लिए भिन्न–भिन्न निर्णायक सिद्धान्तों से किया है। अधिकांश शास्त्रकारों एवं श्रीमद्भागवत् महापुराण में भी सिद्धान्त रूप में अर्धरात्रि एवं चन्द्रोदय–व्यापिनी अष्टमी में ही व्रतादि करने को मान्यता दी है। धर्मसिन्धुकार अनुसार भी–

कृष्ण जन्माष्टमीऽयं निशीथव्यापिनी ग्राह्या। पूर्वदिन एव निशीथयोगे पूर्वा।।

परन्तु वैष्णव मत के लोग विशेषकर मथुरा–वृन्दावन सहित उ.प्र., बिहार, महाराष्ट्र आदि प्रदेशों में उदयकालिक अष्टमी (नवमीयुता) के दिन ही व्रत/उपवास रखते आ रहे हैं, चाहे उस दिन अर्धरात्रि के समय अष्टमी हो या न हो। वैष्णव सम्प्रदाय के लोग दूसरे दिन उदयाकालिक (नवमीविद्धा अष्टमी वाले दिन ही) अष्टमी को ही व्रत करेंगे, पहिले दिन वाली अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी को सप्तमीविद्धा मानकर त्याग देंगे।

'वैष्णवास्तु अर्धरात्रिव्यापिनीमपि रोहिणीयुतामपि सप्तमीविद्धां परित्यज्य नवमीयुतैव ग्राह्या।।' (तिथि–निर्णय)

भट्टोजिदीक्षित के इस वाक्य से तो सारी स्थिति स्पष्ट हो जाएगी–

रोहिणीयोगऽभावेऽपि अर्द्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी ग्राह्या। परदिने नक्षत्र योगः अकिंचित्करः।।

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र का योग न होने पर भी अर्द्धरात्रि–व्यापिनी अष्टमी में ही यह (कृष्ण–जन्माष्टमी) व्रत करना चाहिए। दूसरे दिन रोहिणी नक्षत्र का योग विचार करना व्यर्थ है।

सिद्धान्तग्रन्थों में भी अधिकांशतः व्रत, पर्व, त्यौहारों के कर्मकाल (व्रत, पर्व से सम्बद्ध विशेष–पूजनादि कार्य किए जाते हैं, उस व्रत का कर्मकाल कहलाता है।) विद्यमान् तिथि के दिन ही करने के निर्देश दिए गए हैं। श्रीकृष्ण का जन्म अर्द्धरात्रि व्यापिनी अष्टमी में हुआ था, अतः **जन्माष्टमी व्रत का कर्मकाल** (श्रीकृष्ण की विशेष पूजा, अर्घ्यदान, बालरूप पूजादि) अर्धरात्रि ही है, अतएव जन्माष्टमी व्रत रखने के लिए अर्द्धरात्रि में अष्टमी का होना अनिवार्य है।

स्मार्त (गृहस्थ) सम्प्रदाय अनुसार जन्माष्टमी व्रत में निम्न स्थितियों का ध्यान रखकर निर्णय करना चाहिए)

(1) यदि अष्टमी केवल पहले दिन ही अर्द्धरात्रिव्यापिनी हो तो जन्माष्टमी व्रत पहले दिन होगा।

(2) यदि अष्टमी केवल दूसरे दिन ही अर्धरात्रिव्यापिनी हो तो जन्माष्टमी व्रत दूसरे दिन।

(3) यदि अष्टमी दोनों दिन अर्धरात्रिव्यापिनी हो और अर्धरात्रि में दोनों दिन रोहिणीनक्षत्र का योग न हो तो जन्माष्टमी व्रत दूसरे दिन होगा।

(4) यदि अष्टमीतिथि दोनों दिन अर्धरात्रिव्यापिनी हो और अर्धरात्रि में रोहिणी–नक्षत्र का योग एक ही दिन हो तो जन्माष्टमी का व्रत रोहिणी–योग वाले दिन होगा।

(5) यदि अष्टमी दोनों दिन अर्धरात्रिव्यापिनी हो और दोनों दिन अर्धरात्रि में रोहिणी का योग हो तो जन्माष्टमी व्रत दूसरे दिन।

(6) यदि दोनों दिन अष्टमी तिथि अर्धरात्रि व्यापिनी न हो तो प्रत्येक स्थिति में जन्माष्टमी व्रत दूसरे दिन होगा।

वास्तव में, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का व्रत तथा जन्मोत्सव दो अलग–अलग स्थितियां हैं। अतएव अर्द्धरात्रि व्यापिनी अष्टमी तिथि जब विद्यमान् हो, तभी यह व्रत रखना चाहिए–**यहीं अन्तिम निर्णय** है। अर्द्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी के साथ रोहिणी नक्षत्र–योग की स्थिति में **'जयन्ती'** नामक योग भी बन जाता है। अधिक स्पष्टता एवं विस्तार के लिए वि. संवत् 2073 के पंचांग में पृष्ठ 85 तथा इसी पंचांग के पृष्ठ 31 पर लिखा लेख भी पढ़ें।

व्रत–कृत्य—उपवास के दिन प्रातः स्नानादि नित्यकर्म करके सूर्य, ब्रह्मादि को नमस्कार कर पूर्व या उत्तर–मुख बैठकर तांबे के पात्र में जल ले और **'ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः .... ममाखिलपापप्रशमनपूर्वक–सर्वाभीष्टसिद्धये श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रतमहं करिष्ये।'** यदि षोडशोपचार सहित पूजन कर या करवा रहें हो तो संकल्प में '......... **श्रीकृष्णस्य षोडशोपचारैः पूजनं करिष्ये।'** भी पढ़ लें। षोडशोपचारपूजन रात्रि (प्रदोष या निशीथ) में करें। पूजन में देवकी, वासुदेव, बलदेव, नन्द, यशोदा और लक्ष्मी–इन सबका क्रमशः नाम निर्दिष्ट करना चाहिए। तथा पूजनानन्तर **'प्रणमे देवजननीं त्वया जातस्तु वामनः। वसुदेवात्** तथा **कृष्ण नमस्तुभ्यं नमो नमः।। सपुत्रार्घ्यं प्रदत्तं में गृहाणेमं नमोऽस्तु ते।'** से देवकी को अर्घ्य दे और **'धर्माय धर्मेश्वराय धर्मपतये धर्मसम्भवाय गोविन्दाय नमो नमः** से श्रीकृष्ण को 'पुष्पाञ्जलि' अर्पण करें। तब चन्द्रमा का पूजन कर अर्घ्य देवें।

'ॐ क्षीरोदार्णवसंभूत अत्रिनेत्र–समुद्भव। गृहाणार्घ्यं शशाङ्केमं रोहिण्या सहितो मम। ज्योत्स्नापते नमस्तुभ्यं नमस्ते ज्योतिषां पते। नमस्ते रोहिणीकान्त अर्घ्यं मे प्रतिगृह्यताम्।।'

तत्पश्चात् भगवान् श्रीकृष्ण को निम्न मन्त्र से अर्घ्य देवें–

'ॐ जातः कंसवधार्थाय भूभारोत्तारणाय च।
पाण्डवानां हितार्थाय धर्म–संस्थापनाय च।।
कौरवाणां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं देवक्या सहितो हरे।।'

तथा रात्रि के शेष भाग को स्तोत्र–पाठादि करते हुए बितावे। उसके बाद दूसरे दिन पूर्वाह्ण में पुनः स्नानादि के बाद व्रत की पारणा करें। यदि अभीष्ट तिथि या नक्षत्रादि के समाप्त होने में विलम्ब हो तो जल पीकर पारणा की पूर्ति करें तथा ब्राह्मण देवता को यथा-सामर्थ्य दान–दक्षिणा करें।

(6) कालाष्टमी व्रत

यदि भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को मृगशिर नक्षत्र हो तो शिवपूजन करके यह व्रत करें।

(7) श्रीगुग्गा–नवमी

पंजाब, हरियाणा, जम्मू आदि राज्यों में यह व्रत एवं उत्सव व्यापक रूप से मनाई जाती है। इसमें उदयव्यापिनी भाद्र. कृष्ण नवमी तिथि ली जाती है। यदि नवमी तिथि की वृद्धि हो जाए अर्थात् दो दिन व्याप्त हो तो यह पहले दिन मनाई जाएगी। एवं च, नवमी तिथि के क्षय होने पर यह नवमी वाले दिन ही मनाई जाएगी।

(8) एकादशी व्रत

भाद्रपद कृष्ण एकादशी **'अजा'** के नाम से प्रसिद्ध है। इसके व्रत से पुनर्जन्म की बाधा दूर हो जाती है। प्राचीनकाल में चक्रवर्ती हरिश्चन्द्र ने इसी व्रत से अपनी बिगड़ी हुई दशा से उद्धार पाया था। संकल्प, कथादि हेतु हमारी पुस्तक **'एकादशी माहात्म्य'** पढ़ें।

(9) वत्स–द्वादशी

इसमें भाद्र. कृष्ण द्वादशी को मध्याह्ण से पहले गोवत्स का पूजन करके (उनको पहले दिन के भिगोकर उगाये हुए) मूँग, मोठ और बाजरे का नैवेद्य भोग लगाते हैं। फिर मोठ, बाजरा पर रुपया रखकर बायना सास जी को दे दें। इस दिन बाजरे की ठण्डी रोटी खायें। गाय का दही, दूध, गेहूँ और चावल न खाएं। इसे पुत्रवती स्त्रियां ही करती हैं। इस दिन भैंस के दूध का ही सेवन होता है।

(10) कुशोत्पाटिनी अमावस्या

तिथि निर्णय–भाद्रपद कृष्ण अमावस्या में दिन के द्वितीय प्रहर में कुशोत्पाटन का विधान है। यदि दोनों दिन द्वितीय प्रहर में अमावस व्याप्त हो या न हो तो दूसरे दिन ही कुशोत्पाटन करना चाहिए।

कृत्य–इस दिन वर्षभर के धार्मिक कृत्यों तथा श्राद्धादि कृत्यों के लिए कुश–उत्पाटन किया जाता है। हिन्दुओं के किसी भी धार्मिक क्रिया–कलाप में कुश की अनिवार्यता होती है।–

पूजाकाले सर्वदैव कुशहस्तो भवेच्छुचिः।
कुशेन रहिता पूजा विफला कथिता मया।। (शब्दकल्पदुम)

अतः प्रत्येक गृहस्थ को इस दिन कुश–सञ्चय करना चाहिए। शास्त्रों में दस प्रकार के कुशों का विवरण प्राप्त होता है–

कुशाः काशा यवा दूर्वा उशीराश्च सकुन्दकाः।
गोधूमा ब्राह्मयो मौञ्जा दश दर्भाः सबल्वजाः।।

इनमें से जो भी कुश इस तिथि को मिल जाए, वही ग्रहण कर लेना चाहिए। इसदिन कुशा–सञ्चय करने से वर्षभर उसकी शुद्धता रहती है।

जिस कुश का मूल सुतीक्ष्ण हो, जिसमें पत्ती हो, अग्रभाग कटा न हो और हरा हो, वह देव तथा पितृ–दोनों कार्यों के लिए उपयुक्त होता है।

कुशोत्पाटन के लिए इस तिथि को पूर्वाह्ण में दर्भस्थल पर जाकर पूर्व या उत्तराभिमुख बैठकर निम्न मन्त्र पढ़ें और **'हुँ फट् स्वाहा'** कहकर दाहिने हाथ से एक बार में कुश उखाड़ें–

विरञ्चिना सहोत्पन्न परमेष्ठिन्निसर्गज।
नुद सर्वाणि पापानि दर्भ स्वस्तिकरो भव।।

(11) पिठोरी अमावस

'व्रते पिठोरसंज्ञेऽमा मध्याह्नव्यापिनी शुभा।' वाक्य अनुसार पिठोरी अमावस्या मध्याह्न व्यापिनी लेनी चाहिए।

यदि दो दिन अमावस मध्याह्ण–व्यापिनी हो या न हो तो दूसरे दिन पिठोरी अमावस होगी।

'भाद्रपद शुक्ल पक्ष'

(12) श्रीवराह–जयन्ती

भाद्रपद शुक्ल तृतीया तिथि जिस दिन अपराह्ण–व्यापिनी होगी, उसी दिन **'वराह–जयन्ती'** मनाई जाती है। तृतीया तिथि यदि दोनों दिन अपराह्ण–व्यापिनी हो अथवा न हो तो दूसरे दिन यह जयन्ती होगी। यथा–

रम्भाख्यां वर्जयित्वा तु तृतीयां द्विजसत्तम्।
अन्येषु सर्वकार्येषु गणयुक्ता प्रशस्यते।। (ब्रह्मवैवर्त पुराण)

(13) हरितालिका तृतीया

तिथि निर्णय–**'भाद्रस्य कज्जली कृष्णा शुक्ला च हरितालिका।'** के अनुसार

भाद्रपद शुक्ल तृतीया को '**हरितालिका**' का व्रत किया जाता है। इसमें मुहूर्त्तमात्र (1) हो तो भी परा-तिथि (चतुर्थीविद्धा) ग्राह्य की जाती है। (क्योंकि द्वितीया पितामह की और चतुर्थी पुत्र की तिथि है, अत: द्वितीया का योग निषेध और चतुर्थी का योग श्रेष्ठ होता है।)

'**मुहूर्त्तमात्र सत्त्वेऽपि दिने गौरीव्रतं परे।** (कालमाधव)

धर्मसिन्धु-अनुसार यदि दूसरे दिन तृतीया कुछ पल भी मिले, तो पिछली साठ घड़ी वाली तृतीया को छोड़कर चतुर्थीयुत ही ग्रहण करनी चाहिए। '**तदा पूर्वदिने षष्ठिघटिकामितामपि त्यक्त्वा परदिने स्वल्पापि चतुर्थीयुतैव ग्राह्या।।**' परन्तु यहाँ कालमाधवकार के मत को ही अधिक मान्यता प्राप्त है। अत: 1 घड़ी युक्त तृतीया भी चतुर्थीयुता ग्रहण करनी चाहिए।

कृत-कृत्य—इस व्रत में मुख्य रूप से शिव-पार्वती तथा गणेश जी का पूजन किया जाता है। भाद्रपद शुक्ल तृतीया को सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपने अखण्ड सौभाग्य की रक्षा के लिए बड़ी श्रद्धा, विश्वास और लग्न के साथ हरितालिका-व्रत (तीज) का उत्सव मनाती हैं। जिस त्याग-तपस्या और निष्ठा के साथ स्त्रियाँ यह व्रत रखती हैं, वह बड़ा ही कठिन है। इसमें फलाहार सेवन की बात तो दूर, निष्ठावान स्त्रियाँ जल तक नहीं ग्रहण करतीं। व्रत के दूसरे दिन प्रात:काल स्नान के पश्चात् व्रत परायण स्त्रियाँ सौभाग्य द्रव्य एवं वायन छूकर ब्राह्मणों को देती है।

संकल्प—धर्मप्राणां स्त्रियों/कन्याओं को चाहिए कि प्रात: स्नानादि पश्चात् निवृत्त होकर निम्न संकल्प कर लें-'**ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः ·············· अहं पत्युः दीर्घायु-आरोग्य-तस्य आनुकूल्याय च/अनुकूल-पतेः प्राप्तये, उमामहेश्वरसायुज्यसिद्धये हरितालिकाव्रतं करिष्ये।**'

माहात्म्य—इस व्रत को सर्वप्रथम गिरिराजनन्दिनी उमा ने किया, जिसके फलस्वरूप उन्हें भगवान् शिव पति रूप में प्राप्त हुए थे। इस व्रत के दिन स्त्रियाँ वह कथा भी सुनती हैं, जो पार्वती जी के जीवन में घटित हुई थी। (कथा के लिए उपर्युक्त प्रकाशित '**हरितालिक व्रत कथा**' पढ़ें।

(14) साम–उपाकर्म

सामवेद अनुयायी भाद्र. शुक्लपक्ष में अपराह्ण-व्यापिनी हस्त-नक्षत्र में उपाकर्म करते हैं। यदि हस्त नक्षत्र दो दिन अपराह्ण-काल को व्याप्त करें अथवा वह दो दिन अपराह्ण-काल एकदेश को ही स्पर्श करता हो तो उपाकर्म दूसरे दिन होता है। यदि केवल पहले दिन ही हस्त नक्षत्र अपराह्ण को पूर्णरूपेण या आंशिक रूप से व्याप्त करे तो उपाकर्म पहले दिन, तथा यदि हस्त केवल दूसरे दिन ही अपराह्ण-काल को स्पर्श करें अथवा दोनों दिन अपराह्ण का स्पर्श न करें तो उपाकर्म दूसरे दिन होगा। कुछ सामवेदी अनुयायियों को प्रात:काल और संगव-दोनों काल प्रशस्त कहे गए हैं। कुछ आचार्यों के मतानुसार पहले दिन अपराह्ण-व्याप्ति को त्यागकर दूसरे दिन संगवकाल के बाद भी हस्त नक्षत्र काल में उपाकर्म कर सकते हैं। एक अन्य मतानुसार यदि संक्रान्ति दोष के कारण यहाँ उपाकर्म सम्भव न हो तो उसे श्रावण मास के हस्तनक्षत्र में कर लेना चाहिए। कुछ विद्वान् आचार्यों के अनुसार भाद्र. के हस्त में संक्रान्ति-दोष होने पर श्रावण-पूर्णिमा के दिन उपाकर्म करके भाद्रपद-हस्तनक्षत्र पर्यन्त वेदाध्ययन नहीं करना चाहिए। उपाकर्म सम्बन्धी अन्य विवरण गतवर्षीय '**पंचांगदिवाकर**' (वि. संवत् 2077) में पृष्ठ 105 पर देखें।

(15) सिद्धि विनायक व्रत

तिथि–निर्णय—जिस दिन भाद्र.शुक्ल चतुर्थी मध्याह्न-व्यापिनी हो उस दिन यह व्रत किया जाता है। (1) यदि चतुर्थी दोनों दिन सम्पूर्णतया मध्याह्न-व्यापिनी हो या बिल्कुल स्पर्श न करें तो यह व्रत पहिले दिन होगा। (2) यदि चतुर्थी दोनों दिन समान या असमानरूप से मध्याह्न के एकदेश को व्याप्त करे तो भी पहले दिन व्रत करें। (3) यदि चतुर्थी तिथि पहले दिन मध्याह्न का स्पर्श न करती हो तथा केवल दूसरे दिन ही उसे स्पर्श करें तो व्रत दूसरे दिन होगा। (4) यदि चतुर्थी तिथि मध्याह्न-काल के एकभाग (एकदेश) को स्पर्श तथा दूसरे दिन मध्याह्न-काल में सम्पूर्ण व्याप्ति हो, तब यह व्रत दूसरे दिन किया जाएगा।

माहात्म्य—इस चतुर्थी के दिन रविवार या मंगलवार हो तो व्रत धारण करना विशेष प्रशस्त माना गया है-'**इयं रविभौमवार योगे प्रशस्ता।**'

इस व्रत के दिन प्रात: स्नानादि करके '**ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः ··········· मम सर्वकर्मसिद्धये सिद्धिविनायकपूजनमहं करिष्ये।**' से संकल्प करके भगवान् गणपति को 21 मोदक अर्पण करके पूजन, प्रार्थना करें तथा मोदकादि वितरण करके एक बार भोजन करें।

(16) कलंक चतुर्थी

भाद्र. शुक्ल चतुर्थी के दिन चन्द्रदर्शन होने पर मिथ्या कलंक लगता है। इसका अभिप्राय यह है कि चतुर्थी तिथि में चन्द्र-उदय होकर पंचमी तिथि तक वर्तमान हो अर्थात् चन्द्र-अस्त पंचमी तिथि में हो तो सिद्धिविनायक व्रत के दिन चन्द्रदर्शन् करना या होना दोषकारक नहीं होता तथा यदि पहिले दिन सायंकाल से चतुर्थी प्रारम्भ हो जाए अर्थात् तृतीया में चन्द्रोदय होकर चतुर्थी की व्याप्ति तक चन्द्रदर्शन हो (चन्द्र-अस्त चतुर्थी तिथि में हो) तो चन्द्रदर्शन का दोष पहिले दिन होगा, चाहे उस दिन सिद्धिविनायक व्रत न भी हो। निष्कर्ष यह है कि चतुर्थी में ही चन्द्रदर्शन का दोष है। सिद्धिविनायक व्रत का इससे सम्बन्ध नहीं है जोकि मध्याह्न-व्यापिनी ग्राह्य होता है।

चतुर्थ्यामुदितस्य पंचम्यां दर्शनं विनायकव्रत दिनेपि न दोषाय पूर्वदिने सायाह्नमारम्भ प्रवृत्तायां चतुर्थ्यां विनायकव्रताभावेपि पुर्वेद्युरेव चंद्रदर्शने दोष

इति सिध्यति। .... इदानीं लोकास्त्वेकतरपक्षाश्रयेण विनायक व्रतदिने एवं चंद्रं न पश्चयन्ति न तदयकाले दर्शनकाले व चतुर्थीसत्त्वासत्त्वे नियमेनाश्रयन्ति।। (धर्मसिन्धु)

परन्तु इस उपरोक्त नियम की उपेक्षा करते हुए लोक-परम्परानुसार महाराष्ट्र, गुजरातादि कुछ राज्यों में लोग सिद्धि-विनायक व्रत वाले दिन ही चन्द्रदर्शन का निषेध मानते हैं। चाहे उस दिन सायंकाल पंचमी तिथि व्याप्ति में ही चन्द्रास्त हो अर्थात् पंचमी तिथि तक चन्द्रमा के दर्शन हो रहे हों। वे उदयकाल या दर्शनकाल में चतुर्थी होने या न होने पर चन्द्रदर्शन के नियम को नहीं मानते। जबकि पंजाब, हिमाचल, जम्मू, हरियाणादि उत्तरी भारत में चतुर्थी तिथि व्यापिनी में ही चन्द्रदर्शन का दोष मानते हैं।

कृत्य—भाद्र. शुक्ल चतुर्थी सिद्धिविनायक चतुर्थी के नाम से जानी जाती है। इसमें किया गया दान, स्नान, उपवास और अर्चन गणेश जी की कृपा से सौ गुना हो जाता है, परन्तु इस चतुर्थी को चन्द्रदर्शन का निषेध किया गया है। इसदिन चन्द्रदर्शन से मिथ्या कलंक लगता है। अतः इस तिथि को चन्द्रदर्शन न हो, ऐसी सावधानी रखनी चाहिए।

यदि दैववशात् चन्द्रदर्शन हो जाए तो इस दोष शमन के लिए निम्न मन्त्र का पाठ करना चाहिए—**सिंहः प्रसेनमवधीत्सिंहो जाम्बवता हतः।**

सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः।। (विष्णुपुराण ४/१३/४२)

और स्यमन्तक-मणि की कथा पढ़नी/सुननी चाहिए। (देखें हमारी पुस्तक '**भारतीय व्रत-पर्व**')

(17) ऋषि–पञ्चमी

भाद्रपद शुक्लपक्ष की पञ्चमी '**ऋषिपंचमी**' कहलाती है। इसदिन किए जाने वाले व्रत को ऋषि-पंचमी व्रत कहते हैं। यह व्रत ज्ञात-अज्ञात पापों के शमन के लिए किया जाता है। अतः स्त्री-पुरुष-दोनों इस व्रत को करते हैं। स्त्रियों से रजस्वला अवस्था में घर के पात्रादि का प्रायः स्पर्श हो जाता है, इससे होने वाले पाप के शमन के लिए वे इस व्रत को करती हैं। इस व्रत में सप्तर्षियों सहित अरुन्धती का पूजन होता है, इसीलिए इसे '**ऋषिपंचमी**' कहते हैं।

मध्याह्न-व्यापिनी भाद्र. शुक्ल पंचमी के दिन '**ऋषि-पंचमी**' होती है। **यथा**—

'भाद्रशुक्लपंचमी ऋषिपंचमी सा मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्या।

दिनद्वये मध्याह्नव्याप्तौ तद्व्याप्तौ च पूर्वैव।।'

दोनों दिन पंचमी मध्याह्न में व्याप्त या अव्याप्त हो तो पहले दिन ऋषिपंचमी होगी।

व्रत-विधान—*संकल्प*—**अमुकगोत्रा अमुकीदेवी अहं मम आत्मनो रजस्वलावस्थायां गृहभाण्डादिस्पर्श-दोष-परिहारार्थं अरुन्धतीसहित सप्तर्षि पूजनं करिष्ये।'**

अपने घर के शुद्ध स्थल में मध्याह्न के समय हरिद्रा आदि से चौकोर मण्डल बनाकर उस पर सप्तर्षियों का स्थापन करें तथा गन्ध, पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्यादि से पूजन कर '**कश्यपोऽत्रिर्भरद्वाजो विश्वामित्रोऽथ गौतमः। जमदग्निर्वसिष्ठश्च सप्तैते ऋषयः स्मृताः।। दहन्तु पापं मे सर्वं गृह्णन्त्वर्घ्यं नमो नमः।।**' से अर्घ्य दें। (कथा वृत्तान्त हमारी पुस्तक में देखें)

यह व्रत शरीर के द्वारा अशौच-अवस्था में किए गए स्पर्शास्पर्श तथा अन्य पापों के प्रायश्चित के रूप में किया जाता है। इस व्रत से स्त्रियों का रजस्वलावस्था में स्पर्शास्पर्श का विचार रखने की शिक्षा लेनी चाहिए। साथ ही पुरुषों को भी इन दिनों संयमपूर्वक रहना चाहिए।

(18) सूर्य षष्ठी व्रत

सप्तमीविद्धा भाद्रपद शुक्ल षष्ठी को स्नान, दान, जप और व्रत करने से अक्षय फल होता है। विशेषकर सूर्य का पूजन, गङ्गा का दर्शन और पञ्चगव्यप्राशन से अश्वमेघ के समान फल होता है।

(19) चम्पा–षष्ठी

यदि भाद्र. शुक्ल षष्ठी को भौमवार, विशाखा नक्षत्र और वैधृति योग हो तो '**चम्पा-षष्ठी**' होती है। इसके निमित्त प्रभात में स्नान करके कलश पर कुङ्कुम से आरे बनावे, उमें रथ, अरुण और सूर्य का (सूर्य के 12 नामों से) पूजन करें और ब्राह्मणों को भोजन कराके स्वयं भोजन करें।

(20) मुक्ताभरण (सन्तान) सप्तमी व्रत

भाद्रपद शुक्ल षष्ठीविद्धा सप्तमी को शुद्ध भूमि में भवानी और शङ्कर की मूर्त्ति लिखकर उनका षोडशोपचार पूजन करें और स्वयं फल खाकर व्रत करें।

(21) श्रीराधाष्टमी

भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को दिन के समय श्रीराधा जी का वृषभानु के यहाँ यज्ञभूमि में प्राकट्य हुआ था। कुछ महानुभाव प्रातःकाल प्राकट्य हुआ मानते हैं। सम्भव है, कल्पभेद से उनकी मान्यता सत्य हो, पर भविष्य-पुराण में मध्याह्न का ही उल्लेख मिलता है। अतः मध्याह्नव्यापिनी भाद्र. शुक्ल अष्टमी में '**राधाष्टमी व्रत**' किया जाता है।

भाद्रे मासि सिते पक्षे अष्टमी या तिथिर्भवेत्।

अस्यां दिनार्द्धेऽभिजिते नक्षत्रे चानुराधिके।। (भविष्यपुराण)

यदि अष्टमी दो दिन मध्याह्न-व्यापिनी या अव्यापिनी हो तो यह व्रत दूसरे दिन किया जाए-'**व्रतमात्रेऽष्टमी शुक्लापक्षे परा कृष्णपक्षे पूर्वा।।**' (धर्मसिन्धु)

महिमा—जो मनुष्य राधा-राधा कहता है तथा स्मरण करता है, वह सब तीर्थों के संस्कार से युक्त होकर सब प्रकार की विद्या की प्राप्ति में प्रयत्नवान बनता है। नारदपुराण अनुसार विधिपूर्वक राधाष्टमी व्रत करने से मनुष्य व्रज का रहस्य जान लेता है।

नोट—'**भाद्रपद शुक्ल पक्ष**' के शेष पर्व-त्यौहार, पार्वण श्राद्ध सम्बन्धी विभिन्न नियम तथा '**आश्विन-मास**' के व्रत-पर्वों का तिथि निर्णय एवं कृत-अकृत्य, विधि-विधान आदि आगामी वर्ष के '**पंचांगदिवाकर**' में दिया जाएगा।

वि. संवत् २०७८ में त्रयोदश (13) दिनात्मक पक्ष का फल
('विश्वघस्र पक्ष' का फल)

विक्रमी संवत् २०७८ में तिथियों की प्रत्यक्ष सूक्ष्म गणना के कारण भाद्रपद शुक्ल पक्ष (8 सितंबर से 20 सितंबर, 2021 ई.) में तेरह दिन का पक्ष घटित हो रहा है। इसका फल शास्त्रों में अशुभ एवं अनिष्टकारी बताया गया है।

सामान्यतः सूर्य-चन्द्रमा की स्पष्ट गणित प्रक्रिया के बाद प्रत्येक भारतीय पंचांग में कृष्ण अथवा शुक्ल पक्ष के अन्तर्गत प्रतिवर्ष पक्ष के दिन 14, 15 अथवा 16 दिन घटित हो जाते हैं अर्थात् पक्ष में कोई तिथि क्षय हो जाने की स्थिति में 14, तिथि की वृद्धि अर्थात् 24 घण्टे से अधिक व्याप्ति-एक वार से दूसरे वार के आरम्भ से आगे तक चले गए, तो दो दिन व्याप्ति होने के कारण पक्ष में 16 दिन बन जाते हैं तथा यदि किसी तिथि का क्षय या वृद्धि न हुई हो तो पक्ष में 15 दिन ही होते हैं। कई बार सूर्य-चन्द्र की स्पष्ट गणितप्रक्रिया के कारण किसी पक्ष में दो बार तिथि का क्षय हो जाने से 13 दिन का पक्ष भी आ जाता है। इसे **'विश्वघस्र पक्ष'** भी कहते हैं। महाभारत में भी तेरह दिन के पक्ष के अशुभत्व के सम्बन्ध में वर्णन मिलता है। अन्य शास्त्रकारों ने भी त्रयोदश दिनात्मक पक्ष के अशुभत्व के विषय में अनेकत्र प्रमाण मिलते हैं। यथा-

'अनेकयुग साहस्त्रयाद् दैवयोगात् प्रजायते।
त्रयोदशदिने पक्षः तदा संहरते जगत्।।' (मेघ महोदय)

अर्थात् कई एक युगों में प्रजा का नाश करने के निमित्त तेरह दिन का पक्ष आता है अर्थात् जिस पक्ष में तेरह दिन हों, वह पक्ष लोगों में क्लिष्ट रोग उत्पादक, महँगाई, विग्रह, उपद्रव एवं हिंसा आदि अशुभ फलकारक होता है। विश्व में किसी देश का विघटन अर्थात् भूगोल में परिवर्तन होता है। समाज में सर्वत्र अशान्ति का वातावरण फैलता है। अन्यत्र भी इस सम्बन्ध में अशुभ फल कहे गए हैं-

'यदा च जायते पक्षस्त्रयोदश दिनात्मकः।
भवेल्लोक क्षयो-घोरो रुण्डमुण्डमालायुता मही।।'
'त्रयोदशदिनः पक्षो भवेद् वर्षाष्टकान्तरे।
तदा नगरभंगः स्यात् छत्रभंगो महर्घता।।'

इस त्रयोदश दिनात्मक पक्ष के प्रभावस्वरूप विश्व एवं भारत में राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियां अस्थिर एवं अशान्तिपूर्ण होंगी। राजनैतिक पार्टियों के मध्य विग्रह, टकराव एवं बिखराव पैदा होंगे। कहीं तोड़-फोड़, हिंसा, विस्फोटक घटनाएँ एवं छत्रभंग की आशंका होगी। कहीं भयंकर युद्ध का वातावरण बनने से अशान्ति बने तथा कहीं भूकम्प, दुर्भिक्ष, भूस्खलन आदि प्राकृतिक प्रकोपों से भारी जन-धन हानि के योग बनते हैं। दैनिक उपभोग्य की वस्तुओं में ज़बरदस्त तेजी होगी। किसी प्रमुख व्यक्ति के निधन से समाज में शोक एवं विस्मय उत्पन्न हो।

तेरह-दिन के पक्ष में शास्त्रों में विवाह, मुण्डन, गृह-प्रवेश, उपनयन आदि शुभ कार्यों का निषेध माना गया है। ज्योतिर्निबन्धानुसार-

'उपनयनं परिणयनं वेश्मारम्भादि कर्माणि।
यात्रां द्विक्षयपक्षे कुर्यात् न जिजीविषु पुरुषः।।'

उपरोक्त शास्त्र-वाक्य को आधार मानकर परम्परावश कुछ विद्वान इस **'विश्वघस्र-पक्ष'** में शुभ कार्यों का निषेध मानते आ रहे हैं, परन्तु मुहूर्त चिन्तामणि में कश्यप मुनि के मतानुसार केन्द्र/त्रिकोण में शुभ ग्रहस्थिति होने पर इस विश्वघस्र पक्ष का दोष समाप्त हो जाता है- **'अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यृक्ष-सम्भवाः।**
ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे।।'

[मुहूर्त-चिन्तामणि (पीयूषधारा) में इस श्लोक के स्पष्टीकरण में 'पक्षदोष' को = 'त्रयोदशदिनात्मकादि' लिखा गया है।]

अतएव उपरोक्त शास्त्र-वाक्यानुसार ही हमने त्रयोदश-दिनात्मक पक्ष में विवाह तथा अन्य मुहूर्त्त दिए हैं। परन्तु हमारे परामर्श अनुसार इन्हें अत्यावश्यक परिस्थिति में ही ग्रहण करना चाहिए। यहाँ यह ध्यान रखना चाहिए कि विवाहादि मुहूर्त्त के समय शुभ लग्न में बुध-गुरु-शुक्र में से कोई भी ग्रह केन्द्र (1, 4, 10) अथवा त्रिकोण (5, 9) स्थानों पर होना चाहिए। केवल केन्द्र के 7वें भाव (स्थान) को नहीं लेना चाहिए। यथा-

'केन्द्रे कोणे जीव आये रवौ वा लग्ने चन्द्रे वापि वर्गोत्तमे वा।
सर्वे दोषा नाशमायान्ति चन्द्रे लाभे तद्वददुर्मुहूर्त्तांश-दोषाः।।'

❑ ग्रह-अनुकूलता ❑

देवब्राह्मणवन्दनाद् गुरुवचः सम्पादनात्प्रत्यहं साधूनामभिभाषणाच्छुतिरव-श्रेयस्कथाकर्णनात्।
होमादध्वरदर्शनाच्छुचिमनोभावाज्जपाद्दानतो नो कुर्वन्ति कदाचिदेव पुरुषस्यैवं ग्रहाः पीडनम्।।

-देवताओं और ब्राह्मणों की वन्दना करने से, गुरु की आज्ञा का पालन करने से, प्रतिदिन सज्जनों के साथ वार्ता करने से, वेदों की कल्याणकारी कथाओं का श्रवण करने से, हवन करने से, यज्ञ का दर्शन करने से, अन्तःकरण पवित्र रखने से, भगवन्नामजप तथा दान करने से कभी भी ग्रह पुरुष को पीड़ा नहीं पहुँचाते, अपितु उसका सदा कल्याण ही करते हैं।

वि. संवत् २०७८, चैत्र शुक्ल पक्ष					शाक: १९४३					तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश	सन् 2021 ई. (ता. 13 से 27 अप्रैल तक), हिजरी सन् 1442 सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त–ग्रीष्म ऋतु:	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट	भा.स्टैं.टा. जालन्धर	
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घटी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घटी पल	योग	समाप्तिकाल घटी पल	करण	समाप्तिकाल घटी पल	अं. अप्रैल	मु. शाबा.	[illegible]	सौ. प्र.	घड़ी–पल	ग्रह दर्शन—प्रात: गुरु पूर्वकपाल में और शनि इससे ऊपर होगा। सायं मंगल पश्चिम-कपाल में तथा 18 अप्रै. से शुक्र भी पश्चिम क्षितिज में दिखाई देगा। बुध अस्त है।	रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
३१:५३	१	मंग	१०:२८	अश्वि	२०:३३	विष्क	२२:५३	ब	१०:२८	23	30	13	वैश	मेष	'राक्षस' नाम वि. संवत् 2078 प्रारम्भ, चैत्र (वासन्त) नवरात्र प्रा. (A)	११:२९:०९:५५	6:06	18:51
३१:५८	२	बुध	१६:४८	भर.	२८:१५	प्रीति	२५:२३	कौ	१६:४८	24	रम	14	२	वृ.४५:१३	कुम्भ महापर्व (हरिद्वार), प्रमुख (तृतीय) शाही स्नान (देखें पृष्ठ 3),(B)	००:००:०८:४२	6:05	18:52
३२:००	३	गुरु	२३:३०	कृति.	३६:१३	आयु	२८:०८	ग	२३:३०	25	2	15	३	वृष	भ. ५६:४९ से, गणगौरी तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती	००:०१:०७:२५	6:04	18:52
३२:०५	४	शुक्र	३०:०८	रोहि.	४४:०३	सौभा	३०:५०	वि	३०:०८	26	3	16	४	वृष	भ. ३०:०८ तक, बुध अश्वि. १ मेष में ३७:१३ (20:56), दमनक चतुर्थी	००:०२:०६:०९	6:03	18:53
३२:१३	५	शनि	३६:२०	मृग.	५१:२३	शोभ	३३:१३	ब	३:१४	27	4	17	५	मि.१७:५०	श्री (लक्ष्मी) पंचमी, नाग-पंचमी ['राक्षस' सम्वत्सर (देखें पृ. 24)]	००:०३:०४:४७	6:01	18:54
३२:१५	६	रवि	४१:२८	आर्द्रा	५७:३५	अति	३४:४८	कौ	८:५४	28	5	18	६	मिथुन	स्कन्द षष्ठी व्रत, शुक्र पश्चिम में उदय ४२:५५ (23:10) [शुक्र उदय 18 अप्रै.]	००:०४:०३:२५	6:00	18:54
३२:२०	७	चन्द्र	४५:०८	पुन.	६०:००	सुक	३५:१५	ग	१३:१८	29	6	19	७	क.४६:१५	भ. ४५:०८ से, सूर्य सायन वृष में ५०:१५, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ	००:०५:०२:०२	5:59	18:55
३२:२५	८	मंग	४६:५५	पुन.	२:१८	धृति	३४:२३	वि	१६:०२	30	7	20	८	कर्क	भ. १६:०२ तक, श्रीदुर्गाष्टमी, शुक्र भर. में ४७:४५, अगस्त्य-अस्त (C)	००:०६:००:३५	5:58	18:56
३२:२८	९	बुध	४६:३८	पुष्य	५:०५	शूल	३१:५३	बा	१६:४७	वैश	8	21	९	कर्क	श्रीदुर्गा-नवमी, नवरात्र समाप्त, श्रीरामनवमी, स्नान-तिथिपर्व (D)	००:०६:५९:०७	5:57	18:56
३२:३३	१०	गुरु	४४:१०	आश्ले	५:४८	गंड	२७:४०	तै	१५:२४	2	9	22	१०	सिं. ५:४८	बुध भर. में ५६:१० (28:24), नवरात्र पारणा +गण्डमूल 7:42 तक	००:०७:५७:३६	5:56	18:57
३२:३८	११	शुक्र	३९:४३	मघा	४:२८	वृद्धि	२१:५०	व	११:५७	3	10	23	११	सिंह	भ. ११:५७ से ३९:४३ तक, कामदा एकादशी व्रत, लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव+	००:०८:५६:०३	5:55	18:58
३२:४३	१२	शनि	३३:३०	पू.फा. उ.फा.	१:१० ५६:१३	ध्रुव	१४:३०	ब	६:३७	4	11	24	१२	कं.१५:०५	शनि प्रदोष व्रत, मंगल आर्द्रा में ४९:१८, श्रीविष्णु-दमनोत्सव, (E)	००:०९:५४:२८	5:54	18:58
३२:४५	१३	रवि	२५:५०	हस्त	५०:०५	व्या. हर्ष	५:५३ ५६:१३	तै	२५:५०	5	12	25	१३	कन्या	गुरु धनि. 4 में ६:४५, अनङ्ग त्रयोदशी, श्रीमहावीर-जयन्ती (जैन), स.सि.यो.	००:१०:५२:५२	5:53	18:59
३२:५०	१४	चन्द्र	१७:१३	चित्रा	४३:०५	वज्र	४६:००	व	१७:१३	6	13	26	१४	तु.१६:४०	भ. १७:१३ से ४२:३६ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, शिव दमनोत्सव	००:११:५१:१२	5:52	19:00
३२:५३	१५	मंग	७:५८	स्वा.	३५:४३	सिद्धि	३५:२८	ब	७:५८	7	14	27	१५	तुला	चैत्र-पूर्णिमा (स्नानदानादि), वैशाखस्नान प्रारम्भ, सूर्य भरणी में ३१:१८ (F)	००:१२:४९:३२	5:51	19:00

(A) चन्द्रदर्शन, मु. १५, घटस्थापन, सूर्य अश्वि १ मेष में ५१:०८ (26:33), वैशाख संक्रान्ति, मु. १५, पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रात: 8:57 तक, वैशाखी पर्व (पंजाब), मंगल मिथुन में ४७:४८ (25:13), संवत्सरफल श्रवण, ध्वजारोहण, तैलाभ्यंग, श्रीदुर्गा-पूजा, गुड़ी-पड़वा, गण्डमूल **(B)** रमज़ान (मुस्लि.) मास प्रारम्भ **(C)** भवान्युत्पति, अशोकाष्टमी, मेला बाहूफोर्ट (जम्मू), काँगड़ा देवी, नैनादेवी (हि.प्र.) अन्नपूर्णा पूजन **(D)** -कुम्भ महापर्व (हरिद्वार) देखें पृष्ठ 3, शक वैशाख प्रारम्भ **(E)** त्रिपुष्कर योग 6:22 से **(F)** श्रीहनुमान जयन्ती (दक्षिण-भारत), चतुर्थ (अन्तिम) शाही स्नान कुम्भ महापर्व (हरिद्वार)

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 20 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	२	०	१०	०	९	१	७
५	२	३	७	२	१२	१८	१८	१८
५९	३६	४४	२	३०	१९	२८	५६	५६
२७	५९	५	३४	५७	३१	१५	२८	२८
58	763	36	127	9	74	3	3	3
34	2	20	29	49	8	6	11	11
अश्वि २	पुन ४	मृग ४	अश्वि ३	धनि ३	अश्वि ४	श्रव ३	रोहि ३	ज्ये. १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय, 20 अप्रै.

१ सू. बु. शु.; २ रा.; ३ मं.; ४ चं.; ५; ६; ७; ८ के.; ९; १० श.; ११ गु.; १२

भौमे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 27 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	२	०	१०	०	९	१	७
१२	१०	७	२१	३	२०	१८	१८	१८
४८	४३	५८	५३	३७	५८	४८	३४	३४
४१	१६	४१	१६	८	२	१०	१२	१२
58	912	36	124	8	74	2	3	3
20	49	25	14	58	00	29	10	10
अश्वि ४	स्वा. २	आर्द्रा १	भ. ३	धनि ४	भ. ३	श्रव ३	रोहि ३	ज्ये. १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 27 अप्रैल

१ सू. बु. शु.; २ रा.; ३ मं.; ४; ५; ६; ७ चं.; ८ के.; ९; १० श.; ११ गु.; १२

चैत्र शुक्ल पक्षफल–

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (13 अप्रैल, मंगलवार) से 'शिवविंशति' का 'राक्षस' नामक नया विक्रमी संवत् २०७८ प्रारम्भ होगा। आगामी संवत् काल में व्रतानुष्ठान, संकल्प, दानादि शुभ कार्यों में 'राक्षस' नामक संवत्सर का ही प्रयोग होगा। नए सम्वत् का राजा 'मंगल' तथा मन्त्री भी 'मंगल' है। जब राजा और मन्त्री के पद एक ही ग्रह के पास हों (और वे भी क्रूर ग्रह के पास), तो समाज में आवेश एवं क्रोध के कारण हिंसक एवं उपद्रव की घटनाएँ अधिक होंगी। राजनेताओं के मध्य टकराव एवं परस्पर अविश्वास, समाज एवं लोगों में क्लिष्ट रोग भय, पीड़ा, चोरी, पित्त-रोगों की बहुलता, भीषण अग्निकाण्ड, वाहन दुर्घटनाएँ अधिक हों-"स्वयं राजा स्वयं मन्त्री जनेषु रोगपीड़ा चौराग्नि, शंका-विग्रह भयं च नृपाणाम्।" प्रतिपदा को शुभ मुहूर्त में सम्वत्सर पूजन, घटस्थापन, ताम्र या मिट्टी के पात्र में जौं, गेहूँ आदि के बीज बोना, ॐकार सहित श्रीगणेश, विष्णु, शिव, श्रीदुर्गा आदि पंचदेवों की पूजा-अर्चना करनी चाहिए। ब्राह्मणमुख से संवत्-राजादि के फलश्रवण के बाद श्रीदुर्गा/गणेश प्रतिमा के सम्मुख प्रतिपदा से नवमी तक अखण्ड दीप-ज्योति प्रज्वलित करके संकल्पपूर्वक नित्य श्रीदुर्गा-सप्तशती का पाठ करने का विधान है। पूजनोपरान्त ब्राह्मण को भोजन तथा यथाशक्ति पंचांगादि धर्म-ग्रन्थ, फल, वस्त्र, मिष्ठान्न आदि का दान करना शुभ होता है। अन्तिम नवरात्र (या दशमी) के दिन हरी दूर्भा को पूजार्चन के पश्चात् नदी/नहर में विसर्जन करने की परम्परा है। नवरात्रों (विशेषकर प्रतिपदा को) में नीम के कोमल पत्तों एवं पुष्पों (कपोलों) का चूर्ण बनाकर उसमें उचित मात्रा में सेंधा नमक, काली-मिर्च, हींग, ईमली, जीरा, अजवायन, मिश्री (या शक्कर) सभी वस्तुएं पीसकर चूर्ण बनाकर भगवान् को भोग लगाकर ग्रहण करने से वर्षभर त्वचा विकार, कुष्ट आदि रक्त विकारों का भय नहीं रहता तथा आरोग्यता बनी रहती है। ता. 13 अप्रैल, मंगलवार को वैशाख संक्रान्ति 15 मुहूर्त्ति है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही वैशाख संक्रान्ति अर्द्धरात्रि के बाद 2 बजकर 33 मिनट पर मकर लग्न में प्रवेश करेगी। क्योंकि वैशाख सं. का पुण्यकाल आगामी दिन 14 अप्रैल, बुधवार को प्रात: 8:57 तक होगा। अतएव कुम्भ-महापर्व (हरिद्वार) का मुख्य शाही स्नान भी इसी दिन होगा (विशेष विवरण के लिए पृष्ठ 3-10 देखें)।

वि. संवत् २०७८, वैशाख कृष्ण पक्ष शाक: १९४३

सन् 2021 ई. (ता. 28 अप्रैल से 11 मई तक), हिजरी सन् 1442
सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु:

ग्रह दर्शन—प्रात: गुरु पूर्वकपाल में तथा शनि याम्योत्तरवृत्त में होंगे। सायं शुक्र पश्चिमक्षितिज में, 30 अप्रै. से बुध भी पश्चिम में होगा। मंगल पश्चिमकपाल में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी. पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी. पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी. पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी. पल	वैशा. श.	रमजान	अंग्रेजी	वैशा. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	विवरण	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
अवम्	१	मंग	५८:३०	००	००	००	००	०	००	0	0	०	०	००	वैशाख कृष्ण प्रतिपदा का क्षय ०० ००	०० ०० ०० ००	००	००
३२:५८	२	बुध	४९:२३	विशा	२८:२८	व्य.	२५:००	तै	२३:५७	8	15	28	१६	वृ.१५:१५		००:१३:४७:४९	5:50	19:01
३३:०३	३	गुरु	४०:५३	अनु	२१:४०	वरी	१४:५८	व	१५:०८	9	16	29	१७	वृश्चिक	भ. १५:०८ से ४०:५३ तक, बुध कृतिका में १९:०३ (13:26)	००:१४:४६:०५	5:49	19:02
३३:०५	४	शुक्र	३३:२५	ज्ये.	१५:५०	परि. शिव	५:३८ ५७:१३	ब	७:०९	10	17	30	१८	ध.१५:५०	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 20), **बुध वृष में ५९:४२ (29:41), (A)**	००:१५:४४:१८	5:48	19:02
३३:१०	५	शनि	२७:१८	मूल	११:१३	सिद्ध	५०:००	तै	२७:१८	11	18	मई	१९	धनु	मई मास प्रारम्भ, शुक्र कृतिका में ३६:४३, श्रम (मज़दूर) दिवस, **(B)**	००:१६:४२:३१	5:47	19:03
३३:१३	६	रवि	२२:४३	पू.षा.	८:०३	साध्य	४४:०८	व	२२:४३	12	19	2	२०	म.२२:३०	भ. २२:४३ से ५१:१६ तक, स. सि. यो. 8:59 से **(B)** गण्डमूल 10:16 तक	००:१७:४०:४२	5:46	19:04
३३:१८	७	चन्द्र	१९:४८	उ.षा.	६:३३	शुभ	३९:३८	ब	१९:४८	13	20	3	२१	मकर	स. सि. यो. 8:22 से	००:१८:३८:५१	5:45	19:04
३३:२३	८	मंग	१८:३८	श्रव.	६:४५	शुक्ल	३६:३३	कौ	१८:३८	14	21	4	२२	कुं.३७:३०	**पंचक प्रारम्भ ३७:३०, शुक्र वृष में १९:१३** (13:25)	००:१९:३६:५९	5:44	19:05
३३:२८	९	बुध	१९:०८	धनि.	८:४०	ब्रह्म	३४:४३	ग	१९:०८	15	22	5	२३	कुम्भ	भ. ५०:०९ तक,	००:२०:३५:०५	5:43	19:06
३३:३०	१०	गुरु	२१:१०	शत.	१२:०३	ऐन्द्र	३४:०५	वि	२१:१०	16	23	6	२४	कुम्भ	भ. २१:१० तक, बुध रोहिणी में २९:५२ (17:40)	००:२१:३३:११	5:43	19:07
३३:३३	११	शुक्र	२४:३८	पू.भा.	१६:५०	वैधृ	३४:२८	बा	२४:३८	17	24	7	२५	मी. ०:३३	**वरूथिनी एकादशी व्रत**, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती, श्रीरविन्द्रनाथ टैगोर जयं.	००:२२:३१:१५	5:42	19:07
३३:३८	१२	शनि	२९:१०	उ.भा.	२२:४५	विष्क	३५:४३	तै	२९:१०	18	25	8	२६	मीन	**शनि प्रदोष व्रत**, गण्डमूल 14:47 बाद	००:२३:२९:१९	5:41	19:08
३३:४३	१३	रवि	३४:३८	रेव.	२९:३३	प्रीति	३७:३८	ग	१:५४	19	26	9	२७	मे.२९:३३	भ. ३४:३८ से, **पंचक समाप्त २९:३३** (17:29), मासशिवरात्रि व्रत	००:२४:२७:२०	5:40	19:09
३३:४५	१४	चन्द्र	४०:४३	अश्वि	३६:५५	आयु	४०:००	वि	७:४१	20	27	10	२८	मेष	भ. ७:४१ तक, गण्डमूल 20:25 तक	००:२५:२५:१९	5:39	19:09
३३:४८	३०	मंग	४७:०८	भर.	४४:४०	सौभा	४२:३५	च	१३:५६	21	28	11	२९	मेष	**वैशाख (भौमवती) अमावस**, सूर्य कृति. में १७:१५, **मेला हरिद्वार- (C)**	००:२६:२३:१६	5:39	19:10

(A) बुध पश्चिम में उदय 19:02 (घं.मिं.), सती अनुसूइया जयन्ती (C) प्रयागराजादि, **तीर्थस्नान माहात्म्य–कुम्भ महापर्व (हरिद्वार) देखें पृष्ठ 3, मेला पिंजौर (हरियाणा)**

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 4 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	२	१	१०	०	९	१	७
१९	२१	१२	५	४	२९	१९	१८	१८
३६	४३	१३	३८	३७	३५	३	११	११
२५	४६	५५	१६	१४	३६	३८	५७	५७
58	778	36	107	8	73	1	3	3
9	51	31	4	3	53	50	11	11
भर. २	श्रव. ४	आर्द्रा २	कृति ३	धनि ४	कृति १	श्रव. ३	रोहि. ३	ज्ये. १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय, 4 मई

१: सू. शु.; २: रा., बु.; ३: मं.; ४; ५; ६; ७; ८: के.; ९; १०: चं. श.; ११: गु.; १२

भौमे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 11 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	२	१	१०	१	९	१	७
२६	१७	१६	१६	५	८	१९	१७	१७
२२	४८	२९	५४	३०	१२	१४	४९	४९
५७	३२	५१	१७	३९	२१	२९	४२	४२
57	707	36	81	7	73	1	3	3
59	56	38	43	12	45	9	11	11
भर. ४	भर. २	आर्द्रा ३	रोहि. ३	धनि ४	कृति. ४	श्रव. ३	रोहि. ३	ज्ये. १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय 11 मई

१: सू. चं.; २: रा., शु., बु.; ३: मं.; ४; ५; ६; ७; ८: के.; ९; १०: श.; ११: गु.; १२

वैशाख कृष्ण पक्षफल–

वैशाख मास (चैत्र पूर्णिमा से वैशाख पूर्णिमा तक) में प्रतिदिन प्रात: सूर्योदय से पूर्व किसी तीर्थस्नान अथवा अपने निवास पर ही गंगाजल मिश्रित पवित्र जल से स्नान करके भगवान् लक्ष्मीनारायण की तुलसीदल सहित पूजार्चन करके नित्य श्रीविष्णु सहस्रनाम, वैशाख माहात्म्य तथा '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**' आदि नाम मन्त्रों तथा '**पापप्रशमन स्तोत्र**' का पाठ करना चाहिए। वै. पूर्णिमा को ब्राह्मण को यथाशक्ति वस्त्र, मौसमी फल, अनाजादि का दान करने से सौभाग्य एवं आरोग्य की प्राप्ति होती है। **ग्रह-गोचर–पक्षारम्भ से** ही मंगल-शनि के मध्य '**षडाष्टक योग**' बना हुआ है। राजनैतिक वातावरण अशान्त तथा असमंजसपूर्ण रहेगा। सत्तारूढ़ व विपक्षी दलों के नेताओं में परस्पर टकराव व खींचातानी बढ़ेगी। परस्पर तालमेल की कमी रहेगी। सोना, चाँदी आदि धातुओं, सरसों, क्रूड-ऑयल में विशेष तेजी बनेगी। **लोक-भविष्य**–ता. 11 मई को वैशाख अमावस मंगलवासरी होने से इस दिन गङ्गा आदि तीर्थ पर स्नान, जप, दान आदि करने से (शास्त्रमतानुसार) एक हज़ार गोदान का फल मिलता है। हरिद्वार में कुम्भ-महापर्व का आयोजन भी चल रहा है, जोकि ता. 26 मई तक रहेगा, इस कारण भी इस तिथि के स्नान, दानादि का माहात्म्य विशेष रुपेण रहेगा। परन्तु राजनीतिक पक्ष से मंगलवारी अमावस का फल शुभ नहीं माना गया–'**राज्यभ्रंशो राजयुद्धं क्लेशानां च प्रवर्द्धनम्। उपघातोऽल्प वृष्टिश्च क्षयश्चार्थस्य भूमिजे।।**' अर्थात् देश के किन्हीं राजनेताओं में विग्रह एवं टकराव हो, अपदस्थ, कहीं छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), उपद्रव, उत्पाद, हिंसक घटनाएं एवं जन-धन-सम्पदादि की क्षति हो, अल्पवृष्टि (कम-वर्षा), अग्निकाण्ड आदि प्राकृतिक आपदाएं बढ़ेंगी। सौर एवं चान्द्र वैशाख मासों में ही पाँच मंगलवारों का समावेश होना भी सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों के लिए शुभ नहीं। देश में कहीं युद्ध-भय, हिंसक घटनाओं की सम्भावना, राज्य-परिवर्तन व साम्प्रदायिक घटनाओं का भय। किसी प्रमुख नेता के अपदस्थ या आकस्मिक मृत्यु के भी योग हैं–**यत्रमासे महीसुनो जायन्ते पंचवासरा:। रक्तेन पूरिता पृथ्वीछत्रभंगस्तदा भवेत्।।** **आकाश लक्षण**–ग्रीष्म (गर्मी) का प्रचण्ड वेग रहे तथा दुर्भिक्ष का भय व्याप्त रहे।

वि. संवत् २०७८, वैशाख शुक्ल पक्ष शाक : १९४३

सन् 2021 ई. (ता. 12 से 26 मई तक), हिजरी सन् 1442 — सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु :

ग्रह दर्शन—प्रातः गुरु याम्योत्तरवृत्त में तथा शनि पश्चिमकपाल में होगा। सायं बुध शुक्र पश्चिम-क्षितिज में तथा मंगल इनसे ऊपर दिखाई देगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ. प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ. प.	योग	समाप्तिकाल घ. प.	करण	समाप्तिकाल घ. प.	तारीखें: वैशा. शुक्र	रमजान	मई	ज्ये. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा. स्टैं. टा. जालन्धर सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
३३:५३	१	बुध	५३:४३	कृति	५२:३५	शोभ	४५:२३	किं	२०:२६	22	29	12	३०	वृ. १:४०	वैशाख शुक्लपक्ष प्रारम्भ, शुक्र रोहिणी में २७:१३ (16:31)	०:२७:२१:१५	5:38	19:11
३३:५५	२	गुरु	६०:००	रोहि.	६०:००	अति	४८:०३	बा	२८:५६	23	30	13	३१	वृष	चन्द्रदर्शन मु. ४५, श्रीशिवाजी-जयन्ती	०:२८:१९:१०	5:37	19:11
३४:००	२	शुक्र	०:०८	रोहि.	०:२३	सुक	५०:२५	कौ	०:०८	24	शव	14	ज्ये.	मि.३४:०५	**अक्षय-तृतीया, स्नान-कुम्भ महापर्व (हरिद्वार) देखें पृष्ठ 3, भगवान् परशुराम (A)**	०:२९:१७:०२	5:36	19:12
३४:०३	३	शनि	६:००	मृग.	७:३८	धृति	५२:१०	ग	६:००	25	2	15	२	मिथुन	भ. ३८:३४ से,	१:००:१४:५६	5:36	19:13
३४:०५	४	रवि	११:०८	आर्द्रा	१४:०८	शूल	५३:१०	वि	११:०८	26	3	16	३	मिथुन	भ. ११:०८ तक, मंगल पुन. में ४३:४८, बुध मृगशिर में १६:३३	१:०१:१२:४६	5:35	19:13
३४:०८	५	चन्द्र	१५:००	पुन.	११:२८	गंड	५३:०३	बा	१५:००	27	4	17	४	क. ३:१५	**आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती**	१:०२:१०:३५	5:35	19:14
३४:१३	६	मंग	१७:२८	पुष्य	२३:२३	वृद्धि	५१:४५	तै	१७:२८	28	5	18	५	कर्क	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती, **श्रीगङ्गा-जयन्ती (मध्याह्न-व्या.)** देखें पृष्ठ 24(B)	१:०३:०८:२१	5:34	19:15
३४:१५	७	बुध	१८:१५	आश्ले	२५:३८	ध्रुव	४९:००	व	१८:१५	29	6	19	६	सिं.२५:३८	भ. १८:१५ से ४७:४० तक,	१:०४:०६:०८	5:33	19:15
३४:१७	८	गुरु	१७:०५	मघा	२६:००	व्या.	४४:४५	ब	१७:०५	30	7	20	७	सिंह	**जानकी (सीता) जयन्ती** (देखें पृष्ठ 24), **श्रीबगुलामुखी जयन्ती (C)**	१:०५:०३:५२	5:33	19:16
३४:२३	९	शुक्र	१४:०८	पू.फा.	२४:३५	हर्ष	३९:००	कौ	१४:०८	31	8	21	८	कं.३८:५८	स. सि. यो.	१:०६:०१:३६	5:32	19:17
३४:२४	१०	शनि	९:२०	उ.फा.	२१:२५	वज्र	३१:५३	ग	९:२०	ज्ये	9	22	९	कन्या	भ. ३६:१० से, गुरु शत. १ में ३:१०, मोहिनी एकादशी व्रत (स्मार्त) **(D)**	१:०६:५९:१८	5:32	19:17
३४:२७	११	रवि	३:००	हस्त	१६:४३	सिद्धि	२३:३३	वि	३:००	2	10	23	१०	तु.४३:५३	भ. ३:०० तक, **मोहिनी एकादशी व्रत (वैष्णव)**, शुक्र मृग. में १९:३०, **(E)**	१:०७:५६:५५	5:31	19:18
अवम्	१२	रवि	५५:२०	००	००	००	००	०	००	०	०	०	००	००	**द्वादशी तिथि का क्षय** ०० ००	० ०० ०० ००	००	००
३४:२९	१३	चन्द्र	४६:४३	चित्रा	१०:४५	व्या.	१४:१३	कौ	२१:०२	3	11	24	११	तुला	**सोम प्रदोष व्रत**	१:०८:५४:३५	5:31	19:19
३४:३२	१४	मंग	३७:३०	स्वा. विशा.	४:०० ५६:४३	वरी परि	४:१५ ५३:५०	ग	१२:०७	4	12	25	१२	वृ ४३:३३	भ. ३७:३० से, **श्रीनृसिंह जयन्ती**, सूर्य रोहिणी में ८:०८, श्रीसत्यनारायण **(F)**	१:०९:५२:१०	5:30	19::19
३४:३५	१५	बुध	२८:०५	अनु	४९:२३	शिव	४३:२३	वि	२:४८	5	13	26	१३	वृश्चिक	भ. २:४८ तक, **वैशाख पूर्णिमा, ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण** (देखें पृष्ठ 33), **(G)**	१:१०:४९:४७	5:30	19:20

(A) जयन्ती, सूर्य वृष में ४४:३०, ज्येष्ठ संक्रान्ति, मु. ३०, पुण्यकाल सं. मध्याह्न बाद से अगले दिन प्रातः 6:00 बजे तक, केदार-बदरी यात्रा प्रारम्भ, शव्वाल (मु.) मास प्रारम्भ, **(B)** गण्डमूल 14:55 से **(C)** (अर्द्धरात्रि-व्यापिनी), श्रीदुर्गाष्टमी, सूर्य सायन मिथुन में ४८:५५ (25:07), गण्डमूल 15:57 तक **(D)** (देखें पृष्ठ 25), शक ज्येष्ठ प्रारम्भ **(E)** शनि वक्री २२:५८ (14:42), त्रिस्पर्शा महाद्वादशी, श्रीकल्कि जयं. (मतान्तरे) **(F)** व्रत (देखें पृष्ठ 25), **श्री कूर्म जयन्ती (सायं-व्यापिनी)** **(G)** **श्रीबुद्ध-जयन्ती, बुद्ध पूर्णिमा, वैशाख स्नान समाप्त, बुध मिथुन में 8:52** (घं.मिं.), श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती, गण्डमूल 25:15 से

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 20 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	२	१	१०	१	९	१	७
५	७	२१	२६	६	१९	१९	१७	१७
३	३०	५९	४२	२८	१५	२१	२१	२१
४७	५०	५२	३९	३५	२६	२५	५	५
57	809	36	44	5	73	0	3	3
44	01	43	00	39	34	17	11	11
कृति ३	मघा ३	पुन १	मृग २	धनि ४	रोहि ३	श्रव ३	रोहि ३	ज्ये. १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	ठ	उ	ठ	ठ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय 20 मई

२ सू.बु. शु.रा.
३ मं.
१
४
१२
५ चं.
११ गु.
६
८ के.
१० श.
७
९

बुधे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 26 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	२	१	१०	१	९	१	७
१०	४	२५	२९	७	२६	१९	१७	१७
४९	१०	४०	५७	०	३६	२१	२	२
४७	९	१९	४४	०	३२	३८	१	१
57	910	36	16	4	73	0	3	3
35	34	46	08	38	27	18	11	11
रोहि १	ज्ये. १	पुन २	मृग २	शत. १	मृग १	श्रव ३	रोहि ३	ज्ये. १
०	०	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	ठ	उ	ठ	ठ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय 26 मई

२ सू.बु. शु.रा.
३ मं.
१
४
१२
५
११ गु.
६
८ चं. के.
१० श.
७
९

वैशाख शुक्ल पक्षफल–

भगवान् विष्णु के अंशावतार श्रीपरशुराम का जन्म वैशाख शुक्ल तृतीया तिथि की रात्रि के प्रथम प्रहर (प्रदोषकाल) में हुआ था, तदनुसार 14 मई, शुक्रवार को भगवान् परशुराम का जन्मोत्सव मनाना शुभ होगा। पूर्वाह्न-व्यापिनी '**अक्षय-तृतीया**' का पर्व भी इसी दिन होगा। अगले दिन तृतीया तिथि त्रिमुहूर्त-व्यापिनी नहीं है। अक्षय-तृतीया तिथि बड़ी पवित्र, महासुख व सौभाग्यप्रदायक मानी जाती है। इस तिथि की गणना युगादि तिथियों में की जाती है, क्योंकि त्रेतायुग (कल्पभेद से सतयुग) का शुभारम्भ इस तिथि से हुआ था। इस कारण इस तिथि में किए गए स्नान, दान, जप-तप, होम, देव-पितृतर्पणादि शुभ कर्मों का फल अनन्त गुणा होता है। यह '**स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त**' तिथि कहलाती है। इस दिन व्रत रखकर श्रीगङ्गा, यमुनादि तीर्थस्नान के बाद गेहूँ आदि अनाज, दूध, दही, बर्फी, जलापूरित घड़ा, पात्र, फल, वस्त्र, नवसंवत् की पंचाङ्ग का दान एवं ब्राह्मण भोजन करवाना चाहिए। '**श्रीगङ्गा-जयन्ती**' (18 मई) को मध्याह्न के समय श्रीगङ्गा जी का अवतरण पृथ्वी पर हुआ था। इस पक्ष व तिथि में हरिद्वार में गंगास्नान, पुष्पाक्षत व दीपादि द्वारा गङ्गापूजन, जप-पाठ एवं अन्न, वस्त्र, फलादि दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। **वैशाख पूर्णिमा** (26 मई) को तीर्थ पर गंगाजल सहित स्नान करके विष्णु ध्यान, पूजन एवं विष्णु-सहस्रनाम का पाठ करना चाहिए। **ज्येष्ठ-संक्रान्ति**—ता. 14 मई, शुक्रवार को रात्रि 11 बजकर 24 मिनट (23:24) पर धनु लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहू. इस संक्रां. का पुण्यकाल ता. 14 को मध्याह्न बाद से अगले दिन प्रात 6:00 बजे तक होगा। वारानुसार मिश्रा तथा नक्षत्रानुसार मन्दाकिनी नामक यह सं. राजनेताओं एवं चौपायों, पशुओं के लिए सुखकर रहेगी। शुक्रवार की सं. तथा संक्रान्ति कुं. में मंगल-शनि के मध्य षडाष्टक सम्बन्ध होने से सभी प्रकार के अनाजों, धान्य में विशेष तेजी, गाय आदि चौपाय भी महँगे हो जाएंगे। राजनैतिक द्वेष एवं वैमनस्य भी बढ़ेगा। **आकाश-लक्षण**—कुछ क्षेत्रों में आंधी-तूफान के साथ खण्ड वर्षा होगी। **शकुन**—अक्षय तीज को बादल चाल या बूंदाबांदी होना आगामी सुभिक्ष के संकेत हैं।

वि. संवत् २०७८, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष शाकः १९४३

सन् 2021 ई. (ता. 27 मई से 10 जून तक), हिजरी सन् 1442
सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतुः

ग्रह दर्शन—प्रातः गुरु याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में तथा शनि—पश्चिम में ऊपर होगा। सायं बुध—शुक्र पश्चिम—क्षितिज में तथा मंगल इनसे ऊपर होगा। ता. 2 जून से बु. पश्चिम में लुप्त हो जाएगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घटी/पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घटी/पल	योग	समाप्तिकाल घटी/पल	करण	समाप्तिकाल घटी/पल	तारीखें रा.	मु.	मई	प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी—पल	विवरण	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा.अं.क.वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मि.	सूर्यास्त घं.मि.
३४:३७	१	गुरु	१८:५३	ज्ये.	४२:२८	सिद्ध	३३:१३	कौ	१८:५३	6	14	27	१४	ध.४२:२८	ज्येष्ठ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल विचार	१:११:४७:२२	5:30	19:20
३४:३९	२	शुक्र	१०:२०	मूल	३६:२३	साध्य	२३:४०	ग	१०:२०	7	15	28	१५	धनु	भ. ३६:३२ से, **शुक्र मिथुन में ४६:१५**, श्रीनारद—जयन्ती, वीणादान **(A)**	१:१२:४४:५३	5:29	19:21
३४:४२	३	शनि	२:४३	पू.षा.	३१:२८	शुभ	१५:००	वि	२:४३	8	16	29	१६	म.४५:२५	भ. २:४३ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 20), **बुध वक्री ५६:२०**	१:१३:४२:२६	5:29	19:22
अवम्	४	शनि	५६:२८	००	००	००	००	०	००	०	०	०	०	००	चतुर्थी तिथि का क्षय ०० ०० ००	० ०० ०० ००	००	००
३४:४३	५	रवि	५१:५०	उ.षा.	२८:०३	शुक्ल	७:३३	कौ	२४:०९	9	17	30	१७	मकर		१:१४:३९:५८	5:29	19:22
३४:४७	६	चन्द्र	४९:०५	श्रव.	२६:२५	ब्रह्म ऐन्द्र	१:२८ ५६:५३	ग	२०:२८	10	18	31	१८	कुं.५६:१८	भ. ४९:०५ से, **पंचक प्रारम्भ ५६:१८** (27:59), स. सि. यो.	१:१५:३७:२६	5:28	19:23
३४:४८	७	मंग	४८:१८	धनि	२६:४०	वैधृ	५३:५३	वि	१८:४२	11	19	जून	१९	कुम्भ	भ. १८:४२ तक, जून मास प्रारम्भ, राहु रोहि. २—केतु अनु. ४ में ५५:२५, द्विपुष्कर योग	१:१६:३४:५६	5:28	19:23
३४:५०	८	बुध	४९:२३	शत.	२८:५०	विष्क	५२:२५	बा	१८:५१	12	20	2	२०	कुम्भ	**मंगल कर्क में ३:२८, वक्री बुध वृष में ५१:५०, वक्री बुध पश्चिम (B)**	१:१७:३२:२६	5:28	19:24
३४:५१	९	गुरु	५२:१८	पू.भा.	३२:४८	प्रीति	५२:१८	तै	२०:५१	13	21	3	२१	मी.१६:३८	शुक्र आर्द्रा में १३:३० (10:52)	१:१८:२९:५५	5:28	19:24
३४:५४	१०	शुक्र	५६:४३	उ.भा.	३८:२०	आयु	५३:२३	व	२४:३१	14	22	4	२२	मीन	भ. २४:३१ से ५४:१३ तक, गण्डमूल 20:47 से	१:१९:२७:२१	5:27	19:25
३४:५५	११	शनि	६०:००	रेव.	४५:०३	सौभा	५५:१८	ब	२९:२८	15	23	5	२३	मे.४५:०३	**पंचक समाप्त ४५:०३** (23:28), गण्डमूल विचार	१:२०:२४:४८	5:27	19:25
३४:५७	११	रवि	२:१३	अश्वि	५२:३०	शोभ	५७:४८	बा	२:१३	16	24	6	२४	मेष	**अपरा एकादशी व्रत, मेला भद्रकाली एकादशी** (कपूरथला, पं.) **(C)**	१:२१:२२:१५	5:27	19:26
३४:५८	१२	चन्द्र	८:२५	भर.	६०:००	अति.	६०:००	तै	८:२५	17	25	7	२५	मेष	**सोम प्रदोष व्रत**, मंगल पुष्य में २८:५३, वटसावित्री व्रतारम्भ	१:२२:१९:४०	5:27	19:26
३५:००	१३	मंग	१४:५५	भर.	०:२३	अति.	०:३५	व	१४:५५	18	26	8	२६	वृ.१७:२०	भ. १४:५५ से ४८:०८ तक, सूर्य मृगशिर में ३:०३, मासशिवरात्रि व्रत	१:२३:१७:०६	5:27	19:27
३५:००	१४	बुध	२१:२०	कृति.	८:१३	सुक.	३:२०	श	२१:२०	19	27	9	२७	वृष	**वटसावित्री व्रत (अमावस—पक्ष)** (देखें पृष्ठ 25)	१:२४:१४:३०	5:27	19:27
३५:०२	३०	गुरु	२७:२०	रोहि.	१५:४३	धृति.	५:५०	ना	२७:२०	20	28	10	२८	मि.४९:१८	**ज्येष्ठ अमावस, शनैश्चर जयन्ती, भावुका अमावस**	१:२५:११:५३	5:27	19:28

(A) गण्डमूल 20:02 (घं.मिं.) तक, **(B)** में अस्त ३४:४५ **(C)** गण्डमूल 26:27 तक, स. सि. यो.

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 2 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	२	२	१०	२	९	१	७
१७	१३	२९	०	७	५	१९	१६	१६
३२	५३	५७	१३	२८	१०	१७	३९	३९
३१	३१	५६	११	५३	१६	३०	४५	४५
57	760	36	15	3	73	0	3	3
29	24	50	16	25	20	59	10	10
रोहि ३	शत ३	पुन ३	मृग ३	शत १	मृग ४	श्रव ३	रोहि २	अनु ४
०	०	मा	व	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय, 2 जून

- २: सू. रा.
- ३: शु. बु. मं.
- ४
- ५
- ६
- ७
- ८: के.
- ९
- १०: श.
- ११: चं. गु.
- १२
- १

गुरौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 10 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	३	१	१०	२	९	१	७
२५	२०	४	२६	७	१४	१९	१६	१६
१२	१४	५३	४७	५१	५६	७	१४	१४
०	४९	४	३१	६	२२	४	१९	१९
57	715	36	33	1	73	1	3	3
23	07	57	35	56	11	44	10	10
मृग १	रोहि ४	पुष्य १	मृग २	शत १	आर्द्रा ३	श्रव ३	रोहि २	अनु ४
०	०	मा	व	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 10 जून

- २: सू. चं. बु. रा.
- ३: शु.
- ४: मं.
- ५
- ६
- ७
- ८: के.
- ९
- १०: श.
- ११: गु.
- १२
- १

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षफल—

ज्येष्ठ मास में संक्रान्ति, एकादशी, अष्टमी, गंगा—दशहरा आदि पर्वों पर स्नान, जप, ध्यानादि के साथ श्रद्धापूर्वक व्रत रखकर जलापूरित घड़ा (पात्र), गेहूँ, चावल, सत्तु आदि अनाज, दूध, चीनी, वस्त्र, छाता, पंखा, आम, खरबूजे आदि मौसमी फल एवं अन्य ग्रीष्मोपयोगी वस्तुओं का संकल्पपूर्वक सुपात्र ब्राह्मण को दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। इस मास जितेन्द्रिय रहकर '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**' मन्त्र का जाप एवं विष्णु—सहस्रनाम, नारायण—कवच आदि स्तोत्रों का पाठ करने से धन—सम्पत्ति, विवाह, सन्तान एवं सौभाग्य आदि की प्राप्ति होती है। इस पक्ष की **अपरा एकादशी** (6 जून) का व्रत विधिपूर्वक रखने तथा किसी गरीब परिवार की सामर्थ्यानुसार अन्न—धनादि से सहायता करने से अनेक प्रकार के ज्ञात अथवा अज्ञानतावश किए गए पापों का क्षय होता है। ता. 9 जून को चतुर्दशी—विद्धा अमावस के दिन वैधव्य दोष की शान्ति हेतु स्त्रियों को **वटसावित्री** का व्रत रखना कल्याणकारी होता है। वट के मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु तथा ऊपरी भाग में देवाधि देव शिव प्रतिष्ठित रहते हैं। **लोक—भविष्य**—चान्द्र ज्येष्ठ मास में पाँच बृहस्पतिवारों के प्रभाव से कुछ प्रदेशों में भीषण अकालजन्य परिस्थितियां बनेंगी। देश के पश्चिम क्षेत्रों जैसे—काश्मीर, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र, गुजरात आदि प्रदेशों में कहीं उपद्रव, विस्फोट, आतंक एवं हिंसक घटनाएं घटित होने के संकेत हैं। पश्चिमी देशों—सीरिया, तुर्की, ईराक—ईरान आदि देशों में कहीं युद्ध एवं फौजी टकराव होने के संकेत हैं। **ग्रह—गोचर**—पक्ष में **गुरु—शुक्र** तथा **मंगल—शनि** के मध्य दृष्टि—सम्बन्ध होने से देश में राजनीतिक पार्टियों के मध्य विग्रह एवं टकराव की स्थिति रहे, किसी प्रदेश में छत्रभंग (सत्ता—परिवर्तन), उपद्रव एवं हिंसक घटनाएं घटित होंगी। केन्द्रीय मंत्रीमण्डल में परिवर्तन के संकेत हैं। केन्द्रीय सरकार द्वारा उदघोषित किसी विशेष नीति का विरोध किया जाएगा। जिससे विकासोन्मुखी योजनाओं के क्रियान्वयन में विलम्ब होगा।

आकाश—लक्षण—ज्ये. कृ. प्रतिपदा गुरुवार को होने से आगे देश के कुछ भागों में पर्याप्त वर्षा होगी। **शकुन**—यदि अमा. को आकाश में बादल छाएं, तो वर्षा ऋतु में वर्षा कम होगी।

वि. संवत् २०७८, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष शाक : १९४३											तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश	सन् 2021 ई. (ता. 11 से 24 जून तक), हिजरी सन् 1442 सूर्य उत्तर–दक्षिणायन, उत्तर गोल, वसन्त–ग्रीष्म ऋतु:	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट	भा.स्टैं.टा. जालन्धर	
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घटी-पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घटी-पल	योग	समाप्तिकाल घटी-पल	करण	समाप्तिकाल घटी-पल	मई अं.	मुस्लिम	जून	प्रविष्टे	घड़ी–पल	प्रातः गुरु याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में तथा शनि पश्चिम–कपाल में ऊपर होगा। ता. 20 से बुध पूर्वक्षितिज में दिखेगा। सायं शुक्र पश्चिम–क्षितिज में तथा मंगल शुक्र के ऊपर होगा।	रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
३५:०३	१	शुक्र	३२:४०	मृग	२२:४०	शूल	७:५५	ब	३२:४०	21	29	11	२९	मिथुन	**चन्द्रदर्शन**, मु. १५, भावुका करिदिन, **श्रीगङ्गा स्नान प्रारम्भ, करवीर व्रत,**	१:२६:०९:१६	5:27	19:28
३५:०३	२	शनि	३७:०८	आर्द्रा	२८:४५	गंड	९:२३	बा	४:५४	22	जि	12	३०	मिथुन	जिल्काद (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	१:२७:०६:३८	5:27	19:28
३५:०५	३	रवि	४०:३५	पुन.	३३:५५	वृद्धि	१०:०८	तै	८:५२	23	2	13	३१	क.१७:४३	**रम्भा तृतीया व्रत, महाराणा प्रताप जयन्ती**	१:२८:०४:००	5:27	19:29
३५:०६	४	चन्द्र	४२:५०	पुष्य	३७:५५	ध्रुव	१०:००	व	११:४३	24	3	14	३२	कर्क	भ. ११:४३ से ४२:५० तक, शुक्र पुन. में ९:१०, उमा अवतार, गं.मू. 20:37 से	१:२९:०१:२०	5:27	19:29
३५:०७	५	मंग	४३:४५	आश्ले	४०:३८	व्या.	८:५३	ब	१३:१८	25	4	15	आ	सिं.४०:३८	**सूर्य मिथुन में १:२३, आषाढ़ संक्रान्ति,** मु. १५, पुण्यकाल सं. दोप. **(A)**	१:२९:५८:४०	5:27	19:30
३५:०८	६	बुध	४३:१८	मघा	४२:००	हर्ष	६:४३	कौ	१३:३२	26	5	16	२	सिंह	वक्री बुध रोहि. 4 में ४२:४३, अरण्य–षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा **(B)**	२:००:५५:५९	5:27	19:30
३५:०९	७	गुरु	४१:२३	पू.फा.	४१:५५	वज्र सिद्धि	३:२३ ५८:५५	ग	१२:२१	27	6	17	३	कं.५६:४०	भ. ४१:२३ से,	२:०१:५३:१७	5:27	19:30
३५:०९	८	शुक्र	३८:०३	उ.फा.	४०:२५	व्य.	५३:१८	वि	९:४३	28	7	18	४	कन्या	भ. ९:४३ तक, **श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयन्ती,** मेला क्षीर-भवानी (काश्मीर)	२:०२:५०:३४	5:27	19:30
३५:१०	९	शनि	३३:१८	हस्त	३७:३३	वरी.	४६:३३	बा	५:४१	29	8	19	५	कन्या		२:०३:४७:५०	5:27	19:31
३५:०९	१०	रवि	२७:१५	चित्रा	३३:२३	परि.	३८:४८	तै	०:१७	30	9	20	६	तु. ५:३५	भ. ५३:४३ से, **श्रीगङ्गा दशहरा पर्व** (हरिद्वार आदि), **गुरु वक्री (C)**	२:०४:४५:०८	5:28	19:31
३५:०९	११	चन्द्र	२०:१०	स्वा.	२८:१३	शिव	३०:१३	वि	२०:१०	31	10	21	७	तुला	भ. २०:१० तक, **निर्जला एकादशी व्रत,** सूर्य सायन कर्क में 9:02, **(D)**	२:०५:४२:२२	5:28	19:31
३५:०८	१२	मंग	१२:१५	विशा.	२२:१५	सिद्ध	२०:५८	बा	१२:१५	आ	11	22	८	वृ. ८:५०	**भौम प्रदोष व्रत,** वटसावित्री व्रत प्रारम्भ, सूर्य आर्द्रा में ०:२५ **(E)**	२:०६:३९:३६	5:28	19:31
३५:०८	१३	बुध	३:५०	अनु.	१५:५०	साध्य	११:२०	तै	३:५०	2	12	23	९	वृश्चिक	भ. ५५:१३ से, गण्डमूल 11:48 से, स. सि. यो.	२:०७:३६:४९	5:28	19:32
अवम्	१४	बुध	५५:१३	००	०००	००	०००	०	०००	०	०	००	०	००	**चतुर्दशी तिथि का क्षय** ०० ००	० ०० ०० ००	००	००
३५:०८	१५	गुरु	४६:४३	ज्ये.	९:१५	शुभ शुक्ल	१:३० ५१:५८	वि	२०:५८	3	13	24	१०	ध. ९:१५	भ. २०:५८ तक, **ज्येष्ठ पूर्णिमा, वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष) (F)**	२:०८:३४:०४	5:29	19:32

(A) 12:24 तक, गण्डमूल विचार, स. सि. यो. **(B)** गण्डमूल 22:15 तक **(C)** ३७:३५ (20:30), वक्री बुध पूर्व में उदय ३५:०५ **(D)** सायन दक्षिणायन प्रारम्भ, **वर्षा ऋतु शुरु (E) शुक्र कर्क में २२:१० (14:20), बुध मार्गी ५५:०३ (27:29),** शक आषाढ़ प्रारम्भ, चम्पक द्वादशी **(F) सन्त कबीर जयन्ती (623वीं),** ज्येष्ठी योग, श्रीसत्यनारायण व्रत

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 18 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	३	१	१०	२	९	१	७
२	०	९	२२	८	२४	१८	१५	१५
५०	४६	४८	५०	१	४१	५०	४८	४८
४१	५७	५९	४२	१६	१४	५०	५३	५३
57	826	37	18	0	73	2	3	3
16	54	2	32	24	1	24	10	10
मृग ३	उफा २	पुष्य २	रोहि ४	शत १	पुन २	श्रव ३	रोहि २	अनु ४
०	०	मा	व	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय, 18 जून

३ सू. शु. — ४ मं. — २ रा. बु. — १ — ५ — ६ चं. — १२ — ७ — ८ के. — ९ — १० श. — ११ गु.

गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 24 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	७	३	१	१०	३	९	१	७
८	२७	१३	२२	८	१	१८	१५	१५
३४	४२	३१	१	०	५८	३५	२९	२९
७	३४	२१	१०	४९	५३	१०	४९	४९
57	894	37	7	0	72	2	3	3
13	19	6	24	45	52	53	11	11
आर्द्रा १	ज्ये. ४	पुष्य ४	रोहि ४	शत १	पुन ४	श्रव ३	रोहि २	अनु ४
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय, 24 जून

३ सू. — ४ शु. मं. — २ रा. बु. — १ — ५ — ६ — १२ — ७ — ८ चं.के. — ९ — १० श. — ११ गु.

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षफल–

आपदग्रस्त स्त्रियों को करवीर व्रत (11 जून) शीघ्र फल देता है। तृतीया तिथि को (13 जून) रम्भा देवी का विधिपूर्वक व्रत-दान करने से स्त्रियों को विवाह, सन्तान एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती है। इसमें गौरी माँ की पुष्प, नैवेद्य आदि से पूजन करके इस मन्त्र से प्रार्थना करनी चाहिए–'**देवि ! त्वं शक्तिस्त्वं स्वधा स्वाहा त्वं सावित्री सरस्वती। पतिं देहि गृहं देहि सुतान देहि नमोऽस्तुते।।**' माता पार्वती का जन्म भी इसी तिथि को हुआ है। **अष्टमी तिथि (18 जून)** को माता खीर (क्षीर) भवानी का मेला जम्मू-कश्मीर एवं दिल्ली के मन्दिरों में खीर, मेवे आदि का भोग लगाकर श्रद्धा से मनाया जाएगा। '**श्रीगङ्गा-दशहरा**' पर्व (20 जून) पर गङ्गा-स्नान एवं श्रीगङ्गा जी का अक्षत, द्रव्यों, नारियलादि सहित पूजार्चना एवं यथाशक्ति दानादि कर्म करने से मनुष्य के कायिक, वाचिक और मानसिक–दस प्रकार के पापों का नाश होता है। इस दिन गंगा स्तोत्रादि का पाठ करें तथा निम्न मन्त्र से आवाहन व प्रार्थना करें–'**ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गङ्गायै नमः।**' **ता. 21 जून को निर्जला एकादशी** का निराहार व्रत रखकर भगवान् श्रीविष्णु का पूजनोपरान्त द्वादशी को ब्राह्मणों को यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, फल, जलपात्र आदि दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। **आषाढ़ संक्रान्ति**–ता. 15 जून, मंगलवार को प्रातः 6घं.–00मिं. पर मिथुन लग्न में प्रवेश करेगी। १५ मुहू. इस सं. का पुण्यकाल दोपहर 12घं.–24मिं. तक रहेगा। वारानुसार महोदरी तथा नक्षत्रानुसार राक्षसी नामक यह सं. नीच प्रवृत्ति वाले, दुष्ट, ठग, बेईमान लोगों के लिए लाभप्रद रहेगी। भौमवती संक्रान्ति तथा ज्येष्ठ मास में आषाढ़ सं. का प्रवेश होने से राजनैतिक क्षेत्रों में अस्थिरता एवं अशान्ति के संकेत हैं। कहीं अनाज की कमी के कारण दुर्भिक्ष एवं अराजकता व्याप्त हो। अत्यधिक महँगाई के कारण सामान्य लोगों में सुख की कमी रहेगी। भयानक अग्निकाण्ड एवं क्लिष्ट रोग उत्पत्ति के कारण समाज में भय रहे। '**–रोगेग्नि–ज्वलनादिजं–भयमपिप्रायो महर्घाः कणाः।**' शनि–मंगल के मध्य समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध रहने से भी परिस्थितियों और अधिक विकट एवं भयावह होंगी। राजनेताओं में परस्पर टकराव व विरोध होंगे। **आकाश-लक्षण**–शनि-मंगल का दृष्टि सम्बन्ध होने से खण्ड वर्षा अर्थात् अनुकूल एवं उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी।

वि. संवत् २०७८, आषाढ़ कृष्ण पक्ष शाक: १९४३ | **तारीखें** | **सन् 2021 ई. (ता. 25 जून से 10 जुलाई तक), हिजरी सन् 1442**
सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु

ग्रह दर्शन–प्रातः गुरु याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में, श. पश्चिमकपाल में तथा बुध पूर्वक्षितिज में होगा। सायं मंगल–शुक्र पास–पास पश्चिम में दिखाई देंगे।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घटी. पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घटी. पल	योग	समाप्तिकाल घटी. पल	करण	समाप्तिकाल घटी. पल	आषा. रा.	जिल्का. मु.	जून	आषा. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	ग्रह दर्शन	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
३५:०७	१	शुक्र	३८:४८	मूल पू.षा.	२:५८ ५७:२०	ब्रह्म	४२:५०	बा	१२:४६	4	14	25	११	धनु	आषाढ़ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, शुक्र पुष्य में ६:५० (8:13), गण्डमूल 6:40 तक	२:०९:३१:१८	5:29	19:32
३५:०७	२	शनि	३१:४८	उ.षा.	५२:४८	ऐन्द्र	३४:३३	तै	५:१८	5	15	26	१२	म.११:०५	भ. ५८:५७ से, ऋषभनाथ जयन्ती (जैन), **त्रिपुष्कर योग** 18:12 तक	२:१०:२८:३०	5:29	19:32
३५:०७	३	रवि	२६:०५	श्रव.	४९:४३	वैधृ.	२७:२०	वि	२६:०५	6	16	27	१३	मकर	भ. २६:०५ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 20)	२:११:२५:४२	5:29	19:32
३५:०६	४	चन्द्र	२१:५८	धनि.	४८:१८	विष्क	२१:२५	बा	२१:५८	7	17	28	१४	कुं.१८:४५	**पंचक प्रारम्भ** १८:४५ (13:00), बुध मृगशिर में ४६:४५	२:१२:२२:५५	5:30	19:32
३५:०५	५	मंग	१९:४५	शत	४८:५०	प्रीति	१७:०५	तै	१९:४५	8	18	29	१५	कुम्भ	मंगल आश्ले. में ४:५५ (7:28)	२:१३:२०:०७	5:30	19:32
३५:०४	६	बुध	१९:३०	पू.भा.	५१:२०	आयु	१४:१८	व	१९:३०	9	19	30	१६	मी.३५:३०	भ. १९:३० से ५०:२४ तक,	२:१४:१७:२१	5:31	19:32
३५:०३	७	गुरु	२१:१८	उ.भा.	५५:४५	सौभा	१३:०८	ब	२१:१८	10	20	जुला	१७	मीन	जुलाई मास (सन् 2021 ई.) प्रारम्भ, गण्डमूल 27:49 से	२:१५:१४:३३	5:31	19:32
३५:०२	८	शुक्र	२४:५५	रेव.	६०:००	शोभ.	१३:२५	कौ	२४:५५	11	21	2	१८	मीन	गण्डमूल विचार	२:१६:११:४५	5:31	19:32
३५:०१	९	शनि	२९:५८	रेव.	१:४५	अति	१४:५०	ग	२९:५८	12	22	3	१९	मे. १:४५	**पंचक समाप्त** १:४५ (6:14), गण्डमूल विचार	२:१७:०९:००	5:32	19:32
३५:००	१०	रवि	३६:००	अश्वि	८:५३	सुक	१७:०८	व	२:५९	13	23	4	२०	मेष	भ. २:५९ से ३६:०० तक, गण्डमूल 9:05 तक, स. सि. यो.	२:१८:०६:१३	5:32	19:32
३४:५८	११	चन्द्र	४२:२५	भर.	१६:३८	धृति	१९:५०	ब	९:१३	14	24	5	२१	वृ.३३:४५	**योगिनी एकादशी व्रत**, सूर्य पुन. में ५९:१८ (29:16)	२:१९:०३:२७	5:33	19:32
३४:५७	१२	मंग	४८:४५	कृति	२४:२८	शूल	२२:३५	कौ	१५:३५	15	25	6	२२	वृष	शुक्र आश्लेषा में ६:५० (8:17)	२:२०:००:४०	5:33	19:32
३४:५२	१३	बुध	५४:२८	रोहि.	३१:५३	गंड	२५:००	ग	२१:३७	16	26	7	२३	वृष	भ. ५४:२८ से, **प्रदोष व्रत, बुध मिथुन में १३:४५** (11:04), स. सि. यो.	२:२०:५७:५५	5:34	19:32
३४:५१	१४	गुरु	५९:१८	मृग.	३८:३३	वृद्धि	२६:५३	वि	२६:५३	17	27	8	२४	मि. ५:१८	भ. २६:५३ तक, मासशिवरात्रि व्रत	२:२१:५५:०९	5:34	19:31
३४:५०	३०	शुक्र	६०:००	आर्द्रा	४४:०८	ध्रुव	२७:५५	च	३१:०९	18	28	9	२५	मिथुन	आषाढ़ी अमावस, पितृकार्येषु अमावस	२:२२:५२:२५	5:35	19:31
३४:५०	३०	शनि	३:००	पुन.	४८:३८	व्या.	२८:०५	ना	३:००	19	29	10	२६	क.३२:३८	**आषाढ़ (शनिवासरी) अमावस** (स्नानदानादि 6:47 तक)	२:२३:४९:३९	5:35	19:31

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 2 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	३	१	१०	३	९	१	७
१६	१७	१८	२५	७	११	१८	१५	१५
११	३१	२८	१३	४९	४१	१०	४	४
४३	३७	३०	३६	३०	२	७	२३	२३
57 12	725 49	37 12	45 11	2 16	72 40	3 27	3 11	3 11
आर्द्रा ३	रेव. १	आश्ले. १	मृग. १	शत. १	पुष्य ३	श्रव. ३	रोहि. २	अनु. ४
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 2 जुलाई

४ शु. मं. | ३ सू. | २ रा. बु. | १ | १२ चं. | ११ गु. | १० श. | ९ | ८ के. | ७ | ६ | ५

शनौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 10 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	३	२	१०	३	९	१	७
२३	२३	२३	३	७	२१	१७	१४	१४
४९	१३	२६	१९	२६	२१	४०	३८	३८
२७	१२	३६	६	७	३८	५६	५७	५७
57 13	747 00	37 20	79 55	3 45	72 28	3 53	3 11	3 11
पुन. २	पुन. १	आश्ले. ३	मृग. ३	शत. १	आश्ले. २	श्रव. ३	रोहि. २	अनु. ४
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 10 जुलाई

४ शु. मं. | ३ सू. चं. बु. | २ रा. | १ | १२ | ११ गु. | १० श. | ९ | ८ के. | ७ | ६ | ५

आषाढ़ कृष्ण पक्षफल–

आषाढ़ मास में भगवान् श्रीविष्णु की प्रसन्नता के लिए ब्रह्मचारी रहते हुए स्नानोपरान्त नित्यप्रति लक्ष्मी सहित भगवान् विष्णु की पूजार्चन एवं स्तोत्र पाठ के बाद ब्राह्मण दम्पत्ति को क्षीर सहित भोजन करवाना तथा यथाशक्ति वस्त्र, धन, जूते, आँवले, आम्र, खरबूजे, आड़ू आदि ऋतुफल का दान करना तथा स्वयं भी एकभुक्त भोजन करना इत्यादि कृत्यों से जातक को अक्षय पुण्यों की प्राप्ति होती है। **स्वास्थ्य-विचार–** आषाढ़ मास में स्वयं को (विशेषकर सिर को) धूप व गर्मी से बचाना चाहिए। इस मास में शीतल-जल, सादा-भोजन, छाछ, मौसमी फलों का सेवन स्वास्थ्य के लिए लाभप्रदायक होता है। ब्रह्मपुराणानुसार इस पक्ष में योगिनी एकादशी (5 जुला.) का व्रत करके भगवान् विष्णु की यथाविधि पूजा करके रात्रि-जागरण करने तथा दूसरे दिन अन्न, वस्त्रादि का दान करने से कुष्ठादि त्वचा रोगों की शान्ति होती है। **लोक-भविष्य–**मंगल-शुक्र का शनि के साथ समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध रहने से राजनेताओं में परस्पर विग्रह एवं खींचातानी बढ़ेगी। उ.प्र., पंजाब, जम्मू-काश्मीर, प. बंगाल, असम आदि सीमावर्ती प्रदेशों में राजनीतिक टकराव, उपद्रव, साम्प्रदायिक तनाव, विस्फोटक व हिंसक घटनाएँ घटित होंगी। देश में कहीं भीषण अग्निकाण्ड, टकराव, प्राकृतिक हानि एवं धातुओं के भावों में ज़बरदस्त तेजी बनेगी। **'यदा सौरि भौमे सुरराजमन्त्री भार्गवश्च यदैक राशौ समसप्तके वा। अयोध्या मध्यदेशे, लंकापुरे च क्षुधाभयं शस्त्रं करोति।।'** कुम्भ राशिगत गुरु वक्री होकर संचार करने से आरोग्यता बढ़े, समाज में लोगों की स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता बढ़े तथा धान्यों के क्रय-विक्रय से लाभ हो। **'सर्वधान्येषु निष्पत्तिः सर्वधान्यस्यस्यविक्रयः।'** **आकाश-लक्षण–**भारत के पूर्व-दक्षिणी क्षेत्रों–महाराष्ट्र, उड़ीसा, असम, केरल आदि में वर्षा व्यापक रूप से होगी। **शकुन–**ता. 7 जुला. से बुध मिथुन राशि में आने से वायु वेग के साथ पर्याप्त वर्षा हो। **'तदावायुर्विजानीयान्मेघश्चप्रचुरोभवेत्।।'**

वि. संवत् २०७८, आषाढ़ शुक्ल पक्ष शाक : १९४३ | सन् 2021 ई. (ता. 11 से 24 जुलाई तक), हिजरी सन् 1442

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु :

ग्रह दर्शन—प्रातः गुरु पश्चिमकपाल में तथा शनि पश्चिमी क्षितिज के पास होगा। पूर्व में दृश्य बुध 21 जुला. से लुप्त हो जाएगा। सायं मंगल-शुक्र पास-पास पश्चिम क्षितिज में होंगे।

भा. स्टैं. टा. — जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ. प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ. प.	योग	समाप्तिकाल घ. प.	करण	समाप्तिकाल घ. प.	तारीखें आषा.	जिल्हि.	जुलाई	आषा. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
३४:४८	१	रवि	५:३०	पुष्य	५१:५५	हर्ष	२७:१८	ब	५:३०	20	30	11	२७	कर्क	रथयात्रा उत्सव (श्रीजगन्नाथपुरी)* (7:48 से 26:22 तक द्वितीया एवम् पुष्यनक्षत्र योग)(A)	२:२४:४६:५५	5:36	19:31
३४:४५	२	चन्द्र	६:५०	आश्ले	५४:०५	वज्र	२५:३५	को	६:५०	21	जि	12	२८	सिं.५४:०५	बुध आर्द्रा में २४:५८, जिल्हिजा (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	२:२५:४४:१०	5:36	19:30
३४:४३	३	मंग	७:००	मघा	५५:१०	सिद्धि	२२:५८	ग	७:००	22	2	13	२९	सिंह	भ. ३६:३३ से, गण्डमूल 27:41 तक	२:२६:४१:२६	5:37	19:30
३४:४३	४	बुध	६:०५	पू.फा.	५५:१५	व्य.	१९:३०	वि	६:०५	23	3	14	३०	सिंह	भ. ६:०५ तक, *मतान्तर से रथयात्रा का 12 जुलाई को भी शुभ मुहूर्त होगा।*	२:२७:३८:४०	5:37	19:30
३४:३८	५	गुरु	४:०८	उ.फा.	५४:१८	वरी.	१५:१३	बा	४:०८	24	4	15	३१	कं.१०:०३	**स्कन्द (कुमार) षष्ठी**	२:२८:३५:५७	5:38	19:29
३४:३७	६	शुक्र	१:१३	हस्त	५२:२८	परि.	१०:१०	तै	१:१३	25	5	16	श्रा.	कन्या	भ. ५७:२३ से, **सूर्य कर्क में २८:०८, श्रावण संक्रान्ति**, मु. ३० **(B)**	२:२९:३३:११	5:38	19:29
अवम्	७	शुक्र	५७:२३	००	००	००	००	०	००	०	०	०	०	००	**सप्तमी तिथि का क्षय** ०० ००	० ०० ०० ००	००	००
३४:३५	८	शनि	५२:३८	चित्रा	४९:४३	शिव सिद्ध	४:२० ५७:५०	वि	२५:०१	26	6	17	२	तु.२१:१०	भ. २५:०१ तक, **श्रीदुर्गाष्टमी, शुक्र मघा १ सिंह में ९:२५** (9:25)	३:००:३०:२८	5:39	19:29
३४:३०	९	रवि	४७:०३	स्वा.	४६:१०	साध्य	५०:४०	बा	१९:५१	27	7	18	३	तुला	भढली नवमी, **गुप्त नवरात्र समाप्त**, मेला शरीक भवानी (काश्मीर)	३:०१:२७:४४	5:40	19:28
३४:३०	१०	चन्द्र	४०:५०	विशा.	४१:५८	शुभ	४२:५५	तै	१३:५७	28	8	19	४	वृ.२८:०५	सूर्य पुष्य में ५७:४० (28:44)	३:०२:२४:५९	5:40	19:28
३४:२५	११	मंग	३४:०३	अनु.	३७:१०	शुक्ल	३४:४३	व	७:२७	29	9	20	५	वृश्चिक	भ. ७:२७ से ३४:०३ तक, ***हरिशयनी एकादशी व्रत, चातुर्मास्य* (C)**	३:०३:२२:१७	5:41	19:27
३४:२४	१२	बुध	२६:५५	ज्ये.	३२:०३	ब्रह्म	२६:१५	व	०:२९	30	10	21	६	ध.३२:०३	**प्रदोष व्रत**	३:०४:१९:३२	5:41	19:27
३४:२०	१३	गुरु	१९:३८	मूल	२६:४८	एन्द्र	१७:३८	तै	१९:३८	31	11	22	७	धनु	सूर्य सायन सिंह में 19:56 (घं.मिं.), गण्डमूल 16:25 तक	३:०५:१६:४९	5:42	19:26
३४:१८	१४	शुक्र	१२:३३	पू.षा.	२१:४८	वैधृ	९:१०	व	१२:३३	श्रा	12	23	८	म.३५:३८	भ. १२:३३ से ३९:१७ तक, **गुरु-पूर्णिमा, व्यास पूजा** (10:44 बाद) **(D)**	३:०६:१४:०७	5:43	19:26
३४:१५	१५	शनि	६:००	उ.षा.	१७:२३	विष्क प्रीति	१:१० ५३:५०	ब	६:००	2	13	24	९	मकर	**आषाढ़ी पूर्णिमा** (स्नानदानादि प्रातः 8:07 तक), गुरु पूर्णिमा (उत्तर-पूर्व**(E)**	३:०७:११:२३	5:43	19:25

(A) चन्द्रदर्शन, मु. ३०, गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, गण्डमूल 26:22 से, स. सि. यो. **(B)** पुण्यकाल सं. प्रातः 10:29 से, विवस्वत सप्तमी, निरयण दक्षिणायन प्रारम्भ **(C) व्रत, नियमादि प्रारम्भ, मंगल मघा १ सिंह में ३०:३३** (17:54), बुध पुन. में १५:२८ (11:52), वक्री गुरु धनि. ४ में ११:५०, बुध पूर्व में अस्त ५८:२५, श्रीविष्णु-शयनोत्सव, गं.मू. 20:33 से **(D)** देखें पृष्ठ 26, वायु परीक्षा, श्रीसत्यनारायण व्रत, शिवशयनोत्सव, शक श्रावण प्रारम्भ, अम्बिका व्रत, मेला ज्वालामुखी (काश्मीर), कोकिला व्रत **(E)** भारत) (देखें पृष्ठ 26), वक्री शनि श्रवण २ में ३८:०८

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 17 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	५	३	२	१०	३	९	१	७
०	२५	२७	१४	६	२९	१७	१४	१४
३०	०	४८	०	५६	४८	१२	१६	१६
६	३	१६	५५	१८	११	४५	४१	४१
57	839	37	106	4	72	4	3	3
14	33	26	21	55	14	11	10	10
पुन ४	चित्रा १	पू.फा. ४	आर्द्रा ३	शत. १	पू.फा. ४	श्रव. ३	रोहि. २	अनु. ४
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 17 जुलाई

४ सू. मं. शु.; ३ बु.; २ रा.; १; १२; ११ गु.; १० श.; ९; ८ के.; ७; ६ चं.; ५

शनौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 24 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	४	२	१०	४	९	१	७
७	५	२	२७	६	८	१६	१३	१३
१०	४३	१०	२४	१८	१३	४२	५४	५४
५२	२८	३८	२६	४२	०	५०	२६	२६
57	853	37	123	5	71	4	3	3
17	25	33	28	57	57	23	11	11
पुष्य २	हस्त ३	मघा १	पुन ३	धनि ४	मघा ३	श्रव ३	रोहि २	अनु ४
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 24 जुलाई

४ सू.; ३ बु.; २ रा.; १; १२; ११ गु.; १० चं. श.; ९; ८ के.; ७; ६; ५ शु. मं.

आषाढ़ शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की द्वितीया (11/12 जुलाई) को भगवान् श्रीजगन्नाथ की सपरिवार रथयात्रा का भव्य उत्सव विशेषकर जगन्नाथपुरी (उड़ीसा) तथा देश के अन्य भागों में भी बड़े उत्साह एवं श्रद्धा से मनाया जाता है। **हरिशयनी एकादशी** (20 जुला.) से चातुर्मास्य व्रत, नियमादि प्रारम्भ होंगे, जोकि कार्तिक शुक्ल एकादशी अर्थात् हरिप्रबोधिनी एकादशी (15 नवम्बर) तक की अवधि पर्यन्त रहेंगे। धर्मपरायण तपस्वी लोग यह अवधि चातुर्मास्य व्रतादि नियमों का पालन करते हुए नित्य भगवान् विष्णु की पूजार्चना, स्तोत्र पाठ आदि में व्यतीत करते हैं। **गुरु पूर्णिमा** (23 जुलाई) के दिन भगवान् विष्णु, शिव और ऋषि वेदव्यास की पूजार्चना करके ईष्ट गुरु की यथाशक्ति वस्त्र, फल, मिष्ठान्न, धनादि द्वारा सेवा करनी चाहिए। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली आदि उत्तर-पश्चिमी भारत में गुरु पूर्णिमा महोत्सव 23 जुलाई को ही मनाया जाएगा, क्योंकि ता. 24 को पूर्णिमा तिथि त्रिमुहूर्त्त-व्यापिनी नहीं है (देखें पृष्ठ 26)।

श्रावण संक्रान्ति—16 जुलाई, शुक्रवार को सायं 4 बजकर 53 मिनट (16:53) पर वृश्चिक लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मु. इस संक्रां. का पुण्यकाल प्रातः 10घं.-29मि. से शुरु होगा। वारानुसार मिश्रा तथा नक्षत्रानुसार ध्वांक्षी नामक यह सं. व्यापारियों तथा पशुओं का क्रय-विक्रय करने वालों के लिए लाभप्रद रहेगी। **संक्रां. राशिफल**—यह सं. मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, धनु, मकर, कुम्भ तथा मीन राशि वालों के लिए लाभप्रद रहेगी। **ग्रहगोचर**—ता. 16 के बाद सूर्य-मंगल आदि ग्रहों के साथ शनि का समसप्तक शत्रु दृष्टि सम्बन्ध रहने से राजनैतिक वातावरण अशान्त तथा असमंजसपूर्ण रहेगा। राजनेताओं में परस्पर वाद-विवाद रहे। किसी नेता के अपदस्थ या मृत्यु का समाचार भी मिले। लोगों में रोग-शोक आदि दुःखों की बहुलता होगी, कही अनावृष्टि से हानि हो तथा दैनिक उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में विशेष वृद्धि हो। **आकाश लक्षण**—विपरीत ग्रहों का समसप्तक योग कुछ क्षेत्रों में गम्भीर सूखे का कारण बनेगा तथा कुछ क्षेत्रों में अनावृष्टि होगी।

वि. संवत् २०७८, श्रावण कृष्ण पक्ष शाक: १९४३

सन् 2021 ई. (ता. 25 जुलाई से 8 अगस्त तक), हिजरी सन् 1442
सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु:

ग्रह दर्शन—प्रातः गुरु पश्चिम में दिखेगा। सायं श. पूर्व में, मंगल पश्चिमी-क्षितिज में तथा शुक्र कुछ ऊपर की तरफ होगा। बुध अस्त है।

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी. पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी. पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी. पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी. पल	तारीखें श्रा. शक	हिजरी	जुलाई	श्राव. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
३४:१०	१	रवि	०:१८	श्रव.	१३:५५	आयु	४७:२५	कौ	०:१८	3	14	25	१०	कुं.४२:४०	**पंचक प्रारम्भ ४२:४० (22:48), बुध कर्क में १४:५० (11:40) (A)**	३:०८:०८:४३	5:44	19:24
अवम्	२	रवि	५५:५०	००	००	००	००	०	००	०	०	०	०	००	**द्वितीया तिथि का क्षय** ०० **(A)** अशून्यशयन व्रत	० ०० ०० ००	००	००
३४:०९	३	चन्द्र	५२:५८	धनि.	११:४५	सौभा	४२:१८	व	२४:२४	4	15	26	११	कुम्भ	भ. २४:२४ से ५२:५८ तक, बुध पुष्य में ५०:४३, **श्रावण सोमवार व्रत शुरु**	३:०९:०६:००	5:44	19:24
३४:०५	४	मंग	५१:५०	शत.	११:१३	शोभ	३८:३३	ब	२२:२४	5	16	27	१२	मी.५७:००	**अङ्गारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 20), मंगलागौरी व्रत प्रारम्भ	३:१०:०३:२०	5:45	19:23
३४:००	५	बुध	५२:३८	पू.भा.	१२:२८	अति.	३६:२०	कौ	२२:१४	6	17	28	१३	मीन	नाग-पंचमी (राज. व बंगाल), शुक्र पू.फा. में १५:३३ (11:59)	३:११:००:४२	5:46	19:22
३४:००	६	गुरु	५५:२३	उ.भा.	१५:४०	सुक.	३५:४०	ग	२४:०१	7	18	29	१४	मीन	भ. ५५:२३ से, गण्डमूल 12:02 से, स. सि. यो.	३:११:५८:०२	5:46	19:22
३३:५५	७	शुक्र	५९:४५	रेव.	२०:३८	धृति	३६:१८	वि	२७:३४	8	19	30	१५	मे.२०:३८	भ. २७:३४ तक, **पंचक समाप्त २०:३८** (14:02), शीतला सप्तमी	३:१२:५५:२६	5:47	19:21
३३:५०	८	शनि	६०:००	अश्वि	२७:०५	शूल	३८:०३	बा	३२:३४	9	20	31	१६	मेष	गण्डमूल 16:38 तक,	३:१३:५२:५०	5:48	19:20
३३:४८	८	रवि	५:२३	भर.	३४:३०	गंड	४०:३३	कौ	५:२३	10	21	अग	१७	वृ.५१:२८	अगस्त मास प्रारम्भ, लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव	३:१४:५०:१३	5:48	19:19
३३:४५	९	चन्द्र	११:४०	कृति.	४२:१५	वृद्धि	४३:१३	ग	११:४०	11	22	2	१८	वृष	भ. ४४:४९ से, सूर्य आश्ले. में ५४:४०, बुध आश्ले. में ११:२८	३:१५:४७:४०	5:49	19:19
३३:४३	१०	मंग	१७:५८	रोहि.	४९:४८	ध्रुव	४५:४०	वि	१७:५८	12	23	3	१९	वृष	भ. १७:५८ तक, राहु रोहि. १-केतु अनु. ३ में ४९:१० (25:29)	३:१६:४५:०५	5:49	19:18
३३:३८	११	बुध	२३:४०	मृग.	५६:२८	व्या.	४७:३०	बा	२३:४०	13	24	4	२०	मि.२३:१३	**कामिका एकादशी व्रत**, स. सि. यो.	३:१७:४२:३४	5:50	19:17
३३:३३	१२	गुरु	२८:१८	आर्द्रा	६०:००	हर्ष	४८:२५	तै	२८:१८	14	25	5	२१	मिथुन	**प्रदोष व्रत**	३:१८:४०:०५	5:51	19:16
३३:३०	१३	शुक्र	३१:३५	आर्द्रा	१:५५	वज्र	४८:१५	व	३१:३५	15	26	6	२२	क.५०:०८	भ. ३१:३५ से, **श्रावण शिवरात्रि व्रत** (देखें पृष्ठ 172), स. सि. यो.	३:१९:३७:३४	5:51	19:15
३३:२५	१४	शनि	३३:२०	पुन.	६:००	सिद्धि	४६:५३	वि	२:२८	16	27	7	२३	कर्क	भ. २:२८ तक, **(B)** शुक्र उ.फा. में २५:४५	३:२०:३५:०६	5:52	19:14
३३:२३	३०	रवि	३३:३८	पुष्य	८:३५	व्य.	४४:२३	च	३:२९	17	28	8	२४	कर्क	**श्रावण (हरियाली) अमावस, बुध मघा १ सिंह में ४९:१३ (B)**	३:२१:३२:४०	5:53	19:14

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 31 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	४	३	१०	४	९	१	७
१३	७	६	१२	५	१६	१६	१३	१३
५२	४७	३३	३	३४	३५	११	३२	३२
७	१२	५०	४७	२५	५३	५३	११	११
57	715	37	125	6	71	4	3	3
23	47	41	47	48	41	28	11	11
पुष्य ४	अश्वि ३	मघा २	पुष्य ३	धनि ४	पूफा १	श्रव २	रोहि २	अनु ४
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 31 जुलाई

४ सू. बु. | ५ शु. मं. | ३ | २ रा. | १ चं. | १२ | ११ गु. | १० श. | ९ | ८ के. | ७ | ६

रवौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 8 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	४	३	१०	४	९	१	७
२१	१४	११	२८	४	२६	१५	१३	१३
३१	३७	३५	२२	३७	८	३६	६	६
४४	७	५१	२७	२२	१३	१३	४५	४५
57	780	37	116	7	71	4	3	3
32	25	51	40	30	21	26	11	11
श्ले. २	पुष्य ४	मघा ४	श्ले. ४	धनि ४	पूफा ४	श्रव. २	रोहि १	अनु ३
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 8 अगस्त

४ सू. चं. बु. | ५ शु. मं. | ३ | २ रा. | १ | १२ | ११ गु. | १० श. | ९ | ८ के. | ७ | ६

श्रावण कृष्ण पक्षफल—

इस पक्ष की द्वितीया को लक्ष्मीनारायण की पूजा व स्तोत्र-पाठ करने का विधान है। यह '**अशून्यशयन व्रत**' पति-पत्नी में पारस्परिक प्रेम बढ़ाने में विशेष प्रशस्त होता है। यह व्रत मार्ग. कृ. द्वितीया तक किया जाता है। **श्रावण मास** में प्रतिदिन अथवा प्रति सोमवार को एकभुक्त व्रत रखकर शिवपूजन बिल्वपत्र, दूध, दही, ताण्डुल, चीनी, पुष्प, गंगाजल सहित '**ॐ नमः शिवाय:**' तथा, पंचाक्षरी मन्त्रों के साथ मंत्रपूर्वक अभिषेक आदि करने से मनोवांछित कामनाओं की पूर्ति होती है। श्रावण मास के ही प्रत्येक मंगलवार को मंगलागौरी का व्रत एवं पूजनादि करने से स्त्रियों को विवाह, सौभाग्यादि सुखों की प्राप्ति है। **कामिका एकादशी (4 अग.)** का व्रत रखकर मंजरी सहित तुलसीदल से भगवान् श्रीकृष्ण (या विष्णु) का पूजन करना चाहिए। घी का दीपक प्रज्वलित रखें तथा ब्राह्मणों को यथाशक्ति दान करने से सुखैश्वर्य साधनों की प्राप्ति होती है। **हरियाली अमावस (8 अग.)** को गंगादि तीर्थस्थान पर स्नान, जप, श्राद्ध, तर्पणादि एवं दक्षिणा सहित ब्राह्मण भोजन व दानादि करने का विशेष माहात्म्य कहा गया है। **ग्रह-गोचर**—कुम्भ राशिगत गुरु वक्री रहने से यद्यपि समाज में गौ, ब्राह्मणों तथा देवताओं का पूजन व सम्मान हो। घी, तेल, आदि पदार्थोंमें तेजी रहे, परन्तु मंगल-शुक्र का गुरु के साथ तथा सूर्य-बुध का शनि के साथ समसप्तक योग सम्बन्ध होने से उ.प्र., म.प्र., प. बंगाल आदि पूर्वी प्रदेशों में हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होंगी। **लोक-भविष्य**—श्रावण मास में पाँच रविवार होने से प्राकृतिक प्रकोपों एवं आतंकवादी गतिविधियों के कारण सामान्य लोगों में असुरक्षा एवं भय की स्थिति बने, कहीं छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन) एवं विस्फोट, जातीय हिंसा, अग्निकाण्ड आदि घटनाओं का भय होगा। कहीं अनाज की कमी, अत्यधिक महँगाई, दुर्भिक्ष अथवा अकालजन्य परिस्थितियां बन सकती हैं–'**यत्रमासे रविवाराः जायन्ते पंचसततम्। दुर्भिक्षं छत्रभङ्ग स्यात् दास्ते च महद्भयम्।।**' **आकाश लक्षण**—पक्ष में भारत के उत्तर तथा उत्तर-पूर्वी राज्यों में व्यापक वर्षा होने के योग हैं। **शकुन**—श्रा. कृ. में अश्विनी नक्षत्र (31 जुला.) में वर्षा हो तो सब दोषों (अवरोधों) का दूर होके आगे सुभिक्ष एवं खुशहाली रहेगी।

वि. संवत् २०७८, श्रावण शुक्ल पक्ष शाक: १९४३

सन् 2021 ई. (ता. 9 से 22 अगस्त तक), हिजरी सन् 1442–43
सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा–शरद् ऋतु:

प्रात: गुरु पश्चिमक्षितिज के पास दिखेगा। सायं मंगल पश्चिम क्षितिज में दृश्य 17 अग. से अस्त होगा, इस समय शुक्र पश्चिम में, ता. 15 से बुध भी पश्चिमी-क्षितिज में तथा शनि पूर्व में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घटी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घटी पल	योग	समाप्तिकाल घटी पल	करण	समाप्तिकाल घटी पल	तारीखें श्रा.शाके	हिज. मु.	अगस्त	श्राव प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
३३:२०	१	चन्द्र	३२:४०	आश्ले	९:५३	वरी.	४०:५३	किं	३:०९	18	29	9	२५	सिं. ९:५३	श्रावण शुक्लपक्ष प्रारम्भ, **मेला छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी) प्रारम्भ** रोटक व्रतारम्भ	३:२२:३०:१२	5:53	19:13
३३:१५	२	मंग	३०:३०	मघा	९:५८	परि.	३६:२८	बा	१:३५	19	30	10	२६	सिंह	**चन्द्रदर्शन**, मु. ३०, मंगल पू.फा. में ४४:०० (23:30), गंडमूल 9:53 तक	३:२३:२७:४७	5:54	19:12
३३:१०	३	बुध	२७:२८	पू.फा.	९:०३	शिव	३१:२०	ग	२७:२८	20	मु.	11	२७	कं.२३:४०	भ. ५५:३७ से, **मधुस्त्रवा–हरियाली–सिंघारा तीज, शुक्र कन्या में (A)**	३:२४:२५:२३	5:55	19:11
३३:०८	४	गुरु	२३:४५	उ.फा.	७:२५	सिद्ध	२५:४३	वि	२३:४५	21	2	12	२८	कन्या	भ. २३:४५ तक, दूर्वा गणपति व्रत, वरद्–चतुर्थी	३:२५:२२:५८	5:55	19:10
३३:०३	५	शुक्र	१९:२८	हस्त	५:१०	साध्य	१९:३५	बा	१९:२८	22	3	13	२९	तु.३३:५३	**नाग–पञ्चमी, श्रीकल्कि–जयन्ती** (देखें पृष्ठ 27)	३:२६:२०:३७	5:56	19:09
३२:५८	६	शनि	१४:४५	चित्रा स्वा.	२:२८ ५९:२६	शुभ	१३:०८	तै	१४:४५	23	4	14	३०	तुला	**बुध पश्चिम में उदय ५५:५० (28:17)**, स. सि. यो. 6:56 से	३:२७:१८:१६	5:57	19:08
३२:५५	७	रवि	९:४८	विशा.	५६:१३	शुक्ल ब्रह्म	६:२५ ५९:३३	व	९:४८	24	5	15	३१	वृ.४२:०३	भ. ९:४८ से ३६:०९ तक, **गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती, भारत (B)**	३:२८:१५:५४	5:57	19:07
३२:५०	८	चन्द्र	४:३०	अनु.	५२:४०	ऐन्द्र	५२:२५	ब	४:३०	25	6	16	भा.	वृश्चिक	**सूर्य मघा १ सिंह में ४८:१५, भाद्रपद संक्रान्ति**, मु. ३०, पुण्यकाल **(C)**	३:२९:१३:३६	5:58	19:06
अवम्	९	चन्द्र	५९:०३	००	००	००	००	०	००	०	०	०	०	००	**नवमी तिथि का क्षय** ०० ००	० ०० ०० ००	००	००
३२:४८	१०	मंग	५३:२८	ज्ये.	४९:०३	वैधृ.	४५:१३	तै	२६:१६	26	7	17	२	ध.४९:०३	**मंगल पश्चिम में अस्त ३२:४० (19:02)**, गण्डमूल विचार	४:००:११:१६	5:58	19:05
३२:४३	११	बुध	४७:४८	मूल	४५:२०	विष्क	३७:५५	व	२०:३८	27	8	18	३	धनु	भ. २०:३८ से ४७:४८ तक, **पवित्रा एकादशी व्रत**, वक्री गुरु धनि. ३ में **(D)**	४:०१:०८:५९	5:59	19:04
३२:३८	१२	गुरु	४२:१८	पू.षा.	४१:४५	प्रीति	३०:४३	ब	१५:०३	28	9	19	४	म.५५:५५	शुक्र हस्त में ४०:५८ (22:23)	४:०२:०६:४३	6:00	19:03
३२:३३	१३	शुक्र	३७:०८	उ.षा.	३८:३३	आयु	२३:४८	कौ	९:४३	29	10	20	५	मकर	**प्रदोष व्रत**	४:०३:०४:२६	6:00	19:01
३२:२८	१४	शनि	३२:३०	श्रव.	३५:५०	सौभा	१७:१३	ग	४:४९	30	11	21	६	मकर	भ. ३२:३० से, **ऋक्–उपाकर्म**, श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृष्ठ 25)	४:०४:०२:१३	6:01	19:00
३२:२५	१५	रवि	२८:४८	धनि.	३४:०८	शोभ	११:२०	वि	०:३९	31	12	22	७	कुं.४:५०	भ. ०:३९ तक, **श्रावण पूर्णिमा, रक्षा–बन्धन (राखी) (भद्रा बाद) (E)**	४:०४:५९:५९	6:01	18:59

(A) १४:०३ (11:32), मुहर्रम (मुस्लि. श्रीदुर्गाष्टमी) सं. 1443 हिजरी प्रारम्भ **(B)** **स्वतन्त्रता दिवस (75वाँ)**, श्रीदुर्गाष्टमी (देखें पृष्ठ 27), **मेला चिन्तपूर्णी–चामुण्डादेवी (हि.प्र.) समाप्त**, शीतला–सप्तमी (सिन्ध) **(C)** सं. अगले दिन प्रात: 7:40 तक, बुध पू.फा. में २:०८, गंडमूल 27:02 से **(D)** ०:४५ (6:17), गण्डमूल 24:07 तक **(E)** **पंचक प्रारम्भ ४:५० (7:57)**, यजुर्वेदि–अथर्ववेदि उपाकर्म हयग्रीव–जयन्ती, ऋषि–तर्पण, गायत्री–जयन्ती, दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा समाप्त (काश्मीर), संस्कृत दिवस, श्रावणी–उपाकर्म, कोकिला व्रत पूर्ण, सूर्य सायन कन्या में 27:05, शरद् ऋतु प्रारम्भ

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 16 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	७	४	४	१०	५	९	१	७
२९	३	१६	१३	३	५	१५	१२	१२
१२	५७	३९	१४	३५	३७	१	४१	४१
२९	५८	१४	१५	५७	३६	२२	१८	१८
57	849	38	104	7	71	4	3	3
40	27	1	47	51	6	14	11	11
आश्ले ४	अनु. १	पूफा १	मघा ४	धनि ४	उफा ३	श्रव २	रोहि १	अनु ३
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 16 अग.

४ सू.; ५ बु. मं.; ३; २ रा.; ६ शु.; ७; १; ८ चं. के.; ९; १० श.; ११ गु.; १२

रवौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 22 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	९	४	४	१०	५	९	१	७
४	२८	२०	२३	२	१२	१४	१२	१२
५८	३५	२७	२१	४८	४२	३६	२२	२२
४५	४९	३८	२३	४६	१५	३०	१३	१३
57	817	38	96	7	70	4	3	3
47	45	8	13	51	33	1	10	10
मघा २	धनि २	पूफा ३	पूफा ४	धनि ३	हस्त १	श्रव. २	रोहि १	अनु ३
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 22 अग.

५ सू. मं. बु.; ६ शु.; ४; ७; ३; ८ के.; २ रा.; ९; ११ गु.; १; १० चं. श.; १२

श्रावण शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की प्रतिपदा से अष्टमी तक (ता. 9 से 15 अग.) माता चिन्तपूर्णी (छिन्नमस्तिका), ज्वालामुखी एवं चामुण्डादेवी (काँगड़ा) के दरबार में भगवती जागरण, कीर्तन, लंगर एवं भव्य मेले का आयोजन किया जाता है (देखें पृष्ठ 27)। ता. 11 अग. को **सिंघारा** (हरियाली) तीज के दिन सुहागिन स्त्रियाँ अपने पीहर जाकर हाथों में मेहंदी रचाकर झूले झूलती हुई श्रावण के मलहार गीत गाती हैं। **नाग-पंचमी** (13 अग.) को अपने गृह–द्वार की दहलीज़ के दोनों ओर गोबर से सर्पाकृति बनाकर उनका दूध, दूर्वा, कुशा, गन्ध, पुष्प, अक्षत, लड्डुओं सहित पूजा करके '**ॐ कुरुकुल्ये हुं फट् स्वाहा।**' मन्त्र का 3 माला जप व नागस्तोत्र का पाठ करने से सर्प–विष का भय नहीं होता। **श्रावण-पूर्णिमा (22 अग.)** को भाई–बहिन के पवित्र सम्बन्धों का प्रतीक रक्षाबन्धन का त्यौहार अपराह्न–काल (13घं.–48मिं. से 16घं.–24मिं. तक) में समस्त भारत में मनाया जाएगा। यद्यपि उत्तरी भारत विशेषकर पंजाबादि में प्रात:काल ही रक्षाबन्धन पर्व मनाने की परम्परा है। **भाद्रपद संक्रान्ति**–ता. 16 अग., सोमवार की अर्द्धरात्रि के बाद 1 बजकर 16 मिनट पर वृष लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहू. इस संक्रां. का पुण्यकाल अगले दिन प्रात: 7घं.–40मिं. तक रहेगा। वारानुसार ध्वांक्षी तथा नक्षत्रानुसार मन्दाकिनी नामक यह सं. व्यापारियों, संग्रह करने वालों तथा राजनेताओं के लिए लाभप्रद रहेगी। **संक्रां. राशिफल**–यह सं. मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, धनु, मकर, कुम्भ तथा मीन राशि वालों के लिए लाभप्रद रहेगी। ता. 15 तक सूर्य–शनि मध्ये **समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध** सामाजिक एवं राजनीतिक वातावरण को विक्षुब्ध रखेगा। प्राकृतिक प्रकोपों के कारण भी व्यापक जन-धन हानि हो। **आकाश लक्षण**–पंजाब, हरि., हि.प्र., जम्मू-कश्मीर, दिल्ली, उत्तरी उ.प्र. में खण्ड वर्षा के योग हैं। **शकुन**–श्राव. शु. ८ को यदि प्रात:काले बादल आएं, तो आगे अच्छी वर्षा होगी।

वि. संवत् २०७८, भाद्रपद कृष्ण पक्ष शाक: १९४३

सन् 2021 ई. (ता. 23 अग. से 7 सितं. तक), हिजरी सन् 1443
सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, शरद् ऋतु:

ग्रह दर्शन—सायं गुरु पूर्वक्षितिज में, शनि पूर्व में, बुध पश्चिमी–क्षितिज में तथा शुक्र इससे कुछ ऊपर होगा। मंगल अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	भा. रा.	मुहर्रम	अगस्त	भाद्र प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	जालन्धर (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
३२:२०	१	चन्द्र	२६:१३	शत.	३३:३०	अति	६:१८	कौ	२६:१३	भा.	13	23	८	कुम्भ	गायत्री जपम्, शक भाद्रपद प्रारम्भ	४:०५:५७:४८	6:02	18:58
३२:१५	२	मंग	२५:०५	पू.भा.	३४:२०	सुक धृति	२:२० ५९:४३	ग	२५:०५	2	14	24	९	मी.१८:५८	भ. ५५:२३, कज्जली तृतीया (चन्द्रोदय व्यापिनी), बुध उ.फा. में ३:३०	४:०६:५५:३८	6:03	18:57
३२:१३	३	बुध	२५:४०	उ.भा.	३६:५३	शूल	५८:२३	वि	२५:४०	3	15	25	१०	मीन	भ. २५:४० तक, **श्रीगणेश (बहुला) चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 20) **(A)**	४:०७:५३:२८	6:03	18:56
३२:०८	४	गुरु	२७:५५	रेव	४१:०३	गंड	५८:२३	बा	२७:५५	4	16	26	११	मे.४१:०३	**पंचक समाप्त** ४१:०३ (22:29), **बुध कन्या में** १३:१०, गण्डमूल विचार, स.सि.यो.	४:०८:५१:२३	6:04	18:55
३२:००	५	शुक्र	३१:५०	अश्वि	४६:४५	वृद्धि	५९:३०	तै	३१:५०	5	17	27	१२	मेष	**चन्दन षष्ठी व्रत**, चन्द्रोदय 21:55 (जालन्धर), हल षष्ठी, गण्डमूल 24:47 तक	४:०९:४९:१८	6:05	18:53
३१:५८	६	शनि	३७:१०	भर.	५३:४५	ध्रुव	६०:००	ग	४:३०	6	18	28	१३	मेष	भ. ३७:१० से,	४:१०:४७:१३	6:05	18:52
३१:५३	७	रवि	४३:२०	कृति.	६०:००	ध्रुव	१:३५	वि	१०:१५	7	19	29	१४	वृ.१०:३५	भ. १०:१५ तक, पुत्र-व्रत, शीतला सप्तमी	४:११:४५:१२	6:06	18:51
३१:५०	८	चन्द्र	४९:४५	कृति.	१:२३	व्या.	४:१०	बा	१६:३३	8	20	30	१५	वृष	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत** (देखें पृष्ठ 31), सूर्य पू.फा. में ३८:०३, **श्रीदूर्वाष्टमी(B)**	४:१२:४३:१०	6:06	18:50
३१:४५	९	मंग	५५:४३	रोहि.	९:०३	हर्ष	६:४३	तै	२२:४४	9	21	31	१६	मि.४२:४३	**श्रीगुग्गा-नवमी, गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव**, मंगल उ.फा. में ४२:३३, **(C)**	४:१३:४१:१३	6:07	18:49
३१:३८	१०	बुध	६०:००	मृग.	१६:०५	वज्र	८:४८	व	२८:०९	10	22	सितं	१७	मिथुन	भ. २८:०९ से, सितम्बर मास प्रारम्भ, स. सि. यो.	४:१४:३९:१८	6:08	18:47
३१:३५	१०	गुरु	०:३५	आर्द्रा	२२:०३	सिद्धि	१०:००	वि	०:३५	11	23	2	१८	मिथुन	भ. ०:३५ तक, बुध हस्त में ११:०० (10:32)	४:१५:३७:२३	6:08	18:46
३१:३०	११	शुक्र	४:००	पुन.	२६:२३	व्य.	१०:००	बा	४:००	12	24	3	१९	क.१०:२५	**अजा एकादशी व्रत, वत्स द्वादशी (पूजा)**, अगस्त्य-उदय, स. सि. यो.	४:१६:३५:३३	6:09	18:45
३१:२८	१२	शनि	५:४०	पुष्य	२९:००	वरी.	८:४०	तै	५:४०	13	25	4	२०	कर्क	**शनि प्रदोष व्रत**, गण्डमूल 17:45 से	४:१७:३३:४०	6:09	18:44
३१:२०	१३	रवि	५:३०	आश्ले	२९:५३	परि.	५:५३	व	५:३०	14	26	5	२१	सिं.२९:५३	भ. ५:३० से ३४:३७ तक, **मंगल कन्या में** ५४:३०, **शुक्र तुला में** ४६:४०,**(D)**	४:१८:३१:५३	6:10	18:42
३१:१८	१४	चन्द्र	३:४३	मघा	२९:१३	शिव सिद्ध	१:५० ५६:३५	श	३:४३	15	27	6	२२	सिंह	**कुशाग्रहणी अमावस**–'ॐ हुं फट् स्वाहा' इहमंत्रेण कुशोत्पाटनम्,पिठोरी**(E)**	४:१९:३०:०३	6:10	18:41
३१:१३	३०	मंग	०:२८	पू.फा.	२७:१५	साध्य	५०:२५	ना	०:२८	16	28	7	२३	कं.४१:३८	**भाद्रपद अमावस**–स्नानदानादि प्रात: 6:22 तक, **भौमवती अमावस, (F)**	४:२०:२८:२१	6:11	18:40

(A) गण्डमूल 20:48 से, **(B)** (देखें पृष्ठ 28), **श्रीकृष्ण-जयन्ती योग**, स.सि.यो. **(C)** शुक्र चित्रा में २:५० (7:15) **(D)** मासशिवरात्रि व्रत, अघोरा चतुर्दशी, कैलाश यात्रा प्रारम्भ
(E) अमावस, पितृकार्येषु अमावस, **तीर्थस्नान माहात्म्य** (हरिद्वार, प्रयागादि), लोहार्गल यात्रा (स्नान), गण्डमूल 17:51 तक **(F)** रानी सती मेला (झुंझुनूं-राजस्थान)

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 30 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	४	५	१०	५	९	१	७
१२	९	२५	५	१	२२	१४	११	११
४१	२६	३३	३२	४६	४	५	५६	५६
४६	२२	२७	१६	४३	५१	४९	४७	४७
58 00	708 32	38 21	85 4	7 34	70 2	3 35	3 11	3 11
मघा ४	कृति ४	पूफा ४	उफा ३	धनि ३	हस्त ४	श्रव २	रोहि १	अनु ३
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 30 अग.

५ सू. मं. | ६ शु. बु. | ४ | ७ | ३ | ८ के. | २ चं. रा. | ९ | ११ गु. | १ | १० श. | १२

भौमे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 7 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	५	५	१०	६	९	१	७
२०	१९	०	१६	०	१	१३	११	११
२६	५९	४१	१०	४८	२३	३८	३१	३१
४२	१०	०	१२	१५	५	५३	२१	२१
58 15	834 23	38 34	72 20	6 55	69 26	3 4	3 11	3 11
पूफा ३	पूफा २	उफा २	हस्त २	धनि ३	चित्रा ३	श्रव २	रोहि १	अनु ३
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	अ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 7 सितंबर

५ सू. चं. | ६ बु. मं. | ४ | ७ शु. | ३ | ८ के. | २ रा. | ९ | ११ गु. | १ | १० श. | १२

भाद्रपद कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष में **श्रीगणेश बहुला चतुर्थी** (25 अग.) को व्रत रखकर सायंकाल श्रीगणेश का लड्डुओं सहित पूजन करने तथा चन्द्रोदय होने पर अर्घ्य देने से अभीष्ट सुखों की प्राप्ति होती है। ता. 27 अग. को '**चन्दन-षष्ठी**' का व्रत रखकर सूर्य व चन्द्रमा की पूजा करने से धन, सन्तति एवं सौभाग्य की वृद्धि होती है। ता. 30 अग., सोमवार को '**श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी**' का व्रत रखकर भगवान् कृष्ण की कथा श्रवण/पाठ करना तथा रात्रि को पुष्पाक्षत एवं फलों सहित पूजन करने से अनेक कायिक व मानसिक दु:खों की निवृत्ति होती है। जन्माष्टमी को रोहिणी नक्षत्र का योग होने से **जयन्ती** नामक प्रशस्त योग बना है, इसमें श्रीकृष्ण स्तोत्र का पाठ करना विशेष पुण्यकारक होगा। **वत्स-द्वादशी (3 सितं.)** को प्रात: बछड़े सहित गाय का पूजन करके मूँग, मोठ और बाजरा सहित भोजन का भोग लगाते हैं। इसदिन गाय का दूध, दही या गोघृत से परहेज़ करके भैंस का दूध प्रयोग में लाते हैं। **कुशाग्रहणी अमावस (6 सितं.)** को वर्षभर देव-पितृ कार्यों के लिए पूर्व या उत्तर दिशा में बैठकर दिन के द्वितीय प्रहर में दाएं हाथ से मन्त्रपूर्वक कुशा संग्रह करनी चाहिए। **लोक-भविष्य**—चान्द्र भाद्रपद मास में पाँच सोमवारों के फलस्वरूप देश में चावल आदि ग्रीष्मकालीन फसलें अच्छी होने के संकेत हैं। पक्षारम्भ में कन्या राशिस्थ शुक्र जो प्रतिकूल वर्षा आदि के कारण खेतियों, फसलों आदि के लिए नुकसानदायक था, ता. 5 सितं. से तुला राशि में आकर गुरु द्वारा दृष्ट रहेगा। किन्हीं देशों के मध्य युद्धजन्य विस्फोट, देश में कहीं-कहीं विरोध, उपद्रव एवं टकराव रहे।

आकाश लक्षण—रुक-रुक कर खण्ड वर्षा के योग हैं। **शकुन**—भाद्र. में भौमवती अमावस आना आगे किसी राज्य में छत्रभंग (राज्य-परिवर्तन), अल्पवृष्टि तथा फसलों की हानि होगी।

वि. संवत् २०७८, भाद्रपद शुक्ल पक्ष शाक: १९४३

सन् 2021 ई. (ता. 8 से 20 सितंबर तक), हिजरी सन् 1443
सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, शरद् ऋतु:

ग्रह दर्शन—सायं गुरु पूर्वक्षितिज में, शनि पूर्व में ऊपर, बुध पश्चिम क्षितिज में तथा उससे ऊपर शुक्र होगा। मंगल अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	तारीखें भाद्र. शाके	मुहर्रम मु.	सितंबर	भाद्र प्र.	चंद्र राशि प्रदेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
अवम्	१	मंग	५६:०८	००	००	००	००	०	००	०	०	०	०	००	भाद्रपद शुक्ल प्रतिपदा का क्षय	० ०० ०० ००	००	००
३१:०८	२	बुध	५०:५५	उ.फा.	२४:२०	शुभ	४३:३०	बा	२३:३२	17	29	8	२४	कन्या	चन्द्रदर्शन, मु. ३०	४:२१:२६:३८	6:12	18:39
३१:०३	३	गुरु	४५:१८	हस्त	२०:४८	शुक्ल	३६:१५	तै	१८:०७	18	सफ़	9	२५	तु.४८:५३	हरितालिका तृतीया, गौरी तृतीया, श्रीवराह-जयन्ती, सामवेदि (A)	४:२२:२४:५५	6:12	18:37
३०:५८	४	शुक्र	३९:२३	चित्रा	१६:५३	ब्रह्म	२८:४३	व	१२:२१	19	2	10	२६	तुला	भ. १२:२१ से ३९:२३ तक, सिद्धि विनायक व्रत, कलंक-चतुर्थी (B)	४:२३:२३:१७	6:13	18:36
३०:५५	५	शनि	३३:३३	स्वा.	१२:५५	ऐन्द्र	२१:१०	ब	६:२८	20	3	11	२७	वृ.५५:००	ऋषि-पंचमी, शुक्र स्वा. में ३२:३८, सम्वत्सरी महापर्व (जैन)	४:२४:२१:४७	6:13	18:35
३०:४८	६	रवि	२७:४८	विशा.	९:००	वैधृ	१३:४३	कौ	०:४१	21	4	12	२८	वृश्चिक	सूर्य षष्ठी व्रत,	४:२५:२०:०१	6:14	18:33
३०:४३	७	चन्द्र	२२:२०	अनु.	५:२३	विष्क प्रीति	६:२५ ५५:३०	व	२२:२०	22	5	13	२९	वृश्चिक	भ. २२:२० से ४९:४९ तक, मुक्ताभरण/सन्तान सप्तमी व्रत, श्रीमहालक्ष्मी(C)	४:२६:१८:२७	6:15	18:32
३०:४०	८	मंग	१७:१८	ज्ये. मूल	२:०५ ५९:१०	आयु	५२:५०	ब	१७:१८	23	6	14	३०	ध.२:०५	श्रीराधाष्टमी, वक्री गुरु धनि. 2 मकर में २०:३८ (14:30), दधीची(D)	४:२७:१६:५३	6:15	18:31
३०:३५	९	बुध	१२:३५	पू.षा.	५६:४०	सौभा	४६:३०	कौ	१२:३५	24	7	15	३१	धनु	श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन-सम्प्रदाय), श्रीभागवत् सप्ताह पाठारम्भ	४:२८:१५:२०	6:16	18:30
३०:३०	१०	गुरु	८:२३	उ.षा.	५४:४३	शोभ	४०:३८	ग	८:२३	25	8	16	आ	म.११:०८	भ. ३६:३१ से, सूर्य कन्या में ४७:२३ (25:13), आश्विन संक्रान्ति (E)	४:२९:१३:४८	6:16	18:28
३०:२५	११	शुक्र	४:३८	श्रव.	५३:१८	अति	३५:०८	वि	४:३८	26	9	17	२	मकर	भ. ४:३८ तक, पद्मा एकादशी व्रत, श्रीवामन-जयन्ती, श्रवण द्वादशी (F)	५:००:१२:२१	6:17	18:27
३०:१८	१२	शनि	१:३३	धनि	५२:३८	सुक	३०:१५	बा	१:३३	27	10	18	३	कुं.२२:५०	पंचक प्रारम्भ २२:५० (15:26), शनि प्रदोष व्रत	५:०१:१०:५४	6:18	18:26
अवम्	१३	शनि	५९:१५	००	००	००	००	०	००	०	०	०	०	००	त्रयोदशी तिथि का क्षय ०० ०० ००	० ०० ०० ००	००	००
३०:१५	१४	रवि	५७:५८	शत.	५२:५५	धृति	२६:०३	ग	२८:३७	28	11	19	४	कुम्भ	भ. ५७:५८ से, अनन्त चतुर्दशी व्रत, मेला बाबा सोढल (जालन्धर), कदली व्रत	५:०२:०९:२७	6:18	18:24
३०:१०	१५	चन्द्र	५७:४५	पू.भा.	५४:१८	शूल	२२:४०	वि	२७:५२	29	12	20	५	मी.३८:५०	भ. २७:५२ तक, भाद्रपद पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत, पूर्णिमा का श्राद्ध,(G)	५:०३:०८:०४	6:19	18:23

त्रयोदश दिनात्मक पक्ष
(देखें पृष्ठ 108)

(A) उपाकर्म, सफर (मुस्लि.) मास प्रारम्भ (B) (चन्द्रदर्शन निषेध), चन्द्रास्त 20:57 (जालन्धर), पत्थर-चौथ (C) व्रत प्रारम्भ (चन्द्रोदय व्यापिनी), सूर्य उ.फा. में २२:०८, बुध चित्रा में २४:१०, वक्री शनि श्रवण १ में ३५:५८, गण्डमूल 8:24 से (D) जयन्ती, गण्डमूल 29:55 तक (E) मु. ४५, पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रात: 7:37 तक, विष्णुश्रृंखल योग 28/09 से (F) विष्णुश्रृंखल योग 27:36 तक (देखें पृष्ठ 28), विश्वकर्मा पूजन (G) प्रोष्ठपदी-महालय श्राद्ध प्रारम्भ

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 14 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	५	५	१०	६	९	१	७
२७	२९	५	२३	०	९	१३	११	११
१५	४	११	५३	२	२७	१९	९	९
३	४२	३२	३८	१५	२१	५	५	५
58 26	840 54	38 45	56 52	5 55	68 48	2 30	3 10	3 10
उफा १	ज्ये. ४	उफा ३	चित्रा १	धनि ३	स्वा. १	श्रव १	रोहि १	अनु ३
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 14 सितंबर

५ सू. | ६ बु. मं. | ७ शु. | ८ चं. के. | ९ | १० श. | ११ गु. | १२ | १ | २ रा. | ३ | ४

चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 20 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	१०	५	५	९	६	९	१	७
३	२१	९	२८	२९	१६	१३	१०	१०
६	६	४	४८	२७	१८	५	५०	५०
६	५५	२७	१०	५७	३५	१९	०	०
58 37	780 34	38 55	36 29	5 12	68 9	1 59	3 11	3 11
उफा २	पूभा १	उफा ४	चित्रा २	धनि २	स्वा ३	श्रव १	रोहि १	अनु ३
०	०	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 20 सितंबर

६ सू. मं. बु. | ७ शु. | ८ के. | ९ | १० गु. श. | ११ चं. | १२ | १ | २ रा. | ३ | ४ | ५

भाद्रपद शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष में हरितालिका तीज (9 सितं.) का व्रत तथा शिव-गौरी की पूजा करना विशेषकर सौभाग्यवती विवाहित स्त्रियों के लिए पति, पुत्र-सन्तति एवं पौत्रादि सुखों को बढ़ाने वाला होता है। **सिद्धि विनायक** (10 सितं.) का व्रत रखकर श्रीगणेश जी के बीजमन्त्र (**ॐ गं गणपतये नमः**) तथा **श्रीगणेश-स्तोत्र** का पाठ करना चाहिए। इसदिन सायंकाल चन्द्रदर्शन करने से मिथ्या कलंक लगने का भय होता है। ता. 13 सितं. को **सन्तान-सप्तमी** का व्रत सन्तान सुख की कामना के पति-पत्नी दोनों के द्वारा रखकर भगवान् शिव-पार्वती एवं सूर्य-देव की पूजा की जाती है। ता 14 सितं. को मध्याह्न-व्यापिनी अष्टमी में श्रीराधा तथा ता. 13 से चन्द्रोदय-व्यापिनी अष्टमी से श्रीमहालक्ष्मी का व्रत प्रारम्भ करके आश्विन कृ. अष्टमी तक करने का विधान है। यह व्रत सौभाग्यवती स्त्रियां अपने सुहाग व परिवार के सौभाग्य एवं सुख-समृद्धि के लिए करती हैं। ता. 19 सितं. को अनन्त चतुर्दशी का व्रत रखकर भगवान् विष्णु के अनन्तस्वरूप का ध्यान करते हुए **'ॐ अनन्ताय नमः'** मंत्रपूर्वक पूजन करना चाहिए। भाद्रपद पूर्णिमा (20 सितं.) को महालय पूर्णिमा का श्राद्ध होने से अपराह्न काल में अपने दिवंगत आत्मीय पितरों के निमित्त पूर्णिमा का श्राद्ध किया जाएगा। **आश्विन संक्रान्ति**–ता. 16 सितं., गुरुवार को अर्द्धरात्रि के बाद 1 बजकर 13 मिनट (25:13) पर मिथुन लग्न में प्रवेश करेगी। ४५ मुहू. इस सं. का पुण्यकाल अगले दिन प्रात: 7घं.-37मिं. तक रहेगा। वार तथा नक्षत्रानुसार नन्दा (ध्रुव) नामक यह सं. ब्राह्मणों, अध्ययन करने वालों के लिए लाभप्रद रहेगी। **संक्रां. राशिफल**–यह सं. मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, धनु, कुम्भ तथा मीन राशि वालों के लिए लाभदायक रहेगी। **त्रयोदश दिनात्मक पक्ष**–भाद्रपद शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा तथा चतुर्दशी–दो तिथियों का क्षय होने से तेरह दिन (त्रयोदश दिनात्मक) पक्ष बना है, शास्त्रमतानुसार तेरह दिन के पक्ष में विवाह, मुण्डन, गृह-प्रवेश उपनयन आदि शुभ कर्मों के सम्पादन का निषेध माना गया है–तेरह दिन के पक्ष का फल भी अशुभ कहा गया है। इसके प्रभावस्वरूप प्रजा में रोग, भ्रष्टाचार, बेईमानी, उपद्रव, अतिशय महँगाई व हिंसक घटनाएं बढ़ती हैं। अधिक विवरण के लिए देखें पृष्ठ संख्या नं. 108. **आकाश लक्षण**–उ.प्र., बिहार, महाराष्ट्र, गुजरात के कुछ भागों में अतिवृष्टि होगी। उत्तर-पश्चिमी भारत में वर्षा की कमी रहे।

वि. संवत् २०७८, आश्विन कृष्ण पक्ष शाक: १९४३

सन् 2021 ई. (ता. 21 सितं. से 6 अक्तू. तक), हिजरी सन् 1443
सूर्य दक्षिणायन, उत्तर–दक्षिण गोल, शरद् ऋतु:

सायं शनि पूर्व कपाल में तथा गुरु भी इससे ऊपर याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में दिखाई देगा। इसी समय पश्चिमी क्षितिज में दृश्य बुध 3 अक्तू. से अस्त होगा। शुक्र पश्चिम में ही दिखेगा। मं. अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.–प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.–प.	योग	समाप्तिकाल घ.–प.	करण	समाप्तिकाल घ.–प.	तारीखें: भा. रा. शक	तारीखें: हिजरी सफर	तारीखें: सितं.-अक्टू.	तारीखें: सौर प्रविष्टे	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टै.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
३०:०५	१	मंग	५८:५३	उ.भा.	५६:५८	गंड	२०:१५	बा	२८:१९	30	13	21	६	मीन	**पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारम्भ**, प्रतिपदा तिथि का श्राद्ध, मंगल हस्त में २३:३३**(A)**	५:०४:०६:४२	6:19	18:22
३०:००	२	बुध	६०:००	रेव.	६०:००	वृद्धि	१८:५३	तै	३०:०९	31	14	22	७	मीन	द्वितीया तिथि का श्राद्ध, **बुध तुला में ५:००, सूर्य सायन तुला में ४६:१८** **(B)**	५:०५:०५:२२	6:20	18:20
२९:५८	२	गुरु	१:२५	रेव.	१:००	ध्रुव	१८:४०	ग	१:२५	आ	15	23	८	मे. १:००	भ. ३३:२४ से, **पंचक समाप्त १:००**, शुक्र विशा. में १३:१३, तृतीया का **(C)**	५:०६:०४:०४	6:20	18:19
२९:५३	३	शुक्र	५:२३	अश्वि	६:२३	व्या.	१९:२८	वि	५:२३	2	16	24	९	मेष	भ. ५:२३ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 20), भरणी श्राद्ध, चतुर्थी**(D)**	५:०७:०२:४७	6:21	18:18
२९:४८	४	शनि	१०:३८	भर.	१२:५८	हर्ष	२१:१०	बा	१०:३८	3	17	25	१०	वृ.२९:४८	पंचमी का श्राद्ध	५:०८:०१:३७	6:22	18:17
२९:४३	५	रवि	१६:४८	कृति.	२०:२८	वज्र	२३:३३	तै	१६:४८	4	18	26	११	वृष	चन्द्र षष्ठी व्रत,	५:०९:००:२४	6:22	18:15
२९:३८	६	चन्द्र	२३:२३	रोहि.	२८:१८	सिद्धि	२६:१०	व	२३:२३	5	19	27	१२	वृष	भ. २३:२३ से ५६:३४ तक, **षष्ठी का श्राद्ध** (देखें पृष्ठ 28), सूर्य हस्त में**(E)**	५:०९:५९:१५	6:23	18:14
२९:३५	७	मंग	२९:४५	मृग.	३५:५३	व्य.	२८:३८	ब	२९:४५	6	20	28	१३	मि..२:०८	सप्तमी का श्राद्ध, **श्रीमहालक्ष्मी व्रत सम्पन्न** (चन्द्रोदय व्यापिनी)	५:१०:५८:०७	6:23	18:13
२९:२८	८	बुध	३५:१५	आर्द्रा	४२:३५	वरी.	३०:२५	बा	२:३०	7	21	29	१४	मिथुन	जीवित्पुत्रिका व्रत, अष्टमी का श्राद्ध	५:११:५७:१३	6:24	18:11
२९:२३	९	गुरु	३९:२०	पुन.	४७:५३	परि.	३१:०८	तै	७:१८	8	22	30	१५	क.३१:४०	सौभाग्यवतीनां श्राद्ध, नवमी का श्राद्ध, मातृ–नवमी	५:१२:५६:०१	6:25	18:10
२९:२०	१०	शुक्र	४१:३८	पुष्य	५१:२३	शिव	३०:३३	व	१०:२९	9	23	अक्तू	१६	कर्क	भ. १०:२९ से ४१:३८ तक, दशमी का श्राद्ध, **वक्री बुध कन्या में ५०:५०(F)**	५:१३:५४:५९	6:25	18:09
२९:१५	११	शनि	४१:५३	आश्ले	५२:५३	सिद्ध	२८:२०	ब	११:४६	10	24	2	१७	सिं.५२:५३	**इन्दिरा एकादशी व्रत, शुक्र वृश्चिक में ८:२०, महात्मा गाँधी जयन्ती, +**	५:१४:५४:०३	6:26	18:08
२९:०८	१२	रवि	४०:०८	मघा	५२:२८	साध्य	२४:३५	कौ	११:०१	11	25	3	१८	सिंह	संन्यासीनां श्राद्ध, **मघा श्राद्ध**, गजच्छाया योग 22:30 से 27:26 तक, द्वादशी**(G)**	५:१५:५३:०८	6:27	18:06
२९:०५	१३	चन्द्र	३६:३८	पू.फा.	५०:२०	शुभ	१९:२०	ग	८:२३	12	26	4	१९	सिंह	भ. ३६:३८ से, **सोम प्रदोष व्रत**, मासशिवरात्रि व्रत + एकादशी का श्राद्ध	५:१६:५२:१३	6:27	18:05
२९:००	१४	मंग	३१:३३	उ.फा.	४६:४५	शुक्ल	१२:४५	वि	४:०६	13	27	5	२०	कं.४:३३	भ. ४:०६ तक, शस्त्र–विष–दुर्घटनादि (अपमृत्यु) से मृतों का श्राद्ध, राहु **(H)**	५:१७:५१:२३	6:28	18:04
२८:५८	३०	बुध	२५:१८	हस्त	४२:१०	ब्रह्म ऐन्द्र	५:१० ५६:४८	ना	२५:१८	14	28	6	२१	कन्या	**आश्विन/महालय अमावस, सर्वपितृ श्राद्ध, पितृ–विसर्जन**, चतुर्दशी/(I)	५:१८:५०:३२	6:28	18:03

(A) (15:44), गण्डमूल 29:06 से **(B)** (24:51), सूर्य दक्षिण गोल में, विषुव दिन **(C)** श्राद्ध, शक आश्विन प्रारम्भ **(D)** का श्राद्ध, गण्डमूल 8:54 तक **(E)** ०:४५, बुध वक्री १०:३३ (10:36) **(F)** (26:45), अक्तू. मास प्रारम्भ **(G)** श्राद्ध, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 18:07 घं.मिं. **(H)** कृति. ४–केतु अनु. २ में ४१:१०, गजच्छाया योग 25:10 से **(I)** अमावस तिथि का श्राद्ध, अज्ञात मृत्यु–तिथि वालों का श्राद्ध, गजच्छाया योग 16:35 तक, श्राद्ध–समाप्त

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 29 सितंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	५	६	९	६	९	१	७
११	११	१४	१	२८	२६	१२	१०	१०
५४	१	५५	७	४७	२७	५०	२१	२१
५०	२६	५०	५९	८	३२	४२	२३	२३
58	723	39	16	3	67	1	3	3
56	00	12	17	40	1	9	10	10
हस्त १	आर्द्रा २	हस्त २	चित्रा ३	धनि २	विशा २	श्रव. १	रोहि १	अनु ३
०	०	मा	व	व	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 29 सितंबर

भाव	राशि	ग्रह
1	६	सू. मं.
2	५	
3	४	
4	३	चं.
5	२	रा.
6	१	
7	१२	
8	११	
9	१०	गु. श.
10	९	
11	८	के.
12	७	शु. बु.

बुधे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 6 अक्तू.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	५	५	९	७	९	१	७
१८	१२	१९	२६	२८	४	१२	९	९
४८	३५	३०	३७	२५	१३	४४	५९	५९
९	२६	५७	५२	२२	३४	३९	८	८
59	869	39	64	2	65	0	3	3
11	36	26	39	21	57	28	11	11
हस्त ३	हस्त १	हस्त ३	चित्रा १	धनि २	अनु १	श्रव १	कृति ४	अनु २
०	०	मा	व	व	मा	व	व	व
०	अ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 6 अक्तू.

भाव	राशि	ग्रह
1	६	सू. चं. मं. बु.
2	५	
3	४	
4	३	
5	२	रा.
6	१	
7	१२	
8	११	
9	१०	गु. श.
10	९	
11	८	के. शु.
12	७	

आश्विन कृष्ण पक्षफल–

आश्विन कृष्ण पक्ष में दिवंगत अपने पितरों के निमित्त किए जाने वाले प्राय: सभी श्राद्धकर्म **'पार्वण श्राद्ध'** कहलाते हैं। श्राद्धों में अपने दिवंगत पूर्वजों की मृत्यु की तिथ्यनुसार तिल, जौं, चावल, कुशा, गंगाजल सहित तर्पण एवं ब्राह्मण–भोजन, दान व गोग्रास देने से पितृ संतृप्त रहते हैं तथा श्राद्धकर्त्ता को आयु, सन्तान, धन, ज्ञान, स्वर्ग–मोक्षादि सुख प्राप्ति का आशीर्वाद देते हैं। जो कोई व्यक्ति जान बूझकर श्राद्ध नहीं करता, वह शापग्रस्त होकर अनेक प्रकार के कष्टों एवं अभावों से पीड़ित रहता है। अष्टमी तिथि (28 सितं.) को **श्रीमहालक्ष्मी** तथा 29 सितं. को उदय–व्यापिनी अष्टमी में **जीवित्पुत्रिका** का व्रत, पूजनादि सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपने सुहाग एवं सन्तान की दीर्घायु की कामना से करती है। ता. 6 अक्तू. को **सर्वपितृ श्राद्ध** के दिन ज्ञात–अज्ञात तिथियों में मृतकजनों के निमित्त श्राद्ध कर्म करने से पितरों की शान्ति तथा श्राद्धकर्त्ता के गृह में सुख–शान्ति एवं पारिवारिक सौभाग्य में वृद्धि होती है। शास्त्र में मध्याह्न विशेषकर अपराह्न–काल में श्राद्ध कर्म करने का विधान कहा गया है। इस दिन ब्राह्मण–भोजन, दानादि के बाद गौ–ग्रास एवं पीपल पर जल–तिलाञ्जली करना शुभ होता है। सायंकाल गृहद्वार के बाहर दीप प्रज्वलित करके श्रद्धापूर्वक पितृ–विसर्जन करना चाहिए। **गजच्छाया योग**– अमावस तिथि को सूर्य एवं चन्द्रमा–दोनों हस्त नक्षत्र में होने से **'गजच्छाया'** नामक योग बना है। इस योग में तीर्थ–स्नान, दान, जप एवं ब्राह्मणों को भोजन, अन्न, वस्त्रादि का दान व श्राद्ध करने का विशेष माहात्म्य माना गया है। उपरोक्त पितृपक्ष में यह विशिष्ट योग 6 अक्तू. को सूर्योदय से सायं 16:35 तक विशेष रुप से रहेगा। (देखें पृष्ठ 29)

आकाश–लक्षण– आश्विन मास में पाँच मंगलवार होने से कुछ क्षेत्रों में अकाल, दुर्भिक्ष की स्थिति रहे। **शकुन**–आ.कृ.१० को बादल गर्जे, तो आगामी मास अनाजादि में तेजी हो।

वि. संवत् २०७८, आश्विन शुक्ल पक्ष शाकः १९४३

सन् 2021 ई. (ता. 7 से 20 अक्तूबर), हिजरी सन् 1443
सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद् ऋतुः

सायं शनि याम्योत्तरवृत्तासन्न, गुरु याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में तथा शुक्र पश्चिम में दिखेगा। ता. 16 अक्तू. से प्रातः बुध पूर्व में दृश्य होगा। मंगल अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ. प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ. प.	योग	समाप्तिकाल घ. प.	करण	समाप्तिकाल घ. प.	तारीखें आश्वि. शाके	सफर मु.	अक्टू.	आश्वि. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
२८:५०	१	गुरु	१८:१५	चित्रा	३६:५०	वैधृ.	४७:५५	ब	१८:१५	15	29	7	२२	तु. ९:३३	**शरद् नवरात्र प्रारम्भ, घटस्थापन (अभिजित् मुहूर्त्त में) देखें पृष्ठ 29(A)**	५:१९:४९:४५	6:29	18:01
२८:४५	२	शुक्र	१०:४८	स्वा.	३१:१३	विष्क	३८:५३	कौ	१०:४८	16	रवि	8	२३	तुला	वक्री बुध हस्त ४ में ५२:३५ (27:32), रवि-उल्लावल (मुस्लि.) मास प्रारंभ	५:२०:४९:०१	6:30	18:00
२८:४३	३	शनि	३:१८	विशा.	२५:४३	प्रीति	२९:५८	ग	३:१८	17	2	9	२४	वृ.१२:०५	भ. २९:४२ से ५६:०५ तक,	५:२१:४८:१६	6:30	17:59
अवम्	४	शनि	५६:०५	००	००	००	००	०	००	००	०	०	०	००	**चतुर्थी तिथि का क्षय** ०००	० ०० ०० ००	००	००
२८:३८	५	रवि	४९:२०	अनु.	२०:३३	आयु	२१:२०	ब	२२:४३	18	3	10	२५	वृश्चिक	उपाङ्ग ललिता व्रत, सूर्य चित्रा में ३२:४५ (19:37), गण्डमूल 14:44 से	५:२२:४७:३५	6:31	17:58
२८:३३	६	चन्द्र	४३:१८	ज्ये.	१६:००	सौभा	१३:१३	कौ	१६:१९	19	4	11	२६	ध.१६:००	मंगल चित्रा में ४५:१३, **शनि मार्गी ३:०३**, सरस्वती आवाहन मूलभे	५:२३:४६:५७	6:32	17:57
२८:२८	७	मंग	३८:१०	मूल	१२:१५	शोभ अति	५:४५ ५९:०३	ग	१०:४४	20	5	12	२७	धनु	भ. ३८:१० से, सरस्वती पूजन पू.षाभे, भद्रकाली अवतार, गंडमूल 11:26 तक	५:२४:४६:१८	6:32	17:55
२८:२३	८	बुध	३३:५८	पू.षा.	९:२५	सुक	५३:०५	वि	६:०४	21	6	13	२८	म.२३:५३	भ. ६:०४ तक, **श्रीदुर्गाष्टमी**, महाष्टमी, बुधाष्टमी, सरस्वती बलिदान उ.षाभे	५:२५:४५:४३	6:33	17:54
२८:१८	९	गुरु	३०:४८	उ.षा.	७:३३	धृति	४७:५८	बा	२:२३	22	7	14	२९	मकर	महानवमी (पूजा, उपवास एवं बलिदान हेतु), सरस्वती विसर्जन श्रवणे, नवरात्र समाप्त	५:२६:४५:१०	6:34	17:53
२८:१५	१०	शुक्र	२८:४३	श्रव.	६:४५	शूल	४३:४०	ग	२८:४३	23	8	15	३०	कुं.३६:४५	भ. ५८:११ से, **पंचक प्रारम्भ ३६:४५, विजयादशमी (दशहरा) (B)**	५:२७:४४:३६	6:34	17:52
२८:१०	११	शनि	२७:३८	धनि.	६:५८	गंड	४०:१३	वि	२७:३८	24	9	16	३१	कुम्भ	भ. २७:३८ तक, **पापांकुशा एकादशी व्रत**, भरत-मिलाप	५:२८:४४:०५	6:35	17:51
२८:०५	१२	रवि	२७:४०	शत.	८:१३	वृद्धि	३७:३८	बा	२७:४०	25	10	17	का	मी.५४:५३	**सूर्य तुला मे १६:३०, कार्तिक संक्रान्ति**, मु. ३०, पुण्यकाल सं. प्रातः 6:48 से,(C)	५:२९:४३:३८	6:36	17:50
२८:००	१३	चन्द्र	२८:४८	पू.भा.	१०:३०	ध्रुव	३५:५३	तै	२८:४८	26	11	18	२	मीन	प्रदोष व्रत (देखें पृष्ठ 29), गुरु मार्गी १०:४५ (10:55), बुध मार्गी ३५:१५ (20:43)	६:००:४३:११	6:37	17:49
२७:५८	१४	मंग	३१:०८	उ.भा.	१३:५८	व्या.	३५:०३	व	३१:०८	27	12	19	३	मीन	भ. ३१:०८ से, **शरद् पूर्णिमा व्रत** (देखें पृष्ठ 29), कोजागर व्रत (D)	६:०१:४२:४४	6:37	17:48
२७:५०	१५	बुध	३४:३३	रेव.	१८:३०	हर्ष	३५:०३	वि	२:५१	28	13	20	४	मे.१८:३०	भ. २:५१ तक, **पंचक समाप्त १८:३० (14:02), आश्विन पूर्णिमा, (E)**	६:०२:४२:२२	6:38	17:46

(A) महाराजा अग्रसेन जयन्ती, मातामह (नाना/नानी) का श्राद्ध, चन्द्रदर्शन, मु. १५ **(B)** अपराजिता-पूजन, वक्री बुध पूर्व में उदय 29:14 (घं.मिं.), शमी-पूजा, आयुध (शस्त्र) पूजा, सीमोल्लंघन **(C)** शुक्र ज्येष्ठा में २७:००, आकाश दीपदान प्रारम्भ, पद्मनाभ द्वादशी **(D)** (लक्ष्मी-इन्द्र पूजन), महारास पूर्णिमा (ब्रजभूमि), मेला शाकम्भरी देवी (देवबन्द), **(E)** महर्षि श्रीवाल्मीकि जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, **कार्तिक स्नान-नियम प्रारम्भ**, खीर भोग अर्पण

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 13 अक्तू.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	५	५	९	७	९	१	७
२५	२३	२४	१८	२८	११	१२	९	९
४३	५२	७	४८	१३	५१	४३	३६	३६
८	५४	४०	१५	६	२३	३०	५२	५२
59	827	39	52	0	64	0	3	3
25	48	40	54	57	36	14	11	11
चित्रा १	पूषा ४	चित्रा १	हस्त ३	धनि २	अनु ३	श्रव १	कृत्ति ४	अनु २
०	०	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 13 अक्तू.

६ सू. मं. बु.; ७; ५; ८ शु. के.; ४; ९ चं.; ३; १० गु. श.; १२; २ रा.; ११; १

बुधे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 20 अक्तू.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	११	५	५	९	७	९	१	७
२	२५	२८	१६	२८	१९	१२	९	९
३९	३७	४५	८	१०	१८	४७	१४	१४
३५	२७	५८	२०	४०	३६	१७	३७	३७
59	735	39	20	0	62	0	3	3
37	40	53	2	27	52	57	11	11
चित्रा ३	रेव ३	चित्रा २	हस्त २	धनि २	अनु १	श्रव १	कृत्ति ४	अनु २
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 20 अक्तू.

७ सू.; ८ के. शु.; ६ बु. मं.; ९; ५; १० गु. श.; ४; ११; ३; १; १२ चं.; २ रा.

आश्विन शुक्ल पक्षफल–

प्रतिपदा (7 अक्तू.) से शारदीय नवरात्रों का शुभारम्भ होगा। इस दिन श्रीदुर्गा माता के सम्मुख मंगलमंत्रपूर्वक अखण्डदीप प्रज्वलन, शुद्धपात्र में शुद्ध रेत/मिट्टी डालकर जौं/गेहूँ/सप्तधान्य के बीज वपन करने के बाद, श्रीदुर्गा पूजन, कलश-स्थापन, प्रमुख देवी-देवता-आवाहन, पूजनादि के बाद श्रीदुर्गा-सप्तशती का पाठारम्भ किया जाता है। प्रतिपदा के दिन चित्रा नक्षत्र या वैधृति (अशुभ) योग होने से शास्त्रानुसार अभिजित् मुहूर्त्त (दुपै. 11घं.-51मिं. से 12घं.-39मिं. तक) में कलश (घट) स्थापन करना शुभ होगा (देखें पृष्ठ 29)। नवरात्रों में श्रीदुर्गा-पूजन, कुमारी पूजन एवं दानादि करने का विशेष महत्त्व होता है।

पूजन-मन्त्र–'ॐ जयन्ती मंगलाकाली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते। आगच्छ वरदे देवी पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकरप्रिये।।' **कार्तिक संक्रान्ति**–ता. 17 अक्तू., रविवार को दोप. 1 बजकर 12 मिनट (13घं.-12मिं.) पर धनु लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहू. इस सं. का पुण्यकाल प्रातः 6घं.-48मिं. से शुरु हो जाएगा। वारानुसार तथा नक्षत्रानुसार घोरा नामक यह सं. दुष्ट एवं नीच प्रवृत्ति वाले कपटी लोगों के लिए लाभप्रद रहेगी। **संक्रान्ति राशिफल**–यह सं. मेष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, धनु, मकर, कुम्भ तथा मीन राशि वालों के लिए लाभप्रद रहेगी। **शरद् पूर्णिमा (19 अक्तू.)**, मंगलवार का व्रत रखकर व भगवान् लक्ष्मीनारायण का पूजन करके अर्द्धरात्रि को छिटकती चाँदनी में किशमिश/बादाम युक्त रखी हुई खीर दूसरे दिन भगवान् को भोग लगाकर ब्राह्मणों को खिलाकर प्रसाद रूप में स्वयं सपरिवार ग्रहण करने से अनेक प्रकार के मानसिक व शारीरिक रोगों की शान्ति होती है। आश्विन मास में पाँच मंगलवार तथा रविवारी कार्तिक सं. होने से देश में कहीं युद्ध-भय, हिंसक घटनाओं की संभावना, छत्रभङ्ग एवं साम्प्रदायिक घटनाओं का भय होगा। किसी प्रमुख नेता के अपदस्थ या आकस्मिक मृत्यु के भी योग हैं।

वि. संवत् २०७८ कार्तिक कृष्ण पक्ष शाक : १९४३

सन् 2021 ई. (ता. 21 अक्तूबर से 4 नवम्बर), हिजरी सन् 1443
सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद्–हेमन्त ऋतु :

प्रातः बुध पूर्व–क्षितिज में होगा। सायं शनि याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में तथा गुरु याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा। इसी समय शुक्र पश्चिम में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घटी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घटी पल	योग	समाप्तिकाल घटी पल	करण	समाप्तिकाल घटी पल	तारीखें शाके	हिजरी	अक्टू.	कार्ति. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
२७:४५	१	गुरु	३९:०५	अश्वि	२४:०५	वज्र	३५:५३	बा	६:४९	29	14	21	५	मेष	कार्तिक कृष्णपक्ष शुरु, मंगल तुला में ४८:२५ (26:01), गण्डमूल (A)	६:०३:४२:०१	6:39	17:45
२७:४०	२	शुक्र	४४:३५	भर.	३०:४०	सिद्धि	३७:२८	तै	११:५०	30	15	22	६	वृ.४७:२८		६:०४:४१:४३	6:40	17:44
२७:३८	३	शनि	५०:५५	कृति.	३८:०३	व्य.	३९:४०	व	१७:४५	का	16	23	७	वृष	भ. १७:४५ से ५०:५५ तक, सूर्य स्वाती में ५८:५०, सूर्य सायन वृश्चिक (B)	६:०५:४१:२४	6:40	17:43
२७:३३	४	रवि	५७:३८	रोहि.	४५:५३	वरी	४२:१३	ब	२४:१७	2	17	24	८	वृष	व्रत करवा-चौथ (करक-चतुर्थी) चन्द्रोदय हेतु देखें पृष्ठ 20, श्रीगणेश(C)	६:०६:४१:१०	6:41	17:42
२७:२८	५	चन्द्र	६०:००	मृग.	५३:४३	परि	४४:४५	कौ	३०:५७	3	18	25	९	मि.१९:४८		६:०७:४१:०१	6:42	17:41
२७:२३	५	मंग	४:१५	आर्द्रा	६०:००	शिव	४७:००	तै	४:१५	4	19	26	१०	मिथुन		६:०८:४०:५०	6:43	17:40
२७:२०	६	बुध	१०:२०	आर्द्रा	१:०३	सिद्ध	४८:३३	व	१०:२०	5	20	27	११	क.५०:५८	भ. १०:२० से ४२:४८ तक, स्कन्द षष्ठी	६:०९:४०:४१	6:43	17:39
२७:१५	७	गुरु	१५:१५	पुन.	७:२३	साध्य	४९:००	ब	१५:१५	6	21	28	१२	कर्क	अहोई अष्टमी व्रत (चन्द्रोदय व्यापिनी), बुध चित्रा में २५:२०, स.सि.यो.	६:१०:४०:३६	6:44	17:38
२७:१०	८	शुक्र	१८:३३	पुष्य	१२:१३	शुभ	४८:०३	कौ	१८:३३	7	22	29	१३	कर्क	राधाष्टमी (मथुरा), राधाकुण्ड स्नान, गण्डमूल 11:38 से	६:११:४०:३२	6:45	17:37
२७:०८	९	शनि	१९:५५	आश्ले	१५:१५	शुक्ल	४५:३३	ग	१९:५५	8	23	30	१४	सिं.१५:१५	भ. ४९:३५ से, शुक्र मूल १ धनु में २३:३० (16:10)	६:१२:४०:३०	6:46	17:37
२७:०५	१०	रवि	१९:१५	मघा	१६:१५	ब्रह्म	४१:२८	वि	१९:१५	9	24	31	१५	सिंह	भ. १९:१५ तक, मंगल स्वा. में ४६:२०, सरदार पटेल जयन्ती, एकता दिवस,(D)	६:१३:४०:२९	6:46	17:36
२७:००	११	चन्द्र	१६:२८	पू.फा.	१५:१५	ऐन्द्र	३५:४३	वा	१६:२८	10	25	नवं	१६	कं.२९:४०	रमा एकादशी व्रत, गोवत्स द्वादशी (प्रदोष व्या.), नवम्बर मास प्रारंभ,(E)	६:१४:४०:३२	6:47	17:35
२६:५५	१२	मंग	११:४८	उ.फा.	१२:२०	वैधृ.	२८:३३	तै	११:४८	11	26	2	१७	कन्या	भौम प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी, यम प्रीत्यर्थं दीपदान, बुध तुला में ७:४०(9:52)	६:१५:४०:३८	6:48	17:34
२६:५०	१३	बुध	५:३३	हस्त	७:५३	विष्क	२०:०८	व	५:३३	12	27	3	१८	तु.३५:१०	भ. ५:३३ से ३१:५१ तक, श्रीहनुमान जयन्ती (उ. भारत, अर्द्धरात्रि व्या.)(F)	६:१६:४०:४५	6:49	17:33
अवम्	१४	बुध	५८:०८	००	००	००	००	०	००	०	०	०	०	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ००	० ०० ०० ००	००	००
२६:४५	३०	गुरु	४९:४८	चित्रा स्वा.	२:१० ५५:४३	प्रीति	१०:५०	च	२३:५८	13	28	4	१९	तुला	कार्तिक अमावस, दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन(देखें पृष्ठ 185)कुबेर-(G)	६:१७:४०:५४	6:50	17:32

(A) 16:17 तक, स.सि.यो. (B) में ९:१३, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, शक कार्तिक प्रारम्भ (C) चतुर्थी व्रत, दशरथ चतुर्थी (D) गण्डमूल 13:16 तक (E) हरियाणा दिवस, कौमुदि महोत्सव प्रारम्भ (F) नरक–चतुर्दशी (पर-अरुणोदय वाली), यमाय तर्पण, श्रीधनवन्तरी–जयन्ती, तैलाभ्यंग, रूप–चौदश (G) पूजा, सायं दीपदान गृहे–देवालये श्रीमहावीर निर्वाण दिवस (जैन), कौमुदि महोत्सव सम्पन्न, महाकाली–पूजा

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 29 अक्तू.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	६	५	९	७	९	१	७
११	१३	४	२४	२८	२८	१२	८	८
३७	२८	४६	०	२१	३३	५९	४६	४६
२५	५७	१७	५१	५८	२८	२३	०	०
59	755	40	81	2	59	1	3	3
56	8	13	20	15	59	50	11	11
स्वा.	पुष्य	चित्रा	चित्रा	धनि	ज्ये.	श्रव.	कृत्ति	अनु.
२	४	४	१	२	४	१	४	२
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 29 अक्तू.

८ के. शु. | ७ सू. मं. | ६ बु. | ९ | ५ | १० गु. श. | ४ चं. | ११ | १ | ३ | १२ | २ रा.

गुरौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 4 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	६	६	९	८	९	१	७
१७	५	८	२	२८	४	१३	८	८
३७	१८	४८	४७	३८	२७	११	२६	२६
३४	१४	१०	२६	२४	३०	५३	५५	५५
60	896	40	93	3	57	2	3	3
9	6	27	56	25	31	25	11	11
स्वा.	चित्रा	स्वा.	चित्रा	धनि	मूल	श्रव	कृत्ति	अनु.
४	४	१	३	२	२	१	४	२
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 4 नवंबर

८ के. | ७ सू. चं. मं. बु. | ६ | ९ शु. | ५ | १० गु. श. | ४ | ११ | १ | ३ | १२ | २ रा.

कार्तिक कृष्ण पक्षफल–

कार्तिक कृष्ण चतुर्थी (24 अक्तू.) को पतिव्रता स्त्रियां अपने पति के मंगल हेतु एवं आयु वृद्धि की कामना से 'करवा-चौथ' का व्रत रखती हैं। वे निराहार रहकर सायंकाल को श्रीगणेश-पूजन, करवा-दान, शिव-पार्वती पूजन एवं चन्द्रमा को अर्घ्य प्रदान कर, पति की प्रतिष्ठा करने के उपरान्त ही स्वयं भोजन करती हैं। अहोई अष्टमी (28 अक्तू.) का व्रत, पूजन भी प्रदोष-व्यापिनी अष्टमी के दिन सन्तान व पति के कल्याण हेतु किया जाता है। धन त्रयोदशी (2 नवं.) को सायं नवीन बर्तन क्रय करना, श्रीलक्ष्मी-नारायण का पूजन करने के बाद अनाज, वस्त्र, औषधियां एवं यमार्थ दीपदान करने से अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता। (3) नवं. को नरक-चतुर्दशी के दिन बिजली, अग्नि, उल्का आदि से मृतकों की शान्ति के लिए चार मुख वाले दीपक को प्रज्वलित करके यथाशक्ति दान करें। सायंकाल को दक्षिण दिशा की ओर मुख करके जल, तिल और कुश लेकर तर्पण करें। इस दिन की अर्धरात्रि के समय घृतपूर्ण दीपक जलाकर श्रीहनुमान जयन्ती मनाई जाती है। उन्हें मोदक, केले, फलादि अर्पण करें एवं सुन्दरकाण्ड आदि हनुमद् स्तोत्रों का पाठ करें। ता. 4 नवं., गुरुवार को कार्तिक अमावस्या (दीपावली) को प्रदोषकाल में दीपदान करके अपने गृह के पूजा-स्थान में मन्त्रपूर्वक दीप प्रज्वलित करके महालक्ष्मी की यथाविधि पूजा करनी चाहिए (देखें पृष्ठ 185)। **लोक-भविष्य**–सूर्य-मंगल पर शनि की विशेष शत्रु दशम दृष्टि रहने से राजनीतिक वातावरण बड़ा असमंजसपूर्ण तथा आरोप-प्रत्यारोप भरा रहेगा। काश्मीर, प. बंगाल आदि प्रदेशों में कहीं उपद्रव, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएं अधिक घटित होंगी। आकाश लक्षण–पक्ष के पूर्वार्द्ध में आकाश निर्मल रहे, उत्तरार्द्ध में उत्तर-पश्चिमी विशेषकर पहाड़ी क्षेत्रों में खण्ड वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०७८, कार्तिक शुक्ल पक्ष शाकः १९४३

सन् 2021 ई. (ता. 5 से 19 नवंबर तक), हिजरी सन् 1443
सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतुः

7 नवं. से प्रातः दृश्य बु. पूर्व में अस्त हो जाएगा। सायं शुक्र पश्चिम में, शनि पश्चिमकपाल में तथा गुरु याम्योत्तरवृत्त से कुछ पश्चिम की ओर दिखाई देगा। मं. अभी अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घटी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घटी पल	योग	समाप्तिकाल घटी पल	करण	समाप्तिकाल घटी पल	कार्तिक शक	रबिउल अ.	नवंबर	कार्तिक प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	व्रत-पर्व	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
२६:४३	१	शुक्र	४१:००	विशा	४८:५०	आयु/सौभा	०:५३/५०:४०	किं	१५:२४	14	29	5	२०	वृ.३५:३३	अन्नकूट-गोवर्धन पूजा, गोक्रीड़ा, बलिपूजा, विश्वकर्मा दिवस (पंजाब)	६:१८:४१:०५	6:51	17:32
२६:४०	२	शनि	३२:१५	अनु	४२:००	शोभ	४०:५३	बा	६:३८	15	30	6	२१	वृश्चिक	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, भ्रातृ (भाई) दूज, यम-द्वितीया, सूर्य विशा. में १८:४०,(A)	६:१९:४१:१६	6:51	17:31
२६:३५	३	रवि	२३:४८	ज्ये.	३५:३३	अति	३०:४०	ग	२३:४८	16	रबि	7	२२	ध.३५:३३	भ. ४९:५४ से, रबि-उल्सानी (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	६:२०:४१:३१	6:52	17:30
२६:३०	४	चन्द्र	१६:००	मूल	२९:५०	सुक	२१:२५	वि	१६:००	17	2	8	२३	धनु	भ. १६:०० तक, दूर्वा गणपति व्रत, गण्डमूल 18:49 तक	६:२१:४१:४६	6:53	17:29
२६:२८	५	मंग	९:१५	पू.षा.	२५:१५	धृति	१३:००	बा	९:१५	18	3	9	२४	म.३९:१८	सौभाग्य-पंचमी, जया-पंचमी, ज्ञान-पंचमी (जैन)	६:२२:४२:०२	6:54	17:29
२६:२३	६	बुध	३:४८	उ.षा.	२१:५८	शूल/गंड	५:३८/५९:२८	तै	३:४८	19	4	10	२५	मकर	भ. ५९:४८ से, सूर्य षष्ठी पर्व (बिहार)	६:२३:४२:२४	6:55	17:28
अवम्	७	बुध	५९:४८	००	००	००	००	०	००	०	०	०	०	००	सप्तमी तिथि का क्षय ०० ००	० ०० ०० ००	००	००
२६:१८	८	गुरु	५७:२०	श्रव.	२०:०८	वृद्धि	५४:३०	वि	२८:३४	20	5	11	२६	कुं.४९:४८	भ. २८:३४ तक, पंचक प्रारम्भ ४९:४८, गोपाष्टमी, पुष्कर मेला प्रारम्भ (राजस्थान)	६:२४:४२:४५	6:56	17:27
२६:१७	९	शुक्र	५६:३०	धनि.	१९:५३	ध्रुव	५०:४८	बा	२६:५५	21	6	12	२७	कुम्भ	अक्षय-कूष्माण्ड नवमी, आरोग्य व्रत, आमला-नवमी, जगद्धातृ पूजा	६:२५:४३:०५	6:56	17:27
२६:१३	१०	शनि	५७:१०	शत.	२१:१०	व्या.	४८:१८	तै	२६:५०	22	7	13	२८	कुम्भ	शुक्र पू.षा. में ३४:४३, ब्रह्मप्राप्ति व्रत	६:२६:४३:२८	6:57	17:26
२६:१०	११	रवि	५९:१५	पू.भा.	२३:५३	हर्ष	४६:५३	व	२८:१३	23	8	14	२९	मी. ८:०३	भ. २८:१३ से ५९:१५ तक, हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स्मार्त) (B)	६:२७:४३:५३	6:58	17:26
२६:०५	१२	चन्द्र	६०:००	उ.भा.	२७:५५	वज्र	४६:२८	ब	३०:४३	24	9	15	३०	मीन	हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (वैष्णव), तुलसी विवाह (देखें पृष्ठ 29)(C)	६:२८:४४:१९	6:59	17:25
२६:०३	१२	मंग	२:१०	रेव.	३३:०५	सिद्धि	४६:५५	बा	२:१०	25	10	16	मा	मे.३३:०५	पंचक समाप्त ३३:०५, भौम प्रदोष व्रत, सूर्य वृश्चिक में १५:०३ (D)	६:२९:४४:४७	7:00	17:25
२५:५८	१३	बुध	७:०५	अश्वि	३९:१५	व्य.	४८:०५	तै	७:०५	26	11	17	२	मेष	वैकुण्ठ चतुर्दशी, गण्डमूल 22:43 तक	७:००:४५:१६	7:01	17:24
२५:५५	१४	गुरु	१२:२८	भर.	४६:०८	वरी.	४९:५०	व	१२:२८	27	12	18	३	मेष	भ. १२:२८ से ४५:३२ तक, भीष्मपंचक समाप्त (देखें पृष्ठ 30), (E)	७:०१:४५:४७	7:02	17:24
२५:५३	१५	शुक्र	१८:३५	कृति.	५३:३८	परि.	५२:०३	ब	१८:३५	28	13	19	४	वृ. २:५८	कार्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरु नानकदेव जयन्ती, कार्तिक स्नान समाप्त (F)	७:०२:४६:१८	7:02	17:23

(A) बुध स्वा. में २४:०८, विश्वकर्मा पूजन, बुध पूर्व में अस्त 29:53 (घं.मिं.), यमुना-स्नान, कलम-दवात पूजन, गण्डमूल 23:39 से **(B)** भीष्मपंचक प्रारम्भ, बुध विशाखा में ४०:३३ (23:11), नेहरू-जयन्ती (बाल-दिवस), चातुर्मास्य व्रत-नियम समाप्त **(C)** हरिप्रबोधोत्सव, गण्डमूल 18:09 से **(D)** मार्गशीर्ष संक्रान्ति, मु. ३०, पुण्यकाल सं. सूर्योदय बाद आकाश दीपदान समाप्त **(E)** श्रीसत्यनारायण व्रत, त्रिपुरोत्सव **(F)** ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण (देखें पृष्ठ 33), मेला पुष्करतीर्थ (राजस्थान), सूर्य अनु. में ३३:२३, मेला रामतीर्थ (अमृतसर, पंजाब), पद्मक योग (देखें पृष्ठ 30), कार्तिकी

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 11 नवंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	६	६	९	८	९	१	७
२४	१७	१३	१३	२९	१०	१३	८	८
३९	५७	३२	५७	६	५९	३०	४	४
१०	२	२	५८	१९	३२	४९	४०	४०
60	811	40	96	4	53	3	3	3
20	27	42	57	44	46	5	11	11
विशा २	श्रव ३	स्वा ३	स्वा ३	धनि २	मूल ४	श्रव २	कृति ४	अनु २
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 11 नवंबर

८ के. | ७ सू. मं. बु. | ६ | ९ शु. | ५ | १० चं. गु. श. | ४ | ११ | १ | ३ | १२ | २ रा.

शुक्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 19 नवंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	०	६	६	९	८	९	१	७
२	२८	१८	२६	२९	१७	१३	७	७
४२	३९	५८	५१	४९	५०	५७	३९	३९
२७	२३	३७	२	१०	२६	५५	१४	१४
60	710	40	95	6	47	3	3	3
31	52	59	55	8	55	46	11	11
विशा ४	कृति १	स्वा ४	विशा ३	धनि २	पूषा २	श्रव २	कृति ४	अनु २
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 19 नवंबर

९ शु. | ७ बु. मं. | ८ सू. के. | १० गु. श | ६ | ११ | ५ | २ रा. | १२ | ४ | १ चं. | ३

कार्तिक शुक्ल पक्षफल–

कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा (5 नवं.) को श्रीकृष्ण भगवान् की प्रसन्नता के लिए अन्नकूट पर्व के उपलक्ष्य में छप्पन (56) भोग (अर्थात् अनेक प्रकार) के पकवान् बनाकर गोवर्धन व श्रीकृष्ण की पूजा की जाती है। **द्वितीया** (6 नवं.) को भाई-दूज के दिन स्नान-उपरान्त शिव-पार्वती एवं यम-पूजनोपरान्त बहन अपने भाई की मंगल-कामना हेतु उसे तिलक लगाती है। **अक्षय-नवमी** (12 नवं.) को किया हुआ पूजा-पाठ और दिया हुआ दान अक्षय होता है। **भीष्मपंचक** पंचदिनात्मक होने से 14 से 18 नवंबर तक रहेंगे (देखें पृष्ठ-30)। **हरिप्रबोधिनी एकादशी** (15 नवं.) से चातुर्मास्य व्रतादि नियम समाप्त होंगे। ता. 15 नवं. को ही विवाह नक्षत्र उ.भा./रेव. में तुलसी विवाह करना प्रशस्त रहेगा (देखें पृष्ठ 29)। क्योंकि तुलसी-विवाह प्रबोधोत्सव के साथ एकादशी-व्रतपारणा वाले दिन पूर्वरात्रि में अर्धरात्रि से पहिले ही करने की परम्परा है। ता. 19, **कार्तिक पूर्णिमा** के दिन स्नान, जप, पाठादि का विशेष महत्त्व होगा। कृतिकायुता कार्तिक पूर्णिमा होने पर स्वामी कार्तिकेय का पूजन करने से मनुष्य सात जन्मों तक वेदज्ञ और धनाढ्य होता है। **मार्गशीर्ष संक्रान्ति**–ता. 16 नवंबर, मंगलवार को दोप. 1 बजकर 01 मिंट (13:01) पर मकर लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहू. इस सं. का पुण्यकाल सूर्योदय बाद प्रारम्भ हो जाएगा। वारानुसार महोदरी तथा नक्षत्रानुसार मन्दाकिनी नामक यह सं. चोर, बेईमान, कपटी तथा राजनेताओं को लाभप्रद रहेगी। **संक्रान्ति-राशिफल**–यह सं. मेष, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, धनु, मकर, कुम्भ तथा मीन राशि वालों के लिए लाभप्रद रहेगी। **लोक-भविष्य**–मार्गशीर्ष सं. मंगलवार को होने से तिल, तैल, घी, वनस्पति, रसादि की वस्तुएं तथा सर्वप्रकार के माल-पंसारी तेज भाव होंगे। सामान्य लोगों में परेशानियाँ व कष्ट की वृद्धि होगी। कुछ राज्यों में राजनीतिक संकट, कहीं राज्य-परिवर्तन, अग्निकाण्ड एवं युद्धादि का भय रहेगा। समाज में उपद्रव, विद्रोह एवं हिंसक घटनाएं अधिक होंगी।

वि. संवत् २०७८, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष शाक: १९४३

सन् 2021 ई. (ता. 20 नवं. से 4 दिसंबर तक), हिजरी सन् 1443
सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु:

29 नवं. से मंगल प्रातः पूर्व में दृश्य होगा। सायं शुक्र पश्चिम में, शनि पश्चिमकपाल में तथा गुरु इससे कुछ नीचे होगा। बुध अस्त है।

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ. प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ. प.	योग	समाप्तिकाल घ. प.	करण	समाप्तिकाल घ. प.	तारीखें (राष्ट्रीय)	तारीखें (हिज.)	तारीखें (नवंबर)	तारीखें (मार्ग. प्रवि.)	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
२५:५०	१	शनि	२५:०५	रोहि.	६०:००	शिव	५४:२८	कौ	२५:०५	29	14	20	५	वृष	मंगल विशा. में २५:५८, बुध वृश्चिक में ५४:२८ (28:50), गुरु धनि. 3(A)	७:०३:४६:५०	7:03	17:23
२५:४८	२	रवि	३१:५०	रोहि.	१:२०	सिद्ध	५६:५३	ग	३१:५०	30	15	21	६	मि.३५:१५		७:०४:४७:२६	7:04	17:23
२५:४३	३	चन्द्र	३८:२८	मृग.	९:०८	साध्य	५९:०८	व	५:०९	मा	16	22	७	मिथुन	भ. ५:०९ से ३८:२८ तक, सौभाग्य सुन्दरी व्रत, सूर्य सायन धनु. में २:२८ (B)	७:०५:४८:०२	7:05	17:22
२५:४०	४	मंग	४४:३५	आर्द्रा	१६:३५	शुभ	६०:००	ब	११:३२	2	17	23	८	मिथुन	अङ्गारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 20), बुध अनु. में ०:०३	७:०६:४८:४१	7:06	17:22
२५:३८	५	बुध	४९:५३	पुन.	२३:२५	शुभ	०:५५	कौ	१७:१४	3	18	24	९	क. ६:४८		७:०७:४९:२०	7:07	17:22
२५:३३	६	गुरु	५३:५८	पुष्य	२९:१३	शुक्ल	२:०३	ग	२१:५६	4	19	25	१०	कर्क	भ. ५३:५८ से, गण्डमूल 18:49 से, स. सि. यो.	७:०८:५०:०१	7:08	17:21
२५:३०	७	शुक्र	५६:२५	आश्ले	३३:३८	ब्रह्म	२:१०	वि	२५:१२	5	20	26	११	सिं.३३:३८	भ. २५:१२ तक, गण्डमूल विचार	७:०९:५०:४६	7:09	17:21
२५:२९	८	शनि	५७:१०	मघा	३६:२५	ऐन्द्र वैधृ	१:०८ ५८:४०	बा	२६:४८	6	21	27	१२	सिंह	**श्रीकालभैरवाष्टमी**, भैरव-जयन्ती, गण्डमूल 21:43 तक	७:१०:५१:२८	7:09	17:21
२५:२७	९	रवि	५५:५३	पू.फा.	३७:१८	विष्क	५४:४०	तै	२६:३२	7	22	28	१३	कं.५२:१५	**मंगल पूर्व में उदय 30:05 (घं.मिं.)**	७:११:५२:१८	7:10	17:21
२५:२५	१०	चन्द्र	५२:३८	उ.फा.	३६:१८	प्रीति	४९:०५	व	२४:१६	8	23	29	१४	कन्या	भ. २४:१६ से ५२:३८ तक,	७:१२:५३:०५	7:11	17:21
२५:२३	११	मंग	४७:३५	हस्त	३३:२५	आयु	४२:०५	ब	२०:०७	9	24	30	१५	कन्या	**उत्पन्ना एकादशी व्रत,**	७:१३:५३:५५	7:12	17:21
२५:२०	१२	बुध	४०:५८	चित्रा	२८:५५	सौभा	३३:४८	कौ	१४:१७	10	25	दिसं	१६	तु. १:२३	दिसम्बर मास प्रारम्भ, बुध ज्येष्ठा में २७:०० (18:01), शुक्र उ.षा. में ३१:०८ (19:40)	७:१४:५४:४६	7:13	17:21
२५:१८	१३	गुरु	३३:०३	स्वा.	२३:०३	शोभ	२४:२३	ग	७:०१	11	26	2	१७	तुला	भ. ३३:०३ से ५८:३९ तक, **प्रदोष व्रत**, सूर्य ज्येष्ठा में ४३:४३ (C)	७:१५:५५:३९	7:14	17:21
२५:१८	१४	शुक्र	२४:१५	विशा.	१६:१५	अति	१४:१३	श	२४:१५	12	27	3	१८	वृ. ३:००	श्रीबालाजी-जयन्ती, मेला पुरमण्डल (जम्मू), देविका-स्नान (ऊधमपुर, ज.का.)	७:१६:५६:३०	7:14	17:21
२५:१५	३०	शनि	१४:५५	अनु.	८:५०	सुक. धृति	३:३३ ५२:३५	ना	१४:५५	13	28	4	१९	वृश्चिक	**मार्गशीर्ष अमावस, शनिवासरी अमावस, मंगल वृश्चिक में ५६:४५,(D)**	७:१७:५७:२४	7:15	17:21

(A) कुम्भ में ४०:४० (23:19), मृगछोड़ी स्नान प्रारम्भ, स.सि.यो. **(B)** (8:04), शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ **(C)** (24:43), मासशिवरात्रि व्रत **(D)** गण्डमूल 10:47 बाद

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 27 नवंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	६	७	१०	८	९	१	७
१०	४	२४	९	०	२३	१४	७	७
४७	४०	२७	३३	४२	४७	३०	१३	१३
२०	५५	३७	१६	५०	१७	२६	४८	४८
60	771	41	94	7	39	4	3	3
44	57	19	34	26	53	25	11	11
अनु	मघा	विशा	अनु	धनि	पूषा	श्रव	कृति	अनु
३	२	२	२	३	४	२	४	२
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय 27 नवंबर

- १: —
- २: रा.
- ३: —
- ४: —
- ५: चं.
- ६: —
- ७: मं.
- ८: सू. बु. के.
- ९: शु.
- १०: श.
- ११: गु.
- १२: —

शनौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 4 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	६	७	१०	८	९	१	७
१७	१३	२९	२०	१	२७	१५	६	६
५२	१८	१७	३३	३८	५९	३	५१	५१
५८	३७	३७	१८	३	३७	०	३२	३२
60	914	41	94	8	30	4	3	3
54	32	37	4	29	26	56	11	11
ज्ये.	अनु	विशा	ज्ये.	धनि	उषा	श्रव.	कृति	अनु
१	३	३	२	३	१	२	४	२
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय 4 दिसंबर

- १: —
- २: रा.
- ३: —
- ४: —
- ५: —
- ६: —
- ७: मं.
- ८: सू. चं. बु. के.
- ९: शु.
- १०: श.
- ११: गु.
- १२: —

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष की अष्टमी तिथि (27 नवं.) को भगवान् शिव के प्रतीकात्मक एवं चमत्कारी स्वरूप महाकाल भैरव की पूजा, जप व संकीर्तन करने का विशेष माहात्म्य कहा गया है। इस दिन **'जागरं चोपवासं च कृत्वा कालाष्टमीदिने। प्रयतः पापनिर्मुक्तः शैवो भवति शोभनः।'** के अनुसार उपवास करके रात्रि में जागरण करने से पाप क्षीण होते हैं और व्रती कल्याण प्राप्त करता है। **उत्पन्ना एकादशी (30 नवं.)** का विधिपूर्वक व्रत रखने से सर्वप्रकार के अभीष्टों की सिद्धि होती है। इस दिन प्रातः स्नानादि के पश्चात् **'ममाखिलपापक्षयपूर्वक श्रीपरमेश्वर प्रीतिकामनाया मार्गशीर्ष कृष्णैकादशीव्रतं करिष्ये।'** यह संकल्प करके उपवास करे। त्रयोदशी से अमावस्या तक जम्मू के निकट मेला पुरमण्डल तथा देविका-स्नान का पर्व ऊधमपुर (ज.का.) में मनाया जाता है। **लोक-भविष्य–** मार्ग. अमावस, शनिवार को होने से भारत के कुछ क्षेत्रों में दुर्भिक्ष, आवश्यक वस्तुओं की कमी और अत्यधिक महँगाई का सामना करना पड़ेगा। लोगों में आपसी भाईचारे एवं प्रेम-भाव की कमी रहेगी। पिता-पुत्र तुल्य निकट सम्बन्धों में भी वैर-विरोध रहे अर्थात् अपने भी परायों जैसा व्यवहार रखेंगे। **'दुर्भिक्षं रोरवं घोरं महादुःखं महद् भयम्। पराङ्मुखाः पितुः पुत्रा व्यसनं शनिवासरे।।'** ता. 3 दिसं. तक शनि-मंगल के मध्य (4-10) दृष्टि सम्बन्ध रहने से राजनीतिक एवं सामाजिक वातावरण विक्षुब्ध व तनावपूर्ण रहेगा। चान्द्र मार्गशीर्ष मास में पाँच शनिवार एवं पाँच रविवार होने से प्रजा में क्लिष्ट रोगों की बहुलता, उपद्रव, तनाव, युद्धभय व हिंसक घटनाएँ घटित हों। आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में विशेष तेजी हो। कहीं छत्रभंग (शासन-परिवर्तन) भी होगा। **'पाँच शनीचर, पाँच रवि, पाँच मंगल जो होय। छत्र टूटि धरणी फटै, अन्न महँगा होय।।'**

आकाश लक्षण–द. भारत में बादलों से आच्छादित होने पर भी वर्षा बहुत कम हो। **शकुन–**मार्ग. कृ. ७ (26 नवं.) को रात्रि आकाश निर्मल रहे, तो वैशाख में धान्य महँगा हो।

वि. संवत् २०७८, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष शाक: १९४३

सन् 2021 ई. (ता. 5 से 19 दिसंबर तक), हिजरी सन् 1443
सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु:

प्रात: मंगल पूर्व-क्षितिज में दिखेगा। सायं शुक्र पश्चिम में, उससे ऊपर शनि होगा। गुरु पश्चिम कपाल में दिखेगा। बुध अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी-पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी-पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी-पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी-पल	तारीखें: मार्ग. प्र.	जमादि.	दिसंबर	मार्ग. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
२५:१३	१	रवि	५:३०	ज्ये. मूल	१:१८ ५४:०५	शूल	४२:०५	ब	५:३०	14	29	5	२०	ध. १:१८	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, गण्डमूल 28:54 तक, स. सि. यो.	७:१८:५८:२१	7:16	17:21
अवम्	२	रवि	५६:२८	००	००	००	००	०	००	०	०	०	०	००	द्वितीया तिथि का क्षय ०००	० ०० ०० ००	००	००
२५:१०	३	चन्द्र	४८:०८	पू.षा.	४७:३५	गंड	३२:००	तै	२२:१८	15	जम	6	२१	धनु	जमादिउल्लावल (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	७:१९:५९:१८	7:17	17:21
२५:०९	४	मंग	४१:००	उ.षा.	४२:१८	वृद्धि	२२:४५	व	१४:३४	16	2	7	२२	म. १:०८	भ. १४:३४ से ४१:०० तक, राहु कृति. ३-केतु अनु. १ में. ३२:५५	७:२१:००:१३	7:17	17:21
२५:०८	५	बुध	३५:२३	श्रव.	३८:२५	ध्रुव	१४:३८	ब	८:१२	17	3	8	२३	मकर	शुक्र मकर में १६:५३ (14:03), श्रीपञ्चमी, श्रीराम-विवाहोत्सव, नाग-पंचमी	७:२२:०१:१२	7:18	17:21
२५:०५	६	गुरु	३१:३०	धनि.	३६:२०	व्या.	७:५०	कौ	२:५७	18	4	9	२४	कुं. ७:०८	पंचक प्रारम्भ ७:०८ (10:10), स्कन्द (गुह) षष्ठी, मंगल अनु. में (A)	७:२३:०२:१३	7:19	17:21
२५:०३	७	शुक्र	२९:३५	शत.	३६:१०	हर्ष वज्र	२:३३ ५८:५५	ग	०:३३	19	5	10	२५	कुम्भ	भ. २९:३५ से ५९:३९ तक, मित्र (विष्णु) सप्तमी	७:२४:०३:१२	7:20	17:21
२५:०२	८	शनि	२९:४३	पू.भा.	३८:००	सिद्धि	५६:४५	व	२९:४३	20	6	11	२६	मी. २२:२३	श्रीदुर्गाष्टमी	७:२५:०४:११	7:20	17:21
२५:०१	९	रवि	३१:४५	उ.भा.	४१:३८	व्य.	५६:००	बा	०:४४	21	7	12	२७	मीन	नन्दा-नवमी, गण्डमूल 24:00 से, स. सि. यो.	७:२६:०५:१३	7:21	17:22
२५:००	१०	चन्द्र	३५:२८	रेव.	४६:४८	वरी.	५६:२५	तै	३:३७	22	8	13	२८	मे. ४६:४८	पंचक समाप्त ४६:४८ (26:05), गण्डमूल विचार	७:२७:०६:१४	7:22	17:22
२५:००	११	मंग	४०:३५	अश्वि	५३:१५	परि.	५७:४८	व	८:०२	23	9	14	२९	मेष	भ. ८:०२ से ४०:३५ तक, **मोक्षदा एकादशी व्रत, श्रीगीता-जयन्ती (B)**	७:२८:०७:१४	7:22	17:22
२४:५९	१२	बुध	४६:३८	भर.	६०:००	शिव	५९:४५	ब	१३:३७	24	10	15	पौ.	मेष	सूर्य मूल १ धनु में ५०:४८ (27:42), पौष संक्रान्ति, मु. १५, (C)	७:२९:०८:१८	7:23	17:23
२४:५८	१३	गुरु	५३:१३	भर.	०:२८	सिद्ध	६०:००	कौ	११:५६	25	11	16	२	वृ. १७:२३	प्रदोष व्रत	८:००:०९:२१	7:24	17:23
२४:५८	१४	शुक्र	६०:००	कृति.	८:१०	सिद्ध	२:०३	ग	२६:३७	26	12	17	३	वृष	पिशाचमोचन श्राद्ध, शिव चतुर्दशी व्रत	८:०१:१०:२३	7:24	17:23
२४:५७	१४	शनि	०:०१	रोहि.	१६:००	साध्य	४:२८	व	०:०१	27	13	18	४	मि. ४९:५०	भ. ०:०१ से ३३:२२ तक, श्रीदत्तात्रेय जयन्ती (देखें पृष्ठ 30) (D)	८:०२:११:२८	7:25	17:24
२४:५७	१५	रवि	६:४३	मृग	२३:३८	शुभ	६:४८	ब	६:४३	28	14	19	५	मिथुन	मार्गशीर्ष पूर्णिमा (स्नानदानादि प्रात: 10:06 तक), शुक्र वक्री (E)	८:०३:१२:३१	7:25	17:24

(A) ४४:२५ (25:05), बुध मूल १ धनु में ५६:५५ (30:05), चम्पा-षष्ठी (महाराष्ट्र) (B) गण्डमूल 28:40 तक, स.सि.यो. (C) पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रात: 10:06 तक, गुरु धनि. ४ में २:०८ (8:14), अखण्ड द्वादशी (D) श्रीसत्यनारायण व्रत, बुध पू.षा. में २५:४० (17:41), त्रिपुरभैरव-जयन्ती (E) २१:३८ (16:04)

शनी अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 11 दिसंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	७	८	१०	९	९	१	७
२४	२४	४	१	२	०	१५	६	६
५९	११	९	३१	४०	५७	३९	२९	२९
३२	५६	२८	५१	२१	३	४	१७	१७
60 59	769 20	41 51	94 12	9 26	17 57	5 25	3 11	3 11
ज्ये. ३	पू.भा. २	अनु. १	मूल १	धनि. ३	उ.षा. २	श्रव. २	कृति. ३	अनु. १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय 11 दिसंबर

९ बु. | ८ सू. मं. के. | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ रा. | १ | १२ | ११ चं. गु. | १० शु. श.

रवौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 19 दिसंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	७	८	१०	९	९	१	७
३	१	९	१४	३	२	१६	६	६
७	३	४५	६	५९	१९	२४	३	३
३९	३६	१६	२८	२१	३६	६	५१	५१
61 3	711 29	42 9	94 22	10 25	2 17	5 53	3 11	3 11
मूल १	मृग. ३	अनु. २	पू.षा. १	धनि. ४	उ.षा. २	श्रव. २	कृति. ३	अनु. १
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय 19 दिसंबर

९ सू. बु. | ८ के. मं. | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ चं. | २ रा. | १ | १२ | ११ गु. | १० श. शु.

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की पंचमी को श्रीराम-विवाहोत्सव मनाया जाता है। इसी दिन **श्रीपंचमी** (8 दिसं.) को कमलासन पर विराजित एवं कमलपुष्प लिए श्री लक्ष्मी की सुवर्णमयी या ताम्र अथवा चाँदी की मूर्त्ति को कलश पर स्थापित कर गणपति, मातृका पूजन सहित लक्ष्मी पूजन एवं श्रीसूक्त, लक्ष्मीसूत का पाठ, ब्राह्मण भोजन, दानादि करने से विवाह, सन्तान, सौभाग्य एवं अचल लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। **मार्ग. शुक्ल षष्ठी** को कार्तिकेय जी तारकासुर को मारकर अभिषिक्त हुए थे। इसमें स्नानदान और व्रत करने से पुण्य होता है। ता. 14 दिसं. को **मोक्षदा एकादशी** का विधिपूर्वक व्रत रखने तथा भगवान् विष्णु की पूजार्चना, दानादि करने से अनेक मानसिक व कायिक पापों की निवृत्ति तथा पुण्यों की प्राप्ति होती है। इसी दिन **श्रीगीता जयन्ती** के उपलक्ष्य में भगवान् कृष्ण की पूजा-स्तुति करके श्रीमदभगवद्गीता का सुगन्धित फूलों द्वारा पूजा, स्वाध्याय, मनन व चिन्तन करना चाहिए। ता. 18 दिसं. सायंकाले पूर्णिमा को ब्रह्मा, विष्णु, महेश के अंशावतार श्रीदत्तात्रेय की बालरूप में पूजा की जाती है। **पौष संक्रान्ति**–ता. 15 दिसंबर, बुधवार की रात्रि के बाद 3 बजकर 42 मिनट पर (27:42) तुला लग्न में प्रवेश करेगी। १५ मुहू. इस सं. का पुण्यकाल अगले दिन 10घं.-06मिं. तक रहेगा। वारानुसार मन्दाकिनी तथा नक्षत्रानुसार घोरा नामक यह सं. राजनेताओं, दुष्ट, नीच वृत्ति वाले लोगों के लिए लाभप्रद रहेगी। **सं. राशिफल**–यह सं. मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, धनु, मकर, कुम्भ राशि वालों के लिए शुभप्रद रहेगी। **आकाश लक्षण**–पक्ष के उत्तरार्द्ध में हि.प्र., पंजाब, जम्मू-काश्मीर, उ.प्र. के उत्तरी भागों में खण्ड (व अल्प) वर्षा के ही संकेत हैं।

वि. संवत् २०७८, पौष कृष्ण पक्ष शाक: १९४३

सन् 2021–22 ई. (ता. 20 दिसंबर, 2021 ई. से 2 जनवरी, 2022 ई.), हिजरी–1443
सूर्य दक्षिण–उत्तरायण, दक्षिण गोल, हेमन्त–शिशिर ऋतु:

प्रात: मंगल पूर्व–क्षितिज में होगा। सायं शुक्र पश्चिम–क्षितिज में, उसके ऊपर शनि होगा। गुरु को पश्चिम कपाल में देखें। ता. 22 दिसं. से बु. भी सायं पश्चिम–क्षितिज में दिखेगा।

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल	तारीखें मार्ग. शाके	जमादि.	दिसंबर	पौष प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
२४:५७	१	चन्द्र	१२:५८	आर्द्रा	३०:५०	शुक्ल	८:५०	कौ	१२:५८	29	15	20	६	मिथुन	पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ	८:०४:१३:३६	7:26	17:25
२४:५६	२	मंग	१८:४०	पुन.	३७:२८	ब्रह्म	१०:२८	ग	१८:४०	30	16	21	७	क.२०:५३	भ. ५१:०८ से, शनि श्रव. ३ में ३६:००, सूर्य सायन मकर में ३५:०८ **(A)**	८:०५:१४:४०	7:26	17:25
२४:५६	३	बुध	२३:३५	पुष्य	४३:१५	ऐन्द्र	११:२८	वि	२३:३५	पौ	17	22	८	कर्क	भ. २३:३५ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 20), **बुध पश्चिम में (B)**	८:०६:१५:४२	7:27	17:26
२४:५६	४	गुरु	२७:३३	आश्ले	४८:०५	वैधृ.	११:५०	बा	२७:३३	2	18	23	९	सिं.४८:०५		८:०७:१५:५३	7:27	17:26
२४:५७	५	शुक्र	३०:१८	मघा	५१:४५	विष्क	११:२०	तै	३०:१८	3	19	24	१०	सिंह	गण्डमूल 28:10 तक	८:०८:१८:०१	7:28	17:27
२४:५७	६	शनि	३१:४५	पू.फा.	५४:०३	प्रीति	९:५३	ग	१:०२	4	20	25	११	सिंह	भ. ३१:४५ से, क्रिसमिस दिवस (क्रिश्चियन)	८:०९:१९:०७	7:28	17:27
२४:५८	७	रवि	३१:४०	उ.फा.	५४:५३	आयु	७:१५	वि	१:४३	5	21	26	१२	कं. ९:२३	भ. १:४३ तक, बुध उ.षा. में ५८:०५ (30:43,) स. सि. यो.	८:१०:२०:१७	7:29	17:28
२४:५९	८	चन्द्र	३०:००	हस्त	५४:०५	सौभा. शोभ.	३:२८ ५८:२५	बा	०:५०	6	22	27	१३	कन्या	रूक्मिणी अष्टमी, अष्टका श्राद्ध	८:११:२१:२६	7:29	17:28
२४:५९	९	मंग	२६:४३	चित्रा	५१:४५	अति	५२:०५	ग	२६:४३	7	23	28	१४	तु.२३:०८	भ. ५४:१६ से, सूर्य पू.षा. में ५६:२०, मंगल ज्येष्ठा में ४२:५५ (24:39)	८:१२:२२:३३	7:29	17:29
२५:००	१०	बुध	२१:४८	स्वा.	४७:५०	सुक	४४:२८	वि	२१:४८	8	24	29	१५	तुला	भ. २१:४८ तक, **बुध मकर में १०:०५** (11:32)	८:१३:२३:४५	7:30	17:30
२५:०१	११	गुरु	१५:२८	विशा.	४२:४०	धृति	३५:४८	बा	१५:२८	9	25	30	१६	वृ.२९:०५	**सफला एकादशी व्रत, वक्री शुक्र धनु में १:००** (7:54)	८:१४:२४:५५	7:30	17:30
२५:०२	१२	शुक्र	७:५५	अनु	३६:२५	शूल	२६:१३	तै	७:५५	10	26	31	१७	वृश्चिक	भ. ५९:३० से, **प्रदोष व्रत**, सुरूप द्वादशी, बोधनाचार्य जयन्ती, गण्डमूल 22:04 से	८:१५:२६:०५	7:30	17:31
अवम्	१३	शुक्र	५९:३०	००	००	००	००	०	००	००	००	०	०	००	**त्रयोदशी तिथि का क्षय** ०० ००	० ०० ०० ००	००	००
२५:०३	१४	शनि	५०:२८	ज्ये.	२९:२५	गंड	१६:००	वि	२४:५९	11	27	जन	१८	ध.२९:२५	भ. २४:५९ तक, जनवरी–सन् 2022 ई. प्रारम्भ, मासशिवरात्रि व्रत	८:१६:२७:१८	7:31	17:32
२५:०४	३०	रवि	४१:२३	मूल	२२:१०	वृद्धि ध्रुव	५:२८ ५४:५५	च	१५:५६	12	28	2	१९	धनु	**पौष अमावस**, गुरु शत. १ में २०:३५, शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ 25:15 (घं.मिं.)	८:१७:२८:२८	7:31	17:33

(A) (21:29), सायन उत्तरायण शुरु, शिशिर ऋतु प्रारम्भ **(B)** उदय २४:५८ (17:26), शक पौष प्रारम्भ, गण्डमूल 24:45 से

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 27 दिसंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	७	८	१०	९	९	१	७
११	१०	१५	२६	५	१	१७	५	५
१६	२	२३	३५	२५	८	१२	३८	३८
२३	४०	३५	२३	४५	५०	३९	२५	२५
61 8	810 22	42 28	91 32	11 17	19 50	6 17	3 11	3 11
मूल ४	हस्त १	अनु ४	पूषा. ४	धनि ४	उषा २	श्रव ३	कृति ३	अनु १
०	०	मा	मा	मा	व	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 27 दिसंबर

९ सू. बु.; १० श. शु.; ११ गु.; १२; १; २ रा.; ३; ४; ५; ६ चं.; ७; ८ के. मं.

रवौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 2 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	७	९	१०	८	९	१	७
१७	६	१९	५	६	२८	१७	५	५
२३	२७	३९	२५	३४	३८	५१	१९	१९
२०	२	०	४३	५४	२	३	२०	२०
61 11	909 32	42 43	81 52	11 52	31 37	6 33	3 11	3 11
पूषा २	मूल २	ज्ये. १	उषा ३	धनि ४	उषा १	श्रव ३	कृति ३	अनु १
०	०	मा	मा	मा	व	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 2 जनवरी

९ सू. चं. शु.(व.); १० श. बु.; ११ गु.; १२; १; २ रा.; ३; ४; ५; ६; ७; ८ के. मं.

पौष कृष्ण पक्षफल–

पौष मास में गेहूँ, धान्यादि अनाज, कम्बलादि गर्म वस्त्र, ईंधन सामग्री, मौसमी फल, मिष्ठान्न दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। ता. 22 दिसं., बुधवार को श्रीगणेश चतुर्थी का व्रत रखने से मनोवांछित कामना पूर्ण होती है। **ता. 27 दिसं.–रुक्मिणी अष्टमी** को कृष्ण, रूक्मिणी और प्रद्युम्न की मूर्त्तियों का गन्धयुक्त पूजनकर उत्तम पदार्थ अर्पण करें और सामर्थ्यानुसार सौभाग्यवती आठ स्त्रियों को भोजन करवाकर दक्षिणा दें ते रूक्मिणी जी की प्रसन्नता प्राप्त होती है। ता. 30 दिसं. को **सफला एकादशी** का व्रत, एकादशी माहात्म्य का पाठ, जप, श्रीविष्णु स्तोत्र पाठ एवं यथाशक्ति अन्न, गुड़, गर्म वस्त्र का दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। **लोक-भविष्य**–मंगल-केतु योग तथा कुम्भस्थ गुरु पर मंगल की दृष्टि के कारण देश की राजनीतिक परिस्थितियों में तनाव व अस्थिरता रहे। चान्द्र पौष मास में पाँच सोमवारों के फलस्वरूप देश में गेहूँ, मक्की आदि शीतकालीन फसलें अच्छी होने के संकेत हैं। कृषि उत्पादन में तथा सुख-साधनों में वृद्धि होगी, परन्तु अधिकांश उपभोग्य वस्तुओं का लाभ विशेष वर्ग को ही प्राप्त होगा। रविवारी अमावस (2 जनवरी) के कारण भी राजनेताओं (केन्द्र व राज्य सरकारों) की गलत एवं त्रुटीपूर्ण नीतियों के कारण लोगों में दुख, पीड़ा, विक्षोभ एवं व्याकुलता बढ़े। लोगों में भी कलह-क्लेश, धन का नाश, तनाव एवं दुखाधिक्य रहे। समाज में अशान्ति बढ़े। **आकाश लक्षण**–बादल-चाल के बावजूद वर्षा की कमी अनुभव होगी। **शकुन**–परन्तु पौष अमा. को मूल नक्षत्र होने से आगामी मास व पक्ष में वर्षा की सम्भावना बने–'**पौषमूलममावस्यां वृष्टये लोकतुष्टये।।**'

वि. संवत् २०७८, पौष शुक्ल पक्ष शाक: १९४३

सन् 2022 ई. (ता. 3 से 17 जनवरी तक), हिजरी सन् 1443
सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु:

प्रातः मंगल पूर्व–क्षितिज में, 13 जन. से शुक्र भी प्रातः से पूर्व क्षितिज में दृश्य होगा। सायं बुध–शनि पश्चिम–क्षितिज में होंगे। सायं पश्चिमकपाल में दिखाई देने वाला गु. 8 जन. को चं. से दक्षिण की ओर होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घटी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घटी पल	योग	समाप्तिकाल घटी पल	करण	समाप्तिकाल घटी पल	तारीखें पौष शुक्ल	तारीखें [illegible]	तारीखें जनवरी	तारीखें पौष प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	जालन्धर (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.मिं.	जालन्धर (भा.स्टैं.टा.) सूर्यास्त घं.मिं.
२५:०५	१	चन्द्र	३२:३३	पू.षा.	१५:०५	व्या.	४४:४३	किं	६:५८	13	29	3	२०	म.२८:२३	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ	८:१८:२९:४०	7:31	17:33
२५:०८	२	मंग	२४:३३	उ.षा.	८:३५	हर्ष	३५:१५	कौ	२४:३३	14	30	4	२१	मकर	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, आरोग्य व्रत	८:१९:२९:४९	7:31	17:34
२५:१०	३	बुध	१७:४०	श्रव. धनि.	३:०६ ५९:१०	वज्र	२६:४८	ग	१७:४०	15	जमा	5	२२	कुं.३०:५८	भ. ४५:०४ से, **पंचक प्रारम्भ ३०:५८ (19:54), वक्री शुक्र पश्चिम में(A)**	८:२०:३२:००	7:31	17:35
२५:११	४	गुरु	१२:२८	शत.	५७:०५	सिद्धि	१९:४३	वि	१२:२८	16	2	6	२३	कुम्भ	भ. १२:२८ तक,	८:२१:३३:१०	7:31	17:36
२५:११	५	शुक्र	९:०८	पू.भा.	५७:००	व्य.	१४:०८	बा	९:०८	17	3	7	२४	मी.४१:४८	**शुक्र अस्त 5 जन.**	८:२२:३४:२२	7:32	17:36
२५:१३	६	शनि	८:००	उ.भा.	५९:०५	वरी.	१०:२०	तै	८:००	18	4	8	२५	मीन	**शुक्र उदय 12 जन.**	८:२३:३५:३२	7:32	17:37
२५:१५	७	रवि	९:०३	रेव.	६०:००	परि.	८:१३	व	९:०३	19	5	9	२६	मीन	भ. ९:०३ से ४०:३८ तक, मार्तण्ड–सप्तमी, श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती. (B)	८:२४:३६:४१	7:32	17:38
२५:१८	८	चन्द्र	१२:१३	रेव.	३:१३	शिव	७:४०	ब	१२:१३	20	6	10	२७	मे. ३:१३	**पंचक समाप्त ३:१३ (8:49)**, श्रीदुर्गाष्टमी, महारूद्र व्रत, गण्डमूल विचार	८:२५:३७:५०	7:32	17:39
२५:२०	९	मंग	१७:०५	अश्वि	९:०५	सिद्ध	८:२८	कौ	१७:०५	21	7	11	२८	मेष	सूर्य उ.षा. में ०:५८, गण्डमूल 11:10 तक, स. सि. यो.	८:२६:३८:५८	7:32	17:40
२५:२५	१०	बुध	२३:१८	भर.	१६:१३	साध्य	१०:१५	ग	२३:१८	22	8	12	२९	वृ.३३:०८	भ. ५६:४२ से, **वक्री शुक्र पूर्व में उदय 17:40 (घं.मिं.)**	८:२७:४०:०९	7:31	17:41
२५:२६	११	गुरु	३०:०५	कृति.	२४:००	शुभ	१२:३८	वि	३०:०५	23	9	13	३०	वृष	भ. ३०:०५ तक, **पुत्रदा एकादशी व्रत, लोहड़ी पर्व** (पंजाब, हरि., दिल्ली)	८:२८:४१:१३	7:31	17:41
२५:२८	१२	शुक्र	३७:०३	रोहि.	३१:५८	शुक्ल	१५:१०	ब	३:३४	24	10	14	मा	वृष	**सूर्य मकर में १७:२५ (14:29), मकर (माघ) संक्रान्ति**, मु. ४५ (C)	८:२९:४२:२२	7:31	17:42
२५:३०	१३	शनि	४३:३८	मृग.	३९:३५	ब्रह्म	१७:३३	कौ	१०:२१	25	11	15	२	मि. ५:५०	**शनि प्रदोष व्रत**, शुक्र बाल्यत्व समाप्त 17:40 (घं.मिं.)	९:००:४३:२८	7:31	17:43
२५:३३	१४	रवि	४९:३०	आर्द्रा	४६:३५	ऐन्द्र	१९:३३	ग	१६:३४	26	12	16	३	मिथुन	भ. ४९:३० से, **मंगल मूल १ धनु में २२:२८ (16:30)**, ईशान व्रत	९:०१:४४:३४	7:31	17:44
२५:३५	१५	चन्द्र	५४:२८	पुन.	५२:४५	वैधृ.	२०:५३	वि	२१:५९	27	13	17	४	क.३६:१८	भ. २१:५९ तक, **पौष पूर्णिमा, माघस्नान प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत, (D)**	९:०२:४५:३९	7:31	17:45

(A) अस्त 25:15 (घं.मिं.), बुध श्रवण में २६:४३, वक्री शुक्र पू.षा. ४ में २७:३० (18:31), जमादि–उल्सानी (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, गौरी–पूजन **(B)** गण्डमूल 7:10 से **(C)** पुण्यकाल सं. प्रातः 8:05 बाद, **बुध वक्री २४:०० (17:07)**, निरयण उत्तरायण प्रारम्भ, सुजन्म द्वादशी **(D)** शाकम्भरी जयन्ती, **वक्री बुध पश्चिम में अस्त** 8 घं.–50 मिं.

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 10 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	७	९	१०	८	९	१	७
२५	२८	२५	१४	८	२३	१८	४	४
३२	१७	२१	२५	१२	५७	४४	५३	५३
४०	५१	४०	१६	१२	५६	२६	५३	५३
61 8	731 52	43 00	40 9	12 32	36 29	6 49	3 10	3 10
पूषा ४	रेव ४	ज्ये. ३	श्रव. २	शत. १	पूषा ४	श्रव ३	कृति ३	अनु १
०	०	मा	मा	मा	व	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 10 जन.

९ सू. शु. | १० श. बु. | ११ गु. | १२ चं. | १ | २ रा. | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ के. मं.

चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 17 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	२	८	९	१०	८	९	१	७
२	२१	०	१५	९	२०	१९	४	४
४०	४०	२३	३३	४१	१	३२	३१	३१
२६	४२	२४	४३	२७	४१	४४	३८	३८
61 4	726 17	43 15	35 8	13 2	28 5	7 00	3 11	3 11
उषा २	पुन १	मूल १	श्रव २	शत १	पूषा ३	श्रव ३	कृति ३	अनु १
०	०	मा	व	मा	व	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 17 जनवरी

१० सू. बु. श. | ११ गु. | १२ | १ | २ रा. | ३ चं. | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ के. | ९ शु. मं.

पौष शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की द्वितीया को गायों के सींगों को धोकर लिए जल सहित स्नान करके श्वेत वस्त्र धारण कर बालेन्दु (द्वितीया) चन्द्रमा का गन्धादि से पूजन करके ब्राह्मणों को क्षीर सहित विविध भोजन करवाकर सन्तुष्ट करना चाहिए। इससे रोगों की निवृत्ति और आरोग्य की प्राप्ति होती है। **मार्तण्ड सप्तमी** (9 जन.) को भगवान् सूर्य का व्रत, पूजन, गोदान करने से आरोग्य व तेज की वृद्धि होती है। **ता. 13 को पुत्रदा एकादशी** का विधिवत व्रत रखकर जप, हवन, ब्राह्मण-भोजन एवं यथाशक्ति दान करने से दम्पत्ति को मनोवांछित पुत्र सन्तान की प्राप्ति होती है। (13 जन.) को संक्रान्ति से पूर्व लोहड़ी पर्व अग्नि-पूजा के रूप में पंजाब, जम्मू, हि.प्र., हरियाणा, दिल्ली आदि प्रदेशों में लकड़ियां, समिधा, रेवड़ियां, तिल सहित अग्नि प्रदीप्त करके मनाया जाता है। **मकर संक्रान्ति** (14 जन.) को स्नानादि उपरान्त तिलों से हवन, तिलयुक्त वस्तुओं का दान, पंचदेव पूजन, पुरुष-सूक्त सूर्याष्टकादि स्तोत्रों, ब्राह्मण-भोजन, धार्मिक पुस्तकादि का दक्षिणादि सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। **माघ (मकर) संक्रान्ति**–ता. 14 जन., शुक्रवार को दोप. 2 बजकर 29 मिंट (14:29) पर वृष लग्न में प्रवेश करेगी। इस सं. का पुण्यकाल प्रातः 8 बजकर 05 मिंट बाद से सारा दिन रहेगा। वारानुसार मिश्रा तथा नक्षत्रानुसार नन्दा नामक यह सं. ब्राह्मणों, पशुओं, शिक्षित वर्ग के लिए लाभकारी रहेगी। इस दिन तीर्थों पर स्नानदानादि का भी विशेष माहात्म्य होता है। वहाँ न जा सके तो गृह में ही श्रद्धापूर्वक स्नान करें, वहीं उनका स्मरण करें तथा **'गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती, नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् संनिधं कुरु।'** का उच्चारण करें। ता. 17 जन. (पौष पूर्णिमा) से हरिद्वार, प्रयाग, कुरुक्षेत्र आदि तीर्थों पर (अथवा गृह में ही गंगाजल सहित) शुद्ध जल से स्नान, जप, ध्यान, दानादि का विशेष माहात्म्य होता है। ता. 14 से भारत की प्रभावराशि मकर पर सूर्य-बुध-शनि योग रहने से केन्द्रीय अथवा किसी राज्य-मन्त्रीमण्डल में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन होने के संकेत हैं। कुछ राज्यों में शासन-परिवर्तन, विपरीत जलवायु एवं प्राकृतिक प्रकोपों से खड़ी फसलों का हानि पहुँचे। **संक्रां. राशिफल**--यह संक्रां. मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, धनु, मकर, कुम्भ तथा मीन राशि वालों के लिए लाभदायक रहेगी।

वि. संवत् २०७८, माघ कृष्ण पक्ष शाक: १९४३

सन् 2022 ई. (ता. 18 जनवरी से 1 फरवरी तक), हिजरी सन् 1443
सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु:

प्रातः–मंगल–शुक्र पास–पास पूर्व–क्षितिज में, ता. 29 से बुध भी पूर्वक्षितिज में दिखेगा। सायं पश्चिम में दृश्य शनि 19 जन. को लुप्त हो जाएगा। गुरु पश्चिम–क्षितिज में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ. प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ. प.	योग	समाप्तिकाल घ. प.	करण	समाप्तिकाल घ. प.	तारीखें पौष शक	तारीखें [illegible]	तारीखें जनवरी	तारीखें माघ प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
२५:३८	१	मंग	५८:२८	पुष्य	५७:५८	विष्क	२१:३३	बा	२६:२८	28	14	18	५	कर्क	माघ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, गुरु शत. २ में २०:१५	९:०३:४६:३८	7:31	17:46
२५:४३	२	बुध	६०:००	आश्ले	६०:००	प्रीति	२१:२८	तै	२९:५९	29	15	19	६	कर्क	**शनि पश्चिम में अस्त** 7:18 (घं.मिं.), गण्डमूल 6:42 से	९:०४:४७:३९	7:30	17:47
२५:४५	२	गुरु	१:३०	आश्ले	२:१५	आयु	२०:३५	ग	१:३०	30	16	20	७	सिं. २:१५	भ. ३२:२८ से, शनि श्रव. ४ में ४७:४८, सूर्य सायन कुम्भ में 8:09 (घं.मिं.)	९:०५:४८:४२	7:30	17:48
२५:४८	३	शुक्र	३:२५	मघा	५:३३	सौभा	१८:५८	वि	३:२५	मा	17	21	८	सिंह	भ. ३:२५ तक, **श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 20), गौरी– **(A)**	९:०६:४९:४५	7:30	17:49
२५:५०	४	शनि	४:२५	पू.फा.	७:५३	शोभ	१६:३३	बा	४:२५	2	18	22	९	कं.२३:१८	वक्री बुध उ.षा. ४ में ४४:२३ (25:14)	९:०७:५०:४४	7:29	17:49
२५:५३	५	रवि	४:२०	उ.फा.	९:१०	अति	१३:२०	तै	४:२०	3	19	23	१०	कन्या	सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती, स. सि. यो.	९:०८:५१:४६	7:29	17:50
२५:५५	६	चन्द्र	३:०८	हस्त	९:२५	सुक	९:१५	व	३:०८	4	20	24	११	तु.३९:०८	भ. ३:०८ से ३२:०१ तक, सूर्य श्रवण में ७:०५ (10:19)	९:०९:५२:४७	7:29	17:51
२६:००	७	मंग	०:५३	चित्रा	८:३८	धृति शूल	४:२० ५८:२८	ब	०:५३	5	21	25	१२	तुला		९:१०:५३:४६	7:28	17:52
अवम्	८	मंग	५७:२५	००	००	००	००	०	००	०	०	०	०	००	अष्टमी तिथि का क्षय ०० ००	० ०० ०० ००	००	००
२६:०३	९	बुध	५२:४८	स्वा.	६:३५	गंड	५१:४०	तै	२५:०७	6	22	26	१३	वृ.४९:२०	**भारत गणतन्त्र दिवस (73वाँ)**	९:११:५४:४६	7:28	17:53
२६:०८	१०	गुरु	४७:०५	विशा अनु	३:३० ५९:१८	वृद्धि	४४:०३	व	१९:५७	7	23	27	१४	वृश्चिक	भ. १९:५७ से ४७:०५ तक,	९:१२:५५:४३	7:27	17:54
२६:१०	११	शुक्र	४०:२३	ज्ये.	५४:१३	ध्रुव	३५:३३	ब	१३:४४	8	24	28	१५	ध.५४:१३	**षट्तिला एकादशी व्रत**, वक्री बुध पूर्व में उदय ५५:३८ (29:42), गण्डमूल विचार	९:१३:५६:४३	7:27	17:55
२६:१५	१२	शनि	३३:००	मूल	४८:२८	व्या.	२६:३०	कौ	६:४२	9	25	29	१६	धनु	तिल द्वादशी, **शुक्र मार्गी** १७:०८ (14:17), गण्डमूल 26:49 तक	९:१४:५७:४०	7:26	17:56
२६:१८	१३	रवि	२५:०८	पू.षा.	४२:२३	हर्ष	१७:०३	व	२५:०८	10	26	30	१७	म.५५:५०	भ. २५:०८ से ५१:१२ तक, **प्रदोष व्रत**, मासशिवरात्रि व्रत	९:१५:५८:४०	7:26	17:57
२६:२३	१४	चन्द्र	१७:१५	उ.षा.	३६:२३	वज्र सिद्धि	७:३० ५८:१०	श	१७:१५	11	27	31	१८	मकर	पितृकार्येषु अमावस (14:19 बाद), **तीर्थस्नान माहात्म्य–2 दिन (B)**	९:१६:५९:३२	7:25	17:58
२६:२५	३०	मंग	९:४०	श्रव.	३०:५०	व्य.	४९:२३	ना	९:४०	12	28	फर	१९	कुं.५८:२३	**पंचक प्रारम्भ ५८:२३, माघ (मौनी) अमावस** (स्नानदानादि) **(C)**	९:१८:००:२५	7:24	17:58

(A) वक्रतुण्ड चतुर्थी, शक माघ प्रारम्भ, गण्डमूल 9:43 तक **(B)** (हरिद्वार व प्रयागराजादि) **(C) भौमवती अमावस, महोदय योग** (प्रात: 6:41 से 11:16 तक), तीर्थस्नान माहात्म्य, फरवरी मास–सन् 2022 ई. प्रारम्भ

भौमे सप्तम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 25 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	८	९	१०	८	९	१	७
१०	३	६	७	११	१७	२०	४	४
४८	३५	१०	१३	२७	१८	२९	६	६
४६	५३	२९	२०	२३	३१	१३	१२	१२
61 00	824 6	43 34	73 53	13 30	9 37	7 8	3 11	3 11
श्रव १	चित्रा ४	मूल २	उषा ४	शत २	पूषा २	श्रव ४	कृत्ति ३	अनु १
०	०	मा	व	मा	व	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 25 जनवरी

११ गु. | १० सू. बु. श. | ९ शु. मं. | ८ के. | ७ चं. | ६ | ५ | ४ | ३ | २ रा. | १ | १२

भौमे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 1 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	८	९	१०	८	९	१	७
१७	१४	११	०	१३	१७	२१	३	३
५५	३८	१६	५३	२	३	१९	४३	४३
३६	२०	९	१९	५९	१३	२१	५६	५६
60 56	876 35	43 49	21 48	13 51	7 23	7 11	3 10	3 10
श्रव ३	श्रव २	मूल ४	उषा २	शत २	पूषा २	श्रव ४	कृत्ति ३	अनु १
०	०	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 1 फरवरी

११ गु. | १० सू. चं. बु. श | ९ शु. मं. | ८ के. | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ रा. | १ | १२

माघ कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष की चतुर्थी (21 जन.) को श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी के व्रत का संकल्प '**गणपति प्रीतये संकष्ट चतुर्थी व्रतं करिष्ये**' पढ़कर व्रत करके '**ॐ गं गणपतये नम:**' मन्त्रादि जप व गणेशस्तोत्र का पाठ करें। रात्रि को श्रीगणेश एवं चन्द्र का लड्डुओं सहित पूजा करके चन्द्रोदय होने पर '**ॐ सोम् सोमाय नम:**' द्वारा अर्घ्य देने से अनेक दैहिक एवं मानसिक कष्टों से निवृत्ति होती है। **षट्तिला एकादशी** (28 जन.) को तिल मिश्रित जल से स्नान करके तिलों द्वारा श्रीविष्णु पूजा एवं हवन करें। श्रीकृष्ण के '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नम:**' का 108 बार पाठ करें, फिर तिलयुक्त सामग्री द्वारा हवन करें एवं भोग लगाकर स्वयं ग्रहण करने से पापों का नाश होता है। ता. 1 फर. को माघ (मौनी) अमावस होने से इस दिन तीर्थस्नान, वस्त्र, चावलादि अन्न दान, फल, आँवला, तिल निर्मित रेवड़ियाँ, गच्चकादि मिष्ठान्न, पितृ-तर्पण, ब्राह्मण-भोजन दक्षिणा सहित देने का विशेष एवं अक्षय फल होगा। **मंगलवारी अमावस** भी होने से इस दिन गङ्गादि तीर्थ पर स्नान, जप, दानादि करने से एक हज़ार गोदान का फल मिलता है, परन्तु राजनीतिक पक्ष से मंगलवारी अमावस का फल शुभ नहीं माना गया। **राज्यभ्रंशो राजयुद्धं क्लेशानां च प्रवर्द्धनम। उपघातोऽल्प वृष्टिश्च क्षयश्चार्थस्य भूमिजे।** अर्थात् देश के राजनेताओं में विग्रह एवं टकराव हो, कहीं छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), अपदस्थ, उपद्रव व हिंसक घटनाएं हों। **लोक-भविष्य–**माघ मास में पाँच मंगलवारों का समावेश होना सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों के लिए शुभ नहीं। देश में कहीं राज्य परिवर्तन, राजनीतिक पार्टियों में टकराव, साम्प्रयादिक व हिंसक घटनाओं की सम्भावना रहे। किसी प्रमुख नेता के अपदस्थ या आकस्मिक मृत्यु के भी योग हैं। **गोचर-फल–**मकर राशि में सूर्य-बुध-शनि ग्रहों का योग तथा कालसर्प योग के प्रभावस्वरूप आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि से प्रजा में आक्रोश एवं गहन असन्तोष व्याप्त रहे। विश्व में कहीं हवाई दुर्घटनाएं, आतंकवादी व युद्धोन्मादी घटनाएं अधिक घटित होंगी। **आकाश-लक्षण–**पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में शीत लहरों एवं वायुवेग सहित कहीं खण्ड वर्षा होगी।

वि. संवत् २०७८, माघ शुक्ल पक्ष शाके- १९४३ | सन् 2022 ई. (ता. 2 से 16 फरवरी तक), हिजरी सन् 1443

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु :

ग्रह दर्शन—प्रातः मंगल-शुक्र पास-पास पूर्व-कपाल में, बुध इनसे नीचे पूर्वक्षितिज में होगा। सायं गुरु पश्चिम-क्षितिज में होगा। शनि अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ. प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ. प.	योग	समाप्तिकाल घ. प.	करण	समाप्तिकाल घ. प.	तारीख माघ शक	जमादि	फरवरी	माघ प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
२६:२८	१	बुध	२:५०	धनि	२६:१३	वरी	४१:२५	ब	२:५०	13	29	2	२०	कुम्भ	माघ शुक्लपक्ष प्रारम्भ, **चन्द्रदर्शन**, मु. १५, गुरु शत. ३ में ८:५३ **(A)**	०९:१९:०१:२२	7:24	17:59
अवम्	२	बुध	५७:१०	००	००:००	००	००:००	०	००:००	०	०	०	०	००	**द्वितीया तिथि का क्षय** ०० ००	०० ०० ०० ००	००	००
२६:३३	३	गुरु	५३:१०	शत.	२३:००	परि.	३४:४३	तै	२५:१०	14	रज्ज	3	२१	कुम्भ	**गौरी तृतीया व्रत**, मंगल पू.षा. में ४४:४८ (25:18), रज्जब (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	०९:२०:०२:१३	7:23	18:00
२६:३८	४	शुक्र	५१:०५	पू.भा.	२१:३०	शिव	२९:२८	व	२२:०८	15	2	4	२२	मी. ६:४३	भ. २२:०८ से ५१:०५ तक, **श्रीगणेश तिल चतुर्थी, बुध मार्गी ५:४५ (B)**	०९:२१:०३:०३	7:22	18:01
२६:४०	५	शनि	५१:०३	उ.भा.	२१:५८	सिद्ध	२५:४८	ब	२१:०४	16	3	5	२३	मीन	**वसन्त-पञ्चमी**, श्रीपंचमी, सरस्वती-पूजन, वागेश्वरी-जयन्ती गण्डमूल 16:09 से	०९:२२:०३:५५	7:22	18:02
२६:४५	६	रवि	५३:१५	रेव.	२४:३३	साध्य	२३:५०	कौ	२२:०९	17	4	6	२४	मे.२४:३३	**पंचक समाप्त २४:३३** (17:10), सूर्य धनि. में १५:०५ (13:23)	०९:२३:०४:४३	7:21	18:03
२६:५०	७	चन्द्र	५७:२३	अश्वि	२९:०८	शुभ	२३:२८	ग	२५:११	18	5	7	२५	मेष	भ. ५७:२३ से, **रथ-आरोग्य सप्तमी**, पुत्र सप्तमी व्रत,श्रीमाधावाचार्य जयंती,**(C)**	०९:२४:०५:२९	7:20	18:04
२६:५५	८	मंग	६०:००	भर.	३५:२०	शुक्ल	२४:२५	वि	३०:१३	19	6	8	२६	वृ.५२:०५	भ. ३०:१३ तक, **भीष्माष्टमी**, राहु कृति. २-केतु विशा. ४ में २७:१०	०९:२५:०६:१४	7:19	18:05
२७:००	८	बुध	३:०३	कृति.	४२:४३	ब्रह्म	२६:२३	ब	३:०३	20	7	9	२७	वृष		०९:२६:०६:५६	7:18	18:06
२७:०१	९	गुरु	९:३८	रोहि.	५०:३५	ऐन्द्र	२८:४८	कौ	९:३८	21	8	10	२८	वृष	**गुप्त नवरात्र समाप्त**	०९:२७:०७:४०	7:18	18:06
२७:०५	१०	शुक्र	१६:३०	मृग.	५८:२०	वैधृ	३१:१८	ग	१६:३०	22	9	11	२९	मि.२४:३३	भ. ४९:४५ से,	०९:२८:०८:२०	7:17	18:07
२७:१०	११	शनि	२३:००	आर्द्रा	६०:००	विष्क	३३:३०	वि	२३:००	23	10	12	फा	मिथुन	भ. २३:०० तक, **जया एकादशी व्रत, सूर्य कुम्भ में** ५०:२५ (27:26) **(D)**	०९:२९:०८:५९	7:16	18:08
२७:१५	१२	रवि	२८:३८	आर्द्रा	५:३०	प्रीति	३४:५८	बा	२८:३८	24	11	13	२	क.५५:१०	**भीष्म-द्वादशी, तर्पणं च, तिल द्वादशी**	१०:००:०९:३६	7:15	18:09
२७:२०	१३	चन्द्र	३३:०८	पुन.	११:३८	आयु	३५:३५	कौ	०:५३	25	12	14	३	कर्क	**सोम प्रदोष व्रत**, मेला जैसलमेर (राजस्थान) प्रारम्भ-3 दिन	१०:०१:१०:१३	7:14	18:10
२७:२५	१४	मंग	३६:१५	पुष्य	१६:३०	सौभा	३५:१०	ग	४:४२	26	13	15	४	कर्क	भ. ३६:१५ से, गण्डमूल 13:49 से	१०:०२:१०:४९	7:13	18:11
२७:२८	१५	बुध	३८:०८	आश्ले	२०:०५	शोभ	३३:४८	वि	७:१२	27	14	16	५	सिं.२०:०५	भ. ७:१२ तक, **माघ पूर्णिमा, माघ स्नान समाप्त, श्रीगुरु रविदास जयं.(E)**	१०:०३:११:२३	7:12	18:11

(A) गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, बाबा श्रीलालदयाल जयन्ती (ध्यानपुर, पं.) **(B)** (9:40), वरद् (कुन्द) चतुर्थी **(C)** भानु सप्तमी, गण्डमूल 18:59 तक **(D)** फाल्गुन संक्रान्ति, मु. १५, पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रातः 9:50 तक **(E)** गुरु शत. ४ में १८:५५, श्रीललिता-जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 8 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	८	९	१०	८	९	१	७
२५	१८	१६	१	१४	१८	२२	३	३
१	४०	२३	३	४०	४०	९	२१	२१
३८	१७	२९	३२	४६	८	४२	४१	४१
60	720	44	28	14	21	7	3	3
46	1	2	3	7	52	12	11	11
धनि.	भर.	पूषा	उषा	शत	पूषा	श्रव.	कृति	अनु.
१	२	१	२	३	२	४	३	१
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय, 8 फर.

१० सू. बु. श.; ११ गु.; ९ शु. मं.; ८ के.; ७; ६; ५; ४; ३; २ रा.; १ चं.; १२

बुधे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 16 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	३	८	९	१०	८	९	१	७
३	२४	२२	६	१६	२२	२३	२	२
७	५२	१६	५१	३४	२२	७	५६	५६
४	५	३५	३९	२८	३०	०	१५	१५
60	763	44	59	14	34	7	3	3
32	53	17	25	20	43	7	11	11
धनि.	आश्ले.	पूषा	उषा	शत.	पूषा	श्रव.	कृति	विशा
३	३	३	४	३	३	४	२	४
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय, 16 फर.

११ सू. गु.; १२; १० श. बु.; ९ मं. शु.; ८ के.; ७; ६; ५; ४ चं.; ३; २ रा.; १

माघ शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष में गौरी-तृतीया (3 फर.) को उमा (पार्वती) का पूजन करके गुड़, अदरख, लवण, पालक और खीर–इनसे बलि देकर ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए। श्री गणेश तिल चतुर्थी (4 फर.) को श्रीगणेश जी का व्रत एवं पूजन तिल, फल, गुड़ व लड्डुओं सहित करने का विधान है। **वसन्त-पंचमी** (5 फर.) को भगवान् श्रीविष्णु, सरस्वती व श्रीकृष्ण-राधा की पूजा पीले पुष्पों, गुलाल, अर्घ्य, धूप, दीप, नैवेद्य आदि द्वारा करके पीले/मीठे चावलों एवं हलुवा का भोग लगाकर स्वयं सेवन करने की परम्परा है। **रथ सप्तमी** (7 फर.) को भगवान् सूर्यनारायण ने मन्वन्तर के आदि में इसी दिन जगत् को अपने प्रकाश से आलोकित किया था। विधि अनुसार व्रत रखने से पुत्र-सन्तति, आरोग्य, धनादि की प्राप्ति होती है। **माघ पूर्णिमा** (16 फर.) को तीर्थजल से स्नान करके देव-पितृतर्पण करने के बाद तिल, गुड़, अनाज,स घी, फल, वस्त्रों आदि का दान करने से विशेष पुण्य प्राप्त होता है। **फाल्गुन संक्रान्ति**–ता. 12 फरवरी, शनिवार की रात्रि के बाद 3 बजकर, 26 मिनट पर (27:26) वृश्चिक लग्न में प्रवेश करेगी। १५ मुहू. इस सं. का पुण्यकाल अगले दिन प्रातः 9घं.-50मिं. तक रहेगा। वारानुसार तथा नक्षत्रानुसार राक्षसी नामक यह सं. नीच, दुष्ट वृत्ति वाले लोगों के लिए लाभप्रद रहेगी। **संक्रां. राशिफल**–यह सं. कर्क, सिंह, कन्या, तुला, धनु, मकर, कुम्भ तथा मीन राशि वालों के लिए लाभप्रद रहेगी। **ग्रह-गोचर**–मकर राशिगत शनि अस्त रहने से प्रचण्ड वायुवेग के कारण खड़ी फसलों को हानि होगी तथा वर्षा भी कम होगी। गुरु अतिचार गति से संचरणशील है। इसके प्रभावस्वरूप गेहूँ, चने, धान्य,चावल, खाद्य-तेल, मूँगफली, घृत, खल-बिनौले, चीनी, गुड़-शक्कर तेज भाव होंगे। लोगों में विलष्ट रोग भय, असन्तोष, व्याकुलता, पीड़ा एवं कहीं दुर्भिक्ष, छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन) होने का भय रहे–**'यदा क्रूर ग्रहो वक्री हि, अतिचारी सौम्यकः। पीडा व्याधि भयं तत्र दुर्भिक्षं राज्यं विग्रहम्।'** **आकाश-लक्षण**–उत्तर-पश्चिम भारत में कहीं धूल भरी आँधी एवं कहीं खण्ड वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०७८, फाल्गुन कृष्ण पक्ष शाक: १९४३											तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	सन् 2022 ई. (ता. 17 फरवरी से 2 मार्च तक), हिजरी सन् 1443 सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर–वसन्त ऋतु: प्रात: मंगल–शुक्र बिल्कुल पास–पास पूर्व कपाल में, 22 फर. से शनि भी बुध के साथ पूर्व–क्षितिजासन्न होगा। सायं पश्चिम में दृश्य गुरु 24 फर. से अस्त हो जाएगा।	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट	भा.स्टैं.टा. जालन्धर	
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घड़ी पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घड़ी पल	योग	समाप्तिकाल घड़ी पल	करण	समाप्तिकाल घड़ी पल		माघ शुक्ल	रजब	फरवरी	फाल्गु. प्र.			रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
२७:३०	१	गुरु	३८:४३	मघा	२२:२८	अति	३१:२५	बा	८:२६		28	15	17	६	सिंह	फाल्गुन कृष्णपक्ष प्रारम्भ, शनि धनि. १ में ४५:२३, गण्डमूल 16:11 तक	१०:०४:११:५५	7:12	18:12
२७:३५	२	शुक्र	३८:१८	पू.फा.	२३:४८	सुक	२८:१८	तै	८:३१		29	16	18	७	कं.३८:५८	बुध श्रवण में ५७:५५ (30:21), सूर्य सायन मीन में ३७:३५ (22:13)(A)	१०:०५:१२:२५	7:11	18:13
२७:४०	३	शनि	३६:५८	उ.फा.	२४:१३	धृति	२४:२५	व	७:३८		30	17	19	८	कन्या	भ. ७:३८ से ३६:५८ तक, सूर्य शत. में २६:५८ (17:57)	१०:०६:१२:५३	7:10	18:14
२७:४५	४	रवि	३४:५३	हस्त	२३:५३	शूल	१९:५५	ब	५:५६		फा	18	20	९	तु.५३:२५	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 20), शक फाल्गुन प्रारम्भ स.सि.यो. 16:42 तक	१०:०७:१३:१९	7:09	18:15
२७:५०	५	चन्द्र	३२:०५	चित्रा	२२:५३	गंड	१४:५३	कौ	३:२९		2	19	21	१०	तुला	मंगल उ.षा. में ५२:१३ (28:01), शनि पूर्व में उदय २७:३८ (18:11) (B)	१०:०८:१३:४५	7:08	18:16
२७:५३	६	मंग	२८:४०	स्वा.	२१:१३	वृद्धि	९:२०	ग	०:२३		3	20	22	११	तुला	भ. २८:४० से ५६:४० तक, शुक्र उ.षा. में ३८:३८ (22:34)	१०:०९:१४:०९	7:07	18:16
२८:००	७	बुध	२४:४०	विशा.	१९:००	ध्रुव व्या.	३:२० ५६:४५	ब	२४:४०		4	21	23	१२	वृ. ४:३८	श्रीनाथ–उत्सव	१०:१०:१४:२७	7:05	18:17
२८:०५	८	गुरु	२०:००	अनु.	१६:०८	हर्ष	४९:४५	कौ	२०:००		5	22	24	१३	वृश्चिक	गुरु पश्चिम में अस्त 8:50 (घं.मिं.), जानकी–व्रत	१०:११:१४:५०	7:04	18:18
२८:१०	९	शुक्र	१४:४८	ज्ये.	१२:४०	वज्र	४२:२०	ग	१४:४८		6	23	25	१४	ध.१२:४०	भ. ४१:५७ से,	१०:१२:१५:१०	7:03	18:19
२८:१३	१०	शनि	९:०५	मूल	८:४५	सिद्धि	३४:३३	वि	९:०५		7	24	26	१५	धनु	भ. ९:०५ तक, मंगल मकर में २१:५८ (15:49), विजया एकादशी व्रत(C)	१०:१३:१५:३०	7:02	18:19
२८:१८	११	रवि	३:००	पू.षा.	४:३०	व्य.	२६:३३	बा	३:००		8	25	27	१६	म.१८:२३	विजया एकादशी व्रत (वैष्णव), शुक्र मकर में ८:०५ (10:15), त्रिस्पर्शा महाद्वादशी	१०:१४:१५:४६	7:01	18:20
अवम्	१२	रवि	५६:४५	००	००	००	००	०	००		०	०	०	०	००	द्वादशी तिथि का क्षय ००० गुरु अस्त 24 फर.	००:००:००:००	०:००	००:००
२८:२३	१३	चन्द्र	५०:४३	उ.षा. श्रव.	०:०५ ५५:४८	वरी	१८:३३	ग	२३:४४		9	26	28	१७	मकर	भ. ५०:४३ से, सोम प्रदोष व्रत, स. सि. यो.	१०:१५:१६:००	7:00	18:21
२८:२८	१४	मंग	४५:०५	धनि.	५२:०३	परि.	१०:४५	वि	१७:५४		10	27	मार्च	१८	कुं.२३:५०	भ. १७:५४ तक, पंचक प्रारम्भ २३:५०, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत बुध (D)	१०:१६:१६:१४	6:59	18:22
२८:३०	३०	बुध	४०:१८	शत.	४९:०८	शिव सिद्ध	३:२५ ५६:५०	च	१२:४२		11	28	2	१९	कुम्भ	फाल्गुन अमावस, गुरु पू.भा. १ में १०:२८ (11:09)	१०:१७:१६:२६	6:58	18:22

(A) वसन्त ऋतु प्रारम्भ, स. सि. यो. (B) गुरु वार्धक्य प्रारम्भ 8:50 (घं.मिं.) (C) (स्मार्त), (देखें पृष्ठ 25) स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती, गण्डमूल 10:32 तक (D) धनि. में ३३:४३, मार्च––सन् 2022 ई. प्रारम्भ

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 24 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	८	९	१०	८	९	१	७
११	११	२८	१५	१८	२७	२४	२	२
१०	५८	११	५१	२९	३५	३	३०	३०
५२	२७	४४	३७	३८	१८	३०	४९	४९
60	846	44	76	14	44	6	3	3
23	35	33	13	28	10	58	11	11
शत	अनु	उषा	श्रव	शत	उषा	धनि	कृति	विशा
२	३	१	२	४	१	१	२	४
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. सूर्योदय, 24 फरवरी

१२ | १० श. बु. | ९ मं. शु. | ११ सू. गु. | १ | २ रा. | ८ चं. के. | ३ | ५ | ७ | ४ | ६

बुधे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 2 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	९	९	१०	९	९	१	७
१७	७	२	२३	१९	२	२४	२	२
१२	४०	३९	५१	५६	१४	४५	११	११
४६	१८	२३	२५	३४	५	०	४४	४४
60	839	44	84	14	49	6	3	3
14	40	42	49	32	25	50	10	10
शत	शत	उषा	धनि	शत	उषा	धनि	कृति	विशा
४	१	२	१	४	२	१	२	४
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली सूर्योदय, 2 मार्च

१२ | शु. १० बु. मं. श. | ११ सू. चं. गु. | १ | ९ | २ रा. | ८ के. | ३ | ५ | ७ | ४ | ६

फाल्गुन कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष की श्रीगणेश चतुर्थी (20 फर.) का व्रत रखकर श्रीगणेश पूजन, बीज मन्त्र एवं स्तोत्र स्तवन करते हुए रात्रि को चन्द्रोदय के चन्द्रमा को अर्घ्य देकर भगवान् को लड्डुओं सहित तिल निर्मित द्रव्यों का भोग लगाकर स्वयं प्रसाद रूप में ग्रहण करने से सुख–सौभाग्य एवं सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। **विजया एकादशी** (26/27 फर.) को विधिवत् व्रत रखने से हर प्रकार के वाद–विवाद में सफलता प्राप्त होती है। **'श्रीमहाशिवरात्रि' (1 मार्च)** का सर्वकल्याणकर व्रत विधिपूर्वक रखकर शिव–पूजन, शिव–कथा, शिव–स्तोत्रों का पाठ एवं **'ॐ नम: शिवाय'** का पाठ करते हुए रात्रि जागरण करने से अश्वमेध तुल्य फलों की प्राप्ति होती है। **'शिवरात्रि व्रतं नाम सर्वपाप प्रणाशनम्। आचाण्डालमनुष्यणां भुक्तिमुक्ति प्रदायकम्।।'** व्रत के दूसरे दिन ब्राह्मणों को यथाशक्ति वस्त्र–क्षीर सहित भोजन, दक्षिणादि प्रदान करके सन्तुष्ट करना चाहिए। **शिवरात्रि व्रत** का प्रारम्भ संकल्पपूर्वक सम्वत् नाम, मास, पक्ष, तिथि–नक्षत्र, अपने नाम एवं गोत्रादि का उच्चारण करते हुए करना चाहिए–**'शिवरात्रि व्रतं एतत् करिष्येऽहं महाफलम्। निर्विघ्नमस्तु मे चात्र त्वत् प्रसादात् जगत्पते।।'** ग्रह–गोचर–गुरु, अतिचार गति से संचरणशील है तथा कालसर्प योग के प्रभावस्वरूप भी विश्व के कुछ राष्ट्रों के मध्य टकराव एवं युद्ध के बादल मण्डराएंगे। ता. 26 से मंगल–बुध–शनि तथा ता. 27 से चतुर्ग्रही योग विश्व या देश–विदेश में राजनीतिक दृष्टि से एवं प्राकृतिक प्रकोप आदि कारणों से विषम परिस्थितियां बनाएगा। चांद्र फाल्गुन में पाँच बृहस्पतिवार एवं पाँच शुक्रवार होने से उत्तर–पश्चिमी सीमाओं में हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होने के संकेत हैं। पाँच शुक्रवारों के कारण श्रृंगारिक समान, दूध, दही, पनीर, रुई–कपासादि श्वेत वस्तुओं की माँग बढ़ने से इनके मूल्यों में विशेष तेजी का रुझान बनेगा। जनसंख्या में असंयमित रूप में वृद्धि होने से लोगों की आर्थिक स्थिति पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। **आकाश लक्षण**–पक्ष में वायु–वेग के साथ पहाड़ी क्षेत्रों में बादल [illegible] तथा [illegible] क्षेत्रों में [illegible] पड़ेगी। फाल्गुन–फा. कृ. ५ को चित्रा नक्षत्र में बूंदाबांदी हो, तो आगामी अच्छी फसल के संकेत हैं।

वि. संवत् २०७८, फाल्गुन शुक्ल पक्ष शाक: १९४३											तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	सन् 2022 ई. (ता. 3 से 18 मार्च तक), हिजरी सन् 1443 सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, वसन्त ऋतु: ग्रह दर्शन—प्रात: मंगल–शुक्र पास–पास पूर्वकपाल में, इनसे ऊपर शनि तथा बुध पूर्वक्षितिजासन्न होगा। गुरु अस्त है।	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट रा. अं. क. वि.	भा.स्टैं.टा. जालन्धर सूर्योदय घं.मिं.	सूर्यास्त घं.मिं.
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.प.	योग	समाप्तिकाल घ.प.	करण	समाप्तिकाल घ.प.		फाल्गु. शु.	जिल्हि.	मार्च	फाल्गु. प्र.					
२८:३८	१	गुरु	३६:४०	पू.भा.	४७:२८	साध्य	५१:१८	किं	८:२९		12	29	3	२०	मी.३२:४५	फाल्गुन शुक्लपक्ष प्रारम्भ	१०:१८:१६:३७	6:57	18:23
२८:४३	२	शुक्र	३४:३८	उ.भा.	४७:२३	शुभ	४७:०३	बा	५:३९		13	30	4	२१	मीन	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, सूर्य पू.भा. में ४३:०८, फूलेरा-दूज (मथुरा, उ.प्र.) (A)	१०:१९:१६:४४	6:55	18:24
२८:४८	३	शनि	३४:१५	रेव.	४८:५८	शुक्ल	४४:१३	तै	४:२७		14	शव	5	२२	मे.४८:५८	पंचक समाप्त ४८:५८ (26:29), शब्बान (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, गण्डमूल विचार	१०:२०:१६:५१	6:54	18:25
२८:५०	४	रवि	३५:५०	अश्वि	५२:२५	ब्रह्म	४२:४८	व	५:०३		15	2	6	२३	मेष	भ. ५:०३ से ३५:५० तक, बुध कुम्भ में ११:१५ (11:19), स. सि. यो. (B)	१०:२१:१६:५६	6:53	18:25
२८:५५	५	चन्द्र	३९:१३	भर.	५७:३५	ऐन्द्र	४२:४८	ब	७:३२		16	3	7	२४	मेष	याज्ञवल्क्य जयन्ती	१०:२२:१६:५९	6:52	18:26
२९:००	६	मंग	४४:१३	कृति.	६०:००	वैधृ.	४४:००	कौ	११:४३		17	4	8	२५	वृ.१४:१०	गुरु अस्त रहेगा।	१०:२३:१७:०१	6:51	18:27
२९:०३	७	बुध	५०:१८	कृति.	४:१३	विष्क	४६:०३	ग	१७:१६		18	5	9	२६	वृष	भ. ५०:१८ से,	१०:२४:१७:००	6:50	18:27
२९:१०	८	गुरु	५६:५८	रोहि.	११:४५	प्रीति	४८:३३	वि	२३:३८		19	6	10	२७	मि.४५:३८	भ. २३:३८ तक, होलाष्टक प्रारम्भ, बुध शत. में ३२:१० अन्नपूर्णा-(C)	१०:२५:१६:५५	6:48	18:28
२९:१५	९	शुक्र	६०:००	मृग.	१९:३०	आयु	५०:५८	बा	३०:१२		20	7	11	२८	मिथुन	मंगल श्रवण में ४६:५३ (25:32)	१०:२६:१६:४९	6:47	18:29
२९:२०	९	शनि	३:२५	आर्द्रा	२६:५५	सौभा	५२:५०	कौ	३:२५		21	8	12	२९	मिथुन	होलाष्टक 10 से 18 मार्च	१०:२७:१६:४२	6:46	18:30
२९:२३	१०	रवि	९:०३	पुन.	३३:२३	शोभ	५३:५०	ग	९:०३		22	9	13	३०	क.१६:५३	भ. ४१:१६ से,	१०:२८:१६:३२	6:45	18:30
२९:३०	११	चन्द्र	१३:२८	पुष्य	३८:३३	अति	५३:४८	वि	१३:२८		23	10	14	चैत्र	कर्क	भ. १३:२८ तक, आमलकी एकादशी व्रत, सूर्य मीन में ४३:५०(24:15)(D)	१०:२९:१६:१८	6:43	18:31
२९:३५	१२	मंग	१६:१८	आश्ले	४२:०८	सुक	५२:२५	बा	१६:१८		24	11	15	२	सिं.४२:०८	भौम प्रदोष व्रत, गुरु पू.भा. २ में ५८:५०, स. सि. यो.	११:००:१६:०३	6:42	18:32
२९:३८	१३	बुध	१७:२८	मघा	४४:१०	धृति	४९:५३	तै	१७:२८		25	12	16	३	सिंह	महेश्वर व्रत, वृषदान व्रत, गण्डमूल 24:21 तक	११:०१:१५:४५	6:41	18:32
२९:४३	१४	गुरु	१७:०५	पू.फा.	४४:४५	शूल	४६:०८	व	१७:०५		26	13	17	४	कं.५९:४५	भ. १७:०५ से ४६:१५ तक, होलिका दहन (देखें पृष्ठ 30) (E)	११:०२:१५:२६	6:40	18:33
२९:५०	१५	शुक्र	१५:२५	उ.फा.	४४:१०	गंड	४१:३०	ब	१५:२५		27	14	18	५	कन्या	फाल्गुन पूर्णिमा, होली पर्व, होलाष्टक समाप्त, श्रीचैतन्य महाप्रभु (F)	११:०३:१५:०३	6:38	18:34

(A) श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती, गण्डमूल 25:52 से **(B)** गण्डमूल 27:51 तक **(C)** अष्टमी, शुक्र श्रवण में ५२:४३ **(D)** चैत्र संक्रान्ति, मु. १५ पुण्यकाल सं. अगले दिन मध्याह्न तक, **गोविन्द द्वादशी (12:06 बाद)** **(E)** श्रीसत्यनारायण व्रत, लक्ष्मीनारायण व्रत **(F)** जयन्ती, सूर्य उ.भा. में ४:५५, बुध पू.भा. में ३६:०८, होलिका विभूति धारण, धूलिवन्दन

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 10 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	९	१०	१०	९	९	१	७
२५	२०	८	५	२१	९	२५	१	१
१३	२२	३७	४४	५२	८	३८	४६	४६
४०	४९	३९	१४	४२	५९	४२	१८	१८
59	708	44	94	14	54	6	3	3
57	49	53	25	30	41	34	11	11
पू.भा. २	रोहि. ४	उ.षा. ४	धनि. ४	पू.भा. १	उ.षा. ४	धनि. १	कृति. २	चित्रा ४
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कु. सूर्योदय, 10 मार्च

१२; ११ सू. बु. गु.; श. १० शु. मं.; ९; १; २ चं. रा.; ८ के.; ३; ५; ७; ४; ६

शुक्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रात: 5:30 बजे, 18 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	४	९	१०	१०	९	९	१	७
३	२९	१४	१८	२३	१६	२६	१	१
१२	२५	३७	५२	४८	४०	३०	२०	२०
१६	१५	१८	३०	२४	५७	१	५२	५२
59	812	45	103	14	58	6	3	3
41	21	3	55	25	37	13	11	11
पू.भा. ४	उ.फा. १	श्रव. २	शत. ४	पू.भा. २	श्रव. ३	धनि. १	कृति. २	चित्रा ४
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कु. सूर्योदय, 18 मार्च

१; ११ गु. बु.; १० मं. शु. श.; २ रा.; १२ सू.; ३; ९; ४; ६; ८ के.; ५ चं.; ७

फाल्गुन शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष में ता. 10 से 18 मार्च तक '**होलाष्टक**' रहेंगे। इन दिनों परम्परानुसार गृहप्रवेश, मुण्डनादि शुभ कार्यों के आरम्भ का निषेध माना जाता है, परन्तु उ.प्र., आदि पूर्वी कुछ प्रदेशों में विशेष विचार नहीं किया जाता। **आमलकी एकादशी (14 मार्च)** के दिन आँवले के वृक्ष के नीचे बैठकर भगवान् विष्णु स्तुति, स्तोत्रपाठ तथा आँवले की टहनी को कलश में स्थापन करके पूजन करना चाहिए। पूजनोपरान्त आँवलों सहित भोजन का दान एवं सेवन करना उत्तमोत्तम होता है। पापों का क्षय तथा सौभाग्य की वृद्धि होती है। **होलिका-दहन**– यद्यपि पूर्णिमा को भद्रा रहित काल में प्रदोपकाले होलिका-दहन करने का विधान है। परन्तु यदि भद्रा अर्द्धरात्रि के बाद तक व्याप्त रहे, तो फिर भद्रा मुख त्यागकर अन्य काल में होलिका-दहन कर लेना चाहिए (देखें पृष्ठ 30)। ता. 18 मार्च, फाल्गुन पूर्णिमा को होली का पर्व/त्यौहार समस्त भारत (विशेषकर मथुरा/वृन्दावन) में बड़ी श्रद्धा एवं उत्साह से मनाया जाएगा। **चैत्र संक्रान्ति**–ता. 14 मार्च, सोमवार की अर्द्धरात्रि 12 बजकर 15 मिनट (24:15) पर वृश्चिक लग्न में प्रवेश करेगी। १५ मुहू. इस सं. का पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक होगा। वारानुसार ध्वांक्षी तथा नक्षत्रानुसार राक्षसी नामक यह सं. व्यापारियों, नीच कपटी लोगों के लिए लाभप्रद रहेगी। **संक्रां. राशिफल**–यह सं. कर्क, सिंह, कन्या, तुला, धनु, मकर, कुम्भ तथा मीन राशि वालों के लिए लाभप्रद रहेगी। **ग्रह-गोचर**–सं. कुण्डली में सूर्य पर शनि की दृष्टि, मंगल-शुक्र-शनि का मकर राशि पर योग होने से कहीं अनाज की कमी, दुर्भिक्ष (अकाल) हो और कहीं अग्निभय (अग्निकाण्ड), तो कहीं छत्रभंग (शासन-परिवर्तन) होगा–'**भार्गवो भौम सौरी चैकराशौ यान्ति त्रयो यदि। दुर्भिक्षं, राज्यभङ्ग च मेदिन्यामग्नितो भयम्।**' कालसर्प योग रहने से भी विश्व में विनाशकारी घटनाएं घटित होंगी।

आकाश लक्षण–भारत के उत्तर-पश्चिम क्षेत्रों में तेज़ हवाओं के साथ बौछारें पड़ने के योग हैं। **शकुन**–फा. अष्टमी को रोहिणी नक्षत्रकालीन बूंदाबांदी हो, तो आगामी मासों में अच्छी फसल के संकेत होंगे।

वि. संवत् २०७८, चैत्र कृष्ण पक्ष			शाकः १९४३–४४							तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश	सन् 2022 ई. (ता. 19 मार्च से 1 अप्रैल तक), हिजरी सन् 1443 सूर्य उत्तरायण, दक्षिण–उत्तर गोल, वसन्त ऋतुः	सूर्योदय कालिक सूर्यस्पष्ट	भा.स्टैं.टा. जालन्धर	
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्तिकाल घटी. पल	नक्षत्र	समाप्तिकाल घटी. पल	योग	समाप्तिकाल घटी. पल	करण	समाप्तिकाल घटी. पल	[illegible]	[illegible]	मार्च	चैत्र प्रवि.	घड़ी–पल	प्रातः मंगल–शुक्र–शनि पूर्वकपाल में दिखेंगे। ता. 27 मार्च से गुरु भी इस समय पूर्वक्षितिज में होगा। ता. 19 की रात्रि से बुध अस्त हो जाएगा जोकि प्रातः पूर्व से दृश्य था।	रा. अं. क. वि.	सूर्योदय घं. मिं.	सूर्यास्त घं. मिं.
२९:५३	१	शनि	१२:३३	हस्त	४२:३३	वृद्धि	३५:५८	कौ	१२:३३	28	15	19	६	कन्या	होला मेला (श्रीआनन्दपुर व पांओटा साहिब), चैत्र कृष्णपक्ष शुरु, शनि **(A)**	११:०४:१४:४३	6:37	18:34
२९:५८	२	रवि	८:४८	चित्रा	४०:१०	ध्रुव	२९:५३	ग	८:४८	29	16	20	७	तु.११:२८	भ. ३६:३७ से, **सन्त तुकाराम जयन्ती**, सूर्य सायन मेष में ३६:०८, **(B)**	११:०५:१४:१९	6:36	18:35
३०:०३	३	चन्द्र	४:२५	स्वा.	३७:२०	व्या.	२३:१८	वि	४:२५	30	17	21	८	तुला	भ. ४:२५ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 20), श्रीभगवान्नारायण जयं.	११:०६:१३:५२	6:35	18:36
अवम्	४	चन्द्र	५९:३५	००	००	००	००	०	००	०	०	०	०	००	चतुर्थी तिथि का क्षय ०० ००	० ०० ०० ००	००	००
३०:०८	५	मंग	५४:३३	विशा.	३४:१३	हर्ष	१६:३०	कौ	२७:०४	चै.	18	22	९	वृ.२०:००	**श्रीरंग-पंचमी**, शक चैत्र एवं संवत् 1944 प्रारम्भ, **मेला नवचण्डी** (मेरठ)**(C)**	११:०७:१३:२३	6:33	18:36
३०:१३	६	बुध	४९:२३	अनु	३०:५३	वज्र	९:२८	ग	२१:५८	2	19	23	१०	वृश्चिक	भ. ४९:२३ से, स. सि. यो., गण्डमूल 18:53 से	११:०८:१२:५४	6:32	18:37
३०:१८	७	गुरु	४४:०८	ज्ये.	२७:२८	सिद्धि व्य.	२:२३ ५५:१३	वि	१६:४६	3	20	24	११	ध.२७:२८	भ. १६:४६ तक, **बुध मीन में ११:००**, शुक्र धनि. में ३८:१० मेला **(D)**	११:०९:१२:२१	6:31	18:38
३०:२०	८	शुक्र	३८:५८	मूल	२४:०३	वरी.	४८:१०	बा	११:३३	4	21	25	१२	धनु	**शीतलाष्टमी व्रत**, बुध उ.भा. में ५८:००, गण्डमूल 16:07 तक	११:१०:११:४८	6:30	18:38
३०:२८	९	शनि	३३:५५	पू.षा.	२०:४८	परि.	४१:१५	तै	६:२७	5	22	26	१३	म.३५:००	**गुरु पूर्व में उदय 18:38** (घं.मिं.) — **गुरु उदय 26 मार्च**	११:११:११:१२	6:28	18:39
३०:३३	१०	रवि	२९:०५	उ.षा.	१७:४३	शिव	३४:३०	व	१:३०	6	23	27	१४	मकर	भ. १:३० से २९:०५ तक,	११:१२:१०:३५	6:27	18:40
३०:३५	११	चन्द्र	२४:३५	श्रव.	१४:५५	सिद्ध	२८:०३	बा	२४:३५	7	24	28	१५	कुं.४३:४३	**पंचक प्रारम्भ ४३:४३** (23:55), **पापमोचनी एकादशी व्रत**, स. सि. यो.	११:१३:०९:५५	6:26	18:40
३०:४०	१२	मंग	२०:३५	धनि.	१२:३८	साध्य	२२:००	तै	२०:३५	8	25	29	१६	कुम्भ	**भौम प्रदोष व्रत**, वारुणी योग (पर्व) 14:39 से, मंगल धनि. में ३२:१५,**(E)**	११:१४:०९:१४	6:25	18:41
३०:४८	१३	बुध	१७:२३	शत.	११:०५	शुभ	१६:३५	व	१७:२३	9	26	30	१७	मीं.५५:२५	भ. १७:२३ से ४६:१३ तक, **वारुणी योग** 10:49 तक, मासशिवरात्रि व्रत	११:१५:०८:३०	6:23	18:42
३०:५०	१४	गुरु	१५:०३	पू.भा.	१०:२३	शुक्ल	११:५३	श	१५:०३	10	27	31	१८	मीन	**पितृकार्येषु अमावस** (12:23 बाद), सूर्य रेवती में ३२:३५, शुक्र कुम्भ में**(F)**	११:१६:०७:४७	6:22	18:42
३०:५५	३०	शुक्र	१३:५३	उ.भा.	१०:४८	ब्रह्म	८:१०	ना	१३:५३	11	28	अप्रै.	१९	मीन	**चैत्र अमावस** (स्नानदानादि), बुध रेवती में ४६:२०, अप्रैल–सन् 2022 ई.**(G)**	११:१७:०७:००	6:21	18:43

(A) धनि. २ में ३३:४८, वसन्तोत्सव, ध्वजारोहण, धुलैण्डी, आम्रकुसुम प्राशन, बुध पूर्व में अस्त 23:49 (घं.मिं.) **(B)** (21:03), उत्तर गोल प्रारम्भ, **महाविषुव दिन** **(C)** शुरु, मेला गुरु रामराय (देहरादून) **(D)** शीतलामाता (कुराली, पंजाब) **(E)** गुरु पू.भा. ३ में ५८:१० **(F)** ५:४३ (8:39), मेला पृथूदक–पिहोवातीर्थ (हरियाणा) **(G)** प्रारम्भ, विक्रमी संवत् २०७८ पूर्ण, गण्डमूल 10:40 से

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 25 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	९	११	१०	९	९	१	७
१०	७	१९	१	२५	२३	२७	०	०
९	४	५३	२६	२८	३९	१२	५८	५८
१९	४०	६	१७	५०	३४	३२	३६	३६
59	847	45	112	14	61	5	3	3
28	49	12	46	16	15	53	10	10
उ.भा. ३	मूल ३	श्रव. ३	पू.भा. ४	पू.भा. २	धनि. १	धनि. २	कृत्ति. २	विशा. ४
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 25 मार्च

१: — ; १२: सू. बु. ; ११: गु. ; १०: मं. श. शु. ; ९: चं. ; ८: के. ; ७: — ; ६: — ; ५: — ; ४: — ; ३: — ; २: रा.

शुक्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे, 1 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	९	११	१०	१०	९	१	७
१७	१३	२५	१५	२७	०	२७	०	०
४	५०	९	२	८	५४	५२	३६	३६
५५	३१	४६	७	६	४४	२९	२१	२१
59	781	45	121	14	63	5	3	3
15	43	17	13	3	17	29	11	11
रेव. १	उ.भा. ४	धनि. १	उ.भा. ४	पू.भा. ३	धनि. ३	धनि. २	कृत्ति. २	विशा. ४
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. सूर्योदय, 1 अप्रैल

१: — ; १२: सू. चं. बु. ; ११: शु. गु. ; १०: मं. श. ; ९: — ; ८: के. ; ७: — ; ६: — ; ५: — ; ४: — ; ३: — ; २: रा.

चैत्र कृष्ण पक्षफल–

प्रतिपदा (19 मार्च) को होला-मेला, धुलैण्डी व वसन्त-उत्सव पंजाब, हरियाणा, हि.प्र. आदि अनेक प्रदेशों में मनाया जाता है। इसी दिन कई स्थलों पर ध्वजारोहण भी किया जाता है। ता. 21 मार्च को श्रीगणेश चतुर्थी का व्रत रखकर श्रीगणेश-पूजन, मन्त्र-जप **'ॐ गं गणपत्ये नमः'** करने से विघ्न दूर होते हैं तथा पुत्र-पौत्रादि की प्राप्ति होती है। **पापमोचिनी एकादशी** (28 मार्च) का व्रत विधि अनुसार रखने से ज्ञाताज्ञात अनिष्ट पापों से निवृत्ति होती है। इसी पक्ष में 20 मार्च को **महाविषुव दिवस** (जब दिन-रात समान होते हैं) को यन्त्र, तन्त्र एवं मन्त्रादि अनुष्ठान के लिए विशेष प्रशस्त दिन माना जाता है। ता. 29 मार्च को दोप. बाद 14घं.-39मिं. से त्रयोदशी तथा शतभिषा नक्षत्र का योग होने से **वारुणी योग** बना है। इस दिन एवं **30 मार्च** को **वारुणी योग** 10:49मिं. तक होने से तीर्थादि स्थल पर स्नान, दानादि का विशेष महत्त्व होता है। इसका माहात्म्य ग्रहणतुल्य होता है। चतुर्दशी (31 मार्च) को पिहोवा-तीर्थ (कुरुक्षेत्र) पर मेला पृथूदक बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाया जाएगा। **ग्रह-गोचर**–सूर्य पर शनि की दृष्टि, **कालसर्प योग**, मकर राशि में मंगल-शनि योग, कुम्भ में गुरु-शुक्र योग होने से देश के कुछ भागों में कहीं आन्तरिक कलह, उपद्रव, अशान्ति एवं विश्व में कुछ देशों के मध्य युद्ध का वातावरण बने। कही असामयिक वर्षा से हानि होगी तथा दैनिक उपभोग्य वस्तुओं में तेजी हो।–**'गुरु-शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्। अकाले वा भवेद्वृष्टिः जगत्यां नात्र संशयः।।'** ***लोक-भविष्य***–चैत्र मास में पाँच शनिवार होने से सर्वप्रकार के अनाज, दालें एवं खाद्य तैलों में तेजी होगी। राजनेताओं में परस्पर विरोध व टकराव हो। कहीं उपद्रव, झगड़े, फिसाद एवं जनांदोलन के संकेत हैं। जातीय उत्पात् और साम्प्रदायिक दंगे-फसाद बढ़ेंगे। जनोपयोगी आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में तेजी का रुझान होगा। आकाश लक्षण–चैत्र कृ. १ या अमावस को वर्षा या बूंदाबांदी हो, तो आगामी अच्छी फसल के संकेत होंगे।

वि. संवत् 2077–78, अप्रैल मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2021 ई.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्योत्तरायण / वसन्त-ग्रीष्म ऋतुः	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
चैत्र कृष्ण पक्ष (वि. संवत् 2077)	1	४	गुरु	11:00	विशा अनु.	07:22 29:19	सिद्धि	26:46	बा	11:00	वृश्चिक	श्रीभगवान्नारायण जयन्ती, अप्रैल सन् 2021 ई. प्रारम्भ, गण्डमूल 29:19 बाद	6:23	18:47	6:15	18:35	6:16	18:38	6:37	18:48
	2	५	शुक्र	8:16	ज्ये.	27:44	व्य.	23:39	तै	8:16	ध.27:44	भ. 29:59 से, मंगल मृगशिर में 23:08, बुध उ.भा. में 22:58 (A)	6:21	18:47	6:14	18:36	6:15	18:39	6:36	18:49
	०	६	शुक्र	29:59	००	००	००	००	०	०	००	षष्ठी तिथि का क्षय ००००	--	--	--	--	--	--	--	--
	3	७	शनि	28:13	मूल	26:39	वरी.	20:58	वि	17:06	धनु	भ. 17:06 तक, शीतला सप्तमी, गण्डमूल 26:39 तक,	6:20	18:48	6:13	18:36	6:14	18:39	6:35	18:49
	4	८	रवि	27:00	पू.षा.	26:06	परि.	18:42	बा	15:37	धनु	शीतलाष्टमी व्रत	6:19	18:49	6:12	18:37	6:12	18:40	6:34	18:49
	5	९	चन्द्र	26:19	उ.षा.	26:05	शिव	16:53	तै	14:40	म. 8:02	गुरु धनि. 3 कुम्भ में 24:23, कुम्भ स्नान माहात्म्य (हरिद्वार)	6:18	18:49	6:11	18:37	6:11	18:40	6:33	18:49
	6	१०	मंग	26:10	श्रव.	26:35	सिद्ध	15:29	व	14:15	मकर	भ. 14:15 से 26:10 तक, बुध पूर्व में अस्त 6:04	6:16	18:50	6:10	18:38	6:10	18:41	6:33	18:50
	7	११	बुध	26:29	धनि.	27:33	साध्य	14:29	ब	14:20	कुं.15:00	पंचक प्रारम्भ 15:00, पापमोचनी एकादशी व्रत	6:15	18:51	6:08	18:38	6:09	18:42	6:32	18:50
	8	१२	गुरु	27:16	शत.	28:57	शुभ	13:50	कौ	14:53	कुम्भ	वारुणी योग 27:16 से 28:57 तक, वारुणी पर्व	6:14	18:52	6:07	18:39	6:08	18:42	6:31	18:50
	9	१३	शुक्र	28:28	पू.भा.	--	शुक्ल	13:33	ग	15:52	मी.24:17	भ. 28:28 से, प्रदोष व्रत, बुध रेवती में 29:07	6:13	18:52	6:06	18:40	6:06	18:43	6:30	18:50
	10	१४	शनि	30:04	पू.भा.	6:46	ब्रह्म	13:34	वि	17:16	मीन	भ. 17:16 तक, शुक्र अश्वि 1 मेष में 6:28, मेला पृथूदक-पिहोवातीर्थ (B)	6:11	18:53	6:05	18:40	6:05	18:44	6:29	18:51
	11	३०	रवि	--	उ.भा.	8:58	ऐन्द्र	13:52	च	19:03	मीन	पितृकार्येषु अमावस, गण्डमूल 8:58 से,	6:10	18:54	6:04	18:41	6:04	18:44	6:29	18:51
	12	३०	चन्द्र	8:01	रेव	11:29	वैधृ.	14:27	ना	8:01	मे.11:29	चैत्र (सोमवती) अमावस, पंचक समाप्त 11:29, द्वितीय शाही स्नान-(C)	6:09	18:54	6:03	18:41	6:03	18:45	6:28	18:51
चैत्र शुक्ल पक्ष (वि. संवत् 2078)	13	१	मंग	10:17	अश्वि.	14:19	विष्क	15:15	ब	10:17	मेष	'राक्षस' नाम वि. संवत् 2078 प्रारम्भ, चैत्र (वासन्त) नवरात्र प्रारम्भ (D)	6:08	18:55	6:02	18:42	6:02	18:46	6:27	18:52
	14	२	बुध	12:48	भर.	17:23	प्रीति	16:14	कौ	12:48	वृ.24:10	कुम्भ-महापर्व (हरिद्वार), प्रमुख (तृतीय) शाही स्नान (देखें पृष्ठ 3)(E)	6:06	18:56	6:01	18:42	6:01	18:46	6:26	18:52
	15	३	गुरु	15:28	कृति.	20:33	आयु	17:19	ग	15:28	वृष	भ. 28:47 से, गणगौरी तृतीया, श्रीमत्स्य-जयन्ती	6:05	18:57	6:00	18:43	6:00	18:47	6:26	18:52
	16	४	शुक्र	18: 6	रोहि.	23:40	सौभा	18:23	वि	18:06	वृष	भ. 18:06 तक, बुध अश्विनी 1 मेष में 20:56, 'राक्षस' नाम संवत्सर	6:04	18:57	5:59	18:44	5:58	18:47	6:25	18:52
	17	५	शनि	20:33	मृग.	26:34	शोभ	19:18	ब	7:20	मि.13:09	श्री (लक्ष्मी) पंचमी, नाग-पंचमी (देखें पृष्ठ 24)	6:03	18:58	5:58	18:44	5:57	18:48	6:24	18:53
	18	६	रवि	22:35	आर्द्रा	29:02	अति	19:55	कौ	9:34	मिथुन	स्कन्द षष्ठी व्रत, शुक्र पश्चिम में उदय 23:10	6:02	18:59	5:57	18:45	5:56	18:49	6:23	18:53
	19	७	चन्द्र	24:02	पुन.	--	सुक	20: 5	ग	11:19	क.24:29	भ. 24:02 से, सूर्य सायन वृष में 26:05, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ	6:00	18:59	5:56	18:45	5:55	18:49	6:23	18:53
	20	८	मंग	24:44	पुन.	6:53	धृति	19:43	वि	12:23	कर्क	भ. 12:23 तक, श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति, अशोकाष्टमी, मेला बाहूफोर्ट(F)	5:59	19:00	5:55	18:46	5:54	18:50	6:22	18:53
	21	९	बुध	24:36	पुष्य	7:59	शूल	18:42	बा	12:38	कर्क	श्रीदुर्गा-नवमी, नवरात्र-समाप्त, श्रीरामनवमी, मेला मनसादेवी (G)	5:58	19:01	5:54	18:47	5:53	18:51	6:21	18:54
	22	१०	गुरु	23:36	आश्ले	8:15	गंड	17: 0	तै	12:06	सिं. 8:15	बुध भरणी में 28:24 शुक्र–उदय–18 अप्रैल	5:57	19:02	5:53	18:47	5:52	18:51	6:21	18:54
	23	११	शुक्र	21:48	मघा	7:42	वृद्धि	11:39	व	10:42	सिंह	भ. 10:42 से 21:48 तक, कामदा एकादशी व्रत, लक्ष्मीकान्त (H)	5:56	19:02	5:52	18:48	5:51	18:52	6:20	18:54
	24	१२	शनि	19:18	पू.फा. उ.फा.	06:22 28:23	ध्रुव	11:42	ब	8:33	कं.11:56	शनि प्रदोष व्रत, मंगल आर्द्रा में 25:37, श्रीविष्णु-दमनोत्सव, त्रिपुष्कर योग 6:22 से	5:55	19:03	5:51	18:48	5:50	18:53	6:19	18:55
	25	१३	रवि	16:13	हस्त	25:55	व्या. हर्ष	08:14 28:22	तै	16:13	कन्या	गुरु धनि. 4 में में 8:35, अनङ्ग त्रयोदशी, श्रीमहावीर-जयन्ती (जैन),स.सि.यो.	5:54	19:04	5:50	18:49	5:49	18:53	6:19	18:55
	26	१४	चन्द्र	12:45	चित्रा	23:6	वज्र	24:16	व	12:45	तु.12:32	भ. 12:45 से 22:54 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीशिवदमनोत्सव	5:53	19:04	5:49	18:49	5:48	18:54	6:18	18:55
	27	१५	मंग	9:02	स्वा.	20:8	सिद्धि	20:2	ब	9:02	तुला	चैत्र-पूर्णिमा, चतुर्थ (अन्तिम) शाही स्नान-कुम्भ-पर्व (हरिद्वार) देखें पृष्ठ 3 (I)	5:52	19:05	5:48	18:50	5:47	18:55	6:17	18:56
वैशा. कृष्ण	०	१	मंग	29:15	००	००	००	००	०	०	००	वैशाख कृष्ण प्रतिपदा तिथि का क्षय ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	28	२	बुध	25:35	विशा	17:13	व्य.	15:50	तै	15:25	वृ.11:56		5:51	19:06	5:47	18:51	5:46	18:55	6:17	18:56
	29	३	गुरु	22:10	अनु.	14:29	वरी	11:48	व	11:53	वृश्चिक	भ. 11:53 से 22:10 तक, बुध कृतिका में 13:26, गण्डमूल 14:29 से,	5:50	19:07	5:46	18:51	5:45	18:56	6:16	18:56
	30	४	शुक्र	19:10	ज्ये.	12:08	परि शिव	8:3 28:41	ब	8:40	ध.12:08	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 20), बुध वृष में 29:41, बुध पश्चिम(J)	5/49	19:07	5/45	18:52	5:44	18:57	6:15	18:57

(A) एकनाथ षष्ठी, श्रीरंग-पंचमी, मेला नवचण्डी (मेरठ) प्रारम्भ, मेला गुरु रामराय (देहरादून), गुड फ्राइडे (क्रिश्चि.) **(B)** (हरियाणा), मासिक शिवरात्रि व्रत **(C)** (कुम्भ महापर्व-हरिद्वार) (देखें पृष्ठ 3), प्रयागराजादि तीर्थस्नान माहात्म्य, विक्रमी संवत् 2077 पूर्ण **(D)** चैत्र शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 15, घटस्थापन, सूर्य अश्वि. 1 मेष में 26:33, **वैशाख संक्रान्ति**, मु. 15, पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रातः 8:57 तक, **वैशाखी पर्व (पंजाब), मंगल मिथुन में** 25:13, संवत्सरफल श्रवण, ध्वजारोहण, तैलाभ्यंग, श्रीदुर्गा-पूजा, गुड़ी पड़वा, गं.मू. **(E)** रमजान (मुस्लि.) मास प्रारम्भ **(F)** (जम्मू)-काँगड़ा देवी, नैना देवी (हि.प्र.), शुक्र भरणी में 25:04, अन्नपूर्णा पूजन, अगस्त्य अस्त **(G)** (पंचकूला) समाप्त, स्नान तिथि-**कुम्भ महापर्व (हरिद्वार)** देखें पृष्ठ 3, शुक्र बाल्यत्व समा. 23:10, शक वैशाख प्रारम्भ, गण्डमूल 7:59 से **(H)** दोलोत्सव, गण्डमूल 7:42 तक **(I)** सूर्य भर. में 18:22, श्रीहनुमान जयन्ती (दक्षिण-भारत), वैशाख स्नान प्रारम्भ **(J)** में उदय 19:02, सती अनुसूइया जयन्ती

वि. संवत् 2078, मई मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2021 ई.

मास पक्ष	मई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्योत्तरायण — ग्रीष्म ऋतुः	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
वैशाख कृष्ण पक्ष	1	५	शनि	16:42	मूल	10:16	सिद्ध	25:47	तै	16:42	धनु	मई मास प्रारम्भ, श्रम (मज़दूर) दिवस, शुक्र कृतिका में 20:28, गण्डमूल 10:16 तक	5:48	19:08	5:44	18:52	5:43	18:57	6:15	18:57
	2	६	रवि	14:51	पू.षा.	8:59	साध्य	23:25	व	14:51	म.14:46	भ. 14:51 से 26:16 तक, स. सि. यो. 8:59 से	5:47	19:09	5:44	18:53	5:42	18:58	6:14	18:57
	3	७	चन्द्र	13:40	उ.षा.	8:22	शुभ	21:36	ब	13:40	मकर	स. सि. यो. 8:22 से	5:46	19:10	5:43	18:54	5:41	18:59	6:14	18:58
	4	८	मंग	13:11	श्रव.	8:26	शुक्ल	20:21	कौ	13:11	कुं.20:44	**पंचक प्रारम्भ 20:44, शुक्र वृष में 13:25,**	5:45	19:10	5:42	18:54	5:40	18:59	6:13	18:58
	5	९	बुध	13:22	धनि.	9:11	ब्रह्म	19:36	ग	13:22	कुम्भ	भ. 25:47 से,	5:44	19:11	5:41	18:55	5:40	19:00	6:13	18:58
	6	१०	गुरु	14:11	शत.	10:32	ऐन्द्र	19:21	वि	14:11	कुम्भ	भ. 14:11 तक, बुध रोहिणी में 17:40	5:43	19:12	5:40	18:56	5:39	19:01	6:12	18:59
	7	११	शुक्र	15:33	पू.भा.	12:26	वैधृ.	19:29	बा	15:33	मी. 5:55	**वरूथिनी एकादशी व्रत**, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती	5:42	19:13	5:40	18:56	5:38	19:01	6:12	18:59
	8	१२	शनि	17:21	उ.भा.	14:47	विष्क	19:58	तै	17:21	मीन	**शनि प्रदोष व्रत**, गण्डमूल 14:47 बाद	5:41	19:13	5:39	18:57	5:37	19:02	6:11	18:59
	9	१३	रवि	19:31	रेव.	17:29	प्रीति	20:43	ग	6:26	मे.17:29	भ. 19:31 से, **पंचक समाप्त 17:29**, मासशिवरात्रि व्रत	5:40	19:14	5:38	18:57	5:36	19:03	6:11	19:00
	10	१४	चन्द्र	21:56	अश्वि.	20:25	आयु	21:39	वि	8:44	मेष	भ. 8:44 तक, गण्डमूल 20:25 तक	5:40	19:15	5:37	18:58	5:36	19:03	6:10	19:00
	11	३०	मंग	24:30	भर.	23:31	सौभा	22:41	च	11:13	मेष	**वैशाख (भौमवती) अमावस**, सूर्य कृति में 12:33, मेला हरिद्वार– (A)	5:39	19:15	5:37	18:59	5:35	19:04	6:10	19:00
वैशाख शुक्ल पक्ष	12	१	बुध	27:07	कृति.	26:40	शोभ	23:47	किं	13:49	वृ. 6:18	वैशाख शुक्लपक्ष प्रारम्भ, शुक्र रोहिणी में 16:31, स. सि. यो.	5:38	19:16	5:36	18:59	5:34	19:05	6:09	19:01
	13	२	गुरु	--	रोहि.	--	अति	24:50	बा	16:23	वृष	चन्द्रदर्शन, मु. 45, श्रीशिवाजी-जयन्ती	5:37	19:17	5:35	19:00	5:33	19:05	6:09	19:01
	14	२	शुक्र	5:39	रोहि.	5:45	सुक	25:46	कौ	5:39	मि.19:14	**अक्षय-तृतीया, स्नान-कुम्भ महापर्व (हरिद्वार)** (देखें पृष्ठ 3), **(B)**	5:37	19:18	5:35	19:00	5:33	19:06	6:09	19:02
	15	३	शनि	8:00	मृग.	8:39	धृति	26:28	ग	8:00	मिथुन	भ. 21:01 से,	5:36	19:18	5:34	19:01	5:32	19:07	6:08	19:02
	16	४	रवि	10:02	आर्द्रा	11:14	शूल	26:51	वि	10:02	मिथुन	भ. 10:02 तक, मंगल पुन. में 23:06, बुध मृगशिर में 12:12	5:35	19:19	5:34	19:02	5:32	19:07	6:08	19:02
	17	५	चन्द्र	11:35	पुन.	13:22	गंड	26:48	बा	11:35	क. 6:53	**आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती**	5:35	19:20	5:33	19:02	5:31	19:08	6:08	19:03
	18	६	मंग	12:33	पुष्य	14:55	वृद्धि	26:16	तै	12:33	कर्क	**श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती, श्रीगङ्गा-जयन्ती (मध्याह्न-व्यापिनी) (C)**	5:34	19:20	5:33	19:03	5:30	19:09	6:07	19:03
	19	७	बुध	12:51	आश्ले	15:48	ध्रुव	25:09	व	12:51	सिं.15:48	भ. 12:51 से 24:37 तक,	5:33	19:21	5:32	19:03	5:30	19:09	6:07	19:04
	20	८	गुरु	12:23	मघा	15:57	व्या.	23:27	ब	12:23	सिंह	**जानकी (सीता) जयन्ती** (देखें पृष्ठ 24), **श्रीबगुलामुखी जयन्ती, (D)**	5:33	19:22	5:32	19:04	5:29	19:10	6:07	19:04
	21	९	शुक्र	11:11	पू.फा.	15:22	हर्ष	21:08	कौ	11:11	कं.21:07	स. सि. यो.	5:32	19:23	5:31	19:05	5:29	19:11	6:06	19:04
	22	१०	शनि	9:16	उ.फा.	14:06	वज्र	18:17	ग	9:16	कन्या	भ. 20:00 से, गुरु शत. 1 में 6:48, मोहिनी एकादशी व्रत (स्मार्त) (देखें पृष्ठ 25),+	5:32	19:23	5:31	19:05	5:28	19:11	6:06	19:05
	23	११	रवि	6:43	हस्त	12:12	सिद्धि	14:56	वि	6:43	तु.23:04	भ. 6:43 तक, **मोहिनी एकादशी व्रत (वैष्णव)**, शुक्र मृग. में 13:19, **(E)**	5:31	19:24	5:30	19:06	5:28	19:12	6:06	19:05
	०	१२	रवि	27:39	००	००	००	००	०	०	००	**द्वादशी तिथि का क्षय** +शक ज्येष्ठ प्रारम्भ,	--	--	--	--	--	--	--	--
	24	१३	चन्द्र	24:12	चित्रा	9:49	व्य.	11:12	कौ	13:56	तुला	**सोम प्रदोष व्रत**	5:31	19:25	5:30	19:06	5:27	19:12	6:06	19:05
	25	१४	मंग	20:30	स्वा. विशा.	7:06 28:11	वरी. परि.	7:12 27:02	ग	10:21	वृ.22:55	भ. 20:30 से, **श्रीनृसिंह जयन्ती**, सूर्य रोहिणी में 8:45, **श्रीसत्यनारायण व्रत (F)**	5:30	19:25	5:30	19:07	5:27	19:13	6:05	19:06
	26	१५	बुध	16:44	अनु.	25:15	शिव	22:51	वि	6:37	वृश्चिक	भ. 6:37 तक, **वैशाख पूर्णिमा**, ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण (देखें पृष्ठ 33),**(G)**	5:30	19:26	5:29	19:07	5:26	19:14	6:05	19:06
ज्येष्ठ कृ. प.	27	१	गुरु	13:03	ज्ये.	22:29	सिद्ध	18:47	कौ	13:03	ध.22:29	ज्येष्ठ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल विचार	5:29	19:26	5:29	19:08	5:26	19:14	6:05	19:07
	28	२	शुक्र	9:37	मूल	20:02	साध्य	14:57	ग	9:37	धनु	भ. 20:06 से, **शुक्र मिथुन में 23:59**, श्रीनारद-जयन्ती, वीणादान, **(H)**	5:29	19:27	5:29	19:09	5:26	19:15	6:05	19:07
	29	३	शनि	6:34	पू.षा.	18:04	शुभ	11:29	वि	6:34	म.23:39	भ. 6:34 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 20), बुध वक्री 28:01	5:29	19:28	5:28	19:09	5:25	19:15	6:05	19:07
	०	४	शनि	28:04	००	००	००	००	०	०	००	**चतुर्थी तिथि का क्षय** ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	30	५	रवि	26:13	उ.षा.	16:42	शुक्ल	8:30	कौ	15:09	मकर	स. सि. यो.	5:28	19:28	5:28	19:10	5:25	19:16	6:05	19:08
	31	६	चन्द्र	25:06	श्रव.	16:02	ब्रह्म ऐन्द्र	6:03 28:13	ग	13:40	कुं.27:59	भ. 25:06 से, **पंचक प्रारम्भ 27:59**, स. सि. यो.	5:28	19:29	5:28	19:10	5:25	19:17	6:05	19:08

(A) प्रयागराजादि, तीर्थस्नान-माहात्म्य-कुम्भ पर्व (हरिद्वार) देखें पृष्ठ 3, मेला पिंजौर (हरियाणा) **(B) भगवान् परशुराम जयन्ती**, केदार-बदरी यात्रा प्रारम्भ, **सूर्य वृष में 23:24, ज्येष्ठ संक्रान्ति**, मु. 30, पुण्यकाल सं. मध्याह्न बाद से अगले दिन प्रात: 6:00 बजे तक, शव्वाल (मुस्लि.) मास प्रारम्भ **(C)** (देखें पृष्ठ 24), गण्डमूल 14:55 से, **(D)** (अर्द्धरात्रि-व्यापिनी), श्रीदुर्गाष्टमी, सूर्य सायन मिथुन में 25:07, गण्डमूल 15:57 तक **(E) शनि वक्री 14:42, त्रिस्पर्शा महाद्वादशी**, श्रीकल्कि जयन्ती (पुराणानुसार-मतान्तरे) **(F)** (देखें पृष्ठ 25), श्रीकूर्म-जयन्ती (सायं-व्यापिनी) **(G)** (पूर्वी भारत), **श्रीबुद्ध-जयन्ती, बुद्ध पूर्णिमा**, वैशाख स्नान समाप्त, बुध मिथुन में 8:52, श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती, स. सि. यो., गण्डमूल 25:15 से, **(H)** गण्डमूल 20:02 तक

वि. संवत् 2078, जून मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2021 ई.

मास पक्ष	जून	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] (सूर्य उत्तर-दक्षिणायन; ग्रीष्म-वर्षा ऋतु)	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	1	७	मंग	24:47	धनि.	16:08	वैधृ	27:01	वि	12:57	कुम्भ	भ. 12:57 तक, जून मास प्रारंभ, राहु रोहि. 2 केतु अनु. 4 में 27:38, द्विपुष्कर योग	5:28	19:30	5:27	19:11	5:25	19:17	6:05	19:09
	2	८	बुध	25:13	शत.	17:00	विष्क	26:26	बा	13:00	कुम्भ	मंगल कर्क में 6:51, वक्री बुध वृष में 26:12, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 19:23	5:27	19:30	5:27	19:11	5:24	19:18	6:05	19:09
	3	९	गुरु	26:23	पू.भा.	18:35	प्रीति	26:23	तै	13:48	मी.12:07	शुक्र आर्द्रा में 10:52	5:27	19:31	5:27	19:12	5:24	19:18	6:04	19:09
	4	१०	शुक्र	28:08	उ.भा.	20:47	आयु	26:48	व	15:16	मीन	भ. 15:16 से 28:08 तक, गण्डमूल 20:47 से,	5:27	19:31	5:27	19:12	5:24	19:19	6:04	19:10
	5	११	शनि	--	रेव.	23:28	सौभा	27:34	व	17:14	मे.23:28	पंचक समाप्त 23:28, गण्डमूल विचार	5:27	19:32	5:27	19:13	5:24	19:19	6:04	19:10
	6	११	रवि	6:20	अश्वि	26:27	शोभ	28:34	बा	6:20	मेष	अपरा एकादशी व्रत, मेला भद्रकाली एकादशी (कपूरथला) पं. (A)	5:27	19:32	5:27	19:13	5:24	19:20	6:04	19:10
	7	१२	चन्द्र	8:49	भर.	--	अति.	--	तै	8:49	मेष	सोम प्रदोष व्रत, मंगल पुष्य में 17:00	5:26	19:33	5:27	19:13	5:24	19:20	6:04	19:11
	8	१३	मंग	11:25	भर.	5:36	अति.	5:41	व	11:25	वृ.12:23	भ. 11:25 से 24:42 तक, सूर्य मृगशिर में 6:40, मासशिवरात्रि व्रत, स.सि.यो.	5:26	19:33	5:27	19:14	5:24	19:21	6:04	19:11
	9	१४	बुध	13:59	कृति.	8:44	सुक.	6:47	श.	13:59	वृष	वटसावित्री व्रत (अमावस-पक्ष) (देखें पृष्ठ 25)	5:26	19:34	5:27	19:14	5:23	19:21	6:05	19:11
	10	३०	गुरु	16:23	रोहि.	11:44	धृति	7:47	ना	16:23	मि.25:10	ज्येष्ठ अमावस, शनैश्चर-जयन्ती, भावुका अमावस	5:26	19:34	5:27	19:15	5:23	19:21	6:05	19:12
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	11	१	शुक्र	18:31	मृग.	14:31	शूल	8:37	व	18:31	मिथुन	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 15, भावुका करिदिन, (B)	5:26	19:34	5:27	19:15	5:23	19:22	6:05	19:12
	12	२	शनि	20:18	आर्द्रा	16:57	गंड	9:12	बा	7:25	मिथुन	जिल्काद (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	5:26	19:35	5:27	19:15	5:23	19:22	6:05	19:12
	13	३	रवि	21:41	पुन.	19:01	वृद्धि	9:30	तै	9:00	क.12:32	रम्भा तृतीया व्रत, महाराणा प्रताप जयन्ती	5:26	19:35	5:27	19:16	5:23	19:23	6:05	19:13
	14	४	चन्द्र	22:35	पुष्य	20:37	ध्रुव	9:27	व	10:08	कर्क	भ. 10:08 से 22:35 तक, शुक्र पुन. में 9:07, उमा अवतार, गण्डमूल 20:37 से,	5:26	19:36	5:27	19:16	5:24	19:23	6:05	19:13
	15	५	मंग	22:57	आश्ले	21:42	व्या.	9:00	ब	10:46	सिं.21:42	सूर्य मिथुन में 6:00, आषाढ़ संक्रान्ति, मु. 15, पुण्यकाल सं. दोपहर (C)	5:26	19:36	5:27	19:17	5:24	19:23	6:05	19:13
	16	६	बुध	22:46	मघा	22:15	हर्ष	8:08	कौ	10:52	सिंह	वक्री बुध रोहि. 4 में 22:32, अरण्य-षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा, (D)	5:26	19:36	5:27	19:17	5:24	19:24	6:05	19:13
	17	७	गुरु	22:00	पू.फा.	22:13	वज्र सिद्धि	6:48 29:01	ग	10:23	कं.28:07	भ. 22:00 से,	5:26	19:37	5:27	19:17	5:24	19:24	6:05	19:14
	18	८	शुक्र	20:40	उ.फा.	21:37	व्य.	26:46	वि	9:20	कन्या	भ. 9:20 तक, श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयन्ती, मेला क्षीर-भवानी (काश्मीर)	5:27	19:37	5:27	19:17	5:24	19:24	6:06	19:14
	19	९	शनि	18:46	हस्त	20:28	वरी	24:04	बा	7:43	कन्या		5:27	19:37	5:27	19:18	5:24	19:24	6:06	19:14
	20	१०	रवि	16:22	चित्रा	18:49	परि.	20:59	तै	5:34	तु. 7:42	भ. 26:57 से, श्रीगङ्गा-दशहरा पर्व (हरिद्वार आदि), गुरु वक्री (E)	5:27	19:37	5:28	19:18	5:24	19:25	6:06	19:14
	21	११	चन्द्र	13:32	स्वा.	16:45	शिव	17:33	वि	13:32	तुला	भ. 13:32 तक, निर्जला एकादशी व्रत, सूर्य सायन कर्क में 9:02, (F)	5:27	19:38	5:28	19:18	5:24	19:25	6:06	19:15
	22	१२	मंग	10:22	विशा.	14:22	सिद्ध	13:51	बा	10:22	वृ. 9:00	भौम प्रदोष व्रत, वटसावित्री व्रत प्रारम्भ, सूर्य आर्द्रा में 5:38, शुक्र कर्क(G)	5:27	19:38	5:28	19:18	5:25	19:25	6:06	19:15
	23	१३	बुध	7:00	अनु.	11:48	साध्य	10:00	तै	7:00	वृश्चिक	भ. 27:33 से, गण्डमूल 11:48 से, स.सि.यो.	5:28	19:38	5:28	19:18	5:25	19:25	6:07	19:15
	०	१४	बुध	27:33	००	००	००	००	०	०	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	24	१५	गुरु	24:10	ज्ये.	9:11	शुभ शुक्ल	6:05 26:16	वि	13:52	ध. 9:11	भ. 13:52 तक, ज्येष्ठ पूर्णिमा, वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा-पक्ष), (H)	5:28	19:38	5:28	19:19	5:25	19:25	6:07	19:15
आषाढ़ कृ. पक्ष	25	१	शुक्र	21:00	मूल पू.षा.	6:40 28:25	ब्रह्म	22:37	बा	10:35	धनु	आषाढ़ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, शुक्र पुष्य में 8:13, गण्डमूल 6:40 तक	5:28	19:38	5:29	19:19	5:26	19:26	6:07	19:15
	26	२	शनि	18:12	उ.षा.	26:36	ऐन्द्र	19:18	तै	7:36	म. 9:55	भ. 29:04 से, त्रिपुष्कर योग 18:12 तक	5:28	19:38	5:29	19:19	5:26	19:26	6:07	19:16
	27	३	रवि	15:55	श्रव.	25:22	वैधृ.	16:25	वि	15:55	मकर	भ. 15:55 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 20)	5:29	19:38	5:29	19:19	5:26	19:26	6:08	19:16
	28	४	चन्द्र	14:17	धनि.	24:49	विष्क	14:04	बा	14:17	कुं.13:00	पंचक प्रारम्भ 13:00, बुध मृगशिर में 24:12	5:29	19:39	5:30	19:19	5:26	19:26	6:08	19:16
	29	५	मंग	13:24	शत.	25:02	प्रीति	12:20	तै	13:24	कुम्भ	मंगल आश्ले. में 7:28,	5:29	19:39	5:30	19:19	5:27	19:26	6:08	19:16
	30	६	बुध	13:19	पू.भा.	26:03	आयु	11:14	व	13:19	मी.19:43	भ. 13:19 से 25:41 तक,	5:30	19:39	5:30	19:19	5:27	19:26	6:09	19:16

(A) गण्डमूल 26:27 तक, स. सि. यो. (B) श्रीगङ्गा स्नान प्रारम्भ, करवीर व्रत (C) 12:24 तक, स.सि.यो. (D) गण्डमूल 22:15 तक (E))20:30, वक्री बुध पूर्व में उदय 19:30 (F) सायन दक्षिणायन प्रारम्भ, वर्षा ऋतु शुरु (G) में 14:20, शक आषाढ़ प्रारम्भ, बुध-मार्गी 27:29, त्रिपुष्कर योग 10:22 तक (H) सन्त कबीर जयन्ती (623वीं), ज्येष्ठी योग

वि. संवत् 2078, जुलाई मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2021 ई.

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिनटों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्य-दक्षिणायन, वर्षा-ऋतु	जम्मू सूर्योदय घं. मि.	जम्मू सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	मुम्बई सूर्योदय घं. मि.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मि.
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	1	७	गुरु	14:02	उ.भा.	27:49	सौभा	10:46	ब	14:02	मीन	जुलाई मास प्रारम्भ, गण्डमूल 27:49 से,	5:30	19:39	5:31	19:19	5:28	19:26	6:09	19:16
	2	८	शुक्र	15:29	रेव.	--	शोभ	10:53	कौ	15:29	मीन	गण्डमूल विचार	5:31	19:38	5:31	19:19	5:28	19:26	6:09	19:16
	3	९	शनि	17:31	रेव.	6:14	अति	11:28	ग	17:31	मे. 6:14	**पंचक समाप्त 6:14**, गण्डमूल विचार	5:31	19:38	5:31	19:19	5:28	19:26	6:09	19:16
	4	१०	रवि	19:56	अश्वि.	9:05	सुक	12:23	व	6:44	मेष	भ. 6:44 से 19:56 तक, गण्डमूल 9:05 तक, स. सि. यो.	5:32	19:38	5:32	19:19	5:29	19:26	6:10	19:16
	5	११	चन्द्र	22:31	भर.	12:12	धृति	13:29	ब	9:14	वृ.18:59	**योगिनी एकादशी व्रत**, सूर्य पुन. में 29:16,	5:32	19:38	5:32	19:19	5:29	19:26	6:10	19:16
	6	१२	मंग	25:03	कृति.	15:20	शूल	14:35	कौ	11:47	वृष	शुक्र आश्लेषा में 8:17, स. सि. यो.	5:33	19:38	5:33	19:19	5:30	19:25	6:10	19:16
	7	१३	बुध	27:21	रोहि.	18:19	गंड	15:34	ग	14:12	वृष	भ. 27:21 से, **प्रदोष व्रत, बुध मिथुन में** 11:04, स. सि. यो.	5:33	19:38	5:33	19:19	5:30	19:25	6:11	19:16
	8	१४	गुरु	29:17	मृग.	20:59	वृद्धि	16:19	वि	16:19	मि. 7:41	भ. 16:19 तक, मासिकशिवरात्रि व्रत	5:34	19:38	5:34	19:19	5:31	19:25	6:11	19:16
	9	३०	शुक्र	--	आर्द्रा	23:14	ध्रुव	16:45	च	18:02	मिथुन	**आषाढ़ अमावस**, पितृकार्येषु अमावस	5:34	19:37	5:34	19:18	5:31	19:25	6:12	19:16
	10	३०	शनि	6:47	पुन.	25:02	व्या.	16:49	ना	6:47	क.18:38	**आषाढ़ (शनिवासरी) अमावस** (स्नानदानादि 6:47 तक)	5:35	19:37	5:35	19:18	5:32	19:25	6:12	19:16
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	11	१	रवि	7:48	पुष्य	26:22	हर्ष	16:31	ब	7:48	कर्क	**रथयात्रा उत्सव (श्रीजगन्नाथपुरी)**✤ (7:48 से 26:22 तक द्वितीया एवम् पुष्यनक्षत्र योग)(A)	5:35	19:37	5:35	19:18	5:32	19:24	6:12	19:16
	12	२	चन्द्र	8:20	आश्ले	27:14	वज्र	15:50	कौ	8:20	सिं.27:14	बुध आर्द्रा में 15:35, जिल्हिजा (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	5:36	19:37	5:36	19:18	5:33	19:24	6:13	19:16
	13	३	मंग	8:25	मघा	27:41	सिद्धि	14:48	ग	8:25	सिंह	भ. 20:14 से, गण्डमूल 27:41 तक,	5:36	19:36	5:36	19:18	5:33	19:24	6:13	19:16
	14	४	बुध	8:03	पू.फा.	27:43	व्य.	13:25	वि	8:03	सिंह	भ. 8:03 तक, ✤*मतान्तर से रथयात्रा का 12 जुलाई को भी शुभ मुहूर्त होगा।*	5:37	19:36	5:37	19:17	5:34	19:24	6:13	19:16
	15	५	गुरु	7:17	उ.फा.	27:21	वरी	11:43	बा	7:17	कं. 9:39	**स्कन्द (कुमार) षष्ठी**	5:37	19:35	5:37	19:17	5:34	19:23	6:14	19:16
	16	६	शुक्र	6:07	हस्त	26:37	परि	9:42	तै	6:07	कन्या	भ. 28:35 से, **सूर्य कर्क में 16:53, श्रावण संक्रान्ति**, मु. 30, पुण्यकाल(B)	5:38	19:35	5:38	19:17	5:35	19:23	6:14	19:15
	०	७	शुक्र	28:35	००	००	००	००	०	००	००	**सप्तमी तिथि का क्षय** ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	17	८	शनि	26:42	चित्रा	25:32	शिव सिद्ध	7:23 28:47	वि	15:39	तु.14:07	भ. 15:39 तक, **श्रीदुर्गाष्टमी, शुक्र** मघा 1 सिंह में 9:25	5:39	19:35	5:38	19:16	5:35	19:22	6:14	19:15
	18	९	रवि	24:29	स्वा.	24:08	साध्य	25:56	बा	13:36	तुला	भढली नवमी, **गुप्त नवरात्र समाप्त**, मेला शरीक भवानी (काश्मीर)	5:39	19:34	5:39	19:16	5:36	19:22	6:15	19:15
	19	१०	चन्द्र	22:00	विशा.	22:27	शुभ	22:50	तै	11:15	वृ.16:54	सूर्य पुष्य में 28:44	5:40	19:34	5:39	19:15	5:37	19:22	6:15	19:15
	20	११	मंग	19:18	अनु.	20:33	शुक्ल	19:34	व	8:39	वृश्चिक	भ. 8:39 से 19:18 तक, **हरिशयनी एकादशी व्रत, चातुर्मास्य व्रत**-(C)	5:40	19:33	5:40	19:15	5:37	19:21	6:15	19:14
	21	१२	बुध	16:27	ज्ये.	18:30	ब्रह्म	16:11	ब	5:53	ध.18:30	**प्रदोष व्रत,**	5:41	19:33	5:40	19:15	5:38	19:21	6:16	19:14
	22	१३	गुरु	13:33	मूल	16:25	ऐन्द्र	12:45	तै	13:33	धनु	सूर्य सायन सिंह में 19:56, गण्डमूल 16:25 तक	5:42	19:32	5:41	19:14	5:38	19:20	6:16	19:14
	23	१४	शुक्र	10:44	पू.षा.	14:26	वैधृ.	9:23	व	10:44	म.19:58	भ. 10:44 से 21:26 तक, **गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा** (10:44 बाद) (D)	5:42	19:31	5:41	19:14	5:39	19:19	6:17	19:14
	24	१५	शनि	8:07	उ.षा.	12:40	विष्कं प्रीति	6:11 27:15	ब	8:07	मकर	**आषाढ़ी पूर्णिमा** (स्नानदानादि), गुरु पूर्णिमा (पूर्वी-भारत) देखें पृ. 26 (E)	5:43	19:31	5:42	19:13	5:40	19:19	6:17	19:13
श्रावण कृष्ण पक्ष	25	१	रवि	5:51	श्रव.	11:18	आयु	24:42	कौ	5:51	कुं.22:48	श्रावण कृष्णपक्ष प्रारम्भ, **पंचक प्रारम्भ 22:48**, बुध कर्क में 11:40, अशून्यशयन व्रत	5:44	19:30	5:42	19:12	5:40	19:18	6:17	19:13
	०	२	रवि	28:04	००	००	००	००	०	०	००	**द्वितीया तिथि का क्षय** ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	26	३	चन्द्र	26:55	धनि.	10:26	सौभा	22:39	व	15:25	कुम्भ	भ. 15:25 से 26:55 तक, बुध पुष्य में 26:01 **श्रावण सोमवार व्रत शुरु**	5:44	19:29	5:43	19:12	5:41	19:18	6:18	19:13
	27	४	मंग	26:29	शत.	10:14	शोभ	21:10	ब	14:42	मी.28:33	**अङ्गारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 20), मंगलागौरी व्रत प्रारम्भ	5:45	19:29	5:44	19:11	5:41	19:17	6:18	19:12
	28	५	बुध	26:49	पू.भा.	10:45	अति	20:18	कौ	14:39	मीन	नाग-पंचमी (राजस्थान व बंगाल), शुक्र पू.फा. में 11:59	5:46	19:28	5:44	19:11	5:42	19:16	6:18	19:12
	29	६	गुरु	27:55	उ.भा.	12:02	सुक	20:02	ग	15:22	मीन	भ. 27:55 से, गण्डमूल 12:02 से, स. सि. यो.	5:46	19:27	5:45	19:10	5:43	19:16	6:19	19:11
	30	७	शुक्र	29:41	रेव.	14:02	धृति	20:18	वि	16:48	मे.14:02	भ. 16:48 तक, **पंचक समाप्त 14:02**, शीतला-सप्तमी	5:47	19:27	5:45	19:09	5:43	19:15	6:19	19:11
	31	८	शनि	--	अश्वि	16:38	शूल	21:01	बा	18:49	मेष	गण्डमूल 16:38 तक	5:48	19:26	5:46	19:09	5:44	19:14	6:19	19:11

(A) चन्द्रदर्शन, मु. ३०, गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, गण्डमूल 26:22 से, स. सि. यो. (B) सं. प्रातः 10:29 से, विवस्वत सप्तमी, निरयण दक्षिणायन प्रारम्भ **(C) नियमादि प्रारम्भ, मंगल मघा 1 सिंह में 17:54,** बुध पुन. में 11:52, वक्री गुरु धनि. 4 में 10:25, बुध पूर्व में अस्त 29:03, श्रीविष्णु-शयनोत्सव, गण्डमूल 20:33 से **(D)** देखें पृष्ठ 26-27, वायु-परीक्षा, श्रीसत्यनारायण व्रत, शक श्रावण प्रारम्भ, [illegible], मेला ज्वालामुखी (काश्मीर), कोकिला व्रत (E) वक्री शनि श्रवण 2 में 20:58

वि. संवत् 2078, अगस्त मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2021 ई.

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिनटों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्य-दक्षिणायन, वर्षा-शरद्-ऋतु	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
श्रावण कृष्ण पक्ष	1	८	रवि	7:57	भर.	19:36	गंड	22:01	कौ	7:57	वृ.26:23	अगस्त मास प्रारम्भ, लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव	5:48	19:25	5:46	19:08	5:45	19:14	6:20	19:10
	2	९	चन्द्र	10:29	कृति.	22:43	वृद्धि	23:06	ग	10:29	वृष	भ. 23:45 से, सूर्य आश्ले. में 27:41, बुध आश्ले. में 10:24	5:49	19:24	5:47	19:07	5:45	19:13	6:20	19:10
	3	१०	मंग	13:00	रोहि.	25:44	ध्रुव	24:05	वि	13:00	वृष	भ. 13:00 तक, राहु रोहि. 1 केतु अनु. 3 में 25:29	5:50	19:23	5:48	19:07	5:46	19:12	6:20	19:09
	4	११	बुध	15:18	मृग.	28:25	व्या.	24:50	बा	15:18	मि.15:07	कामिका एकादशी व्रत, स. सि. यो.	5:50	19:22	5:48	19:06	5:46	19:11	6:21	19:09
	5	१२	गुरु	17:10	आर्द्रा	--	हर्ष	25:13	तै	17:10	मिथुन	प्रदोष व्रत,	5:51	19:22	5:49	19:05	5:47	19:10	6:21	19:08
	6	१३	शुक्र	18:29	आर्द्रा	6:37	वज्र	25:09	व	18:29	क.25:54	भ. 18:29 से, श्रावण शिवरात्रि व्रत (देखें पृष्ठ 172), स. सि. यो.	5:52	19:21	5:49	19:04	5:48	19:10	6:21	19:08
	7	१४	शनि	19:12	पुन.	8:16	सिद्धि	24:37	वि	6:51	कर्क	भ. 6:51 तक,	5:53	19:20	5:50	19:04	5:48	19:09	6:22	19:07
	8	३०	रवि	19:20	पुष्य	9:19	व्य.	23:38	च	7:16	कर्क	श्रावण (हरियाली) अमावस, बुध मघा 1 सिंह में 25:34, (A)	5:53	19:19	5:50	19:03	5:49	19:08	6:22	19:07
श्रावण शुक्ल पक्ष	9	१	चन्द्र	18:57	आश्ले	9:50	वरी.	22:14	किं	7:09	सिं. 9:50	श्रावण शुक्लपक्ष प्रारम्भ, मेला छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी) प्रारम्भ, (B)	5:54	19:18	5:51	19:02	5:49	19:07	6:22	19:06
	10	२	मंग	18:06	मघा	9:53	परि.	20:29	बा	6:32	सिंह	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, मंगल पू.फा. में 23:30, गण्डमूल 9:53 तक	5:55	19:17	5:51	19:01	5:50	19:06	6:22	19:05
	11	३	बुध	16:54	पू.फा.	9:32	शिव	18:27	ग	16:54	कं.15:23	भ. 28:10 से, मधुस्रवा-हरियाली-सिंघारा तीज, शुक्र कन्या में (C)	5:55	19:16	5:52	19:00	5:51	19:05	6:23	19:05
	12	४	गुरु	15:25	उ.फा.	8:53	सिद्ध	16:12	वि	15:25	कन्या	भ. 15:25 तक, दूर्वा गणपति व्रत, वरद्-चतुर्थी	5:56	19:15	5:53	18:59	5:51	19:04	6:23	19:04
	13	५	शुक्र	13:43	हस्त	8:00	साध्य	13:46	बा	13:43	तु.19:29	नाग-पञ्चमी, श्रीकल्कि जयन्ती (देखें पृष्ठ 27),	5:57	19:14	5:53	18:58	5:52	19:03	6:23	19:04
	14	६	शनि	11:51	चित्रा स्वा.	6:56 29:44	शुभ	11:12	तै	11:51	तुला	बुध पश्चिम में उदय 28:17, स. सि. यो. 6:56 से	5:57	19:13	5:54	18:57	5:53	19:02	6:24	19:03
	15	७	रवि	9:52	विशा	28:26	शुक्ल ब्रह्म	8:31 29:46	व	9:52	वृ.22:46	भ. 9:52 से 20:49 तक, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती, श्रीदुर्गाष्टमी (D)	5:58	19:12	5:54	18:57	5:53	19:01	6:24	19:02
	16	८	चन्द्र	7:46	अनु.	27:02	ऐन्द्र	26:56	ब	7:46	वृश्चिक	सूर्य मघा 1 सिंह में 25:16, भाद्रपद संक्रान्ति, मु. 30, पुण्यकाल सं. (E)	5:59	19:11	5:55	18:56	5:54	19:00	6:24	19:02
	०	९	चन्द्र	29:35	००	००	००	००	०	०	००	नवमी तिथि का क्षय ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	17	१०	मंग	27:21	ज्ये.	25:35	वैधृ.	24:03	तै	16:28	ध.25:35	मंगल पश्चिम में अस्त 19:02, गण्डमूल विचार	5:59	19:09	5:55	18:55	5:54	18:59	6:24	19:01
	18	११	बुध	25:06	मूल	24:07	विष्क	21:09	व	14:14	धनु	भ. 14:14 से 25:06 तक, पवित्रा एकादशी व्रत, वक्री गुरु धनि 3 में (F)	6:00	19:08	5:56	18:54	5:55	18:58	6:25	19:00
	19	१२	गुरु	22:55	पू.षा.	22:42	प्रीति	18:17	ब	12:01	म.28:22	शुक्र हस्त में 22:23,	6:01	19:07	5:56	18:53	5:56	18:57	6:25	18:59
	20	१३	शुक्र	20:51	उ.षा.	21:25	आयु	15:31	कौ	9:53	मकर	प्रदोष व्रत,	6:01	19:06	5:57	18:52	5:56	18:56	6:25	18:59
	21	१४	शनि	19:01	श्रव.	20:21	सौभा	12:54	ग	7:56	मकर	भ. 19:01 से, ऋक्-उपाकर्म, श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृष्ठ 25)	6:02	19:05	5:57	18:51	5:57	18:55	6:25	18:58
	22	१५	रवि	17:32	धनि.	19:40	शोभ	10:33	वि	6:17	कुं. 7:57	भ. 6:17 तक, श्रावण-पूर्णिमा, रक्षाबन्धन (राखी) (भद्रा बाद), (G)	6:03	19:04	5:58	18:50	5:57	18:54	6:26	18:57
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	23	१	चन्द्र	16:31	शत.	19:26	अति	8:33	कौ	16:31	कुम्भ	भाद्रपद कृष्णपक्ष प्रारम्भ, शक भाद्रपद प्रारम्भ, गायत्री जपम्	6:03	19:03	5:59	18:49	5:58	18:53	6:26	18:56
	24	२	मंग	16:05	पू.भा.	19:47	सुक धृति	6:59 29:56	ग	16:05	मी.13:38	भ. 28:12 से, कज्जली-तृतीया (चन्द्रोदय व्या.), बुध उ.फा. में 7:27	6:04	19:01	5:59	18:47	5:59	18:51	6:26	18:56
	25	३	बुध	16:19	उ.भा.	20:48	शूल	29:24	वि	16:19	मीन	भ. 16:19 तक, श्रीगणेश (बहुला) चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 20), गण्डमूल 20:48 से	6:05	19:00	6:00	18:46	5:59	18:50	6:26	18:55
	26	४	गुरु	17:14	रेव.	22:29	गंड	29:25	बा	17:14	मे.22:29	पंचक समाप्त 22:29, बुध कन्या में 11:20, स. सि. यो.	6:05	18:59	6:00	18:45	6:00	18:49	6:26	18:54
	27	५	शुक्र	18:49	अश्वि	24:47	वृद्धि	29:53	तै	18:49	मेष	चन्दन षष्ठी व्रत, चन्द्रोदय 21:55 (जालन्धर), हल-षष्ठी, गण्डमूल 24:47 तक	6:06	18:58	6:01	18:44	6:00	18:48	6:27	18:53
	28	६	शनि	20:57	भर.	27:35	ध्रुव	--	ग	7:53	मेष	भ. 20:57 से,	6:07	18:56	6:01	18:43	6:01	18:47	6:27	18:53
	29	७	रवि	23:26	कृति.	--	ध्रुव	6:44	वि	10:12	वृ.10:20	भ. 10:12 तक, पुत्रव्रत, शीतला-सप्तमी	6:07	18:55	6:02	18:42	6:01	18:46	6:27	[illegible]
	30	८	चन्द्र	26:00	कृति.	6:39	व्या.	7:46	बा	12:43	वृष	श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत (जयन्ती-योग) (देखें पृष्ठ 20,31), सूर्य पू.फा. में 21:19,(H)	6:08	18:54	6:02	18:41	6:02	18:44	6:27	18:51
	31	९	मंग	28:24	रोहि.	9:44	हर्ष	8:48	तै	15:12	मि.23:12	श्रीगुग्गा-नवमी, गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव, मंगल उ.फा. में 23:08, (I)	6:09	18:53	6:03	18:40	6:03	18:43	6:28	18:50

(A) शुक्र उ.फा. में 16:11, गण्डमूल 9:19 से **(B)** रोटक व्रतारम्भ **(C)** 11:32, मुहर्रम (मुस्लि.) सं. 1443 हिजरी प्रारम्भ **(D)** (देखें पृष्ठ 27), मेला चिन्तपूर्णी-चामुण्डादेवी (हि.प्र.) समाप्त, भारत स्वतन्त्रता दिवस (75वाँ), शीतला-सप्तमी (सिन्ध) **(E)** अगले दिन प्रातः 7:40 तक, बुध पू.फा. में 6:49, गंडमूल 27:02 से **(F)** 6:17, गण्डमूल 24:07 तक **(G)** पंचक प्रारम्भ 7:57, यजुर्वेदि-अथर्ववेदि उपाकर्म, हयग्रीव-जयन्ती, ऋषि-तर्पण, गायत्री-जयन्ती, दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा समाप्त (काश्मीर), संस्कृत दिवस, श्रावणी-उपाकर्म, कोकिला व्रत पूर्ण, सूर्य सायन कन्या में 27:05, शरद् ऋतु प्रारम्भ **(H)** श्रीदूर्वाष्टमी (देखें पृष्ठ 28), स. सि. यो. **(I)** शुक्र चित्रा में 7:15

वि. संवत् 2078, सितम्बर मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2021 ई.

मास पक्ष	सितम्बर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिनटों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्य-दक्षिणायन शरद्-ऋतुः	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	1	१०	बुध	--	मृग	12:34	वज्र	9:39	व	17:23	मिथुन	भ. 17:23 से, सितम्बर मास प्रारम्भ, स. सि. यो.	6:09	18:51	6:03	18:39	6:03	18:42	6:28	18:49
	2	१०	गुरु	6:22	आर्द्रा	14:57	सिद्धि	10:08	वि	6:22	मिथुन	भ. 6:22 तक, बुध हस्त में 10:32	6:10	18:50	6:04	18:38	6:04	18:41	6:28	18:48
	3	११	शुक्र	7:45	पुन.	16:42	व्य.	10:09	बा	7:45	क. 10:19	अजा एकादशी व्रत, वत्स द्वादशी (पूजा), अगस्त्य-उदय, स. सि. यो.	6:10	18:49	6:04	18:36	6:04	18:40	6:28	18:48
	4	१२	शनि	8:25	पुष्य	17:45	वरी	9:37	तै	8:25	कर्क	शनि प्रदोष व्रत, गण्डमूल 17:45 से	6:11	18:48	6:05	18:35	6:05	18:38	6:28	18:47
	5	१३	रवि	8:22	आश्ले	18:07	परि.	8:31	व	8:22	सिं.18:07	भ. 8:22 से 20:01 तक, मंगल कन्या में 27:58, शुक्र तुला में 24:50, (A)	6:12	18:46	6:05	18:34	6:05	18:37	6:28	18:46
	6	१४	चन्द्र	7:39	मघा	17:51	शिव सिद्ध	6:54 28:48	श	7:39	सिंह	कुशाग्रहणी अमावस-'ॐ हुं फट् स्वाहा' इहमंत्रेण कुशोत्पाटनम्, (B)	6:12	18:45	6:06	18:33	6:06	18:36	6:29	18:45
	7	३०	मंग	6:22	पू.फा.	17:05	साध्य	26:20	ना	6:22	कं.22:50	भाद्रपद अमावस स्नानदानादि प्रातः 6:22 तक, भौमवती अमावस, (C)	6:13	18:44	6:06	18:32	6:07	18:35	6:29	18:44
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	०	१	मंग	28:38	००	००	००	००	०	०	००	भाद्र. शुक्ल प्रतिपदा तिथि का क्षय — त्रयोदश दिनात्मक पक्ष (देखें पृष्ठ 108)	--	--	--	--	--	--	--	--
	8	२	बुध	26:34	उ.फा.	15:56	शुभ	23:36	बा	15:36	कन्या	चन्द्रदर्शन, मु. 30	6:14	18:42	6:07	18:31	6:07	18:33	6:29	18:43
	9	३	गुरु	24:19	हस्त	14:31	शुक्ल	20:42	तै	13:27	तु.25:45	हरितालिका तृतीया, गौरी तृतीया, श्रीवराह-जयन्ती, सामवेदि उपाकर्म (D)	6:14	18:41	6:07	18:29	6:08	18:32	6:29	18:42
	10	४	शुक्र	21:58	चित्रा	12:58	ब्रह्म	17:42	व	11:09	तुला	भ. 11:09 से 21:58 तक, सिद्धि विनायक व्रत, कलंक-चतुर्थी (E)	6:15	18:40	6:08	18:28	6:08	18:31	6:29	18:42
	11	५	शनि	19:38	स्वा.	11:23	ऐन्द्र	14:41	ब	8:48	वृ.28:13	ऋषि-पंचमी, सम्वत्सरी महापर्व (जैन), शुक्र स्वा. में 19:16	6:16	18:38	6:08	18:27	6:09	18:30	6:30	18:41
	12	६	रवि	17:21	विशा.	9:50	वैधृ	11:43	कौ	6:30	वृश्चिक	सूर्य षष्ठी व्रत,	6:16	18:37	6:09	18:26	6:09	18:28	6:30	18:40
	13	७	चन्द्र	15:11	अनु.	8:24	विष्क प्रीति	8:49 30:03	व	15:11	वृश्चिक	भ. 15:11 से 26:11 तक, मुक्ताभरण/सन्तान सप्तमी व्रत, (F)	6:17	18:36	6:09	18:25	6:10	18:27	6:30	18:39
	14	८	मंग	13:10	ज्ये. मूल	7:05 29:55	आयु	27:23	ब	13:10	ध. 7:05	श्रीराधाष्टमी, वक्री गुरु धनि. 2 मकर में 14:30, दधीची जयन्ती, (G)	6:18	18:34	6:10	18:23	6:11	18:26	6:30	18:38
	15	९	बुध	11:18	पू.षा.	28:56	सौभा	24:52	कौ	11:18	धनु	श्रीचन्द नवमी (उदासीन-सम्प्रदाय), श्रीभागवत् सप्ताह पाठारम्भ	6:18	18:33	6:10	18:22	6:11	18:25	6:30	18:37
	16	१०	गुरु	9:37	उ.षा.	28:09	शोभ	22:31	ग	9:37	म.10:43	भ. 20:53 से, सूर्य कन्या में 25:13, आश्विन संक्रान्ति, मु. 45, (H)	6:19	18:32	6:11	18:21	6:12	18:23	6:30	18:36
	17	११	शुक्र	8:08	श्रव.	27:36	अति	20:20	वि	8:08	मकर	भ. 8:08 तक, पद्मा एकादशी व्रत, श्रीवामन-जयन्ती-श्रवण द्वादशी (I)	6:19	18:30	6:11	18:20	6:12	18:22	6:31	18:35
	18	१२	शनि	6:55	धनि.	27:21	सुक	18:24	बा	6:55	कुं.15:26	पंचक प्रारम्भ 15:26, शनि प्रदोष व्रत	6:20	18:29	6:11	18:19	6:13	18:21	6:31	18:35
	०	१३	शनि	30:00	००	००	००	००	०	००	००	त्रयोदशी तिथि का क्षय ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	19	१४	रवि	29:29	शत.	27:28	धृति	16:43	ग	17:45	कुम्भ	भ. 29:29 से, अनन्त चतुर्दशी व्रत, मेला बाबा सोढल (जालन्धर), कदली व्रत	6:21	18:27	6:12	18:17	6:13	18:19	6:31	18:34
	20	१५	चन्द्र	29:25	पू.भा.	28:02	शूल	15:23	वि	17:27	मी.21:51	भ. 17:27 तक, भाद्रपद पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत, पूर्णिमा का श्राद्ध, (J)	6:21	18:26	6:12	18:16	6:14	18:18	6:31	18:33
आश्विन कृष्ण पक्ष	21	१	मंग	29:52	उ.भा.	29:06	गंड	14:25	बा	17:39	मीन	आश्विन कृष्णपक्ष प्रारम्भ, पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथि (K)	6:22	18:25	6:13	18:15	6:15	18:17	6:31	18:32
	22	२	बुध	--	रेव.	--	वृद्धि	13:53	तै	18:23	मीन	द्वितीया तिथि का श्राद्ध, बुध तुला में 8:20, सूर्य सायन तुला में 24:51, (L)	6:23	18:23	6:13	18:14	6:15	18:16	6:32	18:31
	23	२	गुरु	6:54	रेव.	6:44	ध्रुव	13:48	ग	6:54	मे. 6:44	भ. 19:42 से, पंचक समाप्त 6:44, शुक्र विशा. में 11:37, शक (M)	6:23	18:22	6:14	18:13	6:16	18:14	6:32	18:30
	24	३	शुक्र	8:30	अश्वि	8:54	व्या.	14:08	वि	8:30	मेष	भ. 8:30 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 20), भरणी श्राद्ध, (N)	6:24	18:21	6:14	18:11	6:16	18:13	6:32	18:29
	25	४	शनि	10:37	भर.	11:33	हर्ष	14:50	बा	10:37	वृ.18:17	पंचमी का श्राद्ध	6:25	18:19	6:15	18:10	6:17	18:12	6:32	18:28
	26	५	रवि	13:05	कृति.	14:33	वज्र	15:47	तै	13:05	वृष	चन्द्र षष्ठी व्रत,	6:25	18:18	6:15	18:09	6:17	18:11	6:32	18:27
	27	६	चन्द्र	15:44	रोहि.	17:42	सिद्धि	16:51	व	15:44	वृष	भ. 15:44 से 29:01 तक, सूर्य हस्त में 6:41, षष्ठी का श्राद्ध (देखें पृष्ठ 28), (O)	6:26	18:17	6:16	18:08	6:18	18:09	6:32	18:27
	28	७	मंग	18:17	मृग.	20:44	व्य.	17:50	ब	18:17	मि. 7:14	सप्तमी का श्राद्ध, श्रीमहालक्ष्मी व्रत सम्पन्न (चन्द्रोदय व्यापिनी)	6:27	18:15	6:17	18:07	6:19	18:08	6:33	18:26
	29	८	बुध	20:30	आर्द्रा	23:26	वरी.	18:34	बा	7:24	मिथुन	जीवित्पुत्रिका व्रत, अष्टमी का श्राद्ध	6:27	18:14	6:17	18:05	6:19	18:07	6:33	18:25
	30	९	गुरु	22:09	पुन.	25:33	परि.	18:52	तै	9:20	क.19:05	सौभाग्यवतीनां श्राद्ध, नवमी का श्राद्ध, मातृ-नवमी	6:28	18:13	6:18	18:04	6:20	18:06	6:33	18:24

(A) मासशिवरात्रि व्रत, अघोरा-चतुर्दशी, कैलाश यात्रा प्रारम्भ (B) पिठोरी अमावस, पितृकार्येषु अमावस, तीर्थस्नान माहात्म्य (हरिद्वार, प्रयागराजादि), गण्डमूल 17:51 तक (C) रानी सती मेला (झुंझुनूं-राजस्थान) (D) सफर (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, (E) (चन्द्रदर्शन निषेध), चन्द्रास्त 20:57 (जालन्धर), पत्थर चौथ (F) श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ, सूर्य उ.फा. में 15:06, बुध चित्रा में 15:55, वक्री शनि श्रव. 1 में 20:38, गण्डमूल 8:24 से (G) गण्डमूल 29:55 तक (H) पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रातः 7:37 तक, विष्णुश्रृंखल योग 28:09 से, (I) (देखें पृष्ठ 28), विष्णुश्रृंखल योग 27:36 तक, विश्वकर्मा पूजन (J) प्रोष्ठपदी-महालय श्राद्ध प्रारम्भ (K) का श्राद्ध, मंगल हस्त में 15:44, गण्डमूल 29:06 से (L) सूर्य दक्षिण गोल में, विषुव दिन (M) आश्विन प्रारम्भ, तृतीया का श्राद्ध (N) चतुर्थी का श्राद्ध, गण्डमूल 8:54 तक (O) बुध वक्री 10:36

वि. संवत् 2078, अक्तूबर मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2021 ई.

मास पक्ष	अक्तू.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] (सूर्य-दक्षिणायन, शरद्-हेमन्त-ऋतुः)	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
आश्विन कृष्ण	1	१०	शुक्र	23:04	पुष्य	26:58	शिव	18:38	व	10:37	कर्क	भ. 10:37 से 23:04 तक, अक्तू. मास प्रारम्भ, दशमी का श्राद्ध, (A)	6:29	18:11	6:18	18:03	6:20	18:04	6:33	18:23
	2	११	शनि	23:11	आश्ले	27:35	सिद्ध	17:46	ब	11:08	सिं.27:35	इन्दिरा एकादशी व्रत, महात्मा गाँधी जयन्ती, एकादशी का श्राद्ध	6:29	18:10	6:19	18:02	6:21	18:03	6:33	18:22
	3	१२	रवि	22:30	मघा	27:26	साध्य	16:17	कौ	10:51	सिंह	संन्यासीनां श्राद्ध, मघा श्राद्ध, गजच्छाया योग 22:30 से 27:26 तक, (B)	6:30	18:09	6:19	18:01	6:22	18:02	6:34	18:21
	4	१३	चन्द्र	21:06	पू.फा.	26:35	शुभ	14:11	ग	9:48	सिंह	भ. 21:06 से, सोम प्रदोष व्रत, मासशिवरात्रि व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध	6:31	18:07	6:20	18:00	6:22	18:01	6:34	18:21
	5	१४	मंग	19:05	उ.फा.	25:10	शुक्ल	11:34	वि	8:06	कं. 8:17	भ. 8:06 तक, शस्त्र-विष, दुर्घटनादि (अपमृत्यु) से मृतों का श्राद्ध, (C)	6:31	18:06	6:20	17:58	6:23	17:59	6:34	18:20
	6	३०	बुध	16:35	हस्त	23:20	ब्रह्म ऐन्द्र	8:32 29:11	ना	16:35	कन्या	आश्विन/महालय अमावस, सर्वपितृ श्राद्ध, पितृ-विसर्जन, (D)	6:32	18:05	6:21	17:57	6:23	17:58	6:34	18:19
आश्विन शुक्ल पक्ष	7	१	गुरु	13:47	चित्रा	21:13	वैधृ	25:39	ब	13:47	तु.10:18	शरद् नवरात्र प्रारम्भ, घटस्थापन (अभिजित मुहूर्त्त) देखें पृष्ठ 29, (E)	6:33	18:04	6:21	17:56	6:24	17:57	6:35	18:18
	8	२	शुक्र	10:49	स्वा.	18:59	विष्क	22:03	कौ	10:49	तुला	चन्द्रदर्शन, मु. 15, वक्री बुध हस्त 4 में 27:32	6:33	18:02	6:22	17:55	6:25	17:56	6:35	18:17
	9	३	शनि	7:49	विशा	16:47	प्रीति	18:29	ग	7:49	वृ.11:20	भ. 18:23 से 28:56 तक, रबि-उल्लावल (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	6:34	18:01	6:22	17:54	6:25	17:55	6:35	18:16
	०	४	शनि	28:56	००	००	००	००	०	००	००	चतुर्थी तिथि का क्षय ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	10	५	रवि	26:15	अनु.	14:44	आयु	15:03	ब	15:36	वृश्चिक	उपाङ्ग ललिता व्रत, सूर्य चित्रा में 19:37, गण्डमूल 14:44 से	6:35	18:00	6:23	17:53	6:26	17:53	6:35	18:16
	11	६	चन्द्र	23:51	ज्ये.	12:56	सौभा	11:49	कौ	13:03	ध.12:56	मंगल चित्रा में 24:37, शनि मार्गी 7:45, सरस्वती आवाहन मूलभे	6:36	17:59	6:24	17:52	6:27	17:52	6:36	18:15
	12	७	मंग	21:48	मूल	11:26	शोभ अति	8:50 30:09	ग	10:50	धनु	भ. 21:48 से, सरस्वती पूजन पू.षा.भे, भद्रकाली अवतार, गण्डमूल 11:26 तक	6:36	17:57	6:24	17:51	6:27	17:51	6:36	18:14
	13	८	बुध	20:08	पू.षा.	10:19	सुक	27:47	वि	8:58	म.16:06	भ. 8:58 तक, सरस्वती बलिदान उ.षा.भे, श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी, बुधाष्टमी	6:37	17:56	6:25	17:50	6:28	17:50	6:36	18:13
	14	९	गुरु	18:53	उ.षा.	9:35	धृति	25:45	बा	7:31	मकर	महानवमी (पूजा, उपवास एवं बलिदान हेतु), सरस्वती विसर्जन श्रवणे, नवरात्र समाप्त	6:38	17:55	6:25	17:48	6:29	17:49	6:36	18:13
	15	१०	शुक्र	18:03	श्रव.	9:16	शूल	24:02	ग	18:03	कुं.21:16	भ. 29:51 से, पंचक प्रारम्भ 21:16, विजयादशमी (दशहरा), (F)	6:38	17:54	6:26	17:47	6:29	17:48	6:37	18:12
	16	११	शनि	17:38	धनि.	9:22	गंड	22:40	वि	17:38	कुम्भ	भ. 17:38 तक, पापांकुशा एकादशी व्रत, भरत-मिलाप,	6:39	17:52	6:26	17:46	6:30	17:47	6:37	18:11
	17	१२	रवि	17:40	शत.	9:53	वृद्धि	21:39	बा	17:40	मी.28:33	सूर्य तुला में 13:12, कार्तिक संक्रान्ति, मु. 30, पुण्यकाल सं. प्रातः 6:48 से,(G)	6:40	17:51	6:27	17:45	6:31	17:45	6:37	18:10
	18	१३	चन्द्र	18:08	पू.भा.	10:49	ध्रुव	20:58	तै	18:08	मीन	प्रदोष व्रत (देखें पृष्ठ 29), गुरु मार्गी 10:55, बुध मार्गी 20:43	6:41	17:50	6:28	17:44	6:31	17:44	6:38	18:10
	19	१४	मंग	19:04	उ.भा.	12:12	व्या.	20:38	व	19:04	मीन	भ. 19:04 से, शरद् पूर्णिमा व्रत (देखें पृष्ठ 29), कोजागर व्रत (H)	6:41	17:49	6:28	17:43	6:32	17:43	6:38	18:09
	20	१५	बुध	20:27	रेव.	14:02	हर्ष	20:39	वि	7:46	मे.14:02	भ. 7:46 तक, पंचक समाप्त 14:02, आश्विन पूर्णिमा, महर्षि- (I)	6:42	17:48	6:29	17:42	6:33	17:42	6:38	18:08
कार्तिक कृष्ण पक्ष	21	१	गुरु	22:17	अश्वि	16:17	वज्र	21:00	बा	9:22	मेष	कार्तिक कृष्णपक्ष प्रारम्भ, मंगल तुला में 26:01, गण्डमूल 16:17 तक, स.सि.यो.	6:43	17:47	6:30	17:41	6:33	17:41	6:39	18:08
	22	२	शुक्र	24:30	भर.	18:56	सिद्धि	21:39	तै	11:24	वृ.25:39		6:44	17:46	6:30	17:40	6:34	17:40	6:39	18:07
	23	३	शनि	27:02	कृति.	21:53	व्य.	22:32	व	13:46	वृष	भ. 13:46 से 27:02 तक, सूर्य स्वा. में 30:12, सूर्य सायन वृश्चिक (J)	6:45	17:45	6:31	17:40	6:35	17:39	6:39	18:06
	24	४	रवि	29:44	रोहि.	25:02	वरी	23:34	व	16:23	वृष	व्रत करवा-चौथ (करक-चतुर्थी) चन्द्रोदय हेतु देखें पृष्ठ 20, (K)	6:45	17:44	6:32	17:39	6:36	17:38	6:40	18:06
	25	५	चन्द्र	--	मृग.	28:11	परि.	24:36	कौ	19:05	मि.14:37	स. सि. यो.	6:46	17:42	6:32	17:38	6:36	17:37	6:40	18:05
	26	५	मंग	8:25	आर्द्रा	--	शिव	25:31	तै	8:25	मिथुन		6:47	17:41	6:33	17:37	6:37	17:36	6:40	18:05
	27	६	बुध	10:51	आर्द्रा	7:08	सिद्ध	26:08	व	10:51	क.27:06	भ. 10:51 से 23:51 तक, स्कन्द षष्ठी	6:48	17:40	6:34	17:36	6:38	17:35	6:41	18:04
	28	७	गुरु	12:50	पुन	9:41	साध्य	26:20	ब	12:50	कर्क	अहोई अष्टमी व्रत (चन्द्रोदय व्यापिनी), बुध चित्रा में 16:52, स. सि. यो.	6:49	17:39	6:34	17:35	6:39	17:34	6:41	18:03
	29	८	शुक्र	14:10	पुष्य	11:38	शुभ	25:58	कौ	14:10	कर्क	राधाष्टमी (मथुरा), राधाकुण्ड स्नान, गण्डमूल 11:38 से	6:50	17:38	6:35	17:34	6:39	17:33	6:42	18:03
	30	९	शनि	14:44	आश्ले	12:52	शुक्ल	24:59	ग	14:44	सिं.12:52	भ. 26:36 से, शुक्र मूल 1 धनु में 16:10	6:50	17:38	6:36	17:33	6:40	17:33	6:42	18:02
	31	१०	रवि	14:28	मघा	13:16	ब्रह्म	23:21	वि	14:28	सिंह	भ. 14:28 तक, मंगल स्वा. में 25:18, सरदार पटेल जयन्ती (एकता-दिवस), (L)	6:51	17:37	6:36	17:33	6:41	17:32	6:42	18:02

(A) वक्री बुध कन्या में 26:45 **(B)** द्वादशी श्राद्ध, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 18:07 **(C)** राहु कृति. 4 केतु अनु. 2 में 22:56, गजच्छाया योग 25:10 से **(D)** चतुर्दशी/अमावस तिथि का श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, अज्ञात मृत्यु तिथि वालों का श्राद्ध, गजच्छाया योग 16:35 तक (देखें पृष्ठ 29) **(E)** महाराजा अग्रसेन जयन्ती, मातामह (नाना/नानी) का श्राद्ध **(F)** अपराजिता-पूजन, वक्री बुध पूर्व में उदय 29:14, शमी-पूजा, आयुध (शस्त्र) पूजा, सीमोल्लंघन, स.सि.यो., नवरात्र-पारणा **(G)** शुक्र ज्येष्ठा में 17:24, आकाश दीपदान प्रारम्भ, पद्मनाथ द्वादशी, त्रिपुष्कर योग 9:53 से **(H)** (लक्ष्मी-इन्द्र पूजन), महारास पूर्णिमा (ब्रजभूमि), मेला शाकम्भरी देवी (देवबन्द), गण्डमूल 12:12 से **(I)** -श्रीवाल्मीकि जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, कार्तिक स्नान-नियम प्रारम्भ, खीर-भोग अर्पण **(J)** में 10:21, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, शक कार्तिक प्रारम्भ **(K)** श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, दशरथ-चतुर्थी **(L)** गण्डमूल 13:16 तक

वि. संवत् 2078, नवम्बर मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2021 ई.

मास पक्ष	नवंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिनटों में [भा. स्टैं. टा.] (सूर्य-दक्षिणायन; हेमन्त-ऋतुः)	जम्मू सूर्योदय घं. मि.	जम्मू सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	मुम्बई सूर्योदय घं. मि.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मि.
कार्ति. कृ.	1	११	चन्द्र	13:22	पू.फा.	12:53	ऐन्द्र	21:04	बा	13:22	कं.18:39	रमा एकादशी व्रत, नवंबर प्रारम्भ, गोवत्स द्वादशी (देखें पृष्ठ 29), हरियाणा दिवस,(A)	6:52	17:36	6:37	17:32	6:42	17:31	6:43	18:01
	2	१२	मंग	11:31	उ.फा.	11:44	वैधृ.	18:13	तै	11:31	कन्या	**भौम प्रदोष व्रत, धन-त्र्योदशी**, यम प्रीत्यर्थ दीपदान, **बुध तुला में 9:52**	6:53	17:35	6:38	17:31	6:42	17:30	6:43	18:01
	3	१३	बुध	9:02	हस्त	9:58	विष्क	14:52	व	9:02	तु.20:53	भ. 9:02 से 19:33 तक, श्रीहनुमान जयन्ती (उ.भा., अर्द्धरात्रि-व्या.), **(B)**	6:54	17:34	6:39	17:30	6:43	17:29	6:44	18:00
	०	१४	बुध	30:04	००	००	००	००	०	०	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	4	३०	गुरु	26:45	चित्रा स्वा.	7:42 29:07	प्रीति	11:10	च	16:25	तुला	**कार्तिक अमावस, दीपावली**, श्रीमहालक्ष्मी पूजन (देखें पृष्ठ 185),कुबेर-**(C)**	6:55	17:33	6:39	17:30	6:44	17:28	6:44	18:00
कार्तिक शुक्ल पक्ष	5	१	शुक्र	23:15	विशा.	26:23	आयु सौभा	7:12 27:07	किं	13:00	वृ.21:04	कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, **अन्नकूट-गोवर्धन पूजा**, गोक्रीड़ा, **(D)**	6:55	17:32	6:40	17:29	6:45	17:28	6:45	17:59
	6	२	शनि	19:45	अनु.	23:39	शोभ.	23:04	बा	9:30	वृश्चिक	चन्द्रदर्शन, मु. 30 **भ्रातृ (भाई) दूज**, यम-द्वितीया, सूर्य विशा. में **(E)**	6:56	17:31	6:41	17:28	6:46	17:27	6:45	17:59
	7	३	रवि	16:23	ज्ये.	21:05	अति.	19:08	ग	16:23	ध.21:05	भ. 26:50 से, रबि-उल्सानी (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	6:57	17:31	6:42	17:28	6:46	17:26	6:46	17:59
	8	४	चन्द्र	13:17	मूल	18:49	सुक.	15:27	वि	13:17	धनु	भ. 13:17 तक, दूर्वा गणपति व्रत, गण्डमूल 18:49 तक	6:58	17:30	6:42	17:27	6:47	17:26	6:46	17:58
	9	५	मंग	10:36	पू.षा.	17:00	धृति	12:06	बा	10:36	म.22:37	सौभाग्य-पंचमी, जया-पंचमी, ज्ञान-पंचमी (जैन)	6:59	17:29	6:43	17:26	6:48	17:25	6:47	17:58
	10	६	बुध	8:26	उ.षा.	15:42	शूल गंड	9:10 30:42	तै	8:26	मकर	भ. 30:50 से, **सूर्य षष्ठी पर्व (बिहार)**	7:00	17:29	6:44	17:26	6:49	17:24	6:47	17:58
	०	७	बुध	30:50	००	००	००	००	०	०	००	**सप्तमी तिथि का क्षय** ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	11	८	गुरु	29:52	श्रव.	14:59	वृद्धि	28:44	वि	18:21	कुं.26:51	भ 18:21 तक, **पंचक प्रारम्भ 26:51, गोपाष्टमी**, पुष्कर मेला प्रारम्भ (राज.)	7:01	17:28	6:45	17:25	6:50	17:24	6:48	17:57
	12	९	शुक्र	29:32	धनि.	14:53	ध्रुव	27:15	बा	17:42	कुम्भ	**अक्षय-कूष्माण्ड नवमी**, आरोग्य व्रत, आमला-नवमी	7:02	17:27	6:45	17:25	6:51	17:23	6:48	17:57
	13	१०	शनि	29:49	शत.	15:25	व्या.	26:16	तै	17:41	कुम्भ	शुक्र पू.षा. में 20:50, ब्रह्मप्राप्ति व्रत	7:03	17:27	6:46	17:24	6:51	17:23	6:49	17:57
	14	११	रवि	30:40	पू.भा.	16:31	हर्ष	25:43	व	18:15	मी.10:11	भ., 18:15 से 30:40 तक, हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स्मार्त), **(F)**	7:04	17:26	6:47	17:24	6:52	17:22	6:49	17:57
	15	१२	चन्द्र	--	उ.भा.	18:09	वज्र	25:34	ब	19:21	मीन	**हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (वैष्णव),तुलसी विवाह** (देखें पृष्ठ 29),**(G)**	7:04	17:25	6:48	17:23	6:53	17:21	6:50	17:56
	16	१२	मंग	8:02	रेव.	20:14	सिद्धि	25:46	बा	8:02	मे.20:14	**पंचक समाप्त 20:14, भौम प्रदोष व्रत, सूर्य वृश्चिक में 13:01, (H)**	7:05	17:25	6:49	17:23	6:54	17:21	6:50	17:56
	17	१३	बुध	9:51	अश्वि.	22:43	व्य.	26:15	तै	9:51	मेष	वैकुण्ठ चतुर्दशी, गण्डमूल 22:43 तक	7:06	17:24	6:49	17:22	6:55	17:21	6:51	17:56
	18	१४	गुरु	12:01	भर.	25:29	वरी.	26:58	व	12:01	मेष	भ. 12:01 से 25:15 तक, **भीष्मपंचक समाप्त** (देखें पृष्ठ 30), **(I)**	7:07	17:24	6:50	17:22	6:56	17:20	6:52	17:56
	19	१५	शुक्र	14:28	कृति.	28:29	परि.	27:51	ब	14:28	वृ. 8:13	**कार्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरु नानकदेव जयन्ती**, कार्तिक स्नान समाप्त, **(J)**	7:08	17:23	6:51	17:22	6:57	17:20	6:52	17:56
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	20	१	शनि	17:05	रोहि.	--	शिव	28:50	कौ	17:05	वृष	मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष प्रारम्भ, मंगल विशा. में 17:26, **बुध वृश्चिक में (K)**	7:09	17:23	6:52	17:21	6:57	17:19	6:53	17:56
	21	२	रवि	19:48	रोहि.	7:36	सिद्ध	29:49	ग	19:48	मि.21:10		7:10	17:23	6:53	17:21	6:58	17:19	6:53	17:56
	22	३	चन्द्र	22:28	मृग.	10:44	साध्य	30:44	व	9:08	मिथुन	भ. 9:08 से 22:28 तक, सौभाग्य सुन्दरी व्रत, सूर्य सायन धनु में 8:04, **(L)**	7:11	17:22	6:53	17:21	6:59	17:19	6:54	17:55
	23	४	मंग	24:56	आर्द्रा	13:44	शुभ	--	ब	11:42	मिथुन	**अङ्गारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 20), बुध अनु. में 7:07	7:12	17:22	6:54	17:21	7:00	17:18	6:54	17:55
	24	५	बुध	27:04	पुन.	16:29	शुभ	7:29	कौ	14:05	क. 9:50		7:13	17:22	6:55	17:20	7:01	17:18	6:55	17:55
	25	६	गुरु	28:43	पुष्य	18:49	शुक्ल	7:57	ग	15:54	कर्क	भ. 28:43 से, गण्डमूल 18:49 से, स. सि. यो.	7:13	17:21	6:56	17:20	7:02	17:18	6:56	17:55
	26	७	शुक्र	29:43	आश्ले	20:36	ब्रह्म	8:01	वि	17:13	सिं.20:36	भ. 17:13 तक, गण्डमूल विचार	7:14	17:21	6:57	17:20	7:02	17:18	6:56	17:55
	27	८	शनि	30:01	मघा	21:43	ऐन्द्र वैधृ	7:36 30:37	बा	17:52	सिंह	**श्रीकालभैरवाष्टमी**, भैरव-जयन्ती, गण्डमूल 21:43 तक	7:15	17:21	6:57	17:20	7:03	17:17	6:57	17:55
	28	९	रवि	29:31	पू.फा.	22:05	विष्क	29:02	तै	17:46	कं.28:04	**मंगल पूर्व में उदय 30:05**	7:16	17:21	6:58	17:20	7:04	17:17	6:58	17:56
	29	१०	चन्द्र	28:14	उ.फा.	21:42	प्रीति	26:49	व	16:53	कन्या	भ. 16:53 से 28:14 तक,	7:17	17:20	6:59	17:20	7:05	17:17	6:58	17:56
	30	११	मंग	26:14	हस्त	20:34	आयु	24:02	व	15:14	कन्या	**उत्पन्ना एकादशी व्रत**	7:18	17:20	7:00	17:20	7:06	17:17	6:59	17:56

(A) कौमुदि महोत्सव प्रारम्भ **(B)** नरक-चतुर्दशी (पर-अरुणोदय वाली), यमाय तर्पण, श्रीधनवन्तरी-जयन्ती, तैलाभ्यंग, रूप-चौदश **(C)** पूजा, सायं दीपदान गृहे-देवालये, श्रीमहावीर निर्वाण दिवस (जैन), कौमुदि महोत्सव सम्पन्न, महाकाली-पूजा **(D)** बलि-पूजा, विश्वकर्मा दिवस (पंजाब) **(E)** 14:19, बुध स्वा. में 16:30, विश्वकर्मा पूजन, यमुना-स्नान, कलम-दवात पूजन, बुध पूर्व में अस्त 29:53, गण्डमूल 23:39 से **(F)** **भीष्मपंचक प्रारम्भ**, बुध विशाखा में 23:11, नेहरू-जयन्ती (बाल-दिवस), चातुर्मास्य व्रत-नियम समाप्त **(G)** हरिप्रबोधोत्सव, गण्डमूल 18:09 से **(H) मार्गशीर्ष संक्रान्ति**, मु. 30, पुण्यकाल सं. प्रात: सूर्योदय से, आकाश दीपदान समाप्त **(I) श्रीसत्यनारायण व्रत, त्रिपुरोत्सव** **(J)** ग्रस्तोदय खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (देखें पृष्ठ 33), मेला पुष्करतीर्थ (राजस्थान), सूर्य अनु. में 20:23, मेला रामतीर्थ (अमृतसर, पं.), पद्मक योग (देखें पृष्ठ 30), कार्तिकी **(K)** 28:50, गुरु धनि. 3 कुम्भ में 23:19, मृगछोड़ी स्नान प्रारम्भ, स. सि. यो. **(L)** शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ

वि. संवत् 2078, दिसम्बर मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2021 ई.

मास पक्ष	दिसंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] (सूर्य दक्षिण-उत्तरायणे; हेमन्त-शिशिर ऋतुः)	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
मार्ग. कृ.	1	१२	बुध	23:36	चित्रा	18:47	सौभा	20:44	कौ	12:55	तु. 7:45	दिसम्बर मास प्रारम्भ, बुध ज्येष्ठा में 18:01, शुक्र उ.षा. में 19:40	7:19	17:20	7:00	17:20	7:07	17:17	6:59	17:56
	2	१३	गुरु	20:27	स्वा.	16:27	शोभ	16:59	ग	10:02	तुला	भ. 20:27 से 30:42 तक, प्रदोष व्रत, सूर्य ज्येष्ठा में 24:43, मासशिवरात्रि व्रत	7:20	17:20	7:01	17:20	7:07	17:17	7:00	17:56
	3	१४	शुक्र	16:56	विशा.	13:44	अति	12:55	श	16:56	वृ. 8:26	श्रीबालाजी-जयन्ती, मेला पुरमण्डल (जम्मू), देविका-स्नान (ऊधमपुर-ज.का.)	7:20	17:20	7:02	17:20	7:08	17:17	7:01	17:56
	4	३०	शनि	13:13	अनु.	10:47	सुक धृति	8:40 28:21	ना	13:13	वृश्चिक	**मार्गशीर्ष अमावस, शनिवासरी अमावस, मंगल वृश्चिक में 29:57, (A)**	7:21	17:20	7:03	17:20	7:09	17:17	7:01	17:56
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	5	१	रवि	9:28	ज्ये. मूल	7:47 28:54	शूल	24:06	ब	9:28	ध. 7:47	चन्द्रदर्शन, मु. 30, मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल 28:54 तक, स.सि.यो.	7:22	17:20	7:03	17:20	7:10	17:17	7:02	17:57
	०	२	रवि	29:51	००	००	००	००	०	०	००	**द्वितीया तिथि का क्षय** ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	6	३	चन्द्र	26:32	पू.षा.	26:19	गंड	20:05	तै	16:12	धनु	जमादिउल्लावल (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	7:23	17:20	7:04	17:20	7:11	17:17	7:02	17:57
	7	४	मंग	23:41	उ.षा.	24:12	वृद्धि	16:23	व	13:07	म. 7:44	भ. 13:07 से 23:41 तक, राहु कृति. 3 केतु अनु. 1 में 20:27,	7:24	17:20	7:05	17:20	7:11	17:17	7:03	17:57
	8	५	बुध	21:27	श्रव.	22:40	ध्रुव	13:09	ब	10:34	मकर	शुक्र मकर में 14:03, श्रीपञ्चमी, श्रीराम-विवाहोत्सव, नाग-पंचमी	7:24	17:20	7:06	17:20	7:12	17:17	7:04	17:57
	9	६	गुरु	19:55	धनि.	21:51	व्या.	10:27	कौ	8:41	कुं.10:10	पंचक प्रारम्भ 10:10, स्कन्द (गुह) षष्ठी, मंगल अनु. में 25:05, **(B)**	7:25	17:21	7:06	17:20	7:13	17:18	7:04	17:58
	10	७	शुक्र	19:10	शत.	21:48	हर्ष वज्र	8:21 30:54	ग	7:33	कुम्भ	भ. 19:10 से 31:12 तक, **मित्र (विष्णु) सप्तमी**	7:26	17:21	7:07	17:21	7:13	17:18	7:05	17:58
	11	८	शनि	19:13	पू.भा.	22:32	सिद्धि	30:02	व	19:13	मी.16:17	**श्रीदुर्गाष्टमी**	7:27	17:21	7:08	17:21	7:14	17:18	7:06	17:58
	12	९	रवि	20:03	उ.भा.	24:00	व्य.	29:45	बा	7:38	मीन	नन्दा-नवमी, गण्डमूल 24:00 से, स. सि. यो.	7:27	17:21	7:08	17:21	7:15	17:18	7:06	17:59
	13	१०	चन्द्र	21:33	रेव.	26:05	वरी.	29:56	तै	8:48	मे.26:05	पंचक समाप्त 26:05	7:28	17:21	7:09	17:21	7:16	17:19	7:07	17:59
	14	११	मंग	23:36	अश्वि	28:40	परि.	30:29	व	10:35	मेष	भ. 10:35 से 23:36 तक, **मोक्षदा एकादशी व्रत, श्रीगीता जयन्ती, (C)**	7:29	17:22	7:10	17:22	7:16	17:19	7:07	17:59
	15	१२	बुध	26:02	भर.	--	शिव	31:17	ब	12:49	मेष	सूर्य मूल 1 धनु में 27:42, **पौष संक्रान्ति**, मु. 15, पुण्यकाल सं. अगले **(D)**	7:29	17:22	7:10	17:22	7:17	17:19	7:08	18:00
	16	१३	गुरु	28:41	भर.	7:35	सिद्ध	--	कौ	15:22	वृ.14:21	प्रदोष व्रत,	7:30	17:22	7:11	17:22	7:17	17:20	7:08	18:00
	17	१४	शुक्र	--	कृति.	10:40	सिद्ध	8:13	ग	18:03	वृष	पिशाचमोचन श्राद्ध, शिव चतुर्दशी व्रत	7:31	17:23	7:12	17:23	7:18	17:20	7:09	18:01
	18	१४	शनि	7:25	रोहि.	13:49	साध्य	9:12	व	7:25	मि.27:21	भ. 7:25 से 20:46 तक, **श्रीदत्तात्रेय जयन्ती** (देखें पृष्ठ 30), **(E)**	7:31	17:23	7:12	17:23	7:19	17:20	7:09	18:01
	19	१५	रवि	10:06	मृग.	16:52	शुभ	10:08	ब	10:06	मिथुन	**मार्गशीर्ष पूर्णिमा** (स्नानदानादि प्रातः 10:06 तक), **शुक्र वक्री 16:04**	7:32	17:24	7:13	17:24	7:19	17:21	7:10	18:01
पौष कृष्ण पक्ष	20	१	चन्द्र	12:37	आर्द्रा	19:46	शुक्ल	10:58	कौ	12:37	मिथुन	पौष कृष्णपक्ष प्रारम्भ,	7:32	17:24	7:13	17:24	7:20	17:21	7:11	18:02
	21	२	मंग	14:54	पुन.	22:25	ब्रह्म	11:37	ग	14:54	क.15:47	भ. 27:54 से, शनि श्रव. 3 में 21:50, सूर्य सायन मकर में 21:29, **(F)**	7:33	17:25	7:14	17:25	7:20	17:22	7:11	18:02
	22	३	बुध	16:53	पुष्य	24:45	ऐन्द्र	12:02	वि	16:53	कर्क	भ. 16:53 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 20), **बुध पश्चिम में (G)**	7:33	17:25	7:14	17:25	7:21	17:22	7:12	18:03
	23	४	गुरु	18:28	आश्ले	26:41	वैधृ.	12:11	बा	18:28	सिं.26:41		7:34	17:26	7:15	17:26	7:21	17:23	7:12	18:03
	24	५	शुक्र	19:35	मघा	28:10	विष्क	12:00	तै	19:35	सिंह	गण्डमूल 28:10 तक	7:34	17:26	7:15	17:26	7:22	17:23	7:12	18:04
	25	६	शनि	20:10	पू.फा.	29:05	प्रीति	11:25	ग	7:53	सिंह	भ. 20:10 से, क्रिसमिस दिवस (क्रिश्चियन)	7:35	17:27	7:16	17:27	7:22	17:24	7:13	18:05
	26	७	रवि	20:09	उ.फा.	29:26	आयु	10:23	वि	8:10	कं.11:14	भ. 8:10 तक, बुध उ.षा. में 30:43, स. सि. यो.	7:35	17:27	7:16	17:27	7:22	17:24	7:13	18:05
	27	८	चन्द्र	19:29	हस्त	29:07	सौभा शोभ	8:52 30:51	बा	7:49	कन्या	**रुक्मिणी अष्टमी, अष्टका श्राद्ध**	7:35	17:28	7:16	17:28	7:23	17:25	7:14	18:06
	28	९	मंग	18:10	चित्रा	28:11	अति	28:19	ग	18:10	तु.16:44	भ. 29:12 से, सूर्य पू.षा. में 30:01, मंगल ज्येष्ठा में 24:39	7:36	17:29	7:17	17:29	7:23	17:26	7:14	18:06
	29	१०	बुध	16:13	स्वा.	26:38	सुक.	25:17	वि	16:13	तुला	भ. 16:13 तक, **बुध मकर में 11:32**	7:36	17:29	7:17	17:29	7:24	17:26	7:15	18:07
	30	११	गुरु	13:41	विशा.	24:34	धृति	21:49	बा	13:41	वृ.19:08	**सफला एकादशी व्रत, वक्री शुक्र धनु. में 7:54**	7:36	17:30	7:17	17:30	7:24	17:27	7:15	18:07
	31	१२	शुक्र	10:40	अनु.	22:04	शूल	17:59	तै	10:40	वृश्चिक	भ. 31:18 से, प्रदोष व्रत, सुरुप द्वादशी, गण्डमूल 22:04 से, स.सि.यो.	7:37	17:31	7:18	17:31	7:24	17:28	7:15	18:08
	०	१३	शुक्र	31:18	००	००	००	००	०	०	००	**त्रयोदशी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--

(A) गण्डमूल 10:47 से **(B)** बुध मूल 1 धनु में 30:05, चम्पा षष्ठी **(C)** गण्डमूल 28:40 तक, स. सि. यो. **(D)** दिन प्रातः 10:06 तक, गुरु धनि. 4 में 8:14, अखण्ड द्वादशी **(E)** श्रीसत्यनारायण व्रत, त्रिपुरभैरव-जयन्ती, बुध पू.षा. में 17:41, स.सि.यो. **(F)** सायन उत्तरायण शुरु, शिशिर ऋतु प्रारम्भ **(G)** उदय 17:26, शक पौष प्रारम्भ, गण्डमूल 24:45 से,

वि. संवत् 2078, जनवरी मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2022 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्योत्तरायण शिशिर-ऋतुः	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
पौ. कृ.	1	१४	शनि	27:42	ज्ये.	19:17	गंड	13:55	वि	17:30	ध.19:17	भ. 17:30 तक, जनवरी-सन् 2022 ई. प्रारम्भ, मासिक शिवरात्रि व्रत	7:37	17:31	7:18	17:31	7:24	17:28	7:16	18:09
	2	३०	रवि	24:04	मूल	16:23	वृद्धि ध्रुव	9:42 29:29	च	13:53	धनु	पौष अमावस (स्नानदानादि), गुरु शत. 1 में 15:45, शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ 25:15	7:37	17:32	7:18	17:32	7:25	17:29	7:16	18:09
पौष शुक्ल पक्ष	3	१	चन्द्र	20:32	पू.षा.	13:33	व्या.	25:24	किं	10:18	म.18:52	पौष शुक्ल प्रारम्भ,	7:37	17:33	7:18	17:33	7:25	17:30	7:16	18:10
	4	२	मंग	17:20	उ.षा.	10:57	हर्ष	21:37	कौ	17:20	मकर	चन्द्रदर्शन, मु. 30, आरोग्य व्रत	7:37	17:34	7:19	17:33	7:25	17:31	7:17	18:10
	5	३	बुध	14:35	श्रव. धनि.	8:46 31:11	वज्र	18:14	ग	14:35	कुं.19:54	भ. 25:33 से, पंचक प्रारम्भ 19:54, वक्री शुक्र पश्चिम में अस्त 25:15 (A)	7:37	17:34	7:19	17:34	7:25	17:31	7:17	18:11
	6	४	गुरु	12:30	शत.	30:21	सिद्धि	15:24	वि	12:30	कुम्भ	भ. 12:30 तक,	7:38	17:35	7:19	17:35	7:25	17:32	7:17	18:12
	7	५	शुक्र	11:11	पू.भा.	30:20	व्य.	13:11	बा	11:11	मी.24:15	शुक्र अस्त 5 जन. शुक्र उदय 12 जन.	7:38	17:36	7:19	17:36	7:25	17:33	7:17	18:12
	8	६	शनि	10:44	उ.भा.	31:10	वरी.	11:40	तै	10:44	मीन		7:38	17:37	7:19	17:36	7:25	17:34	7:18	18:13
	9	७	रवि	11:09	रेव.	--	परि.	10:49	व	11:09	मीन	भ. 11:09 से 23:47 तक, मार्तण्ड-सप्तमी, श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती, (B)	7:38	17:38	7:19	17:37	7:25	17:35	7:18	18:14
	10	८	चन्द्र	12:25	रेव.	8:49	शिव	10:36	ब	12:25	मे. 8:49	पंचक समाप्त 8:49, श्रीदुर्गाष्टमी, महारुद्र व्रत, गण्डमूल विचार	7:38	17:39	7:19	17:38	7:25	17:35	7:18	18:14
	11	९	मंग	14:22	अश्वि	11:10	सिद्ध	10:55	कौ	14:22	मेष	सूर्य उ.षा. में 7:55, गण्डमूल 11:10 तक, स. सि. यो.	7:38	17:39	7:19	17:39	7:25	17:36	7:18	18:15
	12	१०	बुध	16:50	भर.	14:00	साध्य	11:37	ग	16:50	वृ.20:46	भ. 30:12 से, वक्री शुक्र पूर्व में उदय 17:40	7:37	17:40	7:19	17:40	7:25	17:37	7:18	18:15
	13	११	गुरु	19:33	कृति.	17:07	शुभ	12:34	वि	19:33	वृष	भ. 19:33 तक, पुत्रदा एकादशी व्रत, लोहड़ी पर्व (पं., हरि., दिल्ली आदि)	7:37	17:41	7:19	17:40	7:25	17:38	7:18	18:16
	14	१२	शुक्र	22:20	रोहि.	20:18	शुक्ल	13:35	ब	8:57	वृष	सूर्य मकर में 14:29, मकर (माघ) संक्रान्ति, मु. 45, पुण्यकाल (C)	7:37	17:42	7:19	17:41	7:25	17:39	7:19	18:17
	15	१३	शनि	24:58	मृग.	23:21	ब्रह्म	14:32	कौ	11:39	मि. 9:51	शनि प्रदोष व्रत, शुक्र बाल्यत्व समाप्त 17:40	7:37	17:43	7:19	17:42	7:25	17:40	7:19	18:17
	16	१४	रवि	27:19	आर्द्रा	26:09	ऐन्द्र	15:20	ग	14:09	मिथुन	भ. 27:19 से, मंगल मूल 1 धनु में 16:30, ईशान व्रत	7:37	17:44	7:19	17:43	7:25	17:40	7:19	18:18
	17	१५	चन्द्र	29:18	पुन.	28:37	वैधृ.	15:52	वि	16:19	क.22:02	भ. 16:19, पौष पूर्णिमा, माघ स्नान प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत, (D)	7:37	17:45	7:19	17:44	7:25	17:41	7:19	18:19
माघ कृष्ण पक्ष	18	१	मंग	30:54	पुष्य	30:42	विष्क	16:08	बा	18:06	कर्क	माघ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, गुरु शत. 2 में 15:37	7:36	17:46	7:19	17:44	7:24	17:42	7:19	18:19
	19	२	बुध	-:-	आश्ले	--	प्रीति	16:05	तै	19:30	कर्क	शनि पश्चिम में अस्त 7:18, गण्डमूल 6:42 से,	7:36	17:47	7:18	17:45	7:24	17:43	7:19	18:20
	20	२	गुरु	8:06	आश्ले	8:24	आयु	15:44	ग	8:06	सिं. 8:24	भ. 20:29 से, शनि श्रव. 4 में 26:37, सूर्य सायन कुम्भ में 8:09	7:36	17:48	7:18	17:46	7:24	17:44	7:19	18:21
	21	३	शुक्र	8:52	मघा	9:43	सौभा	15:05	वि	8:52	सिंह	भ. 8:52 तक, श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 20), गौरी-(E)	7:35	17:49	7:18	17:47	7:24	17:45	7:19	18:21
	22	४	शनि	9:15	पू.फा.	10:38	शोभ.	14:06	बा	9:15	कं.16:48	वक्री बुध उ.षा. 4 में 25:14	7:35	17:49	7:18	17:48	7:23	17:46	7:19	18:22
	23	५	रवि	9:13	उ.फा.	11:09	अति.	12:49	तै	9:13	कन्या	सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती, स. सि. यो.	7:35	17:50	7:17	17:49	7:23	17:47	7:19	18:23
	24	६	चन्द्र	8:44	हस्त	11:15	सुक	11:11	व	8:44	तु.23:08	भ. 8:44 से 20:17 तक, सूर्य श्रव. में 10:19,	7:34	17:51	7:17	17:50	7:23	17:48	7:18	18:23
	25	७	मंग	7:49	चित्रा	10:55	धृति शूल	9:12 30:51	व	7:49	तुला		7:34	17:52	7:17	17:50	7:22	17:48	7:18	18:24
	०	८	मंग	30:26	००	००	००	००	०	०	००	अष्टमी तिथि का क्षय ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	26	९	बुध	28:35	स्वा.	10:06	गंड	28:08	तै	17:31	वृ.27:12	भारत गणतन्त्र दिवस (73वाँ)	7:33	17:53	7:16	17:51	7:22	17:49	7:18	18:24
	27	१०	गुरु	26:17	विशा. अनु.	8:51 31:10	वृद्धि	25:04	व	15:26	वृश्चिक	भ. 15:26 से 26:17 तक,	7:33	17:54	7:16	17:52	7:21	17:50	7:18	18:25
	28	११	शुक्र	23:36	ज्ये.	29:08	ध्रुव	21:40	ब	12:57	ध.29:08	षट्तिला एकादशी व्रत, वक्री बुध पूर्व में उदय 29:42, गण्डमूल 7:10 से	7:32	17:55	7:15	17:53	7:21	17:51	7:18	18:26
	29	१२	शनि	20:38	मूल	26:49	व्या.	18:02	कौ	10:02	धनु	तिल-द्वादशी, शुक्र मार्गी 14:17, गण्डमूल 26:49 तक	7:31	17:56	7:15	17:54	7:20	17:52	7:18	18:26
	30	१३	रवि	17:29	पू.षा.	24:23	हर्ष	14:15	व	17:29	म.29:46	भ. 17:29 से 27:54 तक, प्रदोष व्रत, मासशिवरात्रि व्रत	7:31	17:57	7:15	17:55	7:20	17:53	7:17	18:27
	31	१४	चन्द्र	14:19	उ.षा.	21:58	वज्र सिद्धि	10:25 30:41	श	14:19	मकर	पितृकार्येषु अमावस (14:19 बाद), तीर्थस्नान व तर्पणादि का माहात्म्य (F)	7:30	17:58	7:14	17:55	7:19	17:54	7:17	18:27

(A) बुध श्रवण में 18:12, वक्री शुक्र पू.षा. 4 में 18:31, जमादि-उल्सानी (मुस्लि.) मास प्रारम्भ (B) गण्डमूल 7:10 से (C) सं. प्रात: 8:05 बाद, निरयण उत्तरायण प्रारम्भ, बुध वक्री 17:07, सुजन्म द्वादशी (D) शाकम्भरी जयन्ती, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 8:50 (E) -वक्रतुण्ड चतुर्थी, शक माघ प्रारम्भ, गण्डमूल 9:43 तक (F) -2 दिन (हरिद्वार, प्रयागराजादि)

वि. संवत् 2078, फरवरी मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा–मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2022 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि–नक्षत्र प्रवेश घण्टा–मिनटों में [भा. स्टैं. टा.] — सूर्योत्तरायण — शिशिर-वसन्त-ऋतुः	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
माघ कृ.	1	३०	मंग	11:16	श्रव.	19:44	व्य.	27:09	ना	11:16	कुं. 30:45	पंचक प्रारम्भ 30:45, माघ (मौनी) अमावस (स्नानदानादि), (A)	7:30	17:59	7:13	17:56	7:19	17:55	7:17	18:28
माघ शुक्ल पक्ष	2	१	बुध	8:32	धनि.	17:53	वरी	23:58	ब	8:32	कुम्भ	माघ शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 15, गुरु शत. 3 में 10:57, (B)	7:29	18:00	7:13	17:57	7:18	17:56	7:17	18:28
	०	२	बुध	30:16	००	००	००	००	०	०	००	द्वितीया तिथि का क्षय ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	3	३	गुरु	28:39	शत.	16:35	परि.	21:16	तै	17:28	कुम्भ	मंगल पू.षा. में 25:18, गौरी तृतीया व्रत, रज्जब (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	7:28	18:01	7:12	17:58	7:17	17:56	7:16	18:29
	4	४	शुक्र	27:48	पू.भा.	15:58	शिव	19:09	व	16:14	मी.10:03	भ. 16:14 से 27:48 तक, श्रीगणेश तिल चतुर्थी, वरद् (कुन्द) (C)	7:27	18:02	7:12	17:59	7:17	17:57	7:16	18:29
	5	५	शनि	27:47	उ.भा.	16:09	सिद्ध	17:41	ब	15:48	मीन	वसन्त-पञ्चमी, श्रीपंचमी, सरस्वती पूजन, वागेश्वरी जयन्ती, गण्डमूल 16:09 से,	7:27	18:03	7:11	17:59	7:16	17:58	7:16	18:30
	6	६	रवि	28:39	रेव.	17:10	साध्य	16:53	कौ	16:13	मे.17:10	पंचक समाप्त 17:10, सूर्य धनि. में 13:23	7:26	18:04	7:10	18:00	7:15	17:59	7:15	18:30
	7	७	चन्द्र	30:17	अश्वि	18:59	शुभ	16:43	ग	17:28	मेष	भ. 30:17 से, रथ–आरोग्य सप्तमी, पुत्र सप्तमी व्रत, श्रीमाधवाचार्य जयं.,(D)	7:25	18:05	7:10	18:01	7:15	18:00	7:15	18:31
	8	८	मंग	--	भर.	21:27	शुक्ल	17:05	वि	19:24	वृ.28:09	भ. 19:24 तक, भीष्माष्टमी, राहु कृति. 2 केतु विशा. 4 में 18:11	7:24	18:05	7:09	18:02	7:14	18:01	7:14	18:32
	9	८	बुध	8:31	कृति.	24:23	ब्रह्म	17:51	ब	8:31	वृष		7.23	18:06	7:08	18:03	7:13	18:02	7:14	18:32
	10	९	गुरु	11:09	रोहि.	27:32	ऐन्द्र	18:49	कौ	11:09	वृष	गुप्त नवरात्र समाप्त	7:23	18:07	7:08	18:03	7:12	18:02	7:13	18:32
	11	१०	शुक्र	13:53	मृग.	30:37	वैधृ.	19:48	ग	13:53	मि.17:06	भ. 27:11 से, नवरात्र–पारणा	7:22	18:08	7:07	18:04	7:11	18:03	7:13	18:33
	12	११	शनि	16:28	आर्द्रा	--	विष्क	20:40	वि	16:28	मिथुन	भ. 16:28 तक, जया एकादशी व्रत, सूर्य कुम्भ में 27:26, (E)	7:21	18:09	7:06	18:05	7:11	18:04	7:13	18:33
	13	१२	रवि	18:42	आर्द्रा	9:27	प्रीति	21:14	बा	18:42	क.29:19	भीष्म–द्वादशी, तिल द्वादशी	7:20	18:10	7:05	18:06	7:10	18:05	7:12	18:34
	14	१३	चन्द्र	20:29	पुन.	11:53	आयु	21:28	कौ	7:36	कर्क	सोम प्रदोष व्रत, मेला जैसलमेर (राजस्थान) प्रारम्भ–3 दिन	7:19	18:11	7:05	18:06	7:09	18:06	7:12	18:34
	15	१४	मंग	21:43	पुष्य	13:49	सौभा	21:17	ग	9:06	कर्क	भ. 21:43 से, गण्डमूल 13:49 से,	7:18	18:12	7:04	18:07	7:08	18:07	7:11	18:35
	16	१५	बुध	22:27	आश्ले	15:14	शोभ	20:43	वि	10:05	सिं.15:14	भ. 10:05 तक, माघ पूर्णिमा, माघस्नान समाप्त, श्रीगुरु रविदास जयं.(F)	7:17	18:13	7:03	18:08	7:07	18:07	7:10	18:35
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	17	१	गुरु	22:41	मघा	16:11	अति.	19:46	बा	10:34	सिंह	फाल्गुन कृष्णपक्ष प्रारम्भ, शनि धनि. 1 में 25:21, गण्डमूल 16:11 तक	7:16	18:14	7:02	18:09	7:06	18:08	7:10	18:36
	18	२	शुक्र	22:30	पू.फा.	16:42	सुक	18:30	तै	10:36	कं.22:46	बुध श्रवण में 30:21, सूर्य सायन मीन में 22:13, वसन्त ऋतु प्रारंभ, स.सि.यो.	7:15	18:14	7:01	18:09	7:05	18:09	7:09	18:36
	19	३	शनि	21:57	उ.फा.	16:51	धृति	16:56	व	10:14	कन्या	भ. 10:14 से 21:57 तक, सूर्य शत. में 17:57	7:14	18:15	7.00	18:10	7:04	18:10	7:09	18:37
	20	४	रवि	21:06	हस्त	16:42	शूल	15:07	ब	9:32	तु.28:31	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 20), शक फाल्गुन प्रारंभ, स.सि.यो. 16:42 तक	7:13	18:16	6:59	18:11	7:03	18:10	7:08	18:37
	21	५	चन्द्र	19:58	चित्रा	16:17	गंड	13:05	कौ	8:32	तुला	मंगल उ.षा. में 28:01, शनि पूर्व में उदय 18:11, गुरु वार्धक्य प्रारम्भ 8:50,	7:12	18:17	6:58	18:11	7:02	18:11	7:08	18:37
	22	६	मंग	18:35	स्वा.	15:36	वृद्धि	10:51	ग	7:17	तुला	भ. 18:35 से 29:46 तक, शुक्र उ.षा. में 22:34	7:11	18:18	6:57	18:12	7:01	18:12	7:07	18:38
	23	७	बुध	16:57	विशा.	14:41	ध्रुव व्या.	8:25 29:47	ब	16:57	वृ. 8:56	श्रीनाथ–उत्सव — गुरु अस्त 24 फर.	7:10	18:19	6:57	18:13	7:00	18:13	7:06	18:38
	24	८	गुरु	15:04	अनु.	13:31	हर्ष	26:58	कौ	15:04	वृश्चिक	गुरु पश्चिम में अस्त 8:50, जानकी–व्रत	7:09	18:19	6:56	18:13	6:59	18:14	7:06	18:38
	25	९	शुक्र	12:58	ज्ये.	12:07	वज्र	23:59	ग	12:58	ध.12:07	भ. 23:49 से,	7:07	18:20	6:55	18:14	6:58	18:14	7:05	18:39
	26	१०	शनि	10:40	मूल	10:32	सिद्धि	20:51	वि	10:40	धनु	भ. 10:40 तक, मंगल मकर में 15:49, विजया एकादशी व्रत (स्मार्त) (G)	7:06	18:21	6:54	18:15	6:57	18:15	7:04	18:39
	27	११	रवि	8:13	पू.षा.	8:49	व्य.	17:38	बा	8:13	म.14:22	विजया एकादशी व्रत (वैष्णव), शुक्र मकर में 10:15, त्रिस्पर्शा महाद्वादशी	7:05	18:22	6:53	18:15	6:56	18:16	7:04	18:40
	०	१२	रवि	29:43	००	००	००	००	०	०	००	द्वादशी तिथि का क्षय ०० ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	28	१३	चन्द्र	27:17	उ.षा. श्रव.	7:02 29:19	वरी.	14:25	ग	16:30	मकर	भ. 27:17 से, सोम प्रदोष व्रत, स. सि. यो. 7:02 से,	7:04	18:23	6:52	18:16	6:55	18:16	7:03	18:40

(A) भौमवती अमावस, फरवरी मास, सन् 2022 ई. प्रारम्भ, **महोदय योग** (प्रातः 6:41 से 11:16 तक), तीर्थस्नान माहात्म्य **(B) गुप्त नवरात्र प्रारम्भ**, बाबा श्रीलाल दयाल जयन्ती (ध्यानपुर) पं.
(C) चतुर्थी, बुध मार्गी 9:40 (D) गण्डमूल 18:59 तक (E) **फाल्गुन संक्रान्ति** मु. 15, पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रातः 9:50 तक (F) गुरु शत. 4 में 14:46, श्रीललिता जयन्ती
(G) (देखें पृष्ठ 25), स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती, गण्डमूल 10:32 तक

वि. संवत् 2078, मार्च-अप्रै. मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2022 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	करण	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — सूर्योत्तरायण — वसन्त-ऋतुः	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
फा.कृ.	1	१४	मंग	25:01	धनि.	27:48	परि.	11:17	वि	14:09	कुं.16:31	भ. 14:09 तक, **पंचक प्रारम्भ 16:31, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत, बुध धनि.(A)**	7:03	18:24	6:51	18:17	6:54	18:17	7:02	18:40
	2	३०	बुध	23:05	शत.	26:37	शिव सिद्ध	8:20 29:42	च	12:03	कुम्भ	**फाल्गुन अमावस**, गुरु पू.भा. (1) में 11:09	7:02	18:24	6:49	18:17	6:53	18:18	7:01	18:41
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	3	१	गुरु	21:37	पू.भा.	25:56	साध्य	27:28	किं	10:21	मी.20:03	फाल्गुन शुक्लपक्ष प्रारम्भ,	7:00	18:25	6:48	18:18	6:51	18:19	7:01	18:41
	4	२	शुक्र	20:46	उ.भा.	25:52	शुभ	25:44	बा	9:12	मीन	चन्द्रदर्शन, मु. 45, सूर्य पू.भा. में 24:10, फूलेरा-दूज (मथुरा, उ.प्र.), (B)	6:59	18:26	6:47	18:19	6:50	18:19	7:00	18:41
	5	३	शनि	20:36	रेव.	26:29	शुक्ल	24:35	तै	8:41	मे.26:29	**पंचक समाप्त 26:29**, शब्बान (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	6:58	18:27	6:46	18:19	6:49	18:20	6:59	18:41
	6	४	रवि	21:13	अश्वि	27:51	ब्रह्म	24:00	व	8:55	मेष	भ. 8:55 से 21:13 तक, **बुध कुम्भ में 11:19**, स. सि. यो. गण्डमूल 27:51 तक	6:57	18:27	6:45	18:20	6:48	18:21	6:58	18:42
	7	५	चन्द्र	22:33	भर.	29:54	ऐन्द्र	23:59	ब	9:53	मेष	याज्ञवल्क्य जयन्ती	6:55	18:28	6:44	18:21	6:47	18:21	6:58	18:42
	8	६	मंग	24:32	कृति.	--	वैधृ	24:27	कौ	11:33	वृ.12:31	स. सि. यो.	6:54	18:29	6:43	18:21	6:46	18:22	6:57	18:42
	9	७	बुध	26:57	कृति.	8:31	विष्क	25:15	ग	13:45	वृष	भ. 26:57 से, स. सि. यो.	6:53	18:30	6:42	18:22	6:44	18:23	6:56	18:43
	10	८	गुरु	29:35	रोहि.	11:30	प्रीति	26:13	वि	16:16	मि.25:03	भ. 16:16 तक, **होलाष्टक प्रारम्भ**, बुध शत. में 19:40, अन्नपूर्णा (C)	6:52	18:30	6:41	18:22	6:43	18:23	6:55	18:43
	11	९	शुक्र	--	मृग.	14:35	आयु	27:10	बा	18:52	मिथुन	मंगल श्रवण में 25:32,	6:50	18:31	6:40	18:23	6:42	18:24	6:54	18:43
	12	९	शनि	8:08	आर्द्रा	17:32	सौभा	27:54	कौ	8:08	मिथुन	होलाष्टक 10 से 18 मार्च	6:49	18:32	6:39	18:24	6:41	18:25	6:54	18:43
	13	१०	रवि	10:22	पुन.	20:06	शोभ.	28:17	ग	10:22	क.13:30	भ. 23:14 से,	6:48	18:33	6:37	18:24	6:40	18:26	6:53	18:44
	14	११	चन्द्र	12:06	पुष्य	22:08	अति.	28:14	वि	12:06	कर्क	भ. 12:06 तक, **आमलकी एकादशी व्रत, सूर्य मीन में 24:15, (D)**	6:47	18:33	6:36	18:25	6:38	18:26	6:52	18:44
	15	१२	मंग	13:13	आश्ले	23:33	सुक	27:40	बा	13:13	सिं.23:33	**भौम प्रदोष व्रत**, गुरु पू.भा. 2 में 30:14, स. सि. यो.	6:45	18:34	6:35	18:25	6:37	18:27	6:51	18:44
	16	१३	बुध	13:40	मघा	24:21	धृति	26:38	तै	13:40	सिंह	महेश्वर व्रत, वृषदान व्रत, गण्डमूल 24:21 तक	6:44	18:35	6:34	18:26	6:36	18:27	6:50	18:45
	17	१४	गुरु	13:30	पू.फा.	24:34	शूल	25:07	व	13:30	कं.30:32	भ. 13:30 से 25:09 तक, **होलिका दहन** (भद्रामुख त्यक्त्वा) (देखें पृष्ठ 30) (E)	6:43	18:36	6:33	18:27	6:35	18:28	6:50	18:45
	18	१५	शुक्र	12:48	उ.फा.	24:18	गंड	23:14	ब	12:48	कन्या	**फाल्गुन पूर्णिमा, होली पर्व, होलाष्टक समाप्त, श्रीचैतन्य महाप्रभु जयं.(F)**	6:41	18:36	6:32	18:27	6:34	18:29	6:49	18:45
चैत्र कृष्ण पक्ष	19	१	शनि	11:38	हस्त	23:38	वृद्धि	21:00	कौ	11:38	कन्या	**चैत्र कृष्णपक्ष प्रारम्भ, होला-मेला (श्रीआनन्दपुर व पांओटा साहिब), (G)**	6:40	18:37	6:31	18:28	6:32	18:29	6:48	18:45
	20	२	रवि	10:07	चित्रा	22:40	ध्रुव	18:33	ग	10:07	तु.11:11	भ. 21:14 से, सूर्य सायन मेष में 21:03, उत्तर गोल प्रारम्भ, महाविषुव दिन,(H)	6:39	18:38	6:29	18:28	6:31	18:30	6:47	18:46
	21	३	चन्द्र	8:21	स्वा.	21:31	व्या.	15:54	वि	8:21	तुला	भ. 8:21 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 20), श्रीभगवान्नारायण जयं.	6:37	18:39	6:28	18:29	6:30	18:31	6:46	18:46
	०	४	चन्द्र	30:25	००	००	००	००	०	०	००	**चतुर्थी तिथि का क्षय** ००	--	--	--	--	--	--	--	--
	22	५	मंग	28:22	विशा	20:14	हर्ष	13:09	कौ	17:24	वृ.14:33	**श्रीरंग-पंचमी**, शक चैत्र एवं संवत् 1944 प्रारम्भ, मेला नवचण्डी (I)	6:36	18:39	6:27	18:29	6:29	18:31	6:45	18:46
	23	६	बुध	26:17	अनु.	18:53	वज्र	10:19	ग	15:20	वृश्चिक	भ. 26:17 से, स. सि. यो., गण्डमूल 18:53 से,	6:35	18:40	6:26	18:30	6:27	18:32	6:45	18:46
	24	७	गुरु	24:10	ज्ये.	17:30	सिद्धि व्य.	7:28 28:36	वि	13:14	ध.17:30	भ. 13:14 तक, **बुध मीन में 10:55, शुक्र धनि. में 21:47, (J)**	6:34	18:41	6:25	18:31	6:26	18:33	6:44	18:47
	25	८	शुक्र	22:05	मूल	16:07	वरी.	25:46	बा	11:08	धनु	**शीतलाष्टमी व्रत**, बुध उ.भा. में 29:42, गण्डमूल 16:07 तक	6:32	18:41	6:24	18:31	6:25	18:33	6:43	18:47
	26	९	शनि	20:02	पू.षा.	14:47	परि.	22:58	तै	9:04	म.20:28	**गुरु पूर्व में उदय 18:38** — गुरु उदय 26 मार्च	6:31	18:42	6:22	18:32	6:24	18:34	6:42	18:47
	27	१०	रवि	18:05	उ.षा.	13:32	शिव	20:15	व	7:04	मकर	भ. 7:04 से 18:05 तक, स. सि. यो.	6:30	18:43	6:21	18:32	6:22	18:35	6:41	18:47
	28	११	चन्द्र	16:16	श्रव.	12:24	सिद्ध	17:39	बा	16:16	कुं.23:55	**पंचक प्रारम्भ 23:55, पापमोचनी एकादशी व्रत**, स. सि. यो.	6:28	18:44	6:20	18:33	6:21	18:35	6:40	18:47
	29	१२	मंग	14:39	धनि.	11:28	साध्य	15:13	तै	14:39	कुम्भ	**भौम प्रदोष व्रत, वारुणी योग (पर्व)** 14:39 से, मंगल धनि. में (K)	6:27	18:44	6:19	18:33	6:20	18:36	6:39	18:48
	30	१३	बुध	13:20	शत.	10:49	शुभ	13:01	व	13:20	मी.28:33	भ. 13:20 से 24:52 तक, **वारुणी योग 10:49 तक**, मासशिवरात्रि व्रत	6:26	18:45	6:18	18:34	6:19	18:36	6:39	18:48
	31	१४	गुरु	12:23	पू.भा.	10:31	शुक्ल	11:07	श	12:23	मीन	पितृकार्येषु अमावस (12:23 बाद), सूर्य रेवती में 19:24, शुक्र कुम्भ में (L)	6:24	18:46	6:17	18:34	6:18	18:37	6:38	18:48
	अप्रै.	३०	शुक्र	11:54	उ.भा.	10:40	ब्रह्म	9:36	ना	11:54	मीन	**चैत्र अमावस** (स्नानदानादि), बुध रेवती में 24:53, अप्रैल-सन् 2022 ई.(M)	6:23	18:46	6:15	18:35	6:16	18:38	6:37	18:48

(A) में 20:28, मार्च मास सन् 2022 ई. प्रारम्भ (B) श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती, गण्डमूल 25:52 से (C) अष्टमी, शुक्र श्रवण में 27:53 (D) चैत्र संक्रान्ति, मु. 15, पुण्यकाल सं. अगले दिन मध्याह्न तक, गोविन्द द्वादशी (12:06 बाद) (E) श्रीसत्यनारायण व्रत, लक्ष्मीनारायण व्रत (F) सूर्य उ.भा. में 8:36, बुध पू.भा. में 21:05, होलिका विभूति धारण, धूलिवन्दन (G) शनि धनि. 2 में 20:08, वसन्तोत्सव, ध्वजारोहण, धुलैण्डी, आम्रकुसुम प्राशन, बुध पूर्व में अस्त 23:49 (H) सन्त तुकाराम जयन्ती (I) (मेरठ) शुरु, मेला गुरु रामराय (देहरादून) (J) मेला शीतलामाता (कुराली, पं.) (K) 19:19, गुरु पू.भा. 3 में 29:41 (L) 8:39, मेला पृथूदक-पिहोवातीर्थ (हरियाणा) (M) प्रारम्भ, विक्रमी संवत 2078 पूर्ण, गण्डमूल 10:40 से

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) वि. संवत् २०७८ (सन् 2021-22 ई.)

●●●●●(चन्द्रमा के नक्षत्र चरणों के अनुसार बच्चों (शिशुओं) का नामकरण करें।)●●●●●

आगे लिखे चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का समय घण्टे मिनटों में भा. स्टैं. टा. अनुसार दिया जा रहा है। रात्रि बारह (12) बजे के बाद के समय को आगामी तारीख के रूप में दर्शाया गया है। आगामी पृष्ठों पर दिया गया चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का प्रारम्भ काल है, न कि समाप्तिकाल। इस सारिणी के प्रयोग से किसी जातक के जन्म समय (घण्टा-मिनटों में) के आधार पर शीघ्र ही जातक का जन्म नक्षत्र एवं उसका चरण आदि सुगमता से जान सकते हैं। प्राचीन परिपाटी के अनुसार घड़ी-पलों या भयात्-भभोग की गणित प्रक्रिया से नक्षत्र-चरण निकालने का झंझट नहीं होगा।

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
अप्रै. 2021	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
11/12 अप्रै.	रेवती	8	58	15	36	22	13	4	51
12/13 अप्रै.	अश्वि	11	29	18	11	0	54	7	37
13/14 अप्रै.	भरणी	14	19	21	05	3	51	10	37
14/15 अप्रै.	कृति	17	23	0	10	6	58	13	46
15/16 अप्रै.	रोहि	20	33	3	20	10	06	16	53
16/17 अप्रै.	मृग.	23	40	6	24	13	09	19	50
18 अप्रै.	आर्द्रा	2	34	9	11	15	48	22	25
19/20 अप्रै.	पुन.	5	02	11	30	17	59	0	29
20/21 अप्रै.	पुष्य	6	53	13	09	19	26	1	43
21/22 अप्रै.	आश्ले	7	59	14	03	20	07	2	11
22/23 अप्रै.	मघा	8	15	14	07	19	58	1	50
23/24 अप्रै.	पू.फा.	7	42	13	22	19	02	0	42
24 अप्रै.	उ.फा.	6	22	11	56	17	23	22	53
25 अप्रै.	हस्त	4	23	9	46	15	09	20	32
26 अप्रै.	चित्रा	1	55	7	13	12	32	17	48
26/27 अप्रै.	स्वाती	23	06	4	21	9	37	14	53
27/28 अप्रै.	विशा.	20	08	1	24	6	40	11	56
28/29 अप्रै.	अनु.	17	13	22	32	3	51	9	10
29/30 अप्रै.	ज्ये.	14	29	19	54	1	19	6	43
30/1 मई	मूल	12	08	17	40	23	12	4	44
1/2 मई	पू.षा.	10	16	15	57	21	37	3	18
2/3 मई	उ.षा.	8	59	14	46	20	40	2	31
3/4 मई	श्रव.	8	22	14	23	20	24	2	25
4/5 मई	धनि.	8	26	14	36	20	44	3	00
5/6 मई	शत.	9	11	15	31	21	52	4	12
6/7 मई	पू.भा.	10	32	17	01	23	29	5	55
7/8 मई	उ.भा.	12	26	19	01	1	37	8	12
8/9 मई	रेवती	14	47	21	27	4	08	10	49

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
मई 2021	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
9/10 मई	अश्वि.	17	29	0	13	6	57	13	41
10/11 मई	भरणी	20	25	3	11	9	58	16	45
11/12 मई	कृति.	23	31	6	18	13	06	19	53
13 मई	रोहि.	2	40	9	26	16	13	22	59
14/15 मई	मृग.	5	45	12	29	19	14	1	55
15/16 मई	आर्द्रा	8	39	15	18	21	56	4	35
16/17 मई	पुन.	11	14	17	46	0	18	6	53
17/18 मई	पुष्य	13	22	19	45	2	09	8	32
18/19 मई	आश्ले.	14	55	21	08	3	22	9	35
19/20 मई	मघा	15	48	21	50	3	53	9	55
20/21 मई	पू.फा.	15	57	21	48	3	40	9	31
21/22 मई	उ.फा.	15	22	21	07	2	45	8	25
22/23 मई	हस्त	14	06	19	37	1	09	6	41
23/24 मई	चित्रा	12	12	17	36	23	04	4	25
24/25 मई	स्वा.	9	49	15	08	20	28	1	47
25 मई	विशा.	7	06	12	22	17	39	22	55
26 मई	अनु.	4	11	9	27	14	43	19	59
27 मई	ज्ये.	1	15	6	34	11	52	17	10
27/28 मई	मूल	22	29	3	52	9	16	14	39
28/29 मई	पू.षा.	20	02	1	32	7	03	12	34
29/30 मई	उ.षा.	18	04	23	39	5	22	11	03
30/31 मई	श्रव.	16	42	22	32	4	22	10	12
31/1 जून	धनि.	16	02	22	03	3	59	10	07
1/2 जून	शत.	16	08	22	21	4	34	10	47
2/3 जून	पू.भा.	17	00	23	24	5	47	12	07
3/4 जून	उ.भा.	18	35	1	08	7	41	14	14
4/5 जून	रेवती	20	47	3	27	10	08	16	48
5/6 जून	अश्वि.	23	28	6	13	12	57	19	42

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
जून 2021	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
7 जून	भरणी	2	27	9	14	16	02	22	49
8/9 जून	कृति	5	36	12	23	19	10	1	57
9/10 जून	रोहि.	8	44	15	29	22	14	4	59
10/11 जून	मृग.	11	44	18	26	1	10	7	49
11/12 जून	आर्द्रा	14	31	21	08	3	44	10	21
12/13 जून	पुन.	16	57	23	28	5	59	12	32
13/14 जून	पुष्य	19	01	1	25	7	49	14	13
14/15 जून	आश्ले.	20	37	2	53	9	10	15	26
15/16 जून	मघा	21	42	3	50	9	59	16	07
16/17 जून	पू.फा.	22	15	4	14	10	14	16	14
17/18 जून	उ.फा.	22	13	4	07	9	55	15	46
18/19 जून	हस्त	21	37	3	20	9	02	14	45
19/20 जून	चित्रा	20	28	2	03	7	42	13	14
20/21 जून	स्वाती	18	49	0	18	5	47	11	16
21/22 जून	विशा.	16	45	22	09	3	34	9	00
22/23 जून	अनु.	14	22	19	43	1	05	6	27
23/24 जून	ज्ये.	11	48	17	09	22	29	3	50
24/25 जून	मूल	9	11	14	33	19	56	1	18
25 जून	पू.षा.	6	40	12	06	17	33	22	59
26 जून	उ.पा.	4	25	9	55	15	29	21	03
27 जून	श्रवण	2	36	8	17	13	59	19	41
28 जून	धनि.	1	22	7	14	13	00	18	57
29 जून	शत.	0	49	6	52	12	56	18	59
30 जून	पू.भा.	1	02	7	17	13	33	19	43
1 जुला.	उ.भा.	2	03	8	29	14	56	21	23
2 जुला.	रेवती	3	49	10	25	17	02	23	38
3/4 जुला.	अश्वि.	6	14	12	57	19	39	2	22
4/5 जुला.	भरणी	9	05	15	52	22	38	5	25

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
जुला. 2021	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
5/6 जुला.	कृति.	12	12	18	59	1	46	8	33
6/7 जुला.	रोहि.	15	20	22	05	4	49	11	34
7/8 जुला.	मृग.	18	19	0	59	7	41	14	19
8/9 जुला.	आर्द्रा	20	59	3	33	10	06	16	40
9/10 जुला.	पुन.	23	14	5	41	12	08	18	38
11 जुला.	पुष्य	1	02	7	22	13	42	20	02
12 जुला.	आश्ले.	2	22	8	35	14	48	21	01
13 जुला.	मघा	3	14	9	21	15	27	21	34
14 जुला.	पू.फा.	3	41	9	41	15	42	21	43
15 जुला.	उ.फा.	3	43	9	39	15	32	21	27
16 जुला.	हस्त	3	21	9	10	14	59	20	48
17 जुला.	चित्रा	2	37	8	21	14	07	19	48
18 जुला.	स्वाती	1	32	7	11	12	50	18	29
19 जुला.	विशा.	0	08	5	43	11	17	16	54
19/20जुला.	अनु.	22	27	3	58	9	30	15	02
20/21जुला.	ज्ये.	20	33	2	02	7	32	13	01
21/22जुला.	मूल	18	30	23	59	5	27	10	56
22/23जुला.	पू.षा.	16	25	21	55	3	26	8	56
23/24जुला.	उ.षा.	14	26	19	58	1	33	7	07
24/25जुला.	श्रवण	12	40	18	19	23	59	5	39
25/26जुला.	धनि.	11	18	17	05	22	48	4	39
26/27जुला.	शत.	10	26	16	23	22	20	4	17
27/28जुला.	पू.भा.	10	14	16	22	22	29	4	33
28/29जुला.	उ.भा.	10	45	17	04	23	24	5	43
29/30जुला.	रेवती	12	02	18	32	1	02	7	32
30/31जुला.	अश्वि.	14	02	20	41	3	20	9	51
31/1 अग.	भरणी	16	38	23	22	6	07	12	52
1/2 अग.	कृति.	19	36	2	23	9	09	15	56
2/3 अग.	रोहि.	22	43	5	28	12	14	18	59
4 अग.	मृग.	1	44	8	24	15	07	21	45
5/6 अग.	आर्द्रा.	4	25	10	58	17	31	0	04
6/7 अग.	पुर्न.	6	37	13	02	19	26	1	54
7/8 अग.	पुष्य	8	16	14	32	20	47	3	03
8/9 अग.	आश्ले.	9	19	15	27	21	34	3	42

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
अग. 2021	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
9/10 अग.	मघा.	9	50	15	51	21	51	3	52
10/11 अग.	पू.फा.	9	53	15	48	21	42	3	37
11/12 अग.	उ.फा.	9	32	15	23	21	13	3	03
12/13 अग.	हस्त	8	53	14	40	20	26	2	13
13/14 अग.	चित्रा	8	00	13	44	19	29	1	12
14/15 अग.	स्वाती	6	56	12	37	18	20	0	02
15 अग.	विशा.	5	44	11	24	17	05	22	46
16 अग.	अनु.	4	26	10	05	15	44	21	23
17 अग.	ज्ये.	3	02	8	40	14	19	19	57
18 अग.	मूल	1	35	7	13	12	51	18	29
19 अग.	पू.षा.	0	07	5	46	11	24	17	03
19/20 अग.	उ.षा.	22	42	4	22	10	03	15	44
20/21 अग.	श्रवण	21	25	3	09	8	53	14	37
21/22 अग.	धनि.	20	21	2	11	7	57	13	50
22/23 अग.	शत.	19	40	1	36	7	33	13	30
23/24 अग.	पू.भा.	19	26	1	31	7	37	13	38
24/25 अग.	उ.भा.	19	47	2	02	8	18	14	33
25/26 अग.	रेवती	20	48	3	13	9	39	16	04
26/27 अग.	अश्वि	22	29	5	03	11	38	18	13
28 अग.	भरणी	0	47	7	29	14	11	20	53
29 अग.	कृति.	3	35	10	20	17	07	23	53
30/31 अग.	रोहि.	6	39	13	25	20	12	2	58
31/1 सितं.	मृग.	9	44	16	26	23	12	5	53
1/2 सितं.	आर्द्रा	12	34	19	10	1	45	8	21
2/3 सितं.	पुन.	14	57	21	23	3	51	10	19
3/4 सितं.	पुष्य	16	42	22	58	5	13	11	29
4/5 सितं.	आश्ले.	17	45	23	50	5	56	12	02
5/6 सितं.	मघा	18	07	0	03	5	59	11	55
6/7 सितं.	पू.फा.	17	51	23	40	5	28	11	16
7/8 सितं.	उ.फा.	17	05	22	50	4	30	10	13
8/9 सितं.	हस्त	15	56	21	35	3	13	8	52
9/10 सितं.	चित्रा	14	31	2	08	1	45	7	21
10/11सितं.	स्वाती	12	58	18	34	0	11	5	47
11/12सितं.	विशा.	11	23	17	00	22	36	4	13

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
सितं. 2021	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
12/13सितं.	अनु.	9	50	15	28	21	07	2	46
13/14सितं.	ज्ये.	8	24	14	04	19	45	1	25
14/15सितं.	मूल	7	05	12	47	18	30	0	13
15 सितं.	पू.षा.	5	55	11	40	17	26	23	11
16 सितं.	उ.षा.	4	56	10	43	16	33	22	21
17 सितं.	श्रवण	4	09	10	01	15	52	21	44
18 सितं.	धनि.	3	36	9	32	15	26	21	24
19 सितं.	शत.	3	21	9	23	15	24	21	26
20 सितं.	पू.भा.	3	28	9	36	15	45	21	51
21 सितं.	उ.भा.	4	02	10	18	16	34	22	50
22/23सितं.	रेवती	5	06	11	30	17	55	0	20
23/24सितं.	अश्वि.	6	44	13	16	19	49	2	22
24/25सितं.	भरणी	8	54	15	34	22	13	4	53
25/26सितं.	कृति.	11	33	18	17	1	03	7	48
26/27सितं.	रोहि.	14	33	21	20	4	08	10	55
27/28सितं.	मृग.	17	42	0	27	7	14	13	59
28/29सितं.	आर्द्रा	20	44	3	24	10	05	16	46
29/30सितं.	पुन.	23	26	5	58	12	29	19	05
1 अक्तू.	पुष्य	1	33	7	54	14	16	20	37
2 अक्तू.	आश्ले.	2	58	9	07	15	17	21	26
3 अक्तू.	मघा	3	35	9	33	15	30	21	28
4 अक्तू.	पू.फा.	3	26	9	13	15	01	20	48
5 अक्तू.	उ.फा.	2	35	8	17	13	52	19	31
6 अक्तू.	हस्त	1	10	6	42	12	15	17	48
6/7 अक्तू.	चित्रा	23	20	4	48	10	18	15	45
7/8 अक्तू.	स्वाती	21	13	2	39	8	06	13	33
8/9 अक्तू.	विशा.	18	59	0	26	5	53	11	20
9/10 अक्तू.	अनु.	16	47	22	16	3	46	9	15
10/11अक्तू.	ज्ये.	14	44	20	17	1	50	7	23
11/12अक्तू.	मूल.	12	56	18	33	0	11	5	49
12/13अक्तू.	पू.षा.	11	26	17	09	22	53	4	36
13/14अक्तू.	उ.षा.	10	19	16	06	21	57	3	46
14/15अक्तू.	श्रवण	9	35	15	30	21	26	3	21
15/16अक्तू.	धनि.	9	16	15	17	21	16	3	21

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
अक्तू. 2021	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
16/17 अक्तू.	शत.	9	22	15	30	21	37	3	45
17/18 अक्तू.	पू.भा.	9	53	16	07	22	21	4	33
18/19 अक्तू.	उ.भा.	10	49	17	10	23	30	5	51
19/20 अक्तू.	रेवती	12	12	18	40	1	07	7	34
20/21 अक्तू.	अश्वि.	14	02	20	36	3	09	9	43
21/22 अक्तू.	भरणी	16	17	22	57	5	36	12	16
22/23 अक्तू.	कृति.	18	56	1	39	8	25	15	09
23/24 अक्तू.	रोहि.	21	53	4	40	11	28	18	15
25 अक्तू.	मृग.	1	02	7	49	14	37	21	24
26/27 अक्तू.	आर्द्रा	4	11	10	55	17	40	0	24
27/28 अक्तू.	पुन.	7	08	13	46	20	25	3	06
28/29 अक्तू.	पुष्य	9	41	16	10	22	40	5	09
29/30 अक्तू.	आश्ले	11	38	17	56	0	15	6	34
30/31 अक्तू.	मघा	12	52	18	58	1	04	7	10
31/1 नवं.	पू.फा.	13	16	19	10	1	05	6	59
1/2 नवं.	उ.फा.	12	53	18	39	0	19	6	01
2/3 नवं.	हस्त	11	44	17	17	22	51	4	25
3/4 नवं.	चित्रा	9	58	15	24	20	53	2	16
4 नवं.	स्वाती	7	42	13	03	18	25	23	46
5 नवं.	विशा.	5	07	10	26	15	45	21	04
6 नवं.	अनु.	2	23	7	42	13	01	18	20
6/7 नवं.	ज्ये.	23	39	5	00	10	22	15	44
7/8 नवं.	मूल.	21	05	2	31	7	57	13	23
8/9 नवं.	पू.षा.	18	49	0	22	5	54	11	27
9/10 नवं.	उ.षा.	17	00	22	37	4	21	10	02
10/11 नवं.	श्रवण	15	42	21	31	3	21	9	10
11/12 नवं.	धनि.	14	59	20	55	2	51	8	54
12/13 नवं.	शत.	14	53	21	01	3	09	9	17
13/14 नवं.	पू.भा.	15	25	21	40	3	56	10	11
14/15 नवं.	उ.भा.	16	31	22	55	5	20	11	45
15/16 नवं.	रेवती	18	09	0	40	7	12	13	43
16/17 नवं.	अश्वि.	20	14	2	51	9	29	16	06
17/18 नवं.	भरणी	22	43	5	24	12	06	18	48
19 नवं.	कृति.	1	29	8	13	14	59	21	44

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
नवं. 2021	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
20/21 नवं.	रोहि.	4	29	11	16	18	02	0	49
21/22 नवं.	मृग.	7	36	14	23	21	10	3	57
22/23 नवं.	आर्द्रा	10	44	17	29	0	14	6	59
23/24 नवं.	पुन.	13	44	20	25	3	07	9	50
24/25 नवं.	पुष्य	16	29	23	04	5	39	12	14
25/26 नवं.	आश्ले	18	49	1	16	7	42	14	09
26/27 नवं.	मघा	20	36	2	53	9	09	15	26
27/28 नवं.	पू.फा.	21	43	3	48	9	54	16	00
28/29 नवं.	उ.फा.	22	05	4	04	9	56	15	50
29/30 नवं.	हस्त	21	42	3	25	9	08	14	51
30/1 दिसं.	चित्रा	20	34	2	09	7	45	13	16
1/2 दिसं.	स्वाती	18	47	0	12	5	37	11	02
2/3 दिसं.	विशा.	16	27	21	46	3	06	8	26
3/4 दिसं.	अनु.	13	44	19	00	0	15	5	31
4/5 दिसं.	ज्ये.	10	47	16	02	21	17	2	32
5 दिसं.	मूल	7	47	13	04	18	20	23	37
6 दिसं.	पू.षा.	4	54	10	15	15	37	20	58
7 दिसं.	उ.षा.	2	19	7	44	13	14	18	43
8 दिसं.	श्रवण	0	12	5	49	11	26	17	03
8/9 दिसं.	धनि.	22	40	4	26	10	10	16	01
9/10 दिसं.	शत.	21	51	3	50	9	50	15	49
10/11 दिसं.	पू.भा.	21	48	3	57	10	08	16	17
11/12 दिसं.	उ.भा.	22	32	4	54	11	16	17	38
13 दिसं.	रेवती	0	00	6	31	13	03	19	34
14 दिसं.	अश्वि.	2	05	8	44	15	22	22	01
15/16 दिसं.	भरणी	4	40	11	24	18	07	0	51
16/17 दिसं.	कृति.	7	35	14	21	21	08	3	54
17/18 दिसं.	रोहि.	10	40	17	27	0	15	7	02
18/19 दिसं.	मृग.	13	49	20	35	3	21	10	06
19/20 दिसं.	आर्द्रा.	16	52	23	35	6	19	13	03
20/21 दिसं.	पुन.	19	46	2	26	9	06	15	47
21/22 दिसं.	पुष्य	22	25	5	00	11	35	18	10
23 दिसं.	आश्ले.	0	45	7	14	13	43	20	12
24 दिसं.	मघा	2	41	9	03	15	26	21	48

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
दिसं. 2021	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
25 दिसं.	पू.फा.	4	10	10	24	16	37	22	51
26 दिसं.	उ.फा.	5	05	11	14	17	18	23	22
27 दिसं.	हस्त	5	26	11	21	17	17	23	12
28 दिसं.	चित्रा	5	07	10	54	16	44	22	27
29 दिसं.	स्वाती	4	11	9	48	15	24	21	01
30 दिसं.	विशा.	2	38	8	08	13	37	19	08
31 दिसं.	अनु.	0	34	5	56	11	19	16	42
31/1 1 जन.22	ज्ये.	22	04	3	22	8	41	13	59
1/2 जन.	मूल.	19	17	0	33	5	50	11	07
2/3 जन.	पू.षा.	16	23	21	40	2	58	8	16
3/4 जन.	उ.षा.	13	33	18	52	0	16	5	37
4/5 जन.	श्रवण	10	57	16	24	21	52	3	19
5/6 जन.	धनि.	8	46	14	20	19	54	1	33
6/7 जन.	शत.	7	11	12	58	18	46	0	34
7/8 जन.	पू.भा.	6	21	12	19	18	17	0	15
8/9 जन.	उ.भा.	6	20	12	32	18	45	0	58
9/10 जन.	रेवती	7	10	13	35	19	59	2	24
10/11 जन.	अश्वि.	8	49	15	24	22	00	4	35
11/12 जन.	भरणी	11	10	17	52	0	35	7	18
12/13 जन.	कृति	14	00	20	46	3	33	10	20
13/14 जन.	रोहिणी	17	07	23	55	6	42	13	30
14/15 जन.	मृग.	20	18	3	04	9	51	16	35
15/16 जन.	आर्द्रा	23	21	6	03	12	45	19	27
17 जन.	पुन.	2	09	8	46	15	23	22	02
18/19 जन.	पुष्य	4	37	11	08	17	40	0	11
19/20 जन.	आश्ले	6	42	13	07	19	33	1	59
20/21 जन.	मघा	8	24	14	44	21	03	3	23
21/22 जन.	पू.फा.	9	43	15	57	22	10	4	24
22/23 जन.	उ.फा.	10	38	16	48	22	54	5	02
23/24 जन.	हस्त	11	09	17	10	23	12	5	14
24/25 जन.	चित्रा	11	15	17	11	23	08	5	02
25/26 जन.	स्वाती	10	55	16	43	22	30	4	18
26/27 जन.	विशा.	10	06	15	47	21	29	3	12
27/28 जन.	अनु.	8	51	14	26	20	00	1	35

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण ➘		1		2		3		4	
जन. 2022	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
28 जन.	ज्ये.	7	10	12	39	18	09	23	39
29 जन.	मूल	5	08	10	33	15	59	21	24
30 जन.	पू.षा.	2	49	8	12	13	36	19	00
31 जन.	उ.षा.	0	23	5	46	11	10	16	34
31/1 फर.	श्रवण	21	58	3	24	8	51	14	18
1/2 फर.	धनि.	19	44	1	15	6	45	12	18
2/3 फर.	शत.	17	53	23	33	5	14	10	55
3/4 फर.	पू.भा.	16	35	22	24	4	14	10	03
4/5 फर.	उ.भा.	15	58	22	01	4	03	10	06
5/6 फर.	रेवती	16	09	22	24	4	40	10	55
6/7 फर.	अश्वि.	17	10	23	37	6	05	12	32
7/8 फर.	भरणी	18	59	1	36	8	13	14	50
8/9 फर.	कृति.	21	27	4	09	10	54	17	39
10 फर.	रोहि.	0	23	7	10	13	58	20	45
11 फर.	मृग.	3	32	10	18	17	06	23	51
12/13 फर.	आर्द्रा.	6	37	13	19	20	02	2	45
13/14 फर.	पुर्न.	9	27	16	03	22	41	5	19
14/15 फर.	पुष्य	11	53	18	22	0	51	7	20
15/16 फर.	आश्ले.	13	49	20	10	2	32	8	53
16/17 फर.	मघा	15	14	21	28	3	43	9	57
17/18 फर.	पू.फा.	16	11	22	19	4	26	19	34
18/19 फर.	उ.फा.	16	42	22	46	4	47	10	49
19/20 फर.	हस्त	16	51	22	49	4	46	10	44
20/21 फर.	चित्रा	16	42	22	37	4	31	10	24
21/22 फर.	स्वाती	16	17	22	07	3	56	9	46
22/23 फर.	विशा.	15	36	21	22	3	09	8	56
23/24 फर.	अनु.	14	41	20	23	2	06	7	49
24/25 फर.	ज्ये.	13	31	19	10	0	49	6	28
25/26 फर.	मूल	12	07	17	43	23	20	4	56
26/27 फर.	पू.षा.	10	32	16	06	21	41	3	15
27/28 फर.	उ.षा.	8	49	14	22	19	56	1	29
28 फर.	श्रवण	7	02	12	36	18	11	23	45
1 मार्च	धनि	5	19	10	54	16	31	22	10

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण ➘		1		2		3		4	
मार्च 2022	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
2 मार्च	शत.	3	48	9	30	15	13	20	55
3 मार्च	पू.भा.	2	37	8	27	14	16	20	03
4 मार्च	उ.भा.	1	56	7	55	13	54	19	53
5 मार्च	रेवती	1	52	8	01	14	11	20	20
6 मार्च	अश्वि.	2	29	8	49	15	10	21	31
7 मार्च	भरणी	3	51	10	22	16	52	23	33
8/9 मार्च	कृति.	5	54	12	31	19	13	1	52
9/10 मार्च	रोहि.	8	31	15	16	22	00	4	45
10/11 मार्च	मृग.	11	30	18	16	1	03	7	49
11/12 मार्च	आर्द्रा	14	35	21	19	4	04	10	48
12/13 मार्च	पुन.	17	32	0	10	6	50	13	30
13/14 मार्च	पुष्य	20	06	2	36	9	07	15	38
14/15 मार्च	आश्ले.	22	08	4	29	10	51	17	12
15/16 मार्च	मघा	23	33	5	45	11	57	18	09
17 मार्च	पू.फा.	0	21	6	24	12	28	18	31
18 मार्च	उ.फा.	0	34	6	32	12	27	18	22
19 मार्च	हस्त	0	18	6	08	11	58	17	48
19/20 मार्च	चित्रा	23	38	5	23	11	11	16	56
20/21 मार्च	स्वाती	22	40	4	23	10	05	15	48
21/22 मार्च	विशा.	21	31	3	12	8	52	14	33
22/23 मार्च	अनु.	20	14	1	54	7	33	13	13
23/24 मार्च	ज्ये.	18	53	0	32	6	12	11	51
24/25 मार्च	मूल	17	30	23	09	4	49	10	28
25/26 मार्च	पू.षा.	16	07	21	47	3	27	9	07
26/27 मार्च	उ.षा.	14	47	20	28	2	10	7	51
27/28 मार्च	श्रवण.	13	32	19	15	0	58	6	41
28/29 मार्च	धनि.	12	24	18	10	23	55	5	42
29/30 मार्च	शत.	11	28	17	18	23	09	4	59
30/31 मार्च	पू.भा.	10	49	16	43	22	38	4	33
31/1 अप्रै.	उ.भा.	10	31	16	33	22	36	4	38
1/2 अप्रै.	रेवती	10	40	16	50	23	01	5	11
2/3 अप्रै.	अश्वि.	11	21	17	40	23	59	6	18

राहु कालम्

शुभ कार्यों में विशेषतया त्याज्य

दक्षिण भारत में राहु-कालम का विशेष प्रचलन है। विशेष वार प्रतिदिन डेढ़ घण्टे के लिए यह अनिष्ट समय होता है। जिसे शुभ कार्यारम्भ में यथासम्भव टाल देना चाहिए। दक्षिणी भारत में राहु कालम का विशेष विचार किया जाता है।

सोमवार–प्रातः 7/30 से प्रातः 9 बजे तक
मंगलवार–अपराह्न 3/00 से 4/30 बजे तक
बुधवार–दोपहर 12/00 से 1/30 बजे तक
बृहस्पतिवार–दोपहर 1/30 से 3/00 बजे तक
शुक्रवार–प्रातः 10/30 से दुपै. 12 बजे तक
शनिवार–प्रातः 9/00 से प्रातः 10/30 बजे तक
रविवार–सायं 4/30 से सायं 6/00 बजे तक

नोट–यह समयावधि प्रत्येक नगर के दिनमान के अनुसार परिवर्तित होती रहती है।

(पृष्ठ 102 का शेष भाग)

(चतुर्ग्रही योग)

सू.+बु.+शु.+रा. ➽ 14 मई से 25 मई (वृष)
सू.+मं.+बु.+के. ➽ 5 दिसं. से 9 दिसं. (वृश्चिक)
मं.+बु.+शु.+श. ➽ 27 फर. से 5 मार्च (मकर) (2022 ई.)

(नवपंचम योग)–वि. सं. २०७८

गुरु-शुक्र ➽ 28 मई से 21 जून (मिथुन-कुंभ)
गुरु-शुक्र ➽ 5 सितं. से 14 सितं. (तुला-कुंभ)

(समसप्तक योग)–संवत् २०७८

मंग.-शनि ➽ 2 जून से 20 जुला. (कर्क-मकर)
सूर्य-शनि ➽ 16 जुला. से 15 अग. (कर्क-मकर)
गुरु-शुक्र ➽ 17 जुला. से 10 अग. (सिंह-कुंभ)
बुध-शनि ➽ 25 जुला. से 8 अग. (कर्क-मकर)
बुध-गुरु ➽ 9 अग. से 25 अग. (सिंह-कुंभ)
सूर्य-गुरु ➽ 16 अग. से 14 सितं. (सिंह-कुंभ

कालसर्प योग–संवत् २०७८

14 दिसं. से संवतान्त 1 अप्रै, 22 तक (वृष-वृश्चिक)

षडाष्टक योग

मंग.-शनि ➽ 13 अप्रै. से 1 जून (मिथु.-मकर)

प्रातः साढ़े पाँच (5/30 घं. मिं.) से अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

यदि आपको प्रात: साढ़े पाँच बजे के ग्रहस्पष्ट के अतिरिक्त किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों, तो नीचे लिखी तालिका (Table) का प्रयोग करके अभीष्ट समय के ग्रहस्पष्ट प्राप्त कर सकते हैं–मान लीजिए, आपको 15 अप्रैल, 2021 ई. की दोपहर एक (1) बजे का सूर्य स्पष्ट करना है। आगामी पृष्ठों में **15 अप्रैल** के सामने सूर्य स्पष्ट (0-01°-06′-04″) राशि-अंशादि लिखे गए हैं, जो कि प्रात: साढ़े पाँच बजे के हैं। हमें दोपहर 1 अर्थात् 13/00 बजे के सूर्य स्पष्ट चाहिए। तेरह (13) से साढ़े पाँच का अन्तर 7 घंटे 30 मिंट हुआ। अब 7 घण्टे 30 मिंट की गति को 15 अप्रैल में जोड़ दें, तो हमें दोपहर 1 बजे का स्पष्ट मिल जाएगा। (16) अप्रै. में से 15 अप्रै. का सूर्य स्पष्ट घटा देने से हमें सूर्य की दैनिक गति (58′/44″) प्राप्त हुई। इस दै. गति द्वारा नीचे लिखी तालिका में 7 घंटे की गति (17-07) कला तथा 30 मिनट की गति (1.13) कला प्राप्त हुई। जमा करने पर साढ़े सात घण्टे की गति (18′.20) हुई, इसको **15 अप्रैल प्रात: 5/30 के सूर्यस्पष्ट** में जमा कर देने पर हमें 15 अप्रैल की दुपै. एक बजे का सूर्यस्पष्ट (0-01°-24′-24″) प्राप्त हो जाएगा॥ ग्रहस्पष्ट करने की अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी पुस्तक ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड) का अध्ययन करें॥

ग्रहों की दैनिक गति के अनुसार प्रति घण्टा मिनटादि की तालिका

दै. गति (24 घं.)	गति (30 मिंट)	गति 1 घण्टे	गति 2 घण्टे	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति (8 घं.)	गति (9 घं.)
कला	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. चि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
3'	0.04	0.07	0.15	0.22	0.30	0.37	0.45	0.52	1.00	1.07
5'	0.06	0.12	0.25	0.37	0.50	1.02	1.11	1.27	1.40	1.52
7'	0.09	0.17	0.35	0.52	1.10	1.27	1.45	2.02	2.20	2.37
9'	0.11	0.22	0.45	1.07	1.30	1.52	2.15	2.37	3.00	3.22
11'	0.14	0.27	0.55	1.22	1.50	2.17	2.45	3.12	3.40	4.07
13'	0.16	0.32	1.05	1.37	2.10	2.42	3.15	3.47	4.20	4.52
15'	0.19	0.37	1.15	1.52	2.30	3.07	3.45	4.22	5.00	5.37
17'	0.21	0.42	1.25	2.07	2.50	3.32	4.15	4.57	5.40	6.22
19'	0.24	0.47	1.35	2.22	3.10	3.57	4.45	5.32	6.20	7.07
21'	0.26	0.52	1.45	2.37	3.30	4.22	5.15	6.07	7.00	7.52
23'	0.29	0.57	1.55	2.52	3.50	4.47	5.45	6.42	7.40	8.37
25'	0.31	1.02	2.05	3.07	4.10	5.12	6.15	7.17	8.20	9.22
27'	0.34	1.07	2.15	3.22	4.30	5.37	6.45	7.52	9.00	10.07
29'	0.36	1.12	2.25	3.37	4.50	6.02	7.15	8.27	9.40	10.52
31'	0.39	1.17	2.35	3.52	5.10	6.27	7.45	9.02	10.20	11.37
33'	0.41	1.22	2.45	4.07	5.30	6.52	8.15	9.37	11.00	12.22
35'	0.44	1.27	2.55	4.22	5.50	7.17	8.45	10.12	11.40	13.07
37'	0.46	1.32	3.05	4.37	6.10	7.42	9.15	10.47	12.20	13.52
39'	0.49	1.37	3.15	4.52	6.30	8.07	9.45	11.22	13.00	14.37
41'	0.51	1.42	3.25	5.07	6.50	8.32	10.15	11.57	13.40	15.22
43'	0.54	1.47	3.35	5.22	7.10	8.57	10.45	12.32	14.20	16.07
45'	0.56	1.52	3.45	5.37	7.30	9.22	11.15	13.07	15.00	16.52
47'	0.59	1.57	3.55	5.52	7.50	9.47	11.45	13.42	15.40	17.37
49'	1.01	2.02	4.05	6.07	8.10	10.12	12.15	14.17	16.20	18.22
51'	1.04	2.07	4.15	6.22	8.30	10.37	12.45	14.52	17.00	19.07
53'	1.06	2.12	4.25	6.37	8.50	11.02	13.15	15.27	17.40	19.52
55'	1.09	2.17	4.35	6.52	9.10	11.27	13.45	16.02	18.20	20.37
57'	1.11	2.22	4.45	7.07	9.30	11.52	14.15	16.37	19.00	21.22
58'	1.12	2.25	4.50	7.15	9.40	12.05	14.30	16.55	19.20	21.45
59'	1.14	2.27	4.55	7.27	9.50	12.17	14.45	17.12	19.40	22.07
60'	1.15	2.30	5.00	7.30	10.00	12.30	15.00	17.30	20.00	22.30

दै.गति (24 घं.)	गति (30 मिं.)	गति (1 घं.)	गति (2 घं.)	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति 8 घण्टे	गति 9 घण्टे
कला	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
61'	1.16	2.32	5.05	7.37	10.10	12.42	15.15	17.47	20.20	22.52
63'	1.19	2.37	5.15	7.52	10.30	13.07	15.45	18.22	21.00	23.37
65'	1.21	2.42	5.25	8.07	10.50	13.32	16.15	18.57	21.40	24.22
67'	1.24	2.47	5.35	8.22	11.10	13.57	16.45	19.25	22.20	25.07
69'	1.26	2.52	5.45	8.37	11.30	14.22	17.15	20.07	23.00	25.52
71'	1.29	2.57	5.55	8.52	11.50	14.57	17.45	20.42	23.40	26.37
73'	1.31	3.02	6.05	9.07	12.10	15.12	18.15	21.17	24.20	27.22
75'	1.34	3.07	6.15	9.22	12.30	15.37	18.45	21.52	25.00	28.07
77'	1.36	3.12	6.25	9.37	12.50	16.02	19.15	22.27	25.40	28.52
79'	1.39	3.17	6.35	9.52	13.10	16.27	19.45	23.02	26.20	29.37
81'	1.41	3.22	6.45	10.07	13.30	16.52	20.15	23.37	27.00	30.22
83'	1.44	3.27	6.55	10.22	13.50	17.17	20.45	24.12	27.40	31.07
85'	1.46	3.32	7.05	10.37	14.10	17.42	21.15	24.47	28.20	31.52
87'	1.49	3.37	7.15	10.52	14.30	18.07	21.45	25.22	29.00	32.37
89'	1.51	3.42	7.25	11.07	14.50	18.32	22.15	25.57	29.40	33.22
90'	1.52	3.45	7.30	11.15	15.00	18.45	22.30	26.15	30.00	33.45
92'	1.55	3.50	7.40	11.30	15.20	19.10	23.00	26.50	30.40	34.30
94'	1.57	3.55	7.50	11.45	15.40	19.35	23.30	27.25	31.20	35.15
96'	2.00	4.00	8.00	12.00	16.00	20.00	24.00	28.00	32.00	36.00
98'	2.02	4.05	8.10	12.15	16.20	20.25	24.30	28.35	32.40	36.45
99'	2.04	4.07	8.15	12.22	16.30	20.37	24.45	28.52	33.00	37.07
100'	2.05	4.10	8.20	12.30	16.40	20.50	25.00	29.10	33.20	37.30
102'	2.07	4.15	8.30	12.45	17.00	21.15	25.30	29.45	34.00	38.15
104'	2.10	4.20	8.40	13.00	17.20	21.30	26.00	30.20	34.40	39.00
106'	2.12	4.25	8.50	13.15	17.40	22.05	26.30	30.55	35.20	39.45
108'	2.15	4.30	9.00	13.30	18.00	22.30	27.00	31.30	36.00	40.30
110'	2.17	4.35	9.10	13.45	18.20	22.55	27.30	32.05	36.40	41.15
112'	2.20	4.40	9.20	14.00	18.40	23.20	28.00	32.40	37.20	42.00
114'	2.22	4.45	9.30	14.15	19.00	23.45	28.30	33.15	38.00	42.45
116'	2.25	4.50	9.40	14.30	19.20	24.10	29.00	33.50	38.40	43.30
118'	2.27	4.55	9.50	14.45	19.40	24.35	29.30	34.25	39.20	44.15

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5 घंटे 30 मिंट बजे) (भा. स्टैं. टा.) वि. संवत् 2078 (सन् 2021-22 ई.)

नोट–अपने अभीष्टकाल के अनुसार ग्रह स्पष्ट करने के लिए गत पृष्ठ पर दी गई सारिणी देखें। (11 अप्रै. से 10 मई तक) (1 अप्रैल, 2021 ई० को अयनांश = 24°/08'/57" 1 मई, 2021 ई० को अयनांश = 24°/9'/1")

ता. अप्रै.	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	तारीख
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
11	13 17 44	11 27 10 42	11 14 55 11	1 28 17 55	11 18 38 3	10 0 57 46	0 1 11 19	9 17 56 25	1 19 25 4	1 17 44 22	+8 19	–0 35	11
12	13 21 41	11 28 9 36	11 27 0 24	1 28 54 5	11 20 35 44	10 1 8 32	0 2 25 39	9 18 0 17	1 19 21 54	1 17 35 10	8 41	+4 35	12
13	13 25 37	11 29 8 27	0 8 58 3	1 29 30 15	11 22 34 50	10 1 19 13	0 3 39 57	9 18 4 4	1 19 18 43	1 17 27 28	9 3	9 33	13
14	13 29 34	0 0 7 16	0 20 49 41	2 0 6 28	11 24 35 18	10 1 29 47	0 4 54 14	9 18 7 47	1 19 15 32	1 17 21 48	9 25	14 8	14
15	13 33 30	0 1 6 4	1 2 37 27	2 0 42 41	11 26 37 4	10 1 40 15	0 6 8 30	9 18 11 24	1 19 12 21	1 17 18 23	9 46	18 10	15
16	13 37 27	0 2 4 48	1 14 24 2	2 1 18 56	11 28 40 6	10 1 50 37	0 7 22 45	9 18 14 56	1 19 9 11	1 17 17 3	10 7	21 28	16
17	13 41 24	0 3 3 31	1 26 12 59	2 1 55 11	0 0 44 17	10 2 0 52	0 8 36 58	9 18 18 24	1 19 6 0	1 17 17 24	10 29	23 53	17
18	13 45 20	0 4 2 12	2 8 8 19	2 2 31 28	0 2 49 31	10 2 11 0	0 9 51 10	9 18 21 46	1 19 2 49	1 17 18 43	10 50	25 16	18
19	13 49 17	0 5 0 51	2 20 14 41	2 3 7 46	0 4 55 39	10 2 21 2	0 11 5 21	9 18 25 3	1 18 59 38	1 17 20 14	11 11	25 28	19
20	13 53 13	0 5 59 27	3 2 36 59	2 3 44 5	0 7 2 34	10 2 30 57	0 12 19 31	9 18 28 15	1 18 56 28	1 17 21 9	11 31	24 25	20
21	13 57 10	0 6 58 1	3 15 20 1	2 4 20 25	0 9 10 3	10 2 40 46	0 13 33 39	9 18 31 21	1 18 53 17	1 17 20 51	11 52	22 7	21
22	14 1 6	0 7 56 33	3 28 28 4	2 4 56 45	0 11 17 53	10 2 50 28	0 14 47 46	9 18 34 23	1 18 50 6	1 17 18 59	12 12	18 37	22
23	14 5 2	0 8 55 3	4 12 4 5	2 5 33 7	0 13 25 50	10 3 0 2	0 16 1 52	9 18 37 19	1 18 46 55	1 17 15 33	12 32	14 2	23
24	14 8 59	0 9 53 30	4 26 9 2	2 6 9 29	0 15 33 39	10 3 9 29	0 17 15 57	9 18 40 9	1 18 43 45	1 17 10 53	12 52	8 33	24
25	14 12 56	0 10 51 56	5 10 41 1	2 6 45 53	0 17 41 1	10 3 18 50	0 18 30 0	9 18 42 55	1 18 40 34	1 17 5 37	13 12	+2 27	25
26	14 16 53	0 11 50 19	5 25 35 2	2 7 22 16	0 19 47 40	10 3 28 2	0 19 44 2	9 18 45 35	1 18 37 23	1 17 0 29	13 31	–3 57	26
27	14 20 49	0 12 48 41	6 10 43 16	2 7 58 41	0 21 53 16	10 3 37 8	0 20 58 2	9 18 48 10	1 18 34 12	1 16 56 14	13 50	–10 15	27
28	14 24 46	0 13 47 1	6 25 56 5	2 8 35 6	0 23 57 30	10 3 46 6	0 22 12 2	9 18 50 39	1 18 31 2	1 16 53 22	14 9	–15 58	28
29	14 28 42	0 14 45 19	7 11 3 29	2 9 11 33	0 26 0 5	10 3 54 57	0 23 26 0	9 18 53 2	1 18 27 51	1 16 52 4	14 28	–20 39	29
30	14 32 39	0 15 43 35	7 25 56 51	2 9 47 59	0 28 0 42	10 4 3 40	0 24 39 57	9 18 55 21	1 18 24 40	1 16 52 13	14 46	–23 54	30
मई	14 36 35	0 16 41 50	8 10 29 53	2 10 24 27	0 29 59 5	10 4 12 15	0 25 53 54	9 18 57 33	1 18 21 29	1 16 53 19	15 5	–25 27	मई
2	14 40 32	0 17 40 3	8 24 39 3	2 11 0 56	1 1 54 57	10 4 20 43	0 27 7 49	9 18 59 41	1 18 18 19	1 16 54 47	15 23	–25 18	2
3	14 44 28	0 18 38 15	9 8 23 20	2 11 37 25	1 3 48 5	10 4 29 2	0 28 21 43	9 19 1 42	1 18 15 8	1 16 55 55	15 41	–23 35	3
4	14 48 25	0 19 36 25	9 21 43 46	2 12 13 55	1 5 38 16	10 4 37 14	0 29 35 36	9 19 3 38	1 18 11 57	1 16 56 13	15 58	–20 36	4
5	14 52 21	0 20 34 34	10 4 42 37	2 12 50 26	1 7 25 20	10 4 45 17	1 0 49 29	9 19 5 28	1 18 8 46	1 16 55 21	16 15	–16 40	5
6	14 56 18	0 21 32 42	10 17 22 48	2 13 26 58	1 9 9 5	10 4 53 12	1 2 3 20	9 19 7 13	1 18 5 36	1 16 53 17	16 32	–12 5	6
7	15 0 15	0 22 30 48	10 29 47 32	2 14 3 31	1 10 49 24	10 5 0 59	1 3 17 10	9 19 8 51	1 18 2 25	1 16 50 13	16 49	–7 5	7
8	15 4 11	0 23 28 52	11 11 59 46	2 14 40 5	1 12 26 11	10 5 8 37	1 4 31 0	9 19 10 24	1 17 59 14	1 16 46 33	17 5	–1 55	8
9	15 8 8	0 24 26 56	11 24 2 23	2 15 16 40	1 13 59 19	10 5 16 6	1 5 44 48	9 19 11 52	1 17 56 3	1 16 42 45	17 22	+3 16	9
10	15 12 4	0 25 24 57	0 5 57 52	2 15 53 15	1 15 28 42	10 5 23 27	1 6 58 35	9 19 13 13	1 17 52 53	1 16 39 16	17 37	8 18	10

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5घं–30मि) (11 मई से 12 जून 2021 ई० तक) 1 जून 2021 ई. को अयनांश 24°/9'/6"

ता. मई	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	ता.
11	15 16 1	0 26 22 57	0 17 48 32	2 16 29 51	1 16 54 17	10 5 30 39	1 8 12 21	9 19 14 29	1 17 49 42	1 16 36 28	+17 53	13 0	11
12	15 19 57	0 27 20 56	0 29 36 28	2 17 6 29	1 18 16 0	10 5 37 43	1 9 26 6	9 19 15 38	1 17 46 31	1 16 34 37	18 8	17 13	12
13	15 23 54	0 28 18 53	1 11 23 48	2 17 43 7	1 19 33 46	10 5 44 37	1 10 39 50	9 19 16 42	1 17 43 20	1 16 33 46	18 23	20 46	13
14	15 27 50	0 29 16 48	1 23 12 50	2 18 19 45	1 20 47 33	10 5 51 22	1 11 53 33	9 19 17 40	1 17 40 10	1 16 33 51	18 38	23 27	14
15	15 31 47	1 0 14 42	2 5 6 10	2 18 56 25	1 21 57 16	10 5 57 57	1 13 7 15	9 19 18 32	1 17 36 59	1 16 34 40	18 52	25 7	15
16	15 35 44	1 1 12 34	2 17 6 42	2 19 33 5	1 23 2 51	10 6 4 24	1 14 20 56	9 19 19 19	1 17 33 48	1 16 35 55	19 6	25 38	16
17	15 39 40	1 2 10 25	2 29 17 47	2 20 9 46	1 24 4 15	10 6 10 41	1 15 34 35	9 19 19 59	1 17 30 37	1 16 37 16	19 20	24 56	17
18	15 43 37	1 3 8 14	3 11 43 2	2 20 46 27	1 25 1 23	10 6 16 49	1 16 48 13	9 19 20 34	1 17 27 27	1 16 38 25	+19 33	23 0	18
19	15 47 33	1 4 6 1	3 24 26 12	2 21 23 9	1 25 54 13	10 6 22 47	1 18 1 50	9 19 21 2	1 17 24 16	1 16 39 7	19 46	19 54	19
20	15 51 30	1 5 3 47	4 7 30 50	2 21 59 52	1 26 42 39	10 6 28 35	1 19 15 26	9 19 21 25	1 17 21 5	1 16 39 15	19 59	15 45	20
21	15 55 26	1 6 1 31	4 20 59 51	2 22 36 35	1 27 26 39	10 6 34 14	1 20 29 0	9 19 21 42	1 17 17 54	1 16 38 52	20 11	10 43	21
22	15 59 23	1 6 59 13	5 4 54 52	2 23 13 19	1 28 6 8	10 6 39 43	1 21 42 33	9 19 21 53	1 17 14 44	1 16 38 6	20 23	+4 59	22
23	16 3 19	1 7 56 53	5 19 15 30	2 23 50 3	1 28 41 2	10 6 45 2	1 22 56 5	9 19 21 58	1 17 11 33	1 16 37 9	20 35	–1 11	23
24	16 7 16	1 8 54 33	6 3 58 59	2 24 26 48	1 29 11 18	10 6 50 11	1 24 9 35	9 19 21 57	1 17 8 22	1 16 36 15	20 46	–7 27	24
25	16 11 13	1 9 52 10	6 18 59 49	2 25 3 33	1 29 36 53	10 6 55 10	1 25 23 4	9 19 21 50	1 17 5 11	1 16 35 35	20 57	–13 26	25
26	16 15 9	1 10 49 47	7 4 10 9	2 25 40 19	1 29 57 44	10 7 0 0	1 26 36 32	9 19 21 38	1 17 2 1	1 16 35 14	21 8	–18 40	26
27	16 19 6	1 11 47 22	7 19 20 43	2 26 17 5	2 0 13 52	10 7 4 38	1 27 49 59	9 19 21 20	1 16 58 50	1 16 35 12	21 18	–22 40	27
28	16 23 2	1 12 44 55	8 4 22 7	2 26 53 52	2 0 25 15	10 7 9 7	1 29 3 25	9 19 20 56	1 16 55 39	1 16 35 22	21 28	–25 3	28
29	16 26 59	1 13 42 28	8 19 6 20	2 27 30 39	2 0 31 55	10 7 13 25	2 0 16 49	9 19 20 26	1 16 52 28	1 16 35 38	21 37	–25 37	29
30	16 30 55	1 14 40 0	9 3 27 30	2 28 7 27	2 0 33 55	10 7 17 33	2 1 30 12	9 19 19 51	1 16 49 18	1 16 35 51	21 46	–24 26	30
31	16 34 52	1 15 37 31	9 17 22 29	2 28 44 16	2 0 31 22	10 7 21 30	2 2 43 35	9 19 19 9	1 16 46 7	1 16 35 56	21 55	–21 46	31
जून	16 38 48	1 16 35 1	10 0 50 41	2 29 21 6	2 0 24 24	10 7 25 17	2 3 56 56	9 19 18 22	1 16 42 56	1 16 35 54	22 3	–17 59	जून
2	16 42 45	1 17 32 31	10 13 53 31	2 29 57 56	2 0 13 11	10 7 28 53	2 5 10 16	9 19 17 30	1 16 39 45	1 16 35 48	22 11	–13 27	2
3	16 46 42	1 18 30 0	10 26 33 55	3 0 34 46	1 29 57 55	10 7 32 18	2 6 23 36	9 19 16 31	1 16 36 35	1 16 35 43	22 19	–8 28	3
4	16 50 38	1 19 27 28	11 8 55 44	3 1 11 38	1 29 38 53	10 7 35 32	2 7 36 54	9 19 15 27	1 16 33 24	1 16 35 46	22 26	–3 16	4
5	16 54 35	1 20 24 55	11 21 2 59	3 1 48 30	1 29 16 25	10 7 38 36	2 8 50 11	9 19 14 17	1 16 30 13	1 16 36 1	22 33	+1 57	5
6	16 58 31	1 21 22 22	0 2 59 49	3 2 25 23	1 28 50 56	10 7 41 28	2 10 3 28	9 19 13 2	1 16 27 2	1 16 36 27	22 39	7 2	6
7	17 2 28	1 22 19 47	0 14 50 8	3 3 2 17	1 28 22 47	10 7 44 9	2 11 16 43	9 19 11 40	1 16 23 52	1 16 37 1	22 45	11 50	7
8	17 6 24	1 23 17 13	0 26 37 26	3 3 39 12	1 27 52 30	10 7 46 40	2 12 29 57	9 19 10 14	1 16 20 41	1 16 37 37	22 51	16 12	8
9	17 10 21	1 24 14 37	1 8 24 45	3 4 16 7	1 27 20 33	10 7 48 58	2 13 43 10	9 19 8 41	1 16 17 30	1 16 38 4	22 56	19 56	9
10	17 14 17	1 25 12 0	1 20 14 49	3 4 53 4	1 26 47 31	10 7 51 6	2 14 56 22	9 19 7 4	1 16 14 19	1 16 38 13	23 1	22 51	10
11	17 18 14	1 26 9 23	2 2 9 56	3 5 30 1	1 26 13 56	10 7 53 2	2 16 9 33	9 19 5 20	1 16 11 9	1 16 37 56	23 5	24 48	11
12	17 22 11	1 27 6 45	2 14 12 16	3 6 6 58	1 25 40 24	10 7 54 47	2 17 22 43	9 19 3 32	1 16 7 58	1 16 37 8	23 9	25 37	12

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5घं-30मि) (13 जून से 15 जुलाई, 2021 ई. तक)

1 जुलाई 2021 ई. को अयनांश 24°/9′/11″

ता. जून	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	ता.
13	17 26 7	1 28 4 7	2 26 23 42	3 6 43 57	1 25 7 28	10 7 56 21	2 18 35 52	9 19 1 38	1 16 4 47	1 16 35 52	+23 13	25 13	13
14	17 30 4	1 29 1 27	3 8 46 12	3 7 20 56	1 24 35 43	10 7 57 43	2 19 48 59	9 18 59 39	1 16 1 36	1 16 34 14	23 16	23 34	14
15	17 34 0	1 29 58 47	3 21 21 46	3 7 57 56	1 24 5 40	10 7 58 53	2 21 2 5	9 18 57 34	1 15 58 26	1 16 32 27	23 18	20 44	15
16	17 37 57	2 0 56 6	4 4 12 26	3 8 34 56	1 23 37 51	10 7 59 52	2 22 15 09	9 18 55 25	1 15 55 15	1 16 30 49	23 21	16 52	16
17	17 41 53	2 1 53 24	4 17 20 15	3 9 11 57	1 23 12 43	10 8 0 40	2 23 28 13	9 18 53 10	1 15 52 4	1 16 29 36	23 23	12 8	17
18	17 45 50	2 2 50 41	5 0 46 57	3 9 48 59	1 22 50 42	10 8 1 16	2 24 41 14	9 18 50 50	1 15 48 53	1 16 29 2	23 24	6 42	18
19	17 49 46	2 3 47 57	5 14 33 51	3 10 26 1	1 22 32 10	10 8 1 40	2 25 54 15	9 18 48 26	1 15 45 43	1 16 29 10	23 25	+0 49	19
20	17 53 43	2 4 45 13	5 28 41 13	3 11 3 4	1 22 17 24	10 8 1 53	2 27 7 14	9 18 45 56	1 15 42 32	1 16 29 55	23 26	–5 15	20
21	17 57 40	2 5 42 27	6 13 7 48	3 11 40 7	1 22 6 45	10 8 1 54	2 28 20 11	9 18 43 22	1 15 39 21	1 16 31 1	23 26	–11 12	21
22	18 1 36	2 6 39 41	6 27 50 35	3 12 17 12	1 22 0 23	10 8 1 44	2 29 33 7	9 18 40 42	1 15 36 10	1 16 32 4	23 26	–16 38	22
23	18 5 33	2 7 36 54	7 12 44 28	3 12 54 16	1 21 58 29	10 8 1 22	3 0 46 1	9 18 37 59	1 15 33 0	1 16 32 37	23 26	–21 7	23
24	18 9 29	2 8 34 7	7 27 42 34	3 13 31 21	1 22 1 10	10 8 0 49	3 1 58 53	9 18 35 10	1 15 29 49	1 16 32 20	23 25	–24 12	24
25	18 13 26	2 9 31 20	8 12 36 53	3 14 8 27	1 22 8 34	10 8 0 4	3 3 11 45	9 18 32 17	1 15 26 38	1 16 30 59	23 23	–25 34	25
26	18 17 22	2 10 28 32	8 27 19 25	3 14 45 34	1 22 20 43	10 7 59 8	3 4 24 34	9 18 29 20	1 15 23 27	1 16 28 35	23 21	–25 7	26
27	18 21 19	2 11 25 44	9 11 43 10	3 15 22 41	1 22 37 39	10 7 58 0	3 5 37 22	9 18 26 18	1 15 20 17	1 16 25 25	23 19	–22 59	27
28	18 25 15	2 12 22 55	9 25 43 16	3 15 59 49	1 22 59 21	10 7 56 41	3 6 50 9	9 18 23 12	1 15 17 6	1 16 21 55	23 17	–19 30	28
29	18 29 12	2 13 20 7	10 9 17 13	3 16 36 58	1 23 25 50	10 7 55 11	3 8 2 54	9 18 20 2	1 15 13 55	1 16 18 35	23 14	–15 5	29
30	18 33 9	2 14 17 19	10 22 24 59	3 17 14 8	1 23 57 4	10 7 53 28	3 9 15 38	9 18 16 48	1 15 10 44	1 16 15 54	23 10	–10 6	30
जुलाई 1	18 37 5	2 15 14 31	11 5 8 36	3 17 51 18	1 24 33 1	10 7 51 35	3 10 28 21	9 18 13 29	1 15 7 33	1 16 14 16	23 6	–4 50	जुलाई 1
2	18 41 2	2 16 11 43	11 17 31 37	3 18 28 30	1 25 13 36	10 7 49 30	3 11 41 2	9 18 10 7	1 15 4 23	1 16 13 47	23 2	+0 30	2
3	18 44 58	2 17 8 55	11 29 38 26	3 19 5 42	1 25 58 47	10 7 47 14	3 12 53 42	9 18 6 40	1 15 1 12	1 16 14 23	22 57	5 41	3
4	18 48 55	2 18 6 8	0 11 33 50	3 19 42 56	1 26 48 31	10 7 44 46	3 14 6 20	9 18 3 10	1 14 58 1	1 16 15 46	22 52	10 37	4
5	18 52 51	2 19 3 20	0 23 22 47	3 20 20 10	1 27 42 44	10 7 42 7	3 15 18 57	9 17 59 37	1 14 54 50	1 16 17 26	22 47	15 6	5
6	18 56 48	2 20 0 33	1 5 9 52	3 20 57 25	1 28 41 23	10 7 39 17	3 16 31 32	9 17 55 59	1 14 51 40	1 16 18 51	22 41	19 1	6
7	19 0 44	2 20 57 46	1 16 59 16	3 21 34 42	1 29 44 25	10 7 36 16	3 17 44 6	9 17 52 18	1 14 48 29	1 16 19 25	22 35	22 10	7
8	19 4 41	2 21 55 0	1 28 54 30	3 22 11 59	2 0 51 44	10 7 33 3	3 18 56 38	9 17 48 34	1 14 45 18	1 16 18 40	22 28	24 23	8
9	19 8 38	2 22 52 13	2 10 58 27	3 22 49 17	2 2 3 19	10 7 29 40	3 20 9 9	9 17 44 47	1 14 42 7	1 16 16 17	22 21	25 31	9
10	19 12 34	2 23 49 27	2 23 13 12	3 23 26 36	2 3 19 6	10 7 26 7	3 21 21 38	9 17 40 56	1 14 38 57	1 16 12 13	22 14	25 24	10
11	19 16 31	2 24 46 40	3 5 40 12	3 24 3 56	2 4 39 1	10 7 22 22	3 22 34 6	9 17 37 3	1 14 35 46	1 16 6 41	22 6	24 2	11
12	19 20 27	2 25 43 55	3 18 20 13	3 24 41 17	2 6 3 0	10 7 18 27	3 23 46 31	9 17 33 7	1 14 32 35	1 16 0 11	21 58	21 27	12
13	19 24 24	2 26 41 9	4 1 13 33	3 25 18 39	2 7 31 0	10 7 14 21	3 24 58 55	9 17 29 7	1 14 29 24	1 15 53 24	21 49	17 45	13
14	19 28 20	2 27 38 23	4 14 20 17	3 25 56 2	2 9 2 53	10 7 10 5	3 26 11 17	9 17 25 6	1 14 26 14	1 15 47 7	21 40	13 10	14
15	19 32 17	2 28 35 37	4 27 40 16	3 26 33 26	2 10 38 35	10 7 5 40	3 27 23 37	9 17 21 1	1 14 23 3	1 15 42 3	21 31	7 53	15

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः $5^{घं}-30^{मि}$) (16 जुला. से 17 अग. 2021 ई. तक)

1 अग. 2021 ई. को अयनांश 24°/9′/16″

ता.	सम्पातिक काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जुलाई
जुला	0-00 Hr. GMT	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
16	19 36 13	2 29 32 52	5 11 13 33	3 27 10 50	2 12 17 58	10 7 1 4	3 28 35 55	9 17 16 54	1 14 19 52	1 15 38 44	+21 22	+2 8	16
17	19 40 10	3 0 30 6	5 25 0 3	3 27 48 16	2 14 0 55	10 6 56 18	3 29 48 11	9 17 12 45	1 14 16 41	1 15 37 15	21 12	−3 48	17
18	19 44 7	3 1 27 20	6 8 59 36	3 28 25 42	2 15 47 16	10 6 51 23	4 1 0 25	9 17 8 34	1 14 13 31	1 15 37 20	21 1	−9 40	18
19	19 48 3	3 2 24 35	6 23 11 40	3 29 3 9	2 17 36 49	10 6 46 18	4 2 12 37	9 17 4 21	1 14 10 20	1 15 38 19	20 50	−15 7	19
20	19 52 0	3 3 21 50	7 7 34 39	3 29 40 37	2 19 29 23	10 6 41 4	4 3 24 46	9 17 0 6	1 14 7 9	1 15 39 17	20 39	−19 48	20
21	19 55 56	3 4 19 5	7 22 6 5	4 0 18 6	2 21 24 42	10 6 35 42	4 4 36 53	9 16 55 49	1 14 3 58	1 15 39 17	20 28	−23 18	21
22	19 59 53	3 5 16 20	8 6 41 50	4 0 55 36	2 23 22 30	10 6 30 10	4 5 48 58	9 16 51 31	1 14 0 48	1 15 37 31	20 16	−25 17	22
23	20 3 49	3 6 13 36	8 21 16 23	4 1 33 7	2 25 22 31	10 6 24 30	4 7 1 0	9 16 47 11	1 13 57 37	1 15 33 35	20 4	−25 31	23
24	20 7 46	3 7 10 52	9 5 43 28	4 2 10 38	2 27 24 26	10 6 18 42	4 8 13 0	9 16 42 50	1 13 54 26	1 15 27 31	19 52	−24 1	24
25	20 11 42	3 8 8 9	9 19 56 53	4 2 48 11	2 29 27 54	10 6 12 45	4 9 24 57	9 16 38 27	1 13 51 15	1 15 19 48	19 39	−21 1	25
26	20 15 39	3 9 5 26	10 3 51 23	4 3 25 45	3 1 32 37	10 6 6 40	4 10 36 53	9 16 34 4	1 13 48 5	1 15 11 16	19 26	−16 51	26
27	20 19 36	3 10 2 44	10 17 23 2	4 4 3 19	3 3 38 15	10 6 0 28	4 11 48 45	9 16 29 39	1 13 44 54	1 15 2 51	19 12	−11 57	27
28	20 23 32	3 11 0 4	11 0 30 54	4 4 40 55	3 5 44 29	10 5 54 8	4 13 0 36	9 16 25 14	1 13 41 43	1 14 55 29	18 59	−6 38	28
29	20 27 29	3 11 57 24	11 13 15 35	4 5 18 32	3 7 51 0	10 5 47 41	4 14 12 24	9 16 20 47	1 13 38 32	1 14 49 49	18 45	−1 11	29
30	20 31 25	3 12 54 45	11 25 39 42	4 5 56 11	3 9 57 31	10 5 41 6	4 15 24 10	9 16 16 20	1 13 35 22	1 14 46 10	18 30	+4 10	30
31	20 35 22	3 13 52 7	0 7 47 12	4 6 33 50	3 12 3 47	10 5 34 25	4 16 35 53	9 16 11 53	1 13 32 11	1 14 44 28	+18 16	9 15	31
अग	20 39 18	3 14 49 30	0 19 42 59	4 7 11 31	3 14 9 34	10 5 27 37	4 17 47 34	9 16 7 25	1 13 29 0	1 14 44 15	18 1	13 56	अग.
2	20 43 15	3 15 46 54	1 1 32 16	4 7 49 13	3 16 14 39	10 5 20 43	4 18 59 13	9 16 2 57	1 13 25 49	1 14 44 48	17 45	18 3	2
3	20 47 11	3 16 44 20	1 13 20 25	4 8 26 56	3 18 18 51	10 5 13 43	4 20 10 49	9 15 58 29	1 13 22 38	1 14 45 12	17 30	21 26	3
4	20 51 8	3 17 41 46	1 25 12 28	4 9 4 40	3 20 22 2	10 5 6 37	4 21 22 23	9 15 54 1	1 13 19 28	1 14 44 34	17 14	23 56	4
5	20 55 5	3 18 39 14	2 7 12 59	4 9 42 26	3 22 24 5	10 4 59 25	4 22 33 55	9 15 49 34	1 13 16 17	1 14 42 6	16 58	25 23	5
6	20 59 1	3 19 36 43	2 19 25 42	4 10 20 13	3 24 24 53	10 4 52 9	4 23 45 24	9 15 45 6	1 13 13 6	1 14 37 20	16 42	25 38	6
7	21 2 58	3 20 34 13	3 1 53 14	4 10 58 2	3 26 24 22	10 4 44 48	4 24 56 50	9 15 40 39	1 13 9 55	1 14 30 5	16 25	24 36	7
8	21 6 54	3 21 31 44	3 14 37 7	4 11 35 51	3 28 22 27	10 4 37 22	4 26 8 13	9 15 36 13	1 13 6 45	1 14 20 40	16 8	22 18	8
9	21 10 51	3 22 29 16	3 27 37 32	4 12 13 42	4 0 19 7	10 4 29 52	4 27 19 34	9 15 31 47	1 13 3 34	1 14 9 47	15 51	18 49	9
10	21 14 47	3 23 26 49	4 10 53 29	4 12 51 34	4 2 14 20	10 4 22 19	4 28 30 52	9 15 27 23	1 13 0 23	1 13 58 26	15 33	14 20	10
11	21 18 44	3 24 24 23	4 24 23 4	4 13 29 28	4 4 8 3	10 4 14 41	4 29 42 7	9 15 22 59	1 12 57 12	1 13 47 46	15 16	9 5	11
12	21 22 40	3 25 21 58	5 8 3 55	4 14 7 23	4 6 0 17	10 4 7 1	5 0 53 20	9 15 18 37	1 12 54 1	1 13 38 50	14 58	+3 20	12
13	21 26 37	3 26 19 35	5 21 53 35	4 14 45 19	4 7 51 1	10 3 59 18	5 2 4 29	9 15 14 16	1 12 50 51	1 13 32 22	14 40	−2 39	13
14	21 30 34	3 27 17 12	6 5 50 5	4 15 23 16	4 9 40 15	10 3 51 33	5 3 15 34	9 15 9 57	1 12 47 40	1 13 28 35	14 21	−8 34	14
15	21 34 30	3 28 14 50	6 19 51 54	4 16 1 14	4 11 27 59	10 3 43 46	5 4 26 37	9 15 5 39	1 12 44 29	1 13 27 6	14 3	−14 7	15
16	21 38 27	3 29 12 29	7 3 57 58	4 16 39 14	4 13 14 15	10 3 35 57	5 5 37 36	9 15 1 22	1 12 41 18	1 13 27 3	13 44	−18 56	16
17	21 42 23	4 0 10 9	7 18 7 25	4 17 17 15	4 14 59 2	10 3 28 6	5 6 48 32	9 14 57 8	1 12 38 7	1 13 27 11	13 25	−22 40	17

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5 घं -30 मि) (18 अग. से 19 सितं., 2021 ई. तक) (1 सितम्बर, 2021 ई. को अयनांश 24°/9'/20'')

ता. अग.	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	अगस्त
18	21 46 20	4 1 7 50	8 2 19 2	4 17 55 17	4 16 42 22	10 3 20 15	5 7 59 24	9 14 52 56	1 12 34 57	1 13 26 12	+13 6	-25 2	18
19	21 50 16	4 2 5 32	9 16 30 59	4 18 33 20	4 18 24 16	10 3 12 23	5 9 10 12	9 14 48 46	1 12 31 46	1 13 23 3	12 46	-25 46	19
20	21 54 13	4 3 3 15	9 0 40 20	4 19 11 25	4 20 4 43	10 3 4 30	5 10 20 57	9 14 44 38	1 12 28 35	1 13 17 7	12 26	-24 48	20
21	21 58 9	4 4 0 [illegible]	9 14 43 22	4 19 49 30	4 21 43 45	10 2 56 38	5 11 31 38	9 14 40 33	1 12 25 24	1 13 8 23	12 7	-22 18	21
22	22 2 6	4 4 58 45	9 28 35 49	4 20 27 38	4 23 21 23	10 2 48 46	5 12 42 15	9 14 36 30	1 12 22 13	1 12 57 26	11 46	-18 31	22
23	22 6 3	4 5 56 32	10 12 13 34	4 21 5 46	4 24 57 36	10 2 40 55	5 13 52 48	9 14 32 29	1 12 19 3	1 12 45 17	11 26	-13 49	23
24	22 9 59	4 6 54 20	10 25 33 24	4 21 43 56	4 26 32 26	10 2 33 5	5 15 3 17	9 14 28 32	1 12 15 52	1 12 33 6	11 6	-8 34	24
25	22 13 56	4 7 52 10	11 8 33 26	4 22 22 7	4 28 5 53	10 2 25 16	5 16 13 43	9 14 24 37	1 12 12 41	1 12 22 6	10 45	-3 3	25
26	22 17 52	4 8 50 2	11 21 13 32	4 23 0 20	4 29 37 57	10 2 17 28	5 17 24 5	9 14 20 45	1 12 9 30	1 12 13 8	10 24	+2 27	26
27	22 21 49	4 9 47 55	0 3 35 17	4 23 38 35	5 1 8 37	10 2 9 43	5 18 34 22	9 14 16 56	1 12 6 19	1 12 6 43	10 4	7 44	27
28	22 25 45	4 10 45 50	0 15 41 46	4 24 16 51	5 2 37 54	10 2 2 0	5 19 44 36	9 14 13 11	1 12 3 9	1 12 2 50	9 42	12 38	28
29	22 29 42	4 11 43 47	0 27 37 9	4 24 55 8	5 4 5 47	10 1 54 20	5 20 54 46	9 14 9 28	1 11 59 58	1 12 1 2	9 21	16 59	29
30	22 33 38	4 12 41 46	1 9 26 22	4 25 33 27	5 5 32 16	10 1 46 43	5 22 4 51	9 14 5 49	1 11 56 47	1 12 0 32	9 0	20 39	30
31	22 37 35	4 13 39 46	1 21 14 54	4 26 11 48	5 6 57 20	10 1 39 9	5 23 14 53	9 14 2 14	1 11 53 36	1 12 0 18	8 38	23 27	31
सितं.	22 41 32	4 14 37 48	2 3 8 13	4 26 50 11	5 8 20 56	10 1 31 39	5 24 24 51	9 13 58 42	1 11 50 25	1 11 59 18	8 17	25 14	सितं.
2	22 45 28	4 15 35 53	2 15 11 35	4 27 28 35	5 9 43 4	10 1 24 13	5 25 34 44	9 13 55 14	1 11 47 15	1 11 56 36	7 55	25 52	2
3	22 49 25	4 16 33 59	2 27 29 41	4 28 7 0	5 11 3 41	10 1 16 51	5 26 44 33	9 13 51 50	1 11 44 4	1 11 51 33	7 33	25 15	3
4	22 53 21	4 17 32 7	3 10 6 9	4 28 45 28	5 12 22 46	10 1 9 34	5 27 54 18	9 13 48 29	1 11 40 53	1 11 43 55	7 11	23 21	4
5	22 57 18	4 18 30 17	3 23 3 12	4 29 23 57	5 13 40 14	10 1 2 22	5 29 3 58	9 13 45 13	1 11 37 42	1 11 33 56	6 49	20 12	5
6	23 1 14	4 19 28 29	4 6 21 20	5 0 2 28	5 14 56 4	10 0 55 16	6 0 13 34	9 13 42 1	1 11 34 31	1 11 22 19	+6 26	15 57	6
7	23 5 11	4 20 26 42	4 19 59 10	5 0 41 0	5 16 10 12	10 0 48 15	6 1 23 5	9 13 38 53	1 11 31 21	1 11 10 7	6 4	10 49	7
8	23 9 7	4 21 24 57	5 3 53 33	5 1 19 34	5 17 22 32	10 0 41 20	6 2 32 31	9 13 35 49	1 11 28 10	1 10 58 32	5 41	+5 1	8
9	23 13 4	4 22 23 14	5 18 0 8	5 1 58 10	5 18 33 0	10 0 34 32	6 3 41 53	9 13 32 50	1 11 24 59	1 10 48 44	5 19	-1 7	9
10	23 17 1	4 23 21 33	6 2 13 58	5 2 36 47	5 19 41 31	10 0 27 50	6 4 51 9	9 13 29 56	1 11 21 48	1 10 41 29	4 56	-7 15	10
11	23 20 57	4 24 19 53	6 16 30 28	5 3 15 26	5 20 47 58	10 0 21 15	6 6 0 20	9 13 27 6	1 11 18 37	1 10 37 6	4 33	-13 3	11
12	23 24 54	4 25 18 15	7 0 45 57	5 3 54 6	5 21 52 13	10 0 14 47	6 7 9 26	9 13 24 21	1 11 15 27	1 10 35 14	4 10	-18 9	12
13	23 28 50	4 26 16 38	7 14 57 52	5 4 32 48	5 22 54 10	10 0 8 27	6 8 18 26	9 13 21 41	1 11 12 16	1 10 35 1	3 47	-22 12	13
14	23 32 47	4 27 15 3	7 29 4 42	5 5 11 32	5 23 53 38	10 0 2 15	6 9 27 21	9 13 19 5	1 11 9 5	1 10 35 13	3 24	-24 52	14
15	23 36 43	4 28 13 29	8 13 5 36	5 5 50 17	5 24 50 30	9 29 56 10	6 10 36 9	9 13 16 35	1 11 5 54	1 10 34 33	3 1	-25 58	15
16	23 40 40	4 29 11 57	8 26 59 53	5 6 29 4	5 25 44 32	9 29 50 14	6 11 44 51	9 13 14 10	1 11 2 43	1 10 31 54	2 38	-25 24	16
17	23 44 36	5 0 10 27	9 10 46 41	5 7 7 52	5 26 35 34	9 29 44 27	6 12 53 27	9 13 11 49	1 10 59 33	1 10 26 39	2 15	-23 17	17
18	23 48 33	5 1 8 58	9 24 24 41	5 7 46 42	5 27 23 21	9 29 38 48	6 14 1 56	9 13 9 34	1 10 56 22	1 10 18 43	1 52	-19 52	18
19	23 52 30	5 2 7 31	10 7 52 3	5 8 25 34	5 28 7 38	9 29 33 18	6 15 10 19	9 13 7 24	1 10 53 11	1 10 8 37	1 29	-15 27	19

1 अक्तूबर, 2021 ई. को अयनांश 24°/9'/24''

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5 घं −30 मिं) (20 सितं. से 22 अक्तू., 2021 ई. तक)

1 अक्तूबर, 2021 ई. को अयनांश 24°/9′/24″

ता. सितं	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	सितं.
20	23 56 26	5 3 6 6	10 21 6 55	5 9 4 27	5 28 48 10	9 29 27 57	6 16 18 35	9 13 5 19	1 10 50 0	1 9 57 16	+1 5	−10 22	20
21	0 0 23	5 4 4 43	11 4 7 29	5 9 43 22	5 29 24 39	9 29 22 45	6 17 26 44	9 13 3 20	1 10 46 49	1 9 45 48	0 42	−4 54	21
22	0 4 19	5 5 3 21	11 16 52 39	5 10 22 19	5 29 56 45	9 29 17 43	6 18 34 46	9 13 1 26	1 10 43 39	1 9 35 21	+0 19	+0 39	22
23	0 8 16	5 6 2 2	11 29 22 14	5 11 1 18	6 0 24 9	9 29 12 50	6 19 42 41	9 12 59 37	1 10 40 28	1 9 26 49	−0 5	6 6	23
24	0 12 12	5 7 0 44	0 11 37 12	5 11 40 18	6 0 46 26	9 29 8 8	6 20 50 28	9 12 57 54	1 10 37 17	1 9 20 42	−0 28	11 13	24
25	0 16 9	5 7 59 29	0 23 39 40	5 12 19 21	6 1 3 15	9 29 3 35	6 21 58 9	9 12 56 16	1 10 34 6	1 9 17 7	−0 51	15 49	25
26	0 20 5	5 8 58 16	1 5 32 51	5 12 58 25	6 1 14 12	9 28 59 12	6 23 5 41	9 12 54 44	1 10 30 56	1 9 15 43	−1 15	19 46	26
27	0 24 2	5 9 57 5	1 17 20 58	5 13 37 31	6 1 18 53	9 28 55 0	6 24 13 6	9 12 53 18	1 10 27 45	1 9 15 51	−1 38	22 53	27
28	0 27 59	5 10 55 57	1 29 8 44	5 14 16 40	6 1 16 56	9 28 50 59	6 25 20 23	9 12 51 57	1 10 24 34	1 9 16 39	−2 1	25 1	28
29	0 31 55	5 11 54 50	2 11 1 26	5 14 55 50	6 1 7 59	9 28 47 8	6 26 27 32	9 12 50 42	1 10 21 23	1 9 17 9	−2 25	26 2	29
30	0 35 52	5 12 53 46	2 23 4 26	5 15 35 2	6 0 51 42	9 28 43 28	6 27 34 33	9 12 49 33	1 10 18 13	1 9 16 31	−2 48	25 51	30
अक्तू	0 39 48	5 13 52 44	3 5 22 57	5 16 14 16	6 0 27 53	9 28 39 59	6 28 41 26	9 12 48 29	1 10 15 2	1 9 14 6	−3 11	24 24	अक्तू
2	0 43 45	5 14 51 45	3 18 1 32	5 16 53 32	5 29 56 24	9 28 36 40	6 29 48 10	9 12 47 31	1 10 11 51	1 9 9 37	−3 34	21 43	2
3	0 47 41	5 15 50 48	4 1 3 31	5 17 32 51	5 29 17 18	9 28 33 33	7 0 54 45	9 12 46 39	1 10 8 40	1 9 3 12	−3 58	17 53	3
4	0 51 38	5 16 49 53	4 14 30 38	5 18 12 11	5 28 30 50	9 28 30 38	7 2 1 11	9 12 45 53	1 10 5 29	1 8 55 20	−4 21	13 2	4
5	0 55 34	5 17 49 0	4 28 22 14	5 18 51 33	5 27 37 25	9 28 27 54	7 3 7 27	9 12 45 13	1 10 2 18	1 8 46 50	−4 44	7 24	5
6	0 59 31	5 18 48 9	5 12 35 26	5 19 30 57	5 26 37 52	9 28 25 22	7 4 13 34	9 12 44 39	1 9 59 8	1 8 38 41	−5 7	+1 14	6
7	1 3 27	5 19 47 20	5 27 5 2	5 20 10 23	5 25 33 13	9 28 23 1	7 5 19 31	9 12 44 11	1 9 55 57	1 8 31 48	−5 30	−5 8	7
8	1 7 24	5 20 46 34	6 11 44 23	5 20 49 51	5 24 24 49	9 28 20 52	7 6 25 18	9 12 43 49	1 9 52 46	1 8 26 50	−5 53	−11 18	8
9	1 11 21	5 21 45 49	6 26 26 24	5 21 29 21	5 23 14 15	9 28 18 55	7 7 30 54	9 12 43 33	1 9 49 35	1 8 24 4	−6 16	−16 52	9
10	1 15 17	5 22 45 6	7 11 4 30	5 22 8 53	5 22 3 21	9 28 17 9	7 8 36 19	9 12 43 23	1 9 46 25	1 8 23 20	−6 39	−21 25	10
11	1 19 14	5 23 44 25	7 25 33 39	5 22 48 27	5 20 54 5	9 28 15 36	7 9 41 32	9 12 43 19	1 9 43 14	1 8 23 59	−7 1	−24 34	11
12	1 23 10	5 24 43 46	8 9 50 23	5 23 28 3	5 19 48 25	9 28 14 15	7 10 46 34	9 12 43 21	1 9 40 3	1 8 25 9	−7 24	−26 5	12
13	1 27 7	5 25 43 8	8 23 52 54	5 24 7 40	5 18 48 15	9 28 13 6	7 11 51 23	9 12 43 30	1 9 36 52	1 8 25 52	−7 46	−25 53	13
14	1 31 3	5 26 42 33	9 7 40 42	5 24 47 20	5 17 55 21	9 28 12 9	7 12 55 59	9 12 43 44	1 9 33 41	1 8 25 22	−8 9	−24 5	14
15	1 35 0	5 27 41 58	9 21 13 50	5 25 27 1	5 17 11 9	9 28 11 24	7 14 0 21	9 12 44 5	1 9 30 31	1 8 23 6	−8 31	−20 56	15
16	1 38 57	5 28 41 26	10 4 32 53	5 26 6 44	5 16 36 47	9 28 10 51	7 15 4 30	9 12 44 31	1 9 27 20	1 8 19 2	−8 53	−16 45	16
17	1 42 53	5 29 40 56	10 17 38 20	5 26 46 30	5 16 13 3	9 28 10 30	7 16 8 24	9 12 45 4	1 9 24 9	1 8 13 26	−9 15	−11 51	17
18	1 46 50	6 0 40 27	11 0 30 38	5 27 26 17	5 16 0 23	9 28 10 21	7 17 12 4	9 12 45 42	1 9 20 58	1 8 6 56	−9 37	−6 31	18
19	1 50 46	6 1 40 0	11 13 10 12	5 28 6 6	5 15 58 53	9 28 10 24	7 18 15 27	9 12 46 27	1 9 17 47	1 8 0 17	−9 59	−0 59	19
20	1 54 43	6 2 39 35	11 25 37 27	5 28 45 58	5 16 8 20	9 28 10 40	7 19 18 36	9 12 47 17	1 9 14 37	1 7 54 15	−10 20	+4 30	20
21	1 58 39	6 3 39 12	0 7 53 7	5 29 25 51	5 16 28 22	9 28 11 7	7 20 21 28	9 12 48 14	1 9 11 26	1 7 49 26	−10 42	9 44	21
22	2 2 36	6 4 38 51	0 19 58 22	6 0 5 47	5 16 58 19	9 28 11 46	7 21 24 3	9 12 49 17	1 9 8 15	1 7 46 13	−11 3	14 33	22

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5 घं -30 मिं) (23 अक्टू. से 24 नवंबर, 2021 ई. तक) 1 नवंबर 2021 ई. को अयनांश 24°/9'/27"

ता. अक्टू.	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	अक्टू.
23	2 6 32	6 5 38 32	1 1 54 53	6 0 45 44	5 17 37 31	9 28 12 38	7 22 26 20	9 12 50 26	1 9 5 4	1 7 44 42	–11 24	18 45	23
24	2 10 29	6 6 38 15	1 13 45 2	6 1 25 44	5 18 25 9	9 28 13 41	7 23 28 20	9 12 51 40	1 9 1 54	1 7 44 42	–11 45	22 10	24
25	2 14 26	6 7 38 1	1 25 31 55	6 2 5 46	5 19 20 22	9 28 14 57	7 24 30 1	9 12 53 1	1 8 58 43	1 7 45 50	–12 6	24 38	25
26	2 18 22	6 8 37 48	2 7 19 15	6 2 45 51	5 20 22 21	9 28 16 24	7 25 31 24	9 12 54 27	1 8 55 32	1 7 47 35	–12 26	26 1	26
27	2 22 19	6 9 37 39	2 19 11 23	6 3 25 57	5 21 30 15	9 28 18 3	7 26 32 26	9 12 56 0	1 8 52 21	1 7 49 22	–12 47	26 14	27
28	2 26 15	6 10 37 31	3 1 12 58	6 4 6 6	5 22 43 19	9 28 19 55	7 27 33 8	9 12 57 39	1 8 49 11	1 7 50 38	–13 7	25 12	28
29	2 30 12	6 11 37 25	3 13 28 57	6 4 46 17	5 24 0 51	9 28 21 58	7 28 33 28	9 12 59 23	1 8 46 0	1 7 51 1	–13 27	22 59	29
30	2 34 8	6 12 37 21	3 26 4 5	6 5 26 30	5 25 22 11	9 28 24 13	7 29 33 27	9 13 1 13	1 8 42 49	1 7 50 17	–13 47	19 37	30
31	2 38 5	6 13 37 19	4 9 2 32	6 6 6 45	5 26 46 43	9 28 26 39	8 0 33 4	9 13 3 10	1 8 39 38	1 7 48 29	–14 6	15 13	31
नवं.	2 42 1	6 14 37 20	4 22 27 17	6 6 47 3	5 28 13 56	9 28 29 18	8 1 32 18	9 13 5 12	1 8 36 28	1 7 45 50	–14 26	9 58	नवं.
2	2 45 58	6 15 37 23	5 6 19 26	6 7 27 23	5 29 43 23	9 28 32 8	8 2 31 7	9 13 7 20	1 8 33 17	1 7 42 46	–14 45	+4 3	2
3	2 49 55	6 16 37 28	5 20 37 46	6 8 7 46	6 1 14 40	9 28 35 10	8 3 29 31	9 13 9 33	1 8 30 6	1 7 39 46	–15 3	–2 16	3
4	2 53 51	6 17 37 34	6 5 18 14	6 8 48 10	6 2 47 26	9 28 38 24	8 4 27 30	9 13 11 53	1 8 26 55	1 7 37 18	–15 22	–8 39	4
5	2 57 48	6 18 37 43	6 20 14 20	6 9 28 37	6 4 21 22	9 28 41 49	8 5 25 1	9 13 14 18	1 8 23 44	1 7 35 40	–15 40	–14 39	5
6	3 1 44	6 19 37 54	7 5 17 46	6 10 9 6	6 5 56 13	9 28 45 25	8 6 22 4	9 13 16 49	1 8 20 34	1 7 35 0	–15 59	–19 50	6
7	3 5 41	6 20 38 6	7 20 19 38	6 10 49 37	6 7 31 47	9 28 49 14	8 7 18 37	9 13 19 26	1 8 17 23	1 7 35 13	–16 16	–23 42	7
8	3 9 37	6 21 38 19	8 5 11 45	6 11 30 10	6 9 7 53	9 28 53 13	8 8 14 40	9 13 22 8	1 8 14 12	1 7 36 3	–16 34	–25 53	8
9	3 13 34	6 22 38 35	8 19 47 45	6 12 10 45	6 10 44 22	9 28 57 24	8 9 10 11	9 13 24 56	1 8 11 1	1 7 37 3	–16 51	–26 14	9
10	3 17 30	6 23 38 52	9 4 3 27	6 12 51 23	6 12 21 6	9 29 1 46	8 10 5 9	9 13 27 50	1 8 7 51	1 7 38 5	–17 8	–24 50	10
11	3 21 27	6 24 39 10	9 17 57 2	6 13 32 2	6 13 57 58	9 29 6 19	8 10 59 32	9 13 30 49	1 8 4 40	1 7 38 38	–17 25	–21 56	11
12	3 25 24	6 25 39 30	10 1 28 29	6 14 12 44	6 15 34 55	9 29 11 3	8 11 53 18	9 13 33 54	1 8 1 29	1 7 38 38	–17 41	–17 55	12
13	3 29 20	6 26 39 51	10 14 39 10	6 14 53 28	6 17 11 51	9 29 15 58	8 12 46 26	9 13 37 4	1 7 58 18	1 7 38 5	–17 58	–13 8	13
14	3 33 17	6 27 40 13	10 27 31 18	6 15 34 14	6 18 48 43	9 29 21 3	8 13 38 55	9 13 40 19	1 7 55 8	1 7 37 6	–18 13	–7 52	14
15	3 37 13	6 28 40 37	11 10 7 19	6 16 15 2	6 20 25 30	9 29 26 20	8 14 30 42	9 13 43 40	1 7 51 57	1 7 35 55	–18 29	–2 24	15
16	3 41 10	6 29 41 2	11 22 29 49	6 16 55 52	6 22 2 8	9 29 31 47	8 15 21 47	9 13 47 6	1 7 48 46	1 7 34 44	–18 44	+3 5	16
17	3 45 6	7 0 41 29	0 4 41 13	6 17 36 45	6 23 38 37	9 29 37 24	8 16 12 7	9 13 50 37	1 7 45 35	1 7 33 45	–18 59	8 22	17
18	3 49 3	7 1 41 57	0 16 43 43	6 18 17 40	6 25 14 55	9 29 43 12	8 17 1 41	9 13 54 13	1 7 42 25	1 7 33 4	–19 13	13 18	18
19	3 52 59	7 2 42 27	0 28 39 23	6 18 58 37	6 26 51 2	9 29 49 10	8 17 50 26	9 13 57 55	1 7 39 14	1 7 32 43	–19 27	17 41	19
20	3 56 56	7 3 42 58	1 10 30 15	6 19 39 36	6 28 26 57	9 29 55 18	8 18 38 21	9 14 1 41	1 7 36 3	1 7 32 39	–19 41	21 20	20
21	4 0 53	7 4 43 31	1 22 18 20	6 20 20 38	7 0 2 41	10 0 1 36	8 19 25 24	9 14 5 33	1 7 32 52	1 7 32 45	–19 55	24 6	21
22	4 4 49	7 5 44 5	2 4 5 58	6 21 1 42	7 1 38 13	10 0 8 4	8 20 11 32	9 14 9 30	1 7 29 42	1 7 32 55	–20 8	25 48	22
23	4 8 46	7 6 44 41	2 15 55 40	6 21 42 48	7 3 13 34	10 0 14 42	8 20 56 44	9 14 13 31	1 7 26 31	1 7 33 2	–20 20	26 20	23
24	4 12 42	7 7 45 18	2 27 50 25	6 22 23 57	7 4 48 44	10 0 21 30	8 21 40 56	9 14 17 38	1 7 23 20	1 7 33 2	–20 33	25 40	24

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5^{घं}-30^{मिं}) (25 नवं. से 27 दिसं. 2021 ई. तक) 1 दिसंबर, 2021 ई. को अयनांश 24°/9′/32″

ता. नवं.	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	ता.
25	4 16 39	7 8 45 57	3 9 53 41	6 23 5 8	7 6 23 44	10 0 28 27	8 22 24 8	9 14 21 49	1 7 20 9	1 7 32 54	-20 45	23 48	25
26	4 20 35	7 9 46 38	3 22 9 11	6 23 46 21	7 7 58 35	10 0 35 34	8 23 6 15	9 14 26 5	1 7 16 59	1 7 32 42	-20 56	20 49	26
27	4 24 32	7 10 47 20	4 4 40 55	6 24 27 37	7 9 33 16	10 0 42 50	8 23 47 17	9 14 30 26	1 7 13 48	1 7 32 32	-21 7	16 50	27
28	4 28 28	7 11 48 4	4 17 32 52	6 25 8 56	7 11 7 50	10 0 50 16	8 24 27 10	9 14 34 51	1 7 10 37	1 7 32 31	-21 18	12 0	28
29	4 32 25	7 12 48 49	5 0 48 32	6 25 50 17	7 12 42 17	10 0 57 51	8 25 5 51	9 14 39 21	1 7 7 26	1 7 32 44	-21 28	6 28	29
30	4 36 22	7 13 49 36	5 14 30 22	6 26 31 40	7 14 16 38	10 1 5 36	8 25 43 18	9 14 43 56	1 7 4 15	1 7 33 13	-21 38	+0 28	30
दिसं.	4 40 18	7 14 50 25	5 28 39 13	6 27 13 5	7 15 50 54	10 1 13 29	8 26 19 27	9 14 48 35	1 7 1 5	1 7 33 55	-21 48	-5 46	दिसं.
2	4 44 15	7 15 51 15	6 13 13 32	6 27 54 33	7 17 25 5	10 1 21 32	8 26 54 16	9 14 53 19	1 6 57 54	1 7 34 18	-21 57	-11 54	2
3	4 48 11	7 16 52 6	6 28 9 1	6 28 36 4	7 18 59 13	10 1 29 43	8 27 27 40	9 14 58 7	1 6 54 43	1 7 35 10	-22 6	-17 30	3
4	4 52 8	7 17 52 58	7 13 18 37	6 29 17 37	7 20 33 18	10 1 38 3	8 27 59 37	9 15 3 0	1 6 51 32	1 7 35 17	-22 14	-22 5	4
5	4 56 4	7 18 53 52	7 28 33 9	6 29 59 12	7 22 7 22	10 1 46 32	8 28 30 3	9 15 7 56	1 6 48 21	1 7 34 50	-22 22	-25 8	5
6	5 0 1	7 19 54 47	8 13 42 39	7 0 40 49	7 23 41 25	10 1 55 9	8 28 58 53	9 15 12 57	1 6 45 11	1 7 33 46	-22 29	-26 19	6
7	5 3 57	7 20 55 42	8 28 37 47	7 1 22 28	7 25 15 28	10 2 3 55	8 29 26 5	9 15 18 3	1 6 42 0	1 7 32 14	-22 36	-25 34	7
8	5 7 54	7 21 56 38	9 13 11 17	7 2 4 10	7 26 49 31	10 2 12 50	8 29 51 34	9 15 23 12	1 6 38 49	1 7 30 27	-22 43	-23 5	8
9	5 11 51	7 22 57 36	9 27 18 46	7 2 45 54	7 28 23 36	10 2 21 52	9 0 15 17	9 15 28 25	1 6 35 38	1 7 28 47	-22 49	-19 16	9
10	5 15 47	7 23 58 33	10 10 58 40	7 3 27 40	7 29 57 42	10 2 31 3	9 0 37 7	9 15 33 43	1 6 32 27	1 7 27 35	-22 54	-14 31	10
11	5 19 44	7 24 59 32	10 24 11 56	7 4 9 28	8 1 31 51	10 2 40 21	9 0 57 3	9 15 39 4	1 6 29 17	1 7 27 6	-23 0	-9 15	11
12	5 23 40	7 26 00 31	11 7 1 16	7 4 51 19	8 3 6 3	10 2 49 47	9 1 15 0	9 15 44 29	1 6 26 6	1 7 27 28	-23 4	-3 45	12
13	5 27 37	7 27 1 30	11 19 30 27	7 5 33 12	8 4 40 17	10 2 59 21	9 1 30 54	9 15 49 58	1 6 22 55	1 7 28 36	-23 9	+1 46	13
14	5 31 33	7 28 2 30	0 1 43 39	7 6 15 7	8 6 14 34	10 3 9 3	9 1 44 39	9 15 55 30	1 6 19 44	1 7 30 13	-23 12	7 7	14
15	5 35 30	7 29 3 31	0 13 45 4	7 6 57 4	8 7 48 54	10 3 18 52	9 1 56 15	9 16 1 7	1 6 16 34	1 7 31 57	-23 16	12 8	15
16	5 39 26	8 0 4 32	0 25 38 34	7 7 39 3	8 9 23 16	10 3 28 49	9 2 5 35	9 16 6 46	1 6 13 23	1 7 33 18	-23 19	16 38	16
17	5 43 23	8 1 5 34	1 7 27 38	7 8 21 5	8 10 57 40	10 3 38 52	9 2 12 38	9 16 12 29	1 6 10 12	1 7 33 50	-23 21	20 29	17
18	5 47 19	8 2 6 36	1 19 15 10	7 9 3 9	8 12 32 5	10 3 49 3	9 2 17 19	9 16 18 16	1 6 7 1	1 7 33 11	-23 23	23 28	18
19	5 51 16	8 3 7 39	2 1 3 36	7 9 45 16	8 14 6 28	10 3 59 21	9 2 19 36	9 16 24 6	1 6 3 51	1 7 31 8	-23 25	25 27	19
20	5 55 13	8 4 8 42	2 12 55 5	7 10 27 25	8 15 40 50	10 4 9 46	9 2 19 27	9 16 29 59	1 6 0 40	1 7 27 42	-23 26	26 17	20
21	5 59 9	8 5 9 46	2 24 51 24	7 11 9 36	8 17 15 6	10 4 20 18	9 2 16 49	9 16 35 56	1 5 57 29	1 7 23 7	-23 26	25 54	21
22	6 3 6	8 6 10 45	3 6 54 21	7 11 51 50	8 18 49 15	10 4 30 56	9 2 11 42	9 16 41 55	1 5 54 18	1 7 17 47	-23 26	24 19	22
23	6 7 2	8 7 11 56	3 19 5 45	7 12 34 6	8 20 23 12	10 4 41 41	9 2 4 6	9 16 47 58	1 5 51 8	1 7 12 19	-23 26	21 35	23
24	6 10 59	8 8 13 2	4 1 27 45	7 13 16 24	8 21 56 54	10 4 52 32	9 1 53 59	9 16 54 4	1 5 47 57	1 7 7 19	-23 25	17 51	24
25	6 14 55	8 9 14 8	4 14 2 44	7 13 58 45	8 23 30 14	10 5 3 30	9 1 41 22	9 17 0 12	1 5 44 46	1 7 3 25	-23 24	13 17	25
26	6 18 52	8 10 15 15	4 26 53 27	7 14 41 9	8 25 3 6	10 5 14 35	9 1 26 19	9 17 6 24	1 5 41 35	1 7 0 59	-23 22	8 3	26
27	6 22 48	8 11 16 23	5 10 2 40	7 15 23 35	8 26 35 23	10 5 25 45	9 1 8 50	9 17 12 39	1 5 38 25	1 7 0 9	-23 20	+2 21	27

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (प्रातः 5 घं -30 मि) (28 दिसं. 2021 ई. से 29 जन. 2022 ई. तक) 1 जन., 2022 ई. को अयनांश 24°/9′/38″

ता. दिनांक	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	दिनांक
28	6 26 45	8 12 17 31	5 23 33 2	7 16 6 3	8 28 6 55	10 5 37 2	9 0 49 0	9 17 18 56	1 5 35 14	1 7 0 42	−23 17	−3 38	28
29	6 30 42	8 13 18 40	6 7 26 26	7 16 48 34	8 29 37 31	10 5 48 25	9 0 26 54	9 17 25 16	1 5 32 3	1 7 2 4	−23 14	−9 37	29
30	6 34 38	8 14 19 50	6 21 43 25	7 17 31 7	9 1 6 58	10 5 59 53	9 0 2 38	9 17 31 39	1 5 28 52	1 7 3 29	−23 10	−15 16	30
31	6 38 35	8 15 21 0	7 6 22 26	7 18 13 42	9 2 35 2	10 6 11 28	8 29 36 18	9 17 38 4	1 5 25 41	1 7 4 6	−23 6	−20 12	31
जन. 2022ई.	6 42 31	8 16 22 10	7 21 19 17	7 18 56 20	9 4 1 23	10 6 23 8	8 29 8 3	9 17 44 32	1 5 22 31	1 7 3 11	−23 1	−23 55	जन
2	6 46 28	8 17 23 20	8 6 27 2	7 19 39 0	9 5 25 43	10 6 34 54	8 28 38 2	9 17 51 3	1 5 19 20	1 7 0 21	−22 56	−25 59	2
3	6 50 24	8 18 24 31	8 21 36 34	7 20 21 43	9 6 47 35	10 6 46 46	8 28 6 25	9 17 57 36	1 5 16 9	1 6 55 33	−22 51	−26 7	3
4	6 54 21	8 19 25 41	9 6 37 51	7 21 4 27	9 8 6 34	10 6 58 43	8 27 33 23	9 18 4 11	1 5 12 58	1 6 49 15	−22 45	−24 20	4
5	6 58 17	8 20 26 52	9 21 21 36	7 21 47 14	9 9 22 8	10 7 10 45	8 26 59 7	9 18 10 48	1 5 9 47	1 6 42 11	−22 38	−20 55	5
6	7 2 14	8 21 28 2	10 5 40 48	7 22 30 3	9 10 33 39	10 7 22 53	8 26 23 54	9 18 17 28	1 5 6 37	1 6 35 16	−22 31	−16 21	6
7	7 6 11	8 22 29 12	10 19 31 31	7 23 12 54	9 11 40 30	10 7 35 5	8 25 47 55	9 18 24 9	1 5 3 26	1 6 29 24	−22 24	−11 3	7
8	7 10 7	8 23 30 22	11 2 53 2	7 23 55 48	9 12 41 56	10 7 47 23	8 25 11 25	9 18 30 53	1 5 0 15	1 6 25 13	−22 16	−5 25	8
9	7 14 4	8 24 31 31	11 15 47 15	7 24 38 43	9 13 37 8	10 7 59 45	8 24 34 41	9 18 37 39	1 4 57 4	1 6 23 0	−22 8	+0 16	9
10	7 18 0	8 25 32 40	11 28 17 51	7 25 21 40	9 14 25 16	10 8 12 12	8 23 57 56	9 18 44 26	1 4 53 53	1 6 22 35	−21 59	5 47	10
11	7 21 57	8 26 33 48	0 10 29 43	7 26 4 40	9 15 5 25	10 8 24 44	8 23 21 27	9 18 51 15	1 4 50 43	1 6 23 27	−21 50	10 57	11
12	7 25 53	8 27 34 56	0 22 28 5	7 26 47 42	9 15 36 43	10 8 37 21	8 22 45 29	9 18 58 6	1 4 47 32	1 6 24 46	−21 41	15 37	12
13	7 29 50	8 28 36 3	1 4 18 8	7 27 30 46	9 15 58 15	10 8 50 1	8 22 10 16	9 19 4 59	1 4 44 21	1 6 25 36	−21 31	19 38	13
14	7 33 46	8 29 37 9	1 16 4 38	7 28 13 52	9 16 9 16	10 9 2 47	8 21 36 4	9 19 11 53	1 4 41 10	1 6 25 1	−21 21	22 50	14
15	7 37 43	9 0 38 15	1 27 51 44	7 28 57 1	9 16 9 4	10 9 15 36	8 21 3 6	9 19 18 48	1 4 38 0	1 6 22 20	−21 10	25 4	15
16	7 41 40	9 1 39 21	2 9 42 54	7 29 40 11	9 15 57 16	10 9 28 29	8 20 31 34	9 19 25 46	1 4 34 49	1 6 17 7	−20 59	26 12	16
17	7 45 36	9 2 40 26	2 21 40 42	8 0 23 24	9 15 33 43	10 9 41 27	8 20 1 41	9 19 32 44	1 4 31 38	1 6 9 19	−20 47	26 6	17
18	7 49 33	9 3 41 30	3 3 46 59	8 1 6 39	9 14 58 35	10 9 54 29	8 19 33 36	9 19 39 44	1 4 28 27	1 5 59 21	−20 35	24 47	18
19	7 53 29	9 4 42 34	3 16 2 54	8 1 49 57	9 14 12 32	10 10 7 34	8 19 7 30	9 19 46 45	1 4 25 16	1 5 47 57	−20 23	22 16	19
20	7 57 26	9 5 43 37	3 28 29 7	8 2 33 16	9 13 16 37	10 10 20 43	8 18 43 30	9 19 53 47	1 4 22 6	1 5 36 8	−20 10	18 42	20
21	8 1 22	9 6 44 40	4 11 6 5	8 3 16 38	9 12 12 21	10 10 33 56	8 18 21 44	9 20 0 50	1 4 18 55	1 5 25 4	−19 57	14 16	21
22	8 5 19	9 7 45 42	4 23 54 18	8 4 0 3	9 11 1 39	10 10 47 13	8 18 2 18	9 20 7 54	1 4 15 44	1 5 15 45	−19 44	9 8	22
23	8 9 16	9 8 46 44	5 6 54 33	8 4 43 29	9 9 46 42	10 11 0 33	8 17 45 15	9 20 15 0	1 4 12 33	1 5 8 57	−19 30	+3 32	23
24	8 13 12	9 9 47 45	5 20 7 54	8 5 26 58	9 8 29 49	10 11 13 56	8 17 30 38	9 20 22 6	1 4 9 22	1 5 4 54	−19 16	−2 19	24
25	8 17 9	9 10 48 46	6 3 35 53	8 6 10 29	9 7 13 20	10 11 27 23	8 17 18 31	9 20 29 13	1 4 6 12	1 5 3 17	−19 1	−8 12	25
26	8 21 5	9 11 49 46	6 17 19 59	8 6 54 3	9 5 59 27	10 11 40 53	8 17 8 54	9 20 36 21	1 4 3 1	1 5 3 19	−18 46	−13 48	26
27	8 25 2	9 12 50 46	7 1 20 18	8 7 37 38	9 4 50 5	10 11 54 27	8 17 1 47	9 20 43 30	1 3 59 50	1 5 3 46	−18 31	−18 49	27
28	8 28 58	9 13 51 46	7 15 39 49	8 8 21 16	9 3 46 49	10 12 8 3	8 16 57 11	9 20 50 39	1 3 56 39	1 5 3 18	−18 16	−22 51	28
29	8 32 55	9 14 52 45	8 0 13 54	8 9 4 56	9 2 50 52	10 12 21 43	8 16 55 4	9 20 57 49	1 3 53 29	1 5 0 49	−18 0	−25 29	29

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (30 जन. से 3 मार्च, 2022 ई. तक)

1 फर., 2022 ई. को अयनांश 24°/9'/44" ; 1 मार्च, 2022 ई. को अयनांश 24°/9'/47"

ता.	सम्पातिक काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	ता.
जन.	0-00 Hr. GMT	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
30	8 36 51	9 15 53 43	8 14 59 29	8 9 48 39	9 2 3 2	10 12 35 26	8 16 55 23	9 21 4 59	1 3 50 18	1 4 55 36	−17 44	−26 22	30
31	8 40 48	9 16 54 40	8 29 50 18	8 10 32 23	9 1 23 48	10 12 49 11	8 16 58 7	9 21 12 10	1 3 47 7	1 4 47 33	−17 27	−25 22	31
फर.	8 44 45	9 17 55 36	9 14 38 20	8 11 16 9	9 0 53 19	10 13 2 59	8 17 3 13	9 21 19 21	1 3 43 56	1 4 37 11	−17 10	−22 37	फर
2	8 48 41	9 18 56 32	9 29 14 55	8 11 59 58	9 0 31 31	10 13 16 50	8 17 10 36	9 21 26 32	1 3 40 46	1 4 25 31	−16 53	−18 26	2
3	8 52 38	9 19 57 26	10 13 32 28	8 12 43 49	9 0 18 12	10 13 30 44	8 17 20 15	9 21 33 44	1 3 37 35	1 4 13 48	−16 36	−13 17	3
4	8 56 34	9 20 58 19	10 27 25 29	8 13 27 41	9 0 12 58	10 13 44 40	8 17 32 5	9 21 40 56	1 3 34 24	1 4 3 17	−16 18	−7 35	4
5	9 0 31	9 21 59 11	11 10 51 27	8 14 11 35	9 0 15 22	10 13 58 38	8 17 46 4	9 21 48 7	1 3 31 13	1 3 54 56	−16 0	−1 42	5
6	9 4 27	9 23 0 1	11 23 50 35	8 14 55 32	9 0 24 57	10 14 12 38	8 18 2 7	9 21 55 19	1 3 28 3	1 3 49 12	−15 41	+4 4	6
7	9 8 24	9 24 0 50	0 6 25 27	8 15 39 29	9 0 41 11	10 14 26 41	8 18 20 9	9 22 2 31	1 3 24 52	1 3 46 3	−15 23	9 30	7
8	9 12 20	9 25 1 38	0 18 40 17	8 16 23 29	9 1 3 32	10 14 40 46	8 18 40 8	9 22 9 42	1 3 21 41	1 3 44 55	−15 4	14 26	8
9	9 16 17	9 26 2 24	1 0 40 18	8 17 7 31	9 1 31 35	10 14 54 53	8 19 2 0	9 22 16 54	1 3 18 30	1 3 44 49	−14 45	18 43	9
10	9 20 13	9 27 3 8	1 12 31 6	8 17 51 34	9 2 4 50	10 15 9 1	8 19 25 41	9 22 24 5	1 3 15 20	1 3 44 37	−14 26	22 11	10
11	9 24 10	9 28 3 51	1 24 18 14	8 18 35 40	9 2 42 50	10 15 23 12	8 19 51 8	9 22 31 15	1 3 12 9	1 3 43 11	−14 6	24 42	11
12	9 28 7	9 29 4 33	2 6 6 54	8 19 19 47	9 3 25 12	10 15 37 24	8 20 18 16	9 22 38 25	1 3 8 58	1 3 39 35	−13 46	26 9	12
13	9 32 3	10 0 5 12	2 18 1 30	8 20 3 56	9 4 11 36	10 15 51 38	8 20 47 1	9 22 45 35	1 3 5 47	1 3 33 13	−13 26	26 23	13
14	9 36 0	10 1 5 51	3 0 5 43	8 20 48 6	9 5 1 40	10 16 5 53	8 21 17 21	9 22 52 44	1 3 2 37	1 3 23 57	−13 6	25 23	14
15	9 39 56	10 2 6 27	3 12 22 7	8 21 32 20	9 5 55 6	10 16 20 10	8 21 49 12	9 22 59 53	1 2 59 26	1 3 12 7	−12 46	23 10	15
16	9 43 53	10 3 7 4	3 24 52 5	8 22 16 35	9 6 51 39	10 16 34 28	8 22 22 30	9 23 7 0	1 2 56 15	1 2 58 32	−12 25	19 49	16
17	9 47 49	10 4 7 36	4 7 35 58	8 23 0 52	9 7 51 4	10 16 48 48	8 22 57 13	9 23 14 7	1 2 53 4	1 2 44 20	−12 4	15 29	17
18	9 51 46	10 5 8 8	4 20 33 15	8 23 45 11	9 8 53 8	10 17 3 9	8 23 33 17	9 23 21 13	1 2 49 54	1 2 30 50	−11 43	10 24	18
19	9 55 43	10 6 8 39	5 3 42 44	8 24 29 32	9 9 57 39	10 17 17 31	8 24 10 40	9 23 28 19	1 2 46 43	1 2 19 13	−11 22	+4 46	19
20	9 59 39	10 7 9 8	5 17 3 7	8 25 13 54	9 11 4 26	10 17 31 54	8 24 49 17	9 23 35 23	1 2 43 32	1 2 10 24	−11 00	−1 10	20
21	10 3 36	10 8 9 36	6 0 33 20	8 25 58 19	9 12 13 22	10 17 46 19	8 25 29 6	9 23 42 26	1 2 40 21	1 2 4 44	−10 39	−7 7	21
22	10 7 32	10 9 10 3	6 14 12 40	8 26 42 45	9 13 24 16	10 18 0 44	8 26 10 5	9 23 49 29	1 2 37 11	1 2 2 0	−10 17	−12 50	22
23	10 11 29	10 10 10 28	6 28 1 1	8 27 27 14	9 14 37 4	10 18 15 11	8 26 52 9	9 23 56 30	1 2 34 0	1 2 1 19	−9 55	−17 58	23
24	10 15 25	10 11 10 52	7 11 58 27	8 28 11 44	9 15 51 37	10 18 29 38	8 27 35 18	9 24 3 30	1 2 30 49	1 2 1 27	−9 33	−22 12	24
25	10 19 22	10 12 11 15	7 26 5 2	8 28 56 17	9 17 7 50	10 18 44 6	8 28 19 28	9 24 10 28	1 2 27 38	1 2 0 58	−9 11	−25 8	25
26	10 23 18	10 13 11 36	8 10 19 53	8 29 40 50	9 18 25 39	10 18 58 34	8 29 4 36	9 24 17 26	1 2 24 28	1 1 58 37	−8 49	−26 29	26
27	10 27 15	10 14 11 56	8 24 41 3	9 0 25 26	9 19 44 58	10 19 13 4	8 29 50 40	9 24 24 22	1 2 21 17	1 1 53 37	−8 26	−26 5	27
28	10 31 11	10 15 12 14	9 9 4 59	9 1 10 4	9 21 5 44	10 19 27 34	9 0 37 37	9 24 31 16	1 2 18 6	1 1 45 46	−8 3	−23 56	28
मार्च	10 35 8	10 16 12 31	9 23 26 42	9 1 54 43	9 22 27 54	10 19 42 4	9 1 25 26	9 24 38 9	1 2 14 55	1 1 35 29	−7 41	−20 17	मार्च
2	10 39 5	10 17 12 46	10 7 40 18	9 2 39 23	9 23 51 25	10 19 56 34	9 2 14 5	9 24 45 0	1 2 11 44	1 1 23 46	−7 18	−15 29	2
3	10 43 1	10 18 13 0	10 21 39 58	9 3 24 5	9 25 16 14	10 20 11 6	9 3 3 30	9 24 51 50	1 2 8 34	1 1 11 50	−6 55	−9 55	3

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (4 मार्च से 5 अप्रैल 2022 ई. तक)

1 अप्रैल, 2022 ई. को अयनांश 24°/9′/50″

ता. मार्च	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	मार्च
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
4	10 46 58	10 19 13 12	11 5 20 53	9 4 8 49	9 26 42 19	10 20 25 37	9 3 53 41	9 24 58 37	1 2 5 23	1 1 0 57	−6 32	−4 1	4
5	10 50 54	10 20 13 21	11 18 40 2	9 4 53 34	9 28 9 38	10 20 40 8	9 4 44 35	9 25 5 23	1 2 2 12	1 0 52 7	−6 9	+1 56	5
6	10 54 51	10 21 13 29	0 1 36 33	9 5 38 20	9 29 38 11	10 20 54 39	9 5 36 10	9 25 12 7	1 1 59 1	1 0 45 52	−5 46	7 40	6
7	10 58 47	10 22 13 35	0 14 11 34	9 6 23 8	10 1 7 56	10 21 9 10	9 6 28 26	9 25 18 49	1 1 55 50	1 0 42 17	−5 22	12 55	7
8	11 2 44	10 23 13 39	0 26 27 59	9 7 7 57	10 2 38 51	10 21 23 41	9 7 21 20	9 25 25 29	1 1 52 40	1 0 40 54	−4 59	17 33	8
9	11 6 40	10 24 13 40	1 8 30 6	9 7 52 47	10 4 10 58	10 21 38 11	9 8 14 52	9 25 32 7	1 1 49 29	1 0 40 57	−4 35	21 22	9
10	11 10 37	10 25 13 40	1 20 22 49	9 8 37 39	10 5 44 14	10 21 52 42	9 9 8 59	9 25 38 42	1 1 46 18	1 0 41 23	−4 12	24 15	10
11	11 14 34	10 26 13 37	2 2 11 38	9 9 22 32	10 7 18 39	10 22 07 12	9 10 3 40	9 25 45 16	1 1 43 7	1 0 41 12	−3 48	26 3	11
12	11 18 30	10 27 13 32	2 14 1 56	9 10 7 26	10 8 54 15	10 22 21 41	9 10 58 55	9 25 51 47	1 1 39 57	1 0 39 29	−3 25	26 41	12
13	11 22 27	10 28 13 25	2 25 58 55	9 10 52 21	10 10 31 0	10 22 36 10	9 11 54 41	9 25 58 15	1 1 36 46	1 0 35 38	−3 1	26 4	13
14	11 26 13	10 29 13 16	3 8 7 7	9 11 37 18	10 12 8 56	10 22 50 39	9 12 50 59	9 26 4 41	1 1 33 35	1 0 29 25	−2 38	24 13	14
15	11 30 20	11 0 13 3	3 20 30 7	9 12 22 16	10 13 48 2	10 23 5 6	9 13 47 46	9 26 11 5	1 1 30 24	1 0 21 2	−2 14	21 12	15
16	11 34 16	11 1 12 50	4 3 10 23	9 13 7 16	10 15 28 20	10 23 19 33	9 14 45 2	9 26 17 26	1 1 27 13	1 0 11 5	−1 50	17 9	16
17	11 38 13	11 2 12 34	4 16 8 55	9 13 52 16	10 17 9 49	10 23 33 59	9 15 42 46	9 26 23 45	1 1 24 3	1 0 0 27	−1 27	12 13	17
18	11 42 9	11 3 12 16	4 29 25 15	9 14 37 18	10 18 52 30	10 23 48 24	9 16 40 57	9 26 30 1	1 1 20 52	0 29 50 14	−1 3	6 36	18
19	11 46 6	11 4 11 57	5 12 57 36	9 15 22 21	10 20 36 25	10 24 2 49	9 17 39 34	9 26 36 14	1 1 17 41	0 29 41 25	−0 39	+0 35	19
20	11 50 3	11 5 11 35	5 26 43 10	9 16 7 26	10 22 21 34	10 24 17 12	9 18 38 35	9 26 42 24	1 1 14 30	0 29 34 49	−0 15	−5 35	20
21	11 53 59	11 6 11 11	6 10 38 46	9 16 52 31	10 24 7 59	10 24 31 34	9 19 38 2	9 26 48 32	1 1 11 20	0 29 30 47	+0 8	−11 34	21
22	11 57 56	11 7 10 46	6 24 41 6	9 17 37 38	10 25 55 39	10 24 45 55	9 20 37 51	9 26 54 36	1 1 8 9	0 29 29 11	0 32	−17 1	22
23	12 1 52	11 8 10 19	7 8 47 32	9 18 22 46	10 27 44 34	10 25 0 15	9 21 38 3	9 27 0 38	1 1 4 58	0 29 29 25	0 56	−21 34	23
24	12 5 49	11 9 9 50	7 22 55 54	9 19 7 56	10 29 34 47	10 25 14 33	9 22 38 38	9 27 6 37	1 1 1 47	0 29 30 30	1 19	−24 51	24
25	12 9 45	11 10 9 19	8 7 4 40	9 19 53 6	11 1 26 17	10 25 28 50	9 23 39 34	9 27 12 32	1 0 58 36	0 29 31 20	1 43	−26 34	25
26	12 13 42	11 11 8 47	8 21 12 29	9 20 38 18	11 3 19 3	10 25 43 6	9 24 40 49	9 27 18 25	1 0 55 26	0 29 30 57	2 7	−26 34	26
27	12 17 38	11 12 8 13	9 5 17 57	9 21 23 30	11 5 13 7	10 25 57 20	9 25 42 24	9 27 24 14	1 0 52 15	0 29 28 41	2 30	−24 51	27
28	12 21 35	11 13 7 37	9 19 19 12	9 22 8 44	11 7 8 28	10 26 11 33	9 26 44 17	9 27 30 0	1 0 49 4	0 29 24 20	2 54	−21 37	28
29	12 25 32	11 14 6 59	10 3 13 51	9 22 53 58	11 9 5 5	10 26 25 44	9 27 46 29	9 27 35 43	1 0 45 53	0 29 18 12	3 17	−17 11	29
30	12 29 28	11 15 6 20	10 16 59 11	9 23 39 13	11 11 2 56	10 26 39 53	9 28 48 58	9 27 41 22	1 0 42 43	0 29 10 57	3 40	−11 54	30
31	12 33 25	11 16 5 39	11 0 32 15	9 24 24 29	11 13 1 57	10 26 54 0	9 29 51 43	9 27 46 57	1 0 39 32	0 29 3 27	4 4	−6 8	31
अप्रै.	12 37 21	11 17 4 55	11 13 50 31	9 25 9 46	11 15 2 7	10 27 8 6	10 0 54 44	9 27 52 29	1 0 36 21	0 28 56 38	4 27	−0 11	अप्रै.
2	12 41 18	11 18 4 10	11 26 52 14	9 25 55 3	11 17 3 20	10 27 22 9	10 1 58 1	9 27 57 58	1 0 33 10	0 28 51 12	4 50	+5 40	2
3	12 45 14	11 19 3 22	0 9 36 42	9 26 40 20	11 19 5 32	10 27 36 11	10 3 1 33	9 28 3 23	1 0 29 59	0 28 47 35	5 13	11 10	3
4	12 49 11	11 20 2 33	0 22 4 31	9 27 25 39	11 21 8 36	10 27 50 10	10 4 5 19	9 28 8 44	1 0 26 49	0 28 45 53	5 36	16 7	4
5	12 53 7	11 21 1 41	1 4 17 32	9 28 10 57	11 23 12 23	10 28 4 7	10 5 9 18	9 28 14 1	1 0 23 38	0 28 45 51	5 59	20 18	5

यूरेनस, नैपच्यून एवं प्लूटो के निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5:30 बजे (भा. स्टै. टा.) वि. सं. २०७८ (2021–22 ई.)

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
अप्रै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
अप्रै.	0 14 51 44	10 27 16	9 2 29
4	0 15 1 16	10 27 23	9 2 31
7	0 15 10 59	10 27 29	9 2 33
10	0 15 20 50	10 27 35	9 2 35
13	0 15 30 50	10 27 41	9 2 36
16	0 15 40 56	10 27 47	9 2 37
19	0 15 51 7	10 27 53	9 2 38
22	0 16 1 23	10 27 59	9 2 39
25	0 16 11 42	10 28 04	9 2 39
28	0 16 22 3	10 28 09	9 2 39
मई	0 16 32 25	10 28 14	9 2 39
4	0 16 42 47	10 28 19	9 2 39
7	0 16 53 8	10 28 24	9 2 38
10	0 17 3 27	10 28 28	9 2 37
13	0 17 13 43	10 28 32	9 2 36
16	0 17 23 54	10 28 36	9 2 35
19	0 17 34 0	10 28 40	9 2 33
22	0 17 43 59	10 28 43	9 2 31
25	0 17 53 51	10 28 47	9 2 29
28	0 18 3 34	10 28 50	9 2 27
31	0 18 13 7	10 28 52	9 2 24
जून	0 18 16 16	10 28 53	9 2 23
4	0 18 25 35	10 28 55	9 2 21
7	0 18 34 43	10 28 57	9 2 18
10	0 18 43 37	10 28 59	9 2 14
13	0 18 52 18	10 29 0	9 2 11
16	0 19 0 44	10 29 1	9 2 8
19	0 19 8 54	10 29 2	9 2 4
22	0 19 16 47	10 29 3	9 2 0
25	0 19 24 23	10 29 3	9 1 56
28	0 19 31 41	10 29 3	9 1 52
30	0 19 36 22	10 29 3	9 1 50

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
जुला	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
जुला	0 19 38 40	10 29 2	9 1 48
4	0 19 45 19	10 29 2	9 1 44
7	0 19 51 37	10 29 1	9 1 40
10	0 19 57 34	10 29 0	9 1 36
13	0 20 3 9	10 28 58	9 1 31
16	0 20 8 21	10 28 56	9 1 27
19	0 20 13 10	10 28 54	9 1 23
22	0 20 17 34	10 28 52	9 1 18
25	0 20 21 35	10 28 49	9 1 14
28	0 20 25 10	10 28 47	9 1 10
अग.	0 20 29 18	10 28 42	9 1 04
4	0 20 31 54	10 28 39	9 1 0
7	0 20 34 3	10 28 36	9 0 56
10	0 20 35 46	10 28 32	9 0 52
13	0 20 37 2	10 28 28	9 0 48
16	0 20 37 51	10 28 24	9 0 44
19	0 20 38 13	10 28 20	9 0 41
22	0 20 38 9	10 28 15	9 0 37
25	0 20 37 38	10 28 11	9 0 34
28	0 20 36 40	10 28 6	9 0 31
31	0 20 35 16	10 28 1	9 0 28
सितं	0 20 34 42	10 28 0	9 0 27
4	0 20 32 43	10 27 55	9 0 24
7	0 20 30 18	10 27 50	9 0 22
10	0 20 27 28	10 27 45	9 0 19
13	0 20 24 13	10 27 40	9 0 17
16	0 20 20 35	10 27 35	9 0 15
19	0 20 16 33	10 27 30	9 0 14
22	0 20 12 10	10 27 25	9 0 12
25	0 20 7 25	10 27 20	9 0 11
28	0 20 2 19	10 27 16	9 0 10
अक्तू	0 19 56 55	10 27 11	9 0 10
4	0 19 51 12	10 27 6	9 0 09

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
अक्तू	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
7	0 19 45 12	10 27 2	9 0 09
10	0 19 38 56	10 26 57	9 0 09
13	0 19 32 26	10 26 53	9 0 10
16	0 19 25 44	10 26 49	9 0 11
19	0 19 18 50	10 26 45	9 0 12
22	0 19 11 47	10 26 41	9 0 13
25	0 19 4 36	10 26 38	9 0 14
28	0 18 57 19	10 26 34	9 0 16
31	0 18 49 56	10 26 31	9 0 18
नवं.	0 18 47 28	10 26 30	9 0 19
4	0 18 40 2	10 26 27	9 0 21
7	0 18 32 35	10 26 25	9 0 24
10	0 18 25 10	10 26 22	9 0 26
13	0 18 17 47	10 26 20	9 0 30
16	0 18 10 29	10 26 19	9 0 33
19	0 18 3 18	10 26 17	9 0 36
22	0 17 56 15	10 26 16	9 0 40
25	0 17 49 22	10 26 15	9 0 44
28	0 17 42 40	10 26 15	9 0 48
दिसं	0 17 36 11	10 26 15	9 0 53
4	0 17 29 56	10 26 15	9 0 57
7	0 17 23 58	10 26 15	9 1 02
10	0 17 18 17	10 26 16	9 1 07
13	0 17 12 55	10 26 17	9 1 12
16	0 17 7 54	10 26 18	9 1 17
19	0 17 3 14	10 26 20	9 1 22
22	0 16 58 56	10 26 22	9 1 28
25	0 16 55 2	10 26 24	9 1 33
28	0 16 51 32	10 26 27	9 1 39
31	0 16 48 27	10 26 30	9 1 44
2022 जन.	0 16 47 31	10 26 31	9 1 46
4	0 16 45 1	10 26 34	9 1 52
7	0 16 42 58	10 26 37	9 1 58

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
जन.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
10	0 16 41 23	10 26 41	9 2 04
13	0 16 40 15	10 26 45	9 2 10
16	0 16 39 36	10 26 49	9 2 16
19	0 16 39 24	10 26 54	9 2 22
22	0 16 39 41	10 26 59	9 2 28
25	0 16 40 26	10 27 04	9 2 33
28	0 16 41 40	10 27 09	9 2 39
31	0 16 43 22	10 27 14	9 2 45
फर.	0 16 44 3	10 27 16	9 2 47
4	0 16 46 22	10 27 22	9 2 53
7	0 16 49 10	10 27 28	9 2 59
10	0 16 52 25	10 27 34	9 3 04
13	0 16 56 7	10 27 40	9 3 10
16	0 17 0 15	10 27 46	9 3 15
19	0 17 4 48	10 27 52	9 3 20
22	0 17 9 47	10 27 59	9 3 25
25	0 17 15 10	10 28 05	9 3 30
28	0 17 20 57	10 28 12	9 3 35
मार्च	0 17 22 58	10 28 14	9 3 37
4	0 17 29 16	10 28 21	9 3 41
7	0 17 35 56	10 28 28	9 3 46
10	0 17 42 56	10 28 35	9 3 50
13	0 17 50 17	10 28 42	9 3 54
16	0 17 57 57	10 28 48	9 3 58
19	0 18 5 54	10 28 55	9 4 01
22	0 18 14 9	10 29 02	9 4 04
25	0 18 22 40	10 29 09	9 4 08
28	0 18 31 26	10 29 15	9 4 11
31	0 18 40 27	10 29 22	9 4 13
अप्रै.	0 18 43 30	10 29 24	9 4 14
4	0 18 52 47	10 29 31	9 4 16
7	0 19 2 16	10 29 37	9 4 18
10	0 19 11 56	10 29 44	9 4 20

'दिल्ली' एवं 'जालन्धर' के दैनिक चन्द्रोदय–चन्द्रास्त काल (भा.स्टैं.टा.) सन् 2021–22 ई.

तारीख	अप्रैल–2021 ई.				मई–2021 ई.			
	दिल्ली		जालन्धर		दिल्ली		जालन्धर	
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	22 49	8 44	23 02	8 47	23 51	9 12	– –	9 13
2	23 57	9 32	– –	9 34	– –	10 16	0 05	10 15
3	– –	10 27	0 11	10 26	0 46	11 18	1 00	11 19
4	1 01	11 24	1 15	11 23	1 33	12 21	1 46	12 23
5	1 59	12 26	2 13	12 25	2 13	13 21	2 24	13 23
6	2 49	13 27	3 03	13 27	2 48	14 17	2 58	14 22
7	3 33	14 26	3 45	14 28	3 20	15 11	3 28	15 17
8	4 11	15 25	4 22	15 28	3 49	16 04	3 57	16 11
9	4 45	16 22	4 55	16 25	4 18	16 57	4 24	17 05
10	5 16	17 15	5 24	17 21	4 47	17 50	4 52	17 59
11	5 46	18 09	5 52	18 16	5 17	18 44	5 21	18 54
12	6 15	19 01	6 20	19 10	5 50	19 38	5 52	19 49
13	6 44	19 54	6 48	20 04	6 26	20 32	6 27	20 45
14	7 15	20 48	7 18	21 00	7 06	21 28	7 06	21 41
15	7 49	21 43	7 51	21 55	7 51	22 20	7 51	22 35
16	8 26	22 38	8 27	22 51	8 41	23 12	8 41	23 26
17	9 08	23 32	9 08	23 46	9 36	23 57	9 36	– –
18	9 55	– –	9 54	– –	10 33	– –	10 34	0 12
19	10 47	00 24	10 46	0 38	11 33	00 41	11 35	0 54
20	11 43	1 15	11 43	1 28	12 34	1 20	12 37	1 32
21	12 43	2 01	12 44	2 13	13 36	1 56	13 40	2 07
22	13 45	2 44	13 47	2 55	14 39	2 31	14 45	2 41
23	14 49	3 22	14 52	3 33	15 44	3 06	15 52	3 14
24	15 53	4 00	15 58	4 09	16 51	3 44	17 01	3 49
25	16 59	4 37	17 06	4 43	18 02	4 23	18 13	4 26
26	18 07	5 14	18 16	5 19	19 14	5 07	19 27	5 09
27	19 17	5 52	19 27	5 56	20 26	5 57	20 40	5 58
28	20 28	6 33	20 40	6 36	21 34	6 54	21 48	6 55
29	21 40	7 20	21 53	7 21	22 35	7 57	22 49	7 57
30	22 49	8 13	23 03	8 13	23 27	9 02	23 40	9 02
31					– –	10 08	– –	10 10

तारीख	जून–2021 ई.				जुलाई–2021 ई.			
	दिल्ली		जालन्धर		दिल्ली		जालन्धर	
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	00 11	11 11	0 23	11 14	– –	11 53	0 01	11 59
2	00 49	12 09	0 59	12 14	0 23	12 47	0 30	12 54
3	1 22	13 07	1 31	13 11	0 52	13 39	0 58	13 48
4	1 53	14 00	2 00	14 07	1 21	14 33	1 26	14 43
5	2 22	14 52	2 28	15 01	1 52	15 25	1 55	15 38
6	2 50	15 45	2 55	15 55	2 26	16 20	2 28	16 33
7	3 20	16 38	3 24	16 49	3 03	17 16	3 04	17 29
8	3 51	17 32	3 54	17 44	3 45	18 11	3 45	18 25
9	4 26	18 27	4 28	18 40	4 33	19 04	4 32	19 18
10	5 05	19 22	5 05	19 36	5 25	19 54	5 25	20 08
11	5 49	20 17	5 48	20 31	6 22	20 39	6 22	20 53
12	6 37	21 09	6 37	21 23	7 21	21 20	7 22	21 33
13	7 31	21 56	7 31	22 11	8 21	21 59	8 23	22 10
14	8 28	22 40	8 28	22 54	9 21	22 34	9 25	22 43
15	9 27	23 21	9 28	23 32	10 21	23 08	10 27	23 15
16	10 26	23 58	10 29	– –	11 22	23 41	11 29	23 47
17	11 27	– –	11 31	0 08	12 23	– –	12 32	– –
18	12 27	0 32	12 33	0 41	13 27	0 15	13 37	0 20
19	13 29	1 06	13 36	1 13	14 33	0 53	14 45	0 56
20	14 33	1 40	14 42	1 46	15 42	1 35	15 55	1 37
21	15 40	2 16	15 50	2 21	16 52	2 23	17 05	2 24
22	16 50	2 57	17 02	2 59	17 58	3 19	18 12	3 19
23	18 01	3 42	18 15	3 44	18 59	4 22	19 13	4 21
24	19 12	4 35	19 26	4 36	19 52	5 28	20 05	5 28
25	20 17	5 36	20 31	5 36	20 37	6 35	20 49	6 37
26	21 14	6 41	21 28	6 42	21 16	7 39	21 26	7 43
27	22 03	7 49	22 16	7 50	21 51	8 41	21 59	8 46
28	22 45	8 54	22 56	8 57	22 22	9 41	22 29	9 46
29	23 21	9 57	23 31	10 01	22 52	10 36	22 58	10 43
30	23 53	10 56	– –	11 01	23 21	11 31	23 26	11 39
31					23 52	12 24	23 55	12 33

तारीख	अगस्त–2021 ई.				सितंबर–2021 ई.			
	दिल्ली		जालन्धर		दिल्ली		जालन्धर	
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	– –	13 18	– –	13 29	0 18	14 47	0 18	15 01
2	0 24	14 11	0 27	14 25	1 07	15 39	1 06	15 54
3	1 00	15 08	1 01	15 21	2 00	16 28	2 00	16 42
4	1 41	16 02	1 41	16 17	2 58	17 14	2 58	17 26
5	2 26	16 56	2 26	17 11	3 59	17 55	4 00	18 05
6	3 17	17 47	3 16	18 02	5 00	18 33	5 03	18 43
7	4 12	18 35	4 12	18 49	6 03	19 08	6 07	19 17
8	5 11	19 18	5 12	19 31	7 05	19 42	7 11	19 49
9	6 12	19 58	6 14	20 10	8 08	20 17	8 16	20 22
10	7 14	20 35	7 17	20 45	9 13	20 53	9 22	20 57
11	8 15	21 09	8 20	21 17	10 18	21 32	10 29	21 34
12	9 16	21 43	9 22	21 49	11 25	22 16	11 37	22 17
13	10 18	22 16	10 26	22 22	12 33	23 05	12 46	23 05
14	11 21	22 53	11 30	22 56	13 39	– –	13 53	– –
15	12 25	23 33	12 37	23 35	14 41	0 01	14 56	0 01
16	13 32	– –	13 45	– –	15 37	1 02	15 51	1 02
17	14 39	0 18	14 53	0 18	16 26	2 06	16 39	2 07
18	15 45	1 10	16 00	1 08	17 08	3 11	17 20	3 12
19	16 47	2 08	17 01	2 07	17 45	4 14	17 55	4 17
20	17 42	3 12	17 55	3 10	18 18	5 14	18 27	5 19
21	18 30	4 17	18 42	4 17	18 49	6 12	18 57	6 18
22	19 11	5 22	19 22	5 24	19 19	7 09	19 25	7 16
23	19 47	6 25	19 56	6 29	19 49	8 04	19 54	8 12
24	20 20	7 26	20 28	7 30	20 20	8 58	20 23	9 08
25	20 50	8 23	20 57	8 30	20 54	9 53	20 55	10 04
26	21 20	9 18	21 25	9 27	21 30	10 48	21 31	11 01
27	21 50	10 13	21 54	10 23	22 11	11 43	22 11	11 57
28	22 22	11 07	22 25	11 19	22 57	12 38	22 57	12 52
29	22 57	12 02	22 58	12 15	23 48	13 30	23 48	13 45
30	23 35	12 58	23 36	13 11	– –	14 20	– –	14 35
31	– –	13 52	– –	14 07				

'दिल्ली' एवं 'जालन्धर' के दैनिक चन्द्रोदय–चन्द्रास्त काल (भा.स्टैं.टा.) सन् 2021–22 ई.

तारीख	अक्तू.–2021 ई. दिल्ली सूर्योदय	दिल्ली सूर्यास्त	जालन्धर सूर्योदय	जालन्धर सूर्यास्त	नवंबर–2021 ई. दिल्ली सूर्योदय	दिल्ली सूर्यास्त	जालन्धर सूर्योदय	जालन्धर सूर्यास्त
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	0 44	15 07	0 44	15 20	2 29	15 32	2 33	15 42
2	1 42	15 49	1 43	16 01	3 31	16 07	3 36	16 14
3	2 43	16 27	2 45	16 38	4 35	16 42	4 42	16 48
4	3 45	17 04	3 49	17 13	5 41	17 20	5 50	17 23
5	4 48	17 38	4 53	17 46	6 50	18 00	7 01	18 03
6	5 52	18 13	5 58	18 19	8 02	18 49	8 14	18 49
7	6 57	18 49	7 05	18 54	9 14	19 43	9 28	19 42
8	8 03	19 28	8 14	19 31	10 24	20 44	10 38	20 42
9	9 12	20 11	9 24	20 13	11 27	21 50	11 42	21 49
10	10 22	21 00	10 36	21 00	12 23	22 56	12 36	22 56
11	11 31	21 55	11 46	21 55	13 09	23 59	13 21	– –
12	12 36	22 56	12 51	22 55	13 49	– –	14 00	0 02
13	13 35	23 59	13 49	23 59	14 23	1 02	14 33	1 05
14	14 25	– –	14 39	– –	14 54	2 00	15 03	2 04
15	15 09	1 04	15 21	1 05	15 24	2 56	15 31	3 02
16	15 46	2 07	15 57	2 09	15 53	3 50	15 58	3 58
17	16 20	3 07	16 29	3 10	16 22	4 44	16 26	4 53
18	16 51	4 04	16 59	4 10	16 54	5 38	16 56	5 48
19	17 21	5 00	17 27	5 07	17 28	6 33	17 29	6 45
20	17 50	5 55	17 55	6 03	18 05	7 28	18 06	7 41
21	18 20	6 50	18 24	6 59	18 48	8 24	18 47	8 37
22	18 53	7 45	18 55	7 55	19 34	9 18	19 34	9 32
23	19 28	8 40	19 29	8 52	20 26	10 10	20 25	10 24
24	20 07	9 35	20 07	9 48	21 21	10 57	21 20	11 11
25	20 51	10 30	20 50	10 44	22 17	11 41	22 18	11 54
26	21 39	11 24	21 39	11 38	23 16	12 20	23 18	12 32
27	22 32	12 14	22 32	12 28	– –	12 56	– –	13 07
28	23 29	13 01	23 29	13 14	0 14	13 30	0 18	13 40
29	– –	13 44	– –	13 56	1 14	14 03	1 19	14 10
30	0 28	14 23	0 29	14 34	2 15	14 36	2 21	14 42
31	1 28	14 59	1 30	15 09				

तारीख	दिसंबर–2021 ई. दिल्ली सूर्योदय	दिल्ली सूर्यास्त	जालन्धर सूर्योदय	जालन्धर सूर्यास्त	जनवरी–2022 ई. दिल्ली सूर्योदय	दिल्ली सूर्यास्त	जालन्धर सूर्योदय	जालन्धर सूर्यास्त
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	3 18	15 11	3 26	15 16	5 32	16 02	5 46	16 02
2	4 24	15 50	4 34	15 52	6 44	17 05	6 58	17 04
3	5 34	16 34	5 46	16 35	7 50	18 13	8 04	18 13
4	6 47	17 24	7 00	17 25	8 48	19 24	9 02	19 25
5	8 00	18 24	8 14	18 23	9 38	20 33	9 50	20 35
6	9 09	19 30	9 24	19 29	10 19	21 38	10 30	21 42
7	10 11	20 39	10 25	20 39	10 55	22 39	11 04	22 44
8	11 03	21 47	11 16	21 48	11 27	23 37	11 35	23 44
9	11 47	22 52	11 58	22 54	11 57	– –	12 04	– –
10	12 24	23 53	12 34	23 57	12 27	0 33	12 32	0 41
11	12 57	– –	13 06	– –	12 57	1 27	13 00	1 37
12	13 27	0 50	13 34	0 56	13 29	2 22	13 31	2 32
13	13 56	1 46	14 02	1 53	14 04	3 16	14 05	3 28
14	14 25	2 40	14 30	2 48	14 43	4 11	14 43	4 25
15	14 56	3 30	14 59	3 43	15 27	5 06	15 27	5 20
16	15 28	4 27	15 30	4 39	16 16	6 00	16 15	6 14
17	16 05	5 22	16 05	5 35	17 09	6 51	17 09	7 05
18	16 45	6 18	16 45	6 31	18 06	7 38	18 06	7 51
19	17 31	7 13	17 30	7 27	19 04	8 20	19 05	8 33
20	18 21	8 05	18 21	8 19	20 02	8 58	20 04	9 10
21	19 15	8 55	19 15	9 09	21 00	9 33	21 04	9 43
22	20 12	9 40	20 12	9 53	21 58	10 05	22 03	10 14
23	21 09	10 20	21 11	10 33	22 56	10 37	23 03	10 44
24	22 07	10 57	22 10	11 08	23 56	11 08	– –	11 14
25	23 05	11 31	23 09	11 41	– –	11 41	0 04	11 45
26	– –	12 03	– –	12 11	0 58	12 17	1 08	12 20
27	0 03	12 34	0 09	12 41	2 03	12 59	2 15	13 00
28	1 02	13 06	1 10	13 12	3 12	13 47	3 25	13 47
29	2 05	13 42	2 14	13 46	4 21	14 44	4 36	14 44
30	3 10	14 22	3 21	14 24	5 29	15 49	5 43	15 48
31	4 20	15 08	4 32	15 09	6 31	16 58	6 45	16 58

तारीख	फरवरी–2022 ई. दिल्ली सूर्योदय	दिल्ली सूर्यास्त	जालन्धर सूर्योदय	जालन्धर सूर्यास्त	मार्च–2022 ई. दिल्ली सूर्योदय	दिल्ली सूर्यास्त	जालन्धर सूर्योदय	जालन्धर सूर्यास्त
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 24	18 09	7 37	18 10	6 01	16 56	6 13	16 58
2	8 10	19 17	8 21	19 19	6 42	18 02	6 53	18 06
3	8 49	20 21	8 59	20 26	7 18	19 05	7 27	19 10
4	9 23	21 22	9 32	21 28	7 51	20 05	7 59	20 11
5	9 55	22 20	10 02	22 28	8 22	21 03	8 28	21 11
6	10 25	23 17	10 31	23 26	8 53	22 00	8 58	22 09
7	10 56	– –	11 00	– –	9 25	22 56	9 28	23 07
8	11 28	0 12	11 30	0 23	9 58	23 53	10 00	– –
9	12 02	1 08	12 03	1 19	10 35	– –	10 35	0 05
10	12 40	2 03	12 40	2 16	11 15	0 49	11 15	1 02
11	13 22	2 59	13 21	3 12	12 01	1 44	12 00	1 58
12	14 09	3 53	14 08	4 07	12 51	2 37	12 50	2 50
13	15 01	4 45	15 00	4 59	13 45	3 27	13 44	3 41
14	15 56	5 33	15 56	5 47	14 42	4 12	14 42	4 26
15	16 55	6 17	16 55	6 30	15 41	4 53	15 42	5 06
16	17 54	6 57	17 56	7 09	16 40	5 31	16 43	5 42
17	18 53	7 33	18 56	7 44	17 40	6 05	17 44	6 15
18	19 52	8 07	19 57	8 16	18 40	6 38	18 46	6 46
19	20 51	8 39	20 57	8 46	19 41	7 10	19 48	7 17
20	21 51	9 10	21 59	9 16	20 43	7 42	20 53	7 48
21	22 52	9 43	23 02	9 47	21 48	8 18	21 59	8 21
22	23 56	10 18	– –	10 21	22 55	8 56	23 07	8 58
23	– –	10 57	0 07	10 58	– –	9 40	– –	9 40
24	1 02	11 42	1 15	11 42	0 03	10 30	0 17	10 29
25	2 10	12 34	2 23	12 33	1 10	11 27	1 24	11 26
26	3 16	13 34	3 30	13 33	2 12	12 30	2 27	12 29
27	4 18	14 40	4 32	14 39	3 08	13 36	3 22	13 37
28	5 13	15 48	5 27	15 49	3 57	14 43	4 10	14 45
29					4 39	15 48	4 51	15 51
30					5 16	16 51	5 26	16 55
31					5 49	17 51	5 58	17 57

शुद्ध एवं शुभ विवाह मुहूर्त्त–सं. २०७८ वि. (सन् 2021-22 ई.)

समय शुद्धि विचार (अशुभ समय–विचार)–

शुक्र अस्त–गत वि. संवत् २०७७ मध्ये 8 फरवरी, 2021 ई. को अस्त हुआ शुक्र 18 अप्रैल, 2021 ई. को उदित होगा। तद्नुसार 21 अप्रैल, 2021 ई. तक शुक्र बाल्यत्व दोष रहेगा।

ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण (26 मई, 2021 ई.)–26 मई, 2021 ई. को भारत के सुदूर उत्तर–पूर्वी क्षेत्रों में जहाँ ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण दिखाई देगा (देखें ग्रहण विवरण) वहाँ इस ग्रहण–वेध (शूल) का विचार 25 से 29 मई तक होगा। **क्योंकि यह ग्रहण लगभग सम्पूर्ण भारत** (सुदूर उत्तर–पूर्वी नगरों को छोड़कर) **में दिखाई नहीं देगा**, अतः जिस स्थान पर यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा, वहाँ पर इसके सूतक, शूल, पर्व आदि का विचार नहीं रहेगा अर्थात् मुहूर्त्त ग्राह्य होंगे।

इसी प्रकार 10 जून, 2021 ई. को **'कंकण सूर्यग्रहण'** तथा 19 नवम्बर, 2021 ई. को **'खण्डग्रास चन्द्रग्रहण'**–दोनों ग्रहण भी भारत के केवल सुदूर उत्तर–पूर्वी भागों में अल्पकाल के लिए दृष्टिगोचर होंगे। अतएव, लगभग सम्पूर्ण भारत में इनके सूतक, वेध आदि का विचार नहीं होगा। (देखें–ग्रहण–विवरण–पृष्ठ 33)

चातुर्मास्यादि में विवाह मुहूर्त्त–पंजाब, हि.प्र., दिल्ली, हरियाणा, जम्मू–काश्मीर आदि प्रदेशों में चातुर्मास (आषाढ़ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक) में गत सैंकड़ों वर्षों से परम्परया एवं लोकमान्यता–अनुसार विवाहादि शुभ मुहूर्त्त स्वीकार किए गए हैं। हमारे मुहूर्त्तकारों ने भी स्थानीय परम्पराओं को शास्त्रादेश के समान आदर देने की अनुमति दी है। कुछ मुहूर्त्तशास्त्रकारों ने तो ऐसी परम्पराओं को शास्त्र से भी अधिक महत्त्व देने का परामर्श दिया है। [देखें मुहूर्त्त–चिन्तामणिः (पीयूषधारा)] 'बृहत्संहिता' में वराह का यह वाक्य है–

''देशाचारस्तावददौ विचिन्त्यः, देशे–देशे या स्थितिः सैव कार्या।
लोकद्विष्टं पण्डिताः वर्जयन्ति, दैवज्ञोऽतो लोकमार्गेण यायात्।।''

त्रयोदश (तेरह) दिनात्मक पक्ष–(8 सितं. से 20 सितं.) [भाद्रपद शुक्ल पक्ष]

तेरह दिन के पक्ष में (दौरान) शास्त्रकारों ने यद्यपि विवाह, मुण्डन आदि मुहूर्त्तों का निषेध (वर्जित) कहा गया है, यथा–

'उपनयनं–परिणयनं तु वेश्मारम्भादि कर्माणि।
यात्रां द्विक्षय पक्षे कुर्यात् न जिजीविषुः पुरुषः।।' (ज्योतिर्निबन्ध)

तथापि कश्यप मुनि के मतानुसार यदि विवाह लग्न में गुरु, शुक्र या बुध–इनमें से एक भी केन्द्र (१-४-१०) (सप्तम को छोड़कर) या त्रिकोण (५, ९) स्थानों में हो, तो तिथ्यादि (पक्ष–दोष) सब दोष उसी प्रकार समाप्त हो जाते हैं, जैसे कि भगवान् विष्णु का स्मरण करने से सब पाप नष्ट हो जाते हैं–

'काव्य गुरौ वा सौम्ये वा यदा केन्द्रत्रिकोणगे।
नाशं यान्त्यखिला दोषाः पापानीव हरिस्मृतेः।।' मु. चिन्तामणि (पीयूषधारा)

उपरोक्त शास्त्र वाक्यनुसार ही हमने इस त्रयोदश दिनात्मक पक्ष (विश्वघास–पक्ष) में विवाह आदि मुहूर्त्त लगाए हैं, परन्तु हमारे परामर्श अनुसार इन मुहूर्त्तों को अत्यावश्यक–परिस्थितियों में ही ग्रहों के बलाबल को देखते हुए ग्रहण करना चाहिए। [विशेष लेख एवं विवरण के लिए देखें पृष्ठ 108]–पं. विवेक शर्मा

श्राद्ध दिन–21 सितम्बर से 6 अक्तूबर, सन् 2021 ई. तक श्राद्ध दिन रहेंगे। इन दिनों भी विवाहादि शुभ कृत्यों का शुभारम्भ नहीं किया जाता।

कार्तिक मास–ता. 17 अक्तूबर से 15 नवम्बर, 2021 ई. तक सौर कार्तिक मास रहेगा। इस समयावधि में केवल पर्वतीय प्रदेशों में विवाहादि शुभ कृत्य सम्पादित करने की शास्त्राज्ञा है।

पौष मास–15 दिसं., से 13 जन., 2022 ई. तक पौष मास रहेगा।

पुनः शुक्र अस्त दोष–शुक्र पुनः 5 जनवरी, 2022 ई. को पश्चिम में अस्त होकर 12 जनवरी, 2022 ई. को पूर्व में उदित होगा।

गुरु अस्त दोष–गुरु 24 फरवरी, 2022 ई. को पश्चिम में अस्त होकर 26 मार्च, 2022 ई. को पूर्व में उदय होगा। ता. 21 से 23 फरवरी तक गुरुवार्धक्य दोष रहेगा। अतः इस अवधि में शुभ कृत्य नहीं किए जाएंगे।

होलाष्टक–ता. 10 से 18 मार्च, 2022 ई. तक होलाष्टक रहेंगे। इस अवधि में भी विवाहादि शुभ कृत्य वर्जित रहेंगे। विशेषकर पंजाब, हि.प्र., जम्मू–कश्मीर, हरियाणा आदि राज्यों में। जबकि कुछ राज्यों/क्षेत्रों में (उ.प्र., बिहारादि) होलाष्टक दिनों में मंगल–कार्यों का सम्पादन शुभ माना जाता है। (देखें **पंचांगदिवाकर वि. संवत् २०७३** पृष्ठ 98)।

आगे दिए गए विवाह मुहूर्त्तों में 'लतादि दश गुण–दोष रेखाएं' शीर्षक के अन्तर्गत सीधी रेखा (।) दोषाभाव अर्थात् गुण की सूचक है, जबकि आड़ी रेखा (ऽ) दोष की सूचक है। मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रह की युति, वेध, मृत्युबाण, क्रान्तिसाम्य, भद्रा, लग्नस्थ व सप्तमस्थ क्रूर ग्रहादि दोषों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। (आगामी पृष्ठों पर दिया गया लेख 'विवाह–मुहूर्त्त में लतादि दश दोष विचार' पढ़ें।) परन्तु जहाँ पर इन दोषों के शास्त्र सम्मत परिहार मिल जाते हैं, वहाँ सम्बद्ध ग्रह की पूजा, दानादि के पश्चात् विवाह मुहूर्त्त को शुभ एवं ग्राह्य मान लिया गया है, नवम दोष क्रान्तिसाम्य के लिए स्थूल क्रान्तिसाम्य के स्थान पर सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य (महापात गणित) प्रक्रिया का आश्रय लिया गया है।

सांकेतिक शब्दों का स्पष्टीकरण–**विवाह मुहूर्त्तों में लग्न विवरण में १ को मेष, २ को वृष, ३ को मिथुन, ४ को कर्क, ५ को सिंह, ६ को कन्या, ७ को तुला, ८ को वृश्चिक, ९ को धनु, १० को मकर, ११ को कुम्भ तथा १२ की संख्या को मीन लग्न जानें॥**

दि. ल. = दिन का लग्न ; रा. ल. = रात्रि का लग्न

चं. दा. = अर्थात् इस विवाह लग्न में चन्द्रमा से सम्बन्धित वस्तुओं का दान व पूजा करके विवाह कर सकते हैं। इसी प्रकार मं.दा., बु. दा. आदि अन्य ग्रहों का भी जानें।

आवश्यके = लग्न निर्बल है, अतः अत्यावश्यकता में इस लग्न में विवाह किया जा सकता है।

पादवेध = विवाह लग्न के समय नक्षत्रचरण को शुभ ग्रह का वेध है।

ध्यान रहे–विवाह मुहूर्त्तों में दी गई अंग्रेजी तारीख सूर्योदयकालिक हैं। जहाँ मुहूर्त्तकाल (लग्न) रात्रि 12 बजे के बाद तथा सूर्योदय से पहिले का हो, वहाँ अंग्रेजी तारीख अगली (अग्रिम) समझनी चाहिए।

आवश्यक नोट–जिस मुहूर्त में गुरु, बुध–शुक्र की केन्द्र–त्रिकोण में स्थिति अथवा गुरु की शुभ दृष्टिवश परिहार हो जाता है, उस मुहूर्त्त, लग्न को शुभ मुहूर्त्तों में शामिल कर लिया गया है। **परन्तु मुहूर्त्त शास्त्रानुसार लग्नस्थ एवं सप्तमस्थ क्रूर ग्रह की स्थिति को त्याज्य ही माना गया है।**

✲✲✲ शुभ विवाह मुहूर्त—वैशाख मास (अप्रैल-मई)—सन् 2021 ई. ✲✲✲

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टै.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
चैत्र शुक्ल १२, शनि	24 अप्रै.	१२ वैशा.	उ.फा.	6:22 से 28:23	मेष	कन्या	ऽसू.रा.।।।।ऽमृ.।।।।	प्रात: 8:11 से 20:47 तक मृत्युवाण, रा. ल. ११ (अष्टमस्थ चं. परिहार) (श. दा.), १२ (28:23 तक, चं. गु. दा.)
चैत्र शु. १२. शनि	24 अप्रै.	१२ वैशा.	हस्त	28:23 बाद	मेष	कन्या	।।।।।।ऽ।।।	रा. ल. १२ (28:23 बाद, चं. गु. दा. व पूज्य)
चैत्र शु. १३, रवि	25 अप्रै.	१३ वैशा.	हस्त	25:55 तक	मेष	कन्या	।।।।।ऽअ.ऽ।।।	दि. ल. ५ (गु. दान व पूज्य), गोधूलि, रात्रौ लग्नऽभाव:
चैत्र शु., १३, रवि	25 अप्रै.	१३ वैशा.	चित्रा	25:55 बाद	मेष	कन्या	।ऽ।।।।।।ऽ।।	रा. ल. ११ (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. श. दान), 28:22 से वज्र दोष
चैत्र शु. १४, चंद्र	26 अप्रै.	१४ वैशा.	चित्रा	23:06 तक	मेष	तुला	।।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ५ (गु. दा.), गोधूलि, रात्रौ लग्नऽभाव: (भद्रा-परिहार-पाताले)
चैत्र शु. १४, चंद्र	26 अप्रै.	१४ वैशा.	स्वा.	23:06 बाद	मेष	तुला	।।।।ऽसू.।ऽऽ।।	रा. ल. ११ (गु. दा.), १२ (अष्टमस्थ चंद्रोऽपरि गुरु दृष्टि शुभप्रदा, चं.दा.)
चैत्र पूर्णिमा, मंग	27 अप्रै.	१५ वैशा.	स्वा.	20:08 तक	मेष	तुला	।।।।ऽसू.ऽनृ.ऽऽ।।	दि. ल. ५ (गु. दा.), गोधूलि च
वैशा. कृ. ४, शुक्र	30 अप्रै.	१८ वैशा.	मूल	12:08 बाद	मेष	धनु	।।।।।।।।।।।	दि. ल. ५ (गु. दा.), गोधूलि, रा. ल. ११ (श. दा.), १२ (गु. दा.)
वैशा. कृ. ६, रवि	2 मई	२० वैशा.	उ.षा.	8:59 बाद	मेष	ध./म.	।ऽ।।।।।।।ऽ	दि. ल. ५ (गु. दा.), ६ (सू. मं. शु. दा.) दग्धातिथि परिहार गोधूलि, रा. ल. ११ (श. दा.), १२ (गु. दा.), भद्रा परिहार (पाताले)
वैशा. कृ. ८, मंग	4 मई	२२ वैशा.	धनि.	8:26 बाद	मेष	म./कुं.	।।ऽगु.।।।ऽऽ।।	दि. ल. ५ (गुरु केन्द्रगते षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. गु. दा.), ६, गोधूलि रा. ल. ११ (चं. श. दा.), १२ (चं. गु. दा.), 28:55 से क्रान्तिसाम्य दोष
वैशा. कृ. ११, शुक्र	7 मई	२५ वैशा.	उ.भा.	12:26 बाद	मेष	मीन	ऽशु.के.ऽ।।।ऽनृ.।।।।	20:41 तक वैधृति-विष्कम्भ दोष, रा. ल. ११ (गु. दा.), १२ (चं. दान व पूज्य)
वैशा.कृ.१२, शनि	8 मई	२६ वैशा.	रेव.	14:47 बाद	मेष	मीन	।।।।।ऽचौ.ऽ।।।	दि. ल. ६ (सू. चं. गु. दा.) 17:21 से कृष्ण त्रयोदशी

✲ ज्येष्ठ मास (मई—जून) सन् 2021 ई. ✲

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टै.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
वैशा. शु. ९, शुक्र	21 मई	८ ज्ये.	उ.फा.	15:22 बाद	वृष	सिं./कं.	ऽरा.ऽ।।।ऽचौ.।ऽ।।	दि. ल. ६ (15:22 बाद, चं. मं. दा.), 21:08 से 24:44 तक वज्र दोष-९ घटि त्यक्त्वा, रा. ल. ११ (अष्टमस्थ चं. परिहार), १२ (चं. गु. दा.), १ [षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. दा.]
वैशा. शु. १०.शनि	22 मई	९ ज्ये.	उ.फा.	14:06 तक	वृष	कन्या	ऽरा.ऽ।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ५ (गु. दा.), ६ (14:06 तक, चं. मं. दा.)
वैशा. शु. १०,शनि	22 मई	९ ज्ये.	हस्त	14:06 बाद	वृष	कन्या	।।।।।।ऽऽ।।	दि. ल. ६ (14:06 बाद, चं. मं. दा.), रा. ल. ११ (अष्टमस्थ चंद्र परिहार, चं. गु. दान व पूज्य) १२ (चं. गु. दा.), १ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. दा.) भद्रा परिहार-पाताले
वैशा. शु. ११,रवि	23 मई	१० ज्ये.	हस्त	12:12 तक	वृष	कन्या	।।।।।ऽरो.ऽऽ।।	दि. ल. ५ (12:12 तक, गु. दा.)
वैशा. शु. ११,रवि	23 मई	१० ज्ये.	चित्रा	12:12 बाद	वृष	कन्या	ऽसू.।।।।ऽरो.।।।।	दि. ल. ५ (12:12 बाद, गु. दा.), ६ (14:56 तक, चंद्र पूज्य), 14:56 से व्यतीपात
वैशा. शु. १३,चंद्र	24 मई	११ ज्ये.	स्वा.	9:49 बाद	वृष	तुला	।ऽ।ऽगु.।।ऽ।।।	दि. ल. ५ (गु. दा.), ६ (मं. दा.), रा. ल. ११ (25:47 तक), 25:47 से गुरुपादवेध
वैशा. शु. १४,मंग	25 मई	१२ ज्ये.	अनु.	28:11 बाद	वृष	वृश्चिक	।।।।।।।ऽ।।	रा. ल. १ (28:11 बाद, अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. पूज्य) (अल्पकाले) भद्रा परिहार
वैशा. पूर्णिमा, वुध	26 मई	१३ ज्ये.	अनु.	25:15 तक	वृष	वृश्चिक	।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ५ (गु. के. दान), ६ (मं. गु. दा.), रा. ल. ११ (25:15 तक, श. पूज्य)
ज्ये. कृ. ५, रवि	30 मई	१७ ज्ये.	उ.षा.	16:42 तक	वृष	मकर	।।।ऽबु.शु.ऽमं.ऽचौं.।।ऽ।	दि. ल. ५ (षष्ठस्थ चं. परिहार), ६ (मं. दा.)
ज्ये. कृ. ६, चंद्र	31 मई	१८ ज्ये.	धनि.	16:02 बाद	वृष	मकर	।।।।।।।।ऽ।	दि. ल. ७ (16:02 बाद, सू. दा.), रा. ल. ११ (चं. श. दा.), १२ (गु. दा.), १ (27:59 तक) –27:59 से भद्रा विचार (भूलोके)
ज्ये. कृ. १०, शुक्र	4 जून	२२ ज्ये.	उ.भा.	20:47 तक	वृष	मीन	ऽबु.।।।।।।।।।	मृत्युबाण प्रात: 6:34 तक, दि. ल. ५ (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. गु. दा.), ६ (15:16 तक, चं. दा.) 15:16 से भद्रा-विचार (भूलोके)
ज्ये. कृ. ११, शनि	5 जून	२३ ज्ये.	रेव.	23:28 तक	वृष	मीन	।।।।।ऽअ.ऽऽ।।	दि. ल. ३ (बु. दा.), ६ (चं. मं. दा.), ७ (षष्ठस्थ चं. परिहार), गोधूलि, रा. ल. ९ (शु. दा.)

शुभ विवाह मुहूर्त्त—ज्येष्ठ मास (मई-जून)—सन् 2021 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि.नक्षत्र	समय (भा.स्टै.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
ज्ये. कृ. ११, शनि	5 जून	२३ ज्ये.	अश्वि.	23:28 बाद	वृष	मेष	।।।।।।।।।।	रा. ल. ११ (गु. दा.), १२ (चं. गु. दा.), १ (चं. शु. दा.)
ज्ये. कृ. ११, रवि	6 जून	२४ ज्ये.	अश्वि.	26:27 तक	वृष	मेष	।।।।।ऽनृ.।।।।	दि. ल. ३ (शु. दा.), ५ (गु. के. दा.), ७ (चंद्र पूज्य), गोधूलि रा. ल. ११ (गु. रा. दा.), १२ (गु. दा., 26:27 तक)

※ आषाढ़ मास (जून—जुलाई) सन् 2021 ई. ※

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि.नक्षत्र	समय (भा.स्टै.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
ज्ये. शु. ८, शुक्र	18 जून	४ आषा.	हस्त	21:37 बाद	मिथुन	कन्या	।ऽ।।।।ऽ।।।	26:46 तक व्यतीपात, रा. ल. १ (26:46 बाद, षष्ठस्थ चं. परिहार) अल्पकाले लग्न
ज्ये. शु. ९, शनि	19 जून	५ आषा.	हस्त	20:28 तक	मिथुन	कन्या	।ऽ।।।ऽनृ.ऽ।।।	दि. ल. ५ (गु. के. दा.), ६ (चं. बु. रा. दा.), ७ (चं. दा.), गोधूलि
ज्ये. शु. ९, शनि	19 जून	५ आषा.	चित्रा	20:28 बाद	मिथुन	कन्या	।।।।ऽनृ.।ऽ।।	रा. ल. ११ (अष्टमस्थ चं. परिहार, 24:04 तक, 24:04 से 27:04 तक परिघ दोष
ज्ये. शु. १०, रवि	20 जून	६ आषा.	चित्रा	18:49 तक	मिथुन	तुला	।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ५ (गु. के. दा.), ६ (गु. दा.), ७ (चंद्र पूज्य, रा. दा.)
ज्ये. शु. १०, रवि	20 जून	६ आषा.	स्वा.	18:49 बाद	मिथुन	तुला	।।।ऽगु.।।ऽऽ।।	गोधूलि, रा ल. ११ (गु. रा. दा.), १ (चं. शु. दा.), भद्रा परिहार
ज्ये. शु. ११, चन्द्र	21 जून	७ आषा.	स्वा.	16:45 तक	मिथुन	तुला	।।ऽगु.।ऽचौ.ऽऽ।।	दि. ल. ५ (11:16 तक) 11:16 से 16:45 तक गुरुपादवेध, भद्रा परिहार
ज्ये. पूर्णिमा, गुरु	24 जून	१०आषा.	मूल	9:11 बाद	मिथुन	धनु	।।।ऽशु.।।।ऽऽ।	9:11 से 14:33 तक शुक्रपादवेध विचार, दि. ल. ७ (14:33 बाद), गोधूलि रा. ल. ११ (गु. श. दा.), १२ (गु. दा.), १ (मं. दा.)-भद्रा परिहार
आषा. कृ. २, शनि	26 जून	१२आषा.	उ.षा.	26:36 तक	मिथुन	ध./म.	।।।।।ऽमृ.।।।।	प्रात 6:07 तक मृत्युबाण, दि. ल. ५ (गु. के. दा.) (षष्ठस्थ चं. परिहार), ६, ७ (बु. दा.) 19:18 से वैधृति
आषा. कृ. ३, रवि	27 जून	१३आषा.	धनि.	25:22 बाद	मिथुन	मकर	।।।।।।ऽ।।।	रा. ल. १ (25:22 बाद, के. दा.)
आषा. कृ. ४, चंद्र	28 जून	१४आषा.	धनि.	24:49 तक	मिथुन	म./कुं.	।।।।।।ऽ।।।	दि. ल. ५ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. गु. दान), ६ (चं. दा.), ७ (बु. रा. दा.), गोधूलि रा. ल. ११ (षष्ठस्थ शु. परिहार) (चं. श. दा.), १२ (24:49 तक, चं. गु. दा.)
आषा. कृ. ६, बुध	30 जून	१६आषा.	उ.भा.	26:03 बाद	मिथुन	मीन	ऽबु.।।।।ऽचौ.।ऽ।।	रा. ल. १ (26:03 बाद) अल्पकाल लग्न
आषा. कृ. ७, गुरु	1 जुला.	१७आषा.	उ.भा.	27:49 तक	मिथुन	मीन	ऽबु.।।।।ऽचौ.।ऽ।ऽ	दि. ल. ६ (चं. दा.), ७ (बु. रा. दा.) (षष्ठस्थ चं. परिहार), गोधूलि, रा. ल. ११ (षष्ठस्थ शु. परिहार, गु. श. दा.), १२ (चं. गु. पूज्य), १ (मं. दा.) दग्धातिथि परिहार
आषा. कृ. ८, शुक्र	2 जुला.	१८आषा.	रेव.	दिन-रात	मिथुन	मीन	।।।।।।ऽऽ।।	10:53 से 13:17 तक अतिगण्ड दोष, दि. ल. ६ (13:17 बाद, चं. दा.), ७ (षष्ठस्थ चं. परिहार), गोधूलि, रा. ल. ११ (षष्ठस्थ शु. परिहार, गु. श. दा.), १२ (चं. गु. दा.), १ (मं. दा.) दग्ध परिहार
आषा. कृ. ९, शनि	3 जुला.	१९आषा.	अश्वि.	6:14 बाद	मिथुन	मेष	।।।।।ऽरो.।।।।	दि. ल. ५ (गु. दा.), ७ (चं. बु. रा. दा.), गोधूलि, रा. ल. ११ (षष्ठस्थ शु. परिहार, बु. रा. दा.), १२ (गु. दा.), १ (चं. पूज्य)
आषा. कृ. १०, रवि	4 जुला.	२०आषा.	अश्वि.	9:05 तक	मिथुन	मेष	।।।।।।।।।।	दि. ल. ५ (9:05 तक) लग्न अत्यल्पकाले, भद्रा स्वर्गगते
आषा. कृ. १२, मंग	6 जुला.	२२आषा.	रोहि.	15:20 बाद	मिथुन	वृष	।ऽऽरा.।ऽके.ऽ।।।।	16:59 तक गण्ड दोष, रा. ल. ११ (षष्ठस्थ शु. परिहार, चं. बु. रा. दा.), १२ (गु. दा.), १ (राहु-युति परिहार, 25:03 तक)

※ श्रावण मास (जुलाई—अगस्त) सन् 2021 ई. ※

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि.नक्षत्र	समय (भा.स्टै.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
आषा. शु. ८, शनि	17जुला.	२ श्राव.	चित्रा	25:32 तक	कर्क	कं./तु.	।।।।।।।ऽ।।	सू. उ. तक सूर्य क्षीणांश, दि. ल. ५ (गु. दा.), ६ (चं. गु. दा.), ७ (चं. रा. दा.), ९ (18:04 तक) अष्टमस्थ मं. शु. परिहार, मं. शु. दा.), 18:04 से मृत्युबाण, भद्रा परिहार-पाताले
आषा. शु. ९, रवि	18जुला.	३ श्राव.	स्वा.	24:08 तक	कर्क	तुला	।।।ऽगु.।मृ.ऽ।।।	प्रात: 6:37 तक मृत्युबाण, दि. ल. ५ (गु. के. दा.), ६, ७ (चं. पूज्य), ९ (18:29 तक, अष्टमस्थ-मं.शु.दा.) 18:29 से 24:08 तक गुरु पादवेध

❋ शुभ विवाह मुहूर्त—श्रावण मास (जुलाई-अगस्त)—सन् 2021 ई. ❋

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
आषा.शु.१२, बुध	21जुला.	६ श्राव.	मूल	18:30 बाद	कर्क	धनु	ऽसू.।।ऽबु.।।।।।।	दि. ल. ९ (18:30 बाद) (सू. दा.), गोधूलि, रा. ल. १२(षष्ठस्थ शु. परिहार, शु. दा.) १ (के. दा.), ३ (बु. दा.)
आषा.शु.१३, गुरु	22जुला.	७ श्राव.	मूल	16:25 तक	कर्क	धनु	ऽसू.।।ऽबु.।।।।।।	प्रात: 5:28 से 10:57 तक बुध पादवेध, दि. ल. ६ (10:57 बाद, मं. शु. दा.), ७ (12:45 तक, रा. दा.) 12:45 से वैधृति दोष
आषा.शु.१४, शुक्र	23जुला.	८ श्राव.	उ.षा.	14:26 बाद	कर्क	ध./म.	।।।।ऽबु.।।ऽ।।	दि. ल. ९ (सू. चं. बु. दान), गोधूलि, रा. ल. १२ (षष्ठस्थ शु. परिहार, मं. शु. दा.), १, भद्रा परिहार
आषा.पूर्णिमा, शनि	24जुला.	९ श्राव.	उ.षा.	12:40 तक	कर्क	मकर	।।।।ऽबु.।।ऽ।।	दि. ल. ६, ७ (12:40 तक)
श्राव. कृ. १, रवि	25जुला.	१० श्राव.	धनि.	11:18 बाद	कर्क	म./कुं.	।।ऽगु.।।ऽरो.ऽ।।।	दि. ल. ६ (11:18 बाद), ७ (रा. दा.), ९ (सू. बु. दा.), गोधूलि रा. ल. १२ (षष्ठस्थ शु. परिहार, गु. शु. दा.), १ (बु. के. दा.), ३ (शु. श. दा.)
श्राव. कृ. ३, चन्द्र	26जुला.	११ श्राव.	धनि.	10:26 तक	कर्क	कुम्भ	।।ऽगु.।।।ऽ।।।	दि. ल. ६ (10:26 तक) अल्पकाले
श्राव. कृ. ५, बुध	28जुला.	१३ श्राव.	उ.भा.	10:45 बाद	कर्क	मीन	।।।।।ऽअ.।ऽ।ऽ	दि. ल. ६ (10:45 बाद, चं. दा.), ७ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. पूज्य), ९ (सू. बु. दा.) रा. ल. १२ (षष्ठस्थ शु. परिहार), १, ३ (शु. श. दा.) दग्धातिथि परिहार
श्राव. कृ. ६, गुरु	29जुला.	१४ श्राव.	उ.भा.	12:02 तक	कर्क	मीन	।।।।।।।ऽ।ऽ	दि. ल. ६ (चं. दा.), ७ (12:02 तक) दग्धातिथि दोष परिहार
श्राव. कृ. ६, गुरु	29जुला.	१४ श्राव.	रेव.	12:02 बाद	कर्क	मीन	।।।।।।ऽ।।ऽ	दि. ल. ७ (12:02 बाद, षष्ठस्थ चं. परिहार), ९ (सू. बु. दा.), गोधूलि, रा. ल. १२ (षष्ठस्थ शु. परिहार, चं. गु. शु. दा.), १ (चं. दा.), ३ (27:55 तक, श. दा.) 27:55 से भद्रा विचार (भूलोके), दग्धातिथि परिहार
श्राव. कृ. ७, शुक्र	30जुला.	१५ श्राव.	अश्वि.	14:02 बाद	कर्क	मेष	ऽगु.।।ऽशु.।नृ.।ऽ।।	दि. ल. ९ (सू. बु. दा.), 20:18 से 22:18 शूलदोष, रा. ल. १२ (22:18 बाद—षष्ठस्थ शु. परिहार), १ (चं. दा.), ३ (शु. दा.)
श्राव. कृ. ८, शनि	31जुला.	१६ श्राव.	अश्वि.	16:38 तक	कर्क	मेष	ऽगु.।।ऽशु.।।।ऽ।।	प्रात: 6:53 से 9:59 तक शुक्रपादवेध, दि. ल. ७ (चं. दा.), ९ (16:38 तक)
श्राव. कृ. ९, चन्द्र	2 अग.	१८ श्राव.	रोहि.	22:43 बाद	कर्क	वृष	।।ऽरा.।ऽके.।ऽ।।।	रा. ल. १, ३ (चं. शु. दा.), राहुयुति परिहार, भद्रा परिहार (स्वर्गे)
श्राव. कृ.१०, मंग	3 अग.	१९ श्राव.	रोहि.	25:44 तक	कर्क	वृष	।।ऽरा.।ऽके.ऽरो.।।।।	दि. ल. ६, ७ (अष्टमस्थ चं. परिहार) (भद्रा-परिहार), ९ (षष्ठस्थ चं. परिहार), गोधूलि, रा. ल. १२ (षष्ठस्थ शु. परिहार, गु. शु. दा.), १ (24:05 तक), 24:05 से व्याघात दोष
श्राव. कृ.१०, मंग	3 अग.	१९ श्राव.	मृग.	25:44 बाद	कर्क	वृष	।।।।।ऽरो.ऽऽ।।	रा. ल. ३ (27:41 बाद) 27:41 तक व्याघात दोष, लग्न अल्पकाले
श्राव. कृ.११, बुध	4 अग.	२० श्राव.	मृग.	28:25 तक	कर्क	वृष/मि.	।।।।।।ऽऽ।।	दि. ल. ६, ७ (अष्टमस्थ चं. परिहार), ९ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. दा.), गोधूलि, रा. ल. १२ (षष्ठस्थ शु. परिहार, गु. शु. दा.), १, ३ (चं. शु. दा.)
श्राव. शु. ३, बुध	11 अग.	२७ श्राव.	उ.फा.	9:32 बाद	कर्क	सिं./कं.	ऽरा.।ऽशु.।।।।ऽ।।	दि. ल. ६ (चं. दा.), ७, ९ (बु. दा.), गोधूलि, रा. ल. १२ (गु. शु. दा.), १ (षष्ठस्थ शु. परिहार शु. दा.), ३—भद्रा परिहार (पाताले)
श्राव. शु. ४, गुरु	12 अग.	२८ श्राव.	उ.फा.	8:53 तक	कर्क	कन्या	ऽरा.।ऽशु.।।।।ऽ।।	दि. ल. ६ (8:53 तक, चं. दा.) भद्रा परिहार (पाताले)
श्राव. शु. ४, गुरु	12 अग.	२८ श्राव.	हस्त	8:53 बाद	कर्क	कन्या	ऽमं.।।।।ऽरो.ऽऽ।।	दि. ल. ६ (8:53 बाद), ७ (चं. दा.), ९ (सू. दा.), गोधूलि रा. ल. १२ (गु. शु. दा.), १ (षष्ठस्थ शु. परिहार), ३—भद्रा परिहार (पाताले)
श्राव. शु. ५, शुक्र	13 अग.	२९ श्राव.	चित्रा	8:00 बाद	कर्क	कं./तु.	।ऽ।।।।।ऽ।ऽ	दि. ल. ६ (चं. दा.), ७ (चं. दा.), ९ (सू. दा.), गोधूलि, रा. ल. १२ (गु. शु. दा.), १ (षष्ठस्थ शु. परिहार), ३, दग्धातिथि परिहार
श्राव. शु. ६, शनि	14 अग.	३० श्राव.	स्वा.	[6:56 से 29:44 तक]	कर्क	तुला	।।।।।ऽमृ.ऽऽ।।	दि. ल. ६, ७ (चं. दा.), ९ (सू. दा.), गोधूलि, रा. ल. १२ (गु. शु. दा.), १ (23:20 तक, गु. शु. दा.), 23:20 से मृत्युबाण, 27:00 से क्रान्तिसाम्य

✲ शुभ विवाह मुहूर्त—भाद्रपद मास (अगस्त-सितम्बर)—सन् 2021 ई. ✲

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि.नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
श्राव.शु. ११, बुध	18 अग.	३ भाद्र.	मूल	24:07 तक	सिंह	धनु	।।।।।ऽमृ.।ऽ।।	14:43 तक मृत्युबाण, दि. ल. ९ (चं. दा. व पूज्य), गोधूलि रा. ल. १२ (शु. दा.), १ (षष्ठस्थ शु. परिहार), भद्रा परिहार (पाताले)
श्राव. शु.१२, गुरु	19 अग.	४ भाद्र.	उ.षा.	22:42 बाद	सिंह	ध./म.	ऽसू.।।।।।।।।।	रा. ल. १ (22:42 बाद, षष्ठस्थ शु. परिहार, शु. दा.), ३ (चं. दा.) (28:22 से चं. अष्टमस्थ)
श्राव. शु.१३, शुक्र	20 अग.	५ भाद्र.	उ.षा.	21:25 तक	सिंह	मकर	ऽसू.।।।।।।।।।	दि. ल. ६ (शु. दा.), ७ (शु. दा.), ९, गोधूलि, रा. ल. १२ (21:25 तक, शु. दा.)
श्राव.शु. १४, शनि	21 अग.	६ भाद्र.	धनि.	20:21 बाद	सिंह	मकर	।।ऽगु.।।।ऽऽ।।	रा. ल. १२ (20:21 बाद, शु. दा.), १ (षष्ठस्थ शु. परिहार, शु. दा.), ३, भद्रा परिहार
श्राव. पूर्णिमा, रवि	22 अग	७ भाद्र.	धनि.	19:40 तक	सिंह	कुम्भ	।।ऽगु.।।।ऽऽ।।	दि. ल. ६ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. शु. दा.), ७ (10:33 तक), 10:33 से 12:57 तक—अतिगण्ड दोष, ९ (के. दा.)
भाद.कृ. २, मंग	24 अग.	९ भाद्र.	उ.भा.	19:47 बाद	सिंह	मीन	।।।।ऽबु.।।।।।	रा. ल. १२ (गु. शु. दा.), १ (षष्ठस्थ शु. परिहार, चं. शु. दा.), ३ (28:12 से भद्रा विचार)
भाद. कृ. ३, बुध	25 अग.	१० भाद्र.	उ.भा.	20:48 तक	सिंह	मीन	।।।ऽशु.ऽबु.ऽरो.।।।।	16:19 तक भद्रा विचार (भूलोके), दि. ल. ९ (16:19 बाद), गोधूलि, रा. ल. १२ (20:48 तक)
भाद्र. कृ. ८, चंद्र	30 अग.	१५ भाद्र.	रोहि.	6:39 बाद	सिंह	वृष	।।ऽरा.।ऽकेऽनृऽऽ।।	दि. ल. ६ (बु. शु. दा.), ७ (अष्टमस्थ चं. परिहार, लग्नोऽपरि गुरु दृष्टि शुभप्रदा), ९, गोधूलि, रा. ल. १२ (बु. गु. शु. दा.), १ (षष्ठस्थ शु.-परिहार, शु. दा.), ३ (राहुयुति परिहार)
भाद्र. कृ. ९, मंग	31 अग.	१६ भाद्र.	रोहि.	9:44 तक	सिंह	वृष	।ऽऽरा.।ऽके.।।ऽ।।	दि. ल. ६ (8:48 तक, बु. शु. दा.) 8:48 से वज्र दोष, (राहुयुति परिहार)
भाद. कृ. ९, मंग	31 अग.	१६ भाद्र.	मृग.	9:44 बाद	सिंह	वृ./मि.	।।।।।।ऽऽ।।	12:24 तक वज्र दोष, दि. ल. ९ (षष्ठस्थ चं. परिहार), गोधूलि, रा. ल. १२ (बु. गु. शु. दा.), १ (षष्ठस्थ शु. परिहार), ३ (चं. दा.)
भाद. कृ.१०, बुध	1 सितं.	१७ भाद्र.	मृग.	12:34 तक	सिंह	मिथुन	।।।।।।ऽऽ।ऽ	दि. ल. ६ (बु. शु. दा.), ७ (शु. दा.)
भाद्र. शु. २, बुध	8 सितं.	२४ भाद्र.	उ.फा.	15:56 तक	सिंह	कन्या	ऽराऽऽमं.।।ऽनृ.।।।।	दि. ल. ७ (चं. दा.), ९ (भौमयुति परिहार)
भाद्र. शु. २, बुध	8 सितं.	२४ भाद्र.	हस्त	15:56 बाद	सिंह	कन्या	।।ऽबु.।।ऽनृ.ऽ।।।	गोधूलि, रा. ल. १ (लग्नेश मं. व चं. षष्ठस्थ परिहार), ३ (लग्नोऽपरि गु. दृष्टि शुभप्रदा)
भाद्र. शु. ३, गुरु	9 सितं.	२५ भाद्र.	हस्त	14:31 तक	सिंह	कन्या	।।ऽबु.।।।ऽ।।।	दि. ल. ७ (चं. दा.), ९ (14:31 तक)
भाद्र. शु. ३, गुरु	9 सितं.	२५ भाद्र.	चित्रा	14:31 बाद	सिंह	कं./तु.	ऽमं.।ऽशु.।।।।।ऽ।	दि. ल. ९ (14:31 बाद), 18:58 से 22:47 तक क्रान्तिसाम्य, रा. ल. ३
भाद्र. शु. ४, शुक्र	10 सितं.	२६ भाद्र.	चित्रा	12:58 तक	सिंह	तुला	ऽमं.।ऽशु.।।।।।।।	दि. ल. ७ (चं. शु. दा. व पूज्य), भद्रा परिहार (पाताले)
भाद्र. शु. ४, शुक्र	10 सितं.	२६ भाद्र.	स्वा.	12:58 बाद	सिंह	तुला	।।।।।ऽचौ.।ऽ।।	दि. ल. ९, गोधूलि, रा. ल. १ (षष्ठस्थ मं. परिहार, चं. मं. शु. दा.), ३, भद्रा परिहार
भाद्र. शु. ५, शनि	11 सितं.	२७ भाद्र.	स्वा.	11:23 तक	सिंह	तुला	।।।।।ऽचौ.।ऽ।।	दि. ल. ७ (चंद्र पूज्य)
भाद्र. शु. ८, मंग	14 सितं.	३० भाद्र.	मूल	[7:05 से 29:55 तक]	सिंह	धनु	।।।।।ऽमृ।ऽ।ऽ	दि. ल. ७ (शु. दा.), ९ (चंद्र पूज्य,), गोधूलि, रा. ल. १ (षष्ठस्थ मं. परिहार), ३ (23:58 तक), 23:58 से मृत्युबाण दोष, (दग्धा-परिहार)

त्रयोदशा दिनात्मक पक्ष (आवश्यक-परिस्थिति में ग्राह्य)

✲ आश्विन मास (सितम्बर—अक्तूबर) ✲ सन् 2021 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि.नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
भाद्र.शु. १२, शनि	18 सितं.	३ आश्वि.	धनि.	27:21 तक	कन्या	म./कुं.	ऽसू.।ऽगु.।।ऽमृ.ऽ।।।	14:08 तक मृत्युबाण, दि. ल. ९ (14:08 बाद), ११ (चंद्र-पूज्य, अष्टमस्थ मं. परिहार), गोधूलि, रा. ल. १ (शु. दा.), ३
आश्वि.शु. १, गुरु	7 अक्तू	२२ आश्वि.	स्वा.	21:13 बाद	कन्या	तुला	ऽमं.ऽ।।।ऽअऽ।।।	26:51 तक वैधृति-विष्कम्भ दोष, रा. ल. ५ (26:51 बाद)
आश्वि.शु. २, शुक्र	8 अक्तू	२३ आश्वि.	स्वा.	18:59 तक	कन्या	तुला	ऽमं.ऽ।।।।ऽ।।।	दि. ल. ७ (चं. पूज्य), ९ (गु. दा.), ११ (अष्टमस्थ मं. परिहार) गुरु दृष्टि एवं मं. अस्त
आश्वि.शु. ६, चन्द्र	11 अक्तू	२६ आश्वि.	मूल	12:56 बाद	कन्या	धनु	।।।।।ऽचौ.।ऽ।।	दि. ल. ९ (चं. दा.), ११ (अष्टमस्थ मं. परिहार), रा. ल. ३ (षष्ठस्थ शु. परिहार), ५
आश्वि.शु. ७, मंग	12 अक्तू	२७ आश्वि.	मूल	11:26 तक	कन्या	धनु	।।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ७ (मं. दा.)
आश्वि.शु. ८, बुध	13 अक्तू	२८ आश्वि.	उ.षा.	10:19 बाद	कन्या	ध./म.	।।।।।ऽरो.।ऽ।ऽ	दि. ल. ९ (चं. दा.), ११ (अष्टमस्थ मं. परि.), गोधूलि, रा. ल. ३ (षष्ठस्थ शु. परिहार, चं. शु. दा.), ५
आश्वि.शु. ९, गुरु	14 अक्तू	२९ आश्वि.	उ.षा.	9:35 तक	कन्या	मकर	।।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ७ (मं. रा. दा.)

शुभ विवाह मुहूर्त–कार्तिक मास (अक्तूबर-नवम्बर)–सन् 2021 ई. [केवल पर्वतीय प्रदेशों के लिए]

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
आश्वि.शु.१३,चन्द्र	18 अक्तू	२ कार्ति.	उ.भा.	10:49 बाद	तुला	मीन	।।।ऽबु.।मृ.।।।।	दि. ल. ९ (13:23 से 25:28 तक मृत्युबाण), (23:30 से 29:51 तक बुध पादवेध)
आश्वि.शु.१४, मंग	19 अक्तू	३ कार्ति.	उ.भा.	12:12 तक	तुला	मीन	।।।।।।।।।।	दि. ल. ९ (12:12 तक)
आश्वि.शु.१४, मंग	19 अक्तू	३ कार्ति.	रेव.	12:12 बाद	तुला	मीन	।।।।ऽबु.ऽअ.ऽऽ।।	दि. ल. ९ (12:12 बाद), ११ (अष्टमस्थ मं. परिहार, मं. बु. श. दा.) 19:04 से भद्रा विचार
आश्वि.पूर्णिमा,बुध	20 अक्तू	४ कार्ति.	रेव.	14:02 तक	तुला	मीन	।।।।ऽबु.।ऽऽ।।	7:46 तक भद्रा, दि. ल. ९ (मं. दा.)
आश्वि.पूर्णिमा,बुध	20 अक्तू	४ कार्ति.	अश्वि.	14:02 बाद	तुला	मेष	ऽगु.ऽ।।ऽसू.मं.।।ऽ।।	दि. ल. ११, गोधूलि, 20:39 से 24:15 तक वज्र दोष
कार्ति. कृ. १,गुरु	21 अक्तू	५ कार्ति.	अश्वि.	16:17 तक	तुला	मेष	ऽगु.ऽ।।।ऽनृ.।ऽ।।	दि. ल. ९, ११ (रा. दा.) (अष्टमस्थ मं. परिहार) (गुरु दृष्टि एवं मं. अस्त)
कार्ति. कृ. ३,शनि	23 अक्तू	७ कार्ति.	रोहि.	21:53 बाद	तुला	वृष	।ऽ।।ऽऽचौ.ऽ।।।	22:32 तक व्यतीपात दोष, रा. ल. ३ (22:32 बाद, चं. दा.), ५, ६ (बु. शु. दा.) भद्रा स्वर्गगते शुभ
कार्ति. कृ. ४,रवि	24 अक्तू	८ कार्ति.	रोहि.	25:02 तक	तुला	वृष	।।।।ऽ।।।।।	दि. ल. ९ (षष्ठस्थ चं. परिहार), ११ (चं. रा. दा.), १२ (अष्टमस्थ मं. परिहार) (मं. बु. दा.), रा. ल. ३ (षष्ठस्थ शु. परिहार), 23:34 से परिघार्द्ध
कार्ति. कृ. ४,रवि	24 अक्तू	८ कार्ति.	मृग.	25:02 बाद	तुला	वृष	।।।।ऽ।ऽ।।।	26:34 पर परिघ-दोष, रा. ल. ५ (26:34 बाद), ६
कार्ति. कृ. ५,चंद्र	25 अक्तू	९ कार्ति.	मृग.	28:11 तक	तुला	वृ./मि.	।।।।ऽऽरो.ऽ।।।	दि. ल. ९ (षष्ठस्थ चं. परिहार), ११ (रा. दा.), १२ (अष्टमस्थ मं. परिहार), रा. ल. ३ (षष्ठस्थ शु. परिहार), ५ (के. दा.), ६ (28:11 तक, शु. दा.)
कार्ति. कृ.११,चंद्र	1 नवं.	१६ कार्ति.	उ.फा.	12:53 बाद	तुला	सिं./कं.	।।।।।।।।।ऽ	दि. ल. ११ (चं. दा.), १२ (षष्ठस्थ चं. परिहार, बु. गु. दा.), रा. ल. ३ (21:04 तक, शु. दा.) 21:04 से वैधृति दोष, दग्धातिथि परिहार
कार्ति. शु. ३, रवि	7 नवं.	२२ कार्ति.	मूल	21:05 बाद	तुला	धनु	।।ऽशु.।।।।ऽ।।	रा. ल. ३ (21:05 बाद, चं. गु. दा.), ५, ६ (भद्रा परिहार)
कार्ति. शु. ४,चन्द्र	8 नवं.	२३ कार्ति.	मूल	18:49 तक	तुला	धनु	।।ऽशु.।।।।ऽ।।	दि. ल. ९ (चं. शु. दा.), ११, १२ (अष्टमस्थ मं. परिहार), भद्रा परिहार–पाताले
कार्ति. शु. ८, गुरु	11 नवं.	२६ कार्ति.	धनि.	14:59 बाद	तुला	म./कुं.	।।ऽगु.।।।ऽऽ।।	दि. ल. १२ (अष्टमस्थ मं. परिहार), रा. ल. ३ (शु. दा.), ५ (के. दा.), ६ (28:01 तक) 28:01 से क्रान्तिसाम्य दोष, भद्रा परिहार (पाताले)
कार्ति. शु. ९,शुक्र	12 नवं.	२७ कार्ति.	धनि.	14:53 तक	तुला	कुम्भ	।।ऽगु.।।।ऽऽऽ।	प्रात: 9:13 तक क्रान्तिसाम्यदोष, दि. ल. ९ (शु. दा.), ११ (चं. श. दा.)

✲ मार्गशीर्ष मास (नवम्बर–दिसम्बर) सन् 2021 ई. ✲

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
मार्ग. कृ. १, शनि	20 नवं.	५ मार्ग.	रोहि.	दिन-रात	वृश्चिक	वृष	।।।।ऽऽनृ.।ऽ।।	दि. ल. ९ (षष्ठस्थ चं. परिहार) (चं. शु. रा. दा.), ११ (रा. दा.), १२ (अष्टमस्थ मं. परिहार), गोधूलि, रा. ल. ३ (गु. शु. दा.), ५, ६
मार्ग. कृ. २, रवि	21 नवं.	६ मार्ग.	मृग.	7:36 बाद	वृश्चिक	वृ./मि.	।।।।।।ऽ।।।	दि. ल. ९ (षष्ठस्थ चं. परिहार), ११ (श. रा. दा.), १२ (अष्टमस्थ मं. परिहार) गोधूलि, रा. ल. ५ (गु. दा.), ६
मार्ग. कृ. ३, चंद्र	22 नवं.	७ मार्ग.	मृग.	10:44 तक	वृश्चिक	मिथुन	।।।।।।ऽ।।।	दि. ल. ९ (10:44 तक, षष्ठस्थ शु. परिहार) भद्रा परिहार
मार्ग. कृ. ९, रवि	28 नवं.	१३ मार्ग.	उ.फा.	22:05 बाद	वृश्चिक	सिं./कं.	।।।।।।।।।।	रा. ल. ५ (चं. पूज्य), ६ (चं. दा.)
मार्ग. कृ.१०, चंद्र	29 नवं.	१४ मार्ग.	उ.फा.	21:42 तक	वृश्चिक	कन्या	।।।।।ऽनृ.।।।ऽ	दि. ल. ९ (शु. दा.), ११ (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. गु. दा.), १२ (अष्टमस्थ मं. परिहार), गोधूलि, रा. ल. ३, दग्धातिथि परिहार, भद्रा परिहार (पाताले)
मार्ग. कृ.१०, चंद्र	29 नवं.	१४ मार्ग.	हस्त	21:42 बाद	वृश्चिक	कन्या	।।।।।।ऽऽ।ऽ	रा. ल. ५ (गु. दा.), ६ (चं. दा.), दग्धा–परिहार, भद्रा परिहार
मार्ग. कृ.११, मंग	30 नवं.	१५ मार्ग.	हस्त	20:34 तक	वृश्चिक	कन्या	।।।।।।ऽऽ।।	दि. ल. ९ (शु. दा.), ११ (अष्टमस्थ चं. परिहार, श. दा.), १२ (अष्टमस्थ मं. परिहार), गोधूलि
मार्ग. कृ.११, मंग	30 नवं.	१५ मार्ग.	चित्रा	20:34 बाद	वृश्चिक	कन्या	।।।।।।।।।।	रा. ल. ५ (गु. दा.), ६ (चं. दा. व पूज्य)
मार्ग. कृ.१२,बुध	1 दिसं.	१६ मार्ग.	चित्रा	18:47 तक	वृश्चिक	तुला	।।।।।ऽचौ.।।।।	दि. ल. ९ (शु. दा.), ११ (श. दा.), गोधूलि
मार्ग. कृ.१२,बुध	1 दिसं.	१६ मार्ग.	स्वा.	18:47 बाद	वृश्चिक	तुला	।।।।।।ऽ।।।	रा. ल. ५ (23:36 तक) (अल्पकाले लग्न) 23:36 से कृष्ण त्रयोदशी

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शुभ विवाह मुहूर्त—मार्गशीर्ष मास (नवम्बर-दिसम्बर)—सन् 2021 ई.

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि.नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
मार्ग. शु. ३, चंद्र	6 दिसं.	२१ मार्ग.	उ.षा.	26:19 बाद	वृश्चिक	धनु	।।ऽशु.।।।।ऽ।।	रा. ल. ६ (26:19 बाद), ७
मार्ग. शु. ४, मंग	7 दिसं.	२२ मार्ग.	उ.षा.	24:12 तक	वृश्चिक	मकर	।।ऽशु.।।।।ऽ।।	दि. ल. ९ (मं. दा.), ११ (चं. गु. श. दा.), १२ (गु. दा.), रा. ल. ५ (24:12 तक, षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. गु. दा.) (भद्रा परिहार)
मार्ग. शु. ५, बुध	8 दिसं.	२३ मार्ग.	धनि.	22:40 बाद	वृश्चिक	मकर	।।ऽगु.।।।ऽऽ।।	रा. ल. ५ (22:40 बाद, षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. के. दा.), ६, ७
मार्ग. शु. ६, गुरु	9 दिसं.	२४ मार्ग.	धनि.	21:51 तक	वृश्चिक	म./कुं.	।।ऽगु.।।।ऽऽ।।	दि. ल. ९, ११ (चं. गु. दान व पूज्य), १२ (चं. दा.)
मार्ग. शु. ८, शनि	11 दिसं.	२६ मार्ग.	उ.भा.	22:32 बाद	वृश्चिक	मीन	।।।।।।।।।।	रा. ल. ६ (चं. दा. व पूज्य), ७ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. दा.)
मार्ग. शु.१०, चंद्र	13 दिसं.	२८ मार्ग.	रेव.	26:05 तक	वृश्चिक	मीन	।ऽ।।।।ऽऽ।ऽ	दि. ल. ९ (बु. दा.), ११, रा. ल. ३, ६ (26:05 तक, चंद्र पूज्य), दग्धपरिहार
मार्ग. शु.१०, चंद्र	13 दिसं.	२८ मार्ग.	अश्वि.	26:05 बाद	वृश्चिक	मेष	ऽगु.।।।।।।ऽ।।	रा. ल. ६ (26:05 बाद), ७ (षष्ठस्थ चं. परिहार)

✲ माघ मास (जनवरी—फरवरी) सन् 2022 ई. ✲

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि.नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
माघ कृ. ४, शनि	22 जन.	९ माघ	उ.फा.	10:38 बाद	मकर	सिं./कं.	।।।।।ऽरौ.।ऽ।।	दि. ल. १२ (10:38 बाद, षष्ठस्थ चं. परिहार), १, 14:06 से 16:30 तक अतिगण्ड दोष, गोधूलि, रा. ल. ५ (लग्नेश षष्ठस्थ परिहार), ६ (चंद्र पूज्य), ७ (चं. दा.)
माघ कृ. ५, रवि	23 जन.	१० माघ	उ.फा.	11:09 तक	मकर	कन्या	।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ११ (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. पूज्य), १२ (11:09 तक, चं. दा.)
माघ कृ. ५, रवि	23 जन.	१० माघ	हस्त	11:09 बाद	मकर	कन्या	।।।।।।ऽ।।।	दि. ल. १२ (11:09 बाद, चं. दा.), १ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. दा. व पूज्य), गोधूलि, रा. ल. ५ (लग्नेश सूर्य षष्ठस्थ परिहार, सूर्य दा.), ६ (चं. दा. व पूज्य), ७ (चं. शु. दा.)
माघ कृ. ६, चंद्र	24 जन.	११ माघ	हस्त	11:15 तक	मकर	कन्या	।।।।।।ऽ।।।	दि. ल. ११ (अष्टमस्थ चं. परिहार), १२ (10:19 तक चं. दा.), 10:19 से मृत्युबाण, (भद्रा परिहार—पाताले)
माघ कृ. ६, चंद्र	24 जन.	११ माघ	चित्रा	11:15 बाद	मकर	कं./तु.	।।।।।ऽमृ.।।।।	21:05 तक मृत्युबाण-दोष, रा. ल. ५ (21:05 बाद, सू. दा.), ६ (चं. दा.), ७ (चं. शु. दा.)
माघ कृ. ७, मंग	25 जन.	१२ माघ	चित्रा	10:55 तक	मकर	तुला	।।।।।।।।।।	दि. ल. ११ (9:12 तक), 9:12 से 11:12 तक शूलदोष (अल्पकाल मुहू.)
माघ शु. ५, शनि	5 फर.	२३ माघ	उ.भा.	16:09 तक	मकर	मीन	।।।।।ऽनृ.ऽऽ।।	दि. ल. ११ (गु. दा.), १२ (चं. दा. व पूज्य), १ (चं. दा.)
माघ शु. ५, शनि	5 फर.	२३ माघ	रेव.	16:09 बाद	मकर	मीन	।।।।।ऽनृ.।ऽ।।	गोधूलि, रा ल. ५ (सूर्य षष्ठस्थ परिहार), ६, ७ (षष्ठस्थ चं. परिहार, लग्नोऽपरि गु. दृष्टि शुभप्रदा)
माघ शु. ६, रवि	6 फर.	२४ माघ	रेव.	17:10 तक	मकर	मीन	।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ११ (गु. दा.), १२ (चं. दा. व पूज्य), १ (चं. दा.)
माघ शु. ६, रवि	6 फर.	२४ माघ	अश्वि.	17:10 बाद	मकर	मेष	।।।।।।।ऽ।।	गोधूलि, रा. ल. ५ (सू. दा.), ६, ७ (षष्ठस्थ चं. परिहार, चं. शु. दा.)
माघ शु. ७, चंद्र	7 फर.	२५ माघ	अश्वि.	18:59 तक	मकर	मेष	।।।।ऽचौ.।ऽ।।	दि. ल. ११ (श. दा.), १२ (गु. दा.), १ (चं. दा. व पूज्य), गोधूलि, रा. ल. ५ (18:59 तक) (सिंह लग्न अल्पकाले)
माघ शु. ८, बुध	9 फर.	२७ माघ	रोहि.	24:23 बाद	मकर	वृष	।।।।।।।।।।	रा. ल. ७ (24:23 बाद, अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. शु. पूज्य) अल्पकाले (आवश्यके)
माघ शु. ९, गुरु	10 फर.	२८ माघ	रोहि.	27:32 तक	मकर	वृष	।।।।।।ऽ।ऽ।	दि. ल. ११ (श. दा.), १२, १, गोधूलि, 18:49 बाद वैधृति दोष

✲ फाल्गुन मास (फरवरी—मार्च) सन् 2022 ई. ✲

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	वि.नक्षत्र	समय (भा.स्टैं.टा.)	सूर्य राशि	चंद्र राशि	लतादि दश रेखाएं	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
फाल्गु.कृ.२, शुक्र	18 फर.	७ फाल्गु	उ.फा.	16:42 बाद	कुम्भ	सिं./कं.	।।।।।।।।।।	गोधूलि, रा. ल. ६ (चं. दा.), ७ (चं. दा.)
फाल्गु.कृ.३, शनि	19 फर.	८ फाल्गु	उ.फा.	16:51 तक	कुम्भ	कन्या	।।।।।ऽचौ.।।।।	दि. ल. १२ (चं. दा.), १ (षष्ठस्थ चं. परिहार) भद्रा परिहार (पाताले)
फाल्गु.कृ.४, रवि	20 फर.	९ फाल्गु	चित्रा	16:42 बाद	कुम्भ	कन्या	।ऽ।।।ऽरो.।।।।	गोधूलि, रा. ल. ६ (चं. पूज्य), ७ (चं. शु. दा.)

नोट—(i) 21 फरवरी, 2022 ई. प्रात: लगभग 8घं.-50मिं. से गुरु वार्धक्य प्रारम्भ ; (ii) गुरु अस्त—24 फरवरी, 2022 ई. से 25 मार्च, 2022 ई. तक गुरु अस्त रहेगा।

वशेष—आगामी वर्ष (वि. संवत् २०७९) में गुरु-शुक्रास्त की सम्भावित तारीखें

(1) शुक्र लगभग 30 सितम्बर, 2022 ई. को पूर्व में अस्त होकर लगभग 26 नवम्बर, 2022 ई. को पश्चिम से दृश्य हो जाएगा।
(2) वि. संवत् २०७९ में गुरु उदित अवस्था में ही संचार करेगा।

दोषयुक्त एवं अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त-संवत् २०७८ वि. (सन् 2021-22 ई.)

नीचे वि. संवत् २०७८ में उन विशेष दोषयुक्त एवं अशुद्ध विवाह मुहूर्त्तों का स्पष्टीकरण दिया जा रहा है, जिनके अन्तर्गत विवाह-नक्षत्र होते हुए भी उनको शुद्ध विवाह मुहूर्त्तों में सम्मिलित नहीं किया गया। यहाँ अशुद्ध एवं त्याज्य विवाह मुहूर्त्तों के आगे जिन युति, वेध, मृत्युबाण आदि दोषों का विवरण लिखा है, उनका कोई शास्त्रीय परिहार नहीं मिलता है। गत पृष्ठों में जिन मुहूर्त्तों, लग्नों में क्रूर ग्रह युति, लग्नेश षष्ठाष्टमस्थ, चंद्र षष्ठाष्टमस्थ, शुक्र षष्ठाष्टमस्थ आदि दोषों का परिहार मिल गया है, उन्हें शुद्ध मुहूर्त्तों में सम्मिलित कर लिया गया है।

निवेदक—पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी, गणितकर्त्ता

ता. मास वार	नक्षत्र	समय	दोष विवरण
21 अप्रैल, 2021 ई. तक शुक्र अस्त दोष			
22 अप्रै., गुरु	मघा	8:15 बाद	शनि-वेध
23 अप्रै., शुक्र	मघा	7:42 तक	शनि-वेध
28 अप्रै., बुध	अनु	17:13 बाद	सूर्य-शुक्र वेध
29 अप्रै., गुरु	अनु	14:29 तक	सूर्य-शुक्र वेध
1 मई, शनि	मूल	10:16 तक	लग्नऽभाव:
3 मई, चन्द्र	उ.षा.	8:22 तक	लग्नऽभाव:
3 मई, चन्द्र	श्रव.	8:22 बाद	शनि युति अपरिहार्य
4 मई, मंग	श्रव.	8:26 तक	शनि-युति अपरिहार्य
5 मई, बुध	धनि.	9:11 तक	10:16 तक क्रान्तिसाम्य
8 मई, शनि	उ.भा.	14:47 तक	लग्नऽभाव:
9 मई, रवि	रेव.	17:29 तक	कृष्ण त्रयोदशी
12 मई, बुध	रोहि.	26:40 बाद	मृत्युबाण
13 मई, गुरु	रोहि.	सारा दिन	मासान्त, मृत्युबाण
14 मई, शुक्र	रो/मृ.	सारा दिन	संक्रान्ति
15 मई, शनि	मृग	8:39 तक	सूर्य क्षीणांश
19 मई, बुध	मघा	15:48 बाद	शनि-वेध
20 मई, गुरु	मघा	15:57 तक	शनि-वेध
24 मई, चन्द्र	चित्रा	9:49 तक	व्यतीपात
25 मई, मंग	स्वा.	7:06 तक	गुरु पादवेध
27 मई, गुरु	मूल	22:29 बाद	भौम वेध
28 मई, शुक्र	मूल	20:02 तक	भौम-वेध
29 मई, शनि	उ.षा.	18:04 बाद	23:43 से बु.-शु.-पादवेध
30 मई, रवि	श्रव.	16:42 बाद	शनियुति अपरिहार्य, क्रां.सा.
31 मई, चन्द्र	श्रव.	16:02 तक	शनि-युति, क्रां.सा.
1 जून, मंग	धनि.	16:08 तक	वैधृति, भद्रा
3 जून, गुरु	उ.भा.	18:35 बाद	मृत्युबाण 18:01 से
4 जून, शुक्र	रेव.	20:47 बाद	भद्रा
11 जून, शुक्र	मृग.	14:31 तक	भुजंगपात
15 जून, मंग	मघा	21:42 बाद	संक्रान्ति, शनि वेध
16 जून, बुध	मघा	22:15 तक	शनि-वेध
17 जून, गुरु	उ.फा.	22:13 बाद	भद्रा
18 जून, शुक्र	उ.फा.	21:37 तक	व्यतीपात
22 जून, मंग.	अनु.	14:22 बाद	केतुयुति अपरिहार्य
23 जून, बुध	अनु.	11:48 तक	केतु युति अपरिहार्य
25 जून, शुक्र	मूल	6:40 तक	लग्नऽभाव:
25 जून, शुक्र	उ.षा.	28:25 बाद	मृत्युबाण
26 जून, शनि	श्रव.	26:36 बाद	वैधृति, शनि-युति
27 जून, रवि	श्रव.	25:22 तक	वैधृति, शनि-युति
1 जुला., गुरु	रेव.	27:49 बाद	लग्नऽभाव:
3 जुला., शनि	रेव.	6:14 तक	लग्नऽभाव:
7 जुला., बुध	रोहि.	18:19 तक	कृष्ण त्रयोदशी
7 जुला. बुध	मृग.	18:19 बाद	कृष्ण त्रयोदशी
12 जुला. चंद्र	मघा	27:14 बाद	शनि-वेध
13 जुला. मंग	मघा	27:41 तक	शनिवेध, व्यतीपात
14 जुला. बुध	उ.फा.	27:43 बाद	लग्नऽभाव:
15 जुला. गुरु	उ.फा.	27:21 तक	मासान्त
16 जुला. शुक्र	हस्त	26:37 तक	संक्रान्ति
17 जुला. शनि	स्वा.	25:32 बाद	मृत्युबाण 18:04 से
19 जुला. चन्द्र	अनु.	22:27 बाद	केतुयुति अपरिहार्य
20 जुला. मंग	अनु.	20:33 तक	केतुयुति अपरिहार्य
24 जुला. शनि	श्रव.	12:40 बाद	शनियुति अपरिहार्य
25 जुला. रवि	श्रव.	11:18 तक	शनियुति अपरिहार्य
30 जुला. शुक्र	रेव.	14:02 तक	भद्रा (भूलोके)
9 अग., चन्द्र	मघा	9:50 बाद	भौमयुति, शनिवेध
10 अग., मंग	मघा	9:53 तक	भौमयुति, शनि-वेध
13 अग., शुक्र	हस्त	8:00 तक	लग्नऽभाव:
14 अग., शनि	चित्रा	6:56 तक	लग्नऽभाव, दग्धातिथि
15 अग., रवि	अनु.	28:26 बाद	केतुयुति, मासान्त
16 अग., चन्द्र	अनु.	27:02 तक	संक्रान्ति, केतुयुति
17 अग., मंग.	मूल	25:35 बाद	26:14 से मृत्युबाण
20 अग., शुक्र	श्रव.	21:25 बाद	शनियुति, सूर्य-वेध
21 अग., शनि	श्रव.	20:21 तक	शनियुति, सूर्य-वेध
25 अग., बुध	रेव.	20:48 बाद	भुजंगपात
26 अग., गुरु	रेव.	22:29 बाद	भुजंगपात
26 अग., गुरु	अश्वि	22:29 बाद	भौम-वेध
27 अग., शुक्र	अश्वि	24:47 तक	भौम-वेध
5 सितं., रवि	मघा	18:07 बाद	कृष्ण त्रयोदशी/चतुर्दशी
8 सितं. से 20 सितं. तक 'त्रयोदश दिनात्मक पक्ष' रहेगा। यह समयावधि भी शुभ कार्यों हेतु त्याज्य रहेगी (देखें पृष्ठ 108, 164)			
12 सितं., रवि	अनु.	9:50 बाद	केतु-युति, वैधृति
13 सितं., चन्द्र	अनु.	8:24 तक	केतु-युति अपरिहार्य
15 सितं., बुध	उ.षा.	28:56 बाद	मासान्त, मृत्युबाण
16 सितं., गुरु	उ.षा.	28:09 तक	संक्रान्ति दिन
17 सितं., शुक्र	श्रव.	27:36 तक	शनि-युति अपरिहार्य
17 सितं., शुक्र	धनि.	27:36 बाद	मृत्युबाण 25:49 से
20 सितं., चन्द्र	उ.भा.	28:02 बाद	प्रोष्ठपदी श्राद्ध
21 सितं. से 6 अक्तू., 2021 ई. तक श्राद्ध-दिन (पक्ष)			
7 अक्तू., गुरु	चित्रा	21:13 तक	वैधृति दोष
9 अक्तू., शनि	अनु.	16:47 बाद	शुक्र-केतु युति अपरिहार्य
10 अक्तू. रवि	अनु.	14:44 तक	शुक्र-केतुयुति अपरिहार्य
14 अक्तू. गुरु	श्रव.	9:35 बाद	शनि-युति अपरिहार्य
15 अक्तू. शुक्र	श्रव.	9:16 तक	शनि-युति अपरिहार्य
15 अक्तू. शुक्र	धनि.	9:16 बाद	भुजंगपात, भद्रा
16 अक्तू. शनि	धनि.	9:22 तक	भुजंगपात, भद्रा
30 अक्तू. शनि	मघा	12:52 बाद	शनि-वेध, भद्रा
31 अक्तू. रवि	मघा	13:16 तक	शनि-वेध, भद्रा
2 नवं., मंग	उ.फा.	11:44 तक	वैधृति-दोष
2 नवं., मंग	हस्त	11:44 बाद	कृष्ण त्रयोदशी
5 नवं., शुक्र	अनु.	26:23 बाद	केतुयुति, क्षीण चंद्र
6 नवं., शनि	अनु.	23:39 तक	केतुयुति अपरिहार्य
9 नवं., मंग	उ.षा.	17:00 बाद	भुजंगपात
10 नवं., बुध	उ.षा.	15:42 तक	भुजंगपात
10 नवं., बुध	श्रव.	15:42 बाद	शनि-युति अपरिहार्य
11 नवं., गुरु	श्रव.	14:59 तक	शनि-युति अपरिहार्य
14 नवं., रवि	उ.भा.	16:31 बाद	मृत्युबाण, भद्रा
15 नवं., चंद्र	उ.भा.	18:09 तक	मासान्त

ता. मास वार	नक्षत्र	समय	दोष विवरण
16 नवं., मंग	अश्वि.	20:14 बाद	संक्रान्ति
17 नवं., बुध	अश्वि.	22:43 तक	व्यतीपात
19 नवं., शुक्र	रोहि.	28:29 बाद	लग्नऽभाव
21 नवं., रवि	रोहि.	7:36 तक	लग्नऽभाव
26 नवं., शुक्र	मघा	20:36 बाद	शनि-वेध
27 नवं., शनि	मघा	21:43 तक	शनि-वेध, वैधृति
2 दिसं., गुरु	स्वा.	16:27 तक	कृष्ण त्रयोदशी
5 दिसं., रवि	मूल	7:47 बाद	भुजंगपात
7 दिसं., मंग	श्रव.	24:12 बाद	शनि-युति अपरिहार्य
8 दिसं., बुध	श्रव.	22:40 तक	शनि-युति अपरिहार्य
12 दिसं., रवि	उ.भा.	24:00 तक	व्यतीपात
12 दिसं., रवि	रेव.	24:00 बाद	व्यतीपात
14 दिसं., मंग	अश्वि.	28:40 तक	मासान्त
(सन् 2022 ई०)			
14 जन., शुक्र	रोहि.	20:18 तक	संक्रान्ति दिन
14 जन., शुक्र	मृग.	20:18 बाद	संक्रान्ति, सूर्य-वेध
15 जन., शनि	मृग.	23:21 तक	सूर्य-वेध, मृत्युबाण
20 जन., गुरु	मघा	8:24 बाद	शनि-वेध, भद्रा
21 जन., शुक्र	मघा	9:43 तक	शनि-वेध, भद्रा
25 जन., मंग	स्वा.	10:55 बाद	भुजंगपात
26 जन., बुध	स्वा.	10:06 तक	भुजंगपात
27 जन., गुरु	अनु.	8:51 से	केतु-युति अपरिहार्य
29 जन., शनि	मूल	26:49 तक	भौम-युति अपरिहार्य
30 जन., रवि	उ.षा.	24:23 बाद	कृष्ण त्रयोदशी
2 फर., बुध	धनि.	17:53 तक	मृत्युबाण 6:52-18:40
4 फर., शुक्र	उ.भा.	15:58 बाद	16:14 से भद्रा, लग्नऽभाव
10 फर., गुरु	मृग.	27:32 बाद	वैधृति
11 फर., शुक्र	मृग.	30:37 तक	मासान्त, वैधृति
16 फर., बुध	मघा	15:14 बाद	शनि-वेध
17 फर., गुरु	मघा	16:11 तक	शनि-वेध
19 फर., शनि	हस्त	16:51 बाद	भुजंगपात
20 फर., रवि	हस्त	16:42 तक	भुजंगपात

ता. 21 फरवरी, 2022 ई. से 29 मार्च, 2022 ई. तक गुरु अस्त दोष रहेगा।

नोट—इसी कालावधि में 10 मार्च से 18 मार्च, 2022 ई. तक 'होलाष्टक' भी रहेंगे।

श्रावण मास में

काँवड़ जलाभिषेक मुहूर्त्त—सन् 2021 ई.

गोमुख, श्रीकेदारनाथ, श्रीअमरनाथ, श्री-हरिद्वार, नीलकण्ठ एवं गंगादि तीर्थों से श्रीगंगाजल के कलश भरकर भगवान् श्रीशिव की प्रसन्नता हेतु आषाढ़ पूर्णिमा से लेकर सम्पूर्ण श्रावण मास पर्यन्त भगवान् श्रीशिव के प्रतिष्ठित मन्दिरों, ज्योतिर्लिङ्गों, विग्रहों, स्वरूपों तथा क्षेत्रीय मन्दिरों में शिवभक्त काँवड़ियों द्वारा श्रद्धारूपी श्रीगङ्गाजल अभिषेक किया जाता है।

स्कन्दपुराणानुसार श्रावण मास में नियमपूर्वक नक्त व्रत करें और महीने भर प्रतिदिन रुद्राभिषेक करें।

कुर्यात् नक्त व्रतं योगिन् श्रावणे नियतो नरः। रुद्राभिषेकं कुर्वीत् मासमात्रं दिने दिने।।

कुछ लोगों का भ्रम है कि श्रावण-भाद्रपद मास में नदियां रजस्वलारूप हो जाने से उनका जल पवित्र नहीं होता। परन्तु स्कन्दपुराण में स्पष्ट लिखा है कि सिन्धु, सूती, चन्द्रभागा, गंगा, सरयू, नर्मदा, यमुना, प्लक्षजाला, सरस्वती-ये सभी नंदसंज्ञा वाली नदियां रजोदोष से युक्त नहीं होती है।-ये सभी अवस्थाओं में निर्मल रहती हैं।

श्रीगंगादि तीर्थों से जल लाने एवं भगवान् शिवपूजन एवं शिवलिङ्ग को जलांजली अभिषेक करने की शुभ एवं पुण्य तारीखें-

पक्ष, तिथि, वार,	नक्षत्र	तारीख	पक्ष, तिथि, वार,	नक्षत्र	तारीख
आषा.पूर्णिमा,शनि	उ.षा.	24 जुलाई	श्राव. कृ.१३, शुक्र	आ./पु.	6 अगस्त
श्राव.कृ. ३, चन्द्र	धनि./श.	26 जुलाई (15:25 तक)	श्रा. कृ.१४, बुध	पु./पु.	7 अगस्त
श्राव. कृ.५, बुध	पू.भा./उ.	28 जुलाई	श्राव. शु.३, बुध	पू./उ.	11 अगस्त
श्राव. कृ.८, रवि	भर.	1 अगस्त	श्राव. शु.५, शुक्र	ह./चि.	13 अगस्त
श्राव. कृ.११, बुध	मृग.	4 अगस्त	श्राव. शु.१३, शुक्र	उ.षा.	20 अगस्त
श्राव.कृ.१२, गुरु	आर्द्रा	5 अगस्त	श्राव. पूर्णिमा, रवि	धनि.	22 अगस्त

विशेष—यद्यपि इन मुहूर्तों में से कांवड़ जलाभिषेक हेतु जल ग्रहण करने एवं जलांजली अभिषेक हेतु कोई भी मुहूर्त्त ग्रहण कर सकते हैं। शिवलिङ्ग पर जलाभिषेक हेतु प्रातःकाल सूर्योदय पश्चात् 2घं.-45मि. (6 अगस्त) का समय श्रेष्ठ रहेगा। फिर भी कुछ विद्वान् मुख्य मुहूर्त्त वाले दिन (श्रावण-शिवरात्रि-6 अगस्त) प्रदोषकाल में तथा चार प्रहर पूजनोपरान्त सम्पूर्ण प्रदोष व रात्रि में जलाभिषेक करते हैं। **परन्तु ध्यान रहे !**—6अगस्त की रात्रि 25:54 से भद्रा भूलोक वासी हो जाएगी। अतः इस समय से पहले मुख्य अभिषेक/पूजन कर लेना चाहिए। आर्द्रा नक्षत्र तथा मिथुन लग्न विशेष रूप से शिवपूजन में शुभ माना गया है।

शुभ समय—*(i)* प्रातः 6:31 से 8:52 (6 अगस्त), *(ii)* सायं 19:03 से 21:43 (6 अगस्त), *(iii)* 7 अगस्त को प्रातः 6:51 बाद से 8:48 तक। इसी प्रकार प्रत्येक दिन प्रातःकाल एवं प्रदोषकाल ज्ञात करें। (देखें पृष्ठ-300)

अभिषेक हेतु जलामृत लिवाने की यात्रा हेतु शुभ-दिन विचार

काँवड़ियां शुभ यात्रा हेतु जाने से पूर्व चन्द्रमा का सम्मुख व दाएँ आदि दिशा वास जानकर शुभ यात्रा आरम्भ करें तो कल्याणकारी होगा। **उदाहरणार्थ**—जिस दिशा की ओर जाना हो, उस राशि से सम्बन्धित दिशा सम्मुख अर्थात् कल्याणकारी कहलाएगी। उससे दाहिनी ओर की दिशा में पड़ने वाली चन्द्र राशि एवं उसकी दिशा भी शुभ एवं लाभकारी होगी। जबकि बाईं ओर पड़ने वाली एवं दक्षिण दिशा कष्टकारी एवं अशुभ होगी।

दिशा	पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
द्वादश राशियां	मेष, सिंह, धनु	मिथुन, तुला, कुम्भ	कर्क, वृश्चिक, मीन	वृष, कन्या, मकर

त्रिबल शुद्धि पर आधारित-वर-कन्या की राशि अनुसार शुभ विवाह-मुहूर्त्त निकालें-संवत् २०७८ वि. (सन् 2021-22 ई.)

नीचे वर-कन्या की जन्म अथवा नाम राशि के अनुसार (**त्रिबल शुद्धि-सूर्य, चन्द्र एवं गुरु पर आधारित**) विवाह मुहूर्त्त दिए जा रहे हैं। वर-कन्या की कुण्डली मिलान के पश्चात् उनकी राशियों में जो-जो तारीखें समान होंगी, उन तारीखों में वर-कन्या का विवाह शुभ एवं ग्राह्य होगा। **विवाह लग्न** का निर्णय करने के लिए गत पृष्ठों पर दिए गए शुद्ध मुहूर्त्तों में से किसी विद्वान पण्डित जी के परामर्श अनुसार चयन करना चाहिए। **उदाहरण**--मेष राशि का लड़का और सिंह राशि की लड़की का विवाह मुहूर्त्त **अप्रैल** (वैशाख), 2021 ई. में देखना हो तो, दोनों की राशियों में 24, 25, 26, 27, 30 अप्रैल की तारीखों एवं मुहूर्त्तों में समानता पाई गई है, इनमें से कोई भी तारीख अपनी सुविधानुसार ग्रहण कर सकते हैं। **कार्तिक मास के मुहूर्त्त यद्यपि पर्वतीय** (पहाड़ी) क्षेत्रों में ही ग्राह्य माने जाते हैं। परन्तु वर्तमान परिस्थितियों वश, अन्य प्रदेशों के वासी भी कार्तिक मास में विवाह ग्रहण करने लगे हैं। **ध्यान रहे**, विवाह के मास का निर्धारण मुख्यत: लड़के (वर) की राश्यनुसार किया जाता है। **कन्या** की राशि से गुरु बल तथा दोनों में चन्द्र बल विचारणीय होता है। वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में जबकि कन्याओं का विवाह बालिग होने पर ही करते हैं, अत: गुरु शुद्धि को गम्भीरतापूर्वक न लेते एवं ४, ८, १२वें गुरु को वर्ज्य न समझते हुए पूज्य के रूप में ग्रहण किया गया है।

ध्यान रहे, लड़के की जन्म (अथवा नाम) राशि से ३, ६, १०, ११वें सूर्य शुभ; १, २, ५, ७, ९ वें सूर्य पूज्य तथा ४, ८, १२वें सूर्य त्याज्य होता है। कन्या को १, ३, ६ व १०वें गुरु साधारण पूज्य एवं उन्हें ४, ८, १२वें गुरु विशेष रूपेण पूज्य होगा। विवाह समय में अशुभ ग्रहों का यथाशक्ति दान व पूजा करवा लेनी चाहिए। सूर्य एवं गुरु स्वराशि या मित्रक्षेत्री हों तो उन्हें पूज्य न मानकर शुभ एवं ग्राह्य मान लिया जाता है।

*नोट--त्रयोदश दिनात्मक पक्ष (विश्वघस्र-पक्ष) की तारीखें हैं। (देखें पृष्ठ 108, 164)

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
मेष राशि--अप्रै. 24, 25 26, 27, 30, **मई** 2, 4, 7-8 (चं. दा.), 21, 22, 23, 24, 30, 31, **जून** 4-5 (चं. दा.), 6, 18, 19, 20, 21, 24, 26, 27, 28, 30-**जुला.** 1-2 (चं. दा.), 3, 4, 6, **अग.** 18, 19, 20, 21, 22, 24-25 (चं. दा.), 30, 31, **सितं.** 1, *8, 9, 10, 11, 14, 18**, **अक्तू.** 7, 8, 11, 12, 13, 14 [कार्तिक मासे अक्तू. 18-19-20 (चं. दा.), 21, 23, 24, 25, **नवं.** 1, 7, 8, 11, 12], **सन् 2022 ई. में जन.** 22, 23, 24, 25, **फर.** 5-6 (चं. दा.), 7, 9, 10, 18, 19, 20 तारीखें शुभ होंगी।	मेष राशि के वर को आषाढ़, आश्विन, माघ, फाल्गुन शुभ ; वैशाख, ज्येष्ठ व कार्तिक मासों में सूर्य **पूज्य** तथा श्रावण, मार्गशीर्ष मास त्याज्य रहेंगे। **कन्या** को गुरु संवतारम्भ से 13 सितं. तक, पुन: 20 नवं. से संवतान्त तक शुभ, 14 सितं. से 19 नवं. तक साधारण रुपेण पूज्य रहेगा।	**मेष राशि--अप्रै.** 24, 25, 26, 27, 30, **मई** 2, 4, 7, 8, 21, 22, 23, 24, 30, 31, **जून** 4, 5, 6, 18, 19, 20, 21, 24, 26, 27, 28, 30, **जुला.** 1, 2, 3, 4, 6, 17, 18, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 28, 29, 30, 31, **अग.** 2, 3, 4, 11, 12, 13, 14, 18, 19, 20, 21, 22, 24, 25, 30, 31, **सितं.** 1, *8,9,10,11,14,18**, **अक्तू.** 7, 8, 11, 12, 13, 14 [**कार्तिक मासे अक्तू.** 18, 19, 20, 21, 23, 24, 25, **नवं.** 1, 7, 8, 11, 12] **मार्गशीर्षे नवं.** 20, 21, 22, 28, 29, 30, **दिसं.** 1, 6, 7, 8, 9, 11, 13, **सन् 2022 ई. में जन.** 22, 23, 24, 25, **फर.** 5, 6, 7, 9, 10, 18, 19, 20 तारीखें शुभ होंगी।
वृष राशि--मई 21 (21:07 बाद), 22, 23, 24, 25, 26, 30, 31, **जून** 4, 5, 6, 18, 19, 20, 21, 26 (9:55 बाद), 27, 28, 30, **जुला.** 1, 2, 3, 4, 6 (चं. दा.), 17, 18, 23 (19:58 बाद), 24, 25, 26, 28, 29, 30-31 (चं. दा.), **अग.** 2, 3, 4, 11 (15:23 बाद), 12, 13, 14, ***सितं. 18****, **अक्तू.** 7, 8, 13 (16:06 बाद), 14, [**कार्तिक मासे अक्तू.** 18, 19, 20-21 (चं. दा.), 23, 24, 25, **नवं.** 1 (18:39 बाद), 7, 8, 11, 12] **मार्गशीर्ष में नवं.** 20, 21, 22, 28 (28:04 बाद), 29, 30, **दिसं.** 1, 7, 8, 9, 11, 13, **सन् 2022 ई. में जन.** 22 (16:48 बाद), 23, 24, 25, **फर.** 5, 6-7 (चं. दा.), 9, 10, 18 (22:46 बाद), 19, 20 तारीखें शुभ होंगी।	वृष के वर को श्रावण, कार्तिक, फाल्गुन मास-शुभ, ज्येष्ठ, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ मासों में **सूर्य पूज्य** तथा वैशाख, भाद्रपद मास त्याज्य रहेंगे। **कन्या** को गुरु संवतारम्भ से 13 सितं., पुन: 20 नवं. से संवतान्त तक साधारणतया पूज्य रहे, 14 सितं. से 19 नवं. शुभ रहेगा।	**वृष राशि--अप्रै.** 24, 25, 26, 27, **मई** 2 (14:46 बाद), 4, 7, 8, 21 (21:07 बाद), 22, 23, 24, 25, 26, 30, 31, **जून** 4, 5, 6, 18, 19, 20, 21, 26 (9:55 बाद), 27, 28, 30, **जुला.** 1, 2, 3, 4, 6, 17, 18, 23 (19:58 बाद), 24, 25, 26, 28, 29, 30, 31, **अग.** 2, 3, 4, 11 (15:23 बाद), 12, 13, 14, 19 (28:22 बाद), 20, 21, 22, 24, 25, 30, 31, **सितं.** 1, *8,9,10,11,18**, **अक्तू.** 7, 8, 13 (16:06 बाद), 14 [**कार्तिक मासे अक्तू.** 18, 19, 20, 21, 23, 24, 25, **नवं.** 1 (18:39 बाद), 7, 8, 11 12] **मार्गशीर्ष में नवं.** 20, 21, 22, 28 (28:04 बाद), 29, 30, **दिसं.** 1, 7, 8, 9, 11, 13 **सन् 2022 ई. में जन.** 22 (16:48 बाद), 23, 24, 25, **फर.** 5, 6, 7, 9, 10, 18 (22:46 बाद), 19, 20 तारीखें शुभ होंगी।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
मिथुन राशि–अप्रै. 26, 27, 30, **मई** 2 (14:46 तक), 4 (20:44 बाद), 7, 8, **जून** 20, 21, 24, 26 (9:55 तक), 28 (13:00 बाद), 30, **जुला.** 1, 2, 3, 4, 6 (चं. दा.), 17 (14:07 बाद), 18, 21, 22, 23 (19:58 तक), 25 (22:48 बाद), 26, 28, 29, 30, 31, **अग.** 2–3 (चं. दा.), 4, 11 (15:23 तक), 13 (19:29 बाद), 14, 18, 19 (28:22 तक), 22, 24, 25, 30, 31, **सितं.** 1, *9(25:45 बाद),10,11,14**, [**कार्तिक मासे अक्तू.** 18, 19, 20, 21, 23–24–25 (चं. दा.), **नवं.** 1 (18:39 तक), 7, 8, 11 (26:51 बाद), 12] **मार्गशीर्ष में नवं.** 20–21 (चं. दा.), 22, 28 (28:04 तक), **दिसं.** 1, 6, 9 (10:10 बाद), 11, 13, **सन् 2022 ई. में फर.** 18 (22:46 तक) तारीखें शुभ होंगी।	मिथुन के वर को वैशाख, मार्गशीर्ष मास-**शुभ**। आषाढ़, श्रावण, कार्तिक व फाल्गुन मासों में **सूर्य पूज्य** तथा ज्येष्ठ, आश्विन, माघ मास **त्याज्य** रहेंगे। इस राशि की **कन्या** को गुरु 14 सितं. से 19 नवं. तक विशेष रूप से पूज्य, शेष अवधि में शुभ रहेगा।	**मिथुन राशि–अप्रै.** 26, 27, 30, **मई** 2 (14:46 तक), 4 (20:44 बाद), 7, 8, 21 (21:07 तक), 24, 25, 26, **जून** 4, 5, 6, 20, 21, 24, 26 (9:55 तक), 28 (13:00 बाद), 30, **जुला.** 1, 2, 3, 4, 6, 17 (14:07 बाद), 18, 21, 22, 23 (19:58 तक), 25 (22:48 बाद), 26, 28, 29, 30, 31, **अग.** 2, 3, 4, 11 (15:23 तक), 13 (19:29 बाद), 14, 18, 19 (28:22 तक), 22, 24, 25, 30, 31, **सितं.** 1, *9 (25:45 बाद), 10, 11, 14, 18 (15:26 बाद)**, **अक्तू.** 7, 8, 11, 12, 13 (16:06 तक) [**कार्तिक मासे अक्तू.** 18, 19, 20, 21, 23, 24, 25, **नवं.** 1 (18:39 तक), 7, 8, 11 (26:51 बाद), 12] **मार्गशीर्ष में नवं.** 20, 21, 22, 28 (28:04 तक), **दिसं.** 1, 6, 9 (10:10 बाद), 11, 13, **सन् 2022 ई. में जन.** 22 (16:48 तक), 24 (23:08 बाद), 25, **फर.** 5, 6, 7, 9, 10, 18 (22:46 तक) तारीखें शुभ होंगी।
कर्क राशि–अप्रै. 24, 25, 30, **मई** 2, 4 (20:44 तक), 7, 8, 21, 22, 23, 25, 26, 30, 31, **जून** 4, 5, 6, **जुला.** 17 (14:07 तक), 21, 22, 23, 24, 25 (22:48 तक), 28, 29, 30, 31, **अग.** 2, 3, 4, 11, 12, 13 (19:29 तक), 18, 19, 20, 21, 24, 25, 30, 31, **सितं.** 1, *8,9(25:45 तक),14,18(15:26 तक)**, **अक्तू.** 11, 12, 13, 14, **नवं.** 20, 21, 22, 28, 29, 30, **दिसं.** 6, 7, 8, 9 (10:10 तक), 11, 13, **सन् 2022 ई. में जन.** 22, 23, 24 (23:08 तक), **फर.** 5, 6, 7, 9, 10 तारीखें शुभ होंगी।	कर्क राशि के **वर** को वैशाख, ज्येष्ठ, आश्विन मास-**शुभ**, श्रावण, भाद्रपद, मार्गशीर्ष व माघ मासों में **सूर्य पूज्य** तथा आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास **त्याज्य** रहेंगे। कर्क राशि की **कन्या** को गुरु संवतारम्भ से 13 सितं., पुनः 20 नवं. से संवतान्त विशेष रुपेण पूज्य, 14 सितं. से 19 नवं. शुभ रहेगा।	**कर्क राशि–अप्रै.** 24, 25, 30, **मई** 2, 4 (20:44 तक), 7, 8, 21, 22, 23, 25, 26, 30, 31, **जून** 4, 5, 6, 18, 19, 24, 26, 27, 28 (13:00 तक), 30, **जुला.** 1, 2, 3, 4, 6, 17 (14:07 तक), 21, 22, 23, 24, 25 (22:48 तक), 28, 29, 30, 31, **अग.** 2, 3, 4, 11, 12, 13 (19:29 तक), 18, 19, 20, 21, 24, 25, 30, 31, **सितं.** 1, *8,9(25:45 तक),14, 18 (15:26 तक)**, **अक्तू.** 11, 12, 13, 14 [**कार्तिक मासे अक्तू.** 18, 19, 20, 21, 23, 24, 25, **नवं. की** 1, 7, 8, 11 (26:51 तक)] **मार्गशीर्ष में नवं.** 20, 21, 22, 28, 29, 30, **दिसं.** 6, 7, 8, 9 (10:10 तक), 11, 13, **सन् 2022 ई. में जन.** 22, 23, 24 (23:08 तक), **फर.** 5, 6, 7, 9, 10, 18, 19, 20 तारीखें शुभ होंगी।
सिंह राशि–अप्रै. 24, 25, 26, 27, 30, **मई** 2, 4, 21, 22, 23, 24, 30, 31, **जून** 5 (23:28 बाद), 6, 18, 19, 20, 21, 24, 26, 27, 28, **जुला.** 3, 4, 6, **अग.** 18, 19, 20, 21, 22, 30, 31, **सितं.** 1, *8, 9, 10, 11, 14, 18**, **अक्तू.** 7, 8, 11, 12, 13, 14 [**कार्तिक मासे अक्तू.** 20 (14:02 बाद), 21, 23, 24, 25, **नवं.** 1, 7, 8, 11, 12] **सन् 2022 ई. में जन.** 22, 23, 24, 25, **फर.** 6 (17:10 बाद), 7, 9, 10, 18, 19, 20 तारीखें शुभ होंगी।	सिंह राशि के **वर** को आश्विन, फाल्गुन मासों में **सूर्य पूज्य**, ज्येष्ठ, आषाढ़, कार्तिक एवं माघ मास **शुभ** तथा चैत्र, श्रावण तथा मार्गशीर्ष मास **त्याज्य** रहेगें। सिंह राशि की **कन्या** को गुरु 14 सितं. से 19 नवं. साधारण रूपेण पूज्य, शेष अवधि में शुभ रहेगा।	**सिंह राशि–अप्रै.** 24, 25, 26, 27, 30, **मई** 2, 4, 21, 22, 23, 24, 30, 31, **जून** 5 (23:28 बाद), 6, 18, 19, 20, 21, 24, 26, 27, 28, **जुला.** 3, 4, 6, 17, 18, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 30, 31, **अग.** 2, 3, 4, 11, 12, 13, 14, 18, 19, 20, 21, 22, 30, 31, **सितं.** 1, *8, 9, 10, 11, 14, 18**, **अक्तू.** 7, 8, 11, 12, 13, 14 [**कार्तिक मासे अक्तू.** 20 (14:02 बाद), 21, 23, 24, 25, **नवं.** 1, 7, 8, 11, 12] **मार्गशीर्ष में नवं.** 20, 21, 22, 28, 29, 30, **दिसं.** 1, 6, 7, 8, 9, 13 (26:05 बाद), **सन् 2022 ई. में जन.** 22, 23, 24, 25, **फर.** 6 (17:10 बाद), 7, 9, 10, 18, 19, 20 तारीखें शुभ होंगी।

❑ वर (लड़का) ❑ वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि ❑ कन्या (लड़की) ❑

□ वर (लड़का) □	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	□ कन्या (लड़की) □
कन्या राशि–मई 21 (चं. दा.), 22, 23, 24, 25, 26, 30, 31, जून 4, 5 (23:28 तक), 18, 19, 20, 21, 26 (9:55 बाद), 27, 28, 30, जुला. 1, 2, 6, 17, 18, 23 (19:58 बाद), 24, 25, 26, 28, 29, अग. 2, 3, 4, 11, 12, 13, 14, *सितं. 18**, अक्तू. 7, 8, 13 (16:06 बाद), 14 [कार्तिक मासे अक्तू. 18, 19, 20 (14:02 तक), 23, 24, 25, नवं. 1 (चं. दा.), 11, 12] मार्गशीर्ष में नवं. 20, 21, 22, 28 (चं. दा.), 29, 30, दिसं. 1, 7, 8, 9, 11, 13 (26:05 तक), सन् 2022 ई. में जन. 22 (चं. दा.) 23, 24, 25, फर. 5, 6 (17:10 तक), 9, 10, 18 (चं. दा.), 19, 20 तारीखें शुभ होंगी।	कन्या राशि के वर को आषाढ़, श्रावण, मार्गशीर्ष व फाल्गुन मास शुभ। ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक व माघ मासों में सूर्य की पूजा/दानादि। वैशाख, भाद्रपद मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को गुरु संवतारम्भ से 13 सितं., पुनः 20 नवं. से संवतान्त साधारणतया पूज्य, शेष अवधि में शुभ रहेगा।	**कन्या राशि**–अप्रै. 24, 25, 26, 27, मई 2 (14:46 बाद), 4, 7, 8, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 30, 31, जून 4, 5 (23:28 तक), 18, 19, 20, 21, 26 (9:55 बाद), 27, 28, 30, जुला. 1, 2, 6, 17, 18, 23 (19:58 बाद), 24, 25, 26, 28, 29, अग. 2, 3, 4, 11, 12, 13, 14, 19 (28:22 बाद), 20, 21, 22, 24, 25, 30, 31, सितं. 1, *8,9,10,11,18**, अक्तू. 7, 8, 13 (16:06 बाद), 14 [कार्तिक मासे अक्तू. 18, 19, 20 (14:02 तक), 23, 24, 25, नवं. 1, 11, 12] मार्गशीर्ष में नवं. 20, 21, 22, 28, 29, 30, दिसं. 1, 7, 8, 9, 11,13 (26:05 तक), सन् 2022 ई. में जन. 22, 23, 24, 25, फर. 5, 6 (17:10 तक), 9, 10, 18, 19, 20 तारीखें शुभ होंगी।
तुला राशि–अप्रै. 24-25 (चं. दा.), 26, 27, 30, मई 2 (14:46 तक), 4 (20:44 बाद), 7, 8, जून 18-19 (चं. दा.), 20, 21, 24, 26 (9:55 तक), 28 (13:00 बाद), 30, जुला. 1, 2, 3, 4, 17 (चं. दा.), 18, 21, 22, 23 (19:58 तक), 25 (22:48 बाद), 26, 28, 29, 30, 31 अग. 4 (15:07 बाद), 11, 12, 13, 14, 18, 19 (28:22 तक), 22, 24, 25, 31 (23:12 बाद), सितं. 1, *8-9 (चं. दा.),10,11,14**, [कार्तिक मासे अक्तू. 18, 19, 20, 21, 25 (14:37 बाद), नवं. 1, 7, 8, 11 (26:51 बाद), 12] मार्गशीर्ष मास में नवं. 21 (21:10 बाद), 22, 28, 29,–30 (चं. दा.), दिसं. 1, 6, 9 (10:10 बाद), 11, 13, सन् 2022 ई. में फर. 18-19-20 (चं. दा.) तारीखें शुभ होंगी।	तुला के वर को श्रावण, भाद्रपद-शुभ। वैशाख, आषाढ़, कार्तिक, मार्गशीर्ष व फाल्गुन मासों में सूर्य की पूजा/दान होगा। ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को गुरु 14 सितं. से 19 नवं. तक विशेष रुपेण पूज्य, शेष अवधि में शुभ रहेगा।	**तुला राशि**–अप्रै. 24, 25, 26, 27, 30, मई 2 (14:46 तक), 4 (20:44 बाद), 7, 8, 21, 22, 23, 24, 25, 26, जून 4, 5, 6, 18, 19, 20, 21, 24, 26 (9:55 तक), 28 (13:00 बाद), 30, जुला. 1, 2, 3, 4, 17, 18, 21, 22, 23 (19:58 तक), 25 (22:48 बाद), 26, 28, 29, 30, 31, अग. 4 (15:07 बाद), 11, 12, 13, 14, 18, 19 (28:22 तक), 22, 24, 25, 31 (23:12 बाद), सितं. 1, *8, 9, 10, 11, 14, 18 (15:26 बाद)** अक्तू. 7, 8, 11, 12, 13 (16:06 तक) [कार्तिक मासे अक्तू. 18, 19, 20, 21, 25 (14:37 बाद), नवं. 1, 7, 8, 11 (26:51 बाद), 12] मार्गशीर्ष नवं. 21 (21:10 बाद), 22, 28, 29, 30, दिसं. 1, 6, 9, (10:10 बाद), 11, 13, सन् 2022 ई. में जन. 22, 23, 24, 25, फर. 5, 6, 7, 18, 19, 20 तारीखें शुभ होंगी।
वृश्चिक राशि–अप्रै. 24, 25, 26-27 (चं. दा.), 30, मई 2, 4 (20:44 तक), 7, 8, 21, 22, 23, 24 (चं. दा.), 25, 26, 30, 31, जून 4, 5, 6, जुला. 17-18 (चं. दा.), 21, 22, 23, 24, 25 (22:48 तक), 28, 29, 30, 31, अग. 2, 3, 4 (15:07 तक), 11, 12, 13-14 (चं. दा.), 18, 19, 20, 21, 24, 25, 30, 31, (23:12 तक), सितं. *8, 9-10-11 (चं. दा.), 14, 18 (15:26 तक)**, अक्तू. 7-8 (चं. दा.), 11, 12, 13, 14, मार्गशीर्ष में नवं. 20, 21 (21:10 तक), 28, 29, 30, दिसं. 1 (चं. दा.), 6, 7, 8, 9 (10:10 तक), 11, 13, सन् 2022 ई. में जन. 22, 23, 24-25 (चं. दा.), फर. 5, 6, 7, 9, 10 तारीखें शुभ होंगी।	वृश्चिक राशि के वर को वैशाख, भाद्रपद, आश्विन एवं माघ मास शुभ, ज्येष्ठ, श्रावण और मार्गशीर्ष मासों में सूर्य पूज्य तथा आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को गुरु संवतारम्भ से 13 सितं., पुनः 20 नवं. से संवतान्त तक विशेष रूपेण पूज्य, शेष अवधि में भी साधारणतया पूज्य रहेगा।	**वृश्चिक राशि**–अप्रै. 24, 25, 26, 27, 30, मई 2, 4 (20:44 तक), 7, 8, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 30, 31, जून 4, 5, 6, 18, 19, 20, 21, 24, 26, 27, 28 (13:00 तक), 30, जुला. 1, 2, 3, 4, 6, 17, 18, 21, 22, 23, 24, 25 (22:48 तक), 28, 29, 30, 31, अग. 2, 3, 4 (15:07 तक), 11, 12, 13, 14, 18, 19, 20, 21, 24, 25, 30, 31 (23:12 तक), *सितं. 8, 9, 10, 11, 14, 18 (15:26 तक)**, अक्तू. 7, 8, 11, 12, 13, 14 [कार्तिक मासे अक्तू. 18, 19, 20, 21, 23, 24, 25 (14:37 तक), नवं. 1, 7, 8, 11 (26:51 तक)] मार्गशीर्ष में नवं. 20, 21 (21:10 तक), 28, 29, 30, दिसं. 1, 6, 7, 8, 9 (10:10 तक), 11, 13, सन् 2022 ई. में जन. 22, 23, 24, 25, फर. 5, 6, 7, 9, 10, 18, 19, 20 तारीखें शुभ होंगी।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
धनु राशि–अप्रै. 24, 25, 26, 27, 30, **मई** 2, 4, 21, 22, 23, 24, 25-26 (चं. दा.), 30, 31, **जून** 5 (23:28 बाद), 6, 18, 19, 20, 21, 24, 26, 27-28, **जुला.** 3, 4, 6, **अग.** 18, 19, 20, 21, 22, 30, 31, **सितं.** 1, ***8, 9, 10, 11, 14, 18****, **अक्तू.** 7, 8, 11, 12, 13, 14 [**कार्तिक मासे अक्तू.** 20 (14:02 बाद), 21, 23, 24, 25, **नवं.** 1, 7, 8, 11, 12], **सन् 2022 ई. में जन.** 22, 23, 24, 25, **फर.** 6 (17:10 बाद), 7, 9, 10, 18, 19, 20 तारीखें शुभ होंगी।	धनु राशि के **वर** को ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक व फाल्गुन मास शुभ, वैशाख, आषाढ़, भाद्रपद मासों में **सूर्य पूज्य** तथा श्रावण, मार्गशीर्ष मास **त्याज्य** होंगे। धनु राशि की **कन्या** को गुरु संवतारम्भ से 13 सितं., पुन: 20 नवं. से संवतान्त साधारणतया पूज्य, शेष अवधि में शुभ रहेगा।	**धनु राशि–अप्रै.** 24, 25, 26, 27, 30, **मई** 2, 4, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 30, 31, **जून** 5 (23:28 बाद), 6, 18, 19, 20, 21, 24, 26, 27, 28, **जुला.** 3, 4, 6, 17, 18, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 30, 31, **अग.** 2, 3, 4, 11, 12, 13, 14, 18, 19, 20, 21, 22, 30, 31, **सितं.** 1, ***8, 9, 10, 11, 14, 18****, **अक्तू.** 7, 8, 11, 12, 13, 14 [**कार्तिक मासे अक्तू.** 20 (14:02 बाद), 21, 23, 24, 25, **नवं.** 1, 7, 8, 11, 12] **मार्गशीर्ष में नवं.** 20, 21, 22, 28, 29, 30, **दिसं.** 1, 6, 7, 8, 9, 13 (26:05 बाद), **सन् 2022 ई. में जन.** 22, 23, 24, 25, **फर.** 6 (17:10 बाद), 7, 9, 10, 18, 19, 20 तारीखें शुभ होंगी।
मकर राशि–मई 21 (21:07 बाद), 22, 23, 24, 25, 26, 30, 31, **जून** 4, 5 (23:28 तक), 18, 19, 20, 21, 24-26 (चं. दा.), 27, 28, 30, **जुला.** 1, 2, 6, 17, 18, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 28, 29, **अग.** 2, 3, 4, 11 (15:23 बाद), 12, 13, 14, ***सितं. 18****, **अक्तू.** 7, 8, 11, 12, 13, 14 [**कार्तिक मासे अक्तू.** 18, 19, 20 (14:02 तक), 23, 24, 25, **नवं.** 1 (18:39 बाद), 7, 8, 11, 12] **मार्गशीर्ष मास में नवं.** 20, 21, 22, 28 (28:04 बाद), 29, 30, **दिसं.** 1, 6, 7, 8, 9, 11, 13 (26:05 तक), **सन् 2022 ई. में जन.** 22 (16:48 बाद), 23, 24, 25, **फर.** 5, 6 (17:10 तक), 9, 10, 18 (22:46 बाद), 19, 20 तारीखें शुभ होंगी।	मकर राशि के **वर** को आषाढ़, कार्तिक, मार्गशीर्ष मास-**शुभ**। ज्येष्ठ, श्रावण व आश्विन मासों में **सूर्य पूज्य** तथा वैशाख, भाद्रपद व पौष मास **त्याज्य** होंगे। इस राशि की **कन्या** को गुरु 14 सितं. से 19 नवं. तक साधारणतया पूज्य, शेष अवधि में शुभ रहेगा।	**मकर राशि–अप्रै.** 24, 25, 26, 27, 30, **मई** 2, 4, 7, 8, 21 (21:07 बाद), 22, 23, 24, 25, 26, 30, 31, **जून** 4, 5 (23:28 तक), 18, 19, 20, 21, 24, 26, 27, 28, 30, **जुला.** 1, 2, 6, 17, 18, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 28, 29, **अग.** 2, 3, 4, 11 (15:23 बाद), 12, 13, 14, 18, 19, 20, 21, 22, 24, 25, 30, 31, **सितं.** 1, ***8, 9, 10, 11, 14, 18****, **अक्तू.** 7, 8, 11, 12, 13, 14 [**कार्तिक मासे अक्तू.** 18, 19, 20 (14:02 तक), 23, 24, 25, **नवं.** 1 (18:39 बाद), 7, 8, 11, 12] **मार्गशीर्ष मास में नवं.** 20, 21, 22, 28 (28:04 बाद), 29, 30, **दिसं.** 1, 6, 7, 8, 9, 11, 13 (26:05 तक), **सन् 2022 ई. में जन.** 22 (16:48 बाद), 23, 24, 25, **फर.** 5, 6 (17:10 तक), 9, 10, 18 (22:46 बाद), 19, 20 तारीखें ग्राह्य होंगी।
कुम्भ राशि–अप्रै. 26, 27, 30, **मई** 2-4 (चं. दा.), 7, 8, **जून** 20, 21, 24, 26, 27-28 (चं. दा.), 30, **जुला.** 1, 2, 3, 4, 17, 18, 21, 22, 23-24-25 (चं. दा.), 26, 28, 29, 30, 31 **अग.** 4 (15:07 बाद), 11 (15:23 तक), 13 (19:29 बाद), 14, 18, 19, 20-21 (चं. दा.), 22, 24, 25, 31 (23:12 बाद), **सितं.** 1, ***9 (25:45 बाद), 10, 11, 14****, [**कार्तिक मासे अक्तू.** 18, 19, 20, 21, 25 (14:37 बाद), **नवं.** 1 (18:39 तक), 7, 8, 11, 12] **मार्गशीर्ष में नवं.** 21 (21:10 बाद), 22, 28 (28:04 तक), **दिसं.** 1, 6, 7, 8, 9, 11, 13, **सन् 2022 ई. में फर.** 18 (22:46 तक) तारीखें शुभ होंगी।	कुम्भ राशि के **वर** को वैशाख, मार्गशीर्ष, श्रावण मास **शुभ**, आषाढ़, भाद्रपद व कार्तिक मासों में **सूर्य पूज्य** ; ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास **त्याज्य** रहेंगे। इस राशि की **कन्या** को गुरु 14 सितं. से 19 नवं. तक विशेष रुपेण पूज्य, शेष अवधि में भी साधारण रुपेण पूज्य रहेगा।	**कुम्भ राशि–अप्रै.** 26, 27, 30, **मई** 2, 4, 7, 8, 21 (21:07 तक), 24, 25, 26, 30, 31, **जून** 4, 5, 6, 20, 21, 24, 26, 27, 28, 30, **जुला.** 1, 2, 3, 4, 17, 18, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 28, 29, 30, 31, **अग.** 4 (15:07 बाद), 11 (15:23 तक), 13 (19:29 बाद), 14, 18, 19, 20, 21, 22, 24, 25, 31 (23:12 बाद), **सितं.** 1, ***9 (25:45 बाद), 10, 11, 14, 18****, **अक्तू.** 7, 8, 11 12, 13, 14 [**कार्तिक मासे अक्तू.** 18, 19, 20, 21 25 (14:37 बाद), **नवं.** 1 (18:39 तक), 7, 8, 11, 12] **मार्गशीर्ष में नवं.** 21 (21:10 बाद), 22, 28 (28:04 तक), **दिसं.** 1, 6, 7, 8, 9, 11, 13, **सन् 2022 ई. में जन.** 22 (16:48 तक), 24 (23:08 बाद), 25, **फर.** 5, 6, 7, 18 (22:46 तक) तारीखें शुभ होंगी।
मीन राशि–अप्रै. 24, 25, 30, **मई** 2, 4 (चं. दा.), 7, 8, 21, 22, 23, 25, 26, 30, 31, **जून** 4, 5, 6, **जुला.** 17 (14:07 तक), 21, 22, 23, 24, 25-26 (चं. दा.), 28, 29, 30, 31, **अग.** 2, 3, 4 (15:07 तक), 11, 12, 13 (19:29 तक), 18, 19, 20, 21, 22, 24, 25, 30, 31 (23:12 तक), **सितं.** ***8, 9 (25:45 तक), 14, 18 (चं.दा.)****, **अक्तू.** 11, 12, 13, 14, **मार्गशीर्ष में नवं.** 20, 21 (21:10 तक), 28, 29, 30, **दिसं.** 6, 7, 8, 9, 11, 13, **सन् 2022 ई. में जन.** 22, 23, 24 (23:08 तक), **फर.** 5, 6, 7, 9, 10 तारीखें शुभ होंगी।	मीन राशि के **वर** को ज्येष्ठ, भाद्रपद व माघ मास **शुभ**, वैशाख, श्रावण, आश्विन व मार्गशीर्ष मासों में **सूर्य पूज्य** तथा आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास **त्याज्य** होंगे। मीन राशि की **कन्या** को गुरु संवतारम्भ से 13 सितं., पुन: 20 नवं. से संवतान्त तक विशेष रुपेण पूज्य, शेष अवधि में शुभ रहेगा।	**मीन राशि–अप्रै.** 24, 25, 30, **मई** 2, 4, 7, 8, 21, 22, 23, 25, 26, 30, 31, **जून** 4, 5, 6, 18, 19, 24, 26, 27, 28, 30, **जुला.** 1, 2, 3, 4, 6, 17 (14:07 तक), 21, 22, 23, 24, 25, 26, 28, 29, 30, 31, **अग.** 2, 3, 4 (15:07 तक), 11, 12, 13 (19:29 तक), 18, 19, 20, 21, 22, 24, 25, 30, 31 (23:12 तक) ***सितं. 8, 9 (25:45 तक), 14, 18****, **अक्तू.** 11, 12, 13, 14 [**कार्तिक मासे अक्तू.** 18, 19, 20, 21, 23, 24, 25 (14:37 तक), **नवं.** 1, 7, 8, 11, 12] **मार्गशीर्ष में नवं.** 20, 21 (21:10 तक), 28, 29, 30, **दिसं.** 6, 7, 8, 9, 11, 13 **सन् 2022 ई. में जन.** 22, 23, 24 (23:08 तक), **फर.** 5, 6, 7, 9, 10, 18, 19, 20 तारीखें शुभ होंगी।

मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, विपणि, उपनयन, सर्वदेव प्रतिष्ठादि मुहूर्त्त–वि. संवत् २०७८

प्राचीन भारतीय ज्योतिषाचार्यों द्वारा शुद्धता की दृष्टि से विवाह, मुण्डनादि मुहूर्त्तों के निर्धारण में मुख्यतः इक्कीस दोषों का उल्लेख किया गया है। इनमें पंचाँगशुद्धि, क्रूर ग्रह का नक्षत्र–वेध, पापग्रह की युति, क्रान्तिसाम्य दोष, मृत्युबाण, षष्ठाष्टम चन्द्र एवं शुक्र विचार, व्यतीपात– वैधृति आदि दुष्ट योगों की युति, गुरु शुक्रास्त का विचार, दग्धा तिथि विचार आदि दोषों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। राजमार्तण्ड–वशिष्ठ आदि शास्त्रकारों एवं आचार्यों ने भी विवाह के अतिरिक्त चूड़ाकरण, गृहारम्भ, व्रत, प्रतिष्ठा, पुंसवन, कर्णवेध आदि मुहूर्त्तों में भी क्रूर ग्रहों के वेध, युति, व्यतीपात, वैधृति आदि अशुभ योगों एवं दोषों का विचार करने का निर्देश दिया है—विवाहेऽर्ध प्रतिष्ठायां व्रते पुंसवनं तथा कर्णवेधादि चूडायां विद्धऋक्षं विवर्जयेत्॥ ध्यान रहे, शास्त्र नियमानुसार बुधवार के दिन अभिजित मुहूर्त भी ग्राह्य नहीं होता। जिन मुहूर्तों के आगे केवल शुद्धकाल दिया गया है, वहाँ दैवज्ञों को शुद्धकाल की अवधि में सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र एवं लग्नेश की शुभ स्थानों में स्थिति को ध्यान रखते हुए शुभ लग्न का निर्णय स्वयं कर सकते हैं। 'पंचांगदिवाकर' में दिए गए सभी मुहूर्तों में सर्वत्र शास्त्र विहित नियमों का यथासम्भव पालन किया जाता है। कुछ अन्य नए प्रचलित पंचांगों के मुहूर्तों में क्रूर ग्रहों का वेध, क्रूर ग्रह युति, क्षीण चन्द्र आदि अपरिहार्य दोष पाए जाते हैं, जो मुहूर्त–शास्त्र की दृष्टि से सर्वथा चिन्तनीय है।

—निवेदकः पं. विवेक शर्मा

मुण्डन मुहूर्त्त–२०७८ वि.

विशेष विवरण हेतु इसी पंचांग में आगे पृष्ठ नं. 191 पर 'आवश्यक–मुहूर्त्त निर्णय' शीर्षक के अन्तर्गत देखें।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शुक्ल १३, रवि	25 अप्रै.	हस्त	ल. ३, अभि., ५
चैत्र शु.१४/१५, चंद्र	26 अप्रै.	चित्रा	मु. 12:45 बाद, ल. ५ (भद्रा परिहार)
चैत्र पूर्णिमा, मंग	27 अप्रै.	स्वा.	ल. ३ (श. दा.), अभि., ५ (क्षत्रियाणां)
वैशा. कृ. ८, मंग	4 मई	धनि.	मु. 8:26 बाद, ल. अभि., ५ (क्षत्रियाणां)
वैशा.कृ.९/१०, बुध	5 मई	शत.	मु. 13:22 बाद
वैशा.कृ.१२, शनि	8 मई	रेव.	मु. 14:47 से 17:21 तक (वैश्यानां)
वैशा. शु. ३, शनि	15 मई	मृग.	मु. 8:00 तक (वैश्यानां)
वैशा.शु.४/५, रवि	16 मई	पुन.	मु. 11:14 बाद (विप्राणां)
वैशा.शु.१०, शनि	22 मई	हस्त	14:06 बाद (वैश्यानां)
वैशा.शु.११, रवि	23 मई	ह./चि.	अभि., ५, ६, मु. 14:56 तक (विप्राणां)
वैशा.शु. १३, चंद्र	24 मई	स्वा.	मु. 11:12 बाद, अभि.
ज्ये. कृ. ८, बुध	2 जून	शत.	ल. ५, ६ (गुरुयुति परिहार)
ज्ये. कृ.११, शनि	5 जून	रेव.	ल. ५, ६ (वैश्यानां)
ज्ये. कृ.११, रवि	6 जून	अश्वि	ल. अभि. ५,६ (विप्राणां)
ज्ये. शु. ३, रवि	13 जून	पुन.	ल. ५, ६ (विप्राणां)
ज्ये. शु. १०, रवि	20 जून	चित्रा	ल. ५, अभि., ६ (विप्राणां
•ज्ये.शु.११, चंद्र	21 जून	स्वा.	ल. ५ (11:16 तक), 11:16 से गुरुपादवेध-विचार्य
•आषा. कृ.४, चंद्र	28 जून	धनि.	मु. 14:17 बाद
•आषा. कृ.५ मंग.	29 जून	शत.	ल. ५, अभि., ६ गुरुयुति परिहार (क्षत्रियाणां केवलम्)
•आषा.कृ.८, शुक्र	2 जुला.	रेव.	ल. ५ (अष्टमस्थ चं. परिहार, चं. दा.) 10:53 से 13:17 तक अतिगंड
•आषा.कृ.१०, रवि	4 जुला.	अश्वि	मु. प्रातः 9:05 तक (विप्राणां)
•आषा.शु. १, रवि	11 जुला	पुष्य	ल. ५, ६, अभि. (विप्राणां)
आश्विन–नवरात्रों में–आवश्यके			
आश्वि.शु. २, शुक्र	8 अक्तू.	स्वा.	ल. ६, ८ (चं. दा.), अभि., ९
आश्वि.शु. ६, चंद्र	11 अक्तू.	ज्ये.	ल. ६, ८, अभि., मु. 12:56 तक
(सन् 2022 ई०)			
माघ कृ. ५, रवि	23 जन.	हस्त	मु. 11:09 बाद, ल. १२, १, अभि. (विप्राणां)
माघ कृ. ६, चंद्र	24 जन.	हस्त	मु. 11:15 तक, ल. १२
माघ कृ. ६, चंद्र	24 जन.	चित्रा	मु. 11:15 बाद, अभि., १
माघ कृ. ७, मंग	25 जन.	चित्रा	ल. ११ (मु. 9:12 तक) (क्षत्रियाणां) 9:12 से शूलदोष
माघ कृ. ११, शुक्र	28 जन.	ज्ये.	ल. ११, १२, अभि.
माघ शु. ३, गुरु	3 फर.	शत.	ल. ११, १२ (चं. दा.), अभि. (गुरुयुति परिहार)
माघ शु. ६, रवि	6 फर.	रेव.	ल. ११, १२ (चं. दा.), अभि. (विप्राणां)
माघ शु. ७, चंद्र	7 फर.	अश्वि.	ल. ११, १२, अभिजित
माघ शु. १२, रवि	13 फर.	पुन.	मु. 9:27 बाद, ल. १२, अभि. (विप्राणां)
माघ शु. १३, चंद्र	14 फर.	पु./पु.	ल. ११, १२, अभिजित
फाल्गु.कृ. ५, चंद्र	21 फर.	चित्रा	ल. ११, मु. प्रातः 8:50 तक

विशेष नोट–उपरोक्त बिन्दु (•) चिन्हित मुहूर्त्त भारतीय प्राचीन परम्परानुसार दिए गए हैं। पंजाब/हिमाचल के अतिरिक्त काशी आदि के पंचांगकार निरयन कर्क संक्रान्ति (16 जुला.) से ही सूर्य दक्षिणायन मानते हैं, न कि सायन कर्क संक्रान्ति से।

नींव/गृहारम्भ मुहूर्त्त–सं. २०७८
(खनन, भूमि–पूजन एवं शिलान्यास मुहूर्त्त)

विशेष–ता. 8 से 20 सितं. के मध्य मुहूर्त्त अत्यावश्यक परिस्थिति में ही ग्रहण करें। (देखें पृष्ठ 108)

नींव मुहूर्त्त (शिलान्यास) सम्बन्धी विशेष विवरण हेतु इसी पंचांग में आगे पृष्ठ नं. 196 पर 'आवश्यक मुहूर्त्त निर्णय' शीर्षक के अन्तर्गत देखें।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु.१४/१५, चंद्र	26 अप्रै.	चित्रा	मु. 12:45 बाद, भद्रा परिहार
*वैशा.कृ.९/१०, बुध	5 मई	शत.	मु. 13:22 बाद
*वैशा.कृ.१२, शनि	8 मई	उ.भा.	ल. २, ३, अभि., ५ (14:47 तक)
*वैशा. शु.३, शनि	15 मई	मृग.	मु. 8:00 तक (सू.दा.) आवश्यके

—नींव/गृहारम्भ मुहूर्त—

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा.शु.९/१०,शनि	21 मई	उ.फा.	मु. 15:22 बाद
वैशा.शु.१३, चंद्र	24 मई	स्वा.	मु. 11:12 बाद, ल. अभि.,५,६
वैशा. पूर्णिमा,बुध	26 मई	अनु.	ल. २, ३, ६
*ज्ये. कृ. ८, बुध	2 जून	शत.	ल. २, ३, ५ (गुरुयुति परि.)
*ज्ये. कृ.१०,शुक्र	4 जून	उ.भा.	मु. प्रात: 6:34 बाद, ल. ३, ५, अभि. (मु. 15:16 तक)
*ज्ये.कृ.११,शनि	5 जून	रेव.	ल. ३, अभि., ५
*आषा.कृ.८,शुक्र	2 जुला	रेव.	मु. 10:53 तक, 10:53 से 13:17 तक अतिगण्ड दोष
आषा. शु. ८,शनि	17 जुला	चित्रा	ल. ५, ६ (चं. दा.), अभि.
श्राव. कृ. ३, चंद्र	26 जुला	ध./श.	मु. 15:25 तक, ल. ५, ६, अभि. (गुरुयुति परिहार)
श्राव. कृ. ६, गुरु	29 जुला	रेव.	मु. 12:02 बाद
*श्राव.कृ.८,शनि	31 जुला	अश्वि	प्रात: 6:53 से 9:59 तक शुक्रपादवेध,
*श्राव. कृ.११,बुध	4 अग.	मृग.	ल. ५, ६
*श्राव.शु. ३, बुध	11 अग.	उ.फा.	मु. 9:32 बाद, ल. ६
*श्राव.शु. ५,शुक्र	13 अग.	चित्रा	मु. 8:00 बाद, ल. ५,६, अभि.
*श्राव.शु.६, शनि	14 अग.	चित्रा	मु. प्रात: 6:56 तक
भाद्र.कृ. १, चंद्र	23 अग.	शत.	ल. ५, ६, अभि.
*भाद्र.कृ.१०,बुध	1 सितं.	मृग.	मु. 12:34 तक
*भाद्र.कृ.११,शुक्र	3 सितं.	पुन.	मु. 10:09 तक
*भाद्र.कृ.१२,शनि	4 सितं.	पुष्य	मु. 8:25 तक
*भाद्र.शु.३, गुरु	9 सितं.	हस्त	ल. ६, अभि. ९ (आवश्यके)
आश्वि.शु.१३, चंद्र	18 अक्तू	उ.भा.	मु 10:49 बाद, ल.८,९, अभि.
आश्वि. पूर्णिमा, बुध	20 अक्तू	रेव.	मु. 7:46 बाद, ल. ८, ९ (चं.दा.)
*कार्ति.कृ.६,बुध	27 अक्तू	पुन.	प्रात: 7:08 बाद, ल. ८,९,११
*कार्ति.कृ.७,गुरु	28 अक्तू	पु./पु.	ल. ८, ९, अभि., ११ (9:41 बाद शुक्रपादवेध विचार्य)
*कार्ति.कृ.८,शुक्र	29 अक्तू	पुष्य	मु. 11:38 तक
*कार्ति.कृ. ११,चंद्र	1 नवं.	उ.फा.	मु. 12:53 बाद
कार्ति. शु. ८, गुरु	11 नवं.	धनि.	मु. 14:59 बाद
*मार्ग.कृ.१०,चंद्र	29 नवं.	उ.फा.	ल. ९, अभि., ११
*मार्ग. कृ.१२,बुध	1 दिसं.	चित्रा	ल. ९, ११
मार्ग.शु.१०, चंद्र	13 दिसं.	रेव.	ल. ९, अभि., ११
(सन् 2022 ई०)			
*माघ कृ. ६, चंद्र	24 जन.	ह/चि	ल. ११, 10:19 से 11:15 तक भूशयन रहेगा। अभिजित् च।
*माघ शु. ७, चंद्र	7 फर.	अश्वि.	ल. ११, १२, अभि.
माघ शु. १३, चंद्र	14 फर.	पुष्य	मु. 11:53 बाद
फाल्गु.कृ.३, शनि	19 फर.	उ.फा.	ल. ११, १२, अभि., ३ (भद्रा परिहार)

नोट–(*) तारांकित मुहूर्त्तों में केवल वृषवास्तुचक्र शुद्धि नहीं है। शेष सभी मुहूर्त्त दोषों से मुक्त (शुद्ध) है।

नूतन (नवीन) गृह प्रवेश मुहूर्त्त (संवत् २०७८)

नूतन (नवीन) गृह-प्रवेश में पण्डित जी द्वारा निकाले गए मुहूर्त्त पर नए घर में वास्तु-पूजा शान्ति, नवग्रह पूजा शान्ति, स्वस्तिवाचन, एवं पंचदेव, गोपूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों एवं आश्रितजनों को भोजन-दानादि एवं कन्या-पूजन, जलपूर्ण कलश (नारियल सहित) तथा ब्राह्मणों को आगे करके शंख ध्वनि एवं सुहागिनों द्वारा मंगल-गान सहित नव गृह में प्रवेश करना चाहिए।

●बिन्दु चिन्हित मुहूर्त्त यहाँ मतान्तरवश दिए जा रहे हैं। इन्हें परम्परा एवं आवश्यक परिस्थितिवश ग्रहण करें। विशेष विवरण हेतु इसी पंचांग के पृष्ठ नं. 197 का अवलोकन अवश्य करें।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु.१२, शनि	24 अप्रै.	उ.फा.	मु. 6:22 से 11:42 तक (मृत्युबाण परिहार)
*चैत्र शु.१४/१५ चंद्र	26 अप्रै.	चित्रा	मु. 12:45 बाद, भद्रा परिहार
*वैशा. कृ.७, चंद्र	3 मई	उ.षा.	मु. 8:22 तक
वैशा.कृ.९/१०,बुध	5 मई	शत.	मु. 13:22 बाद
वैशा. कृ.१२,शनि	8 मई	उ/रे	ल. २, ३, अभि. ५ (चं. दा.)
*वैशा.शु.३, शनि	15 मई	मृग.	मु. प्रात: 8:00 तक (सू.दा.)
वैशा.शु. १०,शनि	22 मई	उ.फा.	ल. २, ३, ५, अभि.
वैशा. शु.१३, चंद्र	24 मई	स्वा.	मु. 11:12 बाद, ल.५, अभि.,६
*वैशा.पूर्णिमा,बुध	26 मई	अनु.	ल. २, ३, ६
*ज्ये. कृ. ८, बुध	2 जून	शत.	ल. २, ३, ५ (गुरुयुति परिहार)
*ज्ये. कृ.१०,शुक्र	4 जून	उ.भा.	ल. ३, ५, अभि.
ज्ये. कृ. ११,शनि	5 जून	रेव.	ल. ३, ५, अभि.
ज्ये. शु. ११ चंद्र	21 जून	स्वा.	ल. ५, अभि., ६
●आषा.कृ.२,शनि	26 जून	*उ.षा.	ल. ५, अभि., ६
●आषा.कृ.७, गुरु	1 जुला	*उ.भा	ल. ५, अभि., ६
●आषा.कृ.८,शुक्र	2 जुला	रेव.	ल. ५ (10:53 से 13:17 -तक अतिगण्ड दोष)
आश्वि.शु.१३, चंद्र	18 अक्तू	उ.भा.	मु. 10:49 बाद, ल. ९ (चं. दा.), अभि.
*आश्वि.पूर्णिमा,बुध	20 अक्तू	रेव.	मु. 7:46 बाद, ल.८,९ (चं.दा.)
*कार्ति.कृ.१,गुरु	21 अक्तू	अश्वि	ल. ८, ९, अभि., ११
*कार्ति.कृ.५, चंद्र	25 अक्तू	मृग.	ल. ८, ९, अभि., ११
*कार्ति.कृ.६, बुध	27 अक्तू	पुन.	मु. 7:08 बाद, ल.८,९,११
*कार्ति.कृ.७, गुरु	28 अक्तू	पु/पु.	ल. ८, ९, अभि., ११ (9:41 बाद शुक्रपादवेध विचार्य)
*कार्ति.कृ.८ शुक्र	29 अक्तू	पुष्य	मु. 11:38 तक, ल. ९ (शुक्रपादवेधऽभाव:)
कार्ति. कृ.११,चंद्र	1 नवं.	उ.फा.	मु. 12:53 बाद
कार्ति. शु.१०,शनि	13 नवं.	शत.	ल. ९, अभि., ११ (बुधपादवेधऽभाव)
*मार्ग.कृ. १,शनि	20 नवं.	रोहि.	ल. ९, अभि. ११ (चं. दा.)
*मार्ग.कृ. ३, चंद्र	22 नवं.	मृग.	ल. ९ (मु. 11:44 तक)
*मार्ग.कृ. ५, बुध	24 नवं.	पुन.	ल. ९, ११
*मार्ग. कृ. ६,गुरु	25 नवं.	पुष्य	ल. ९, अभि. ११
मार्ग. कृ. १०,चंद्र	29 नवं.	उ.फा.	ल. ९, अभि., ११
मार्ग. कृ. १२,बुध	1 दिसं.	चित्रा	ल. ९, ११, १२ (चं. दा.)
मार्ग. शु. ६, गुरु	9 दिसं.	धनि.	ल. ९, अभि., ११
मार्ग. शु. ७, शुक्र	10 दिसं.	शत.	8:21 से 11:57 वज्रदोष त्यक्त्वा
मार्ग.शु. १०, चंद्र	13 दिसं.	रेव.	ल. ९, अभि., ११

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
(सन् 2022 ई०)			
*माघ कृ.४/५,शनि	22 जन.	उ.फा.	मु. 10:38 से 14:06 तक
*माघ कृ. ६, चंद्र	24 जन.	हस्त	मु. 10:19 तक
*माघ शु. ३, गुरु	3 फर.	शत.	ल. ११, १२, अभि. (गुरुयुति परिहार)
*माघ शु. ५,शनि	5 फर.	उ.भा.	ल. ११, १२, अभि.
माघ शु. ७, चंद्र	7 फर.	अश्वि.	ल. ११, १२, अभि.
माघ शु.९/१०, गुरु	10 फर.	रोहि.	मु. 11:09 बाद, ल. अभि., ३
माघ शु. १३, चंद्र	14 फर.	पु/पु	ल. ११, १२, अभि.
*फाल्गु.कृ.३, शनि	19 फर.	उ.फा.	ल. ११, १२, अभि.

विशेष नोट—(*) तारांकित मुहूर्त्तों में केवल कलश चक्र शुद्धि नहीं है, शेष सभी मुहूर्त्त दोषों से मुक्त (शुद्ध) हैं।

पुरातन गृह में प्रवेश मुहूर्त्त-सं. २०७८ वि.

पहिले दिए गए नूतन (नवीन) गृह प्रवेश मुहूर्त्तों के अतिरिक्त पुरातन गृह प्रवेश में निम्नलिखित मुहूर्त्त भी ग्राह्य होंगे। विशेष विवरण पृष्ठ 198 पर देखें।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
चैत्र शुक्ल १,मंग.	13 अप्रै.	अश्वि	अभिजित्, स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त
चैत्र शुक्ल ७,चंद्र	19 अप्रै.	पुन.	ल. ३, अभिजित् (शु. दा.)
आषा. शु. ८,शनि	17 जुला	चित्रा	ल. ५, ६, अभिजित्
आषा. पूर्णिमा, शनि	24 जुला	उ.षा.	मु. 12:40 तक
श्राव. कृ. ३, चंद्र	26 जुला	ध/श	मु. 15:25 तक, ल. ५, ६, अभि., (गुरुयुति परिहार)
श्राव. कृ.५, बुध	28 जुला	उ.भा	मु. 10:45 बाद
श्राव. कृ. ६, गुरु	29 जुला	उ/रे	ल. ५, ६, अभिजित्
श्राव. कृ. ७,शुक्र	30 जुला	अश्वि	मु. 14:02 बाद (भद्रा परि.)
श्राव. कृ. ८,शनि	31 जुला	अश्वि.	9:59 तक शुक्रपादवेधविचार्य
श्राव. कृ.११,बुध	4 अग.	मृग.	ल. ५, ६
श्राव. शु. ३, बुध	11 अग.	उ.फा.	मु. 9:32 बाद
श्राव.शु.४/५,गुरु	12 अग.	हस्त	मु. 15:25 बाद
श्राव. शु. ५, शुक्र	13 अग.	ह/चि	ल. ५, ६, अभिजित्
श्राव. शु. ६, शनि	14 अग.	चि/स्वा	ल. ५, ६, अभिजित्, ९
श्राव. शु.१३,शुक्र	20 अग.	उ.षा.	ल. ५, ६, अभिजित्, ९

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
गुरु-अस्तकाल में (आवश्यक परिस्थितिवश) (सन् 2022 ई०)			
फाल्गु.कृ. ५, चंद्र	21 फर.	चित्रा	ल. ११, १२, अभि., ३
फाल्गु.कृ. ७, बुध	23 फर.	अनु.	मु. 14:41 बाद
फाल्गु. कृ.८, गुरु	24 फर.	अनु.	मु. 15:04 तक
फाल्गु.कृ.१३,चंद्र	28 फर.	श्रव.	मु. 7:02 बाद (चं. पूज्य)
फाल्गु. शु.२,शुक्र	4 मार्च	उ.भा.	ल. ११, १२, अभि., ३
फाल्गु. शु.३,शनि	5 मार्च	रेव.	ल. ११, १२, अभि., ३
फाल्गु. शु.७, बुध	9 मार्च	रोहि.	मु. 8:31 बाद

व्यवसाय (विपणि) शुरु करने के मुहूर्त्त- वि. संवत् २०७८ (2021-22 ई.)

व्यवसाय में दुकान, कार्यालय, फैक्ट्री (कारखाना) आदि शुरु करने के मुहूर्त्त के समय किसी कर्मकाण्डी ब्राह्मण द्वारा सर्वदेव, नवग्रह पूजन के पश्चात् दृढ़ कलश-स्थापन एवं कन्या-पूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों, आश्रित एवं सहयोगीजनों को यथाशक्ति भोजन आदि करवाना चाहिए। विशाल-पैमाने पर व्यापार करने के लिए केवल बु.गु. एवं शुक्रवारों को ही ग्रहण करना चाहिए।

नोट—मुहूर्त्त वाले दिन अपनी राशि से चन्द्र 4, 8, 12वें हो, तो वह दिन त्याग दें। वार-स्वामी भी उदित होना चाहिए।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु.१२, शनि	24 अप्रै.	उ.फा.	मु. 6:22 बाद, ल. ३, मु. 11:42 तक
चैत्र शु. १३, रवि	25 अप्रै.	हस्त	मु. 16:13 तक, ल. ३, अभि.,५
चैत्र शु. १४/१५, चंद्र	26 अप्रै.	चित्रा	मु. 12:45 बाद, भद्रा परिहार
वैशा. कृ. ६, रवि	2 मई	उ.षा.	मु. 8:59 बाद, ल. ३, अभि.,५
वैशा. कृ. ७, चंद्र	3 मई	उ.षा.	मु. 8:22 तक केवलम्
वैशा. कृ.१२,शनि	8 मई	उ.भा.	ल. २, ३, अभि., ५ (14:47 तक)
वैशा. शु. ३, शनि	15 मई	मृग.	मु. प्रात: 8:00 तक (सू.दा.)
वैशा.शु.९/१०,शुक्र	21 मई	उ.फा.	मु. 15:22 बाद
वैशा.शु.१०, शनि	22 मई	उ/ह	ल. २, ३, अभि., ५
वैशा. शु.११, रवि	23 मई	ह/चि	ल.अभि.,५,६,मु. 14:56 तक
वैशा. पूर्णिमा,बुध	26 मई	अनु.	ल. ३, ६
ज्ये. कृ. ५, रवि	30 मई	उ.षा.	ल. ३, ५, अभि., ६
ज्ये. कृ.१०, शुक्र	4 जून	उ.भा.	ल. ३, ५, अभिजित्
ज्ये. कृ.११, शनि	5 जून	रेव.	ल. ३, ५, अभिजित्
ज्ये. कृ.११, रवि	6 जून	अश्वि.	ल. ५, ६, अभिजित्
ज्ये. शु.१०, रवि	20 जून	चित्रा	ल. ५, अभि., ६
आषा.कृ. २, शनि	26 जून	उ.षा.	ल. ५, अभि., ६
आषा. कृ. ७, गुरु	1 जुला	उ.भा.	ल. ५, अभि., ६
आषा. कृ. ८,शुक्र	2 जुला	रेव.	ल.५ (10:53 से 13:17 तक अतिगण्ड दोष)
आषा. कृ.१०,रवि	4 जुला.	अश्वि.	मु. प्रात: 9:05 तक
आषा. शु. १, रवि	11 जुला	पुष्य	ल. ५, ६, अभिजित्
आषा. शु. ८,शनि	17 जुला	चित्रा	ल. ५, ६, अभिजित्
आषा. पूर्णिमा,शनि	24 जुला	उ.षा.	मु. 12:40 तक, ल.५,६,अभि.
श्राव. कृ. ५, बुध	28 जुला	उ.भा.	मु. 10:45 बाद, ल. ६, अभि.
श्राव. कृ. ६, गुरु	29 जुला	उ/रे	ल. ५, ६, अभिजित्
श्राव. कृ. ७,शुक्र	30 जुला	अश्वि	मु. 14:02 बाद
श्राव. कृ. ८,शनि	31 जुला	अश्वि	6:53 से 9:59 तक शुक्रपादवेध
श्राव. कृ.११,बुध	4 अग.	मृग.	ल. ५, ६
श्राव. शु. ३, बुध	11 अग.	उ.फा.	मु. 9:32 बाद, ल. ६, (बुधास्त विचार)
श्राव. शु. ५, शुक्र	13 अग.	ह/चि	ल. ५, ६, अभि., ९
श्राव. शु. ६, शनि	14 अग.	चित्रा	मुहू. प्रात: 6:56 तक
श्राव.शु. १३,शुक्र	20 अग.	उ.षा.	ल. ५, ६, अभि., ९
भाद्र. कृ. ८, चंद्र	30 अग.	रोहि.	मु. 6:39 बाद, ल. ६, अभि.
भाद्र. कृ.१०, बुध	1 सितं.	मृग.	मु. 12:34 तक,ल.५,६,अभि.
भाद्र. कृ.१२,शनि	4 सितं.	पुष्य	मु. प्रात: 8:25 तक
भाद्र. शु. २, बुध	8 सितं.	उ.फा.	ल. ६, ९ (अत्यावश्यके)
भाद्र. शु. ३, गुरु	9 सितं.	हस्त	ल. ६, अभि., ९ (अत्यावश्यके)
आश्वि. शु.१३,चंद्र	18 अक्तू	उ.भा.	मु. 10:49 बाद, ल.८, ९, अभि.
आश्वि. पूर्णिमा,बुध	20 अक्तू	रेव.	मु. 7:46 बाद, ल. ८, ९
कार्ति. कृ. १, गुरु	21 अक्तू	अश्वि	ल. ८, ९, अभि.
कार्ति. कृ. ५, चंद्र	25 अक्तू	मृग.	ल. ८, ९, अभिजित्

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
कार्ति. कृ. ७, गुरु	28 अक्तू.	पुष्य	मु. 9:41 बाद, शुक्रपादवेध विचार्य
कार्ति. कृ. ८, शुक्र	29 अक्तू.	पुष्य	मु. 11:38 तक
कार्ति. कृ.११, चंद्र	1 नवं.	उ.फा.	मु. 12:53 बाद
मार्ग. कृ. १, शनि	20 नवं.	रोहि.	ल. ९, अभिजित्
मार्ग. कृ. २, रवि	21 नवं.	रो/मृ	ल. ९, अभिजित्
मार्ग. कृ. ३, चंद्र	22 नवं.	मृग.	मु. 10:44 तक (भद्रा परिहार)
मार्ग. कृ. ६, गुरु	25 नवं.	पुष्य	ल. ९, अभिजित्
मार्ग. कृ.१०, चंद्र	29 नवं.	उ.फा.	ल. ९, अभिजित्, १२
मार्ग. कृ. १२, बुध	1 दिसं.	चित्रा	ल. ९, १२
मार्ग. शु. १०, चंद्र	13 दिसं.	रेव.	ल. ९, अभिजित्, १२
(सन् 2022 ई०)			
माघ कृ.४/५, शनि	22 जन.	उ.फा.	मु. 10:38 से 14:06 तक
माघ कृ. ५, रवि	23 जन.	उ/ह	ल. १२, अभिजित्
माघ कृ. ६, चंद्र	24 जन.	ह/चि	ल. १२, अभिजित्
माघ शु. ६, रवि	6 फर.	रेव.	ल. १२ (चं.दा.), अभिजित्
माघ शु. ७, चंद्र	7 फर.	अश्वि.	ल. १२, अभिजित्
माघ शु.९/१०, गुरु	10 फर.	रोहि.	मु. 11:09 बाद
फाल्गु कृ.३, शनि	19 फर.	उ.फा.	ल. १२, अभिजित्, ३

नोट–8, 9 सितम्बर के विपणि मुहूर्त्त अत्यावश्यक परिस्थिति में ही पूजन, दानादि के बाद ग्रहण करने चाहिए। 'त्रयोदश-दिनात्मक' पक्ष में होने के कारण आचार्यों ने यह समयावधि शुभ कार्यों के लिए निषिद्ध कही है। परन्तु कुछ विद्वान लग्न बल होने की स्थिति में 'पक्ष-दोष' नगण्य मानते हैं। देखें पृष्ठ–(164)

उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्त-सं. २०७८

उपनयन संस्कार सम्बन्धी आवश्यक विवरण आगामी पृष्ठों पर 'आवश्यक-मुहूर्त्तों' में पृष्ठ 192 पर देखें।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. १०, गुरु	22 अप्रै.	आश्ले	मु. प्रातः 8:15 तक (गुरुपादवेधऽभाव)
वैशा. कृ. ९, मंग	27 अप्रै.	स्वा.	मु. 9:02 बाद (सामवेदियों हेतु)

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. शु. ५, रवि	16 मई	पुन.	मु. 10:02 बाद (पुनर्वसु ब्राह्मणों के लिए त्याज्य है।)
वैशा. शु. ८/१०, शुक्र	21 मई	पू.फा.	मु. 11:11 बाद
वैशा. शु. ११, रवि	23 मई	ह/चि	ल. ३, अभि., ५ (भद्रा परिहार)
ज्ये. कृ. ५, रवि	30 मई	उ.षा.	ल. ३, ५ (बु. शु. पादवेधऽभावः)
ज्ये. शु. ३, रवि	13 जून	पुन.	ल. ३, ५
ज्ये. शु.१०, रवि	20 जून	चित्रा	ल. ३, ५, अभिजित्
ज्ये. शु.११, चंद्र	21 जून	स्वा.	ल. ३, ५, अभि. (भद्रा परिहार)
आषा. कृ. १, शुक्र	25 जून	मूल	मु. 6:40 तक (शुक्रपादवेधऽभावः)
आषा. कृ. ५, मंग	29 जून	शत.	ल. ५ (सामवेदियों हेतु) गुरुयुति परिहार
(सन् 2022 ई०)			
माघ कृ. १, मंग.	18 जन.	पुष्य	ल. ११, अभि. (सामवेदियों हेतु)
माघ कृ. २, बुध	19 जन.	आश्ले	ल. ११,
माघ कृ. २, गुरु	20 जन.	आश्ले	मु. 8:24 तक
माघ कृ. ५, रवि	23 जन.	उफा	मु. 9:13 तक
माघ शु. ३, गुरु	3 फर.	शत.	ल. ११, अभि. (गुरुयुति परिहार)
माघ शु. ९, गुरु	10 फर.	रोहि.	मु. 11:09 बाद
फाल्गु. कृ.२, शुक्र	18 फर.	पू.फा.	ल. ११, १, अभि.
फाल्गु. कृ.५, चंद्र	21 फर.	चित्रा	मु. 8:50 तक

मुहूर्त्त मुकलावा (द्विरागमन)-सं. २०७८

विवाह के दिन से 16 दिन के भीतर ही द्विरागमन हो तो निर्धारित मुहूर्त्तों के बिना भी वधू-प्रवेश या द्विरागमन करवाना शुभ ही होता है। इसके अतिरिक्त नवविवाहिता स्त्री को विवाह के बाद द्विरागमन अथवा प्रथम यात्रा में सम्मुख शुक्र एवं दक्षिण शुक्र का भी विचार किया जाता है। (देखें पृष्ठ 194)

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्रशु.१४/१५, चंद्र	26 अप्रै.	चित्रा	मु. 12:45 बाद (भद्रा-परिहार), ल. ५

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. कृ. ७, चंद्र	3 मई	उ.षा.	मु. 8:22 तक
वैशा.कृ.९/१०, बुध	5 मई	शत.	मु. 13:22 बाद
मार्ग. कृ. ३, चंद्र	22 नवं.	मृग.	ल. ९, मु. 10:44 तक
मार्ग. कृ. ५, बुध	24 नवं.	पुन.	ल. ९, १२
मार्ग. कृ. ६, गुरु	25 नवं.	पुष्य	ल. ९, अभिजित, १२
मार्ग. कृ.१०, चंद्र	29 नवं.	उ.फा.	ल. ९, ११, अभि., १२
मार्ग. कृ. १२, बुध	1 दिसं.	चित्रा	ल. ९, ११, १२
मार्ग. कृ. १३, गुरु	2 दिसं.	स्वा.	ल. ९, ११, अभि. (कृष्ण १३) चं. दा.
मार्ग. शु. ६, गुरु	9 दिसं.	धनि.	ल. ९, अभि., ११, १२
मार्ग. शु. ७, शुक्र	10 दिसं.	शत.	8:21 से 11:57 तक वज्रदोष
मार्ग. शु.१०, चंद्र	13 दिसं.	रेव.	ल. ९, अभि., ११
(सन् 2022 ई०)			
माघ शु १३, चंद्र	14 फर.	पु/पु	ल. ११, १२, अभि., ३
फाल्गु.कृ. ५, चंद्र	21 फर.	चित्रा	मु. प्रातः 8:50 तक

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त-सं. २०७८

आगे लिखे उत्तरायण में सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त प्रायः सभी सात्त्विक देवी-देवताओं की मूर्त्ति-स्थापना, जलाशय, बावड़ी, कूँआं आदि के निर्माण हेतु भी ग्रहणीय होंगे। सात्त्विक देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना में उत्तरायण मास तथा **उनके अवतरण (जयन्ती) का दिवस भी विशेष रूप से ग्राह्य होगा।**

जैसे–श्रीविष्णु, राम की मूर्त्ति स्थापना में वैशाख आदि उत्तरायण मासों के अतिरिक्त अक्षय-तृतीया, रामनवमी विजयादशमी, दीपावली आदि विशेष शुभ हैं। श्री विष्णु-प्रतिमा में माघ मास वर्जित होता है। श्रीकृष्ण की प्रतिमा के लिए उत्तरायण मास, भाद्र. कृष्णाष्टमी तथा मार्गशीर्ष मास शुभ माने जाते हैं। श्रीशिव मूर्त्ति एवं शिवलिङ्ग की प्रतिष्ठा में श्रावण एवं फाल्गुन मास की चुतर्दशी (महाशिवरात्रि) विशेषतया प्रशस्त है।

सभी सात्त्विक देवी-देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्ण-काल में (मध्याह्न से पहिले) ही की जाती है। कालभैरव आदि तामस देवों के लिए दक्षिणायन एवं मार्गशीर्ष मास विशेष ग्राह्य हैं। अतः दक्षिणायन में भी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त अलग से दिए गए हैं।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शुक्ल१२, शनि	24 अप्रै.	उ.फा.	मु. 6:22 से 11:42 तक
चैत्र शु. १३, रवि	25 अप्रै.	हस्त	ल. ३, अभिजित, ५
वैशा. कृ. ६, रवि	2 मई	उ.षा.	मु. 8:59 बाद, ल. ३, अभि.
वैशा. कृ. ७, चंद्र	3 मई	उ.षा.	मु. 8:22 तक
वैशा. कृ.१२,शनि	8 मई	उ.भा.	ल. २, ३, अभिजित
वैशा. शु. ३, शनि	15 मई	मृग.	मु. 8:39 तक
वैशा. शु. ४, रवि	16 मई	पुन.	मु. 11:14 बाद
वैशा. शु.१०,शनि	22 मई	उ/ह	ल. २, ३, ५, अभिजित
वैशा. शु.११, रवि	23 मई	ह/चि	ल. ३, अभि., ५, ६
वैशा. शु.१३, चंद्र	24 मई	स्वा.	मु. 11:12 बाद (गुरुपादवेधऽभावः)
वैशा. पूर्णिमा,बुध	26 मई	अनु.	ल. २, ३, ६
ज्ये. कृ. ५, रवि	30 मई	उ.षा.	ल. ५, अभिजित
ज्ये. कृ. ८, बुध	2 जून	शत.	ल. ३, ५
ज्ये. कृ. १०,शुक्र	4 जून	उ.भा.	ल. ३, ५, अभिजित्
ज्ये. कृ. ११,शनि	5 जून	रेव.	ल. ३, ५, अभिजित्
ज्ये. कृ. ११, रवि	6 जून	अश्वि	ल. ५, ६, अभिजित्
ज्ये. शुक्ल ३,रवि	13 जून	पुन.	ल. ५, ६, अभिजित्
ज्ये. शु. १०, रवि	20 जून	चित्रा	ल. ३, ५, अभिजित्
ज्ये. शु. ११, चन्द्र	21 जून	स्वा.	ल. ३, ५, अभि. (भद्रा परि.)
आषा. कृ. २,शनि	26 जून	उ.षा.	ल. ५, अभिजित्
आषा. कृ. ७, गुरु	1 जुला	उ.भा.	ल. ५, अभिजित्
आषा. कृ. ८,शुक्र	2 जुला	रेव.	ल. ५ (10:53 से 13:17 तक अतिगण्ड)
आषा. कृ.१०,रवि	4 जुला	अश्वि	मु. 9:05 तक
आषा. शु. १, रवि	11 जुला	पुष्य	ल. ५, ६, अभिजित्
(सन् 2022 ई०)			
माघ कृ.४/५,शनि	22 जन.	उ.फा.	मु. 10:38 बाद, अभिजित्
माघ कृ. ५, रवि	23 जन.	उ/ह	ल. ११, १२, अभिजित्
माघ कृ. ६, चन्द्र	24 जन.	ह/चि	ल. ११, १२, अभि. (भद्रा परिहार)
माघ शु. ३, गुरु	3 फर.	शत.	ल. ११, १२, अभि. (गुरु युति परिहार)
माघ शु. ५, शनि	5 फर.	उ.भा.	ल. ११, १२, अभिजित्
माघ शु. ६, रवि	6 फर.	रेव.	ल. ११, १२, अभिजित्
माघ शु. ७, चन्द्र	7 फर.	अश्वि.	ल. ११, १२, अभिजित्
माघ शु. ९, गुरु	10 फर.	रोहि.	मु. 11:09 बाद, अभिजित्
माघ शु.१२, रवि	13 फर.	पुन.	मु. 9:27 बाद, ल. १२, अभि.
माघ शु. १३, चंद्र	14 फर.	पु/पु	ल. ११, १२, अभिजित्
फाल्गु. कृ.३,शनि	19 फर.	उ.फा.	ल. ११, १२, (भद्रा परिहार)
फाल्गु. कृ.५, चंद्र	21 फर.	चित्रा	मु. प्रातः 8:50 तक

तामसदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (दक्षिणायन में)

(देवी, बाराह, नृसिंह, काली आदि उग्र देवताओं के प्रतिष्ठा मुहूर्त्त)

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
आषा. शु.८, शनि	17 जुला	चित्रा	ल. ५, ६, अभि.
आषा. पूर्णिमा, शनि	24 जुला	उ.षा.	12:40 तक
श्राव. कृ. ३, चन्द्र	26 जुला	ध/श	मु. 15:25 तक, ल. ५, ६, अभि.
श्राव. कृ. ५, बुध	28 जुला	उ.भा.	मु. 10:45 बाद, ल. ६
श्राव. कृ. ६, गुरु	29 जुला	उ/रे	ल. ५, ६, अभिजित्
श्राव. कृ. ८, शनि	31 जुला	अश्वि	9:59 तक शुक्रपादवेध विचार्य
श्राव. कृ.११, बुध	4 अग.	मृग.	ल. ५, ६
श्राव. शु. ३, बुध	11 अग.	उ.फा.	मु. 9:32 बाद, ल. ६
श्राव. शु. ५, शुक्र	13 अग.	ह/चि	ल. ५, ६, अभि.
श्राव. शु. ६, शनि	14 अग.	चि/स्वा	ल. ५, ६, अभिजित्
श्राव. शु.१३, शुक्र	20 अग.	उ.षा.	ल. ५, ६, अभिजित्
श्राव. पूर्णिमा, रवि	22 अग.	धनि.	मु. 10:33 तक
भाद्र. कृ. ८, चंद्र	30 अग.	रोहि.	मु. 6:39 बाद, ल. ६, अभि, ९ (श्रीकृष्ण प्रतिष्ठा भी)
भाद्र. कृ.१०, बुध	1 सितं.	मृग.	मु. 12:34 तक
भाद्र. कृ.११, शुक्र	3 सितं.	पुन.	मु. 10:09 बाद
भाद्र. कृ.१२, शनि	4 सितं.	पुष्य	मु. 8:25 तक
आश्वि. शु.२, शुक्र	8 अक्तू	स्वा.	ल. ६, अभि., ९
आश्वि. शु.१३, चंद्र	18 अक्तू	उ.भा.	मु. 10:49 बाद, ल. ९, अभि.
आश्वि. पूर्णिमा, बुध	20 अक्तू	रेव.	7:46 बाद, ल. ९, अभि.
कार्ति. कृ. ५, चंद्र	25 अक्तू	मृग.	ल. ९, अभिजित्
कार्ति. कृ. ६, बुध	27 अक्तू	पुन.	मु. 7:08 बाद, भद्रा परिहार
कार्ति. कृ.७, गुरु	28 अक्तू	पुन.	मु. 9:41 तक, पुष्ये शुक्रवेध
कार्ति. शु.१०, शनि	13 नवं.	शत.	ल. ९, अभिजित् (बुधपादवेधऽभावः)
मार्ग. कृ. २, रवि	21 नवं.	रो/मृ	ल. ९, अभिजित्
मार्ग. कृ. ३, चंद्र	22 नवं.	मृग.	मु. 10:44 तक
मार्ग. कृ. ६, गुरु	25 नवं.	पुष्य	ल. ९, अभिजित्
मार्ग. कृ.१०, चंद्र	29 नवं.	उ.फा.	ल. ९, अभिजित्
मार्ग. कृ.१२, बुध	1 दिसं.	चित्रा	ल. ९, ११ (बु. दा.) बुधास्त
मार्ग. शु. ६, गुरु	9 दिसं.	धनि.	ल. ९, अभिजित्
मार्ग. शु. ७, शुक्र	10 दिसं.	शत.	8:21 से 11:57 तक वज्रदोष त्यक्त्वा
मार्ग. शु.१०, चन्द्र	13 दिसं.	रेव.	ल. ९, अभिजित्

श्रीदुर्गा/गौरी देवी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त २०७८

आगे लिखे मुहूर्त्त समस्त देवियों की प्रतिष्ठा के लिए शुभ होंगे। परन्तु इनमें से शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथियां श्रीगौरी की प्रतिष्ठा हेतु विशेष रूप से शुभ एवं प्रशस्त होंगी।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. कृ. ५, शनि	1 मई	मूल	मु. 10:16 तक
वैशा. कृ. ६, रवि	2 मई	उ.षा.	मु. 8:59 बाद
वैशा. शु. ३, शनि	15 मई	मृग.	मु. 8:39 तक
वैशा. शु.१३, चंद्र	24 मई	स्वा.	मु. 11:12 बाद (गुरुपादवेधऽभावः)
ज्ये. कृ. ५, रवि	30 मई	उ.षा.	ल. ५, अभिजित् (बु.-शु. पादवेधऽभावः)
ज्ये. कृ. ८, बुध	2 जून	शत.	ल. ३, ५, (गुरुयुति)
ज्ये. कृ. ९, गुरु	3 जून	पू.भा.	ल. ३, ५, अभिजित्
ज्ये. शु. ३, रवि	13 जून	पुन.	ल. ५, ६, अभिजित्
ज्ये. शु. ९, शनि	19 जून	हस्त	ल. ३, ५, अभिजित्
ज्ये. शु. १०, रवि	20 जून	चित्रा	ल. ३, ५, ६, अभि.
आषा. कृ. ७, गुरु	1 जुला	उ.भा.	ल. ५, अभिजित्
आषा. कृ. ८,शुक्र	2 जुला	रेव.	10:53 तक (10:53 से 13:17 तक अतिगण्ड)
आषा. कृ. ९,शनि	3 जुला	रे/अ	ल. ५, अभिजित्
आषा. शु. ९, रवि	18 जुला	स्वा.	मृत्युबाण 6:37 तक, ल. ५, (गुरुवेधऽभावः)

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
आषा. शु.१३,गुरु	22 जुला	मूल	मु. 10:57 से 12:45 तक (10:57 तक बुध पादवेध)
आषा.पूर्णिमा,शनि	24 जुला	उ.षा.	मु. 12:40 तक, ल. ५, अभि.
श्राव. कृ. ३, चन्द्र	26 जुला	ध/श	ल. ५, अभि. (गुरुयुति परि.)
श्राव. कृ. ५, बुध	28 जुला	पू/उ	ल. ५, ६
श्राव. कृ. ९, चंद्र	2 अग.	कृति.	ल. ५, ६, अभि.
श्राव. शु. ३, बुध	11 अग.	उफा	मु. 9:32 बाद, ल. ५, ६, (शुक्र युति)
श्राव. शु. ५, शुक्र	13 अग.	ह/चि	ल. ५, ६, अभि.
श्राव. शु.११, बुध	18 अग.	मूल	ल. ५, ६
भाद्र. कृ. ५, शुक्र	27 अग.	अश्वि	ल. ५, ६, अभि.
भाद्र. कृ. ८, चंद्र	30 अग.	कृ/रो	ल. ५, ६, अभि. (राहु युति परिहार)
भाद्र. कृ १२,शनि	4 सितं.	पुष्य	मु. 8:25 तक
अश्वि. शु. २,शुक्र	8 अक्तू	स्वा.	मु. 10:49 बाद
अश्वि शु. ८, बुध	13 अक्तू	पू/उ्षा	ल. ९
अश्वि शु. ९, गुरु	14 अक्तू	उ.षा.	9:35 तक
कार्ति. कृ. ५, चंद्र	25 अक्तू	मृग.	ल. ९, अभिजित्
कार्ति. कृ. ८,शुक्र	29 अक्तू	पुष्य	मु. 11:38 तक (शुक्रवेधऽभावः)
कार्ति. कृ.९, शनि	30 अक्तू	आश्ले	ल. ९, अभिजित् (गुरुपादवेधऽभावः)
कार्ति. शु. ३, रवि	7 नवं.	ज्ये.	ल. ९, अभि.
कार्ति. शु. ९,शुक्र	12 नवं.	धनि.	ल. ९, अभिजित् (गुरुयुति परिहार)
मार्ग. कृ. ३, चंद्र	22 नवं.	मृग.	10:44 तक (भद्रा परिहार)
मार्ग. कृ. ५, बुध	24 नवं.	पुन.	ल. ९, ११
मार्ग. कृ. ६, गुरु	25 नवं.	पुष्य	ल. ९, अभिजित्
मार्ग. कृ. ९, रवि	28 नवं.	पू.फा.	ल. ९, अभिजित्
मार्ग. शु. १, रवि	5 दिसं.	मूल	ल. ९, अभिजित्
मार्ग. शु. ३, चन्द्र	6 दिसं.	पू.षा.	ल. ९, अभिजित्
मार्ग. शु. ८, शनि	11 दिसं.	पू.षा.	ल. ९, अभिजित्
(सन् 2022 ई०)			
माघ कृ.२/३,गुरु	20 जन.	आश्ले	मु. 8:24 तक, मघे शनि वेध
माघ कृ. ५, रवि	23 जन.	उ.फा.	ल. १२, अभिजित्
माघ शु. ३, गुरु	3 फर.	शत.	ल. १२, अभिजित् (गुरुयुति परिहार)
माघ शु. ५, शनि	5 फर.	उ.भा.	ल. १२, अभिजित्
माघ शु. ९, गुरु	10 फर.	रोहि.	ल. १२, अभिजित्
फाल्गु.कृ.३, शनि	19 फर.	उ.फा.	ल. १२, अभिजित्

भगवान् शिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त सं. २०७८

गत कालमों में दिए गए सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्तों के अतिरिक्त आगे भगवान् शिव प्रतिमा व शिवलिङ्ग स्थापना हेतु मुख्य मुहूर्त दिए जा रहे हैं, जो विशेषतः शुभ एवं ग्राह्य होंगे। शिव प्रतिमा/शिवलिङ्ग प्रतिष्ठा हेतु निम्न मुहूर्तों में आगे दिए गए **'शिववास चक्र'** का भी प्रयोग कर लें तो विशेष शुभ होगा, परन्तु अनिवार्य नहीं है। शिव प्रतिष्ठा हेतु उत्तरायण मास, मिथुन लग्न व आर्द्रा नक्षत्र विशेष प्रशस्त एवं ग्राह्य माने गए हैं। शिव प्रतिष्ठा में श्रावण व मार्गशीर्ष मास भी ग्राह्य माने गए हैं।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. १३, रवि	25 अप्रै.	हस्त	ल. ५, अभिजित्
वैशा. कृ. ५, शनि	1 मई	मूल	मु. 10:16 तक
वैशा.कृ.१४, चंद्र	10 मई	अश्वि.	ल. ३, ५
वैशा. शु. ३, शनि	15 मई	मृग	ल. ३, ५ (आर्द्रा में भौमयुति परिहार)
वैशा. शु.१३, चंद्र	24 मई	स्वा.	मु. 11:12 बाद (गुरुपादवेधऽभावः)
ज्ये. कृ. ५, रवि	30 मई	उ.षा.	ल. ३, ५, अभिजित् (बु. शु. पादवेधऽभावः)
ज्ये. कृ. १४, बुध	9 जून	कृ/रो	ल. ३,५ (रोहण्यां राहुयुति परि.)
ज्ये. शु. २, शनि	12 जून	आर्द्रा	ल. ३, ५ (शुक्रवेधऽभावः)
ज्ये. शु. ३, रवि	13 जून	पुन.	ल. ३, ५, अभिजित्
आषा. कृ. ८,शुक्र	2 जुला	रेव.	10:53 तक (10:53 से 13:17 तक अतिगण्ड)
आषा. कृ. १४,गुरु	8 जुला	मृग.	ल. ३, ५ (भद्रा परिहार)

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
आषा. शु.१३,गुरु	22 जुला	मूल	10:57 से 12:45 तक, (10:57 तक बुधपादवेध)
श्राव. कृ. ३, चंद्र	26 जुला	ध/श	ल. ५, अभि. (गुरुयुति परि.)
श्राव. कृ. ८, शनि	31 जुला	अश्वि	9:59 तक शुक्रपादवेध, अभि
श्राव. कृ१२, गुरु	5 अग.	आर्द्रा	ल. ५, अभिजित्
श्राव. कृ१३,शुक्र	6 अग.	आ/पु	ल. ५, ६, अभिजित्
श्राव. कृ.१४,शनि	7 अग.	पु/पु	ल. ५, ६, अभि.,
श्राव. शु.५, शुक्र	13 अग.	ह/चि	ल. ५, ६, अभिजित्
मार्ग. कृ. ३, चंद्र	22 नवं.	मृ/आ	10:44 तक, भद्रा परिहार, शुक्रपादवेधऽभावः
मार्ग. कृ.१३, गुरु	2 दिसं.	स्वा.	ल. ९, अभिजित्
(सन् 2022 ई०)			
पौष शु.१४, रवि	16 जन.	आर्द्रा	ल. ११, १२, अभि. (शुक्रपादवेधऽभावः)
माघ कृ. ५, रवि	23 जन.	उ/ह	ल. ११, १२, अभि.
माघ कृ.१४, चंद्र	31 जन.	उ.षा.	ल. ११, १२, अभि., मु. 14:19 तक
माघ शु. ३, गुरु	3 फर.	शत.	ल. ११,१२, अभि. (गुरुयुत्यभावः)
माघ शु. ५, शनि	5 फर.	उ.भा.	ल. ११, १२, अभिजित्
माघ शु.१३, चंद्र	14 फर.	पु/पु	ल. ११, १२, अभिजित्
फाल्गु. कृ.५, चंद्र	19 फर.	उ.फा.	ल. ११, १२, अभि.

श्रीगणेश प्रतिमा प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
आषा. कृ.४, चंद्र	28 जून	धनि.	ल. ३, ५
श्राव. कृ. ४, मंग	27 जुला	श/पू	ल. ५, ६, अभिजित्
मार्ग. कृ. ४, मंग	23 नवं.	आर्द्रा	ल. ९, ११, अभिजित् (शुक्रपादवेधऽभावः)
(सन् 2022 ई०)			
माघ कृ. ४, शनि	22 जन.	पू.फा.	मु. 9:15 तक
फाल्गु. कृ.४, रवि	20 फर.	हस्त	ल. ११, १२, अभि.

श्री स्कन्द प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
वैशा. शु. ६, मंग	18 मई	पुष्य	ल. २, ३, ५, अभि.
ज्ये. शु. ६, बुध	16 जून	मघा	ल. ३, ५

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
श्राव. शु. ६, शनि	14 अग.	चि/स्वा	ल. ५, ६
मार्ग. शु. ६, गुरु	9 दिसं.	धनि.	ल. ९, ११, अभि.
(सन् 2022 ई०)			
माघ शु. ६, रवि	6 फर.	रेव.	ल. ११, १२, अभिजित्

शिववास चक्र

शिवलिङ्ग एवं शिव मूर्त्ति स्थापना एवं प्रतिष्ठार्थ

ऊपर लिखे शास्त्र-विहित मुहूर्तों में से विशेष मुहूर्त्त के चयन हेतु कुछ विद्वान् शिववास चक्र का भी प्रयोग करते हैं। पाठकों के लाभ हेतु शिववास चक्र दिया जा रहा है। इस चक्र की प्रयोग विधि इस प्रकार से है–

उपरोक्त लिखी गई तिथियों में से अभीष्ट (Required) तिथि की संख्या को दोगुणा करके उसमें, पाँच जोड़ देवें, फिर कुल मान को सात से भाग कर देवें, जो शेष संख्या बचे, उसके अनुसार शिव का वास जानना।

शेष	शिववास	फल
१	कैलाश पर	शुभ/लाभ, सुख
२	गौरी संग	शुभ-लाभ
३	बैल पर	कार्य सिद्धि
४	सभा में	कष्टकारी
५	भोजन	दुख प्रदायक
६	रमण	कष्टप्रद
(०)	श्मशान	नेष्ट फल

उदाहरण–मान लो हमने पंचमी तिथि के सम्बन्ध में शिववास जानना है, तो पाँच संख्या को दोगुणा करने पर दस संख्या मिली, इसमें 5 जमा करके 15 संख्या हुई, इसको 7 द्वारा भाग देने पर शेष 1 बचा, इसका फल लाभ/सुख अच्छा लिखा है। कुछ विद्वान् महामृत्युञ्जय आदि शैव मन्त्रानुष्ठान के पश्चात् करणीय होमादि में भी इस शिववास चक्र का विचार करते हैं।

श्रीलक्ष्मीनारायण व श्रीराधा-कृष्ण मूर्त्ति प्रतिष्ठा मुहूर्त्त-सं. २०७८

गत पृष्ठों में दिए गए सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्तों के अतिरिक्त निम्नलिखित मुहूर्त्त भी विशेष रूप से ग्राह्य रहेंगे। मतान्तर से कुछ लोग माघ मास में श्रीविष्णु जी की प्रतिष्ठा को वर्ज्य मानते हैं।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. शु. ३, शनि	15 मई	मृग.	ल. २, मु. 8:00 तक
वैशा. शु. ११*, रवि	23 मई	ह/चि	ल. २, ५, अभि.
वैशा. पूर्णिमा, बुध	26 मई	अनु.	ल. २, ३, ५
ज्ये. कृ. ५, रवि	30 मई	उ.षा.	ल. २, ३, ५, अभि.
ज्ये. शु.११*, चंद्र	21 जून	स्वा.	ल. ५, 11:16 से गुरुपादवेधविचार्य
आषा. कृ. ८, शुक्र	2 जुला	रेव.	10:53 तक
भाद्र. कृ. ८, चंद्र	30 अग.	कृ/रो	ल. ५, ६
मार्ग. कृ. ५, बुध	24 नवं.	पुन.	ल. ९, ११
मार्ग. कृ. ६, गुरु	25 नवं.	पुष्य	ल. ९, अभिजित्, ११
मार्ग. कृ.१२*, बुध	1 दिसं.	चित्रा	ल. ९, ११
मार्ग. शु.१०, चंद्र	13 दिसं.	रेव.	ल. ९, अभिजित्
(सन् 2022 ई०)			
माघ कृ.४/५, शनि	22 जन.	उ.फा.	मु. 10:38 से 14:06 तक

* = चिन्हित मुहूर्त्त विशेष रूप से ग्राह्य एवं शुभ होंगे।

श्रीमद्भागवत, हरिवंशपुराण, रामायणादि कथा प्रारम्भ मुहूर्त-वि. संवत् २०७८

वैसे तो भगवान् श्री हरि की कथा किसी भी स्थिति या समय में गाई जा सकती है, परन्तु श्रीमद्भागवत, श्रीहरिवंश पुराण, रामायण, शिव महापुराण आदि पूज्य ग्रन्थों के पाठ का प्रारम्भ शास्त्र निर्धारित तिथि, नक्षत्र, वार, मास आदि के अनुसार किया जाए, तो विशेष अधिक पुण्यफल प्रद होता है। सुनिश्चित मुहूर्त्तों में भी कृष्ण पक्ष की अपेक्षा शुक्ल पक्ष श्रेष्ठतर माना गया है। श्री शिवपुराण पाठारम्भ में श्रावण, माघ व फागुन मास विशेष प्रशस्त माने जाते हैं। श्रीदेवीभागवत् वाचन हेतु श्री दुर्गा प्रतिष्ठा में लिखे मुहूर्त्त भी ग्राह्य होंगे।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु.१३, रवि	25 अप्रै	हस्त	ल. ३, अभिजित्
वैशा. कृ. ७, चंद्र	3 मई	उ.षा.	मु. 8:22 तक
वैशा. कृ.१३, रवि	9 मई	रेव.	अभिजित्
वैशा. शु.४/५, रवि	16 मई	पुन.	मु. 11:14 बाद
वैशा. शु.११, रवि	23 मई	ह/चि	ल. २, ३, ५, अभि.
वैशा. शु. १३, चंद्र	24 मई	स्वा.	11:12 बाद
वैशा.पूर्णिमा, बुध	26 मई	अनु.	ल. २, ३, ६
ज्ये. कृ. ५, रवि	30 मई	उ.षा.	ल. ५, अभिजित्
ज्ये. कृ. ८, बुध	2 जून	शत.	ल. ५, ६
ज्ये.कृ.१०, शुक्र	4 जून	उ.भा.	मु. 6:34 बाद, ल. ३, ५
ज्ये. कृ.११, रवि	6 जून	अश्वि	ल. ३, ५, अभिजित्
ज्ये. शु. ३, रवि	13 जून	पुन.	ल. ३, ५, ६, अभिजित्
ज्ये. शु. १०, रवि	20 जून	चित्रा	ल. ५, अभि., ६
ज्ये. शु.११, चंद्र	21 जून	स्वा.	ल. ५ (11:16 से गुरुपादवेध विचार्य)
आषा. कृ.७, गुरु	1 जुला	उ.भा.	ल. ५, ६, अभि.
आषा. कृ. ८, शुक्र	2 जुला	रेव.	ल. ५, ६
आषा.कृ.१०, रवि	4 जुला	अश्वि.	प्रातः 9:05 तक
आषा. शु. १, रवि	11 जुला	पुष्य	ल. ५, ६, अभि.
श्राव. कृ. १, रवि	25 जुला	धनि.	मु. 11:18 बाद
श्राव. कृ. ३, चंद्र	26 जुला	ध/श	मु. 15:25 तक
श्राव. कृ. ६, गुरु	29 जुला	उ/रे	ल. ५, ६, अभिजित्
श्राव. कृ.११, बुध	4 अग.	मृग.	ल. ५, ६
श्राव. शु. ३, बुध	11 अग.	उ.फा.	मु. 9:32 बाद, ल. ६
श्राव. शु. ५, शुक्र	13 अग.	ह/चि	ल. ५, ६, अभिजित्
श्राव. पूर्णिमा, रवि	22 अग.	धनि.	ल. ५, 10:33 से 12:57 तक अतिगंड दोष
भाद्र. कृ. १, चंद्र	23 अग.	शत.	ल. ५, ६, अभि.
भाद्र. कृ. ८, चंद्र	30 अग.	रोहि.	मु. 6:39 बाद
भाद्र. कृ. १०, बुध	1 सितं.	मृग.	मु. 12:34 तक
भाद्र. कृ.११, शुक्र	3 सितं.	पुन.	मु. 10:09 बाद
भाद्र. शु. २, बुध	8 सितं.	उ.फा.	ल. ६, ७ (आवश्यके)
भाद्र. शु. ३, गुरु	9 सितं.	हस्त	ल. ६, ७ (आवश्यके)
आश्वि. शु.१३, चंद्र	18 अक्तू	उ.भा.	10:49 बाद, ल. ८, ९
आश्वि पूर्णिमा, बुध	20 अक्तू	रेव.	मु. 7:46 बाद, ल. ८, ९
कार्ति. कृ. १, गुरु	21 अक्तू	अश्वि	ल. ८, ९, अभि., ११
कार्ति. कृ. ५, चंद्र	25 अक्तू	मृग.	ल. ८, ९, अभि., ११
कार्ति. कृ. ६, बुध	27 अक्तू	पुन.	मु. 7:08 बाद, भद्रा परिहार
कार्ति. कृ. ७, गुरु	28 अक्तू	पुन.	मु. 9:41 तक

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
कार्ति. शु.११, रवि	14 नवं.	पू.भा.	ल. ९, अभि., ११
मार्ग. कृ. २, रवि	21 नवं.	रो/मृ	ल. ८, ९, १२
मार्ग. कृ. ३, चंद्र	22 नवं.	मृग.	ल. ९ (10:44 तक)
मार्ग. कृ. ५, बुध	24 नवं.	पुन.	ल. ९
मार्ग. कृ. ६, गुरु	25 नवं.	पुष्य	ल. ९, अभिजित्
मार्ग. कृ.१०, चंद्र	29 नवं.	उ.फा.	ल. ९, ११, अभि.
मार्ग. कृ.१२, बुध	1 दिसं.	चित्रा	ल. ९, ११
मार्ग. शु. ३, चंद्र	6 दिसं.	पू.षा.	ल. ९, ११
मार्ग. शु. ६, गुरु	9 दिसं.	धनि.	ल. ९, ११, अभिजित्
मार्ग. शु.१०, चंद्र	13 दिसं.	रेव.	ल. ९, ११
(सन् 2022 ई०)			
माघ. कृ. ५, रवि	23 जन.	उ/ह	ल. ११, १२, अभिजित्
माघ कृ. ६, चंद्र	24 जन.	ह/चि	ल. ११, १२, अभिजित्
माघ शु. ३, गुरु	3 फर.	शत.	ल. ११, १२, अभिजित्
माघ शु. ६, रवि	6 फर.	रेव.	ल. ११, १२, अभिजित्
माघ शु. ७, चंद्र	7 फर.	अश्वि.	ल. ११, १२, अभिजित्
माघ शु.९/१०, शुक्र	10 फर.	रोहि.	11:09 बाद
माघ शु. १३, चंद्र	14 फर.	पु/पु	ल. १२, १, अभिजित्
फाल्गु. कृ.२, शुक्र	18 फर.	पू.फा.	ल. १२, १

वाहनादि क्रय मुहूर्त्त-वि. संवत् २०७८

आगे लिखे मुहूर्त्त कार, स्कूटर, साईकल, ट्रक आदि का क्रय करने के अतिरिक्त कम्प्यूटर, रेफ्रिजरेटर, जनरेटर, टैलीविजन, ज़मीन-जायदाद, बहुमूल्य आभूषण, वस्त्रादि की खरीद करने में समान रूप में उपयोगी होंगे। शनिवार वाला दिन तभी ग्रहण करें, यदि कुण्डली में शनि शुभ या योगकारक हो। वाहनादि से पूर्ण लाभ प्राप्ति एवं सुरक्षा हेतु अपने पण्डित या पुरोहित जी द्वारा वाहन पर मन्त्रपूर्वक स्वास्तिक चिन्ह रचना, श्रीगणेश अम्बिका पूजन एवं हनुमान पूजा एवं कवच/स्तोत्र पाठ करवाना शुभ होगा। पूजनोपरान्त पण्डित जी को यथाशक्ति दान-दक्षिणा देकर उनसे शुभाशीष ग्रहण करना चाहिए। वाहन क्रय करने वाले व्यक्ति का चंद्रमा भी 4, 8 या 12वें नहीं होना चाहिए।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. १२, शनि	24 अप्रै.	उ.फा.	6:22 बाद, ल. ३, अभि.
चैत्र शु. १३, रवि	25 अप्रै.	हस्त	ल. ३, अभि., ५
वैशा. कृ. ५, शनि	1 मई	मूल	मु. 10:16 तक
वैशा. कृ. ६, रवि	2 मई	उ.षा.	ल. ३, अभिजित्
वैशा. कृ.१०, गुरु	6 मई	शत.	मु. 10:32 तक
वैशा. कृ.१२, शनि	8 मई	उ.भा.	सारा दिन
वैशा. शु.२/३, शुक्र	14 मई	मृग.	अभिजित् (अक्षय तृतीया) —आवश्यके
वैशा.शु.४/५, रवि	16 मई	पुन.	11:14 बाद
वैशा. शु. ७, बुध	19 मई	आश्ले	15:48 तक (गुरुपादवेधऽभावः)
वैशा. शु.१०, शनि	22 मई	उ/ह	सारा दिन
वैशा.शु. ११, रवि	23 मई	ह/चि	14:56 तक
वैशा. शु.१३, चंद्र	24 मई	स्वा.	मु. 11:12 बाद
वैशा.पूर्णिमा, बुध	26 मई	अनु.	ल. २, ३, ६
ज्ये. कृ. ५, रवि	30 मई	उ.षा.	ल. २, ३, ५, अभि.
ज्ये. कृ. १०, शुक्र	4 जून	उ.भा.	6:34 बाद, ल. ३, ५, अभि.
ज्ये. कृ. ११, शनि	5 जून	रेव.	ल. ३, ५, ६
ज्ये. कृ. ११, रवि	6 जून	अश्वि.	ल. ३, ५, ६, अभिजित्
ज्ये. शु. ३, रवि	13 जून	पुन.	ल. ३, ५, ६, अभिजित्
ज्ये. शु. ७, गुरु	17 जून	पू.फा.	ल. ५, अभि., ६
ज्ये. शु. १०, रवि	20 जून	चित्रा	ल. ५, अभि., ६
ज्ये. शु. ११, चंद्र	21 जून	स्वा.	ल. ५, अभि., ६
आषा. कृ. २, शनि	26 जून	उ.षा.	ल. ५, अभि., ६
आषा. कृ. ६, बुध	30 जून	पू.भा.	मु. 13:19 तक
आषा. कृ. ७, गुरु	1 जुला	उ.भा.	ल. ५, अभि., ६
आषा.कृ. १०, रवि	4 जुला	अश्वि.	मु. 9:05 तक
आषा. शु. १, रवि	11 जुला	पुष्य	ल. ५, ६, अभिजित्
आषा. शु. ८, शनि	17 जुला	चित्रा	ल. ५, ६, अभिजित्
आषा.शु.१३, गुरु	22 जुला	मूल	मू. 10:57 से 12:45 तक
आषा.पूर्णिमा, शनि	24 जुला	उ.षा.	मु. 12:40 तक
श्राव. कृ. १, रवि	25 जुला	धनि.	मु. 11:18 बाद
श्राव. कृ. ३, चंद्र	26 जुला	ध/श	ल. ५, ६, अभि. (15:25 तक)
श्राव. कृ. ६, गुरु	29 जुला	उ/रे	ल. ५, ६, अभिजित्
श्राव. शु. ५, शुक्र	13 अग.	ह/चि	ल. ५, ६, अभिजित्
श्राव. शु. ६, शनि	14 अग.	चि/स्वा	ल. ५, ६, अभिजित्
श्राव. कृ.१३, शुक्र	20 अग.	उ.षा.	ल. ५, ६, अभिजित्
श्राव. पूर्णिमा, रवि	22 अग.	धनि.	10:33 से 12:57 तक अतिगण्डदोष त्यक्त्वा
भाद्र. कृ. १, चंद्र	23 अग.	शत.	ल. ५, ६, अभिजित्
भाद्र. कृ. ८, चंद्र	30 अग.	रोहि.	ल. ५, ६, अभिजित्
भाद्र. कृ.१०, बुध	1 सितं.	मृग.	मु. 12:34 तक
भाद्र. कृ.११, शुक्र	3 सितं.	पुन.	मु. 10:09 बाद
आश्वि. शु. २, शुक्र	8 अक्तू	स्वा.	ल. ६, अभि., ९
आश्वि. शु. ६, चंद्र	11 अक्तू	मूल	मु. 12:56 बाद
आश्वि. शु.१३, चंद्र	18 अक्तू	उ.भा.	मु. 10:49 बाद
आश्वि. पूर्णिमा, बुध	20 अक्तू	रे/अ	ल. ८, ९
कार्ति. कृ. १, गुरु	21 अक्तू	अश्वि	ल. ८, ९, अभिजित्
कार्ति. कृ. ५, चंद्र	25 अक्तू	मृग.	ल. ९, अभिजित्
कार्ति. कृ. ६, बुध	27 अक्तू	पुन.	मु. 7:08 बाद, भद्रा परिहार
कार्ति. कृ. ७, गुरु	28 अक्तू	पुन.	मु. 9:41 तक
कार्ति. कृ.११, चंद्र	1 नवं.	पू/उ	ल. ९, ११, अभिजित्
कार्ति.शु.१०, शनि	13 नवं.	शत.	ल. ९, अभि., ११
मार्ग. कृ. १, शनि	20 नवं.	रोहि.	ल. ९, अभि., ११
मार्ग. कृ. ३, चंद्र	22 नवं.	मृग.	मु. 10:44 तक
मार्ग. कृ. ६, गुरु	25 नवं.	पुष्य	ल. ९, अभिजित्, ११
मार्ग. कृ.१०, चंद्र	29 नवं.	उ.फा.	ल. ९, अभि., ११
मार्ग. शु. १, रवि	5 दिसं.	मूल	ल. ९, ११, अभि., १२
मार्ग. शु. ६, गुरु	9 दिसं.	धनि.	ल. ९, अभि., ११, १२
मार्ग. शु. ८, शनि	11 दिसं.	पू.भा.	ल. ९, अभि., ११, १२
मार्ग. शु. १०, चंद्र	13 दिसं.	रेव.	ल. ९, अभि., ११, १२
(सन् 2022 ई०)			
माघ. कृ. ५, रवि	23 जन.	उ/ह	ल. ११, १२, अभिजित्
माघ कृ. ६, चंद्र	24 जन.	ह/चि	मु. 10:19 तक, भद्रा परिहार
माघ शु. ३, गुरु	3 फर.	शत.	ल. ११, १२, अभि., ३
माघ शु. ५, शनि	5 फर.	उ.भा.	ल. ११, १२, अभि. (वसन्त-पंचमी) शनि-अस्त विचार
माघ शु. ६, रवि	6 फर.	रेव.	ल. ११, १२, अभि.
माघ शु. ७, चंद्र	7 फर.	अश्वि.	ल. ११, १२
माघ शु.९/१०, गुरु	10 फर.	रोहि	मु. 11:09 बाद
माघ शु. १३, चंद्र	14 फर.	पु/पु	ल. ११, १२, अभिजित्
फाल्गु. कृ.२, शुक्र	18 फर.	पू.फा.	ल. ११, १२, अभिजित्

श्रीमहालक्ष्मी पूजन (दीपावली) के शुभकाल (मुहूर्त्त) (4 नवम्बर, गुरुवार, सन् 2021 ई.)

ब्रह्मपुराण अनुसार कार्तिक मास की अमावस्या को अर्धरात्रि के समय लक्ष्मी महारानी सद्गृहस्थों के घर में जहाँ-तहाँ विचरण करती है। इसलिए अपने घर को सब प्रकार से स्वच्छ, शुद्ध और सुशोभित करके दीपावली तथा दीपमालिका मनाने से लक्ष्मी जी प्रसन्न होते हैं तथा वहाँ स्थायी रूप से निवास करती हैं। यह अमावस्या प्रदोषकाल एवं अर्द्धरात्रि-व्यापिनी हो तो विशेष रूप से शुभ होती है।

प्रस्तुत वर्ष कार्तिक अमावस 4 नवम्बर, गुरुवार, 2021 ई. को प्रातः सूर्योदय से अर्द्धरात्रि बाद 26घं.-45मि. तक व्याप्त रहेगी। दीपावली स्वाती नक्षत्र, आयुष्मान योग कालीन अपराह्ण, सायाह्न, प्रदोष निशीथ, महानिशीथ व्यापिनी अमावस्या युक्त होने से विशेषतः प्रशस्त एवं पुण्यप्रदायक रहेंगी।

दीपावली-दिन के कृत्य—इस दिन प्रातः ब्राह्ममुहूर्त्त में उठकर दैनिक कृत्यों से निवृत्त हो पितृगण तथा देवताओं का पूजन करना चाहिए। सम्भव हो तो दूध, दहीं और घृत से पितरों का पार्वण-श्राद्ध करना चाहिए। यदि यह सम्भव हो तो दिन भर उपवास कर गोधूलि वेला में अथवा वृष, सिंह, वृश्चिक आदि स्थिर लग्न में श्रीगणेश, कलश, षोडशमातृका एवं ग्रहपूजनपूर्वक भगवती लक्ष्मी का षोडशोपचार-पूजन करना चाहिए। इसके अनन्तर महाकाली का दावात के रूप में, महासरस्वती का कलम, बही आदि के रूप में तथा कुबेर का तुला के रूप में सविधि पूजन करना चाहिए। इसी समय दीपपूजन कर यमराज तथा पितृगणों के निमित्त ससंकल्प दीपदान करना चाहिए। तदुपरान्त यथोलब्ध निशीथादि शुभ मुहूर्त्तों में मन्त्र-जप, यन्त्र सिद्धि आदि अनुष्ठान सम्पादित करने चाहिए।

दीपावली वास्तव में पाँच पर्वों का महोत्सव माना जाता है, जिसकी व्याप्ति कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी (धनतेरस) से कार्तिक शुक्ल द्वितीया (भाई-दूज) तक रहती है। दीपावली के पर्व पर धन की प्रभूत प्राप्ति के लिए धन की अधिष्ठात्री धनदा भगवती लक्ष्मी का समारोहपूर्वक आवाहन, षोडशोपचार सहित पूजा की जाती है। आगे दिए निर्दिष्ट शुभ कालों में किसी स्वच्छ एवं पवित्र स्थान पर आटा, हल्दी, अक्षत एवं पुष्पादि से अष्टदल कमल बनाकर श्रीलक्ष्मी का आवाहन/स्थापन करके देवों की विधिवत पूजार्चना करनी चाहिए।

***आवाहन मन्त्र*—'कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।**
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्।। (श्रीसूक्तम्)।

***पूजा मन्त्र*—'ॐ गं गणपतये नमः।। लक्ष्म्यै नमः।। नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरेः प्रिया। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात्।।'** से लक्ष्मी ; **'एरावतसमारूढो वज्रहस्तो महाबलः। शतयज्ञाधिपो देवस्तस्मा इन्द्राय ते नमः।'** मन्त्र से इन्द्र की और कुबेर की निम्न मन्त्र से पूजा करें— **'कुबेराय नमः, धनदाय नमस्तुभ्यं निधपद्माधिपाय च।**
भवन्तु त्वत्प्रसादान्मे धनधान्यादि सम्पदः।।'

पूजन सामग्री में विभिन्न प्रकार की मिठाई, फल-पुष्पाक्षत, धूप, दीपादि सुगन्धित वस्तुएं सम्मिलित करनी चाहिए। दीपावली पूजन में प्रदोष, निशीथ एवं महानिशीथ काल के अतिरिक्त चौघड़ियां मुहूर्त्त भी पूजन, बही-खाता पूजन, कुबेर-पूजा, जपादि अनुष्ठान की दृष्टि से विशेष प्रशस्त एवं शुभ माने जाते हैं—

4 नवम्बर, 2021 ई. के चौघड़िया मुहूर्त्त

दिन की चौघड़ियां (घं. मिं.)		रात्रि की चौघड़ियां (घं.-मिं.)	
शुभ	6:50 से 8:10 तक	अमृत	17:32 से 19:12 तक
रोग	8:10 से 9:30 तक	चर	19:12 से 20:52 तक
उद्वेग	9:30 से 10:50 तक	रोग	20:52 से 22:31 तक
चर	10:50 से 12:11 तक	काल	22:31 से 24:11 तक
लाभ	12:11 से 13:31 तक	लाभ	24:11 से 25:51 तक
अमृत	13:31 से 14:51 तक	उद्वेग	25:51 से 27:31 तक
काल	14:51 से 16:11 तक	शुभ	27:31 से 29:11 तक
शुभ	16:11 से 17:32 तक	अमृत	29:11 से 30:51 तक

नोट-(1) चर, लाभ, अमृत और शुभ की चौघड़ियां ग्राह्य होती हैं।

(2) 25 बजे का अर्थ अर्द्धरात्रि 1 बजे से है तथा 30 बजे का अर्थ आगामी दिन प्रातः 6 बजे से है।

(3) यहाँ चौघड़ियां मुहूर्त्त 4 नवम्बर, 2021 ई. को जालन्धर के दिनमान व रात्रिमान के अनुसार है। अपने स्थानीय नगर के चौघड़ियां मुहूर्त्त के लिए इसी पंचांग में दी गई मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी में से स्थानीय सूर्योदयास्त निकालकर इसी पंचांग के पृष्ठ नं. 285 का अवलोकन कर चौघड़ियां मुहूर्त्त निकालें।

प्रदोष काल—4 नवम्बर, 2021 ई. को जालन्धर एवं निकटवर्त्ती नगरों में सूर्यास्त (17घं.-32मि.) से लेकर 2घं.-40मि. पर्यन्त 20घं.-12मि. तक प्रदोषकाल व्याप्त रहेगा। (प्रत्येक नगर के रात्रिमान अनुसार प्रदोषकाल निर्धारित करें। (देखें पृष्ठ नं. 300 इसी पंचांग में)

सायं 18घं.-11मि. से 20घं.-05मि. वृष (स्थिर) लग्न विशेष प्रशस्त होगा। प्रदोषकाल में वृष लग्न, स्वाती नक्षत्र, तुला का चन्द्रमा तथा सूर्यास्त बाद से पहले अमृत की (17:32 से 19:12 तक) फिर चर की चौघड़ियों (19:12 से 20:52 तक) में श्रीगणेश-लक्ष्मी पूजन प्रारम्भ कर लेना चाहिए। **'अमृत'** तथा **'चर'** की चौघड़ियां रहने से इस योग में ही दीपदान, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, कुबेर-गणेश-बही-खाता पूजन, धर्म एवं गृह-स्थलों पर दीप प्रज्वलित करना, ब्राह्मणों तथा आश्रितों को भेंट, मिष्ठान्नादि बाँटना शुभ होगा।

निशीथ काल—4 नवम्बर, 2021 ई. को जालन्धर व समीपस्थ नगरों में निशीथकाल रात्रि 20घं.-12मि. से 22घं.-51मि. तक रहेगा। निशीथ-काल में 20घं.-52मि. तक चर की चौघड़ियां मुहूर्त्त शुभ रहेंगी। परन्तु उसके बाद **'रोग'** एवं **'काल'** की चौघड़ियां (24घं.-11मि. तक) पूजन प्रारम्भ हेतु इतनी शुभ नहीं हैं।

अतः 20घं.-52मि. से पहिले मुख्य पूजन हो जाना चाहिए, अन्यथा प्रारम्भ तो हो ही जाना चाहिए। तदुपरान्त चाहे पूजन आदि अन्य कार्य करते रहें। इस अवधि में श्रीमहालक्ष्मी पूजन समाप्त कर श्रीसूक्त, कनकधारा स्तोत्र तथा लक्ष्मी-स्तोत्रादि मन्त्रों का पाठ करना चाहिए।

महानिशीथ काल—रात्रि 22घं.-51मि. से 25घं.-31मि. तक महानिशीथ काल रहेगा। इस समयावधि में 24घं.-11मि. तक **'काल'** की चौघड़ियां अशुभ, परन्तु इसके बाद 25घं.-51मि. तक **'लाभ'** की चौघड़ियां अत्यन्त शुभ हैं। इस अवधि में काली-उपासना, तन्त्रादि क्रियाएं, विशेष काम्य प्रयोग, तन्त्र-अनुष्ठान, साधनाएँ एवं यज्ञादि किए जाते हैं। 24घं.-42मि. से **'सिंह'** लग्न भी विशेष प्रशस्त रहेगा।

नोट—अपने स्थानीय नगर में महालक्ष्मी पूजन एवं साधना हेतु प्रशस्त वृष, कर्क व सिंह लग्नों के लिए पृष्ठ 287 का अवलोकन कर साधारण जमा/ऋण कर ग्रहण करें। —पं. विवेक शर्मा।

विवाहादि शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि विचार

विवाह, मुण्डन, गृहारम्भादि शुभ कार्यो में मास, तिथि, नक्षत्र, योगादि की शुद्धि के साथ विवाह लग्न की शुद्धि को विशेष महत्त्व एवं प्रधानता दी गई है। तिथि को शरीर, चन्द्रमा को मन, योग–नक्षत्रों आदि को शरीर के अंग तथा लग्न को आत्मा माना गया है। यथा–

तिथिः शरीरं मन इन्दुवीर्य विलग्नमात्माऽवयवास्तु-भाद्याः —ज्योर्तिनिबंध

लग्न बल के बिना जो कुछ भी शुभ कार्य किया जाता है, उसका फल वैसे ही व्यर्थ हो जाता है, जैसे ग्रीष्मकाल में बिना जल के नदी।

लग्नवीर्य विना यत्र यत्कर्म क्रियते बुधैः।
तत्फलं विलयं याति ग्रीष्मे कुसरिता यथा॥ —ज्योति. विदरणे

सभी शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि का विशेष महत्त्व है।

विवाह लग्न का निश्चय करना हो, तो त्रिविक्रम–संहितानुसार, लग्न स्थान में चन्द्र तथा सूर्य, शनि, मंगल, राहु, केतु आदि क्रूर ग्रह न हों, लग्न से छठे स्थान में शुक्र, चन्द्र, व लग्नेश न हो तथा आठवें स्थान में चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र व लग्नेश नहीं होने चाहिएं तथा सप्तम स्थान में कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिए। **सातवें चन्द्र** और गुरु समफल करते हैं। अर्थात् चन्द्र, गुरु का दानादि करने से शान्ति हो जाती है।

विवाह लग्न में अशुभ एवं पूज्य ग्रह

× × | चंद्र | शनि
शुक्र | विवाह सभी पाप ग्रह | ×
× | राहु | मंगल
× × | सभी ग्रह [चं.-गु.] (परिहार) | ×
× | लग्नेश शुक्र, चंद्र | चं. मं. लग्नेश शुभ ग्रह

"त्याज्या लग्नेऽब्दयो मंदः षष्ठे शुक्रेन्दुलग्नपाः।
रन्ध्रे-चन्द्रादयः पंच, सर्वेऽब्जगुरु समौ॥"

परिहारस्वरूप १२वें शनि, तीसरे शुक्र, चतुर्थ में राहु, दशम भाव में मंगल का दोष यथोचित दानादि करने से शान्ति हो जाती है। **'पंचांगदिवाकर'** में लगाए गए लग्न मुहूर्तों में इन तीनों भावों में शनि, शुक्र व मंगल ग्रहों की स्थिति हो वहां उचित दानादि करवा लें।

आगे षष्ठाष्टम एवं द्वादश चन्द्र, शुक्र, अष्टम भौम, लग्नस्थ एवं सप्तमस्थ चन्द्र गुरु आदि के अपवाद (परिहार) लिखे गए हैं।

विवाह में ग्राह्य शुभ लग्न–मुहूर्त ग्रन्थों के अनुसार विवाह लग्न काल में ३, ६, ८, ११वें सूर्य तथा इन्हीं स्थानों (३, ६, ११) में राहु, केतु और शनि भी शुभ होते हैं। ३, ६ और ११वें **मंगल**, २, ३, ११वें **चंद्रमा**, ३, ६, ७ शुभ और ८वें स्थानों को छोड़कर अन्य भावों में स्थित **शुक्र** शुभ होता है। ग्यारहवें भाव में सूर्य तथा केन्द्र त्रिकोण में गुरु लग्नगत अनेक दोषों का परिहार करते हैं– **लग्ने वर्गोत्तमे वेन्दौ द्यूनाये लाभगेऽथवा।**
केन्द्र कोणे गुरौ दोषा नश्यन्ति सकलाऽपि॥ मु. गणपति॥

विवाह लग्न सम्बन्धी परिहार वाक्य

जन्म राशि से अष्टमस्थ लग्न–वर कन्या की जन्म राशि या लग्न से चतुर्थ, अष्टम तथा बारहवी राशिस्थ लग्न अशुभ कहे गए हैं। यथोक्तम्–
सुखघ्नं तुर्यमुद्वाहे द्वादश वित्तनाश कृत्। जन्म भात् जन्म लग्नाच्च मृत्युदंलग्नमष्टमम्॥

परन्तु परिहार स्वरूप जन्म राशि या लग्न राशि का स्वामी तथा विवाह लग्न का **स्वामी ग्रह समान** हो, अथवा **मित्र क्षेत्री** हो, अथवा अष्टमस्थ लग्न राशि का **स्वामी, केन्द्र** स्थित हो अथवा गुर्वादि शुभ ग्रह से वीक्षित हो तो अष्टम लग्न का दोष दूर होता है।

कर्तृरि दोष–लग्न में क्रूर ग्रह मार्गी होकर १२ भाव में तथा क्रूर (पापी) ग्रह वक्री गत होकर दूसरे भाव में हो, तो कर्तृरि दोष होता है। यह योग दारिद्रय, शोक व मृत्युतुल्य कष्टकारी होता है।

परिहार–कर्तृरि दोष कारक ग्रह **नीच, शत्रु क्षेत्री**, अथवा अस्तगत हो, तो इस दोष का परिहार हो जाता है। इसके अतिरिक्त गुरु, शुक्र, बुध इनमें से कोई शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में अथवा २रे या १२वें भावस्थ गुरु हो तो भी कर्तरि दोष निवार्य हो जाता है।

अष्टमस्थ भौम का परिहार–मंगल अस्तंगत, नीच राशि का (कर्क) या शत्रु राशि (मिथुन एवं कन्या) का होकर अष्टम स्थान में हो, तो दोषकारक नहीं, परन्तु लग्नेश होकर अष्टमगत नहीं होना चाहिए। **अस्तगे नीचगे भौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।**
कुजाष्टमोद्भवो दोषो न किंचिदपि विद्यते॥ कश्यप॥

छठे, अष्टम चन्द्र का परिहार–नीच राशि, शत्रु राशि या नीच–राशिगत चन्द्रमा ६ या ८वें स्थानस्थ होना दोषपूर्ण नहीं माना गया। जैसे–वृश्चिक, मिथुन, कन्या राशि (३, ६)
नीचराशिगते चन्द्रे नीचांशगतेऽपि वा, चन्द्रे षष्ठारि–रिः फस्थे दोषो नास्ति न संशयः।
परन्तु लग्नेश होकर चन्द्र षष्ठाष्टम नहीं होना चाहिए।

लग्नस्थ चन्द्रमा यद्यपि त्याज्य माना गया है, परन्तु यदि लग्नगत चन्द्र पर गुरु की दृष्टि हो अथवा वह गुरु से युक्त हो, तो अशुभ चन्द्रमा भी शुभ हो जाता है–
''अशुभोऽपि शुभचन्द्रो, गुरुणा लोकितो युतः।।'' (पीयूषधारा)
लग्नस्थ चन्द्र का परिहार–''कर्किगोस्थः पूर्णो विधुस्तनौ''

व्रतबन्धोक्त अनुसार वृष, कर्क एवं पूर्ण चन्द्रमा या शुभग्रह से दृष्ट हो लग्न में दोषकारक नहीं होता। मु. मार्त्तण्ड

षष्ठाष्टमस्थ शुक्रापवाद–नीच एवं शत्रु राशिगत (कर्क, सिंह या कन्या) शुक्र छठे, आठवें हो तो दोषकारक नहीं परन्तु लग्नेश होकर इन भावों में न हो। जैसे–
नीच राशिगते शुक्रे शत्रु क्षेत्रगतेऽपि वा।
भृगु षट्कोत्थितो दोषो नास्ति तत्र न संशयः॥ मुहूर्त चिं. पीयूषधारा

सप्तम भावस्थ चन्द्र–गुरु–सप्तम भाव में यद्यपि सभी ग्रह वर्जित कहे हैं, परन्तु चन्द्र गुरु का परिहार है। **''चन्द्र चान्द्री शुक्रजीवा यामित्रे शुभकारकाः!''**

'मुहूर्त्तगणपति' अनुसार विवाहादि शुभ कार्य के लग्न में, केन्द्र–त्रिकोण में **गुरु, शुक्र** एवं बुध एवं ग्यारहवें भाव में चन्द्र या सूर्य अथवा सप्तमेश हो, तो अनेक दोषों का नाश हो जाता है।

वेध दोष परिहार–पंचशलाका चक्रानुसार विवाह नक्षत्र का क्रूर ग्रह द्वारा वेध हो जाने

पर विवाहित नक्षत्र सर्वथा त्याज्य माना जाता है। परन्तु गुरु, बुध आदि सौम्य ग्रहों का चरण वेध (१ एवं ४थे चरण के मध्य तथा २ रे व ३ रे चरण ही अशुभ माना है। —ज्योतिर्निबन्ध

युतिदोष परिहार—पाप एवं क्रूर ग्रह की युति त्याज्य मानी जाती है। परन्तु यदि चन्द्रमा उच्चस्थ, स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री (वृष, कर्क, मिथुन, सिंह एवं कन्या) राशि का हो तो युतिदोष अविचारणीय होता है। यथा—

स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो व मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युति दोषाय न भवेत् दम्पत्योः श्रेयसेतदा॥ (नारदः)

(१०) दग्धा तिथि परिहार—विवाह लग्न समय केन्द्र–त्रिकोण गत गुरु हो एवं एकादश (११वां) भाव शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो दग्धातिथि का दोष नहीं रहता।—मु० गणपति

पंचांगदिवाकर में शुभ विवाह मुहूर्तों में जहाँ कहीं अशुभ योग का स्पर्श हुआ है, वहां विशेष दोषपूर्ण घड़ियों को विचार करके ही वि. मुहूर्त लगाए गए हैं।

कश्यप ऋषि अनुसार लग्न से केन्द्र, त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुधादि सौम्य ग्रह हो, तो समस्त दोषों का ऐसे परिहार हो जाता है, जैसे भगवान् विष्णु को मात्र स्मरण करने से पापों का नाश हो जाता है

काव्यो गुरु र्वा सौम्यो वा यदा केन्द्र त्रिकोणगाः।
नाशयन्ति अखिलान् दोषान् पापानि व हरिस्मृतिः॥ (कश्यप)

भद्रा का शुभाशुभ विचार

भद्राकाल में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, रक्षा बन्धन आदि मांगलिक कृत्यों का निषेध माना जाता है, परन्तु भद्रा काल में शत्रु का उच्चाटन करना, स्त्री प्रसंग में, यज्ञ करना, स्नान करना, अस्त्र–शस्त्र का प्रयोग, आप्रेशन करना, मुकद्दमा करना, अग्नि लगाना, किसी वस्तु को काटना, भैंस, घोड़ा, ऊँट सम्बन्धी कर्म प्रशस्त माने जाते हैं।

भद्रा परिहार विचार—सामान्य परिस्थितियों में विवाह आदि शुभ मुहूर्तों में भद्रा का त्याग ही करना चाहिए, परन्तु आवश्यक परिस्थितिवश **भूलोक की भद्रा**, तथा **भद्रा मुख छोड़कर भद्रा पुच्छ में शुभ कृत्य किए जा सकते हैं।**

कार्येत्वाश्यके विष्टेर्मुख, कण्ठहृदि मात्रं परित्येत्।

एक अन्य मतानुसार अत्यावश्यक स्थिति में रात्रि में तिथि के पूर्वार्द्ध की भद्रा, दिन में परार्ध की भद्रा ग्रहण कर सकते हैं।

तिथेः पूर्वार्धजा रात्रौ दिने भद्रा परार्धजा। भद्रा दोषो न तत्र स्यात् कार्येऽत्यावश्यके सति॥

भद्रा परिहार

कुछ आवश्यक स्थितियों में भद्रा दोष का परिहार हो जाता है। यथा—

तिथि पूर्वार्धजा भद्रा दिवा भद्रा प्रकीर्तिता। तिथिरुत्तरजा भद्रा रात्रिभद्रेति कथ्यते॥
दिवा भद्रा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिवा। तदाविष्टिकृतो–दोषो न, भवेत्सर्वं सौख्यदः॥

अर्थात् तिथि के पूर्वार्द्ध भाग में प्रारम्भ भद्रा अर्थात् तिथि दिवस के पूर्वार्ध भाग में प्रारम्भ भद्रायादि तिथ्यन्त में रात्रिव्यापिनी हो जाए, तो दोषकारक न होकर सुखदायिनी हो जाती है।

(ii) पीयूषधारानुसार—दिन की भद्रा रात्रि को और रात्रि की भद्रा दिन को आ जाए, तो भद्रा दोषरहित हो जाती है।

रात्रिभद्रा यदह्नि स्याद् दिवा भद्रा यदा निशि। न तत्र भद्रादोषः, सा भद्रा–भद्र दायिनी॥

(iii) **'दिवा परार्द्धजा विष्टिः, पूर्वार्द्धोत्था निशि। तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम्॥'**

उत्तरार्ध की भद्रा दिन में, तथा पूर्वार्द्ध की रात्रि में शुभ होती है।

भद्रा लोक वास

मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक का चन्द्रमा होने से भद्रा **स्वर्ग लोक** में, कन्या, तुला, धनु, मकर का चन्द्रमा होने से **पाताल** में, कर्क, सिंह, कुम्भ व मीन राशि के चन्द्रमा में **भद्रा मर्त्यलोक (भू लोक)** में—अर्थात् **सम्मुख रहती है। जब भद्रा भू–लोक में (सम्मुख) रहती है, अशुभफल दायिनी** एवं वर्जित मानी जाती है, अन्य लोकों में हो, तो शुभ है—

स्थिताभूर्लोस्था भद्रा सदा त्याज्या स्वर्गपातालगा शुभा —(मु. मार्त्तण्ड)

लोकवास	स्वर्ग	पाताल	भू–लोक
चन्द्रराशि	१, २, ३, ८	६, ७, ९, १०	४, ५, ११, १२
भद्रा–मुख	ऊर्ध्वमुखी	अधोमुख	सम्मुख

स्वर्गे भद्रा धनं धान्यं पाताले च धनागमः। मृत्युलोके यदा भद्रा कार्य सिद्धिस्तदानहि॥

(iv) शुक्ल पक्ष की भद्रा का नाम **बृश्चिकी** है। कृष्ण पक्ष की भद्रा का नाम **सर्पिणी** है। **मतान्तर से**, दिन की भद्रा **सर्पिणी**, रात्रि की भद्रा **बृश्चिकी** है। बिच्छू का विष डंक में तथा सर्प का विष मुख में होने के कारण बृश्चिकी भद्रा की पुच्छ और **सर्पिणी** भद्रा का मुख विशेषतः त्याज्य है।

(v) भद्रा दोष, मंगल–शनिवार जनित दोष, व्यतीपात, अष्टम भावस्थ एवं जन्म नक्षत्र दोष, मध्याह्न के पश्चात् शुभकारक मानी जाती है।

गोधूलि काल

विवाह मुहूर्तों में क्रूर ग्रह युति, वेध, मृत्युबाण आदि दोषों की शुद्धि उपरान्त यदि अभिवांछित मुहूर्त में शुद्ध विवाह–लग्न न निकलता हो, तो मुहूर्त ग्रन्थाचार्यों ने गोधूलि का लग्न ग्रहण करने की सम्मति प्रदान की है।

गोधूलि काल—जब सूर्यास्त न हुआ हो (अर्थात् सूर्यास्त होने वाला हो) और गाय आदि चौपाय अपने–अपने गृहों को लौटते हुए अपने खुरों से पथ की धूलि को आकाश में उड़ाकर जाने लगें, तो उस काल को मुहूर्त्तकारों ने **गोधूलि काल** का नाम प्रदान करते हुए, इसे विवाहादि सब मांगलिक कार्यों में प्रशस्त कहा है। यह लग्न, मुहूर्त्त, पात, अष्टम भाव, जामित्रादि दोषों को नष्ट प्राय कर देता है।

नो वा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्र दोषो,
गोधूलिः सा मुनिभिरुदिता सर्वकार्येषु शस्ता॥ —मुहूर्त्त चिन्तामणि

जब कोई अन्य शुभ लग्न न बनता हो, और कन्या विवाह योग्य हो गई हो तो गोधूलि में विवाह शुभ होता है। ज्योतिर्निबन्धानुसार–

लग्न शुद्धिर्यदा न स्याद् यौवने समुपास्थिते, तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥

गोधूलि लग्न काल के सम्बन्ध में विद्वानों ने मतान्तर पाए जाते हैं–

(i) पीयूषधारा के मतानुसार सूर्य के अर्ध–अस्त होने के अनन्तर २ घड़ी (४८ मिनट) का समय गोधूलि काल है।

(ii) मुहूर्त गणपति के अनुसार सूर्यार्ध बिम्ब के अस्त हो जाने के पूर्व एवं पश्चात् १५–१५ पल अर्थात् १२ मिनट का मध्यान्तर गोधूलि संज्ञक है।

(iii) आचार्य नारदानुसार सूर्योदय से सप्तम लग्न गोधूलि लग्न काल होता है।

चतुर्थमभिजित लग्नमुदयार्क्षातु सप्तमम्॥ —नारद

(iv) कुछ विद्वानों के अनुसार लग्न, सप्तम तथा अष्टम भाव में मंगल को भी वर्ज्य माना गया है। शेष भावों में अन्य किसी ग्रह का विचार गोधूलि लग्न में नहीं किया जाता।

(v) गुरुवार को सूर्यास्त के बाद तथा शनिवार को सूर्यास्त होने से पूर्व (पहले) की ही आधी घड़ी (12 मिनट) को गोधूलिकाल माना गया है, अन्यथा नहीं. (मुहूर्त्त चिन्तामणि)

——क्षौरकर्म (हजामत) के लिए शुभाशुभ दिन——

गर्गादि आचार्यों के अनुसार रविवार, मंगलवार एवं शनिवार को क्षौर (हजामत) कर्म करवाने से आयु का क्षय होता है। **सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार** को क्षौर कर्म (हजामत) करवाना शुभ होता है। मतान्तर से एक पुत्र सन्तान वाले गृहस्थी को सोमवार के दिन, तथा विद्या एवं धनाकांक्षी गृहस्थी को गुरुवार के दिन क्षौर नहीं करवाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त पर्व वाले दिन, जन्मदिन, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी (१४) आदि रिक्ता तिथियों में, व्रत के दिन, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति, श्राद्ध के दिन, भद्रा और व्यातिपात योग में तथा भोजन करने के बाद, देश-प्रदेश जाने के समय में शुभाकांक्षी क्षौर कर्म न करावें।

——तैलाभ्यंग–अर्थात् तैल मालिश करना——

रविवार, मंगलवार, गुरुवार तथा शुक्रवार को तैल लगाना शुभ नहीं माना जाता है। **निर्णय सिन्धु** के अनुसार रविवार तैल लगाने से ताप, मंगलवार को आयु क्षीणता, गुरुवार से धन–हानि, शुक्रवार को तैल लगाने से दुःख होता है। सोमवार, बुधवार तथा शनिवारों को तैल लगाना शुभ होता है। प्रतिदिन तेल लगाने वालों को भी दोष नहीं लगता–(**—अभ्यङ्गके चैव वासिते नैव दूषणम्॥**)

चतुर्कोणों दिशाशूल विचार

आग्नेय (पूर्व–दक्षिण) में सोम व गुरुवार, **नैऋत्य** (दक्षिण–पश्चिम) दिशा में रविवार व शुक्रवार, **वायव्य** (उत्तर–पश्चिम) में मंगलवार तथा **ईशान** (पूर्व–उत्तर) में बुध एवं शनिवार के दिन **दिशाशूल** होता है (मुहूर्त गणपति)

दिशापति के वार अनुसार उसी दिशा की यात्रा शुभदायिनी तथा उससे पीछे (सामनेवाली) दिशा की यात्रा अनिष्टप्रदा होती है–

दिगीशाहे शुभा यात्रा पृष्ठा हे मरणं ध्रुवम् (ज्योतिस्तत्व)

परन्तु बधवार उत्तर दिशा का स्वामी होते हुए, बुध की उत्तर में निषिद्ध माना गया है (गर्ग)

विशेष–यदि एक जगह से रवाना होकर, उसी दिन गन्तव्य स्थान पर पहुँच जाना निश्चित हो, तो ऐसी यात्रा में तिथि–वार–नक्षत्र, दिशा–शूल, प्रतिशुक, योगिनी आदि जनित दोषों का विचार नहीं करना चाहिए–यथा

"एकस्मिन्नपि दिवसे यदि चेद् गमनं प्रवेशश्च।
प्रतिशुक्रवार शूलं न चिन्तयेत् योगिनी पूर्वम्॥।"–(**पीयूषधारा**)

यात्रादि मुहूर्त्त विचार

किसी कार्य के उद्देश्य से देशान्तर गमन को यात्रा कहते हैं। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा और २, ३, ५, ७, १०, ११, १३–इन तिथियों में, अश्वि., मृग. पुर्न, पुष्य, अनु, हस्त, श्रव., धनि, रेव.–इन नक्षत्रों में तथा चौर, बाण, भद्रा, वैधृति, व्यतियात और मासांत दिनादि दोष रहित समय में यात्रा करें। यात्रा करने से पूर्व क्रोध और मैथुन कर्म का त्याग करना चाहिए।

दिशाशूल

सोमवार, शनिवार को पूर्व, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम, मंगलवार, बुधवार को उत्तर तथा गुरुवार को दक्षिण दिशा का दिशाशूल होता है, अतः उक्त वारों को उस दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिए। अत्यावश्यक होने पर रविवार को दलिया एवं घी खाकर, सोमवार को दर्पण देखकर या दूध पीकर, मंगलवार को गुड़ खाकर, बुधवार को धनिया या तिल खाकर, गुरुवार को दही खाकर, शुक्रवार को जौं खाकर दूध पीकर और शनिवार को अदरक या उड़द खाकर प्रस्थान किया जा सकता है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पाँव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, यात्रा सफल होगी।

चन्द्रवास ज्ञान चक्र

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

चन्द्रवास विचार

जाने वाली दिशा में चन्द्रमा का वास सम्मुख और दाहिनी ओर को हो तो धन का लाभ और सुख होता है। यदि पीठ की ओर अथवा बाईं तरफ चन्द्रवास हो तो कष्ट और धन की हानि होती है।

सम्मुख चन्द्रमा का विशेष फल

करणदोष, नक्षत्रदोष, वारदोष, संक्रान्ति दोष, अशुभतिथिदोष, कुलिक दोष, प्रहार्द्ध वारवेला दोष, मंगल, शनि, रवि, राहु–केतु के दोष को सम्मुख चन्द्रमा दूर करता है।

'यात्रा के समय शुभ शकुन'

यात्रा के समय श्वेत पुष्पों का दर्शन श्रेष्ठ माना गया है। भरे हुए घड़े का दिखाई देना तो बहुत ही उत्तम है। दूर का कोलाहल, अकेला वृद्ध पुरुष, पशुओं में बकरे, गौ, घोड़े तथा हाथी, देवप्रतिमा, प्रज्वलित अग्नि, दूर्वा, ताज़ा गोबर, सोना, चांदी, रत्न, बच, सरसों आदि औषधियां, मूँग, छाता, पीढ़ा, राजचिह्न, जिसके पास कोई रोता न हो ऐसा शव, फल, घी, दही, दूध, अक्षत, दर्पण, मधु, शंख, ईख, शुभ सूचक वचन, भक्त पुरुषों का गाना–बजाना, मेघ की गम्भीर गर्जना, बिजली की चमक तथा मन का सन्तोष–ये सब शुभ शकुन हैं। 'चले आओ'–यह शब्द यदि सामने की ओर से सुनाई पड़े तो उत्तम है। 'जाओ'–यह शब्द यदि पीछे की ओर से हो तो उत्तम है।

विवाहादि शुभ कार्यों में शास्त्रीय विचार

विवाह में जन्म मास, नक्षत्रादि का विचार–

आद्य गर्भ, अर्थात् बड़े लड़के या बड़ी लड़की का विवाह जन्म मास, जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म लग्न में न करें। "आद्य गर्भ सुत कन्ययो र्द्वयो जन्म मास भतिथौ कर ग्रहः। नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते चेद् द्वितीय जनुषोः सुतप्रदः॥ मु. चिंतामणि॥"

परन्तु ज्येष्ठ पुत्र के बाद उत्पन्न पुत्र या कन्या का विवाह जन्म मास, नक्षत्रादि में करना प्रशस्त है। ज्येष्ठ पुत्र-कन्या के अतिरिक्त अन्य स्थितियों में जन्म-मास, जन्म राशि, नक्षत्र एवं जन्म लग्न विशेष शुभ माना है।

जन्ममासे च पुत्राढया धनाढया च धनोदये। जन्म मे जन्मराशौ च कन्या हि ध्रुव सन्तति॥

आचार्य भृगु जी के अनुसार जन्म मास, जन्म नक्षत्र एवं जन्म लग्न में विवाह होने पर दम्पत्ति के सुख एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है तथा वह धन सम्पत्ति तथा सन्तान सुख से सौभाग्यशालिनी होती है।

जन्ममासेऽथ जन्मर्क्षे जन्मलग्नेऽथ जन्मनि। उद्वाहेपु च नारीणां प्रतिष्ठा महती भवेत्। भृगुः जन्ममासेऽथ पुत्राढ्या धनादया जन्मभोदये। जन्मभे वा भवेदूढा वृद्धा संतति वर्धिनी॥ (यवनाचार्य)

ज्येष्ठ मास में विवाह का विचार

ज्येष्ठ मास, ज्येष्ठ पुत्र और ज्येष्ठ कन्या यह तीन ज्येष्ठ विवाह संस्कार में विशेषतया वर्जित माने जाते हैं। परन्तु यदि दो ज्येष्ठ वर्तमान हों अर्थात् लड़का-लड़की दोनों ज्येष्ठ (बड़े) हों, परन्तु महीना ज्येष्ठ के अतिरिक्त हो अथवा लड़का-लड़की में से एक ज्येष्ठ हो और दूसरा अनुज हो, तो ज्येष्ठ मास में भी विवाह करना सामान्य एवं मध्यम फल होता है–

द्वौ ज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोक्तत्रवेक ज्येष्ठः शुभावहः।
ज्येष्ठ त्रयं न कर्वीत् विवाहे सर्वसम्मतम् —वाराहमिहिर॥

तथापि आवश्यक परिस्थितिवश ज्येष्ठ मास में कृतिका से सूर्य निकल जाने पर सूर्य दानादि करके विवाह करने में कोई हानि नहीं। मुनि भारद्वाज के मतानुसार ज्येष्ठ के महीने की भान्ति मार्गशीर्ष मास में भी अग्रज लड़का-लड़की एवं मार्ग मास-तीनों का यथासम्भव त्याग करें।

(३) सगे भाई-बहन के विवाह छः मास के भीतर नहीं करने चाहिएं। यदि इस बीच संवत् परिवर्तन हो जाए, तो कोई दोष नहीं (मु. मार्तण्ड)। पुत्र के विवाह के उपरान्त अपनी कन्या का विवाह ६ महीने तक न करें। इसी तरह विवाह के बाद ६ महीने तक मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्य न करें। (नारद), परन्तु कन्या-विवाह के पश्चात् पुत्र विवाह ६ मास के भीतर शुभ है। दो सगे भाईयों का विवाह दो सगी बहनों से न करें अथवा एक वर के साथ दो सगी बहनों का विवाह न करें (वसिष्ठ) तथा जिस वर को अपनी कन्या देवें, उसकी बहन के साथ अपने लड़के का विवाह न करे (नारदः)।

दो सगे भाईयों या दो सगी बहनों का एक संस्कार ६ महीने के भीतर करना सम्भव है (वृन्द्धमनुः)। दो सहोदर (भाई-बहन) के संस्कार आवश्यक स्थिति उत्पन्न होने पर नदी, पर्वत, स्थान एवं पुरोहित भेद (भिन्न) से एक ही दिन अथवा ६ महीने के भीतर शुभ होंगे (शार्गंधर) जुड़वें भाई-बहन के मांगलिक कार्य एक ही मण्डप में भी शुभ हैं। विवाहादि मंगल कार्य से ६ मास तक लघु मंगल कार्य न करें। यह ६ महीने का निषेध केवल तीन पीढ़ि तक के मनुष्यों के लिए कहा है।

मङ्गल संस्कार से ६ महीने तक पितृकर्म, श्राद्धादि न करे। वाग्दान अर्थात् विवाह सम्बन्ध का निश्चय हो जाने के बाद वर-कन्या के कुल में माता-पिता, भाई आदि निकटस्थ बन्धु की दुःखद मृत्यु हो जाने पर एक वर्ष के पश्चात् विवाह आदि शुभ कार्य करना चाहिए (निर्णयसिंधु) परन्तु अपवाद स्वरूप संकट काल में अथवा अत्यावश्यक परिस्थितिवश एक मास के बाद अथवा सूतक निवृत्ति के बाद जप, पाठ, होम शान्ति एवं यथाशक्ति द्रव्य, वस्त्र, गोदानादि के बाद शुभ कार्य ग्राह्य होंगे–

प्रतिकू–लेऽपि कर्त्तव्यो विवाहो मासमन्तरात्।
शान्तिं विधाय गां दत्त्वा वाग्दानादि चरेत् पुनः॥ (ज्योति. प्रकाश)

जन्म नक्षत्र विचार

जातक का जन्म नक्षत्र अन्न प्राशन, उपनयन, मुंडन (चूड़ाकरण), राज्याभिषेक, जन्मदिनादि कृत्यों में प्रशस्त माना गया है, परन्तु यात्रा, सीमान्तोन्नयन तथा विवाहादि कार्यों में जन्म नक्षत्र अनिष्टकर होता है–

बालान्नभुक्तौ व्रतबन्धनेऽपि राज्याभिषेके खलुजन्मधिण्यम्।
शुभं तु अनिष्टं सततं विवाह सीमन्त यात्रादिषु मंगलेषु॥ —वसिष्ठ

मतान्तर से ज्योतिर्निबन्ध एवं मुहूर्त्त दीपिकानुसार केवल चूड़ाकरण (मुण्डन), औषध सेवन, विवाद, यात्रा और कर्णवेध में ही जन्म-नक्षत्र का निषेध कहते है, अन्य सभी कार्यों में जन्म नक्षत्र शुभ कहा है–

जन्म नक्षत्रगश्चन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु।
क्षौर भैषजविवादध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत्॥ (मुहूर्त्त दीपिका)

परन्तु जन्म नक्षत्र से २५वां तथा २७वां नक्षत्र शुभ कार्यों में त्याज्य माना जाता है।

जन्म मास अग्रज (बड़े) लड़के या लड़की का विवाह **जन्म नक्षत्र एवं जन्म मास** में करने का निर्विवादेन निषेध माना गया है–

न जन्ममासे जन्मर्क्षे न जन्मदिवसेऽपि वा। आद्य गर्भ सुतस्याथ दुहितुर्वा करग्रहः॥ —नारद

परन्तु अनुज लड़के या लड़की का विवाह जन्म मास में ग्रहणीय माना गया है–

विबुधैः प्रशस्यते चेत् द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः —मुहूर्त्त चिंतामणि

विवाह में सम–विषम वर्षों का विचार

सम वर्षों (१८, २०, २२, २४ आदि) में कन्या का विवाह और **विषम वर्षों** (१९, २१, २३, २५ आदि) में लड़के (पुत्र) का विवाह शुभ माना गया है। –अर्थात् इन वर्षों में कन्या या पुत्र का विवाह करना, उनके वैवाहिक जीवन में सुख, सौहार्द आदि की दृष्टि से कल्याणकारी होता है। इसके विपरीत वर्षों (अर्थात् कन्या का विषम वर्षों में तथा लड़के का सम वर्षों) में करना दुःख, रोग एवं कष्टप्रद होता है– (ज्योतिष तत्त्व प्रकाश)

आपको किस दिन क्या कार्य करना शुभ है ?

नाम वार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	वीरवार	शुक्रवार	शनिवार
यात्रा में शुभ ग्राह्य-दिशाएँ	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षिण पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण वायव्य (उत्तर-पश्चिम)	दक्षिण-पूर्व आग्नेय (दक्षिण-पूर्व)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)	पूर्व, उत्तर ईशान (उत्तर-पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)
यात्रा में त्याज्य (दिशाशूले)	पश्चिम, नैऋत्य (दक्षि.-पश्चि. कोण)	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षि.-पूर्व)	उत्तर, पश्चिम वायव्य (उत्तर पश्चि.)	उत्तर, पश्चिम ईशान (पूर्व-उत्तर)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षि. पश्चि.)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य कोण (द. पश्चि.)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)
विद्या एवं शिक्षा सम्बन्धी	विज्ञान, इंजीनियरिंग, सेना, उद्योग, बिजली, मैडिकल, एवं प्रशासनिक शिक्षा सम्बन्धी।	लेखनादि कार्य, मैडीकल शिक्षा, सौंदर्य प्रसाधन, औषधि निर्माण व योजना सम्बन्धी।	बिजली (इलैक्ट्रानिक), सर्जरी की शिक्षा, शस्त्र विद्या सीखना, अग्नि, स्पोर्टस, भूगर्भ विज्ञान, दंत चिकित्सा आदि।	गणित, लेखनादि, बौद्धिक कार्य, बैंक वकालत, तकनीकि हुनर, ज्योतिष, विज्ञान, वाहनादि चलाना सीखना।	दर्शन-शास्त्र, धर्म मंत्र ज्योतिष, वकालत, उच्च पद प्रशासनिक शिक्षा वैद्यक आदि।	नृत्य, वाद्य, गायन, कला, संगीत, ऐक्टिंग, गीत-काव्य, रचना, स्त्रियों एवं सौंदर्य सम्बन्धी शिक्षा।	तकनीकी शिल्प, कला, मशीनरी सम्बन्धी ज्ञान (Engineering) अंग्रेज़ी, उर्दू, फारसी का ज्ञान शुरु करना।
व्यापार सम्बन्धी कार्य	राज्य प्रशासनिक कार्य सेनाधिकारी, ज्यूलर्ज, औषधि, शस्त्र, अग्नि, अनाज, सोना, तांबा, चाँदी, गाय, बैलादि का क्रय-विक्रय, मैडीकल, इलैक्ट्रीकल, मंत्रानुष्ठान यज्ञादि।	कृषि, गाय, भैंस, दूध, घी डेयरी, फार्म, औषधि, सोडादि तरल पदार्थ, शंख, मोती, स्त्री, धन सम्पदा, सौंदर्य प्रसाधन, सुगन्धि (Perfumes) सम्बन्धी वस्तुओं का क्रय-विक्रय, विदेशी पत्राचार आदि।	शक्ति, अग्नि एवं बिजली से सम्बिन्धत कार्य, बेकरी electronics, स्पोर्टस Goods, सोना, तांबा, मूंगा, पीतलादि का क्रय भूमि, सर्जरी एवं रक्षा सामग्री, सन्धि विच्छेद आदि कार्य।	कृषि एवं व्यापारिक वस्तुओं का क्रय-विक्रय, शेयरों का क्रय, पुस्तक, लेखन प्रशासन, लेखाकार्य (Accounts) शिक्षण, वकालत, शिल्प, एवं सम्पादन कार्य, वाहन क्रय-विक्रय।	धार्मिक अनुष्ठान, उच्च प्रशासनिक कार्य, उच्च शिक्षा के कार्य, आभूषण, औषधि, लकड़ी, भूमि, वाहनादि का लेन-देन, विदेश गमनादि कार्य।	संगीत, सिनेमा, विदेश बारे, टैलीविजन, स्त्रियों, एवं श्रृंगारिक वस्तुओं से संबन्धित कार्य, रूई, कपड़ा बैंकिंग, चाँदी, जवाहरात, रसायन, शराब, सोडा, सुगन्धित द्रव्य, वाहनादि क्रय-विक्रय, खुशबूदार वस्तु।	मशीनरी, लोहा, लकड़ी चमड़ा, सीमेंट, तेल, पैट्रोल, पत्थर, भूमि, ठेकेदारी, शस्त्रों का क्रय-विक्रय, अन्वेषण एवं आप्रेशण कार्य, अधीनस्थ कर्मचारी, वाहनादि प्रयोग विदेश-यात्रादि कार्य।

नाम वार	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि
नवीन वस्त्र धारण करना	शुभ है	मध्यम	अशुभ	शुभ	शुभ	अति शुभ	अशुभ
नवीन आभूषण धारण	शुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ
तेल लगाना	अशुभ	शुभ	अशुभ	विशेष शुभ	अशुभ	शुभ	विशेष शुभ
हजामत करना	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम
नया जूता पहनना	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम
मुकद्दमा करना	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ

अभिजित मुहूर्त्त

पुराणानुसार अभिजित मुहूर्त्त काल में क्रियमाण सभी कर्म प्रायः सफल होते हैं। भगवान् विष्णु के सुदर्शन चक्र की भान्ति अभिजित् मुहूर्त्त सब दोषों को नाश कर देता है–**दिनमध्यगते सूर्ये मुहूर्त्ते हि अभिजित् प्रभुः। चक्रमादाय गोविन्दः सर्वान्दोषान्निकृन्तति॥**

दिनमान के अर्ध भाग में स्थानीय सूर्योदय जमा कर देने से अभिजित् मुहूर्त्त का मध्य भाग निकल आता है। '**नारद पुराण**' के अनुसार **अभिजित्** के मध्याह्न काल से 1 घटी अर्थात् 24 मिनट पूर्व और मध्याह्न से 24 मिनट पश्चात् तक के समय को **अभिजित् काल** कहा जाता है।

उदाहरण–मान लो, आपने 28 नवम्बर को अभिजित मुहूर्त्त का समय जानना है, तो उस दिन के दिनमान (25/30 घटी पल) का अर्धभाग 12 घड़ी, 45 पल होंगे। इस अर्ध भाग के 5 घंटे, 6 मिनट बनते हैं। इनके उस दिन में जालन्धर के सूर्योदय 7/10 घं. मिं. में जमा कर देने से दुपै. 12 बजकर 16 मिनट पर अभिजित मुहूर्त्त का मध्यकाल होगा। इससे 24 मिनट पूर्व अर्थात् 11/52 घं. मिं. से अभिजित का प्रारम्भ काल तथा (12:16 + 00:24 मिनट = 12 घं. 40 मिनट पर अभिजित का समाप्ति काल (घंटा मिंट) होगा।

आवश्यक मुहूर्त निर्णय

आगे हम भारतीय संस्कृति एवं शास्त्रानुसार मुख्य मुहूर्त्तों का निर्णय प्रकार दे रहे हैं, जिसमें विभिन्न मुहूर्त्तों में ग्राह्य मास, तिथि, वार, नक्षत्र आदि का विवरण दे रहे हैं। **ध्यान रहे,** सभी मुहूर्त्तों में वर्ज्य तत्त्वों जैसे–अधिक मास, क्षय मास, पितृ पक्ष, रिक्ता-तिथि (४, ९, १४), वैधृति-व्यतीपात आदि दुष्ट योग, भद्रा (भूलोके) एवं गुरु-शुक्रास्तादि का भी विचार कर लेना उचित होगा। ज्ञातव्य रहे, पंचांगदिवाकर में षोडश संस्कार अन्तर्गत गर्भाधान से अन्नप्राशन तक के मुहूर्त्त स्थायी स्तम्भ **'भारतीय संस्कृति में संस्कारों का महत्त्व'** में दिए रहते हैं। हम इसके आगे के मुख्य मुहूर्त्तों का ग्राह्य-अग्राह्य तत्त्वों का निर्णय प्रकार लिख रहे हैं–

(1) मुण्डन (चौल, चूड़ाकरण) मुहूर्त्त

जन्म या गर्भाधान से ३, ५, ७ आदि विषम वर्षों में मुण्डन संस्कार किया जाता है। कुलाचार अनुसार इसे प्रथम वर्ष भी सम्पन्न कर लेते हैं अथवा यज्ञोपवीत संस्कार के साथ करते हैं। कन्या का चौल (मुण्डन) संस्कार सम वर्षों में होता है।

ग्राह्य मास–उत्तरायण मासों में (14 जन. से 15 जुला.–आषाढ़ तक)–यथा–वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, माघ व फाल्गुन मास।

ग्राह्य तिथि–२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२ (कृ. व शु. पक्ष), १३ (शुक्लपक्ष) एवं पूर्णिमा।

ग्राह्य वार–सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार सभी वर्णों के लिए शुभ हैं। (परन्तु ब्राह्मणों को रविवार, क्षत्रियों को मंगलवार तथा वैश्यों को शनिवार मुण्डनादि कार्यों के लिए विशेष शुभ माने गए हैं।) शुक्ल पक्ष का सोमवार विशेष शुभ होता है, जबकि कृष्ण पक्ष का सोमवार अशुभ (साधारण) होता है।

ग्राह्य नक्षत्र–लघु संज्ञक नक्षत्र (अश्वि., पुष्य, हस्त, अभि.), अनुराधा नक्षत्र को त्यागकर मृदुसंज्ञक (मृग., चित्रा, रेवती) तथा चरसंज्ञक (पुन, स्वा., श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा) तथा ज्येष्ठा नक्षत्रों में मुण्डन कार्य शुभ रहते हैं।

कुछ विद्वान जन्म-मास व जन्म-नक्षत्र, विरुद्ध व विपरीत चन्द्र (४, ८, १२ व शत्रुगत) में वर्ज्य मानते हैं–

न जन्ममासे न च जन्मभे तथा विधौ विरुद्धेऽशुभतारकासु।
युग्माब्दमासे न च कृष्ण पक्षे चूडा न कार्या खलु चैत्रमासे।।

परन्तु कुछ विद्वान जन्म नक्षत्र या जन्म राशि को शुभ मानते हैं।

नोट–ज्येष्ठा नक्षत्र में ज्येष्ठ (बड़े) लड़के का मुण्डन न करें।

शुभ लग्न–२, ३, ४, ६, ७, ९ या १२ राशियों के लग्न अथवा इनके नवांश में मुण्डन शुभ होते हैं। ग्राह्य लग्न राशि जन्म-लग्न या जन्म-राशि से अष्टमस्थ न हो। अष्टम भाव (शुक्र के अतिरिक्त) शुद्ध होना चाहिए। सामान्य लग्न शुद्धि तो आवश्यक ही है।

तारा-शुद्धि–मुहूर्त्त ग्रन्थों में चूड़ाकरण (मुण्डन) में तारा का प्रबल होना चन्द्रमा से भी अधिक आवश्यक माना गया है। (ज्योतिर्निबन्ध)

परन्तु तारा-विचार कृष्ण-पक्ष में ही विचारणीय है, शुक्ल पक्ष में नहीं। शुक्ल पक्ष में चन्द्र-बल ही विचारणीय है।–**'कृष्णे बलवती तारा शुक्लपक्षे बली शशी।'** (नारद), अपि च, कृष्ण पक्ष में भी अशुभ तारा होने पर भी यदि चन्द्रमा उच्चस्थ, मित्रवर्ग या किसी शुभ ग्रह के साथ हो, तो मुण्डन कार्य किया जा सकता है। ('तारा-चक्र' वि. संवत् २०७४ के पंचांगदिवाकर में देखें।)

विशेष ध्यातव्य–यदि बालक की माता रजस्वला या गर्भवती हो, और गर्भ पाँच मास से अधिक का हो, तो मुण्डन कार्य न करावें। इस संस्कार से गर्भ नष्ट हो सकता है, परन्तु यदि संस्कार्य बालक 5 वर्ष से अधिक हो, तो माता के गर्भ के दोषापत्ति नहीं रहती।

(2) नूतन अक्षर–लेखनारम्भ मुहूर्त्त

बालक की पाँच वर्ष की अवस्था में सम्प्राप्त हो जाने पर आगे वर्णित विशुद्ध दिन को श्रीगणेश, सरस्वती, लक्ष्मीनारायण, गुरु एवं कुलदेवता की पूजा के साथ उसे लिखने-पढ़ने के उद्देश्य से नूतन अक्षराम्भ संस्कार करवाना चाहिए। उपर्युक्त देवताओं के नाम से घी का हवन करे तथा ब्राह्मणों को दक्षिणादि से सन्तुष्ट करना चाहिए। तदनन्तर पूर्वाभिमुख गुरु के सम्मुख पश्चिमाभिमुख बालक को अक्षरारम्भ करवाना चाहिए। संस्कार्य बालक का चन्द्र-बुध बल अपेक्षित है।

ग्राह्य मास–कुम्भस्थ सूर्य को छोड़कर उत्तरायण मासों में (14 जन. से 15 जुला. तक), कुछ विद्वान कुम्भस्थ सूर्य की अवधि को भी ग्राह्य मानते हैं।

ग्राह्य तिथि–२, ३, ५, ७, १०, ११, १२।

ग्राह्य वार–सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र–अश्वि., आर्द्रा, पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., ज्ये., अभि., श्रव. और रेवती नक्षत्र।

शुभ लग्न–२, ३, ६, ९, १२ लग्नराशि। अष्टम भाव ग्रहरहित होना चाहिए।

नोट–यज्ञोपवीत (उपनयन) संस्कार से पहिले अक्षराम्भ और व्रतबन्ध के पश्चात् वेदारम्भ शुभ होता है।

(3) विद्यारम्भ–मुहूर्त्त

वर्णमाला-गणितादि में बालक परिपक्व हो जाने पर भविष्यत् आजीविका-प्रदात्री कोई विशेष या सर्वसामान्य विद्या का शुभारम्भ करना चाहिए।

ग्राह्य मास—फाल्गुन मास को छोड़कर उत्तरायण के मास।

ग्राह्य तिथि—२, ३, ५, ६, १०, ११, १२

ग्राह्य वार—रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि., रोहि., मृग. आर्द्रा, पुन, पुष्य, आश्ले, पू.फा., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, पू.षा. उ.षा., श्रव., धनि., शत., पू.भा., उ.भा. और रेवती।

शुभ लग्न—२, ५, ८ राशि लग्न। तथा केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह तथा ३, ६, ११वें क्रूर ग्रह हों।

(4) उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्त

यह नवम संस्कार यज्ञोपवीत, व्रतबन्ध, उपनयन, मौञ्जिबन्धन और जनेऊ आदि नामों से प्रचलित है। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य का प्रथम जन्म माता के गर्भ से और द्वितीय जन्म व्रतबन्ध से संस्कृत होने पर माना गया है। अतः वे **'द्विज'** वा **'द्विजन्मा'** कहलाने के अधिकारी हैं। अतः ऐसे महत्त्वपूर्ण संस्कार को शास्त्र-सम्मत् काल में विधिवत् सम्पादित करना चाहिए।

उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार कब करना चाहिए ? इस संस्कार में काम्य, नित्य और गौण काल के भेद से तीन प्रकार के काल कहे गए हैं। ब्राह्मण बालक के गर्भधारण या जन्मदिन से पंचम वर्ष में काम्यकाल या अष्टम वर्ष में नित्यकाल ; क्षत्रिय का षष्ठ या 11वें वर्ष में क्रमशः काम्य व नित्यकाल एवं 8वें या 12वें वर्ष में वैश्य का काम्य व नित्यकाल में उपनयन संस्कार हो जाना चाहिए।

यदि उपरोक्त वर्षों तक उपनयन संस्कार न हो सके, तो उपरोक्त वर्षों को द्विगुणित कर देने से मध्यमान्तर काल **'गौण-काल'** माना गया है। अर्थात् 8 से 16वें वर्ष तक ब्राह्मण का, 11 से 22 वर्ष तक क्षत्रिय का तथा 12 से 24 वर्ष तक वैश्य का यज्ञोपवीत संस्कार मध्यम फलप्रदी होने से अत्यावश्यकता में करणीय हैं।

शुभ ग्राह्य मास—चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (देवशयनी एकादशी से पूर्वकाल तक), माघ व फाल्गुन मास।

ज्ञातव्य बिन्दु—***(i)*** ज्येष्ठ पुत्र के लिए ज्येष्ठ मास त्याज्य रखना चाहिए। मीनस्थ सूर्य यज्ञोपवीत में शुभ कहा गया है। (निर्णय सिन्धु)

(ii) यज्ञोपवीत संस्कार के लिए वसन्त ऋतु तथा अष्टम वर्ष की उत्कृष्टता इतनी है कि दोनों के संयोग में जन्ममास-तिथि-नक्षत्र भी दूषित नहीं होते।

(iii) यद्यपि जन्ममास यज्ञोपवीत में त्याज्य है, तथापि आवश्यक होने पर जन्मदिन से दस दिन छोड़कर अन्य दिनों में संस्कार दोषपूर्ण नहीं होता। (राजमार्तण्ड)

(iv) अन्य मतानुसार जन्मकालिक पक्ष को छोड़कर दूसरे पक्ष में शुभ कार्य करने पर जन्म मास का दोष नहीं रहता। (निर्णय सिन्धुः)

ग्राह्य तिथि—शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, १०, ११, १२ एवं कृष्ण पक्ष की–१, २, ३, ५ तिथियां शुभ हैं।

ज्ञातव्य बिन्दु—*(i)* चैत्र-वैशाख शुक्ल तृतीया, माघ शुक्ल सप्तमी तथा फाल्गुन शुक्ल तृतीया उपनयन में विशेष रूप से ग्राह्य हैं। (पुरुषार्थ-चिन्तामणि)

(ii) मन्वादि-युगादि-*सोपपद तिथियां, चतुर्दशी, अमावस्या, प्रतिपदा, अष्टमी तथा निरयण सूर्य संक्रान्ति दिन उपनयन संस्कार के लिए त्याज्य हैं। इसी प्रकार पौष, माघ और फाल्गुन की तीनों कृष्णाष्टमी तथा ७, ८, ९ तिथियां **'अष्टका'** संज्ञक त्याज्य हैं।

ग्राह्य वार—रवि, सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार।

वर्णेश, शाखेश बल—विशेष रूप से **ब्राह्मणों** को गुरु व शुक्रवार में, **क्षत्रियों** का रवि, मंगलवार में तथा **वैश्यों** का सोम और बुधवार में उपनयन शुभ हैं, क्योंकि ये ही इनके वर्णेश हैं। (पुरुषार्थ-चिन्तामणि)

(ii) बुध यदि अस्त हो या पापाक्रान्त हो, तो बुधवार त्यागें।

(iii) मुहूर्त्त के दिन बालक का चन्द्र ४, ८, या १२वें नहीं होना चाहिए।

शुभ समय—**पूर्वाह्न उत्तम,** मध्याह्न मध्यम और अपराह्न वर्जित कहा गया है।

शुभ नक्षत्र—अश्वि., रोहि., मृग., आर्द्रा, पुन., पुष्य, आश्ले., पू.फा., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, पू.षा., उ.षा., अभि., श्रव., धनि., शत., पू.भा., उ.भा. और रेवती नक्षत्र।

ब्राह्मणों के लिए पुनर्वसु नक्षत्र त्याज्य है।

शुभ लग्न—विशेषतया २, ३, ५, ६, ९ राशि लग्न उत्कृष्ट कहे गए हैं, तथापि कोई भी राशि लग्न ग्राह्य हैं, जब ८, १२वां भाव शुद्ध ; ३, ६, ११वें पापग्रह, अन्यत्र (लग्न बिना) सौम्य ग्रह तथा वृष या कर्कस्थ पूर्णचन्द्र लग्न में हो। पुनः गुरु, शुक्र और स्वशाखा, स्ववर्ण का अधिपति ग्रह उच्चस्थ, स्वक्षेत्री, वर्गोत्तम, मूलत्रिकोण या केन्द्र-त्रिकोणस्थ हो, तो वह काल उपनयन में शुभ जानना चाहिए।

सूर्य-चन्द्र व गुरु बल (त्रिबल)—उपनयन मुहूर्त्त के प्रवरण हेतु संस्कार्य बालक की जन्मराशि से सूर्य, गुरु और चन्द्र बल का विचार अवश्य करना चाहिए।

रवि-चन्द्र-गुरु शुद्धि चक्र

ग्रह बल	सूर्य बल	चन्द्र बल	गुरु बल
शुभ स्थान	३,६,१०,११	१,२,३,५,६,७,९,१०,११	२,५,७,९,११
पूज्य स्थान	१,२,५,७,९	१२	१,३,६,१०
अनिष्ट स्थान	४,८,१२	४,८	४,८,१२

उच्चस्थ, स्वनवांश, मित्रराशि या वर्गोत्तम या स्वराशि में गुरु हो, तो अनिष्ट गुरु भी ग्राह्य होता है।

रोग–बाण—उपनयन मुहूर्त्त में रोगबाण का भी विचार किया जाता है। (रोगबाण प्रत्येक

*सोपपद तिथियाँ—ज्ये. शुक्ल २, आषाढ़ शुक्ल १०, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२

राशि के 9, 18, और 27वें अंश में स्थित सूर्य का संचारकाल होता है) परन्तु ध्यान रहे, रोगवाण और चौरवाण का विचार रात्रि में किया जाता है। तथा उपनयन का समय तो पूर्वार्द्ध या मध्याह्न तक ही होता है। अपि च, लग्न बल की उपलब्धि में बाण विचार निरर्थक है-

लग्ने पूर्णबलोयेते न दोषः पंचकस्य च।। -मुहूर्त्त गणपति

नोट-यदि संस्कार्य बालक की माता रजस्वला हो जाए तो उसकी शुद्धि के बाद ही यज्ञोपवीत संस्कार करना चाहिए।

(5) केशान्त कर्म मुहूर्त्त

ब्राह्मण को 16वें, क्षत्रियों को 22वें तथा वैश्य को 24वें वर्ष में केशान्त संस्कार करना चाहिए। इस संस्कार के लिए काल-शुद्धि, ग्राह्य-वर्ज्य दोष चूड़ाकर्म (मुण्डन) संस्कार के सदृश ही जानने चाहिएं।

(6) समावर्तन मुहूर्त्त

यह संस्कार आचार्य-गृह (गुरुकुल) में विद्या समाप्त कर गृहस्थाश्रम में प्रवेश के समय एक विशेष अनुष्ठान के रूप में किया जाता है। केशान्त तथा विवाह संस्कार के मध्यवर्त्ती काल में, जब बालक गुरु से अध्ययन करके स्वगृह लौटता है, तब उपाकर्म की तरह ही समावर्तन करना चाहिए। इसे कुछ विद्वान लोग **'मौंजी-मोक्षण'** संस्कार भी कहते हैं। इस संस्कार में वर्ज्य-ग्राह्य एवं काल-शुद्धि आदि उपनयन संस्कार की भान्ति रहेगी। समावर्तन संस्कार के उपरान्त ही ब्रह्मचारी विद्याव्रत स्नातक कहलाता है।

विवाह संस्कार

विवाह गृहस्थाश्रम का सर्वप्रमुख संस्कार है। इस संस्कार के प्रमुख तीन उद्देश्य होते हैं- (1) अनर्गल प्रवृत्ति का निरोध, (2) पुत्रोत्पादन द्वारा वंश की रक्षा एवं (3) भगवत्प्रेम का अभ्यास। ऋषि-ऋण, देव-ऋण और पितृ-ऋण-इन तीन ऋणों का शोधन कर अपना चित्त मोक्ष में लगाना चाहिए। तीन ऋणों से बिना छुटकारा पाये मुक्ति मार्ग का आश्रय लेने से मानव का पतन हो जाता है। अतएव स्वाध्याय द्वारा ऋषि-ऋण, यज्ञ-साधन द्वारा देव-ऋण और पुत्रोत्पत्ति द्वारा पितृ-ऋण से सद्गृहस्थ मुक्त होते हैं। नैष्ठिक ब्रह्मचारी के समस्त ऋण ज्ञानयज्ञ में लय हो जाते हैं।

गृहस्थ बनने के लिए मन के अनुरुपा, भिन्नगोत्रीया, अपने से अल्पवयस्का एवं अनन्यपूर्विका (पहिले किसी के साथ अविवाहिता) कन्या का पाणिग्रहण करें।

(7) वर-वरण (सगाई) मुहूर्त्त

वर-कन्या की जन्मपत्रियों में परस्पर सम्यक् मिलान हो जाने के पश्चात् दोनों के माता-पिता विवाह के संकल्प (वाग्दान) को सम्पुष्ट करने के लिए वर-कन्या का वरण (सगाई) करते हैं। इसके निम्नलिखित शुभ मुहूर्त्त में कन्या का भाई कुल पुरोहित (ब्राह्मण) एवं परिवार के सन्निकट सगे-सम्बन्धियों के साथ यज्ञोपवीत, नारियल, साबुत सुपारी, हल्दी, अक्षत, छुहारे, गुड़, वस्त्र, अँगूठी, मिष्ठान्न, फल, फूलादि अर्पण करके वर का शास्त्र प्रशस्त मांगलिक मन्त्रों के साथ वरण करें। (पूर्ण विधि जानने के लिए हमारी नवीन प्रकाशित **'विवाह-पद्धति'** का अवलोकन करें।)

ग्राह्य मास-पौष एवं चैत्र मास (धनु एवं मीनस्थ सूर्यकालीन) को छोड़कर शेष मास।

शुभ-ग्राह्य तिथि-१ (कृष्ण पक्ष की), २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (दोनों पक्षों की), १३ (शुक्ल) एवं पूर्णिमा तिथि।

ग्राह्य वार-रवि, चन्द्र, बुध, गुरु तथा शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र-कृति., रोहि., मृग, तीनों पूर्वा, हस्त, श्रवण, चित्रा।

शुभ लग्न-सभी राशि लग्न, परन्तु केन्द्र/त्रिकोण में शुभ ग्रह तथा 3, 6, 11वें भावों में क्रूर ग्रह हों।

(8) कन्या-वरण मुहूर्त्त

वर-वरण की भान्ति ही वर के माता-पिता अथवा रक्त-सम्बन्धी कन्या के वरण के लिए कन्या के घर में जाकर शास्त्र-प्रशस्त मांगलिक मन्त्रों के साथ वरण करें।

शुभ मास-धनुस्थ एवं मीनस्थ (पौष एवं चैत्र मास) सूर्य को छोड़कर शेष मास।

ग्राह्य तिथि-१ (कृष्ण पक्ष की), २ ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (दोनों पक्षों की), १३ (शुक्ल) एवं पूर्णिमा।

ग्राह्य नक्षत्र-मघा, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा तथा विवाह-मुहूर्त्त वाले सभी नक्षत्र।

शुभ लग्न-सभी राशि लग्न, तथा केन्द्र/त्रिकोण में शुभ ग्रह (बुध, गुरु, शुक्र) हों।

(9) विवाहांग कृत्यारम्भ मुहूर्त्त

विवाह से पूर्व महत्त्वपूर्ण कृत्य जैसे-दलन, कण्डन, अनाज-शोधन, पिष्टीकरण, घर को लीपना (पेंट), सजाना, चित्रकारी करना, स्तम्भारोपण, अंकुरार्पण, गणेशादि पूजन, वस्त्रालंकार संग्रह, भूषण-कंकणादि धारण, कलश-स्थापन, मंगल-स्नान तथा नान्दीश्राद्धादि विवाहांग कृत्यों को विवाह दिन से पूववर्ती ३, ६, ९वें दिनों को छोड़कर करना चाहिए। इन्हें विवाह-मुहूर्त्तोक्त नक्षत्रों तथा सामान्य पंचांग शुद्धि में २, ४, ५, ७, ८, १०, ११, १२ दिन पूर्व करें।

वेदिका निर्माण और स्तम्भारोपण

विवाह में वेदी-रचना (मण्डप) भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। ब्राह्मणों के लिए विवाह के लिए (कन्या) के 4 हाथ परिमित लम्बी-चौड़ी, एक हाथ ऊँची और पूर्व की ओर क्रमशः ढालु होती हुई वेदी बनानी चाहिए। समस्त वर्णों के लिए कन्या-घर के बायीं ओर वेदी का निर्माण करना चाहिए। अर्थात् घर के बाहर घर की ओर मुँह करके खड़े व्यक्ति के दायीं ओर बनाई जाए। इस मण्डपवेदी को चारों ओर चार मण्डप-स्तम्भों से आवृत्त किया जाता है। मण्डप निर्माणान्तर्गत प्रथण स्तम्भ के आरोपणार्थ दिशा ज्ञान के हेतु सूर्य राशि संचार के अनुसार निम्न चक्र द्रष्टव्य है-

दिशा	ईशान	आग्नेय	नैर्ऋत्य	वायव्य
सूर्य राशि	५,६,७	२,३,४	११,१२,१	८,९,१०

अर्थात् सूर्य के सिंह, कन्या, तुला राशि संचार कालीन (भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक मास) स्तम्भ ईशान कोण में सर्वप्रथम गाड़ा जाना चाहिए।

विशेष—मण्डप निर्माणारम्भ में **'विवाहांग कृत्यारम्भ'** में कहे हुए तत्त्वों का विचार तथा मंगलवार व पंचक-नक्षत्रों का परित्याग करना चाहिए।

विवाह कार्य पूर्ण हो जाने के अनन्तर पूर्वनिर्मित मण्डपादि तथा पूर्वामन्त्रित गणेशषोडश-मातृकादि का विसर्जन २, ४, ५, ७वें दिन करना शुभावह माना गया है।

ध्यान रहे—नान्दीमुख श्राद्ध से मण्डपोद्वासन पर्यन्त पिता, भाई तथा सभी सगोत्र/सपिण्ड बान्धवों को दर्श श्राद्ध, क्षयश्राद्ध, ठण्डे पानी से स्नान, अपसव्य, स्वधाकार, नित्यश्राद्ध, ब्रह्मयज्ञ, अध्ययन, नदी व सीमा का लांघना, उपवास, व्रत और श्राद्ध में भोजन नहीं करना चाहिए।

(10) तैलादि–लापन (चढ़ाने) का मुहूर्त्त

वर-कन्या जिसको विवाह से पूर्व तैल चढ़ाना (उबटन) हो, उसका चन्द्र-बल देख लेना चाहिए। तैलादि मंगल कार्य हेतु मेषादि राशि वालों के लिए चक्र में निर्दिष्ट संख्या दिन के पूर्व (पहिले) करना चाहिए। **उदाहरणार्थ**—मिथुन राशि वाले वर-कन्या को विवाह से 5 दिन पूर्व तैलाभ्यंग करना चाहिए। इसमें विवाह का दिन गिनती में न करें।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
तैलसंख्या	7	10	5	10	5	7	7	5	5	5	5	7

(11) विवाह–मुहूर्त्त

विवाह-मुहूर्त्त निर्णय में सामान्य वर्ज्य दोषों के अतिरिक्त लतादि दस दोषों का विवरण तथा लग्न शुद्धि एवं अन्य घटक तत्त्व इसी पंचांग में वार्षिक विवाह-मुहूर्त्तों के अनन्तर पृष्ठों पर प्रतिवर्ष दिया रहता है। मुख्य ग्राह्य मासादि का विवरण पुन: लिख रहे हैं–

ग्राह्य मास—विवाह संस्कार में पूर्वाचार्यों ने यद्यपि वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, मार्गशीर्ष, माघ व फाल्गुन मास ग्रहण किए हैं। परन्तु अनेक विद्वानों एवं मुहूर्त्त चिन्तामणि पीयूषधारा अनुसार लोकाचार से श्रावण, भाद्रपद, आश्विन मास भी ग्रहणीय हैं। इसीदिन (भद्रदेश) पंजाब (हि.प्र., हरियाणा, जम्मू सहित) में अति प्राचीन काल से श्रा., भाद्र., आश्वि महीनों में विवाह करने की प्रथा चली आ रही है। पर्वतीयों प्रदेशों (हि.प्र., उत्तराखण्ड आदि) में कार्तिक मास में भी विवाह होते हैं।

ग्राह्य तिथि—कृष्णपक्ष की त्रयोदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तक की तिथियों को छोड़कर शेष तिथियों में।

ग्राह्य वार—सभी वार ग्रहणीय है। परन्तु रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र विशेष शुभ तथा मंगल-शनिवार मध्यम कहे गए हैं।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि., रोहि., मृग., मघा, उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, उ.षा., श्रव., धनि., उ.भा. और रेवती नक्षत्र।

अश्वि., चित्रा, श्रव. व धनिष्ठा—ये चार विवाह नक्षत्र कात्यायन गृहसूत्रोक्त त्रिपुत्रिपूत्तरादिषु प्रमाणानुसार ग्रहण किए गए हैं। गृहसूत्र के अतिरिक्त 'धर्मसिन्धु', 'ज्योतिर्विदाभरणम्' तथा 'सत्यकृत्य मुक्तावली' ग्रन्थ में भी ये चारों नक्षत्र विवाह हेतु ग्राह्य माने गए हैं।

विवाह में लग्न शुद्धि एवं विशेष विषयों पर विचार—विवाह में त्रिविक्रमसंहिता अनुसार शुद्ध काल, लग्न-शुद्धि, लग्न-बल, वर-कन्या के सम-विषम वर्षों का विचार, भद्रादि दोष, गोधूली लग्न सम्बन्धी सभी विषयों का निर्णयप्रकार सप्रपञ्च इसी पंचांग में वार्षिक विवाह-मुहूर्त्त वाले पृष्ठों के बाद स्थायी स्तम्भों में देखें।

(12) नववधू प्रवेश–(वध्वागमन) मुहूर्त्त

विवाह दिन से 16 दिनों के मध्यान्तर में सम दिनों में एवं 5, 7, 9वें विषम दिनों एवं स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है। उपरोक्त दिनों में तिथि और नक्षत्रादियों का नियम नहीं होता। यदि ऊपर कहे हुए दिनों में वधू प्रवेश न हो सके तो विषम दिनों (तिथियों) में, विषम मासों में और विषम वर्षों में होना चाहिए। परन्तु यदि किसी कारण अथवा दैवगत व्यवधान के कारण पाँच वर्ष तक भी नववधू प्रवेश न हो सके तो फिर किसी भी अन्य शुभ मुहूर्त्त में प्रवेश करना चाहिए। 16 दिन के पश्चात् ही निम्न तिथ्यादि तत्त्व विचारणीय होंगे–

ग्राह्य मास—कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथियाँ तथा ४, ९, १४ तिथियाँ त्यागकर सभी तिथियां।

ग्राह्य वार—सोम, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि., रोहि., मृग, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, उत्तरा-तीनों, श्रव., धनि. तथा रेवती।

शुभ लग्न—५, ८, ११ लग्न विशेष शुभ हैं। परन्तु अन्य लग्नों में भी (४, ८ भाव शुद्ध होने पर) वधू प्रवेश रात्रि के समय किया जा सकता है।

नववधू प्रवेश के समय भद्रा, व्यतिपातादि अशुभ दोषों का विचार तो करना ही चाहिए।

विवाह के बाद प्रथम वर्ष में कन्या वास-चिन्तन

विवाह के पश्चात् नव-परिणीता स्त्री प्रथम ज्येष्ठ मास में पति के घर निवास करे, तो पति के ज्येष्ठ (जेठ) को, प्रथम अधिक मास में पति को, क्षय मास में स्वयं का, प्रथम आषाढ़ (मासान्तर श्रावण) में सास को एवं पौष में श्वसुर को अशुभ फल प्राप्त होता है। इसी प्रकार प्रथम चैत्र मास में मायके (पितृ-गृह) में रहने से पिता को अशुभ फल प्राप्त होता है।

(13) द्विरागमन (मुकलावा) मुहूर्त्त

नवविवाहिता वधू का वधू-प्रवेश के अनन्तर पिता के गृह में लौटकर पुन: भर्तृगृह गमन (ससुराल) **'द्विरागमन'** कहलाता है। अत: इसे **'पुनर्वधूप्रवेश'** भी कहा जा सकता है।

द्विरागमन काल—यदि द्विरागमन विवाह दिन से 16 दिन के मध्यान्तर में किया जाए तो विषम या सम दिनों में सूर्य- चन्द्र बल, गुरु-शुक्रास्त, गुरु-शुक्र बाल्य-वृद्धत्व, एकराशिगत सूर्य-

चन्द्र, सम्मुख एवं दक्षिणस्थ शुक्र, भद्रा का विचार नहीं किया जाता। परन्तु यदि 16 दिनों के बाद

ग्राह्य तिथि—१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, ११, १२ तथा शुक्ल पक्ष की १३

चन्द्र, सम्मुख एवं दक्षिणस्थ शुक्र, भद्रा का विचार नहीं किया जाता। परन्तु यदि 16 दिनों के बाद हो, तो द्विरागमन में ये घटक त्याज्य रहेंगे। विवाह के बाद प्रथम, तृतीय या पंचम-सप्तमादि विषम वर्षों में वर (पुरुष) के सूर्य एवं गुरु तथा दोनों (वर-वधू) के चन्द्रमा बलवान् होने पर पत्नी का द्विरागमन शुभ होता है।

ग्राह्य मास—मेष, वृश्चिक तथा कुम्भस्थ कालीन सूर्य अर्थात् वैशाख, मार्गशीर्ष तथा फाल्गुन सौर मासों में।

ग्राह्य शुभ तिथि—शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ एवं पूर्णिमा।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत. तथा रेवती नक्षत्र।

शुभ लग्न—२, ३, ६, ७, १२ लग्न विशेष शुभ हैं तथा इन पर शुभ ग्रहों की दृष्टियां हों। लग्न से ३, ६, १०, ११वें गुरु तथा केन्द्र भावों में शुक्र विशेष शुभप्रद होगा।

शुक्र-विचार—शुक्र की शुद्धि द्विरागमन में अत्यावश्यक है। शुक्र जिस दिशा में उदित हुआ हो, उसी दिशा से शुक्रवास का विचार करना चाहिए। **उदाहरणार्थ**—जैसे यदि शुक्र पूर्व दिशा से उदय हुआ हो [जब शुक्र, सूर्य से पीछे (कम) रहता है, तो प्रातःकाल पूर्व में उदित रहता है।]—उस समय पूर्व-उत्तर (आग्नेय-ईशान) की यात्रा में शुक्र सम्मुख-दक्षिण होने से अशुभ होगा। परन्तु पश्चिम-दक्षिण (नैर्ऋत्य-वायव्य) की यात्रा में शुक्र पृष्ठ-वाम (बाएं) होने से शुभ है। इसी प्रकार शुक्र जब सूर्य से आगे (अधिक) रहता है, तो सन्ध्या में पश्चिम में उदित रहता है, उस समय पश्चिम (वायव्य) की यात्रा में शुक्र सम्मुख (सामने) तथा दक्षिण की यात्रा में दक्षिण (दाहिना) होता है। अत: पूर्व (आग्नेय) तथा उत्तर (ईशान) की यात्रा में पृष्ठ एवं वाम (बाएं) शुक्र होते हैं। **सम्मुख एवं दक्षिण** शुक्र में बालक, गर्भिणी तथा नवोढ़ा के लिए यात्रा अशुभ कही गई है।

यह शुक्र का विचार तृतीयादि विषम वर्ष के द्विरागमन, नवविवाहिता तथा गर्भिणी की यात्रा में करना आवश्यक है।

सम्मुख-शुक्र का परिहार—एक ही नगर/ग्राम में, किसी विषय (बिमारी या उत्पात) आदि के उपद्रव में, विवाह सम्बन्धी यात्रा में, देव-तीर्थ यात्रादि में, राज-पीड़ित होकर और विवाह के बाद एक वर्ष के भीतर स्त्री पिता के घर से पतिगृह की यात्रा करें तो सम्मुख-दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होगा। अपि च, जब चन्द्रमा रेवती से मृगशिर तक हो, तो भी सम्मुख-दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। क्योंकि इस अवधि में शुक्र अन्धा हो जाता है। इसीप्रकार पति द्वारा पत्नी के ले जाने पर (अर्थात् यदि पति साथ हो) तो तथा भृगु, अंगिरा, वत्स, वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि और भारद्वाज—इन 7 मुनियों के वंश (गोत्र) में भी सम्मुख शुक्र का दोष नहीं लगता है।

(14) प्रथम स्त्री—समागम मुहूर्त्त

रजोदर्शन उपरान्त 16 रात्रि पर्यन्त, प्रथम चार रात्रियों को छोड़कर शेष 12 रात्रियों में स्त्री संगम (समागम) करें। पुरुष अपने चन्द्र बल में प्रसन्नचित्त होकर नवांगना से प्रथम-समागम करे। विषम रात्रि में संभोग से गर्भ होने पर कन्या, समरात्रियों में पुत्र का जन्म होता है।

ग्राह्य तिथि—१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, ११, १२ तथा शुक्ल पक्ष की १३

ग्राह्य वार—सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार

ग्राह्य नक्षत्र—रोहि., मृग., उत्तरा-तीनों, हस्त, स्वाती, अनु., श्रव., धनि और शतभिषा

शुभ लग्न—१, ३, ५, ७, ९, ११ राशि लग्न

(15) नववधू द्वारा प्रथम पाककर्म मुहूर्त्त

नवविवाहिता वधू को ससुराल में सर्वप्रथम रसोई बनवाना शुरु करने हेतु विचारणीय शुभ काल—

ग्राह्य तिथि—१ (कृ.), २, ३, ५, ६, ७, १० तथा शुक्ल पक्ष की १३ व पूर्णिमा

ग्राह्य वार—सोम, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार

ग्राह्य नक्षत्र—कृति., रोहि., मृग, पुन., उत्तरा-तीनों, विशा., ज्ये., श्रव., धनि., शत. एवं रेवती।

शुभ लग्न—२, ५, ८, ११ राशि लग्न। जब चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रह या ग्रहाभाव, सप्तम में बलयुत सौम्य ग्रह तथा अष्टम भाव भी शुद्ध हो।

(16) वास्तु भूमि का शुभाशुभ विचार

(क) गृहादि निर्माण हेतु जिस भूमि की शुभाशुभ परीक्षा करनी हो, तो शाम के समय वहाँ पर भूमि पूजन करवाने के पश्चात् वहाँ अपने एक हाथ लम्बा, एक हाथ चौड़ा और डेढ़ हाथ गहरा गड्ढा खोद कर उसे जल से भर दें। प्रातःकाल आकर उसे देखने पर, यदि वह गड्ढा पानी से भरा हुआ दिखे तो, भूमि शुभ जानें। यदि पानी न हो, तो मध्यम जानें, और यदि गड्ढा में पानी न हो और उसके आस-पास की मिट्टी फटी हुई हो, तो भूमि को अशुभ समझें।

(ख) वास्तुभूमि में परीक्षा के लिए भूमि में लगभग डेढ़ फुट गहरा उतना ही चौड़ा गड्ढा खोदें। खुदाई के समय यदि पत्थर, ईंट, ताम्बा, पात्र, धनादि द्रव्य मिलें, तो यह परिवार की आयु, धन, संतति आदि में वृद्धि होने के संकेत हैं। इसे शुभ शकुन मानना चाहिए। यदि भूमि खोदने पर कपाल, हड्डी, कोयला, केश, राख, गुठली, रुई, सीप खोपड़ी, लोहादि मिलें तो इसे अशुभ शकुन समझना चाहिए।

(ग) विश्वकर्मा के अनुसार एक अन्य परीक्षा भूमि में उत्तर दिशा की ओर एक लगभग डेढ़ फुट गहरा और डेढ़ फुट चौड़ा गड्ढा खोदें। गड्ढे में से सारी मिट्टी निकाल लें। तथा निकाली हुई मिट्टी को दुबारा उसी गड्ढे में भर देवें। यदि गड्ढा भर देने के बाद भी मिट्टी शेष बच जाती है, तो समझ लें कि भूमि उत्तम है। यदि फिर भरने के बाद मिट्टी शेष नहीं बचती और गड्ढा पूरा भर जाता है, तो इससे यह समझना चाहिए कि भूमि मध्यम स्तरीय होगी। यदि निकाली गई सारी मिट्टी गड्ढे में भरने पर भी, गड्ढा पूरी तरह नहीं भरता है, तो समझें कि ज़मीन निकृष्ट प्रकार की है।

(घ) फटी हुई, शूल (कांटों), दीमक आदि से युक्त ऊँची-नीची भूमि अशुभ होती है।

(ङ) **शुभ-भूमि**—चिकनी, गीली, उपजाऊ मिट्टी अथवा घास, पुष्प, लताओं, फूलों आदि से सुगन्धित एवं समतल भूमि गृह स्वामी एवं उसके परिवार के लिए सुख-सम्पत्ति में वृद्धिकारक होती है।

(च) मकान की नींव को गहरा खोदते समय यदि काली ईंटें देखने को मिलें, तो भूमि शुभ

जानें। हड्डी, केश, (बाल), कोयला राखादि निकलें तो वहां मकान बनवाने वाले को रोगादि से कष्ट रहे॥

(17) गृहारम्भ (नींव) मुहूर्त्त

विभिन्न सूर्य संक्रान्तियों में राहु-मुख से पृष्ठवर्तिनी दिशा में घर की नींव खोदना शुभता का द्योतक होता है। भूखण्ड में सूर्य की राशि के अनुसार सर्पाकार राहु का मुख, उदर एवं पुच्छ परिवर्तित होती रहती है। इसीलिए उस दिशा में खुदाई प्रारम्भ करनी चाहिए। जहाँ राहु का कोई अंश (अवयव) न हो-

(1) सूर्य, वृष, मिथुन या कर्क (ज्येष्ठ, आषाढ़ या श्रावण) में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारम्भ **नैर्ऋत्य** (दक्षिण-पश्चिम) कोण से करें।

(2) सूर्य सिंह, कन्या या तुला (भाद्र., आश्वि. या कार्तिक) में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारम्भ **आग्नेय कोण** (पूर्व-दक्षिण) में करें।

(3) सूर्य वृश्चिक, धनु या मकर (मार्ग., पौष या माघ) में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारम्भ **ईशान कोण** (उत्तर-पूर्व) में करें।

(4) सूर्य मेष, कुम्भ या मीन (वैशाख, फाल्गुन या चैत्र) में हो, तो नींव की खुदाई का आरम्भ **वायव्य कोण** (उत्तर-पश्चिम) से करें।

ध्यान दें, नींव की खुदाई में सुप्त-भूमि (भू-शयन) का विचार करना भी आवश्यक है।

सुप्तभूमि (भू-शयन)—*(i)* **प्रत्येक सूर्य संक्रान्ति से ५, ७, ९, १५, २१ एवं २४वें प्रविष्टे को पृथ्वी सोई रहती है,** अतएव सुप्त भूमि के दिवसों में यथासम्भव कृषि, गृह-निर्माण, वापी, कुआं, तालाब के लिए भूमि का खनन न करें।

(ii) एक अन्य मतानुसार, सूर्य नक्षत्र से ५, ७, ९, १२, १९ तथा २६वें चन्द्र नक्षत्रों में भी भूमि का शयन होता है। (**पंचांगदिवाकर में दिए गए गृहारम्भ मुहूर्त्तों में इन दोनों मतों का अनुसरण होता है।**) (**भू-रजस्वला**—सूर्य-संक्रान्ति के दिन से १, ५, १०, ११, १६, १८, १९वें दिन भूमि रजस्वला रहती है। अतः इन दिनों भी यज्ञ, हवन, कृषि, तालाब, गृह निर्माणारम्भ आदि कार्यों का आरम्भ न करें-परन्तु अधिकतर पंचांगकार एवं विद्वान इस मत को मान्यता नहीं देते।)

ग्राह्य मास—वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, मार्ग., माघ तथा फाल्गुन श्रेष्ठ कहे हैं। भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं।

द्वार-मुख के अनुसार मास ग्रहण—जब सूर्य मेष-वृष-वृश्चिक-तुला राशि में हो, तो दक्षिण या उत्तर मुख का और जब सूर्य कर्क-सिंह-मकर-कुम्भ राशि में हो, तो पूर्व या पश्चिम मुख का गृह बनाना चाहिए।

पूर्व-पश्चिमाभिमुख गृह	उत्तरदक्षिणाभिमुख गृह
सौर श्रावण, भाद्रपद, माघ तथा फाल्गुन मास	सौर वैशाख, ज्येष्ठ, कार्तिक और मार्गशीर्ष मास

ग्राह्य तिथि—१ (कृ.), २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३ (शु.), १५

ग्राह्य वार—सोम, बुध, गुरु, शुक्र और शनिवार

ग्राह्य नक्षत्र—अश्विनी, रोहि., मृग., पुन, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., उत्तरा-तीनों, अनु., श्रव., धनि., शत. और रेवती।

शुभ लग्न—स्थिर या द्विस्वभाव लग्न शुभ होंगे (२, ३, ५, ६, ८, ९, ११, १२)। लग्न पर शुभ ग्रहों की दृष्टि, पापग्रह ३, ६, ११ में हों तथा शुभ ग्रह ८, १२वें भाव के अतिरिक्त अन्य भावों में हों, दशम भाव में सबल सौम्य ग्रह तथा चन्द्रमा १, ६, ८, १२वें न हों।

अग्निबाण—'गृहगोपेऽग्निपंचकम्' अनुसार गृहारम्भ के समय अग्निबाण वर्जित है। परन्तु अधिकतर विद्वानों के अनुसार लकड़ी आदि की छत डालते समय, इलैक्ट्रिक वायरिंग प्रारम्भ करते हुए तथा स्तम्भ आरोहणादि काल में ही अग्निबाण का विचार करना चाहिए। अपि च, लग्न बल की उपलब्धि में बाण विचार निरर्थक है।

वृषवास्तु चक्र

बैल के अंग	शिर	अगले पाद (पांव)	पृष्ठपाद (पिछले पांव)	पृष्ठ (पीठ)	दक्ष कुक्षि (दाईं कोख)	पुच्छ (पूँछ)	वाम कुक्षि (बाईं कोख)	मुख
नक्षत्र	३	४	४	३	४	३	४	३
फल	अग्नि-भय	शून्य (०)	स्थिरता शान्तिप्रद	श्रीलक्ष्मी प्राप्ति	लाभ-प्रद	स्वामी कष्टकारी	दारिद्र्य	सदा पीड़ा व कष्ट

गृहारम्भ के मुहूर्त्तों में से मास शुद्धि, ग्रह-बलादि देखने के बाद, कल्पित वृष (बैल) के अंगों पर अभिजित् सहित अट्ठाईस नक्षत्रों को प्रत्यारोप (स्थापित) करें। सूर्याधिष्ठित नक्षत्र से मुहूर्त्त के दिन तक गणना करने पर मुहूर्त्त वाला दिन दोषपूर्ण आता हो, तो उस स्थिति में मुहूर्त्त का दिन बदल लेना चाहिए।

उदाहरण—जैसे सूर्य के नक्षत्र से लेकर प्रथम तीन नक्षत्रों तक गिनने पर **मुहूर्त्त दिन** पड़ता हो, तो गृह में **अग्निदाह** का भय रहेगा। आगे 4, 5, 6 एवं 7वें नक्षत्र पर मु. नक्षत्र आवे तो शून्य यानि-कुछ भी शुभाशुभ फल न हो। अर्थात् अपने कर्मों के अनुसार ही फल मिले। आगामी चार (8, 9, 10, 11)वें नक्षत्रों के मध्यपात हो तो भाग्य में स्थिरता एवं शान्ति रहेगी। चतुर्थ भाग उससे आगे के तीन नक्षत्रों के मध्य मुहूर्त्त आ जावे तो लक्ष्मी प्राप्ति अर्थात् धन प्राप्ति के योग होंगे। इसी क्रमानुसार फल जानें।

निष्कर्षतः—गृह निर्माण का आरम्भ करने के लिए सूर्य के नक्षत्र से प्रथम सात नक्षत्र अशुभ। आठवें नक्षत्र से अठारहवें तक शुभ तथा शेष अंतिम दश नक्षत्र पुनः अशुभ होंगे।

ध्यान रहे, भूखनन के बाद भूमि-पूजन एवं वास्तु-पूजा करनी आवश्यक है।

शिलान्यास मुहूर्त्त—गृहारम्भ की शुभ बेला में खनित नींव को गृहारम्भ के लिए निर्दिष्ट

समय-शुद्धि का विचार करके विधिवत् पत्थरों, शिलाओं, ईंटों से पूरित कर देना चाहिए। वृहत्संहिता अनुसार पहिले से खोदी हुई नींव में पूर्व व दक्षिण दिशा के मध्य में अर्थात् अग्निकोण में पूजा करके प्रथम शिला स्थापित करके प्रदक्षिणा के क्रम से अर्थात् अग्नि के बाद दक्षिण-पश्चिम (नैऋत्य) तथा वायव्यादि(उत्तर) दिशाओं में स्थापित करना चाहिए एवं खम्भ को भी इसी रीति से बनवाना चाहिए।

नींव में रखने योग्य सामग्री

शिलान्यास हेतु आवश्यक सामग्री–

- तांबे की गड़वी में चावल भरकर तथा सरसों, हल्दी भरें तथा गड़वी को मौली तथा आम्र पत्तों से बांध लें। ➽ ५ नई ईंटें
- ५ पंचरत्नी तथा गीता आदि धार्मिक ग्रन्थ
- १ जोड़ी सर्प, सर्वोषधि, श्रीफल एक, लाल वस्त्र, जनेऊ-जोड़ा
- (विशेष) –भाद्रपद, आश्विनी और कार्तिक मास में भवन निर्माण हो तो सर्प का मुख पूर्व में होना चाहिए।
- फाल्गुन, चैत्र, वैशाख मासों में निर्माण हो तो सर्प का मुख पश्चिम दिशा की ओर हो।
- ज्येष्ठ, आषाढ़ श्रावण मासों में सर्प का मुख उत्तर दिशा की ओर हो।
- मार्गशीर्ष, पौष, माघ मासों में सर्प का मुख दक्षिण दिशा में होना चाहिए।
- ५ कौड़ीयां, सिंधूर, ५ सुपारी सावुत, 1 नारियल।
- दरिया या तालाब के किनारे की घास तथा १ पाव कच्चा दूध। (यदि सम्भव हो तो गंगाजल एवं गंगादि तीर्थ से लाई हुई रेत या मिट्टी भी रख दी जाए तो अधिक अच्छा है।

(18) द्वार–शाखा स्थापन मुहूर्त्त

उचित दिशा में प्रमुख द्वार का निर्माण व उसमें चौखट लगवाने में उपयुक्त काल शुद्धि–
तिथि–५, ७, ८, ९ [पंचमी धनदा चैव, मुनिनन्दवसौ शुभम्।।-ज्येतिर्निबन्ध]
ग्राह्य वार–सोम, बुध, गुरु, शुक्र
ग्राह्य नक्षत्र–अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, स्वा., श्रव. और रेवती।

सूर्यभात् द्वार-देहली चक्र

सूर्यभात् नक्षत्र	४	८	८	३	४
फल	लक्ष्मी प्राप्ति	उद्वेग	देहसौख्य	मृत्युतुल्य कष्ट	सौख्य
वास	शिर	चतुष्कोण	चतु: शाखा	देहली	मध्य

(19) जलाशय (कुआँ), देवालय खनन मुहूर्त्त

सामान्य रूप से कुआँ, तालाब, बावड़ी आदि समस्त जलस्थानों का शुभारम्भ निम्न मुहूर्त्त में शास्त्र-सम्मत होगा–

ग्राह्य मास–वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (मिथुनार्क), माघ तथा फाल्गुन।
ग्राह्य तिथि–शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३
ग्राह्य वार–सोम, बुध, गुरु, शुक्र।
ग्राह्य नक्षत्र–अश्वि., रोहि., मृग., पुन, पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत., रेवती।
लग्न-शुद्धि–२, ४, ७, ९, १०, ११, १२ आदि राशि लग्न तथा शुभ ग्रहों के नवांश। केन्द्र में शुभ ग्रह हों।
विशेष–गुरु-शुक्रास्त, गुर्वादित्य, दक्षिणायन, भद्रा, कुयोगादि त्याज्य।

(20) राहु मुख ज्ञान चक्रम्

सूर्य के भिन्न-भिन्न राशियों में संचार-कालीन देवालय-प्रारम्भ, गृहारम्भ तथा जलाशय (कुआँ, नल, तालाबादि) के लिए भू-खननोपयोगी दिशा ज्ञान चक्र है। तीन-तीन राशि की स्थिति में ऊपर के क्रम से राहु के मुख की दिशा लिखी है, उसकी विपरीत (पृष्ठ) दिशा में खात करना शुभ होगा।

सूर्यराशिवशात् खात चक्रम

राहुमुखम्	ईशान्ये	वायव्ये	नैऋत्ये	आग्नये
देवालयारम्भे सूर्य	मीन, मेष, वृष	मिथुन, कर्क, सिंह	कन्या, तुला, वृश्चिक	धनु, मकर, कुम्भ
गृहारम्भे सूर्य	सिंह, कन्या, तुला,	वृश्चि., धनु, मकर	कुम्भ, मीन, मेष	वृष, मिथुन कर्क
जलाशयारम्भे सूर्य	मकर, कुम्भ, मीन	मेष, वृष, मिथुन	कर्क, सिंह, कन्या	तुला, वृश्चि., धनु
खातदिशा (खुदाई) शुभ→	आग्नेये (पूर्व-दक्षिण)	ईशाने (उत्तर-पूर्व)	वायव्ये (उत्तर-पश्चिम)	नैऋत्ये (दक्षिण-पश्चिम)

सूर्यभात् कूप-नल (जल चक्र)

नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
दिशा	मध्य	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
प्राप्यजल	स्वादु	खण्डित	स्वादु	अभाव	स्वादु	क्षार	मिश्रित	मधुर	क्षार

(21) नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त

ग्राह्य मास–निरयण उत्तरायणकाल अर्थात् वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (लगभग 15 जुलाई तक की कालावधि), माघ तथा फाल्गुन मास। कार्तिक एवं मार्गशीर्ष मास मध्यम माने गए हैं।
ग्राह्य वार–चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार।
ग्राह्य शुभ तिथियां–रिक्ता तिथियां (४, ९, १४) तथा अमावस को छोड़कर शेष प्राय: सभी तिथियां।

प्रकारान्तरेण, दिग्द्वार के अनुसार अनुरूप गृह-प्रवेशोपयोगी तिथियां–

द्वार दिशा	पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
शुभ तिथियां	५,१०,१५	२,७,१२	३,८,१३	१,६,११

ग्राह्य नक्षत्र–अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., उ.फा., उ.षा., उ.भा., श्रव., धनि., शत., रेवती।

'गृह प्रवेश में कलश वास्तु चक्र'

नवगृह प्रवेश सम्बन्धी मुहूर्त्तों में और अधिक सूक्ष्मता प्राप्ति के लिए कलश-वास्तु चक्र का प्रयोग किया जाता है। किसी काल्पनिक कलश को आठ विभागों में बाँट लें। मुहूर्त्त काल में सूर्याधीष्ठित नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र (मुहूर्त्त वाला नक्षत्र) तक यथाक्रम नक्षत्र रखें। घट चित्र रेखांकित है। सूर्य नक्षत्र से चंद्र नक्षत्र 1 (समान) होने पर मुख पर स्थापित करें। सूर्य के नक्षत्र से आगे गिनने पर दो से पाँच अर्थात् आगे के चार नक्षत्र पूर्व दिशा में रखें, इसी प्रकार 6 से 9 तक चार नक्षत्र कलश के दक्षिण में रखें, फिर दस से तेरह तक चार नक्षत्र पश्चिम में रखें, फिर 14 से 17 तक चार नक्षत्र उत्तर में रखें तथा 18 से 21 तक चार नक्षत्र कलश के उदर में रखें, फिर 22 से 24 तक तीन नक्षत्र कलश के तल में रखें तथा शेष 25 से 27 तीन नक्षत्र कलश के कण्ठ में रखें। इसके बाद गृह प्रवेश का फल इस प्रकार जानें–

कुम्भ गृह-प्रवेश
उत्तर (१४ से १७ तक) (4)
कण्ठ २५ से २७
(4) पूर्व (२ से ५ तक)
उदर १८ से २१
पश्चिम (4) (१० से १३ तक)
तल (3) २२ से २४
दक्षिण 4 (६ से ९ तक)

गृह-प्रवेश में नक्षत्र फल	फल
1. यदि मुख का नक्षत्र ही प्रवेशनक्षत्र	*अग्नि से भय होता है।*
2. पूर्व के चार नक्षत्रों में भवन	*उजाड़ होने का भय होता है।*
3. दक्षिण के चार नक्षत्रों में	*धन लाभ होता है।*
4. पश्चिम के चार नक्षत्रों में	*धन-वैभव प्राप्त होता है।*
5. उत्तर के चार नक्षत्रों में	*कलह-क्लेश रहता है।*
6. उदर के चार नक्षत्रों में	*विनाश का भय रहता है।*
7. तल के तीन नक्षत्रों में	*स्थिरता (स्थायी वास)।*
8. कण्ठ के तीन नक्षत्रों में	*गृहस्वामी की चिरायु हो।*
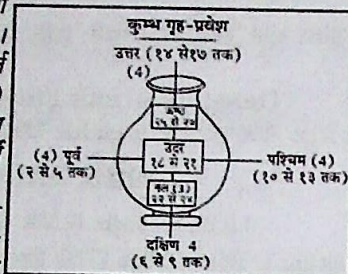
शुभ लग्न–*विशेष रूप से गृहस्वामी के जन्म-लग्न या जन्मराशि से अष्टम लग्न न हो, जन्मराशि/जन्मलग्न से उपचय 3, 6, 10 या 11वें तथा स्थिर लग्न में गृह-प्रवेश करना चाहिए। ग्राह्य लग्न में लग्न से 1, 2, 5, 7, 9, 10 भावों में शुभ ग्रह और 3, 6, 11वें भावों में पाप-ग्रह हों तथा चतुर्थ व अष्टम भाव शुद्ध होने पर गृह-प्रवेश करना शुभ होता है।*

वामस्थ रवि विचार–गृह प्रवेश के समय ग्राह्य लग्न में वामस्थ सूर्य शुभ माना गया है। गृह प्रवेश के लग्न से 8वें स्थान में जो राशि हो, तो उससे 5 स्थान आगे–8, 9, 10, 11, 12वें भाव में यदि सूर्य हो, तो पूर्वदिशा की ओर गृहप्रवेश में रवि वाम होता है और दक्षिणाभिमुख: वाले द्वारगृह में प्रवेश लग्न के समय यदि सूर्य 5, 6, 7, 8, 9वें भाव में सूर्य हो, तो दक्षिण दिशा वाले घर में प्रवेश के लिए सूर्य वाम होगा। इसी प्रकार गृह प्रवेश लग्न से दूसरे स्थान से आगे 5 स्थान 2, 3, 4, 5, 6वें भाव में सूर्य होने से पश्चिम दिशा वाले घर में प्रवेश के लिए सूर्य वाम होगा तथा प्रवेश लग्न से 11वें स्थान से आगे 5 स्थानों 11, 12, 1, 2, 3 भाव में सूर्य हो, तो उत्तर दिशा वाले घर में प्रवेश के लिए सूर्य वाम होता है।

वामस्थ रवि ज्ञानार्थ चक्र

द्वार दिशा	गृह-प्रवेश लग्न से	आगे 5 स्थान तक वामस्थ सूर्य
पूर्वाभिमुख गृह	अष्टम स्थान से	सूर्य 8, 9, 10, 11, 12वें भाव
दक्षिणाभिमुख गृह	पंचम स्थान से	सूर्य 5, 6, 7, 8, 9वें भाव
पश्चिमाभिमुख गृह	दूसरे स्थान (भाव) से	सूर्य 2, 3, 4, 5, 6ठे भाव
उत्तराभिमुख गृह	11वें स्थान (भाव) से	सूर्य 11, 12, 1, 2, 3 रे भाव

स्पष्टीकरण–जैसे आपके नवीन गृह का द्वार मुख पूर्व की ओर है तथा गृह-प्रवेश ग्राह्य लग्न सिंह है, तो सूर्य की मीन, मेष, वृष, मिथुन व कर्क राशि संचारकालीन (चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ तथा श्रावण) सूर्य वामस्थ होगा। अतः चैत्र, श्रावण को छोड़कर वै., ज्ये., आषा. में गृहप्रवेश करेंगे, तो अधिक शुभकारक होगा। इसी प्रकार अन्य निर्धारित मुहूर्त्त-लग्नों एवं द्वारमुख की दिशा के अनुसार वामस्थ रवि का विचार करें।

(22) पुरातन (पुराने) गृह–प्रवेश मुहूर्त्त

अस्थायी रूप से किराये (ट्रांस्फर आदि के कारण) आदि के मकान में प्रवेश अथवा पुराने गृह में प्रवेश के मुहूर्त के लिए ऊपर दिए गए शुभ मासों के अतिरिक्त **श्रावण मास** भी ग्राह्य होगा। पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्तों में **रिक्ता तिथि, गुरु-शुक्रास्त काल, अधिक-क्षय मास भी ग्राह्य होते हैं**। परन्तु मासान्त, भद्रा, व्यतीपात, वैधृति, त्रयोदश-दिनात्मक पक्ष, तिथि-क्षय, निर्बल चन्द्र, युति, वेधादि का विचार अवश्य करना चाहिए। यद्यपि नवग्रह शान्ति, स्वास्तीवाचन, कलश-पूजनादि आपेक्षित हैं, परन्तु वास्तु-शान्ति, कलशचक्र शुद्धि, स्थापनादि आवश्यक नहीं। ग्राह्य वार, तिथि, नक्षत्र नूतन गृह प्रवेश की भान्ति ही रहेंगे।

(23) विपणि मुहूर्त्त

(अर्थात् दुकान, व्यवसाय, फैक्टरी शुरु करने के मुहूर्त्त)

शुभ एवं ग्राह्य मास–वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ व फाल्गुन। ***ग्राह्य तिथियाँ***–रिक्ता तिथियाँ (४, ९, १४), कृष्ण १३ तथा अमावस तिथियाँ छोड़कर शेष तिथियाँ। ***ग्राह्य नक्षत्र***–अश्वि., रोहि., मृग., पुन, मूल, पुष्य, उत्तरा–तीनों, हस्त, चित्रा, अनु., श्रव., अभिजित् और रेवती। ***शुभ वार***–रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार। ***शुभ लग्न***–कुम्भ लग्न त्याज्य है। शेष राशि लग्नों में भी चन्द्र, बुध-शुक्र केन्द्र स्थानों में, अष्टम तथा द्वादश भाव शुद्ध हों तथा 2, 10, 11वें भावों में शुभ ग्रह हों। **नोट**–क्रूर ग्रह की युति, वेध, गुरु-शुक्रस्तादि का विचार तो करना ही चाहिए।

(24) बीज बोने (हल चलाने) का मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथियाँ–१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्ल) तथा पूर्णिमा। ***ग्राह्य वार***–रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार ***ग्राह्य नक्षत्र***–अश्वि., रोहि., मृग., पुन, पुष्य, मघा, उत्तरा–तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., विशा., अनु., मूल, धनि. तथा रेवती।

(25) अनाज संग्रह (भरने) का मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथियाँ–२, ३, ५, ७, ८, ११, १२, १३ (शुक्ल), १५। ***ग्राह्य वार***–चन्द्र.

बुध, गुरु व शुक्रवार। ***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., मृग, पुन., पुष्य, उत्तरा–तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत. तथा रेवती।

(26) औषधि निर्माण एवं सेवन मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथि—१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शु.)। ***ग्राह्य वार***—रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। ***ग्राह्य नक्षत्र***—यहाँ जन्म नक्षत्र त्याज्य रहेगा। लघु संज्ञक (अश्वि., पुष्य, हस्त, अभि.), मृदुसंज्ञक (मृग., चित्रा, रेवती), चरसंज्ञक (पुन., स्वा., श्रव., धनि., शत.) तथा मूल नक्षत्र (ज्येष्ठा, मूल) ***लग्न शुद्धि***—द्विस्वभाव राशिलग्न (३, ६, ९, १२) तथा लग्न, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव शुद्ध हों अर्थात् इन भावों पर क्रूर की स्थिति व दृष्टि वर्ज्य है।

(27) सर्ववस्तु क्रय–विक्रय मुहूर्त्त

खरीदने के नक्षत्र में बेचना शुभ नहीं है। विक्रय (बेचने) के नक्षत्र में खरीदना अच्छा नहीं होता। ***वस्तु खरीदने के नक्षत्र***—रेव., शत., अश्वि, स्वा., श्रव. और चित्रा नक्षत्रों में शुभ है। ***वस्तु बेचने के नक्षत्र***—तीनों पूर्वा, विशाखा, कृतिका, आश्लेषा और भरणी नक्षत्र। लग्न शुद्धि, तिथ्यादि के लिए विपणि मुहूर्त्त देखें।

(28) आप्रेशन कराने का मूहूर्त्त

ग्राह्य तिथि—२, ३, ५, ६, ७, १०, १२ (१३-शुक्ल पक्ष की)।
ग्राह्य वार—रवि, मंगल, गुरु और शनिवार।
ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि., रोहि., मृग., हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., अभि., श्रव.।

(29) मन्त्र सिद्ध करने का मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथि—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) तथा १५ ***ग्राह्य वार***—रवि, चन्द्र, बुध, गुरु एवं शुक्रवार ***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., मृग., उ.फा., हस्त, श्रव. तथा विशाखा। इसके अतिरिक्त रविपुष्य योगों, निरयण एवं सायन संक्रान्ति संक्रमण-काल, दीपावली आदि योगों में मन्त्र सिद्धि सम्बन्धी कार्य किए जाते हैं।

(30) भूमि–खरीदने का मुहूर्त्त

ग्राह्य मास—वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (मिथुनार्क तक-15 जुला.), मार्गशीर्ष, माघ और फाल्गुन मास भूमि क्रय के लिए उत्तम कहे गए हैं। ***ग्राह्य तिथियाँ***—१ (कृष्ण पक्षे), कृष्ण तथा शुक्लपक्ष की २,५,६,१०,११ एवं पूर्णिमा।। ***ग्राह्य नक्षत्र***—मृग., पुन., आश्ले., मघा, विशा, अनु., तीनों पूर्वा, मूल, स्वा., शत और रेवती।। ***शुभ वार***—मंगल, गुरु एवं शुक्रवार।

(31) मुकद्दमा दायर करने का मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथि—३, ५, ८, १०, १३ (शुक्लपक्ष) तथा पूर्णिमा ***ग्राह्य वार***—रवि, मंगल, बुध एवं गुरुवार। ***ग्राह्य नक्षत्र***—भरणी, आर्द्रा, आश्ले., मघा, पूर्वा-तीनों, ज्येष्ठा तथा मूल। ***ग्राह्य लग्न***—३, ६, ७, ८, ११ राशि लग्न। जब शुभ ग्रह लग्न में हो, पापग्रह ३, ६, ११वें हों तथा अष्टम भाव शुद्ध हो।

विशेष—गोचरानुसार याचिकाकर्त्ता का चंद्रमा एवं मंगल भी बलान्वित होने चाहिएं।

(32) पशु खरीदने का मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथि—१ (कृष्णपक्ष की), २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (कृष्ण व शुक्ल पक्ष की), १३ (शुक्ल पक्ष की), १५ ***ग्राह्य वार***—रवि, चन्द्र, बुध, गुरु एवं शनिवार।
ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि., पुन, पुष्य, हस्त, विशा., ज्ये., धनि., शत और रेवती।

(33) ऋण–दान (कर्ज़ देने) का मुहूर्त्त

ब्याज अर्जित करने के उद्देश्य से धन का उधार देना निम्न मुहूर्त्त में हितकर है-
ग्राह्य तिथि—१ (कृष्ण पक्ष की), २, ३, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (कृष्ण एवं शुक्ल पक्ष की), १३ (शुक्ल) तथा १५ ***ग्राह्य वार***—रवि, चन्द्र, मंग., गुरु, शुक्र एवं शनिवार। ***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., मृग., पुन, पुष्य, चित्रा, स्वा., विशा, श्रव., धनि., शत और रेवती। ***लग्न शुद्धि***—१, ४, ७, १० राशि लग्न।। पंचम-नवम भाव में शुभग्रह तथा अष्टम भाव शुद्ध होना चाहिए। **विशेष**—बुधवार को अपना धन किसी को नहीं देना चाहिए। अर्थात् बुधवार को दिया हुआ धन वापिस नहीं मिलता। भद्रा, व्यतीपात, महापात तथा अमावस में दिया गया धन वापिस प्राप्त नहीं होता।

(34) ऋण–ग्रहण (कर्ज़ लेने) मुहूर्त्त

ग्राह्य तिथि—१ (कृष्ण पक्ष की), २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२ (कृष्ण व शुक्लपक्ष की), १३ (शुक्ल), १५ ***ग्राह्य वार***—सोम, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार। ***ग्राह्य नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., मृग. पुन, पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, अनु., श्रव., धनि, शत तथा रेवती।। तथापि मृग., चित्रा, अनु. तथा रेवती विशेष रूप से शुभ हैं। ***शुभ लग्न***—१, ४, ७, १० राशि लग्न श्रेष्ठ है। शुभ ग्रह त्रिकोण (5, 9वें) तथा अष्टम भाव शुद्ध हो। **विशेष**—मंगलवार को कर्ज़ के रूप में किसी से धन नहीं लेना चाहिए। संक्रान्ति वाले दिन, वृद्धि योग, हस्त नक्षत्र और रविवार में ऋण (कर्ज) नहीं लेना चाहिए।

अपि च, **"ऋणच्छेदं कुजे कुर्यात् संचयं सोमनन्दे"**—मंगलवार को ऋणों को चुका देना तथा बुधवार को धन संचय करना चाहिए।

(35) चुनाव में खड़े होने का मुहूर्त्त

शुभ तिथियाँ—(१ कृ.), २, ३, ५, ९, १०, १२ एवं १५ शुक्ल। ***शुभ वार***—सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार। ***शुभ नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., पुर्न, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, अनु., श्रव., धनि., रेवती। ***शुभ लग्न***—१, ४, ७, १०। **विशेष**—केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११वें पाप ग्रह हो। लग्न एवं लग्नेश पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो। बुध, शुक्र, गुरु उदित हों। चन्द्र बली हो तथा प्रत्याशी की राशि मुहूर्त्त वाले दिन-छटे, आठवें एवं १२वें न हो। **संसद्** में शपथ ग्रहण के समय **स्थिर लग्न** प्रशस्त होता है।

(36) नवीन वस्त्र धारण करने का मुहूर्त्त

विवाह, यज्ञ, सम्वत् या वर्षारम्भ में, विशेषोत्सव, त्यौहार, प्रेम के उपहार-स्वरूप, जन्म-नक्षत्र के दिन, ईश्वर भक्ति में अथवा ब्राह्मण की आज्ञा मिलने पर बिना पंचांग-शुद्धि के भी नवीन वस्त्र धारण किए जा सकते हैं। यद्यपि व्यक्ति अपना चन्द्रबल देखकर और शुभ लग्न में नूतन वस्त्रों को धारण करें- ***शुभ तिथियाँ***—१ (कृष्ण), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) व पूर्णिमा। ***शुभ वार***—रवि, बुध, गुरु व शुक्र ***शुभ नक्षत्र***—अश्वि., रोहि., पुन, पुष्य, उत्तरा (तीनों), हस्त, चित्रा, स्वा. विशा., अनु. धनि. व रेवती।

विवाह-मुहूर्त्त में लत्तादि दस दोष विचार

विवाह मुहूर्त्तों के साधन में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पंचबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि-इन दश दोषों का विचार करके निर्णय लेना आवश्यक है। पंचांगदिवाकर या किसी अन्य पंचांग में भी इन दस दोषों का विचार करके ही विवाह मुहूर्त्त दिए जाते हैं। इन दस महादोषों में से वेध, मृत्युबाण तथा क्रान्तिसाम्य-ये तीन महादोष अपरिहार्य होने से विवाह में सर्वत्र सर्वथा वर्जित हैं-शेष सात दोषों में से चार से अल्प दोष रहने पर वे विवाह-मुहूर्त्त की लग्न-शुद्धि से नष्ट हो जाते हैं। विवाह मुहूर्त्त में उपरोक्त दस दोषों में से क्रमशः जो दोष वर्तमान रहता है, उसे वक्ररेखा (ऽ) से तथा जो दोष नहीं रहता, उसे खड़ी रेखा (।) से सूचित किया जाता है। जैसा कि पंचांगदिवाकर के विवाह मुहूर्त्तों में दस महादोषान्तर्गत शुद्धि-रेखा के स्तम्भ में आपको मिलेगा। ये रेखायें इस पंचांग या अन्य किसी भी पंचांग में यथाक्रम शुद्धतापूर्वक लगायी गयी हैं या नहीं, इसकी जाँच आप चाहें तो सरलता से कर सके तथा स्वयं विवाह-मुहूर्त्त शोधन में सुयोग्य बन जाएं। इसलिए प्रत्येक महादोष का विचार व चक्र दिया जा रहा है-

(1) लत्तादोष-चक्र

विवाह नक्षत्र / ग्रह	अश्वि.	रोहि	मृग.	मघा	उ.फा	हस्त	चित्रा	स्वाती	अनु	मूल	उ.षा.	श्रवण	धनि.	उ.भा.	रेव.
सूर्य	अनु	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	अश्वि.	भर.	कृति.	रोहि	आर्द्रा	पुष्य	मघा	पू.फा.	उ.फा.	स्वा.	विशा.
मंग.	उ.भा.	भरणी	कृति.	पुष्य	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	स्वाती	अनु.	मूला	पू.षा.	उ.षा.	शत.	पू.भा.
बुध	पुर्न	मघा	पू.फा.	विशा.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	धनि.	पू.भा.	रेवती	अश्वि.	भर.	मृग.	आर्द्रा
गुरु	धनि.	उ.भा.	रेवती	मृग.	पुर्न.	पुष्य	आश्ले	मघा	उ.फा.	चित्रा	विशा.	अनु.	ज्ये.	उ.षा.	श्रव.
शुक्र	मृग.	पुष्य	अश्ले	चित्रा	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	उ.षा.	धनि.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.	कृति.	रोहि.
शनि	उ.षा.	शत	पू.भा.	कृति.	मृग.	आर्द्रा	पुर्न.	पुष्य	मघा	उ.फा.	चित्रा	स्वा.	विशा.	मूल	पू.षा.
राहु	पू.षा.	धनि.	शत.	भर.	रोह.	मृग.	आर्द्रा	पुर्न	अश्ले.	पू.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	ज्ये.	मूल

(i) लत्तादोष-ऊपर की प्रथम पंक्ति में लिखे गए विवाह-नक्षत्रों के नीचे जिस ग्रह का नक्षत्र आ जाए, तो उस ग्रह से सम्बन्धित लत्तादोष होगा। मान लीजिए आपने रोहिणी नक्षत्र के विवाह हेतु लत्तादोष देखना हो तो साथ दिए गए चक्र (तालिका) में सूर्य यदि पू.षा. में हो अथवा गुरु उ.भा. नक्षत्र में हो या राहु (या केतु) धनिष्ठा नक्षत्र में हों, तो उन्हीं ग्रहों का लत्तादोष माना जाएगा।

(2) पातदोष चक्र

विवाह नक्षत्र	अश्वि.	रोह.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
—सूर्य नक्षत्र—	रेव.	आर्द्रा	मृग	अश्वि	कृति	भर.	रोहि	कृति.	अश्वि	रोह.	भर.	अश्वि	रेव.	भर.	अश्वि.
	श्ले.	पुर्न	आर्द्रा	मृग	आर्द्रा	मृग.	श्ले.	पुष्य	आर्द्रा	श्ले.	पुर्न.	आर्द्रा	मृग	पू.फा.	मघा
	मघा	पू.फा.	मघा	पुष्य	पू.फा.	मघा	चित्रा	हस्त	पू.फा.	ज्ये.	विशा.	स्वा.	चित्र	उ.फा.	पू.फा.
	चित्रा	चित्रा	हस्त	हस्त	विशा	स्वा.	धनि	श्रव.	पू.षा.	मूल	अनु.	विशा.	स्वा.	विशा.	स्वा.
	अनु.	मूल	ज्ये.	ज्ये.	पू.भा.	शत.	शत.	धनि.	उ.षा.	धनि	उ.षा.	पू.षा.	मूल	मूल	ज्ये.
	श्रव.	शत.	धनि.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.	अश्वि.	रेव	पू.भा.	उ.भा.	शत.	धनि.	श्रव.	शत.	धनि.

(ii) पातदोष-विवाह नक्षत्रों के नीचे विवाह-काल में सूर्य निम्न नक्षत्रों पर हो, तो पातदोष होता है। **उदाहरण**-विवाह-नक्षत्र यदि श्रवण हो, तो सूर्य-अश्वि, आर्द्रा, स्वा., विशाखा, पू.षा. एवं धनि. आदि नक्षत्र में हो, तो पातदोष होगा। **विशेष**-हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतीपात, गण्ड और शूल योगों का अन्त जिस विवाह नक्षत्र में हो, वह भी पात-दूषित हो जाता है। विवाह नक्षत्र में शूल योग हो या उसका अन्त हो, तो **'भुजंग'** नामक पातदोष होता है, जोकि सर्वत्र त्याज्य माना जाता है। **नोट**-वैधृति-व्यतिपात की सम्पूर्ण घड़ियां, शूल-योग की प्रथम 5 घड़ियां, गण्ड की प्रथम 6 घड़ियां विशेषतः त्याज्य हैं। हर्षण, साध्य को पूज्य माना गया है।

(3) युति दोष-जिस नक्षत्र का विवाह निकाल रहे हों, यदि उसी नक्षत्र में कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष माना जाता है। 'श्रीपति' अनुसार पापग्रहों की युति विशेषतया त्याज्य मानी जाती है। जबकि शुभ ग्रह की युति शुभ मानी जाती है। परन्तु चन्द्रमा यदि अपनी (स्व) राशि, उच्च या मित्रग्रह की राशि में हों, तो युति दोष नही होता, अपितु वर-वधू का कल्याण करने वाला होता है। यथा-चन्द्रमा वृष, मिथुन, सिंह, कन्या राशि में हो, तो क्रूर ग्रह की युति का परिहार माना जाता है।

(4) वेध दोष-पंचशलाका चक्र अनुसार विवाह नक्षत्र यदि किसी अन्य क्रूर आदि ग्रह से विद्ध हो जाएं, तो उस नक्षत्र का विवाह सर्वथा त्याज्य माना जाता है। वेध नक्षत्र ज्ञान के लिए पंचशलाका एवं सप्त-शलाका चक्रों का आश्रय लिया जाता है। वधू-प्रवेश, दान, वर-कन्या का वरण एवं

(4) वेध दोष चक्र-पञ्चशलाका वेध

वेधक नक्षत्र	अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
वेध्य नक्षत्र	पू.फा.	अभि.	उ.षा.	श्रव.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.	शत.	भर.	पुर्न	मृग.	मघा	आश्ले.	हस्त	उ.फा.

विवाहादि शुभ कार्यों में 'पंचशलाका' चक्र का तथा अन्य मंगल कार्यों में सप्तशलाका चक्र के द्वारा विचार करना चाहिए। विवाह पटल अनुसार सूर्यवेध से वैधव्य, भौमवेध से पुत्रशोक बुधवेध से वन्ध्या योग, गुरुवेध से प्रव्रज्या, शुक्रवेध से केवल कन्या सन्तति तथा शनि, राहु-केतु वेध से दारिद्रय योग होता है।

ज्योतिर्निबन्धानुसार सौम्य ग्रह से विद्ध नक्षत्र का चरण ही त्याज्य होता है, परन्तु क्रूर ग्रह से कोई भी चरण विद्ध होने पर पूर्ण नक्षत्र त्याज्य माना जाता है। यथा-बुध, गुरु, शुक्रादि शुभ ग्रह का केवल चरण वेध (प्रथम-चतुर्थ, द्वितीय-तृतीय) का विचार करें। जबकि सूर्य, मंगल, शनि, राहु आदि क्रूर ग्रहों के सभी चरण त्याज्य होंगे। अर्थात् वेधदोष होगा।

(5) यामित्रदोष–

विवाह नक्षत्र के नीचे वाले नक्षत्रों पर स्थित कोई भी ग्रह उस नक्षत्र में होने पर यामित्रदोष होता है। चक्र में ऊपर प्रत्येक विवाह नक्षत्र और नीचे के कोष्ठक में उससे 14वाँ नक्षत्र है, जिस पर कोई भी ग्रह होने पर वह ऊपरी खाने के विवाह-नक्षत्र को यामित्र-दोष से दूषित करेगा। पापी या क्रूर ग्रह का यामित्र दोष पूज्य होता है। **नोट–(i)** यामित्रदोष वाले ग्रह को शुभ ग्रह देखते हों, तो यह दोष नहीं रहता। (ii) सप्तम भाव में चंद्र-गुरु स्वगृही, उच्चस्थ या मित्रक्षेत्री हो तो यामित्रदोष नहीं रहता।

(5) यामित्र दोष चक्र

अश्वि	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
चित्रा	अनु.	ज्ये.	धनि.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.	अश्वि	कृति.	मृग.	पुन.	पुष्य	आश्ले	उ.फा.	हस्त

(6) बाणदोष–

रोगादि पाँच बाणों का सम्बन्ध सूर्य के विशेष अंशों से है, चाहे वह किसी राशि का हो। प्रत्येक राशि के जिन अंशों का सम्बन्ध जिस बाण से है, उससे पहले के अंश (गतांश) उस बाण के सामने चक्र में दिए गए हैं, क्योंकि पंचांग में दैनिक सूर्यस्पष्ट के गत राश्यंश के साथ अग्रिमांश की भुक्त कला-विकला दी जाती है। अतः आप सरलतापूर्वक दैनिक सूर्य-गति निकालकर सूर्यस्पष्ट के समय में (1° अंश की) जमा-घटा देने से बाणारम्भ-काल तथा समाप्तिकाल जान सकते हैं। यों तो पाँच-बाणों के विशेष समय व वारानुसार त्याज्य माने गए हैं। परन्तु मुहूर्त-शोधन में इन सभी बाणों को प्रत्येक वार में सभी कालों में वर्ज्य करने की परम्परा है। अपि च, प्रचलित परम्परानुसार पंचांगदिवाकर में केवल 1° से 1°-30′ अर्थात् 30′ कला तक ही अशुभ प्रभाव को समाप्तिकाल मानकर मुहूर्त-लग्न लगाए जाते हैं।

(6) बाणदोष चक्र

नाम बाण	सूर्य के गतांश	वर्ज्य कर्म	वर्ज्य वार	वर्ज्य काल
रोग	8°-17°-27°	उपनयन	रविवार	रात्रि
अग्नि	2°-11°-20°-29°	गृहारम्भ	मंगलवार	सदैव
नृप	4°-13°-22°	राजसेवा	शनिवार	दिवाकाल
चोर	6°-15°-24°	यात्रा	मंगलवार	रात्रि
मृत्यु	1°-10°-19°-28°	विवाह	बुधवार	संध्या

(7) एकार्गल दोष–विवाह नक्षत्र के समय यदि सूर्य अधिष्ठित नक्षत्र साभिजित गिनने पर विषम हो, तो एकार्गल दोष होता है, परन्तु उस समय व्याघात, गण्ड, व्यतीपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड–इन अशुभ योगों की विद्यमानता अनिवार्य है। अतः चक्र में प्रत्येक वैवाहिक नक्षत्र से विषम संख्यक नक्षत्रों को उस नक्षत्र के नीचे वाले कोष्ठकों में दिया गया है। जिनमें से किसी नक्षत्र पर सूर्य के होने से उस कोष्ठक का विवाह-नक्षत्र एकार्गल दोष से दूषित होता है। यह कश्मीर में विशेषतः वर्जित है। **परिहार**–ज्योतिर्निबन्ध एवं मुहूर्त-गणपति अनुसार अशुभ योगों में कुछ विशेष घड़ियां ही विशेष रूप से त्याज्य मानी गई हैं–विष्कम्भ की प्रथम 3 घड़ियां, व्याघात और वज्र की प्रथम 9 घड़ियां, परिघ योग का पूर्वार्द्ध (7½ घटि) भाग, शूल योग की प्रथम 5 घड़ियां, गण्ड और अतिगण्ड की प्रथम 6 घड़ियां, वैधृति-व्यतीपात योग सम्पूर्णतया त्याज्य होंगे।

विवाह नक्षत्र →	अश्वि.	रोह.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
–सूर्य अधिष्ठित नक्षत्र–	अश्वि	पू.भा.	शत	पू.षा.	ज्ये.	अनु	विशा	स्वा	हस्त	पू.फा.	अश्ले	मृग.	धनि.	कृति	भर.
	कृति	रेव	उ.भा.	अभि	पू.षा.	मूल	ज्ये.	अनु	स्वा	हस्त	पू.फा.	पुर्न	पू.भा.	मृग	रोहि
	मृग	भर	अश्वि	धनि.	अभि	उ.षा.	पू.षा.	मूल	अनु	स्वा.	हस्त	श्ले.	रेव	पुर्न	आर्द्रा
	पुर्न	रोह.	कृति	पू.भा.	धनि	श्रवण	अभि.	उ.षा.	मूल	अनु	स्वा	पू.फा.	भर	अश्ले	पुष्य
	अश्ले	आर्द्रा	मृग.	रेव.	पू.भा.	शत.	धनि	श्रव	उ.षा.	मूल	अनु	हस्त	रोहि	पू.फा.	मघा
	पू.फा.	पुष्य	पुर्न	भर.	रेव	उ.भा.	पू.भा.	शत.	श्रव	उ.षा.	मूल	स्वा	आर्द्रा	हस्त	उ.फा.
	हस्त	मघा	अश्ले	रोहि.	भर.	अश्वि	रेव	उ.भा.	शत	श्रव.	उ.षा.	अनु.	पुष्य	स्वा.	चित्रा
	स्वा.	उ.फा.	पू.फा.	आर्द्रा	रोहि.	कृति	भर.	अश्वि	उ.भा.	शत	श्रव.	मूल	मघा	अनु.	विशा.
	अनु.	चित्रा	हस्त	पुष्य	आर्द्रा	मृग.	रोहि.	कृति.	अश्वि	उ.भा.	शत	उ.षा.	उ.फा.	मूल	ज्ये.
	मूल	विशा	स्वा.	मघा	पुष्य	पुर्न	आर्द्रा	मृग.	कृति	अश्वि	उ.भा.	श्रव	चित्रा	उ.षा.	पू.षा.
	उ.षा.	ज्ये.	अनु.	उ.फा.	मघा	अश्ले	पुष्य	पुर्न	मृग.	कृति	अश्वि	शत	विशा	श्रव	अभि.
	श्रव.	पू.षा.	मूला	चित्रा	उ.फा.	पू.फा.	मघा	अश्ले	पुर्न	मृग	कृति	उ.भा.	ज्ये.	शत.	धनि
	शत	अभि.	उ.षा.	विशा.	चित्रा	हस्त	उ.फा.	पू.फा.	अश्ले	पुर्न	मृग	अश्वि	पू.षा.	उ.भा.	पू.भा.
	उ.भा.	धनि.	श्रव.	ज्ये.	विशा.	स्वा.	चित्रा	हस्त	पू.फा.	अश्ले	पुर्न	कृति	अभि	अश्वि	रेव.

(8) उपग्रह दोष–विवाह-नक्षत्र के समय सूर्य जिस नक्षत्र में हो, तो उसे 5वें, 7वें, 8वें, 10वें, 14वें, 15वें, 18वें, 19वें, 21वें, 22वें, 23वें, 24वें, 25वें नक्षत्र पर यदि वहीं विवाह-नक्षत्र हो, तो उपग्रह दोष होता है। **उदाहरणार्थ**–यदि अश्विनी नक्षत्र हो, तो सूर्य यदि शत., श्रव., उ.षा. आदि नक्षत्रों में होगा तो उपग्रह दोष होगा। यह दोष कुरु देश (दिल्ली के समीप) और वाह्लिक (कश्मीर के पश्चिम) क्षेत्रों में विशेषतः अशुभ होता है। अत्यत्र नहीं।

—सूर्य नक्षत्र—

विवाह नक्षत्र	अश्वि.	रोह.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
	शत.	रेव.	अश्वि	आर्द्रा	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	हस्त	स्वा.	अनु.	ज्ये.	मूल	श्रव.	धनि.
	श्रव.	पू.भा.	उ.भा.	रोहि	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	पू.फा.	हस्त	स्वा.	विशा.	अनु.	पू.षा.	उ.षा.
	उ.षा.	शत.	पू.भा.	कृति	मृग	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	मघा	उ.फा.	चित्रा	स्वा.	विशा.	मूल	पू.षा.
	मूल	श्रव.	धनि.	अश्वि.	कृति	रोहि.	मृग	आर्द्रा	पुष्य	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	अनु.	ज्ये.
	स्वा.	ज्ये.	मूल	शत.	उ.भा.	रेव.	अश्वि.	भर.	रोहि.	आर्द्रा	पुष्य	आश्ले	मघा	हस्त	चित्रा
	चित्रा	अनु.	ज्ये.	धनि.	पू.भा.	उ.भा.	रेव	अश्वि.	कृति.	मृग.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	उ.फा.	हस्त
	पू.फा.	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	श्रव.	धनि.	शत.	पू.भा.	रेव.	भर.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	आश्ले	मघा
	मघा	हस्त	चित्रा	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	शत.	उ.भा.	अश्वि.	कृति	रोहि.	मृग.	पुष्य	आश्ले
	पुष्य	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रव.	शत.	उ.भा.	अश्वि	भर.	कृति	आर्द्रा	पुन.
	पुन.	मघा	पू.फा.	विशा.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	धनि.	पूभा.	रेव	अश्वि.	भर.	मृग.	आर्द्रा
	आर्द्रा	आश्ले	मघा	स्वा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	श्रव.	शत.	उ.भा.	रेव.	अश्वि.	रोहि.	मृग.
	मृग.	पुष्य	आश्ले	चित्रा	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	उ.षा.	धनि.	पूभा	उ.भा.	रेव.	कृति	रोहि.
	रोहि.	पुन.	पुष्य	हस्त	स्वा.	विशा	अनु.	ज्ये.	पू.षा.	श्रव.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	भर.	कृति.

(9) स्थूल क्रान्तिसाम्य दोषः—

सूर्य	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
चन्द्र	सिंह	मकर	धनु	वृश्चि.	मेष	मीन	कुम्भ	कर्क	मिथुन	वृष	तुला	कन्या

चक्र के ऊपरी बॉक्स में क्रमशः द्वादश राशियां सूर्य की दी गई हैं। उनमें से जिस राशि पर सूर्य हो उस बॉक्स की नीचे वाली राशि पर चन्द्रमा के होने से क्रान्तिसाम्य दोष होता है। क्रान्तिसाम्य सर्वत्र त्याज्य है। परन्तु उपर्युक्त प्रकार का क्रान्तिसाम्य नितान्त स्थूल होता है। महापात गणित द्वारा प्रणीत क्रान्तिसाम्य दोष ही विवाह–मुहूर्त्त शोधन में वर्जित होता है।

(10) दग्धातिथि दोष चक्र—

सूर्य राशि	मेष (वैशा.)	वृष (ज्ये.)	मिथुन (आषा.)	कर्क (श्राव.)	सिंह (भाद्र.)	कन्या (आश्वि.)	तुला (कार्ति.)	वृश्चि. (मार्ग.)	धनु (पौष)	मकर (माघ)	कुम्भ (फाल्गु.)	मीन चैत्र)
दग्धा तिथि	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२

जब सूर्य मेष (वैशाख), वृष (ज्येष्ठ), मिथुन (आषाढ़) आदि में हो तब क्रमशः ६, ४, ८ आदि तिथियां दग्धा तिथियां कहलाती हैं। **अपवाद**—मास में दग्धा तिथियां केवल मध्य देश में ही वर्जित होती हैं। सर्वत्र नहीं।

१२ राशियों का घाती चक्र

द्वादश राशि के प्रत्येक मनुष्य को घाती चक्र में दिए अनुसार प्रत्येक तिथि, वार नक्षत्र, लग्न, चंद्रमास घातक होते हैं। अतः मनुष्य को चाहिये कि वे अपना कोई भी इष्ट और शुभ कार्य घातक समय वा मुहूर्त्त पर आरम्भ न करें। नीचे दिया हुआ घात चक्र युद्ध, विवाद (शास्त्रार्थ) राज सेवा, वाहन, यात्रा, रोगादि कार्यों में देखना चाहिए। अर्थात् इन राशि वालों के लिए इन कार्यों में घात चन्द्र, वारादि शुभ नहीं और तीर्थ यात्रा, विवाहादि में घात चन्द्रादि का विचार न करें। विशेष फलादेश जानने के लिये पत्र व्यवहार करें।

राशयः	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घातमास	कार्तिक	मार्ग	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि	१-६-११	५-१०-१५	२-७-१२	२-७-१२	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
घात वार	रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
घात नक्षत्र	नघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शत.	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात योग	विष्कुम्भ	सुकर्मा	परिघ	धृति	प्रीति	सुकर्मा	अतिगंड	ब्रह्म	वैधृति	गंड	व्याघात	वज्र
घात करण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बालव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुभ	चतुष्पाद
घात लग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घात प्रहर	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	प्रथम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	चतुर्थ
पु. घा. चंद	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
स्त्री घा. चंद	मेष	धनु	धनु	मिथुन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	मेष

ग्रहों का नैसर्गिक मैत्री चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मित्र	चंद्र मंगल गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चंद्र गुरु	सूर्य शुक्र	सूर्य चंद्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र	शुक्र बुध शनि	बुध गुरु
सम	बुध	मंगल गुरु शुक्र शनि	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	गुरु	गुरु केतु	मंग. राहु शुक्र
शत्रु	शुक्र शनि	०० ००	बुध राहु	चंद्र	बुध शुक्र	सूर्य चंद्र	सूर्य मंगल चंद्र	सूर्य चंद्र मंगल	सूर्य चंद्र शनि
उच्चांश	मेष १०	वृषे ३	म. २८	कं. १५	कर्क ५	मी. २७	तु. २०	वृ. १५°	
नीचांश	तु. १०	वृश्चि ३	क. २८	मी १५	म. ५	कं. २७	मे.२०°	वृ. १५°	

नक्षत्र, राशि, वर्ण, योनि आदि ज्ञान चक्र

नक्षत्र	चरणाक्षर	राशि	वश्य	योनि	महावैर योनि	राशि स्वामी	गण	नाड़ी	मुख	तत्त्व हंसका	नाम (संज्ञा)	नक्षत्र देवता	तारे	पंचशला का वेध
अश्विनी	चू. चे. चो. ला.	मेष	चतुष्पद	अश्व	महिष	मंगल	देव	आदि	तिर्य	अग्नि	क्षिप्र	अश्वि कु.	३	पू. फा.
भरणी	ली. लू. ले. लो.	मेष	चतुष्पद	गज	सिंह	मंगल	मनुष्य	मध्य	अधो	अग्नि	उग्र	यम	३	अनु
कृतिका	अ. इ. उ. ए.	मे.१ वृष ३	चतुष्पद	मेढ़ा	वानर	मं.१ शु.३	राक्षस	अन्त्य	अधो	अ.१ पृ.३	मिश्र	अग्नि	६	विशा
रोहिणी	ओ. वा. वी. वू.	वृष	चतुष्पद	सर्प	न्योला	शुक्र	मनुष्य	अन्त्य	ऊर्ध्व	पृथ्वी	ध्रुव	ब्रह्मा	५	अभि
मृगशिर	वे. वो. का. की.	वृ.२ मि.२	च.२ नर२	सर्प	न्योला	शु.२ बु.२	देव	मध्य	तिर्य	पृ.२ वा.२	मृदु	चन्द्रमा	५	उ.षा.
आर्द्रा	कु. घ. ङ. छ.	मिथुन	नर (मनुष्य)	श्वान	मृग	बुध	मनुष्य	आदि	ऊर्ध्व	वायु	तीक्ष्ण	शिव	१	पू.षा.
पुनर्वसु	के. को. हा. ही.	मि.३ क.१	न.३ ज.१	मार्जार	मूषक	बु.३ चं.१	देव	आदि	तीर्य	वा.३ ज.१	चर	अदिति	४	मूल
पुष्य	हू. हे. हो. डा.	कर्क	जलचर	मेढ़ा	वानर	चंद्र	देव	मध्य	ऊर्ध्व	जल	क्षिप्र	गुरु	३	ज्ये.
आश्लेषा	डी. डू. डे. डो.	कर्क	जलचर	मार्जा.	मूषक	चंद्र	राक्षस	अन्त्य	अधो	जल	तीक्ष्ण	सर्प	५	धनि
मघा	मा. मी. मू. मे.	सिंह	वनचर	मूषक	बिडाल	सूर्य	राक्षस	अन्त्य	अधो	अग्नि	उग्र	पितर	५	श्रव
पू.फा.	मो. टा.टी. टू.	सिंह	वनचर	मूषक	बिडाल	सूर्य	मनुष्य	मध्य	अधो	अग्नि	उग्र	भग, सूर्य	२	अश्वि
उ.फा.	टे. टो. पा. पी.	सिं.१ कं.३	व.१ न.३	गौ	व्याघ्र	सू.१ बु.३	मनुष्य	आदि	ऊर्ध्व	अ.१ पृ.३	ध्रुव	अर्यमा	२	रेव
हस्त	पू. ष. ण. ठ.	कन्या	नर	महिष	अश्व	बुध	देव	आदि	तिर्य	पृथ्वी	क्षिप्र	सूर्य	५	उ.भा.
चित्रा	पे. पो. रा. री.	कं.२ तु.२	नर	व्याघ्र	गौ	बु.२ शु.२	राक्षस	मध्य	तिर्य	पृ.२ वा.२	मृदु	विश्वकर्मा	१	पू.भा.
स्वाती	रू. रे. रो. ता.	तुला	नर	महिष	अश्व	शुक्र	देव	अन्त्य	तिर्य	वायु	चर	वायु	१	शत
विशाखा	ती. तू. ते. तो.	तु.३ वृ.१	न.३ की.१	व्याघ्र	गौ	शु.३ मं.१	राक्षस	अन्त्य	अधो	वा.३ ज.१	मिश्र	इंद्राग्नि	४	कृति
अनुराधा	ना. नी. नू. ने.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	देव	मध्य	तिर्य	जल	मृदु	मित्र	४	भर
ज्येष्ठा	नो. या. यी. यू.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	राक्षस	आदि	तिर्य	जल	तीक्ष्ण	इन्द्र	३	पुष्य
मूल	ये. यो. भा. भी.	धनु	नर	श्वान	मृग	गुरु	राक्षस	आदि	अधो	अग्नि	तीक्ष्ण	राक्षस	११	पुन
पूर्वाषाढ़ा	भू. ध. फ. ढ.	धनु	न॥ चतु ३	वानर	मेंढ़ा	गुरु	मनुष्य	मध्य	अधो	अग्नि	उग्र	जल	२	आर्द्रा
उत्तराषाढ़ा	भे. भो. जा. जी.	ध.१ मं.३	चतुष्पद	नकुल	सर्प	गु.१ श.३	मनुष्य	अन्त्य	ऊर्ध्व	अ.१ पृ.३	ध्रुव	विश्वेदेव	२	मृग
अभिजित	जु. जे. जो. ख.	मकर	—	नकुल	सर्प	शनि	—	—	००	पृथ्वी	क्षिप्र	ब्रह्मा	३	रोह
श्रवण	खी. खू. खे. खो.	मकर	चतु.१ ॥जर	वानर	मेढ़ा	शनि	देव	अन्त्य	ऊर्ध्व	पृथ्वी	चर	विष्णु	३	कृति
धनिष्ठा	गा. गी. गू. गे.	म.२ कुं.२	ज.२ न.२	सिंह	गज	शनि	राक्षस	मध्य	ऊर्ध्व	पृ.२ वा.२	चर	वसु	४	विशा
शतभिषा	गो. सा. सी. सू.	कुम्भ	नर	अश्व	महिष	शनि	राक्षस	आदि	ऊर्ध्व	वायु	चर	वरुण	१००	स्वा
पूर्वाभाद्रपद	से. सो. दा. दी.	कुं.३ मी.१	न.३ ज.१	सिंह	गज	श.३ गु.१	मनुष्य	आदि	अधो	वा.३ ज.१	उग्र	अजैकपाद	२	चित्रा
उ. भाद्रपद	दू. थ. झ. ञ.	मीन	जलचर	गौ	व्याघ्र	गुरु	मनुष्य	मध्य	ऊर्ध्व	जल	ध्रुव	अहिर्बुध्न्य	२	हस्त
रेवती	दे. दो. चा. ची.	मीन	जलचर	गज	सिंह	गुरु	देव	अन्त्य	तिर्य	जल	मृदु	पूषा	३२	उ.फा.

नामाक्षरों से वर्ग देखने का चक्र (अपने से चतुर्थ वर्ग को मित्र क्षेत्री समझना चाहिए)

अ ई उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	बिडाल	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	हरिण	मेढ़ा

वर्ण ज्ञान चक्र

वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि	१२/४/८	१/५/९	२/६/१०	३/७/११

ग्रह मैत्री चक्र

ग्रहाः	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्राणि	चं मं गु	सू बु	सू चं गुरु	सू शु	सू चं मं.	बु श	शु बु
समाः	बुधः	मं गु शु श	शु श	मं गु श	श	मं गु	गु.
शत्रव	शु श	० ०	बुध	चं	बु शु	सू चं	सू चं मं
उच्चांश	मे १०	वृष ३	म २८	क १५	कर्क ५	मी २७	तु २०
नीचांश	तु १०	वृ ३	क २८	मी १५	म ५	क २७	मे २०

मित्र नवपंचम चक्र								शत्रु नवपंचम चक्र			
१	२	३	५	७	८	९	१०	१२	११	६	४
५	६	७	९	११	१२	१	२	४	३	१०	८

मित्रषडाष्टक चक्र						शत्रुषडाष्टक चक्र					
१	२	३	४	५	६	१	३	५	७	९	११
८	७	१०	९	१२	११	६	८	१०	१२	२	४

मित्रद्विर्द्वादश चक्र						शत्रुद्विर्द्वादश चक्र					
१२	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	११
१	३	५	७	९	११	२	४	६	८	१०	१२

नवपंचम दोष–कन्या से वर अथवा वर से कन्या की राशि पांचवीं, नौवीं हो, तो दम्पत्ति को संतान हानि की संभावना होती है। परन्तु मीन-कर्क, कर्क-वृश्चिक, कुम्भ-मिथुन, कन्या-मकर विशेषतः त्याज्य माने जाते हैं। राशि मैत्री होने की स्थिति में नव-पंचम दोष अचिन्तनीय है।

षडाष्टक दोष–लड़के और लड़की की राशियां परस्पर छठे-आठवें हों तो षडाष्टक यथा-सम्भव त्याज्य है। शत्रु षडाष्टक दोष विशेषतः त्याज्य माना जाता है।

विस्तृत विवेचन के लिए देखें आगामी पृष्ठ 205

मेलापक में मंगलीक योग एवं परिहार

विवाह योग्य लड़के-लड़की की जन्म कुण्डली में वर्ण, वश्य, तारा, ग्रहमैत्री, नाड़ी आदि अष्टकूट सम्बन्धी गुण मिलान के पश्चात् कुण्डली में मंगल एवं **मंगलीक दोष** पर विशेष रूप से विचार किया जाता है। मंगलीक दोष का आधार सामान्यतः निम्न श्लोक माना जाता है।

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तृविनाशाय भर्त्ता कन्या विनाशदः।

—मु. संग्रहदर्पण

अर्थात् जिस कन्या की कुण्डली में १, ४, ७, ८ या १२वें स्थान में मंगल हो, तो वह कन्या वर (पति) के लिए हानिकारक तथा इसी भान्ति जिस लड़के की कुण्डली में इन्हीं स्थानों में मंगल हो वह कन्या को हानिकारक होता है। इसी भांति लग्न, चन्द्र और कभी-कभी शुक्र की राशि से भी मंगल की उपर्युक्त स्थितियों का विचार किया जाता है।

अपवाद—(१) मंगल दोष वाली कन्या का विवाह मंगलीक दोष वाले वर के साथ करने से मंगल का अनिष्ट दोष नहीं होता तथा वर-वधू के मध्य दाम्पत्य सुख बढ़ता है—

कुज दोष वती देया कुजदोषवते किल। नास्ति दोषो न चानिष्टं दम्पत्योः सुखवर्धनम्॥

मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक के परिहारस्वरूप मुहूर्त्त ग्रन्थों में अनेकत्र परिहार वाक्य मिलते हैं। यथा—

(२) यदि लड़की की कुण्डली में जिस स्थान पर मंगल स्थित (मंगलीक कारक) हो, और लड़के की कुण्डली में उसी स्थान पर शनि, मंगल, सूर्य, राहु आदि कोई पाप ग्रह स्थित हों, तो भौमदोष भंग हो जाता है। इसी प्रकार लड़के की कुण्डली में भौम दोष होने पर कन्या की कुण्डली में उसी भाव में कोई पाप ग्रह होने से भी भौमदोष नहीं रहता—

शनिः भौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोष विनाश कृत्॥—फलित संग्रह अन्येऽपि—

भौमेन सदृशो भौमः पापो व तादृशो भवेत्। विवाहः शुभदः प्रोक्तश्चिरायुः पुत्रपौत्रदः॥

अर्थात् एक की कुण्डली में मंगल दोष हो, तो दूसरे की कुण्डली में भी उन्हीं स्थानों में शनि आदि पाप ग्रह होने से मंगलीक दोष का प्रभाव क्षीण होकर विवाह में शुभ होता है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुके तथा। अष्टमे द्वादशे चैव भौमदोषो न विद्यते॥

यह श्लोक भी लगभग इसी आशय का है।

(३) मेष राशि का मंगल लग्न में, वृश्चिक राशि का चौथे भाव में, मकर का सातवें, कर्क राशि का आठवें, एवं धनु राशि का मंगल १२वें हो, तो मंगल दोष नहीं होता। यथोक्तम्—

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे।
द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौमदोषो न विद्यते॥ —मुहूर्त्त पारिजात

प्रकारान्तर से, मीन का मंगल ७वें भाव तथा कुम्भ राशि का मंगल अष्टम में हो, तो भौम दोष नहीं होता। **''द्यूने मीने घटे चाष्टौ भौम दोषो न विद्यते'' —मुहूर्त्त चिंतामणि**

(४) यदि द्वितीय भाव में चन्द्र-शुक्र का योग हो, या मंगल गुरु द्वारा दृष्ट हो, केन्द्र भावस्थ राहु हो, अथवा केन्द्र में राहु-मंगल का योग हो, तो मंगल दोष नहीं रहता—

न मंगली चन्द्र भृगु द्वितीये, न मंगली पश्यति यस्य जीवा।
न मंगली केन्द्रगते च राहुः, न मंगली मंगल-राहु योगे॥ —मुहूर्त्त दीपक

(५) बलान्वित गुरु वा शुक्र लग्न में हो, तो वक्री, नीचस्थ, अस्तंगत अथवा शत्रुक्षेत्री मंगल उपरोक्त दुष्ट स्थानों में होने पर भी भौम दोष नहीं होता—

सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽथवाभौमे।
वक्रे नीचारि गृहस्थे वाऽस्तेऽपि न कुजदोषः॥ —मुहूर्त्त दीपक

(६) इसी भांति केन्द्र व त्रिकोण में यदि शुभ ग्रह हों, तथा ३, ६, ११वें भावों में पाप-ग्रह हों तथा सप्तमेश ग्रह सप्तम में ही हो, तो मंगल दोष नहीं होता—

''केन्द्र कोणे शुभादये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः।
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा॥'' —मुहूर्त्त चिंतामणि

(७) यद्यपि १, २, ४, ७, ८, ११ और १२वें भावों में स्थित मंगल वर-वधू के वैवाहिक जीवन में विघटन उत्पन्न करता है, परन्तु यदि मंगल अपने घर (१, ८) का हो, उच्चस्थ (मकर) का किंवा मित्र क्षेत्री मंगल दोष कारक नहीं होता—

तनु धन सुख मदनायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघट्यति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा॥ —मु. चिंतामणि

(८) यदि वर-कन्या की कुण्डलियों में परस्पर राशिमैत्री हो, गणैक्य हो, २७ गुण या अधिक मिलान होता हो, तो भी भौम दोष अविचारणीय है। **'मुहूर्त्त दीपक'** नामक ग्रन्थानुसार—

राशिमैत्रं यदा याति गणैक्यं वा यदा भवेत्। अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते॥

विवेचन—उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मुहूर्त्त संग्रह दर्पण में दिए गए मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक (''लग्ने व्यये पाताले—'') के परिहारस्वरूप कुछ अर्वाचीन ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं, जिनमें परस्पर विरोध वाक्यता भी मिलती है।

उल्लेखनीय है कि प्राचीन सैद्धान्तिक एवं प्रतिष्ठित मुहूर्त्त ग्रंथों जैसे-विवाह वृन्दावन, मुहूर्त्त मार्तण्ड, सारावली, मु. चिन्तामणि (प्राचीन संस्करण), ज्योतिर्निबन्ध आदि) में मंगलीक सम्बन्धी उपर्युक्त श्लोक एवं तत्सम्बन्ध विभिन्न परिहार वाक्यों का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता।

वर-कन्या की कुण्डली में मंगलीक दोष एवं उसके परिहार का निर्णय अत्यन्त सावधानीपूर्वक करना चाहिए। केवल १, ४, ७, ८ आदि भावों में मंगल को देखकर दाम्पत्य जीवन के सुख-दुःख का निर्णय कर देना उपयुक्त नहीं। मंगलीक वाले स्थानों (भावों) में मंगल के अतिरिक्त कोई अन्य क्रूर ग्रह भी १, २, ७ एवं १२वें स्थानों में हो, तो वह भी परिवारिक एवं वैवाहिक जीवन के लिए अनिष्टकारी होता है। यथा—

लग्ने क्रूरा व्यये क्रूरा धने क्रूराः कुजस्तथा।
सप्तमे भवने क्रूराः परिवार क्षयंकराः॥ —मु. संग्रह दर्पण

मंगल अथवा मंगलीक दोष का निर्णय कुण्डली विशेष में सभी ग्रहों के पारस्परिक अनुशीलन के पश्चात् ही करना चाहिए। मिलान करते समय केवल मंगल या मंगलीक पर ही अत्यधिक बल न देते हुए मेलापक सम्बन्धी अन्य तत्त्वों का भी सर्वाङ्ग रूप से विवेचन करना चाहिए। जैसे—चलित भाव कुण्डली, सप्तमेश की उच्च-नीच स्थिति, सप्तम भाव पर गुरु, शुक्र की दृष्टि आदि तत्त्वों का सम्यक विचार किसी विद्वान ज्योतिषी जी से करवाना चाहिए।

वर-कन्या मिलान में वर्णादि अष्टकूटों का महत्त्व

विवाह गृहस्थाश्रम की आधारशिला है और उसी के माध्यम से मनुष्य, देव, ऋषि एवं पितृ आदि ऋण त्रय से उद्धृण होकर परम कल्याण को प्राप्त कर सकता है। तद् हेतु उत्तम लक्षणों जैसे-सुन्दर, सुशीला, मधुरभाषिणी एवं पतिव्रता कन्या तथा कर्त्तव्यनिष्ठ, स्वस्थ, शिक्षित, सदाचारी एवं सुसंस्कृत लड़के के साथ विवाह सम्बन्ध शुभ होता है। विवाह सम्बन्ध करने से पूर्व लड़के-लड़की का कुल-गोत्र, सनाथता, विद्या, धन, स्वास्थ्य (शरीर) और आयु-इन सात गुणों की परीक्षा करने के पश्चात् ही कुण्डलियों में परस्पर **मंगलीक आदि अरिष्ट** योगों तथा वर्ग, **स्त्रीदूर, कर्तरि एवं वर्णादि अष्टकूटों** का विचार करना चाहिए।

मेलापक प्रक्रिया में **मंगलीक और अष्टकूट** तत्त्वों का विशेष महत्त्व है, क्योंकि वर-कन्या के दाम्पत्य जीवन को अधिकाधिक सुखी एवं मंगलमय बनाने के लिए उनके जन्म नक्षत्रों एवं जन्म कुण्डलियों के अनुसार मिलान करना अत्यन्त आवश्यक है। उपयुक्त मिलान न होने की स्थिति में पति-पत्नी के वैवाहिक जीवन में-विचार वैमनस्य, सन्तान कष्ट, वैधव्य, वैधुर्यादि दोष अथवा पारिवारिक कष्ट होने की सम्भावनाएं हो जाती है। **मंगलीक दोष** का विशेष विवरण इसी पंचाँग के गत पृष्ठ पर दिया गया है। यहाँ पर नक्षत्र मिलान के मुख्य तत्त्व अष्टकूट का विवेचन किया जा रहा है। ध्यान रहे, अष्ट (आठ) कुंटों का निर्णय वर-कन्या के जन्म नक्षत्रों से ही किया जाता है। अष्टकूटों के आठ कूट (अंग) निम्नलिखित हैं :-

(१) वर्ण (२) वश्य (३) तारा (४) योनि (५) ग्रहमैत्री (६) गणमैत्री (७) भकूट तथा (८) नाड़ी -ये आठ कूट हैं।

प्रत्येक कूट की क्रम संख्या अपने श्रेष्ठ गुणों की सूचक है। वर्णादि अष्टकूटों में **गुणों का योग ३६** होता है। इसमें क्रमानुसार वर्ण का १ गुण, वश्य के २, तारा के ३, योनि के ४, ग्रहमैत्री के ५, गण-मैत्री के ६, भकूट के ७ एवं नाड़ी के ८ (आठ) गुण जानने चाहिएं।

वर्णादि कुल ३६ गुणों के योग में से १ से १७ तक गुण मिलान तुच्छ एवं निन्दनीय (त्याज्य) माने जाते हैं, १८ से २१ तक मध्यम एवं ग्राह्य और २२ से २८ तक उत्तम तथा २९ से ३६ तक गुण सर्वोत्कृष्ट मिलान माना जाता है।

एकैकवृद्धितो ज्ञेया वर्णादीनां गुणाः क्रमात्।
विवाहः शुभदस्तेषां गुणे त्वष्टादशाधिके॥ —मु० गणपति

वर्णादि अष्टकूट

(1) वर्णकूट विचार—समाज में प्रचलित वर्णों की भान्ति राशियों में भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार वर्ण होते हैं। ४, ८, १२ राशियों का ब्राह्मण ; १, ५, ९ का क्षत्रिय ; २, ६, १० वैश्य तथा ३, ७, ११ राशियों का शूद्रवर्ण होता है। वर का वर्ण कन्या के वर्ण से उच्चस्तरीय अथवा समान होने पर एक गुण प्राप्त होता है, अन्यथा शून्य प्राप्त होता है।

परिहार—(*i*) राशीश मैत्री—यदि वर की राशि का वर्ण कन्या के राशि-वर्ण से हीन हो, परन्तु राशिपति उत्तम वर्ण हो, तो वर्ण मिलान शुभ हो जाता है। अथवा वर-कन्या के राशिस्वामी परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम हो।

सूर्य-मंगल का वर्ण क्षत्रिय, चन्द्रमा का वैश्य, बुध-शनि का शूद्र तथा गुरु-शुक्र का ब्राह्मण है।

वर्ण गुण चक्र

कन्या↓ वर→	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
ब्राह्मण	1	0	0	0
क्षत्रिय	1	1	0	0
वैश्य	1	1	1	0
शूद्र	1	1	1	1

(*ii*) **राशीश एकता**—वर-कन्या का एक ही राशीश।

(*iii*) **नवमांशेश मैत्री**—वर-कन्या के नवमांशेश परस्पर मित्र-मित्र अथवा मित्र-सम हों।

(*iv*) **नवमांशेश एकता**—वर-कन्या का एक ही नवमांशेश हो।

(2) वश्यकूट विचार—'वैश्य' का अर्थ है-वश में करने योग्य। सिंह राशि के अतिरिक्त सभी राशियाँ पुरुष (नर) राशियों के वश में हैं। जल राशियाँ (४, १० उ./१२)-नर राशियों (३, ६, ७, ९ पूर्वार्ध, ११) का भक्ष्य है। वृश्चिक राशि को छोड़कर शेष राशियाँ सिंह राशि के वश्य हैं। चतुष्पद, मानव, जलचर, वनचर तथा कीट आदि वश्य-पंचक-राशियों के अनुसार निम्न चक्र से ज्ञातव्य हैं—

वश्य	वर-कन्या राशि
चतुष्पद	मेष, वृष, धनु का उत्तरार्द्ध, मकर-पूर्वार्ध
मानव	मिथुन, कन्या, तुला, धनु का पूर्वार्ध, कुम्भ
जलचर	कर्क, मकर-उत्तरार्ध, मीन
वनचर	सिंह
कीट	वृश्चिक

गुण-विभाग—वश्य-विचार के अन्तर्गत वश्यों के परस्पर मैत्री, वैर, भक्ष्य और वश्य आदि 4 मूल तत्त्व हैं। एक समान वश्य अथवा मैत्री होने पर 2 गुण ; एक वश्य और दूसरा शत्रु होने पर एक गुण ; एक वश्य और एक भक्ष्य होने पर आधा गुण तथा एक शत्रु और एक भक्ष्य होने पर शून्य अर्थात् गुणाभाव होगा-जैसा-द्विपद (मानव) राशियों का जलचर राशियों से वश्य-भक्ष्य, सिंह (वन) से वैर-भक्ष्य, चतुष्पदों से वश्य-शत्रु सम्बन्ध है।

वश्य गुण चक्र

कन्या↓ वर→	चतुष्पद	मानव	जल	वन	कीट
चतुष्पद	2	1	1	0	1
मानव	1	2	1/2	0	1
जल	1	1/2	2	1	1
वन	0	0	1	2	0
कीट	1	0	1	0	2

वश्यकूट परिहार

(*i*) **राशीश मैत्री**—वर-कन्या के राशिस्वामी परस्पर मित्र-मित्र अथवा मित्र-सम हों।

(*ii*) **राशीश एकता**—दोनों का एक ही राशीश हो।

(*iii*) **नवामांशेश-मैत्री**–दोनों (वर-कन्या) के नवमांशेश परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम।

(*iv*) **नवमांशेश-एकता**–दोनों का ही नवमांशेश हो।

(*v*) **योनि-मैत्री**–वर-कन्या में परस्पर योनि-मैत्री होने पर भी वश्य दोष का परिहार हो जाता है।

(3) ताराकूट विचार–ताराकूट का सम्बन्ध नक्षत्रों से है। जन्मनक्षत्र से गिरने पर तारा का ज्ञान होता है। जन्म, सम्पद्, विपद्, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, वध, मैत्र, अतिमैत्र–ये नक्षत्र ही ताराएं होती है। ये शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के हैं। कन्या के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक तथा वर के जन्म नक्षत्र से कन्या के जन्म नक्षत्र तक गिनकर दोनों तारा संख्याओं को अलग-अलग 9 द्वारा भाग देने पर यदि शेष 3, 5, 7 बचे तों '**अशुभ-तारा**' होती है, अन्यथा '**शुभतारा**' होगी।

तारा गुण चक्र

शेषांक		वर								
		१	२	३	४	५	६	७	८	०
कन्या	१	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
	२	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
	३	1.5	1.5	0	1.5	0	1.5	0	1.5	1.5
	४	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
	५	1.5	1.5	0	1.5	0	1.5	0	1.5	1.5
	६	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
	७	1.5	1.5	0	1.5	0	1.5	0	1.5	1.5
	८	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
	०	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3

यदि दोनों प्रकार से (वर-कन्या) शुभ तारा प्राप्त हो, तो समझना चाहिए कि ताराकूट दोष का अभाव है अर्थात् 3 गुण होंगे। यदि एक प्रकार से शुभतारा और दूसरे प्रकार से अशुभतारा मिले तो डेढ़ (*1.5*) गुण होंगे। यदि दोनों ताराओं में अशुभ तारा हो तो शून्य गुण होगा। **ध्यान रहे,** दोनों प्रकार से अशुभतारा कभी भी प्राप्त नहीं होती। **जैसे**–वर के नक्षत्र अश्विनी से कन्या के नक्षत्र मृगशिर तक गिनने पर 5वीं तारा (प्रत्यरि) होती है तथा कन्या के नक्षत्र मृगशिर से वर के नक्षत्र अश्विनी तक की नक्षत्र संख्या 24 हुई।

तारादोष परिहार–(*i*) **राशीश मैत्री**–दोनों (वर-कन्या) के राशिस्वामी परस्पर मित्र-मित्र या मित्र-सम हों।

(*ii*) **राशीश एकता**–दोनों (वर-कन्या) का राशीस्वामी एक हो।

(*iii*) **नवमांशेश मैत्री**–दोनों के नवमांशेश मित्र-मित्र या मित्र-सम हों।

(*iv*) **नवमांशेश एकता**–दोनों के नवमांशेश एक हों।

(4) योनिकूट विचार–अश्विनी आदि नक्षत्रों के अनुसार जातक की योनि ज्ञात की जाती है। वर और कन्या की योनियों का आपसी वैर त्याज्य है। जैसे–गौ और व्याघ्र में, सिंह और गज, न्यौला और सर्प में, अश्व और महिष में, श्वान और हरिण में, वानर और मेष में, मूषक और मार्जार में, परस्पर महावैर (शत्रुता) है।

इसी प्रकार वर-वधू की योनियों में शत्रु-मित्रादि के सम्बन्धों के आधार पर गुणों की व्यवस्था की गई है।

योनि–बोधक चक्र

योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
नक्षत्र	अश्वि, शत	भर, रेव.	कृति, पुष्य	रोहि, मृग	आर्द्रा मूल	पुन, आश्ले.	मघा, पू.फा.	उ.फा., उ.भा.	हस्त स्वाती	चित्रा, विशा.	अनु ज्ये.	पू.षा., श्रव.	उ.षा. अभि.	धनि., पू.भा.

गुणविभाग –वर-कन्या की एक ही योनि होना शुभ है। योनियों में परस्पर अतिमित्रता हो तो ४ गुण, मित्र हो तो ३, सहज प्रकृति (उदासीनता) समान हो तो २, सामान्य वैर हो तो १ गुण तथा योनियों में अतिशत्रुता (महावैर) हो तो शून्य-अर्थात् गुणाभाव होगा।

योनि-गुण चक्र

योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	4	2	3	2	2	3	3	3	0	1	3	2	2	1
गज	2	4	3	2	2	3	3	3	3	1	2	2	2	0
मेष	3	3	4	2	2	3	2	3	3	1	3	0	3	1
सर्प	2	2	2	4	2	2	1	2	2	2	2	2	0	2
श्वान	2	2	2	2	4	1	1	2	2	1	0	2	2	1
मार्जार	3	3	3	1	1	4	0	3	3	2	3	2	2	1
मूषक	3	3	2	1	2	0	4	2	2	2	2	2	1	2
गौ	3	2	3	2	2	2	2	4	3	0	3	2	3	1
महिष	0	3	3	2	2	2	2	3	4	1	2	2	2	1
व्याघ्र	1	1	1	2	1	1	2	0	1	4	2	1	2	2
मृग	3	3	3	2	0	2	2	3	2	1	4	2	2	1
वानर	2	2	0	2	2	2	2	2	2	1	2	4	2	1
नकुल	2	2	2	0	2	2	1	3	2	2	2	2	4	2
सिंह	1	0	1	2	1	2	2	1	1	2	1	1	2	4

(5) ग्रह मैत्री–ग्रह मैत्री कूट के सन्दर्भ में वर-कन्या के राशि स्वामियों का ऐक्य अथवा मैत्री भावादि अभिप्रेत्य है। (राशि स्वामी तथा नैसर्गिक '**मैत्री-चक्र**' का विवरण गत पृष्ठों में नक्षत्र, राशि, वर्णादि तालिका चक्र में दिया गया है।)

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
मित्र	अति मित्रता	सामान्य मित्रता	सामान्य समता
सम	सामान्य मित्रता	समता	सामान्य शत्रुता
शत्रु	सामान्य समता	सामान्य शत्रुता	अतिशत्रुता

विवरण गत पृष्ठों में नक्षत्र, राशि, वर्णादि तालिका चक्र में दिया गया है।)

ग्रह-सम्बन्धों से अन्ततः 5 प्रकार बन जाते हैं। यथा-दोनों मित्र हो तो 'अधिमित्र', दोनों शत्रु हों तो 'अधिशत्रु' और दोनों में समभाव हो तो 'सम' कहलाते हैं। स्पष्टता चक्र से प्राप्य है-

गुण विचार—वर-कन्या की राशियों में परस्पर अधि-मित्रता या राश्यैक होने पर 5 गुण, एक सम और दूसरा मित्र हो, तो 4 गुण, एक-दूसरे के सम हो, तो 3 गुण, एक मित्र दूसरा शत्रु हो, तो 1 गुण, एक सम दूसरा शत्रु हो, तो आधा गुण, दोनों की राशियां परस्पर शत्रु हों, तो शून्य अर्थात् गुणाभाव होता है।

ग्रह मैत्री गुण बोधक चक्र

वर / कन्या	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	5	5	5	4	5	0	0
चन्द्र	5	5	4	1	4	½	½
मंगल	5	4	5	½	5	3	½
बुध	4	1	½	5	½	5	4
गुरु	5	4	5	½	5	½	3
शुक्र	0	½	3	5	½	5	5
शनि	0	½	½	4	3	5	5

अष्टकूटों में राशि स्वामी की मैत्री को विशेष महत्त्व दिया गया है। मिलान में वर्ण, योनि, गण और षडाष्टक दोष होने पर भी यदि परस्पर राशि मैत्री पाई जाती हो तो अन्य किंचिद् दोषों का निवारण हो जाता है। यथा-

गणदोषो योनि दोषो वर्णदोषः षडाष्टकम्।
चत्वारि नैव दुष्यन्ति राशिमैत्री यदा भवेत्॥ —बृहज्जयोतिः सार

अपवाद—वर-कन्या के राशिपतियों में परस्पर वैर होने पर भी राशि नवांशपति परस्पर मित्र हो, तो विवाह शुभ माना जाता है। यथा-

राशिनाथे विरूद्धेऽपि सबल नवांशकाधिपौ।
तन्मैत्रेऽपि च कर्त्तव्य, दम्पज्योः शुभमिच्छता॥

(6) गण विचार—अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, स्वा., अनु., श्रव., रेवती नक्षत्रों का **देवता गण**, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भर० और आर्द्रा इन नक्षत्रों का **मनुष्यगण**, कृति., अश्ले, मघा, चित्रा, विशा., ज्ये., मूल, धनि. और शत. का **राक्षसगण**।

वर-कन्या का **एक ही गण** होने पर विवाह **उत्तम**, देव-मनुष्य हो तो शुभ, किसी एक का राक्षसगण और दूसरा मनुष्यगण हो अथवा किसी एक का देवगण और दूसरा राक्षस गण हो तो अशुभ एवं त्याज्य होता है।

गुण विभाजन—वर-कन्या का एक ही गण हो, तो ६ गुण, वर का देवगण एवं कन्या का मनुष्यगण हो तो भी ६ गुण, पर कन्या देवगण एवं वर का मनुष्यगण हो तो ५ गुण, एक का देवगण तथा दूसरा राक्षसगण अथवा एक का मनुष्यगण दूसरे का राक्षसगण हो, तो शून्य गुण होता है इत्यादि।

मनुष्यादि गणों का गुण बोधक चक्र

कन्या	वर		
गुण	देव	मनुष्य	राक्षस
देव	6	5	1
मनुष्य	6	6	0
राक्षस	0	0	6

गण दोष परिहार—

(क) राशिपतियों में परस्पर मित्रता या राशिनवांशपति में मित्रता हो, तो गणदोष नहीं रहता।

ग्रहमैत्री च राशिश्च विद्यते नियतं यदि। न गणभाव जनितं दूषणंस्याद विरोधदम्॥
गर्ग—मु. चिन्तामणि च

(ख) ग्रहमैत्री तथा वर-कन्या के नक्षत्रों की नाड़ियों में भिन्नता हो, तो गणदोष होने पर भी दोष नहीं होता। **—पीयूषधारा**

(ग) इसी भान्ति तारा, वश्य, योनि ग्रहमैत्री तथा भकूट की शुद्धि होने पर कोई दोषपत्ति नहीं होती। **—मुहूर्त्त मार्त्तण्ड**

(7) भकूट विचार—इसे 'राशिकूट' भी कहते हैं। भकूट का तात्पर्य वर एवं कन्या की राशियों के परस्पर अन्तर से है। यह छह प्रकार का होता है-प्रथम-सप्तक (समसप्तक), तृतीय एकादश, द्वितीय-द्वादश, चतुर्थ-दशम, पंचम-नवम (नवपंचम) तथा षडाष्टक (6-8).

इनमें द्विर्द्वादश, नवपंचम तथा षडाष्टक अशुभ भकूट हैं। तथा शेष (1-7), (3-11) तथा (4-10) शुभ भकूट होते हैं। भकूट को जानने की सरल विधि यह है कि वर की राशि से कन्या की राशि तक तथा कन्या की राशि से वर की राशि तक गणना करनी चाहिए। यदि दोनों की राशि आपस में दूसरी-बारहवीं हो तो द्विर्द्वादश भकूट होता है। तदनुसार गुण-विभाजन किया जाता है। स्पष्टता के लिए आगामी पृष्ठ पर चक्र देखें-

वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर छठे एवं आठवें हो, तो **षडाष्टक दोष** होता है। यदि वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर पांचवीं-नौवीं हो, तो **नव पंचम दोष**, यदि दोनों की राशियाँ परस्पर दूसरी और बारहवीं हो, तो **द्विद्वादश दोष** कहलाता है। **षडाष्टक दोष** (विशेषकर शत्रु-षडाष्टक) होने की स्थिति में वर-कन्या, इनके माता-पिता अथवा उनके किसी निकटस्थ बन्धु को मृत्यु-तुल्य कष्ट होने की सम्भावना होती है। **नवपंचम दोष** की स्थिति में विवाहित दम्पत्ति को संतान सम्बन्धी दुःख होने का भय होता है तथा **द्विद्वादश दोष** (शत्रुकूट) होने पर वर कन्या को धन हानि एवं आर्थिक परेशानियों का सामना रहता है।

षडाष्टक परिहार—(i) मेष-वृश्चिक, वृष-तुला, मिथुन-मकर, कर्क-धनु, सिंह-मीन तथा कन्या-कुम्भ आदि मित्र राशियों का षडाष्टक शुभ होता है, जबकि वैर-षडाष्टक ही विशेषतया त्याज्य होता है। यथा-१-६, २-९, ३-८, ४-११, ५-१०, ७-१२ राशियों का शत्रुगत षडाष्टक होने से त्याज्य माना जाता है।

भकूट गुण चक्र

कन्या की राशि ↓ / वर→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
मेष	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0
वृष	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7
मिथुन	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7
कर्क	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0
सिंह	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0
कन्या	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7
तुला	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0
वृश्चि.	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0
धनु	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7
मकर	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7
कुम्भ	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0
मीन	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7

(ii) परन्तु **परिहारस्वरूप तारा-शुद्धि, राशीश-मैत्री, राशिवश्यैक्य,** अथवा राशि स्वामी ग्रह समान होने पर षडाष्टक दोष भी ग्राह्य होता है। यथा–

न वर्गवर्णौ न गणोः न योनिर्द्विद्वादशे चैव षडाष्टके वा।
तारा विरुद्धे नव पंचमे वा मैत्री यदा स्यात्शुभदो विवाहः॥ –बृ. ज्योतिस्सार

नव पंचम परिहार–

(i) वर की राशि से कन्या की राशि पांचवीं हो और कन्या की राशि से वर की राशि ९वीं हो, तो यह नव-पंचम शुभ होता है–

वरस्य पंचमे कन्या, कन्यायां नवमेवरः। एतत् त्रिकोणकं ग्राह्यां पुत्रपौत्र सुखावहम्॥
–बृहज्योतिषः सारः

(ii) **मीन-कर्क, वृश्चिक-कर्क, मिथुन-कुम्भ और कन्या-मकर**–ये चार नवपंचम विशेषतया त्याज्य माने जाते हैं।

मीनालिम्यां युते कीटे कुम्भे मिथुन संगते। मकरे कन्यकायुक्ते न कुर्यान्नवजचमे॥–शार्गंधर

(iii) वर-कन्या दोनों के चन्द्र राशि अधिपति अथवा राशि नवांशपति परस्पर मित्रक्षेत्री हों, तो नवपंचम अविचारणीय है।

द्वि-द्वादश दोष का परिहार–

(i) लड़के की राशि से कन्या की राशि दूसरी हो तो कन्या धन हानिकारक और १२वीं हो तो वह धनवती और पतिप्रिया होती है।

(ii) १-२, ३-४, ५-६, ७-८, ९-१० एवं ११-१२ राशियों का द्वि-द्वादश शत्रु-द्विद्वादश एवं च अनिष्टकर मानते हैं।

(iii) मतान्तर में **सिंह और कन्या** द्वि-द्वादश ग्राह्य है। **–मुहूर्त्तमार्त्तण्ड**

इसके अतिरिक्त कुछ परिस्थितियों में वर-कन्या की परस्पर राशि-स्थिति विशेष शुभकारी होती है। जैसे-वर-कन्या, दोनों की एक ही राशि १०वें का होना, दोनों की राशियों का परस्पर ३-११वें (त्रिरेकादश) होना, दोनों की राशियों का आपस में ४-१०वें होना एवं च दोनों की राशियों का परस्पर सप्तम (**समसप्तक**) होना वर-कन्या के वैवाहिक जीवन के लिए शुभफल प्रद होता है। परन्तु **अपवाद** रूप में, कर्क-मकर का तथा सिंह-कुम्भ राशियों का समसप्तक योग वर-कन्या के विवाह में शुभ नहीं माना गया–

मकरे कर्कटे चैव कुम्भे सिंहे तथैव च।
परस्परं सप्तमे च वैधव्यं तु विनिर्दिशेत्॥ **–ज्योतिनिबन्ध**

(८) **नाड़ी दोष विचार**–अष्टकूट निर्धारक तत्त्वों में नाड़ी का विशेष महत्त्व है। वर-कन्या की एक ही नाड़ी होना विवाह में अशुभ माना गया है। 36 गुणों में से इसके 8 गुण होते हैं। भिन्न नाड़ी के आठ गुण तथा नाड़ी समान होने पर गुणाभाव अर्थात् शून्य गुण होता है।

अश्वन्यादि २७ जन्म नक्षत्रों को तीन नाड़ियों (पंक्तियों) में विभाजित किया गया है–आदि, मध्य और अन्त्य। इनका विवरण निम्न चक्र में दिया गया है।

नाड़ी चक्र

आदि नाड़ी	अश्वि	आर्द्रा	पुन	उ.फा.	हस्त	ज्ये.	मूल	शत	पू.भा.
मध्य नाड़ी	भर	मृग	पुष्य	पू.फा.	चित्रा	अनु.	पूषा	धनि	उ.भा.
अन्त्य नाड़ी	कृति	रोह	श्ले.	मघा	स्वा	विशा	उ.षा.	श्रव	रेव

वर-कन्या का जन्म नक्षत्र एक ही नाड़ी में पड़ना विवाह में अशुभ माना जाता है। दोनों की **आदि (प्रथम)** नाड़ी हो, तो विवाह के पश्चात् उनका परस्पर वियोग आदि, **मध्य नाड़ी** हो, तो दोनों की हानि तथा **अन्त्य** नाड़ी हो तो वैधव्य या अतिशय दुःख होता है।**–बृहज्योतिषसार**

वर-कन्या के नक्षत्र एक ही नाड़ी वाले हों, तो नाड़ी दोष माना जाता है। एक समान नाड़ी वाले वर-कन्या को ज्योतिषाचार्यों ने बहुत अशुभ माना है।

विवाह में नाड़ी दोष का आचार्यों द्वारा विशेष महत्त्व दिया गया है। नारद ऋषि अनुसार–

एक नाडी विवाहश्च गुणैः सर्वे समन्वितः।
वर्जनीयः प्रयत्नेन दम्पत्योः निधनं यतः॥ (नारद)

अर्थात् विवाह मिलान में चाहे सब गुण मिल रहे हों, परन्तु वर-कन्या की एक ही नाड़ी का

प्रयत्नपूर्वक त्याग करना चाहिए। यह दोष दम्पत्ति के लिए अनिष्टकर/घातक माना जाता है। नाड़ी दोष में एक ही नक्षत्र और समान नक्षत्र चरण होने पर भी सभी आचार्यों ने एकमत से अनिष्टकारी कहा है।

नाड़ी दोषापवाद एवं परिहार--

(i) वर-कन्या की एक ही राशि हो, परन्तु नक्षत्र अलग-अलग हों।

(ii) वर-कन्या दोनों का जन्म नक्षत्र एक हो, परन्तु राशियाँ भिन्न-भिन्न हों, तो नाड़ी दोष अविचारणीय है। (विवाह वृन्दावन)

(iii) वर-कन्या, दोनों का नक्षत्र एक हो, परन्तु चरण भिन्न-भिन्न हों।

(iv) नाड़ी दोष ब्राह्मणों के लिए, वर्णदोष क्षत्रियों के लिए, गण दोष वैश्यों के लिए तथा योनि दोष शूद्रों के लिए विशेष रूप से विचारणीय होता है-

नाड़ी दोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रिये। गणदोषश्च वैश्येषु योनि दोषस्तु पादजान्॥

ध्यान रहे, ब्राह्मणेतर वर्ण जातियों के लिए नाड़ी दोष नितान्तः उपेक्षनीय नहीं होता॥

हमारे मतानुसार नाड़ी दोष का विचार सभी जाति के वर-कन्याओं के मिलान के सम्बन्ध में समान रूप से करना चाहिए। विशेष रूप से कर्क, वृश्चिक तथा मीन (४, ८, १२) राशियों के सन्दर्भ में।

(v) यदि वर-कन्या दोनों की एक राशि हो, परन्तु नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों अथवा यदि दोनों का नक्षत्र एक हो और राशि अलग-अलग हो, एवं च नक्षत्र चरण भिन्न (पाद भेद) हो, तो ऐसी स्थिति में नाड़ी एवं गण दोष नहीं होता-अर्थात् शुभ होता है।

राश्यैक्ये चेद् भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव।
नाड़ी दोषों नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभंस्यात्॥--मुहूर्त संग्रह दर्पण

यद्यपि वर-कन्या का एक ही नक्षत्र अथवा एक ही राशि का होने से नाड़ी दोष का परिहार माना गया है, परन्तु यदि दोनों के नक्षत्र चरणों में समानता हो अथवा नक्षत्रों में पाद वेध* हो, तो विवाह सर्वदा त्याज्य एवं वर्जित होगा। यथा-

एक नक्षत्र जातानां नाड़ी दोषो न विद्यते। अन्यर्क्षनाड़ीवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा॥
--ज्योतिष तत्त्व प्रकाश

अन्यत्र भी कहा गया है- **दम्पत्योरेक नक्षत्र भिन्नपादे शुभावहम्।**
दम्पत्योरेकपादे तु वर्षान्ते मरणं ध्रुवम्॥ (का. नि.)

पराशरानुसार भी यही अभिमत है-

पराशरः प्राह नवांशभेदाद एकनक्षत्र राशचोरपि सौमनस्यम्॥

***नोट**-ध्यान रहे, किसी नक्षत्र के प्रथम पाद और चतुर्थ पाद तथा दूसरे एवं तीसरे पाद में परस्पर वेध होना भी पाद-वेध कहलाता है।

(vi) 'नरपतिजचर्या' अनुसार वर कन्या के नक्षत्र चरणों के I & IV, II & III तथा IV & I, III & II चरणों के मध्य ही पादवेध चरणों का विचार करना अनिवार्य होता है। इसके अतिरिक्त अन्य नक्षत्र चरणों के वेध जैसे I & III, II & IV नक्षत्र चरणों में वेधाभाव होने के कारण स्वल्पदोष रह जाता है। (मुहूर्त-चिन्तामणि)-पीयूषधारा-

आद्यांशेन चतुर्थांशं चतुर्थांशेन चादिमम्। द्वितीयेन तृतीयं तु तृतीयेन द्वितीयकम्॥
ययो भांशव्यधश्चैवं जायते वर कन्ययोः। तयो मृत्युर्न सन्देहः शेषांशाः स्वल्पदोषदाः॥

(vii) 'ज्योतिष चिन्तामणि' अनुसार रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, ज्येष्ठा, कृतिका, पुष्य, श्रवण, रेवती एवं उत्तराभाद्रपद-इन नक्षत्रों में उत्पन्न वर-कन्या को नाड़ी दोष नहीं लगता।

रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्नी पुष्यश्रवणपौष्णभम्।
अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाड़ी दोषो न विद्यते॥ --ज्यो० चिन्तामणि

नाड़ी आदि दोषों का परिहार होने की स्थिति में उनसे सम्बन्धित आधे गुणों को जोड़ (जमा कर) देने का भी विधान है।

उपयुक्त उपायों से परिहार--

हमारे मतानुसार गण, योनि, षडाष्टक, द्विद्वादश, नाड़ी आदि अष्टकूटों में परिहार वाक्य उपलब्ध हो जाने पर भी अपनी शक्ति एवं सामर्थ्यानुसार यथोचित संख्या में जप, पाठ, दानादि करवा लेना चाहिए।

'बृहस्पति संहिता' के अनुसार नाड़ी दोष की शान्ति के लिए **श्रीमृत्युञ्जय मन्त्र** का जाप (यथोचित संख्या में) करके ब्राह्मणों को गौ, वस्त्र, अनाज, घृतादि सहित भोजन एवं सुवर्ण, चांदी, रत्नों की दक्षिण आदि से सन्तुष्ट करने से नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है-

अन्यत्र भी लिखा है-श्री महामृत्युञ्जय के जप-पाठ के उपरान्त-

षडाष्टके गोमिथुनं प्रदेयं, कास्यं सरूप्यं नवपंचमेच।
नाड्यां सुवर्णान्नमथो सुधेनुं द्विद्वादशे ब्राह्मणतर्पणं च॥

अर्थात् शत्रु षडाष्टक दोष होने पर गोमिथुन (एक गाय, एक बैल), **नवपंचम** में चांदी-कांसे का बर्तन, **नाड़ी दोष** में गाय, अन्न, सुवर्ण-वस्त्र का दान तथा **द्विद्वादश** में ब्राह्मणों एवं सुपात्र जनों को यथाशक्ति भोजन, दान-दक्षिणादि द्वारा सन्तुष्ट करने से मिलान सम्बन्धी **अष्टकूट दोषों** की शान्ति हो जाती है।

वर-कन्या की कुण्डली में नाड़ी-दोष हो, परन्तु अत्यन्त आवश्यक परिस्थितिवश विवाह करना आवश्यक हो, तो उस स्थिति में वर/कन्या का अर्क/कुम्भ विवाह, महामृत्युजंय जप, सुवर्ण, रत्न, चांदी, अनाजादि के दान, ब्राह्मण भोजन आदि के पश्चात् ही विवाह कार्य करना प्रशस्त होगा- **हेमाज्यरत्नगोदानं मृत्युञ्जयजपस्तथा।**
कुर्यादवश्यमुद्वाहे नाडीदोषाऽपनुत्तये॥ (मुहूर्त गणपति)

शुद्ध वर-कन्या मैलापक सारिणी (भाग-१)

कन्या नक्षत्र ↓ / वर/नक्षत्र →		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि 1 से 4	भर. 1 से 4	कृति 1	कृति 2,3,4	रोह 1 से 4	मृग 1,2	मृग 3,4	आर्द्रा 1 से 4	पुर्न 1,2,3	पुर्न 4	पुष्य 1 से 4	श्ले 1 से 4	मघा 1 से 4	पू.फा. 1 से 4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1 से 4	चित्रा 1,2
मेष	अश्वि 1 से 4	२८ 8	३३ 4	२८ 3,6	१८॥ 1236	२१॥ 1,2,3	२२॥ 1,2,3	२६ 1,3,5	१७ 1,5,8	१९ 1358	२३॥ 3,8	३१॥ 3	२८ 6	२१ 6,9,व	२५ 9,व	१५ 389व	११ 3578	९ 14578	१३॥ 14567
	भर 1 से 4	३४ 4	२८ 8	२९ 6	१९ 1,2,6	२३ 1,2,3	१४॥ 1238	१८ 1358	२६॥ 1,3,5	२७ 1,3,5	३१॥ 3	२३॥ 3,8	२५ 3,6	२० 6,9,व	१८॥ 8,9व	२६ 9,व	२१॥ 1,5,7	२० 1357	५ 13578
	कृति 1 चरण	२७॥ 3,6	२९ 6	२८ 8	१८ 1,2,8	१० 1268	१६॥ 1236	२० 1356	२०॥ 1356	२१ 1356	२५॥ 3,6	२६॥ 3,6	२३॥ 3,8	१७ 389व	२० 6,9व	२० 6,9व	१५॥ 1567	१६ 1567	१८ 1357
वृष	कृति 2,3,4	१९ 2,3,6	२० 2,6	१९ 2,8	२८ 8	२० 6,8	२६॥ 3,6	१७॥ 2,3,6	१७॥ 2,3,6	१८॥ 2,3,6	२२ 3,5,6	२३ 3,5,6	२० 3,5,8	१९ 358व	२२ 5,6व	२२ 5,6व	२१ 6,9	२१ 6,9	२३॥ 3,9
	रोह 1 से 4	२४ 2,3	२३॥ 2,3	११ 2,6,8	२० 6,8	२८ 8	३६	२७ 1,2	२४ 1,2,3	२३ 1234	२६ 3,4,5	२७ 3,5	१२॥ 3468	१०॥ 3568	२४॥ 3,5व	२७ 5,व	२६ 4,9	२६ 4,9	२० 4,6,9
	मृग 1-2	२३॥ 2,3	१५ 2,3,8	१९ 2,3,6	२७॥ 3,6	३५ -	२८ 8	१९॥ 1,2,8	२४॥ 1,2,4	२३ 1234	२६ 3,4,5	१९ 3,5,8	२१ 3,5,6	१९॥ 456व	१५ 3458	२४॥ 3,5व	२४ 3,9	२६ 4,9	१३ 6,8,9
मिथुन	मृग 3-4	२७ 3,5	१८ 3,5,8	२२ 3,5,6	२० 2,3,6	२७॥ 2,व	२० 2,8,व	२८ 8	३३ 4	३१॥ 3,4	१९॥ 2,4,5	१२ 2358	१४॥ 2356	२४ 3,4,6	२० 348व	२८॥ 3,व	३१॥ 3	३४ 4	२१ 4,6,8
	आर्द्रा 1 से 4	१९॥ 3,5,8	२७॥ 3,5	२१॥ 3,5,6	१९ 2,3,6	२५ 2,3,4	२६ 2,4	३४ -	२८ 8	२५ 4,8	१३ 24568	२०॥ 235व	१३ 2356	२४ 3,6,व	२९॥ 3,4व	२१॥ 3,4,8	२४॥ 3,4,8	२५ 3,4,8	२७॥ 4,6
	पुन. 1,2,3	२० 3,5,8	२७ 3,5	२३॥ 3,5,6	२०॥ 2,3,6	२३ 2,3,4	२४ 2,3,4	३१॥ 3,4	२४ 4,8	२८ 8	१६ 258व	२३ 2,5,व	१७ 235व	२३ 346व	२७ 3,4व	२२ 3,8व	२५ 3,8	२६ 3,8	२७॥ 3,6
कर्क	पुन. 4	२३ 1,3,8	२९॥ 1,3	२५॥ 1,3,6	२२ 1356	२४ 1345	२५ 1345	१८ 1245	१० 12568	१५ 1258	२८ 8	३५ -	२९॥ 3,6	१६॥ 1246	२०॥ 1234	१५॥ 1238	१८ 1358	१९॥ 1358	२१ 1356
	पुष्य 1 से 4	३०॥ 1,3	२१॥ 1,3,8	२७ 1,3,6	२३ 1356	२५ 1,3,5	१८ 1358	११॥ 12358	१८॥ 1235	२२ 125व	३५ -	२८ 8	३० 6	२० 1236	१५॥ 1238	२३॥ 1,2,3	२६ 1,3,5	२७ 1,3,5	१२॥ 14568
	श्ले. 1 से 4	२६ 1,6	२५ 1,3,6	२३ 1,3,8	१९ 1358	११॥ 14568	१९ 1456	१३ 12456	१२ 12456	१५॥ 1256	२८ 3,6	२९ 6	२८ 8	१५ 1248	१५॥ 1246	१८॥ 1236	२१॥ 1356	२१ 1356	२६ 1,3,5
सिंह	मघा 1 से 4	२० 6,9,व	२० 6,9,व	१६॥ 8,9,व	१७॥ 158व	९॥ 1568व	१७॥ 156व	२१॥ 146व	२२॥ 136व	२१ 1346व	१६॥ 2,4,6	२० 2,3,6	१६॥ 2,4,8	२८ 8	३० 6	२७ 3,6	१६ 1236	१६॥ 1236	२१॥ 123व
	पू.फा. 1 से 4	२६ 9,व	१८॥ 8,9,व	२० 6,9,व	२१ 156व	२३॥ 145व	१५॥ 1458	२० 148व	२८॥ 1,3,व	२६ 1,4,व	२२॥ 2,3,4	१७॥ 2,3,8	१६॥ 2346	३० 6	२८ 8	३५	२४ 1,2व	२३ 123व	७॥ 1268
	उ.फा. 1	१७ 8,9,व	२६ 9,व	२१ 6,9,व	२१ 156व	२६ 1,5,व	२५ 135व	२८॥ 1,3व	२१ 1,3,8	२१॥ 1,3,8	१७॥ 2,3,8	२५॥ 2,3	२० 2,3,6	२७॥ 3,6	३५ -	२८ 8	१७ 128व	१६॥ 128व	१३॥ 1236
कन्या	उ.फा. 2,3,4	१३ 3578	२२॥ 5,7	१६ 5,6,7	२१ 6,9	२६ 4,9	२४॥ 3,9	३१॥ 1,3	२३॥ 1,3,8	२४॥ 1,3,8	२० 3,5,8	२८ 3,5	२२॥ 3,5,6	१८ 2,6,व	२५ 2,व	१८ 2,8व	२८ 8	२७॥ 8	२५ 3,4,6
	हस्त 1 से 4	१० 34578	२० 3,5,7	१७॥ 5,6,7	२२ 6,9	२५ 9	२६ 9	३३ 1,4	२२॥ 1,3,8	२४ 1,3,8	२० 358व	२८ 3,5व	२३ 3,5,6	१८॥ 236व	२२॥ 2,3व	१६ 2,8व	२६ 8	२८ 8	२८ 4,6
	चित्रा 1,2	१३ 3567	४॥ 45678	१९ 3,5,7	२४ 3,4,9	२० 6,9	१२॥ 6,8,9	१९ 1,6,8	२६ 1,4,6	२५॥ 1,3,6	२१॥ 356व	१२॥ 3568व	२७ 35,व	२२॥ 2,3,व	८॥ 2368व	१४॥ 2346व	२४॥ 3,4,6	२७॥ 4,6	२८ 8

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1, 2, 3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी – (भाग-२)

वर/नक्षत्र →		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
कन्या	नक्षत्र ↓	अश्वि 1 से 4	भर. 1 से 4	कृति 1	कृति 2,3,4	रोह 1 से 4	मृग 1,2	मृग 3,4	आर्द्रा 1 से 4	पुर्न 1,2,3	पुर्न 4	पुष्य 1 से 4	श्ले 1 से 4	मघा 1 से 4	पू.फा. 1 से 4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1 से 4	चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	२२ ॥ 3,4,6	१४ 3468	२८ ॥ 3,4	२४ 3,7	२० ॥ 4,6,7	१२ 6,7,8	१३ 6,8,9	२१ 4,6,9	१९ ॥ 3,6,9	२० ॥ 3,5,6	११ 3568	२६ ॥ 3,5,व	२५ ॥ 3,5,व	११ ॥ 3568	१७ ॥ 456व	१७ ॥ 2346	२० 2,4,6	२१ 2,8
	स्वा. 1 से 4	२७ ॥ 3,4	२९ ॥ 3	१७ ॥ 3,6,8	१३ 3678	१५ ॥ 3,7,8	२६ 4,7	२७ 9	२६ ॥ 4,9	२८ 9	२९ 5,व	२७ 3,5	१४ 3568	१३ 3568	२५ ॥ 3,5व	२५ ॥ 3,5व	२६ 2,3	२७ ॥ 2,3	२१ 2,4,6
	विशा 1,2,3	२२ ॥ 3,4,6	२३ 3,4,6	२० ॥ 3,4,8	१५ ॥ 3478	१० ॥ 3678	१८ ॥ 3,6,7	२० 3,6,9	२० 4,6,9	२१ 4,6,9	२२ 56,व	२१ ॥ 4,5,6	१८ ॥ 3,5,8	१७ ॥ 358,व	१९ ॥ 356व	१७ ॥ व3456	१७ ॥ 2346	१९ 2346	२७ ॥ 2,3
वृश्चिक	विशा 4	१७ 1467	१७ 1467	१४ ॥ 1478	१९ ॥ 1,4,8	१४ ॥ 1368	२२ ॥ 1,3,6	१२ ॥ 1567	१३ 1567	१३ ॥ 1567	१९ ॥ 4,6,9	१८ ॥ 4,6,9	१५ ॥ 3,8,9	२२ 1,3,8	२३ ॥ 136व	२१ ॥ 146व	१७ ॥ 1456	१८ 1456	२७ 135व
	अनु. 1 से 4	२५ 1,3,7	१५ ॥ 1378	२० 1367	२४ ॥ 1,3,6	२७ ॥ 1,3,4	२० ॥ 1,3,8	१० 13578	१५ 13457	२० ॥ 1,5,7	२६ ॥ 9	१८ ॥ 8,9	२१ 6,9	२५ 1,3,6	२१ 136व	२९ ॥ 1,3व	२५ 135व	२६ 135व	११ ॥ 1358
	ज्ये. 1 से 4	१२ 1678	१८ ॥ 1367	२५ 1,3,7	२९ ॥ 1,3	२२ ॥ 1,3,6	२२ ॥ 1,3,6	१३ 13567	३ 134578	५ ॥ 135678	१० ॥ 3689	२० 6,9	२६ 9	३१ 1,4,व	२४ 136व	१७ 1368	१३ 13568	१३ 1568व	२४ ॥ 1345
धनु	मूल 1 से 4	१२ 4689	२१ 6,9	२५ 3,9	१९ ॥ 1,5,7	१३ 1567	१३ ॥ 1567	२१ 1356	१५ 1568	१२ 14568	७ ॥ 4678	१७ ॥ 3,6,7	२४ 4,7	२५ 9,व	२० 6,9व	९ ॥ 689व	१३ 1568	१३ 1568	२६ 1,4,5
	पू.षा. 1 से 4	२६ 9	१८ ॥ 8,9	१८ ॥ 4,6,9	१२ ॥ 14567	१८ ॥ 1457	११ 14578	१८ ॥ 1458	२७ 1,3,5	२७ 1,3,5	२३ ॥ 37,व	१३ 3478	१७ ॥ 3,6,7	१९ 6,9,व	१७ ॥ 8,9व	२५ 9,व	२८ ॥ 1,5	२७ 1,3,5	१३ ॥ 13568
	उ.षा. 1	२५ 3,9	२६ 4,9	१२ 4689	६ 15678	१० 14578	१७ 1457	२५ 1,4,5	२७ 1,3,5	२७ ॥ 1,3,5	२३ ॥ 37,व	२३ ॥ 3,7,व	८ ॥ 678व	८ ॥ 4689	२४ 4,9व	२५ 9,व	२८ ॥ 1,5	२८ ॥ 1,5	२१ 1,5,6
मकर	उ.षा. 2,3,4	२७ 3,5	२८ ॥ 4,5	१४ ॥ 4568	१२ 4689	१६ 4,8,9	२३ 3,4,9	२१ 1347	२२ 1,3,7	२२ ॥ 1,3,7	२८ 3,5	२८ 3,5	१४ 3568	४ ॥ 45678	२० 4,5,7	२१ 4,5,7	२४ ॥ 9,व	२५ 9,व	१७ ॥ 4,6,9
	श्रव 1234	२७ 3,5	२६ ॥ 3,4,5	१४ 4568	१२ 4689	१६ 4,8,9	२६ 4,9	२३ 147व	२१ 1,3,7	२२ 1,4,7	२८ 4,5	२६ 4,5	१५ 4568	६ ॥ 5678	१८ ॥ 4,5,7	२० 4,57	२४ 4,9व	२४ ॥ 4,9व	१९ ॥ 4,6,9
	धनि 1,2	२० 3456	११ ॥ 34568	२६ 3,4,5	२४ 3,4,9	२० ॥ 4,6,9	१२ 4689	९ 1678	१६ 1467	१६ 1467	२२ 4,5,6	१३ 4568	२८ 4,5	१९ ॥ 4,5,7	५ ॥ 5678	१२ ॥ 4567	१६ 469व	१८ 469व	१५ 489व
कुम्भ	धनि 3,4	२० 4,5,6	१० ॥ 4568	२६ 3,4,5	३० ॥ 3,4	२७ 4,6	१९ ॥ 4,6,8	१२ 4,8,9	१९ 4,6,9	१८ ॥ 3469	१३ 4567	४ ॥ 45678	१९ ॥ 357व	२५ ॥ 3,5,व	११ 568व	१८ ॥ 456व	१८ 4,6,7	१९ 4,6,7	१७ 4,7,8
	शत 1 से 4	१५ 3568	२१ 3,5,6	२८ 3,5	३२ ॥ 3	२५ ॥ 3,4,6	२७ 4,6	२० 4,6,9	१२ 4698	१३ 6,9,8	८ 5678व	१४ 567व	२१ 5,7,व	२६ ॥ 3,5,व	२० ॥ 356व	१२ ॥ 568व	११ ॥ 3678	९ 4678	२५ 4,7
	पू.भा. 1,2,3	१८ 4,5,8	२५ 3,4,5	२० 4,5,6	२५ 3,4,6	३१ ॥ 3,4	३१ ॥ 3,4	२५ 3,4,9	१७ ॥ 4,8,9	१८ ॥ 4,8,9	१३ ॥ 4578व	२० 457व	१३ 3567व	१९ ॥ 5,6,व	२५ ॥ 4,5व	१६ ॥ 458व	१५ ॥ 4,7,8	१५ ॥ 3478	१७ ॥ 3467
मीन	पू.भा. 4	१४ ॥ 1248	२२ 1234	१६ ॥ 1246	१९ 1456	२६ 1345	२६ 1345	२६ 145व	१८ ॥ 1व458	१९ 1458	१८ 4,8,9	२५ 4,9	१९ 4,6,9	१८ 1467	२३ ॥ 1347	१४ ॥ 1478	१६ 1458व	१७ 1458	१८ ॥ 1456
	उ.भा. 1 से 4	२५ 1,2,3	१७ 1238	१९ 1236	२१ 1356	२६ 135	१८ 1358	१७ ॥ 1358	२५ 135व	२८ 1,5,व	२७ ॥ 9	१९ ॥ 8,9	२१ ॥ 6,9	१९ 1367	१७ 1378	२६ 1,3,7	२७ ॥ 135व	२७ 135व	१० 14568
	रेव 1 से 4	२५ 1,2,4	२४ ॥ 1,2,3	११ 1268	१४ 1568	१७ ॥ 1358	२६ 1,3,5	२५ 135व	२४ ॥ 135व	२६ 1,3,5	२६ 3,9	२७ ॥ 9	१४ 6,8,9	१३ 1687	२३ ॥ 1,3,7	२४ 1,3,7	२६ 135व	२७ 135व	१९ ॥ 1456

नोट–गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी – (भाग-३)

वर/नक्षत्र		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
कन्या	नक्षत्र	चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूल 1 से 4	पू.षा. 1 से 4	उ.षा. 1 चरण	उ.षा. 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1 से 4	रेव 1 से 4
मेष	अश्वि 1 से 4	२२ ॥ 1346	२६ ॥ 1,3,4	२२ ॥ 1346	१८ ॥ 3467	२५ ॥ 3,7	१४ ॥ 6,7,8	१३ 6,8,9	२५ 4,9	२३ ॥ 1,3,9	२५ 1,3,5	२६ 1,3,5	२० 1456	२० ॥ 1456	१५ 1358	१६ 1358	१५ 2348	२५ 2,3	२६ 2,4
	भर 1 से 4	१३ ॥ 1368	२९ 1,3	२१ ॥ 1,3,6	१७ ॥ 3467	१७ ॥ 378	२० 3,6,7	२० 6,9	१८ ॥ 8,9	२६ 9	२७ ॥ 1,5	२६ 1,3,5	१० 14568	९ ॥ 14568	२० 1356	२४ 1345	२३ 2,3,4	१७ ॥ 2,3,8	२७ 2,3
	कृति 1 चरण	२७ ॥ 1,3,4	१५ 1368	१९ ॥ 1348	१५ ॥ 3478	१९ ॥ 3,6,7	२५ ॥ 3,7	२५ 3,9	१८ ॥ 4,6,9	१२ ॥ 6,8,9	१३ ॥ 1568	१२ 14568	२५ 1,3,5	२५ ॥ 1,3,5	२७ 1,3,5	१९ ॥ 1356	१७ ॥ 2346	१९ ॥ 2,3,6	१२ 2368
वृष	कृति 2,3,4	२३ 1347	११ 13678	१४ ॥ 1378	२० ॥ 3,4,8	२४ ॥ 3,6	३० ॥ 3	२० 3,5,7	१४ 4567	७ 5678	१२ 6,9,8	१० ॥ 4689	२४ 3,4,9	२९ ॥ 1,3,4	३१ ॥ 1,3	२३ ॥ 1346	२० 3456	२२ 3,5,6	१४ 3568
	रोह 1 से 4	१९ ॥ 1,6,7	१५ ॥ 1378	९ ॥ 1678	१५ 1368	२९ ॥ 3,4	२४ 3,6	१४ ॥ 3567	१९ ॥ 3,5,7	११ ॥ 4578	१६ 4,8,9	१७ ॥ 4,8,9	२० ॥ 4,6,9	२६ 1,4,6	२५ 1,3,6	३१ 1,3	२७ 3,4,5	२७ 3,4,5	१९ 3,5,8
	मृग 1-2	१२ 1678	२५ ॥ 1,7	१९ 1367	२५ 3,6	२१ ॥ 3,5,8	२४ ॥ 3,6	१५ 3567	१० ॥ 3578	१७ ॥ 3457	२२ 3,4,9	२५ ॥ 4,9	१३ 4689	१९ ॥ 1468	२७ 1,4,6	२९ ॥ 1,3,4	२६ 3,5	१८ 3,5,8	२७ 3,5
मिथुन	मृग 3-4	१४ 6,8,9	२७ 4,9	२१ 3,6,9	१४ 3567	११ 3578	१४ 3567	२३ 3,5,6	१८ ॥ 3458	२५ 3,4,5	२० ॥ 347व	२४ 4,7,व	११ 678व	१३ 6,8,9	२१ ॥ 6,9	२४ 3,9	२५ ॥ 3,5,व	१७ ॥ 3,5,8	२६ ॥ 3,5,व
	आर्द्रा 1 से 4	२१ 4,6,9	२७ 9	२० ॥ 4,6,9	१३ 4567	१७ ॥ 3457	३ 345678	१६ 3568	२८ 3,5	२८ 3,5	२३ ॥ 3,7व	२३ ॥ 3,7,व	१८ 467व	१९ ॥ 4,6,7	१२ ॥ 689	१७ ॥ 4,8,9	१९ 5,8,व	२६ ॥ 3,5व	२७ 3,5,व
	पुन. 1,2,3	२१ 3,6,9	२८ 9	२२ 6,9	१५ 5,7व	२२ 5,7व	७ 35678	१४ 34568	२७ 3,5	२७ 3,5	२२ ॥ 3,7व	२३ ॥ 3,7,व	१७ ॥ 3467	१९ 3469	१४ 6,8,9	१६ 4,8,9	१८ ॥ 4,8,9	२८ 5,व	२७ ॥ 3,5,व
कर्क	पुन. 4	२१ 1356	२८ 1,5व	२२ 156व	२० 6,9	२६ 9	१२ 3689	८ ॥ 14678	२१ 147व	२१ ॥ 147व	२६ 1,3,5	२७ 1,3,5	२१ 1456	१२ 14567	८ ॥ 1567	१० ॥ 14578	१६ ॥ 4,8,9	२६ ॥ 9	२६ 3,9
	पुष्य 1 से 4	११ 14568	२६ ॥ 1व35	२१ ॥ 1456	१९ ॥ 4,6,9	१८ ॥ 8,9	२१ 6,9	१७ ॥ 1367	११ ॥ 1478	२१ ॥ 1347	२६ 1,3,5	२५ 1345	१३ 13568	४ ॥ 145678	१४ 13567	१८ ॥ 1457	२४ 4,9	१८ ॥ 8,9	२७ 9
	श्ले. 1 से 4	२५ ॥ 1,3,5	१२ 1568	१७ ॥ 1,5,8	१५ 3,8,9	२० ॥ 6,9	२६ 9	२३ व 1,4,7	१६ 1367	७ ॥ 3678	१३ 4568	१३ 4568	२६ 1,4,5	१७ ॥ 1457	२० 1357	११ 14567	१८ 4,6,9	२१ 6,9	१३ 6,8,9
सिंह	मघा 1 से 4	२४ ॥ 1,3,5	११ ॥ 13568	१६ ॥ 1358व	२२ ॥ 3,8व	२६ 3,6व	३३ व	२५ 9,व	१९ ॥ 6,9व	८ ॥ 689व	३ ॥ 15678	४ ॥ 15678	१८ ॥ 1,5,7	२४ ॥ 1,5,व	२५ ॥ 135 व	१८ ॥ 156व	१९ 3,6,7	२० 3,6,7	१३ ॥ 6,7,8
	पू.फा. 1 से 4	१० ॥ 1568	२५ ॥ 135व	१८ ॥ 156व	२४ 3,6व	२३ ॥ 3,8व	२५ ॥ 3,6व	२० 6,9व	१७ ॥ 8,9,व	२४ 4,9व	१९ 1,5,7	१८ ॥ 1,5,7	४ ॥ 15678	११ 1568	१९ ॥ 1356व	२४ ॥ 135व	२५ 3,7	१७ ॥ 3,7,8	२६ 3,7
	उ.फा. 1	१७ 13456	२५ ॥ 1,3,5	१६ ॥ 13456	२२ ॥ 3,4,6	३१ ॥ 3,व	१७ ॥ 3,6,8	९ ॥ 3689	२५ 9,व	२५ ॥ 9,व	२० 1,5,7	२० 1,5,7	११ ॥ 1567	१७ ॥ 1356	११ 3568	१५ ॥ 358व	१६ 3478	२६ ॥ 3,7	२६ 3,7
कन्या	उ.फा. 2,3,4	१६ ॥ 1246	२५ ॥ 1,2,3	१७ 1246	१८ 456व	२७ ॥ 3,5व	१३ ॥ 568व	१४ 3568	२९ ॥ 5	२९ ॥ 5	२४ ॥ 9,व	२५ 9,व	१७ 3,6,9	१६ ॥ 1367	१० ॥ 3678	१४ ॥ 1378	१७ ॥ 3,5,8	२८ 3,5व	२७ ॥ 3,5,व
	हस्त 1 से 4	२० 1246	२६ ॥ 1,2,3	१८ ॥ 1236	२० 3456	२६ 3,5व	१३ ॥ 3568	१५ 3568	२७ 3,5	२८ ॥ 5	२४ 9,व	२४ 9,व	१९ 4,6,9	१९ 1467	८ ॥ 34678	१३ ॥ 1378	१६ ॥ 3458	२६ ॥ 3,5व	२७ ॥ 3,5,व
	चित्रा 1,2	२० 1,2,8	१९ 1246	२६ ॥ 1,2,3	२८ ॥ 3,5व	११ 3568	२५ 345व	२७ 3,4,5	१४ 3568	२२ 3,5,6	१७ ॥ 3,6,9	१९ 6,9,व	१५ ॥ 4,8,9	१६ 1478	२४ 1,4,7	१६ ॥ 1467	१९ ॥ 3456	१० 34568	१९ ॥ 3456

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मैलापक सारिणी – (भाग-४)

कन्या ↓ / वर →	नक्षत्र	तुला चित्रा 3,4	तुला स्वा. 1 से 4	तुला विशा 1,2,3	बृश्चिक विशा 4	बृश्चिक अनु 1 से 4	बृश्चिक ज्ये 1 से 4	धनु मूल 1 से 4	धनु पू.षा. 1 से 4	धनु उ.षा. 1 चरण	मकर उ.षा. 2,3,4	मकर श्रव 1 से 4	मकर धनि 1,2	कुम्भ धनि 3,4	कुम्भ शत 1 से 4	कुम्भ पू.भा. 1,2,3	मीन पू.भा. 4	मीन उ.भा. 1 से 4	मीन रेव 1 से 4
तुला	चित्रा 3,4	२८ 8	२७ 4,6	३४ 3	२३॥ 2,3व	६ 2348व	२१ 234व	२७॥ 3,4,5	१४ 3568	२२ 3,5,6	२५ 3,6,व	२७ 6,व	२३॥ 4,8,व	१८॥ 4,8,9	२६ 4,9	१९ 3469	१२ 4567	३ 345678	१२ 34567
तुला	स्वा. 1 से 4	२८ 4,6	२८ 8	२० 4,6,8	१० 248व	२१॥ 2,3व	१६॥ 236व	२३ 3,5,6	२७ 3,5	१९ 3,5,8	२२ 3,8,व	२३ 3,8,व	२७ 4,6	२१ 4,6,9	२० 4,6,9	२५ 4,9	१९ 457,व	१९॥ 357,व	१२ 3578
तुला	विशा 1,2,3	३४॥ 3	१९ 4,6,8	२८ 8	१७॥ 2,8व	१६ 246व	२१॥ 234व	२७॥ 3,4,5	२२ 3,5,6	१४ 3568	१७ 368व	१७॥ 368व	३०॥ 3,4,व	२५ 3,4,9	२६ 4,9	२० 4,6,9	१४ 4567	१३॥ 4567	४ 45678
बृश्चिक	विशा 4	२३ 123व	७ 12468व	१६॥ 128व	२८ 8	२७॥ 4,6	३१॥ 3,4	२२ 1234	१७॥ 1362व	९ 12368	१२॥ 13568	१२॥ 13568	२५ 1345	२४ 1345	२६ 145,व	२० 1456	१९॥ 4,6,9	१८॥ 4,6,9	९॥ 4689
बृश्चिक	अनु. 1 से 4	६॥ 12व68	२२ 123व	१६ 1246	२८ 4,6	२८ 8	३१ 6	१५ 12346	१३॥ 1238व	२२ 123व	२५ 1,3,5	२६ 1,3,5	१२ 13568	११ 1358	२१ 1356	२४॥ 145व	२४ 4,9	१८॥ 8,9	२७॥ 9
बृश्चिक	ज्ये. 1 से 4	१९॥ 1234	१५ 126व	१९॥ 1234	३१॥ 3,4	३० 6	२८ 8	१४॥ 1248	१७॥ 1236	१७॥ 1व236	२० 1356	२० 1356	२५ 1,3,5	२४ 1345व	१८ 1व358	१० 13568	९॥ 3689	२१॥ 6,9	२१ 6,9
धनु	मूल 1 से 4	२६ 1,4,5	२१ 1356	२६ 1,4,5	२३ 1234	१५॥ व2346	१५ व248	२८ 8	२८ 4,6	२६॥ 3,6	१५॥ 1236	१५॥ 1236	२०॥ 1234	२८॥ 1,3,4	२१॥ 1,3,8	१४॥ 1468	१६॥ 3468	२५ 6,व	२७ 6,व
धनु	पू.षा. 1 से 4	१३ 1568	२७ 1,3,5	२१ 1356	१८ 246व	१५॥ 238व	१८ 246व	२८ 4,6	२८ 8	३४ -	२३ 124व	२३॥ 1,2,व	५॥ 1268	१४॥ 1468	२३॥ 1,4,6	२८॥ 1,4	३०॥ 4,व	२३॥ 8,व	३१ 3,व
धनु	उ.षा. 1	२१ 1,5,6	१९ 1,5,8	१३ 1568	९॥ 268व	२४ 2,3व	१८॥ 2,3,6	२६॥ 3,4,6	३४ -	२८ 8	१६॥ 128व	१५ 1248व	१५॥ 1236व	२३॥ 1,3,6	२३॥ 1,3,6	२९॥ 1,3,4	३१ 3,व	३१ 3,व	२३ 3,8,व
मकर	उ.षा. 2,3,4	२४ 1,3,6	२२॥ 1,3,8	१५॥ 1368	१३ 4568	२७ 4,5	२१ 4,5,6	१६ 246व	२४ 2,4व	१७॥ 2,8व	२८ 8	२६ 4,8	२६॥ 4,6	१७॥ 126व	१७॥ 1236व	२३॥ 1234	३०॥ 3	३१ 3	२२॥ 3,4,8
मकर	श्रव 1234	२७ 146व	२२॥ 148व	१७॥ 1468	१४ 3568	२७ 3,4,5	२२ 3456	१७॥ 246व	२३॥ 2,3व	१५ 248व	२५ 4,8	२८ 8	२८ 4,6	१९ 1246	१८ 1246	२१॥ 124व	२८॥ 3,4	२९॥ 3	२२॥ 3,8
मकर	धनि 1,2	२३ 148व	२४॥ 146व	२९ 1,4व	२६ 3,4,5	१२ 4568	२६ 3,4,5	२१ 234व	७॥ 2468व	१६ 2346	२७ 3,4,6	२७॥ 4,6	२८ 8	१८॥ 128व	२४ 124व	२० 126व	२६॥ 3,6	१५॥ 4,6,8	२२॥ 3,4,6
कुम्भ	धनि 3,4	१८॥ 4,8,9	२० 4,6,9	२५ 3,4,9	२५ 4,5व	११ 4568	२५ 4,5व	२९॥ 3,4	१५॥ 3468	२४॥ 3,6	१८ 236व	१९ 246व	२० 2,8,व	२८ 8	३३ 4	२८॥ 3,6	१८ 236व	७ 2468व	१४॥ 246व
कुम्भ	शत 1 से 4	२६ 4,9	१९॥ 4,6,9	२६ 4,9	२६॥ 4,5व	२१ 356व	१९ 358व	२२॥ 3,4,8	२४॥ 3,4,6	२४॥ 3,4,6	१८॥ 236व	१८॥ 236व	२५ 2,4,व	३३ 4	२८ 8	१९॥ 4,6,8	८॥ 2468व	१७॥ 236व	१६ 236व
कुम्भ	पू.भा. 1,2,3	१९ 3469	२६ 4,9	२० 4,6,9	२०॥ 456व	२६॥ 4,5व	११ 4568व	१५ 3468	२९॥ 3,4	३०॥ 3,4	२४॥ 234व	२३॥ 234व	२०॥ 236व	२९ 3,6	१९ 4,6,8	२८ 8	१७॥ 2,8,व	२२॥ 2,4,व	२०॥ 234व
मीन	पू.भा. 4	१२ 14567	१९॥ 1457	१३॥ 14567	१९॥ 4,6,9	२५ 4,9	९ 4689	१५॥ 1468	२९ 134व	३० 1,3व	२९॥ 1,3,4	२८॥ 1,3,4	२५॥ 1,3,6	१७ 1236व	८ 12468	१७ 128व	२८ 8	३३ 4	३०॥ 3,4
मीन	उ.भा. 1 से 4	३ 145678	१९॥ 1357	१२॥ 14567	१८॥ 4,6,9	१९॥ 8,9	२१॥ 6,9	२४॥ 136व	२२॥ 1,8व	३० 134व	२९॥ 1,3,4	२९॥ 1,3,4	१४॥ 1468	५॥ 12468	१६॥ 1236व	२२ 124व	३३ 4	२८ 8	३५ -
मीन	रेव 1 से 4	१३ 14567	११ 1578व	४॥ 145678	१०॥ 4689	२७॥ 9	२२॥ 6,9	२७ 146व	२९॥ 1,3व	२१॥ 138व	२१ 1348	२१॥ 1348	२३ 1346	१४॥ 1246व	१६॥ 1236व	१८॥ 124व	३० 3,4	३४ -	२८ 8

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

✲✲ तिथि, नक्षत्रादि गण्डान्त नक्षत्रों का विचार ✲✲

(1) अश्विनी नक्षत्र—मेष राशि एवं केतु के इस नक्षत्र में उत्पन्न हुए बच्चे का जीवन प्रायः संघर्षशील होता है। इस नक्षत्र में **प्रथम चरण** में जन्म होने से पिता के लिए कष्टकारी, **दूसरे चरण** में फिजूलखर्ची, **तीसरे चरण** में भ्रमणशील तथा **चतुर्थ नक्षत्र** में कृश शरीर (अपने शरीर के लिए) कष्ट रहता है।

(2) आश्लेषा नक्षत्र—कर्क राशि एवं बुध के नक्षत्र के जातक प्रायः चंचल एवं चतुर बुद्धि वाले तथा परिवर्तनशील प्रकृति के होते हैं। **प्रथम चरण** में जन्म हो तो विशेष दोष नहीं, **दूसरे चरण** में पैतृक धन की हानि, **तीसरे चरण** में माता-पिता के लिए गण्डान्त शूल तथा **चतुर्थ चरण** में पिता के लिए अनिष्टकारी है—

आश्लेषाद्ये न गण्डं स्यातंधनगण्डं द्वितीयके। तृतीये मातृगण्डं तु पितृगण्डं चतुर्थके॥

(3) मघा नक्षत्र—सूर्य राशि और केतु के नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्टवादी, शीघ्र क्रुद्ध होने वाले, उद्यमी और धनवान होते हैं। **प्रथम चरण** में उत्पन्न हो तो माता-पिता को कष्ट या मातृ पक्ष की हानि, **दूसरे चरण** में पिता को परेशानी, **तीसरे चरण** में जन्म हो तो शुभ फलदायक, **चतुर्थ चरण** में जन्म हो तो विद्या, धनादि के लिए शुभ होता है।

(4) ज्येष्ठा नक्षत्र—मंगल की राशि (वृश्चिक) एवं बुध के नक्षत्र में उत्पन्न जातक सरल हृदय, तीक्ष्ण बुद्धि, धर्म परायण तथा उन्नति के कार्यों में अनेक बाधाओं से युक्त होते हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र के **प्रथम पाद** (चरण) में उत्पन्न बच्चा ज्येष्ठ (बड़े) को अरिष्टकर, **दूसरे चरण** में पैदा हो तो छोटे भाई को नेष्ट, **तीसरे चरण** में पिता के लिए अरिष्टकर तथा यदि **चतुर्थ चरण** में उत्पन्न हो जातक स्वयं अपने एवं पिता के लिए अनिष्टकारी होता है।

ज्येष्ठाद्यपादेऽग्रजमाशुं हन्याद् द्वितीयपादे यदि तत्कनिष्ठम्।
तृतीयपादे पितरं निहन्ति स्वयं चतुर्थे मृतिमेति जातः॥ (जातक-पारिजात)

ज्येष्ठा नक्षत्र और मंगलवार के योग में उत्पन्न कन्या बड़े भाई के लिए अरिष्टकारक होती है।

(5) अभुक्त मूल नक्षत्र—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम २ घटियाँ तथा मूल नक्षत्र के आरम्भ की २ घटियाँ–कुल चार घड़ियाँ **अभुक्त मूल** गण्ड नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें उत्पन्न कन्या, पुत्र, पशु और नौकर कुल के लिए अनिष्टकारी होते हैं। इनमें उत्पन्न बच्चे को बिना शान्ति कराये न देखें।

अभुक्त मूलं गठिका चतुष्टयं ज्येष्ठान्त्यमूलादि भवं हि नारदः।
जातं शिशुं तत्र परित्यजेत् वा मुखं पिताऽस्याष्ट समा न पश्येत्॥

अभुक्त मूल—नक्षत्रों की आद्यान्त घटियों के बारे में विद्वानाचार्यों में मतान्तर पाया जाता है। यथा-नारद के अनुसार ज्येष्ठा, मूल नक्षत्र की चार घटियाँ, वशिष्ठ के अनुसार २ घड़ियाँ तथा बृहस्पति के मतानुसार केवल १-१ अभुक्त-मूल संज्ञक है। अभुक्तमूलोत्पन्न बालक यदि जीवित रहे, तो अपने वंश की वृद्धि करने वाला, धनवान् एवं सम्पत्तिवान होता है।

मूल नक्षत्र—केतु के नक्षत्र और गुरु की राशि (धनु) में उत्पन्न जातक धार्मिक रुचि वाला, उदार हृदय, मिलनसार, परोपकारी, धन-वाहनादि सुखों से युक्त होता है। चरण भेदानुसार मूल के **प्रथम चरण** में उत्पन्न जातक पिता की हानि करता है। **दूसरे चरण** में माता की हानि, **तीसरे चरण** में धन का नाश तथा **चौथा चरण** शुभ होता है। नक्षत्र की विधिपूर्वक शान्ति करवा लेने से अनिष्ट का भय नहीं रहता।

मूलाद्यपादे पितरं निहन्याद् द्वितीयके मातरमांशु हन्ति।
तृतीयजो वित्तविनाशकः स्यात् चतुर्थपादे समुपैति सौख्यम्॥ (जातक-पारिजात)

मूल नक्षत्र और रविवार दोनों के योग में उत्पन्न कन्या श्वसुर के लिए अनिष्टकारी होती है—

भौमवासरे योगेन ज्येष्ठाजा ज्येष्ठ सोदरम्॥ भानुवासरयोगेन मूलजा श्वसुरं हरेत्॥

मूल नक्षत्र फल का अन्य प्रकार

मूल नक्षत्र की सम्पूर्ण घटियों को 15 द्वारा भाग देकर 15 खण्ड बना लें। प्रत्येक खण्ड का फल इस प्रकार से होगा। **प्रथम भाग** हो तो पिता के लिए अनिष्टकर, **दूसरे में** चाचा की हानि, **तीसरे में** बहनोई की हानि, **चौथे में** पितामह (दादा) की हानि, **आठवें में** चाची के लिए अनिष्टकर, **नवमे में** सबके लिए अनिष्टकर, **दसवें अंश में** पशु का नाश, **ग्यारहवें में** नौकर का नाश होता है। **बारहवें अंश में** स्वयं जातक का नाश होता है। **तेरहवें अंश में** हो तो उसके ज्येष्ठ भाई का नाश, **चौदहवें अंश में** जातक की बहिन का अनिष्ट होता है। अगर **पन्द्रहवें में** हो तो नाना को कष्ट (अनिष्ट) होता है।

उदाहरणार्थ यदि मूल का सर्वर्क्ष योग ६४ घड़ी १८ पल है, तो इसमें १५ द्वारा भाग देने से लब्ध प्रथम भाग में ४ घड़ी, १७ पल हुए। मान लो कि जन्मकालीन भयात् २८।४५ है। ४।१७ घट्यादि को ९ से गुणा करने पर पता चला कि ३८।३३ पर नौवां खण्ड (भाग) समाप्त होकर ३८।४५ पर दसवां भाग पड़ता है। तदनुसार फल चौपाय आदि पशु के लिए अनिष्ट रहेगा।

(6) रेवती नक्षत्र—बुध के नक्षत्र और गुरु की राशि (मीन) में उत्पन्न जातक सर्वप्रिय, विद्यावान, सुन्दर आकृति, तर्कशील एवं धनवान् होता है। रेवती के **प्रथम चरण** में जन्म हो तो राजा के समान वैभवशाली, **दूसरे में** मन्त्री के समान सुख साधनों से युक्त, **तीसरे में** जन्म होने से धनवान तथा **चतुर्थ में** जन्म होने से माता-पिता के लिए अरिष्टकारी होता है।

दिवाजातस्तु पितरं रात्रौ तु जननीं तथा। आत्मानं संध्ययोर्हन्ति ततो गण्डं विवर्जयेत्॥

भारतीय संस्कृति में संस्कारों का महत्त्व
(मुख्य-मुख्य मुहूर्त्तों का निर्णय स्वयं करें)

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में संस्कारों का विशेष महत्त्व है। प्राचीन ऋषियों ने गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि कर्म तक षोडश-संस्कारों के महत्त्व को एकमत से स्वीकार किया है। मनुष्य जन्म से अबोध होता है, परन्तु संस्कारों से मनुष्य के आन्तरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व का निखार व परिष्कार होता है। जैसे, शास्त्र में कहा गया है-

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते।
वेद पाठात् भवेद् विप्रः, ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः॥

अतएव सुख, समृद्धि एवं कल्याण चाहने वाले प्रत्येक वर्ण के गृहस्थी मनुष्य को भारतीय परम्परा एवं संस्कृति का अनुगमन करते हुए गर्भाधान, पुंसवन, नामकरणादि संस्कारों को धारण करना चाहिए। शास्त्र विधि अनुसार बच्चे के संस्कार करने से बालक/कन्या मेधावी, धनी, यशस्वी एवं दीर्घायु होता है॥

षोडश संस्कार इस प्रकार से हैं–
(१) गर्भाधान (२) पुंसवन (३) सीमन्तोन्नयन (४) जातकर्म (५) नामकरण (६) निष्क्रमण (७) अन्न प्राशन (८) चूडाकरण (मुण्डन), (९) यज्ञोपवीत (१०) से (१३) तक चतुर्वेदीय व्रत, (१४) समानवर्त्तन (१५) विवाह (१६) अन्त्येष्टि।

☞ **(१) गर्भाधान संस्कार**–यह प्रथम संस्कार है, जो स्त्री के ऋतु (रजस्वला) स्नान के पश्चात् किया जाता है। भार्या के स्त्री धर्म (रजोदर्शन) में होने के १६ दिन तक वह गर्भ-धारण के योग्य रहती है। रजोदर्शन के दिन ६, ८, १०, १२, १४, १६वें दिनों में क्रियमाण गर्भाधान पुत्रदायक तथा विषम दिनों (५, ७, ९, ११, १३, १५) में कन्या-प्रद होता है। उपरोक्त दिनों में भी शुद्ध मुहूर्त दिनों का विचार किया जाता है।

(१) गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभतिथियां–१ (कृष्ण) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्ल)

शुभ वार–सोम, बुध गुरु एवं शुक्रवार

शुभ नक्षत्र–रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, पुन, पुष्य, स्वा, अनु, श्रव, धनिष्ठा व शतभिषा।

शुभ लग्न–लग्न, केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों एवं लग्न को सूर्य, मंगल, और गुरु देखते हों, तो गर्भाधान से पुत्रोत्पत्ति की संभावना होती है। इसके अतिरिक्त पुत्रार्थी विषम लग्न राशि एवं विषम नवांशगत लग्न में तथा कन्याकांक्षी सम लग्न राशि में स्त्री संग करें।

गर्भ-धारण के दिन स्त्री-पुरुष दोनों का चन्द्र-बल प्राप्त होना शुभ होता है।

गर्भाधान के लिए त्याज्य काल–रजोदर्शन से प्रथम चार रात्रि को छोड़कर, रिक्ता तिथि, जन्म नक्षत्र, मघा-अश्ले आदि तीनों गण्डांत, मूला, भरणी, अश्विनी, रेवती नक्षत्र, ग्रहण का दिन, माता-पिता के श्राद्ध का दिन, वैधृति, परिघ का पूर्वार्ध, संक्रान्ति, व्यतीपात, ग्रहण, सन्ध्या, दिन का समय, जन्म राशि से अष्टम लग्न, दीवाली, दशहरा, नवरात्र आदि पर्व दिनों को स्त्री संसर्ग में त्याग करना चाहिए।

गर्भ मासों के अधिपति

गर्भाधान से लेकर नव एवं दस मास तक भिन्न-भिन्न ग्रह अधिपति होते हैं। अरिष्टभय की स्थिति में उसी मास से सम्बन्धित ग्रह की पूजा-दानादि करना चाहिए।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्र	शनि	बुध	आधानकालिक लग्नेश	चंद्र	सूर्य

☞ **(२) पुंसवन संस्कार मुहूर्त्त**–यह संस्कार गर्भधारण से तीसरे मास में किया जाता है। इस मास का स्वामी गुरु है। इस दिन श्री विष्णु पूजा करना शुभ होता है। इस संस्कार के शुभ मुहूर्त्त इस प्रकार से हैं।

शुभवार–रवि; चंद्र, मंग, बुध, गुरु व शुक्र। मंगल व बुध वारों में मं. बु. उदित होने चाहिएं।

शुभ तिथियां–१ (कृ) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शुक्ल)।

शुभ नक्षत्र–रोहणी, मृग, पुन. पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा, श्रवण, अनु एवं रेवती नक्षत्र। विद्ध नक्षत्र त्याज्य हैं।

☞ **(३) सीमन्त संस्कार**–यह तृतीय संस्कार है, जो गर्भ धारण से ६, ८ वें मास, जब मास-स्वामी बली हो। शुभवार–रवि, मंगल, एवं गुरु।

शुभ तिथियां–२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ला)।

नक्षत्र–मृग, पुन, पुष्य, हस्त, मूल, श्रवण:

लग्न–१, ३, ५, ७, ९ आदि विषम लग्न, केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह हों॥

(३) (क) श्री विष्णु पूजा मुहूर्त्त–यह पूजा गर्भाधान से आठवें मास गर्भरक्षा के उद्देश्य से की जाती है। इसमें शंख चक्र-गदा-पद्मधारी भगवान विष्णु की यथाशक्ति, सुवर्णमयी प्रतिमा बनवाकर षोडशोपचार से पूजा करके परिधान सहित, प्रतिमा को ब्राह्मण को दान करें।

शुभ तिथियां–२, ७, १२

शुभ वार–चंद्र, बुध, गुरू, शुक्र।

शुभ नक्षत्र–रोहिणी, पुष्य और श्रवण।

☞ **(४) जातकर्म संस्कार**–कुछ शास्त्रकार प्रसव के समय नालछेदन के पूर्व ही इस संस्कार को कार्यान्वित करने की आज्ञा दी है। परन्तु आजकल नरघटी अथवा १६ घटी तक कर लेना चाहिए।

कुछ लोग परम्परानुसार ११वें अथवा १२वें दिन कर लेते हैं।

शुभ तिथियां–१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शु.)
शुभ वार = चं., बु., गु., शु.

नक्षत्र–अश्वि. रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रव., धनि, शत, रेव।

☞ **मेधा-जनन संस्कार**–जात कर्म के साथ ही इस कृत्य का निष्पादन करना चाहिए। बालक/बालिका मेधावी, कीर्तिमान एवं सौभाग्यशाली हो, इसके लिए दाएं हाथ की अनामिका अंगुली से शहद एवं गोधृत चार बार बच्चे को चटाएँ। चारों बार क्रमशः "ॐ भूस्त्वपि धधामि।" ॐ भुस्त्वपि दधामि।" तथा ॐ भूर्भुवस्वः सर्वत्वपि दधामि। मंत्रों का उच्चारण करें। इसके साथ ही कुछ घृत-मिश्रित गुड़ भी बालक के तालु में लगा देना शुभ होता है। जिससे बच्चे को स्तनपान के पूर्व ही कुछ चूसने की आदत हो जाए। (अंगुली के अतिरिक्त सुवर्ण या चांदी के चम्मच का भी प्रयोग कर सकते हैं।

☞ **(५) स्तनपान का मुहूर्त्त**–जन्मान्तर ५वें या ७वें किसी दिन नीचे लिखे भद्रा, व्यति, वैधृति, व्याघात आदि योगों को छोड़कर निम्न शुभ मुहूर्त्त माता संतान को प्रथम बार स्तनपान कराए।

शुभ तिथि–१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.), १५,

शुभ नक्षत्र–रोह., मृग. ,पुन, पुष्य, उत्तरा ३ हस्त, चित्रा, अनु, श्रव. धनि, व रेवती॥

शुभ वार–चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र।

शुभ लग्न–२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ राशि लग्न।

सूतिका पथ्य में भी उपरोक्त मुहूर्त्त ग्राह्य है।

☞ **(६) षष्ठी पूजन**–जन्म से पांचवें दिन, जीवन्ती देवी का पूजन करना चाहिए। इसी प्रकार छेठे दिन रात्रि में षष्ठी

पूजन, कात्यायनी देवी' का आनन्द मंगल व गीत वाद्य के साथ पूजन करना चाहिए। जीवन्ती एवं षष्ठी पूजा में सूतक की दोष आपत्ति नहीं होती। देशाचारानुसार कोई २१वें या ३१वें दिन की षष्ठी पूजन करते हैं।

☛ **(७) प्रसूता स्नान मुहूर्त्त**–सूतिका स्नान बच्चे के जन्मदिन से एक सप्ताह के बाद करना चाहिए।

शुभ तिथियां–१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) १५।

शुभ वार–रवि, मंगल, गुरू, शुभ हैं। सोम एवं शुक्रवार मध्यम हैं।

शुभ नक्षत्र–अश्वि., रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वा., अनु., रेव.।

शुभ लग्न–२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ सौम्य ग्रह से युत या दृष्ट।

☛ **(८) नामकरण संस्कार**–यद्यपि प्रत्येक मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व पर उसके परिवेश एवं परिस्थितियों का विशेष प्रभाव होता है। परन्तु ज्योतिष आचार्यों के अनुसार मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास में उसके प्रसिद्ध नाम का भी विशेष महत्त्व होता है–

''नामाखिलस्य व्यवहार हेतुः, शुभावहं कर्मसु भाग्य हेतुः।
नाम्नैव कीर्तिं लभते मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नाम कर्म॥''

गृहारम्भ–प्रवेश, युद्ध व्यापार, व्यावहारिक कार्य, दान, मन्त्र-सिद्धि, भाग्य, पुनर्विवाह, रोगोत्पत्ति तथा स्वामी-सेवक के पारस्परिक कृत्यों में नाम राशि वांछनीय है।

☛ **नामकरण**–सूतक-समाप्ति पर देशानुसार १०, ११, १२, १३, १६, १९, २२वें दिन संस्कार करना चाहिए। एक अन्य मतानुसार ब्राह्मण को १० या १२वें दिन, क्षत्रिय को ११ या १२ वें दिन वैश्य को १६ या २०वें दिन नामकरण संस्कार करना चाहिए। नामकरण पिता-पितामह या कुल के वृद्ध व्यक्ति के द्वारा स्वास्ती वाचन मन्त्रों सहित (विद्वान ज्योतिषी से कुण्डली परामर्श के बाद) उच्चारित करवाना चाहिए।

शुभ तिथियाँ–१ (कृष्ण), २,३,७,१०,११,१२,१३ (शुक्ल)।

शुभ वार–चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ नक्षत्र–अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत, रेवती।

शुभ लग्न–१,४,६,७,९,१२ लग्न शुभ ग्रह युत या दृष्ट हों। भद्रा, ग्रहण, श्राद्ध दिन, दुष्ट योग, संक्रान्ति आदि रहित काल में, सुयोग्य ज्योतिषी से प्रथम नामाक्षर पूछ कर कानों को मधुर लगने वाले अक्षर, महापुरुषों के नाम सदृश अथवा शुभ सार्थक शब्दों वाला नाम रखना कल्याणकारी रहता है।

बालक के दाँत निकलने का फल

यदि पहले मास में बालक के दाँत निकल आएं तो स्वयं अपनी आयु के लिए अरिष्टकारक, दूसरे मास में भाई को, तीसरे मास में बहिन को, चौथे मास में माता को, पाँचवें मास में बड़े भाई के लिए विशेष कष्टकारी होता है, **छटे मास में दाँत निकलें** तो अत्यन्त सुख, सातवें मास में पिता से सुख, आठवें मास में देह की पुष्टता, नवें मास में लक्ष्मी की प्राप्ति, दसवें मास में सौख्य प्राप्ति, ११वें निकलें तो **अति सौख्य**, १२वें मांस में निकलें तो विपुल धन-प्राप्ति होती है। यदि गर्भ से ही दाँतों सहित उत्पन्न हुआ हो वह माता-पिता के सुख से विहीन अथवा ऊपर की पंक्ति के दाँत पहलें निकले तो भी माता-पिता तथा नानके पक्ष के लिए हानिकारक माना जाता है। यदि उपरोक्त अशुभ मासों में बालक को दन्तोत्पत्ति की संभावना हो तो मृत्युज्जय का जाप, ग्रह शान्ति एवं उचित दान आदि करने से अशुभत्व का निवारण तथा अरिष्ट की शान्ति हो जाती है।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
फल	स्वयं को अरिष्ट	भ्रातृ कष्ट	बहिन को कष्ट	मातृ कष्ट	ज्येष्ठ भ्रातृ कष्ट	सुख	पिता से सुख	देह सुख	धन प्राप्ति	सौख्य प्राप्ति	अति सौख्य	विपुल धन

☛ **(९) झूला आरोहन मुहूर्त्त**–बालक के जन्मदिन से १०, १२, १६, २२ एवं ३२वें दिन बालक को आराम देह झूले में सुलाना चाहिए। झूले में डालने से पूर्व शुभ तिथि, वार, नक्षत्र, योगादि का विचार कर लेना चाहिए। झूले में माता या दादा, दादी के द्वारा, भगवान् विष्णु का ध्यान करते हुए बच्चे का सिर पूर्व की ओर रखकर शिशु को सुलाना चाहिए।

शुभ तिथियां–१ (कृ), २,३,५,७,१०,११,१३ (शुक्ल) व पूर्णिमा।

शुभ वार–सोम, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र–अश्वि, रोहिणी, मृग, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा तथा अनुराधा।

☛ **(१०) निष्क्रमण मुहूर्त्त**–जन्म से ३,४ मासों में निम्नलिखित शुभ योगों में बालक को प्रथम बार घर से बाहर निकालना हितकर होता है। शीघ्रता में आवश्यक हो तो जन्म से १२वें दिन भी निष्क्रमण लिखा गया है।

शुभ तिथियां–१ (कृ) २,३,४,७,१०,११,१२ (शु.) एवं १५।

शुभ वार–सोम, बुध, गुरु तथा शुक्र।

शुभ नक्षत्र–अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, अनु, श्रव, धनि।

शुभ लग्न–२,३,४,५,६,७,९,१०,११ राशि लग्न।

माता, दादी आदि आत्मीयजन बालक को स्नानादि करवा कर वस्त्रादि से अलंकृत करें तथा पुण्याहवाचन, शंख और मंगल मंत्रों एवं गीत-वाद्य सहित ध्वनि के साथ उसे प्रथम देवालय (मन्दिर) में ले जावें। वहाँ देव पूजा व अर्चना करके आत्मीयजन शुभाशीष दें तथा मन्दिर की परिक्रमा करके स्वगृह लौट कर बच्चे को ननिहाल या मौसी के घर ले जावे। पुनः गृहागमन के समय दीर्घायु संज्ञक आशीर्वचनों से बालक का अभिनन्दन करें। पुनश्च, निष्क्रमण तृतीय मास में हो, तो बालक को सूर्य-दर्शन तथा चतुर्थ मास में हो तो चन्द्र-दर्शन करवाना चाहिए।

☛ **(११) भूम्युपवेशन-मुहूर्त्त**–जन्म से पंचम मास में मंगल के बलान्वित होने पर बालक को प्रथम बार भूमि पर विराजमान (बिठाने) के लिए विचारणीय मुहूर्त्त–

शुभ तिथियां–१ (कृ) २,३,४,७,१०,११,१३ (शु.) तथा पूर्णिमा।

शुभ वार–चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र–अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उतरा, हस्त, अनु, ज्ये, अभिजित।

शुभ लग्न–२,५,८,११ राशि लग्न।

☛ **(१२) जीविका परीक्षा**–'भूम्युपवशन' के अवसर पर बालक के सामने हानि रहित अस्त्र-शस्त्र, पुस्तकें, लेखनी (Pen-Pencil), वस्त्र, सोना, चाँदी, ताँबा, लोहादि धातुएँ, मशीनें मोटर, पंखा-रेडियों, टी. वी. आदि खिलौने, विज्ञान, हिन्दी, अंग्रेज़ी, संस्कृतादि साहित्य आदि वस्तुएँ रखें। इन वस्तुओं में से जिस वस्तु को बालक सहज रूप में सर्वप्रथम स्पर्श करें, वही उसकी भावी आजीविका होगी। ऐसा अनुमान लगाना चाहिए। कुल परम्परा अनुसार, कहीं-कहीं यह क्रिया अन्नप्राशन के साथ भी कर लेते हैं।

☛ **(१३)अन्न-प्राशन का मुहूर्त्त**–जन्म से सौर मास ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र को तथा ५,७,९ या ११वें मास पुत्री को उसकी पाचन शक्ति उपयुक्त होने पर प्रथम बार बच्चे को अन्न प्राशन कराना **अन्न प्राशन** में शुक्ल पक्ष विशेष प्रशस्त माना गया है। यद्यपि कृष्ण पक्ष की १,३,५,७,१० तिथियाँ भी ग्राह्य हैं। सोमवार, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार शुभ हैं।

नक्षत्र–अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभिजित श्रव, धनि, रेवती तथा जन्म-नक्षत्र 'सप्तशलाका चक्र' द्वारा क्रूर ग्रह विद्ध नक्षत्र त्याज्य होगा। जन्म राशि से ६, ८वें लग्न को छोड़कर २,३,४,५,६,७,९,१०,११ की राशि का लग्न जबकि लग्न से १,४,७वें शुभ ग्रह हों तथा लग्न शुभ ग्रहों द्वार दृष्ट हो।

विशेष–अन्न प्राशन दिन के पूर्वार्द्ध भाग में बालक की राशि का चन्द्रबल देखकर भद्रा रहित काल एवं उपरोक्त शुभ दिन को

सूर्य, ब्रह्म, विष्णु, महेश तथा दिक्पतियों की पूजा करके माता स्वलंकृत बालक को अपनी गोद में बिठाकर ईश्वर-स्मरण करते हुए उसे मधु, घृत, दही, खीर का भोजन सर्व प्रथम कराएँ।

☛ **(१४) कर्ण वेध का मुहूर्त्त**—बालक के जन्म से १२, १६वें दिन, या ६,७,८वें मास में अथवा ३,५वें वर्ष बालक का कर्ण छेदन प्रशस्त माना जाता है।

ग्राह्य मास—चैत्र, (का. शु. ११ के बाद), पौष तथा फाल्गुन।

तिथियां—४,९,१४ (रिक्ता तिथियां) छोड़कर सभी तिथियां।

वार—चं, बु., गु., शु, वारों में अश्वि, मृग, आ. पुन, पुष्य हस्त, चित्रा, अनु, अभि, श्रव, धनि, रेव। विद्ध तथा जन्म नक्षत्र भी त्याज्य।

शुभ लग्न—२,३,४,६,७,९,१२।

विशेष—बोलक को पूर्वाभिमुख बिठाकर हाथ में कुछ मिष्ठान्न दें तथा पुत्र के बाएं कान को तथा पुत्री के दाएं कान को सुवर्ण या चाँदी की श्लाका से सौभाग्यवती स्त्री या कुशल स्वर्णकार से कर्ण विधवाना चाहिए।

☛ **कन्या की नासिका छेदन**—हेतु उपरोक्त कर्ण वेध मुहूर्त के मासों में ही कन्या का नामक विंधवाया जाता है। शुक्ल पक्ष की तिथियाँ शुभ होती हैं—२, ३ ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५।

जन्म दिन कृत्य

सामान्यतः लोग अंग्रेज़ी तारीख अनुसार ही जन्मदिन कृत्य कर लेते हैं। परन्तु इसमें कई बार भूल होने की सम्भावना रहती है। सिद्धान्तः एक सौर वर्ष उपरान्त जिस दिन जन्मेष्ट एवं जन्मदिन के समान ही स्पष्ट सूर्य के राशि, अंश, कलादि की जब पुनरावृत्ति आ जाए, उसी दिन को जन्मदिन का नववर्ष प्रवेश माना जाएगा। यदि इतनी सूक्ष्मता का पता न चल पाए तो देशी प्रविष्टें के अनुसार जन्म दिन के वर्ष का निर्धारण किया जाए तो शुद्धता के अधिक पास रहेंगे। यदि किसी सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा वार्षिक जन्मदिन का निर्णय (गणितानुसार) करवा लें तो और अधिक उचित होगा।

जन्मदिन के अवसर पर प्रातः उठकर गंगाजल सहित शुद्ध पवित्र जल से बालकको स्नानादि के पश्चात् सुन्दर वस्त्र धारण करवाकर पूर्वाभिमुख होकर माता पिता उसे गोदी में बिठाकर किसी सुयोग्य पण्डित जी द्वारा पंचदेव पूजन, नवग्रह पूजन एवं संकल्पपूर्वक छाया दान सहित जन्मदिन पूजन करवाना चाहिए। पूजनोपरांत भगवान् सूर्यदेव को अर्घ्य, ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दानादि करें।

विशेषकर वर्षफल में स्थित अशुभ ग्रहों के दान, जपादि करवाने से बच्चों को आरोग्यता एवं माता-पिता को सुख-शान्ति बनी रहती है। जन्मदिन पर तिल स्नान, तिलों चावल, दूध, चीनी आदि से बनी क्षीर तथा वस्त्र अनाजादि का दान एवं स्वयं भी क्षीर सेवन शुभ होता है।

अथ अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है—(१) जनना शौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भास्त्रावादि अशौच-व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्त्राव' कहते हैं। पांचवें, छटे मास में 'गर्भपात' और इसके उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर, किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पितादि सपिण्डों को ३ दिन का 'सूतक' होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने २ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है, जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हों, तो, २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से एक मास तक धर्मकार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

मृतोत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाये तो माता को १० दिन तक सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये तो पितादि सपिण्डों का पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं होता।

मृताशौच-व्यवस्था

नामकरण अर्थात् १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दाँत आने से पहिले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थात् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक, अर्थात् मुंडन संस्कार न हुए बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है और ३ वर्ष में मुण्डन संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या शौच-व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाए व प्रसूता हो तो माता-पिता सहोदर, भाईयों को तीन दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है।

मातामह-मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना की ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १ ॥ दिन का पातक होता है।

सास-ससुर तथा जामातृ पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जाये तो जामित्र पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १ ॥ दिन का पातक लगता है। जामाई के मरने पर १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय-विचार

भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी की मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो तीन दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १ दिन का पातक होता है। और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का।

अशौच-संपात पर निर्णय

10 दिन के अशौच में यदि 5 दिन के भीतर दूसरा 10 दिन का या इससे कम दिन का मृत-अशौच प्राप्त हो जाए तो पहले के साथ ही दूसरे अशौच की शुद्धि हो जाती है। 5 दिन के बाद 9 दिन के भीतर हो तो पिछले के साथ ही दूसरे आशौच की भी शुद्धि हो जाती है, यदि दसवें दिन की रात्री में दूसरा अशौच हो जाये तो 2 दिन अशौच और बढ़ जाता है। 10 दिनों के मृताशौच में 10 दिन अथवा 3 दिन वाला जननाशौच आ पड़े तो मृताशौच की समाप्ति पर ही जननाशौच की भी समाप्ति या शुद्धि हो जाती है। जननाशौच में मृताशौच अथवा मृतशौच में जननाशौच हो जावे तो मृताशौच के साथ शुद्धि होती है।

अधिक जानकारी के लिए धर्मसिन्धु, निर्णयसिन्धु आदि ग्रन्थों का अवलोकन करना चाहिए।

अशौच-विचार

अशौच दो प्रकार का होता है-1. **जननाशौच** तथा 2. **मरणाशौच**। यहाँ मरणाशौच के संदर्भ में कुछ विचार प्रस्तुत किये जा रहे हैं-

(1) मरणाशौच के सम्बन्ध में शास्त्र के वचनानुसार ब्राह्मण को दस दिन का, क्षत्रिय को बारह दिन का, वैश्य को पंद्रह दिन का और शूद्र को एक महीने का अशौच लगता है। परन्तु शास्त्र में निर्णयात्मक यह व्यवस्था है कि चारों वर्णों की शुद्धि दस दिन में हो जाती है। यह कायशुद्धि अर्थात् सामान्य शुद्धि है। इसके अनन्तर अस्पृश्यता का दोष नहीं रहता। अन्नादिप्रयुक्त पूर्ण शुद्धि बारहवें दिन सपिण्डीकरण के बाद ही होती है। इसीलिये देवार्चन आदि इसके अनन्तर ही किये जा सकते हैं।

शुद्धयेद् विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन भूमिपः। वैश्यः पञ्चदशाहेन शूद्रो मासेन शुद्धयति।। (कूर्मपुराण उपरिविभाग) **सर्वेषामेव वर्णानां सूतके मृतके तथा। दशाहाच्छुद्धिरेतेषामिति शातातपोऽब्रवीत्।।** (निर्णयसिन्धु तृतीयपरि० उत्त०)

दशाहे कायशुद्धिः स्यात् अन्नशुद्धिः सपिण्डने।

(2) दस दिन के लिये प्रवृत्त अशौच के अन्तर्गत यदि दूसरा दस दिन तक के लिए प्रवृत्त अशौच हो जाए (किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाए) तो पूर्वप्रवृत्त दशाहाशौच की शुद्धि के साथ उत्तरप्रवृत्त दशाहाशौच की भी निवृत्ति हो जाएगी अर्थात् पहले व्यक्ति की मृत्यु तिथि के अनुसार दूसरे के अशौच की भी निवृत्ति हो जाएगी, किन्तु प्रथम मरणाशौच के दसवें दिन की रात के तीन प्रहर तक दस दिन तक रहने वाला यदि दूसरा मरणाशौच हो गया तो पहले मरणाशौच के दस दिन के बाद दूसरे मरणाशौच के निमित्त दो दिन और मरणाशौच रहता है। यदि पूर्वोक्त रात के चौथे प्रहर में दूसरा मरणाशौच हो गया तो दूसरे मरणाशौच के लिए प्रथम मरणाशौच के बाद तीन दिन का मरणाशौच रहता है। क्रिया-कर्म करने वाले को तो पूरे दस दिन तक मरणाशौच रहता है।

(3) पिता के मरने के दस दिन के भीतर माता की भी मृत्यु होने पर पिता के मृत्यु दिवस के दस दिन से डेढ़ दिन (पक्षिणी) मरणाशौच अधिक रहता है। यह पक्षिणी अशौच दशम रात्रि के पूर्व में मरने पर होता है। दशम रात्रि के तीन प्रहर तक मृत्यु होने पर दो दिन का तथा चौथे प्रहर में मरने तक तीन दिन का ही अशौच होगा। पक्षिणी अशौच नहीं होगा।

(4) पिता के मरने के अनन्तर माता की मृत्यु हो जाए तो माता का पक्षिणी अथवा दो या तीन दिन का अधिक अशौच प्रवृत्त हो तो भी ग्यारहवें दिन पिता का आद्यश्राद्ध, महैकोद्दिष्ट, शय्यादान तथा वृषोत्सर्ग आदि कृत्य करने चाहिए। अन्य सपिण्डों के ग्यारहवें दिन आद्यश्राद्धादि के विषय में दोनों पक्ष हैं। कुछ का मत है करना चाहिए तथा कुछ का मत है नहीं। अतः देशाचार के अनुसार करना चाहिए।

(5) माता की मृत्यु के बाद दस दिन के भीतर पिता की मृत्यु हो जाए तो पिता के मरण दिन से पूरे दस दिन तक मरणाशौच रहता है अर्थात् माता के मरणाशौच की शुद्धि होने पर भी पिता के मरणाशौच की शुद्धि नहीं होती।

(6) किसी कारणवश मृत्युदिवस के दिन दाह-संस्कार न हो सके और किसी दूसरे दिन दाह-संस्कार करना पड़े तो भी मृत्यु दिन से ही गिनकर पूरे दस दिन का अशौच लगता है, किन्तु अग्निहोत्री के मरने पर दाह-संस्कार के दिन से ही दस दिन का अशौच लगता है।

दाहाद्यशौचं कर्त्तव्यं द्विजानामग्निहोत्रिणाम् (कूर्मपुराण २३-६१)

(7) किसी कारणवश माता-पिता का दस दिन के भीतर ही पुत्तलदाह करना पड़े और उसका पहले अशौच सम्बन्धी क्रियाकर्म नहीं किया हो तो मरण दिन से पूरे दस दिन का अशौच रहता है। मृत्यु दिवस से दस दिन के बाद माता-पिता का पुत्तलदाह करके क्रियाकर्म करना पड़े तो पुत्र और पत्नी को दाह-संस्कार के दिन से पूरे दस दिन का अशौच रहता है। माता-पिता के अतिरिक्त यदि दस दिन के अनन्तर किसी का पुत्तलदाह करना पड़े तो तीन दिन का अशौच रहता है।

(8) माता-पिता के मरने पर विवाहिता लड़की को तीन दिन का अशौच लगता है।

(9) घर में जब तक शव रहे तब तक वहाँ अन्य गोत्रियों को भी अशौच रहता है।

(10) एक जाति के व्यक्ति यदि किसी शव को कन्धा देते हैं, उसके घर में रहते हैं और वहाँ भोजन करते हैं तो उन्हें भी दस दिन का अशौच रहेगा। यदि वे केवल भोजनमात्र करते हैं अथवा मात्र गृहवास करते हैं तो उन्हें तीन रात का अशौच लगेगा। यदि केवल शव को कन्धा देते हैं तो उन्हें एक दिन का अशौच लगता है।

(11) दिन में शव का दाह-संस्कार होने पर शव यात्रा में शामिल होने वाले लोगों को सूर्यास्त होने के पूर्व तक अशौच रहता है। सूर्यास्त होने पर नक्षत्र-दर्शन के अनन्तर स्नान आदि करके यज्ञोपवीत बदल देना चाहिए। रात्रि में दाह-संस्कार होने पर सूर्योदय के पूर्व तक का अशौच रहता है।

बालकों की मृत्यु पर अशौच-विचार

(1) नाल कटने के बाद नामकरण के पूर्व अर्थात् बारह दिन के भीतर यदि बालक मर गया तो बन्धुवर्ग स्नान मात्र से मरणाशौच से निवृत्त हो जाते हैं। माता-पिता को पुत्र के मरने पर तीन रात्रि का तथा कन्या के मरने पर एक दिन का अशौच रहता है, परन्तु जननाशौच पूरे दस दिन तक रहता है।

(2) नामकरण के पश्चात् दाँत के उत्पत्ति (छः मास)-के पूर्व बालक के मरने पर बन्धुवर्ग स्नान मात्र से शुद्ध हो जाते हैं। माता-पिता को पुत्र के मरने पर तीन रात्रि का तथा कन्या के मरने पर एक दिन का अशौच रहता है।

(3) दाँत की उत्पत्ति तथा चूडाकर्म (मुण्डन-संस्कार-तीन वर्ष) हो चुके बालक के मरने पर माता-पिता को तीन दिन का मरणाशौच लगता है और सपिण्ड को एक दिन का मरणाशौच लगता है।

(4) नामकरण के बाद उपनयन-संस्कार के पहले मरने पर तीन दिन का मरणाशौच रहता है।

(5) उपनयन-संस्कार होने के बाद मृत्यु होने पर सात पुश्त के भीतर के लोगों को दस दिन का मरणाशौच रहता है। चूँकि ब्राह्मण बालक के उपनयन का मुख्य काल आठ वर्ष का है। अतः आठ वर्ष की अवस्था हो जाने पर उपनयन न होने पर भी बालक की मृत्यु होने पर पूरे दस दिन का मरणाशौच रहता है। इसी प्रकार अन्य वर्णों के लिए भी उपनयन के लिए निर्धारित मुख्य काल के अनन्तर उपनयन न होने पर भी बालक की मृत्यु होने पर दस दिन का मरणाशौच रहता है।

(6) अनुपनीत बालक तथा अविवाहिता कन्या को माता और पिता के मरने पर ही दस दिन का अशौच होता है। अन्य सगोत्रियों के मरने पर कोई अशौच नहीं होता।

बालकों के श्राद्ध की व्यवस्था

(1) दो वर्ष के पूर्व के बालक का कोई श्राद्ध तथा जलांजलि आदि क्रिया करने की आवश्यकता नहीं है।

(2) दो वर्ष पूर्ण हो जाने पर छः वर्ष के पूर्व तक केवल श्राद्ध की पूर्वक्रिया अर्थात् मलिनषोडशी तक की क्रिया करनी चाहिए। इसके बाद की अर्थात् एकादशाह तथा द्वादशाह की क्रिया करने की आवश्यकता नहीं है।

(3) छः वर्ष के बाद श्राद्ध की सम्पूर्ण क्रिया अर्थात् मलिनषोडशी, एकादशाह तथा सपिण्डन आदि क्रियाएँ करनी चाहिए।

(4) कन्या का दो वर्ष से लेकर विवाह के पूर्व (अर्थात् दस वर्ष तक) पूर्व क्रिया अर्थात् मलिनषोडशी तक की क्रिया करनी चाहिए तथा विवाह के अनन्तर अर्थात् दस वर्ष के बाद सम्पूर्ण क्रिया अर्थात् मलिनषोडशी, एकादशाह तथा सपिण्डन आदि क्रियाएँ करनी चाहिए।

गयाश्राद्ध तथा बदरीनारायण में ब्रह्मकपाली-श्राद्ध पर विचार

गया में श्राद्ध करने की अत्यधिक महिमा है। शास्त्रों में लिखा है-

जीवतो वाक्यकरणात् क्षयाहे भूरिभोजनात्।
गयायां पिण्डदानाच्च त्रिभिर्पुत्रस्य पुत्रता।। (श्रीमद्देवीभागवत)

जीवनपर्यन्त माता-पिता की आज्ञा का पालन करने, श्राद्ध में खूब भोजन कराने और गया तीर्थ में पितरों का पिण्डदान अथवा गया में श्राद्ध करने वाले पुत्र का पुत्रत्व सार्थक है।

'गयाभिगमनं कर्तुं यः शक्तो नाभिगच्छति।
शोचन्ति पितरस्तस्य वृथा तेषां परिश्रमः।।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन ब्राह्मणस्तु विशेषतः।
प्रदद्याद् विधिवत् पिण्डान् गयां गत्वा समाहितः।।'

'जो गया जाने में समर्थ होते हुए भी नहीं जाता है, उसके पितर सोचते हैं कि उनका सम्पूर्ण परिश्रम निरर्थक है। अतः मनुष्य को पूरे प्रयत्न के साथ गया जाकर सावधानीपूर्वक विधि-विधान से पिण्डदान करना चाहिए।'

इन वचनों के अनुसार पितृऋण से मुक्तिहेतु गया श्राद्ध करने की अनिवार्यता के कारण और उसके न करने से पाप लगने के कारण जीवित समर्थ पुरुष को गया में पिण्डदान तथा श्राद्ध अवश्य करना चाहिए।*

प्राचीन काल में जहाँ ब्रह्मा का शिरः कपाल गिरा था, वहाँ बदरी क्षेत्र में पिण्डदान करने का विशेष महत्त्व है। सनत्कुमारसंहिता में यह वचन आता है-**'शिरःकपालं ...... नारदैतन्मयोदितम्।।'** अर्थात् प्राचीन काल में जहाँ ब्रह्मा का शिरःकपाल गिरा था, वहां बदरी क्षेत्र में जो पुरुष पिण्डदान करने में समर्थ हुआ, यदि वह मोह के वशीभूत होकर गया में पिण्डदान करता है तो वह अपने पितरों का अधःपतन करा देता है और उनसे शापित होता है अर्थात् पितर उसका अनिष्ट-चिन्तन करते हैं। हे नारद ! मैंने आपसे यह कह दिया, इस वचन के अनुसार बदरीक्षेत्र में ब्रह्मकपाली में पिण्डदान करने के बाद गया में पिण्डदान करने का निषेध प्रतीत होता है। यद्यपि इस सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। **परन्तु मुख्य पक्ष यही है कि पूर्व में गया में पिण्डदानादि श्राद्ध सम्पन्न करने के बाद ही बदरी क्षेत्र में ब्रह्मकपाली में श्राद्ध करना चाहिए।**

** कुछ लोगों में यह भ्रमात्मक प्रचार है कि गया श्राद्ध के बाद वार्षिक श्राद्ध आदि करने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु यह विचार पूर्ण रूप से गलत है। गया श्राद्ध तो नित्य श्राद्ध है, इसे एक बार से अधिक भी गया जाकर किया जा सकता है। गया श्राद्ध करने के बाद भी घर में वार्षिक क्षयाह श्राद्ध तथा पितृपक्षके श्राद्ध आदि सभी श्राद्ध करने चाहिये, छोड़ने की आवश्यकता नहीं है।*

००० अथ प्रसूति लग्नादि का विचार ०००

मेष—बालक के जन्म समय मेष लग्न हो तो घर के पूर्व की ओर प्रसूतिका की शय्या, दो उपसूतिकाएँ अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य में जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिका की संख्या जानें, मुख की कांति लाल वर्ण की, माता का मुख पूर्व की ओर, बालक की प्रकृति पित्तकारक, चंचल एवं साहसी होगी। माता के वस्त्र लाल वर्ण के तथा उसने पहले मीठा भोजन किया हो। जन्म के बाद बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। मकान पुराना होगा। आयु के २, ४, ११, १६, २९वें साल विशेष कष्ट रहे।

वृष—बालक के जन्म समय वृष लग्न हो, तो बालक गौरपूर्ण सुन्दर रूप, द्वार एवं माता का शिर दक्षिण की ओर, रक्त-पित्त प्रकृति, माता ने श्वेत वस्त्र और चाँदी के आभूषण पहने हों, पहले शाकादि का भोजन किया हो। पाँव से प्रसवोत्पन्न, ३ या ४ उपसूतिकाएँ हों। आयु के १, १३, १८, ३३, ४३, ५८वें वर्ष में विशेष कष्ट हो।

मिथुन—बालक का चंचल स्वभाव, वात-श्लेष्म (वायु बलगम) प्रकृति, उपसूतिकाएँ (स्त्रियाँ) ३ या ५, माता का मुख पश्चिम की ओर, स्तनों में दूध कम उतरा हो, माता ने पहले नमकीन विचित्र (मिश्रित) भोजन किया हो, वस्त्र हरा पुराना, गृह का द्वार पश्चिम की ओर हो, शिराभिमुख प्रसव हुआ हो, बालक ने दीर्घ स्वर में रूदन किया हो। आयु के २, ४, १०, १३, ३८, ४८वें साल कष्ट रहे।

कर्क—गौर वर्ण, कोमल पर पुष्ट शरीर, चंचल नेत्र, वात-श्लेष्म प्रकृति, कद लम्बा व गोल, सुन्दर मुख, माता का मुख उत्तर की ओर, प्रसव से पूर्व माता ने मीठा-शीतल थोड़ा भोजन किया हो, तथा पुराने वस्त्र पहिने हो, माता के दाहिने अंग पर लहसन का निशान हो, प्रसव से पूर्व माता ने श्वेत व गुलाबी वस्त्र व चाँदी के आभूषण पहिने हों। प्रसवोपरान्त बालक कुछ देर से रोया हो। वह जलीय (liquids) का शौकीन हो। आयु के १, ५, २५, ३९, ४८, ६२वें वर्ष कष्ट।

सिंह—जन्म समय सिंह लग्न हो, तो माता का मुख पूर्व किन्तु गृहद्वार दक्षिण की ओर, उसने रक्त वस्त्र एवं सुवर्ण आभूषण पहने हों, प्रसव पूर्व उसने खट्टा व कसैला भोजन किया हो। जन्म समय ३ या ५ स्त्रियाँ, नया मकान, बालक की पीठ पर चिन्ह हो और वह दीर्घ स्वर में रोया हो। आयु के ३, ५, १२, २८, ३६, ४९वें वर्ष कष्ट रहे।

कन्या—इस लग्न का स्वामी बुध है। जन्म समय बालक के सुन्दर नेत्र, गौर वर्ण, अल्प बाल, गोल चेहरा, सौम्य पांव, चंचल वृत्ति, कण्ठ व जंघा में चिह्न हो। माता का मुख दक्षिण की ओर, स्त्रियां ४ या ५, माता लाल एवं प्राचीन वस्त्र, कसैला सहित भोजन, पिता घर से बाहर, बालक अल्प शब्द से रोया हो। आयु के २, ४, १५, २३, २५, ३५, ४५, ५६वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

तुला—गौरवर्ण, कुछ लम्बा चेहरा, काले नेत्र, बड़ी नाक, थोड़े बाल, चंचल, तीक्ष्ण बुद्धि, दुबला कृश शरीर, माता का मुख पश्चिम की ओर, कषाय भोजन किया हो तथा पुराने वस्त्र धारण किए हों, बालक-बालिका दीर्घ शब्द में रोए। आयु के ३, ६, ८, १५, २७, ३१वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

वृश्चिक—ऊँचा मस्तक, सौम्य प्रकृति, पुष्ट शरीर, ताम्रवर्ण भूरे नेत्र, शीर्षोदय, तेज़ स्वभाव, केश लम्बे, स्त्रियाँ २ या ३, गृह का द्वार उत्तर की ओर, बालक की पीठ पर चिन्ह, माता ने लाल वस्त्र पहनें हों, बालक देर से रोया हो। आयु के २,६,११,२७,५८वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

धनु—रंग गोरा, ऊँचा मस्तक, बड़े नेत्र, माता का मुख पूर्व की ओर, पीले वस्त्र सहित चित्रित वस्त्र एवं पकवान भोजन किया हो, बालक की छाती पर चिन्ह, माता का मुख उत्तर-पूर्व की ओर होगा तथा जन्म समय १ या ५ स्त्रियां, बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। वर्ष के १, ३, १०, १८, २१, ३७, ४२वें वर्ष विशेष कष्टकारी होंगे।

मकर—जन्म समय कृश शरीर, पिंगल वर्ण, बहुत केश, ऊँचा मस्तक एवं ऊँची नाक, वात-विकार, माता का सिर दक्षिण की ओर, पुराना काला, नीला वस्त्र धारण किया हो, कसैला भोजन व शीतल जल पिया हो, स्त्रियां ३ या ४ हों, सूतिका गृह प्राचीन एवं गृह द्वार उत्तर की ओर, जन्म के बाद बालक ने थोड़ा रोया हो। आयु के ३, ५, १३, २७, ३३, ५७वें वर्ष में विशेष कष्ट रहें। जातक पर शनि का विशेष प्रभाव रहे।

कुम्भ—जन्म समय कुम्भ लग्न हो, तो बालक-बालिका का चौड़ा मस्तक, कुछ मोटे होंठ, वात-पित्त प्रकृति, श्वेत-श्याम वर्ण, धूम्रवर्ण वस्त्र, मध्यम केश, माता का मुख पश्चिम की ओर, ३ या ५ स्त्रियाँ, शाकादि का भोजन किया हो, माता को शरीर कष्ट, पिता घर में न हो तथा बालक-बालिका ने थोड़ा रूदन किया हो। आयु के २, ४, १३, २८, ३३, ४२, ४८, ५४वें वर्ष विशेष कष्ट हो। बालक पर शनि ग्रह का विशेष प्रभाव रहेगा।

मीन—बालक जन्म समय सुन्दर सौम्य एवं पीत (पिंगल) वर्ण, वात-श्लेष्म कफ प्रकृति, माता पीले वर्ण सहित मिश्रित वर्ण के वस्त्र धारण किए हुए मिष्ठान्न सहित अल्प भोजन किए, उस का मुख उत्तर की ओर, जन्म समय २ या ३ स्त्रियां हों, बालक जन्म से कुछ देरी के बाद रोया हो। आयु के १, ७, १०, १३, १६, २६, २९, ३८, ४१वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

एक ही नक्षत्र में जन्म का फल

यदि एक ही परिवार में, एक ही माता-पिता और उनकी सन्तानों में से किन्हीं दो का जन्म एक ही नक्षत्र में हुआ हो, तो वह अत्यन्त अनिष्टकारी होता है। यह अनिष्ट दोनों में से किसी एक को होता है। यदि भाई-भाई, भाई-बहन, पिता-पुत्र या माता-पुत्र या माता-पुत्री अथवा पिता-पुत्री का जन्म एक ही नक्षत्र में हो, तो वह मृत्यु-तुल्य कष्टदायक होता है। इसकी शान्ति अवश्य करनी चाहिए।

पिगोश्च जन्मनक्षत्रे जातस्तु पितृमातृहा।
जन्मर्क्षांशे च तल्लग्ने जातः सद्योमृतिप्रदः।(वसिष्ठ)

एक नक्षत्र जनन की शान्ति संक्षिप्त रूप से इस प्रकार से वर्णित की गई है-अग्नि (हवनकुण्ड) के ईशानकोण में कलश के ऊपर जिस नक्षत्र का जन्म हो, उस नक्षत्र के देवता के स्वरूप की नक्षत्र प्रतिमा बनवाकर स्थापित करें। उस नक्षत्र के मन्त्र से कलश के ऊपर उस नक्षत्र की पूजा करनी चाहिए। कलश को दो लाल रंग के वस्त्रों से लपेट देना चाहिए। फिर वैदिक पद्धति के अनुसार समिधा द्वारा होम आदि विधान करना चाहिए। प्रत्येक समिधा को घी में डुबोकर हवन करना चाहिए।

इस प्रकार प्रायश्चित होम करने के बाद जातक और उसके माता-पिता का अभिषेक भी आचार्य को करना चाहिए। कर्म समाप्ति के बाद यजमान (पूजा कराने वाला जातक) आचार्य पण्डित जी को भोजन, गोदान, वस्त्र दक्षिणा आदि से सम्मानित करें।

–त्रिखल जन्म फल एवं शान्ति–

तीन कन्याओं के पश्चात् लड़का उत्पन्न होना तथा तीन लड़कों के पश्चात् कन्या की उत्पत्ति त्रिखल दोषकारक मानी जाती है। इसके कारण लड़का पिता, नानके पक्ष को हानि तथा कन्या माता के लिए कष्ट्रप्रद होते हैं। त्रिखल शान्ति करवा लेने से गृह में सुख शान्ति रहती है। शान्ति हेतु सूतकादि के उपरान्त किसी शुभ मुहूर्त्त में पत्नी सहित शुद्ध आसन पर पूर्वाभिमुख होकर संकल्पपूर्वक श्रीगणपति-पूजन व नवग्रहादि पूजनोपरान्त कलश स्थापन करते हुए उसके ऊपर ताम्र पात्र रखकर उसमें श्री विष्णु भगवान् की स्वर्णमयी मूर्त्ति (उसके अभाव में ताम्र की) पूजा करके रखें। फिर विधिपूर्वक त्रिखलशान्ति कर्म किसी सुयोग्य ब्राह्मण द्वारा करवा लेनी चाहिए। यदि किसी कारणवश आप पूजा न कर पाए हों तो फिर बच्चे के जन्मदिन के आसपास किसी मुहूर्त्त में त्रिखल पूजा करवा लेनी कल्याणकारी होगी। दान में तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चाँदी, ताँबा) तथा साथ में गुड़, एक लाल परना व नारियल दक्षिणा सहित संकल्पपूर्वक बच्चे व उसकी माता का हाथ लगवाकर मन्दिर में या ब्राह्मण को दान करें।

पंचाँग-परिवर्तन करना

'**पंचांगदिवाकर**' में जहाँ तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल तथा ग्रहों की वक्री-मार्गी तथा राशि चार्ट भा. स्टै. टा. में दिए गए हैं, उन (समयों) में भारत के किसी अन्य स्थल के लिए कोई संस्कार करने की आवश्यकता नहीं है तथा विश्व के किसी अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्रादि का समाप्ति काल जानने हेतु भा. स्टै. टा. से उस देश का स्टै. अन्तर जमा या घटा कर प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु **पंचांगदिवाकर** में तिथ्यादि के समाप्ति काल घड़ी पलों में दिए हुए हैं, क्योंकि यह घड़ी पल जालन्धर के स्पष्ट सूर्योदय काल से हैं, इसलिए अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र राशि प्रवेश आदि हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। यह ध्यान रहे कि भारतीय ज्योतिष में वार (रविवार, सोमवार) का प्रारम्भ तथा तिथि, नक्षत्र आदि का घड़ी पलों में समाप्तिकाल सूर्योदय के समय से ही माना जाता है।

भारत के किसी भी अन्य नगर का पंचांग अर्थात् तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र-सूर्यादि संचार घटी पलों में प्राप्त करना हो तो आप इसी पंचांग में आगामी पृष्ठों से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश, रेखांशादि ज्ञात करके मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से सू. उ. ज्ञात कर लें। आपके अभीष्ट नगर के सू. उ. का जालन्धर के सूर्योदय से जितना अन्तर होगा, उसके घड़ी पल बनाकर $2\frac{1}{2}$ गुणा करके) ऋण (घटावे) या जमा (धन) करे। यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पूर्व अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर से पूर्व (पहले) होगा, वहाँ सूर्योदय अन्तर (कालान्तर) के घड़ी पल बनाकर पंचांगदिवाकर में तिथ्यादि के घड़ी-पलों में जमा करें तथा यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पश्चिम में स्थित होगा अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर के सू. उ. से बाद होगा, वहाँ कालान्तर के घड़ी पल बनाकर तिथ्यादि के घड़ी-पल में से घटावें।

उदाहरण—मान लीजिए 13 अप्रै., 2021 ई. को दिल्ली का पंचांग बनाना है, तो दिल्ली का अक्षांश, स्टै. अन्तर प्राप्त कर मध्यम सूर्योदय सारिणी से 6/02 सू.उ. प्राप्त ('तिथ्यादि पंचांग के घण्टे मिनटों वाले' पृष्ठों से दिल्ली का तैयार दैनिक सू. उ. देख सकते हैं) हुआ जोकि जालन्धर के सू. उ. (6/06) से 4 मिनट पूर्व (पहले) है। अतः घड़ी पलों में तिथि, नक्षत्रादि दिल्ली के प्राप्त करने के लिए हमें जालन्धर के तिथि, नक्षत्र आदि में 4 मिनट के घटी पल 10 पल जमा करने होंगे। (ढाई गुणा करके)। **ध्यान रहे**, सूर्योदय अन्तर नगरों में सदैव एक समान नहीं रहता। इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि भारतीय ज्योतिष अनुसार जन्मपत्री निर्माण के समय जन्मपत्री में उसी तिथि, नक्षत्रादि के घड़ी पल लिखे जाते हैं जो जातक के जन्म वार के दिन स्थानीय सू. उ. के समय वर्तमान हो। चाहे वह तिथि, नक्षत्र जातक के जन्म से पूर्व ही समाप्त क्यों न हो जाए। कई बार पंचांग परिवर्तन करते हुए तिथियों/नक्षत्रों के क्षय या वृद्धि में भी अन्तर पड़ सकता है।

13 अप्रैल, 2021 ई. को जालन्धर का पंचांग—13 अप्रैल, 2021 ई. को दिल्ली का पंचांग

	घटी पल		घटी पल
तिथि	– १०/२८ (समाप्ति काल)	**तिथि**	– १०/३८ (समाप्ति काल)
नक्षत्र	– २०/२३	**नक्षत्र**	– २०/४३
योग	– २२/५३	**योग**	– २३/०३

जालन्धर से अतिरिक्त नगर की जन्मपत्री निर्माण हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। इस प्रक्रिया द्वारा आप भारत के किसी भी नगर का सू. उ. ज्ञात करके जालन्धर के सू.उ. से अन्तर जानकर पंचांग परिवर्तन कर सकते हैं। जबकि जहाँ तिथ्यादि, ग्रहों के वक्री-मार्गी का समय भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। घण्टा मिनट वाले पृष्ठों पर सर्वत्र समय (तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र संचार आदि का) भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं।

लग्न सारिणी द्वारा लग्न स्पष्ट करने की विधि

आगामी पृष्ठों पर विभिन्न अक्षांशों पर आधारित, निर्मित लग्न सारिणियां दी गई हैं। जिस नगर का लग्न स्पष्ट करना हो, सर्वप्रथम अपने अभीष्ट काल का सूर्योदयात् इष्टकाल घट्यादि में बना ले। इसके लिए उस स्थान का सही सूर्योदय का ज्ञान होना आवश्यक है। अपने नगर की शुद्ध एवं सूक्ष्म **सूर्योदय काल** जानने के लिए पंचांगदिवाकर के आगामी पृष्ठों में दी गई। **अक्षांश सारिणियों** का प्रयोग करना चाहिए। स्थानीय इष्टकाल बना लेने के पश्चात् अपने अभीष्ट काल का सूर्य स्पष्ट ग्रहण करें। सूर्यस्पष्ट जिस राशि के जितने अंश पर हो, लग्न सारिणी में उसी राशि के सामने तथा सूर्य स्पष्ट के अंशों के कोष्ठक के नीचे जितने घड़ी पल हो, उनमें अपने इष्ट के घड़ी पल जोड़ (जमा) देने से लग्न स्पष्ट जानने के लिए घड़ी पल होंगे। यह घड़ी पल लग्नसारिणी में जिस राशि के सामने और जितने अंश के नीचे होगा, वही राश्यादि पर लग्नस्पष्ट होगा।

उदाहरण—मान लीजिए, विक्रमी संवत् २०७८ मध्ये कांगड़ा (हि. प्र.) में चैत्र शुक्ल द्वितीया, प्रविष्टे २ वैशाख, तदनुसार 14 अप्रै., 2021 ई. को दोपहर 2 बजकर 24 मिनट पर उत्पन्न बालक का लग्न स्पष्ट करना है। इसका सूर्योदयात् ईष्ट २० घड़ी ४८ पल बनेगा तथा ईष्टकालिक सूर्यस्पष्ट ०/००°/२९'/०५" होगा। कांगड़ा का अक्षांश ३२/०५ होने के कारण आगामी पृष्ठों पर दी गई ३२° अक्षांश की लग्न सारिणी प्रयोग में लाई जाएगी। लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट की राशि अर्थात् मेष राशि के सामने और ०° अंश के नीचे कोष्ठक में अनुपातिक विधि द्वारा हमें २/४३ घट्यादि प्राप्त हुए। इनको जन्म इष्ट के घटयादि २०/४८ में जमा कर देने से कुल जोड़ २३/३१ घट्यादि बनेगा। इस जोड़ को पुनः लग्न सारिणी में निकटवर्ती संख्या २३/२४ सिंह (४) राशि के सामने और ३ अंश के नीचे प्राप्त हुई। यह संख्या हमारे कुल जोड़ २३/३१ से केवल ७ पल कम है। अब अनुपातिक विधि द्वारा १ पल के कलादि निकाल लेने से हमें इष्टकालिक लग्न स्पष्ट पता चल जाएगा। **जैसे** यदि १२ पल के पीछे १ अंश अर्थात् ६० कला का अन्तर पड़ता है तो १ पल के पीछे ०५ कला का अन्तर पड़ेगा। इस प्रकार उपरोक्त इष्टकाल पर (२०/४८ घट्यादि) ४ गत राशि अर्थात् सिंह लग्न, ३ अंश, ३५ कला पर लग्न स्पष्ट होगा। (लग्न स्पष्ट ४/०३°/३५'/०३")। अधिक सूक्ष्मता के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित पुस्तक '**ज्योतिष तत्त्व**' का अध्ययन करें।

उत्तर पलभा १५।०।५० — लग्न सारणी लंदन (अक्षांश ५१।३०) — चरखण्ड १५१।१२०।५१

उपरोक्त लंदन सारिणी विदेशी नगरों जैसे–लंदन, बर्मिंघम, साऊथ हैम्पटन, आक्सफोर्ड, स्लोह तथा लंदन के आसपास नगरों के लग्न निकालने के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगी। ध्यान रहें, लग्न स्पष्ट करने के लिए लंदनादि नगरों का ही सूर्योदय एवं सूर्य स्पष्ट करना चाहिए।

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	घ.	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
मेष	प.	४६	५०	५५	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३५	४०	४६	५२	५८	३	९	१५	२१	२७	३२	३८	४४	५०	५७	२	८	१२	१८	२४
१	घ.	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८
वृष	प.	३०	३५	४१	४७	५३	५९	५	११	२०	३०	३९	४८	५७	६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०७	१५	२३	३२	४१	५०	५९	८	१७	२६
२	घ.	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४
मिथुन	प.	३५	४४	५३	०२	११	२०	३१	४२	५३	०२	१५	२८	४१	५४	०७	२०	३३	४६	५९	१२	२४	३७	५०	०३	१६	२९	४२	५५	०७	११
३	घ.	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१
कर्क	प.	२९	४२	५५	०८	२०	३३	४६	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५२	०७	२१	३५	५०	०४	१८	३२	४६	००	१३	२७	४१	५५	०९
४	घ.	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८
सिंह	प.	२३	३७	५२	०६	२०	३४	४८	०३	१७	३१	४५	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	१८	१८	३२	४६	००	१४	२८	४२	५६	१०
५	घ.	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५
कन्या	प.	२४	३८	५२	०७	२१	३५	५०	०२	१६	३०	४५	५९	१३	२७	४२	५६	१०	२३	३७	५१	५	१९	३३	४७	०१	१५	२९	४३	५७	११
६	घ.	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४२
तुला	प.	२५	३९	५३	०७	२२	३७	५१	०५	२०	३४	४८	०२	१६	३१	४५	००	१३	२७	४१	५५	९	२३	३७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	०५
७	घ.	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८
वृश्चिक	प.	३०	४४	५८	१२	२६	४१	५६	१०	२३	३५	४७	५८	१२	२६	३८	५०	०२	१६	२८	४२	५४	०६	१९	३१	४४	५६	०८	२०	३२	४४
८	घ.	४८	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३
धनु	प.	५९	११	२४	३७	४९	०२	१५	२७	३८	४७	५५	०४	१३	२२	३१	४०	४९	५८	०६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०८	१७	२६	३५	४४
९	घ.	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७
मकर	प.	५२	०१	१०	१९	२८	३७	४६	५५	००	०६	१२	१७	२३	२९	३४	४०	४६	५२	५८	०४	१०	१६	२२	२८	३४	३९	४५	५१	५७	०३
१०	घ.	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
कुम्भ	प.	०८	१३	१९	२५	३०	३५	४१	४७	५२	५७	०१	०५	०९	१४	१९	२३	२८	३३	३७	४१	४५	५०	५५	००	०४	०८	१३	१७	२२	२७
११	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
मीन	प.	३१	३५	३९	४४	४८	५२	५७	०२	७	११	१५	२०	२४	२८	३३	३७	४१	४५	४९	५३	५८	०३	०८	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२

अक्षांश १९° — पलभा ४।७।५५

मुम्बई, कल्याण, पूना, औरंगाबाद, अहमदनगर, बस्तर, खण्डाला, भुवनेश्वर, पुरी, दादरा आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
मेष	६	१४	२१	२९	३७	४५	५३	१	१०	१९	२८	३६	४५	५४	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१६	२५
१	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२
वृष	२५	३४	४३	५१	०	९	१८	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	५०	००	१०	२०	३०	४१	५२	२	१२	२३	३३	४३	५४	४	१४	२५
२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	२४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
मिथुन	२५	३५	४५	५६	६	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४८	५८	१०	२१	३२	४३	५५
३	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
कर्क	५५	६	१७	२८	३९	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	२७	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	६	१७	२७	३८	४९	५९	१०	२१	३१	४२	५३	३	१४	२४	३५	४६	५६	६	१७	२८	३९	५०
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५०	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४६	५७	८	१८	२९	४०	५०	१	१२	२२	३३	४३	५४	५	१५	२६	३७	४७	५८	०१
६	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	९	१९	३०	४०	५१	०२	१२	२३	३४	४५	४६	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७
७	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
वृश्चिक	३७	४९	००	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२९	४०	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२२	३२	४२	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१३
८	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
धनु	१३	२४	३५	४६	४७	९	२०	३१	४१	५२	२	१२	२३	३३	४२	५४	४	१४	२५	३५	४५	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	८	१८	२९
९	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
मकर	२९	३९	४९	००	१०	२०	३१	४१	५०	५९	८	१६	२५	३४	४३	५२	१	१०	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	२९	३८	४७	५६	५
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	५	१४	२३	३१	४०	४९	५८	७	१५	२३	३१	३९	४६	५४	२	१०	१८	२९	३४	४२	५०	५८	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३
मीन	९	१७	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६

अक्षांश २३°

पलभा ५।५।३८

कलकत्ता, अहमदाबाद, इटारसी, इन्दौर, उज्जैन, कटनी, कच्छ, जबलपुर, भोपाल, राँची, हौशंगाबाद आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	२ ५९	३ ६	३ १४	३ २१	३ २९	३ ३७	३ ४४	३ ५२	४ ०	४ ९	४ १८	४ २६	४ ३५	४ ४४	४ ५२	५ १	५ १०	५ १८	५ २७	५ ३५	५ ४४	५ ५३	६ १	६ १०	६ १९	६ २७	६ ३६	६ ४४	६ ५३	७ २	७ १०
१ वृष	७ १०	७ १९	७ २८	७ ३६	७ ४५	७ ५४	८ २	८ ११	८ २१	८ ३१	८ ४२	८ ५२	९ २	९ १२	९ २८	९ ३३	९ ४३	९ ५३	१० ४	१० १४	१० २४	१० ३५	१० ४५	१० ५५	११ ५	११ १६	११ २६	११ ३६	११ ४६	११ ५७	१२ ७
२ मिथुन	१२ ७	१२ १७	१२ २७	१२ ३७	१२ ४८	१२ ५८	१३ ९	१३ १९	१३ ३०	१३ ४१	१३ ५३	१४ ४	१४ १५	१४ २६	१४ ३८	१४ ४९	१५ ०	१५ ११	१५ २३	१५ ३४	१५ ४५	१५ ५६	१६ ८	१६ १९	१६ ३०	१६ ४२	१६ ५३	१७ ४	१७ १५	१७ २७	१७ ३८
३ कर्क	१७ ३८	१७ ४९	१८ ०	१८ १२	१८ २३	१८ ३४	१८ ४६	१८ ५७	१९ ८	१९ १९	१९ ३१	१९ ४२	१९ ५३	२० ५	२० १६	२० २७	२० ३९	२० ५०	२१ १	२१ १२	२१ २४	२१ ३५	२१ ४६	२१ ५८	२२ ९	२२ २०	२२ ३२	२२ ४३	२२ ५४	२३ ५	२३ १७
४ सिंह	२३ १७	२३ २८	२३ ३९	२३ ५१	२४ २	२४ १३	२४ २५	२४ ३६	२४ ४७	२४ ५८	२५ ९	२५ २०	२५ ३०	२५ ४१	२५ ५२	२६ ३	२६ १४	२६ २५	२६ ३६	२६ ४७	२६ ५८	२७ ९	२७ २०	२७ ३१	२७ ४२	२७ ५३	२८ ४	२८ १४	२८ २५	२८ ३६	२८ ४७
५ कन्या	२८ ४७	२८ ५८	२९ ९	२९ २०	२९ ३१	२९ ४२	२९ ५३	३० ४	३० १५	३० २६	३० ३७	३० ४८	३० ५८	३१ ९	३१ २०	३१ ३१	३१ ४२	३१ ५३	३२ ४	३२ १५	३२ २६	३२ ३७	३२ ४८	३२ ५९	३३ १०	३३ २१	३३ ३२	३३ ४२	३३ ५३	३४ ४	३४ १५
६ तुला	३४ १५	३४ २६	३४ ३७	३४ ४८	३४ ५९	३५ १०	३५ २०	३५ ३२	३५ ४३	३५ ५४	३६ ६	३६ १७	३६ २८	३६ ४०	३६ ५१	३७ २	३७ १४	३७ २५	३७ ३६	३७ ४७	३७ ५९	३८ १०	३८ २१	३८ ३३	३८ ४४	३८ ५५	३९ ७	३९ १८	३९ २९	३९ ४०	३९ ५२
७ वृश्चिक	३९ ५२	४० ३	४० १४	४० २६	४० ३७	४० ४८	४० ५९	४१ ११	४१ २२	४१ ३३	४१ ४५	४१ ५६	४२ ७	४२ १८	४२ ३०	४२ ४१	४२ ५२	४३ ३	४३ १५	४३ २६	४३ ३७	४३ ४९	४४ ००	४४ ११	४४ २२	४४ ३४	४४ ४५	४४ ५६	४५ ७	४५ १९	४५ ३०
८ धनु	४५ ३०	४५ ४१	४५ ५२	४६ ४	४६ १५	४६ २६	४६ ३८	४६ ४९	४६ ५९	४७ ९	४७ २०	४७ ३०	४७ ४०	४७ ५०	४८ १	४८ ११	४८ २१	४८ ३१	४८ ४२	४८ ५२	४९ २	४९ १३	४९ २३	४९ ३३	४९ ४३	४९ ५४	५० ४	५० १४	५० २४	५० ३५	५० ४५
९ मकर	५० ४५	५० ५५	५१ ५	५१ १६	५१ २६	५१ ३६	५१ ४६	५१ ५७	५२ ५	५२ १४	५२ २३	५२ ३१	५२ ४०	४२ ४९	५२ ५७	५३ ६	५३ १४	५३ २३	५३ ३२	५३ ४०	५३ ४९	५३ ५८	५४ ६	५४ १५	५४ २४	५४ ३२	५४ ४१	५४ ४९	५४ ५८	५५ ७	५५ १५
१० कुम्भ	५५ १५	५५ २४	५५ ३३	५५ ४१	५५ ५०	५५ ५९	५६ ७	५६ १६	५६ २३	५६ ३१	५६ ३९	५६ ४६	५६ ५४	५७ १	५७ ९	५७ १७	५७ २४	५७ ३२	५७ ३९	५७ ४७	५७ ५५	५८ २	५८ १०	५८ १७	५८ २५	५८ ३३	४८ ४१	५८ ४७	५८ ५५	५९ ३	५९ ११
११ मीन	५९ ११	५९ १८	५९ २६	५९ ३३	५९ ४१	५९ ४९	५९ ५६	० ४	० ११	० १९	० २७	० ३४	० ४२	० ४९	० ५७	१ ५	१ १२	१ २०	१ २७	१ ३५	१ ४३	१ ५०	१ ५८	२ ५	२ १३	२ २१	२ २८	२ ३६	२ ४३	२ ५१	२ ५९

अक्षांश २७°

पलभा ६।६।५०

जयपुर, आगरा, अयोध्या, लखनऊ, कानपुर, कन्नौज, गोंडा, गोरखपुर, मथुरा, अजमेर, अलवर, जोधपुर, अलीगढ़, हरदोई, कन्नौज, इटावा, उन्नाव, देवरिया, फैजाबाद, फर्रूखाबाद, भरतपुर, ग्वालियर आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	२ ५०	२ ५७	३ ४	३ १२	३ १९	३ २६	३ ३३	३ ४१	३ ४९	३ ५७	४ ६	४ १४	४ २२	४ ३१	४ ३९	४ ४७	४ ५६	५ ४	५ १२	५ २१	५ २९	५ ३७	५ ४६	५ ५४	६ २	६ ११	६ १९	६ २७	६ ३६	६ ४४	६ ५२
१ वृष	६ ५२	७ १	७ ९	७ १७	७ २६	७ ३४	७ ४२	७ ५१	८ १	८ ११	८ २१	८ ३१	८ ४१	८ ५१	९ १	९ ११	९ २२	९ ३२	९ ४२	९ ५२	१० २	१० १२	१० २२	१० ३२	१० ४२	१० ५२	११ ३	११ १३	११ २३	११ ३३	११ ४३
२ मिथुन	११ ४३	११ ५३	१२ ३	१२ १३	१२ २३	१२ ३३	१२ ४४	१२ ५४	१३ ५	१३ १६	१३ २८	१३ ३९	१३ ५१	१४ २	१४ १४	१४ २५	१४ ३६	१४ ४८	१४ ५९	१५ ११	१५ २२	१५ ३४	१५ ४५	१५ ५७	१६ ८	१६ १९	१६ ३१	१६ ४२	१६ ५४	१७ ५	१७ १७
३ कर्क	१७ १७	१७ २८	१७ ३९	१७ ५१	१८ २	१८ १४	१८ २५	१८ ३७	१८ ४८	१९ ००	१९ ११	१९ २३	१९ ३५	१९ ४६	१९ ५८	२० ९	२० २१	२० ३३	२० ४४	२० ५६	२१ ७	२१ १९	२१ ३१	२१ ४२	२१ ५४	२२ ५	२२ १७	२२ २९	२२ ४०	२२ ५२	२३ ३
४ सिंह	२३ ३	२३ १५	२३ २७	२३ ३८	२३ ५०	२४ १	२४ १३	२४ २५	२४ ३६	२४ ४७	२४ ५९	२५ १०	२५ २१	२५ ३२	२५ ४४	२५ ५५	२६ ६	२६ १८	२६ २९	२६ ४०	२६ ५२	२७ ३	२७ १४	२७ २५	२७ ३७	२७ ४८	२७ ५९	२८ ११	२८ २२	२८ ३३	२८ ४५
५ कन्या	२८ ४५	२८ ५६	२९ ७	२९ १८	२९ ३०	२९ ४१	२९ ५२	३० ०४	३० १५	३० २६	३० ३८	३० ४९	३१ ००	३१ ११	३१ २३	३१ ३४	३१ ४५	३१ ५७	३२ ८	३२ १९	३२ ३१	३२ ४२	३२ ५३	३३ ४	३३ १६	३३ २७	३३ ३८	३३ ५०	३४ १	३४ १२	३४ २४
६ तुला	३४ २४	३४ ३५	३४ ४६	३४ ५७	३५ ९	३५ २०	३५ ३१	३५ ४३	३५ ५४	३६ ६	३६ १७	३६ २९	३६ ४१	३६ ५२	३७ ०४	३७ १५	३७ २७	३७ ३९	३७ ५०	३८ २	३८ १३	३८ २५	३८ ३७	३८ ४८	३९ ००	३९ ११	३९ २३	३९ ३५	३९ ४६	३९ ५८	४० ०९
७ वृश्चिक	४० ९	४० २१	४० ३३	४० ४४	४० ५६	४१ ७	४१ १९	४१ ३१	४१ ४२	४१ ५३	४२ ५	४२ १६	४२ २८	४२ ३९	४२ ५१	४३ २	४३ १४	४३ २५	४३ ३६	४३ ४८	४३ ५९	४४ ११	४४ २२	४४ ३४	४४ ४५	४४ ५६	४५ ०८	४५ १९	४५ ३१	४५ ४२	४५ ५४
८ धनु	४५ ५४	४६ ५	४६ १६	४६ २८	४६ ३९	४६ ५१	४७ २	४७ १४	४७ २४	४७ ३४	४७ ४४	४७ ५४	४८ ४	४८ १४	४८ २४	४८ ३४	४८ ४५	४८ ५५	४९ ५	४९ १५	४९ २५	४९ ३६	४९ ४५	४९ ५५	५० ५	५० १५	५० २६	५० ३६	५० ४६	५० ५६	५१ ०६
९ मकर	५१ ६	५१ १६	५१ २६	५१ ३६	५१ ४६	५१ ५६	५२ ०७	५२ १७	५२ २५	५२ ३३	५२ ४२	५२ ५०	५२ ५८	५३ ७	५३ १५	५३ २३	४३ ३२	५३ ४०	५३ ४८	५३ ५७	५४ ५	५४ १३	५४ २२	५४ ३०	५४ ३८	५४ ४७	५४ ५५	५५ ३	५५ १२	५५ २०	५५ २८
१० कुम्भ	५५ २८	५५ ३७	५५ ४५	५५ ५३	५६ २	५६ १०	५६ १८	५६ २७	५६ ३४	५६ ४१	५६ ४८	५६ ५६	५७ ०३	५७ १०	५७ १७	५७ २४	५७ ३२	५७ ३९	५७ ४६	५७ ५३	५८ १	५८ ८	५८ १५	५८ २२	५८ ३०	५८ ३७	५८ ४४	५८ ५१	५८ ५९	५९ ६	५९ १३
११ मीन	५९ १३	५९ २०	५९ २७	५९ ३५	५९ ४२	५९ ४९	५९ ५६	० ४	० ११	० १८	० २५	० ३३	० ४०	० ४७	० ५४	१ १	१ ९	१ १६	१ २३	१ ३०	१ ३८	१ ४५	१ ५२	१ ५९	२ ७	२ १४	२ २१	२ २८	२ ३६	२ ४३	२ ५०

लग्न सारिणी (अक्षांश—२८°)

(अलीगढ़, बरेली, बुलन्दशहर, वृन्दावन, चुरू, नारनौल, झुंझुनूं, बीकानेर, रामगढ़, फरीदाबाद नगरों के लिए)

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४८	५६	०३	१०	१७	२४	३१	३९	४७	५५	०३	१२	२०	२८	३६	४४	५३	०१	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	०७	१६	२४	३३	४०
१ वृष	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	४९	५७	०५	१४	२२	३०	३८	४७	५५	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०८	१८	२८	३८	४८	५८	०८	१८	२८
२ मिथुन	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
	प.	३८	४८	५८	०८	१८	२८	३९	४९	०	१२	२३	३४	४६	५७	०९	२०	३२	४३	५५	०६	१८	२९	४१	५२	०३	१५	२६	३८	४९	०१
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	०८	१९	३९	४३	५४	०६	१८	२९	४१	५३	०४	१६	२८	३९	५१	०३	१४	२६	३८	४९
४ सिंह	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
	प.	०१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२३	३४	४५	५७	०८	१९	३१	४२	५४	०५	१६	२८	३९	५०	०२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	प.	४४	५५	०७	१८	२९	४१	५२	०४	१५	२६	३८	४९	०	१२	२३	३५	४६	५७	०९	२०	३१	४३	५४	०५	२०	२८	४०	५१	०२	१४
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
	प.	२५	३६	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३१	४३	५५	०६	१८	३०	४१	५३	०५	१६	२८	४०	५१	०३	१५	२६	३८	५०	०१
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
	प.	१३	२५	३६	४८	०	११	२३	३५	४६	५८	०९	२०	३२	४३	५५	०६	१८	२९	४१	५२	०४	१५	२७	३८	५०	०१	१२	२४	३५	४७
८ धनु	घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
	प.	५८	१०	२१	३३	४४	५६	०७	१८	२९	३९	४९	५९	०९	१९	२९	३९	४९	५९	०	११	२९	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
	प.	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	२९	३७	४५	५४	०२	१०	१८	२७	३५	४३	५२	०	०८	१६	२५	३३	४१	४९	५८	०६	१४	२२
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	३१	३९	४७	५६	०४	१२	२०	२९	३६	४३	५०	५८	०४	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५५	०२	०९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	०	०६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१३	२१	२८	३५	४२	४९	५६	०४	११	१८	२५	३२	३९	४७	५४	०१	०८	१५	२२	३०	३७	४४	५१	५८	०५	१३	२०	२७	३४	४१

लग्न सारणी अक्षांश २९° उत्तर पलभा (६।३१।०५)

दिल्ली, अमरोहा, रोहतक, जीन्द, मेरठ, हिसार, गुड़गांव, मुरादाबाद, नैनीताल, गाज़ियाबाद आदि के लिए उपयोगी

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
	प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	९	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
१ वृष	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
	प.	४८	५६	४	१३	२१	२९	३७	४६	५४	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
२ मिथुन	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
	प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३८	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
	प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
४ सिंह	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२५	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
	प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
८ धनु	घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
	प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
	प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४१	४८

लग्न सारणी अक्षांश (३०°) पलभा ६/५५/४३

अम्बाला, चण्डीगढ़, कालका, कुराली, खन्ना, देहरादून, नाभा, नाहन, पटियाला, भटिण्डा, रोपड़, फाज़िल्का, सहारनपुर, फरीदकोट इत्यादि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
१ वृष	घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
	प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	००	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
	प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	००	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी अक्षांश ३१।२० उत्तर पलभा (७।१७।२१)

जालन्धर, लुधियाना, चण्डीगढ़, रोपड़, फगवाड़ा, कपूरथला, होशियारपुर, फिरोज़पुर, शिमला, मण्डी, हमीरपुर, ऊना आदि के लिए

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४
१ वृष	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	३४	४२	५०	५८	६	१४	२३	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५३	५	१६	२७	३८	५०	३	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५८	०९	२१	३२	४४	५५
३ कर्क	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	५५	०७	१९	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३९	५१	०३	१५	२७	३८	५०
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४२	५३	०५	१७	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३८	५०	०२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५८	०९	२१	३३
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
	प.	३३	४४	५६	०८	१९	३१	४३	५४	६	१८	२९	४२	५४	०६	१७	२९	४१	५३	०५	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४१	५३	०५	१६	२८
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
	प.	२८	४०	५२	०४	१६	२८	४०	५१	०३	१५	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४४	५५	०७	१८
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१८	३०	४२	५३	०५	१६	२८	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	२१	३१	४१	५१	९	१८	२८	३८	४७	५५	०३	११	१९	२७	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४६	५३	००	७	१४	२०	२७	३४	४१	४७	५४	०१	८	१५	२१	२८	३५	४१	४८	५५	०२	९	१६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२७	३४	४१

लग्न सारिणी (अक्षांश—३२°)

(अमृतसर, कठुआ, कुल्लू, गुरदासपुर, जोगिन्द्रनगर (हि.प्र.), दीनानगर, धर्मशाला, सुन्दरनगर, कांगड़ा, सरकाघाट आदि नगरों के लिए)

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६
	प.	४०	४७	५३	०	०७	१४	२१	२७	३५	४३	५१	५९	०७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	०३	११	११	२७	३५	४३	५१	५९	०७	१५	२३
१ वृष	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११
	प.	३१	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६
	प.	१७	२७	३७	४७	५७	०६	१६	२६	३८	५०	०१	१३	२४	३६	४७	५९	११	२२	३४	४५	५७	०८	२०	३१	४३	५५	०६	१८	२९	४१
३ कर्क	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
	प.	५२	०४	१६	२७	३९	५०	०३	१३	२५	३७	४९	०१	१३	२५	३७	४९	०१	१३	२५	३७	४९	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
	प.	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५७	०९	२०	३२	४४	५६	०७	१९	३१	४३	५५	०६	१८	३०
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	प.	४१	५३	०५	१६	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३९	५०	०२	१४	२६	३७	४९	०१	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	३३	४५	५७	०८	२०	३२	४४	५५	०७	१९	३१	४३	५५	०७	१९	३१	४३	५५	०७	१९	३१	४२	५४	०६	१८	३०	४२	५४	०६	१८
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
	प.	३०	४२	५४	०६	१८	३०	४१	५३	०५	१७	२८	४०	५१	०३	१४	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	०८
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१९	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४१	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	३०	४०	५०	०	१०	१९	२९	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३५	४३	५१	०	०७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३५
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	४३	५१	५९	०७	१५	२३	३१	३९	४६	५३	००	०७	१३	२०	२७	३४	४१	४७	५४	०१	०८	१५	२१	२८	३५	४२	४९	५५	०२	०९
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	२९	३७	४३	५०	५७	०३	१०	१७	२४	३१	३७	४४	५१	५८	०५	११	१८	२५	३२	३९	४५	५२	०	६	१२	१९	२६	३३

लग्न सारणी (अक्षांश ३३°) — पलभा ७।४८।३०

अखनूर, जम्मू, श्रीनगर, ऊधमपुर, रावलपिंडी, कठुआ, अनन्तनाग, किश्तवाड़, डोडा, रामबन, डल्हौज़ी आदि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
	प.	३७	४४	५१	५८	४	११	१८	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५४	२	१०	१८	२६
१ वृष	घ.	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
	प.	२६	३४	४२	५०	५८	६	१३	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	प.	१०	२०	३०	४०	५०	५९	९	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६
३ कर्क	घ.	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
	प.	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४३	५५	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४
४ सिंह	घ.	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	१९	३०	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१८	३०	४१	५३	५	१७	२९	४१
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४
	प.	४१	५२	४	१६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६	३८	५०	२	१४	२५	३७	४९	१	१३	२५	३६	४८	०	१२	२४	३६
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
	प.	३६	४७	५९	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६
	प.	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१
	प.	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	३६	४६	५६	६	१६	२५	३५	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	००	८	१५	२३	३१	३९	४७
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	४७	५५	३	११	१९	२७	३४	४२	४९	५६	२	९	१६	२३	२९	३६	४३	४९	५६	३	९	१६	२३	३०	३६	४३	५०	५६	३	१०	१६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	३०	३७	४३	५०	५७	३	१०	१७	२३	३०	३७	४४	५०	५७	४	१०	१७	२४	३०	३७	४४	५१	५७	४	११	१७	२४	३१	३७

दशमलग्न सारणी

(सर्वत्र उपयोगी) **लंकोदय २७८ । २९९ । ३२३**

अंश	००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०
मेष	३३	४२	५२	१	१०	१९	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८
१	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६
वृष	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३
२	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१
मिथुन	४५	५५	०६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६
३	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६
कर्क	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३
४	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१
सिंह	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६
५	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
कन्या	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	००	१०	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४
६	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०
तुला	३३	४२	५२	१	१०	१९	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८
७	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५६
वृश्चिक	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३१	४२	५२	३
८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१
धनु	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६
९	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
मकर	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३
१०	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
कुम्भ	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६
११	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६
मीन	५५	४	१३	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४

अंश	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
मेष	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७
१	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
वृष	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५
२	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
मिथुन	३७	४८	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३५	४३	५७	८
३	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९
कर्क	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२
४	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३
सिंह	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	९	१८	२७	३७	४६	५५
५	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८
कन्या	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	३३
६	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३
तुला	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७
७	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८
वृश्चिक	१४	२५	३४	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५
८	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४
धनु	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८
९	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९
मकर	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२
१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
कुम्भ	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	५५
११	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८
मीन	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	३३

ग्रहों के छः प्रकार के बल

स्थान बल, दिग्बल, काल बल, नैसर्गिंक बल, चेष्टा बल और दृक् बल, यह छः प्रकार के बल हैं। फलित ज्ञान के लिए इन बलों को जान लेना आवश्यक है। **स्थान बल**—जो ग्रह उच्च, मित्रगृही, मूल त्रिकोणस्थ, स्वनवांशस्थ अथवा द्रेष्काणस्थ होता है, वह स्थान बली कहलाता है। **दिग्बल**—बुध और गुरु लग्न में रहने से, शुक्र और चन्द्रमा चतुर्थ में रहने से, शनि सप्तम में रहने से, सूर्य और मंगल दशम स्थान में रहने से दिग्बली होते हैं। **कालबल**—रात में जन्म होने पर चन्द्र, शनि और मंगल तथा दिन में जन्म होने पर सूर्य, बुध और शुक्र कालबली होते हैं। मतान्तर से बध को सर्वदा काल बली माना जाता है। **नैसर्गिक बल**—शनि, मंगल, बुध, शुक्र, चन्द्र और सूर्य उत्तरोत्तर बली होते हैं। **चेष्टाबल**—मकर से मिथुन पर्यन्त किसी राशि में रहने से सूर्य और चन्द्रमा तथा मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि चन्द्रमा के साथ रहने से चेष्टाबली होते हैं। **दृक् बल**—शुभ ग्रहों से दृष्ट ग्रह दृक् बली होते हैं। बलवान् ग्रह अपने स्वभाव के अनुसार जिस भाव में रहता है, उस भाव का फल देता है। पाठकों को राशि स्वभाव और ग्रहस्वभाव दोनों का समन्वय कर फल अवगत करना चाहिये।

दशम स्पष्ट तथा भावस्पष्ट

इष्ट कालिक द्वादश भावों की वास्तविक स्थिति जानने के लिए भाव-स्पष्ट किया जाता है। भाव स्पष्ट के लिए दशम् लग्न सारिणी का प्रयोग किया जाता है॥ **विधि इस प्रकार है।**—**लग्न स्पष्ट** करने के लिए लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट के राश्यंशों से प्राप्त घटी-पलों को इष्टकाल के घटी पलों में जमा करने पर जो **योगफल** मिले उसको **दशम लग्न सारिणी** के निकटस्थ कोष्ठकों में देखने पर जो राशि अंशादि प्राप्त होंगे वही **दशम लग्न स्पष्ट** होगा।

भाव स्पष्ट का उदाहरण—मान लो किसी जातक का जन्मोष्टकाल २०।४५ घट्यादि है तथा **जालंधर लग्न सा० से** सूर्य स्पष्ट (०।१२।७) द्वारा प्राप्तांक ४।९ है, और लग्न स्पष्ट ४।१०।३५ है। इष्ट और सू. स्प. से प्राप्तांकों को जमा करने से हमें २४।५४ घट्यादि प्राप्त हुए। इन प्राप्त योगाकों को **दशम् लग्न सारिणी** में देखने पर हमें **दशम् भाव स्पष्ट** १।८।३६ प्राप्त हुआ। **दशभाव स्प.** में ६ राशि जोड़ने से **चतुर्थ भाव** तथा ४ थे भाव में से लग्न भाव स्पष्ट घटा कर शेष को ६ द्वारा भाग देने पर जो अंश-कलादि प्राप्त हों, वह **षष्ठांश** कहलाता है। **षष्ठांश** को लग्न भाव में जोड़ने से लग्न की सन्धि तथा इस सन्धि में षष्ठांश को पुनः जोड़ने से द्वितीय भाव स्प. होगा। **द्वितीय भाव में षष्ठांश** जोड़ने से दूसरे भाव की सन्धि, इस सन्धि में षष्ठांश जमा करने से **तृतीय भाव** होगा। तृतीय भाव में षष्ठांश जमा करते से **३रे भाव की सन्धि**, और इस सन्धि में **षष्ठांश** जोड़ने से **चतुर्थ भाव** प्राप्त हो जाता है। अब उसी षष्ठांश को एक राशि में से घटाकर शेष को ४थें भाव में जोड़ने से चतुर्थ भाव की सन्धि, फिर इस सन्धि में उसी शेष को जोड़ने से **पंचम भाव** होगा। लग्न भाव स्पष्ट में ६ राशि जोड़ने से सप्तम भाव तथा प्रथम लग्नभाव की सन्धि में ६ राशि युक्त करने से सप्तम भाव की सन्धि होगी। इसी प्रकार २रें, ३रें भावों में प्रत्येक में क्रम से ६-६ राशि जोड़ने से **अष्टम, नवम, दशम, एकादश** आदि भाव एवं सन्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं।

—पं० विवेक शर्मा ज्यो.

षट्वर्ग सारणी चक्रम्

राशि	भाग	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि रा. षट्		२ ३० ०	३ २० ०	४ १७ ८॥	५ ० ०	६ ४० ०	७ ३० ०	८ ३४ १७	१० ० ०	१२ ० ०	१२ ३० ०	१२ ५१ २६	१३ २० ०	१५ ० ०	१६ ४० ०	१७ ८ ३४	१७ ३० ०	१८ ० ०	२० ० ०	२१ २५ ४२	२२ ३० ०	२३ २० ०	२५ ० ०	२५ ४२ ५१	२६ ४० ०	२७ ३० ०	३० ० ०
० मे.	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	सं	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१ वृ.	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	सं	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२ मि.	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	सं	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३ क.	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	सं	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४ सिं.	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	सं	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५ कं.	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	सं	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

राशि	भाग	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
		२ ३० ०	३ २० ०	४ १७ ८॥	५ ० ०	६ ४० ०	७ ३० ०	८ ३४ १७	१० ० ०	१२ ० ०	१२ ३० ०	१२ ५१ २६	१३ २० ०	१५ ० ०	१६ ४० ०	१७ ८ ३४	१७ ३० ०	१८ ० ०	२० ० ०	२१ २५ ४२	२२ ३० ०	२३ २० ०	२५ ० ०	२५ ४२ ५१	२६ ४० ०	२७ ३० ०	३० ० ०
६ तु.	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	सं	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
७ वृ.	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	सं	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
८ ध.	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	सं	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
९ म.	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	सं	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
१० कुं	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	सं	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
११ मी.	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
	सं	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैं. अन्तर

नोट–जिस शहर के आगे (–) का चिन्ह लगाया गया है, वह नगर 82½ रेखांश से उतने मिनट पश्चिम में है और जिस स्थान पर (+) का चिन्ह लगा है, वह स्थान उतने मिनट पूर्व में है। सूर्योदयास्त जानने के लिए जिन नगरों का स्टै. अन्तर (–) है, उन्हें मध्यम सूर्योदयास्त जाने के लिए जिन नगरों का स्टैं. अन्तर (–) है, उन्हें मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी में (–) की बजाए (+) करना होगा तथा '+' चिन्ह वाले नगरों को मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से प्राप्त सू. उ. – सू. अ. में (–) ऋण करें। स्पष्टीकरण = (पं.) = पंजाब ; (आं. प्र.) = आधांप्रदेश ; (अरु) = अरुणांचल प्रदेश ; (आसा) = आसाम ; (उत्तरा.) = उत्तराखण्ड ; (उ.प्र.) = उत्तप्रदेश ; (छ. ग.) = छत्तीसगढ़ ; (गुज.) = गुजरात ; (राज.) = राजस्थान ; (हरि.) = हरियाणा ; (बिहा.) = विहार ; (हि. प्र.) = हिमाचल प्रदेश ; (महा.) = महाराष्ट्र ; (म. प्र.) = मध्यप्रदेश ; (ज. का.) = जम्मू–काश्मीर।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
अण्डेमान एवं निकोबार			
पोर्टब्लेअर	11 40	92 45	+41 00
अरुणांचल प्रदेश			
ईटानगर	27 08	93 37	+44 28
तवांग	27 33	91 48	+37 12
आंधा प्रदेश			
अनन्तपुर	14 41	77 36	–19 36
Cuddapah	14 28	78 49	–14 44
Guntur	16 18	80 27	–08 12
Kurnool	15 50	78 03	–17 48
Vizianagaram	18 07	83 25	+03 40
विजयवाड़ा	16 31	80 39	–07 24
विशाखापट्टनम्	17 42	83 18	+03 12
गोलकुण्डा (आं. प्र.)	17 24	78 23	–16 28
तिरुपति (आंध्र.)	13 40	79 24	–12 24
आसाम			
उ.लखीमपुर	27 14	94 07	+46 28
गुवाहाटी	26 11	91 44	+36 56
जोरहाट	26 45	94 13	+46 52
तेजपुर	26 38	92 49	+41 16
डिब्रूगढ़	27 29	94 54	+49 36
डिगबोई	27 23	95 38	+52 32
लखीमपुर	27 14	94 15	+47 00

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
उड़ीसा			
कटक	20 30	85 50	+13 20
पुरी	19 48	85 52	+13 28
बालासोर	21 30	86 56	+17 44
बहरामपुर	19 21	84 51	+09 24
भुवनेश्वर	20 14	85 50	+13 20
उत्तरप्रदेश			
अलीगढ़	27 53	78 05	–17 40
अमरोहा	28 55	78 28	–16 08
अमेठी	26 08	81 50	–02 40
अयोध्या	26 48	82 14	–01 04
अकबरपुर	26 25	82 33	+00 12
अगोरी	24 34	82 56	+01 44
अच्छनेरा	27 11	77 46	–18 56
अम्बाह	26 44	78 15	–17 00
अतरौली	28 00	78 16	–16 48
अलीगंज	27 30	79 11	–13 16
आजमगढ़	26 04	83 11	+ 02 44
आगरा	27 11	78 01	–17 56
इलाहाबाद	25 28	81 54	–02 24
इटावा	26 46	79 02	–13 52
इटवा	27 20	82 42	+00 48
उन्नाव	26 33	80 31	–07 56
उरई	25 58	79 27	–12 12
उस्का	27 08	83 12	+02 48
एटा	27 38	78 40	–15 20

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
ऐत	25 56	79 12	–13 12
औरैया	26 26	79 32	–11 52
औरंगाबाद	24 44	84 22	+07 28
कदौरा	26 00	79 50	–10 40
कन्नौज	27 03	79 58	–10 08
कानपुर	26 28	80 21	–08 36
कादीपुर	26 11	82 24	–00 24
कान्धला	29 20	77 15	–21 00
काल्पी	26 06	79 44	–11 04
कासगंज	27 50	78 40	–15 20
कैसरगंज	27 20	81 34	–03 44
कैमगंज	27 35	79 20	–12 40
कोरा	26 06	80 27	–08 12
कोरियालाघाट	28 20	81 04	–05 44
कोसी	27 50	77 26	–20 16
खतौली	29 18	77 43	–19 08
खागा	25 48	81 07	–05 32
खिलचीपुर	24 00	76 34	–23 44
खुर्जा	28 15	77 50	–18 40
खेड़ी	27 55	80 49	–06 44
खैर	27 57	77 50	–18 40
खैरागढ़	26 58	77 53	–18 28
खैराबाद	27 31	80 45	–07 00
गंगोह (सहार.)	29 45	77 16	–20 56
गढ़मुक्तेश्वर	28 49	77 05	–17 40
गरौठा	25 35	79 19	–12 44
गाज़ियाबाद	28 40	77 26	–20 16
गाजीपुर	25 34	83 35	+04 20

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
गुन्नौर	28 15	78 27	–16 12
गोण्डा	27 08	82 01	–01 56
गोरखपुर	26 45	83 24	+03 36
गोलागोकर्णनाथ	28 06	80 30	–08 00
गोवर्धन	27 32	77 28	–20 08
चकला	25 02	83 12	+ 02 48
चन्दौसी	28 28	78 48	–14 48
चरखाड़ी	25 25	79 46	–10 56
चित्रकूटधाम	25 12	80 52	–06 32
चिरगांव	25 36	78 50	–14 40
छतरपुर	24 56	79 38	–11 28
छपरा	24 39	76 48	–22 48
जगदीशपुर	25 30	84 26	+07 44
जलालाबाद	27 44	79 40	–11 20
जलेसर	27 29	78 20	–16 36
जसरा	25 17	81 48	–02 48
जसराना	27 15	78 42	–15 12
जसवन्तनगर	26 52	78 56	–14 16
जहानाबाद	25 12	84 58	+09 52
जानसठ (मु.)	29 20	77 52	–18 32
जालौन	26 10	79 20	–12 40
जिगनी	25 46	79 26	–12 16
जौनपुर	25 45	82 40	+00 40
झाँसी	25 27	78 37	–15 32
टाण्डा	28 56	78 59	–14 04
ठाकुरद्वारा	29 10	78 50	–14 40
डेरापुर	26 28	79 48	–10 48
ताजपुर	29 08	78 30	–16 00

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
दानापुर	25 40	85 02	+10 08
दालमऊ	26 02	81 02	−05 52
दूधी	24 13	83 15	+03 00
देवगांव	25 24	83 01	+02 04
देवबन्द	29 42	77 41	−19 16
देवरिया	26 32	83 45	+05 00
देहरी	24 52	84 11	+06 44
धामपुर	29 19	78 31	−15 56
नगीना	29 27	78 27	−16 12
नजीबाबाद	29 38	78 20	−16 40
नरैनी	25 11	80 29	−08 04
नवाबगंज	28 33	79 38	−11 28
नवाबगंज	26 52	82 08	−01 28
नानपाड़ा	27 52	81 30	−04 00
नोएडा	28 35	77 20	−20 40
पट्टी	25 55	82 12	−01 12
पयागपुर	27 25	81 48	02 48
पवायां	28 04	80 06	−09 36
पिलखुआं	28 43	77 39	−19 24
पिहानी	27 38	80 12	−09 12
पीलीभीत	28 38	79 48	−10 48
पुरवा	26 28	80 50	−06 40
प्रतापगढ़	25 50	81 59	− 2 04
फतेहपुर	25 56	80 48	−06 48
फतेहपुरसीकरी	27 06	77 40	−19 20
फतेहाबाद	27 01	78 19	−16 44
फरीदनगर	28 46	77 37	−19 32
फरीदपुर	28 13	79 33	−11 48
फर्रूखाबाद	27 24	79 34	−11 44
फिरोज़ाबाद	27 09	78 25	−16 20
फैज़ाबाद	26 47	82 08	−01 28
बक्सर	25 35	83 59	+05 56
बदायूं	28 02	79 07	−13 32

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बनारस(वाराणसी)	25 20	83 00	+02 00
बहराइच	27 35	81 36	−03 36
बड़ौत	29 06	77 16	−20 56
बलिया	25 45	84 10	+06 40
बरेली	28 21	79 25	−12 20
बलरामपुर	27 26	82 11	−01 16
बस्ती	26 48	82 43	+00 52
बागपत	28 57	77 13	−21 08
बाड़ी	26 39	77 36	−19 36
बान्दा	25 29	80 20	−08 40
बाराबंकी	26 55	81 12	−05 12
बांसी	27 11	82 56	+01 44
बिजनौर	29 22	78 08	−17 28
बिलसी	28 08	78 55	−14 20
बिलारी	28 38	78 48	−14 48
बिलासपुर	28 53	79 16	−12 56
बीसलपुर	28 18	79 48	−10 48
बुलन्दशहर	28 24	77 51	−18 36
बुढ़ाना	29 17	77 28	−20 08
भदोही	25 25	82 34	+00 16
भोनगांव	27 15	79 11	−13 16
भोवाली	29 23	79 31	−11 56
मन्दावर	29 30	78 08	−17 28
मऊ	25 17	81 23	−04 28
मऊ-ऐम्मा	25 42	81 55	−02 20
मऊनाथभंजन	25 57	83 33	+04 12
मऊरानीपुर	25 15	79 08	−13 28
मथुरा	27 30	77 41	−19 16
मवाना	29 06	77 55	−18 20
मलीहाबाद	26 55	80 43	−07 08
महमूदाबाद	27 18	81 07	−05 32
महरौली	24 35	78 43	−15 08
महाराजगंज	27 09	83 34	+04 16

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
महरोनी	24 35	78 43	−15 08
महोवा	25 17	79 52	−10 32
मिर्ज़ापुर	25 09	82 35	+00 20
मुज़फ्फरनगर	29 28	77 41	−19 16
मुगलसराय	25 18	83 07	+02 28
मुबारकपुर	26 05	83 18	+03 12
मुरादाबाद	28 51	78 49	−14 44
मुरादनगर(गा.)	28 47	77 30	−20 00
मेरठ	28 59	77 42	−19 12
मैनपुरी	27 14	79 01	−13 56
राजाखेड़ा	26 55	78 11	−17 16
राबर्ट्सगंज	24 42	83 04	+02 16
रामनगर	25 17	83 02	+02 08
रायबरेली	26 13	81 14	−05 04
रूदौली	26 45	81 45	−03 00
लखनऊ	26 51	80 55	−06 20
लखीमपुर	27 57	80 46	−06 56
ललितपुर	24 41	78 25	−16 20
शामली	29 27	77 19	−20 44
शाहजहाँपुर	27 53	79 55	−10 20
शिकोहाबाद	27 06	78 36	−15 36
सम्भल	28 35	78 33	−15 48
सरधना	29 09	77 37	−19 32
सहसवां	28 05	78 45	−15 00
सहारनपुर	29 58	77 33	−19 48
सिधौली	27 17	80 50	−06 40
सिरसागंज	27 03	78 42	−15 12
सीतापुर	27 34	80 41	−07 16
सुल्तानपुर	26 16	82 04	−01 44
सैदपुर	25 33	83 11	+02 44
हमीरपुर	25 57	80 09	−09 24
हरदोई	27 25	80 07	−09 32
हाजीपुर	25 41	85 13	+10 52

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
हाथरस	27 36	78 03	−−17 48
हापुड़	28 43	77 47	−18 52
उत्तराखण्ड			
अल्मोड़ा	29 37	79 40	−11 20
आमपाटा	30 17	78 37	−15 32
आदिबद्री	30 10	79 12	−13 12
उत्तरकाशी	30 44	78 27	−16 12
उखीमठ	30 31	79 07	−13 32
ऋषिकेश	30 07	78 18	−15 12
कर्णप्रयाग	30 15	79 16	−12 56
कपकोट	29 58	79 54	−10 54
काठगोदाम	29 16	79 32	−11 52
काशीपुर	29 13	78 57	−14 12
काण्डी	29 56	78 25	−16 20
केदारनाथ	30 44	79 04	−13 44
केनूर	30 03	79 01	−13 56
कोटद्वार	29 45	78 32	−15 52
खानपुर	29 36	78 07	−17 32
खाती	30 08	79 54	−10 54
गरजिया	29 29	79 06	−13 36
गंगनाणी	30 55	78 42	−15 12
गंगोत्तरी	30 39	79 02	−13 52
गंगापुर	26 30	76 44	−23 04
घरमघर	29 52	80 01	−09 56
घनस्याली	30 27	78 13	−17 08
चकराता (देह.)	30 42	77 51	−18 36
चम्बा	30 18	78 25	−16 20
चमौली	30 24	79 21	−12 36
चन्दौसी	28 27	78 46	−14 56
चम्पावत	29 20	80 06	−09 36
चुरानी	29 47	78 55	−14 20
जमनोत्री	31 01	78 27	−16 12

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

उत्तराखण्ड के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
जोशीमठ	30 34	79 34	−11 44
टनकपुर	29 02	80 08	−09 28
टिहरी	30 32	78 31	−15 56
डाण्डा	29 10	79 55	−10 20
डीडीहाट	29 48	80 12	−09 12
तेजम	29 56	80 10	−09 20
देहरादून	30 19	78 02	−17 52
देवप्रयाग	30 09	78 37	−15 32
धनोलटी	30 25	78 19	−16 44
नरेन्द्रनगर	30 10	78 18	−16 48
नन्द्रप्रयाग	30 19	79 24	−12 24
नैनीताल	29 23	79 27	−12 12
पिथौरागढ़	29 35	80 13	−09 08
पीपलकोटी	30 26	79 27	−12 12
पौड़ीगढ़वाल	30 09	78 47	−14 52
बद्रीनाथ	30 44	79 29	−12 04
बाजपुर	29 09	79 07	−13 32
भगवानपुर	29 59	77 56	−18 16
भटवाड़ी	30 49	78 36	−15 36
मनेरी	30 41	78 30	−16 00
मंसूरी	30 27	78 05	−17 40
रालम	30 16	80 12	−09 12
रानीखेत	29 39	79 25	−12 20
राजगढ़ी	30 52	78 49	−14 44
रामनगर	29 24	79 07	−13 32
राजपुर	30 25	78 06	−17 36
रामपुर	28 49	79 02	−13 52
रायपुर	30 19	78 06	−17 36
रूद्रपुर	30 26	77 59	−18 04
रूद्रप्रयाग	30 16	78 59	−14 04
रूड़की	29 52	77 53	−18 28
लक्सर	29 49	78 02	−17 52
लम्बगाँव	30 29	78 31	−15 56
लालकुआं	29 06	79 32	−11 52
लिसकोट	29 46	79 01	−13 56
लैंसडाऊन	29 50	78 41	−15 16
विकासनगर	30 29	77 50	−18 40
श्रीनगर (गढ़वा)	30 13	78 47	−14 52
सहसपुर (देह.)	30 24	77 58	−18 08
हरिद्वार	29 58	78 10	−17 20
हरकीदून	30 58	78 24	−16 24
हल्द्वानी	29 13	79 31	−11 56

कर्नाटक

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बैंगलुरु	12 59	77 35	−19 40
गुलबर्ग	17 20	76 50	−22 40
मैसूर	12 18	76 39	−23 24
हुबली	15 20	75 14	−29 04

केरला

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
कोचीन	09 58	76 14	−25 04
त्रिवन्तपुरम्	12 40	76 55	−22 20
कन्नूर	11 52	75 25	−28 20
त्रिवेन्द्रम	08 29	76 57	−22 12

गुजरात

गुजरात के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
अंकलेश्वर	21 36	73 00	−38 00
अंजार	23 08	70 01	−49 56
अमरापुर	21 45	70 02	−49 52
अमरेली	21 37	71 14	−45 04
अमोद	21 59	72 54	−38 24
अहमदाबाद	23 02	72 40	−39 20
आनन्द	22 34	72 56	−38 16
आनन्दपुर	22 10	71 08	−45 28
उपलेटा	21 44	70 17	−48 52
ओलपाड़	21 20	72 49	−38 44
कच्छ (भुज)	22 50	70 25	−48 20
कटाना	22 18	72 49	−38 44
कलोल(महेसाणा)	23 15	72 29	−40 04
कांडला	23 03	70 11	−49 16
कुटियाना	21 39	71 04	−45 44
कोरल	21 53	73 10	−37 20
खम्भात	22 20	72 38	−39 28
खम्भालिया	22 12	69 39	−51 24
खावड़ा	23 51	69 43	−51 08
गांधीधाम	23 06	70 08	−49 28
गोधरा	22 45	73 38	−35 28
जखाऊ	23 13	68 43	−55 08
जसदान	22 02	71 12	−45 12
जाफराबाद	20 52	71 22	−44 32
जामनगर	22 28	70 04	−49 44
जारोद	22 26	73 20	−36 40
जूनागढ़	21 31	70 28	−48 08
तालाला(जूना.)	21 02	70 32	−47 48
तालाजा	21 21	72 03	−41 48
दभोई	22 11	73 26	−36 16
दासदा	23 19	71 50	−42 40
देहज	21 42	72 35	−39 40
देवदार	24 07	71 50	−42 40
दोहाद	22 47	74 18	−32 48
द्वारिका	22 14	68 58	−54 08
धर्मपुर	20 32	73 11	−37 16
धारी	21 20	71 01	−45 56
धुले	20 54	74 47	−30 52
धोराजी	21 44	70 27	−48 12
नडियाद	22 41	72 55	−38 20
नवसारी	20 51	72 55	−38 20
नालिया	23 18	68 50	−54 40
पड़ाना	22 21	69 52	−50 16
पाटन	23 50	72 07	−41 16
पाटरी	23 08	71 10	−45 20
पालनपुर	24 10	72 26	−40 16
पोरबन्दर	21 38	69 36	−51 36
बगासरा	20 58	70 56	−46 16
बजाना	23 04	71 45	−43 00
बरूच	21 38	72 56	−38 16
बुलसार	20 38	72 56	−38 16
बोताड़	22 10	71 40	−43 20
भंगोर	22 02	69 55	−50 20
भरूच	21 40	72 58	−38 08
भावनगर	21 46	72 09	−41 24
भुज	23 16	69 40	−51 20
महेसाणा	23 37	72 28	−40 08
महुआ	21 05	71 48	−42 48
माधवपुर	21 18	70 01	−49 56
रतनपुर	21 44	73 16	−36 56
राजकोट	22 18	70 47	−46 52
लखपत	23 49	68 47	−54 52
लूनावाड़ा	23 08	73 37	−35 32
वड़ोदरा	22 18	73 12	−37 12
वलसाड़	20 40	72 55	−38 20
वादनगर	23 47	72 38	−39 28
वीजापुर	23 34	72 45	−39 00
सुरेन्द्रनगर	22 42	71 41	−43 16
सूरत	21 10	72 50	−38 40
सिहोर	21 42	71 58	−42 08
सोनगढ़	20 59	70 29	−48 04
सोमनाथ	21 00	70 30	−48 00
हडोल	23 55	73 13	−37 08
हिम्मतनगर	23 36	72 57	−38 12

गोवा

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
पंजिम	15 29	73 50	−34 40
मडगांव	15 18	73 57	−34 12

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

जम्मू-कश्मीर के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
जम्मू-कश्मीर			
अनन्तनाग	33 43	75 12	–29 12
अखनूर	32 54	74 45	–31 00
अवन्तीपूरा	33 56	75 03	–29 48
अमरनाथगुफा	34 13	75 33	–27 48
उड़ी	34 04	74 02	–33 52
ऊधमपुर	32 55	75 08	–29 28
कठुआ	32 22	75 31	–27 56
कटरा	33 01	74 58	–30 08
कारगिल	34 30	76 13	–25 08
किश्तवाड़	33 19	75 48	–26 48
कुलगाम	33 42	75 02	–29 52
केरन	34 40	73 59	–34 04
कोटली	33 30	73 53	–34 12
खयालू	35 10	76 20	–24 40
गिलगित	35 55	74 22	–32 32
गुलमर्ग	34 05	74 25	–32 20
गुरयास	34 38	74 56	–30 16
चिनेनी	33 01	75 20	–28 40
चिलास	35 27	74 06	–33 36
चुशूल	33 35	78 39	–15 24
छम्ब	32 51	74 23	–32 28
जम्मू	**32 43**	**74 54**	**–30 24**
जंगला	33 40	77 00	–22 00
जास्कार	33 20	77 00	–22 00
डोडा	33 10	75 35	–27 40
द्रास	34 22	75 50	–26 40
नवांशहर	32 30	74 46	–30 56
नागिर	36 17	74 45	–31 00
नौशेहरा	33 11	74 17	–32 52
पहलगांव	34 01	75 24	–28 24

जम्मू-कश्मीर के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
परिपंजाल	33 36	74 22	–22 32
पुंछ	33 51	74 08	–33 28
बनिहाल	33 32	75 19	–28 44
बटोटी	33 06	75 19	–28 44
बटोत	33 06	75 19	–28 44
बड़गाम	34 00	74 44	–31 04
बसौली	32 30	75 49	–26 24
बारामूला	34 10	74 20	–32 40
भद्रवाह	32 59	75 43	–27 08
मनावर	32 50	74 25	–32 20
मार्तण्ड	33 48	75 18	–28 48
मुज़फ्फराबाद	34 22	73 31	–35 56
रामनगर	32 50	75 22	–28 32
राजौरी	33 23	74 18	–32 48
रामबन	33 14	75 15	–29 00
रियासी	33 04	74 53	–30 28
लद्दाख (रेंज)	32 00	80 00	–10 00
वैष्णोदेवी	33 03	74 56	–30 16
शेरकिला	36 05	74 04	–33 44
श्रीनगर	34 06	74 50	–30 40
साम्बा	32 33	75 07	–29 32
सोपूर	34 19	74 30	–32 00
सोनामर्ग	34 19	75 20	–28 40
सोन्दर	33 29	75 57	–26 12
सुन्दरबनी	33 02	74 29	–32 04
लद्दाख (रेंज)	32 00	80 00	–10 00
झारखण्ड			
हज़ारीबाग	23 59	85 25	+11 40
जमशेदपुर	22 50	86 10	+14 40
राँची	23 23	85 23	+11 32
तामिलनाडू			
चेन्नई	13 05	80 17	–08 52
कांचीपुरम	12 50	79 44	–11 04

तामिलनाडू के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मदुरै	9 58	78 10	–17 20
रामेश्वरम्	09 17	79 22	–12 32
तेलंगाना			
करनूल	15 50	78 03	–17 48
हैदराबाद	17 24	78 30	–16 00
त्रिपुरा			
अगरतला	23 49	91 18	+35 12
दादर–नगर–हवेली			
सिल्वासा	20 17	73 00	–38 00
डमन एण्ड डियू			
डामन	20 25	72 51	–38 36
डियू (Diu)	20 42	70 59	–46 04
दिल्ली			
पु. दिल्ली	28 39	77 12	–21 12
शाहदरा	28 40	77 19	–20 44
न्यू दिल्ली	28 40	77 13	–21 08
शकरपुर	28 41	77 09	–21 24
नागालैण्ड			
कोहिमा	25 41	94 07	+46 28
दीमापुर	25 44	93 43	+44 52
प. बंगाल			
आसनसोल	23 42	87 01	+18 04
कोलकाता	22 34	88 24	+23 36
दार्जिलिंग	27 03	88 18	+23 12
पुरुलिया	23 20	86 24	+15 36
दुर्गापुर	23 30	87 20	+19 20
सिलीगुड़ी	26 42	88 26	+23 44
हावड़ा	22 25	88 20	+23 20

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
पंजाब			
अमृतसर	31 37	74 55	–30 20
अजनाला	31 51	74 48	–30 48
अटारी	31 37	74 36	–31 36
अमलोह	30 37	76 15	–25 00
अहमदगढ़	30 41	75 51	–26 36
अबोहर	30 09	74 11	–33 16
अकालगढ़	29 50	75 54	–26 24
अमरगढ़	30 28	76 01	–25 56
अलावलपुर	31 26	75 39	–27 24
आनन्दपुर सा.	31 15	76 32	–23 52
आदमपुर	31 25	75 43	–27 08
उरमर-टाण्डा	31 40	75 41	–27 16
कपूरथला	31 23	75 23	–28 28
करतारपुर	31 27	75 30	–28 00
कादियां	31 49	75 23	–28 28
कीतरपुर साहिब	31 11	76 34	–23 44
कुराली	30 50	76 35	–23 40
कोटकपूरा	30 34	74 52	–30 32
खन्ना	30 42	76 13	–25 08
खरड़	30 45	76 38	–23 28
खेमकरण	31 08	74 35	–31 40
गड़दीवाल	31 44	75 45	–27 00
गढ़शंकर	31 13	76 08	–25 28
गिद्दड़बाहा	30–12	74–40	–31 20
गुरदासपुर	32 02	75 27	–28 12
गुरुहरसहाय	30 43	74 25	–32 20
गोईन्दवाल सा.	31 22	75 08	–29 28
गोराया	31 06	75 47	–26 52
गोबिन्दगढ़ मण्डी	30 41	76 18	–24 28
घनौर	30 21	76 37	–23 32
चमकौर साहि.	30 55	76 24	–24 24

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
छहरटा	31 16	74 53	−30 28
जगरांव	30 48	75 30	−28 00
जलालाबाद	30 37	74 15	−33 00
जण्डियालागुरु	31 34	75 01	−29 56
जाखल	29 48	75 41	−26 36
जालन्धर	31 19	75 34	−27 44
जालन्धर कैंट	31 20	75 26	−28 16
जीरा	30 57	74 59	−30 04
जैतों	30 28	74 53	−30 28
जैजों	31 21	76 09	−25 24
डबवाली मण्डी	29 59	74 42	−31 12
ढिलवां	31 25	75 19	−28 44
तपा मण्डी	30 19	75 21	−28 36
तरनतारन	31 28	74 58	−30 08
तलवाड़ा	31 56	75 53	−26 28
तलवंडी साबो	29 59	74 59	−30 04
दतारपुर	31 53	75 45	−27 00
दसूहा	31 49	75 38	−27 28
दमदमा साहिब	30 50	76 04	−25 44
दीनानगर	32 08	75 28	−28 08
दोराहा मण्डी	30 49	76 01	−25 56
दौलतपुर	31 58	75 38	−27 28
धर्मकोट	30 53	75 14	−29 04
धारीवाल	31 57	75 19	−28 44
धूरी	30 22	75 52	−26 32
नकोदर	31 07	75 29	−28 04
नवांशहर	31 07	76 08	−25 28
नंगल	31 23	76 23	−24 28
नाभा	30 25	76 09	−25 24
नूरमहल	31 01	75 22	−28 32
नूरपुर बेदी	31 09	76 29	−24 04
पटियाला	30 20	76 25	−24 20

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
पट्टी	31 17	74 51	−30 36
पठानकोट	32 17	75 42	−27 12
फरीदकोट	30 40	74 45	−31 00
फगवाड़ा	31 14	75 46	−26 56
फतेहगढ़ सा.	30 39	76 22	−24 32
फतेहगढ़	31 03	75 03	−29 48
फाज़िल्का	30 24	74 04	−33 44
फिल्लौर	31 01	75 48	−26 48
फिरोजपुर	30 55	74 40	−31 20
बरनाला	30 23	75 33	−27 48
बनूड़(मोहाली)	30 34	76 43	−23 08
बस्सी	30 35	76 50	−22 40
बसी-पठाना	30 40	76 23	−24 28
बटाला	31 48	75 12	−29 12
बंगा	31 11	75 59	−26 04
बलाचौर	31 03	76 19	−24 44
बाबा बकाला	31 33	75 15	−29 00
बाघा पुराना	30 41	75 06	−29 36
बिलगा	31 02	75 26	−28 16
बुढलाडा	29 56	75 34	−27 44
बेला	30 56	76 24	−24 24
ब्यास	31 32	75 18	−28 48
भटिण्डा	30 11	75 00	−30 00
भवानीगढ़	30 16	76 01	−25 56
भुलत्थ	31 32	75 32	−27 32
भुच्चो (मण्डी)	30 13	75 06	−29 36
भोगपुर	31 33	75 38	−27 28
मजीठा	31 46	74 57	−30 12
मलोट	30 13	74 29	−32 04
मलेरकोटला	30 31	75 53	−26 28
मलकाणा	29 56	75 03	−29 48
मुकेरिया	31 57	75 37	−27 32
मुबारिकपुर	30 37	76 51	−22 36

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मुक्तसर	30 29	74 31	−31 56
मोगा	30 48	75 10	−29 20
मोरांवली	31 18	76 01	−25 56
मोरिण्डा	30 48	76 30	−24 00
मोहाली	30 42	76 42	−23 12
राजपुरा	30 29	76 36	−23 36
रामपुरा फूल	30 17	75 14	−29 04
रायकोट	30 41	75 36	−27 36
राहों	31 03	76 07	−25 32
रोपड़ (रूपनगर)	30 57	76 32	−23 52
लुधियाना	30 55	75 54	−26 24
लोहियांखास	31 08	75 28	−28 04
शाहकोट	31 03	75 19	−28 44
शाहपुर	32 17	75 46	−26 56
संगरूर	30 12	75 53	−26 28
सरहिन्द	30 38	76 23	−24 28
समराला	30 51	76 11	−25 16
सनौर	30 18	76 30	−24 00
समाना	30 09	76 12	−25 12
सुजानपुर	32 19	75 26	−28 16
सुल्तानपुर लोधी	31 13	75 11	−29 16
सुनाम	30 08	75 48	−26 48
सोहाणां	30 42	76 42	−23 12
हमीरा	31 27	75 19	−28 44
हरयाणा	31 36	75 48	−26 48
हरीके पत्तन	31 30	74 57	−30 12
हाजीपुर टा.	31 59	75 45	−27 00
होशियारपुर	31 32	75 57	−26 12
पाण्डिचेरी			
पांडिचेरी	11 56	79 53	−10 28
महे (Mahe)	11 42	75 32	−27 52

बिहार के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बिहार			
कटिहार	25 31	87 34	+20 16
किशनगंज	26 06	87 56	+21 44
गया	24 49	85 01	+10 04
छपरा	25 47	84 45	+09 00
दरभंगा	26 10	85 57	+13 48
सीतामढ़ी	26 35	85 32	+12 08
सीवां	26 12	84 23	+07 32
पटना	25 37	85 10	+10 40
झरिया	23 50	86 24	+15 36
समस्तीपुर	25 55	85 50	+13 20
धनबाद	23 47	86 30	+16 00
बांकीपुर	25 40	85 12	+10 48
बेगुसराय	25 25	86 08	+14 32
भागलपुर	25 15	87 00	+18 00
मधुबनी	26 22	86 05	+14 20
मणिपुर			
इम्फाल	24 46	93 58	+45 52
उखरूल	25 05	94 21	+47 24
मध्यप्रदेश			
अगर	23 42	76 01	−25 56
अजयगढ़	24 53	80 13	−09 08
अमरकंटक	22 40	81 45	−03 00
अमला	21 56	78 07	−17 32
अम्बाह	26 43	78 14	−17 04
अन्नूपुर	22 40	81 48	−05 18
अलिराजपुर	22 19	74 21	−32 36
अशोकनगर	24 34	77 43	−19 08
इच्छापुर	21 05	76 09	−25 24
इच्छावर	23 01	77 01	−21 56
इटारसी	22 37	77 45	−19 00
इटावा	24 05	78 12	−17 12
इन्दौर	22 43	75 50	−26 40
उज्जैन	23 11	75 46	−26 56

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
उमरिया	23 32	80 50	–06 40
उमरियां (बा.गढ़)	23 48	80 56	–06 16
ओरछा	25 21	78 39	–15 24
कटनी	23 51	80 24	–08 24
कुकशी	22 12	74 45	–31 00
कोठी	24 45	80 45	–07 00
कोरवई	24 08	78 03	–17 48
क्षिप्रा	22 54	78 00	–26 00
खजुराहो	24 50	79 58	–10 08
खण्डवा	21 50	76 20	–24 40
खेतिया	21 40	74 35	–31 40
खुरई	24 03	78 19	–16 44
गुना	24 39	77 19	–20 44
गोहद	26 26	78 27	–16 12
ग्वालियर	26 13	78 10	–17 20
चन्दला	25 05	80 12	–09 12
चन्देरी	24 43	78 08	–17 28
चाचोरा	24 10	76 59	–22 04
चापरा	22 44	76 20	–24 40
छतरपुर	24 55	79 36	–11 36
छिन्दवाड़ा	22 04	78 56	–14 16
छोटा छिन्दवाड़ा	23 03	79 29	–12 04
जबलपुर	23 10	79 57	–10 12
जऔरा	28 38	75 08	–29 28
झाबुआ	22 46	74 36	–31 36
टीकमगढ़	24 46	78 53	–14 28
तिरोदी	21 41	79 42	–11 12
दतिया	25 40	78 28	–16 08
दमोह	23 50	79 27	–12 12
धार	22 36	75 18	–28 48
नयागाँव	25 54	77 10	–21 20
नरसिंहपुर	22 57	79 12	–13 12
नीमच	24 28	74 52	–30 32

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
पंचमढ़ी	22 30	78 26	–16 16
पठारिया	23 54	79 12	–13 12
पन्ना	24 43	80 12	–09 12
पाटन	23 18	79 42	–11 12
पांधुरना	21 36	78 31	–15 56
पिछोर (ग्वा.)	25 58	78 24	–16 24
पिपारिया	22 45	78 21	–16 36
प्रतापगढ़	24 02	74 47	–30 52
बन्दा	24 03	78 57	–14 12
बरनगर	23 03	75 22	–28 32
बालाघाट	21 48	80 11	–09 16
बासोदा	23 51	77 56	–18 16
बीना (इटावा)	24 11	78 11	–17 16
बुरहानपुर	21 18	76 14	–25 04
बैतूल	21 55	77 54	–18 24
भिण्ड	26 34	78 48	–14 48
भोपाल	23 16	77 24	–20 24
मऊगंज	24 41	81 53	–02 28
मण्डला	22 36	80 23	–08 28
मनावर	22 14	75 05	–29 40
मन्दसौर	24 04	75 04	–29 44
महाराजपुर	25 01	79 44	–11 04
महेश्वर	22 11	75 35	–27 40
मानपुर	23 46	81 08	–05 28
मुरैना	26 30	78 09	–17 24
मुलताई	21 46	78 15	–17 00
मैहर	24 16	80 45	–07 00
रतलाम	23 19	75 04	–29 44
राजगढ़	23 56	76 58	–22 08
राजपुर	25 23	81 09	–05 24
रामनगर	22 13	80 47	–06 52
रामपुरा	24 28	75 26	–28 16

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
रायसेन	23 20	77 48	–18 48
राहतगढ़	23 47	78 22	–16 32
रीवा	24 32	81 18	–04 48
रेहली	23 38	79 05	–13 40
लखनादोन	22 36	79 36	–11 36
लखेड़ी	25 40	76 10	–25 20
लामटा	22 08	80 07	–09 32
विदिशा	23 32	77 49	–18 44
वैधन	24 04	82 20	–00 40
शहडोल	23 20	81 21	–04 36
शाजापुर	23 26	76 16	–24 56
शाहपुरा	23 11	80 42	–07 12
शिवपुरी	25 26	77 39	–19 24
श्योपुर	25 40	76 42	–23 12
सतना	24 35	80 50	–06 40
सनावद	22 11	76 04	–25 44
सबलगढ़	26 15	77 24	–20 24
सरदारपुर	22 39	74 59	–30 04
सागर	23 50	78 43	–15 08
सांची	23 29	77 44	–19 04
सारंगपुर	23 34	76 28	–24 08
सिरोंज	24 06	77 42	–19 12
सिहोरा	23 29	80 07	–09 32
सिहोर	23 12	77 05	–21 40
सीधी	24 25	81 53	–02 28
सेओनी	22 05	79 32	–11 52
सेओनीमालवा	22 27	77 28	–20 08
सेंधवा	21 41	75 06	–29 36
सोहागपुर	22 42	78 12	–17 12
हट्टा	24 07	79 36	–11 36
हरदा	22 20	77 06	–21 36
होशंगाबाद	22 45	77 44	–19 04

छत्तीसगढ़ के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
छत्तीसगढ़			
अम्बिकापुर	23 07	83 12	+02 48
आरंग	21 12	81 58	–02 08
कवर्धा	22 00	81 15	–05 00
कांकेर	20 17	81 29	–04 04
काठघोरा	22 30	82 33	+00 12
कुतरू	19 05	80 48	–06 48
कुरसेकोडी	20 12	80 48	–06 48
कोंगूर	19 53	81 27	–04 12
कोण्डागांव	19 36	81 40	–03 20
कोरबा	22 21	82 41	+00 44
जगदलपुर	19 04	82 02	–01 52
जशपुरनगर	22 54	84 09	+06 36
दन्तेवाड़ा	18 54	81 21	–04 36
दुर्ग	21 11	81 17	–04 52
धमतरी	20 41	81 34	–03 44
धर्मजयगढ़	22 28	83 13	+02 52
धर्मावरम	18 16	80 55	–06 20
नवापाड़ा	20 58	81 53	–02 28
पण्डारिया	22 14	81 25	–04 20
बलोदाबाज़ार	21 40	82 10	–01 20
बस्तर	19 12	81 57	–02 12
बिलासपुर	22 05	82 09	–01 24
बैकुण्ठपुर	23 15	82 33	+00 12
भरतपुर	23 44	81 45	–03 00
भाटपाड़ा	21 44	81 56	–02 16
भिलई	21 13	81 26	–04 16
महासमुन्द	21 06	82 06	–01 36
राजनान्दगांव	21 06	81 02	–05 52
रामानुजगंज	23 48	83 42	+04 48
रायगढ़	21 55	83 26	+03 44
रायपुर	21 14	81 38	–03 28

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

छत्तीसगढ़ के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैंडर्ड अन्तर मिं.	सैं.
सक्ति	22	02	82	58	+01	52
सारनगढ़	21	36	83	05	+02	20
सेओरी नारायण	21	44	82	35	+00	20
महाराष्ट्र						
अकलकोट	17	32	76	13	–25	08
अकोला(मुम्ब.)	20	44	77	00	–22	00
अकोट	21	11	77	04	–21	44
अचलपुर	21	16	77	31	–19	56
अमरावती	20	56	77	45	–19	00
अम्बजोगई	18	44	76	23	–24	28
अरमोरी	20	28	79	59	–10	04
अरवी	20	59	78	14	–17	04
अलीपुर	20	34	78	41	–15	16
अहमदनगर	19	05	74	44	–31	04
उल्हासनगर	19	13	73	07	–37	32
एलोरा	20	01	75	10	–29	20
ओस्मानाबाद	18	10	76	02	–25	52
औरंगाबाद	19	53	75	20	–28	40
कतोल	21	16	78	35	–15	40
कराड़	17	17	74	12	–33	12
कल्याण	19	15	73	09	–37	24
कामथी	21	14	79	12	–13	12
किरकी	18	34	73	52	–34	32
कोल्हापुर	16	42	74	13	–33	08
खमगांव	20	41	76	34	–23	44
खेड़ (रत्नागिरी)	17	43	73	23	–36	28
गंगापुर	19	41	75	01	–29	56
गोंडिया(मुम्बई)	21	27	80	12	–09	12
घाटकोपर (मुम्बई)	19	05	72	54	–38	24
चन्द्रापुर	19	57	79	18	–12	48
चालिसगांव	20	28	75	01	–29	56
चिखली	20	21	76	15	–25	00

महाराष्ट्र के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैंडर्ड अन्तर मिं.	सैं.
चिपलून	17	32	73	31	–35	56
चोपड़ा	21	15	75	18	–28	48
जलगांव	21	01	75	34	–27	44
जलगांव (अकोला)	21	03	76	32	–23	52
जालना	19	50	75	53	–26	28
जुन्नार	19	12	73	53	–34	28
तासगांव	17	02	74	36	–31	36
थाने	19	12	72	58	–38	08
दरवाहा	20	19	77	46	–18	56
दिगरस	20	06	77	43	–19	08
दिगलूर	18	33	77	36	–19	36
देवलाली	19	57	73	50	–34	40
धुलिया	20	54	74	47	–30	52
नन्दगांव	20	19	74	39	–31	24
नागपुर	21	09	79	06	–13	36
नान्देड़	19	09	77	20	–20	40
नासिक	19	59	73	48	–34	48
पंढरपुर	17	40	75	20	–28	40
पनवेल	18	59	73	06	–37	36
पाचोरा	20	40	75	21	–28	36
पाटन(महेसाणा)	23	50	72	07	–41	32
पातुर	20	27	76	56	–22	16
पुणे	18	32	73	52	–34	44
पुलगांव	20	44	78	20	–16	40
बारसी	18	14	75	42	–27	12
बारामती	18	09	74	35	–21	40
बालापुर	20	40	76	46	–22	56
बासमत	19	19	77	10	–21	20
बीड़	18	59	75	46	–26	56
भण्डारा	21	10	79	39	–11	24
भिवंडी	19	18	73	04	–37	44
भुसावल	21	03	75	46	–26	56
भोकरदान	20	16	75	46	–26	56

महाराष्ट्र के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैंडर्ड अन्तर मिं.	सैं.
मनवात	19	18	76	30	–24	00
मल्कापुर(बुलडाना)	20	53	76	12	–25	12
महाद	18	05	73	25	–36	20
महाबलेश्वर	17	55	73	40	–35	20
मालवान	16	04	73	28	–36	08
मालेगांव (ना.)	20	33	74	32	–31	52
मुम्बई	**18**	**58**	**72**	**50**	**–38**	**40**
मुम्ब्रा (थाना)	19	10	73	03	–37	48
मुरुद	18	19	72	58	–38	08
यवतमाल	20	24	78	08	–17	28
रत्नागिरि	16	59	73	18	–36	48
रामटेक	21	24	79	20	–12	40
लाटूर	18	24	76	34	–23	44
वर्धा	20	45	78	37	–15	32
वसाई	19	21	72	48	–38	48
वाशिम	20	06	77	09	–21	24
वाशी	19	13	73	10	–37	20
वाई	17	56	73	54	–34	24
वैजापुर	19	55	74	44	–31	12
शिरपुर	21	21	74	53	–30	28
शोलापुर	17	41	75	55	–26	20
श्रीवर्धन	18	02	73	01	–37	56
सकोली	21	05	79	59	–10	04
संगोला	17	26	75	12	–29	12
सतना	20	35	74	12	–33	12
सतारा	17	41	73	59	–34	04
सांगली	16	52	74	34	–31	44
सिन्नार	19	51	74	00	–34	00
हरनाई	17	48	73	06	–37	36
हिंगोली	19	43	77	09	–21	24
मिज़ोरम						
ऐज़वाल	23	43	92	44	+40	56

राजस्थान के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं.	क.	रेखांश (पूर्व) अं.	क.	स्टैंडर्ड अन्तर मिं.	सैं.
मेघालय						
शिलांग	25	34	91	56	+37	44
राजस्थान						
अजमेर	26	27	74	42	–31	12
अनूपगढ़	29	07	73	06	–37	36
अलवर	27	34	76	38	–23	28
असोप	26	48	73	44	–35	04
अलीगढ़	25	58	76	07	–25	30
अमेट	25	20	73	59	–34	04
आबू	24	40	72	45	–39	00
आमेर	26	59	75	52	–26	32
उदयपुर	24	35	73	41	–35	16
एकलिंगजी	24	44	73	46	–34	56
करौली	26	30	77	01	–21	56
कांकरोली	25	02	73	54	–34	24
किशनगढ़	26	33	74	52	–30	32
केकड़ी	25	55	75	10	–29	20
कोटा	25	10	75	52	–26	32
खण्डेला	27	37	75	32	–27	52
गोगुण्डा	24	46	73	34	–35	44
घोटारू	27	18	70	04	–49	44
चात्सू	26	36	75	59	–26	04
चितौड़गढ़	24	54	74	42	–31	12
चूरू	28	19	75	01	–29	56
चोमू	27	08	75	47	–26	52
चोटां	25	28	71	06	–45	36
छाबरा	24	40	76	54	–22	24
छोटीसदड़ी	24	24	74	36	–31	36
जयपुर	26	55	75	52	–26	32
जसवंतपुरा	24	48	72	30	–40	00
जालौर	25	22	72	38	–39	28

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

राजस्थान के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
जैसलमेर	26 55	70 54	–46 24
जोधपुर	26 18	73 04	–37 44
जोधासर	28 07	73 50	–34 40
झालावाड़	24 36	76 09	–25 24
झुंझुनू	28 06	75 25	–28 20
टोडारायसिंह	26 00	75 29	–28 04
टोंक	26 11	75 50	–26 40
डीडवाना	27 17	74 25	–32 20
डूँगरपुर	23 50	73 43	–35 08
तिजारा	27 55	76 50	–22 40
थानागाजी	27 25	76 19	–24 44
देओरा	26 30	70 42	–47 12
देचू	26 47	72 20	–40 40
देओरा	26 30	70 42	–47 12
दौसा	26 51	76 21	–24 36
धौलपुर	26 42	77 53	–18 28
नवलगढ़	27 51	75 18	–28 48
नसीराबाद	26 18	74 46	–30 56
नागौर	27 11	73 40	–35 20
नाचना	27 29	71 45	–43 00
नाथद्वारा	24 56	73 50	–34 40
नीम का थाना	27 44	75 48	–26 48
नोखा	27 35	73 29	–36 04
नौहर	29 11	74 46	–30 56
पचपदरा	25 55	72 21	–40 36
परवतसर	26 53	74 47	–30 52
पाली	25 46	73 25	–36 20
पिलानी	28 23	75 35	–27 40
पुष्कर	26 30	74 34	–31 44
पोखरन	26 56	71 55	–42 20
फतेहपुर	28 00	75 00	–30 00
फलौदी	27 09	72 22	–40 32

राजस्थान के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
फुलेरा	26 52	75 16	–28 56
बड़ी सादड़ी	24 25	74 28	–32 08
बयाना	26 55	77 17	–20 52
बाड़मेर	25 46	71 25	–44 20
बांदीकुई	27 02	76 34	–23 44
बाप	27 24	72 22	–40 32
बाराँ	25 07	76 30	–24 00
बांसवाड़ा	23 30	74 24	–32 24
बालोतरा	25 50	72 14	–41 04
बिलाड़ा	26 11	73 42	–35 12
बीकानेर	28 01	73 22	–36 32
बून्दी	25 27	75 40	–27 20
भरतपुर	27 05	77 30	–20 00
भादरा	29 15	75 20	–28 40
भीलवाड़ा	25 21	74 40	–31 20
भीनमाल	25 01	72 19	–40 44
मकराना	27 04	74 43	–31 08
महाजन	28 49	73 56	–34 16
मांगरोल	25 21	76 30	–24 00
मावली	24 48	73 58	–34 08
मुकन्दबाड़ा	24 49	76 01	–25 56
मेड़ता सिटी	26 40	74 06	–33 36
मेड़ता रोड़	26 44	73 55	–34 20
मोहनगढ़	27 17	71 18	–44 48
रतनगढ़	28 05	74 39	–31 24
रानीवाड़ा	24 46	72 13	–41 08
रायसिंहनगर	29 32	73 27	–36 12
लछमनगढ़	27 45	75 04	–29 44
लाठी	27 03	71 30	–44 00
शाहगढ़	27 08	69 58	–50 08
श्रीगंगानगर	29 49	73 50	–34 40
श्रीमाधोपुर	27 25	75 32	–27 52

राजस्थान के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
श्रीमोहनगढ़	27 17	71 12	–45 12
समदड़ी	25 49	72 35	–39 40
सरदारशहर	28 27	74 30	–32 00
सरूपसर	29 22	73 37	–35 32
सवाईमाधोपुर	25 59	76 30	–24 00
सांगानेर	26 49	75 52	–26 32
सांचोर	24 41	71 50	–42 40
साम्भर	26 55	75 10	–29 20
सादूलपुर	28 39	75 24	–28 24
सिरोही	24 54	72 55	–38 20
सिवाना	25 37	72 27	–40 12
सिरोही	24 53	72 54	–38 24
सीकर	27 36	75 09	–29 24
सुजानगढ़	27 42	74 30	–32 00
सूरतगढ़	29 19	73 57	–34 12
हनुमानगढ़	29 35	74 21	–32 36
रामगढ़ (जयपुर)	27 14	75 10	–29 20
शाहपुरा (जयपुर)	27 22	75 58	–26 08
शाहपुरा (भीलवाड़ा)	25 40	74 50	–30 40
शेरगढ़ (जोधपुर)	26 24	72 21	–40 36
शेरगढ़ (झालाबाड़)	24 41	76 32	–23 52
हनुमानगढ़	29 35	74 21	–32 36

सिक्किम

नगर	अक्षांश	रेखांश	अन्तर
गंगटोक	27 22	88 36	+24 24

हरियाणा

नगर	अक्षांश	रेखांश	अन्तर
अम्बाला कैंट	30 21	76 52	–22 32
अम्बाला शहर	30 22	76 46	–22 56
अगरोहा	29 20	75 38	–27 88
करनाल	29 42	77 02	–21 52
कलानौर	28 52	76 23	–24 28
कालका	30 50	76 56	–22 16

हरियाणा के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
कुरुक्षेत्र	29 59	76 51	–22 36
केसरी	30 15	76 53	–26 28
कैथल	29 48	76 26	–24 16
खतौली	30 37	76 58	–22 08
गुरुग्राम	28 28	77 04	–21 44
गोहाना	29 09	76 41	–23 16
घरौण्डा	29 34	76 58	–22 08
चरखी-दादरी	28 36	76 16	–24 56
जगाधरी	30 10	77 16	–20 56
जाखल	29 48	75 50	–26 40
जीन्द	29 19	76 19	–24 44
झज्जर	28 37	76 39	–23 24
टोहाना	29 42	75 54	–26 24
थानेसर	29 58	76 56	–22 16
दादरी	28 33	77 32	–19 52
नरवाणा	29 36	76 08	–25 28
नारनौल	28 02	76 14	–25 04
नारायणगढ़	30 30	77 09	–21 24
नाहर	28 23	76 23	–24 28
नीलोखेड़ी	29 52	76 54	–22 24
पंचकूला	30 42	76 52	–22 32
पटौदी	28 19	76 48	–22 48
पलवर	28 10	77 19	–20 44
पानीपत	29 23	76 59	–22 04
पिंजौर	30 49	76 55	–22 20
पिपली	29 59	76 52	–22 32
पिहोवा	29 58	76 35	–23 40
फतेहाबाद	29 31	75 27	–28 12
फरीदाबाद	28 26	77 19	–20 44
बल्लभगढ़	28 21	77 19	–20 44
बहादुरगढ़	28 42	76 55	–22 20
बरवाला	29 23	75 55	–26 20
बालसमन्द	29 05	75 29	–28 04

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

हरियाणा के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
भादसों	29 56	76 56	−22 16
भिवानी	28 47	76 08	−25 48
मनसादेवी	30 44	76 52	−22 32
मनीमाजरा	30 42	76 52	−22 32
महेन्द्रगढ़	28 17	76 09	−25 24
मोहाना	29 04	76 50	−22 40
यमुनानगर	30 07	77 18	−20 48
रादौर	30 02	77 06	−21 36
रिवाड़ी	28 12	76 38	−23 28
रैना	29 28	74 54	−30 24
रोडी	29 44	75 15	−29 00
रोहतक	28 54	76 38	−23 28
लाडवा	29 59	77 05	−21 40
शाहाबाद	30 10	76 55	−22 20
सिरसा	29 32	75 01	−29 56
सिवानी	28 55	75 37	−27 32
सोनीपत	28 59	77 01	−21 56
हसनपुर	27 59	77 29	−20 04
हांसी	29 06	76 00	−26 00
हिसार	29 10	75 46	−26 56

हिमाचल–प्रदेश

हि.प्र. के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
अम्ब	31 43	76 06	−25 36
अर्की	31 09	76 59	−22 04
आनी	31 28	77 20	−20 40
आलमपुर	31 54	76 30	−24 00
इन्दौरा	32 06	75 41	−27 16
ऊना	31 29	76 17	−24 52
करसोग	31 23	77 13	−21 08
कसौली	30 55	76 57	−22 12
कथला	31 59	76 47	−22 52
कल्पा	31 34	78 16	−16 56
कण्डाघाट	30 57	77 08	−21 28

हि.प्र. के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
काला अम्ब	30 29	77 13	−21 08
काँगड़ा	32 05	76 18	−24 48
किन्नौर	31 32	78 20	−16 40
कुफरी	31 07	77 12	−21 12
कुम्हारहट्टी	30 52	77 03	−21 48
कुल्लू	31 58	77 06	−21 36
कुमारसेन	31 18	77 37	−19 32
कुनिहार	30 58	77 10	−21 20
केलांग	32 37	77 05	−21 40
कोटखाई	31 08	77 36	−19 36
कोटगढ़	31 19	77 29	−20 04
कोटला	32 17	76 02	−25 52
खजियार	32 31	76 03	−25 40
गर्ली (परागपुर)	31 48	76 18	−24 48
गगरेट	31 41	76 04	−25 44
गोहर	31 32	77 02	−21 52
घुमारवीं	31 28	76 42	−23 12
चम्बा	32 34	76 08	−25 28
चच्योट	31 36	77 04	−21 44
चामुण्डा देवी	32 08	76 22	−24 32
चायल	31 03	77 14	−21 04
चिन्तपूर्णी	31 47	76 04	−25 44
जस्सूर	32 17	75 55	−26 20
जतोग	31 06	77 07	−21 32
जोगिन्द्रनगर	31 59	76 46	−22 56
ज्वाली	32 08	76 01	−25 56
ज्वालामुखी	31 53	76 20	−24 40
ठयोग	31 08	77 33	−19 48
डमटाल	32 13	75 41	−27 16
डगशाई	30 53	77 06	−21 36
डल्हौज़ी	32 31	76 00	−26 00
ढलियारा	31 52	76 11	−25 16
तारादेवी	31 04	77 10	−21 20

हि.प्र. के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
तत्तापानी	31 14	77 10	−21 20
त्रिलोकनाथ	32 43	76 39	−23 24
त्रिलोकपुर	30 34	77 09	−21 24
देहरा गोपीपुर	31 55	76 14	−25 04
दौलतपुर	31 46	75 58	−26 08
धनेटा	31 38	76 29	−24 04
धर्मशाला	32 16	76 23	−24 48
धर्मपुर	30 54	77 04	−21 44
धौलाकुआं	30 30	77 29	−20 04
नगर	32 07	77 10	−21 20
नगरोटा बगवां	32 06	76 22	−24 32
नगरोटा	32 07	76 23	−24 28
नादौन	31 47	76 21	−24 36
नाहन	30 33	77 18	−20 48
नालागढ़	31 03	76 42	−23 12
नारकण्डा	31 15	77 28	−20 08
निरमण्ड	31 28	77 34	−19 44
नूरपुर	32 18	75 54	−26 24
नैनादेवी	31 19	76 31	−23 56
पच्छाद	31 47	77 08	−21 28
पण्डोह	31 41	77 07	−21 32
पपरोला	32 04	76 34	−23 44
परवाणू	30 50	76 57	−22 12
पाओंटा साहिब	30 27	77 37	−19 32
पालमपुर	32 07	76 33	−23 48
बरसर (भोटा)	31 34	76 28	−24 08
बसौली	31 34	76 23	−24 28
बंगाना तै.	31 33	76 27	−24 16
बड़ागांव	31 20	77 15	−21 00
बंजार	31 40	77 20	−20 40
बनीखेत	32 32	75 58	−26 08
बकलोह	32 27	75 59	−26 04
बिलासपुर	31 20	76 45	−23 00

हि.प्र. के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बैजनाथ	32 03	76 38	−23 28
भरवाईं	31 47	76 07	−25 36
भरमौर	32 27	76 32	−23 52
भाखड़ा	31 20	76 30	−24 00
भुन्तर	31 54	77 09	−21 24
मण्डी	31 43	76 58	−22 08
मनाली	32 16	77 10	−21 20
मनीकरण	32 01	77 20	−20 40
मशोबरा	31 07	77 14	−21 04
मंगवाल	32 03	76 05	−25 40
महासू	31 05	77 13	−21 08
राजगढ़	30 52	77 22	−20 32
रामपुरबुशहर	31 27	77 38	−19 28
रोहड़ू	31 12	77 45	−19 00
लाहौल स्पीति	31 28	77 39	−19 24
शाहपुर	32 13	76 11	−25 16
शिमला	31 06	77 10	−21 20
शेरपुर	32 34	75 59	−26 04
सपाटू	30 59	76 59	−22 04
सरकाघाट	31 42	76 45	−23 00
सन्धोल	31 59	76 45	−22 56
संतोखगढ़	31 21	76 20	−24 40
सिरमौर	30 45	77 30	−20 00
सुन्दरनगर	31 32	76 53	−22 28
सुजानपुरटिहरा	31 50	76 30	−24 00
सोलन	30 55	77 09	−21 24
हमीरपुर	31 41	76 31	−23 56
हड़सर	32 21	76 33	−23 48
हरिपुर	32 39	76 11	−25 16
हरिपुरधार	30 53	77 28	−20 08
हाटकोटी	31 09	77 45	−19 00

अन्य केन्द्रीय प्रदेश

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
चण्डीगढ़	30 44	76 52	−22 32

विदेशी नगरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टैं. अन्तर

आगे लिखे गए विदेशी नगरों के सामने स्थानीय समय का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए अन्तिम कालम में (–) चिन्ह वाले नगरों का समय भा. स्टै. टा. से पहले घटित होगा जबकि (+) चिन्ह वाले नगरों के आगे निर्दिष्ट समय, उतने घण्टे मिनट बाद में घटित होगा। जैसे इंगलैंड (लंदन) के आगे +5/30 घं. मिं. लिखे हैं, इसका भाव यह हुआ कि यदि इंग्लैंड में प्रातः के 6/30 बजे हैं तो भारत में दोपहर के 12 बजे होंगे। इसी भान्ति न्यूयार्क (अमेरिका) के आगे +10/30 घं. मिं. होने से इसका यह तात्पर्य होगा कि वहां साढ़े दस घण्टे पीछे अर्थात् गत दिवस के डेढ़ (1/30) बजे होंगे। ज्ञातव्य रहे, अमेरिका, कैनेडा, मैक्सीको आदि देशों में एक ही समय अलग–अलग स्टैण्डर्ड टाईम का निर्धारण किया जाता है। जैसे– एटलांटिक टाईम (A.T.), ईस्टर्न टाईम (Eastern Time), सैंटर्ल टाईम (Central Time), माऊंटेन टाईम, पैसेफिक टाईम इत्यादि। यह सब स्टै. टाईम अलग–अलग रेखांशों पर आधारित होते हैं। जिसे स्टैण्डर्ड मेरिडियन कहते हैं। उदाहरणतया ईस्टर्न टाईम 75° रेखांश, सैंट्रल टाईम 90° रेखांश पर, माऊंटेन टाईम 105° पश्चिम रेखांश अनुसार निर्धारित होता है। अमरीका या कैनेडा में किसी नगर का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए वहां स्टैण्डर्ड मेरिडियन निर्धारक रेखांश का ज्ञान आवश्यक है। दूसरे, विदेशी समयांतर में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि अमरीका, कैनेडा, ब्रिटेन आदि कुछ देशों में ग्रीष्मकालीन समय (Day Saving Time) या Summer Time का भी विचार किया जाता है। जोकि प्रायः अप्रैल के अन्तिम रविवार से अक्तूबर के अन्तिम रविवार तक होता है। (अमरीका, कैनेडा में)। इन दिनों देश की घड़ियां एक घण्टा आगे कर दी जाती है।

इसी प्रकार Australia (आस्ट्रेलिया) (दक्षिणी ध्रुवीय देशों) में अक्तूबर के अन्तिम रविवार से मार्च के अन्तिम रविवार तक ग्रीष्मकालीन समय (D.S.T.) प्रयोग में लाया जाता है। ध्यान रहे, Western Australia तथा Queensland आदि कुछ क्षेत्रों में D.S.T. प्रयोग में नहीं लाया जाता। इसी प्रकार न्यूजीलैण्ड (New-Zealand) में अक्तू. के प्रथम सप्ताह के रविवार से मार्च के तृतीय सप्ताह के रविवार तक ग्रीष्मकालीन (D.S.T.) समय प्रयोग में लाया जाता है।

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
(1) AMERICA [UNITED-STATES] [यह देश पाँच कालक्षेत्रों में बंटा हुआ है।]					
Abilen, Texas	30 27 उ.	99 44 प.	–38 56	90 00 प.	+11 30
Albany, N.Y.	42 39 उ.	73 45 प.	+05 00	75 00 प.	+10 30
Abotsford	49 00 उ.	122 30 प.	–10 00	120 00 प.	+13 30
Anderson, Indiana	40 06 उ.	85 41 प.	–42 44	75 00 प.	+10 30
Athens, Georgia	33 57 उ.	83 23 प.	–33 32	75 00 प.	+10 30
Atlanta, Georgia	33 45 उ.	84 23 प.	–37 32	75 00 प.	+10 30
Atlantic City, N.J.	39 22 उ.	74 25 प.	+02 20	75 00 प.	+10 30
Auburn, N.Y.	42 56 उ.	76 34 प.	–06 16	75 00 प.	+10 30
Austin, Texas	30 16 उ.	97 45 प.	–31 00	90 00 प.	+11 30
Asbury Park (N.J.)	40 13 उ.	74 01 प.	+03 56	75 00 प.	+10 30
Bakersfield, Califo.	35 22 उ.	119 01 प.	+03 56	120 00 प.	+13 30
Bay City, Michigan	43 36 उ.	83 53 प.	–35 32	75 00 प.	+10 30
Bay Town, Texas	29 44 उ.	94 59 प.	–19 56	90 00 प.	+11 30
Boston, Massa.	42 21 उ.	71 04 प.	+15 44	75 00 प.	+10 30
Buffalo, N. York	42 53 उ.	78 53 प.	–15 32	75 00 प.	+10 30
Cambridge, Massa.	42 22 उ.	71 06 प.	+15 36	75 00 प.	+10 30
Chicago, Illinois	41 51 उ.	87 39 प.	+09 24	90 00 प.	+11 30
Cincinnati, Ohio	39 10 उ.	84 27 प.	–37 48	75 00 प.	+10 30
Californiacity (Cal.)	35 08 उ.	117 59 प.	+08 04	120 00 प.	+13 30
Columbia, Missouri	38 57 उ.	92 20 प.	–09 20	90 00 प.	+11 30
Columbus, Georgia	32 28 उ.	84 59 प.	–39 56	75 00 प.	+10 30
Dales, Texas	29 56 उ.	97 34 प.	–30 16	90 00 प.	+11 30
Detriot, Michi.	42 20 उ.	83 03 प.	–32 12	75 00 प.	+10 30
Edison, N. Jersey	41 04 उ.	74 34 प.	+01 44	75 00 प.	+10 30
Essex, Maryland	39 19 उ.	76 29 प.	– 05 56	75 00 प.	+10 30
Florida City, FL	25 27 उ.	80 29 प.	–21 56	75 00 प.	+10 30
Frederick (D.M.)	39 38 उ.	78 31 प.	–14 04	75 00 प.	+10 30
Frankfort, Kentucky	38 12 उ.	84 52 प.	–39 28	75 00 प.	+10 30
Greenville, Missi	33 25 उ.	91 04 प.	–04 16	90 00 प.	+11 30
Hamilton, Ohio	39 24 उ.	84 34 प.	–38 16	75 00 प.	+10 30
Houston, Texas	29 46 उ.	95 22 प.	–21 28	90 00 प.	+11 30
Irving, Texas	32 49 उ.	96 57 प.	–27 48	90 00 प.	+11 30
Jersey City, N.J.	40 44 उ.	74 05 प.	+03 20	75 00 प.	+10 30
Johnson City, Tenne.	36 19 उ.	82 21 प.	+30 36	90 00 प.	+11 30
Kingston, N.Y.	41 56 उ.	74 00 प.	+04 00	75 00 प.	+10 30
Lockport, N.Y.	43 10 उ.	78 41 प.	–14 44	75 00 प.	+10 30
Los Angeles, Calif.	34 03 उ.	118 15 प.	+07 00	120 00 प.	+13 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
Manchester, N. Hamp.	43 00 उ.	71 27 प.	+14 54	75 00 प.	+10 30
Meridian, Missi	32 22 उ.	88 42 प.	+05 12	90 00 प.	+11 30
Michigan City, Indiana	41 42 उ.	86 54 प.	–47 36	75 00 प.	+10 30
Midland, Texas	32 00 उ.	102 05 प.	–48 20	90 00 प.	+11 30
Milwankee, Wiscon.	43 02 उ.	87 54 प.	+08 24	90 00 प.	+11 30
Montgomery, Alabama	32 22 उ.	86 18 प.	+14 48	90 00 प.	+11 30
New Bedford, Massa	41 38 उ.	70 56 प.	+ 16 16	75 00 प.	+11 30
New Castle, P.A.	40 44 उ.	76 13 प.	–04 52	75 00 प.	+10 30
Newton, Massa	42 20 उ.	71 13 प.	+15 10	75 00 प.	+10 30
New York, N.Y.	40 43 उ.	74 00 प.	+04 00	75 00 प.	+10 30
Ontario, Calif	34 04 उ.	117 39 प.	+11 24	120 00 प.	+10 30
Oxford, Alabama	33 37 उ.	85 50 प.	+16 40	90 00 प.	+13 30
Redlands, California	34 04 उ.	117 11 प.	+11 16	120 00 प.	+11 30
Reston, Virginia	38 58 उ.	77 20 प.	–09 20	75 00 प.	+13 30
Richfield, Minnesota	44 53 उ.	93 17 प.	–13 08	90 00 प.	+10 30
Richmond, Calif	37 56 उ.	122 21 प.	–09 24	120 00 प.	+11 30
Sacramento, Calif	38 35 उ.	121 30 प.	–06 00	120 00 प.	+13 30
St. Louis Park, Minne	44 57 उ.	93 21 प.	–13 24	90 00 प.	+13 30
San Francisco, Calif	37 47 उ.	122 25 प.	–09 40	120 00 प.	+11 30
Santa Rosa, Calif	38 27 उ.	122 43 प.	–10 52	120 00 प.	+13 30
Seattle, Washington	47 36 उ.	122 20 प.	–09 20	120 00 प.	+13 30
Texas City, Texa	29 23 उ.	94 54 प.	–19 36	90 00 प.	+13 30
Washington, D.C.	38 55 उ.	77 02 प.	–08 08	75 00 प.	+11 30
Yuba City, Calif	39 08 उ.	121 37 प.	–06 28	120 00 प.	+10 30
(2) AFGANISTAN (Standard Meridian—67-30 पू.)					+13 30
Daulatabad	36 25 उ.	64 55 पू.	–10 20	67 30 पू.	+01 00
Kabul	34 31 उ.	69 12 पू.	+06 48	67 30 पू.	+01 00
Kandhar	31 32 उ.	65 30 पू.	–08 00	67 30 पू.	+01 00
(3) ARGENTINA [यह देश दो कालक्षेत्रों में बंटा हुआ है।] (St. Meridian-45-00 प.)					
Rofaela	31 16 द.	61 29 प.	–05 56	60 00 प.	+08 30
San Francisco	31 26 द.	62 05 प.	–08 20	60 00 प.	+08 30
(4) AUSTRALIA [यह देश तीन कालक्षेत्रों में बंटा हुआ है।]					
Adelaide	34 55 द.	138 35 पू.	–15 40	142 30 पू.	–04 00
Brisbane	27 28 द.	153 02 पू.	+12 08	150 00 पू.	–04 30
Canberra	35 17 द.	149 08 पू.	–03 28	150 00 पू.	–04 30
Hobart	42 53 द.	147 19 पू.	–10 44	150 00 पू.	–04 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
Liverpool	33 54 द.	150 56 पू.	+03 44	150 00 पू.	–04 30
Melbourne	37 50 द.	144 58 पू.	–20 08	150 00 पू.	–04 30
Perth	31 56 द.	115 50 पू.	–16 40	120 00 पू.	–02 30
Sydney	33 52 द.	151 12 पू.	+04 48	150 00 पू.	–04 30
(5) Austria (Standard Meridian – 15-00 पू.)					
Graz	47 05 उ.	15 27 पू.	–01 48	15 00 पू.	–04 30
(6) Bangladesh					
Chittagong	22 20 उ.	91 50 पू.	+07 20	90 00 पू.	–00 30
Dhaka	22 43 उ.	90 25 पू.	+01 40	90 00 पू.	–00 30
(7) Bhutan					
Thimbu	27 28 उ.	89 39 पू.	–01 24	90 00 पू.	–00 30
(8) BRAZIL [कुछ क्षेत्रों में ही ग्रीष्मकालीन समय प्रयोग में लाया जाता है।] [चार कालक्षेत्र में आवंटित है।]					
Brasilia	15 47 द.	47 55 प.	–11 40	45 00 प.	+08 30
Maringa	23 25 द.	51 55 प.	–27 40	45 00 प.	+08 30
Rio Branco	9 58 द.	67 48 प.	+28 48	75 00 प.	+10 30
Rio Claro	22 24 द.	47 33 प.	–10 12	45 00 प.	+08 30
Rio de Janeiro	22 54 द.	43 14 प.	+07 04	45 00 प.	+08 30
(9) BURMA (MYANMAR)					
Rangoon	16 47 उ.	96 10 पू.	–05 20	97 30 पू.	–01 00
(10) CANADA [इस देश में भी छः कालक्षेत्र प्रचलित हैं।]					
Brampton, Ontario	43 41 उ.	79 46 प.	–19 04	75 00 प.	+10 30
Calgary, Alberta	51 03 उ.	114 05 प.	–36 20	105 00 प.	+12 30
Edmonton, Alberta	53 33 उ.	113 30 प.	–34 00	105 00 प.	+12 30
Kingston, Ontario	44 14 उ.	76 30 प.	–06 00	75 00 प.	+10 30
Mississauga, Ontario	43 35 उ.	79 37 प.	–18 28	75 00 प.	+10 30
Montreal, Quebec	45 31 उ.	73 34 प.	+05 44	75 00 प.	+10 30
Niagara Falls, Ontario	43 06 उ.	79 04 प.	–16 16	75 00 प.	+10 30
North York, Ontario	43 46 उ.	79 25 प.	–17 40	75 00 प.	+10 30
Ottawa, Ontario	45 25 उ.	75 42 प.	–02 48	75 00 प.	+10 30
Prince George, B.C.	53 55 उ.	122 46 प.	–11 04	120 00 प.	+13 30
Prince Rupert, B.C.	54 19 उ.	130 19 प.	–41 16	120 00 प.	+13 30
Quebec, Quebec	46 49 उ.	71 14 प.	+15 04	75 00 प.	+10 30
Richmond, British Col.	49 10 उ.	123 10 प.	–12 40	120 00 प.	+13 30
Saint John's- -New Foundland	47 33 उ.	52 40 प.	–00 40	52 30 प.	+09 00
Toronto, Ontario	43 39 उ.	79 23 प.	–17 32	75 00 प.	+10 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
Vancouver- (B.C.)	49 16 उ.	123 07 प.	–12 28	120 00 प.	+13 30
Victoria-B.C.	48 25 उ.	123 21 प.	–13 24	120 00 प.	+13 30
Winnipeg, Manitoba	49 53 उ.	97 09 प.	–28 36	90 00 प.	+11 30
Windsor, Ontario	42 18 उ.	83 01 प.	–32 04	75 00 प.	+10 30
(11) CHINA	**(ZHONGGUO)**				
Beijing (Peking)	39 55 उ.	116 25 पू.	–14 20	120 00 पू.	–02 30
Fushun	29 11 उ.	105 00 पू.	–60 00	120 00 पू.	–02 30
Huainan	32 40 उ.	117 00 पू.	–12 00	120 00 पू.	–02 30
Ji'an	41 06 उ.	126 08 पू.	+24 32	120 00 पू.	–02 30
Shanghai	31 14 उ.	121 28 पू.	+05 52	120 00 पू.	–02 30
(12) ENGLAND (UNITED-KINGDOM) U.K. [D.S.T.—मार्च के अन्तिम रविवार से अक्तूबर के अन्तिम रविवार तक] [Starting Time—01:00 A:M, Ending Time 2:00 A:M]					
Adenberg	55 52 उ.	03 12 प.	–12 48	00 00	+05 30
Bedford	52 08 उ.	00 29 प.	–01 56	00 00	+05 30
Birmingham	52 28 उ.	01 54 प.	–07 36	00 00	+05 30
Bradford	53 48 उ.	01 45 प.	–07 00	00 00	+05 30
Bristol	51 27 उ.	02 35 प.	–10 20	00 00	+05 30
Cambridge	52 13 उ.	00 08 पू.	+00 32	00 00	+05 30
Coventry	52 25 उ.	01 30 प.	–06 00	00 00	+05 30
Derby	52 55 उ.	01 29 प.	–05 56	00 00	+05 30
Glasgow, Scotla	55 53 उ.	04 15 प.	–17 00	00 00	+05 30
Hamilton, Scotla	55 47 उ.	04 03 प.	–16 12	00 00	+05 30
Kingswood	51 27 उ.	02 31 प.	–10 04	00 00	+05 30
Leeds	53 50 उ.	01 35 प.	–06 20	00 00	+05 30
Leicester	52 38 उ.	01 05 प.	–04 20	00 00	+05 30
Liverpool	53 25 उ.	02 58 प.	–11 52	00 00	+05 30
London	51 32 उ.	00 05 प.	–00 20	00 00	+05 30
Manchester	53 30 उ.	02 13 प.	–08 52	00 00	+05 30
New-Castle	52 26 उ.	03 06 प.	–12 24	00 00	+05 30
Northampton	52 14 उ.	00 54 प.	–03 36	00 00	+05 30
Nottingham	52 58 उ.	01 10 प.	–04 40	00 00	+05 30
Slough	51 31 उ.	00 36 प.	–02 24	00 00	+05 30
Southampton	50 55 उ.	01 25 प.	–05 40	00 00	+05 30
Walsall	52 35 उ.	01 58 प.	–07 52	00 00	+05 30
Wolverhampton	52 36 उ.	02 08 प.	–08 32	00 00	+05 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
(13) FIJI [ग्रीष्मकालीन समय ग्रहण किया जाता है।] (नवम्बर के प्रथम सप्ताह के रविवार से फरवरी के अन्तिम रविवार तक)					
Kandavu Island	19 03 द.	178 13 पू.	–05 58	180 00 पू.	–06 30
Lau Group	18 20 द.	178 30 पू.	–06 00	180 00 पू.	–06 30
ONO-I-LAU	20 39 द.	178 42 पू.	–05 12	180 00 पू.	–06 30
Rotuma Island	12 30 द.	177 05 पू.	–11 40	180 00 पू.	–06 30
Taveuni	16 51 द.	179 58 प.	–00 08	180 00 पू.	–06 30
Vanua Levu	16 33 द.	179 15 पू.	–03 00	180 00 पू.	–06 30
Vitina	16 19 द.	179 43 पू.	–01 08	180 00 पू.	–06 30
(14) FRANCE					
Lyon	45 45 उ.	04 51 पू.	–40 36	15 00 पू.	+04 30
Paris	48 52 उ.	02 20 पू.	–50 40	15 00 पू.	+04 30
(15) Germany					
Berlin	52 32 उ.	13 25 पू.	–06 20	15 00पू.	+04 30
Bonn	50 44 उ.	07 05 पू.	–31 40	15 00पू.	+04 30
(16) GREECE					
Piraievs (Piraeus)	37 57 उ.	23 38 पू.	–25 28	30 00पू.	+03 30
(17) HONGKONG (CHINA का भाग)					
Kwun Tong	22 19 उ.	114 12 पू.	–23 12	120 00 पू.	–02 30
Tai Tong	22 25 उ.	114 01 पू.	–23 56	120 00 पू.	–02 30
(18) Indonesia [यह देश तीन कालक्षेत्रों में विभाजित है] [105°-00 पू., 120°-00 पू., 135°-00 पू.,]					
Jambi	01 42 द.	103 34 पू.	–05 44	105 00 पू.	–01 30
Jakarta	06 10 द.	106 48 पू.	+07 12	105 00 पू.	–01 30
(19) IRAN					
Tehran	35 40 उ.	51 26 पू.	–04 16	52 30 पू.	+02 00
(20) IRAQ					
Baghdad	33 21 उ.	44 25 पू.	–02 20	45 00 पू.	+02 30
(21) IRELAND					
Dublin	53 20 उ.	06 15 प.	–25 00	00 00	+05 30
(22) ITALY					
Brescia	45 33 उ.	10 15 पू.	–19 00	15 00 पू.	+04 30
Monza	45 35 उ.	09 16 पू.	–22 56	15 00 पू.	+04 30
Lucca	43 50 उ.	10 29 पू.	–18 04	15 00 पू.	+04 30
Milano (Milan)	45 28 उ.	09 12 पू.	–23 12	15 00 पू.	+04 30
Rho	45 32 उ.	09 02 पू.	–23 52	15 00 पू.	+04 30
Rome	41 54 उ.	12 29 पू.	–10 04	15 00 पू.	+04 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
(23) JAPAN					
Tokyo	35 42 उ.	139 46 पू.	+19 04	135 00 पू.	–03 30
(24) KENYA					
Mombasa	04 03 द.	39 40 पू.	–21 20	45 00 पू.	+02 30
Nairobi	01 17 द.	36 49 पू.	–32 44	45 00 पू.	+02 30
(25) KOREA (South)					
Seoul	37 33 उ.	126 58 पू.	–32 08	135 00 पू.	–03 30
(26) KUWAIT					
AL-Kuwayt	29 20 उ.	47 59 पू.	+11 56	45 00 पू.	+02 30
AL-Jahrah	29 20 उ.	47 40 पू.	+10 40	45 00 पू.	+02 30
(27) MALAYSIA					
Kualalumpur	03 10 उ.	101 42 पू.	–73 12	120 00 पू.	–02 30
(28) MAURITIUS					
Port Louis	20 10 द.	57 30 पू.	–10 00	60 00 पू.	+01 30
(29) NEPAL					
Kathmandu	27 43 उ.	85 19 पू.	–03 44	86 15 पू.	–00 15
(30) NETHERLANDS (HOLLAND)					
Amsterdam	52 22 उ.	04 54 पू.	–40 24	15 00 पू.	+04 30
(31) NEW-ZEALAND					
Auckland	36 52 द.	174 46 पू.	–20 56	180 00 पू.	–06 30
Christchurch	43 32 द.	172 38 पू.	–29 28	180 00 पू.	–06 30
Hamilton	37 47 द.	175 17 पू.	–18 52	180 00 पू.	–06 30
Napier	39 29 द.	176 55 पू.	–12 20	180 00 पू.	–06 30
Wellington	41 18 द.	174 47 पू.	–20 52	180 00 पू.	–06 30
(32) NORWAY					
Drammen	59 44 उ.	10 15 पू.	–19 00	15 00 पू.	+04 30
Oslo	59 55 उ.	10 45 पू.	–18 00	15 00 पू.	+04 30
(33) OMAN					
Muscat	23 37 उ.	58 35 पू.	–05 40	60 00 पू.	+01 30
(34) PAKISTAN					
Islamabad	33 42 उ.	73 10 पू.	–07 20	75 00 पू.	+00 30
Karachi	24 52 उ.	67 03 पू.	–31 48	75 00 पू.	+00 30
Lahore	31 35 उ.	74 18 पू.	–02 48	75 00 पू.	+00 30
Multan	30 11 उ.	71 29 पू.	–14 04	75 00 पू.	+00 30
Sialkot	32 30 उ.	74 31 पू.	–01 56	75 00 पू.	+00 30
(35) PHILIPPINES					
Manila	14 35 उ.	121 00 पू.	+04 00	120 00 पू.	–02 30
Olongapo	14 50 उ.	120 16 पू.	+01 04	120 00 पू.	–02 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
(36) PORTUGAL [Standard Meridian—G.M.T.—0°-00']					
Lisbon	38 43 उ.	09 08 प.	–36 32	00 00 पू.	+05 30
(37) QATAR					
Doha	25 17 उ.	51 32 पू.	+26 08	45 00 पू.	+02 30
(38) RUSSIA [यह देश भी अलग-अलग कालक्षेत्रों में बंटा हुआ है।]					
Moscow	55 45 उ.	37 35 पू.	–29 40	45 00 पू.	+02 30
(39) SAUDI-ARABIA					
Al-Mubarraz	22 17 उ.	46 44 पू.	+06 56	45 00 पू.	+02 30
Riyadh	24 38 उ.	46 43 पू.	+06 52	45 00 पू.	+02 30
Jiddah	21 30 उ.	39 12 पू.	–23 12	45 00 पू.	+02 30
(40) SINGAPORE					
Singapore	01 17 उ.	103 51 पू.	–64 36	120 00 पू.	–02 30
(41) SOUTH-AFRICA					
Cape Town	33 55 द.	18 22 पू.	–46 32	30 00 पू.	+03 30
Durban	29 55 द.	30 56 पू.	+03 44	30 00 पू.	+03 30
East London	33 00 द.	27 55 पू.	–08 20	30 00 पू.	+03 30
Johannesburg	26 15 द.	28 00 पू.	–08 00	30 00 पू.	+03 30
Port-Elizabeth	33 58 द.	25 40 पू.	–17 20	30 00 पू.	+03 30
(42) SPAIN					
Barcelona	41 23 उ.	02 11 पू.	–51 16	15 00 पू.	+04 30
Madrid	40 24 उ.	03 41 प.	–74 44	15 00 पू.	+04 30
Manresa	41 44 उ.	01 50 प.	–67 20	15 00 पू.	+04 30
Salamanca	40 58 उ.	05 39 प.	–82 26	15 00 पू.	+04 30
San Fernando	36 28 उ.	06 12 प.	–84 48	15 00 पू.	+04 30
(43) SRI-LANKA					
Colombo	06 56 उ.	79 51 पू.	–40 36	90 00 पू.	–00 30
Jaffna	09 40 उ.	80 00 पू.	–40 00	90 00 पू.	–00 00
Kandy	07 18 उ.	80 38 पू.	–37 28	90 00 पू.	–00 00
(44) Switzerland					
Berne	46 57 उ.	07 26 पू.	–30 16	15 00 पू.	+04 30
Geneva	46 12 उ.	06 09 पू.	–35 24	15 00 पू.	+04 30
(45) UNITED-ARAB-EMIRATES					
Abudhabi	24 28 उ.	54 22 पू.	–22 32	60 00 पू.	+01 30
Sharjah	25 22 उ.	55 23 पू.	–18 28	60 00 पू.	+01 30
Dubai	25 18 उ.	55 18 पू.	–18 48	60 00 पू.	+01 30
(46) ZIMBABWE					
Harare	17 50 द.	31 03 पू.	+04 08	30 00 पू.	+03 30
(47) Zambia					
Lusaka	15 25 द.	28 17 पू.	–06 52	30 00 पू.	+03 30

मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से विश्व के किसी भी नगर का सूर्योदयास्त निकालें

ज्योतिष शास्त्र में सूर्योदयास्त की उपयोगिता सर्वविदित है। पृथ्वी पर सभी स्थानों पर सूर्योदयास्त एवं दिनमान एक समान नहीं होता। पृथ्वी की दैनिक गति एवं परिक्रमण गति के कारण प्रत्येक स्थान पर प्रतिदिन सूर्योदय एवं अस्त काल में अन्तर पड़ता है। सूर्योदयास्तादि तथा विभिन्न स्थानों की पारस्परिक अंशात्मक दूरी जानने के लिए अभीष्ट स्थान का अक्षांश, रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर की आवश्यकता पड़ती है। किसी नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर की जानकारी के लिए तत्सम्बन्धी देश के मानक समय (Standard Time) के माध्यमिक मध्यान्ह (Stand. Meridian) रेखा ज्ञान होना चाहिए। भारतीय मानक समय का निर्धारण रेखांश ८२/३० पूर्व (ग्रीनविच से) एवं अक्षांश २३/११ उत्तर रेखाओं के मध्य बिन्दु पर आधारित है। इसी मध्यवर्ती रेखांश बिन्दु ८२/३० के आधार पर भारत में स्थित अन्य नगरों की अंशात्मक दूरी (Standard difference) ४ मिंट प्रति एक अंश के अनुपात से ऋण (–) अथवा जमा (+) किया जाता है। जो भारतीय नगर ८२°/३० रेखांश से पश्चिम में पड़ेंगे, वहां का देशान्तर (स्टै० अन्तर) ऋण (–) लिखा जाता है तथा जो भा० नगर ८२°/३०' के पूर्व में पड़ेंगे, वहां का स्टै० अन्तर जमा (+) में अंकित किया जाता है।

गत पृष्ठों पर लिखे गए प्रायः सभी नगर ८२°/३०' पू० **रेखांश से पश्चिम** में स्थित होने के कारण, **उनका रेखांतर** (स्टैंडर्ड अन्तर) ऋण (–) लिखा गया है, जबकि अपने नगर का सूर्योदय-अस्त जानने के लिए नगर के आगे लिखे हुए स्टै० अन्तर को स्थानीय मध्यम सूर्योदयास्त अक्षांश सारणी में प्राप्त सूर्योदयास्त में जमा (+) करके अभीष्ट नगर का सूर्योदयास्त पता चलेगा।

यदि आपके नगर के अक्षांश (अंश कला में) मध्यम अक्षांश सारिणी में दिए सूर्योदयादि से कम या अधिक हो तो आप अभीष्ट तिथि से सूर्योदय-अस्त में अनुपातिक विधि से मिंट/सैकिंडज का संस्कार करके अभीष्ट तिथि का सूर्योदयास्त निकाल सकते हैं। **इस दृश्यमान सूर्योदयास्त में अपने अक्षांश भेद के अनुसार लगभग ३ मिंट जमा करने (किरणवक्री भवन संस्कार) से शुद्ध शास्त्रीय मान (इष्टकालिक) का सूर्योदयास्त प्राप्त हो जायेगा।**

उदाहरण—मान लो, आपको 2 फर. को सोनीपत का सूर्योदय ज्ञात करना है। सर्वप्रथम सोनीपत के अक्षांश, रेखांश ज्ञात करेंगे। गत पृष्ठों में देखने से हमें सोनीपत का अक्षांश 28/58, रेखांश 77°/01' तथा स्टैं. अन्तर –21/56 मिं. सै. प्राप्त हुआ है। सारिणी में अक्षांश २५ से ३० के मध्य अनुपातिक विधि से देखने पर हमें सू. उ. 6/49 प्राप्त हुआ। इसमें स्टैं. अन्तर (–21 मिं.-56 सैं.) अर्थात् २२ मिनट जमा करने (क्योंकि स्टैं. अन्तर ऋण है अथवा यूं कहिए सोनीपत ८२°/३० रेखांश के पश्चिम में है) से सूर्योदय 7/11 प्राप्त हुए। इसमें ३ मिनट शास्त्रीय समय भी जमा करने से शुद्ध इष्टकालिक सूर्योदय प्राप्त होगा। अर्थात् 7/14

आगे लिखे अक्षांशों में भारत के अतिरिक्त विदेशों के भी जैसे–इंगलैण्ड, कैनेडा, अमरीका आदि नगरों के सूर्योदयास्त सुगमता से ज्ञात किए जा सकते हैं।

ध्यान रहे, भारत के अधिकांश नगरों के अक्षांश १०° से ३५° अक्षांश तक ही पड़ते हैं, शेष अक्षांश विदेशी नगरों के हैं।

–शुभचिन्तक पं. विवेक शर्मा गणितकर्त्ता

नीचे उत्तरी अक्षांशों के अनुसार स्वदेशीय (लोकल) मध्यम सूर्योदयास्त लिख रहे हैं इनमें अपने अभीष्ट अक्षांश का स्टै. अन्तर + या – करने से स्टै. टा. में सू. उ. व सू. अ. निकल आएगा।

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1 जन	6 17	17 49	6 35	17 31	6 45	17 21	6 56	17 10	7 08	16 58	7 22	16 44	7 39	16 28	7 59	16 08	8 08	15 58	8 19	15 47
3 ,,	6 18	17 51	6 36	17 33	6 46	17 24	6 56	17 13	7 08	17 00	7 22	16 46	7 39	16 31	7 59	16 11	8 08	16 01	8 19	15 50
5 ,,	6 18	17 52	6 36	17 34	6 46	17 25	6 57	17 14	7 09	17 02	7 22	16 49	7 38	16 33	7 59	16 13	8 08	16 04	8 19	15 53
7 ,,	6 19	17 53	6 37	17 35	6 47	17 27	6 57	17 16	7 09	17 04	7 22	16 51	7 38	16 35	7 58	16 16	8 07	16 07	8 18	15 56
9 ,,	6 20	17 54	6 37	17 36	6 47	17 28	6 57	17 17	7 09	17 05	7 22	16 53	7 38	16 37	7 58	16 18	8 06	16 09	8 17	15 59
11 ,,	6 20	17 55	6 38	17 38	6 47	17 29	6 57	17 18	7 09	17 07	7 22	16 55	7 37	16 40	7 57	16 21	8 05	16 11	8 15	16 02
13 ,,	6 21	17 56	6 38	17 39	6 47	17 30	6 57	17 20	7 08	17 09	7 21	16 57	7 37	16 42	7 56	16 23	8 04	16 14	8 14	16 04
15 ,,	6 22	17 58	6 38	17 40	6 47	17 31	6 57	17 22	7 08	17 11	7 21	16 59	7 36	16 44	7 55	16 26	8 03	16 17	8 12	16 08
17 ,,	6 22	17 59	6 38	17 41	6 47	17 33	6 57	17 24	7 08	17 13	7 20	17 01	7 35	16 47	7 54	16 29	8 01	16 21	8 10	16 12
19 ,,	6 23	18 00	6 38	17 42	6 47	17 34	6 56	17 25	7 07	17 15	7 19	17 03	7 33	16 50	7 52	16 32	7 59	16 24	8 08	16 15
21 ,,	6 23	18 01	6 38	17 43	6 47	17 35	6 56	17 27	7 06	17 17	7 18	17 06	7 32	16 52	7 50	16 35	7 57	16 27	8 06	16 19
23 ,,	6 23	18 02	6 38	17 44	6 46	17 38	6 55	17 29	7 05	17 19	7 17	17 08	7 30	16 55	7 48	16 39	7 54	16 30	8 04	16 23
25 ,,	6 23	18 03	6 37	17 46	6 46	17 40	6 55	17 31	7 04	17 21	7 16	17 10	7 29	16 58	7 45	16 42	7 52	16 34	8 00	16 27
27 ,,	6 23	18 04	6 37	17 48	6 45	17 42	6 54	17 33	7 03	17 23	7 14	17 13	7 27	16 01	7 42	16 45	7 49	16 38	7 57	16 31
29 ,,	6 23	18 05	6 37	17 49	6 45	17 43	6 53	17 34	7 02	17 25	7 13	17 15	7 25	16 04	7 40	16 48	7 47	16 42	7 54	16 35
31 ,,	6 23	18 05	6 37	17 51	6 44	17 44	6 52	17 36	7 01	17 27	7 11	17 18	7 23	16 07	7 37	16 52	7 44	16 46	7 51	16 39

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
फरवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
2 फर	6 23	18 06	6 36	17 52	6 43	17 45	6 50	17 37	6 59	17 29	7 09	17 20	7 21	17 09	7 34	16 56	7 41	16 50	7 48	16 43
4 „	6 22	18 06	6 35	17 53	6 41	17 47	6 49	17 39	6 58	17 31	7 07	17 23	7 18	17 12	7 32	17 00	7 38	16 54	7 44	16 47
6 „	6 22	18 07	6 34	17 54	6 40	17 49	6 48	17 41	6 56	17 33	7 05	17 25	7 16	17 15	7 28	17 03	7 34	16 57	7 41	16 51
8 „	6 22	18 07	6 34	17 55	6 39	17 50	6 47	17 42	6 54	17 35	7 03	17 27	7 13	17 17	7 25	17 07	7 31	17 01	7 37	16 55
10 „	6 21	18 08	6 33	17 56	6 38	17 50	6 45	17 44	6 52	17 37	7 01	17 30	7 10	17 20	7 22	17 10	7 27	17 05	7 33	16 59
12 „	6 21	18 08	6 32	17 57	6 36	17 52	6 44	17 46	6 50	17 39	6 58	17 32	7 08	17 23	7 18	17 13	7 24	17 08	7 29	17 03
14 „	6 20	18 08	6 31	17 58	6 36	17 53	6 42	17 47	6 48	17 41	6 56	17 34	7 05	17 26	7 15	17 16	7 20	17 12	7 25	17 07
16 „	6 20	18 09	6 30	17 59	6 34	17 55	6 40	17 49	6 46	17 43	6 53	17 36	7 02	17 29	7 11	17 20	7 16	17 15	7 21	17 11
18 „	6 19	18 09	6 28	18 00	6 33	17 56	6 38	17 50	6 43	17 45	6 51	17 39	6 58	17 32	7 08	17 23	7 12	17 19	7 17	17 15
20 „	6 19	18 09	6 27	18 01	6 31	17 57	6 36	17 52	6 41	17 47	6 48	17 42	6 55	17 35	7 04	17 26	7 08	17 23	7 12	17 19
22 „	6 18	18 10	6 26	18 02	6 30	17 58	6 35	17 53	6 39	17 49	6 45	17 44	6 52	17 38	7 00	17 29	7 04	17 27	7 08	17 23
24 „	6 17	18 10	6 24	18 03	6 27	17 59	6 33	17 55	6 36	17 51	6 43	17 46	6 49	17 41	6 56	17 33	7 00	17 30	7 03	17 27
26 „	6 16	18 10	6 23	18 03	6 26	18 00	6 30	17 56	6 34	17 53	6 40	17 48	6 46	17 43	6 52	17 36	6 55	17 33	6 59	17 31
28 „	6 15	18 10	6 22	18 04	6 24	18 01	6 28	17 58	6 32	17 54	6 38	17 50	6 42	17 45	6 48	17 39	6 51	17 36	6 54	17 34
1 मार्च	6 15	18 10	6 20	18 05	6 23	18 02	6 26	17 59	6 30	17 55	6 34	17 52	6 39	17 47	6 44	17 42	6 47	17 39	6 50	17 38
3 „	6 14	18 11	6 19	18 05	6 22	18 03	6 24	18 00	6 28	17 57	6 31	17 54	6 35	17 49	6 40	17 45	6 42	17 43	6 45	17 41
5 „	6 13	18 11	6 17	18 06	6 20	18 04	6 22	18 02	6 24	17 59	6 28	17 56	6 32	17 52	6 36	17 48	6 38	17 47	6 40	17 44
7 „	6 12	18 11	6 15	18 07	6 18	18 05	6 20	18 03	6 22	18 01	6 25	17 58	6 28	17 55	6 32	17 51	6 33	17 50	6 35	17 48
9 „	6 11	18 11	6 14	18 08	6 16	18 06	6 18	18 04	6 20	18 02	6 22	18 00	6 26	17 58	6 28	17 55	6 29	17 54	6 30	17 52
11 „	6 10	18 11	6 12	18 08	6 14	18 07	6 15	18 05	6 17	18 04	6 19	18 03	6 21	18 00	6 23	17 58	6 24	17 57	6 26	17 56
13 „	6 08	18 11	6 11	18 09	6 12	18 08	6 13	18 07	6 14	18 06	6 16	18 05	6 17	18 03	6 19	18 01	6 20	18 01	6 21	18 00
15 „	6 07	18 11	6 09	18 10	6 10	18 09	6 10	18 08	6 11	18 07	6 12	18 08	6 13	18 07	6 15	18 05	6 15	18 04	6 16	18 03
17 „	6 06	18 11	6 08	18 10	6 08	18 10	6 08	18 09	6 09	18 09	6 09	18 09	6 10	18 08	6 10	18 08	6 11	18 08	6 12	18 07
19 „	6 05	18 11	6 05	18 11	6 06	18 10	6 06	18 10	6 06	18 10	6 06	18 11	6 06	18 10	6 06	18 11	6 06	18 11	6 06	18 11
21 „	6 04	18 11	6 04	18 11	6 04	18 11	6 03	18 12	6 02	18 12	6 02	18 13	6 02	18 13	6 02	18 14	6 01	18 15	6 01	18 15
23 „	6 03	18 11	6 03	18 12	6 02	18 12	6 01	18 13	5 59	18 14	5 59	18 15	5 58	18 16	5 57	18 17	5 57	18 18	5 56	18 19
25 „	6 02	18 11	6 02	18 12	6 00	18 13	5 58	18 14	5 56	18 15	5 56	18 17	5 55	18 19	5 53	18 21	5 52	18 21	5 51	18 22
27 „	6 00	18 11	6 00	18 12	5 57	18 14	5 56	18 15	5 53	18 16	5 53	18 19	5 51	18 21	5 48	18 24	5 47	18 24	5 46	18 26
29 „	5 59	18 11	5 57	18 13	5 55	18 15	5 53	18 17	5 50	18 18	5 50	18 21	5 47	18 24	5 44	18 27	5 43	18 28	5 41	18 30
31 „	5 58	18 10	5 55	18 13	5 53	18 16	5 51	18 18	5 46	18 20	5 46	18 23	5 43	18 26	5 42	18 30	5 39	18 31	5 34	18 33
2 अप्रै	5 57	18 10	5 53	18 14	5 51	18 17	5 49	18 19	5 45	18 22	5 43	18 25	5 40	18 29	5 40	18 33	5 34	18 31	5 31	18 37
4 „	5 56	19 10	5 51	18 14	5 49	18 17	5 46	18 20	5 43	18 23	5 40	18 27	5 36	18 31	5 36	18 36	5 29	18 38	5 26	18 41
6 „	5 55	18 10	5 50	18 15	5 47	18 18	5 44	18 21	5 41	18 25	5 37	18 29	5 32	18 34	5 32	18 39	5 26	18 42	5 22	18 45
8 „	5 54	18 10	5 48	18 16	5 45	18 19	5 42	18 22	5 38	18 26	5 34	18 31	5 29	18 36	5 29	18 42	5 19	18 45	5 17	18 48
10 „	5 52	18 10	5 46	18 17	5 43	18 20	5 40	18 24	5 35	18 28	5 31	18 33	5 25	18 39	5 25	18 46	5 14	18 49	5 12	18 52
12 „	5 51	18 10	5 45	18 17	5 41	18 21	5 38	18 25	5 33	18 29	5 28	18 35	5 21	18 41	5 21	18 49	5 11	18 52	5 07	18 56
14 „	5 50	18 10	5 43	18 18	5 39	18 22	5 35	18 26	5 30	18 31	5 24	18 37	5 18	18 44	5 18	18 52	5 06	18 56	5 02	19 00
16 „	5 49	18 10	5 41	18 18	5 37	18 23	5 33	18 27	5 27	18 32	5 21	18 39	5 14	18 46	5 14	18 55	5 02	18 59	4 58	19 04
18 „	5 48	18 10	5 40	18 19	5 36	18 24	5 30	18 29	5 25	18 34	5 18	18 41	5 12	18 49	5 12	18 58	4 58	19 02	4 53	19 07
20 „	5 47	18 11	5 39	18 19	5 34	18 24	5 28	18 30	5 22	18 36	5 16	18 43	5 08	18 51	5 08	19 01	4 53	19 04	4 48	19 11
22 „	5 46	18 11	5 37	18 20	5 32	18 25	5 26	18 31	5 20	18 38	5 13	18 45	5 04	18 54	5 04	19 04	4 49	19 09	4 44	19 15
24 „	5 45	18 11	5 36	18 20	5 31	18 26	5 24	18 32	5 17	18 39	5 10	18 47	5 01	18 56	5 01	19 07	4 45	19 13	4 39	19 18

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
अप्रैल	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
26 अप्रै	5 45	18 11	5 34	18 21	5 29	18 27	5 22	18 34	5 15	18 41	5 08	18 49	4 58	18 59	4 58	19 11	4 41	19 16	4 35	19 22
28 "	5 44	18 11	5 33	18 22	5 27	18 28	5 20	18 35	5 13	18 43	5 04	18 51	4 54	19 01	4 54	19 14	4 37	19 19	4 31	19 25
30 "	5 43	18 11	5 32	18 23	5 26	18 29	5 18	18 36	5 11	18 44	5 02	18 53	4 51	19 04	4 51	19 17	4 33	19 23	4 26	19 29
2 मई	5 42	18 12	5 30	18 23	5 24	18 30	5 16	18 38	5 09	18 46	4 59	18 55	4 48	19 06	4 35	19 20	4 29	19 26	4 22	19 33
4 "	5 42	18 12	5 29	18 24	5 23	18 31	5 15	18 39	5 07	18 47	4 57	18 57	4 45	19 09	4 32	19 23	4 25	19 29	4 18	19 37
6 "	5 41	18 12	5 28	18 25	5 21	18 32	5 13	18 40	5 05	18 49	4 54	18 59	4 43	19 11	4 28	19 26	4 22	19 32	4 14	19 40
8 "	5 40	18 12	5 27	18 26	5 20	18 33	5 12	18 41	5 03	18 51	4 52	19 01	4 40	19 14	4 25	19 29	4 18	19 36	4 10	19 44
10 "	5 40	18 13	5 26	18 26	5 19	18 34	5 11	18 42	5 01	18 53	4 50	19 03	4 37	19 16	4 20	19 32	4 15	19 39	4 06	19 47
12 "	5 40	18 13	5 25	18 27	5 18	18 35	5 09	18 44	4 59	18 54	4 48	19 05	4 35	19 19	4 17	19 35	4 11	19 42	4 03	19 51
14 "	5 39	18 14	5 24	18 28	5 17	18 36	5 07	18 46	4 57	18 56	4 46	19 07	4 32	19 21	4 14	19 37	4 08	19 45	3 59	19 54
16 "	5 39	18 14	5 24	18 29	5 16	18 37	5 06	18 47	4 56	18 57	4 44	19 09	4 30	19 24	4 12	19 40	4 05	19 49	3 56	19 58
18 "	5 38	18 14	5 23	18 30	5 15	18 38	5 05	18 48	4 54	18 59	4 42	19 11	4 28	19 26	4 09	19 43	4 02	19 52	3 53	20 01
20 "	5 38	18 15	5 22	18 31	5 14	18 39	5 04	18 49	4 53	19 00	4 41	19 13	4 26	19 28	4 07	19 46	3 59	19 55	3 50	20 04
22 "	5 38	18 15	5 22	18 31	5 13	18 40	5 03	18 50	4 52	19 02	4 39	19 15	4 24	19 30	4 04	19 48	3 57	19 58	3 47	20 07
24 "	5 38	18 16	5 21	18 32	5 12	18 41	5 02	18 51	4 51	19 03	4 38	19 16	4 22	19 32	4 02	19 51	3 54	20 00	3 44	20 10
26 "	5 38	18 16	5 21	18 33	5 11	18 42	5 01	18 52	4 50	19 05	4 36	19 18	4 21	19 34	4 01	19 53	3 52	20 03	3 42	20 13
28 "	5 38	18 17	5 20	18 34	5 11	18 43	5 00	18 54	4 49	19 06	4 35	19 19	4 19	19 36	3 59	19 56	3 50	20 05	3 39	20 16
30 "	5 38	18 17	5 20	18 34	5 11	18 44	5 00	18 55	4 48	19 07	4 34	19 20	4 18	19 38	3 58	19 58	3 48	20 08	3 37	20 18
1 जून	5 38	18 18	5 20	18 35	5 10	18 45	4 59	18 56	4 47	19 08	4 33	19 22	4 17	19 39	3 56	20 00	3 46	20 10	3 35	20 21
3 "	5 38	18 18	5 20	18 36	5 10	18 46	4 59	18 57	4 47	19 09	4 32	19 24	4 16	19 41	3 55	20 02	3 45	20 12	3 33	20 23
5 "	5 38	18 19	5 20	18 37	5 10	18 47	4 58	18 58	4 46	19 10	4 32	19 25	4 15	19 42	3 53	20 04	3 43	20 14	3 32	20 26
7 "	5 38	18 19	5 20	18 37	5 10	18 48	4 58	18 59	4 46	19 11	4 31	19 27	4 14	19 44	3 52	20 06	3 42	20 16	3 30	20 28
9 "	5 39	18 20	5 20	18 38	5 10	18 49	4 58	19 00	4 46	19 12	4 31	19 28	4 14	19 45	3 52	20 07	3 41	20 18	3 29	20 30
11 "	5 39	18 20	5 20	18 39	5 10	18 50	4 58	19 01	4 45	19 13	4 30	19 29	4 13	19 46	3 51	20 08	3 41	20 20	3 28	20 31
13 "	5 39	18 21	5 20	18 40	5 10	18 51	4 58	19 01	4 45	19 14	4 30	19 30	4 12	19 48	3 50	20 10	3 40	20 22	3 27	20 34
15 "	5 39	18 21	5 20	18 40	5 10	18 51	4 59	19 02	4 46	19 15	4 30	19 31	4 12	19 49	3 50	20 11	3 39	20 22	3 27	20 35
17 "	5 39	18 22	5 21	18 41	5 10	18 51	4 59	19 03	4 46	19 16	4 31	19 31	4 13	19 49	3 50	20 12	3 39	20 23	3 27	20 36
19 "	5 40	18 22	5 21	18 41	5 11	18 52	4 59	19 03	4 46	19 16	4 31	19 32	4 13	19 50	3 50	20 12	3 39	20 23	3 27	20 36
21 "	5 40	18 23	5 22	18 42	5 11	18 52	5 00	19 04	4 47	19 17	4 31	19 32	4 13	19 50	3 51	20 13	3 40	20 23	3 27	20 36
23 "	5 41	18 23	5 22	18 42	5 12	18 53	5 00	19 04	4 47	19 17	4 33	19 33	4 14	19 51	3 52	20 13	3 41	20 24	3 28	20 36
25 "	5 41	18 24	5 23	18 43	5 12	18 53	5 01	19 05	4 48	19 17	4 33	19 33	4 15	19 51	3 53	20 13	3 41	20 24	3 29	20 36
27 "	5 42	18 24	5 23	18 43	5 13	18 53	5 01	19 05	4 48	19 18	4 34	19 33	4 16	19 51	3 54	20 13	3 43	20 24	3 29	20 36
29 "	5 42	18 24	5 24	18 43	5 13	18 53	5 02	19 05	4 49	19 18	4 34	19 33	4 17	19 51	3 54	20 13	3 43	20 24	3 32	20 36
1 जुला	5 42	18 24	5 24	18 43	5 14	18 53	5 02	19 05	4 49	19 18	4 34	19 32	4 17	19 50	3 54	20 12	3 44	20 23	3 32	20 35
3 "	5 43	18 25	5 24	18 43	5 15	18 54	5 03	19 05	4 50	19 17	4 35	19 32	4 18	19 50	3 56	20 12	3 45	20 22	3 33	20 34
5 "	5 44	18 25	5 25	18 43	5 15	18 53	5 04	19 05	4 51	19 17	4 37	19 31	4 19	19 49	3 58	20 11	3 47	20 21	3 35	20 33
7 "	5 44	18 25	5 26	18 43	5 16	18 53	5 05	19 04	4 52	19 17	4 38	19 31	4 20	19 49	4 00	20 10	3 49	20 20	3 37	20 32
9 "	5 45	10 25	5 27	18 43	5 17	18 53	5 06	19 04	4 53	19 16	4 39	19 31	4 22	19 48	4 02	20 09	3 51	20 14	3 40	20 30
11 "	5 45	18 25	5 27	18 43	5 18	18 53	5 07	19 04	4 54	19 16	4 40	19 30	4 24	19 47	4 04	20 07	3 53	20 17	3 42	20 28
13 "	5 46	18 25	5 28	18 43	5 19	18 53	5 08	19 03	4 56	19 15	4 42	19 29	4 25	19 45	4 06	20 05	3 55	20 16	3 44	20 26
15 "	5 46	18 25	5 29	18 43	5 20	18 52	5 09	19 02	4 57	19 14	4 43	19 28	4 27	19 44	4 08	20 04	3 57	20 14	3 47	20 24
17 "	5 47	18 25	5 29	18 42	5 21	18 52	5 10	19 01	4 58	19 13	4 45	19 27	4 29	19 42	4 10	20 02	4 00	20 12	3 50	20 22

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
जुलाई	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
19जुला	5 47	18 25	5 30	18 42	5 22	18 51	5 11	19 01	4 59	19 12	4 46	19 25	4 31	19 41	4 12	20 00	4 03	20 09	3 52	20 19
21 „	5 47	18 25	5 31	18 41	5 22	18 50	5 12	19 00	5 01	19 11	4 48	19 24	4 33	19 39	4 14	19 57	4 06	20 07	3 55	20 1
23 „	5 47	18 25	5 32	18 41	5 23	18 49	5 13	18 59	5 02	19 10	4 50	19 22	4 35	19 37	4 16	19 55	4 08	20 04	3 58	20 1
25 „	5 48	18 24	5 32	18 40	5 24	18 48	5 14	18 58	5 04	19 08	4 51	19 21	4 37	19 35	4 19	19 53	4 11	20 01	4 01	20 1
27 „	5 48	18 24	5 33	18 39	5 25	18 47	5 15	18 57	5 05	19 07	4 53	19 19	4 39	19 33	4 22	19 50	4 14	19 58	4 04	20 0
29 „	5 49	18 23	5 34	18 38	5 26	18 46	5 17	18 55	5 07	19 05	4 55	19 17	4 41	19 31	4 24	19 47	4 17	19 55	4 07	20 0
31 „	5 49	18 23	5 35	18 37	5 27	18 45	5 17	18 54	5 08	19 04	4 57	19 15	4 44	19 28	4 27	19 44	4 20	19 52	4 11	20 0
2 अग	5 50	18 22	5 35	18 36	5 28	18 44	5 19	18 52	5 09	19 02	4 59	19 13	4 46	19 25	4 30	19 41	4 23	19 48	4 14	19 5
4 „	5 50	18 22	5 36	18 35	5 29	18 43	5 20	18 51	5 11	19 00	5 00	19 11	4 48	19 23	4 33	19 38	4 26	19 45	4 18	19 5
6 „	5 50	18 21	5 36	18 34	5 30	18 42	5 22	18 50	5 12	18 58	5 02	19 08	4 50	19 20	4 36	19 34	4 28	19 42	4 21	19 4
8 „	5 50	18 21	5 37	18 33	5 31	18 40	5 23	18 48	5 14	18 56	5 04	19 06	4 53	19 18	4 39	19 31	4 32	19 38	4 25	19 4
10 „	5 50	18 20	5 38	18 32	5 32	18 39	5 25	18 46	5 16	18 54	5 06	19 03	4 55	19 15	4 42	19 28	4 35	19 34	4 28	19 45
12 „	5 51	18 19	5 39	18 31	5 33	18 37	5 26	18 44	5 17	18 52	5 08	19 01	4 57	19 12	4 45	19 24	4 38	19 30	4 32	19 37
14 „	5 51	18 18	5 39	18 30	5 33	18 35	5 27	18 42	5 19	18 49	5 10	18 58	5 00	19 08	4 47	19 21	4 42	19 26	4 35	19 32
16 „	5 51	18 17	5 40	18 28	5 34	18 34	5 28	18 40	5 20	18 47	5 12	18 56	5 02	19 05	4 51	19 17	4 45	19 22	4 39	19 28
18 „	5 51	18 16	5 41	18 26	5 35	18 32	5 29	18 38	5 22	18 45	5 14	18 23	5 04	19 02	4 53	19 13	4 48	19 18	4 42	19 23
20 „	5 51	18 15	5 41	18 25	5 36	18 30	5 30	18 36	5 23	18 43	5 16	18 50	5 07	18 59	4 57	19 09	4 51	19 14	4 46	19 19
22 „	5 51	18 14	5 42	18 23	5 37	18 28	5 32	18 34	5 25	18 40	5 18	18 47	5 09	18 56	4 59	19 05	4 55	10 10	4 49	19 15
24 „	5 51	18 13	4 42	18 22	5 38	18 27	5 33	18 32	5 26	18 37	5 19	18 44	5 12	18 52	5 02	19 01	4 58	19 06	4 53	19 10
26 „	5 51	18 12	5 43	18 20	5 39	18 25	5 34	18 29	5 28	18 34	5 21	18 41	5 14	18 49	5 05	18 57	5 01	19 02	4 57	19 05
28 „	5 51	18 11	5 43	18 19	5 39	18 23	5 35	18 27	5 29	18 32	5 23	18 38	5 16	18 45	5 08	18 53	5 04	18 57	5 00	19 01
30 „	5 51	18 10	5 44	18 17	5 40	18 21	5 36	18 25	5 31	18 29	5 25	18 35	5 19	18 41	5 11	18 49	5 08	18 53	5 04	18 56
1 सितं	5 51	19 09	5 44	18 15	5 41	18 19	5 37	18 23	5 32	18 27	5 27	18 32	5 22	18 38	5 14	18 45	5 11	18 48	5 08	18 51
3 „	5 51	18 08	5 45	18 13	5 42	18 17	5 38	18 20	5 34	18 24	5 29	18 29	5 24	18 34	5 16	18 41	5 14	18 43	5 11	18 47
5 „	5 51	18 07	5 46	18 12	5 42	18 15	5 39	18 18	5 35	18 21	5 31	18 26	5 26	18 30	5 20	18 36	5 17	18 39	5 15	18 42
7 „	5 50	18 06	5 46	18 10	5 43	18 12	5 40	18 15	5 37	18 18	5 33	18 23	5 28	18 27	5 23	18 31	5 21	18 34	5 18	18 37
9 „	5 50	18 04	5 46	18 08	5 44	18 10	5 41	18 13	5 38	18 16	5 35	18 11	5 31	18 23	5 26	18 27	5 24	18 29	5 22	18 32
11 „	5 50	18 03	5 46	18 07	5 44	18 08	5 42	18 10	5 39	18 13	5 37	18 16	5 33	18 19	5 29	18 23	5 27	18 24	5 25	18 27
13 „	5 50	18 02	5 47	18 05	5 45	18 06	5 43	18 08	5 41	18 10	5 39	18 13	5 36	18 15	5 32	18 19	5 30	18 20	5 29	18 22
15 „	5 50	18 00	5 47	18 03	5 46	18 04	5 44	18 05	5 42	18 07	5 40	18 10	5 38	18 11	5 34	18 14	5 34	18 16	5 32	18 17
17 „	5 50	17 59	5 48	18 01	5 47	18 02	5 45	18 03	5 44	18 04	5 42	18 06	5 41	18 08	5 38	18 10	5 37	18 11	5 36	18 12
19 „	5 49	17 58	5 48	17 59	5 47	18 00	5 46	18 01	5 45	18 02	5 44	18 03	5 43	18 04	5 41	18 06	5 41	18 06	5 40	18 07
21 „	5 49	17 57	5 48	17 57	5 48	17 58	5 47	17 58	5 47	17 59	5 46	17 59	5 45	18 00	5 44	18 01	5 44	18 01	5 43	18 02
23 „	5 49	17 55	5 49	17 55	5 49	17 55	5 49	17 56	5 48	17 56	5 48	17 56	5 48	17 56	5 47	17 56	5 47	17 56	5 47	17 57
25 „	5 49	17 54	5 49	17 54	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 52	5 50	17 52	5 50	17 52	5 50	17 52
27 „	5 49	17 53	5 50	17 52	5 51	17 51	5 51	17 50	5 51	17 50	5 52	17 50	5 52	17 48	5 53	17 48	5 53	17 48	5 54	17 47
29 „	5 49	17 52	5 51	17 50	5 51	17 49	5 52	17 48	5 53	17 47	5 54	17 46	5 55	17 45	5 56	17 43	5 57	17 43	5 58	17 42
1 अक्तू	5 49	17 51	5 51	17 48	5 52	17 47	5 53	17 46	5 54	17 44	5 56	17 43	5 57	17 41	5 59	17 38	6 00	17 39	6 01	17 37
3 „	5 49	17 49	5 51	17 46	5 53	17 45	5 54	17 43	5 56	17 41	5 58	17 40	6 00	17 37	6 03	17 35	6 03	17 34	6 05	17 32
5 „	5 48	17 48	5 52	17 44	5 54	17 43	5 55	17 40	5 57	17 38	6 00	17 37	6 02	17 33	6 06	17 30	6 07	17 29	6 08	17 27
7 „	5 48	17 47	5 52	17 43	5 55	17 41	5 57	17 38	5 59	17 36	6 02	17 33	6 05	17 30	6 09	17 26	6 10	17 24	6 12	17 22
9 „	5 48	17 46	5 53	17 42	5 55	17 39	5 58	17 36	6 01	17 33	6 04	17 30	6 07	17 27	6 12	17 22	6 14	17 19	6 16	17 17

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख अक्तूबर	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.
11 अक्तू.	5 48	17 45	5 53	17 40	5 56	17 37	5 59	17 34	6 02	17 31	6 06	17 27	6 10	17 23	6 15	17 18	6 17	17 15	6 20	17 1
13 ,,	5 48	17 44	5 54	17 38	5 57	17 35	6 00	17 31	6 04	17 28	6 08	17 24	6 12	17 20	6 18	17 14	6 21	17 11	6 23	17 08
15 ,,	5 49	17 43	5 55	17 37	5 58	17 33	6 02	17 29	6 06	17 25	6 10	17 21	6 15	17 16	6 21	17 10	6 24	17 07	6 27	17 0
17 ,,	5 49	17 42	5 55	17 35	5 59	17 31	6 03	17 27	6 07	17 23	6 12	17 18	6 18	17 12	6 24	17 06	6 28	17 02	6 31	16 59
19 ,,	5 49	17 41	5 56	17 34	6 00	17 30	6 05	17 25	6 09	17 20	6 14	17 15	6 20	17 09	6 28	17 02	6 31	16 58	6 35	16 54
21 ,,	5 49	17 40	5 57	17 32	6 01	17 28	6 06	17 23	6 11	17 18	6 16	17 13	6 23	17 05	6 31	16 58	6 35	16 54	6 39	16 49
23 ,,	5 49	17 39	5 58	17 31	6 02	17 26	6 07	17 21	6 12	17 15	6 18	17 10	6 26	17 02	6 34	16 54	6 38	16 50	6 43	16 45
25 ,,	5 49	17 39	5 58	17 29	6 03	17 24	6 08	17 19	6 14	17 13	6 20	17 03	6 28	16 59	6 38	16 50	6 42	16 46	6 46	16 41
27 ,,	5 50	17 38	5 59	17 28	6 05	17 23	6 10	17 17	6 16	17 11	6 22	17 04	6 31	16 56	6 41	16 46	6 46	16 42	6 50	16 37
29 ,,	5 50	17 38	6 00	17 27	6 06	17 21	6 12	17 15	6 18	17 09	6 24	17 02	6 34	16 53	6 45	16 42	6 49	16 38	6 54	16 32
31 ,,	5 50	17 37	6 00	17 26	6 07	17 20	6 13	17 14	6 20	17 07	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	6 52	16 34	6 58	18 28
2 नव.	5 51	17 37	6 02	17 24	6 08	17 11	6 14	17 12	6 22	17 05	6 30	16 56	6 39	16 47	6 51	16 35	6 56	16 30	7 02	16 24
4 ,,	5 51	17 36	6 03	17 23	6 09	17 18	6 16	17 11	6 23	17 03	6 32	16 54	6 42	16 45	6 54	16 32	7 00	16 27	7 06	16 21
6 ,,	5 52	17 36	6 04	17 23	6 10	17 17	6 18	17 09	6 25	17 01	6 34	16 52	6 45	16 42	6 57	16 29	7 03	16 23	7 10	16 17
8 ,,	5 52	17 35	6 05	17 22	6 12	17 16	6 19	17 08	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	7 01	16 26	7 07	16 20	7 14	16 13
10 ,,	5 53	17 35	6 06	17 22	6 13	17 15	6 21	17 06	6 29	16 57	6 39	16 48	6 50	16 37	7 04	16 23	7 10	16 17	7 17	16 09
12 ,,	5 54	17 35	6 07	17 21	6 15	17 14	6 22	17 05	6 31	16 56	6 41	16 47	6 53	16 35	7 07	16 20	7 14	16 14	7 21	16 06
14 ,,	5 54	17 35	6 08	17 21	6 16	17 13	6 24	17 04	6 33	16 55	6 44	16 45	6 56	16 33	7 11	16 17	7 18	16 11	7 25	16 03
16 ,,	5 55	17 34	6 09	17 20	6 17	17 12	6 26	17 03	6 35	16 54	6 46	16 43	6 59	16 31	7 14	16 15	7 21	16 08	7 29	16 00
18 ,,	5 56	17 34	6 11	17 20	6 18	17 12	6 27	17 03	6 37	16 53	6 48	16 41	7 01	16 29	7 17	16 12	7 25	16 05	7 33	15 57
20 ,,	5 57	17 35	6 12	17 19	6 20	17 11	6 29	17 02	6 39	16 52	6 51	16 40	7 04	16 27	7 20	16 10	7 28	16 03	7 36	15 54
22 ,,	5 58	17 35	6 13	17 19	6 21	17 11	6 31	17 01	6 41	16 51	6 53	16 39	7 07	16 25	7 23	16 08	7 31	16 00	7 40	15 51
24 ,,	5 58	17 35	6 14	17 19	6 23	17 10	6 32	17 01	6 43	16 50	6 55	16 38	7 09	16 24	7 26	16 06	7 35	15 58	7 44	15 49
26 ,,	5 59	17 35	6 15	17 19	6 24	17 10	6 34	17 00	6 45	16 50	6 57	16 37	7 12	16 22	7 29	16 04	7 38	15 56	7 47	15 47
28 ,,	6 00	17 36	6 17	17 19	6 26	17 10	6 36	17 00	6 47	16 49	6 59	16 36	7 14	16 21	7 32	16 03	7 41	15 55	7 50	15 45
30 ,,	6 01	17 36	6 18	17 19	6 28	17 10	6 37	17 00	6 49	16 49	7 01	16 36	7 17	16 21	7 35	16 02	7 44	15 53	7 54	15 43
2 दिसं.	6 02	17 37	6 19	17 19	6 29	17 10	6 39	17 00	6 51	16 58	7 03	16 35	7 19	16 20	7 38	16 01	7 47	15 52	7 57	15 41
4 ,,	6 03	17 37	6 21	17 20	6 30	17 10	6 41	17 00	6 52	16 48	7 05	16 35	7 21	16 20	7 40	16 00	7 49	15 51	8 01	15 4
6 ,,	6 04	17 38	6 22	17 20	6 32	17 10	6 42	17 00	6 54	16 48	7 07	16 35	7 23	16 19	7 43	15 59	7 52	15 50	8 04	15 39
8 ,,	6 05	17 38	6 23	17 20	6 33	17 10	6 44	17 00	6 55	16 48	7 09	16 35	7 25	16 19	7 45	15 59	7 54	15 50	8 06	15 39
10 ,,	6 06	17 39	6 24	17 21	6 34	17 11	6 45	17 00	6 57	16 48	7 11	16 35	7 27	16 18	7 47	15 58	7 57	15 49	8 09	15 3
12 ,,	6 07	17 40	6 25	17 22	6 35	17 11	6 46	17 01	6 58	16 48	7 13	16 35	7 29	16 17	7 49	15 58	7 59	15 48	8 11	15 37
14 ,,	6 08	17 41	6 27	17 23	6 37	17 12	6 48	17 01	7 0	16 49	7 14	16 35	7 31	16 19	7 51	15 58	8 1	15 48	8 13	15 37
16 ,,	6 09	17 42	6 28	17 23	6 38	17 13	6 49	17 02	7 1	16 49	7 15	16 36	7 32	16 19	7 53	15 59	8 3	15 48	8 14	15 3
18 ,,	6 10	17 43	6 29	17 24	6 39	17 14	6 50	17 03	7 2	16 50	7 17	16 36	7 33	16 20	7 54	15 59	8 4	15 49	8 16	15 3
20 ,,	6 11	17 44	6 30	17 25	6 40	17 15	6 51	17 04	7 4	16 51	7 18	16 37	7 35	16 21	7 55	16 00	8 5	15 50	8 17	15 39
22 ,,	6 12	17 45	6 31	17 26	6 41	17 16	6 52	17 05	7 5	16 52	7 19	16 38	7 36	16 21	7 56	16 00	8 6	15 51	8 18	15 39
24 ,,	6 13	17 46	6 32	17 27	6 42	17 17	6 53	17 06	7 6	16 54	7 20	16 39	7 37	16 23	7 57	16 02	8 7	15 52	8 19	15 41
26 ,,	6 14	17 47	6 33	17 28	6 43	17 18	6 54	17 07	7 6	16 55	7 21	16 41	7 37	16 24	7 58	16 03	8 8	15 53	8 19	15 42
28 ,,	6 15	17 48	6 34	17 29	6 44	17 20	6 55	17 09	7 7	16 56	7 21	16 42	7 38	16 25	7 58	16 05	8 8	15 55	8 19	15 44
30 ,,	6 16	17 49	6 34	17 30	6 45	17 21	6 56	17 10	7 8	16 57	7 22	16 44	7 38	16 26	7 59	16 07	8 8	15 57	8 19	15 46
31 ,,	6 17	17 50	6 34	17 31	6 45	17 23	6 56	17 10	7 8	16 58	7 22	16 44	7 38	16 27	7 59	16 08	8 8	15 58	8 19	15 47

हिमाचल प्रदेश के प्रमुख शहरों के सूर्योदयास्त-सन् 2021 ई. (भा. स्टै. टा.)

नीचे हिमाचल प्रदेश के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण-वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग 4 मिनट घटाने तथा अस्त में 4 मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित (Upper Limb) अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय-सूर्यास्त होंगे।

पाठकों की सुविधा हेतु आगे प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त से पूर्व हिमाचल प्रदेश के विभिन्न नगरों के सूर्योदयास्त में परिवर्तन संस्कार लिख रहे हैं जिससे आप किसी भी अभीष्ट नगर का सू. उदय सुगमता पूर्वक ज्ञात कर सकते हैं।

उदाहरण—मान लीजिए करसोग में 11 अप्रैल को सूर्योदय व सूर्यास्त जानना है तो हमें ज़िला मण्डी के स्तम्भ (Column) में देखने से सूर्योदय 6 घण्टे 1 मिनट तथा सूर्यास्त 18 घण्टे 44 मिनट प्राप्त हुए। इन दोनों सू. उ. व सू. अ. में नीचे दी गई संस्कार तालिका में करसोग का संस्कार-1 घण्टे 04 मिनट घटाने से हमें 5 घण्टे 59 मिनट 56 सैकेण्ड और 18 घण्टे 42 मिनट 26 सैकेण्ड में प्राप्त हुए ये करसोग के शुद्ध शास्त्रीय (जन्मपत्री निर्माण हेतु) सूर्योदय एवं सूर्यास्त होंगे।

नगर	काँगड़ा		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मण्डी		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशैहर	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 30	17 27	7 28	17 27	7 28	17 28	7 26	17 27	7 26	17 25	7 27	17 26	7 24	17 26	7 23	17 26	7 31	17 26	7 22	17 26	7 23	17 23
4	7 30	17 29	7 28	17 29	7 29	17 30	7 26	17 29	7 27	17 27	7 27	17 28	7 24	17 28	7 24	17 28	7 32	17 29	7 22	17 28	7 23	17 25
7	7 30	17 31	7 29	17 31	7 29	17 33	7 27	17 31	7 27	17 30	7 28	17 30	7 25	17 30	7 24	17 31	7 32	17 31	7 23	17 31	7 24	17 27
10	7 31	17 34	7 29	17 34	7 29	17 35	7 27	17 34	7 27	17 32	7 28	17 33	7 25	17 32	7 25	17 33	7 32	17 33	7 23	17 33	7 24	17 30
13	7 30	17 36	7 28	17 36	7 29	17 38	7 27	17 36	7 27	17 35	7 28	17 36	7 25	17 35	7 24	17 36	7 32	17 36	7 23	17 36	7 23	17 32
16	7 30	17 39	7 28	17 39	7 29	17 40	7 26	17 39	7 26	17 37	7 27	17 38	7 24	17 38	7 24	17 38	7 32	17 39	7 23	17 38	7 23	17 35
19	7 29	17 42	7 27	17 42	7 28	17 43	7 26	17 41	7 26	17 40	7 27	17 41	7 24	17 40	7 23	17 41	7 31	17 42	7 22	17 41	7 22	17 38
22	7 28	17 45	7 26	17 44	7 27	17 46	7 25	17 44	7 25	17 43	7 26	17 44	7 23	17 43	7 23	17 44	7 30	17 44	7 21	17 44	7 21	17 40
25	7 27	17 47	7 25	17 47	7 26	17 49	7 24	17 47	7 24	17 45	7 24	17 46	7 21	17 46	7 21	17 46	7 29	17 47	7 20	17 47	7 20	17 43
28	7 25	17 50	7 24	17 50	7 24	17 51	7 22	17 50	7 22	17 48	7 23	17 50	7 20	17 48	7 20	17 49	7 27	17 50	7 19	17 49	7 19	17 46
31	7 23	17 53	7 22	17 53	7 23	17 54	7 21	17 52	7 20	17 51	7 21	17 52	7 18	17 51	7 18	17 52	7 25	17 53	7 17	17 51	7 17	17 49
3 फर.	7 21	17 56	7 20	17 55	7 21	17 57	7 19	17 55	7 19	17 54	7 19	17 55	7 17	17 54	7 17	17 54	7 23	17 56	7 15	17 54	7 15	17 51
6	7 19	17 58	7 18	17 58	7 19	18 00	7 17	17 58	7 16	17 56	7 17	17 57	7 15	17 56	7 15	17 57	7 21	17 58	7 13	17 57	7 13	17 54
9	7 17	18 01	7 16	18 01	7 16	18 02	7 14	18 00	7 14	17 59	7 15	18 00	7 12	17 59	7 12	18 00	7 19	18 01	7 11	17 59	7 11	17 57
12	7 14	18 04	7 13	18 03	7 14	18 05	7 12	18 03	7 12	18 02	7 12	18 03	7 10	18 02	7 10	18 02	7 16	18 04	7 09	18 02	7 08	17 59
15	7 11	18 06	7 11	18 06	7 11	18 07	7 09	18 05	7 09	18 04	7 10	18 05	7 07	18 04	7 07	18 05	7 13	18 07	7 06	18 04	7 06	18 02
18	7 08	18 09	7 08	18 08	7 08	18 10	7 06	18 08	7 06	18 07	7 07	18 08	7 04	18 06	7 05	18 07	7 10	18 09	7 03	18 07	7 03	18 04
21	7 05	18 12	7 05	18 11	7 05	18 12	7 03	18 10	7 03	18 09	7 04	18 10	7 01	18 09	7 02	18 09	7 07	18 12	7 00	18 09	7 00	18 07
24	7 03	18 14	7 02	18 13	7 02	18 15	7 00	18 13	7 00	18 12	7 01	18 12	6 58	18 11	6 58	18 12	7 04	18 14	6 57	18 11	6 57	18 09
27	7 00	18 16	6 57	18 16	6 59	18 17	6 57	18 15	6 57	18 14	6 57	18 15	6 55	18 13	6 55	18 14	7 01	18 17	6 54	18 13	6 54	18 11
2 मार्च	6 55	18 19	6 54	18 19	6 55	18 20	6 53	18 18	6 52	18 17	6 53	18 18	6 51	18 16	6 51	18 17	6 56	18 20	6 50	18 16	6 49	18 14
5	6 51	18 22	6 50	18 21	6 51	18 22	6 49	18 20	6 48	18 19	6 49	18 20	6 47	18 19	6 47	18 19	6 52	18 22	6 46	18 18	6 46	18 17
8	6 48	18 24	6 47	18 23	6 47	18 24	6 45	18 22	6 45	18 21	6 46	18 22	6 44	18 21	6 44	18 21	6 49	18 24	6 43	18 20	6 42	18 19
11	6 44	18 26	6 43	18 25	6 44	18 26	6 42	18 24	6 41	18 24	6 42	18 24	6 40	18 23	6 40	18 23	6 45	18 27	6 39	18 22	6 38	18 21
14	6 40	18 28	6 39	18 27	6 40	18 28	6 38	18 26	6 37	18 26	6 38	18 27	6 36	18 25	6 37	18 25	6 41	18 29	6 36	18 24	6 35	18 23
17	6 36	18 30	6 35	18 29	6 36	18 30	6 34	18 28	6 34	18 28	6 35	18 29	6 33	18 27	6 33	18 27	6 37	18 31	6 32	18 26	6 31	18 25
20	6 33	18 33	6 32	18 31	6 33	18 32	6 31	18 31	6 30	18 30	6 31	18 31	6 29	18 29	6 29	18 29	6 33	18 33	6 28	18 28	6 27	18 27

नगर	काँगड़ा		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मण्डी		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशैहर	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
मार्च	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
23	6 29	18 35	6 28	18 34	6 29	18 34	6 27	18 32	6 26	18 32	6 27	18 33	6 25	18 31	6 26	18 31	6 29	18 35	6 25	18 30	6 23	18 29
26	6 25	18 37	6 24	18 36	6 25	18 36	6 23	18 34	6 22	18 34	6 23	18 35	6 21	18 33	6 22	18 33	6 25	18 37	6 21	18 32	6 20	18 31
29	6 21	18 39	6 20	18 38	6 21	18 38	6 19	18 36	6 18	18 36	6 19	18 37	6 18	18 35	6 18	18 35	6 21	18 39	6 17	18 34	6 16	18 33
2 अप्रै.	6 16	18 41	6 15	18 40	6 16	18 41	6 14	18 39	6 13	18 39	6 14	18 39	6 13	18 37	6 14	18 37	6 16	18 42	6 13	18 36	6 11	18 36
5	6 12	18 43	6 12	18 42	6 12	18 43	6 11	18 41	6 10	18 41	6 10	18 41	6 09	18 39	6 09	18 39	6 12	18 44	6 09	18 38	6 07	18 38
8	6 08	18 46	6 08	18 44	6 09	18 45	6 07	18 43	6 06	18 43	6 07	18 43	6 05	18 41	6 06	18 41	6 09	18 47	6 05	18 40	6 03	18 40
11	6 05	18 48	6 04	18 46	6 05	18 47	6 03	18 45	6 02	18 45	6 03	18 45	6 02	18 43	6 02	18 43	6 05	18 49	6 02	18 42	6 00	18 42
14	6 01	18 50	6 01	18 48	6 02	18 49	6 00	18 47	5 59	18 47	6 00	18 47	5 58	18 45	5 59	18 45	6 01	18 51	5 58	18 44	5 56	18 44
17	5 58	18 52	5 57	18 50	5 58	18 51	5 56	18 49	5 55	18 49	5 56	18 49	5 55	18 47	5 56	18 47	5 58	18 53	5 55	18 46	5 53	18 46
20	5 54	18 54	5 54	18 52	5 55	18 53	5 53	18 51	5 52	18 51	5 53	18 52	5 52	18 49	5 52	18 49	5 54	18 55	5 52	18 48	5 49	18 48
23	5 51	18 56	5 51	18 54	5 52	18 55	5 50	18 53	5 49	18 53	5 50	18 54	5 49	18 51	5 49	18 51	5 51	18 57	5 49	18 50	5 46	18 50
26	5 48	18 58	5 47	18 57	5 49	18 57	5 47	18 55	5 46	18 55	5 46	18 56	5 45	18 53	5 46	18 53	5 48	18 59	5 46	18 52	5 43	18 52
29	5 45	19 00	5 45	18 59	5 46	18 59	5 44	18 57	5 43	18 57	5 43	18 58	5 43	18 55	5 43	18 55	5 45	19 02	5 43	18 54	5 40	18 54
2 मई	5 42	19 02	5 41	19 01	5 43	19 01	5 41	18 59	5 40	18 59	5 41	19 00	5 40	18 57	5 40	18 57	5 42	19 04	5 40	18 56	5 37	18 56
4	5 40	19 04	5 40	19 02	5 41	19 03	5 38	19 01	5 38	19 00	5 39	19 01	5 38	18 59	5 39	18 58	5 40	19 05	5 38	18 57	5 36	18 57
7	5 37	19 06	5 37	19 04	5 38	19 05	5 36	19 03	5 35	19 03	5 36	19 03	5 35	19 01	5 36	19 01	5 37	19 07	5 36	18 59	5 33	18 59
10	5 35	19 08	5 35	19 06	5 36	19 07	5 34	19 05	5 33	19 05	5 34	19 05	5 33	19 03	5 34	19 03	5 35	19 10	5 34	19 01	5 31	19 01
13	5 33	19 10	5 33	19 08	5 34	19 09	5 32	19 07	5 31	19 07	5 32	19 08	5 31	19 05	5 32	19 05	5 32	19 12	5 32	19 03	5 29	19 03
16	5 31	19 12	5 31	19 10	5 32	19 11	5 30	19 09	5 29	19 09	5 30	19 10	5 29	19 07	5 30	19 07	5 30	19 14	5 30	19 05	5 27	19 06
19	5 29	19 14	5 29	19 12	5 30	19 13	5 28	19 11	5 27	19 11	5 28	19 12	5 27	19 09	5 28	19 09	5 28	19 16	5 28	19 07	5 25	19 08
22	5 27	19 16	5 27	19 14	5 29	19 15	5 27	19 13	5 25	19 13	5 26	19 14	5 26	19 11	5 26	19 10	5 27	19 18	5 26	19 09	5 23	19 09
25	5 26	19 18	5 26	19 16	5 27	19 17	5 26	19 15	5 24	19 15	5 25	19 16	5 24	19 12	5 25	19 12	5 25	19 20	5 25	19 11	5 22	19 11
28	5 25	19 20	5 25	19 18	5 26	19 19	5 24	19 16	5 23	19 17	5 24	19 17	5 23	19 14	5 24	19 14	5 24	19 22	5 24	19 12	5 21	19 13
31	5 24	19 22	5 24	19 20	5 25	19 20	5 23	19 18	5 22	19 18	5 23	19 19	5 22	19 16	5 23	19 16	5 23	19 24	5 23	19 14	5 20	19 15
3 जून	5 23	19 24	5 23	19 22	5 24	19 22	5 23	19 20	5 21	19 20	5 22	19 21	5 22	19 18	5 22	19 17	5 22	19 25	5 22	19 16	5 19	19 17
6	5 22	19 25	5 22	19 23	5 24	19 24	5 22	19 23	5 21	19 21	5 22	19 22	5 21	19 19	5 22	19 19	5 22	19 27	5 22	19 17	5 19	19 18
9	5 22	19 26	5 22	19 24	5 24	19 25	5 22	19 22	5 20	19 23	5 21	19 24	5 21	19 20	5 22	19 20	5 22	19 28	5 22	19 19	5 18	19 19
12	5 22	19 28	5 22	19 26	5 24	19 26	5 22	19 24	5 20	19 24	5 21	19 25	5 21	19 22	5 22	19 21	5 21	19 30	5 22	19 20	5 18	19 21
15	5 22	19 29	5 22	19 27	5 24	19 27	5 22	19 25	5 21	19 25	5 21	19 26	5 21	19 23	5 22	19 22	5 22	19 31	5 22	19 21	5 18	19 22
18	5 23	19 30	5 23	19 28	5 24	19 28	5 23	19 26	5 21	19 26	5 22	19 27	5 21	19 24	5 22	19 23	5 22	19 32	5 22	19 22	5 19	19 23
21	5 23	19 30	5 23	19 28	5 25	19 29	5 23	19 27	5 21	19 27	5 22	19 28	5 22	19 24	5 23	19 24	5 24	19 32	5 23	19 22	5 19	19 23
24	5 24	19 31	5 24	19 29	5 25	19 29	5 24	19 27	5 22	19 27	5 23	19 28	5 23	19 25	5 24	19 25	5 25	19 33	5 24	19 23	5 20	19 24
27	5 25	19 31	5 25	19 29	5 26	19 30	5 25	19 27	5 23	19 28	5 24	19 28	5 24	19 25	5 24	19 25	5 25	19 33	5 25	19 23	5 21	19 24
30	5 26	19 31	5 26	19 29	5 27	19 30	5 26	19 27	5 24	19 28	5 25	19 28	5 25	19 25	5 26	19 25	5 25	19 33	5 26	19 23	5 22	19 24
3 जुला	5 27	19 31	5 27	19 29	5 29	19 30	5 27	19 27	5 25	19 27	5 26	19 28	5 26	19 25	5 27	19 25	5 25	19 33	5 27	19 23	5 23	19 24
6	5 29	19 31	5 29	19 29	5 30	19 29	5 28	19 27	5 27	19 27	5 28	19 28	5 27	19 25	5 28	19 25	5 25	19 32	5 28	19 23	5 25	19 24
9	5 30	19 30	5 30	19 28	5 32	19 29	5 30	19 26	5 28	19 27	5 29	19 27	5 29	19 24	5 30	19 24	5 24	19 32	5 30	19 22	5 26	19 23
12	5 32	19 29	5 32	19 27	5 33	19 28	5 31	19 26	5 30	19 26	5 31	19 26	5 30	19 23	5 31	19 23	5 23	19 31	5 31	19 22	5 28	19 22

नगर	काँगड़ा		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मण्डी		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशैहर	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जुलाई	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	5 33	19 28	5 33	19 26	5 35	19 27	5 33	19 25	5 32	19 25	5 32	19 25	5 32	19 22	5 33	19 22	5 33	19 30	5 33	19 21	5 29	19 21
18	5 35	19 27	5 35	19 25	5 36	19 25	5 35	19 23	5 33	19 23	5 34	19 24	5 34	19 21	5 34	19 21	5 35	19 29	5 34	19 19	5 31	19 20
21	5 37	19 25	5 37	19 23	5 38	19 24	5 37	19 22	5 35	19 22	5 36	19 23	5 36	19 20	5 36	19 19	5 37	19 27	5 36	19 18	5 33	19 19
24	5 39	19 24	5 39	19 22	5 40	19 22	5 39	19 20	5 37	19 20	5 38	19 21	5 37	19 18	5 38	19 18	5 39	19 25	5 38	19 16	5 35	19 17
27	5 41	19 22	5 41	19 20	5 42	19 20	5 40	19 18	5 38	19 18	5 40	19 19	5 39	19 16	5 40	19 16	5 41	19 23	5 40	19 14	5 37	19 15
30	5 43	19 19	5 43	19 18	5 44	19 18	5 42	19 16	5 41	19 16	5 42	19 17	5 41	19 14	5 42	19 14	5 43	19 21	5 42	19 12	5 39	19 13
2 अग.	5 45	19 17	5 45	19 15	5 46	19 16	5 44	19 14	5 43	19 14	5 44	19 15	5 43	19 12	5 44	19 12	5 45	19 19	5 43	19 10	5 41	19 10
5	5 47	19 15	5 47	19 13	5 48	19 13	5 46	19 11	5 44	19 11	5 46	19 12	5 45	19 09	5 46	19 09	5 47	19 16	5 45	19 08	5 42	19 08
8	5 49	19 12	5 48	19 10	5 50	19 11	5 48	19 09	5 47	19 18	5 48	19 09	5 47	19 07	5 47	19 07	5 49	19 13	5 47	19 05	5 44	19 05
11	5 51	19 09	5 50	19 07	5 52	19 08	5 50	19 06	5 49	19 06	5 50	19 06	5 49	19 04	5 49	19 04	5 51	19 10	5 49	19 02	5 46	19 02
14	5 53	19 06	5 52	19 04	5 54	19 05	5 52	19 03	5 51	19 03	5 51	19 03	5 51	19 01	5 51	19 01	5 53	19 07	5 51	19 00	5 48	18 59
17	5 55	19 03	5 54	19 01	5 55	19 02	5 54	19 00	5 53	18 59	5 53	19 00	5 52	18 58	5 53	18 58	5 55	19 04	5 53	18 56	5 50	18 56
20	5 57	18 59	5 56	18 58	5 57	19 00	5 56	18 56	5 54	18 56	5 55	18 57	5 54	18 54	5 55	18 55	5 57	19 01	5 54	18 53	5 52	18 53
23	5 59	18 56	5 58	18 54	5 59	18 55	5 57	18 53	5 56	18 53	5 57	18 54	5 56	18 51	5 57	18 51	5 59	18 57	5 56	18 50	5 54	18 50
26	6 00	18 52	6 00	18 51	6 01	18 52	5 59	18 50	5 58	18 49	5 59	18 50	5 58	18 48	5 58	18 48	6 01	18 53	5 58	18 47	5 56	18 46
29	6 02	18 49	6 02	18 47	6 03	18 48	6 01	18 46	6 00	18 46	6 01	18 46	6 00	18 44	6 00	18 44	6 03	18 50	6 00	18 43	5 58	18 43
1 सितं.	6 04	18 45	6 03	18 44	6 05	18 44	6 03	18 42	6 02	18 42	6 03	18 43	6 01	18 40	6 02	18 41	6 04	18 46	6 01	18 40	5 59	18 39
4	6 06	18 41	6 05	18 40	6 06	18 41	6 05	18 39	6 04	18 38	6 05	18 39	6 03	18 37	6 04	18 37	6 06	18 42	6 03	18 36	6 01	18 35
7	6 08	18 37	6 07	18 36	6 08	18 37	6 06	18 35	6 06	18 34	6 06	18 35	6 05	18 33	6 05	18 33	6 08	18 38	6 05	18 32	6 03	18 31
10	6 10	18 33	6 09	18 32	6 10	18 33	6 08	18 31	6 07	18 30	6 08	18 31	6 07	18 29	6 07	18 29	6 10	18 34	6 06	18 28	6 05	18 28
13	6 12	18 29	6 11	18 28	6 12	18 29	6 10	18 27	6 09	18 27	6 10	18 27	6 08	18 25	6 09	18 26	6 12	18 30	6 08	18 25	6 06	18 24
16	6 13	18 25	6 13	18 26	6 14	18 25	6 12	18 23	6 11	18 23	6 12	18 23	6 10	18 22	6 10	18 22	6 14	18 26	6 10	18 21	6 08	18 20
19	6 15	18 21	6 14	18 20	6 15	18 21	6 14	18 19	6 13	18 19	6 14	18 20	6 12	18 18	6 12	18 18	6 16	18 22	6 11	18 17	6 10	18 16
22	6 17	18 17	6 16	18 16	6 17	18 17	6 15	18 15	6 15	18 15	6 15	18 16	6 14	18 14	6 14	18 14	6 18	18 18	6 13	18 13	6 12	18 12
25	6 19	18 13	6 18	18 12	6 19	18 13	6 17	18 12	6 16	18 11	6 17	18 12	6 15	18 10	6 16	18 10	6 20	18 14	6 15	18 09	6 14	18 08
28	6 21	18 10	6 20	18 09	6 21	18 10	6 19	18 08	6 18	18 07	6 19	18 08	6 17	18 06	6 17	18 06	6 22	18 10	6 17	18 06	6 15	18 04
1 अक्तू	6 23	18 06	6 22	18 05	6 23	18 06	6 21	18 04	6 20	18 03	6 21	18 04	6 19	18 02	6 19	18 03	6 24	18 06	6 18	18 02	6 17	18 00
4	6 25	18 02	6 24	18 01	6 25	18 02	6 23	18 00	6 22	17 59	6 23	18 00	6 21	17 59	6 21	18 00	6 26	18 02	6 20	17 58	6 19	17 57
7	6 27	17 58	6 26	17 57	6 27	17 58	6 25	17 56	6 24	17 55	6 25	17 56	6 23	17 55	6 23	17 55	6 28	17 58	6 22	17 55	6 21	17 53
10	6 29	17 54	6 28	17 54	6 29	17 55	6 27	17 53	6 26	17 52	6 27	17 53	6 25	17 51	6 25	17 52	6 30	17 55	6 24	17 51	6 23	17 49
13	6 31	17 51	6 30	17 50	6 31	17 51	6 29	17 50	6 28	17 48	6 29	17 49	6 27	17 48	6 27	17 48	6 32	17 51	6 26	17 48	6 25	17 46
16	6 33	17 47	6 32	17 46	6 33	17 48	6 31	17 45	6 30	17 45	6 31	17 46	6 29	17 44	6 29	17 45	6 34	17 47	6 28	17 44	6 27	17 42
19	6 35	17 44	6 34	17 43	6 35	17 44	6 33	17 42	6 32	17 41	6 33	17 42	6 31	17 41	6 31	17 42	6 36	17 46	6 30	17 41	6 29	17 39
22	6 38	17 40	6 36	17 40	6 37	17 41	6 35	17 39	6 35	17 38	6 35	17 39	6 33	17 38	6 33	17 38	6 39	17 41	6 32	17 38	6 32	17 36
25	6 40	17 37	6 39	17 37	6 39	17 38	6 37	17 36	6 37	17 35	6 38	17 36	6 35	17 35	6 35	17 35	6 41	17 37	6 34	17 35	6 34	17 33
28	6 42	17 34	6 41	17 34	6 42	17 35	6 40	17 33	6 39	17 32	6 40	17 33	6 38	17 32	6 38	17 33	6 44	17 34	6 36	17 32	6 36	17 30
31	6 45	17 32	6 43	17 31	6 44	17 32	6 42	17 31	6 42	17 30	6 42	17 30	6 40	17 29	6 40	17 30	6 46	17 32	6 39	17 30	6 39	17 27
3 नवं.	6 47	17 29	6 46	17 29	6 46	17 30	6 44	17 28	6 44	17 27	6 45	17 28	6 42	17 27	6 42	17 27	6 49	17 29	6 41	17 27	6 41	17 25

नगर	काँगड़ा		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मण्डी		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशैहर	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
नवंबर	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
6	6 50	17 27	6 48	17 26	6 49	17 28	6 47	17 26	6 47	17 25	6 47	17 25	6 45	17 25	6 45	17 25	6 51	17 27	6 43	17 25	6 43	17 22
9	6 53	17 24	6 51	17 24	6 51	17 25	6 49	17 24	6 49	17 23	6 50	17 23	6 47	17 23	6 47	17 23	6 54	17 24	6 46	17 23	6 46	17 20
12	6 55	17 23	6 53	17 22	6 54	17 24	6 52	17 22	6 52	17 21	6 53	17 21	6 50	17 21	6 50	17 21	6 57	17 22	6 48	17 21	6 49	17 18
15	6 58	17 21	6 56	17 21	6 57	17 22	6 54	17 20	6 54	17 19	6 55	17 20	6 52	17 19	6 52	17 20	6 59	17 21	6 51	17 20	6 51	17 17
18	7 01	17 19	6 59	17 19	6 59	17 21	6 57	17 19	6 57	17 17	6 58	17 18	6 55	17 18	6 55	17 18	7 02	17 19	6 53	17 18	6 54	17 15
21	7 03	17 18	7 01	17 18	7 02	17 19	7 00	17 18	7 00	17 16	7 01	17 17	6 58	17 17	6 57	17 17	7 05	17 18	6 56	17 17	6 56	17 14
24	7 06	17 17	7 04	17 17	7 05	17 18	7 02	17 17	7 02	17 15	7 03	17 16	7 00	17 16	7 00	17 16	7 07	17 17	6 59	17 16	6 59	17 13
27	7 08	17 17	7 07	17 16	7 09	17 18	7 05	17 16	7 05	17 15	7 06	17 16	7 03	17 15	7 03	17 16	7 10	17 16	7 01	17 16	7 02	17 12
30	7 11	17 16	7 09	17 16	7 10	17 17	7 07	17 16	7 07	17 14	7 08	17 15	7 05	17 15	7 05	17 15	7 13	17 16	7 04	17 15	7 04	17 12
3 दिसं	7 14	17 16	7 11	17 16	7 12	17 17	7 10	17 16	7 10	17 14	7 11	17 15	7 08	17 15	7 07	17 15	7 15	17 16	7 06	17 15	7 07	17 12
6	7 16	17 16	7 14	17 16	7 14	17 17	7 12	17 16	7 12	17 14	7 13	17 15	7 10	17 15	7 10	17 15	7 18	17 16	7 08	17 15	7 09	17 12
9	7 18	17 16	7 16	17 16	7 17	17 18	7 14	17 16	7 15	17 15	7 15	17 16	7 12	17 15	7 12	17 16	7 20	17 16	7 10	17 16	7 11	17 13
12	7 20	17 17	7 18	17 17	7 19	17 19	7 17	17 17	7 17	17 15	7 17	17 16	7 14	17 16	7 14	17 17	7 22	17 17	7 13	17 17	7 13	17 13
15	7 22	17 18	7 20	17 18	7 21	17 19	7 18	17 18	7 19	17 16	7 19	17 17	7 16	17 17	7 16	17 18	7 24	17 17	7 14	17 18	7 15	17 14
18	7 24	17 19	7 22	17 19	7 23	17 21	7 20	17 19	7 20	17 17	7 21	17 18	7 18	17 18	7 18	17 19	7 26	17 19	7 16	17 19	7 17	17 15
21	7 26	17 21	7 24	17 21	7 24	17 22	7 22	17 20	7 22	17 19	7 23	17 20	7 20	17 19	7 19	17 20	7 27	17 20	7 18	17 20	7 19	17 17
24	7 27	17 22	7 25	17 22	7 26	17 24	7 23	17 22	7 23	17 20	7 24	17 21	7 21	17 21	7 21	17 22	7 29	17 22	7 19	17 22	7 20	17 18
27	7 28	17 24	7 26	17 24	7 27	17 25	7 24	17 24	7 25	17 22	7 25	17 23	7 22	17 23	7 22	17 23	7 30	17 23	7 20	17 23	7 21	17 20
30	7 29	17 26	7 27	17 26	7 28	17 27	7 25	17 25	7 26	17 24	7 26	17 25	7 23	17 25	7 23	17 26	7 31	17 26	7 21	17 25	7 22	17 22

हिमाचल प्रदेश के अन्य नगरों के लिए संस्कार सारिणी

काँगड़ा

नगर	संस्कार (मिं. सैं.)
धर्मशाला	+ ० २०
नूरपुर	+ १ २८
नगरोटा	+ ० ०४
खजियार	+ १ १२
ज्वालामुखी	+ ० १२
सरकाघाट	+ ० ०४
पालमपुर	– ० ४०
भुन्तर	– ३ ०४
बैजनाथ	– ० ५२

हमीरपुर

नगर	संस्कार (मिं. सैं.)
नादौन	+ ० ३२
सुजानपुरटिहरी	+ ० ०४

ऊना

नगर	संस्कार (मिं. सैं.)
गगरेट	+ १ ००
अम्ब	+ ० ४८
दौलतपुर	+ १ २०
चिन्तपूर्णी	+ ० ५६

बिलासपुर

नगर	संस्कार (मिं. सैं.)
घुमारवीं	+ ० ३६
भाखड़ा	+ १ २०
नैना देवी	+ १ १६

मण्डी

नगर	संस्कार (मिं. सैं.)
जोगिन्द्रनगर	+ ० ५२
सुन्दरनगर	+ ० २०
करसोग	– १ ०४
किन्नोर	– ५ २८
कुल्लू	– ० ३२

मण्डी

नगर	संस्कार (मिं. सैं.)
मनाली	– १ २४
बंजार	– १ २८
अनी	– ० ५६
निरमण्ड	– २ २४

शिमला

नगर	संस्कार (मिं. सैं.)
तारादेवी	+ ० १२
नारकण्डा	– १ ००
कुमारसेन	– १ ३६

शिमला

नगर	संस्कार (मिं. सैं.)
कोटखाई	– १ ३२
रोहड़ू	– २ ०४

सोलन

नगर	संस्कार (मिं. सैं.)
सपाटू	+ ० ३२
परवाणू	+ ० १६
कसौली	+ ० २८
अर्की	+ ० ४०
नालागढ़	+ ३ ०८

चम्बा

नगर	संस्कार (मिं. सैं.)
बनीखेत	+ ० ४८
डलहौज़ी	– ० ४०
लाहौल स्पीति	– ३ २४
त्रिलोकनाथ	–३ ३४

नाहन

नगर	संस्कार (मिं. सैं.)
पौंटा साहिब	+ १ ०८
राजगढ़	– ० १२

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

वैशाख (अप्रैल-मई)

अप्रैल	वैशाख प्रवि.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
13	१	७ ३५	९ २९	११ ४३	१४ ०६	१६ २५	१८ ४३	२१ ०५	२३ २५	१ ३०	३ ११	४ ३६	५ ५८
14	२	७ ३१	९ २५	११ ३९	१४ ०२	१६ २१	१८ ३९	२१ ०१	२३ २१	१ २६	३ ०७	४ ३२	५ ५४
15	३	७ २७	९ २१	११ ३६	१३ ५८	१६ १७	१८ ३५	२० ५७	२३ १७	१ २२	३ ०३	४ २८	५ ५०
16	४	७ २३	९ १७	११ ३२	१३ ५४	१६ १३	१८ ३१	२० ५३	२३ १३	१ १८	२ ५९	४ २४	५ ४६
17	५	७ १९	९ १३	११ २८	१३ ५१	१६ १०	१८ २७	२० ४९	२३ ०९	१ १४	२ ५५	४ २०	५ ४२
18	६	७ १५	९ १०	११ २४	१३ ४७	१६ ०६	१८ २४	२० ४५	२३ ०५	१ १०	२ ५१	४ १६	५ ३८
19	७	७ ११	९ ०६	११ २०	१३ ४३	१६ ०२	१८ २०	२० ४१	२३ ०१	१ ०६	२ ४७	४ १२	५ ३४
20	८	७ ०७	९ ०२	११ १६	१३ ३९	१५ ५८	१८ १६	२० ३७	२२ ५७	१ ०२	२ ४३	४ ०८	५ ३०
21	९	७ ०३	८ ५८	११ १२	१३ ३५	१५ ५४	१८ १२	२० ३३	२२ ५४	० ५८	२ ३९	४ ०४	५ २६
22	१०	६ ५९	८ ५४	११ ०९	१३ ३१	१५ ५०	१८ ०८	२० २९	२२ ५०	० ५४	२ ३५	४ ००	५ २२
23	११	६ ५५	८ ५०	११ ०५	१३ २७	१५ ४६	१८ ०४	२० २६	२२ ४६	० ५०	२ ३१	३ ५६	५ १८
24	१२	६ ५१	८ ४६	११ ०१	१३ २३	१५ ४३	१८ ००	२० २२	२२ ४२	० ४६	२ २७	३ ५२	५ १५
25	१३	६ ४७	८ ४२	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५६	२० १८	२२ ३८	० ४२	२ २३	३ ४८	५ ११
26	१४	६ ४३	८ ३८	१० ५३	१३ १५	१५ ३५	१७ ५२	२० १४	२२ ३४	० ३८	२ २०	३ ४४	५ ०७
27	१५	६ ४०	८ ३४	१० ४९	१३ ११	१५ ३१	१७ ४८	२० १०	२२ ३०	० ३४	२ १६	३ ४०	५ ०३
28	१६	६ ३६	८ ३०	१० ४५	१३ ०८	१५ २८	१७ ४४	२० ०६	२२ २६	० ३०	२ १२	३ ३६	४ ५९
29	१७	६ ३२	८ २६	१० ४१	१३ ०४	१५ २४	१७ ४०	२० ०२	२२ २२	० २६	२ ०८	३ ३२	४ ५५
30	१८	६ २८	८ २२	१० ३७	१३ ००	१५ २०	१७ ३७	१९ ५८	२२ १८	० २२	२ ०४	३ २८	४ ५१
मई	१९	६ २४	८ १८	१० ३३	१२ ५६	१५ १६	१७ ३३	१९ ५४	२२ १४	० १८	२ ००	३ २५	४ ४७
2	२०	६ २०	८ १४	१० २९	१२ ५२	१५ १२	१७ २९	१९ ५०	२२ १०	० १४	१ ५६	३ २१	४ ४४
3	२१	६ १६	८ १०	१० २५	१२ ४८	१५ ०८	१७ २५	१९ ४६	२२ ०६	० ११	१ ५२	३ १७	४ ४०
4	२२	६ १२	८ ०६	१० २१	१२ ४४	१५ ०४	१७ २१	१९ ४२	२२ ०२	० ०७	१ ४८	३ १३	४ ३६
5	२३	६ ०८	८ ०२	१० १७	१२ ४०	१५ ००	१७ १७	१९ ३८	२१ ५८	० ०३	१ ४४	३ ०९	४ ३२
6	२४	६ ०४	७ ५८	१० १३	१२ ३६	१४ ५६	१७ १३	१९ ३४	२१ ५४	२३ ५९	१ ४०	३ ०५	४ २८
7	२५	६ ००	७ ५४	१० ०९	१२ ३२	१४ ५२	१७ ०९	१९ ३०	२१ ५०	२३ ५५	१ ३६	३ ०१	४ २४
8	२६	५ ५६	७ ५०	१० ०५	१२ २८	१४ ४८	१७ ०५	१९ २६	२१ ४६	२३ ५१	१ ३२	२ ५७	४ २०
9	२७	५ ५२	७ ४६	१० ०१	१२ २४	१४ ४४	१७ ०१	१९ २२	२१ ४२	२३ ४७	१ २८	२ ५३	४ १६
10	२८	५ ४८	७ ४२	९ ५७	१२ २०	१४ ४०	१६ ५७	१९ १८	२१ ३८	२३ ४३	१ २४	२ ४९	४ १२
11	२९	५ ४४	७ ३९	९ ५३	१२ १६	१४ ३६	१६ ५३	१९ १४	२१ ३४	२३ ३९	१ २०	२ ४५	४ ०८
12	३०	५ ४०	७ ३५	९ ४९	१२ १२	१४ ३२	१६ ४९	१९ १०	२१ ३०	२३ ३५	१ १६	२ ४१	४ ०४
13	३१	५ ३६	७ ३१	९ ४५	१२ ०९	१४ २८	१६ ४५	१९ ०६	२१ २६	२३ ३१	१ १२	२ ३७	४ ००
14	ज्ये.	५ ३३	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

ज्येष्ठ (मई-जून)

मई	ज्येष्ठ प्रवि.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	७ २७	९ ४२	१२ ०५	१४ २४	१६ ४२	१९ ०३	२१ २३	२३ २७	१ ०५	२ ३३	३ ५६	५ २९
15	२	७ २३	९ ३८	१२ ०१	१४ २०	१६ ३८	१८ ५९	२१ १९	२३ २३	१ ०४	२ २९	३ ५२	५ २५
16	३	७ १९	९ ३४	११ ५७	१४ १६	१६ ३४	१८ ५५	२१ १५	२३ १९	१ ००	२ २५	३ ४८	५ २१
17	४	७ १६	९ ३०	११ ५३	१४ १२	१६ ३०	१८ ५१	२१ ११	२३ १५	० ५६	२ २१	३ ४४	५ १७
18	५	७ १२	९ २६	११ ४९	१४ ०८	१६ २६	१८ ४७	२१ ०७	२३ ११	० ५२	२ १७	३ ४०	५ १३
19	६	७ ०८	९ २२	११ ४५	१४ ०४	१६ २२	१८ ४३	२१ ०३	२३ ०८	० ४९	२ १३	३ ३६	५ ०९
20	७	७ ०४	९ १८	११ ४१	१४ ००	१६ १८	१८ ३९	२० ५९	२३ ०४	० ४५	२ १०	३ ३२	५ ०५
21	८	७ ००	९ १४	११ ३७	१३ ५६	१६ १४	१८ ३५	२० ५५	२३ ००	० ४१	२ ०६	३ २८	५ ०१
22	९	६ ५६	९ १०	११ ३३	१३ ५२	१६ १०	१८ ३१	२० ५१	२२ ५६	० ३७	२ ०२	३ २४	४ ५७
23	१०	६ ५३	९ ०७	११ ३०	१३ ४९	१६ ०७	१८ २८	२० ४८	२२ ५३	० ३४	१ ५८	३ २१	४ ५४
24	११	६ ४९	९ ०३	११ २६	१३ ४५	१६ ०३	१८ २४	२० ४४	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १७	४ ५०
25	१२	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ २०	२० ४०	२२ ४५	० २६	१ ५१	३ १३	४ ४६
26	१३	६ ४१	८ ५५	११ १८	१३ ३७	१५ ५५	१८ १६	२० ३६	२२ ४१	० २२	१ ४७	३ ०९	४ ४२
27	१४	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३३	१५ ५१	१८ १२	२० ३२	२२ ३७	० १८	१ ४३	३ ०५	४ ३८
28	१५	६ ३३	८ ४७	११ १०	१३ २९	१५ ४७	१८ ०८	२० २८	२२ ३३	० १४	१ ३९	३ ०१	४ ३४
29	१६	६ २९	८ ४३	११ ०६	१३ २५	१५ ४३	१८ ०४	२० २४	२२ २९	० १०	१ ३५	२ ५७	४ ३०
30	१७	६ २५	८ ३९	११ ०२	१३ २१	१५ ३९	१८ ००	२० २०	२२ २५	० ०६	१ ३१	२ ५३	४ २६
31	१८	६ २१	८ ३५	१० ५८	१३ १७	१५ ३५	१७ ५६	२० १६	२२ २१	० ०२	१ २७	२ ४९	४ २२
जून	१९	६ १७	८ ३१	१० ५४	१३ १३	१५ ३१	१७ ५२	२० १२	२२ १७	२३ ५८	१ २३	२ ४५	४ १८
2	२०	६ १३	८ २७	१० ५०	१३ ०९	१५ २७	१७ ४८	२० ०८	२२ १३	२३ ५४	१ १९	२ ४१	४ १४
3	२१	६ ०९	८ २३	१० ४६	१३ ०५	१५ २३	१७ ४४	२० ०४	२२ ०९	२३ ५०	१ १५	२ ३६	४ १०
4	२२	६ ०५	८ १९	१० ४२	१३ ०१	१५ १९	१७ ४०	२० ००	२२ ०५	२३ ४६	१ ११	२ ३३	४ ०६
5	२३	६ ०१	८ १५	१० ३८	१२ ५७	१५ १५	१७ ३६	१९ ५६	२२ ०१	२३ ४२	१ ०७	२ २९	४ ०२
6	२४	५ ५७	८ १२	१० ३५	१२ ५४	१५ १२	१७ ३३	१९ ५३	२१ ५८	२३ ३९	१ ०३	२ २६	३ ५८
7	२५	५ ५३	८ ०८	१० ३१	१२ ५०	१५ ०८	१७ २९	१९ ४९	२१ ५४	२३ ३५	० ५९	२ २२	३ ५५
8	२६	५ ४९	८ ०४	१० २७	१२ ४६	१५ ०४	१७ २५	१९ ४५	२१ ५०	२३ ३१	० ५५	२ १८	३ ५१
9	२७	५ ४५	८ ००	१० २३	१२ ४२	१५ ००	१७ २१	१९ ४१	२१ ४६	२३ २७	० ५१	२ १४	३ ४७
10	२८	५ ४१	७ ५६	१० १९	१२ ३८	१४ ५६	१७ १७	१९ ३७	२१ ४२	२३ २३	० ४७	२ १०	३ ४३
11	२९	५ ३७	७ ५२	१० १५	१२ ३४	१४ ५२	१७ १३	१९ ३३	२१ ३८	२३ १९	० ४३	२ ०६	३ ३९
12	३०	५ ३३	७ ४८	१० ११	१२ ३०	१४ ४८	१७ ०९	१९ २९	२१ ३४	२३ १५	० ३९	२ ०२	३ ३५
13	३१	५ २९	७ ४४	१० ०७	१२ २६	१४ ४४	१७ ०५	१९ २५	२१ ३०	२३ ११	० ३५	१ ५८	३ ३१
14	३२	५ २५	७ ४०	१० ०३	१२ २२	१४ ४०	१७ ०१	१९ २१	२१ २६	२३ ०७	० ३१	१ ५४	३ २७
15	आ	५ २१	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

दैनिक लग्नसारणी–शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

आषाढ़ (जून-जुलाई)

जून	आषाढ़	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	१	७ ३६	९ ५९	१२ १८	१४ ३६	१६ ५७	१९ १७	२१ २२	२३ ०३	० २८	१ ५०	३ २३	५ १८
16	२	७ ३२	९ ५५	१२ १४	१४ ३२	१६ ५३	१९ १३	२१ १८	२२ ५९	० २४	१ ४६	३ १९	५ १४
17	३	७ २८	९ ५१	१२ १०	१४ २८	१६ ४९	१९ ०९	२१ १४	२२ ५५	० २०	१ ४२	३ १५	५ १०
18	४	७ २४	९ ४७	१२ ०६	१४ २४	१६ ४५	१९ ०५	२१ १०	२२ ५१	० १६	१ ३८	३ ११	५ ०६
19	५	७ २०	९ ४३	१२ ०२	१४ २०	१६ ४१	१९ ०१	२१ ०६	२२ ४७	० १२	१ ३४	३ ०७	५ ०२
20	६	७ १६	९ ३९	११ ५८	१४ १६	१६ ३७	१८ ५७	२१ ०२	२२ ४३	० ०८	१ ३०	३ ०३	४ ५८
21	७	७ १२	९ ३५	११ ५४	१४ १२	१६ ३३	१८ ५३	२० ५८	२२ ३९	० ०४	१ २६	२ ५९	४ ५४
22	८	७ ०९	९ ३१	११ ५०	१४ ०८	१६ २९	१८ ४९	२० ५४	२२ ३५	० ००	१ २२	२ ५५	४ ५०
23	९	७ ०५	९ २७	११ ४६	१४ ०४	१६ २५	१८ ४५	२० ५०	२२ ३१	२३ ५६	१ १८	२ ५१	४ ४६
24	१०	७ ०१	९ २३	११ ४२	१४ ००	१६ २१	१८ ४१	२० ४६	२२ २७	२३ ५२	१ १४	२ ४७	४ ४२
25	११	६ ५७	९ १९	११ ३८	१३ ५६	१६ १७	१८ ३७	२० ४२	२२ २३	२३ ४८	१ १०	२ ४३	४ ३८
26	१२	६ ५३	९ १५	११ ३४	१३ ५२	१६ १३	१८ ३३	२० ३८	२२ १९	२३ ४४	१ ०६	२ ३९	४ ३४
27	१३	६ ४९	९ १२	११ ३१	१३ ४९	१६ १०	१८ ३०	२० ३५	२२ १६	२३ ४१	१ ०३	२ ३६	४ ३१
28	१४	६ ४५	९ ०८	११ २८	१३ ४५	१६ ०६	१८ २६	२० ३१	२२ १२	२३ ३७	० ५९	२ ३२	४ २७
29	१५	६ ४१	९ ०४	११ २३	१३ ४१	१६ ०२	१८ २२	२० २७	२२ ०८	२३ ३३	० ५५	२ २८	४ २३
30	१६	६ ३७	९ ००	११ १९	१३ ३७	१५ ५८	१८ १८	२० २३	२२ ०४	२३ २९	० ५१	२ २४	४ १९
जुला	१७	६ ३३	८ ५६	११ १५	१३ ३३	१५ ५४	१८ १४	२० १९	२२ ००	२३ २५	० ४७	२ २०	४ १५
2	१८	६ २९	८ ५२	११ ११	१३ २९	१५ ५०	१८ १०	२० १५	२१ ५६	२३ २१	० ४३	२ १६	४ ११
3	१९	६ २५	८ ४८	११ ०७	१३ २५	१५ ४६	१८ ०६	२० ११	२१ ५२	२३ १७	० ३९	२ १२	४ ०७
4	२०	६ २१	८ ४४	११ ०३	१३ २१	१५ ४२	१८ ०२	२० ०७	२१ ४८	२३ १३	० ३५	२ ०८	४ ०३
5	२१	६ १७	८ ४०	१० ५९	१३ १७	१५ ३८	१७ ५८	२० ०३	२१ ४४	२३ ०९	० ३२	२ ०५	३ ५९
6	२२	६ १३	८ ३६	१० ५५	१३ १३	१५ ३४	१७ ५४	१९ ५९	२१ ४०	२३ ०५	० २८	२ ०१	३ ५५
7	२३	६ १०	८ ३३	१० ५२	१३ १०	१५ ३१	१७ ५१	१९ ५६	२१ ३७	२३ ०२	० २५	१ ५८	३ ५२
8	२४	६ ०६	८ २९	१० ४८	१३ ०६	१५ २७	१७ ४७	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
9	२५	६ ०२	८ २५	१० ४४	१३ ०२	१५ २३	१७ ४३	१९ ४८	२१ २९	२२ ५४	० १७	१ ५०	३ ४४
10	२६	५ ५८	८ २१	१० ४०	१२ ५८	१५ १९	१७ ३९	१९ ४४	२१ २५	२२ ५०	० १३	१ ४६	३ ४०
11	२७	५ ५४	८ १७	१० ३६	१२ ५४	१५ १५	१७ ३५	१९ ४०	२१ २१	२२ ४६	० ०९	१ ४२	३ ३६
12	२८	५ ५०	८ १३	१० ३२	१२ ५०	१५ ११	१७ ३१	१९ ३६	२१ १७	२२ ४२	० ०५	१ ३८	३ ३२
13	२९	५ ४६	८ ०९	१० २८	१२ ४६	१५ ०७	१७ २७	१९ ३२	२१ १३	२२ ३८	० ०१	१ ३४	३ २८
14	३०	५ ४२	८ ०५	१० २४	१२ ४२	१५ ०३	१७ २३	१९ २८	२१ ०९	२२ ३४	२३ ५७	१ ३०	३ २४
15	३१	५ ३८	८ ०१	१० २०	१२ ३८	१४ ५९	१७ १९	१९ २४	२१ ०५	२२ ३०	२३ ५३	१ २६	३ २०
16	श्रा.	५ ३४	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

श्रावण (जुलाई-अगस्त)

जुलाई	श्रावण	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	७ ५७	१० १६	१२ ३४	१४ ५५	१७ १५	१९ २०	२१ ०१	२२ २६	२३ ४९	१ २२	३ १६	५ ३०
17	२	७ ५३	१० १२	१२ ३०	१४ ५१	१७ ११	१९ १६	२० ५७	२२ २२	२३ ४५	१ १८	३ १२	५ २६
18	३	७ ४९	१० ०८	१२ २६	१४ ४७	१७ ०७	१९ १२	२० ५३	२२ १८	२३ ४१	१ १४	३ ०८	५ २२
19	४	७ ४६	१० ०५	१२ २३	१४ ४४	१७ ०४	१९ ०९	२० ४९	२२ १५	२३ ३८	१ ११	३ ०४	५ १८
20	५	७ ४२	१० ०१	१२ १९	१४ ४०	१७ ००	१९ ०५	२० ४५	२२ ११	२३ ३४	१ ०७	३ ००	५ १४
21	६	७ ३८	९ ५७	१२ १५	१४ ३६	१६ ५६	१९ ०१	२० ४१	२२ ०७	२३ ३०	१ ०३	२ ५६	५ १०
22	७	७ ३४	९ ५३	१२ ११	१४ ३२	१६ ५२	१८ ५७	२० ३७	२२ ०३	२३ २६	० ५९	२ ५२	५ ०६
23	८	७ ३०	९ ४९	१२ ०७	१४ २८	१६ ४८	१८ ५३	२० ३३	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४८	५ ०२
24	९	७ २६	९ ४५	१२ ०३	१४ २४	१६ ४४	१८ ४९	२० २९	२१ ५५	२३ १८	० ५१	२ ४४	४ ५८
25	१०	७ २२	९ ४१	११ ५९	१४ २०	१६ ४०	१८ ४५	२० २५	२१ ५१	२३ १४	० ४७	२ ४०	४ ५४
26	११	७ १८	९ ३७	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४१	२० २२	२१ ४७	२३ १०	० ४३	२ ३६	४ ५०
27	१२	७ १४	९ ३३	११ ५१	१४ १३	१६ ३३	१८ ३७	२० १८	२१ ४३	२३ ०६	० ३९	२ ३२	४ ४६
28	१३	७ १०	९ २९	११ ४८	१४ ०९	१६ २९	१८ ३३	२० १४	२१ ३९	२३ ०२	० ३५	२ २८	४ ४३
29	१४	७ ०६	९ २५	११ ४४	१४ ०५	१६ २५	१८ २९	२० १०	२१ ३५	२२ ५८	० ३१	२ २४	४ ३९
30	१५	७ ०२	९ २१	११ ४०	१४ ०१	१६ २१	१८ २५	२० ०६	२१ ३१	२२ ५४	० २७	२ २१	४ ३५
31	१६	६ ५८	९ १७	११ ३६	१३ ५७	१६ १८	१८ २१	२० ०२	२१ २७	२२ ५०	० २३	२ १७	४ ३१
अग	१७	६ ५४	९ १३	११ ३२	१३ ५३	१६ १४	१८ १७	१९ ५८	२१ २३	२२ ४६	० १९	२ १३	४ २७
2	१८	६ ५०	९ ०९	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १३	१९ ५४	२१ १९	२२ ४२	० १५	२ ०९	४ २३
3	१९	६ ४६	९ ०५	११ २४	१३ ४५	१६ ०६	१८ ०९	१९ ५०	२१ १५	२२ ३८	० ११	२ ०५	४ १९
4	२०	६ ४२	९ ०२	११ २०	१३ ४१	१६ ०२	१८ ०५	१९ ४६	२१ ११	२२ ३५	० ०७	२ ०१	४ १५
5	२१	६ ३८	८ ५८	११ १७	१३ ३८	१५ ५८	१८ ०२	१९ ४३	२१ ०७	२२ ३२	० ०४	१ ५८	४ ११
6	२२	६ ३४	८ ५४	११ १३	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ०४	२२ २८	० ००	१ ५४	४ ०८
7	२३	६ ३१	८ ५०	११ ०९	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५४	१९ ३५	२१ ००	२२ २४	२३ ५६	१ ५०	४ ०४
8	२४	६ २७	८ ४६	११ ०५	१३ २६	१५ ४७	१७ ५०	१९ ३२	२० ५६	२२ २०	२३ ५२	१ ४६	४ ००
9	२५	६ २३	८ ४२	११ ०१	१३ २२	१५ ४३	१७ ४६	१९ २८	२० ५२	२२ १६	२३ ४८	१ ४२	३ ५६
10	२६	६ १९	८ ३८	१० ५७	१३ १८	१५ ३९	१७ ४२	१९ २४	२० ४८	२२ १२	२३ ४४	१ ३८	३ ५२
11	२७	६ १५	८ ३४	१० ५३	१३ १४	१५ ३५	१७ ३८	१९ २०	२० ४४	२२ ०८	२३ ४०	१ ३४	३ ४८
12	२८	६ ११	८ ३०	१० ४९	१३ १०	१५ ३१	१७ ३४	१९ १६	२० ४१	२२ ०४	२३ ३६	१ ३१	३ ४४
13	२९	६ ०७	८ २६	१० ४५	१३ ०६	१५ २७	१७ ३०	१९ १२	२० ३७	२२ ००	२३ ३२	१ २७	३ ४१
14	३०	६ ०३	८ २२	१० ४१	१३ ०२	१५ २३	१७ २६	१९ ०८	२० ३३	२१ ५६	२३ २८	१ २३	३ ३७
15	३१	५ ५९	८ १८	१० ३७	१२ ५८	१५ १९	१७ २२	१९ ०४	२० २९	२१ ५२	२३ २४	१ १९	३ ३३
16	भा.	५ ५५	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्नसारणी–शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

अगस्त	भाद्रपद	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
		भाद्रपद (अगस्त–सितम्बर)											
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ १४	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ १८	१९ ००	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९	५ ५१
17	२	८ १०	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १४	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
18	३	८ ०६	१० २६	१२ ४६	१५ ०७	१७ १०	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ०७	३ २१	५ ४३
19	४	८ ०२	१० २२	१२ ४२	१५ ०३	१७ ०६	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ०८	१ ०३	३ १७	५ ३९
20	५	७ ५९	१० १८	१२ ३९	१४ ५९	१७ ०२	१८ ४४	२० ०९	२१ ३२	२३ ०४	० ५९	३ १३	५ ३५
21	६	७ ५५	१० १४	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ०५	२१ २८	२३ ०१	० ५५	३ ०९	५ ३१
22	७	७ ५१	१० १०	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५५	१८ ३७	२० ०१	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ०५	५ २७
23	८	७ ४७	१० ०६	१२ २७	१४ ४७	१६ ५१	१८ ३३	१९ ५७	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ ०१	५ २३
24	९	७ ४३	१० ०२	१२ २३	१४ ४३	१६ ४७	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४४	२ ५७	५ १९
25	१०	७ ३९	९ ५८	१२ १९	१४ ३९	१६ ४३	१८ २५	१९ ५०	२१ १३	२२ ४५	० ४०	२ ५४	५ १६
26	११	७ ३५	९ ५४	१२ १६	१४ ३६	१६ ३९	१८ २१	१९ ४६	२१ ०९	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
27	१२	७ ३१	९ ५०	१२ १२	१४ ३२	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ०५	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ०८
28	१३	७ २७	९ ४६	१२ ०८	१४ २८	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ०१	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ०४
29	१४	७ २३	९ ४२	१२ ०४	१४ २४	१६ २८	१८ ०९	१९ ३४	२० ५७	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ००
30	१५	७ १९	९ ३८	१२ ००	१४ २०	१६ २४	१८ ०५	१९ ३०	२० ५३	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
31	१६	७ १५	९ ३४	११ ५६	१४ १६	१६ २०	१८ ०१	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितं	१७	७ ११	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
2	१८	७ ०७	९ २७	११ ४८	१४ ०८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ०८	२ २२	४ ४४
3	१९	७ ०३	९ २३	११ ४४	१४ ०४	१६ ०८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ १०	० ०४	२ १८	४ ४०
4	२०	६ ५९	९ १९	११ ४०	१४ ००	१६ ०४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ०६	० ००	२ १४	४ ३६
5	२१	६ ५५	९ १५	११ ३६	१३ ५६	१६ ००	१७ ४१	१९ ०६	२० २९	२२ ०२	२३ ५६	२ १०	४ ३२
6	२२	६ ५२	९ ११	११ ३२	१३ ५२	१५ ५६	१७ ३७	१९ ०२	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ०६	४ २८
7	२३	६ ४८	९ ०७	११ २८	१३ ४८	१५ ५२	१७ ३३	१८ ५८	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ०२	४ २४
8	२४	६ ४४	९ ०३	११ २४	१३ ४४	१५ ४८	१७ २९	१८ ५४	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५८	४ २०
9	२५	६ ४०	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४४	१७ २५	१८ ५०	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५४	४ १६
10	२६	६ ३६	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४०	१७ २१	१८ ४६	२० ०९	२१ ४२	२३ ३६	१ ५०	४ १२
11	२७	६ ३२	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३६	१७ १७	१८ ४२	२० ०५	२१ ३८	२३ ३२	१ ४६	४ ०८
12	२८	६ २८	८ ४७	११ ०८	१३ २८	१५ ३२	१७ १३	१८ ३८	२० ०१	२१ ३४	२३ २८	१ ४२	४ ०४
13	२९	६ २४	८ ४३	११ ०४	१३ २४	१५ २८	१७ ०९	१८ ३४	१९ ५७	२१ ३०	२३ २४	१ ३८	४ ००
14	३०	६ २०	८ ३९	११ ००	१३ २०	१५ २४	१७ ०५	१८ ३०	१९ ५३	२१ २६	२३ २०	१ ३४	३ ५६
15	३१	६ १६	८ ३५	१० ५६	१३ १६	१५ २०	१७ ०१	१८ २६	१९ ४९	२१ २२	२३ १६	१ ३०	३ ५२
16	आ	६ १२	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

सितंबर	आश्विन प्र.	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
		आश्विन (सितम्बर–अक्तूबर)											
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ ३१	१० ५२	१३ १२	१५ १६	१६ ५७	१८ २२	१९ ४५	२१ १८	२३ १२	१ २६	३ ४९	६ ०९
17	२	८ २७	१० ४८	१३ ०८	१५ १२	१६ ५३	१८ १८	१९ ४१	२१ १४	२३ ०८	१ २२	३ ४५	६ ०५
18	३	८ २३	१० ४४	१३ ०४	१५ ०८	१६ ४९	१८ १४	१९ ३७	२१ १०	२३ ०४	१ १८	३ ४१	६ ०१
19	४	८ १९	१० ४०	१३ ००	१५ ०४	१६ ४५	१८ १०	१९ ३३	२१ ०६	२३ ००	१ १४	३ ३७	५ ५७
20	५	८ १५	१० ३६	१२ ५६	१५ ००	१६ ४१	१८ ०६	१९ २९	२१ ०२	२२ ५६	१ १०	३ ३३	५ ५३
21	६	८ ११	१० ३२	१२ ५२	१४ ५६	१६ ३७	१८ ०२	१९ २५	२० ५८	२२ ५२	१ ०६	३ २९	५ ४९
22	७	८ ०७	१० २८	१२ ४८	१४ ५२	१६ ३३	१७ ५८	१९ २१	२० ५४	२२ ४८	१ ०२	३ २५	५ ४५
23	८	८ ०३	१० २४	१२ ४४	१४ ४८	१६ २९	१७ ५४	१९ १७	२० ५०	२२ ४४	० ५८	३ २१	५ ४१
24	९	७ ५९	१० २०	१२ ४०	१४ ४४	१६ २५	१७ ५०	१९ १३	२० ४६	२२ ४०	० ५४	३ १७	५ ३७
25	१०	७ ५५	१० १६	१२ ३६	१४ ४०	१६ २१	१७ ४६	१९ ०९	२० ४२	२२ ३६	० ५१	३ १३	५ ३३
26	११	७ ५१	१० १३	१२ ३३	१४ ३७	१६ १८	१७ ४३	१९ ०६	२० ३८	२२ ३२	० ४७	३ ०९	५ २९
27	१२	७ ४७	१० ०९	१२ २९	१४ ३३	१६ १४	१७ ३९	१९ ०२	२० ३४	२२ २९	० ४३	३ ०५	५ २५
28	१३	७ ४३	१० ०५	१२ २५	१४ २९	१६ १०	१७ ३५	१८ ५८	२० ३०	२२ २५	० ३९	३ ०१	५ २१
29	१४	७ ३९	१० ०१	१२ २१	१४ २५	१६ ०६	१७ ३१	१८ ५४	२० २६	२२ २१	० ३५	२ ५७	५ १७
30	१५	७ ३५	९ ५७	१२ १७	१४ २१	१६ ०२	१७ २७	१८ ५०	२० २२	२२ १७	० ३१	२ ५३	५ १३
अक्तू	१६	७ ३१	९ ५३	१२ १३	१४ १७	१५ ५८	१७ २३	१८ ४६	२० १८	२२ १३	० २७	२ ४९	५ ०९
2	१७	७ २७	९ ४९	१२ ०९	१४ १३	१५ ५४	१७ १९	१८ ४२	२० १५	२२ ०९	० २३	२ ४५	५ ०५
3	१८	७ २३	९ ४५	१२ ०५	१४ ०९	१५ ५०	१७ १५	१८ ३८	२० ११	२२ ०५	० १९	२ ४२	५ ०१
4	१९	७ १९	९ ४१	१२ ०१	१४ ०५	१५ ४६	१७ ११	१८ ३४	२० ०७	२२ ०१	० १५	२ ३८	४ ५७
5	२०	७ १५	९ ३७	११ ५७	१४ ०१	१५ ४२	१७ ०७	१८ ३०	२० ०३	२१ ५७	० ११	२ ३४	४ ५४
6	२१	७ ११	९ ३३	११ ५३	१३ ५७	१५ ३८	१७ ०३	१८ २६	१९ ५९	२१ ५३	० ०७	२ ३०	४ ५०
7	२२	७ ०७	९ २९	११ ४९	१३ ५३	१५ ३४	१६ ५९	१८ २२	१९ ५५	२१ ४९	० ०३	२ २७	४ ४६
8	२३	७ ०३	९ २५	११ ४५	१३ ४९	१५ ३०	१६ ५५	१८ १८	१९ ५१	२१ ४५	२३ ५९	२ २३	४ ४२
9	२४	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ४५	१५ २६	१६ ५१	१८ १४	१९ ४७	२१ ४१	२३ ५५	२ १९	४ ३८
10	२५	६ ५६	९ १८	११ ३८	१३ ४२	१५ २३	१६ ४८	१८ ११	१९ ४३	२१ ३७	२३ ५२	२ १५	४ ३५
11	२६	६ ५२	९ १४	११ ३४	१३ ३८	१५ १९	१६ ४४	१८ ०७	१९ ३९	२१ ३४	२३ ४८	२ ११	४ ३१
12	२७	६ ४८	९ १०	११ ३०	१३ ३४	१५ १५	१६ ४०	१८ ०३	१९ ३५	२१ ३०	२३ ४४	२ ०७	४ २७
13	२८	६ ४४	९ ०६	११ २६	१३ ३०	१५ ११	१६ ३६	१७ ५९	१९ ३१	२१ २६	२३ ४०	२ ०३	४ २३
14	२९	६ ४०	९ ०२	११ २२	१३ २६	१५ ०७	१६ ३२	१७ ५५	१९ २७	२१ २२	२३ ३६	१ ५९	४ १९
15	३०	६ ३६	८ ५८	११ १८	१३ २२	१५ ०३	१६ २८	१७ ५१	१९ २३	२१ १८	२३ ३२	१ ५५	४ १५
16	३१	६ ३२	८ ५४	११ १४	१३ १८	१४ ५९	१६ २४	१७ ४७	१९ १९	२१ १४	२३ २८	१ ५१	४ ११
17	का.	६ २८	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

कार्तिक (अक्तूबर-नवम्बर)

अक्तू.	कार्तिक	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ ५०	११ १०	१३ १४	१४ ५५	१६ २०	१७ ४३	१९ १५	२१ १०	२३ २४	१ ४७	४ ०६	६ २४
18	२	८ ४६	११ ०६	१३ १०	१४ ५१	१६ १६	१७ ३९	१९ ११	२१ ०६	२३ २०	१ ४३	४ ०३	६ २०
19	३	८ ४२	११ ०२	१३ ०६	१४ ४७	१६ १२	१७ ३५	१९ ०७	२१ ०२	२३ १६	१ ३९	३ ५८	६ १६
20	४	८ ३८	१० ५८	१३ ०२	१४ ४३	१६ ०८	१७ ३१	१९ ०३	२० ५८	२३ १२	१ ३५	३ ५४	६ १२
21	५	८ ३४	१० ५४	१२ ५८	१४ ३९	१६ ०४	१७ २७	१८ ५९	२० ५४	२३ ०८	१ ३१	३ ५०	६ ०८
22	६	८ ३०	१० ५०	१२ ५४	१४ ३५	१६ ००	१७ २३	१८ ५५	२० ५०	२३ ०४	१ २७	३ ४६	६ ०४
23	७	८ २६	१० ४६	१२ ५०	१४ ३१	१५ ५६	१७ १९	१८ ५१	२० ४६	२३ ०१	१ २३	३ ४३	६ ००
24	८	८ २२	१० ४२	१२ ४६	१४ २७	१५ ५२	१७ १५	१८ ४७	२० ४२	२२ ५७	१ १९	३ ३९	५ ५७
25	९	८ १९	१० ३९	१२ ४३	१४ २३	१५ ४८	१७ १२	१८ ४४	२० ३८	२२ ५३	१ १६	३ ३५	५ ५३
26	१०	८ १५	१० ३५	१२ ३९	१४ २०	१५ ४५	१७ ०८	१८ ४०	२० ३५	२२ ४९	१ १२	३ ३२	५ ४९
27	११	८ ११	१० ३१	१२ ३५	१४ १६	१५ ४१	१७ ०४	१८ ३६	२० ३१	२२ ४५	१ ०८	३ २८	५ ४५
28	१२	८ ०७	१० २७	१२ ३१	१४ १२	१५ ३७	१७ ००	१८ ३२	२० २७	२२ ४१	१ ०४	३ २४	५ ४१
29	१३	८ ०३	१० २३	१२ २७	१४ ०८	१५ ३३	१६ ५६	१८ २८	२० २३	२२ ३७	१ ००	३ २०	५ ३७
30	१४	७ ५९	१० १९	१२ २३	१४ ०४	१५ २९	१६ ५२	१८ २४	२० १९	२२ ३३	० ५६	३ १६	५ ३४
31	१५	७ ५५	१० १५	१२ १९	१४ ००	१५ २५	१६ ४८	१८ २०	२० १५	२२ २९	० ५२	३ १२	५ ३०
नवं.	१६	७ ५१	१० ११	१२ १५	१३ ५६	१५ २१	१६ ४४	१८ १६	२० ११	२२ २५	० ४८	३ ०८	५ २६
2	१७	७ ४७	१० ०७	१२ ११	१३ ५२	१५ १७	१६ ४०	१८ १२	२० ०७	२२ २१	० ४४	३ ०४	५ २२
3	१८	७ ४३	१० ०३	१२ ०७	१३ ४८	१५ १३	१६ ३६	१८ ०९	२० ०३	२२ १७	० ४०	३ ००	५ १८
4	१९	७ ३९	९ ५९	१२ ०३	१३ ४४	१५ ०९	१६ ३२	१८ ०५	१९ ५९	२२ १३	० ३६	२ ५६	५ १४
5	२०	७ ३५	९ ५५	११ ५९	१३ ४०	१५ ०५	१६ २८	१८ ०१	१९ ५५	२२ ०९	० ३२	२ ५२	५ १०
6	२१	७ ३१	९ ५१	११ ५५	१३ ३६	१५ ०१	१६ २४	१७ ५७	१९ ५१	२२ ०५	० २८	२ ४८	५ ०६
7	२२	७ २८	९ ४७	११ ५१	१३ ३२	१४ ५७	१६ २०	१७ ५३	१९ ४७	२२ ०१	० २४	२ ४४	५ ०२
8	२३	७ २४	९ ४३	११ ४७	१३ २८	१४ ५३	१६ १६	१७ ४९	१९ ४३	२१ ५७	० २०	२ ४०	४ ५८
9	२४	७ २०	९ ३१	११ ४३	१३ २४	१४ ४९	१६ १२	१७ ४५	१९ ३९	२१ ५३	० १६	२ ३६	४ ५४
10	२५	७ १६	९ ३५	११ ३९	१३ २०	१४ ४५	१६ ०८	१७ ४१	१९ ३५	२१ ५०	० १२	२ ३२	४ ५०
11	२६	७ १२	९ ३१	११ ३५	१३ १७	१४ ४२	१६ ०५	१७ ३७	१९ ३२	२१ ४६	० ०८	२ २८	४ ४६
12	२७	७ ०८	९ २७	११ ३२	१३ १३	१४ ३८	१६ ०१	१७ ३३	१९ २८	२१ ४२	० ०५	२ २४	४ ४२
13	२८	७ ०४	९ २४	११ २८	१३ ०९	१४ ३४	१५ ५७	१७ २९	१९ २४	२१ ३८	० ०१	२ २०	४ ३८
14	२९	७ ००	९ २०	११ २४	१३ ०५	१४ ३०	१५ ५३	१७ २५	१९ २०	२१ ३४	२३ ५७	२ १६	४ ३४
15	३०	६ ५६	९ १६	११ २०	१३ ०१	१४ २६	१५ ४९	१७ २१	१९ १६	२१ ३०	२३ ५३	२ १२	४ ३०
16	मा	६ ५२	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

मार्गशीर्ष (नवम्बर-दिसम्बर)

नवम्बर	मार्गशीर्ष	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	९ १२	११ १६	१२ ५७	१४ २२	१५ ४५	१७ १७	१९ १२	२१ २६	२३ ४९	२ ०८	४ २६	६ ४८
17	२	९ ०८	११ १२	१२ ५३	१४ १८	१५ ४१	१७ १३	१९ ०८	२१ २२	२३ ४५	२ ०४	४ २२	६ ४४
18	३	९ ०४	११ ०८	१२ ४९	१४ १४	१५ ३७	१७ ०९	१९ ०४	२१ १८	२३ ४१	२ ००	४ १८	६ ४०
19	४	९ ००	११ ०४	१२ ४५	१४ १०	१५ ३३	१७ ०५	१९ ००	२१ १४	२३ ३७	१ ५६	४ १४	६ ३६
20	५	८ ५६	११ ००	१२ ४१	१४ ०६	१५ २९	१७ ०१	१८ ५६	२१ १०	२३ ३३	१ ५२	४ १०	६ ३२
21	६	८ ५२	१० ५६	१२ ३७	१४ ०२	१५ २५	१६ ५७	१८ ५२	२१ ०६	२३ २९	१ ४८	४ ०६	६ २८
22	७	८ ४८	१० ५२	१२ ३३	१३ ५८	१५ २१	१६ ५४	१८ ४९	२१ ०३	२३ २५	१ ४५	४ ०३	६ २५
23	८	८ ४४	१० ४८	१२ २९	१३ ५४	१५ १७	१६ ५०	१८ ४५	२० ५९	२३ २१	१ ४१	३ ५९	६ २१
24	९	८ ४०	१० ४४	१२ २५	१३ ५०	१५ १३	१६ ४६	१८ ४१	२० ५५	२३ १७	१ ३७	३ ५५	६ १७
25	१०	८ ३७	१० ४१	१२ २२	१३ ४७	१५ १०	१६ ४२	१८ ३७	२० ५१	२३ १३	१ ३३	३ ५१	६ १३
26	११	८ ३३	१० ३७	१२ १८	१३ ४३	१५ ०६	१६ ३८	१८ ३३	२० ४७	२३ १०	१ २९	३ ४७	६ ०९
27	१२	८ २९	१० ३३	१२ १४	१३ ३९	१५ ०२	१६ ३४	१८ २९	२० ४३	२३ ०६	१ २५	३ ४३	६ ०५
28	१३	८ २५	१० २९	१२ १०	१३ ३५	१४ ५८	१६ ३०	१८ २५	२० ३९	२३ ०२	१ २१	३ ३९	६ ०१
29	१४	८ २१	१० २५	१२ ०६	१३ ३१	१४ ५४	१६ २७	१८ २१	२० ३५	२२ ५९	१ १८	३ ३६	५ ५७
30	१५	८ १७	१० २१	१२ ०२	१३ २७	१४ ५०	१६ २३	१८ १७	२० ३१	२२ ५५	१ १४	३ ३२	५ ५३
दिसं	१६	८ १३	१० १७	११ ५८	१३ २३	१४ ४६	१६ १९	१८ १३	२० २७	२२ ५१	१ १०	३ २८	५ ४९
2	१७	८ ०९	१० १३	११ ५४	१३ १९	१४ ४२	१६ १५	१८ ०९	२० २३	२२ ४७	१ ०६	३ २४	५ ४५
3	१८	८ ०५	१० ०९	११ ५०	१३ १५	१४ ३८	१६ ११	१८ ०५	२० १९	२२ ४३	१ ०२	३ २०	५ ४१
4	१९	८ ०१	१० ०५	११ ४६	१३ ११	१४ ३४	१६ ०७	१८ ०१	२० १५	२२ ३९	० ५८	३ १६	५ ३७
5	२०	७ ५७	१० ०१	११ ४२	१३ ०७	१४ ३०	१६ ०३	१७ ५७	२० ११	२२ ३५	० ५४	३ १२	५ ३३
6	२१	७ ५३	९ ५७	११ ३८	१३ ०३	१४ २६	१५ ५९	१७ ५३	२० ०७	२२ ३१	० ५०	३ ०८	५ २९
7	२२	७ ४९	९ ५३	११ ३४	१२ ५९	१४ २२	१५ ५५	१७ ४९	२० ०३	२२ २७	० ४६	३ ०४	५ २५
8	२३	७ ४५	९ ४९	११ ३०	१२ ५५	१४ १८	१५ ५१	१७ ४५	१९ ५९	२२ २३	० ४२	३ ००	५ २१
9	२४	७ ४१	९ ४५	११ २६	१२ ५१	१४ १४	१५ ४७	१७ ४१	१९ ५५	२२ १९	० ३८	२ ५६	५ १७
10	२५	७ ३८	९ ४२	११ २३	१२ ४८	१४ ११	१५ ४४	१७ ३८	१९ ५२	२२ १६	० ३५	२ ५३	५ १४
11	२६	७ ३४	९ ३८	११ १९	१२ ४४	१४ ०७	१५ ४०	१७ ३४	१९ ४८	२२ १२	० ३१	२ ४९	५ १०
12	२७	७ ३०	९ ३४	११ १५	१२ ४०	१४ ०३	१५ ३६	१७ ३०	१९ ४४	२२ ०८	० २७	२ ४५	५ ०६
13	२८	७ २६	९ ३०	११ ११	१२ ३६	१३ ५९	१५ ३२	१७ २६	१९ ४०	२२ ०४	० २३	२ ४१	५ ०३
14	२९	७ २२	९ २६	११ ०७	१२ ३२	१३ ५५	१५ २८	१७ २२	१९ ३६	२२ ००	० १९	२ ३७	४ ५९
15	पौ.	७ १८	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

पौष (दिसम्बर-जनवरी)

दिसंबर	पौष प्रवि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	१	९ २२	११ ०३	१२ २८	१३ ५१	१५ २४	१७ १८	१९ ३२	२१ ५६	० १५	२ ३३	४ ५४	७ १४
16	२	९ १८	१० ५९	१२ २४	१३ ४७	१५ २०	१७ १४	१९ २८	२१ ५२	० ११	२ २९	४ ५०	७ १०
17	३	९ १४	१० ५५	१२ २१	१३ ४३	१५ १६	१७ १०	१९ २४	२१ ४८	० ०७	२ २५	४ ४६	७ ०६
18	४	९ १०	१० ५२	१२ १७	१३ ३९	१५ १२	१७ ०६	१९ २०	२१ ४४	० ०३	२ २१	४ ४२	७ ०२
19	५	९ ०६	१० ४८	१२ १३	१३ ३५	१५ ०८	१७ ०२	१९ १६	२१ ४०	२३ ५९	२ १७	४ ३८	६ ५८
20	६	९ ०२	१० ४४	१२ ०९	१३ ३१	१५ ०४	१६ ५८	१९ १२	२१ ३६	२३ ५५	२ १३	४ ३४	६ ५४
21	७	८ ५८	१० ४०	१२ ०५	१३ २७	१५ ००	१६ ५४	१९ ०८	२१ ३२	२३ ५१	२ १०	४ ३०	६ ५०
22	८	८ ५४	१० ३६	१२ ०१	१३ २३	१४ ५६	१६ ५०	१९ ०५	२१ २८	२३ ४७	२ ०६	४ २६	६ ४६
23	९	८ ५०	१० ३२	११ ५७	१३ १९	१४ ५२	१६ ४६	१९ ०१	२१ २४	२३ ४३	२ ०२	४ २२	६ ४२
24	१०	८ ४७	१० २८	११ ५३	१३ १५	१४ ४८	१६ ४३	१८ ५७	२१ २०	२३ ३९	१ ५८	४ १८	६ ३८
25	११	८ ४३	१० २४	११ ४९	१३ ११	१४ ४४	१६ ३९	१८ ५३	२१ १६	२३ ३५	१ ५४	४ १४	६ ३५
26	१२	८ ३९	१० २०	११ ४५	१३ ०८	१४ ४०	१६ ३५	१८ ४९	२१ १२	२३ ३१	१ ५०	४ १०	६ ३१
27	१३	८ ३५	१० १६	११ ४१	१३ ०४	१४ ३७	१६ ३१	१८ ४५	२१ ०८	२३ २७	१ ४६	४ ०७	६ २७
28	१४	८ ३१	१० १२	११ ३७	१३ ००	१४ ३३	१६ २७	१८ ४१	२१ ०४	२३ २३	१ ४२	४ ०३	६ २३
29	१५	८ २७	१० ०८	११ ३३	१२ ५६	१४ २९	१६ २३	१८ ३७	२१ ००	२३ १९	१ ३८	३ ५९	६ १९
30	१६	८ २३	१० ०४	११ २९	१२ ५२	१४ २५	१६ १९	१८ ३३	२० ५६	२३ १५	१ ३४	३ ५५	६ १५
31	१७	८ १९	१० ००	११ २५	१२ ४८	१४ २१	१६ १५	१८ २९	२० ५२	२३ ११	१ ३०	३ ५१	६ ११
जन.	१८	८ १५	९ ५६	११ २१	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २५	२० ४८	२३ ०७	१ २६	३ ४७	६ ७
2	१९	८ ११	९ ५२	११ १७	१२ ४०	१४ १३	१६ ०७	१८ २१	२० ४४	२३ ०३	१ २२	३ ४३	६ ३
3	२०	८ ०७	९ ४८	११ १३	१२ ३६	१४ ०९	१६ ०३	१८ १७	२० ४०	२२ ५९	१ १८	३ ३९	५ ५९
4	२१	८ ०३	९ ४४	११ ०९	१२ ३२	१४ ०५	१५ ५९	१८ १३	२० ३६	२२ ५५	१ १४	३ ३५	५ ५५
5	२२	७ ५९	९ ४०	११ ०५	१२ २८	१४ ०१	१५ ५५	१८ ०९	२० ३२	२२ ५१	१ १०	३ ३१	५ ५१
6	२३	७ ५५	९ ३६	११ ०१	१२ २४	१३ ५७	१५ ५१	१८ ०५	२० २८	२२ ४७	१ ०६	३ २७	५ ४७
7	२४	७ ५१	९ ३२	१० ५७	१२ २०	१३ ५३	१५ ४७	१८ ०१	२० २४	२२ ४३	१ ०२	३ २३	५ ४३
8	२५	७ ४७	९ २८	१० ५३	१२ १६	१३ ४९	१५ ४३	१७ ५७	२० २०	२२ ३९	० ५८	३ १९	५ ३९
9	२६	७ ४३	९ २४	१० ४९	१२ १२	१३ ४५	१५ ३९	१७ ५३	२० १६	२२ ३५	० ५४	३ १५	५ ३५
10	२७	७ ३९	९ २०	१० ४५	१२ ०८	१३ ४१	१५ ३५	१७ ४९	२० १२	२२ ३१	० ५०	३ ११	५ ३१
11	२८	७ ३५	९ १६	१० ४१	१२ ०४	१३ ३७	१५ ३१	१७ ४५	२० ०८	२२ २७	० ४६	३ ०७	५ २७
12	२९	७ ३१	९ १२	१० ३७	१२ ००	१३ ३३	१५ २७	१७ ४१	२० ०४	२२ २३	० ४२	३ ०३	५ २३
13	३०	७ २७	९ ०८	१० ३३	११ ५६	१३ २९	१५ २३	१७ ३७	२० ००	२२ १९	० ३८	२ ५९	५ १९
14	मा.	७ २३	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

माघ (जनवरी-फरवरी)

जनवरी	माघ प्रवि	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	९ ०४	१० २९	११ ५२	१३ २५	१५ १९	१७ ३३	१९ ५६	२२ १५	० ३४	२ ५५	५ १५	७ १९
15	२	९ ००	१० २५	११ ४८	१३ २१	१५ १५	१७ २९	१९ ५२	२२ ११	० ३०	२ ५१	५ ११	७ १५
16	३	८ ५७	१० २२	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २५	१९ ४९	२२ ८	० २७	२ ४७	५ ७	७ ११
17	४	८ ५३	१० १८	११ ४१	१३ १४	१५ ८	१७ २१	१९ ४५	२२ ४	० २३	२ ४३	५ ३	७ ७
18	५	८ ४९	१० १४	११ ३७	१३ १०	१५ ४	१७ १८	१९ ४१	२२ ०	० १९	२ ३९	४ ५९	७ ३
19	६	८ ४५	१० १०	११ ३३	१३ ६	१५ ००	१७ १४	१९ ३७	२१ ५६	० १५	२ ३५	४ ५६	६ ५९
20	७	८ ४१	१० ०६	११ २९	१३ २	१४ ५६	१७ १०	१९ ३३	२१ ५२	० ११	२ ३१	४ ५२	६ ५५
21	८	८ ३७	१० २	११ २५	१२ ५८	१४ ५२	१७ ९	१९ २९	२१ ४८	० ७	२ २७	४ ५७	६ ५२
22	९	८ ३३	९ ५८	११ २१	१२ ५४	१४ ४८	१७ २	१९ २५	२१ ४४	० ३	२ २३	४ ४४	६ ४८
23	१०	८ २९	९ ५४	११ १७	१२ ५०	१४ ४४	१६ ५८	१९ २१	२१ ४०	२३ ५९	२ १९	४ ४०	६ ४४
24	११	८ २५	९ ५०	११ १३	१२ ४६	१४ ४०	१६ ५४	१९ १८	२१ ३६	२३ ५५	२ १६	४ ३६	६ ४०
25	१२	८ २१	९ ४६	११ ९	१२ ४२	१४ ३६	१६ ५०	१९ १४	२१ ३२	२३ ५१	२ १२	४ ३२	६ ३६
26	१३	८ १८	९ ४३	११ ६	१२ ३९	१४ ३३	१६ ४७	१९ १०	२१ २९	२३ ४८	२ ८	४ २८	६ ३२
27	१४	८ १४	९ ३९	११ २	१२ ३५	१४ २९	१६ ४३	१९ ६	२१ २५	२३ ४४	२ ४	४ २४	६ २८
28	१५	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३१	१४ २५	१६ ३९	१९ २	२१ २१	२३ ४०	२ ०	४ २०	६ २४
29	१६	८ ०६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १७	२३ ३६	१ ५६	४ १६	६ २०
30	१७	८ २	९ २७	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १३	२३ ३२	१ ५२	४ १३	६ १७
31	१८	७ ५८	९ २३	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २७	१८ ५०	२१ ९	२३ २८	१ ४८	४ ९	६ १३
फर	१९	७ ५४	९ १९	१० ४२	१२ १५	१४ ९	१६ २३	१८ ४६	२१ ५	२३ २४	१ ४४	४ ५	६ ९
2	२०	७ ५०	९ १५	१० ३८	१२ ११	१४ ५	१६ १९	१८ ४२	२१ १	२३ २०	१ ४०	४ १	६ ५
3	२१	७ ४६	९ ११	१० ३४	१२ ७	१४ १	१६ १५	१८ ३८	२० ५७	२३ १६	१ ३६	३ ५७	६ १
4	२२	७ ४२	९ ७	१० ३०	१२ ३	१३ ५७	१६ ११	१८ ३४	२० ५३	२३ १२	१ ३२	३ ५३	५ ५७
5	२३	७ ३८	९ ३	१० २६	११ ५९	१३ ५३	१६ ७	१८ ३०	२० ५०	२३ ८	१ २८	३ ४९	५ ५३
6	२४	७ ३४	८ ५९	१० २२	११ ५५	१३ ४९	१६ ३	१८ २६	२० ४६	२३ ४	१ २५	३ ४५	५ ४९
7	२५	७ ३०	८ ५५	१० १८	११ ५१	१३ ४५	१५ ५९	१८ २२	२० ४२	२३ ०	१ २१	३ ४१	५ ४५
8	२६	७ २६	८ ५१	१० १४	११ ४७	१३ ४१	१५ ५५	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३७	५ ४१
9	२७	७ २२	८ ४७	१० १०	११ ४३	१३ ३७	१५ ५१	१८ १५	२० ३४	२२ ५२	१ १३	३ ३३	५ ३७
10	२८	७ १८	८ ४३	१० ६	११ ३९	१३ ३३	१५ ४७	१८ ११	२० ३०	२२ ४८	१ ९	३ २९	५ ३३
11	२९	७ १४	८ ३९	१० २	११ ३५	१३ २९	१५ ४३	१८ ७	२० २६	२२ ४४	१ ५	३ २५	५ २९
12	फा.	७ १०	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

दैनिक लग्नसारणी–शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

फाल्गुन (फरवरी-मार्च)

फरवरी	फाल्गुन	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
12	१	८ ३५	९ ५८	११ ३१	१३ २५	१५ ३९	१८ ०३	२० २२	२२ ४०	१ ०१	३ २१	५ २५	७ ०७
13	२	८ ३१	९ ५४	११ २७	१३ २१	१५ ३५	१७ ५९	२० १८	२२ ३६	० ५७	३ १७	५ २१	७ ३
14	३	८ २७	९ ५०	११ २३	१३ १७	१५ ३१	१७ ५५	२० १४	२२ ३२	० ५३	३ १३	५ १७	६ ५९
15	४	८ २३	९ ४६	११ १९	१३ १३	१५ २७	१७ ५१	२० १०	२२ २८	० ४९	३ ९	५ १३	६ ५५
16	५	८ १९	९ ४२	११ १५	१३ ९	१५ २३	१७ ४७	२० ६	२२ २४	० ४५	३ ५	५ ९	६ ५१
17	६	८ १५	९ ३८	११ ११	१३ ५	१५ १९	१७ ४३	२० २	२२ २०	० ४१	३ १	५ ६	६ ४७
18	७	८ ११	९ ३४	११ ७	१३ १	१५ १५	१७ ३९	१९ ५८	२२ १६	० ३७	२ ५७	५ २	६ ४३
19	८	८ ७	९ ३०	११ ३	१२ ५७	१५ ११	१७ ३५	१९ ५४	२२ १२	० ३३	२ ५३	४ ५८	६ ३९
20	९	८ ४	९ २७	११ ०	१२ ५३	१५ ७	१७ ३१	१९ ५०	२२ ८	० २९	२ ४९	४ ५४	६ ३५
21	१०	८ ०	९ २३	१० ५६	१२ ५०	१५ ४	१७ २७	१९ ४६	२२ ४	० २५	२ ४६	४ ५०	६ ३१
22	११	७ ५६	९ १९	१० ५२	१२ ४६	१५ ०	१७ २३	१९ ४२	२२ ०	० २१	२ ४२	४ ४६	६ २७
23	१२	७ ५२	९ १४	१० ४८	१२ ४२	१४ ५६	१७ १९	१९ ३८	२१ ५६	० १८	२ ३८	४ ४२	६ २३
24	१३	७ ४८	९ १०	१० ४४	१२ ३८	१४ ५२	१७ १५	१९ ३४	२१ ५२	० १४	२ ३४	४ ३८	६ १९
25	१४	७ ४४	९ ०६	१० ४०	१२ ३४	१४ ४८	१७ ११	१९ ३०	२१ ४८	० १०	२ ३०	४ ३४	६ १५
26	१५	७ ४०	९ ०२	१० ३६	१२ ३०	१४ ४४	१७ ०७	१९ २६	२१ ४४	० ०६	२ २६	४ ३०	६ ११
27	१६	७ ३६	८ ५८	१० ३२	१२ २६	१४ ४०	१७ ०३	१९ २२	२१ ४०	० ०२	२ २२	४ २६	६ ०७
28	१७	७ ३२	८ ५४	१० २८	१२ २२	१४ ३६	१६ ५९	१९ १८	२१ ३६	२३ ५८	२ १८	४ २२	६ ०३
मार्च	१८	७ २८	८ ५१	१० २४	१२ १८	१४ ३२	१६ ५५	१९ १४	२१ ३२	२३ ५४	२ १४	४ १८	६ ०
2	१९	७ २४	८ ४७	१० २०	१२ १४	१४ २८	१६ ५१	१९ १०	२१ २८	२३ ५०	२ १०	४ १४	५ ५६
3	२०	७ २१	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २५	१६ ४७	१९ ६	२१ २४	२३ ४६	२ ६	४ १०	५ ५२
4	२१	७ १७	८ ४०	१० १३	१२ ७	१४ २१	१६ ४३	१९ २	२१ २०	२३ ४२	२ २	४ ६	५ ४८
5	२२	७ १३	८ ३६	१० ९	१२ ३	१४ १७	१६ ३९	१८ ५८	२१ १६	२३ ३९	१ ५८	४ ३	५ ४४
6	२३	७ ९	८ ३२	१० ५	११ ५९	१४ १३	१६ ३५	१८ ५४	२१ १२	२३ ३५	१ ५४	३ ५९	५ ४०
7	२४	७ ५	८ २८	१० १	११ ५५	१४ ९	१६ ३१	१८ ५०	२१ ९	२३ ३१	१ ५०	३ ५५	५ ३६
8	२५	७ १	८ २४	९ ५७	११ ५१	१४ ५	१६ २७	१८ ४६	२१ ५	२३ २७	१ ४६	३ ५१	५ ३२
9	२६	६ ५७	८ २०	९ ५३	११ ४७	१४ १	१६ २४	१८ ४३	२१ १	२३ २३	१ ४३	३ ४७	५ २८
10	२७	६ ५३	८ १६	९ ४९	११ ४३	१३ ५७	१६ २०	१८ ३९	२० ५७	२३ १९	१ ३९	३ ४३	५ २४
11	२८	६ ४९	८ १२	९ ४५	११ ३९	१३ ५३	१६ १७	१८ ३५	२० ५३	२३ १५	१ ३५	३ ३९	५ २०
12	२९	६ ४५	८ ८	९ ४१	११ ३५	१३ ४९	१६ १३	१८ ३२	२० ४९	२३ १२	१ ३१	३ ३५	५ १७
13	३०	६ ४२	८ ४	९ ३७	११ ३१	१३ ४५	१६ ९	१८ २८	२० ४५	२३ ८	१ २८	३ ३२	५ १३
14	[illegible]	[illegible]	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

चैत्र (मार्च-अप्रैल)

मार्च	चैत्र प्रति.	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	८ ००	९ ३३	११ २७	१३ ४१	१६ ५	१८ २४	२० ४१	२३ ७	१ २४	३ २८	५ ९	६ ३३
15	२	७ ५६	९ २९	११ २३	१३ ३७	१६ १	१८ २०	२० ३७	२३ ०	१ २०	३ २४	५ ५	६ २९
16	३	७ ५२	९ २५	११ १९	१३ ३३	१५ ५७	१८ १६	२० ३३	२२ ५६	१ १६	३ २०	५ १	६ २५
17	४	७ ४८	९ २१	११ १५	१३ २९	१५ ५३	१८ १२	२० २९	२२ ५२	१ १२	३ १६	४ ५७	६ २१
18	५	७ ४४	९ १७	११ ११	१३ २५	१५ ४९	१८ ८	२० २५	२२ ४८	१ ८	३ १२	४ ५३	६ १७
19	६	७ ४०	९ १३	११ ७	१३ २१	१५ ४५	१८ ४	२० २१	२२ ४४	१ ४	३ ८	४ ४९	६ १३
20	७	७ ३६	९ ९	११ ३	१३ १८	१५ ४१	१८ ०	२० १७	२२ ४०	१ ०	३ ४	४ ४५	६ ९
21	८	७ ३२	९ ५	१० ५९	१३ १४	१५ ३७	१७ ५६	२० १३	२२ ३६	० ५६	३ ००	४ ४१	६ ५
22	९	७ २८	९ १	१० ५५	१३ १०	१५ ३३	१७ ५२	२० ९	२२ ३२	० ५२	२ ५६	४ ३७	६ १
23	१०	७ २५	८ ५७	१० ५२	१३ ६	१५ २९	१७ ४८	२० ५	२२ २८	० ४८	२ ५२	४ ३३	५ ५७
24	११	७ २१	८ ५३	१० ४८	१३ २	१५ २५	१७ ४४	२० १	२२ २४	० ४४	२ ४८	४ ३०	५ ५३
25	१२	७ १७	८ ४९	१० ४४	१२ ५८	१५ २१	१७ ४०	१९ ५७	२२ २०	० ४०	२ ४४	४ २६	५ ४९
26	१३	७ १३	८ ४५	१० ४०	१२ ५४	१५ १७	१७ ३६	१९ ५४	२२ १६	० ३६	२ ४०	४ २२	५ ४५
27	१४	७ ९	८ ४२	१० ३६	१२ ५०	१५ १३	१७ ३२	१९ ५०	२२ १२	० ३२	२ ३६	४ १८	५ ४१
28	१५	७ ५	८ ३८	१० ३२	१२ ४६	१५ ९	१७ २८	१९ ४६	२२ ८	० २८	२ ३३	४ १४	५ ३७
29	१६	७ १	८ ३४	१० २८	१२ ४२	१५ ५	१७ २४	१९ ४२	२२ ४	० २४	२ २९	४ १०	५ ३४
30	१७	६ ५७	८ ३०	१० २४	१२ ३९	१५ १	१७ २०	१९ ३८	२२ ०	० २०	२ २५	४ ६	५ ३०
31	१८	६ ५३	८ २६	१० २०	१२ ३५	१४ ५७	१७ १६	१९ ३४	२१ ५६	० १६	२ २१	४ २	५ २६
अप्रै	१९	६ ४९	८ २२	१० १६	१२ ३१	१४ ५३	१७ १२	१९ ३०	२१ ५२	० १२	२ १७	३ ५८	५ २२
2	२०	६ ४५	८ १८	१० १२	१२ २७	१४ ४९	१७ ८	१९ २६	२१ ४८	० ८	२ १३	३ ५४	५ १८
3	२१	६ ४१	८ १४	१० ८	१२ २३	१४ ४५	१७ ४	१९ २२	२१ ४४	० ४	२ ९	३ ५०	५ १४
4	२२	६ ३७	८ १०	१० ४	१२ १९	१४ ४१	१७ ०	१९ १९	२१ ४०	२४ ००	२ ५	३ ४६	५ १०
5	२३	६ ३३	८ ०६	१० ०	१२ १५	१४ ३७	१६ ५६	१९ १५	२१ ३७	२३ ५७	२ १	३ ४२	५ ६
6	२४	६ ३०	८ ३	९ ५६	१२ ११	१४ ३३	१६ ५२	१९ ११	२१ ३३	२३ ५३	१ ५७	३ ३८	५ २
7	२५	६ २६	७ ५९	९ ५३	१२ ७	१४ २९	१६ ४९	१९ ७	२१ २९	२३ ४९	१ ५३	३ ३४	४ ५८
8	२६	६ २२	७ ५५	९ ४९	१२ ३	१४ २५	१६ ४५	१९ ३	२१ २५	२३ ४५	१ ४९	३ ३०	४ ५४
9	२७	६ १८	७ ५१	९ ४५	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ५९	२१ २१	२३ ४१	१ ४५	३ २६	४ ५१
10	२८	६ १४	७ ४७	९ ४१	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ५५	२१ १७	२३ ३७	१ ४१	३ २२	४ ४७
11	२९	६ १०	७ ४३	९ ३७	११ ५१	१४ १४	१६ ३३	१८ ५१	२१ १३	२३ ३३	१ ३७	३ १८	४ ४३
12	३०	६ ६	७ ३९	९ ३३	११ ४७	१४ १०	१६ २९	१८ ४७	२१ ९	२३ २९	१ ३४	३ १४	४ ३९
13	वै.	६ २	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

भारत के प्रमुख नगरों के दैनिक सूर्योदय-सूर्यास्त (भा. स्टैं. टा.)-2021 ई.

नीचे भारत के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण-वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग ३/४ मिनट घटाने तथा अस्त में ३/४ मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित (Upper Limb) अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय-सूर्यास्त होंगे।

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		श्रीगंगानगर		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		करनाल		जोधपुर		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
जन.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	जन.
1	7 34	17 34	7 28	17 32	7 24	17 29	7 21	17 33	7 34	17 42	7 20	17 41	7 32	17 48	7 17	17 25	7 21	17 31	7 29	17 53	7 33	17 30	1
2	34	34	29	32	24	30	21	34	34	43	20	41	32	49	17	25	21	31	30	54	34	30	2
3	34	35	29	33	24	31	21	35	35	44	20	42	32	50	18	26	22	31	30	54	34	31	3
4	35	36	29	34	24	32	21	35	35	44	20	43	33	50	18	27	22	32	30	55	34	32	4
5	35	37	29	35	24	32	22	36	35	45	21	44	33	51	18	28	22	33	30	56	34	33	5
6	35	38	29	35	24	33	22	37	35	46	21	44	33	52	18	28	22	34	31	57	34	33	6
7	35	39	29	36	25	34	22	38	35	47	21	45	33	53	18	29	22	34	31	57	34	34	7
8	35	39	29	37	25	35	22	38	35	47	21	46	33	53	18	30	22	35	31	58	34	35	8
9	35	40	29	38	25	35	22	39	35	48	21	47	33	54	18	31	22	36	31	17 59	34	36	9
10	35	41	29	39	25	36	22	40	35	49	21	47	33	55	18	32	22	37	31	18 00	34	37	10
11	35	42	29	39	25	37	22	41	35	50	21	48	33	56	18	32	22	37	31	00	34	38	11
12	35	43	29	40	25	38	22	42	35	51	21	49	33	57	18	33	22	38	31	01	34	38	12
13	35	44	29	41	24	39	22	42	35	52	21	50	33	57	18	34	22	39	31	02	34	39	13
14	35	44	29	42	24	40	22	43	35	52	21	50	33	58	18	35	22	40	31	03	34	40	14
15	34	45	29	43	24	41	22	44	35	53	21	51	33	17 59	18	36	22	41	31	03	34	41	15
16	34	46	29	44	24	41	22	45	35	54	21	52	33	18 00	18	37	22	42	31	04	33	42	16
17	34	47	29	45	24	42	22	46	35	55	21	53	33	01	18	38	22	43	31	05	33	43	17
18	34	48	28	46	24	43	21	47	34	56	21	54	33	01	17	38	21	43	31	06	33	44	18
19	33	49	28	46	23	44	21	47	34	57	21	54	33	02	17	39	21	44	31	07	33	45	19
20	33	50	28	47	23	45	21	48	34	58	20	55	32	03	17	40	21	45	30	07	32	46	20
21	33	51	27	48	23	46	21	49	34	58	20	56	32	04	17	41	21	46	30	08	32	47	21
22	32	52	27	49	23	47	20	50	33	17 59	20	57	32	05	16	42	20	47	30	09	32	48	22
23	32	53	27	50	23	48	20	51	33	18 00	20	58	31	05	16	43	20	48	30	10	31	49	23
24	32	54	26	51	22	48	20	52	33	01	19	58	31	06	15	44	20	49	29	10	31	49	24
25	31	54	26	52	21	49	19	52	32	02	19	17 59	31	07	15	44	19	49	29	11	30	50	25
26	31	55	25	53	21	50	19	53	32	03	19	18 00	30	08	15	45	19	50	29	12	30	51	26
27	30	56	25	54	20	51	18	54	31	04	18	01	30	09	14	46	18	51	28	13	29	52	27
28	30	57	24	55	20	52	18	55	31	04	18	01	30	10	14	47	18	52	28	14	29	53	28
29	29	58	24	56	20	52	18	56	30	05	17	02	29	10	13	48	17	53	28	14	28	54	29
30	29	17 59	23	56	19	54	17	57	30	06	17	03	29	11	13	49	17	54	27	15	28	55	30
31	7 28	18 00	7 23	17 57	7 18	17 55	7 17	17 57	7 29	18 07	7 17	18 04	7 28	18 12	7 12	17 50	7 16	17 55	7 27	18 16	7 27	17 56	31
फर.	7 27	18 01	7 22	17 58	7 18	17 55	7 16	17 58	7 29	18 08	7 16	18 04	7 28	18 13	7 12	17 51	7 16	17 55	7 26	18 17	7 26	17 57	फर.
2	27	02	22	59	17	56	15	59	28	09	16	05	27	14	11	51	15	56	26	17	26	58	2
3	26	03	21	18 00	17	57	15	18 00	28	10	15	06	27	14	10	52	14	57	25	18	25	59	3
4	25	04	20	01	16	58	14	18 01	27	10	14	07	26	15	10	53	14	58	25	19	24	18 00	4
5	25	04	20	02	15	17 59	14	02	26	11	14	07	25	16	09	53	13	17 59	24	20	24	01	5
6	24	05	19	02	15	18 00	13	02	26	12	13	08	25	17	08	55	13	18 00	24	20	23	02	6
7	23	06	18	03	14	01	12	03	25	13	13	09	24	17	08	56	12	00	23	21	22	02	7
8	7 22	18 07	7 17	18 04	7 13	18 01	7 12	18 04	7 24	18 14	7 13	18 10	7 23	18 18	7 07	17 56	7 11	18 01	7 22	18 22	7 21	18 03	8

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		श्रीगंगानगर		जयपुर	
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
फर.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
9	7 21	18 08	7 17	18 05	7 12	18 02	7 11	18 05	7 23	18 15	7 11	18 10
10	21	09	16	06	11	03	10	06	23	15	11	11
11	20	10	15	07	11	04	09	06	22	16	10	12
12	19	11	14	08	10	05	09	07	21	17	09	13
13	18	11	13	08	09	06	08	08	20	18	09	13
14	17	12	12	09	08	06	07	09	19	19	08	14
15	16	13	11	10	07	07	06	09	18	19	07	15
16	15	14	10	11	06	08	05	10	17	20	06	15
17	14	15	10	12	05	09	04	11	17	21	05	16
18	13	16	09	12	04	09	03	12	16	22	05	17
19	12	16	08	13	04	10	03	12	15	22	04	17
20	11	17	07	14	03	11	02	13	14	23	03	18
21	10	18	06	15	02	12	01	14	13	24	02	19
22	09	19	05	16	01	13	7 00	14	12	25	01	19
23	08	20	04	16	7 00	13	6 59	15	11	25	7 00	20
24	07	20	02	17	6 59	14	58	16	10	26	6 59	20
25	06	21	01	18	57	15	57	16	09	27	58	21
26	05	22	7 00	19	56	15	56	17	08	28	57	22
27	04	23	6 59	19	55	16	55	18	07	28	57	22
28	7 03	18 23	6 58	18 20	6 54	18 17	54	18 18	7 06	18 29	6 56	18 23
मार्च	7 01	18 24	6 57	18 21	6 53	18 18	6 53	18 19	7 05	18 30	6 55	18 23
2	00	25	56	21	52	18	52	20	03	30	54	24
3	6 59	26	55	22	51	19	51	20	02	31	53	25
4	58	26	54	23	50	20	50	21	01	32	52	25
5	57	27	53	24	49	20	48	22	7 00	32	51	26
6	56	28	51	24	48	21	47	22	6 59	33	50	26
7	54	29	50	25	46	22	46	23	58	34	49	27
8	53	29	49	26	45	22	45	24	57	34	47	27
9	52	30	48	26	44	23	44	24	56	35	46	28
10	51	31	47	27	43	24	43	25	54	36	45	29
11	50	32	45	28	42	24	42	25	53	36	44	29
12	48	32	44	28	41	25	41	26	52	37	43	30
13	47	33	43	29	39	26	40	27	51	38	42	30
14	46	34	42	30	38	26	38	27	50	38	41	31
15	45	34	40	30	37	27	37	28	49	39	40	31
16	43	35	39	31	36	28	36	28	47	39	39	32
17	42	36	38	32	34	28	35	29	46	40	38	32
18	41	36	37	32	33	29	34	30	45	41	37	33
19	40	37	36	33	32	30	33	30	44	41	36	33
20	38	38	34	34	31	30	31	31	43	42	35	34
21	37	38	33	34	30	31	30	31	41	43	33	34
22	36	39	32	35	28	31	29	32	40	43	32	35
23	34	40	31	36	27	32	28	32	39	44	31	35
24	33	40	29	36	26	33	27	33	38	44	30	36
25	32	41	28	37	25	33	26	34	37	45	29	36
26	31	42	27	38	23	34	24	34	35	46	28	37
27	6 29	18 42	6 26	18 38	6 22	18 35	6 23	18 35	6 34	18 46	6 27	18 37

तारीख	बीकानेर		हरिद्वार		करनाल		जोधपुर		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
फर.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	फर.
9	7 23	18 19	7 06	17 57	7 10	18 02	7 22	18 22	7 20	18 04	9
10	22	20	05	58	10	03	21	23	20	05	10
11	21	21	05	17 59	09	04	20	24	19	06	11
12	21	21	04	18 00	08	04	20	25	18	07	12
13	20	22	03	00	07	05	19	25	17	08	13
14	19	23	02	01	06	06	18	26	16	09	14
15	18	23	01	02	05	07	17	27	15	10	15
16	17	24	7 00	03	05	08	17	28	14	10	16
17	17	25	6 59	04	04	08	16	28	13	11	17
18	16	26	59	04	03	09	15	28	12	12	18
19	15	26	58	05	02	10	14	29	11	13	19
20	14	27	57	06	01	11	14	30	10	14	20
21	13	28	56	07	7 00	11	13	30	09	15	21
22	12	28	55	07	6 59	12	12	31	08	16	22
23	11	29	54	08	58	13	11	32	07	16	23
24	10	30	53	09	57	14	10	32	06	17	24
25	09	30	52	10	56	14	09	33	05	18	25
26	08	31	51	10	55	15	08	33	03	19	26
27	07	32	50	11	54	16	07	34	02	20	27
28	7 06	18 32	48	18 12	53	18 16	7 06	18 34	7 01	18 20	28
मार्च	7 05	18 33	6 47	18 12	6 52	18 17	7 05	18 35	7 00	18 21	मार्च
2	04	33	46	13	51	18	04	36	6 59	22	2
3	03	34	45	14	50	18	03	36	58	23	3
4	02	35	44	14	48	19	02	37	56	23	4
5	01	35	43	15	47	20	01	37	56	24	5
6	7 00	36	42	16	46	20	7 00	38	54	25	6
7	6 59	36	41	16	45	21	6 59	38	53	26	7
8	58	37	40	17	44	22	58	39	52	27	8
9	57	38	38	18	43	22	57	39	50	27	9
10	56	38	37	18	42	23	56	40	49	28	10
11	55	39	36	19	40	24	55	40	48	29	11
12	54	39	35	20	39	24	54	41	47	29	12
13	52	40	34	20	38	25	53	41	45	30	13
14	51	40	33	21	37	25	52	42	44	31	14
15	50	41	31	22	36	26	51	42	43	32	15
16	49	42	30	22	35	27	50	43	41	32	16
17	48	42	29	23	33	27	49	43	40	33	17
18	47	43	28	23	32	28	48	44	39	34	18
19	46	43	27	24	31	29	47	44	38	35	19
20	45	44	25	25	30	29	46	45	36	35	20
21	43	44	24	25	29	30	45	45	35	36	21
22	42	45	23	26	27	30	44	46	34	37	22
23	41	45	22	26	26	31	43	46	32	37	23
24	40	46	20	27	25	32	41	47	31	38	24
25	39	46	19	28	24	32	40	47	30	39	25
26	38	47	18	28	23	33	39	48	28	39	26
27	6 37	18 48	6 17	18 29	6 21	18 33	6 38	18 48	7 27	18 40	27

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		श्रीगंगानगर	
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
मार्च	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
28	6 28	18 43	6 24	18 39	6 21	18 35	6 22	18 35	6 33	18 47
29	27	44	23	40	20	36	21	36	32	47
30	26	44	22	40	19	36	20	36	31	48
31	6 24	18 45	6 21	18 41	6 17	18 37	6 19	18 37	6 29	18 49
अप्रै.	6 23	18 46	6 19	18 41	6 16	18 38	6 17	18 38	6 28	18 49
2	22	46	18	42	15	38	16	38	27	50
3	21	47	17	43	14	39	15	39	26	50
4	19	48	16	43	13	40	14	39	25	51
5	18	48	15	44	11	40	13	40	23	52
6	17	49	13	45	10	41	12	40	22	52
7	16	50	12	45	09	41	11	41	21	53
8	14	50	11	46	08	42	09	41	20	53
9	13	51	10	47	07	43	08	42	19	54
10	12	52	09	47	06	43	07	43	18	55
11	11	52	07	48	04	44	06	43	17	55
12	10	53	06	49	03	45	05	44	15	56
13	08	54	05	49	02	45	04	44	14	56
14	07	54	04	50	01	46	03	45	13	57
15	06	55	03	50	6 00	46	02	46	12	58
16	05	56	02	51	5 59	47	01	46	11	58
17	04	56	6 01	52	58	48	6 00	47	10	59
18	03	57	5 59	52	57	48	5 59	47	09	18 59
19	02	58	58	53	55	49	58	48	08	19 00
20	6 00	59	57	54	54	50	57	48	07	01
21	5 59	18 59	56	54	53	50	56	49	06	01
22	58	19 00	55	55	52	51	55	50	05	02
23	57	01	54	56	51	52	54	50	04	03
24	56	01	53	56	50	52	53	51	03	03
25	55	02	52	57	49	53	52	51	02	04
26	54	03	51	58	48	53	51	52	01	04
27	53	03	50	58	47	54	50	53	6 00	05
28	52	04	49	59	46	55	49	53	5 59	06
29	51	05	48	19 00	45	55	48	54	58	06
30	5 50	19 05	5 47	19 00	5 44	18 56	5 47	18 54	5 57	19 07
मई	5 49	19 06	5 46	19 01	5 44	18 57	5 46	18 55	5 56	19 08
2	48	07	45	02	43	57	45	56	55	08
3	47	08	44	02	42	58	45	56	54	09
4	46	08	44	03	41	59	44	57	54	10
5	46	09	43	04	40	18 59	43	58	53	10
6	45	10	42	04	39	19 00	42	58	52	11
7	44	10	41	05	39	01	42	59	51	12
8	43	11	40	06	38	01	41	18 59	50	12
9	42	12	39	07	37	02	40	19 00	50	13
10	41	12	39	07	36	03	39	01	49	13
11	41	13	38	08	36	03	39	01	48	14
12	5 40	19 14	5 37	19 09	5 35	19 04	5 38	19 02	5 47	19 15

जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		करनाल		जोधपुर		कठुआ		तारीख
सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	मार्च
6 26	18 38	6 35	18 48	6 16	18 30	6 20	18 34	6 37	18 49	7 26	18 41	28
25	38	34	49	14	30	19	35	36	49	25	42	29
24	39	33	18 49	13	31	18	35	35	50	23	42	30
6 22	18 39	6 32	18 50	6 12	18 31	6 17	18 36	6 34	18 50	6 22	18 43	31
6 21	18 40	6 31	18 50	6 11	18 32	6 15	18 36	6 33	18 51	6 21	18 44	अप्रै.
20	40	30	51	10	33	14	37	32	51	19	44	2
19	41	29	51	08	33	13	38	31	52	18	45	3
18	41	28	52	07	34	12	38	30	52	17	46	4
17	42	26	52	06	34	11	39	29	53	16	46	5
16	42	25	53	05	35	10	39	28	53	14	48	6
15	43	24	53	04	36	08	40	27	54	13	48	7
14	43	23	54	03	36	07	40	26	54	12	48	8
13	44	22	54	01	37	06	41	24	54	11	49	9
12	44	21	55	6 00	37	05	42	23	55	09	50	10
11	45	20	56	5 59	38	04	42	22	55	08	51	11
10	45	19	56	58	39	03	43	21	56	07	51	12
09	46	18	57	57	39	02	44	20	56	06	52	13
08	46	17	57	56	40	6 01	44	19	57	04	53	14
07	47	16	58	55	40	5 59	45	18	57	03	53	15
06	47	15	58	54	41	58	45	18	58	02	54	16
05	48	14	59	53	42	57	46	17	58	01	55	17
04	48	13	18 59	51	42	56	47	16	59	00	55	18
03	49	12	19 00	50	43	55	47	15	18 59	00	56	19
02	49	11	01	49	44	54	48	14	19 00	5 57	57	20
01	50	10	01	48	44	53	48	13	00	56	58	21
6 00	50	09	02	47	45	52	49	12	01	55	58	22
5 59	51	08	02	46	45	51	50	11	01	54	59	23
58	52	07	03	45	46	50	50	10	02	53	19 00	24
57	52	06	03	44	47	49	51	09	02	52	00	25
56	53	05	04	43	47	48	52	08	03	51	01	26
56	53	04	05	42	48	47	52	08	04	50	02	27
55	54	03	05	41	49	46	53	07	04	49	03	28
54	54	02	06	40	49	45	53	06	05	48	03	29
5 53	18 55	6 02	19 06	5 40	18 50	5 44	18 54	6 05	19 05	5 47	19 04	30
5 52	18 55	6 01	19 07	5 39	18 51	5 44	18 55	6 04	19 06	5 47	19 05	मई
51	56	6 00	08	38	51	43	55	04	06	45	06	2
51	56	5 59	08	37	52	42	56	03	07	45	06	3
50	57	59	09	36	53	41	57	02	07	43	07	4
49	58	58	09	35	53	40	57	01	08	42	08	5
48	58	57	10	34	54	39	58	6 01	08	41	08	6
48	59	56	10	34	54	39	59	6 00	09	40	09	7
47	18 59	55	11	33	55	38	59	5 59	09	40	14	8
46	19 00	55	12	32	56	37	19 00	59	10	39	11	9
46	00	54	12	31	56	36	00	58	11	38	11	10
45	01	53	13	31	57	36	01	57	11	37	12	11
5 45	19 02	5 53	19 13	5 30	18 58	5 35	19 02	5 57	19 12	5 36	19 13	12

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		श्रीगंगानगर		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		करनाल		जोधपुर		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
मई	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	मई
13	5 39	19 15	37	19 09	5 34	19 05	5 37	19 02	5 47	19 15	5 44	19 02	5 52	19 14	5 29	18 58	5 34	19 02	5 56	19 12	5 36	19 13	13
14	39	15	36	10	33	05	37	03	46	16	43	03	51	15	29	59	34	03	56	13	35	14	14
15	38	16	35	11	33	06	36	04	46	17	43	03	51	15	28	19 00	33	04	55	13	34	15	15
16	37	17	35	11	32	07	36	04	45	17	42	04	50	16	27	00	32	04	55	14	33	16	16
17	37	17	34	12	32	07	35	05	44	18	42	04	50	16	27	01	32	05	54	14	33	16	17
18	36	18	33	13	31	08	34	06	44	19	41	05	49	17	26	02	31	06	54	15	32	17	18
19	35	19	33	13	30	09	34	06	43	19	41	05	49	18	26	02	31	06	53	15	32	18	19
20	35	19	32	14	30	09	33	07	43	20	40	06	48	18	25	03	30	07	53	16	31	18	20
21	34	20	32	14	29	10	33	07	42	20	40	07	48	19	25	03	30	07	52	17	30	19	21
22	34	21	31	15	29	10	33	08	42	21	40	07	47	19	24	04	29	08	52	17	30	20	22
23	33	21	31	16	29	11	32	09	41	22	39	08	47	20	24	05	29	09	52	18	29	20	23
24	33	22	30	16	28	12	32	09	41	22	39	08	47	20	23	05	28	09	51	18	29	21	24
25	32	22	30	17	28	12	31	10	41	23	38	09	46	21	23	06	28	10	51	19	28	22	25
26	32	23	30	18	27	13	31	10	40	23	38	09	46	21	23	06	28	10	51	19	28	22	26
27	32	24	29	18	27	13	31	11	40	24	38	10	46	22	22	07	27	11	50	20	28	23	27
28	31	24	29	19	27	14	30	11	39	25	38	10	45	23	22	08	27	12	50	20	27	24	28
29	31	25	28	19	26	15	30	12	39	25	37	11	45	23	22	08	27	12	50	21	27	24	29
30	31	25	28	20	26	15	30	12	39	26	37	11	45	24	21	09	26	13	50	21	26	25	30
31	5 30	19 26	5 28	19 20	5 26	19 16	5 30	19 13	5 39	19 26	5 37	19 12	5 45	19 24	5 21	19 09	5 26	19 13	5 49	19 22	5 26	19 25	31
जून	5 30	19 27	5 28	19 21	5 25	19 16	5 29	19 13	5 39	19 27	5 37	19 12	5 44	19 25	5 21	19 10	5 26	19 14	5 49	19 22	5 26	19 26	जून
2	30	27	27	22	25	17	29	14	38	27	37	13	44	25	21	10	26	14	49	23	26	26	2
3	30	28	27	22	25	17	29	14	38	28	36	13	44	26	20	11	25	15	49	23	25	27	3
4	29	28	27	23	25	18	29	15	38	28	36	14	44	26	20	11	25	15	49	23	25	28	4
5	29	29	27	23	25	18	29	15	38	29	36	14	44	27	20	12	25	16	49	24	25	28	5
6	29	29	27	24	25	19	29	16	38	29	36	15	44	27	20	12	25	16	49	24	25	29	6
7	29	30	27	24	24	19	28	16	37	30	36	15	44	27	20	13	25	17	49	25	25	29	7
8	29	30	27	24	24	20	28	17	37	30	36	15	44	28	20	13	25	17	48	25	25	30	8
9	29	31	26	25	24	20	28	17	37	31	36	16	43	28	20	14	25	17	48	26	24	30	9
10	29	31	26	25	24	21	28	18	37	31	36	16	43	29	20	14	25	18	48	26	24	30	10
11	29	31	26	26	24	21	28	18	37	31	36	17	43	29	20	14	25	18	49	26	24	31	11
12	29	32	26	26	24	21	28	18	37	32	36	17	43	29	20	15	25	19	49	27	24	31	12
13	29	32	26	27	24	22	28	19	37	32	36	17	44	30	20	15	25	19	49	27	24	32	13
14	29	33	26	27	24	22	28	19	37	32	36	18	44	30	20	15	25	19	49	27	24	32	14
15	29	33	27	27	24	22	29	19	37	33	36	18	44	30	20	16	25	20	49	28	24	32	15
16	29	33	27	28	25	23	29	20	38	33	36	18	44	31	20	16	25	20	49	28	25	33	16
17	29	34	27	28	25	23	29	20	38	34	36	18	44	31	20	16	25	20	49	28	25	33	17
18	29	34	27	28	25	23	29	20	38	34	37	19	44	31	20	17	25	21	49	29	25	33	18
19	29	34	27	28	25	24	29	21	38	34	37	19	44	32	20	17	26	21	49	29	25	34	19
20	30	34	27	29	25	24	29	21	38	34	37	19	44	32	21	17	26	21	50	29	25	34	20
21	30	35	27	29	25	24	29	21	38	34	37	19	45	32	21	17	26	21	50	29	25	34	21
22	30	35	28	29	26	24	30	21	39	35	37	20	45	32	21	18	26	22	50	29	26	34	22
23	30	35	28	29	26	24	30	21	39	35	38	20	45	32	21	18	26	22	50	30	26	34	23
24	30	35	28	29	26	24	30	21	39	35	38	20	45	33	22	18	27	22	50	30	26	35	24
25	31	35	28	30	26	25	30	22	39	35	38	20	46	33	22	18	27	22	51	30	26	35	25
26	31	35	29	30	27	25	31	22	40	35	38	20	46	33	22	18	27	22	51	30	27	35	26
27	31	35	29	30	27	25	31	22	40	35	39	20	46	33	22	18	28	22	51	30	27	35	27
28	5 32	19 35	5 29	19 30	5 27	19 25	5 31	19 22	5 40	19 35	5 39	19 20	5 47	19 33	5 23	19 18	5 28	19 22	5 52	19 30	5 27	19 35	28

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		श्रीगंगानगर	
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
जून	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
29	5 32	19 36	5 30	19 30	5 28	19 25	5 32	19 22	5 41	19 35
30	5 32	19 36	5 30	19 30	5 28	19 25	5 32	19 22	5 41	19 35
जुला	5 33	19 36	5 31	19 30	5 28	19 25	5 32	19 22	5 41	19 35
2	33	35	31	30	29	25	33	22	42	35
3	34	35	31	30	29	25	33	22	42	35
4	34	35	32	30	30	25	34	22	43	35
5	35	35	32	30	30	25	34	22	43	35
6	35	35	33	29	31	25	35	22	43	35
7	35	35	33	29	31	24	35	22	44	35
8	36	35	34	29	31	24	35	21	44	35
9	36	34	34	29	32	24	36	21	45	35
10	37	34	35	29	32	24	36	21	45	34
11	38	34	35	28	33	24	37	21	46	34
12	38	34	36	28	34	23	37	21	46	34
13	39	33	36	28	34	23	38	20	47	34
14	39	33	37	27	35	23	38	20	47	33
15	40	33	37	27	35	22	39	20	48	33
16	40	32	38	27	36	22	39	19	48	33
17	41	32	38	26	36	22	40	19	49	32
18	42	31	39	26	37	21	40	19	50	32
19	42	31	40	25	37	21	41	18	50	31
20	43	30	40	25	38	20	42	18	51	31
21	43	30	41	24	39	20	42	17	51	30
22	44	29	41	24	39	19	43	17	52	30
23	45	29	42	23	40	19	43	16	52	29
24	45	28	43	23	40	18	44	16	53	29
25	46	28	43	22	41	18	44	15	54	28
26	46	27	44	22	41	17	45	15	54	28
27	47	26	44	21	42	16	45	14	55	27
28	48	26	45	20	43	16	46	13	55	26
29	48	25	46	20	43	15	47	13	56	26
30	49	24	46	19	44	14	47	12	57	25
31	5 50	19 23	5 47	19 18	5 45	19 14	5 48	19 12	5 57	19 24
अग.	5 50	19 23	5 48	19 17	5 45	19 13	5 48	19 11	5 58	19 24
2	51	22	48	17	46	12	49	10	58	23
3	52	21	49	16	46	11	49	09	5 59	22
4	52	20	50	15	47	11	50	09	6 00	21
5	53	19	50	14	48	10	51	08	00	21
6	54	18	51	13	48	09	51	07	01	20
7	54	18	51	12	49	08	52	06	01	19
8	55	17	52	12	49	07	52	05	02	18
9	55	16	53	11	50	06	53	05	03	17
10	56	15	53	10	51	05	53	04	03	16
11	57	14	54	09	51	04	54	03	04	15
12	57	13	55	08	52	04	55	02	04	14
13	58	12	55	07	52	03	55	01	05	14
14	5 59	19 11	5 56	19 06	5 53	19 02	5 56	19 00	6 06	19 13

जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		करनाल		जोधपुर		कठुआ		तारीख
सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	जून
5 39	19 21	5 47	19 33	5 23	19 18	5 28	19 22	5 52	19 30	5 28	19 35	29
5 40	19 21	5 47	19 33	5 24	19 18	5 29	19 22	5 52	19 30	5 28	19 35	30
5 40	19 21	5 48	19 33	5 24	19 18	5 29	19 22	5 53	19 30	5 28	19 35	जुला
40	21	48	33	24	18	29	22	53	30	29	35	2
41	21	49	33	25	18	30	22	53	30	29	35	3
41	21	49	33	25	18	30	22	54	30	30	35	4
42	20	49	33	26	18	31	22	54	30	30	35	5
42	20	50	33	26	18	31	22	55	30	31	35	6
42	20	50	33	26	18	32	22	55	30	31	34	7
43	20	51	33	27	18	32	22	55	30	32	34	8
43	20	51	32	27	18	32	21	56	30	32	34	9
44	20	51	32	28	17	33	21	56	30	33	34	10
44	20	52	32	28	17	33	21	57	30	33	33	11
45	19	52	32	29	17	34	21	57	29	34	33	12
45	19	53	31	29	17	34	21	58	29	34	33	13
46	19	53	31	30	16	35	20	58	29	35	32	14
46	19	54	31	30	16	36	20	59	29	35	32	15
47	18	54	31	31	16	36	20	5 59	28	36	32	16
47	18	55	30	32	15	37	19	6 00	28	37	31	17
48	18	55	30	32	15	37	19	00	28	37	31	18
48	17	56	29	33	14	38	18	01	27	38	30	19
49	17	56	29	33	14	38	18	01	27	38	30	20
49	16	57	29	34	13	39	17	02	26	39	29	21
50	16	58	28	34	13	39	17	02	26	40	29	22
50	16	58	28	35	12	40	16	03	26	40	28	23
51	15	59	27	36	12	41	16	03	25	41	28	24
51	15	5 59	27	36	11	41	15	04	25	42	27	25
52	14	6 00	26	37	11	42	15	04	24	42	26	26
52	14	00	26	37	10	42	14	05	24	43	26	27
53	13	01	25	38	09	43	13	05	23	44	25	28
53	12	01	24	39	09	43	13	06	22	44	24	29
54	12	02	24	39	08	44	12	06	22	45	23	30
5 54	19 11	6 02	19 23	5 40	19 07	5 45	19 11	6 07	19 21	5 46	19 23	31
5 55	19 11	6 03	19 22	5 40	19 07	5 45	19 11	6 07	19 21	5 46	19 22	अग.
55	10	04	22	41	06	46	10	08	20	47	21	2
56	09	04	21	42	05	46	09	08	19	48	20	3
56	08	05	20	42	04	47	08	09	19	48	19	4
57	08	05	20	43	03	48	08	09	18	49	19	5
57	07	06	19	43	03	48	07	10	17	50	18	6
58	06	06	18	44	02	49	06	10	17	50	17	7
58	06	07	17	45	01	49	05	11	16	51	16	8
59	05	07	16	45	19 00	50	04	11	15	52	15	9
5 59	04	08	15	46	18 59	51	03	12	14	52	14	10
6 00	03	08	15	46	58	51	02	12	13	53	13	11
00	02	09	14	47	57	52	02	13	13	54	12	12
01	01	09	13	48	56	52	01	13	12	54	11	13
6 01	19 01	6 10	19 12	5 48	18 55	5 53	19 00	6 13	19 11	5 55	19 10	14

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		श्रीगंगानगर		जयपुर	
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
अग.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
15	5 59	19 10	5 56	19 05	5 54	19 01	5 56	18 59	6 06	19 12	6 02	19 00
16	6 00	09	57	04	54	19 00	57	58	07	19 11	02	18 59
17	01	08	58	03	55	18 59	57	57	07	19 10	03	58
18	01	07	58	02	55	58	58	56	08	09	03	57
19	02	06	59	01	56	56	58	55	08	08	04	56
20	03	04	5 59	19 00	57	55	59	54	09	06	04	55
21	03	03	6 00	18 59	57	54	5 59	53	10	05	05	54
22	04	02	01	57	58	53	6 00	52	10	04	05	53
23	04	01	01	56	58	52	01	51	11	03	06	52
24	05	19 00	02	55	5 59	51	01	50	11	02	06	51
25	06	18 59	02	54	6 00	50	02	49	12	01	07	50
26	06	58	03	53	00	49	02	48	12	19 00	07	49
27	07	56	04	52	01	48	03	47	13	18 59	08	48
28	07	55	04	51	01	46	03	46	13	58	08	47
29	08	54	05	49	02	45	04	45	14	57	09	46
30	09	53	05	48	02	44	04	43	15	55	09	45
31	6 09	18 52	6 06	18 47	6 03	18 43	6 05	18 42	6 15	18 54	6 09	18 44
सितं.	6 10	18 50	6 07	18 46	6 03	18 42	6 05	18 41	6 16	18 53	6 10	18 43
2	11	49	07	44	04	41	06	40	16	52	10	42
3	11	48	08	43	05	39	06	39	17	51	11	41
4	12	47	08	42	05	38	07	38	17	49	11	39
5	12	45	09	41	06	37	07	37	18	48	12	38
6	13	44	09	40	06	36	08	35	18	47	12	37
7	14	44	10	38	07	34	08	34	19	46	13	36
8	14	41	11	37	07	33	09	33	19	45	13	35
9	15	40	11	36	08	32	09	32	20	43	13	34
10	15	39	12	35	08	31	10	31	20	42	14	33
11	16	38	12	33	09	30	10	29	21	41	14	32
12	17	36	13	32	10	28	11	28	22	40	15	31
13	17	35	13	31	10	27	11	27	22	39	15	29
14	18	34	14	29	11	26	12	26	23	37	16	28
15	18	32	15	28	11	24	12	25	23	36	16	27
16	19	31	15	27	12	23	13	23	24	35	16	26
17	19	30	16	26	12	22	13	22	24	34	17	25
18	20	28	16	24	13	21	14	21	25	32	17	24
19	21	27	17	23	13	19	14	20	25	31	18	23
20	21	26	17	22	14	18	15	19	26	30	18	21
21	22	24	18	20	15	17	15	17	26	29	19	20
22	23	23	19	19	15	16	16	16	27	27	19	19
23	23	22	19	18	16	14	16	15	27	26	19	18
24	24	21	20	17	16	13	17	14	28	25	20	17
25	24	19	20	15	17	12	17	12	29	24	20	16
26	25	18	21	14	17	11	18	11	29	22	21	15
27	26	17	21	13	18	09	18	10	30	21	21	13
28	26	15	22	11	19	08	19	09	30	20	22	12
29	27	14	23	10	19	07	19	08	31	19	22	11
30	6 27	18 13	6 23	18 09	6 20	18 06	6 20	18 06	6 31	18 17	6 23	18 10

बीकानेर		हरिद्वार		करनाल		जोधपुर		कठुआ		तारीख
सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	अग.
6 11	19 11	5 49	18 54	5 54	18 59	6 14	19 10	5 56	19 09	15
11	10	49	53	54	58	14	09	56	08	16
12	09	50	52	55	57	15	08	57	07	17
12	08	50	51	55	56	15	07	58	06	18
13	07	51	50	56	55	16	06	58	04	19
13	06	52	49	56	54	16	05	59	03	20
14	05	52	48	57	53	17	05	6 00	02	21
14	04	53	47	58	51	17	04	00	01	22
15	03	53	46	58	50	18	03	01	19 00	23
15	02	54	45	59	49	18	02	02	18 59	24
16	01	54	44	5 59	48	19	01	02	57	25
16	19 00	55	43	6 00	47	19	19 00	03	56	26
17	18 59	56	42	00	46	19	18 59	04	55	27
17	58	56	41	01	45	20	58	04	54	28
18	57	57	39	01	44	20	57	05	53	29
18	56	58	38	02	43	21	56	05	51	30
6 19	18 55	5 58	18 37	6 02	18 41	6 21	18 55	6 06	18 50	31
6 19	18 54	5 58	18 36	6 03	18 40	6 22	18 53	6 07	18 49	सितं.
20	52	59	35	04	39	22	52	07	48	2
20	51	5 59	34	04	38	22	51	08	46	3
20	50	6 00	32	05	37	23	50	09	45	4
21	49	00	31	05	35	23	49	09	44	5
21	48	01	30	06	34	24	48	10	42	6
22	47	02	29	06	33	24	47	10	41	7
22	46	02	27	07	32	24	46	11	40	8
23	44	03	26	07	31	25	45	12	39	9
23	43	03	25	08	29	25	44	12	37	10
24	42	04	24	08	28	26	43	13	36	11
24	41	04	23	09	27	26	41	14	35	12
25	40	05	21	09	26	27	40	14	33	13
25	39	05	20	10	24	27	39	15	32	14
26	37	06	19	10	23	27	38	15	31	15
26	36	06	18	11	22	28	37	16	29	16
27	35	07	16	11	21	28	36	17	28	17
27	34	07	15	12	20	29	35	17	27	18
28	33	08	14	13	18	29	34	18	25	19
28	32	09	13	13	17	29	32	19	24	20
28	30	09	11	14	16	30	31	19	23	21
29	29	10	10	14	15	30	30	20	21	22
29	28	10	09	15	13	31	29	21	20	23
30	27	10	08	15	12	31	28	21	18	24
30	26	11	06	16	11	31	27	22	17	25
31	24	12	05	16	10	32	26	22	16	26
31	23	12	04	17	08	32	25	23	15	27
32	22	13	03	17	07	33	24	24	13	28
32	21	13	01	18	06	33	22	24	12	29
6 33	18 20	6 14	18 00	6 18	18 05	6 34	18 21	6 25	18 11	30

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		श्रीगंगानगर		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		करनाल		जोधपुर		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
अक्तू	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	अक्तू
अक्तू	6 28	18 11	6 24	18 08	6 20	18 04	6 20	18 05	6 32	18 16	6 23	18 09	6 33	18 19	6 15	17 59	6 19	18 03	6 34	18 20	6 25	18 09	अक्तू
2	29	10	25	06	21	03	21	04	32	15	23	08	34	17	15	58	20	02	35	19	26	08	2
3	29	09	25	05	21	02	21	03	33	14	24	07	34	16	16	57	20	01	35	18	27	07	3
4	30	08	26	04	22	18 01	22	02	34	13	24	06	35	15	16	55	21	18 00	35	17	28	05	4
5	31	06	26	03	23	17 59	23	18 01	34	11	25	05	35	14	17	54	21	17 59	36	16	28	04	5
6	31	05	27	02	23	58	23	17 59	35	10	25	03	36	13	18	53	22	58	36	15	29	03	6
7	32	04	28	18 00	24	57	24	58	35	09	26	02	36	12	18	52	22	56	37	14	30	02	7
8	33	03	28	17 59	24	56	24	57	36	08	26	01	37	11	19	51	23	55	37	13	30	18 00	8
9	33	01	29	58	25	55	25	56	37	07	27	18 00	37	10	19	49	24	54	38	12	31	17 59	9
10	34	18 00	30	57	26	54	25	55	37	06	27	17 59	38	09	20	48	24	53	38	11	32	58	10
11	35	17 59	30	56	26	52	26	54	38	04	28	58	39	08	21	47	25	52	39	10	33	57	11
12	35	58	31	54	27	51	27	53	38	03	28	57	39	06	21	46	26	51	39	09	33	55	12
13	36	57	32	53	28	50	27	52	39	02	29	56	40	05	22	45	26	50	40	08	34	54	13
14	37	56	32	52	28	49	28	51	40	01	29	55	40	04	22	44	27	48	40	07	35	53	14
15	37	54	33	51	29	48	28	50	40	18 00	30	54	41	03	23	44	27	47	41	06	35	52	15
16	38	53	34	50	30	47	29	49	41	17 59	31	53	41	02	24	42	28	46	41	05	36	51	16
17	39	52	34	49	30	46	30	47	42	58	31	52	42	01	24	41	29	45	42	04	37	49	17
18	40	51	35	48	31	45	30	46	42	57	32	51	43	18 00	25	39	29	44	42	03	38	48	18
19	40	50	36	47	32	44	31	45	43	56	32	50	43	17 59	26	38	30	43	43	02	38	47	19
20	41	49	36	45	32	43	31	44	44	55	33	49	44	58	26	37	31	42	43	01	39	46	20
21	42	48	37	44	33	42	32	43	44	54	33	48	44	57	27	36	31	41	44	18 00	40	45	21
22	42	47	38	43	34	40	33	43	45	53	34	48	45	57	28	35	32	40	45	17 59	41	44	22
23	43	46	38	42	34	39	33	42	46	52	35	47	46	56	28	34	33	39	45	58	41	43	23
24	44	45	39	41	35	39	34	41	46	51	35	46	46	55	29	33	33	38	46	58	42	42	24
25	45	44	40	40	36	38	35	40	47	50	36	45	47	54	30	32	34	37	46	57	43	41	25
26	46	43	41	39	37	37	35	39	48	49	36	44	48	53	31	32	35	36	47	56	44	40	26
27	46	42	41	38	37	36	36	38	48	48	37	43	48	52	31	31	35	35	47	55	45	39	27
28	47	41	42	38	38	35	37	37	49	47	37	43	49	51	32	30	36	35	48	54	45	38	28
29	48	40	43	37	39	34	38	36	50	46	38	42	50	50	33	29	37	34	49	54	46	37	29
30	49	39	44	36	40	33	38	35	51	45	39	41	50	50	33	28	38	33	49	53	47	36	30
31	6 49	17 38	6 45	17 35	6 40	17 32	6 39	17 35	6 51	17 45	6 40	17 40	6 51	17 49	6 34	17 27	6 38	17 32	6 50	17 52	6 48	17 35	31
नवं.	6 50	17 37	6 45	17 34	6 41	17 31	6 40	17 34	6 52	17 44	6 40	17 40	6 52	17 48	6 35	17 26	6 39	17 31	6 51	17 52	6 49	17 34	नवं.
2	51	36	46	33	42	31	40	33	53	43	41	39	52	47	36	26	40	30	51	51	50	33	2
3	52	35	47	32	43	30	41	32	54	42	42	38	53	47	37	25	41	30	52	50	50	32	3
4	53	35	48	32	43	29	42	32	54	41	42	37	54	46	37	24	41	29	53	50	51	31	4
5	54	34	49	31	44	28	43	31	55	41	43	37	54	45	38	23	42	28	53	49	52	30	5
6	54	33	49	30	45	27	43	30	56	40	44	36	55	45	39	23	43	27	54	48	53	30	6
7	55	32	50	29	46	27	44	30	57	39	44	36	56	44	40	22	44	27	55	48	54	29	7
8	56	32	51	29	47	26	45	29	58	39	45	35	57	43	40	21	45	26	55	47	55	28	8
9	57	31	52	28	47	25	46	28	58	38	46	34	57	43	41	21	45	25	56	47	56	27	9
10	58	30	53	27	48	25	46	28	6 59	37	46	34	58	42	42	20	46	25	57	46	57	27	10
11	6 59	30	54	27	49	24	47	27	7 00	37	47	33	6 59	42	43	19	47	24	57	46	57	26	11
12	7 00	29	54	26	50	24	48	27	01	36	48	33	7 00	41	44	19	48	24	58	45	58	25	12
13	00	28	55	26	51	23	49	26	02	36	49	33	00	41	45	18	49	23	6 59	45	59	25	13
14	01	28	56	25	52	23	50	26	02	35	49	32	01	40	45	18	49	23	7 00	44	7 00	24	14
15	02	27	57	25	52	22	50	25	03	35	50	32	02	40	46	17	50	22	00	44	01	24	15
16	7 03	17 27	6 58	17 24	6 53	17 22	6 51	17 25	7 04	17 34	6 51	17 31	7 03	17 39	6 47	17 17	6 51	17 22	7 01	17 44	7 02	17 23	16

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		श्रीगंगानगर		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		करनाल		जोधपुर		कठुआ		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
नवं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	नवं.
17	7 04	17 26	6 59	17 24	6 54	17 21	6 52	17 24	7 05	17 34	6 52	17 31	7 04	17 39	6 48	17 16	6 52	17 21	7 02	17 43	7 03	17 23	17
18	05	26	7 00	23	55	21	53	24	06	33	52	31	04	39	49	16	53	21	03	43	04	22	18
19	06	25	00	23	56	20	54	24	07	33	53	30	05	38	49	16	54	21	03	43	05	22	19
20	07	25	01	22	57	20	54	23	07	33	54	30	06	38	50	15	54	20	04	42	05	21	20
21	07	25	02	22	58	20	55	23	08	32	55	30	07	38	51	15	55	20	05	42	06	21	21
22	08	24	03	22	58	19	56	23	09	32	55	30	07	38	52	15	56	20	06	42	07	20	22
23	09	24	04	21	6 59	19	57	22	10	32	56	29	08	37	53	14	57	19	06	42	08	20	23
24	10	24	05	21	7 00	19	58	22	11	32	57	29	09	37	54	14	58	19	07	42	09	20	24
25	11	23	06	21	01	19	58	22	12	31	58	29	10	37	54	14	58	19	08	41	10	20	25
26	12	23	06	21	02	18	6 59	22	12	31	59	29	11	37	55	14	59	19	09	41	11	19	26
27	13	23	07	21	03	18	7 00	22	13	31	6 59	29	11	37	56	14	7 00	19	09	41	12	19	27
28	13	23	08	20	03	18	01	22	14	31	7 00	29	12	37	57	13	01	18	10	41	13	19	28
29	14	23	09	20	04	18	02	22	15	31	01	29	13	36	58	13	02	18	7 11	41	13	19	29
30	7 15	17 23	7 10	17 20	7 05	17 18	7 02	17 22	7 16	17 31	7 02	17 29	7 14	17 36	6 59	17 13	7 03	17 18	7 11	17 41	7 14	17 19	30
दिसं.	7 16	17 23	7 10	17 20	7 06	17 18	7 03	17 21	7 16	17 31	7 02	17 29	7 14	17 36	6 59	17 13	7 03	17 18	7 12	17 41	7 15	17 18	दिसं.
2	17	22	11	20	07	18	04	21	17	31	03	29	14	36	7 00	13	04	18	13	41	16	18	2
3	18	22	12	20	07	18	05	22	18	31	04	29	16	36	01	13	05	18	14	41	17	18	3
4	18	22	13	20	08	18	06	22	19	31	04	29	17	37	02	13	06	18	14	41	18	18	4
5	19	23	14	20	09	18	06	22	20	31	05	29	17	37	02	13	06	18	15	41	18	18	5
6	20	23	14	20	10	18	07	22	20	31	05	29	18	37	03	13	07	18	16	42	19	18	6
7	21	23	15	20	10	18	08	22	21	31	07	29	19	37	04	13	08	19	16	42	20	19	7
8	22	23	16	20	11	18	08	22	22	31	07	29	20	37	05	14	09	19	17	42	21	19	8
9	22	23	17	21	12	18	09	22	22	31	08	30	20	37	05	14	09	19	18	42	21	19	9
10	23	23	17	21	13	19	10	22	23	31	08	30	21	37	06	14	10	19	19	42	22	19	10
11	24	23	18	21	13	19	11	23	24	32	09	30	22	38	07	14	11	19	19	43	23	19	11
12	24	24	19	21	14	19	11	23	25	32	10	30	22	38	07	14	11	20	20	43	24	19	12
13	25	24	19	22	15	19	12	23	25	32	11	31	23	38	08	15	12	20	20	43	24	20	13
14	26	24	20	22	15	20	13	24	26	33	11	31	24	39	09	15	13	20	21	44	25	20	14
15	26	25	21	22	16	20	13	24	26	33	12	31	24	39	09	15	13	20	22	44	26	20	15
16	27	25	21	23	17	20	14	24	27	33	12	32	25	39	10	16	14	21	22	44	26	21	16
17	28	25	22	23	17	21	14	25	28	34	13	32	25	40	11	16	15	21	23	45	27	21	17
18	28	26	23	23	18	21	15	25	28	34	14	33	26	40	11	17	15	22	23	45	28	21	18
19	29	26	23	24	18	22	15	26	29	35	14	33	27	41	12	17	16	22	24	46	28	22	19
20	29	27	24	24	19	22	16	26	29	35	15	34	27	41	12	17	16	23	25	46	29	22	20
21	30	27	24	25	19	23	17	26	30	35	15	34	28	42	13	18	17	23	25	46	29	23	21
22	30	28	25	25	20	23	17	27	30	36	16	34	28	42	13	18	17	24	26	47	30	23	22
23	31	28	25	26	20	24	17	27	31	36	16	35	29	43	14	19	18	24	26	48	30	24	23
24	31	29	26	26	21	24	18	28	31	37	17	36	29	43	14	20	18	25	26	48	31	24	24
25	32	29	26	27	21	25	18	29	32	38	17	36	29	44	15	20	19	25	27	49	31	25	25
26	32	30	26	27	22	25	19	29	32	38	18	37	30	44	15	21	19	26	27	49	31	25	26
27	32	30	27	28	22	26	19	30	33	39	18	37	30	45	16	21	19	26	28	50	32	26	27
28	33	31	27	29	22	26	20	30	33	39	18	38	31	45	16	22	20	27	28	50	32	27	28
29	33	32	28	29	23	27	20	31	33	40	19	39	31	46	16	23	20	28	28	51	33	27	29
30	33	32	28	30	23	28	20	32	34	41	19	39	31	47	17	23	20	28	29	52	33	28	30
31	7 34	17 33	7 28	17 31	7 23	17 28	7 21	17 32	7 34	17 41	7 19	17 40	7 32	17 47	7 17	17 24	7 21	17 29	7 29	17 52	7 33	17 29	31

चन्द्रमा-स्पष्ट द्वारा विंशोतरी दशा का भोग्य काल जानना

नीचे चन्द्रमा के अंश-कला की तालिका के सामने चन्द्र संचार की मेषादि बारह राशियों की तालिका तथा उनके द्वारा केतु, सूर्य, भौमादि ग्रहों द्वारा भोग्य दशा वर्षो की सारिणी लिख रहे हैं। ध्यान रहे, आपके द्वारा किया गया चन्द्र स्पष्ट नितान्त शुद्ध होना चाहिए। चन्द्र स्पष्ट निकालने की सरल विधि हमारे कार्यालय से प्रकाशित ज्योतिष तत्त्व का अवलोकन करे॥

सारिणी नं० I (क)

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
००	००	केतु	७	०	०	सूर्य	४	६	०	मंग	३	६	०	गुरु	४	०	०
०	१०		६	१०	२९		४	५	३		३	४	२८		३	९	१८
०	२०		६	९	२७		४	४	६		३	३	२७		३	७	६
०	३०		६	८	२६		४	३	९		३	२	२५		३	४	२४
०	४०		६	७	२४		४	२	१२		३	१	२४		३	२	१२
०	५०		६	६	२३		४	१	१५		३	०	२२		३	०	०
१	००		६	५	२१		४	०	१८		२	११	२१		२	९	१८
१	१०		६	४	२०		३	११	२१		२	१०	१९		२	७	६
१	२०		६	३	१८		३	१०	२४		२	९	१८		२	४	२४
१	३०		६	२	१७		३	९	२७		२	८	१६		२	२	१२
१	४०		६	१	१५		३	९	०		२	७	१५		२	०	०
१	५०		६	०	१४	*	३	८	३		२	६	१३		१	९	१८
२	००		५	११	१२		३	७	६		२	५	१२		१	७	६
२	१०		५	१०	११		३	६	९		२	४	१०		१	४	२४
२	२०		५	९	९		३	५	१२		२	३	९		१	२	१२
२	३०		५	८	८		३	४	१५		२	२	७		१	०	०
२	४०		५	७	६		३	३	१८		२	१	६		०	९	१८
२	५०		५	६	५		३	२	२१		२	०	४		०	७	६
३	००		५	५	३		३	१	२४		१	११	३		०	४	२४
३	१०		५	४	२		३	०	२७		१	१०	१	गुरु	०	२	१२
३	२०		५	३	००		३	०	०		१	९	०	शनि	१९	०	०
३	३०		५	१	२९		२	११	३		१	७	२८		१८	९	४
३	४०		५	०	२७		२	१०	६		१	६	२७		१८	६	९
३	५०		४	११	२६		२	९	९		१	५	२५		१८	३	१३
४	००		४	१०	२४		२	८	१२		१	४	२४		१८	०	१८
४	१०		४	९	२३		२	७	१५		१	३	२२		१७	९	२२
४	२०		४	८	२१		२	६	१८		१	२	२१		१७	६	२७
४	३०		४	७	२०		२	५	२१		१	१	१९		१७	४	१
४	४०		४	६	१८		२	४	२४		१	०	१८		१७	१	६
४	५०		४	५	१७		२	३	२७		०	११	१६		१६	१०	१०
५	००		४	४	१५		२	३	०		०	१०	१५		१६	७	१५
५	१०		४	३	१४		२	२	३		०	९	१३		१६	४	१९
५	२०		४	२	१२		२	१	६		०	८	१२		१६	१	२४
५	३०		४	१	११		२	०	९		०	७	१०		१५	१०	२८
५	४०		४	०	९		१	११	१२		०	६	९		१५	८	३
५	५०		३	११	८		१	१०	१५		०	५	७		१५	५	७
६	००		३	१०	६		१	९	१८		०	४	६		१५	२	१२
६	१०		३	९	५		१	८	२१		०	३	४		१४	११	१६
६	२०		३	८	३		१	७	२४		०	२	३		१४	८	२१
६	३०		३	७	२		१	६	२७	मंग	०	१	१		१४	५	२५
६	४०		३	६	०		१	६	०	राहु	१८	०	०		१४	३	०
६	५०		३	४	२९		१	५	३		१७	९	९		१४	०	४
७	००		३	३	२७		१	४	६		१७	६	१८		१३	९	९
७	१०		३	२	२६		१	३	९		१७	३	२७		१३	६	१३
७	२०		३	१	२४		१	२	१२		१७	१	६		१३	३	१८
७	३०	केतु	३	०	२३	सूर्य	१	१	१५	राहु	१६	१०	१५	शनि	१३	०	२२

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
७	४०	केतु	२	११	२१	सूर्य	१	०	१८	राहु	१६	७	२४	शनि	१२	९	२७
७	५०		२	१०	२०		०	११	२१		१६	५	३		१२	७	१
८	००		२	९	१८		०	१०	२४		१६	२	१२		१२	४	६
८	१०		२	८	१७		०	९	२७		१५	११	२१		१२	१	१०
८	२०		२	७	१५		०	९	०		१५	९	०		११	१०	१५
८	३०		२	६	१४		०	८	३		१५	६	९		११	७	१९
८	४०		२	५	१२		०	७	६		१५	३	१८		११	४	२४
८	५०		२	४	११		०	६	९		१५	०	२७		११	१	२८
९	०		२	३	९		०	५	१२		१४	१०	६		१०	११	३
९	१०		२	२	८		०	४	१५		१४	७	१५		१०	८	७
९	२०		२	१	६		०	३	१८		१४	४	२४		१०	५	१२
९	३०		२	०	५		०	२	२१		१४	२	३		१०	२	१६
९	४०		१	११	३		०	१	२४		१३	११	१२		९	११	२१
९	५०		१	१०	२	सूर्य	०	०	२७		१३	८	२१		९	८	२५
१०	०		१	९	०	चंद्र	१०	०	०		१३	६	०		९	६	०
१०	१०		१	७	२९		९	१०	१५		१३	३	९		९	३	४
१०	२०		१	६	२७		९	९	०		१३	०	१८		९	०	९
१०	३०		१	५	२६		९	७	१५		१२	९	२७		८	९	१३
१०	४०		१	४	२४		९	६	०		१२	७	६		८	६	१८
१०	५०		१	३	२३		९	४	१५		१२	४	१५		८	३	२२
११	००		१	२	२१		९	३	०		१२	१	२४		८	०	२७
११	१०		१	१	२०		९	१	१५		११	११	३		७	१०	१
११	२०		१	०	१८		९	०	०		११	८	१२		७	७	६
११	३०		०	११	१७		८	१०	१५		११	५	२१		७	४	१०
११	४०		०	१०	१५		८	९	०		११	३	०		७	१	१५
११	५०		०	९	१४		८	७	१५		११	०	९		६	१०	१९
१२	००		०	८	१२		८	६	०		१०	९	१८		६	७	२४
१२	१०		०	७	११		८	४	१५		१०	६	२७		६	४	२८
१२	२०		०	६	९		८	३	०		१०	४	६		६	२	३
१२	३०		०	५	८		८	१	१५		१०	१	१५		५	११	७
१२	४०		०	४	६		८	०	०		९	१०	२४		५	८	१२
१२	५०		०	३	५		७	१०	१५		९	८	३		५	५	१६
१३	०		०	२	३		७	९	०		९	५	१२		५	२	२१
१३	१०	केतु	०	१	१		७	७	१५		९	२	२१		४	११	२५
१३	२०	शुक्र	२०	०	०		७	६	०		९	०	०		४	९	०
१३	३०		१९	९	०		७	४	१५		८	९	९		४	६	४
१३	४०		१९	६	०		७	३	०		८	६	१८		४	३	९
१३	५०		१९	३	०		७	१	१५		८	३	२७		४	०	१३
१४	००		१९	०	०		७	०	०		८	१	६		३	९	१८
१४	१०		१८	९	०		६	१०	१५		७	१०	१५		३	६	२२
१४	२०		१८	६	०		६	९	०		७	७	२४		३	३	२७
१४	३०		१८	३	०		६	७	१५		७	५	३		३	१	१
१४	४०		१८	०	०		६	६	०		७	२	१२		२	१०	६
१४	५०		१७	९	०		६	४	१५		६	११	२१		२	७	१०
१५	०		१७	६	०		६	३	०		६	९	०		२	४	१५
१५	१०	शुक्र	१७	३	०	चंद्र	६	१	१५	राहु	६	६	९	शनि	२	१	१९

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
१५	२०	शुक्र	१७	०	०	चन्द्र	६	०	०	राहु	६	३	१८	शनि	१	१०	२४
१५	३०		१६	९	०		५	१०	१५		६	०	२७		१	७	२८
१५	४०		१६	६	०		५	९	०		५	१०	६		१	५	३
१५	५०		१६	३	०		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१६	०		१६	०	०		५	६	०		५	४	२४		०	११	१२
१६	१०		१५	९	०		५	४	१५		५	२	३		०	८	१६
१६	२०		१५	६	०		५	३	०		४	११	१२		०	५	२१
१६	३०		१५	३	०		५	१	१५		४	८	२१	शनि	०	२	२६
१६	४०		१५	०	०		५	०	०		४	६	०	बुध	१७	०	०
१६	५०		१४	९	०		४	१०	१५		४	३	९		१६	९	१३
१७	०		१४	६	०		४	९	०		४	०	१८		१६	६	२७
१७	१०		१४	३	०		४	७	१५		३	९	२७		१६	४	१०
१७	२०		१४	०	०		४	६	०		३	७	६		१६	१	२४
१७	३०		१३	९	०		४	४	१५		३	४	१५		१५	११	७
१७	४०		१३	६	०		४	३	०		३	१	२४		१५	८	२१
१७	५०		१३	३	०		४	१	१५		२	११	३		१५	६	४
१८	०		१३	०	०		४	०	०		२	८	१२		१५	३	१८
१८	१०		१२	९	०		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१८	२०		१२	६	०		३	९	०		२	३	०		१४	१०	१५
१८	३०		१२	३	०		३	७	१५		२	०	९		१४	७	२८
१८	४०		१२	०	०		३	६	०		१	९	१८		१४	५	१२
१८	५०		११	९	०		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१९	०		११	६	०		३	३	०		१	४	६		१४	०	९
१९	१०		११	३	००		३	१	१५		१	१	१५		१३	९	२२
१९	२०		११	०	०		३	०	०		०	१०	२४		१३	७	६
१९	३०		१०	९	०		२	१०	१५		०	८	३		१३	४	१९
१९	४०		१०	६	०		२	९	०		०	५	१२		१३	२	३
१९	५०		१०	३	०		२	७	१५	राहु	०	२	२१		१२	११	१६
२०	०		१०	०	०		२	६	०	गुरु	१६	०	०		१२	९	०
२०	१०		९	९	०		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
२०	२०		९	६	०		२	३	०		१५	७	६		१२	३	२७
२०	३०		९	३	०		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
२०	४०		९	०	०		२	०	०		१५	२	१२		११	१०	२४
२०	५०		८	९	०		१	१०	१५		१५	०	०		११	८	७
२१	०		८	६	०		१	९	०		१४	९	१८		११	५	२१
२१	१०		८	३	०		१	७	१५		१४	७	६		११	३	४
२१	२०		८	०	०		१	६	०		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	०		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	१
२१	४०		७	६	०		१	३	०		१४	०	०		१०	७	१५
२१	५०		७	३	०		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	०	०		१	०	०		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	०		०	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	०		०	९	०		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	०		०	७	१५		१३	०	०		९	६	२२
२२	४०		६	०	०		०	६	०		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	०		०	४	१५		१२	७	६		९	१	१९
२३	०		५	६	०		०	३	०		१२	४	२४		८	११	३
२३	१०		५	३	०	चंद्र	०	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	०	०	मंग	७	०	०		१२	०	०		८	६	०
२३	३०		४	९	०		६	१०	२९		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	०		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	०		६	८	[illegible]		११	४	२४		७	१०	१०
२४	३०	शुक्र	३	३	०	मंग	६	४	२०	गुरु	१०	७	६	बुध	७	०	४
२४	४०		३	०	०		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	०		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	०		६	१	१५		१०	०	०		६	४	१५
२५	१०		२	३	०		६	०	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	०	०		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	०		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	०		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	०		५	८	८		९	०	०		५	३	२२
२६	०		१	०	०		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		०	९	०		५	६	५		८	७	६		४	१०	१९
२६	२०		०	६	०		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०	शुक्र	०	३	०		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	सूर्य	६	०	०		५	३	०		८	०	०		४	३	०
२६	५०		५	११	३		५	१	२९		७	९	१८		४	०	१३
२७	००		५	१०	६		५	०	२७		७	७	६		३	९	२७
२७	१०		५	९	९		४	११	२६		७	४	२४		३	७	१०
२७	२०		५	८	१२		४	१०	२४		७	२	१२		३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	०	०		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	९	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	९	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	०		४	४	१५		६	०	०		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	६		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	०	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२५
२९	०		४	११	१२		४	०	९		५	२	१२		१	३	९
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	०	०		१	०	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		०	१०	०६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		०	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		०	५	०३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		०	२	१७
३०	०	सूर्य	४	६	०	मंग	३	६	०	गुरु	४	०	०	बुध	०	०	०

सारिणी नं० II (ख)

अनुपातिक चन्द्र कलाओं के अनुसार शेष भोग्य दशा

कला	केतु		शुक्र		सूर्य		चन्द्र		मंगल		राहु		गुरु		शनि		बुध		कला
	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	
१	०	०३	०	०९	०	०३	०	०५	०	०३	०	०८	०	०७	०	०९	०	०८	१
२	०	०६	०	१८	०	०५	०	०९	०	०६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५	२
३	०	०९	०	२७	०	०८	०	१४	०	०९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३	३
४	०	१३	१	०६	०	११	०	१८	०	१३	१	०२	०	२९	१	०४	१	०१	४
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	०६	१	१३	१	०८	५
६	०	१९	१	२४	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६	६
७	०	२२	२	०३	०	१९	१	०२	०	२२	१	२७	१	२०	२	००	१	२४	७
८	०	२५	२	१२	०	२२	१	०६	०	२५	२	०५	१	२८	२	०८	२	०१	८
९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९

★★★★ ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा का ज्ञान ★★★★

· नीचे लिखे चक्रों में अपने जन्म नक्षत्र देखें। जिस ग्रह के नीचे जन्मनक्षत्र होगा, उसी ग्रह की दशा जन्म समय में होगी और प्रत्येक ग्रह की दशा के वर्ष भी चक्र में लिखे हुए हैं। दशा का भुक्त भोग्य ज्ञान—जन्म समय जो नक्षत्र हो उसका भयात (जन्म समय तक जितना नक्षत्र व्यतीत हो गया हो) और भभोग (कुल नक्षत्र) वनाओ फिर उसके पलादि वनाकर भयात के पलों को जन्म दशा के वर्षों से गुणा कर दो और भभोग के पलों से भाग दो, लब्ध व्यतीत दशा के वर्ष आवेंगे। शेष को 12 से गुणा कर भभोग से भाग दो लब्ध मास निकलेंगे, शेष को 30 से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध दिन आवेंगे, शेष को 60 से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध घड़ी आवेंगी, शेष को 60 से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध पल इत्यादि आवेंगे। यह भुक्त दशा के वर्ष मासादि आवेंगे, जन्म समय की दशा के कुल वर्षों में से घटा दो, लब्ध भोग्य दशा आवेगी, इसमें आगामी ग्रहों की दशा के वर्षों को जोड़ते जाने से दशा चक्र हो जाएगा। अधिक सूक्ष्म रूप से दशाऽन्तरदशा का ज्ञान करने के लिए हमारे कार्यालय से 'ज्योतिष तत्त्व' पुस्तक मंगवाकर पढ़ें। मूल्य 150 रु.

सूर्यदशावर्ष ६				चन्द्रदशावर्ष १०				भौमदशावर्ष ७			
कृति उ.फा. उ.षा.				रोहि. हस्त श्रवण				मृग. चित्रा. धनि.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९
गु.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०

राहुदशावर्ष १८				गुरुदशावर्ष १६				शनिदशावर्ष १९			
आर्द्रा. स्वा. शत.				पुन. विशा. पू.भा.				पुष्य. अनु. उ. भा.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	गु.	२	१	१८	श.	३	०	३
बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२
शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०
सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९
चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२

बुधदशावर्ष १७				केतुदशावर्ष ७				शुक्रदशावर्ष २०			
श्ले. ज्ये. रेवती				मघा. मूल. अश्वि				पू. फा. पू. षा. भर.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

योगिनीदशाऽन्तर्दशाज्ञान के लिए चक्र

मंगला १			पिंगला २			धान्या ३			भ्रामरी ४		
मा.	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	बृ.	मा.	४८	मं.
मं.	०	१०	पिं.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०
पिं.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पिं.	२	०	धा.	४	०
श्रवण,आर्द्रा चित्रा			पुन. स्वा. धनि.			पुष्य, विशा शत.			श्ले. अनु. पू.भा. अश्वि		

भद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			संकटा ८		
मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा.	९६	के.
भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पिं.	५	१०
सं.	१३	१०	मं.	२	०	पिं.	४	२०	धा.	८	०
मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
पि.	३	१०	भ्रा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०
मघा. ज्ये. उ.भा. भर.			पू.फा. मूल रेव, कृति			उ.फा. पू.षा. रोह			हस्त उ.षा. मृग		

योगिनी दशा विचार—योगिनी दशा कुल ३६ वर्ष की होती है। प्रत्येक ३६ वर्षों के पश्चात् पुनः उसी दशा की पुनरावृत्ति होती है। योगनी दशाओं में क्रमशः मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और संकटा—ये आठ नाम हैं। इनकी वर्ष संख्या भी क्रमानुसार 1+2+3+4+5+6+7+8=36 वर्ष होते हैं। मंगला, पिंगला आदि योगिनी दशाएँ अपने नामानुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करती हैं।

योगिनी दशा की विधि—अश्विनी नक्षत्र से आरम्भ करके अपने जन्म नक्षत्र तक की संख्या में ३ जोड़कर ८ द्वारा भाग देने पर शेष १ बचे तो मंगला, २ बचें तो पिंगला, ३ बचे तो धान्या एवं च शेष ८ या ० बचे तो संकटा की दशा होगी। उदाहरणार्थ—यदि जन्म नक्षत्र अनुराधा हो, तो अश्विनी से अनुराधा तक गिनने पर १७ की संख्या हुई। इनमें ३ जमा करने पर कुल योग २० मिला। इसको ८ द्वारा भाग देने पर २ लब्धि तथा शेष ४ बचे। पूर्वोक्त क्रमानुसार मंगला से गिनने पर चौथी दशा—अर्थात् भ्रामरी की दशा (जन्मकाल से) प्रारम्भ होगी। योगिनी की भुक्त-भोग्य दशा अन्तरदशा जानने के लिए ज्योतिष तत्त्व पढ़ें।

अन्तर्दशामासादि शुभ दशा—मंगला, धा. भ. सि., नेष्टदशा—पिंगला, भ्रामरी, उल्का, संकटा।

अन्तर्दशा निकालने की विधि—जब किसी ग्रह की अन्तरदशा निकालनी हो तो उस ग्रह के वर्षों को पृथक २ हर एक ग्रह की दशा के वर्षों से गुणा कर महादशा के वर्षों से भाग दें (विंशोत्तरी १२०) (अष्टोत्तरी १०८) (योगिनी ३६) भाग देने से जो अंक आवे अन्तरदशा के वर्ष, मासादि आवेंगे।

ग्रहों की अन्तरदशा से प्रत्यन्तर दशा ज्ञात करना

भारतीय ज्योतिष में फलित कथन के लिए विभिन्न प्रकार की दशाओं का वर्णन मिलता है। परन्तु वर्तमान काल में केवल तीन प्रकार की दशाओं का प्रचलन मिलता है। **विंशोत्तरी दशा, योगिनी दशा और अष्टोतरी** दशा। अष्टोत्तरी दशा की अवधि 108 वर्ष की होती है। योगिनी दशा की एक आवृत्ति 36 वर्ष की ओर विंशोत्तरी दशा का कुल मान **120 वर्षों** का होता है। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत, महाराष्ट्र आदि में, **योगिनी दशाओं** का प्रचलन उत्तर भारत–विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश में अधिक पाया जाता है, जबकि **विंशोतरी दशा** पद्धति का प्रचलन समस्त भारत वर्ष में पाया जाता है। प्रस्तुत चक्रों में विंशोत्तरी में प्रत्येक ग्रह की अन्तर–दशा में प्रत्यन्तर दशाएँ निकालने की प्रक्रिया बतलाई गई है। किसी ग्रह की प्रत्यन्तर दशा निकल आने से फलादेश में और अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। दशाऽन्तरदशाओं के फलादेश का वर्णन आप हमारी पुस्तक **ज्योतिष तत्त्व फलित खण्ड भाग (दो)** में पढ़ सकते हैं। विंशोतरी दशा पद्धति के अन्तर्गत ग्रहों की महादशा एवं अन्तर्दशाओं के चक्र गत पृष्ठों में लिख चुके हैं। यहाँ पर पुनरावलोकन कर सकते हैं–

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंग.	राहु	गुरू	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष	6	10	7	18	16	19	17	7	20

सूर्यान्तर दशा चक्र–6 वर्ष

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0	1
मास	3	6	4	10	9	11	10	4	0
दिन	18	0	6	24	18	12	6	6	0

सूर्य मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	5	9	6	16	14	17	15	6	18
घंटे	9	0	7	4	9	2	7	7	00
मिन्ट	36	0	12	48	36	24	12	12	00

सूर्य मध्ये चन्द्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	0	0	0	0	0	1	0
दिन	15	10	27	24	28	25	10	0	9
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

सूर्य मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	18	16	19	17	7	21	6	10
घंटे	8	21	19	22	20	8	0	7	12
मिन्ट	24	36	12	48	24	24	0	12	0

सूर्य मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	1	0	0	0
दिन	18	13	21	15	18	24	16	27	18
घंटे	14	4	7	21	21	0	4	0	21
मिन्ट	24	48	12	36	36	0	48	0	36

सूर्य मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	8	15	10	16	18	14	24	16	13
घंटे	9	14	19	19	0	9	0	19	4
मिन्ट	36	24	12	12	0	36	0	12	48

सूर्य मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	1	1	0	1	0	0	0	1	1
दिन	24	18	19	27	17	28	19	21	15
घंटे	3	10	22	0	2	12	22	7	14
मिन्ट	36	48	48	0	24	0	48	12	24

सूर्य मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	13	17	21	15	25	17	15	10	18
घंटे	8	20	0	7	12	20	21	19	10
मिन्ट	24	24	0	12	0	24	36	12	48

सूर्य मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	21	6	10	7	18	16	19	17
घंटे	8	0	7	12	8	21	19	22	20
मिन्ट	24	0	12	0	24	36	12	48	24

सूर्य मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	1	1	1	1	0
दिन	0	18	0	21	24	18	27	21	21
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र की अन्तर्दशाएँ (10 वर्ष)

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चंद्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	1	1	1	0	1	0
दिन	25	17	15	10	17	12	17	20	15
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	0	1	0	0	1	0	0
दिन	12	1	28	3	29	12	5	10	17
घंटे	6	12	0	6	18	6	0	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	2	2	2	2	1	3	0	1	1
दिन	21	12	25	16	1	0	27	15	1
घंटे	0	0	12	12	12	0	0	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	2	2	2	0	2	0	1	0	2
दिन	4	16	8	28	20	24	10	28	12
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	3	2	1	3	0	1	1	2	2
दिन	0	20	3	5	28	17	3	25	16
घंटे	6	18	6	0	12	12	6	12	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	2	0	2	0	1	0	2	2	2
दिन	12	29	25	25	12	29	16	8	20
घंटे	6	18	0	12	12	18	12	0	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	0	1	0
दिन	12	5	10	17	12	1	28	3	29
घंटे	6	0	12	12	6	12	0	6	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	3	1	1	1	3	2	3	2	1
दिन	10	0	20	5	0	20	5	25	5
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	1
दिन	9	15	10	27	24	28	25	10	0
घंटे	0	0	12	0	0	12	12	12	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल की अन्तर्दशाएँ (7 वर्ष)

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

मंगल मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घंटे	13	1	14	36	19	13	12	8	6
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

मंगल मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घंटे	16	9	20	13	1	0	21	12	1
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

मंगल मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

मंगल मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	26	23	6	19	3	23	29	23
घंटे	4	12	6	12	22	6	6	20	4
मिन्ट	12	36	36	00	48	0	36	24	48

मंगल मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	1	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घंटे	13	19	12	20	18	19	13	14	12
मिन्ट	48	48	0	24	00	48	12	24	36

मंगल मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घंटे	13	12	8	6	13	1	14	6	19
मिन्ट	48	00	24	0	48	12	24	36	48

मंगल मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घंटे	7	12	8	21	19	22	20	8	0
मिन्ट	12	0	24	36	12	48	24	24	0

मंगल मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु की अन्तर्दशाएँ (18 वर्ष)

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

राहु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	25	9	3	17	26	12	18	21	26
घंटे	19	14	21	16	16	0	14	0	16
मिन्ट	12	24	36	48	48	0	24	0	48

राहु मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	4	1	4	1	2	1	4
दिन	25	16	2	20	24	13	12	20	9
घंटे	4	19	9	9	0	4	0	9	14
मिन्ट	48	12	36	36	0	48	0	36	24

राहु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	4	1	5	1	2	1	5	4
दिन	12	25	29	21	21	25	29	3	16
घंटे	10	8	20	0	7	12	20	21	19
मिन्ट	48	24	24	0	12	0	24	36	12

राहु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	4
दिन	10	23	3	15	16	23	17	2	25
घंटे	1	13	0	21	12	13	16	9	8
मिन्ट	12	12	0	36	0	12	48	36	24

राहु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	1	1	1	1
दिन	22	3	18	1	22	26	20	29	23
घंटे	1	0	21	12	1	16	9	20	13
मिन्ट	12	0	36	00	12	48	36	24	12

राहु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	1	3	2	5	4	5	5	2
दिन	0	24	0	3	12	24	21	3	3
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	16	27	18	18	13	21	15	18	24
घंटे	4	0	21	14	4	7	21	21	0
मिन्ट	48	0	36	24	48	12	36	36	0

राहु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	2	2	1	3	0
दिन	15	1	21	12	25	16	1	0	27
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	2	0	1
दिन	22	26	20	29	23	22	3	18	1
घंटे	1	16	9	20	13	1	0	21	12
मिन्ट	12	48	36	24	12	12	0	36	0

गुरू की अन्तर्दशाएँ (16 वर्ष)

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
वर्ष	2	2	2	0	2	0	1	0	2
मास	1	6	3	11	8	9	4	11	4
दिन	18	12	6	6	0	18	0	6	24

गुरू मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	3
दिन	12	1	18	14	8	8	4	14	25
घंटे	9	14	19	19	0	9	0	19	4
मिन्ट	36	24	12	12	0	36	0	12	48

गुरू मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	4	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	24	9	23	2	15	16	23	16	1
घंटे	9	4	4	0	14	0	4	19	14
मिन्ट	36	48	48	0	24	0	48	12	24

गुरू मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	3	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	25	17	16	10	8	17	2	18	9
घंटे	14	14	0	19	0	14	9	19	4
मिन्ट	24	24	0	12	0	24	36	12	48

गुरू मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	1	1	1
दिन	19	26	16	28	19	20	14	23	17
घंटे	14	0	19	0	14	9	19	4	14
मिन्ट	24	0	12	0	24	36	12	48	24

गुरू मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	5	1	2	1	4	4	5	4	1
दिन	10	18	20	26	24	8	2	16	26
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरू मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	14	24	16	13	8	15	10	16	18
घंटे	9	0	19	4	9	14	19	19	0
मिन्ट	36	0	12	48	36	24	12	12	0

गुरू मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	10	28	12	4	16	8	28	20	24
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरू मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	16	20	14	23	17	19	26	16	28
घंटे	14	9	19	4	14	14	0	19	0
मिन्ट	24	36	12	48	24	24	0	12	0

गुरू मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	3	4	4	1	4	1	2	1
दिन	9	25	16	2	20	24	13	12	20
घंटे	14	4	19	9	9	0	4	0	9
मिन्ट	24	48	12	36	36	0	48	0	36

शनि की अन्तर्दशाएँ (19 वर्ष)

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

शनि मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	5	2	6	1	3	2	5	4
दिन	21	3	3	0	24	0	3	12	24
घंटे	11	10	4	12	3	6	4	10	9
मिन्ट	24	12	12	0	36	0	12	48	36

शनि मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	5
दिन	17	26	11	18	20	26	25	9	3
घंटे	6	12	12	10	18	12	8	4	10
मिन्ट	36	36	0	48	0	36	24	48	12

शनि मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	1	1	2	1
दिन	23	6	19	3	23	29	23	3	26
घंटे	6	12	22	6	6	20	4	4	12
मिन्ट	36	0	48	0	36	24	48	12	36

शनि मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	1	3	2	5	5	6	5	2
दिन	10	27	5	6	21	2	0	11	6
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	17	28	19	21	15	24	18	19	27
घंटे	2	12	22	7	14	3	10	22	0
मिन्ट	24	0	48	12	24	36	48	48	0

शनि मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	3	2	1	3	0
दिन	17	3	25	16	0	20	3	5	28
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	2	1	0	2	0	1
दिन	23	29	23	3	26	23	6	19	3
घंटे	6	20	4	4	12	6	12	22	6
मिन्ट	36	24	48	12	36	36	0	48	0

शनि मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	5	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	3	16	12	25	29	21	21	25	29
घंटे	21	19	10	8	20	0	7	12	20
मिन्ट	36	12	48	24	24	0	12	0	24

शनि मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	4	4	4	1	5	1	2	1	4
दिन	1	24	9	23	2	15	16	23	16
घंटे	14	9	4	4	0	14	0	4	19
मिन्ट	24	36	48	48	0	24	0	48	12

बुध की अन्तर्दशाएँ (17 वर्ष)

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

बुध मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	2	20	24	13	12	20	10	25	17
घंटे	19	13	12	8	6	13	1	14	6
मिन्ट	48	48	0	24	0	48	12	24	36

बुध मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	1	5	1
दिन	20	29	17	29	20	23	17	26	20
घंटे	19	12	20	18	19	13	14	12	13
मिन्ट	48	0	24	0	48	12	24	36	48

बुध मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	5	1	2	1	5	4	5	4	1
दिन	20	21	25	29	3	16	11	24	29
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बुध मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	15	25	17	15	10	18	13	17	21
घंटे	7	12	20	21	19	10	8	20	0
मिन्ट	12	0	24	36	12	48	24	24	0

बुध मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	12	29	16	8	20	12	29	25	25
घंटे	12	18	12	0	18	6	18	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बुध मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	20	23	17	26	20	20	29	17	29
घंटे	19	13	14	12	13	19	12	20	18
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

बुध मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	4	4	4	1	5	1	2	1
दिन	17	2	25	10	23	3	15	16	23
घंटे	16	9	8	01	13	0	21	12	13
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

बुध मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	4
दिन	18	9	25	17	16	10	8	17	2
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

बुध मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	3	17	26	11	18	20	26	25	9
घंटे	10	6	12	12	10	18	12	8	4
मिन्ट	12	36	36	0	48	0	24	36	48

केतु की अन्तर्दशाएँ (7 वर्ष)

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
वर्ष	0	1	0	0	0	1	0	1	0
मास	4	2	4	7	4	0	11	1	11
दिन	27	0	6	0	27	18	6	9	27

केतु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घंटे	13	12	8	6	13	1	14	6	19
मिन्ट	48	0	24	0	48	12	24	36	48

केतु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घंटे	7	12	8	21	48	22	20	8	0
मिन्ट	12	0	24	36	0	48	24	24	0

केतु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घंटे	13	1	14	6	19	13	12	8	6
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

केतु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घंटे	16	9	20	13	1	0	21	12	1
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

केतु मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

केतु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	6	23	6	19	3	23	29	23
घंटे	4	12	6	12	22	6	6	20	4
मिन्ट	12	36	36	0	48	0	36	24	48

केतु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घंटे	13	19	12	20	18	19	13	14	12
मिन्ट	48	48	0	24	0	48	12	24	36

शुक्र की अन्तर्दशाएँ (20 वर्ष)

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	2	3	2	6	5	6	5	2
दिन	20	0	10	10	0	10	10	20	10
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	1	0	1	1	1	1	0	2
दिन	18	0	21	24	18	27	21	21	0
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	3	2	3	2	1	3	1
दिन	20	5	0	20	5	25	5	10	0
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	2	1	2	1	0	2	0	1
दिन	24	3	26	6	29	24	10	21	5
घंटे	12	0	0	12	12	12	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	5	4	5	5	2	6	1	3	2
दिन	12	24	21	3	3	0	24	0	3
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	4	5	4	1	5	1	2	1	4
दिन	8	2	16	26	10	18	20	26	24
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	6	5	2	6	1	3	2	5	5
दिन	0	11	6	10	27	5	6	21	2
घंटे	12	12	12	0	0	0	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	5	4	5
दिन	24	29	20	21	25	29	3	16	11
घंटे	12	12	0	0	0	12	0	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	2	1	2	1
दिन	24	10	21	5	24	3	26	6	29
घंटे	12	0	0	0	12	0	0	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

स्वप्न-शकुन का शुभाशुभ फल विचार

दैनिक जीवन में मनुष्य की जो वासनाएँ अतृप्त अथवा अपूर्ण रहती हैं, वही स्वप्न रूप में येन-केन प्रकारेण पूर्ति का आभास कराती हैं। सूर्योदय के कुछ पूर्व अथवा ब्रह्म मुहूर्त में देखे गए स्वप्न का फल दस दिनों में, रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष के पश्चात्, रात्रि के दूसरे प्रहर में देखे गए का फल छः मास में, तृतीय प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल तीन मास के बाद, रात्रि के अन्तिम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक मास में प्रकट होता है, जबकि दिन में देखे गए स्वप्न विश्वसनीय नहीं होते। शुभ सांकेतिक स्वप्न देखने के पश्चात् सोना नहीं चाहिए, शेष रात्रि भजन, चिंतन में बितानी चाहिए तथा किसी को अपना स्वप्न बताना भी नहीं चाहिए। इसके विपरीत अशुभ स्वप्न देखने के बाद फिर सो जाएं तथा प्रातःकाल यदि उस अशुभ स्वप्न की स्मृति ताजी रहे तो गुरुजनों को उसे बतला दें। अशुभ निवारण के लिए गायत्री पाठ, स्नानदानादि, अनुष्ठानादि कार्यों का सम्पादन करें। अधिक जानकारी हेतु हमारे कार्यालय से स्वप्न ज्योतिष विज्ञान सम्बन्धी पुस्तक मंगवाएँ।

स्वप्न	फल
अंगूठी पहनना	धन लाभ व प्रसन्नता
आम का वृक्ष देखना	सन्तान सुख
अतिथि देखना	आकस्मिक विपत्ति
आकाश से गिरना	मान हानि, चिन्ता
अर्थी देखना	रोग मुक्त
अग्नि देखना	पित्त सम्बन्धी रोग
अपने को मृत देखना	आयु वृद्धि
आग जलाकर पकड़ना	व्यर्थ व्यय हो
आत्महत्या करना	दीर्घायु
आपरेशन देखना	रोग के चिन्ह
अस्त्र-शस्त्र देखना	दुःखों से निपटारा हो
इन्द्रिय देखना	सन्तान सुख
इम्तहान में फेल होना	शुभ फल प्राप्ति
ईमारत बनाना	धन लाभ, तरक्की
ईंजन देखना	योजनाएं असफल
ईमली खाना	पुत्र प्राप्ति
इन्द्रधनुष देखना	जीवन में परिवर्तन
उल्लू देखना	रोग अथवा शोक हो
उल्टा लटके देखना	अपमान मिले
ऊँट देखना	अंग घात
ऊँचाई पर चढ़ना	तरक्की व मान
ऐनक देखना (काली)	निराशा
कैंची चलाना	व्यर्थ विवाद
कौआ बोलते देखना	बुरा समाचार मिले
कंघी करना	इच्छा पूर्ण हो
काला नाग	राज्य सम्मान
किला देखना	तरक्की पाना
कोढ़ी देखना	रोग सूचक
कन्या देखना	तीर्थ यात्रा
कोयला देखना	व्यर्थ का झगड़ा
कीचड़ में फंसना	कष्ट हो, व्यय हो
कटा सिर देखना	चिन्ता परेशानी

स्वप्न	फल
कुत्ता देखना	उत्तम मित्र प्राप्त हो
कढ़ाई करते देखना	प्रेम या व्यापार में सफलता
कबाब खाना	अपयश/विवाद
कब्रिस्तान देखना	प्रतिष्ठा वृद्धि
खून करना	संकट आना
खिलौना देखना	सुख शान्ति
खेत देखना	संकट पूर्ण
खरगोश देखना	स्त्री से मिलाप
गुरु देखना	कार्य सफलता
गोबर देखना	पशु लाभ हो
गंगा देखना	शेष जीवन सुखी
ग्रहण देखना	रोग व चिन्ता
गोली चलते देखना	विपत्ति निवारण
गुलाब देखना	मनोकामना पूर्ण हो
गरीबी देखना	सुख समृद्धि
गर्भपात	गम्भीर रोग
घोड़े से गिरना	परेशानी, चिन्ता
घाट पर नहाना	तीर्थ यात्रा
घायल देखना	संकट से मुक्त होना
घर बनाना	प्रसिद्धि प्राप्त हो
घड़ी देखना	यात्रा का संकेत
घोड़े पर बैठना	सफलता का सूचक
चोट लगना	स्वास्थ्य लाभ
चावल खाना	शुभ समाचार
चोर देखना	धन प्राप्ति
चांदी के जेवर	सम्बन्ध विच्छेद
चौकीदार देखना	धनागमन का संकेत
चीखें मारना	परेशानी व कष्ट
चुनरी देखना	सौभाग्य प्रतीक
छुरी मारना	परिवार से वाद विवाद
छिपकली देखना	अचानक धन लाभ
छींकना	कार्य बाधा

स्वप्न	फल
छाता देखना	चिन्ताओं से छुटकारा
छंटनी देखना	पदोन्नति
जख्म देखना	परेशानियां
जादूगर देखना	अशुभ लक्षण
जहाज देखना	परेशानी दूर हो
जिन्दा जलना	धन की प्राप्ति
जल देखना	मान सम्मान
ज्वर पीड़ित	स्वास्थ्य ठीक
जुआ खेलना	धन हानि
जेब काटना	धन हानि
जनाजा दखना	धन लाभ/तरक्की
झगड़ा देखना	प्रसन्नता मिले
झाड़ू देखना	नुकसान हो
झण्डा देखना	सुयश/धन लाभ
झांकी देखना	अशुभ
झोंपड़ी देखना	सुरक्षा सूचक
झरना देखना	दुःख दूर हो
टाट देखना	सम्मानजनक स्थिति
टेलीफोन करना	शुभ समाचार
टापू देखना	संकट लक्षण
टोपी देखना	प्रगति हो
ठग मिलना	धन हानि
ठिठुरना	उज्ज्वल भविष्य
डॉक्टर देखना	रोग उत्पत्ति
डूबते देखना	कठिनाईयों का सामना
डोली देखना	कोई परेशानी हो
डाकिया देखना	समाचार प्राप्त हो
डाकू देखना	धन हानि
ढोलक बजाना	किसी व्यक्ति से भेंट
तलवार चलाना	शत्रु पर विजय
तपस्वी देखना	आत्म उन्नति
तैरते देखना	आयु में वृद्धि

स्वप्न	फल
तर्पण करते देखना	मृत्यु की सूचना
तारे देखना	मनोरथ सिद्धि
तूफान देखना	परेशानी बढ़े
तीर्थ देखना	धार्मिक खींच
तोता देखना	धन लाभ
तलाक होते देखना	दाम्पत्य सुख में बाधा
तरक्की होते देखना	योजनाओं में सफलता
तराजू देखना	व्यापार लाभ
ताश खेलना	व्यापार लाभ
ताला बन्द देखना	कार्यों में रुकावट
तरबूज देखना	परेशानी
थूक देना	परेशानी बढ़े
थप्पड़ मारना	कलह क्लेश
थप्पड़ खाना	शुभ
दूध पीना	खुशी प्राप्ति
दरवाज़ा बन्द देखना	परेशानियां हो
दान करना	शुभ
दर्जी देखना	काम बिगड़ना
दांत गिरते देखना	दुःख एवं झंझट
दलदल देखना	व्यर्थ चिन्ता बढ़े
दवाई पीना	रोग नाश
दुकान (भरी) देखना	धन लाभ
दुकान (खाली) देखना	धन हानि
देवी देवता देखना	खुशी प्राप्ति
दरिया में नहाना	रोग नाश
दीवार गिरना	धन हानि
दाह संस्कार देखना	दीर्घायु
धन देखना	धन की प्राप्ति
धूल देखना	यात्रा पड़े
धमकी देना	शत्रु पर विजय
धार्मिक कार्य करना	पारिवारिक सुख
धोबी देखना	सफलता हो

स्वप्न	फल
धुआं देखना	कार्य में विघ्न
धूप देखना	पदोन्नति, लाभ हो
नदी में गिरना	फिक्र, चिन्ता
नंगा देखना	कष्ट प्राप्ति
नदी का पानी पीना	राज्य से लाभ
न्यायालय देखना	झगड़े में सफलता
नदी देखना	आकांक्षा पूर्ति
नवयौवना देखना	प्रेम सम्बन्ध
नाखून काटना	रोग से मुक्ति
नाव में बैठना	झूठा आरोप लगे
नाग देखना	सुख प्राप्ति
नृत्य देखना	धन प्राप्ति
प्यासा होना	कार्य बाधा
पुल देखना	शुभ यात्रा हो
परछाई देखना	अशुभ होना
पशु देखना	व्यापार में लाभ
पहाड़ देखना	उन्नति का सूचक
पान खाना	प्रिय से मिलाप
परीक्षा देते देखना	असफलता
पहलवान देखना	स्वास्थ्य लाभ
पपीता देखना	धन लाभ
पुजारी देखना	उन्नति का संकेत
पूर्वज देखना	शुभ फल प्राप्ति
पखाना करना	कष्ट मिले
पानी बरसते देखना	शुभ कारक
पिंजरे में पक्षी देखना	सुख प्राप्ति
पगड़ी देखना	प्रतिष्ठा प्राप्ति
प्रणय सबन्ध देखना	दाम्पत्य सुख प्रतीक
प्रेत देखना	सौभाग्य वर्द्धक
फुलवाड़ी देखना	खुशी मिले
फव्वारा देखना	चिन्ता दूर हो
फेल होना	सफलता का सूचक

स्वप्न	फल
फकीर देखना	शुभ फलदायक
बहन देखना	सौभाग्य वृद्धि
बकरी देखना	शुभ यात्रा लाभ
बूढ़ी स्त्री देखना	दुःख प्राप्ति
बाग देखना	सुख मिले
बाढ़ देखना	धन की हानि
बिच्छू देखना	चिन्ताकारक
बारिश देखना	रोग व कलह
बन्दूक देखना	संकट आवे
बिल्ली देखना	लड़ाई के चिन्ह
बाजार देखना	दरिद्रता दूर हो
बर्फ देखना	प्रिया से मिलाप
बारात देखना	चिन्ता व परेशानी
भूकम्प देखना	सन्तान कष्ट
भाषण देना/सुनना	वाद विवाद
भूखा देखना (स्वयं को)	यात्रा लाभ
भिखारी देखना	यात्रा पड़े
मिठाई खाना	मान व तरक्की
मुर्दे के साथ खाना	दुःख दूर हो
मुर्दे से बात करना	मुराद पुरी हो
मछली देखना	धन व स्त्री प्राप्ति
मोर देखना	खुशी प्राप्ति
महल देखना	कष्ट से छुटकारा
माली देखना	खुशी मिले
मुर्दे हंसते देखना	फिक्र व चिन्ता
मृत्यु देखना	भाग्योदय
मुण्डन कराना	सुखी गृहस्थी
मन्दिर देखना	इच्छा पूर्ण हो
मंगनी देखना	विवाह में देरी
महात्मा देखना	धन प्राप्ति
यात्रा करना	यात्रा द्वारा धन लाभ
यज्ञ देखना	सौभाग्यसूचक
युद्ध देखना	सफलता के संकेत
यम देखना	आयु वृद्धि
रोटी खाना	इच्छा पूर्ण हो
रोते हुए देखना	प्रसन्नता का प्रतीक
रोगी देखना	दुःख निवृत्ति
रसोईघर देखना	धन धान्य का प्रतीक
[illegible] देखना	कष्टकारी यात्रा

स्वप्न	फल
राख देखना	सफलता की प्राप्ति
रेत पर चलना	शत्रु से हानि
रिश्वत लेना	अपमान हो
राक्षस देखना	कष्ट से छुटकारा
रखैल देखना	सन्तान कष्ट
लकड़ी उठाना/देखना	अकारण वाद-विवाद
लोहा देखना	स्वास्थ्य हानि
लाटरी का टिकट	सौभाग्य पद
लंगर देखना	धन सम्पदा वृद्धि
विष खाना	परेशानी बढ़े
वृक्ष काटना	धन हानि
विदाई देखना	धन वृद्धि
वध दिखाई देना	आकस्मिक विपत्ति
विवाह देखना	दुर्भाग्य सूचक
विधवा देखना	हानि
विदेश यात्रा देखना	परिवारिक विवाद
वर्षगांठ मनाना	आयु में कमी
वर्षा देखना	मान-सम्मान
विमान देखना	सौभाग्य सूचक
शेर देखना	शत्रु नाश
शीशा देखना	रोग नाश
शत्रु देखना	सफलता हो
शव देखना	शुभ फल
श्राद्ध करना	पितरों की प्रसन्नता
शिकार करना	पारिवारिक कष्ट
शिशु देखना	सुखी दाम्पत्य जीवन
शोक समूह देखना	आनन्द का प्रतीक
शमशान घाट	दीर्घायु
शराब पीना	वाद विवाद
साँप देखना/पकड़ना	शत्रु पर विजय
सागर देखना	धन वृद्धि
सुन्दरी देखना	धन लाभ
स्टेशन देखना	यात्रा शुभ होगी
सेहरा देखना	गृह क्लेश
सुन्दर वस्त्र देखना	बीमार होना
स्नान करते देखना	व्यवसाय में लाभ
हवालात देखना	मान सम्मान
हंसते हुए देखना	खुशी का प्रतीक
हड्डियाँ देखना	डूबे धन की प्राप्ति
हत्या देखना	परेशानी
हरी फुलवारी देखना	धन-जन वृद्धि
[illegible] देखना	व्यवसाय वृद्धि

अंगों पर छिपकली गिरने का फल

अंग फल पल्ली (किरली) पतन पर आवश्यक कर्त्तव्य

शरीर पर छिपकली गिरते समय, उस समय जो भी वस्त्र पहने हों, उन्हें पहिने हुए ही स्नान करना चाहिए। तत्पश्चात् तिल, उड़द, घृत में छाया-पात्र का दान एवं यथाशक्ति धन का दान करके "महामृत्युञ्जय मन्त्र" का पाठ करना चाहिए।

अंग	फल
मस्तक (सिर)	राज्य लाभ
कपाल	ऐश्वर्य प्राप्ति
नाक	सौभाग्य वृद्धि
दाहिना कान	आयु वृद्धि
बायां कान	भूषण लाभ
दाईं भुजा	मान-सम्मान
बाईं भुजा	धन-हानि, राज भय
कण्ठ	शत्रु नाश
पीठ के मध्य	क्लह-क्लेश
बाईं पीठ	रोग भय
दायीं पीठ	सुख लाभ
दायें कन्धे	विजय, सफलता
बायें कन्धे	दुश्मनों से भय
कमर	रोग भय
दाईं जाँघ	धन हानि
बाईं जाँघ	पुत्र से लाभ
दायें हाथ	धन लाभ

अंग	फल
बायें हाथ	धन हानि
नाभि	पुत्र प्राप्ति
हृदय	सुख-यश प्राप्ति
गुदा	रोग भय
गुप्तांग	मित्र से भेंट
दायें पाँव	यात्रा (भ्रमण)
बायें पाँव	रोग-क्लेश
पावों की उंगलियों	यात्रा
गर्दन	यश, लाभ

स्वप्न एवं अन्य शकुन सम्बन्धी विस्तृत जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से **स्वप्न-ज्योतिष विज्ञान** नामक पुस्तक मँगवाकर पढ़ें। —जनरल बुक डिपो जालन्धर

अंगस्फुरण फल

अंग	फल
सिर	पृथ्वी लाभ
माथा	स्थान लाभ
वामभुज	प्रिय प्राप्ति
नेत्र	प्रियदर्शन
भृकुटियां	लक्ष्मी दर्शन
कपोल	स्त्री सुख
नासा	गन्ध सुख
ऊपर का होंठ	स्त्री चुम्बन
कण्ठ	भूषण प्राप्ति
ग्रीवा	शत्रु भय
पीठ	पराजय
कन्धा	मित्र समागम
बाहुप्रदेश	प्रिय प्राप्ति

अंग	फल
बाहुमध्य	धनागमः
कर (हाथ)	धन प्राप्ति
छाती	विजय
पार्श्व	उत्तम प्रीति
नाभि	यात्रा से लाभ
उदर पेट	कोष प्राप्तिः
वृष्ण	पुत्र लाभ
जानु (घुटना)	रिपु (शत्रु) सन्धि
जंघा	हानिप्रद
चरण के ऊपर	स्थान प्राप्ति
चरण के नीचे	लाभप्रदः
दक्षिण कर्ण	दीर्घायु
कण्ठे	शत्रुनाश

शरीर में तिल और उनके शुभाशुभ फल

अंग	फल
माथे पर तिल	धनवान होवे
माथे के दाहिने ओर	मान प्रतिष्ठा में वृद्धि
दोनों भौंह के मध्य में	यात्रा कारक है
बायीं आंख पर	औरत से कलह
दाहिनी आँख पर	औरत से विशेष प्यार रहे
ठोडी पर तिल हो	औरत से प्यार कम हो
बायें गाल पर	धन का अपव्यय
दाहिने गाल पर	धन की बढ़ोतरी हो
ऊपर के होंठ पर	विषयवासना में रत रहे
नीचे के होंठ पर	धन की कमी रहे
कान पर तिल हो	आयु मध्यम रहे
गर्दन पर तिल हो	आराम प्राप्त हो
दाहिनी भुजा पर हो	मान-प्रतिष्ठा प्राप्त हो
नाक पर तिल हो	यात्रा कारक है
बायीं भुजा पर हो	झगड़ा होवे
बायीं छाती पर हो	औरत से झगड़ा हो
दाहिनी छाती पर हो	औरत से प्यार रहे
दोनों छातियों के मध्य	जीवन सुखमय रहे
हृदय पर हो	बुद्धिमान हो
पसली पर तिल हो	डरपोक स्वभाव हो
पीठ पर तिल हो	यात्रा में रहा करे
पेट पर तिल हो	श्रेष्ठ भोजन की इच्छा रहे
बगल में तिल हो	दूसरों को हानि पहुंचावे
कमर पर तिल हो	मन अशान्त रहे
बायें हाथ की पीठ पर	व्यय अधिक हो
दाहिनी हथेली पर	धनवान् हो
बायीं हथेली पर	व्यय कारक है
दाहिने पैर में तिल हो	यात्रा कारक है
बायें पैर पर	अपव्यय कारक
पाँव के तलुवे में	यात्रा अधिक

॥ अथ नक्षत्रकष्टावलीय ॥

नक्षत्र चरण	चरण				कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
	१	२	३	४						
	रोग दिन संख्या									
अश्विनी १	०९	११	१०	२०	अर्ध गात्र पीड़ा वातज्वर निद्राभंग	अश्विनी देवता	घृत कुंभ सुवर्ण ब्राह्मण भोजन	५ हजार	ॐ अश्विनौ तेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्य्यम् वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यो नमः।	कुमकुम, श्वेत चंदन, चम्पक पुष्प तंदुल मोदक नैवेद्य गुड़, क्षीर, कमल पुष्प, धूप तिल दीपः
भरणी २	दि ००	दि ८०	दि ४०	दि ११	छर्दरोग तीव्रज्वर तंद्रा अनेक रोग	यम देवता	शर्करा घृत अजा गौ महिषी, छायापात्र	१० हजार	ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्य्यस्यत्वा तपसे देवस्यत्वा सवितामध्वा नक्तु पृथिव्या स Ω स्पृशस्पाहिअर्चिरसि शोचिरसि तपोसि ॥२॥	अगर गन्ध करवीरपुष्प गुग्गुल धूप गुड़ोदन नैवेद्य धूप दीप क्षेत्रपाल पूजा
कृतिका ३	दि ००	दि ११	दि १६	दि २८	रक्तनेत्र उरु शूल नेत्र पीड़ा अतिदाह	अग्नि देवता	सुवर्ण गौदान ग्रह शांति	१० हजार	ॐ अयमग्नि सहस्रिणो वाजस्य शांति Ω वनस्पतिः मूर्द्धा कबोरयीणाम् ॥ ३ ॥ अग्नये नमः॥	चन्दन गंध पुष्प नैवेद्य गुग्गुलधूपघृत दीप तिलमाष गुड़ोदन पायस नैवेद्य, दशांग
रोहिणी ४	दि ०७	दि ०९	दि १८	दि ३०	शिर दर्द ज्वर पीड़ा कुक्षिशूल प्रलाप	प्रजापति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्ण गौदुग्धखड	५ हजार	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सूरुचोवेन आवः सबुध्न्या उपमा अस्यविष्टाः सतश्चयोनिमसतश्चविधः ॥४॥ ॐ ब्रह्मणे नमः॥	चन्दन गन्ध पुष्प नैवेद्य अष्टगन्ध दूध मोदक धूप घृत क्षीर नैवेद्य, दीप, दशांग
मृगशिर ५	दि ०९	दि ०५	दि ०७	दि १०	अर्ध शरीर पीड़ा महाघोर कष्ट	सोम देवता	दधितडुलगोवत्सा दान ब्राह्मण भोजन	१० हजार	ॐ सोमोधनु Ω सोमाअवन्तुमाशु Ω सोमोवीरः कर्मणयन्ददाति यदत्यविदध्य Ω सभेयम्पितृ श्रवणयोम ॐ चन्द्रमसे नमः ।५॥	चन्दन गंध सौरभ पुष्प गुग्गुल धूप पायस नैवेद्य मधु घृतदुग्धदध्योदन बलि, दशांग
आर्द्रा ६	दि ००	दि १८	दि ००	दि ००	ज्वर सर्वांगपीड़ा निद्रानाश त्रिदोष	रुद्र देवता	कृष्ण वृषभादि दान कृष्ण वस्त्रादि	१० हजार	ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोत इषवे नमः बाहुभ्यां मुतते नमः॥६॥ ॐ रुद्राय नमः॥	हरिद्रा कुमकुम गन्ध सवन्तिका पुष्प अष्ट गंधतिलपिष्ट धूप नैवेद्य घृत मिष्ठान्न दशांग
पुनर्बसु ७	दि ०७	दि १४	दि ०२	दि २१	अर्ध शरीर पीड़ा शिर पीड़ा ज्वर	अदिति देवता	सुवर्ण कमलदान ५ कन्याभोजनवस्त्र	१० हजार	ॐ अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदिति र्माताः स पिता स पुत्रः विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिजातम अदितिरर्जनित्वम् ॥७॥ ॐ आदित्याय नमः॥	कुंमकुम गंध वारिज पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य मोदक गुड़बलि पीत वर्णान्न
पुष्य ८	दि ०७	दि ०७	दि १०	दि २१	ज्वर पीड़ा शूल अतिकठिन रोग	बृहस्पति देवता	पीत वस्त्र सुवर्ण गौदान पक्वान्नदान	१० हजार	ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यदी दयच्छ वसत्रृतप्रजातदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम् ॥ ॐ गुरवे नमः ॥	कुमकुम अगर गंध अगस्त पुष्पघृतगुग्गुल धूपक्षीर नैवेद्यदध्योदन, शक्कर बलिदानम्
आश्लेषा ९	दि ००	दि ००	दि ११	दि ००	सर्व गात्र पीड़ा मृत्युतुल्य कष्ट	सर्प देवता	कुलमातृ योगिनी पूजा गोशय्यादान	१० हजार	ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्योये के च पृथिवीमनुः। ये अन्तरिक्षे यो दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥९॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः	चन्दन गन्धचम्पक पुष्प गुग्गुल घृतधूप क्षीर मिष्टान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि कुंकुम,
मघा १०	दि १५	दि ०७	दि १७	दि २०	अर्धगात्र पीड़ा शीत जन्यरोगभय शिर पीड़ा	पितर देवता	तिल तंडुलमाष वस्त्रदान	१० हजार	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वाधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्न पितरोऽमीमदन्तः पितरोतितृपन्तः पितरःशुन्धध्वम् ॥१०॥ ॐ पितरेभ्ये नमः॥	चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प गुग्गुल धूप घृत मिष्ठान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि, दीप, नैवेद्य, दीपादि
पूर्वाफाल गुणी ११	दि ००	दि १५	दि ००	दि ३०	सर्वगात्रे पीड़ा ज्वर अर्धशिररोग	भग देवता	पित्तल पात्र यव माष गोस्वर्णदान	१० हजार	ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मां धियमुदवाददन्नः। भगप्रजननाय गोभिरश्वैर्भगप्रणेतृभिर्नुवन्तः स्यामः ॥११॥ ॐ भगाय नमः॥	चन्दन गंध चम्पक पुष्पगुग्गुलघृतधूप शर्करामोदक पूपोदन घृत पायसनैवेद्य बिल्व
उत्तरा फाल्गु. १२	दि ००	दि १४	दि ०७	दि ६०	शिर रोग महाज्वर कुक्षिशूलरोग	अर्यमा देवता	सुवर्णरजत अन्न गो वस्त्र दान	५ हजार	ॐ दैव्या वद्धर्व्यू च आगत Ω रथेन सूर्य्यत्वचा। मध्वायज्ञ Ω समञ्जायेतं प्रत्नया यं वेनश्चित्रं देवानाम् ॥१२॥ ॐ अर्यमणे नमः॥	कपूरकुंकुमगंध अर्कपुष्पघृत गुग्गुल धूप घृतपायसनैवेद्य घृतान्नहोम केशर गंध
हस्त १३	दि १५	दि १७	दि १५	दि ००	सर्वाङ्ग पीड़ा उदर शूल प्रस्वेद अफारा	सविता देवता	गोदानछाया पात्र रक्तवस्त्र सुवर्ण	५ हजार	ॐ विभ्राडवृहन्पिवतु सोम्यं मध्वार्य्युदधज्ञ पत्त व विहुतम् वातजूतोयो अभि रक्षतित्मना प्रजा पुपोषः पुरुधाविराजति ॥ ॐ सावित्रे नमः॥	कुकुमरक्तचन्दन गंध कमल पुष्पसुगन्ध गुग्गुलधूपः घृत पायसनैवेद्य दीप, केशर
चित्रा १४	दि ११	दि ०९	दि ०९	दि १६	विविधरोग भय महादारुण कष्ट	त्वष्टा देवता	विचित्रवृषभ गुड़ तिल छाया पात्र	५ हजार	ॐ त्वष्टातुरीयो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदापदायाः च्छन्द इन्द्रियमुक्षा गौत्र वयोदधुः ॥१४॥ त्वष्ट्रेनमः ॥ ॐ विश्व कर्मणे नमः॥	कुंकुम दीप अगरगन्ध विचित्र पुष्पगुग्गुल धूपमोदक घृत विचित्रान्नंहविनैवेद्य, केशर

नक्षत्र चरण	चरण १	२	३	४	कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
	रोग दिन संख्या									
स्वाती १५	६०	१७	३०	००	अनेक तरह के रोग ज्वर, कष्ट	वायु देवता	लाल गो सुवर्ण पक्कान्न दान	५ हजार	ॐ वायरन्नरदि बुधः सुमेध श्वेतः सिषीक्तिनो युतामभि श्री तं वायवे सुमनसा वितस्थुर्विश्वेनरः स्वपत्थ्या निचक्रः ॥१५॥ ॐ वायवे नमः॥	चन्दनगंध कमल पुष्प अगर गुग्गुल धूप, दीप पायस शर्करा घृत नैवेद्य।
विशाखा १६	दि १५	दि ००	दि ०४	दि १३	कुक्षिशूल रोग सर्व गात्र पीड़ा	इन्द्राग्नी देवता	रक्त पीत वस्त्र कृष्णवृषभ दान	१० हजार	ॐ इन्द्राग्नी आगत Ω सुतं गार्भिर्नमो वरेण्यम्। अस्य पातं धियोषिता ॥१६॥ ॐ इन्द्राग्नीभ्याँ नमः॥	श्री खण्ड चन्दन गंध कमल पुष्प देवदारु धूपघृत पायस नैवेद्य, दीपक केशर।
अनुराधा १७	दि ६०	दि १२	दि ३६	दि ३०	तीव्र ज्वर महारोग शिर पीड़ा	मित्र देवता	अन्न सुवर्ण गो दान छायापात्र	१० हजार	ॐ नमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृत Ω सपर्यत दूरंदृशे देव जाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्योयश Ω सत ॥१८॥ ॐ मित्राय नमः॥	कुंकुमगंध कमल पुष्प चन्दन धूपः पायस घृत पुष्प मोदक नैवेद्य, केशर, गंध।
ज्येष्ठा १८	दि ५९	दि ०९	दि ०६	दि ०४	पित्तरोग शरीर कांपना व्याकुलता	इन्द्र देवता	सुवर्ण नील वस्त्र तैल छायापात्रदान	५ हजार	ॐ त्रातारमिंद्रमबितारमिंद्र Ω हवे हवेसुहव Ω शूरमिंद्रम् वहयामि शक्रं पुरुहूतमिंद्र Ω स्वास्ति नो मधवा धात्विन्द्रः। ॐ इन्द्राय नमः॥	चन्दन गंध सुगंध पुष्प कपूर धूप विचित्रान्न नैवेद्य, चम्पा पुष्प पायस, नारियल।
मूला १९	दि ००	दि ०९	दि १५	दि ०६	ज्वरशूलसत्रिपात महाकठिन रोग	निर्ऋति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्णगोछायापात्र	५ हजार	ॐ मातेवपुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्नि Ω स्वयोनावभारुषा तां विश्वेदैवऋतुभिः संविदानः प्रजापति विश्वकर्मा विमुञ्चत। ॐ निऋतये नमः॥	कृष्ण अगर गंध नील पद्म पुष्प कृष्ण अगर धूप मिष्ठान्नहवि माष नैवेद्य।
पूर्वाषाढ़ा २०	दि ००	दि १५	दि २४	दि १०	शरीरपीड़ा कंपरोग शिररोग महाकष्ट	जल देवता	श्वेतवस्त्रतंडुलसु- वर्णजलकुंभ	५ हजार	ॐअपाघ मम कील्वषम पकृल्यामपोरपः अपामार्गत्वमस्मद यदुः स्वपन्य-सुवः ॥२०॥ ॐ अद्भ्यो नमः॥	चन्दनगन्ध पद्म पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य।
उत्तराषाढ़ा २१	दि ३०	दि २४	दि २६	दि १६	कटिपीड़ा प्रलाप उदर शूलरोग युक्त	विश्वेदेवा देवता	ब्राह्मण भोजन अन्न सुवर्ण दान	१० हजार	ॐ विश्वे अद्य मरुत विश्वऽउतो विश्वे भवत्यग्रयः समिद्धाः विश्वेनोदेवा अवसागमन्तु विश्वेमस्तु द्रविणं बाजो अस्मै॥२१॥	चन्दन गंध मालती गुग्गुल पुष्प पायस नैवेद्य।
श्रवण २२	दि ६०	दि २४	दि ०६	दि ०९	वातापित्तकफरोग अतिसारसर्वगात्रपी	गोविन्द देवता	सुवर्गगेदानब्राह्म णभोजनछायापात्र	१० हजार	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो श्नपत्रेस्थो विष्णो स्युरसिविष्णो ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥२२॥ ॐ विष्णवे नमः॥	चन्दन गंध मालतीपुष्प कपूर गुग्गुल धूप ओदन पायस षडरम नैवेद्य।
धनिष्ठा २३	दि १५	दि २	दि २०	दि २१	मूत्रकृच्छ ज्वर रक्त अतिसार कंपरोग	वसु देवता	छत्री जूता सुवर्ण गोछायापात्रदान	१० हजार	ॐ वसोःपवित्र मसि शतधारंवसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वासविता पुनातुवसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्वाकामधुक्षः। ॐ वसुभ्यो नमः॥	अगर गंध कमल पुष्प अगर धूप घृत पायस नैवेद्य, दीपक, ताम्र वर्तन।
शतभिषा २४	दि ००	दि ४५	दि ०३	दि २२	वायु रोग से भय सत्रिपातज्वरपीड़ा	वरुण देवता	तिलसुवर्ण घृत तैल अजागोदान	१० हजार	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कुं मसर्जनी स्थोवरुणस्य ऋत सदन्य सि वरुण स्यऋतमदन ससि वरुणस्यऋतसदनमसि। ॐ वरूणाय नमः॥	कुकम अगर गन्ध कमल पुष्प अगर धूप घृत धूप नैवेद्य।
पूर्वाभाद्र- -पद २५	दि ००	दि १२	दि २१	दि १९	सर्वगात्रपीड़ाछर्दी चिन्ताव्याकुलता	ऽजेकपाद देवता	सुवर्ण रजतश्वेत वस्त्र घृत दुग्ध	५ हजार	ॐ उतनाऽहिर्वुध्न्यः श्रृणोत्वज एकपापृथिवी समुद्रःविश्वे देवा ऋता वृधो हुवाना स्तुतामंत्राः कविशस्ता अवन्तु॥ ॐ अजैकपदे नमः॥	कंकुम चन्दनगन्धश्वेतार्क पुष्प सर्वोषधी मिश्र धूप दधि पायस नैवेद्य।
उत्तराभा- -द्रपद २६	दि १०	दि २०	दि ०९	दि १५	कामलारोगअतिसा ज्वरवायुशूलभ्रम	अहिर्बुध्न देवता	रजत कृष्ण वस्त्र तिल सुवर्ण दान	१ हजार	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तो पिता नमस्तेऽस्तुमामाहि Ω सो निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननायर रायम्पोषाय (सुप्रजास्त्वाय ॥२६॥) ॐ अहिबुर्धाय नमः॥	कपूरचन्दनगन्ध पद्म पुष्प विल्व गुग्गुल धूप दधि पायस नैवेद्य।
रेवती २७	दि १८	दि १०	दि ०९	दि २०	वातपित्तज्वर भ्रम उरू शूलपीडा	पूषा देवता	पित्तल पात्र रक्त वृषभवस्त्रछायापात्र	१० हजार	ॐ पूषन् तव व्रते वय नरिष्येभ कदाचन। स्तोतारस्तेइहस्मसि ॥२७॥ ॐ पूष्णेनमः॥	रक्त चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प घृत गुग्गल धूप घृत पायस नैवेद्य।

रोग-त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु	ज्ये०	धनि	शत०	भरणी	कृत्ति
पुर्न	मघा	हस्त	विशा	मूल	श्रव०	पू.भा.	अश्वि.	रोहि
पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वाती	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेवती	मृग.

मंगलवार १।६।११ तिथि कृत्तिका नक्षत्र। बुधवार २।७।१२ तिथि आश्लेषा नक्षत्र। गुरुवार ३।८।१३ तिथि मघाहस्तनक्षत्र। शुक्रवार ४।९।१४ तिथि–आर्द्रा धनिष्टा नक्षत्र। शनिवार ५।१०।१५ तिथि–भरणीनक्षत्र। इन तीन योगों में रोग का प्रारम्भ हो तो मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट जानना। (रोग के दिन नक्षत्र से नाम का नक्षत्र ५।१४।२३ संख्या पर काल का मुंह होता है और १०, १८वें नक्षत्र काल की दंष्ट्र (दाढ़) होती हैं, मुख वा दंष्ट्रा में जिस दिन नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यंत रोगग्रसित पुरुष की मृत्यु तुल्य कष्ट जानना। सूर्य जिस नक्षत्र में हो, वह नक्षत्र, चन्द्र नक्षत्र और नाम का नक्षत्र जिस दिन एक नाड़ी में हो उसी दिन असाध्य रोगी की मृत्यु जानना।

॥ अथ बालकष्टावली पूतना विधान ॥

मंत्र को २१ बार पढ़कर सात बार रूग्ण बालक के सिर पर घुमाकर चौरस्ते (चौराहे) पर मौन होकर रख आवे॥

जन्म से			पूतना नाम	ग्रसित लक्षण	मूर्तिद्रव्य	बलि द्रव्य तथा समय	धूप	मन्त्र
दि ०१	मा १	व ०१	१ योगिनी २ मातृका ३ नंदिनी	ज्वर गात्रशोष अनाहार वमन मूर्छा कांपना हीन ज्वर उदर पीड़ा	नदी का मिट्टी का पुतला ३ दिन विधान	उबले चावल सफेद चंदन का लेप सफेदफूल ध्वजा ५ चिलिड़ियां (पूड़े) ५ दीपक ५ प्रातः समय पूर्व दिशा में तीन दिन बलि देवे।	सरसों बालछड़ आक बिल्वपत्र तिल्ली और मनुष्य के केश नीम घी का धूप	ॐ नमो भक्तवत्सले मोचिनी स्वाहा
दि ०२	मा ०२	व ०२	१ सुनंदिनी २ योगिनी ३ स्तनदा	ज्वर हाथ पांव संकोचदांतो का पीसना आँखें मीचना ज्वरादि रोदन आँखें दुखना	सेर चावल की पीठी का पुतला ३ दिन दिन विधान	उबले चावल सेर पर आटे के पूड़े मच्छी और बकरे का मांस ध्वजा १३ दीपक १३ पश्चिम दिशा में सन्ध्या समय ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत् सब वस्तुओं का धूप देना	ॐ नमो भगवती स्वाहा
दि ०३	मा ०३	व ०३	१ पूतना	ज्वर कम्प न प्रलाप अरुचि आँखें मीचना वमन रोमांच	पूर्ववत मूर्ति	लाल चावल लाल ध्वजा लाल चन्दन लालफूल सायंकाल उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग और सांप को कांचली का धूप देना	ॐनमो भगवती स्वाहा
दि ०४	मा ०४	व ०४	१ मुखमंडिका २ आकाशयोगिनी	ज्वर गात्र भग आंखमीचना शिर झुकाना श्वास श्याम ता अरुचि नींद न आना	चावल के चूर्ण का पुतला विल्ब के कांटे से रेखा	सफेद चंदन का लेप सफेद फूल सफेद ध्वजा सेर भर आटे के पूड़े तीनों सन्ध्या समय पश्चिम दिशा में बलि ३ दिन देवें।	लहसन नीम के पत्ते मनुष्य के और बिल्ली के बाल गो घृत धूप देना।	ॐ नमो पूतने मातवीर्लि भक्ष सुशोभने बालंकमुचंसुयोगेन बलिदाने नहर्षयेत्
दि ०५	मा ०५	व ०५	विडालिका	ज्वर हिक्का श्वास शूल गात्र संकोच अरुचि उदर पीड़ा	सेर भरचावलों की पीठी का पुतला	उबले चावल ध्वजा ५ दीपक ५ सफेद चन्दन सफेद फूल अपरान्ह के समय वृक्ष के मूल में पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ॐ सुभगे सुभलेदेवि सर्व शत्रु निवारिणी। कुरु शांति शिशोः स्वस्थं जीव दानेन राक्षसि
दि ०६	मा ०६	व ०६	शकुनी	ज्वर गात्र संकोच अरुचि श्वास लेने में कठिनाई उदर पीड़ा	सेर चावलों की पीठी का पुतला बनाना	कृष्णोदन ध्वजा ५ दीपक ५ काले फूल मच्छी का मांस बकरे का मांस पायस दूध आधसेर आटे को पूड़े अपरान्ह पश्चिमदिशा में तीन दिन बलि देवे	कूठ गुग्गुल सफेद चन्दन सरसों हाथी का दांत गो घृत धूप देना।	ॐ राक्षसि त्व महाभागे बालमुंच शुभानने। क्षेम कुरु जगत्य स्मिन् शोभावान वरं कुरु
दि ०७	मा ०७	व ०७	शुष्करेवती	ज्वर देह संकोच अरुचि कांपना रोदन करना	पूर्ववत मूर्ति	सफेद ध्वजा ७ दीपक ७ सफेद फूल सफेद चंदन सायंकाल पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग और लहसन से पूर्ववत धूप देना।	ॐ नमो पद्मपत्राक्षि विशालाक्षि बन शिव। सगृहाँ बलि माषञ्च बाले मुँच सुशोभने।
दि ०८	मा ०८	व ०८	विडालिका	ज्वर गात्र संकोच आँखें मीचना रोना जिव्हाशोष शिर पीड़ा अरुचि	पूर्ववत मूर्ति	पायस (खीर) दूध घी लाजा मध्यान्ह व पूर्व संध्या समय दक्षिण दिशा में ३ दिन बलि देवे	गुग्गुल में घृत मिलाकर उपरोक्त धूप देना।	ॐ नमो सर्व भूतेशि शोभने त्वं पिशाचिनी। बलिचैवा सुरी कृत्य त्वरितं मुंच बालकम्
दि ०९	मा ०९	व ०९	मनोन्मत्ता	ज्वर वमन तृष्णा श्वास अफारा देह संकोच उदर शूल	पूर्ववत मूर्ति	उबले चावल मच्छी का मांस पापड़ गन्ना संध्या समय उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग को घृत में घिसकर पूर्ववत धूप देना	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय हुं फट स्वाहा।
दि १०	मा १०	व १०	रेवती	ज्वर वमनाकास श्वास पीड़ा	पूर्ववत मूर्ति	गुड़ उबले चावल घी ध्वजा २५ पूड़े २५ लालफूल २५ सफेद फूल ४४ संध्यासमय दक्षिण में ३ दिन बलिदेवे	गोश्रृङ्ग लहसन को घृत में मिलाकर धूप देना।	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय फट स्वाहा।
दि ११	मा ११	व ११	सुदर्शना	ज्वर अरुचि मुखशोष गात्र पीड़ा रोदन	माप उड़द की पीठी	उबले चावल सफेद चंदन लेपन सफेद फूल ध्वजा २५ दीपक २५ पूड़े २५ बलि संध्या समय दक्षिण दिशा में बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ॐ नमो भगवते रावणाय चंद्रहास वज्रहस्ताय ॐ हुं फट स्वाहा।
दि १२	मा १२	व १२	अद्भुता	ज्वर रोदन पसीना आँखें दुखना सन्ताप रोमांच शरीर पीड़ा	सेर चावल की पीठी का पुतला	ध्वजा १३ पूड़े मच्छी का मांस बकरे का मांस पापड़ संध्या समय दक्षिण में ३ दिन बलि देवे	गोश्रृङ्ग को घृत में घिस कर पूर्ववत धूप देना।	ॐनमो नारायणाय प्रज्वल २ ताप हर २ शोषय २ मर्दय २ हन दुष्टान् हुं फट स्वाहा

वर्षफल बनाने की सारिणी (सूर्य सिद्धान्तीय)

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	०४	०५	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	४३	५९	१४	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६
पल	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१३	४३	१५
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	४३	१७	३२	४८	०३	१९	३४	५०	०५	२१	३६	५२
पल	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	३०	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष फल साधन

जिस संवत् या वर्ष का वर्ष लग्न निकालना हो, उस संवत् में से जातक के जन्म का सम्वत् घटाने से जो वर्ष शेष बचेंगे वह **गतवर्ष** होंगे फिर वर्षफल सारणी में गत वर्षों के नीचे लिखे वार, घड़ी पलादि के ध्रुवांक को जातक के जन्म, वार, घड़ी, पलादि में जमा कर लेने पर आगामी वर्ष का वार एवं वर्षेष्ट काल निकल आएगा। अब इस वर्षेष्ट को स्थानिक लग्न सारणी की सहायता से जन्म लग्न की भान्ति ही वर्ष लग्न ज्ञात कर सकते हैं। फिर वर्ष प्रवेश के वर्षेष्ट अनुसार ही ग्रहस्थापना कर लेंवे। उदाहरण सहित इसका स्पष्टीकरण हमारी प्रकाशित **वर्षफल चन्द्रिका** में पढ़ें।

मुन्था—जन्म लग्न राशि की संख्या में से गतवर्ष की संख्या को जोड़कर जो योगफल आए, उसे १२ से भाग देकर जो संख्या शेष रहे, उसी राशि अंक पर मुंथा स्थापित करनी चाहिए। **मुन्था जन्म** लग्न से प्रति वर्ष एक राशि आगे चलती है।

त्रिपताकी चक्र—त्रिपताकी का चन्द्रमा निकालने के लिए वर्ष प्रवेश की संख्या को ९ द्वारा भाग दें। जो शेष बचे जन्मकुण्डली में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित है, उससे आगे उतने भाव गिनकर प्राप्त राशि अंक पर चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए वर्ष प्रवेश संख्या में ४ द्वारा भाग दें। शेष को जन्मस्थान के ग्रहों से जहां वे स्थित हैं, उतना आगे गिनकर चक्र में लिखें।

मुद्दा दशा निकालना—गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें से दो घटावें, ९ द्वारा भाग देने से जो शेष बचे तदनुसार दशा जाननी चाहिए। यदि १ बचे तो सूर्य की, २ बचें तो चन्द्रमा, ३ बचें तो मंगल, ४ से राहु, ५ बचें तो गुरु, ६ बचें तो शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, ९ अथवा ० बचे तो **शुक्र** की दशा जाननी चाहिएं।

मुद्दा दशा के दिनादि—सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल के २१ दिन, राहु के ५४ दिन, गुरु के ४८ दिन, शनि के ५७ दिन, बुध के ५१ दिन, केतु के २१ दिन तथा शुक्र के ६० दिन मुद्दा दशा में होते हैं।

स्थानबल—सूर्य वर्ष लग्न से ९वें, चन्द्रमा ३रे, मंगल ६ठे, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५, शनि १२वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वभोच्चबल—सूर्य १।५, चन्द्रमा २।४, मंगल १।८।१०, बुध ३।६, बृहस्पति १२।४, शुक्र २।७।१२, शनि १०।११।७—इन राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुष-स्त्री ग्रहः—स्त्री ग्रह लग्न से १।२।३।७।८।९, घरों में ५ बल देते हैं और पुरुषग्रह लग्न से ४।५।६।१०।११।१२ घरों में ५ बल देते हैं। दिन के समय पुरुष ग्रह तथा रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.	दिनपति
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.	रात्रिपति

वर्ष लग्न की जो राशि हो उसकी ऊपर की पंक्ति में राशि के सामने देखो और उसके नीचे यदि इष्ट दिन का हो तो दिनपति के सामने रात्रि का हो तो रात्रिपति के सामने और वर्ष लग्न की राशि के नीचे जो ग्रह हैं वही त्रिराशिपति होगा।

वर्ष कुण्डली में दृष्टि चक्र

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
प्रत्यक्ष मित्र	५–९	५–९	५–९	५–९	५–९	५–९	५–९
गुप्त मित्र	३–११	३–११	३–११	३–११	३–११	३–११	३–११
प्रत्यक्ष शत्रु	१–७	१–७	१–७	१–७	१–७	१–७	१–७
गुप्त शत्रु	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०

वर्ष कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो वह उस भाव से पांचवें और ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। तीसरे ग्यारहवें गुप्तमित्र दृष्टि से, पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से और ४-१० गुप्त शत्रु दृष्टि से देखते हैं।

(१) प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि शुभ और बलवान् होती है। (२) गुप्त मित्र दृष्टि सम है। (३) गुप्त शत्रु दृष्टि अशुभ है। (४) शत्रु दृष्टि अशुभ है।

दृष्टि फल

प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि—इस का फल कार्य में शीघ्र सफलता, सम्बन्धियों से सुख-प्रेम और लाभ इत्यादि इस से जिन मनुष्यों के साथ पहिले शत्रुता होती है उन से प्रेम उत्पन्न होता है तथा नए सम्बन्ध स्थापित होते हैं।

गुप्त शत्रु दृष्टि—यह प्रत्यक्ष दृष्टि से कुछ कम फलदायक है। अर्थात् कार्य बड़ी कठिनता से सफलता को प्राप्त होता है, यह प्रत्यक्ष रूप में सहायता करने वाली होती है, परन्तु गुप्त रूप से शत्रुता करने वाली होती है।

गुप्त मित्र दृष्टि—इसका फल प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से कम होता है। यह भी कार्य में सफलता व लाभदायक है, परन्तु प्रत्यक्ष भाव से नहीं, गुप्त भाव से सफलता व कार्य सिद्ध होता है।

प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि—इसका फल शत्रुता उत्पन्न करना, बनता कार्य बिगाड़ना, मित्र से वैर, धन हानि, मानसिक परेशानी, निकट बंधुओं से मन-मुटाव इत्यादि हैं।

वेध-सिद्ध नवीन मतानुसार वर्ष प्रवेश सारिणी

एक सौर वर्ष में सूर्य द्वारा उसी राशि, अंश, कला, विकला पर घूमकर पुन: जितना समय लगता है, उसकी अवधि (Duration) के सम्बन्ध भिन्न-भिन्न मत पाए जाते रहे हैं। ''सूर्य सिद्धान्तानुसार'' उक्त समय ३६५ दिन, १५ घड़ी, ३१ पल ३० विपल है, जबकि आधुनिक वेधशालाओं द्वारा प्रमाणित यह समयावधि ३६५ दिन, १५ घड़ी २२ पल और साढ़े ५३ विपल होते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग ८।३० पल अथवा ३ मिन्ट २७ सेकिण्ड का अन्तर पाया जाता है। प्रत्येक शताब्दि (वर्ष) यह अन्तर बढ़ता जाता है। फलस्वरूप वर्ष प्रवेश इष्ट एवं कभी-कभी एक-दो लग्नों का भी अन्तर पड़ जाता है। गत पृष्ठों में हमने सूर्य सिद्धान्तानुसार वर्ष सारिणी पहिले की भान्ति ही दी हुई है। अब आजकल कुछ विद्वान नवीन वेधसिद्ध वर्ष सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। इससे फलादेश में भी अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। अधिक जानकारी हेतु हमारे ज्योतिष कार्यालय से '**वर्षफल चन्द्रिका**' लेखक पण्डित पन्ना लाल गणितकर्त्ता (संशोधित संस्करण) मंगवा कर पढ़ें। यद्यपि परम्परानुगामी सूर्य-सिद्धान्तीय वर्ष सारिणी का ही प्रयोग कर रहे हैं।

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२५	४८	११	३४	५७	२०	४३	६	२९	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५४	१७	४०	३	२६
विपल	५३	४६	३९	३२	२५	१८	११	०४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	०१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०

गताब्द	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	५	२१	३६	५२	७	२२
पल	४९	१२	३५	५८	२०	४३	६	२९	५२	१५	३८	१	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३
विपल	२३	१६	९	२	५५	४८	४१	३४	२७	२०	१३	६	५९	५२	४५	३८	३१	२४	१७	१०	०३	५६	४९	४२	३५	२८	२१	१४	७	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	२	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२५	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०२	१८	३३	४८	०४
पल	१५	३८	१	२४	४७	१०	३३	५६	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६	५९	२२	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४७	१०	३३	५६	१९
विपल	५३	५६	३९	३२	२५	१८	११	४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०

वर्ष कुण्डली में मुंथा का महत्त्व

वर्ष कुण्डली में नवग्रहों के समान मुंथा की भी स्थापना की जाती है। मुंथा यद्यपि कोई ग्रह नहीं है, तो भी इसका फल ग्रह के समान ही महत्त्वपूर्ण है। मुंथा जन्म लग्न से प्रति वर्ष एक-एक राशि आगे चलती है। वर्ष कुण्डली में ४, ६, ७, ८ एवं १२वें भाव में स्थित मुंथा अशुभ फलदायक होती है। यदि ४, ६, ७, ८, १२वें भाव में शुभ ग्रह युक्त हो तो इतनी अधिक अनिष्टकारी नहीं होती। लग्नादि द्वादश भावों में मुंथा का फल इस प्रकार होगा—(१) **लग्न भाव में मुंथा** स्थित हो तो उस वर्ष शत्रुओं का नाश, भाग्य में वृद्धि, सवारी का सुख, यदि चर राशि में हो तो स्थान परिवर्तन के भी योग बनते हैं। (२) **द्वितीय भावस्थ मुंथा** हो तो कठिन परिश्रम द्वारा धन लाभ एवं धन प्राप्ति के साधन बनते हैं। मनोरंजन एवं सुख साधनों पर व्यय भी बढ़ता है। (३) **तृतीय भावस्थ मुंथा** होने से शत्रुओं का नाश, भाइयों, मित्रों या उच्च पद प्राप्त महानुभावों का सहयोग प्राप्त होता है। (४) **चतुर्थ भावस्थ मुंथा** शरीर कष्ट, वायु विकार, अपने-परायों से विरोध, गुप्त चिन्ताएँ, नौकरी और व्यवसाय में अनेक प्रकार के विघ्न, स्थान परिवर्तन आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (५) **पंचमस्थ मुंथा** अत्यन्त शुभ फल देने वाली होती है। सर्विस अथवा व्यापार में लाभ, धन, पुत्र एवं विद्या का लाभ, नए उद्योग से सफलता मिले। (६) **षष्ठस्थ मुंथा** हो तो शरीर कष्ट, शत्रुओं का भय, चित्त में अशान्ति, नानके पक्ष को हानि, स्वभाव में चिड़चिड़ापन रहता है। (७) **सप्तमस्थ मुंथा** अशुभ रहती है। स्त्री अथवा निकट बन्धुओं की ओर से कलह-क्लेश, परिवारिक सदस्यों को कष्ट, बने बनाए कार्य बिगड़ना आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (८) **अष्टमस्थ मुंथा** होने से आशाओं में निराशा, पेट तथा अन्य गुप्त रोगों का भय, स्थान परिवर्तन, अनावश्यक यात्राओं तथा स्वास्थ्य पर भी अपव्यय होता है। (९) **नवमस्थ मुंथा** उत्तम फल देती है। नौकरी में पदोन्नति अथवा व्यवसाय में लाभ-वृद्धि, परिवारिक सुख एवं भाग्योन्नति होती है। (१०) **दशमस्थ मुंथा** होने से आर्थिक लाभ, सरकारी क्षेत्र में यदि कोई कार्य रुका होगा तो पूरा होगा (अर्थात् लाभ होगा) तथा सोचे हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। (११) **ग्यारवें भाव में मुंथा** होने से धन लाभ सुख-प्राप्ति, व्यापार और क्रय-विक्रय के कार्यों से लाभ होगा। (१२) **द्वादशस्थ मुंथा** आने से नया व्यापार तथा यात्रा करने से हानि, स्थान परिवर्तन के योग बनेंगे। (विस्तृत फलादेश के लिए देखें हमारी पुस्तक '**वर्षफल चंद्रिका**') मूल्य 110/- रु. मात्र

वेध सिद्ध शुद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी (घण्टा-मिनटों में)

सूर्य सिद्धान्तानुसार 365 दिन, 15 घटी, 31 पल, 30 विपलों में–**अर्थात्** 365 दिन, 6 घण्टे, 12 मिनट एवं 36 सैकिंडों में सूर्य पुनः उसी स्थान या बिन्दु पर आ जाता है। जबकि नवीन एवं आधुनिक अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका है कि सूर्य (पृथ्वी) को पुनः उसी बिन्दु पर आने में 365 दिन, 6 घण्टे, 9 मिनट एवं 9 सैकिंड लगते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग साढ़े तीन मिनटों अर्थात् 3 मिनट 27 सैकिंड (प्रतिवर्ष) का अन्तर पड़ता है तथा वर्षमान सारिणी में यह अन्तर प्रतिवर्ष बढ़ता जाता है। 40 वर्षों के अंतराल में यह अन्तर 2 घण्टे 18 मिनट का हो जाएगा। जिससे प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय सारणी से एक/दो लग्नों का अतर हो जाना स्वाभाविक है।

आजकल अधिकांश ज्योतिषी वेध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। आधुनिक कम्प्यूटर प्रणाली द्वारा भी नवीन वर्ष प्रवेश सरिणी का ही अनुमोदन किया जाता है। गत वर्षों से पंचांग दिवाकर में नवीन सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी घड़ी/पलात्मक में दे चुके हैं। आगे वेद्ध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष-प्रवेश सारिणी घण्टा/मिनटों में दे रहे हैं। **वर्ष-लग्न** निकालने के लिए इसका प्रयोग **और भी अधिक सरल** है।

	वार	घंटे	मिनट
जन्म वार समयादि	4	5	30
सारिणी से प्राप्त संख्या	+ 3	01	11
	7	06	41
अर्थात् (शनिवार)	7 वार	06	41

प्रस्तुत सारिणी की प्रयोग विधि–आपको जिस साल का वर्ष प्रवेश ज्ञात करना हो, उस वर्ष में से जन्म वर्ष निकाल देने से हम **गताब्द** अर्थात् गतवर्ष मिलेंगे। गतवर्ष के सामने के वार एवं घंटा/मिंट को अपने जन्म वार एवं जन्म समय (स्टैं. टा.) में जमा कर देने से हमें नववर्ष प्रवेश कालीन वार एवं घण्टा-मिनट भा. स्टैं. टाईम में मिल जाएगा। नववर्ष प्रवेश स्टैं. घंटा/मिंट को दैनिक लग्न में देखने से हमें लग्न ज्ञात हो जाएगा। **ध्यान रहे,** सारिणी में जमा करने से जोड़ यदि 24 घं. से अधिक आ जाए, तो उसमें से 24 घटा दें, तथा 1 वार जमा कर लेवें। वार की गणना रविवार से की जाती है।

उदाहरण–मान लो किसी जातक का जन्म 2 अक्तूबर, 1974 ई० में, बुधवार की प्रातः साढ़े पाँच (5/30)बजे हुआ। यदि हमने उस जातक का सन् 2021 ई. की वर्ष कुण्डली तैयार करनी है, तो 2021 ई. में से जन्म वर्ष घटा देने पर हमें 47 गतवर्ष प्राप्त हुए। आगे दी गई वर्ष प्रवेश सारिणी में गतवर्ष 47 के सामने हमें 3 वार, 01 घण्टे एवं 11 मिनट मिले। इनको जातक के जन्मवार एवं जन्म समय (5/30) में जमा कर देने से हमें 7 वार, 06 घण्टे, 41 मिनट प्राप्त हुए। हमें 7 वार अर्थात् शनिवार की प्रातः 6 बजकर, 41 मिनट प्राप्त हुए।

जन्त्री/पंचाँग में दी गई दै. लग्न सारिणी से देखने पर 2 अक्तू., शनिवार की प्रातः 6 बजकर 41 मिनट पर हमें **'कन्या' वर्ष** लग्न प्राप्त हुआ। वर्ष लग्न कन्या में सं. २०७८ की पंचांग से 2 अक्तूबर, 2021 ई. की प्रातः 6/41 स्टै. टा. के ग्रह स्थापन करके हमें नववर्ष प्रवेश की कुण्डली प्राप्त होगी। मुंथा लगाने के लिए जातक के जन्म लग्न राशि में गतवर्ष जमा करके प्राप्त संख्या को 12 से भाग देने जो संख्या शेष बचे उसी राशि पर **मुंथा** स्थापित की जाती है।

वर्ष लग्न के अंश, कला, विकला जानने के लिए हमें वर्षेष्ट, सूर्य स्पष्ट तथा (जातक द्वारा वर्तमान में स्थायी तौर पर रह रहे) नगर की लग्न सारिणी का प्रयोग करना होगा। अधिक जानकारी एवं फलादेश के लिए हमारी प्रकाशित **'वर्षफल चन्द्रिका'** पुस्तक का अध्ययन करें। मूल्य केवल 110 रु.।

गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट
1	1	6	9	26	4	15	58	51	1	01	47	76	4	11	36
2	2	12	18	27	5	22	07	52	2	07	57	77	5	17	46
3	3	18	27	28	0	04	17	53	3	14	06	78	6	23	55
4	5	00	37	29	1	10	26	54	4	20	15	79	1	06	04
5	6	6	46	30	2	16	35	55	6	02	24	80	2	12	13
6	0	12	55	31	3	22	44	56	0	08	33	81	3	18	22
7	1	19	04	32	5	04	53	57	1	14	42	82	5	00	31
8	3	01	13	33	6	11	02	58	2	20	51	83	6	06	41
9	4	07	23	34	0	17	32	59	4	03	01	84	0	12	50
10	5	13	32	35	1	23	21	60	5	09	10	85	1	18	59
11	6	19	41	36	3	05	30	61	6	15	19	86	3	01	08
12	1	01	50	37	4	11	39	62	0	21	28	87	4	07	17
13	2	07	59	38	5	17	48	63	2	03	37	88	5	13	26
14	3	14	08	39	6	23	57	64	3	06	43	89	6	19	36
15	4	20	17	40	1	06	07	65	4	15	56	90	1	01	45
16	6	02	27	41	2	12	16	66	5	22	05	91	2	07	54
17	0	08	36	42	3	18	25	67	0	04	14	92	3	14	03
18	1	14	45	43	5	00	34	68	1	10	23	93	4	20	12
19	2	20	54	44	6	06	43	69	2	16	32	94	6	02	21
20	4	03	03	45	0	12	42	70	3	22	41	95	0	08	30
21	5	9	12	46	1	19	02	71	5	04	51	96	1	14	40
22	6	15	22	47	3	01	11	72	6	11	00	97	2	20	49
23	0	21	31	48	4	07	20	73	0	17	09	98	4	20	58
24	2	03	40	49	5	13	29	74	1	23	18	99	5	09	07
25	3	09	49	50	6	19	38	75	3	05	27	100	6	15	16

जनवरी — दैनिक लग्न सारणी जनवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	8 10	9 53	11 21	12 45	14 21	16 16	18 30	20 50	23 09	1 25	3 43	6 02
2	8 06	9 49	11 17	12 41	14 17	16 12	18 26	20 47	23 05	1 21	3 39	5 58
3	8 02	9 45	11 13	12 37	14 13	16 08	18 22	20 43	23 01	1 17	3 35	5 54
4	7 58	9 41	11 09	12 33	14 09	16 04	18 18	20 39	22 57	1 13	3 31	5 50
5	7 54	9 37	11 05	12 29	14 05	16 00	18 14	20 35	22 53	1 09	3 27	5 46
6	7 50	9 33	11 01	12 25	14 01	15 56	18 10	20 31	22 49	1 05	3 23	5 42
7	7 46	9 29	10 57	12 21	13 57	15 52	18 06	20 27	22 45	1 01	3 19	5 38
8	7 42	9 25	10 53	12 17	13 53	15 48	18 02	20 23	22 41	0 57	3 15	5 34
9	7 38	9 21	10 49	12 13	13 49	15 44	17 58	20 18	22 37	0 53	3 11	5 30
10	7 34	9 17	10 45	12 09	13 45	15 40	17 54	20 15	22 33	0 49	3 07	5 26
11	7 30	9 13	10 41	12 05	13 41	15 36	17 50	20 11	22 29	0 45	3 03	5 22
12	7 26	9 09	10 37	12 01	13 37	15 32	17 46	20 07	22 25	0 41	2 59	5 18
13	7 22	9 05	10 33	11 57	13 33	15 28	17 42	20 04	22 22	0 37	2 55	5 14
14	7 18	9 01	10 29	11 53	13 29	15 24	17 38	20 00	22 18	0 33	2 51	5 10
15	7 14	8 57	10 25	11 49	13 25	15 20	17 34	19 56	22 14	0 29	2 47	5 6
16	7 10	8 54	10 22	11 46	13 22	15 17	17 31	19 52	22 10	0 26	2 43	5 2
17	7 06	8 50	10 18	11 42	13 18	15 13	17 27	19 48	22 06	0 22	2 39	4 58
18	7 02	8 46	10 14	11 38	13 14	15 09	17 23	19 44	22 02	0 18	2 35	4 54
19	6 58	8 42	10 10	11 34	13 10	15 05	17 19	19 40	21 58	0 14	2 31	4 51
20	6 54	8 38	10 06	11 30	13 06	15 01	17 15	19 36	21 54	0 10	2 27	4 47
21	6 50	8 34	10 02	11 26	13 02	14 57	17 11	19 32	21 50	0 6	2 23	4 43
22	6 47	8 30	9 58	11 22	12 58	14 53	17 07	19 28	21 46	0 2	2 19	4 39
23	6 43	8 26	9 54	11 18	12 54	14 49	17 03	19 24	21 42	23 58	2 15	4 35
24	6 39	8 22	9 50	11 14	12 50	14 45	16 59	19 20	21 38	23 54	2 12	4 31
25	6 35	8 18	9 46	11 10	12 46	14 41	16 55	19 16	21 34	23 50	2 08	4 27
26	6 31	8 15	9 43	11 07	12 43	14 38	16 52	19 13	21 31	23 47	2 04	4 23
27	6 27	8 11	9 39	11 03	12 39	14 34	16 48	19 09	21 27	23 43	2 00	4 19
28	6 23	8 07	9 35	10 59	12 35	14 30	16 44	19 05	21 23	23 39	1 56	4 16
29	6 19	8 03	9 31	10 55	12 31	14 26	16 40	19 01	21 19	23 35	1 52	4 12
30	6 15	7 59	9 27	10 51	12 27	14 22	16 36	18 57	21 15	23 31	1 48	4 08
31	6 12	7 55	9 23	10 47	12 23	14 18	16 32	18 53	21 11	23 27	1 44	4 04
फर	6 08	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

फरवरी — दैनिक लग्न सारणी फरवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	7 51	9 19	10 43	12 19	14 14	16 28	18 49	21 07	23 23	1 40	4 00	6 04
2	7 47	9 15	10 39	12 15	14 10	16 24	18 45	21 03	23 19	1 36	3 56	6 00
3	7 43	9 11	10 35	12 11	14 06	16 20	18 41	20 59	23 15	1 32	3 52	5 56
4	7 39	9 07	10 31	12 07	14 02	16 16	18 37	20 55	23 11	1 28	3 48	5 52
5	7 35	9 03	10 27	12 03	13 58	16 12	18 33	20 52	23 07	1 24	3 44	5 48
6	7 31	8 59	10 23	11 59	13 54	16 08	18 29	20 48	23 03	1 21	3 40	5 44
7	7 27	8 55	10 19	11 55	13 50	16 04	18 25	20 44	22 59	1 17	3 36	5 40
8	7 23	8 51	10 15	11 51	13 46	16 00	18 21	20 40	22 55	1 13	3 32	5 36
9	7 19	8 47	10 11	11 47	13 42	15 56	18 18	20 36	22 51	1 09	3 28	5 32
10	7 15	8 43	10 07	11 43	13 38	15 52	18 14	20 32	22 47	1 05	3 24	5 28
11	7 11	8 39	10 03	11 39	13 34	15 48	18 10	20 28	22 43	1 01	3 20	5 24
12	7 07	8 35	9 59	11 35	13 30	15 44	18 06	20 24	22 39	24 57	3 16	5 20
13	7 04	8 31	9 55	11 31	13 26	15 40	18 02	20 20	22 35	24 53	3 12	5 16
14	7 00	8 27	9 51	11 27	13 22	15 36	17 58	20 16	22 31	24 49	3 08	5 12
15	6 56	8 23	9 47	11 23	13 18	15 32	17 54	20 12	22 27	24 45	3 04	5 08
16	6 52	8 19	9 43	11 19	13 14	15 28	17 50	20 08	22 23	24 41	3 00	5 04
17	6 48	8 15	9 39	11 15	13 10	15 24	17 46	20 04	22 19	24 37	2 56	5 01
18	6 44	8 11	9 35	11 11	13 06	15 20	17 42	20 00	22 15	24 33	2 52	4 57
19	6 40	8 07	9 31	11 07	13 02	15 16	17 38	19 56	22 11	24 29	2 48	4 53
20	6 36	8 04	9 28	11 04	12 58	15 13	17 34	19 52	22 07	24 25	2 44	4 49
21	6 32	8 00	9 24	11 00	12 55	15 09	17 30	19 48	22 03	24 21	2 41	4 45
22	6 28	7 56	9 20	10 56	12 51	15 05	17 26	19 44	21 59	24 17	2 37	4 41
23	6 24	7 52	9 16	10 52	12 47	15 01	17 22	19 40	21 55	24 14	2 33	4 37
24	6 21	7 49	9 13	10 49	12 44	14 58	17 19	19 37	21 52	24 11	2 30	4 34
25	6 18	7 46	9 10	10 46	12 41	14 55	17 16	19 34	21 49	24 08	2 27	4 31
26	6 14	7 42	9 06	10 42	12 37	14 51	17 12	19 30	21 45	24 04	2 23	4 27
27	6 11	7 39	9 03	10 39	12 34	14 48	17 09	19 27	21 42	24 01	2 20	4 24
28	6 08	7 36	9 00	10 36	12 31	14 45	17 06	19 24	21 39	23 58	2 17	4 21
29	6 04	7 32	8 56	10 32	12 27	14 41	17 02	19 20	21 35	23 54	2 13	4 17
मार्च	6 00	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी मार्च भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

मार्च	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
ता.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
1	7 28	8 53	10 28	12 23	14 37	16 58	19 16	21 31	23 50	2 09	4 13	5 57
2	7 24	8 49	10 24	12 19	14 33	16 54	19 12	21 27	23 46	2 05	4 09	5 53
3	7 21	8 45	10 21	12 16	14 30	16 50	19 08	21 23	23 42	2 01	4 05	5 49
4	7 17	8 41	10 17	12 12	14 26	16 46	19 04	21 19	23 38	1 57	4 01	5 45
5	7 13	8 37	10 13	12 08	14 22	16 42	19 00	21 15	23 35	1 53	3 58	5 41
6	7 09	8 33	10 09	12 04	14 18	16 38	18 56	21 11	23 31	1 49	3 54	5 37
7	7 05	8 29	10 05	12 00	14 14	16 34	18 52	21 08	23 27	1 45	3 50	5 33
8	7 01	8 25	10 01	11 56	14 10	16 30	18 48	21 04	23 23	1 41	3 46	5 29
9	6 57	8 21	9 57	11 52	14 06	16 27	18 45	21 00	23 19	1 38	3 42	5 25
10	6 53	8 17	9 53	11 48	14 02	16 23	18 41	20 56	23 15	1 34	3 38	5 21
11	6 49	8 13	9 49	11 44	13 58	16 19	18 37	20 52	23 11	1 30	3 34	5 17
12	6 45	8 09	9 45	11 40	13 54	16 15	18 33	20 48	23 08	1 26	3 30	5 14
13	6 41	8 05	9 41	11 36	13 50	16 11	18 29	20 44	23 04	1 23	3 27	5 10
14	6 37	8 01	9 37	11 32	13 46	16 07	18 25	20 40	23 00	1 19	3 23	5 06
15	6 33	7 57	9 33	11 28	13 42	16 03	18 21	20 36	22 56	1 15	3 19	5 02
16	6 29	7 53	9 29	11 24	13 38	15 59	18 17	20 32	22 52	1 11	3 15	4 58
17	6 25	7 49	9 25	11 20	13 34	15 55	18 13	20 28	22 48	1 07	3 11	4 54
18	6 21	7 45	9 21	11 16	13 30	15 51	18 09	20 24	22 44	1 03	3 07	4 50
19	6 17	7 41	9 17	11 12	13 26	15 47	18 05	20 20	22 40	0 59	3 03	4 46
20	6 13	7 37	9 13	11 08	13 23	15 43	18 01	20 16	22 36	0 55	2 59	4 42
21	6 09	7 33	9 09	11 04	13 19	15 39	17 57	20 12	22 32	0 51	2 55	4 38
22	6 05	7 29	9 05	11 00	13 15	15 35	17 53	20 08	22 28	0 47	2 51	4 34
23	6 01	7 26	9 01	10 56	13 11	15 31	17 49	20 04	22 24	0 43	2 47	4 30
24	5 57	7 22	8 57	10 53	13 07	15 27	17 45	20 00	22 20	0 39	2 43	4 27
25	5 53	7 18	8 53	10 49	13 03	15 23	17 41	19 56	22 16	0 35	2 39	4 23
26	5 49	7 14	8 49	10 45	12 59	15 19	17 37	19 53	22 12	0 31	2 35	4 19
27	5 45	7 10	8 46	10 41	12 55	15 15	17 33	19 49	22 08	0 27	2 31	4 15
28	5 41	7 06	8 42	10 37	12 51	15 11	17 29	19 45	22 04	0 23	2 28	4 11
29	5 37	7 02	8 38	10 33	12 47	15 07	17 25	19 41	22 00	0 19	2 24	4 07
30	5 34	6 58	8 34	10 29	12 44	15 03	17 21	19 37	21 56	0 15	2 20	4 03
31	5 30	6 54	8 30	10 25	12 40	14 59	17 17	19 33	21 52	0 11	2 16	3 59
अप्रै	5 26	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी अप्रैल भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

अप्रैल	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
ता.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
1	6 50	8 26	10 21	12 36	14 55	17 13	19 29	21 48	0 07	2 12	3 55	5 22
2	6 46	8 22	10 17	12 32	14 51	17 09	19 25	21 44	0 03	2 08	3 51	5 18
3	6 42	8 18	10 13	12 28	14 47	17 05	19 21	21 40	23 59	2 04	3 47	5 14
4	6 38	8 14	10 09	12 24	14 43	17 01	19 18	21 36	23 55	2 00	3 43	5 10
5	6 34	8 10	10 05	12 20	14 39	16 57	19 14	21 33	23 52	1 56	3 39	5 06
6	6 31	8 07	10 01	12 16	14 35	16 53	19 10	21 29	23 48	1 52	3 35	5 02
7	6 27	8 03	9 58	12 12	14 31	16 49	19 06	21 25	23 44	1 48	3 31	4 58
8	6 23	7 59	9 54	12 08	14 27	16 46	19 02	21 21	23 40	1 44	3 27	4 54
9	6 19	7 55	9 50	12 04	14 23	16 42	18 58	21 17	23 36	1 40	3 23	4 51
10	6 15	7 51	9 46	12 00	14 20	16 38	18 54	21 13	23 32	1 36	3 19	4 47
11	6 11	7 47	9 42	11 56	14 16	16 34	18 50	21 09	23 28	1 32	3 15	4 43
12	6 07	7 43	9 38	11 52	14 12	16 30	18 46	21 05	23 24	1 28	3 11	4 39
13	6 03	7 39	9 34	11 48	14 08	16 26	18 42	21 01	23 20	1 24	3 07	4 35
14	5 59	7 35	9 30	11 44	14 04	16 22	18 38	20 57	23 16	1 20	3 03	4 31
15	5 55	7 31	9 26	11 41	14 00	16 18	18 34	20 53	23 12	1 16	2 59	4 27
16	5 51	7 27	9 22	11 37	13 56	16 14	18 30	20 49	23 08	1 12	2 55	4 23
17	5 47	7 23	9 18	11 33	13 52	16 10	18 26	20 45	23 04	1 08	2 51	4 19
18	5 43	7 19	9 15	11 29	13 49	16 06	18 23	20 41	23 00	1 04	2 47	4 15
19	5 39	7 15	9 11	11 25	13 45	16 02	18 19	20 37	22 56	1 00	2 43	4 11
20	5 35	7 11	9 07	11 21	13 41	15 58	18 15	20 33	22 52	00 56	2 39	4 07
21	5 31	7 07	9 03	11 17	13 37	15 54	18 11	20 29	22 49	00 52	2 35	4 03
22	5 27	7 03	8 59	11 13	13 33	15 50	18 07	20 25	22 45	00 48	2 31	3 59
23	5 23	6 59	8 55	11 09	13 29	15 46	18 03	20 22	22 41	00 44	2 27	3 55
24	5 19	6 55	8 51	11 05	13 25	15 42	17 59	20 18	22 37	00 40	2 23	3 51
25	5 15	6 51	8 47	11 01	13 21	15 38	17 55	20 14	22 33	00 36	2 19	3 47
26	5 11	6 47	8 43	10 57	13 17	15 34	17 51	20 10	22 29	00 32	2 15	3 43
27	5 07	6 44	8 39	10 53	13 13	15 30	17 47	20 06	22 25	00 28	2 11	3 39
28	5 03	6 40	8 35	10 49	13 10	15 26	17 43	20 02	22 21	00 24	2 07	3 35
29	4 59	6 36	8 31	10 45	13 06	15 22	17 39	19 58	22 17	00 20	2 03	3 31
30	4 55	6 32	8 27	10 41	13 02	15 19	17 35	19 54	22 13	00 17	1 59	3 27
मई	4 51	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी मई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

मई	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	6 28	8 23	10 37	12 58	15 15	17 31	19 50	22 09	00 13	1 56	3 23	4 47
2	6 24	8 19	10 33	12 54	15 11	17 27	19 46	22 05	00 09	1 52	3 19	4 44
3	6 20	8 15	10 29	12 50	15 7	17 24	19 42	22 01	00 05	1 48	3 16	4 40
4	6 16	8 11	10 25	12 46	15 3	17 20	19 38	21 57	00 01	1 44	3 12	4 36
5	6 12	8 07	10 21	12 42	14 59	17 16	19 34	21 53	23 57	1 40	3 08	4 32
6	6 08	8 03	10 17	12 38	14 55	17 12	19 30	21 49	23 53	1 36	3 04	4 28
7	6 04	7 59	10 13	12 34	14 51	17 08	19 26	21 45	23 49	1 32	3 00	4 24
8	6 00	7 55	10 09	12 30	14 47	17 04	19 22	21 41	23 45	1 28	2 56	4 20
9	5 56	7 51	10 05	12 26	14 43	17 00	19 18	21 37	23 41	1 24	2 52	4 16
10	5 52	7 47	10 01	12 22	14 39	16 56	19 14	21 33	23 37	1 20	2 48	4 12
11	5 48	7 44	9 57	12 18	14 35	16 52	19 10	21 29	23 33	1 16	2 44	4 08
12	5 44	7 40	9 53	12 14	14 31	16 48	19 06	21 25	23 29	1 12	2 40	4 04
13	5 40	7 36	9 49	12 10	14 28	16 44	19 02	21 21	23 25	1 08	2 36	4 00
14	5 36	7 32	9 45	12 06	14 24	16 40	18 58	21 17	23 21	1 04	2 32	3 56
15	5 32	7 28	9 41	12 02	14 20	16 36	18 54	21 13	23 17	1 00	2 28	3 52
16	5 28	7 24	9 37	11 58	14 16	16 32	18 50	21 09	23 13	24 56	2 24	3 48
17	5 24	7 20	9 33	11 54	14 12	16 28	18 46	21 05	23 09	24 52	2 20	3 44
18	5 20	7 16	9 29	11 50	14 08	16 24	18 42	21 01	23 05	24 48	2 16	3 40
19	5 16	7 12	9 25	11 46	14 04	16 20	18 38	20 57	23 01	24 44	2 12	3 36
20	5 12	7 08	9 21	11 42	14 00	16 16	18 34	20 53	22 57	24 40	2 09	3 32
21	5 08	7 04	9 17	11 38	13 56	16 12	18 30	20 49	22 53	24 36	2 05	3 28
22	5 04	7 00	9 13	11 34	13 52	16 08	18 26	20 45	22 49	24 32	2 01	3 24
23	5 00	6 56	9 09	11 30	13 48	16 04	18 22	20 41	22 45	24 28	1 57	3 20
24	4 56	6 52	9 05	11 26	13 44	16 01	18 19	20 38	22 42	24 25	1 53	3 16
25	4 52	6 48	9 01	11 22	13 40	15 57	18 15	20 34	22 38	24 21	1 49	3 12
26	4 48	6 44	8 58	11 18	13 36	15 53	18 11	20 30	22 34	24 17	1 45	3 08
27	4 44	6 40	8 54	11 14	13 32	15 49	18 07	20 26	22 30	24 13	1 41	3 04
28	4 40	6 36	8 50	11 10	13 28	15 45	18 03	20 22	22 26	24 09	1 37	3 01
29	4 36	6 32	8 46	11 06	13 24	15 41	17 59	20 18	22 22	24 05	1 33	2 57
30	4 33	6 28	8 42	11 02	13 20	15 37	17 55	20 14	22 18	24 01	1 29	2 53
31	4 29	6 24	8 38	10 58	13 16	15 33	17 51	20 10	22 14	23 57	1 25	2 49
जून	4 25	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी जून भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

जून	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	6 20	8 35	10 54	13 12	15 29	17 47	20 06	22 10	23 53	1 21	2 45	4 21
2	6 16	8 31	10 50	13 08	15 25	17 43	20 02	22 06	23 49	1 17	2 41	4 17
3	6 12	8 27	10 46	13 04	15 21	17 39	19 58	22 02	23 45	1 13	2 37	4 13
4	6 08	8 23	10 42	13 00	15 17	17 35	19 54	21 58	23 41	1 09	2 33	4 09
5	6 04	8 19	10 38	12 56	15 13	17 31	19 50	21 54	23 37	1 05	2 29	4 05
6	6 00	8 15	10 34	12 52	15 09	17 27	19 46	21 50	23 33	1 01	2 25	4 01
7	5 57	8 11	10 31	12 48	15 05	17 23	19 42	21 46	23 29	24 57	2 21	3 58
8	5 53	8 07	10 27	12 44	15 01	17 19	19 39	21 43	23 26	24 53	2 17	3 54
9	5 49	8 03	10 23	12 40	14 58	17 16	19 35	21 39	23 22	24 49	2 13	3 50
10	5 45	7 59	10 19	12 37	14 54	17 12	19 31	21 35	23 18	24 46	2 09	3 46
11	5 41	7 55	10 15	12 33	14 50	17 08	19 27	21 31	23 14	24 42	2 05	3 42
12	5 37	7 51	10 11	12 29	14 46	17 04	19 23	21 27	23 10	24 38	2 02	3 38
13	5 33	7 47	10 07	12 25	14 42	17 00	19 19	21 23	23 06	24 34	1 58	3 34
14	5 29	7 43	10 03	12 21	14 38	16 56	19 15	21 19	23 02	24 30	1 54	3 30
15	5 25	7 39	9 59	12 17	14 34	16 52	19 11	21 15	22 58	24 26	1 50	3 26
16	5 21	7 35	9 55	12 13	14 30	16 48	19 07	21 11	22 54	24 22	1 46	3 22
17	5 17	7 31	9 51	12 09	14 26	16 44	19 03	21 07	22 50	24 18	1 42	3 18
18	5 13	7 27	9 47	12 05	14 22	16 40	18 59	21 03	22 46	24 14	1 38	3 14
19	5 09	7 23	9 43	12 02	14 18	16 36	18 55	20 59	22 42	24 10	1 34	3 10
20	5 05	7 19	9 39	11 58	14 14	16 32	18 51	20 55	22 38	24 06	1 30	3 06
21	5 01	7 15	9 36	11 54	14 10	16 28	18 47	20 51	22 34	24 02	1 26	3 02
22	4 57	7 11	9 32	11 50	14 06	16 24	18 43	20 47	22 30	23 58	1 22	2 58
23	4 53	7 07	9 28	11 46	14 02	16 20	18 39	20 43	22 26	23 54	1 18	2 54
24	4 49	7 03	9 24	11 42	13 58	16 16	18 36	20 39	22 22	23 51	1 15	2 50
25	4 46	6 59	9 20	11 38	13 54	16 13	18 32	20 35	22 18	23 47	1 11	2 46
26	4 42	6 55	9 16	1 134	13 50	16 09	18 28	20 31	22 14	23 43	1 07	2 43
27	4 38	6 51	9 12	11 30	13 46	16 05	18 24	20 27	22 10	23 39	1 03	2 39
28	4 34	6 47	9 09	11 26	13 43	16 01	18 20	20 23	22 06	23 35	24 59	2 35
29	4 30	6 43	9 05	11 23	13 39	15 57	18 16	20 20	22 02	23 31	24 55	2 31
30	4 26	6 39	9 01	11 19	13 35	15 54	18 13	20 16	21 59	23 28	24 52	2 28
जुला	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी मार्च भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

मार्च	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 28	8 53	10 28	12 23	14 37	16 58	19 16	21 31	23 50	2 09	4 13	5 57
2	7 24	8 49	10 24	12 19	14 33	16 54	19 12	21 27	23 46	2 05	4 09	5 53
3	7 21	8 45	10 21	12 16	14 30	16 50	19 08	21 23	23 42	2 01	4 05	5 49
4	7 17	8 41	10 17	12 12	14 26	16 46	19 04	21 19	23 38	1 57	4 01	5 45
5	7 13	8 37	10 13	12 08	14 22	16 42	19 00	21 15	23 35	1 53	3 58	5 41
6	7 09	8 33	10 09	12 04	14 18	16 38	18 56	21 11	23 31	1 49	3 54	5 37
7	7 05	8 29	10 05	12 00	14 14	16 34	18 52	21 08	23 27	1 45	3 50	5 33
8	7 01	8 25	10 01	11 56	14 10	16 30	18 48	21 04	23 23	1 41	3 46	5 29
9	6 57	8 21	9 57	11 52	14 06	16 27	18 45	21 00	23 19	1 38	3 42	5 25
10	6 53	8 17	9 53	11 48	14 02	16 23	18 41	20 56	23 15	1 34	3 38	5 21
11	6 49	8 13	9 49	11 44	13 58	16 19	18 37	20 52	23 11	1 30	3 34	5 17
12	6 45	8 09	9 45	11 40	13 54	16 15	18 33	20 48	23 08	1 26	3 30	5 14
13	6 41	8 05	9 41	11 36	13 50	16 11	18 29	20 44	23 04	1 23	3 27	5 10
14	6 37	8 01	9 37	11 32	13 46	16 07	18 25	20 40	23 00	1 19	3 23	5 06
15	6 33	7 57	9 33	11 28	13 42	16 03	18 21	20 36	22 56	1 15	3 19	5 02
16	6 29	7 53	9 29	11 24	13 38	15 59	18 17	20 32	22 52	1 11	3 15	4 58
17	6 25	7 49	9 25	11 20	13 34	15 55	18 13	20 28	22 48	1 07	3 11	4 54
18	6 21	7 45	9 21	11 16	13 30	15 51	18 09	20 24	22 44	1 03	3 07	4 50
19	6 17	7 41	9 17	11 12	13 26	15 47	18 05	20 20	22 40	0 59	3 03	4 46
20	6 13	7 37	9 13	11 08	13 23	15 43	18 01	20 16	22 36	0 55	2 59	4 42
21	6 09	7 33	9 09	11 04	13 19	15 39	17 57	20 12	22 32	0 51	2 55	4 38
22	6 05	7 29	9 05	11 00	13 15	15 35	17 53	20 08	22 28	0 47	2 51	4 34
23	6 01	7 26	9 01	10 56	13 11	15 31	17 49	20 04	22 24	0 43	2 47	4 30
24	5 57	7 22	8 57	10 53	13 07	15 27	17 45	20 00	22 20	0 39	2 43	4 27
25	5 53	7 18	8 53	10 49	13 03	15 23	17 41	19 56	22 16	0 35	2 39	4 23
26	5 49	7 14	8 49	10 45	12 59	15 19	17 37	19 53	22 12	0 31	2 35	4 19
27	5 45	7 10	8 46	10 41	12 55	15 15	17 33	19 49	22 08	0 27	2 31	4 15
28	5 41	7 06	8 42	10 37	12 51	15 11	17 29	19 45	22 04	0 23	2 28	4 11
29	5 37	7 02	8 38	10 33	12 47	15 07	17 25	19 41	22 00	0 19	2 24	4 07
30	5 34	6 58	8 34	10 29	12 44	15 03	17 21	19 37	21 56	0 15	2 20	4 03
31	5 30	6 54	8 30	10 25	12 40	14 59	17 17	19 33	21 52	0 11	2 16	3 59
अप्रै	5 26											

दैनिक लग्न सारणी अप्रैल भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

अप्रैल	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 50	8 26	10 21	12 36	14 55	17 13	19 29	21 48	0 07	2 12	3 55	5 22
2	6 46	8 22	10 17	12 32	14 51	17 09	19 25	21 44	0 03	2 08	3 51	5 18
3	6 42	8 18	10 13	12 28	14 47	17 05	19 21	21 40	23 59	2 04	3 47	5 14
4	6 38	8 14	10 09	12 24	14 43	17 01	19 18	21 36	23 55	2 00	3 43	5 10
5	6 34	8 10	10 05	12 20	14 39	16 57	19 14	21 33	23 52	1 56	3 39	5 06
6	6 31	8 07	10 01	12 16	14 35	16 53	19 10	21 29	23 48	1 52	3 35	5 02
7	6 27	8 03	9 58	12 12	14 31	16 49	19 06	21 25	23 44	1 48	3 31	4 58
8	6 23	7 59	9 54	12 08	14 27	16 46	19 02	21 21	23 40	1 44	3 27	4 54
9	6 19	7 55	9 50	12 04	14 23	16 42	18 58	21 17	23 36	1 40	3 23	4 51
10	6 15	7 51	9 46	12 00	14 20	16 38	18 54	21 13	23 32	1 36	3 19	4 47
11	6 11	7 47	9 42	11 56	14 16	16 34	18 50	21 09	23 28	1 32	3 15	4 43
12	6 07	7 43	9 38	11 52	14 12	16 30	18 46	21 05	23 24	1 28	3 11	4 39
13	6 03	7 39	9 34	11 48	14 08	16 26	18 42	21 01	23 20	1 24	3 07	4 35
14	5 59	7 35	9 30	11 44	14 04	16 22	18 38	20 57	23 16	1 20	3 03	4 31
15	5 55	7 31	9 26	11 41	14 00	16 18	18 34	20 53	23 12	1 16	2 59	4 27
16	5 51	7 27	9 22	11 37	13 56	16 14	18 30	20 49	23 08	1 12	2 55	4 23
17	5 47	7 23	9 18	11 33	13 52	16 10	18 26	20 45	23 04	1 08	2 51	4 19
18	5 43	7 19	9 15	11 29	13 49	16 06	18 23	20 41	23 00	1 04	2 47	4 15
19	5 39	7 15	9 11	11 25	13 45	16 02	18 19	20 37	22 56	1 00	2 43	4 11
20	5 35	7 11	9 07	11 21	13 41	15 58	18 15	20 33	22 52	00 56	2 39	4 07
21	5 31	7 07	9 03	11 17	13 37	15 54	18 11	20 29	22 49	00 52	2 35	4 03
22	5 27	7 03	8 59	11 13	13 33	15 50	18 07	20 25	22 45	00 48	2 31	3 59
23	5 23	6 59	8 55	11 09	13 29	15 46	18 03	20 22	22 41	00 44	2 27	3 55
24	5 19	6 55	8 51	11 05	13 25	15 42	17 59	20 18	22 37	00 40	2 23	3 51
25	5 15	6 51	8 47	11 01	13 21	15 38	17 55	20 14	22 33	00 36	2 19	3 47
26	5 11	6 47	8 43	10 57	13 17	15 34	17 51	20 10	22 29	00 32	2 15	3 43
27	5 07	6 44	8 39	10 53	13 13	15 30	17 47	20 06	22 25	00 28	2 11	3 39
28	5 03	6 40	8 35	10 49	13 10	15 26	17 43	20 02	22 21	00 24	2 07	3 35
29	4 59	6 36	8 31	10 45	13 06	15 22	17 39	19 58	22 17	00 20	2 03	3 31
30	4 55	6 32	8 27	10 41	13 02	15 19	17 35	19 54	22 13	00 17	1 59	3 27
मई	4 51											

दैनिक लग्न सारणी मई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 28	8 23	10 37	12 58	15 15	17 31	19 50	22 09	00 13	1 56	3 23	4 47
2	6 24	8 19	10 33	12 54	15 11	17 27	19 46	22 05	00 09	1 52	3 19	4 44
3	6 20	8 15	10 29	12 50	15 7	17 24	19 42	22 01	00 05	1 48	3 16	4 40
4	6 16	8 11	10 25	12 46	15 3	17 20	19 38	21 57	00 01	1 44	3 12	4 36
5	6 12	8 07	10 21	12 42	14 59	17 16	19 34	21 53	23 57	1 40	3 08	4 32
6	6 08	8 03	10 17	12 38	14 55	17 12	19 30	21 49	23 53	1 36	3 04	4 28
7	6 04	7 59	10 13	12 34	14 51	17 08	19 26	21 45	23 49	1 32	3 00	4 24
8	6 00	7 55	10 09	12 30	14 47	17 04	19 22	21 41	23 45	1 28	2 56	4 20
9	5 56	7 51	10 05	12 26	14 43	17 00	19 18	21 37	23 41	1 24	2 52	4 16
10	5 52	7 47	10 01	12 22	14 39	16 56	19 14	21 33	23 37	1 20	2 48	4 12
11	5 48	7 44	9 57	12 18	14 35	16 52	19 10	21 29	23 33	1 16	2 44	4 08
12	5 44	7 40	9 53	12 14	14 31	16 48	19 06	21 25	23 29	1 12	2 40	4 04
13	5 40	7 36	9 49	12 10	14 28	16 44	19 02	21 21	23 25	1 08	2 36	4 00
14	5 36	7 32	9 45	12 06	14 24	16 40	18 58	21 17	23 21	1 04	2 32	3 56
15	5 32	7 28	9 41	12 02	14 20	16 36	18 54	21 13	23 17	1 00	2 28	3 52
16	5 28	7 24	9 37	11 58	14 16	16 32	18 50	21 09	23 13	24 56	2 24	3 48
17	5 24	7 20	9 33	11 54	14 12	16 28	18 46	21 05	23 09	24 52	2 20	3 44
18	5 20	7 16	9 29	11 50	14 08	16 24	18 42	21 01	23 05	24 48	2 16	3 40
19	5 16	7 12	9 25	11 46	14 04	16 20	18 38	20 57	23 01	24 44	2 12	3 36
20	5 12	7 08	9 21	11 42	14 00	16 16	18 34	20 53	22 57	24 40	2 09	3 32
21	5 08	7 04	9 17	11 38	13 56	16 12	18 30	20 49	22 53	24 36	2 05	3 28
22	5 04	7 00	9 13	11 34	13 52	16 08	18 26	20 45	22 49	24 32	2 01	3 24
23	5 00	6 56	9 09	11 30	13 48	16 04	18 22	20 41	22 45	24 28	1 57	3 20
24	4 56	6 52	9 05	11 26	13 44	16 01	18 19	20 38	22 42	24 25	1 53	3 16
25	4 52	6 48	9 01	11 22	13 40	15 57	18 15	20 34	22 38	24 21	1 49	3 12
26	4 48	6 44	8 58	11 18	13 36	15 53	18 11	20 30	22 34	24 17	1 45	3 08
27	4 44	6 40	8 54	11 14	13 32	15 49	18 07	20 26	22 30	24 13	1 41	3 04
28	4 40	6 36	8 50	11 10	13 28	15 45	18 03	20 22	22 26	24 09	1 37	3 01
29	4 36	6 32	8 46	11 06	13 24	15 41	17 59	20 18	22 22	24 05	1 33	2 57
30	4 33	6 28	8 42	11 02	13 20	15 37	17 55	20 14	22 18	24 01	1 29	2 53
31	4 29	6 24	8 38	10 58	13 16	15 33	17 51	20 10	22 14	23 57	1 25	2 49
जून	4 25	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी जून भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 20	8 35	10 54	13 12	15 29	17 47	20 06	22 10	23 53	1 21	2 45	4 21
2	6 16	8 31	10 50	13 08	15 25	17 43	20 02	22 06	23 49	1 17	2 41	4 17
3	6 12	8 27	10 46	13 04	15 21	17 39	19 58	22 02	23 45	1 13	2 37	4 13
4	6 08	8 23	10 42	13 00	15 17	17 35	19 54	21 58	23 41	1 09	2 33	4 09
5	6 04	8 19	10 38	12 56	15 13	17 31	19 50	21 54	23 37	1 05	2 29	4 05
6	6 00	8 15	10 34	12 52	15 09	17 27	19 46	21 50	23 33	1 01	2 25	4 01
7	5 57	8 11	10 31	12 48	15 05	17 23	19 42	21 46	23 29	24 57	2 21	3 58
8	5 53	8 07	10 27	12 44	15 01	17 19	19 39	21 43	23 26	24 53	2 17	3 54
9	5 49	8 03	10 23	12 40	14 58	17 16	19 35	21 39	23 22	24 49	2 13	3 50
10	5 45	7 59	10 19	12 37	14 54	17 12	19 31	21 35	23 18	24 46	2 09	3 46
11	5 41	7 55	10 15	12 33	14 50	17 08	19 27	21 31	23 14	24 42	2 05	3 42
12	5 37	7 51	10 11	12 29	14 46	17 04	19 23	21 27	23 10	24 38	2 02	3 38
13	5 33	7 47	10 07	12 25	14 42	17 00	19 19	21 23	23 06	24 34	1 58	3 34
14	5 29	7 43	10 03	12 21	14 38	16 56	19 15	21 19	23 02	24 30	1 54	3 30
15	5 25	7 39	9 59	12 17	14 34	16 52	19 11	21 15	22 58	24 26	1 50	3 26
16	5 21	7 35	9 55	12 13	14 30	16 48	19 07	21 11	22 54	24 22	1 46	3 22
17	5 17	7 31	9 51	12 09	14 26	16 44	19 03	21 07	22 50	24 18	1 42	3 18
18	5 13	7 27	9 47	12 05	14 22	16 40	18 59	21 03	22 46	24 14	1 38	3 14
19	5 09	7 23	9 43	12 02	14 18	16 36	18 55	20 59	22 42	24 10	1 34	3 10
20	5 05	7 19	9 39	11 58	14 14	16 32	18 51	20 55	22 38	24 06	1 30	3 06
21	5 01	7 15	9 36	11 54	14 10	16 28	18 47	20 51	22 34	24 02	1 26	3 02
22	4 57	7 11	9 32	11 50	14 06	16 24	18 43	20 47	22 30	23 58	1 22	2 58
23	4 53	7 07	9 28	11 46	14 02	16 20	18 39	20 43	22 26	23 54	1 18	2 54
24	4 49	7 03	9 24	11 42	13 58	16 16	18 36	20 39	22 22	23 51	1 15	2 50
25	4 46	6 59	9 20	11 38	13 54	16 13	18 32	20 35	22 18	23 47	1 11	2 46
26	4 42	6 55	9 16	1 134	13 50	16 09	18 28	20 31	22 14	23 43	1 07	2 43
27	4 38	6 51	9 12	11 30	13 46	16 05	18 24	20 27	22 10	23 39	1 03	2 39
28	4 34	6 47	9 09	11 26	13 43	16 01	18 20	20 23	22 06	23 35	24 59	2 35
29	4 30	6 43	9 05	11 23	13 39	15 57	18 16	20 20	22 02	23 31	24 55	2 31
30	4 26	6 39	9 01	11 19	13 35	15 54	18 13	20 16	21 59	23 28	24 52	2 28
जुला	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी जुलाई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

जुलाई	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
ता.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं.मि.	घं. मि.
1	6 35	8 57	11 15	13 31	15 50	18 09	20 13	21 56	23 24	24 48	2 24	4 18
2	6 31	8 53	11 11	13 27	15 46	18 05	20 9	21 52	23 20	24 44	2 20	4 14
3	6 27	8 49	11 07	13 23	15 42	18 01	20 5	21 48	23 16	24 40	2 16	4 10
4	6 24	8 46	11 04	13 19	15 38	17 57	20 01	21 44	23 12	24 36	2 12	4 06
5	6 20	8 42	11 00	13 15	15 34	17 53	19 57	21 40	23 08	24 32	2 08	4 02
6	6 16	8 38	10 56	13 11	15 30	17 49	19 53	21 36	23 04	24 28	2 04	3 58
7	6 12	8 34	10 52	13 07	15 26	17 46	19 49	21 32	23 00	24 24	2 00	3 55
8	6 09	8 30	10 48	13 04	15 22	17 42	19 46	21 28	22 56	24 21	1 56	3 51
9	6 05	8 26	10 44	13 00	15 18	17 38	19 42	21 24	22 53	24 17	1 53	3 47
10	6 01	8 22	10 40	12 56	15 15	17 34	19 38	21 21	22 49	24 13	1 49	3 43
11	5 57	8 18	10 36	12 52	15 11	17 30	19 34	21 17	22 45	24 09	1 45	3 39
12	5 53	8 14	10 32	12 48	15 07	17 26	19 30	21 13	22 41	24 05	1 41	3 36
13	5 49	8 10	10 28	12 45	15 03	17 22	19 26	21 09	22 37	24 01	1 37	3 32
14	5 45	8 06	10 25	12 41	14 59	17 18	19 22	21 05	22 34	23 57	1 33	3 28
15	5 41	8 03	10 21	12 37	14 55	17 14	19 19	21 02	22 30	23 54	1 30	3 24
16	5 37	7 59	10 17	12 33	14 51	17 10	19 15	20 58	22 26	23 50	1 26	3 20
17	5 34	7 55	10 13	12 29	14 47	17 06	19 11	20 54	22 22	23 46	1 22	3 16
18	5 30	7 51	10 09	12 25	14 43	17 02	19 07	20 50	22 18	23 42	1 18	3 12
19	5 26	7 47	10 05	12 21	14 40	16 58	19 03	20 46	22 14	23 38	1 14	3 08
20	5 22	7 43	10 02	12 17	14 36	16 54	18 59	20 42	22 10	23 34	1 10	3 04
21	5 18	7 39	9 58	12 13	14 32	16 51	18 55	20 38	22 06	23 30	1 06	3 00
22	5 15	7 35	9 54	12 09	14 28	16 47	18 51	20 34	22 02	23 26	1 02	2 56
23	5 11	7 32	9 50	12 05	14 24	16 43	18 47	20 30	21 58	23 22	2458	2 53
24	5 07	7 28	9 46	12 01	14 20	16 39	18 43	20 26	21 55	23 18	2454	2 49
25	5 03	7 24	9 42	11 58	14 16	16 35	18 40	20 23	21 51	23 14	2450	2 45
26	5 00	7 20	9 38	11 54	14 12	16 31	18 36	20 19	21 47	23 10	2446	2 41
27	4 56	7 16	9 34	11 50	14 08	16 27	18 32	20 15	21 43	23 06	2442	2 37
28	4 52	7 12	9 30	11 46	14 04	16 23	18 28	20 11	21 39	23 02	2438	2 34
29	4 48	7 08	9 27	11 42	14 00	16 19	18 24	20 07	21 35	22 58	2435	2 30
30	4 44	7 04	9 23	11 38	13 56	16 15	18 20	20 03	21 31	22 54	2431	2 26
31	4 40	7 00	9 19	11 34	13 53	1612	18 16	19 59	21 27	22 50	2427	2 22
अग	4 36	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी अगस्त भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

अगस्त	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
ता.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं.मि.	घं. मि.
1	6 56	9 15	11 31	13 49	16 08	18 12	19 55	21 23	22 47	24 23	2 18	4 32
2	6 52	9 11	11 27	13 45	16 05	18 09	19 51	21 19	22 43	24 19	2 14	4 28
3	6 48	9 07	11 23	13 42	16 01	18 05	19 47	21 15	22 39	24 15	2 10	4 24
4	6 44	9 03	11 19	13 38	15 57	18 01	19 44	21 11	22 35	24 11	2 06	4 20
5	6 40	9 00	11 15	13 34	15 53	17 57	19 40	21 08	22 31	24 08	2 02	4 16
6	6 36	8 56	11 12	13 30	15 49	17 53	19 36	21 04	22 28	24 04	1 58	4 13
7	6 32	8 52	11 08	13 26	15 45	17 49	19 32	21 00	22 24	24 00	1 54	4 09
8	6 29	8 48	11 04	13 22	15 41	17 45	19 28	20 56	22 20	23 56	1 50	4 05
9	6 25	8 44	11 00	13 18	15 37	17 42	19 24	20 52	22 16	23 52	1 46	4 01
10	6 21	8 41	10 56	13 14	15 33	17 38	19 21	20 48	22 12	23 48	1 43	3 57
11	6 17	8 37	10 53	13 10	15 29	17 34	19 17	20 44	22 08	23 44	1 39	3 54
12	6 13	8 33	10 49	13 06	15 25	17 30	19 13	20 40	22 04	23 40	1 35	3 50
13	6 09	8 29	10 45	13 02	15 21	17 26	19 09	20 36	22 00	23 36	1 32	3 46
14	6 05	8 25	10 41	12 59	15 17	17 22	19 05	20 33	21 56	23 32	1 28	3 42
15	6 01	8 21	10 37	12 55	15 14	17 18	19 01	20 29	21 53	23 29	1 24	3 38
16	5 57	8 17	10 33	12 51	15 10	17 14	18 57	20 25	21 49	23 25	1 20	3 34
17	5 54	8 13	10 29	12 47	15 06	17 10	18 53	20 21	21 45	23 21	1 16	3 30
18	5 50	8 09	10 25	12 43	15 02	17 06	18 49	20 17	21 41	23 17	1 12	3 26
19	5 46	8 05	10 21	12 39	14 58	17 02	18 45	2013	21 37	23 13	1 08	3 22
20	5 42	8 02	10 17	12 35	14 54	16 58	18 41	20 09	21 33	23 09	1 04	3 18
21	5 39	7 58	10 13	12 31	14 50	16 54	18 37	20 05	21 29	23 05	1 00	3 14
22	5 35	7 54	10 09	12 27	14 46	16 50	18 33	20 01	21 25	23 01	0 56	3 10
23	5 31	7 50	10 05	12 23	14 42	16 46	18 21	19 57	21 21	22 57	0 52	3 06
24	5 27	7 46	10 02	12 19	14 38	16 42	18 25	19 53	21 17	22 53	0 48	3 02
25	5 23	7 42	9 58	12 15	14 34	16 38	18 21	19 49	21 13	22 49	0 44	2 58
26	5 19	7 38	9 45	12 11	14 30	16 34	18 17	19 45	21 09	22 45	0 41	2 54
27	5 15	7 34	9 50	12 08	14 27	16 31	18 14	19 42	21 06	22 42	0 37	2 50
28	5 11	7 30	9 46	12 04	14 23	16 27	18 10	19 38	21 02	22 38	0 33	2 46
29	5 07	7 26	9 42	12 00	14 19	16 23	18 06	19 34	20 58	22 34	0 29	2 42
30	5 03	7 22	9 38	11 56	14 15	16 19	18 02	19 30	20 54	22 30	0 25	2 38
31	4 59	7 18	9 34	11 52	14 11	16 15	17 58	19 26	20 50	22 26	0 21	2 34
सितं	4 55	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

सितंबर — दैनिक लग्न सारणी सितंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.
1	7 14	9 30	11 48	14 07	16 11	17 54	19 22	20 46	22 22	0 17	2 31	4 52
2	7 10	9 26	11 44	14 03	16 07	17 50	19 18	20 42	22 18	0 13	2 27	4 48
3	7 06	9 22	11 40	13 59	16 03	17 46	19 14	20 38	22 14	0 09	2 23	4 44
4	7 02	9 18	11 36	13 55	15 59	17 42	19 10	20 34	22 10	0 05	2 19	4 40
5	6 58	9 14	11 32	13 51	15 55	17 38	19 06	20 30	22 06	0 01	2 15	4 36
6	6 54	9 10	11 28	13 47	15 51	17 34	19 02	20 26	22 02	23 57	2 11	4 32
7	6 50	9 06	11 24	13 43	15 47	17 30	18 58	20 22	21 58	23 53	2 07	4 28
8	6 46	9 02	11 20	13 39	15 43	17 26	18 54	20 18	21 54	23 49	2 03	4 24
9	6 42	8 58	11 16	13 35	15 39	17 22	18 50	20 14	21 50	23 45	1 59	4 20
10	6 38	8 54	11 12	13 31	15 35	17 18	18 46	20 10	21 46	23 41	1 55	4 16
11	6 34	8 50	11 08	13 27	15 31	17 14	18 42	20 06	21 42	23 37	1 51	4 12
12	6 30	8 46	11 04	13 23	15 27	17 10	18 38	20 02	21 38	23 33	1 47	4 08
13	6 26	8 42	11 00	13 19	15 23	17 06	18 34	19 58	21 34	23 29	1 43	4 04
14	6 22	8 38	10 56	13 15	15 19	17 02	18 30	19 54	21 30	23 25	1 39	4 00
15	6 18	8 34	10 52	13 11	15 15	16 58	18 26	19 50	21 26	23 21	1 35	3 56
16	6 14	8 30	10 48	13 07	15 11	16 54	18 22	19 46	21 22	23 17	1 31	3 52
17	6 10	8 26	10 44	13 03	15 07	16 50	18 18	19 42	21 18	23 13	1 27	3 48
18	6 06	8 22	10 40	12 59	15 03	16 46	18 14	19 38	21 14	23 09	1 23	3 44
19	6 02	8 18	10 36	12 55	14 59	16 42	18 10	19 34	21 10	23 05	1 19	3 40
20	5 58	8 14	10 32	12 51	14 55	16 38	18 06	19 30	21 06	23 01	1 15	3 36
21	5 54	8 10	10 28	12 47	14 51	16 34	18 02	19 26	21 02	22 57	1 11	3 32
22	5 50	8 06	10 24	12 43	14 47	16 30	17 58	19 22	20 58	22 53	1 07	3 28
23	5 46	8 02	10 20	12 39	14 43	16 26	17 54	19 18	20 54	22 49	1 03	3 24
24	5 42	7 58	10 16	12 35	14 39	16 22	17 50	19 14	20 50	22 45	0 59	3 20
25	5 38	7 54	10 12	12 31	14 35	16 18	17 46	19 10	20 46	22 41	0 55	3 16
26	5 34	7 50	10 08	12 27	14 31	16 14	17 42	19 06	20 42	22 37	0 51	3 12
27	5 30	7 46	10 04	12 23	14 27	16 10	17 38	19 02	20 38	22 33	0 47	3 08
28	5 26	7 42	10 00	12 19	14 23	16 06	17 34	18 58	20 34	22 29	0 43	3 04
29	5 22	7 38	9 56	12 15	14 19	16 02	17 30	18 54	20 30	22 25	0 39	3 00
30	5 18	7 34	9 53	12 12	14 16	15 59	17 27	18 51	20 27	22 22	0 36	2 57
अक्तू	5 15	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

अक्तूबर — दैनिक लग्न सारणी अक्तूबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.
1	7 30	9 49	12 08	14 12	15 55	17 23	18 47	20 23	22 18	0 32	2 53	5 11
2	7 26	9 45	12 04	14 08	15 51	17 19	18 43	20 19	22 14	0 28	2 49	5 07
3	7 23	9 42	12 00	14 04	15 47	17 15	18 39	20 15	22 10	0 24	2 45	5 03
4	7 19	9 38	11 56	14 00	15 43	17 11	18 35	20 11	22 06	0 20	2 41	4 59
5	7 15	9 34	11 52	13 56	15 39	17 07	18 31	20 07	22 02	0 16	2 37	4 55
6	7 11	9 30	11 48	13 52	15 35	17 03	18 27	20 03	21 58	0 12	2 33	4 51
7	7 07	9 26	11 44	13 48	15 31	16 59	18 23	19 59	21 54	0 08	2 29	4 47
8	7 03	9 22	11 40	13 44	15 27	16 55	18 19	19 55	21 50	0 04	2 25	4 43
9	6 59	9 18	11 36	13 40	15 23	16 51	18 15	19 51	21 46	24 00	2 21	4 39
10	6 55	9 14	11 32	13 36	15 19	16 47	18 11	19 47	21 42	23 56	2 17	4 35
11	6 51	9 10	11 28	13 32	15 15	16 43	18 07	19 43	21 38	23 52	2 13	4 31
12	6 47	9 06	11 24	13 28	15 11	16 39	18 03	19 39	21 34	23 48	2 09	4 27
13	6 43	9 02	11 20	13 24	15 07	16 35	17 59	19 35	21 30	23 44	2 05	4 23
14	6 39	8 58	11 16	13 20	15 03	16 31	17 55	19 31	21 26	23 40	2 01	4 19
15	6 35	8 54	11 12	13 16	14 59	16 27	17 51	19 27	21 22	23 36	1 57	4 15
16	6 31	8 50	11 08	13 12	14 55	16 23	17 47	19 23	21 18	23 32	1 53	4 11
17	6 27	8 46	11 04	13 08	14 51	16 19	17 43	19 19	21 14	23 28	1 49	4 07
18	6 23	8 42	11 00	13 04	14 47	16 15	17 39	19 15	21 10	23 24	1 45	4 03
19	6 19	8 38	10 56	13 00	14 43	16 11	17 35	19 11	21 06	23 20	1 41	3 59
20	6 15	8 34	10 52	12 56	14 39	16 07	17 31	19 07	21 02	23 16	1 37	3 55
21	6 11	8 30	10 48	12 52	14 35	16 03	17 27	19 03	20 58	23 12	1 33	3 51
22	6 07	8 26	10 44	12 48	14 31	15 59	17 23	18 59	20 54	23 08	1 29	3 47
23	6 03	8 22	10 40	12 44	14 27	15 55	17 19	18 55	20 50	23 04	1 25	3 43
24	5 59	8 18	10 36	12 40	14 23	15 51	17 15	18 51	20 46	23 00	1 21	3 39
25	5 56	8 15	10 33	12 37	14 20	15 48	17 12	18 48	20 43	22 57	1 17	3 36
26	5 52	8 11	10 29	12 33	14 16	15 44	17 08	18 44	20 39	22 53	1 13	3 32
27	5 48	8 07	10 25	12 29	14 12	15 40	17 04	18 40	20 35	22 49	1 09	3 28
28	5 44	8 03	10 21	12 25	14 08	15 36	17 00	18 36	20 31	22 45	1 06	3 24
29	5 40	7 59	10 17	12 21	14 04	15 32	16 56	18 32	20 27	22 41	1 02	3 20
30	5 36	7 55	10 13	12 17	14 00	15 28	16 52	18 28	20 23	22 37	24 58	3 16
31	5 33	7 51	10 09	12 13	13 56	15 24	16 48	18 24	20 19	22 33	24 54	3 12
नवं.	5 29	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी नवंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 47	10 6	12 10	13 53	15 21	16 44	18 20	20 15	22 29	0 50	3 08	5 25
2	7 43	10 2	12 06	13 49	15 17	16 40	18 16	20 11	22 25	0 46	3 04	5 21
3	7 39	9 58	12 02	13 45	15 13	16 37	18 13	20 08	22 22	0 43	3 00	5 17
4	7 35	9 54	11 58	13 41	15 09	16 33	18 09	20 04	22 18	0 39	2 56	5 13
5	7 31	9 50	11 54	13 37	15 05	16 29	18 05	20 00	22 15	0 35	2 52	5 09
6	7 27	9 46	11 50	13 33	15 01	16 25	18 01	19 56	22 10	0 31	2 48	5 05
7	7 24	9 42	11 46	13 29	14 57	16 21	17 57	19 52	22 06	0 27	2 45	5 01
8	7 20	9 38	11 42	13 25	14 53	16 17	17 53	19 48	22 02	0 23	2 41	4 57
9	7 16	9 34	11 38	13 21	14 49	16 13	17 49	19 44	21 58	0 19	2 37	4 53
10	7 12	9 30	11 34	13 17	14 45	16 09	17 45	19 40	21 54	0 15	2 33	4 49
11	7 08	9 26	11 30	13 13	14 41	16 05	17 41	19 36	21 50	0 11	2 29	4 45
12	7 04	9 22	11 26	13 09	14 37	16 01	17 37	19 32	21 46	0 07	2 25	4 41
13	7 00	9 18	11 22	13 05	14 33	15 57	17 33	19 28	21 42	0 03	2 21	4 37
14	6 56	9 14	11 28	13 01	14 29	15 53	17 29	19 24	21 38	23 59	2 17	4 33
15	6 52	9 10	11 14	12 57	14 25	15 49	17 25	19 20	21 34	23 55	2 13	4 29
16	6 48	9 06	11 10	12 53	14 21	15 45	17 21	19 16	21 30	23 51	2 09	4 25
17	6 43	9 02	11 06	12 49	14 17	15 41	17 17	19 12	21 26	23 47	2 05	4 21
18	6 39	8 58	11 02	12 45	14 13	15 37	17 23	19 08	21 22	23 43	2 01	4 17
19	6 35	8 54	10 58	12 41	14 09	15 33	17 09	19 04	21 18	23 39	1 57	4 13
20	6 31	8 50	10 54	12 37	14 05	15 29	17 05	19 00	21 14	23 35	1 53	4 09
21	6 27	8 46	10 50	12 33	14 01	15 25	17 01	18 56	21 10	23 31	1 49	4 05
22	6 23	8 43	10 47	12 30	13 58	15 22	16 58	18 53	21 07	23 28	1 46	4 02
23	6 20	8 39	10 43	12 26	13 54	15 18	16 54	18 49	21 03	23 24	1 42	3 58
24	6 16	8 35	10 39	12 22	13 50	15 14	16 50	18 45	20 59	23 20	1 38	3 54
25	6 12	8 31	10 35	12 18	13 46	15 10	16 46	18 41	20 55	23 16	1 34	3 50
26	6 08	8 28	10 31	12 14	13 42	15 06	16 42	18 37	20 51	23 12	1 30	3 46
27	6 04	8 23	10 27	12 10	13 38	15 02	16 38	18 33	20 47	23 08	1 26	3 42
28	6 00	8 19	10 23	12 06	13 34	14 58	16 34	18 29	20 43	23 04	1 22	3 38
29	5 56	8 16	10 20	12 03	13 31	14 55	16 31	18 26	20 40	23 01	1 19	3 35
30	5 53	8 12	10 16	11 59	13 27	14 51	16 27	18 22	20 36	22 57	1 15	3 31
दिसं.	5 49											

दैनिक लग्न सारणी दिसंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	8 08	10 12	11 55	13 23	14 47	16 23	18 18	20 32	22 53	1 11	3 27	5 45
2	8 04	10 08	11 51	13 19	14 43	16 19	18 14	20 28	22 49	1 07	3 23	5 41
3	8 00	10 04	11 47	13 15	14 39	16 15	18 10	20 24	22 45	1 03	3 19	5 37
4	7 56	10 00	11 43	13 11	14 35	16 11	18 06	20 20	22 41	0 59	3 15	5 33
5	7 52	9 56	11 39	13 07	14 31	16 07	18 02	20 16	22 37	0 55	3 11	5 29
6	7 48	9 52	11 35	13 03	14 27	16 03	17 58	20 12	22 33	0 51	3 07	5 25
7	7 44	9 48	11 31	12 59	14 23	15 59	17 54	20 08	22 29	0 47	3 03	5 21
8	7 40	9 44	11 27	12 55	14 19	15 55	17 50	20 04	22 25	0 43	2 59	5 17
9	7 36	9 40	11 23	12 51	14 15	15 51	17 46	20 00	22 21	0 39	2 55	5 13
10	7 33	9 37	11 20	12 48	14 12	15 48	17 43	19 57	22 18	0 36	2 52	5 10
11	7 29	9 33	11 16	12 44	14 08	15 44	17 39	19 53	22 14	0 32	2 48	5 06
12	7 25	9 29	11 12	12 40	14 04	15 40	17 35	19 49	22 10	0 28	2 44	5 02
13	7 21	9 25	11 08	12 36	14 01	15 36	17 31	19 45	22 06	0 24	2 40	4 58
14	7 17	9 21	11 04	12 32	13 56	15 32	17 27	19 41	22 02	0 20	2 36	4 54
15	7 13	9 17	11 00	12 28	13 52	15 28	17 23	19 37	21 58	0 16	2 32	4 50
16	7 09	9 13	10 56	12 24	13 48	15 24	17 19	19 33	21 54	0 12	2 28	4 46
17	7 05	9 09	10 52	12 21	13 44	15 20	17 15	19 29	21 50	0 08	2 24	4 42
18	7 11	9 05	10 49	12 17	13 41	15 16	17 11	19 25	21 46	0 04	2 20	4 38
19	6 58	9 01	10 45	12 13	13 36	15 12	17 07	19 21	21 42	0 00	2 16	4 34
20	6 53	8 57	10 41	12 09	13 32	15 08	17 03	19 17	21 38	23 56	2 12	4 30
21	6 49	8 53	10 37	12 05	13 28	15 04	16 59	19 13	21 34	23 52	2 09	4 26
22	6 45	8 49	10 33	12 01	13 24	15 00	16 55	19 10	21 30	23 49	2 05	4 22
23	6 41	8 45	10 29	11 57	13 20	14 56	16 51	19 06	21 26	23 45	2 01	4 18
24	6 37	8 42	10 25	11 53	13 16	14 52	16 48	19 02	21 23	23 41	1 57	4 14
25	6 33	8 38	10 21	11 49	13 12	14 48	16 44	18 58	21 19	23 37	1 53	4 10
26	6 30	8 34	10 17	11 45	13 09	14 44	16 40	18 54	21 15	23 33	1 49	4 06
27	6 26	8 30	10 13	11 41	13 05	14 41	16 36	18 50	21 11	23 29	1 45	4 03
28	6 22	8 26	10 09	11 37	13 01	14 37	16 32	18 46	21 07	23 25	1 41	3 59
29	6 18	8 22	10 05	11 33	12 57	14 33	16 28	18 42	21 03	23 21	1 37	3 55
30	6 14	8 18	10 01	11 29	12 53	14 29	16 24	18 38	20 59	23 17	1 33	3 51
31	6 10	8 14	9 57	11 25	12 49	14 25	16 20	18 34	20 55	23 13	1 29	3 47
जन.	6 06											

अनुकूल कार्य सिद्धि के लिए होरा ज्ञान चक्र (मुहूर्त्त) और फल ज्ञान

सर्वकार्य सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त श्रेयस्कर है। होरा मुहूर्त्त के अनुसार कार्यारम्भ करके प्रत्येक मनुष्य अशुभ समय में से होरा के अनुसार अपना कार्य सिद्ध कर सकता है। सात ग्रहों के सात होरे हैं। **सूर्य की होरा**-टेंडर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है। **चंद्रमा की होरा**–सब कार्यों के लिए अच्छी होती है। **मंगल की होरा**-युद्ध, यात्रा, कर्ज देने, सभा-सोसाईटी में आना-जाना और मुकदमा के कार्यों में अच्छी होती है। **बुध की होरा**–में विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार, नवीन लेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। **गुरु की होरा**–विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलना, कोषसंग्रह, नवीन काव्य लेखन आदि के लिए शुभ है। **शुक्र की होरा**–यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, प्रवास, सौभाग्यवर्धक कार्य के लिए शुभ है। **शनि की होरा**–भूमि, मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी, मिल्स कार्यारम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।

प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो 'वार' होता है, उस वार के आरम्भ (अर्थात् सूर्योदय के समय) से १ घण्टा तक उसी वार को होरा रहता है। इसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार से छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरे बीतने पर अगले वार के सूर्योदय समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा उपयुक्त लिखी है, उसके अनुसार ही उस होरा में (१ घण्टे) में वह कार्य करेंगे तो अवश्य सफलता मिलेगी। ऋषियों ने होरा को 'क्षणवार' कहा है। वार से भी क्षण वार में प्रधानता मानी गई है। इसलिए यदि वार और 'क्षणवार' दोनों अनुकूल हों, तभी किसी कार्य को करना चाहिए। आवश्यकता में, यदि वार अनुकूल नहीं हो तो 'क्षणवार' अर्थात् होरा की अनुकूलता के अनुसार कार्य करना चाहिए। **जैसे**–पश्चिम की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता हो तो वार के अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इसलिए जिस समय सोम की होरा (क्षणवार) हो उस समय रविवार में पश्चिम की यात्रा की जा सकती है। नीचे चक्र के अनुसार रविवार को सोम की होरा सूर्योदय समय से ४, ११, १८ घण्टे बाद के एक-एक घण्टे तक आप सोम की होरा में जा सकते हैं। इसी प्रकार अन्य दिनों के होराओं के विषय में भी समझ लें।

वार	होरा १	होरा २	होरा ३	होरा ४	होरा ५	होरा ६	होरा ७	होरा ८	होरा ९	होरा १०	होरा ११	होरा १२
रवि.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि
सोम.	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि
मंगल	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम
बुध	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल
गुरु	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
शुक्र	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु
शनि	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र

वार	होरा १३	होरा १४	होरा १५	होरा १६	होरा १७	होरा १८	होरा १९	होरा २०	होरा २१	होरा २२	होरा २३	होरा २४
रवि.	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
सोम.	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु
मंगल	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र
बुध	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि
गुरु	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि
शुक्र	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम
शनि	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल

॥ चौघड़ियां मुहूर्त्त ॥

दिन की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	6:00
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	7:30
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	9:00
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	10:30
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	12:00
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	13:30
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	15:00
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	16:30

॥ चौघड़ियां मुहूर्त्त ॥

रात्रि की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	18:00
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	19:30
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	21:00
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	22:30
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	24:00
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	25:30
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	27:00
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	28:30

शीघ्रता में कोई मुहूर्त्त न मिलता हो तो, तथा अचानक यात्रा करनी पड़ी तो, उस समय चौघड़ियां मुहूर्त्त का उपयोग करना श्रेयस्कर रहता है। दिन और रात्रि के आठ-आठ बराबर भाग करने से एक-एक चौघड़ियां मुहूर्त्त होता है। जब दिन और रात्रि बराबर अर्थात् 12 घण्टे का दिन तथा 12 घण्टे की रात्रि हो, तब एक चौघड़ियां मुहूर्त्त 1½ घण्टे अर्थात् पौने चार घटी का होगा। इसलिए इसका नाम चौघड़ियां मुहूर्त्त पड़ा। रविवार, चंद्रवार आदि वार सूर्योदय से प्रारम्भ होकर अगले दिन सूर्योदय तक रहता है। प्रत्येक वार के सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय उस वार का दिनमान तथा सूर्यास्त से अग्रिम सूर्योदय तक का समय 'रात्रिमान' होता है। दिनमान और रात्रिमान में सू. उ. तथा सू. अ. के अन्तर आने के कारण घटते-बढ़ते रहते है। परन्तु 'वार सदैव' 24 घण्टा अर्थात् 60 घटी का होता है। रात्रिमान जानने के लिए पंचांगदिवाकर में दिए गए दिनमान को 60 घटी में घटा दें। जिस दिन यात्रा करनी हो उस दिन के दिनमान के अष्टमांश घटी पल का घण्टा मिन्ट बनाकर उस दिन के सूर्योदय समय में जोड़ते जाएँ तो क्रमशः उस दिन की आठों चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा। इसी प्रकार जिस दिन रात्रि में यात्रा करनी हो तो उस दिन के रात्रिमान के अष्टमांश घटी-पल का घण्टा मिन्ट बनाकर सूर्यास्त समय में जोड़ते जाने से क्रमाशः रात्रि की प्रत्येक चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा तथा शुभाशुभ जानने के लिए प्रत्येक वार के नीचे तथा चौघड़ियां के सामने तालिका में देखें। **टिप्पणी**–सदैव चर, लाभ, अमृत एवं शुभ चौघड़ियों में ही शुभ कार्य का आरम्भ करना श्रेष्ठ रहता है।

किसी ग्रह के अंश कलादि स्पष्ट के द्वारा नक्षत्र-पाद (चरण) आरम्भ ज्ञात करना (प्रारम्भ काल)

सूर्य चन्द्रादि ग्रह अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों के क्रांतिवृत्त (Zodiac = 360°) को पूरा परिभ्रमण करने में अलग-अलग समय लेते हैं। ३६० अंश को२७ द्वारा भाग देने से प्रति नक्षत्र का मध्यम मान १३ अंश २० कला बनता है तथा एक नक्षत्र के चार चरण (पाद) होने से प्रत्येक नक्षत्र पाद को भोग्य मान ३°-२०' (अंश कला) होगा (१३°-२०') ÷ 4 = 3°-20' शून्य से प्रारम्भ होकर प्रत्येक ग्रह इसी भान्ति क्रमानुसार नक्षत्र चरण राशि आदि परिवर्तन करता है। अधिक व्याख्या हेतु देखें ज्योतिष तत्त्व।

रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि	रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि	रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि
०-००-००	अश्विनी (१) मेषे	४-००-००	मघा (१) सिंहे	८-००-००	मूल (१) धनु
०-०३-२०	.. (२) ..	४-०३-२०	.. (२) ..	८-०३-२०	.. (२) ..
०-०६-४०	.. (३) ..	४-०६-४०	.. (३) ..	८-०६-४०	.. (३) ..
०-१०-००	.. (४) ..	४-१०-००	.. (४) ..	८-१०-००	.. (४) ..
०-१३-२०	भरणी (१) ..	४-१३-२०	पू.फा. (१) ..	८-१३-२०	पू.षा. (१) ..
०-१६-४०	.. (२) ..	४-१६-४०	.. (२) ..	८-१६-४०	.. (२) ..
०-२०-००	.. (३) ..	४-२०-००	.. (३) ..	८-२०-००	.. (३) ..
०-२३-२०	.. (४) ..	४-२३-२०	.. (४) ..	८-२३-२०	.. (४) ..
०-२६-४०	कृतिका (१) मेषे	४-२६-४०	उ.फा. (१) ..	८-२६-४०	उ.षा. (१) ..
१-००-००	.. (२) वृषे	५-००-००	.. (२) कन्या	९-००-००	उषा (२) मक
१-०३-२०	.. (३) ..	५-०३-२०	.. (३) ..	९-०३-२०	.. (३) ..
१-०६-४०	.. (४) ..	५-०६-४०	.. (४) ..	९-०६-४०	.. (४) ..
१-१०-००	रोहिणी (१) ..	५-१०-००	हस्ते (१) ..	९-१०-००	श्रव (१) ..
१-१३-२०	.. (२) ..	५-१३-२०	.. (२) ..	९-१३-२०	.. (२) ..
१-१६-४०	.. (३) ..	५-१६-४०	.. (३) ..	९-१६-४०	.. (३) ..
१-२०-००	.. (४) ..	५-२०-००	.. (४) ..	९-२०-००	.. (४) ..
१-२३-२०	मृगशिर (१) ..	५-२३-२०	चित्रा (१) ..	९-२३-२०	घनि (१) ..
१-२६-४०	.. (२) ..	५-२६-४०	.. (२) ..	९-२६-४०	.. (२) ..
२-००-००	.. (३) मिथुन	६-००-००	चित्रा (३) तुला	१०-००-००	.. (३) कुंभे
२-०३-२०	.. (४) ..	६-०३-२०	.. (४) ..	१०-०३-२०	.. (४) ..
२-०६-४०	आर्द्रा (१) ..	६-०६-४०	स्वाती (१) ..	१०-०६-४०	शतभिषा (१)..
२-१०-००	.. (२) ..	६-१०-००	.. (२) ..	१०-१०-००	.. (२) ..
२-१३-२०	.. (३) ..	६-१३-२०	.. (३) ..	१०-१३-२०	.. (३) ..
२-१६-४०	.. (४) ..	६-१६-४०	.. (४) ..	१०-१६-४०	.. (४) ..
२-२०-००	पुनर्वसु (१) ..	६-२०-००	विशाखा (१) ..	१०-२०-००	पूभा (१) ..
२-२३-२०	.. (२) ..	६-२३-२०	.. (२) ..	१०-२३-२०	.. (२) ..
२-२६-४०	.. (३) ..	६-२६-४०	.. (३) ..	१०-२६-४०	.. (३) ..
३-००-००	पुनर्वसु (४) कर्के	७-००-००	.. (४) वृश्चिके	११-००-००	पूभा (४) मीने
३-०३-२०	पुष्ये (१) ..	७-०३-२०	अनुराधा (१) ..	११-०३-२०	उ.भा. (१) ..
३-०६-४०	.. (२) ..	७-०६-४०	.. (२) ..	११-०६-४०	.. (२) ..
३-१०-००	.. (३) ..	७-१०-००	.. (३) ..	११-१०-००	.. (३) ..
३-१३-२०	.. (४) ..	७-१३-२०	.. (४) ..	११-१३-२०	उ.भा. (४) ..
३-१६-४०	आश्ले (१) ..	७-१६-४०	ज्ये. (१) ..	११-१६-४०	रेवती (१) ..
३-२०-००	.. (२) ..	७-२०-००	.. (२) ..	११-२०-००	.. (२) ..
३-२३-२०	.. (३) ..	७-२३-२०	.. (३) ..	११-२३-२०	.. (३) ..
३-२६-४०	.. (४) ..	७-२६-४०	.. (४) ..	११-२६-४०	रेवती (४) ..
				[illegible]	अश्वि (१) मेषे

दैनिक लग्न सारणी में वार्षिक संस्कार

आगामी पृष्ठों में दी गई दैनिक लग्न सारणी 31°-19' अक्षांश जालन्धर, एवं 24°-08' अयनांश पर आधारित है। इसमें प्रत्येक लग्न का समाप्तिकाल अंग्रेज़ी तारीखों के मुताबक, भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में लिखा गया है। सूर्योदयास्त एवं लग्नों के प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल का आधार मुख्यत: अंग्रेज़ी तारीखें ली गई हैं। चूंकि पृथ्वी की अयनगति में प्रतिवर्ष परिवर्तन होता है, इसके अतिरिक्त तीन वर्षों के पश्चात् हर चौथे वर्ष **लीप वर्ष** (अर्थात् **फरवरी मास** के दिन 28 की अपेक्षा 29 होते हैं) होने के कारण लग्नों के मान में प्रति वर्ष कुछ स्थूलता आ जाती है। इसको सूक्ष्म बनाने के लिए वार्षिक संस्कार सारणी दी जा रही है। यह वार्षिक संस्कार (+ या –) करने से अभीष्ट सन् एवं तारीख (Desired date and Year) का सूक्ष्मतम लग्न समाप्तिकाल प्राप्त होगा। वार्षिक संस्कार सारणी में लीप वर्ष (Leap Year) दो बार लिखा गया है। जिस सन् ईसवी के साथ (A) का निशान दिया गया है, उस संस्कार तालिका को जनवरी की 1 तारीख से 28 फरवरी तक के लिए जाने तथा जिस सन् के साथ (B) का निशान है, उस संस्कार तालिका का प्रयोग **1 मार्च से 31 दिसंबर** तक की अवधि के लिए करें।

29 फरवरी के लग्न मान के लिए 28 फरवरी के प्रत्येक लग्न (कुम्भ से मकर तक) समा. काल में से २/२ मिनट हीन (कम) कर देवे। लीप रहित जिस सन् के आगे कोई निशान नहीं दिया गया उस **संस्कार** तालिका का प्रयोग **१ जनवरी से ३१ दिसंबर** तक के महीनों के लिए करें। **उदाहरणार्थ**–ता. 16 अप्रैल, 2016 को मेष लग्न समाप्ति देखना है तो सारिणी में ता. 16 अप्रैल को 7/29 पर मेष लग्न समाप्त हुआ। अब इसमें वार्षिक संस्कार तालिका से हमें –1 मिनट प्राप्त हुए।

अत: सन् 2016 में **मेष लग्न 7/28** पर समाप्त होगा।

दैनिक लग्न सारिणी में वार्षिक संस्कार तालिका

सन् ई.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
2005	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
2006	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
2007	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
2008A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
2008B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	–१	–१	–१
2009	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०
2010	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
2011	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
2012A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
2012B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	+०	–१	–१
2013	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
2014	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
2015	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
2016A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
2016B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	–१	–१	–१
2017	+०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
2018	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
2019	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
2020A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
2020B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	–१	–१	–१
2021	+०	+०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
2022	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१

दैनिक लग्न सारणी (अप्रैल-मई (वैशाख)) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

अप्रैल	वैशाख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
		घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
13	१	७ ४१	९ ३५	११ ४१	१४ १२	१६ ३२	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ३७	३ १८	४ ४३	६ ०४
14	२	७ ३७	९ ३१	११ ४५	१४ ०८	१६ २८	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ३३	३ १४	४ ३९	६ ००
15	३	७ ३३	९ २७	११ ४२	१४ ०४	१६ २४	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ २९	३ १०	४ ३५	५ ५६
16	४	७ २९	९ २३	११ ३८	१४ ००	१६ २०	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ २५	३ ०६	४ ३१	५ ५२
17	५	७ २५	९ १९	११ ३४	१३ ५७	१६ १७	१८ ३४	२० ५६	२३ १६	१ २१	३ ०२	४ २७	५ ४८
18	६	७ २१	९ १६	११ ३०	१३ ५३	१६ १३	१८ ३१	२० ५२	२३ १२	१ १७	२ ५८	४ २३	५ ४४
19	७	७ १७	९ १२	११ २६	१३ ४९	१६ ०९	१८ २७	२० ४८	२३ ०८	१ १३	२ ५४	४ १९	५ ४०
20	८	७ १३	९ ०८	११ २२	१३ ४५	१६ ०५	१८ २३	२० ४४	२३ ०४	१ ०९	२ ५०	४ १५	५ ३६
21	९	७ ०९	९ ०४	११ १८	१३ ४१	१६ ०१	१८ १९	२० ४०	२३ ०१	१ ०५	२ ४६	४ ११	५ ३२
22	१०	७ ०५	९ ००	११ १५	१३ ३७	१५ ५७	१८ १५	२० ३६	२२ ५७	१ ०१	२ ४२	४ ०७	५ २८
23	११	७ ०१	८ ५६	११ ११	१३ ३३	१५ ५३	१८ ११	२० ३३	२२ ५३	०० ५७	२ ३८	४ ०३	५ २४
24	१२	६ ५७	८ ५२	११ ०७	१३ २९	१५ ५०	१८ ०७	२० २९	२२ ४९	०० ५३	२ ३४	३ ५९	५ २१
25	१३	६ ५३	८ ४८	११ ०३	१३ २५	१५ ४६	१८ ०३	२० २५	२२ ४५	०० ४९	२ ३०	३ ५५	५ १७
26	१४	६ ४९	८ ४४	१० ५९	१३ २१	१५ ४२	१७ ५९	२० २१	२२ ४१	०० ४५	२ २७	३ ५१	५ १३
27	१५	६ ४६	८ ४०	१० ५५	१३ १७	१५ ३८	१७ ५५	२० १७	२२ ३७	०० ४१	२ २३	३ ४७	५ ०९
28	१६	६ ४२	८ ३६	१० ५१	१३ १४	१५ ३५	१७ ५१	२० १३	२२ ३३	०० ३७	२ १९	३ ४३	५ ०५
29	१७	६ ३८	८ ३२	१० ४७	१३ १०	१५ ३१	१७ ४७	२० ०९	२२ २९	०० ३३	२ १५	३ ३९	५ ०१
30	१८	६ ३४	८ २८	१० ४३	१३ ०६	१५ २७	१७ ४४	२० ०५	२२ २५	०० २९	२ ११	३ ३५	४ ५७
मई	१९	६ ३०	८ २४	१० ३९	१३ ०२	१५ २३	१७ ४०	२० ०१	२२ २१	०० २५	२ ०७	३ ३२	४ ५३
2	२०	६ २६	८ २०	१० ३५	१२ ५८	१५ १९	१७ ३६	१९ ५७	२२ १७	०० २१	२ ०३	३ २८	४ ५०
3	२१	६ २२	८ १६	१० ३१	१२ ५४	१५ १५	१७ ३२	१९ ५३	२२ १३	०० १८	१ ५९	३ २४	४ ४६
4	२२	६ १८	८ १२	१० २७	१२ ५०	१५ ११	१७ २८	१९ ४९	२२ ०९	०० १४	१ ५५	३ २०	४ ४२
5	२३	६ १४	८ ०८	१० २३	१२ ४६	१५ ०७	१७ २४	१९ ४५	२२ ०५	०० १०	१ ५१	३ १६	४ ३८
6	२४	६ १०	८ ०४	१० १९	१२ ४२	१५ ०३	१७ २०	१९ ४१	२२ ०१	०० ०६	१ ४७	३ १२	४ ३४
7	२५	६ ६	८ ००	१० १५	१२ ३८	१४ ५९	१७ १६	१९ ३७	२१ ५७	०० ०२	१ ४३	३ ०८	४ ३०
8	२६	६ २	७ ५६	१० ११	१२ ३४	१४ ५५	१७ १२	१९ ३३	२१ ५३	२३ ५८	१ ३९	३ ०४	४ २६
9	२७	५ ५८	७ ५२	१० ०७	१२ ३०	१४ ५१	१७ ०८	१९ २९	२१ ४९	२३ ५४	१ ३५	३ ००	४ २२
10	२८	५ ५४	७ ४८	१० ०३	१२ २६	१४ ४७	१७ ०४	१९ २५	२१ ४५	२३ ५०	१ ३१	२ ५६	४ १८
11	२९	५ ५०	७ ४५	९ ५९	१२ २२	१४ ४३	१७ ००	१९ २१	२१ ४१	२३ ४६	१ २७	२ ५२	४ १४
12	३०	५ ४६	७ ४१	९ ५५	१२ १८	१४ ३९	१६ ५६	१९ १७	२१ ३७	२३ ४२	१ २३	२ ४८	४ १०
13	३१	५ ४२	७ ३७	९ ५१	१२ १५	१४ ३५	१६ ५२	१९ १३	२१ ३३	२३ ३८	१ १९	२ ४४	४ ०६
14	ज्ये	५ ३९	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी (मई-जून (ज्येष्ठ)) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

मई	ज्येष्ठ	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
		घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
14	१	७ ३३	९ ४८	१२ ११	१४ ३१	१६ ४९	१९ १०	२१ ३०	२३ ३४	०१ १५	२ ४०	४ ०२	५ ३५
15	२	७ २९	९ ४४	१२ ०७	१४ २७	१६ ४५	१९ ०६	२१ २६	२३ ३०	०१ ११	२ ३६	३ ५८	५ ३१
16	३	७ २५	९ ४०	१२ ०३	१४ २३	१६ ४१	१९ ०२	२१ २२	२३ २६	०१ ०७	२ ३२	३ ५४	५ २७
17	४	७ २२	९ ३६	११ ५९	१४ १९	१६ ३७	१८ ५८	२१ १८	२३ २२	०१ ०३	२ २८	३ ५०	५ २३
18	५	७ १८	९ ३२	११ ५५	१४ १५	१६ ३३	१८ ५४	२१ १४	२३ १८	०० ५९	२ २४	३ ४६	५ १९
19	६	७ १४	९ २८	११ ५१	१४ ११	१६ २९	१८ ५०	२१ १०	२३ १५	०० ५६	२ २०	३ ४२	५ १५
20	७	७ १०	९ २४	११ ४७	१४ ०७	१६ २५	१८ ४६	२१ ०६	२३ ११	०० ५२	२ १७	३ ३८	५ ११
21	८	७ ०६	९ २०	११ ४३	१४ ०३	१६ २१	१८ ४२	२१ ०२	२३ ०७	०० ४८	२ १३	३ ३४	५ ०७
22	९	७ ०२	९ १६	११ ३९	१३ ५९	१६ १७	१८ ३८	२० ५८	२३ ०३	०० ४४	२ ०९	३ ३०	५ ०३
23	१०	६ ५९	९ १३	११ ३६	१३ ५६	१६ १४	१८ ३५	२० ५५	२३ ००	०० ४१	२ ०५	३ २७	५ ००
24	११	६ ५५	९ ०९	११ ३२	१३ ५२	१६ १०	१८ ३१	२० ५१	२२ ५६	०० ३७	२ ०२	३ २३	४ ५६
25	१२	६ ५१	९ ०५	११ २८	१३ ४८	१६ ०६	१८ २७	२० ४७	२२ ५२	०० ३३	१ ५८	३ १९	४ ५२
26	१३	६ ४७	९ ०१	११ २४	१३ ४४	१६ ०२	१८ २३	२० ४३	२२ ४८	०० २९	१ ५४	३ १५	४ ४८
27	१४	६ ४३	८ ५७	११ २०	१३ ४०	१५ ५८	१८ १९	२० ३९	२२ ४४	०० २५	१ ५०	३ ११	४ ४४
28	१५	६ ३९	८ ५३	११ १६	१३ ३६	१५ ५४	१८ १५	२० ३५	२२ ४०	०० २१	१ ४६	३ ०७	४ ४०
29	१६	६ ३५	८ ४९	११ १२	१३ ३२	१५ ५०	१८ ११	२० ३१	२२ ३६	०० १७	१ ४२	३ ०३	४ ३६
30	१७	६ ३१	८ ४५	११ ०८	१३ २८	१५ ४६	१८ ०७	२० २७	२२ ३२	०० १३	१ ३८	२ ५९	४ ३२
31	१८	६ २७	८ ४१	११ ०४	१३ २४	१५ ४२	१८ ०३	२० २३	२२ २८	०० ०९	१ ३४	२ ५५	४ २८
जून	१९	६ २३	८ ३७	११ ००	१३ २०	१५ ३८	१७ ५९	२० १९	२२ २४	०० ०५	१ ३०	२ ५१	४ २४
2	२०	६ १९	८ ३३	१० ५६	१३ १६	१५ ३४	१७ ५५	२० १५	२२ २०	०० ०१	१ २६	२ ४७	४ २०
3	२१	६ १५	८ २९	१० ५२	१३ १२	१५ ३०	१७ ५१	२० ११	२२ १६	२३ ५७	१ २२	२ ४३	४ १६
4	२२	६ ११	८ २५	१० ४८	१३ ०८	१५ २६	१७ ४७	२० ०७	२२ १२	२३ ५३	१ १८	२ ३९	४ १२
5	२३	६ ०७	८ २१	१० ४४	१३ ०४	१५ २२	१७ ४३	२० ०३	२२ ०८	२३ ४९	१ १४	२ ३५	४ ०८
6	२४	६ ०३	८ १८	१० ४१	१३ ०१	१५ १९	१७ ४०	२० ००	२२ ०५	२३ ४६	१ १०	२ ३२	४ ०४
7	२५	५ ५९	८ १४	१० ३७	१२ ५७	१५ १५	१७ ३६	१९ ५६	२२ ०१	२३ ४२	१ ०६	२ २८	४ ०१
8	२६	५ ५५	८ १०	१० ३३	१२ ५३	१५ ११	१७ ३२	१९ ५२	२१ ५७	२३ ३८	१ ०२	२ २४	३ ५७
9	२७	५ ५१	८ ०६	१० २९	१२ ४९	१५ ०७	१७ २८	१९ ४८	२१ ५३	२३ ३४	०० ५८	२ २०	३ ५३
10	२८	५ ४७	८ ०२	१० २५	१२ ४५	१५ ०३	१७ २४	१९ ४४	२१ ४९	२३ ३०	०० ५४	२ १६	३ ४९
11	२९	५ ४३	७ ५८	१० २१	१२ ४१	१४ ५९	१७ २०	१९ ४०	२१ ४५	२३ २६	०० ५०	२ १२	३ ४५
12	३०	५ ३९	७ ५४	१० १७	१२ ३७	१४ ५५	१७ १६	१९ ३६	२१ ४१	२३ २२	०० ४६	२ ०८	३ ४१
13	३१	५ ३५	७ ५०	१० १३	१२ ३३	१४ ५१	१७ १२	१९ ३२	२१ ३७	२३ १८	०० ४२	२ ०४	३ ३७
14	३२	५ ३१	७ ४६	१० ०९	१२ २९	१४ ४७	१७ ०८	१९ २८	२१ ३३	२३ १४	०० ३८	२ ००	३ ३३
15	आ	५ २७	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी जून-जुलाई (आषाढ़) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

जून	आषाढ़	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
15	१	७ ४२	१० ०५	१२ २५	१४ ४३	१७ ०४	१९ २४	२१ २९	२३ १०	०० ३५	१ ५६	३ २९	५ २४
16	२	७ ३८	१० ०१	१२ २१	१४ ३९	१७ ००	१९ २०	२१ २५	२३ ०६	०० ३१	१ ५२	३ २५	५ २०
17	३	७ ३४	९ ५७	१२ १७	१४ ३५	१६ ५६	१९ १६	२१ २१	२३ ०२	०० २७	१ ४८	३ २१	५ १६
18	४	७ ३०	९ ५३	१२ १३	१४ ३१	१६ ५२	१९ १२	२१ १७	२२ ५८	०० २३	१ ४४	३ १७	५ १२
19	५	७ २६	९ ४९	१२ ०९	१४ २७	१६ ४८	१९ ०८	२१ १३	२२ ५४	०० १९	१ ४०	३ १३	५ ०८
20	६	७ २२	९ ४५	१२ ०५	१४ २३	१६ ४४	१९ ०४	२१ ०९	२२ ५०	०० १५	१ ३६	३ ०९	५ ०४
21	७	७ १८	९ ४१	१२ ०१	१४ १९	१६ ४०	१९ ००	२१ ०५	२२ ४६	०० ११	१ ३२	३ ०५	५ ००
22	८	७ १५	९ ३७	११ ५७	१४ १५	१६ ३६	१८ ५६	२१ ०१	२२ ४२	०० ०७	१ २८	३ ०१	४ ५६
23	९	७ ११	९ ३३	११ ५३	१४ ११	१६ ३२	१८ ५२	२० ५७	२२ ३८	०० ०३	१ २४	२ ५७	४ ५२
24	१०	७ ०७	९ २९	११ ४९	१४ ०७	१६ २८	१८ ४८	२० ५३	२२ ३४	२३ ५९	१ २०	२ ५३	४ ४८
25	११	७ ०३	९ २५	११ ४५	१४ ०३	१६ २४	१८ ४४	२० ४९	२२ ३०	२३ ५५	१ १६	२ ४९	४ ४४
26	१२	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ५९	१६ २०	१८ ४०	२० ४५	२२ २६	२३ ५१	१ १२	२ ४५	४ ४०
27	१३	६ ५५	९ १८	११ ३८	१३ ५६	१६ १७	१८ ३७	२० ४२	२२ २३	२३ ४८	१ ०९	२ ४२	४ ३७
28	१४	६ ५१	९ १४	११ ३४	१३ ५२	१६ १३	१८ ३३	२० ३८	२२ १९	२३ ४४	१ ०५	२ ३८	४ ३३
29	१५	६ ४७	९ १०	११ ३०	१३ ४८	१६ ०९	१८ २९	२० ३४	२२ १५	२३ ४०	१ ०१	२ ३४	४ २९
30	१६	६ ४३	९ ०६	११ २६	१३ ४४	१६ ०५	१८ २५	२० ३०	२२ ११	२३ ३६	०० ५७	२ ३०	४ २५
जुला.	१७	६ ३९	९ ०२	११ २२	१३ ४०	१६ ०१	१८ २१	२० २६	२२ ०७	२३ ३२	०० ५३	२ २६	४ २१
2	१८	६ ३५	८ ५८	११ १८	१३ ३६	१५ ५७	१८ १७	२० २२	२२ ०३	२३ २८	०० ४९	२ २२	४ १७
3	१९	६ ३१	८ ५४	११ १४	१३ ३२	१५ ५३	१८ १३	२० १८	२१ ५९	२३ २४	०० ४५	२ १८	४ १३
4	२०	६ २७	८ ५०	११ १०	१३ २८	१५ ४९	१८ ०९	२० १४	२१ ५५	२३ २०	०० ४१	२ १४	४ ०९
5	२१	६ २३	८ ४६	११ ०६	१३ २४	१५ ४५	१८ ०५	२० १०	२१ ५१	२३ १६	०० ३८	२ ११	४ ०५
6	२२	६ १९	८ ४२	११ ०२	१३ २०	१५ ४१	१८ ०१	२० ०६	२१ ४७	२३ १२	०० ३४	२ ०७	४ ०१
7	२३	६ १६	८ ३९	१० ५९	१३ १७	१५ ३८	१७ ५८	२० ०३	२१ ४४	२३ ०९	०० ३१	२ ०४	३ ५८
8	२४	६ १२	८ ३५	१० ५५	१३ १३	१५ ३४	१७ ५४	१९ ५९	२१ ४०	२३ ०५	०० २७	२ ००	३ ५४
9	२५	६ ०८	८ ३१	१० ५१	१३ ०९	१५ ३०	१७ ५०	१९ ५५	२१ ३६	२३ ०१	०० २३	१ ५६	३ ५०
10	२६	६ ०४	८ २७	१० ४७	१३ ०५	१५ २६	१७ ४६	१९ ५१	२१ ३२	२२ ५७	०० १९	१ ५२	३ ४६
11	२७	६ ००	८ २३	१० ४३	१३ ०१	१५ २२	१७ ४२	१९ ४७	२१ २८	२२ ५३	०० १५	१ ४८	३ ४२
12	२८	५ ५६	८ १९	१० ३९	१२ ५७	१५ १८	१७ ३८	१९ ४३	२१ २४	२२ ४९	०० ११	१ ४४	३ ३८
13	२९	५ ५२	८ १५	१० ३५	१२ ५३	१५ १४	१७ ३४	१९ ३९	२१ २०	२२ ४५	०० ०७	१ ४०	३ ३४
14	३०	५ ४८	८ ११	१० ३१	१२ ४९	१५ १०	१७ ३०	१९ ३५	२१ १६	२२ ४१	०० ०३	१ ३६	३ ३०
15	३१	५ ४४	८ ०७	१० २७	१२ ४५	१५ ०६	१७ २६	१९ ३१	२१ १२	२२ ३७	२३ ५९	१ ३२	३ २६
16	श्रा.	५ ४०	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी जुला.-अग. (श्रावण) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

जुलाई	श्रावण	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
16	१	८ ०३	१० २३	१२ ४१	१५ ०२	१७ २२	१९ २७	२१ ०८	२२ ३३	२३ ५५	१ २८	३ २२	५ ३६
17	२	७ ५९	१० १९	१२ ३७	१४ ५८	१७ १८	१९ २३	२१ ०४	२२ २९	२३ ५१	१ २४	३ १८	५ ३२
18	३	७ ५५	१० १५	१२ ३३	१४ ५४	१७ १४	१९ १९	२१ ००	२२ २५	२३ ४७	१ २०	३ १४	५ २८
19	४	७ ५२	१० १२	१२ ३०	१४ ५१	१७ ११	१९ १६	२० ५६	२२ २१	२३ ४३	१ १७	३ १०	५ २४
20	५	७ ४८	१० ०८	१२ २६	१४ ४७	१७ ०७	१९ १२	२० ५२	२२ १८	२३ ४०	१ १३	३ ६	५ २०
21	६	७ ४४	१० ०४	१२ २२	१४ ४३	१७ ०३	१९ ८	२० ४८	२२ १४	२३ ३६	१ ०९	३ ०२	५ १६
22	७	७ ४०	१० ००	१२ १८	१४ ३९	१६ ५९	१९ ०४	२० ४४	२२ १०	२३ ३२	१ ०५	२ ५८	५ १२
23	८	७ ३६	९ ५६	१२ १४	१४ ३५	१६ ५५	१९ ००	२० ४०	२२ ०६	२३ २८	१ ०१	२ ५४	५ ०८
24	९	७ ३२	९ ५२	१२ १०	१४ ३१	१६ ५१	१८ ५६	२० ३६	२२ ०२	२३ २४	० ५७	२ ५०	५ ०४
25	१०	७ २८	९ ४८	१२ ६	१४ २७	१६ ४७	१८ ५२	२० ३२	२१ ५८	२३ २०	० ५३	२ ४६	५ ००
26	११	७ २४	९ ४४	१२ ०२	१४ २४	१६ ४४	१८ ४८	२० २९	२१ ५४	२३ १६	० ४९	२ ४२	४ ५६
27	१२	७ २०	९ ४०	११ ५८	१४ २०	१६ ४०	१८ ४४	२० २५	२१ ५०	२३ १२	० ४५	२ ३८	४ ५२
28	१३	७ १६	९ ३६	११ ५५	१४ १६	१६ ३६	१८ ४०	२० २१	२१ ४६	२३ ०८	० ४१	२ ३४	४ ४९
29	१४	७ १२	९ ३२	११ ५१	१४ १२	१६ ३२	१८ ३६	२० १७	२१ ४२	२३ ०४	० ३७	२ ३०	४ ४५
30	१५	७ ०८	९ २८	११ ४७	१४ ८	१६ २८	१८ ३२	२० १३	२१ ३८	२३ ००	० ३३	२ २७	४ ४१
31	१६	७ ०४	९ २४	११ ४३	१४ ०४	१६ २५	१८ २८	२० ९	२१ ३४	२२ ५६	० २९	२ २३	४ ३७
अग.	१७	७ ००	९ २०	११ ३९	१४ ००	१६ २१	१८ २४	२० ०५	२१ ३०	२२ ५२	० २५	२ १९	४ ३३
2	१८	६ ५६	९ १६	११ ३५	१३ ५६	१६ १७	१८ २०	२० ०१	२१ २६	२२ ४८	० २१	२ १५	४ २९
3	१९	६ ५२	९ १२	११ ३१	१३ ५२	१६ १३	१८ १६	१९ ५७	२१ २२	२२ ४४	० १७	२ ११	४ २५
4	२०	६ ४८	९ ०९	११ २७	१३ ४८	१६ ९	१८ १२	१९ ५३	२१ १८	२२ ४१	० १३	२ ०७	४ २१
5	२१	६ ४४	९ ०५	११ २४	१३ ४५	१६ ५	१८ ९	१९ ५०	२१ १४	२२ ३८	० १०	२ ०४	४ १७
6	२२	६ ४०	९ ०१	११ २०	१३ ४१	१६ ०१	१८ ५	१९ ४६	२१ ११	२२ ३४	० ०६	२ ००	४ १४
7	२३	६ ३७	८ ५७	११ १६	१३ ३७	१५ ५७	१८ ०१	१९ ४२	२१ ७	२२ ३०	० ०२	१ ५६	४ १०
8	२४	६ ३३	८ ५३	११ १२	१३ ३३	१५ ५४	१७ ५७	१९ ३९	२१ ०३	२२ २६	२३ ५८	१ ५२	४ ०६
9	२५	६ २९	८ ४९	११ ८	१३ २९	१५ ५०	१७ ५३	१९ ३५	२० ५९	२२ २२	२३ ५४	१ ४८	४ ०२
10	२६	६ २५	८ ४५	११ ४	१३ २५	१५ ४६	१७ ४९	१९ ३१	२० ५५	२२ १८	२३ ५०	१ ४४	३ ५८
11	२७	६ २१	८ ४१	११ ००	१३ २१	१५ ४२	१७ ४५	१९ २७	२० ५१	२२ १४	२३ ४६	१ ४०	३ ५४
12	२८	६ १७	८ ३७	१० ५६	१३ १७	१५ ३८	१७ ४१	१९ २३	२० ४८	२२ १०	२३ ४२	१ ३७	३ ५०
13	२९	६ १३	८ ३३	१० ५२	१३ १३	१५ ३४	१७ ३७	१९ १९	२० ४४	२२ ०६	२३ ३८	१ ३३	३ ४७
14	३०	६ ०९	८ २९	१० ४८	१३ ०९	१५ ३०	१७ ३३	१९ १५	२० ४०	२२ ०२	२३ ३४	१ २९	३ ४३
15	३१	६ ०५	८ २५	१० ४४	१३ ०५	१५ २६	१७ २९	१९ ११	२० ३६	२१ ५८	२३ ३०	१ २५	३ ३९
16	भाद्र	६ ०१	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी अग.-सितं. (भाद्रपद) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

अगस्त	भाद्रपद	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ २१	१० ४०	१३ ०१	१५ २२	१७ २५	१९ ०७	२० ३२	२१ ५४	२३ २६	१ २१	३ ३५	५ ५७
17	२	८ १७	१० ३६	१२ ५७	१५ १८	१७ २१	१९ ०३	२० २८	२१ ५०	२३ २२	१ १७	३ ३१	५ ५३
18	३	८ १३	१० ३३	१२ ५३	१५ १४	१७ १७	१८ ५९	२० २४	२१ ४६	२३ १८	१ १३	३ २७	५ ४९
19	४	८ ९	१० २९	१२ ४९	१५ १०	१७ १३	१८ ५५	२० २०	२१ ४२	२३ १४	१ ०९	३ २३	५ ४५
20	५	८ ६	१० २५	१२ ४६	१५ ०६	१७ ०९	१८ ५१	२० १६	२१ ३८	२३ १०	१ ०५	३ १९	५ ४१
21	६	८ ०२	१० २१	१२ ४२	१५ ०२	१७ ०६	१८ ४७	२० १२	२१ ३४	२३ ०७	१ ०१	३ १५	५ ३७
22	७	७ ५८	१० १७	१२ ३८	१४ ५८	१७ ०२	१८ ४४	२० ८	२१ ३०	२३ ०३	० ५७	३ ११	५ ३३
23	८	७ ५४	१० १३	१२ ३४	१४ ५४	१६ ५८	१८ ४०	२० ४	२१ २६	२२ ५९	० ५३	३ ०७	५ २९
24	९	७ ५०	१० ०९	१२ ३०	१४ ५०	१६ ५४	१८ ३६	२० ०१	२१ २२	२२ ५५	० ५०	३ ०३	५ २५
25	१०	७ ४६	१० ५	१२ २६	१४ ४६	१६ ५०	१८ ३२	१९ ५७	२१ १९	२२ ५१	० ४६	३ ००	५ २२
26	११	७ ४२	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४६	१८ २८	१९ ५३	२१ १५	२२ ४७	० ४२	२ ५६	५ १८
27	१२	७ ३८	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४३	१८ २४	१९ ४९	२१ ११	२२ ४३	० ३८	२ ५२	५ १४
28	१३	७ ३४	९ ५३	१२ १५	१४ ३५	१६ ३९	१८ २०	१९ ४५	२१ ७	२२ ३९	० ३४	२ ४८	५ १०
29	१४	७ ३०	९ ४९	१२ ११	१४ ३१	१६ ३५	१८ १६	१९ ४१	२१ ०३	२२ ३५	० ३०	२ ४४	५ ६
30	१५	७ २६	९ ४५	१२ ०७	१४ २७	१६ ३१	१८ १२	१९ ३७	२० ५९	२२ ३१	० २६	२ ४०	५ ०२
31	१६	७ २२	९ ४१	१२ ०३	१४ २३	१६ २७	१८ ०८	१९ ३३	२० ५५	२२ २७	० २२	२ ३६	४ ५८
सितं.	१७	७ १८	९ ३७	११ ५९	१४ १९	१६ २३	१८ ०४	१९ २९	२० ५१	२२ २३	० १८	२ ३२	४ ५४
2	१८	७ १४	९ ३४	११ ५५	१४ १५	१६ १९	१८ ००	१९ २५	२० ४७	२२ १९	० १४	२ २८	४ ५०
3	१९	७ १०	९ ३०	११ ५१	१४ ११	१६ १५	१७ ५६	१९ २१	२० ४३	२२ १६	० १०	२ २४	४ ४६
4	२०	७ ०६	९ २६	११ ४७	१४ ०७	१६ ११	१७ ५२	१९ १७	२० ३९	२२ १२	० ६	२ २०	४ ४२
5	२१	७ ०२	९ २२	११ ४३	१४ ०३	१६ ०७	१७ ४८	१९ १३	२० ३५	२२ ८	० ०२	२ १६	४ ३८
6	२२	६ ५९	९ १८	११ ३९	१३ ५९	१६ ०३	१७ ४४	१९ ९	२० ३१	२२ ०४	२३ ५८	२ १२	४ ३४
7	२३	६ ५५	९ १४	११ ३५	१३ ५५	१५ ५९	१७ ४०	१९ ५	२० २७	२२ ००	२३ ५४	२ ०८	४ ३०
8	२४	६ ५१	९ १०	११ ३१	१३ ५१	१५ ५५	१७ ३६	१९ ०१	२० २३	२१ ५६	२३ ५०	२ ०४	४ २६
9	२५	६ ४७	९ ०६	११ २७	१३ ४७	१५ ५१	१७ ३२	१८ ५७	२० १९	२१ ५२	२३ ४६	२ ००	४ २२
10	२६	६ ४३	९ ०२	११ २३	१३ ४३	१५ ४७	१७ २८	१८ ५३	२० १५	२१ ४८	२३ ४२	१ ५६	४ १८
11	२७	६ ३९	८ ५८	११ १९	१३ ३९	१५ ४३	१७ २४	१८ ४९	२० ११	२१ ४४	२३ ३८	१ ५२	४ १४
12	२८	६ ३५	८ ५४	११ १५	१३ ३५	१५ ३९	१७ २०	१८ ४५	२० ७	२१ ४०	२३ ३४	१ ४८	४ १०
13	२९	६ ३१	८ ५०	११ ११	१३ ३१	१५ ३५	१७ १६	१८ ४१	२० ०३	२१ ३६	२३ ३०	१ ४४	४ ६
14	३०	६ २७	८ ४६	११ ७	१३ २७	१५ ३१	१७ १२	१८ ३७	१९ ५९	२१ ३२	२३ २६	१ ४०	४ ०२
15	३१	६ २३	८ ४२	११ ०३	१३ २३	१५ २७	१७ ०८	१८ ३३	१९ ५५	२१ २८	२३ २२	१ ३६	३ ५८
16	आ	६ २३	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी सितं.-अक्तू. (आश्विन) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

सितंबर	आश्विन	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ ३८	१० ५९	१३ १९	१५ २३	१७ ०४	१८ २९	१९ ५१	२१ २४	२३ १८	१ ३२	३ ५५	६ १५
17	२	८ ३४	१० ५५	१३ १५	१५ १९	१७ ००	१८ २५	१९ ४७	२१ २०	२३ १४	१ २८	३ ५१	६ ११
18	३	८ ३०	१० ५१	१३ ११	१५ १५	१६ ५६	१८ २१	१९ ४३	२१ १६	२३ १०	१ २४	३ ४७	६ ०७
19	४	८ २६	१० ४७	१३ ०७	१५ ११	१६ ५२	१८ १७	१९ ३९	२१ १२	२३ ०६	१ २०	३ ४३	६ ०३
20	५	८ २२	१० ४३	१३ ०३	१५ ०७	१६ ४८	१८ १३	१९ ३५	२१ ०८	२३ ०२	१ १६	३ ३९	५ ५९
21	६	८ १८	१० ३९	१२ ५९	१५ ०३	१६ ४४	१८ ०९	१९ ३१	२१ ०४	२२ ५८	१ १२	३ ३५	५ ५५
22	७	८ १४	१० ३५	१२ ५५	१४ ५९	१६ ४०	१८ ०५	१९ २७	२१ ००	२२ ५४	१ ०८	३ ३१	५ ५१
23	८	८ १०	१० ३१	१२ ५१	१४ ५५	१६ ३६	१८ ०१	१९ २३	२० ५६	२२ ५०	१ ०४	३ २७	५ ४७
24	९	८ ६	१० २७	१२ ४७	१४ ५१	१६ ३२	१७ ५७	१९ १९	२० ५२	२२ ४६	१ ००	३ २३	५ ४३
25	१०	८ ०२	१० २३	१२ ४३	१४ ४७	१६ २८	१७ ५३	१९ १५	२० ४८	२२ ४२	०० ५७	३ १९	५ ३९
26	११	७ ५८	१० २०	१२ ४०	१४ ४४	१६ २५	१७ ५०	१९ १२	२० ४४	२२ ३८	०० ५३	३ १५	५ ३५
27	१२	७ ५४	१० १६	१२ ३६	१४ ४०	१६ २१	१७ ४६	१९ ८	२० ४०	२२ ३५	०० ४९	३ ११	५ ३१
28	१३	७ ५०	१० १२	१२ ३२	१४ ३६	१६ १७	१७ ४२	१९ ०४	२० ३६	२२ ३१	०० ४५	३ ०७	५ २७
29	१४	७ ४६	१० ०८	१२ २८	१४ ३२	१६ १३	१७ ३८	१९ ००	२० ३२	२२ २७	०० ४१	३ ०३	५ २३
30	१५	७ ४२	१० ०४	१२ २४	१४ २८	१६ ०९	१७ ३४	१८ ५६	२० २८	२२ २३	०० ३७	२ ५९	५ १९
अक्तू	१६	७ ३८	१० ०	१२ २०	१४ २४	१६ ०५	१७ ३०	१८ ५२	२० २४	२२ १९	०० ३३	२ ५५	५ १५
2	१७	७ ३४	९ ५६	१२ १६	१४ २०	१६ ०१	१७ २६	१८ ४८	२० २१	२२ १५	०० २९	२ ५२	५ ११
3	१८	७ ३०	९ ५२	१२ १२	१४ १६	१५ ५७	१७ २२	१८ ४४	२० १७	२२ ११	०० २५	२ ४८	५ ०७
4	१९	७ २६	९ ४८	१२ ०८	१४ १२	१५ ५३	१७ १८	१८ ४०	२० १३	२२ ०७	०० २१	२ ४४	५ ०३
5	२०	७ २२	९ ४४	१२ ०४	१४ ८	१५ ४९	१७ १४	१८ ३६	२० ०९	२२ ०३	०० १७	२ ४०	५ ००
6	२१	७ १८	९ ४०	१२ ००	१४ ४	१५ ४५	१७ १०	१८ ३२	२० ०५	२१ ५९	०० १३	२ ३६	४ ५६
7	२२	७ १४	९ ३६	११ ५६	१४ ००	१५ ४१	१७ ०६	१८ २८	२० ०१	२१ ५५	०० ०९	२ ३३	४ ५२
8	२३	७ १०	९ ३२	११ ५२	१३ ५६	१५ ३७	१७ ०२	१८ २४	१९ ५७	२१ ५१	०० ०५	२ २९	४ ४८
9	२४	७ ०६	९ २८	११ ४८	१३ ५२	१५ ३३	१६ ५८	१८ २०	१९ ५३	२१ ४७	०० ०१	२ २५	४ ४४
10	२५	७ ०३	९ २५	११ ४५	१३ ४९	१५ ३०	१६ ५५	१८ १७	१९ ४९	२१ ४४	२३ ५८	२ २१	४ ४१
11	२६	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ४५	१५ २६	१६ ५१	१८ १३	१९ ४५	२१ ४०	२३ ५४	२ १७	४ ३७
12	२७	६ ५५	९ १७	११ ३७	१३ ४१	१५ २२	१६ ४७	१८ ९	१९ ४१	२१ ३६	२३ ५०	२ १३	४ ३३
13	२८	६ ५१	९ १३	११ ३३	१३ ३७	१५ १८	१६ ४३	१८ ०५	१९ ३७	२१ ३२	२३ ४६	२ ०९	४ २९
14	२९	६ ४७	९ ०९	११ २९	१३ ३३	१५ १४	१६ ३९	१८ ०१	१९ ३३	२१ २८	२३ ४२	२ ०५	४ २५
15	३०	६ ४३	९ ०५	११ २५	१३ २९	१५ १०	१६ ३५	१७ ५७	१९ २९	२१ २४	२३ ३८	२ ०१	४ २१
16	३१	६ ३९	९ ०१	११ २१	१३ २५	१५ ०६	१६ ३१	१७ ५३	१९ २५	२१ २०	२३ ३४	१ ५७	४ १७
17	का.	६ ३५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी अक्टू.-नवं. (कार्तिक) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

अक्टूबर	कार्तिक	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
17	१	८ ५७	११ १७	१३ २१	१५ ०२	१६ २७	१७ ४९	१९ २१	२१ १६	२३ ३०	१ ५३	४ १३	६ ३१
18	२	८ ५३	११ १३	१३ १७	१४ ५८	१६ २३	१७ ४५	१९ १७	२१ १२	२३ २६	१ ४९	४ ०९	६ २७
19	३	८ ४९	११ ०९	१३ १३	१४ ५४	१६ १९	१७ ४१	१९ १३	२१ ०८	२३ २२	१ ४५	४ ०५	६ २३
20	४	८ ४५	११ ०५	१३ ०९	१४ ५०	१६ १५	१७ ३७	१९ ०९	२१ ०४	२३ १८	१ ४१	४ ०१	६ १९
21	५	८ ४१	११ ०१	१३ ०५	१४ ४६	१६ ११	१७ ३३	१९ ०५	२१ ००	२३ १४	१ ३७	३ ५७	६ १५
22	६	८ ३७	१० ५७	१३ ०१	१४ ४२	१६ ०७	१७ २९	१९ ०१	२० ५६	२३ १०	१ ३३	३ ५३	६ ११
23	७	८ ३३	१० ५३	१२ ५७	१४ ३८	१६ ०३	१७ २५	१८ ५७	२० ५२	२३ ०७	१ २९	३ ५०	६ ७
24	८	८ २९	१० ४९	१२ ५३	१४ ३४	१५ ५९	१७ २१	१८ ५३	२० ४८	२३ ०३	१ २५	३ ४६	६ ४
25	९	८ २६	१० ४६	१२ ५०	१४ ३०	१५ ५५	१७ १८	१८ ५०	२० ४४	२२ ५९	१ २२	३ ४२	६ ००
26	१०	८ २२	१० ४२	१२ ४६	१४ २७	१५ ५२	१७ १४	१८ ४६	२० ४१	२२ ५५	१ १८	३ ३९	५ ५६
27	११	८ १८	१० ३८	१२ ४२	१४ २३	१५ ४८	१७ १०	१८ ४२	२० ३७	२२ ५१	१ १४	३ ३५	५ ५२
28	१२	८ १४	१० ३४	१२ ३८	१४ १९	१५ ४४	१७ ०६	१८ ३८	२० ३३	२२ ४७	१ १०	३ ३१	५ ४८
29	१३	८ १०	१० ३०	१२ ३४	१४ १५	१५ ४०	१७ ०२	१८ ३४	२० २९	२२ ४३	१ ०६	३ २७	५ ४४
30	१४	८ ०६	१० २६	१२ ३०	१४ ११	१५ ३६	१६ ५८	१८ ३०	२० २५	२२ ३९	१ ०२	३ २३	५ ४१
31	१५	८ ०२	१० २२	१२ २६	१४ ०७	१५ ३२	१६ ५४	१८ २६	२० २१	२२ ३५	० ५८	३ १९	५ ३७
नवं.	१६	७ ५८	१० १८	१२ २२	१४ ०३	१५ २८	१६ ५०	१८ २२	२० १७	२२ ३१	० ५४	३ १५	५ ३३
2	१७	७ ५४	१० १४	१२ १८	१३ ५९	१५ २४	१६ ४६	१८ १८	२० १३	२२ २७	० ५०	३ ११	५ २९
3	१८	७ ५०	१० १०	१२ १४	१३ ५५	१५ २०	१६ ४२	१८ १५	२० ०९	२२ २३	० ४६	३ ०७	५ २५
4	१९	७ ४६	१० ०६	१२ १०	१३ ५१	१५ १६	१६ ३८	१८ ११	२० ०५	२२ १९	० ४२	३ ०३	५ २१
5	२०	७ ४२	१० ०२	१२ ०६	१३ ४७	१५ १२	१६ ३४	१८ ०७	२० ०१	२२ १५	० ३८	२ ५९	५ १७
6	२१	७ ३८	९ ५८	१२ ०२	१३ ४३	१५ ०८	१६ ३०	१८ ०३	१९ ५७	२२ ११	० ३४	२ ५५	५ १३
7	२२	७ ३५	९ ५४	११ ५८	१३ ३९	१५ ०४	१६ २६	१७ ५९	१९ ५३	२२ ०७	० ३०	२ ५१	५ ९
8	२३	७ ३१	९ ५०	११ ५४	१३ ३५	१५ ००	१६ २२	१७ ५५	१९ ४९	२२ ०३	० २६	२ ४७	५ ५
9	२४	७ २७	९ ४६	११ ५०	१३ ३१	१४ ५६	१६ १८	१७ ५१	१९ ४५	२१ ५९	० २२	२ ४३	५ ०१
10	२५	७ २३	९ ४२	११ ४६	१३ २७	१४ ५२	१६ १४	१७ ४७	१९ ४२	२१ ५६	० १८	२ ३९	४ ५७
11	२६	७ १९	९ ३८	११ ४२	१३ २४	१४ ४९	१६ ११	१७ ४३	१९ ३८	२१ ५२	० १४	२ ३५	४ ५३
12	२७	७ १५	९ ३४	११ ३९	१३ २०	१४ ४५	१६ ०७	१७ ३९	१९ ३४	२१ ४८	० ११	२ ३१	४ ४९
13	२८	७ ११	९ ३१	११ ३५	१३ १६	१४ ४१	१६ ०३	१७ ३५	१९ ३०	२१ ४४	० ०७	२ २७	४ ४५
14	२९	७ ०७	९ २७	११ ३१	१३ १२	१४ ३७	१५ ५९	१७ ३१	१९ २६	२१ ४०	० ०३	२ २३	४ ४१
15	३०	७ ०३	९ २३	११ २७	१३ ०८	१४ ३३	१५ ५५	१७ २७	१९ २२	२१ ३६	२३ ५९	२ १९	४ ३७
16	मा.	६ ५९	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी नवं.-दिसं. (मार्गशीर्ष) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

नवम्बर	मार्ग.	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
16	१	९ १९	११ २३	१३ ०४	१४ २९	१५ ५१	१७ २३	१९ १८	२१ ३२	२३ ५५	२ १५	४ ३३	६ ५५
17	२	९ १५	११ १९	१३ ००	१४ २५	१५ ४७	१७ १९	१९ १४	२१ २८	२३ ५१	२ ११	४ २९	६ ५१
18	३	९ ११	११ १५	१२ ५६	१४ २१	१५ ४३	१७ १५	१९ १०	२१ २४	२३ ४७	२ ०७	४ २५	६ ४७
19	४	९ ०७	११ ११	१२ ५२	१४ १७	१५ ३९	१७ ११	१९ ०६	२१ २०	२३ ४३	२ ०३	४ २१	६ ४३
20	५	९ ०३	११ ०७	१२ ४८	१४ १३	१५ ३५	१७ ०७	१९ ०२	२१ १६	२३ ३९	१ ५९	४ १७	६ ३९
21	६	८ ५९	११ ०३	१२ ४४	१४ ०९	१५ ३१	१७ ०३	१८ ५८	२१ १२	२३ ३५	१ ५५	४ १३	६ ३५
22	७	८ ५५	१० ५९	१२ ४०	१४ ०५	१५ २७	१७ ००	१८ ५५	२१ ०९	२३ ३१	१ ५२	४ १०	६ ३२
23	८	८ ५१	१० ५५	१२ ३६	१४ ०१	१५ २३	१६ ५६	१८ ५१	२१ ०५	२३ २७	१ ४८	४ ६	६ २८
24	९	८ ४७	१० ५१	१२ ३२	१३ ५७	१५ १९	१६ ५२	१८ ४७	२१ ०१	२३ २३	१ ४४	४ ०२	६ २४
25	१०	८ ४४	१० ४८	१२ २९	१३ ५४	१५ १६	१६ ४८	१८ ४३	२० ५७	२३ १९	१ ४०	३ ५८	६ २०
26	११	८ ४०	१० ४४	१२ २५	१३ ५०	१५ १२	१६ ४४	१८ ३९	२० ५३	२३ १६	१ ३६	३ ५४	६ १६
27	१२	८ ३६	१० ४०	१२ २१	१३ ४६	१५ ०८	१६ ४०	१८ ३५	२० ४९	२३ १२	१ ३२	३ ५०	६ १२
28	१३	८ ३२	१० ३६	१२ १७	१३ ४२	१५ ०४	१६ ३६	१८ ३१	२० ४५	२३ ०८	१ २८	३ ४६	६ ०८
29	१४	८ २८	१० ३२	१२ १३	१३ ३८	१५ ००	१६ ३३	१८ २७	२० ४१	२३ ०५	१ २५	३ ४३	६ ०४
30	१५	८ २४	१० २८	१२ ०९	१३ ३४	१४ ५६	१६ २९	१८ २३	२० ३७	२३ ०१	१ २१	३ ३९	६ ००
दिसं	१६	८ २०	१० २४	१२ ०५	१३ ३०	१४ ५२	१६ २५	१८ १९	२० ३३	२२ ५७	१ १७	३ ३५	५ ५६
2	१७	८ १६	१० २०	१२ ०१	१३ २६	१४ ४८	१६ २१	१८ १५	२० २९	२२ ५३	१ १३	३ ३१	५ ५२
3	१८	८ १२	१० १६	११ ५७	१३ २२	१४ ४४	१६ १७	१८ ११	२० २५	२२ ४९	१ ०९	३ २७	५ ४८
4	१९	८ ०८	१० १२	११ ५३	१३ १८	१४ ४०	१६ १३	१८ ०७	२० २१	२२ ४५	१ ०५	३ २३	५ ४४
5	२०	८ ०४	१० ०८	११ ४९	१३ १४	१४ ३६	१६ ०९	१८ ०३	२० १७	२२ ४१	१ ०१	३ १९	५ ४०
6	२१	८ ००	१० ०४	११ ४५	१३ १०	१४ ३२	१६ ०५	१७ ५९	२० १३	२२ ३७	०० ५७	३ १५	५ ३६
7	२२	७ ५६	१० ००	११ ४१	१३ ०६	१४ २८	१६ ०१	१७ ५५	२० ०९	२२ ३३	०० ५३	३ ११	५ ३२
8	२३	७ ५२	९ ५६	११ ३७	१३ ०२	१४ २४	१५ ५७	१७ ५१	२० ०५	२२ २९	०० ४९	३ ७	५ २८
9	२४	७ ४८	९ ५२	११ ३३	१२ ५८	१४ २०	१५ ५३	१७ ४७	२० ०१	२२ २५	०० ४५	३ ०३	५ २४
10	२५	७ ४५	९ ४९	११ ३०	१२ ५५	१४ १७	१५ ५०	१७ ४४	१९ ५८	२२ २२	०० ४२	३ ००	५ २१
11	२६	७ ४१	९ ४५	११ २६	१२ ५१	१४ १३	१५ ४६	१७ ४०	१९ ५४	२२ १८	०० ३८	२ ५६	५ १७
12	२७	७ ३७	९ ४१	११ २२	१२ ४७	१४ ०९	१५ ४२	१७ ३६	१९ ५०	२२ १४	०० ३४	२ ५२	५ १३
13	२८	७ ३३	९ ३७	११ १८	१२ ४३	१४ ०५	१५ ३८	१७ ३२	१९ ४६	२२ १०	०० ३०	२ ४८	५ ९
14	२९	७ २९	९ ३३	११ १४	१२ ३९	१४ ०१	१५ ३४	१७ २८	१९ ४२	२२ ०६	०० २६	२ ४४	५ ०५
15	पौ.	७ २५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी — दिसं.-जन. (पौष) — भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

दिसम्बर	पौष	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	१	९ २९	११ १०	१२ ३५	१३ ५७	१५ ३०	१७ २४	१९ ३८	२२ ०२	०० २२	२ ४०	५ ०१	७ २१
16	२	९ २५	११ ०६	१२ ३१	१३ ५३	१५ २६	१७ २०	१९ ३४	२१ ५८	०० १८	२ ३६	४ ५७	७ १७
17	३	९ २१	११ २	१२ २८	१३ ४९	१५ २२	१७ १६	१९ ३०	२१ ५४	०० १४	२ ३२	४ ५३	७ १३
18	४	९ १७	१० ५९	१२ २४	१३ ४५	१५ १८	१७ १२	१९ २६	२१ ५०	०० १०	२ २८	४ ४९	७ ९
19	५	९ १३	१० ५५	१२ २०	१३ ४१	१५ १४	१७ ८	१९ २२	२१ ४६	०० ०६	२ २४	४ ४५	७ ५
20	६	९ ९	१० ५१	१२ १६	१३ ३७	१५ १०	१७ ४	१९ १८	२१ ४२	०० ०२	२ २०	४ ४१	७ १
21	७	९ ५	१० ४७	१२ १२	१३ ३३	१५ ६	१७ ००	१९ १४	२१ ३८	२३ ५८	२ १७	४ ३७	६ ५७
22	८	९ ०१	१० ४३	१२ ८	१३ २९	१५ २	१६ ५६	१९ ११	२१ ३४	२३ ५४	२ १३	४ ३३	६ ५३
23	९	८ ५७	१० ३९	१२ ४	१३ २५	१४ ५८	१६ ५२	१९ ०७	२१ ३०	२३ ५०	२ ९	४ २९	६ ४९
24	१०	८ ५४	१० ३५	१२ ००	१३ २१	१४ ५४	१६ ४९	१९ ३	२१ २६	२३ ४६	२ ५	४ २५	६ ४५
25	११	८ ५०	१० ३१	११ ५६	१३ १७	१४ ५०	१६ ४५	१८ ५९	२१ २२	२३ ४२	२ १	४ २१	६ ४२
26	१२	८ ४६	१० २७	११ ५२	१३ १४	१४ ४६	१६ ४१	१८ ५५	२१ १८	२३ ३८	१ ५७	४ १७	६ ३८
27	१३	८ ४२	१० २३	११ ४८	१३ १०	१४ ४३	१६ ३७	१८ ५१	२१ १४	२३ ३४	१ ५३	४ १४	६ ३४
28	१४	८ ३८	१० १९	११ ४४	१३ ६	१४ ३९	१६ ३३	१८ ४७	२१ १०	२३ ३०	१ ४९	४ १०	६ ३०
29	१५	८ ३४	१० १५	११ ४०	१३ २	१४ ३५	१६ २९	१८ ४३	२१ ०६	२३ २६	१ ४५	४ ६	६ २६
30	१६	८ ३०	१० ११	११ ३६	१२ ५८	१४ ३१	१६ २५	१८ ३९	२१ ० २	२३ २२	१ ४१	४ २	६ २२
31	१७	८ २६	१० ०७	११ ३२	१२ ५४	१४ २७	१६ २१	१८ ३५	२० ५८	२३ १८	१ ३७	३ ५८	६ १८
जन.	१८	८ २२	१० ०३	११ २८	१२ ५०	१४ २३	१६ १७	१८ ३१	२० ५४	२३ १४	१ ३३	३ ५४	६ १४
2	१९	८ १८	९ ५९	११ २४	१२ ४६	१४ १९	१६ १३	१८ २७	२० ५०	२३ १०	१ २९	३ ५०	६ १०
3	२०	८ १४	९ ५५	११ २०	१२ ४२	१४ १५	१६ ९	१८ २३	२० ४६	२३ ०६	१ २५	३ ४६	६ ६
4	२१	८ १०	९ ५१	११ १६	१२ ३८	१४ ११	१६ ५	१८ १९	२० ४२	२३ ०२	१ २१	३ ४२	६ २
5	२२	८ ६	९ ४७	११ १२	१२ ३४	१४ ०७	१६ १	१८ १५	२० ३८	२२ ५८	१ १७	३ ३८	५ ५८
6	२३	८ ०२	९ ४३	११ ८	१२ ३०	१४ ०३	१५ ५७	१८ ११	२० ३४	२२ ५४	१ १३	३ ३४	५ ५४
7	२४	७ ५८	९ ३९	११ ४	१२ २६	१३ ५९	१५ ५३	१८ ७	२० ३०	२२ ५०	१ ९	३ ३०	५ ५०
8	२५	७ ५४	९ ३५	११ ००	१२ २२	१३ ५५	१५ ४९	१८ ३	२० २६	२२ ४६	१ ५	३ २६	५ ४६
9	२६	७ ५०	९ ३१	१० ५६	१२ १८	१३ ५१	१५ ४५	१७ ५९	२० २२	२२ ४२	१ ०१	३ २२	५ ४२
10	२७	७ ४६	९ २७	१० ५२	१२ १४	१३ ४७	१५ ४१	१७ ५५	२० १८	२२ ३८	०० ५७	३ १८	५ ३८
11	२८	७ ४२	९ २३	१० ४८	१२ १०	१३ ४३	१५ ३७	१७ ५१	२० १४	२२ ३४	०० ५३	३ १४	५ ३४
12	२९	७ ३८	९ १९	१० ४४	१२ ०६	१३ ३९	१५ ३३	१७ ४७	२० १०	२२ ३०	०० ४९	३ १०	५ ३०
13	३०	७ ३४	९ १५	१० ४०	१२ ०२	१३ ३५	१५ २९	१७ ४३	२० ०६	२२ २६	०० ४५	३ ०६	५ २६
14	मा.	७ ३०	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी — जन.-फर. (माघ) — भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

जनवरी	माघ	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	९ ११	१० ३६	११ ५८	१३ ३१	१५ २५	१७ ३९	२० ०२	२२ २२	०० ४१	३ ०२	५ २२	७ २६
15	२	९ ०७	१० ३२	११ ५४	१३ २७	१५ २१	१७ ३५	१९ ५८	२२ १८	०० ३७	२ ५८	५ १८	७ २२
16	३	९ ०४	१० २९	११ ५१	१३ २४	१५ १८	१७ ३२	१९ ५५	२२ १५	०० ३४	२ ५४	५ १४	७ १८
17	४	९ ००	१० २५	११ ४७	१३ २०	१५ १४	१७ २८	१९ ५१	२२ ११	०० ३०	२ ५०	५ १०	७ १४
18	५	८ ५६	१० २१	११ ४३	१३ १६	१५ १०	१७ २४	१९ ४७	२२ ०७	०० २६	२ ४६	५ ०६	७ १०
19	६	८ ५२	१० १७	११ ३९	१३ १२	१५ ६	१७ २०	१९ ४३	२२ ०३	०० २२	२ ४२	५ ०३	७ ०६
20	७	८ ४८	१० १३	११ ३५	१३ ८	१५ २	१७ १६	१९ ३९	२१ ५९	०० १८	२ ३८	४ ५९	७ ०२
21	८	८ ४४	१० ९	११ ३१	१३ ४	१४ ५८	१७ १२	१९ ३५	२१ ५५	०० १४	२ ३४	४ ५५	६ ५९
22	९	८ ४०	१० ०५	११ २७	१३ ००	१४ ५४	१७ ०८	१९ ३१	२१ ५१	०० १०	२ ३०	४ ५१	६ ५५
23	१०	८ ३६	१० ०१	११ २३	१२ ५६	१४ ५०	१७ ४	१९ २७	२१ ४७	०० ०६	२ २६	४ ४७	६ ५१
24	११	८ ३२	९ ५७	११ १९	१२ ५२	१४ ४६	१७ ००	१९ २४	२१ ४३	०० ०२	२ २३	४ ४३	६ ४७
25	१२	८ २८	९ ५३	११ १५	१२ ४८	१४ ४२	१६ ५६	१९ २०	२१ ३९	२३ ५८	२ १९	४ ३९	६ ४३
26	१३	८ २५	९ ५०	११ १२	१२ ४५	१४ ३९	१६ ५३	१९ १६	२१ ३६	२३ ५५	२ १५	४ ३५	६ ३९
27	१४	८ २१	९ ४६	११ ०८	१२ ४१	१४ ३५	१६ ४९	१९ १२	२१ ३२	२३ ५१	२ ११	४ ३१	६ ३५
28	१५	८ १७	९ ४२	११ ०४	१२ ३७	१४ ३१	१६ ४५	१९ ०८	२१ २८	२३ ४७	२ ०७	४ २७	६ ३१
29	१६	८ १३	९ ३८	११ ००	१२ ३३	१४ २७	१६ ४१	१९ ०४	२१ २४	२३ ४३	२ ०३	४ २३	६ २७
30	१७	८ ०९	९ ३४	१० ५६	१२ २९	१४ २३	१६ ३७	१९ ००	२१ २०	२३ ३९	१ ५९	४ २०	६ २४
31	१८	८ ५	९ ३०	१० ५२	१२ २५	१४ १९	१६ ३३	१८ ५६	२१ १६	२३ ३५	१ ५५	४ १६	६ २०
फर.	१९	८ १	९ २६	१० ४८	१२ २१	१४ १५	१६ २९	१८ ५२	२१ १२	२३ ३१	१ ५१	४ १२	६ १६
2	२०	७ ५७	९ २२	१० ४४	१२ १७	१४ ११	१६ २५	१८ ४८	२१ ०८	२३ २७	१ ४७	४ ०८	६ १२
3	२१	७ ५३	९ १८	१० ४०	१२ १३	१४ ०७	१६ २१	१८ ४४	२१ ०४	२३ २३	१ ४३	४ ०४	६ ८
4	२२	७ ४९	९ १४	१० ३६	१२ ०९	१४ ०३	१६ १७	१८ ४०	२१ ००	२३ १९	१ ३९	४ ००	६ ०४
5	२३	७ ४५	९ १०	१० ३२	१२ ०५	१३ ५९	१६ १३	१८ ३६	२० ५७	२३ १५	१ ३५	३ ५६	६ ००
6	२४	७ ४१	९ ०६	१० २८	१२ ०१	१३ ५५	१६ ०९	१८ ३२	२० ५३	२३ ११	१ ३२	३ ५२	५ ५६
7	२५	७ ३७	९ ०२	१० २४	११ ५७	१३ ५१	१६ ०५	१८ २८	२० ४९	२३ ७	१ २८	३ ४८	५ ५२
8	२६	७ ३३	८ ५८	१० २०	११ ५३	१३ ४७	१६ ०१	१८ २४	२० ४५	२३ ०३	१ २४	३ ४४	५ ४८
9	२७	७ २९	८ ५४	१० १६	११ ४९	१३ ४३	१५ ५७	१८ २१	२० ४१	२२ ५९	१ २०	३ ४०	५ ४४
10	२८	७ २५	८ ५०	१० १२	११ ४५	१३ ३९	१५ ५३	१८ १७	२० ३७	२२ ५५	१ १६	३ ३६	५ ४०
11	२९	७ २१	८ ४६	१० ०८	११ ४१	१३ ३५	१५ ४९	१८ १३	२० ३३	२२ ५१	१ १२	३ ३२	५ ३६
12	फा.	७ १७	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

सूर्य संक्रान्तियों में प्रतिवर्ष परिवर्तन के कारण देशी प्रविष्टे एवं अंग्रेज़ी तारीखों में कई बार परस्पर एक दिन का अन्तर पड़ जाता है। सूक्ष्मता के लिए सारिणी का प्रयोग अंग्रेज़ी तारीखानुसार करें।

दैनिक लग्न सारणी फर.-मार्च (फाल्गुन) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

फरवरी	फाल्गुन	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
12	१	८ ४२	१० ०४	११ ३७	१३ ३१	१५ ४५	१८ ०९	२० २९	२२ ४७	१ ०८	३ २८	५ ३२	७ १४
13	२	८ ३८	१० ००	११ ३३	१३ २७	१५ ४१	१८ ०५	२० २५	२२ ४३	१ ०४	३ २४	५ २८	७ १०
14	३	८ ३४	९ ५६	११ २९	१३ २३	१५ ३७	१८ ०१	२० २१	२२ ३९	१ ००	३ २०	५ २४	७ ०६
15	४	८ ३०	९ ५२	११ २५	१३ १९	१५ ३३	१७ ५७	२० १७	२२ ३५	० ५६	३ १६	५ २०	७ ०२
16	५	८ २६	९ ४८	११ २१	१३ १५	१५ २९	१७ ५३	२० १३	२२ ३१	० ५२	३ १२	५ १६	६ ५८
17	६	८ २२	९ ४४	११ १७	१३ ११	१५ २५	१७ ४९	२० ०९	२२ २७	० ४८	३ ०८	५ १३	६ ५४
18	७	८ १८	९ ४०	११ १३	१३ ०७	१५ २१	१७ ४५	२० ०५	२२ २३	० ४४	३ ०४	५ ०९	६ ५०
19	८	८ १४	९ ३६	११ ०९	१३ ०३	१५ १७	१७ ४१	२० ०१	२२ १९	० ४०	३ ००	५ ०५	६ ४६
20	९	८ ११	९ ३३	११ ०६	१२ ५९	१५ १४	१७ ३७	१९ ५७	२२ १५	० ३६	२ ५६	५ ०१	६ ४२
21	१०	८ ०७	९ २९	११ ०२	१२ ५६	१५ १०	१७ ३३	१९ ५३	२२ ११	० ३२	२ ५३	४ ५७	६ ३८
22	११	८ ०३	९ २५	१० ५८	१२ ५२	१५ ०६	१७ २९	१९ ४९	२२ ०७	० २८	२ ४९	४ ५३	६ ३४
23	१२	७ ५९	९ २१	१० ५४	१२ ४८	१५ ०२	१७ २५	१९ ४५	२२ ०३	० २५	२ ४५	४ ४९	६ ३०
24	१३	७ ५५	९ १७	१० ५०	१२ ४४	१४ ५८	१७ २१	१९ ४१	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ४५	६ २६
25	१४	७ ५१	९ १३	१० ४६	१२ ४०	१४ ५४	१७ १७	१९ ३७	२१ ५५	० १७	२ ३७	४ ४१	६ २२
26	१५	७ ४७	९ ०९	१० ४२	१२ ३६	१४ ५०	१७ १३	१९ ३३	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ३७	६ १८
27	१६	७ ४३	९ ०५	१० ३८	१२ ३२	१४ ४६	१७ ०९	१९ २९	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ३३	६ १४
28	१७	७ ३९	९ ०१	१० ३४	१२ २८	१४ ४२	१७ ०५	१९ २५	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ २९	६ ११
मार्च	१८	७ ३५	८ ५७	१० ३०	१२ २४	१४ ३८	१७ ०१	१९ २१	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ २५	६ ०७
2	१९	७ ३१	८ ५३	१० २६	१२ २०	१४ ३४	१६ ५७	१९ १७	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ २१	६ ०३
3	२०	७ २८	८ ५०	१० २३	१२ १७	१४ ३१	१६ ५३	१९ १३	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ १७	५ ५९
4	२१	७ २४	८ ४६	१० १९	१२ १३	१४ २७	१६ ४९	१९ ०९	२१ २७	२३ ४९	२ ०९	४ १३	५ ५५
5	२२	७ २०	८ ४२	१० १५	१२ ०९	१४ २३	१६ ४५	१९ ०५	२१ २३	२३ ४६	२ ०५	४ १०	५ ५१
6	२३	७ १६	८ ३८	१० ११	१२ ०५	१४ १९	१६ ४१	१९ ०१	२१ १९	२३ ४२	२ ०१	४ ६	५ ४७
7	२४	७ १२	८ ३४	१० ०७	१२ ०१	१४ १५	१६ ३७	१८ ५७	२१ १६	२३ ३८	१ ५७	४ ०२	५ ४३
8	२५	७ ०८	८ ३०	१० ०३	११ ५७	१४ ११	१६ ३३	१८ ५३	२१ १२	२३ ३४	१ ५३	३ ५८	५ ३९
9	२६	७ ०४	८ २६	९ ५९	११ ५३	१४ ०७	१६ ३०	१८ ५०	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	३ ५४	५ ३५
10	२७	७ ००	८ २२	९ ५५	११ ४९	१४ ०३	१६ २६	१८ ४६	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	३ ५०	५ ३१
11	२८	६ ५६	८ १८	९ ५१	११ ४५	१३ ५९	१६ २३	१८ ४२	२१ ००	२३ २२	१ ४२	३ ४६	५ २७
12	२९	६ ५२	८ १४	९ ४७	११ ४१	१३ ५५	१६ १९	१८ ३९	२० ५६	२३ १९	१ ३८	३ ४२	५ २४
13	३०	६ ४८	८ १०	९ ४३	११ ३७	१३ ५२	१६ १५	१८ ३५	२० ५२	२३ १५	१ ३५	३ ३९	५ २०
14	चैत्र	६ ४४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी मार्च-अप्रैल (चैत्र) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

मार्च	चैत्र	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
		घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.	घं.मिं.
14	१	८ ०६	९ ३९	११ ३३	१३ ४७	१६ ११	१८ ३१	२० ४८	२३ ११	१ ३१	३ ३५	५ १६	६ ४०
15	२	८ ०२	९ ३५	११ २९	१३ ४३	१६ ०७	१८ २७	२० ४४	२३ ०७	१ २७	३ ३१	५ १२	६ ३६
16	३	७ ५८	९ ३१	११ २५	१३ ३९	१६ ०३	१८ २३	२० ४०	२३ ०३	१ २३	३ २७	५ ०८	६ ३२
17	४	७ ५४	९ २७	११ २१	१३ ३५	१५ ५९	१८ १९	२० ३६	२२ ५९	१ १९	३ २३	५ ०४	६ २८
18	५	७ ५०	९ २३	११ १७	१३ ३१	१५ ५५	१८ १५	२० ३२	२२ ५५	१ १५	३ १९	५ ००	६ २४
19	६	७ ४६	९ १९	११ १३	१३ २७	१५ ५१	१८ ११	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ १५	४ ५६	६ २०
20	७	७ ४२	९ १५	११ ०९	१३ २४	१५ ४७	१८ ०७	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ ११	४ ५२	६ १६
21	८	७ ३८	९ ११	११ ०५	१३ २०	१५ ४३	१८ ०३	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ ०७	४ ४८	६ १२
22	९	७ ३४	९ ०७	११ ०१	१३ १६	१५ ३९	१७ ५९	२० १६	२२ ३९	०० ५९	३ ०३	४ ४४	६ ०८
23	१०	७ ३१	९ ०३	१० ५८	१३ १२	१५ ३५	१७ ५५	२० १२	२२ ३५	०० ५५	२ ५९	४ ४०	६ ४
24	११	७ २७	८ ५९	१० ५४	१३ ८	१५ ३१	१७ ५१	२० ०८	२२ ३१	०० ५१	२ ५५	४ ३७	६ ००
25	१२	७ २३	८ ५५	१० ५०	१३ ४	१५ २७	१७ ४७	२० ०४	२२ २७	०० ४७	२ ५१	४ ३३	५ ५६
26	१३	७ १९	८ ५१	१० ४६	१३ ०	१५ २३	१७ ४३	२० ०१	२२ २३	०० ४३	२ ४७	४ २९	५ ५२
27	१४	७ १५	८ ४८	१० ४२	१२ ५६	१५ १९	१७ ३९	१९ ५७	२२ १९	०० ३९	२ ४३	४ २५	५ ४८
28	१५	७ ११	८ ४४	१० ३८	१२ ५२	१५ १५	१७ ३५	१९ ५३	२२ १५	०० ३५	२ ४०	४ २१	५ ४४
29	१६	७ ०७	८ ४०	१० ३४	१२ ४८	१५ ११	१७ ३१	१९ ४९	२२ ११	०० ३१	२ ३६	४ १७	५ ४१
30	१७	७ ०३	८ ३६	१० ३०	१२ ४५	१५ ०७	१७ २७	१९ ४५	२२ ७	०० २७	२ ३२	४ १३	५ ३७
31	१८	६ ५९	८ ३२	१० २६	१२ ४१	१५ ०३	१७ २३	१९ ४१	२२ ०३	०० २३	२ २८	४ ०९	५ ३३
अप्रै.	१९	६ ५५	८ २८	१० २२	१२ ३७	१४ ५९	१७ १९	१९ ३७	२१ ५९	०० १९	२ २४	४ ०५	५ २९
2	२०	६ ५१	८ २४	१० १८	१२ ३३	१४ ५५	१७ १५	१९ ३३	२१ ५५	०० १५	२ २०	४ ०१	५ २५
3	२१	६ ४७	८ २०	१० १४	१२ २९	१४ ५१	१७ ११	१९ २९	२१ ५१	०० ११	२ १६	३ ५७	५ २१
4	२२	६ ४३	८ १६	१० १०	१२ २५	१४ ४७	१७ ०७	१९ २६	२१ ४७	०० ०७	२ १२	३ ५३	५ १७
5	२३	६ ३९	८ १२	१० ०६	१२ २१	१४ ४३	१७ ०३	१९ २२	२१ ४४	०० ०४	२ ०८	३ ४९	५ १३
6	२४	६ ३६	८ ०९	१० ०२	१२ १७	१४ ३९	१६ ५९	१९ १८	२१ ४०	२४ ००	२ ०४	३ ४५	५ ०९
7	२५	६ ३२	८ ०५	९ ५९	१२ १३	१४ ३५	१६ ५६	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ ००	३ ४१	५ ०५
8	२६	६ २८	८ ०१	९ ५५	१२ ०९	१४ ३१	१६ ५२	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	१ ५६	३ ३७	५ ०१
9	२७	६ २४	७ ५७	९ ५१	१२ ०५	१४ २७	१६ ४८	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	१ ५२	३ ३३	४ ५८
10	२८	६ २०	७ ५३	९ ४७	१२ ०१	१४ २४	१६ ४४	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	१ ४८	३ २९	४ ५४
11	२९	६ १६	७ ४९	९ ४३	११ ५७	१४ २०	१६ ४०	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ४४	३ २५	४ ५०
12	३०	६ १२	७ ४५	९ ३९	११ ५३	१४ १६	१६ ३६	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ४१	३ २१	४ ४६
13	चै.	६ ०८	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

भारत के प्रमुख नगरों में लग्नों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल जानना

इस पंचांग के गत पृष्ठों में जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह जालन्धर के अक्षांश 31°-19′ पर आधारित है। भारत के किसी अन्य नगर में लग्नारम्भ अथवा समाप्तिकाल जानने के लिए नीचे दी गई तालिका में मेष, वृषादि राशियों के नीचे लिखे संस्कार अनुसार जालन्धर सारणी में जमा (+) करने अथवा (−) देने से आपको अभीष्ट तारीख एवं नगर में लग्नों का समाप्तिकाल भा. स्टै. टाईम में ज्ञात हो जाएगा। उदाहरणस्वरूप—मान लो आपने 16 जुलाई, 2020 ई. को दिल्ली में कन्या लग्न का समाप्तिकाल जानना है, तो सर्व प्रथम जालन्धर की दैनिक लग्न सारणी में देखने पर हमें 16 जुलाई को कन्या लग्न १२।४१ पर समाप्ति काल लिखा मिला है। तदनन्तर आगे सारणी में **दिल्ली** के आगे कन्या लग्न के नीचे देखने पर हमें −८ मिनट मिले। इन्हें जालन्धर में कन्या ल. समा., १२।४१ (घं. मिं.) में से और घटाने पर हमें **१२।३३ (घं. मिं.)** पर **कन्या लग्न समाप्ति काल प्राप्त हुआ। कन्या लग्न** का समाप्ति काल ही **तुला लग्न का प्रारम्भकाल** होगा। **नोट**—नीचे लग्न संस्कार तालिका में यदि किसी अभीष्ट नगर का नाम न मिले, तो आप अपने निकटस्थ नगर का संस्कार ग्रहण कर सकते हैं। पं. विवेक शर्मा.

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
अमृतसर	+२	+२	+२	+२	+३	+२	+३	+३	+३	+३	+२	+२
अम्बाला	−५	−५	−५	−३	−३	−६	−५	−५	−४	−५	−५	−५
अजमेर	+१२	+१२	+१३	+१०	+६	+४	−१	−३	−४	−१	+६	+१०
अबोहर	+५	+५	+५	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
अहमदाबाद	+२६	+३०	+३०	+२५	+१७	+७	−१	−५	−४	+२	+११	+१८
अलाहाबाद	−१५	−१२	−१३	−१५	−२१	−२९	−३४	−३७	−३६	−३२	−२६	−२०
अलीगढ़	−४	−३	−४	−६	−१०	−१४	−१७	−१८	−१८	−१५	−१२	−७
अयोध्या	−१८	−१८	−१५	−१९	−२३	−२५	−२८	−३०	−२८	−२७	−२४	−१६
अलवर	+२	+३	+३	+०	+१	−४	−६	−७	−७	−४	+१	+४
अल्मोड़ा (उ०ख०)	−१५	−१५	−१५	−१६	−१७	−१७	−१९	−१९	−१९	−१८	−१८	−१६
आगरा	−४	−२	−३	−६	−१०	−१४	−१७	−१९	−१९	−१५	−१२	−७
अगरतला	−५०	−४७	−४६	−५३	−६०	−६७	−७५	−७८	−७६	−७३	−६४	−५३
अल्मोड़ा	−१५	−१५	−१५	−१६	−१७	−१७	−१९	−१९	−१९	−१८	−१८	−१६
इन्दौर	+१३	+१७	+१५	+१०	−१	−९	−१६	−२१	−१९	−१२	−३	+५
ऊना (हि.प्र.)	−३	−३	−३	−३	−२	−२	−२	−२	−२	−२	−२	−३
ऊधमपुर	−२	−२	−२	+११	+३	+४	+७	+७	+७	+६	+५	+२
उज्जैन	+७	+२६	+२४	+८	+०	−७	−२४	−१९	−१७	−१०	−२	+६
उदयपुर	+१९	+२१	+२०	+१५	+७	+२	−४	−८	−६	−१	+६	+१३
उत्तरकाशी	−११	−११	−११	−११	−१२	−१२	−१२	−१२	−१२	−१२	−१२	−११
करनाल	−५	−५	−५	−५	−५	−६	−६	−७	−७	−५	−४	−३
कालका	−५	−५	−५	−४	−४	−५	−६	−६	−७	−७	−४	−३
कुरुक्षेत्र	−४	−३	−३	−४	−५	−६	−६	−७	−७	−५	−३	−३
करतारपुर	+१	+१	+०	+०	−१	−१	+१	−०	−०	−०	−०	−१
कोटखाई	−७	−७	−७	−७	−७	−८	−७	−७	−७	−६	−६	−७
कोटा (राज.)	+९	+११	+१०	+५	−१	−६	−११	−१४	−१३	−८	−२	+४
कपूरथला	+१	+१	+०	−०	−०	−१	+०	−०	−०	−०	−०	−१
काठमण्डू	−३२	−३१	−३१	−३०	−३३	−३८	−४०	−४२	−४२	−४०	−३६	−३३
कोलकत्ता	−३७	−३२	−३५	−४०	−४९	−५८	−६४	−६९	−६८	−६१	−५३	−४४
कानपुर	−११	−१०	−१०	−१४	−१८	−२२	−२८	−३०	−२९	−२५	−२१	−१६
कांगड़ा	−५	−५	−५	−५	−५	−५	−५	−५	−४	−४	−४	−४

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
कुल्लू	−७	−७	−७	−६	−६	−६	−५	−४	−४	−४	−५	−५
कठुआ	−२	−२	−२	−१	−०	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+१
कटड़ा	+३	+३	+२	+४	+६	+७	+७	+७	+७	+६	+६	+३
किश्तवाड़	−१	−१	−१	−०	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+१	+१
खन्ना (पंजा.)	−२	−३	−३	−२	−२	−३	−३	−३	−३	−२	−२	−३
ग्वालियर	−२	+१	−१	−५	−१०	−१५	−१९	−२२	−२१	−१७	−१२	−७
गुरदासपुर	−१	−१	−१	+०	+१	+०	+१	+१	+१	+१	+१	+०
गोरखपुर	−२३	−२१	−२२	−२४	−२७	−३२	−३५	−३७	−३६	−३२	−२७	−२४
गुड़गांव	−१	−१	−१	−३	−३	−७	−१०	−११	−११	−९	−६	−४
गुवाहाटी	−५५	−४८	−५३	−५५	−६१	−६८	−७२	−७५	−७३	−६९	−६४	−६०
गाज़ियाबाद	−२	−२	−३	−५	−८	−१०	−१२	−१३	−१३	−११	−०९	−६
गंगानगर	+६	+६	+६	+७	+७	+६	+६	+६	+६	+७	+७	+६
गया (बिहार)	−२६	−१८	−२३	−२७	−३३	−४२	−४७	−५१	−४१	−४४	−३७	−३२
चण्डीगढ़	−५	−५	−५	−५	−६	−६	−६	−६	−६	−६	−६	−५
चिन्तपूर्णी	−२	−१	−२	−२	−३	−३	−३	−२	−२	−२	−२	−१
चम्बा	−६	−६	−६	−५	−४	−२	+१	+२	+१	+०	+३	−४
जयपुर	+७	+८	+७	+३	+२	−३	−७	−९	−९	−७	−२	+३
ज्वालामुखी	−५	−५	−६	−५	−५	−५	−५	−५	−४	−४	−४	−४
जम्मू	−१	−२	−१	−१	+१	+४	+६	+७	+६	+५	+२	+१
जोधपुर	+१९	+२१	+२०	+१५	+१०	+५	+१	−२	−१	+४	+९	+१३
जीन्द	+०	+२	+१	−१	−३	−५	−६	−७	−७	−५	−४	−१
जैसलमेर	+२६	+२८	+२७	+२३	+१८	+१४	+१०	+९	+१०	+१३	+१७	+२२
झाँसी	−२	+१	+०	−६	−११	−१७	−२२	−२५	−२३	−१८	−१३	−७
जगन्नाथपुरी	−२२	−१६	−१३	−२६	−३७	−४९	−५९	−६४	−६३	−५५	−४४	−३२
दिल्ली	−२	−१	−१	−४	−४	−८	−११	−१२	−१२	−१०	−७	−५
दुर्ग (छ०गढ़)	−६	−०	−२	−१०	−१९	−२७	−३७	−४२	−४२	−३१	−२१	−१४
देहरादून	−१०	−१०	−९	−१०	−११	−११	−१२	−१२	−१२	−११	−११	−१०
धर्मशाला	−५	−५	−६	−५	−५	−५	−५	−५	−४	−४	−४	−४

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
नाहन(हि.प्र.)	-६	-६	-६	-५	-५	-६	-६	-७	-७	-५	-५	-६
नंगल (पंजा.)	-३	-३	-३	-४	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३
नैनीताल	-१३	-१२	-१३	-१४	-१६	-१७	-१८	-२०	-१९	-१७	-१७	-१४
नवलगढ़	+७	+९	+९	+८	+६	+३	+१	+२	-२	-१	+४	+४
नवांशहर	-२	-२	-२	-२	-३	-३	-२	-२	-३	-३	-२	-२
नागपुर	+३	+७	+५	+४	-१४	-२३	-३२	-३५	-३३	-२७	-७	-६
नदौन(हि.प्र.)	-३	-३	-३	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३	-३
नाभा (पंजा.)	-२	-२	-२	-२	-२	-२	-३	-३	-२	-२	-२	-२
पटियाला	-३	-३	-३	-४	-३	-३	-५	-५	-४	-३	-३	-३
पानीपत	-६	-६	-६	-६	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-६	-५
पठानकोट	-४	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१
पुंछ	-१	-२	-१	+१	+४	+८	+१२	+१४	+१२	+९	+६	+३
प्रयाग	-१६	-१४	-१५	-२०	-२४	-३०	-३५	-३७	-३७	-३१	-२७	-२१
पूना (महा.)	+२८	+३५	+३७	+२४	+११	-२	-१३	-१९	-१७	-९	+३	+१७
पंचकूला	-५	-५	-५	-४	-४	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-५
पटना	२९	-२६	-२३	-३०	-३५	-४२	-४७	-४९	-४९	-४६	-४०	-३३
पालमपुर	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-६	-६	-५	-५	-५	-५
फरीदकोट	+३	+४	+४	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
फगवाड़ा	-१	-१	-१	-१	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१
फाजिल्का	+५	+५	+६	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
फिरोज़पुर	+४	+४	+५	+४	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+३	+३
फरीदाबाद	-३	-३	-२	-५	-८	-९	-१२	-१३	-१३	-११	-१०	-६
बटाला	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
वाराणसी	-२०	-१८	-१९	-२३	-३०	-३४	-३९	-४२	-४१	-३७	-३१	-२५
बिलासपुर	-५	-५	-५	-४	-४	-५	-४	-४	-४	-३	-३	-४
बंगलौर	+२१	+२९	+२७	+१३	-१	-२१	-३६	-४४	-४१	-२८	-११	+६
बरेली	-११	-११	-११	-१३	-१६	-१८	-२०	-२१	-२१	-१९	-१८	-१४
बीकानेर	+१३	+१५	+१५	+१४	+१३	+९	+८	+६	+६	+८	+११	+१४
बड़ौदा	+२६	+३०	+२९	+२३	+१६	+७	+२	-५	-५	+१	+११	+११
बुलन्दशहर	-५	-५	-५	-७	-९	-१२	-१४	-१५	-१५	-१३	-१२	-८
बरनाला	-१	-१	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-०	-०	-०	-०
विशाखापटनम	-९	-१	+१	-१३	-२६	-४०	-५२	-५८	-५६	-४७	-३४	-२०
भटिण्डा	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
भुवनेश्वर	-२३	-१८	-२०	-२८	-३६	-४९	-५८	-६३	-६२	-५४	-४३	-३२
भरतपुर	-२	+०	+०	-५	-८	-१२	-१५	-१७	-१७	-१२	-१०	-५
भोपाल	+६	+१०	+७	+१	-६	-१३	-२०	-२६	-२४	-१७	-९	-१
मेरठ(उ. प्र.)	-६	-५	-६	-७	-९	-११	-१२	-१२	-१२	-१०	-९	-७

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
मुज़फ्फरनगर	-६	-५	-६	-७	-९	-११	-१२	-१३	-१३	-११	-१०	-७
मुरादाबाद	-१०	-९	-१०	-११	-१४	-१५	-१६	-१८	-१८	-१६	-१३	-१२
मण्डी(हि.प्र.)	-७	-७	-७	-७	-७	-६	-४	-४	-४	-६	-६	-६
मोगा	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
मथुरा	-२	-१	-२	-४	-८	-१२	-१५	-१६	-१६	-१३	-१०	-५
मद्रास	+१०	+१८	+१६	+१	-१३	-३१	-४६	-५५	-५२	-४०	-२३	-०५
मैसूर	+२६	+३६	+३७	+१९	+२	-१७	-३३	-४१	-३९	-२६	-९	+१०
मुक्तसर	+४	+४	+३	+४	+४	+३	+५	+४	+४	+४	+३	+३
मलेरकोटला	-१	-१	-१	-१	-१	-२	+०	-१	-१	-१	-२	-२
मुम्बई	+३१	+३७	+३५	+२५	+१७	+३	-८	-१४	-१२	-३	+९	+२१
रोपड़	-४	-३	-३	-४	-३	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-३
राँची	-२५	-२१	-२३	-२८	-३६	-४५	-५१	-५७	-५५	-४८	-३९	-३१
रायपुर (छत्ती.)	-८	-२	-४	-१२	-२१	-२९	-३९	-४४	-४४	-३४	-२३	-१६
रोहतक	-१	+१	+१	-२	-२	-६	-९	-१०	-१०	-८	-५	-३
रूड़की	-७	-७	-७	-८	-९	-१०	-११	-११	-११	-१०	-१०	-८
लुधियाना	-२	-२	-१	-२	-१	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-२
लखनऊ	-१४	-१२	-१४	-१६	-२१	-२४	-२९	-३०	-३०	-२६	-२३	-१८
शिलांग	-५५	-४९	-५२	-५५	-६१	-६९	-७४	-७६	-७५	-७१	-६५	-६१
श्रीनगर	-३	-३	-३	-१	+२	+८	+११	+१२	+११	+७	+४	+१
शिमला	-६	-६	-६	-६	-७	-७	-७	-७	-७	-७	-७	-६
सोलन	-६	-५	-६	-६	-६	-६	-५	-५	-६	-६	-६	-६
सोनीपत	-२	-२	-२	-२	-३	-७	-१०	-११	-११	-९	-७	-५
सहारनपुर	-६	-६	-५	-७	-८	-९	-१०	-१०	-१०	-९	-९	-७
सागर(म.प्र.)	-१	-२	+०	-५	-१३	-१८	-२५	-२९	-२८	-२२	-१५	-७
सुन्दरनगर	-६	-६	-६	-५	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-५
सूरत	+२८	+३३	+३१	+२४	+१५	+४	-४	-९	-८	+१	+१२	+२१
शहडोल(म.प्र.)	-१०	-७	-९	-१५	-२३	-३०	-३७	-४२	-४०	-३२	-२५	-१६
शाहपुर	-४	-४	-५	-५	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३
हरिद्वार	-८	-८	-८	-९	-९	-१२	-१३	-१३	-१३	-१२	-१२	-१०
हैदराबाद	+११	+१८	+१५	+४	-७	-२१	-३३	-३९	-३७	-२८	-१५	-१
होशियारपुर	-३	-४	-३	-३	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-२	-३
हमीरपुर(हि.प्र.)	-५	-५	-४	-४	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-४
हाँसी	+२	+२	+३	+२	+०	-४	-५	-७	-५	-४	-१	+२
हिसार	+३	+३	+३	+१	+०	-२	-३	-४	-४	-२	-२	+१

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए उपयोगी रत्न (नग) एवं उपरत्न

लेखक—पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी (M.A., LLB.)

शुभ ग्रहों के प्रभाव में वृद्धि और अनिष्ट ग्रहों के कुप्रभाव के निवारण हेतु उपयुक्त ग्रह रत्न (नग) धारण करना अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होते हैं। अपनी जन्म कुण्डली में स्थित ग्रहों की स्थिति एवं अपनी राशि के अनुसार ही उपयुक्त रत्न (नग) का चयन करना चाहिए, अन्यथा कई बार लाभ की अपेक्षा गलत नग धारण करने से हानि की सम्भावना हो जाती है। उनका परिचय से पूर्व यदि सुयोग्य ज्योतिषी से परामर्श कर लिया जावे तो लाभप्रद होगा। धारण करने की विधि, उपयोगादि का संक्षिप्त विवरण लिख रहे हैं—

सूर्य रत्न माणक (RUBY)

संस्कृत में इसे माणिक्य, पद्मराग, हिन्दी में माणक, मानिक, अंग्रेज़ी में रूबी कहते हैं। सूर्य रत्न होने से इस ग्रह रत्न का अधिष्ठाता सूर्यदेव है।

पहचान विधि—(1) असली माणिक्य लाल सुर्ख वर्ण का पारदर्शी, स्निग्ध-कान्तियुक्त और कुछ भारीपन वज़न लिए होते हैं। अर्थात् हथेली में रखने से हल्की ऊष्णता एवं सामान्य से कुछ अधिक वज़न का अनुभव होता है। (2) कांच के पात्र में रखने से इसकी हल्की लाल किरणें चारों ओर से निकलती दिखाई देंगी। (3) गाय के दूध में असली माणिक्य रखा जाये तो दूध का रंग गुलाबी दिखलाई देगा।

धारण विधि—माणिक्य रत्न रविवार को सूर्य की होरा में, कृतिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों, रविपुष्य योग में सोने अथवा ताँबे की अंगूठी में जड़वा कर तथा सूर्य के बीजमन्त्रों द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ३, ५ ७ अथवा ९ रत्ति के क्रम से होना चाहिए।

सूर्य बीज मन्त्र—ॐ ह्रां, ह्रीं, ह्रौं सः सूर्याय नमः

धारण करने के पश्चात् गायत्री मन्त्र की ३ माला का पाठ, हवन एवं सूर्य भगवान को विधिपूर्वक अर्घ्य प्रदान करना तथा ताम्र बर्तन, कनक, नारियल, मानक, गुड़, लाल वस्त्रादि सूर्य से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना चाहिए।

विधिपूर्वक माणिक्य धारण करने से राजकीय क्षेत्रों में प्रतिष्ठा, भाग्योन्नति, पुत्र संतान लाभ, तेजबल में वृद्धिकारक तथा हृदय रोग, चक्षुरोग, रक्त विकार, शरीर दौर्बल्यादि में लाभकारी होता है।

मेष, कर्क, सिंह तुला, वृश्चिक एवं धनु राशि अथवा इसी लग्न वालों को मानक धारण करना शुभ लाभप्रद रहता है अथवा जिनकी चन्द्र कुण्डली में सूर्य योगकारक होता हुआ भी प्रभावी न हो रहा हो, उन्हें भी माणिक्य धारण शुभ रहता है।

चन्द्र-रत्न मोती (PEARL)

चन्द्र-रत्न मोती को संस्कृत में मौक्तिक, चन्द्रमणि इत्यादि, हिन्दी-पंजाबी में मोती एवं अंग्रेज़ी में पर्ल (Pearl) कहा जाता है। मोती या मुक्ता रत्न का स्वामी चन्द्रमा है।

पहचान-शुद्ध एवं श्रेष्ठ मोती गोल, श्वेत, उज्ज्वल, चिकना, चन्द्रमा के समान कान्तियुक्त, निर्मल एवं हल्कापन लिए होता है।

परीक्षा—(1) गोमूत्र को किसी मिट्टी के बर्तन में डालकर उसमें मोती रात भर रखें, यदि वह अखण्डित रहे तो मोती को शुद्ध (सुच्चा) समझें। (2) पानी से भरे शीशे के गिलास में मोती डाल दें यदि पानी से किरणें सी निकलती दिखलाई पड़ें, तो मोती असली जानें। सुच्चा मोती के अभाव में चन्द्रकान्त मणि अथवा सफेद पुखराज धारण किया जा सकता है।

असली शुद्ध मोती धारण करने से मानसिक शक्ति का विकास, शारीरिक सौन्दर्य की वृद्धि, स्त्री एवं धनादि सुखों की प्राप्ति होती है। इसका प्रयोग स्मरण शक्ति में भी वृद्धिकारक होता है।

रोग शान्ति—चिकित्सा शास्त्र में भी मोती या मुक्ता भस्म का उपयोग मानसिक रोगों, मूर्छा-मिरगी, उन्माद, रक्तचाप, उदर-विकार, पथरी, दन्तरोगादि में।

धारण विधि—मोती चाँदी की अंगूठी में शुक्ल पक्ष के सोमवार को पूर्णिमा के दिन, चन्द्रमा की होरा में गंगा जल, कच्चा दूध व पाण्डुलादि में डूबोते हुए '**ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः**' के बीजमन्त्र का पाठ ११००० की संख्या में करने के पश्चात् धारण करना चाहिए। तदुपरान्त चावल, चीनी, क्षीर, श्वेत फल एवं वस्त्रादि का दान करना शुभ होगा।

मोती २, ४, ६ अथवा ११ रत्ति का कनिष्ठका अंगुली में हस्त, रोहिणी अथवा श्रवण नक्षत्र में सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा बताए गए मुहूर्त में धारण करना चाहिए। मेष, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, मीन राशि/लग्न वालों को मोती शुभ रहता है।

चन्द्रमा का उपरत्न—चन्द्रकान्त मणि (Moon Light Stone)—यह उपरत्न चाँदनी जैसे चमक लिए हुए चन्द्रमा का 'उपरत्न' (मोती का पूरक) माना जाता है। इसको हिलाने से, इस पर एक दुधिया जैसी प्रकाश रेखा चमकती है। यह रत्न भी मानसिक शान्ति, प्रेरणा, स्मरण शक्ति में वृद्धि तथा प्रेम में सफलता प्रदान करता है। लाभ की दृष्टि से चन्द्रकान्त मणि मलाई के रंग का (सफेद और पीले के बीच का) उत्तम माना जाता है। इसे चाँदी में ही धारण करना चाहिए।

मंगल-रत्न मूंगा (CORAL)

इसे संस्कृत में अंगारकमणि तथा अंग्रेज़ी में कोरल (Coral) कहते हैं।

गोल, चिकना, चमकदार एवं औसत से अधिक वज़नी, सिन्धूरी से मिलते-जुलते रंग का मूंगा श्रेष्ठ माना जाता है। इसका स्वामी ग्रह मंगल है।

परीक्षा—(१) असली मूंगे को खून में डाल दिया जाये तो उसके चारों ओर गाढ़ा रक्त जमा होने लगता है। (२) असली मूंगा यदि गौ के दूध में डाल दिया जाए तो उसमें लाल रंग की झाई सी दीखने लगती है।

श्रेष्ठ जाति का मूंगा धारण करने से भूमि, पुत्र एवं भ्रातृ सुख, नीरोगता आदि की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त रक्त-विकार, भूत-प्रेत बाधा, दुर्बलता, मन्दाग्नि, हृदय-रोग, वायु-कफादि विकार, पेट विकारादि में मूंगे की भस्म अथवा पिष्टी का प्रयोग किया जाता है। मेष, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ व मीन राशि एवं लग्न वालों को सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करना लाभप्रद होगा।

धारण विधि—शुक्ल पक्ष के मंगलवार को प्रातः मंगल की होरा में मृगशिर, चित्रा या धनिष्ठा

नक्षत्र में सोने या तांबे के अंगूठी में जड़वा कर, बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में ६, ८, १० या १२ रत्ति के वज़न में धारण करना कल्याणकर होता है। धारणोपरान्त मंगल स्तोत्र एवं मंगल ग्रह का दान करना शुभ होता है।

भौम बीज मन्त्र–ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः

शारीरिक स्वास्थ्य एवं कुं. में मंगल नीच राशिस्थ हो तो सफेद मूँगा भी धारण किया जाता है।

बुध रत्न पन्ना (EMERALD)

"पन्ना" बुध ग्रह का मुख्य रत्न है। संस्कृत में मरकतमणि, फारसी में जमरूद व अंग्रेज़ी में इमराल्ड (Emerald)। पन्ना रत्न हरे रंग, स्वच्छ, पारदर्शी कोमल, चिकना व चमकदार होता है।

परीक्षा–(1) शीशे के गिलास में साफ पानी और पन्ना डाल दिया जाए तो हरी किरणें निकलती दिखाई देंगी। (2) शुद्ध पन्ने को हाथ में लेने पर वह हल्का, कोमल व आँखों को शीतलता प्रदान करता है।

गुण–'पन्ना' धारण करने से **बुद्धि तीव्र एवं स्मरण शक्ति बढ़ती है। विद्या, बुद्धि, धन एवं व्यापार में वृद्धि के लिए लाभप्रद** माना जाता है। पन्ना सुख एवं **आरोग्यकारक** भी है। **यह रत्न जादू-टोने, रक्त विकार, पथरी, बहुमूत्र, नेत्र रोग, दमा, गुर्दे के विकार, पाण्डु, मानसिक विकलतादि रोगों में लाभकारी माना जाता है।**

धारण विधि–यह नग शुक्ल पक्ष के बुधवार को अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, पू.फा. अथवा पुष्य नक्षत्रों में अथवा बुध की होरा में सोने की अंगूठी में दाएं हाथ की कनिष्ठिका (छोटी) अंगुली में बुधग्रह के बीजमन्त्र से अभिमंत्रित करते हुए धारण करना चाहिए। इसका वज़न ३, ६, ७ रत्ति होना चाहिए।

बुध बीज मन्त्र–ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, मकर व मीन राशि वालों को विशेष लाभप्रद रहता है।

गुरु-रत्न पुखराज (TOPAZ)

पुखराज गुरु (बृहस्पति) ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत में इसे पुष्प राजा, हिन्दी में पुखराज, व** अंग्रेज़ी में टोपाज (Topaz) कहते हैं।

पहचान विधि–जो **पुखराज स्पर्श में चिकना, हाथ में लेने पर कुछ भारी लगे, पारदर्शी, प्राकृतिक चमक से युक्त** हो वह **उत्तम कोटि** का माना जाता है।

परीक्षा–(i) जहां किसी विषैले कीड़े ने काटा हो, वहां पर असली पुखराज घिस कर लगाने से विष उतर जाता है। (ii) चौबीस घण्टे कच्चे दूध में रखने के बाद यदि चमक में अन्तर न पड़े तो पुखराज असली होगा। इत्यादि।

गुण–पुखराज धारण करने से **बल, बुद्धि, स्वास्थ्य एवं आयु** की वृद्धि होती है। **वैवाहिक सुख, पुत्र सन्तान कारक एवं धर्म-कर्म** में प्रेरक होता है। प्रेत-बाधा का निवारण एवं स्त्री के **विवाहसुख की बाधा को दूर करने में** सहायक होता है।

औषधी प्रयोग–इसको वैद्य के परामर्शानुसार केवड़ा एवं शहदादि के साथ देने से **पीलिया, तिल्ली, पाण्डु रोग, खांसी, दन्त रोग, मुख की दुर्गन्ध, बवासीर, मन्दाग्नि, पित्त-ज्वरादि** में लाभदायक होता है।

धारण विधि–पुखराज रत्न ३, ५, ७, ९ या १२ रत्ति के वजन का सोने की अंगूठी में जड़वा कर तर्जनी अंगुली में धारण करें, सुवर्ण या ताम्र बर्तन में कच्चा दूध, गंगाजल, पीले पुष्पों से एवं **"ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः"** के बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके धारण करना चाहिए। मन्त्र संख्या १९ हजार।

यह नग शुक्ल पक्ष के गुरुवार की होरा में, अथवा गुरुपुष्य योग में या पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में धारण करना चाहिए।

पुखराज धनु, मीन राशि के अतिरिक्त मेष, कर्क, वृश्चिक राशि वालों को लाभप्रद रहता है। धारण करने के पश्चात् गुरु से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ होता है।

गुरु का उपरत्न–सुनैला–इसे पुखराज का उपरत्न माना जाता है। पुखराज मूल्यवान होने के कारण सुनैला को उसके पूरक के रूप में धारण किया जा सकता है। श्रेष्ठ सुनैला हल्के पीले रंग (सरसों के जैसा पीलापन) का होता है। कई बार पुखराज से अधिक पीलापन लिए होता है तथा आंशिक मात्रा में पुखराज के समान ही उपयोगी होता है। धारण विधि पुखराज के समान ही होगी।

शुक्र-रत्न 'हीरा' (DIAMOND)

शुक्र ग्रह का मुख्य प्रतिनिधित्व **'हीरा'** है।

संस्कृत में इसे **वज्रमणि, हिन्दी** में हीरा तथा अंग्रेज़ी में डायमण्ड (Diamond) कहते हैं।

हीरा अत्यन्त चमकदार प्रायः श्वेत वर्ण का होता है।

पहचान–अत्यन्त चमकदार, चिकना, कठोर, पारदर्शी एवं किरणों से युक्त हीरा असली होता है।

परीक्षा–(i) धूप में यदि हीरा रख दिया जाये तो उसमें से इन्द्रधनुष जैसी किरणें दिखाई देती हैं। (ii) तोतले बच्चे के मुंह में रखने से बच्चा ठीक से बोलने लगता है। (iii) अन्धेरे में जुगनू की भान्ति चमकता है।

गुण–हीरे में **वशीकरण करने की विशेष शक्ति होती है।** इसके पहनने से **वंश-वृद्धि, धन-लक्ष्मी व सम्पत्ति की वृद्धि, स्त्री एवं सन्तान सुख की प्राप्ति व स्वास्थ्य** में लाभ होता है। **वैवाहिक** सुख में भी वृद्धिकारक माना जाता है।

औषधीय गुण–हीरे की भस्म शहद-मलाई आदि के साथ ग्रहण करने से अनेक रोगों में लाभ होता है जैसे–दौर्बल्यता, नपुंसकता, वायु प्रकोप, मन्दाग्नि, वीर्य विकार, प्रमेह दोष, हृदय रोग, श्वेत प्रदर, विषैला व्रण, बच्चों में सूखा रोग, मानसिक कमज़ोरी इत्यादि।

धारण विधि–शुक्ल पक्ष के शुक्रवार वाले दिन, शुक्र की होरा में, **भरणी, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र**, एक रत्ति या इससे अधिक वज़न का हीरा सोने की अंगूठी में जड़वा कर शुक्र के बीज मन्त्र (**ॐ द्रां, द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः**) का 16 हज़ार की संख्या में जाप करके शुभ मुहूर्त्त में धारण करना चाहिए। हीरा मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। धारण करने के दिन शुक्र ग्रह से सम्बन्धित वस्तुएं जैसे दूध, चाँदी, दही, मिश्री, चावल, श्वेत वस्त्र, चन्दनादि का दान यथाशक्ति करना चाहिए।

हीरा (धारण करने की तिथि से) सात वर्ष पर्यन्त प्रभावकारी बना रहता है। **हीरा वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ राशि वालों को लाभदायक रहता है।**

शुक्र के उपरत्न–(1) फिरोज़ा–नीले आकाशीय रंग जैसा यह नग शुक्र का उपरत्न माना गया है। यह रत्न भूत, प्रेत, दैवी आपदा तथा आने वाले कष्टों से धारक की रक्षा करता है। यदि इस रत्न को कोई भेंटस्वरूप प्राप्त करके पहनेगा तो अधिक प्रभावशाली रहेगा। हल्के-प्रखर चमकदार रंग वाला रत्न उत्तम होता है। कोई भी कष्ट या रोग आने से पहले यह रत्न अपना रंग बदल लेता है। नेत्र रोग, सौन्दर्य, सिर दर्द, विषादि रोगों में विशेष लाभकारी रहता है।

(ii) ओपल (Opel)–यह भी शुक्र का अन्य उपरत्न है, इसको धारण करने से सदाचार, सदचिन्तन तथा धार्मिक कार्यों की ओर रुचि रहती है। अधिक लोकप्रिय नहीं है। इसके अतिरिक्त शुक्र के अन्य भी बहुत से उपरत्न प्रचलित हैं।

शनि रत्न नीलम (SAPHIRE)

नीलम शनिग्रह का मुख्य रत्न है। हिन्दी में नीलम तथा अंग्रेज़ी में सैफायर (Saphire) कहते हैं।

पहचान–असली नीलम चमकीला, चिकना, मोरपंख के समान वर्ण जैसा, नीली किरणों से युक्त एवं पारदर्शी होगा।

परीक्षा–(i) असली नीलम को गाय के दूध में डाल दिया जाए तो दूध का रंग नीला लगता है। (ii) पानी से भरे कांच के गिलास में डाला जाए नीली किरणें दिखाई देंगी। (iii) सूर्य की धूप में रखने से **नीले रंग की किरणें दिखाई देंगी।**

गुण–नीलम धारण करने से धन-धान्य, यश-कीर्ति, बुद्धि चातुर्य, सर्विस एवं व्यवसाय तथा वंश में वृद्धि होती है। स्वास्थ्य सुख का लाभ होता है।

ध्यान रहे, बहुधा नीलम चौबीस घण्टे के भीतर ही प्रभाव करना शुरू कर देता है। यदि नीलम अनुकूलन न बैठे तो भारी नुक्सान की आशंका हो जाती है। अतएव परीक्षा के तौर पर कम से कम ३ दिन तक पास रखने पर यदि बुरे स्वप्न आएं, रोग-उत्पन्न हो या चेहरे की बनावट में अन्तर आ जाए तो नीलम मत पहनें।

रोग शान्ति–नीलम धारण करने या औषधि रूप में ग्रहण करने से दमा, क्षय, कुष्ट रोग, हृदय रोग, अजीर्ण, मूत्राशय सम्बन्धी रोगों में लाभकारी है।

धारण विधि–नीलम ५, ७, ९, १२ अथवा अधिक रत्ति के वज़न का, पंचधातु, लोहे अथवा सोने की अंगूठी में शनिवार को शनि की होरा में एवं **पुष्य, उ.भा., चित्रा, स्वा, धनि या शतभिषा नक्षत्रों में शनि के बीज मन्त्र ॐ प्रां. प्रीं. प्रौं. सः शनये नमः** मन्त्र से २३००० की संख्या में **अभिमन्त्रित** करके धारण करें। तत्पश्चात् शनि की वस्तुओं का दान दक्षिणा सहित करना कल्याणकारी होगा।

राहु रत्न–गोमेद (ZIRCON)

राहु रत्न गोमेद को संस्कृत में गोमेदक, अंग्रेज़ी में ज़िरकन (Zircon) कहते हैं। गोमेद का रंग गोमूत्र के समान हल्के पीले रंग का, कुछ लालिमा तथा श्यामवर्ण होता है। स्वच्छ, भारी, चिकना गोमेद उत्तम होता है तथा इसमें शहद के रंग की झांई भी दिखाई देती है।

पहचान विधि–सामान्यतः गोमेद उल्लू अथवा बाज की आँख के समान होता है तथा गोमूत्र के समान, रत्न [illegible] अर्थात् जो परतदार न हों, ऐसे गोमेद उत्तम होंगे। (१) शुद्ध गोमेद को २४ घण्टे तक गोमूत्र में रखने से गोमूत्र का रंग बदल जाएगा।

धारण विधि–गोमेद रत्न शनिवार को शनि की होरा में, स्वाती, शतभिषा, आर्द्रा अथवा रविपुष्य योग में पंचधातु अथवा लोहे की अंगूठी में जड़वाकर तथा राहु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वज़न ५, ७, ९ रत्ती का होना चाहिए।

राहु बीज मन्त्र–'' ॐ भ्रां भ्रीं, भ्रौं सः राहवे नमः''

धारण करने के पश्चात् [illegible] सूर्य भगवान को अर्घ्य प्रदान कर नीले रंग का वस्त्र, कम्बल, तिल, सरसों आदि दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक गोमेद धारण करने से अनेक प्रकार की बीमारियां नष्ट होती हैं, धन सम्पत्ति, पुत्र, सन्तान वृद्धि, [illegible] आदि की [illegible] के लिए अत्यन्त लाभकारी है। शत्रु नाश हेतु भी इसका प्रयोग [illegible] रहता है।

जिनकी जन्म कुण्डली में राहु १, ४, ७, ९, १० वें भाव में हो, उन्हें गोमेद रत्न पहनना चाहिए। मकर लग्न वालों के लिए गोमेद शुभ होता है।

केतु रत्न लहसनिया (CAT'S EYE STONE)

केतु-रत्न लहसनिया को संस्कृत में वैदूर्य, हिन्दी में लहसनिया, अंग्रेज़ी में Cat's eye Stone कहते हैं। यह नग अन्धेरे में बिल्ली की आंखों के समान चमकता है। लहसनिया चार रंगों में पाया जाता है। काली तथा श्वेत आभा युक्त लहसनिया जिस पर यज्ञोपवीत के समान तीन धारियां खिंची हों, वह वैदूर्य ही उत्तम होता है।

पहचान–(१) असली लहसनिया को यदि हड्डी के ऊपर रख दिया जाए तो वह २४ घण्टे के भीतर हड्डी के आर-पार छेद कर देता है। (२) असली वैदूर्य में ढाई या तीन सफेद सूत्र होते हैं, जो बीच में इधर-उधर घूमते हिलते रहते हैं।

धारण विधि–लहसनिया रत्न बुधवार के दिन अश्विनी, मघा, मूला नक्षत्रों में, रविपुष्य योग में पंचधातु की अंगूठी में कनिष्ठका अंगुली में धारण करें। धारण करने से पूर्व केतु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करें। ५ रत्ती से कम वज़न का नहीं होना चाहिए। प्रत्येक ३ वर्ष पश्चात् नई अंगूठी में लहसनिया जड़वाकर उसे अभिमन्त्रित कर धारण करना चाहिए।

केतु बीज मन्त्र–'' ॐ स्त्रां स्त्रीं, स्त्रौं, सः केतवे नमः''

रत्न धारण करने के पश्चात् बुधवार को ही किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को तिल, तेल, कम्बल, धूर्मवर्ण का वस्त्र, सप्तधान्य (अलग-अलग रूप में) यथाशक्ति दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक लहसनिया धारण करने से भूत प्रेतादि की बाधा नहीं रहती है। सन्तान सुख, धन की वृद्धि एवं शत्रु व रोग नाश में सहायता प्रदान करता है।

अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारे यहाँ 'आपका भाग्यारत्न' पुस्तक 80 रु० भेजकर मंगवा सकते हैं। **सम्पूर्ण रत्न विज्ञान, मूल्य 150 रुपये, जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर।**

द्वादश लग्नों एवं राशियों का फल [ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) से उद्धृत]

मेष लग्न–मेष लग्न (राशि) का स्वामी मंगल है। जातक का मध्यम कद, मुख का वर्ण लाल अथवा गेहुँआ होगा। राशिपति मंगल की स्थिति शुभ होने से रक्तवर्ण नेत्रों वाला, चंचल एवं उग्र स्वभाव, अत्यन्त साहसी, सतर्क एवं महत्वाकांक्षी होगा। जातक उद्यमी, तीव्र बुद्धि, स्वतन्त्र विचारों वाला, अस्थिर किन्तु तेज स्मरण शक्ति वाला, अत्यधिक उत्साही, स्पष्टवादी एवं भ्रमणप्रिय व्यक्ति होगा। प्रायः अपने परिश्रम के बल पर आय एवं धन के साधन जुटा लेगा। सगे सम्बन्धियों की ओर से सहायता व सुख कम होगा। यह राशि चर और अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण मेष राशि (लग्न) का जातक परिवर्तनशील प्रकृति, अस्थिर स्वभाव तथा शीघ्र क्रोधित हो जाने वाला एवं शीघ्र ही मान जावे। व्यवसाय में अनेक कठिनाईयों के बावजूद उन्नति के लिए प्रयास करता रहता है। जायदाद एवं व्यवसाय में कई प्रकार के झंझट (उलझनें) आती हैं और इन्हीं कामों के द्वारा लाभ भी होता रहता है। पित्त, कफ, सिर दर्द, रक्त विकार, नेत्र विकार, त्वचा आदि रोगों का भय रहता है। मंगल शुभ होने पर जातक को खेल-कूद व संगीतादि में भी विशेष शौक रहता है। सामान्यतः मूंगा मेष लग्न वालों के लिए शुभ रहता है, परन्तु योग्य ज्योतिषी से परामर्श के बाद धारण करना चाहिए। भाग्योदयकारक वर्ष १६, २२, २८, ३२, ३६वें होंगे।

वृष लग्न–वृष लग्न का स्वामी शुक्र है। यदि शुक्र शुभ हो तो जातक सुन्दर, सुगठित शरीर व मध्यम कद वाला होगा। गोल, बड़ी व चमकदार आँखें, सुन्दर वर्ण एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा। जातक परिश्रमी, हँसमुख एवं सौम्य प्रकृत्ति वाला, धीर, शान्त एवं दृढ़ स्वभाव का होता है। जातक उदारहृदय, प्रसन्नहृदय और प्रभावशाली व्यक्ति होगा। स्वावलम्बी, उच्चाभिलाषी तथा भौतिक सुखों के लिए कठोर परिश्रम से भी पीछे नहीं हटेगा। जातक मधुरभाषी, सौन्दर्य प्रेमी, संगीत कला-साहित्यादि कार्यों में विशेष रुचि रखने वाला होगा। घर-दफ्तर आदि स्थानों पर सजावट रखेगा तथा ऐश्वर्य साधनों में निरन्तर वृद्धि करते रहने का प्रयास करेगा। जातक प्रायः अपनी इच्छानुसार ही कार्य करने वाला, ऐश्वर्ययुक्त जीवनयापन का इच्छुक, विपरीत योनि वालों के साथ मैत्री करने का आकांक्षी, व्यवहार कुशल तथा कठिन परिस्थितियों में भी अपना कार्य निकालने में कुशल होगा। जातक प्रायः चन्द्र-बुध की स्थिति शुभ होने पर कामर्स, गणित, बैंकिंग, एक्टिंग, वस्त्र उद्योग, क्रय-विक्रय (Trading) आदि में सफलता प्राप्त कर लेता है। शुभ नग हीरा है। भाग्योदयकारक वर्ष २८, ३६, ४२ एवं ४८वें होंगे।

मिथुन लग्न–मिथुन लग्न (राशि) का स्वामी बुध है। मिथुन लग्न वाला जातक, गौरवर्ण, चंचल आँखों वाला, सामान्य एवं ऊँचे कद वाला होगा। जातक अस्थिर किन्तु मौलिक विचारों से युक्त, तीव्र बुद्धि, परिवर्तनशील प्रकृति, मित्रों को हर प्रकार से सहायक तथा नीति के अनुसार आचरण करने वाला, तर्क-वितर्क करने में कुशल, दूर-दूर के स्थानों की यात्राएँ करने का सौभाग्य प्राप्त करेगा। जातक में बुद्धि तत्त्व एवं भाव तत्त्व दोनों प्रबल होने के कारण पठन-पाठन, कानूनी कार्य, व्यापार सम्बन्धी और लेखन सम्बन्धी कार्यों को बड़ी गम्भीरता से करेगा, मजबूत हृदय वाला परन्तु नर्म स्वभाव होने के कारण कमज़ोर समझा जाता है। द्विस्वभाव होने से एक ही समय पर एक से अधिक कार्य शुरू करने की प्रवृत्ति रहेगी, अपने कार्य-क्षेत्र (व्यवसाय) में प्रायः परिवर्तन करता रहता है तथा प्रायः अपने परिश्रम, बुद्धि एवं चातुर्य के बल पर जीवन में सफलता प्राप्त कर लेगा। नए-नए मित्र बनाने में कुशल, बातचीत करने की कला में निपुण होगा। क्रय-विक्रय, पुस्तक-लेखन, लेखाकार (Accounts), बैंक, वकालत, अध्यापन, इंजीनियरिंग, कल-पुर्जों के कार्य-व्यवसाय में सफलता प्राप्त हो सकती है। शुभ नग पन्ना है, स्त्रियों के लिए पुखराज भी अच्छा होगा। भाग्योदयकारक वर्ष २२, ३२, ३५, ३६, ४२ वें होंगे।

कर्क लग्न–कर्क लग्न (राशि) का स्वामी चन्द्रमा है। जल तत्त्व प्रधान एवं चर राशि होने से जातक सुन्दर एवं आकर्षक मुखाकृति, गोल चेहरा और मध्यम कद होगा। चन्द्र-मंगल शुभ हो तो जातक बुद्धिमान, संवेदनशील, भावुकहृदय, न्यायप्रिय व दयालु स्वभाव वाला होगा। सामान्यतः परिवर्तनशील स्वभाव, चंचल, जलीय वस्तुओं (Liquids) का प्रिय, उच्च कल्पनाशील, समयानुकूल काम निकालने में कुशल, मिलनसार प्रकृति होगी। यदि चन्द्रमा अशुभ हो तो चिड़चिड़ा स्वभाव, वातावरण से शीघ्र प्रभावित होने वाला होगा। प्राकृतिक सौन्दर्य, कला-संगीत व साहित्य में विशेष रुचि रखे तथा सौन्दर्यानुभूति भी विशेष रूप से रहे। ऐसा जातक परिस्थितिनुसार ढल जाने वाला, प्यार सम्बन्धों में सच्चा, ईमानदार और सहृदय दयालु प्रकृति का होगा। ऐसा जातक दिल से जिस काम को करना चाहे कर ही लेता है। कल्पना (विचार) शक्ति प्रबल होती है, अन्य पुरुष के भावों को शीघ्र समझ लेने की विशेष क्षमता होती है। कर्क राशि वालों को मकर, वृश्चिक, मीन राशि वालों के साथ मित्रता शुभ रहती है। शुभ नग सुच्चा मोती तथा सफेद पुखराज है। भाग्योदयकारक वर्ष २४, २५, २८, ३२, ३६, ४० होंगे।

सिंह लग्न–सिंह लग्न (राशि) का स्वामी सूर्य है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाला जातक सुन्दर-पुष्ट शरीर वाला, चौड़ा मस्तक, सुगठित, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होगा। जातक बुद्धिमान, उद्यमी, कर्मठ, निडर, स्वतन्त्र विचारों वाला, पराक्रमी, व्यवहार कुशल, नीति के अनुसार आचरण करने वाला, उच्चाकांक्षी, खानपान का शौकीन, देश-विदेश में भ्रमण करने वाला, शीघ्र क्रुद्ध हो जाने की प्रकृति होने पर भी अपने बुद्धि-चातुर्य से स्थिति को सम्भाल लेने वाला होगा। छोटी-छोटी एवं मामूली बातों को उपेक्षा की दृष्टि से देखने वाला होगा तथा बड़े-बड़े कामों को भी अपने उद्यम द्वारा पूरा करने से तत्पर हो जाएगा। भाई-बन्धु होने पर भी उनका सुख कम रहता है। उच्चाभिलाषी होने के कारण प्रत्येक कार्य-व्यवसाय को बड़े पैमाने एवं उच्चस्तर पर करना पसन्द करेगा। उच्चस्तरीय, वैभवशाली एवं रईसी जीवन-यापन करने की प्रबल इच्छा रखेंगे जिसके कारण अपनी सीमा से बढ़कर भी खर्च कर डालते हैं। इस लग्न वाले जातक का बाह्य रूप में आकर्षक रूप एवं अच्छा स्वास्थ्य रहता है। शुभ नग माणिक्य है। सिंह लग्न (राशि) वालों को सूर्य उपासना करनी चाहिए। भाग्योन्नति वर्ष १६, २२, २४, २६, २८, ३२ होते हैं।

कन्या लग्न–कन्या लग्न (राशि) वाले जातक का मध्यम कद, कोमल शरीर, सुन्दर व आकर्षक आँखें, लम्बी नाक, वाणी तेज और बारीक होगी। जातक प्रियभाषी, हर कार्य में सहायक, लज्जाशील प्रकृति, नर्म स्वभाव और नीति के अनुकूल काम करने वाला होगा। कल्पनाशील, सूक्ष्मदर्शी, एवं संवेदनशील (Senstivie) स्वभाव होगा। शान्तचित्त एवं एकान्तप्रिय प्रवृत्ति होगी। परन्तु कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को ढालने का सामर्थ्य होगा। एक ही समय पर अनेक यात्राएँ एवं विषयों में पारंगत होने की चेष्टा करेगा। संगीत, कला एवं साहित्य की ओर विशेष दिलचस्पी रखेगा। द्विस्वभाव एवं परिवर्तनशील प्रकृति होने के कारण एक विषय पर चिरकाल तक स्थिर नहीं हो पाता। बुध-शुक्र का शुभ योग होने से लेखा-गणित (Account), संगीत, कला, अध्यापन, लेखन, क्रय-विक्रय आदि की ओर विशेष झुकाव रहेगा तथा सफलता भी होगी। धन की अपेक्षा बौद्धिक कार्यों में विशेष रुचि रहती है। बुद्धिमान, तीव्र स्मरणशक्ति एवं अध्ययनशील प्रकृति होगी। शुभ नग पन्ना है। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २५, ३२ तथा ३५, ३६, ४२ वें वर्ष होते हैं.

तुला लग्न–तुला लग्न (राशि) का स्वामी शुक्र है। तुला लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक श्वेत व सुन्दर वर्ण, मध्यम अथवा लम्बा कद, सौम्य एवं हंसमुख प्रकृति होगी। जातक/जातिका न्यायप्रिय, हंसमुख, व्यवहारशील एवं नीति के अनुसार कार्य करने में कुशल होगा। ईमानदार, मिलनसार, नए-नए मित्र बनाने में कुशल होगा। सौंदर्यानुभूति विशेष होगी, संगीत, कला, नाट्य की ओर विशेष झुकाव होगा। रहन-सहन का ढंग रईसी एवं प्रभावपूर्ण होगा। जातक पर संगीत का प्रभाव जल्दी होगा। चन्द्र-शुक्र शुभ हों, तो मानसिक एवं कल्पनाशक्ति प्रबल होगी, परन्तु मन की केन्द्रीय शक्ति बहुत देर तक नहीं रहती। जब तक किसी कार्य में लगा रहे तब तक दिलोजान और मज़बूत दिल से करे, परन्तु अपने विचार व योजना में परिवर्तन करने में भी शीघ्र तैयार हो जाएगा। जातक को देश-विदेशों में अनेक स्थानों पर भ्रमण करने के अवसर प्राप्त होते हैं। बुद्धिमान्, तर्कशील, सावधान एवं सतर्क रहने वाला, मध्यस्थता एवं न्याय करने में कुशल, विपरीत योनि (Sex) के प्रति विशेष झुकाव रखे। इनको हीरा (Diamond) अथवा श्वेत मोती शुभ नग है जोकि किसी सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करने चाहिएं। जीवन के २५, २७, ३२, ३३, ३५ एवं ४७वें वर्ष भाग्य वृद्धिकारक होंगे।

वृश्चिक लग्न–वृश्चिक लग्न (राशि) का स्वामी मंगल है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक सुन्दर मुख वाला, परिश्रमी, अपने सामर्थ्य पर ही भरोसा करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति होगी। मंगल शुभ हो तो उत्साही, उदार, परिश्रमी, साहसी, ईमानदार, स्पष्टवादी, परोपकारी, व्यवहार-कुशल, कर्त्तव्यनिष्ठ, दृढ़ संकल्प शक्ति वाला होगा। भाई बहनों अथवा सम्बन्धियों की सहायता कम मिलती है, निजी पुरुषार्थ द्वारा ही निर्वाह योग्य आय के संसाधन जुटा पाते हैं। तनिक विरुद्ध बात हो जाने पर शीघ्र उत्तेजित हो जाएंगे, परन्तु सच्चाई अथवा सुपात्रता की दृष्टि से सुयोग्य जन की सहायता करने में अपने स्वार्थ की भी बलि देने से पीछे नहीं हटेंगे। जातक जिस कार्य को करने का निश्चय कर लेता है, उसे दृढ़तापूर्वक पालन करने का प्रयास करता है। कैमिस्ट, इंजीनियर, वकील, पुलिस, सेना विभाग, अध्यापन, ज्योतिष, अनुसंधानकर्त्ता के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे। शुभ नग मूँगा है। शुभ रंग लाल, संतरी, पीला, हल्का गुलाबी (Pink) है। अपनी आयु के २८, २८, ३२, ३६, ४४वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

धनु लग्न–धनु लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक का ऊँचा मस्तक, कान बड़े, लग्न भाव में क्रूर ग्रह होने की स्थिति में सिर मध्य अल्पबाल अथवा गंजा हो सकता है। गुरु-बुध की स्थिति शुभ हो तो सौम्य एवं शान्त, सरल स्वभाव, धार्मिक प्रकृत्ति, उदार हृदय, परोपकारी, संवेदनशील, करुणा-दया आदि भावनाओं से युक्त होगा। दूसरों के मनोभावों को जान लेने की विशेष क्षमता होगी, इस लग्न (राशि) प्रभावित व्यक्ति में बौद्धिक एवं मानसिक शक्ति की प्रबलता के साथ-साथ अश्व जैसी तीव्रता, उत्साह एवं उत्तेजना से कार्य करने की क्षमता होगी। द्विस्वभाव राशि के कारण शीघ्र कोई निर्णय नहीं ले पाएं और इनको क्रोध जल्दी नहीं आता, परन्तु जब आता है तो देर तक क्रोधित रहते हैं। अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण कठिन से कठिन समस्याओं को अपने सब, साहस एवं परिश्रम के द्वारा सुलझा लेंगे तथा निजी पुरुषार्थ द्वारा जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति करने वाला, धन, सम्पदा, भूमि-जायदाद व सवारी आदि सुखों को प्राप्त करने में सफल होगा। मंगल-गुरु शुभ हो तो उच्च व्यवसायिक विद्या के योग है। शिक्षक, धर्म-प्रचारक, राजनीतिक, वैद्य-डॉक्टर, वकील, पुस्तक व्यवसाय आदि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। शुभ नग पुखराज है। अपनी आयु के २३, २७, ३२, ३६वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

मकर लग्न–मकर लग्न (राशि) का स्वामी शनि है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाले जातक का मध्यम कद, नयन नक्श तीखे, सुन्दर मुखाकृति, काले घने बाल एवं पतली कमर वाला होगा। जातक गम्भीर, भावुक, हृदय, संवेदनशील, उच्चाभिलाषी, सेवाधर्मी, मननशील एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाला होगा। बुध व शुक्र शुभ होने पर व्यवहार-कुशल, गहन विचार एवं सूक्ष्म विश्लेषण के पश्चात् ही महत्त्वपूर्ण निर्णय लेते है। क्षमाशील प्रायः कम होते हैं तथा इन्हें बदले एवं शत्रुता की भावना भुला पाना अत्यन्त कठिन होता है। चर राशि एवं लग्न होने से जातक की मानसिक एवं आत्मिक शक्ति प्रबल होगी। गुरु-शनि शुभ हो तो, जातक नर्म स्वभाव (विनम्र), विनयशील, व्यवहार-कुशल, नीति के अनुकूल आचरण करने वाला, तर्कशील, भली-बुरी बात की पहचान करने में कुशल, विश्वसनीय, मित्रता स्थापित करने में अत्यन्त सावधान (Selective) तथा ईमानदार होंगे। तर्क-वितर्क करने में कुशल, अपने विरुद्ध बात को हृदय से भुला पाना कठिन होता है। खांसी तथा वायु रोग से सावधानी बरतें। शुभ नग नीलम है। भाग्योन्नति वर्ष २२, २४, २८ एवं ३२, ४६ होते हैं।

कुम्भ लग्न–लग्नेश (राशिपति) शनि शुभ अवस्था में हो तो जातक मध्यम अथवा ऊँचे कद वाला, सुन्दर प्रभावशाली व्यक्तित्त्व होगा। बुद्धिमान, साधन सम्पन्न, तीव्र स्मरण शक्ति एवं गम्भीर प्रकृत्ति वाला होगा। दूसरों के प्रति दयाभाव रखने वाला, परोपकारी मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए हर प्रकार से सहायक होगा। व्यावहार कुशल, मिलनसार, स्पष्टवादी एवं निस्वार्थ भाव से सेवा करने में तत्पर होगा। जातक स्वाभिमानी, स्वतन्त्रताप्रिय एवं नए-नए मित्र बनाने में भी पीछे नहीं हटेगा। उद्योगी, उद्यमी, परिश्रमी प्रकृति एवं प्रबन्धात्मक योग्यता विशेष होगी एवं उपयुक्त साधन उपलब्ध होने पर देश-विदेशों में जाने के सुअवसर प्राप्त होंगे। महत्त्वकांक्षी होते हुए भी क्रियात्मक दृष्टिकोण रखेंगे तथा अनेक विघ्न-बाधाओं व कठिनाइयों के होने पर भी जीवन में उच्च स्थिति, धन पदादि प्राप्त करने में सफल होंगे। कुम्भ लग्न मे यदि गुरु मित्र क्षेत्री या शुभ में हो तो जातक उच्चाधिकारी, उच्चपदासीन, क्रय-विक्रय, प्रोफेसर, जज-वकील अथवा उच्च एवं धनी-व्यापारी होगा, प्रारम्भिक जीवन में आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष होगा। आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष व कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। शुभ नग नीलम है। स्त्रियों के लिए पुखराज नग शुभ होगा।

मीन लग्न–मीन लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। मीन लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक बुद्धिमान, गम्भीर एवं सौम्य प्रकृति, परोपकारी कार्य करने में तत्पर, ईमानदार, सत्यप्रिय, धार्मिक, धर्म-कर्म एवं फिलास्फी, साहित्य एवं गूढ़ विद्याओं की ओर विशेष अभिरुचि रखेगा। उच्चाभिलाषी, उच्चाकांक्षी एवं स्वाभिमानी प्रकृति, अपनी मान-मर्यादा एवं प्रतिष्ठा का विशेष ध्यान रखें। सेवाभाव रखने वाला, तीव्र बुद्धि, परिश्रमी, उद्यमी, दूरदर्शी, व्यवहार कुशल एवं नीति के अनुसार आचरण करने वाला, विश्वसनीय, ईमानदार तथा हर प्रकार से मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए सहायक होगा। परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लेने की अपूर्व क्षमता होगी। देव तुल्य प्रकृति होती है। दूसरों पर न तो अन्याय करेंगे न ही किसी भान्ति अन्याय को सहन करेंगे। जातक कलाकार, चल-चित्र, व्यवसाय, खाने-पीने की वस्तुओं से सम्बन्धित, समाज सुधारक, अध्यापन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। शुभ नग पुखराज है। शुभ वैवाहिक जीवन के लिए पन्ना रत्न धारण करें। भाग्योन्तिकारक वर्ष २४, २८, ३३, ३८, ४५ वर्ष होते हैं।

दिनमान व रात्रिमान से मध्याह्न, अपराह्न, प्रदोष काल आदि जानना

भारतीय भूखण्ड में दिनमान का विस्तार लगभग 9/30 घं. मिंट से लेकर 14-30 घं. मि. के मध्य में पड़ता है। इसीलिए 9/30 घं. मिं. दिनमान से लेकर 14/30 घं. मिं. के दिनमान के मध्यान्तर में आने वाले मध्याह, अपराह्न आदि के आरम्भ व समाप्ति काल जानने की प्रक्रिया लिख रहे हैं। मध्याह्न तथा अपराह्न काल के प्रारम्भ एवं समाप्ति काल के घण्टा मिनट को अपने नगर के सूर्योदय में अलग-अलग जमा कर देने से क्रमशः मध्याह्न एवं अपराह्न काल का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल पता चल जाएगा।

उदाहरण—मान लीजिए हमें जम्मू नगर में 31 अग. 2018 को मध्याह का आरम्भ, समाप्ति व मध्यम काल जानना है, तो 31 अग. के सूर्योदय (6/08) को उस दिन के सूर्यास्त (18-53 घं. मिं.) में से घटा देने पर हमें 12 घं. 45 मिनट का दिनमान प्राप्त हुआ। आगे दी गई तालिका में दिनमान घं. 12/45 मिं. के आगे दाईं ओर देखने से हमें मध्याह्न का आरम्भ 5 घं. 6 मिं. मिला। इसको उस दिन के सूर्योदय (6-08) में जमा कर देने से हमें मध्याह्न का प्रारम्भ 11 घं. 14 मिं. तथा उसी दिनमान के सामने समाप्ति काल (7-39) में सू.उ. जमा करने से हमें 31 अग. के मध्याह्न का समा. काल (13-47) प्राप्त हुआ। आरम्भ व समाप्ति के समयान्तर के अर्ध भाग (10/17) को मध्याहारम्भ (11-14) में जमा कर देने से हमें मध्याह्न का मध्य काल प्राप्त होगा।

इसी भान्ति अभीष्ट दिनमान की दाईं तरफ चौथे कालम में अपराह्न के आरम्भ तथा समाप्ति के घं.मिं. उस दिन के स्थानीय सूर्योदय में अलग-अलग जोड़ देने पर अपराह्न का आरम्भ व समाप्ति काल (भा. स्टै. टा.) मालूम हो जाएगा।

सायाहकाल का प्रारम्भ और समाप्ति जानने के लिए भी दी गई तालिकानुसार दिनमान देखकर उसके सामने लिखे अनुसार प्रारम्भ और समाप्ति (घं. मिं.) काल में अभीष्ट दिन को सूर्योदय जोड़ देने से सायाह्न-काल का प्रा. व समाप्ति निकल आएगी।

दिनमान	मध्याह्न		अपराह्न		सायाह्न	
	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति
घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
9 30	3 48	5 42	5 42	7 36	7 36	9 30
9 45	3 54	5 51	5 51	7 48	7 48	9 45
10 00	4 00	6 00	6 00	8 00	8 00	10 00
10 15	4 06	6 9	6 9	8 12	8 12	10 15
10 30	4 12	6 18	6 18	8 24	8 24	10 30
10 45	4 18	6 27	6 27	8 36	8 36	10 45
11 00	4 24	6 36	6 36	8 48	8 48	11 99
11 15	4 30	6 45	6 45	9 00	9 00	11 15
11 30	4 36	6 54	6 54	9 12	9 12	11 30
11 45	4 42	7 03	7 03	9 24	9 24	11 45
12 00	4 48	7 12	7 12	9 36	9 36	12 00
12 15	4 54	7 21	7 21	9 48	9 48	12 15
12 30	5 00	7 30	7 30	10 00	10 00	12 30
12 45	5 06	7 39	7 39	10 12	10 12	12 45
13 00	5 12	7 48	7 48	10 24	10 24	13 00
13 15	5 18	7 57	7 57	10 36	10 36	13 15
13 30	5 24	8 06	8 06	10 48	10 48	13 30
13 45	5 30	8 15	8 15	11 00	11 00	13 45
14 00	5 36	8 24	8 24	11 12	11 12	14 00
14 15	5 42	8 33	8 33	11 24	11 24	14 15
14 30	5 48	8 42	8 42	11 36	11 36	14 30
15 00	6 00	9 00	9 00	12 00	12 00	15 00

—प्रदोषकाल ज्ञात करना—

स्थानीय सूर्यास्त के बाद मध्यमान से तीन मुहूर्त्त (6 घड़ी), अर्थात् 2 घण्टे 24 मिनट तक प्रदोष काल होता है—**''त्रिमुहूर्त्त प्रदोषःस्यात् भानौऽस्तं गते सति।''**

प्रदोषकाल में सूर्यास्त के बाद शिवपूजनार्चनादि तथा ब्राह्मण भोजन का विधान है। कुछ विद्वान् सूर्यास्त के बाद **2 घड़ी** (1 घण्टा, 12 मिनट) तक के काल को प्रदोष मानते हैं। सम्भवतः यह काल प्रदोष काल में शिवपूजन में ही विशेष प्रशस्त होने से ग्राह्य माना गया है। **रात्रिमान** में 15 मुहूर्त्तों में से प्रथम मुहूर्त्त का स्वामी भी भगवान् शिव ही हैं।

सामान्य रूप में सूर्योदय से 4 से 5 घड़ी पूर्व **उषाःकाल** होता है। इसे **ब्राह्म मुहूर्त्त** भी कहते हैं। इस मुहूर्त्त में श्री भगवान् का चिन्तन, पूजा, ध्यान पाठ आदि करने का विशेष फल होता है।

अरूणोदय—सूर्योदय से 4 घड़ी पूर्व **अरूणोदय** काल होता है, इसमें भी स्नान, जप, पुण्य श्लोकों व स्तोत्रों का पाठ आदि करने का विशेष फल होता है।

रात्रिमान	प्रदोषकाल		निशीथकाल		महानिषीथकाल		अरूणोदयकाल	
	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति
घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
9 30	सूर्यास्त	1 54	1 54	3 48	3 48	5 42	8 14	9 30
9 45	सूर्यास्त	1 57	1 57	3 54	3 54	5 51	8 27	9 45
10 00	सूर्यास्त	2 00	2 00	4 00	4 48	6 00	8 40	10 00
10 15	सूर्यास्त	2 03	2 03	4 06	4 06	6 09	8 53	10 15
10 30	सूर्यास्त	2 06	2 06	4 12	4 12	6 18	9 06	10 30
10 45	सूर्यास्त	2 09	2 09	4 18	4 18	6 27	9 19	10 45
11 00	सूर्यास्त	2 12	2 12	4 24	4 24	6 36	9 32	11 00
11 15	सूर्यास्त	2 15	2 15	4 30	4 30	6 45	9 45	11 15
11 30	सूर्यास्त	2 18	2 18	4 36	4 36	6 54	9 58	11 30
11 45	सूर्यास्त	2 21	2 21	4 42	4 42	7 03	10 11	11 45
12 00	सूर्यास्त	2 24	2 24	4 48	4 48	7 12	10 24	12 00
12 15	सूर्यास्त	2 27	2 27	4 54	4 54	7 21	10 37	12 15
12 30	सूर्यास्त	2 30	2 30	5 00	5 00	7 30	10 50	12 30
12 45	सूर्यास्त	2 33	2 33	5 06	5 06	7 39	11 03	12 45
13 00	सूर्यास्त	2 36	2 36	5 12	5 12	7 48	11 16	13 00
13 15	सूर्यास्त	2 39	2 39	5 18	5 18	7 57	11 29	13 15
13 30	सूर्यास्त	2 42	2 42	5 24	5 24	8 06	11 42	13 30
13 45	सूर्यास्त	2 45	2 45	5 30	5 30	8 15	11 55	13 45
14 00	सूर्यास्त	2 48	2 48	5 36	5 36	8 24	11 58	14 00
14 15	सूर्यास्त	2 51	2 51	5 42	5 42	8 33	12 11	14 15
14 30	सूर्यास्त	2 54	2 54	5 48	5 48	8 42	12 24	14 30
15 00	सूर्यास्त	3 00	3 00	6 00	6 00	9 00	12 50	15 00

कालसर्पयोग-अरिष्ट निवारक कुछ उपाय

जन्म कुण्डली में यदि राहु और केतु के बीच एक ही तरफ में सभी सातों ग्रह (सू., चं., मं., बु., गु., शु., श.) पड़ जाएँ, तो कालसर्प नामक योग बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक (पुरुष अथवा स्त्री) को व्यवसाय, धन, परिवार एवं सन्तानादि के कारण विविध परेशानियों एवं दुःखों से पीड़ित रहना पड़ता है-

अग्रे वा चेत् पृष्ठतोऽप्येकपार्श्वे भानांषद्के राहुकेत्वो न खेटः।
योगः प्रोक्तः कालसर्पश्च तस्मिन्जातो जाता वाऽर्थपुत्रर्त्तिमीयात्॥

कालसर्प योग से पीड़ित कुछ उल्लेखनीय महत्त्वपूर्ण कुण्डलियाँ इस प्रकार से हैं-स्वतन्त्र **भारतवर्ष एवं पाकिस्तान की जन्म कुण्डली**, पं० जवाहर लाल नेहरू, पाकिस्तान के भूतपूर्व शासक जुल्फकार **भुट्टो, हिटलर (जर्मनी), सुश्री लतामंगेशकर** इत्यादि। इनकी कुण्डलियों का विश्लेषात्मक अध्ययन ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) में पढ़ें।

वास्तव में राहु-केतु छाया ग्रह हैं। राहु का देवता 'काल' है। केतु का देवता सर्प हैं। कालसर्प योग के प्रभाव के कारण प्रत्येक कार्य में विघ्न-बाधाएँ तथा आर्थिक उन्नति में बाधाएं रहती हैं। परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि कुण्डली में केवल कालसर्प योग ही प्रभावित कर रहा हो। कुंडली में बैठे अन्य शुभ योग जातक को आश्चर्यजनक सफलताएं दिला सकता है। कालसर्प योग अत्यन्त समृद्ध साधन सम्पन्न अमीर व्यक्ति की कुंडली में भी हो सकता है अथवा दीन, अभावग्रस्त गरीब व्यक्ति की कुण्डली में भी हो सकता है। मुख्यतः इस योग के प्रभावस्वरूप मनुष्य अपनी अन्तर्मन की शक्तियों का पूर्णतया उपयोग नहीं कर पाता अथवा सब सुख-साधन सम्पन्न होते हुए भी मानसिक तनाव एवं असन्तोष बना रहता है तथा अज्ञातभय एवं असुरक्षा की भावना व्याप्त रहती है।

लक्षण-इस योग के कारण जातक को स्वप्नों में सर्प दिखाई देते हैं, पानी दिखना, अपने-आप को उड़ते हुए देखना, परिवार के किसी सदस्य पर विपत्ति आना, पितृशिव देखना, सर्प और नेवले की लड़ाई दिखे तो निश्चय ही गृह-कलह हो सकता है। कालसर्प योग का उपाय कर लें। ये सब लक्षण है कि आपकी कुण्डली में कालसर्प या आंशिक कालसर्प योग है। आप अपनी कुण्डली किसी विद्वान् ज्योतिषी को दिखाकर उपाय करें।

कालसर्प दोष केवल ग्रह-जनित पीड़ा है, इसलिए इसकी शान्ति मुख्य रूप से-(१) द्वादश ज्योर्तिलिंगों में से किसी एक ज्योर्तिलिंग के निकट (२) क्योंकि इस योग के अधिष्ठाता श्री महाकाल ही हैं। अतएव यदि प्रसिद्ध महाकालेश्वर ज्योतिलग एवं सिद्ध शक्ति पीठ, कलिया नाग के निवास स्थल पुण्य सलिला क्षिप्रा गंगा के तट पर उज्जैन नगर में है। (३) प्रयागराज (४) नासिक में (५) अथवा यदि सम्भव न हो तो शिव मन्दिर में द्वादश ज्योतिलग का ध्यान करते हुए करें।

—कालसर्प दोष शान्ति के लिए उपाय—

कालसर्प दोष की शान्ति के लिए मुख्य रूप से (१) ग्रह शान्ति (२) सर्प दोष (३) पितृ दोष शान्ति एवं नागबलि एवं शिव पूजन वैदिक पुराणोक्त विधि से किसी योग्य ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। (४) विधिपूर्वक महामृत्युञ्जय का जप भी करें।

यदि कुण्डली में **काल सर्पयोग** पड़ा हो, तो निम्नलिखित किंचित् उपाय करने **शुभ एवं कल्याणकारी** होंगे-(1) **कालसर्प** की अरिष्ट शान्ति के लिए शिव मन्दिर में सवा लाख **ॐ नमः शिवाय** मन्त्र का पाठ करना तथा पाठोपरान्त रूद्राभिषेक करवाने का विशेष महत्त्व है। साथ ही शिवलिंग पर चांदी का **सर्प युगल-नाग स्तोत्र** एवं नाग पूजनादि करके चढ़ाना शुभ होगा।

नाग गायत्री मन्त्र-ॐ नव कुलाय विद्महे विषदंताय धीमहि तन्नो सर्पः प्रचोदयात्॥

(2) प्रत्येक शनिवार एक नारियल को तैल एवं काले तिलों का तिलक लगाकर, मौली लपेटकर अपने शिर से तीन बार घुमा कर **ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः** मन्त्र कम-से-कम तीन बार पढ़कर चलते पानी में बहा देवें-ऐसे कम-से-कम **पाँच शनिवार करें।**

(3) प्रत्येक **शनिवार** कुत्तों को दूध और चपाती डालनी तथा गौओं, कौओं को तैल के छीटें देकर रसोई की प्रथम चपातियां डालना शुभ है।

(4) **कालसर्प** योग के कारण यदि वैवाहिक जीवन में बाधा आती हो, तो जातक पत्नी के साथ दोबारा विवाह करें एवं घर के चौखट द्वार पर चांदी का स्वस्तिक चिन्ह बनवा कर लगवाएं।

(5) घर में **मयूर पंख** का पंखा पवित्र स्थान पर रखें तथा भगवान् शिव का ध्यान करते हुए प्रातः उठते ही तथा सोने से पूर्व मयूर पंखे द्वारा हवा करें।

(6) प्रत्येक संक्रान्ति को गंगा जल सहित गोमूत्र का छिड़काव घर के सभी कमरों में करें।

(7) कालसर्प योग शान्ति के लिए नवनाग देवताओं के नाम का उच्चारण करना चाहिए-

नवनाग स्तोत्र— **अनंतं वासुकिं शेष पद्मानाभम् च कंबलम्।**
शंखपालं कर्कोटकं कालियं तक्षकं तथा॥
एतानि संस्मरेन्नित्यं आयुः कामार्थ सिद्धये।
सर्पदोष क्षयार्थं च पुत्रपौत्रान् समृद्धये॥
तस्मै विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्॥

(8) महाकुम्भ पर्व के अवसर पर प्रमुख स्नान करें और कुम्भ में स्थित शिव मन्दिर में जाकर विधिपूर्वक पूजन करें। चाँदी के बने नाग-नागिन के कम-से-कम ११ जोड़ों को प्रतिदिन शिवलिंग में चढ़ाएँ तथा महादेव से इस कुयोग से मुक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करें।

(9) सोना-७ रत्ती, चाँदी-१२ रत्ती, तांबा-१६ रत्ती-ये तीनों मिलाकर सर्पाकार अंगूठी अनामिका अंगुली में धारण करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। जिस दिन धारण करें, उस दिन राहु की सामग्री का आंशिक दान भी करना चाहिए।

(10) नागपंचमी का व्रत करें तथा नवनाग स्तोत्र का पाठ करें। 'अनन्त चतुर्दशी' का व्रत भी विधिपूर्वक रखें।

(11) प्रत्येक बुधवार को काले वस्त्र में उड़द या मूंग एक मुट्ठी डालकर, राहु का मन्त्र जाप कर किसी भिखारी को दे देवें। यदि दान लेने वाला कोई नहीं मिले तो बहते पानी में उस अन्न को छोड़ देना चाहिए। इस प्रकार 72 बुधवार करते रहने से अवश्य लाभ होता है।

(12) यदि किसी स्त्री की कुंडली इस योग से दूषित है तथा संतति का अभाव है, पूजन-विधि नहीं करवा सकती तो किसी अश्वत्थ (बट) के वृक्ष से नित्य १०८ प्रदक्षिणा (घेरे) लगाने चाहिए। तीन सौ दिन में जब २८००० प्रदक्षिणा पूरी होगी तो दोष दूर होकर स्वतः ही संतति की प्राप्ति होगी।

(13) इसके अतिरिक्त महाकाल रुद्र स्तोत्र, मनसादेवी नाग स्तोत्र, महामृत्युञ्जय आदि स्तोत्रों का विधि-विधान से पूजन, हवन करने से कालसर्प दोष की शान्ति हो जाती है।

कालसर्प दोष की शान्ति के लिए हमारी पुस्तक की प्रतीक्षा कीजिए।

पुस्तकों के महासागर में से मोती रूप पुस्तकें वी. पी. द्वारा मंगवाएँ

कुछ उपयोगी ग्रन्थ

पुस्तक	मूल्य
श्रीमद्देवी भागवत पुराण	301/-
श्री विष्णु पुराण	300/-
श्री विश्वकर्मा महापुराण	300/-
धर्मसिन्धु (भाषा टीका)	600/-
निर्णयसिन्धु (भाषा टीका)	1200/-
निर्णयसिन्धु (भा.टी.)	800/-
कर्मठगुरु (भा.टी.)	**500/-**
मंत्र महोदधि	750/-
षोडश संस्कार रहस्य	190/-
मन्त्र सागर	180/-
योग वशिष्ठ महारामायण	300/-
सामुद्रिक शास्त्र (दो भाग)	660/-
विशाल भृगु संहिता	400/-
चन्द्र हस्त विज्ञान	**395/-**
विवाहपद्धति देवीदयालु	**90/-**
दुर्गा सप्तशती (भा. टी.)	**80/-**
सूर्य पुराण भाषा	300/-
रामायण तर्ज राधेश्याम	250/-
दुर्गार्चन रहस्यम्	200/-
श्रीगणेश महापुराण	300/-
मनुस्मृति	200/-
देवी-देवता सिद्धि	125/-
भजन सरोवर	150/-
शिव मंत्रावली	180/-

चारों वेद (भा.टी.)

ऋग्वेद-4 खण्डों में, यजुर्वेद-1 खण्ड, अर्थववेद-2 खण्ड, सामवेद-1 खण्ड में उपलब्ध हैं जिसमें संस्कृत भाषा के साथ हिन्दी में भी विस्तार से समझाया गया है। जिसे प्रत्येक भारतीय को अवश्य पढ़ना चाहिए। आज ही मंगवाएँ। मूल्य **सम्पूर्ण सैट-1600 रु.। सम्पूर्ण चार भाग (केवल हिन्दी भाषा) 600 रु.**

सम्पूर्ण 'कार्तिक माहात्म्य'

पं. पन्ना लाल ज्यो. द्वारा संकलित प्रस्तुत पुस्तक में कार्तिक मास में व्रत, स्नान, पूजन आदि के विशेष नियम, तुलसी एवं श्रीगङ्गा की उत्पत्ति, तुलसी, आँवला, पीपल, करवा-चौथ, अहोई व्रत तथा कार्तिक मास में दीप दान एवं मार्जन का महत्त्व, मुख्य पर्वों जैसे-एकादशी, धन, त्रयोदशी, दीपावली, अन्नकूट, भाई-दूज, भीष्मपंचक, कार्तिक व्रत उद्यापन, तुलसी विवाह विधि, तुलसी स्तोत्र एवं आरती और भगवान की आरतियां संग्रहीत हैं। **(हिन्दी) मूल्य-50 रु.**

चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
एलोपेथिक चिकि. (कोकचा)	500 रु.
वृहद् होम्योपैथिक चिकित्सा	500 रु.
अमृतसागर	200 रुपए
माधवनिदान	200 रुपए
स्वदेशी चिकित्सा सार	125 रुपए
घर का वैद्य	100 रुपए
रसराज महोदधि	300 रुपए
आयुर्वेदिक गाईड	360 रुपए
अनुपम आयुर्वेदिक गाईड	200 रुपए
एलोपैथिक मैडी. गाईड	350 रुपए
होम्योपैथी द्वारा ईलाज	150 रुपए
योगासन एवं साधना	100 रुपए
वृहद् बूटी प्रचार	150 रुपए
जड़ी-बूटियाँ	200 रुपए
आयुर्वेद सार संग्रह (वैद्यनाथ)	320 रु.
ईलाजुलगुर्बा	120 रु.
दादी माँ के नुस्खे	100 रु.
भोजन द्वारा चिकित्सा	100 रु.
महत्त्वपूर्ण जड़ी-बूटियां	300 रु.
रसेन्द्र सार संग्रह	295 रु.
आयुर्वेदिक पेटेण्ट चिकित्सा	150 रु.
होम्योपैथिक चिकित्सा	120 रु.
भावप्रकाश निघन्टु	195 रु.
घरेलू इलाज	100 रु.
चरक संहिता (सम्पूर्ण)	600 रु.
आयुर्वेद भास्कर	350 रु.
योगासन व स्वास्थ्य	100 रु.

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र

पुस्तक	मूल्य
काली किताब	650 रु.
काली किताब (छोटी)	300 रु.
महाइन्द्रजाल	600 रु.
असली प्राचीन इन्द्रजाल	200 रु.
शाबर मंत्र विद्या	120 रु.
तंत्र-मंत्र-यंत्र रहस्य	300 रु.
यंत्र-मंत्र-तंत्र महाशास्त्र	1000 रु.
काला ईल्म	120 रु.
इस्लामी तंत्र शास्त्र	125 रु.
श्री दुर्गा साधना तंत्र	150 रु.
भारतीय तंत्र विद्या	250 रु.
अनुभूत यंत्र तंत्र ओर टोटके	150 रु.
बगुलामुखी रहस्यम्	125 रु.
कालिका सिद्धि	150 रु.
सिद्ध शाबर मन्त्र	150 रु.
तांत्रिक सिद्धियां	100 रु.
काली तंत्र शास्त्र	100 रु.
तारा तन्त्रम्	500 रु.
तांत्रिक मुद्रा विज्ञान	105 रु.
यंत्र-मंत्र-तंत्र टोटके	100 रु.
छिन्नमस्तका तंत्र शास्त्र	125 रु.
महाकाल संहिता	600 रु.
5001 गंडे तावीज़ और टोटके	300 रु.
मंत्र रहस्य	120 रु.
यंत्र विधान	280 रु.
यंत्र विद्या के 121 प्रयोग	200 रु.
धन प्रदायक साधनाएं	100 रु.
श्री यन्त्रम् महिमा	100 रु.
मनोकामना सिद्धि	80 रु.
वशीकरण सिद्धियां, साधना	120 रु.
कामाख्या उपासना	250 रु.
रुद्रायमल तंत्र (बड़ा)	200 रु.

कर्मकाण्ड सम्बन्धी पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
गण्डमूल नक्षत्र शांति प्रयोग	75 रु.
कार्तिक स्त्री प्रसूता शांति	40 रु.
जन्मदिन पूजा पद्धति	40 रु.
कर्मकाण्ड प्रदीपः	175 रु.
विवाह पद्धति	90 रु.
शिवरात्रि व्रत कथा (भा. टी.)	40 रु.
पौरोहित्यक कर्म-विधि	350 रु.
दुर्गा सप्तशती (भा. टी.)	85 रु.
नित्यपूजा (क्यों और कैसे ?)	150 रु.
कर्मकाण्ड भास्कर	225 रु.
कर्मकाण्ड भारती	250 रु.
पूजा रहस्यम्	100 रु.
पूजा भास्कर	120 रु.
हवन रहस्यम्	150 रु.
नवग्रह पूजा विधान (नवग्रह उपायों सहित)	50 रु.
नित्यकर्म व देवपूजा पद्धति	120 रु.
रुद्राष्टाध्यायी भा. टी.	90 रु.
श्रीसूक्तम् व कनकधारा	30 रु.
सन्तान गोपाल स्तोत्र	25 रु.
गरुड़ पुराण (भाषा टीका)	150 रु.
गरुड़ पुराण (भाषा) बड़ा	220 रु.
षोडश संस्कार रहस्य	190 रु.
श्राद्ध विवेक	200 रु.
नित्यकर्म पद्धति	150 रु.
कर्मठगुरु [भा.टी.]	500 रु.
सर्वदेव प्रतिष्ठा प्रकाश	350 रु.
सम्पूर्ण हवन विधि	150 रु.
वशिष्ठी हवन पद्धति	50 रु.
आदित्य हृदय स्तोत्र (भा.टी.)	30 रु.
अन्त्येष्टि कर्म रहस्यम्	80 रु.
सर्व व्रतोद्यापन रहस्यम्	200 रु.
नित्यकर्म पूजा प्रकाश	200 रु.
दुर्गार्चन पद्धति	200 रु.

कर्मकाण्ड सम्बन्धी नवीन प्रकाशन-

'सुगम पूजा संग्रह'

अर्थात् शिलान्यास (गृहारम्भ), 'तुलादान' एवं 'वास्तु पूजा' विधान सम्बन्धी प्रामाणिक पुस्तक (लेखक : पं. हीरानन्द शास्त्री)

मूल्य : 60 रु.

शिवरात्रि व्रत कथा (भा.टी.)
शिवरात्रि पूजन कैसे करें ?

श्रीमहाशिवरात्रि का व्रत सब व्रतों में उत्तम एवं कल्याणकारी है। जैसे गंगा जी के समान कोई तीर्थ नहीं है। भगवान् शंकर के समान कोई दूसरा देवता नहीं है तथा शिवरात्रि से बढ़कर दूसरा कोई व्रत एवं तप नहीं है।

व्याख्याकार पं. पन्ना लाल ज्यो. द्वारा प्रणीत इस महाशिवरात्रि व्रत कथा में **माहात्म्य, आध्यात्मिक रहस्य एवं सम्पूर्ण पूजन विधि**, उद्यापन, व्रत कथा, रुद्राष्टक, शिव पंचाक्षर, शिव चालीसा, शिव षड्क्षर स्तोत्र, शिवमानस पूजा, आरती सहित बहुत सरल एवं सुबोधगम्य ढंग से प्रस्तुत की गई है जिससे शिव भगत स्वयं शिवरात्रि पूजन कर पुण्य लाभ ले सकें।

पुस्तक खरीदते समय व्याख्याकार पं. **पन्ना लाल ज्योतिषी** का नाम तथा **जनरल बुक डिपो** का पता अवश्य देख लें। अथवा सीधे वी.पी.पी. द्वारा मंगवाएं। मूल्य 40/- (डाक व्यय अलग)

अपने आर्डर के साथ 100/- रु. पेशगी अवश्य भेजें। वी.पी. द्वारा मंगवाने का पता-

जनरल बुक डिपो

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर। फोन-2457959

'पं. देवी दयालु' संस्थान के कुछ अमूल्य प्रकाशन

''सुतभाव प्रकाश''

(अर्थात् ज्योतिष एवं सन्तान-योग)-पं. पन्ना लाल ज्योतिषी

भारतीय समाज में पुत्र जन्म को एक उत्सव के रूप में ग्रहण किया जाता है। भारतीय धर्म मान्यताओं के अनुसार देव-ऋषि, पितृ आदि ऋणों से मुक्ति हेतु तथा वंश परम्परा को चलाने के लिए पुत्रोत्पत्ति आवश्यक मानी जाती है। पुत्र प्राप्ति के लिए हमारे प्राचीन ज्योतिष एवं आयुर्वेदाचार्यों ने अपने आवश्यक-नियमों एवं उपायों का वर्णन किया है, जिनका उल्लेख पुस्तक के भीतर किया गया है, जैसे- **वृतोवासों द्वारा पुत्र सन्तति प्राप्त करना**, मन्त्र जाप से पुत्र प्राप्ति, जपनीय मंत्र, श्री दुर्गासप्तशती पाठ से पुत्र सन्तति सुख, पितृ-मातृ **आदिशाप** की शान्ति एवं कालसर्प आदि दोषों के लिए उपाय, गर्भदोष निवारक उपाय, हरिवंश, भागवतादि सद्ग्रंथों के पाठ से **पुत्र लाभ**, यन्त्र धारण द्वारा एवं जड़ी/बूटी धारण एवं स्नान से संतान सुख तथा स्तोत्र पाठ से पुत्र संतान सुख लाभ होने की विधि लिखी गई है। आशा है हमारे द्वारा उल्लिखित शास्त्रीय उपाय ज़रूरतमंद दम्पत्तियों तथा ज्योतिषीयों के लिए लाभप्रद होंगे। मूल्य-135/- रु.

गण्डमूल नक्षत्र शान्ति प्रयोग (भा.टी.)

व्याख्याकार :-पं. पन्ना लाल ज्यो.

गण्डमूल नक्षत्रों की शान्ति करवाने का प्रचलन प्राचीनकाल से ही चला आ रहा है। फलित दृष्टि से भी ज्येष्ठा, मूलादि गण्डमूलक षड-नक्षत्रों के अरिष्ट प्रभाव का उल्लेख फलित ग्रन्थों में सर्वत्र मिलता है।

अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा-मूल एवं रेवती-सभी छः गण्डमूलक नक्षत्रों पर छपी अत्यन्त उपयोगी पुस्तक जिसमें नक्षत्र, ग्रहों के आवाहन, पूजन, हवन, दान आदि की व्याख्या शास्त्र विधि-विधान के साथ एवं हिन्दी व्याख्या सहित दी गई है। गण्डमूल के सभी छः नक्षत्रों पर ऐसी उपयोगी पुस्तक पहिले आपने नहीं देखी होगी। कर्मकाण्डी पण्डितों एवं नव-विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त लाभदायक पुस्तक है।

मूल्य 75 रुपये।

अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय एवं टोटके

(उपायों सम्बन्धी प्रामाणिक पुस्तक)

लेखक-पं. पन्ना लाल ज्योतिषी

प्रस्तुत पुस्तक में व्रत-धारण, मंत्र-यन्त्र प्रयोग, दुर्लभ स्तोत्र, ग्रह राशि अनुसार उपयुक्त रत्न, जड़ी-बूटी धारण विधि, सरल विधियां दी गई हैं। इसके अतिरिक्त ग्रहों, नक्षत्रों एवं राशियों से सम्बन्धी ज्योतिष की प्रारम्भिक जानकारी, ग्रहों की शुभाशुभ स्थिति का निर्णय, लड़के/लड़की के विवाह में विलम्ब के कारण व उपाय, **मंगलीक दोष, कालसर्प योग**, संतान में बाधाकारक योग, पितृदोष योग, विदेश यात्रा आदि योगों में विघ्न एवं उनके शास्त्रसम्मत उपाय व दुर्लभ स्तोत्रों का विवरण दिया गया है जोकि उपरोक्त दोषों के लिए विशिष्ट, शास्त्रसम्मत एवं अचूक उपाय माने जाते हैं। इस पुस्तक में ज्योतिष जगत में चर्चित 'लालकिताब' के अनुसार विशेष उपायों का भी समावेश किया गया है। ज्योतिष में रुचि रखने वाले, विद्यार्थियों, ज्योतिषियों एवं कर्मकाण्डी पण्डितों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। मूल्य 200 रु.

श्री दुर्गा सप्तशती (हिन्दी भाषा में)

श्री दुर्गासप्तशती मात्र धर्मग्रन्थ ही नहीं, बल्कि एक सिद्ध ग्रंथ है। पं. पन्ना लाल ज्योतिषी द्वारा प्रणीत श्री दुर्गा-सप्तशती के प्रस्तुत सरल हिन्दी संस्करण में अनेक उपयोगी विषयों का समावेश किया गया है। इस पुस्तक में श्री दुर्गा यन्त्र, संक्षिप्त पाठ एवं संकल्प विधि, श्रीदेवी कवच, श्री अर्गलास्तोत्र, श्री कीलक स्तोत्र, रात्रिसूक्त, नवार्णमन्त्र, 13 पाठ अध्याय, श्री चण्डी पूजा एवं स्तोत्र, एवं आरतियों सहित वर्णन किया है।

ध्यान रहे—बिना संकल्प विधि के किया जप-पाठ एवं कोई भी अनुष्ठान पूर्ण फल नहीं देता। मार्कीट में बिकने वाली अधिकांश हिन्दी भाषी सप्तशतियों में संकल्पविधि, पूजन विधि आदि आवश्यक विषयों का अभाव मिलता है। श्रद्धापूर्वक सही विधि द्वारा श्री दुर्गा जी के चरित्रों का विधिपूर्वक पाठ करने से मनुष्यों के पाप नष्ट होकर उन्हें धन-धान्य, सौभाग्यादि की प्राप्ति एवं मनोवांछित कामनाओं की सहज पूर्ति होती है। भेंट-100 रु०

नोट—आज ही स्थानीय पुस्तक विक्रेता से खरीदें अथवा पत्र लिखकर वी.पी. द्वारा मंगवाकर एवं पाठ कर लाभान्वित हों।

शिव-मन्त्रावली

लेखक-पं. पन्ना लाल ज्योतिषी

(भगवान् शिव व अन्य प्रमुख देवी-देवताओं के मन्त्र-यन्त्रादि साधना में दुर्लभ पुस्तक)

अनेक वर्षों से दुर्लभ एवं अप्राप्य शिव-मन्त्रावली नामक पुस्तक अब हमारे कार्यालय से छपकर तैयार है। इसमें भगवान् शिव तथा अन्य देवी-देवताओं से सम्बन्धित अनेक प्राचीन एवं दुर्लभ मन्त्रों का विनियोग सहित वर्णन तथा उन्हें सिद्ध करने की विधियां दी गई हैं। मन्त्र-जपानुष्ठान के अतिरिक्त मन्त्र शास्त्र का सैद्धान्तिक एवं शास्त्रीय विवेचन भी दिया गया है, जिसके अन्तर्गत शिवलिङ्ग प्राकट्य, सृष्टिक्रम का रहस्य, कुण्डलिनी आदि षड्चक्रों का ज्ञान, भगवान् शिव का सत्यं, शिवं-सुन्दरम् स्वरूप तथा शिव-शक्ति का रूप, कलियुग में शिव नाम का महत्त्व, मन्त्रानुष्ठान के शुभ मुहूर्त्त, मन्त्र सिद्धि न होने के कारण, मन्त्र उत्कीलन स्तोत्र, ईश्वर में श्रद्धा और प्रेम रखना, नाम राशि व मन्त्र राशि में अनुकूलता, मन्त्रों के दस संस्कार, मन्त्र-जप सम्बन्धी आवश्यक सावधानियाँ, जप-पूजन में प्राणायाम का महत्त्व, शिवलिङ्ग एवं शिव पूजन विधान, जपादि अनुष्ठान में विभिन्न मालाओं का प्रयोग, रुद्राक्ष का महत्त्व, भगवान् शिव के विविध कल्याणकारी मन्त्र, महामृत्युञ्जय मन्त्रों एवं यन्त्रों के विभिन्न स्वरूप, मन्त्र हवन प्रयोग, मन्त्रों में विनियोग, अङ्गन्यास आदि का महत्त्व, बीजाक्षरों का महत्त्व, पूजन में मुद्राओं का प्रयोग, उपांशु, मानस आदि जप का महत्त्व, वशीकरण, यक्षिणी-सिद्धि प्रयोग, यन्त्र रचना एवं प्राण प्रतिष्ठा, भगवान् शिव के रहस्यपूर्ण प्रतीक चिह्न, जैसे—अर्धनारीश्वर रूप, गङ्गा, त्रिनेत्र, त्रिशूल, सर्प, डमरू आदि।

मूल्य : 180/-

जन्मदिन पूजा पद्धति

(जन्मदिन संस्कार सम्बन्धी शास्त्र प्रामाणिक उपयोगी पुस्तक)

इस पुस्तक में जन्मदिन पूजन का शास्त्रीय विधान, प्रातः स्मरणीय मंत्र, औषधि-स्नान, स्वस्तीवाचन, श्रीगणेश-अम्बिका, षोडश मातृकाएँ, नवग्रह शान्ति, कलश-पूजन, सप्तर्षि-अष्टचिरंजीवी एवं षष्ठी देवी पूजन और षष्ठी देवी महिमा कथासार, षष्ठीदेवी स्तोत्र तथा संक्षिप्त हवन प्रक्रिया दी गई है। मूल्य 40 रु.

पता-जनरल बुक डिपो

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर।

फोन-(0181) 2457959

ज्योतिष सम्बन्धी प्रामाणिक पुस्तकें वी० पी० द्वारा मंगवाएँ

पं० देवी दयालु ज्यो०, जालन्धर द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
श्री अर्द्धशताब्दी पंचांग	900 रु.
श्रीदशवर्षीय पंचांग (1994-04 ई.)	250 रु.
दशवर्षीय पंचांग (2004-14 ई.)	400 रु.
मुफीद आलम जन्त्री (हिन्दी-उर्दू-पंजाबी)	90 रु.
वर्षफल चन्द्रिका	110 रु.
ज्योतिष तत्त्व (गणित खंड)	150 रु.
ज्यो. तत्व (फलित खण्ड-I)	300 रु.
ज्यो. तत्व (फलित खण्ड-II)	300 रु.
सुतभाव (सन्तान) प्रकाश	135 रु.
शिव मन्त्रावली	**180 रु.**
अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय-टोटके	200 रु.
विवाह पद्धति	90 रु.
दुर्गा सप्तशती (हिन्दी-भाषा)	100 रु.
श्री दुर्गासप्तशती (भा.टी.)	85 रु.
गण्डमूल शान्ति प्रयोग	**75 रु.**
कार्तिक स्त्री प्रसूता शान्ति	40 रु.
नवग्रह पूजा विधान	40 रु.
जन्मदिन पूजा पद्धति	50 रु.
श्री सूक्तम्-कनकधारा स्तोत्र भा.टी.	30 रु.
कार्तिक माहात्म्य (भाषा)	**50 रु.**
55 चालीसा आरती संग्रह (जिल्द)	70 रु.
लघु पंचांग दिवाकर	**35 रु.**
शिवरात्रि व्रत कथा-भा.टी.	40 रु.
षड्वर्गीय जन्मपत्रिका (28 पृ.)	14 रु.
जन्माङ्ग पत्रिका (16 पृ.)	10 रु.
जन्माङ्ग पत्रिका (12 पृ.)	10 रु.
टेवा फार्म छपा/प्लेन	180 रु. सैंकड़ा
सरल पूजा संग्रह	60 रु.
लाल किताब (पंजाबी)	120 रु.
फलित ज्योतिष (पंजाबी)	400 रु.
राशिफल सन् 2021 ई. (पृष्ठ 303 भी देखें।)	60 रु.

अन्य प्रकाशनों की ज्योतिष सम्बन्धी प्रामाणिक पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
योग-पारिजात (धन योग)	400 रु.
योग-पारिजात (भाग्य योग)	450 रु.
योग-पारिजात (राज-योग)	450 रु.
योग-पारिजात (अनुपम योग)	450 रु.
गणेश होरा शास्त्रम्	500 रु.
राशिफल विचार	160 रु.
परमायु दशा	150 रु.
आयु आकलन	500 रु.
आयु निर्णय	120 रु.
शनि-साढ़ेसति से छुटकारा	80 रु.
मंगलीक योग-भ्रान्ति निदान	135 रु.
पुत्रेष्टि अनुष्ठान	495 रु.
ज्यो. और रोग (2 भाग)	300 रु.
षड्वर्ग फलम्	200 रु.
भारतीय ज्यो.-नेमिचंद शास्त्री	420 रु.
भृगु संहिता	400 रु.
बुद्धि विद्या विचार	400 रु.
भावफल विचार (2 भाग)	300 रु.
षड्बल रहस्य	120 रु.
आजीविका विचार (2 भाग)	500 रु.
जैमिनी ज्योतिष	150 रु.
राहु-केतु	180 रु.
ज्योतिष और दाम्पत्य जीवन	200 रु.
उत्तर-कालामृत	300 रु.
फलित सूत्रम्	250 रु.
प्रश्न दर्पण	120 रु.
प्रश्न रहस्य	120 रु.
नक्षत्रफल	250 रु.
अष्टकवर्ग सिद्धान्त-प्रयोग	120 रु.
ज्यो. में नवांश का महत्त्व	300 रु.
भावार्थ रत्नाकर	180 रु.
सत्यजातकम्	180 रु.
ग्रह-युति फल दर्पण	280 रु.
गोचर फल विचार	130 रु.
गोचर फल दर्पण	75 रु.

पुस्तक	मूल्य
शनि संहिता	400 रु.
दीपावली एवं महालक्ष्मी पूजन	120 रु.
विवाह एवं सन्तान	350 रु.
वैवाहिक सुख में शनि प्रमुख	400 रु.
जातक सारावली (प्रथम भाव)	400 रु.
जातक सारावली (द्वितीय भाव)	400 रु.
जातक सारावली (सप्तम भाव)	400 रु.
जातक सारावली (दशम भाव)	400 रु.
परिणय निर्णय (वैवाहिक)	400 रु.
परिणय निर्णय (मुहूर्त मीमांसा)	400 रु.
परिणय निर्णय (मंगली दोष)	400 रु.
परिणय निर्णय (विवाह समय)	400 रु.
शिशु चिन्तन	450 रु.
कुण्डली मिलान	125 रु.
नक्षत्र विचार	250 रु.
मृत्युंजय मन्त्र संकलन	400 रु.
शनि दशा दिग्दर्शन	180 रु.
मन्त्र मधुबन	350 रु.
मानसागरी	**200 रु.**
मुहूर्त-चिन्तामणि	140 रु.
मुहूर्त्त-मार्त्तण्ड	235 रु.
शक्ति-कुंज	350 रु.
सत्य जातकम्	180 रु.
होरा-रत्नम (2 भाग)	800 रु.
व्याधि-विभावरी	400 रु.
व्याधि-वीथिका	400 रु.
मंगल दशाफलदीपिका	500 रु.
लग्नचन्द्र प्रकाश	495 रु.
सारावली	275 रु.
बृहज्जातकम्	255 रु.
वृद्ध यवनजातकम् (2 भाग)	600 रु.
ग्रहयोग-संक्षेपिका	400 रु.
ज्योतिर्विदाभरणम्	345 रु.
जातक, जीवन और ज्यो.	100 रु.
ज्यो. द्वारा कामना सिद्धि	80 रु.
समृद्धि सभा	500 रु.

पुस्तक	मूल्य
समृद्धि सूत्र (2 भाग)	925 रु.
वृहत्पराशर होराशास्त्र (2 भाग)	800 रु.
जातक पारिजात (2 भाग)	620 रु.
ज्योतिष रत्नाकर	325 रु.
फलदीपिका	245 रु.
मुहूर्त्त चिन्तामणि (पीयूषधारा)	295 रु.
शनि शमन (दो भाग)	600 रु.
शत्रुशमन	195 रु.
कालसर्प योग कारणनिवारण	300 रु.
ज्योतिष सर्वस्व	300 रु.
केवल ज्ञान प्रश्न चूड़ामणि	100 रु.
काली किताब	650 रु.
काली किताब	300 रु.
लाल किताब (वृहद्)	2500 रु.
लाल किताब (बड़ी)	800 रु.
लाल किताब टोटके व उपाय	150 रु.
रावण संहिता (वृहद्)	2500 रु.
रावण संहिता (बड़ी)	800 रु.
पितृदोष कारण-निवारण	150 रु.
मंगलीदोष कारण-निवारण	150 रु.
जातक निर्णय (दो भाग)	490 रु.
गोचर विचार	100 रु.
जातकालंकार	100 रु.
प्रश्न मार्ग (दो-खण्ड)	400 रु.
शनि दशा फलदीपिका	550 रु.
दशाफल विचार	200 रु.
विंशोत्तरी दशा तरंगिणी	200 रु.
नक्षत्र जातकम्	150 रु.
मेदिनी ज्योतिष	300 रु.
वैदिक उपचारीय ज्यो.	160 रु.
वित्त विचार	350 रु.
मन्त्र मन्दाकिनी	380 रु.
वित्त वृद्धि	300 रु.
व्यावसायिका	450 रु.
व्यवसाय रत्नाकर	450 रु.
व्यवसाय विमर्श	450 रु.

पुस्तक	मूल्य
रत्न ज्योतिष	80 रु.
रत्न पहने भाग्य बदलें	100 रु.
रत्न प्रदीप	120 रु.
सम्पूर्ण रत्न विज्ञान	150 रु.
रत्न रुद्राक्ष और भाग्य	250 रु.
रत्नों का रहस्यमय संसार	200 रु.
आपका भाग्यरत्न	80 रु.
अंक विद्या रहस्य	80 रु.
अंकों में छिपा भविष्य	80 रु.
अंकों का अद्भुत संसार	150 रु०
अंक ज्योतिष (कीरो)	100 रु.

वास्तुशास्त्र विज्ञान पर

पुस्तक	मूल्य
सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र	150 रु.
वास्तुशास्त्रानुसार भवन निर्माण	150 रु.
बिना तोड़-फोड़ वास्तुशास्त्र	125 रु.
रेमिडियल वास्तुशास्त्र	150 रु.
व्यावहारिक वास्तुशास्त्र	100 रु.
वास्तुकला और भवन निर्माण	250 रु.
वास्तुशास्त्र रहस्य	400 रु.
वास्तुशास्त्र रहस्य (2 भाग)	450 रु.
फेंगशुई 151 स्वर्णिम सूत्र	120 रु.
गृह वास्तु संहिता-2 भाग	580 रु.

ज्योतिष की दुर्लभ

"लाल किताब"

(उर्दू भाषा में फोटोस्टेट) असली अब उपलब्ध है। मूल्य 2500 रु. (डाक व्यय सहित)

पुस्तकें मंगवाने का पता :

अग्रिम राशि मनीआर्डर द्वारा भेजना अनिवार्य है।

जनरल बुक डिपो,
अड्डा होशियारपुर चौंक,
जालन्धर शहर (पंजाब)
फोन-0181-2457959

स्थापित सन् 1875 ई०

सर्वप्राचीन प्रतिष्ठित मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान

गौरवमयी वर्ष प्रवेश 146 वाँ

पंचाँगदिवाकर ज्योतिष कार्यालय के नियम

परम पिता परमात्मा की असीम कृपा से उत्तरी भारत में सर्वप्राचीन एवं सुप्रतिष्ठित मशहूर पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान से छपने वाले सुप्रसिद्ध पंचाँग दिवाकर व मुफीद-आलम जन्त्री, उर्दू, हिन्दी, पंजाबी एवं अन्य ज्योतिष व धार्मिक प्रकाशनों को, पंचाँग प्रवर्त्तक पं० देवी दयाल (लाहौर) से लेकर आज तक का दीर्घकाल में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जो ख्याति प्राप्त हुई है, वह हमारे सुविज्ञ पाठकों से छिपी नहीं।

हमारे ज्योतिष कार्यालय में प्रामाणिक जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि शुद्ध गणित द्वारा तैयार किए जाते हैं जिससे आप घर बैठे ही अपना भविष्य जान सकते हैं। **ध्यान रहे,** सही फलादेश का आधार वैज्ञानिक ढंग से बनी शुद्ध जन्मपत्री है। जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्षों जैसे विद्या में सफलता, व्यवसाय एवं कैरियर सम्बन्धी प्रश्न, भाग्योदय, विवाह-सन्तानादि, पारिवारिक सुख, विदेश गमन योग इत्यादि प्रश्नों के उत्तर जन्मपत्री एवं ग्रहों के आधार पर अनुशीलन करके भेजे जाते हैं। यदि ग्रहों सम्बन्धी कोई विघ्न बाधाएं हों, तो अनिष्ट ग्रहों के उपाय भी शास्त्रोक्त विधि पर आधारित बतलाए जाते हैं।

मध्यम जन्मपत्री–संक्षिप्त रूप से अपना भविष्य जानने के लिए जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान, पिता का नाम, दादा का नाम, गोत्र आदि लिखें। जिसकी फीस 801/- रु. होगी। विदेश में उत्पन्न जातक की जन्मपत्री के लिए 1600/- रु.

वृहद् जन्मपत्री– आपके जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्ष जैसे-नौकरी, व्यवसाय, शिक्षा, विवाहादि के सम्बन्ध में विशेष रूप से विवरण तथा हस्तलिखित उपाये दिए जाते हैं। बड़ी हस्तलिखित जन्मपत्री बनवाने के लिए जन्म समय, जन्म स्थान, जन्म तारीख, गोत्र, प्रसिद्ध नाम, पिता तथा माता का नाम, दादा का नाम, वर्तमान व्यवसाय आदि लिख भेजें। **वृहद् जन्मपत्री की फीस 1600/- रु. होगी।** विदेश में उत्पन्न जातक के लिए फीस 2500/- रु. अथवा 31 पौंड होगी। डाक व्यय अलग। वृहद् सप्तवर्गी (40 पृष्ठ) जन्मपत्री की फीस 2200/- रु. होगी जिसमें कैरियर सम्बंधी विशेष मार्गदर्शन एवं विशिष्ट उपायों का विवरण होगा।

कम्प्यूटर (Computerized) शुद्ध / वैज्ञानिक जन्मपत्री–लेटेस्ट प्रामाणिक सौफ्टवेयर से तैयार कम्प्यूटर जन्मपत्री फलादेश एवं हस्तलिखित उपायों सहित 1100/- रु.

वर्षफल–आपके लिए आगामी वर्ष [illegible] जन्म कुण्डली की फोटो कापी अवश्य साथ भेजें। यदि जन्मपत्री [illegible] समय, तारीख, सन् ई०, व्यवसाय अंग्रेज़ी तारीख, स्थान तथा अपनी पारिवारिक व कारोबारी समस्या स्पष्ट लिखते हुए मनपसन्द फूल का नाम लिखें। फलादेश के लिए फीस 800/-रुपए अग्रिम भेजनी होगी। कृपया पूर्ण राशि अग्रिम भेजें। विदेश के लिए 21 पौंड होगी। डाक व्यय अलग।

वायदा एवं शेयर व्यापारियों को विशेष सूचना

वायदा व हाज़िर व्यापारियों के लिए रुई, सोना, चाँदी, कापर, बिनौले, खल, सरसों, गुड़, चने आदि के लिए दैनिक चाँस की एडवांस (Advance) रूप में अर्थात् आने वाले महीने की खास मासिक रिपोर्ट तैयार की जाती है। **एक मास की प्रति (एक) जिन्स की फीस 751/-रु. होगी।** जोकि मनीआर्डर या ड्राफ्ट आने पर लिखित रूप में एक महीने की एडवांस रिपोर्ट भेजी जाएगी।

जो सज्जन/व्यापारी प्रतिदिन रिपोर्ट के अतिरिक्त फोन पर भी बातचीत कर किसी जिन्स या शेयर बाज़ार का रूख जानना चाहते हैं, उनके लिए फीस 2500/-रु. मासिक होगी। फीस (Advance) आने पर ही आगामी मास की रिपोर्ट भेजी जाएगी।

शेयर-बाज़ार–शेयर बाज़ार के उतार-चढ़ाव तथा प्रमुख शेयरों में तेज़ी के चाँस के लिए शेयर बाज़ार की दैनिक अर्थात् एडवांस मासिक रिपोर्ट की फीस 751/-रु.। विस्तृत विज्ञापन '**व्यापारिक वस्तुओं व शेयरों में मन्दा-तेजी**' लेख के प्रारम्भ में देखें। प्रतिदिन फोन पर रुख जानने के लिए फीस 2500/-रु. मासिक होगी।

नोट : गुरुवार और रविवार को अवकाश रहता है। अतः दूर से आने वाले सज्जन फोन द्वारा पहले सम्पर्क करके समय निश्चित कर लें।

M.O./ ड्राफ्ट भेजने के लिए पता : पं. विवेक शर्मा (गणितकर्त्ता) सुपुत्र स्व. पं. पन्ना लाल ज्योतिषी
पंचांगदिवाकर ज्योतिष कार्यालय (पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़), चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पंजाब)-पिन 144008, फोन-0181-2457959